



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

ऋग्वेद मण्डल-1, सूक्त-1

ऋग्वेद मन्त्र 1-1-1

अग्निमीळे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम् ।
होतारं रत्नधातमम् ॥१॥

अग्निम् – अग्र अर्थात् प्रथम और नि का अर्थ है नेतृत्व। प्रथम रहकर नेतृत्व करने वाला। सर्वोच्च और दिव्य ऊर्जा सृष्टि के प्रत्येक जीव और निर्जीव तत्त्व में प्रथम रहकर सबका नेतृत्व करती है। वह सर्वोच्च शक्ति, जिसे परमात्मा कहा जाता है, हमारे व्यक्तिगत जीवन की भी मूल ऊर्जा है। अग्नि तथा उससे उत्पन्न विद्युत आदि समस्त ऊर्जाओं का मूल स्रोत सूर्य है। यह वैज्ञानिक तत्त्व अग्नि भी सृष्टि के प्रत्येक पदार्थ का नेतृत्व करने वाला प्रथम तत्त्व है। समाज में ऐसे सच्चे नेता जो अपने स्वार्थ अर्थात् अपनी कामनाओं और यहाँ तक कि सम्पत्तियों को भी आहूत करके दूसरों की सेवा में लगे रहते हैं जिससे सबका कल्याण हो और ऐसा करते हुए वे अहंकार रहित दिखाई देते हैं क्योंकि वे सर्वोच्च दिव्य शक्ति को ही वास्तविक कर्ता मानते हैं। ऐसे नेता भी अग्नि के समान ही माने जाते हैं क्योंकि वे सत्य रूप में नेतृत्व करने वाले प्रथम होते हैं।

ईळे – स्तुति करना, पूजा करना।

पुरोहितम् – पुर अर्थात् शहर या समाज, हितम् अर्थात् लाभकारी। पुरोहित का अर्थ उत्पत्ति के समय पहले से विद्यमान भी होता है। सर्वोच्च दिव्य शक्ति अपने स्व-प्रकाश से सर्वोच्च पुरोहित है क्योंकि वह शक्ति सृष्टि के निर्माण से पहले ही विद्यमान थी। वास्तव में वह स्वयं सृष्टि का निर्माता ही है। त्याग रूपी यज्ञों के करवाने वाले ब्राह्मण को भी पुरोहित कहा जाता है। त्याग का अर्थ है अपनी साधन सामग्री तथा ज्ञान को पूर्ण समर्पण भाव से दूसरों के कल्याण में लगा देना।

यज्ञस्य – उत्तम त्याग के लिए जो स्वार्थ तथा अहंकार के बिना किया गया हो।

देवम् – देने वाला तथा सब पदार्थों का प्रकाश करने वाला।

ऋत्विजम् – प्रत्येक समय तथा सभी ऋतुओं में।

होतारं – देने वाला।

रत्नधातमम् – मनोहर सम्पत्तियाँ – शारीरिक, भौतिक तथा आध्यात्मिक। हमारा शरीर भी ग्रहण किये गये भोजन को 7 धातुओं में परिवर्तित करता है।

व्याख्या :-

अग्नि क्या है?

हम ईश्वर की स्तुति क्यों करते हैं?

मैं अग्नि की स्तुति तथा पूजा करता हूँ जो सृष्टि की स्व-प्रकाशित मालिक है। यह सर्वोच्च सत्ता अग्नि सर्वकल्याण के लिए सभी स्थानों पर तथा सभी कर्णों में सर्वप्रथम विद्यमान होती है।

यही शक्ति सभी जीव तथा निर्जीव पदार्थों में ऊर्जा की तरह विद्यमान है। सभी जीवों की यह व्यक्तिगत ऊर्जा है और सभी पदार्थों में यह दिव्य ऊर्जा की प्रथम अभिव्यक्ति है। शतपथ ब्राह्मण (1.4.2.11) में कहा गया है 'ब्रह्म अग्नि' अर्थात् परमात्मा ही अग्नि है तथा आत्मेव अग्नि अर्थात् आत्मा भी अग्नि है। इसलिए मैं अपनी व्यक्तिगत ऊर्जा की भी पूजा करता हूँ क्योंकि वह सर्वोच्च दिव्य ऊर्जा का ही अंग है।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

भौतिक अग्नि के द्वारा उत्पन्न थर्मिक ऊर्जा भी सृष्टि के प्रत्येक पदार्थ में विद्यमान प्रथम शक्ति है। इसके लक्षण हैं – रंग, गर्मी, प्रकाश, गति तथा तोड़ने की शक्ति। यही हर वस्तु को प्राप्त करने का साधन है। यही समस्त विज्ञानों, उद्योगों और परिणामतः मानव जीवन के लिए आवश्यक प्रत्येक पदार्थ का प्रथम सहायक तत्त्व है। इसलिए अग्नि भी परमात्मा का प्रतिनिधि है और इसीलिए इसे सर्वोच्च द्रष्टा भी माना जाता है। वैदिक अनुयायियों में विवाह एक स्थाई सम्बन्ध भी इसीलिए बनता है क्योंकि पति और पत्नी दोनों यज्ञकुण्ड में जलने वाली पवित्र अग्नि के समक्ष एक होकर रहने के संकल्प करते हैं।

परमात्मा की ऊर्जा समस्त ज्ञान से परिपूर्ण है। हमारी आन्तरिक ऊर्जा को भी हमारे आन्तरिक मन का पूर्ण ज्ञान रहता है कि ये कितना पवित्र या अपवित्र है, कितना स्वार्थी या निःस्वार्थी है। इसलिए मैं दोनों ऊर्जाओं की स्तुति करता हूँ और प्रार्थना करता हूँ कि परोपकारी कार्यों के लिए इनकी वृद्धि हो।

अग्नि के यह सभी रूप पुरोहित के समान हैं, क्योंकि वे दूसरों के कल्याण में लगे हैं और सृष्टि के निर्माण से पूर्व ही विद्यमान थे। यदि मनुष्य इस ऊर्जा को दिव्य योजना के अनुरूप प्रयोग करना प्रारम्भ कर दे अर्थात् केवल दूसरों के कल्याण के लिए, तो यह हमें अन्दर से ही शक्तिशाली बनाकर अपने हितों के त्याग के बल पर हर प्रकार के यज्ञों तथा कल्याणकारी कार्यों को करने के लिए सक्षम बना देगी। इसके प्रतिफल में वह दिव्य ऊर्जा हमें हर प्रकार की मनोहर सम्पत्तियाँ (रत्न धातु आदि) उपलब्ध करायेगी जैसे – शारीरिक, मानसिक तथा आध्यात्मिक सम्पत्तियाँ।

हमारा शरीर भी एक ऐसा दिव्य प्रथम रत्न है जो हमारे द्वारा ग्रहण किये गये भोजन से 7 धातुएँ उत्पन्न करता है – रस, रक्त, माँस, मेघ, अस्थि, मज्जा और वीर्य। यह सभी तत्त्व हमारे शरीर की ऊर्जा के द्वारा ही उत्पन्न किये जाते हैं।

जीवन में सार्थकता

सर्वप्रथम हमें सर्वोच्च शक्ति की स्तुति तथा पूजा परमात्मा के रूप में, हमारे पिता, माता, भाई और मित्र के रूप में सदैव करनी चाहिए। इस प्रकार हम अपनी ऊर्जा को बढ़ाने में सक्षम हो सकेंगे।

द्वितीय, हमें यह निश्चित करना चाहिए कि हमारी इस ऊर्जा का अन्तहीन स्वार्थों की पूर्ति में पागल दौड़ की तरह दुरुपयोग न हो। बल्कि हमें यह निश्चित करना चाहिए कि हमारी दैनिक गतिविधियाँ हमारे परिवार, कार्यस्थलों तथा सम्पूर्ण समाज के लिए कल्याणकारी हों।

तृतीय, हमें जीवन की सभी गतिविधियाँ बिना अहंकार के सम्पन्न करनी चाहिए, यह समझकर कि प्रत्येक कार्य का वास्तविक कर्ता तो वह सर्वोच्च ऊर्जावान परमात्मा ही है। तभी हमें उस दिव्य ऊर्जा द्वारा मनोहर सम्पत्तियाँ प्राप्त होंगी।

ऋग्वेद मन्त्र 1-1-2

अग्निः पूर्वभिर्ऋषिभिरीडयो नूतनैरुत ।
स देवाँ एह वक्षति ॥२॥

अग्निः – सर्वोच्च परमात्मा तथा ऊर्जा अर्थात् विद्युत
पूर्वभिः ऋषिभिः – पूर्व कालिक दिव्य ऋषियों के द्वारा
इड्यः – स्तुति करने योग्य, वैज्ञानिकों के द्वारा नित्य खोजने योग्य

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

नूतनैः उत – तथा वर्तमान पीढ़ी के द्वारा

सः – वह सर्वोच्च परमात्मा

देवान् – दिव्य गुण, उत्तम ज्ञान, कला आदि

इह – वर्तमान जीवन और समाज में

आवश्यकता – उपलब्ध करवाता है

व्याख्या :-

गुरु-शिष्य परम्परा क्यों महत्वपूर्ण है?

पूर्वकालिक तथा वर्तमान पीढ़ियों का सम्बन्ध दोनों दिशाओं में चलना चाहिए। पूर्वकालिक अनुभवी लोगों अपना ज्ञान तथा विशेषज्ञता वर्तमान पीढ़ी के लोगों के मार्गदर्शन के लिए खुले दिल से उपलब्ध कराना चाहिए। वर्तमान ब्रह्मचारियों तथा वैज्ञानिकों आदि को प्रत्येक गतिविधि क्षेत्र में पूर्वकालिक ऋषियों तथा वैज्ञानिकों का अनुसरण करना चाहिए। जिन्होंने सर्वोच्च शक्तिमान परमात्मा की स्तुति तथा उपासना की हो या जिन्होंने सांसारिक जीवन के शारीरिक, मानसिक या भौतिक विज्ञान के क्षेत्रों में अनुसंधान किये हों। तभी ज्ञान को उचित प्रकार से हस्तान्तरण करने वाली गुरु-शिष्य परम्परा जारी रहेगी। ऐसा ज्ञान दिन-प्रतिदिन बढ़ता चला जाता है। जहाँ व्यक्ति पिता-पुत्र की तरह कार्य करते हैं, ऐसे समाज को दिव्य शक्ति उत्तम इन्द्रियों तथा उच्च ज्ञान उपलब्ध करवाती हैं। यदि पूर्वकालिक और वर्तमान पीढ़ी के बीच आदान-प्रदान की यह परम्परा जारी न रहे तो परिणाम अच्छे नहीं होते। ऐसे वातावरण में प्रत्येक व्यक्ति के हृदय में गहरे और पूर्ण संतोष का अभाव रहेगा। गुरुओं को यह दुःख रहेगा कि उन्हें कोई सक्षम शिष्य प्राप्त नहीं हुआ। वर्तमान लोगों को यह असंतोष रहेगा कि उन्हें पिता के समान मार्गदर्शन देने वाला कोई नहीं है। प्रेम से परिपूर्ण सम्बन्धों का अभाव हो जायेगा। विश्वास भी डगमगा जायेगा। भौतिक प्रगति के बावजूद निराशा बढ़ते-बढ़ते मानसिक बेंची का रूप ले लेती है।

वेद ज्ञान भी एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी गुरु-शिष्य परम्परा के माध्यम से ही हस्तान्तरित हुआ है।

जीवन में सार्थकता

परम्पराओं, रीति-रिवाजों सहित समस्त ज्ञान पीढ़ी-दर-पीढ़ी हस्तान्तरित होना चाहिए। इसी में समाज का पूर्ण हित है – शारीरिक, मानसिक तथा आध्यात्मिक। इस सिद्धान्त का अनुपालन परिवारों में, शिक्षण संस्थाओं में, कार्य स्थलों में, सामाजिक तथा राजनीतिक संगठनों में भी होना चाहिए। इसी से समृद्धि बढ़ेगी तथा समाज के प्रत्येक स्तर पर गहरी और स्थाई प्रसन्नता स्थापित हो पायेगी।

इसे गुरु-शिष्य परम्परा कहा जाता है।

ऋग्वेद मन्त्र 1-1-3

अग्निना रथिमश्नवत् पोषमेव दिवेदिवे।

यशसं वीरवत्तमम् ॥३॥

अग्निना – अग्नि अर्थात् सर्वोच्च दिव्य शक्ति, हमारी व्यक्तिगत ऊर्जा तथा विद्युत के द्वारा

रथिम् – ज्ञान तथा भौतिक सम्पदा

अश्नवत् – प्राप्त होते हैं

पोषमेव – शरीर तथा बुद्धि की शक्ति बढ़ती है।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पञ्चवती वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

दिवे—दिवे — दिन—प्रतिदिन

यशस्म् — प्रसिद्धि

वीरवत्तमस्म् — समस्त ज्ञानियों तथा शक्तिशाली लोगों के द्वारा पसन्द की जाती है

व्याख्या :-

हमारी व्यक्तिगत ऊर्जा का स्रोत क्या है?

परमात्मा की सर्वोच्च शक्ति, हमारी व्यक्तिगत ऊर्जा तथा अग्नि सभी की पवित्र संकल्पों और कार्यों से स्तुति होनी चाहिए। क्योंकि इन्हीं शक्तियों के द्वारा हमें सम्पूर्ण ज्ञान तथा भौतिक सम्पदाएँ प्राप्त होती हैं। अपने—अपने कार्य क्षेत्रों में दिन—प्रतिदिन हमारी शक्ति बढ़ती जाती है, हमारी प्रसिद्धि बढ़ती है जिसे महान और शक्तिशाली लोग पसन्द करते हैं तथा उसकी इच्छा भी करते हैं। लेकिन ऐसी ऊर्जा के प्रयोग में किसी गलती या आलस्य के कारण भयंकर दुष्परिणाम देखने को मिलेंगे। यहाँ तक कि गलत खान—पान और जीवन से सम्बन्धित गलत आदतें हमारी ऊर्जा को कम कर देती हैं।

इसी प्रकार प्रकृति का एक महत्वपूर्ण तत्त्व अग्नि हमें प्राप्त होने वाले सभी पदार्थों की मूल शक्ति है। इसका प्रयोग सावधानी पूर्वक सबके कल्याण की वृद्धि के लिए ही होना चाहिए। ऐसे सावधान लोगों को सर्वत्र प्रशंसा और सम्मान प्राप्त होता है।

जीवन में सार्थकता

व्यक्तिगत ऊर्जा को कैसे बढ़ाया जा सकता है?

परमात्मा हमारे भीतर ही है — हमारी शारीरिक, मानसिक तथा आध्यात्मिक शक्ति के रूप में। परमात्मा के साथ निरन्तर सम्पर्क हमारी ऊर्जा को दिन—प्रतिदिन बढ़ाता है। हमें केवल अपनी आन्तरिक ऊर्जा से सम्पर्क बनाकर रखना होगा तथा उस ऊर्जा को कल्याणकारी गतिविधियों में ही लगाना होगा। हमारा परिवार, कार्यस्थल तथा सम्पूर्ण समाज हमें हर प्रकार का पोषण देता है और व्यापक ब्रह्माण्ड का ही अंग है। देखने में यह सामाजिक इकाईयाँ हमें ऊर्जा देती हैं। इसलिए हमें अपने इन ऊर्जा स्रोतों की शक्ति को बढ़ाने पर ही ध्यान केन्द्रित करना चाहिए। इससे हमारी ऊर्जा स्वतः ही बढ़ती जायेगी।

परमात्मा से सम्पर्करहित जीवन का अर्थ है अपने अन्दर की व्यक्तिगत ऊर्जा से भी सम्पर्क न रहना। इस सम्पर्क के अभाव में हमारी ऊर्जा दिन—प्रतिदिन घटती जायेगी।

ऋग्वेद मन्त्र 1-1-4

अग्ने यं यज्ञमध्वरं विश्वतः परिभूरसि ।

स इद्वेषु गच्छति ॥१॥

अग्ने — वह सर्व विद्यमान ऊर्जा, सर्वोच्च मालिक

यम् — जो

यज्ञम् — त्याग, कल्याणकारी गतिविधियाँ

अध्वरम् — बाधारहित, अहिंसक, दोषरहित तथा अहंकाररहित

विश्वतः — चारों तरफ से

परिभूः असि — व्याप्त होकर रक्षा करता है

स इत् — केवल वही यज्ञ, कल्याणकारी कार्य

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

देवेषु — देवताओं, वास्तविक लाभार्थियों और अन्तः दिव्य शक्तियों के पास
गच्छति — पहुँचता है

व्याख्या :-

त्याग कार्यों की रक्षा किस प्रकार होती है?

यह मन्त्र एक दिव्य आश्वासन की तरह है कि सर्वोच्च अग्नि उन सभी कल्याणकारी कार्यों की चारों तरफ से रक्षा करती है जो बिना किसी हिंसा, गलती, अहंकार प्रदर्शन या बाधा सम्पन्न किये जाते हैं। हमारे संकल्प मजबूत, दृढ़ तथा समर्पण भावना वाले होने चाहिए। ईश्वर निश्चित ही ऐसे कार्यों की रक्षा करते हैं। तभी हमारे कार्य उन वास्तविक लोगों के लिए लाभकारी होते हैं जिन्हें इनकी नितान्त आवश्यकता होती है। ऐसे कार्यों से ही हमारा सम्पर्क सर्वोच्च ऊर्जा के साथ स्थापित हो जाता है।

जीवन में सार्थकता

यदि हमारी गतिविधियाँ यज्ञ की तरह दूसरों के कल्याण के लिए हों तो स्वाभाविक रूप से सर्वोच्च ऊर्जा उनकी रक्षा करती है। जीवन की सभी गतिविधियों में यह सिद्धान्त देखा जा सकता है। यदि कोई व्यक्ति अपने कर्तव्यों का पालन एक यज्ञ की तरह करता है, चाहे वे कार्य परिवार के लिए हों, कार्य स्थल पर हों या किसी भी अन्य संस्था में हों, सम्बन्धित उच्च अधिकारी सदैव ऐसे कार्यों की तथा कार्य करने वालों की हर सम्भव उपाय से रक्षा अवश्य करते हैं।

ऋग्वेद मन्त्र 1-1-5

अग्निर्होता कविक्रतुः सत्यश्चित्रश्वरस्तमः ।

देवो देवेभिरा गमत् ॥५॥

अग्निः — परमात्मा की सर्वोच्च शक्ति

होता — उत्तम गतिविधियों को सम्पन्न करने में सहायक, लाने वाला, देने वाला

कविक्रतुः — वह सर्वविद्यमान, ब्रह्माण्ड में सभी लाभकारी पदार्थों का उत्पत्तिकर्ता एक महान कवि की तरह है

सत्यः — वास्तविक, स्थाई, अनन्त

चित्रश्वरस्तमः — चित्र का अर्थ दर्शन अर्थात् अपने अन्दर ही अनुभव करने योग्य, श्रवस्तमः का अर्थ जिसके बारे में सुना जा सके

देवौ — वह स्वप्रकाशमान है

देवेभिः आगमत् — जिसे दिव्य ज्ञानी पुरुषों की संगति से जाना जा सकता है।

व्याख्या :-

सर्वोच्च ऊर्जा क्या है और हम किस प्रकार इसे अनुभव कर सकते हैं?

परमात्मा की सर्वोच्च ऊर्जा चारों तरफ कण—कण में व्याप्त है। इसीलिए उसे कवि कहा जाता है जो अपनी सर्वविद्यमान ऊर्जा से निर्माण करता है तथा तरंगों से सबको प्रसन्न करता है। इसलिए उसी परमात्मा को सभी कार्यों का वास्तविक कर्ता कहा जाता है। वही केवल स्थाई शक्ति है। इसलिए उसके बारे में सुनना

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

भी सदैव कौतूहलपूर्ण रहता है। उसका अनुभव गहरी तथा लगातार ध्यान—साधना से किया जाता है। इसके अतिरिक्त उसके भक्तों की वाणी से भी जाना जा सकता है।

जीवन में सार्थकता

परमात्मा की सर्वोच्च ऊर्जा हमारे अन्दर भी है और बाहर भी चारों तरफ महसूस होती है। हम प्रत्येक कार्य उसकी शक्तियों तथा उसके द्वारा दिये गये साधनों की सहायता से ही सम्पन्न करते हैं। इसलिए सभी कार्यों का वास्तविक कर्ता उसी को माना जाता है। इसी प्रकार हमारे परिवार तथा कार्यस्थल पर हम सभी कार्य हमारे वृद्ध पुरुषों तथा अधिकारियों द्वारा दी गई शक्तियों और साधनों के आधार पर ही करते हैं। इसलिए उन वृद्ध पुरुषों और उच्च अधिकारियों को ही वास्तविक कर्ता समझना चाहिए। इससे हम अहंकार रहित हो पायेंगे और वृद्ध पुरुषों एवं उच्चाधिकारियों के मस्तिष्क में हमारी छवि आज्ञा पालन करने वाले ईमानदार तथा विनम्र व्यक्ति के रूप में बनेंगी। स्वाभाविक रूप से हम अपने वृद्ध पुरुषों और उच्च अधिकारियों से निकटता बना पायेंगे और हमें उनका आशीर्वाद भी प्राप्त होगा।

ऋग्वेद मन्त्र 1-1-6
यदङ्ग दाशुषे त्वमग्ने भद्रं करिष्यसि ।
तवेतत् सत्यमङ्गिरः ॥६॥

यत् — वह उद्देश्य जिसके कारण

अंग — प्रत्येक पदार्थ और जीवन का हिस्सा

दाशुषे — जो अपने कीमती पदार्थ दूसरों के कल्याण के लिए दे देता है / दान करता है

त्वम् अग्ने — आप सर्वोच्च ऊर्जा

भद्रम् — देने वाले का पूरा हित

करिष्यसि — करते हो

त्वा — आपका

इत् — यह

तत् — नियम

सत्यम् — एक पूर्ण सत्य है

अंगिरः — आप स्वयं भी सृष्टि के प्रत्येक कण का अंग हो

व्याख्या :-

पूर्ण त्याग किस प्रकार संरक्षित होता है?

वह सर्वोच्च शक्ति अंगिरः है अर्थात् सृष्टि के प्रत्येक कण का हिस्सा है। उसने स्वयं इस सृष्टि का निर्माण दूसरों के पूर्ण कल्याण के लिए किया है। इसलिए उसका यह नियम पूर्ण सत्य है कि जब भी कोई व्यक्ति ऐसे अपने से जुड़ी वस्तुओं आदि का दान दूसरों के कल्याण के लिए करता है तो वह सर्वोच्च दिव्य शक्ति ऐसे व्यक्ति को अपना सच्चा आन्तिक अनुयायी मानते हुए उसका रक्षण करती है और उसके लिए सब शुभ होता है।

जीवन में सार्थकता

परमात्मा उन लोगों की रक्षा करता है जो उसके लोगों के कल्याण के लिए त्याग करते हैं।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

गुरुनानक देव जी ने कहा था – “गरीब के मुख में भोजन डालना, समझो भगवान की गोलक में डालना।”

यह सिद्धान्त परिवारों, कार्य स्थलों तथा समाज के हर स्थान पर समान रूप से लागू होता है। हम अपने कर्तव्यों के प्रति जब पूरी ईमानदारी, समर्पण तथा पूर्ण त्याग की भावना दिखाते हैं तो हमें वृद्धों तथा उच्च अधिकारियों से भी पूर्ण संरक्षण प्राप्त होता है।

ऋग्वेद मन्त्र 1-1-7

उप त्वाग्ने दिवेदिवे दोषावस्तर्धिया वयम् ।

नमो भरन्त एमसि ॥७॥

उप त्वा – आपके समीप हम आयें

अग्ने – सर्वच्च ऊर्जा रूप परमात्मा तथा हमारी आन्तरिक ऊर्जा

दिवे दिवे – प्रतिदिन, अनेक प्रकार का ज्ञान प्राप्त करने के लिए

दोषावस्तः – रात और दिन

धिया वयम् – अपनी बुद्धि तथा कर्मों के साथ

नमो – पूरी विनम्रता के साथ

भरन्तः – विनम्र समर्पण और पूजा के साथ

एमसि – हम आपको अनुभव करने का प्रयास करते हैं

व्याख्या :-

ध्यान–साधना वाले जीवन की प्रेरणा ।

ध्यान–साधना जीवन के लिए यह एक प्रेरणा तथा निर्देश है। प्रतिदिन और रात नियम पूर्वक हमें अपनी बुद्धि तथा कर्मों के साथ उस दिव्य ऊर्जा के साथ सम्बन्ध बनाने का प्रयास करना चाहिए जिससे हम उस सर्वोच्च पिता से भिन्न-भिन्न प्रकार का ज्ञान प्राप्त कर सकें। हमें उसके साथ निकटता बनाने पर ध्यान केन्द्रित करना चाहिए। प्रतिक्षण हमें परमात्मा को धन्यवाद तथा विनम्र पूजा का भाव समर्पित करना चाहिए। जिस प्रकार खाया हुआ भोजन हमारे भौतिक शरीर को पोषित करता है तथा ज्ञान हमारे मानसिक शरीर को पोषित करता है उसी प्रकार ध्यान–साधना वाले जीवन प्रतिक्षण आवश्यक है जिससे हम आध्यात्मिक स्तर पर परमात्मा के साथ एकता अनुभव कर सकें।

जीवन में सार्थकता

ध्यान–साधना वाले जीवन का अर्थ है – जीवन में नियमित रूप से दिन के 24 घण्टे शत–प्रतिशत समर्पण। बन्द आँखों से भगवान का ध्यान तथा खुली आँखों से भगवान का काम।

सांसारिक कार्यों में भी कोई व्यक्ति अहंकार रहित तथा पूर्ण समर्पण भाव से कार्य करते हुए ध्यान–साधना पूर्वक जीवन जी सकता है। कार्य करते समय ध्यान–साधना वाले जीवन का अर्थ है कोई छुट्टी नहीं, कोई आलस्य नहीं, पूर्ण समर्पण और पूर्ण सफलता।

ध्यान–साधना पूर्ण जीवन देता है :-

1. पवित्रता, ईमानदारी
2. ऊर्जा
3. परमात्मा के साथ एकात्मता तथा वरिष्ठ अधिकारियों के साथ निकटता ।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

ऋग्वेद मन्त्र 1-1-8

राजन्तमध्वराणां गोपामृतस्य दीदिविम् ।

वर्धमानं स्वे दमे ॥८॥

राजन्तम् – स्व-प्रकाशित, सर्वोच्च राजा जिसकी शक्तियाँ असंख्य राजाओं की शक्तियों से भी अधिक हैं, जो सृष्टि की समस्त गतिविधियों का संचालन करता है

अध्वराणाम् गोपाम् – जो समस्त कल्याणकारी बाधारहित गतिविधियों का रक्षक है

ऋतस्य दीदिविम् – जिसने सृष्टि के सभी कार्यों के लिए वेद रूप में सच्चाई प्रदान की

वर्धमानम् – जो सबसे बड़ा तथा सदैव वृद्धि पर रहता है

स्वे – अपने ही स्थान पर

दमे – अपनी ही सर्वोच्च शक्तियों तथा दमन शक्ति के कारण

व्याख्या :-

सर्वोच्च ऊर्जा से निकटता के क्या लाभ है?

सर्वशक्तिमान परमात्मा अपार शक्तियों के साथ सर्वोच्च राजा है। उसने प्रत्येक व्यक्ति के लिए अपने ज्ञान को खोला है। अपनी सर्वोच्च शक्तियों के साथ वह सभी कल्याणकारी गतिविधियों की रक्षा करता है। उसकी महानता तथा सत्ता अपने ही स्थान पर है। वह सबसे बड़ा दमनकारी भी है।

जीवन में सार्थकता

परमात्मा की महान शक्तियों को याद रखते हुए उसके साथ समीपता बनाने का प्रयास करना चाहिए। यह नियम सांसारिक जीवन में भी लग सकता है। अपने परिवार में, कार्यस्थलों पर तथा समाज में सभी वृद्धों तथा वरिष्ठ अधिकारियों की सर्वोच्चता का सम्मान करो, आपको निश्चित रूप से निम्न चार सुन्दर परिणाम प्राप्त होंगे :–

1. स्व-अनुशासन।
2. कल्याणकारी गतिविधियों के प्रति रुझान।
3. व्यक्तिगत इच्छाओं का दमन।
4. उच्च स्तर तथा सम्मान की प्राप्ति।

ऋग्वेद मन्त्र 1-1-9

स नः पितेव सूनवेऽने सूपायनो भव ।

सचस्वा नः स्वस्तये ॥९॥

स – वह

नः – हमारे लिए

पिता एव सूनवे – पिता की भाँति ज्ञान को देने वाला

सूपायनः भव – ज्ञान और सम्पदा का देने वाला, बिना डर या बिना समय की बाधा के तथा पूर्ण प्रेम के साथ सरलता से मिलने योग्य

सचस्व – सम्बन्धित करे

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

नः — हमें

स्वस्तये — हमारे पूर्ण कल्याण के लिए, हमें आत्मा की यात्रा पर ऊँचा पहुँचाने के लिए

व्याख्या :-

कितना सरल है परमात्मा का अनुभव करना?

परमात्मा के साथ निकट सम्बन्ध का अनुभव करना इतना आसान है जैसा एक पुत्र के लिए अपने भौतिक पिता की गोद में जाकर बैठना जिसमें उसे न कोई डर लगता है, न कोई समय लगता है, पूर्ण प्रेम और पूर्ण संरक्षण अनुभव होता है। क्योंकि परमात्मा रूपी शक्ति हमारे अन्दर ही है। अपने पिता के साथ निकटता पूर्वक रहने वाला बच्चा हमेशा अनुशासित होता है। स्वतन्त्रता बच्चे को मार्गदर्शन रहित कर देती है जिससे वह अच्छाईयों के मार्ग से भटक जाता है। पिता के तुल्य शुभचिन्तक कोई अन्य व्यक्ति नहीं हो सकता। इससे भी अधिक, एक व्यक्ति सर्वोच्च ऊर्जा के साथ निकटता बनाकर सदैव एक महान श्रेष्ठ और सदैव उच्च ऊर्जा से सम्पन्न रहता है।

जीवन में सार्थकता

सर्वोच्च अधिकारियों के साथ निकटता हमें श्रेष्ठ गुणों, शक्तियों तथा उच्च स्तरों पर वृद्धियों की उपलब्धि कराती है। इसलिए अपने उच्च अधिकारियों से व्यवहार करते समय पूर्ण आदर, ईमानदारी तथा अनुशासन का परिचय दें, इससे आपको अपार लाभ प्राप्त होगा।

ऋग्वेद मण्डल-1, सूक्त-2

ऋग्वेद मन्त्र 1-2-1

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

वायवा याहि दर्शते मे सोमा अरंकृतः ।
तेषां पाहि श्रुधी हवम् ॥१॥

वायो – प्रकृति के एक तत्त्व की तरह विद्यमान वायु शुद्धि करने वाली मानी जाती है। सर्वव्याप्त होने के कारण परमात्मा वायु है और अनन्त शक्तियों के साथ वह शुद्धि कारक है।

आयाही – कृपया मेरे शरीर में पधारिये

दर्शत – अनुभव करने योग्य (देखने के समान)। वायु हमें देखने तथा अन्य कार्यों को करने की शक्ति देती है इसलिए यह हमारे जीवन में सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है

इमे – सीधा देखे जाने योग्य, अनुभव या महसूस करने योग्य

सोमा – सांसारिक पदार्थ, श्रेष्ठ गुण तथा ज्ञान

अरंकृतः – सर्वत्र शोभायमान

तेशाम् – आप (संरक्षक)

पाहि – संरक्षण कीजिए (इन सांसारिक पदार्थों का, हमारे अन्दर ज्ञान और गुणों का

श्रुधी – सुनिये

हवम् – हमारी प्रार्थनाएँ।

व्याख्या :-

वायु हमारे लिए किस प्रकार महत्त्वपूर्ण है?

इस मन्त्र को आध्यात्मिक रूप से समझें तो वायु परमात्मा है क्योंकि जिस प्रकार परमात्मा सर्वविद्यमान है उसी प्रकार वायु भी प्रकृति में सर्वत्र उपस्थित है। सर्वविद्यमान होने के कारण परमात्मा हमारे शरीर के भीतर भी है। हम अपने श्वासों पर ध्यान करके उसकी उपस्थिति को अनुभव कर सकते हैं। यह श्वास हमारे जीवन की प्राणिक ऊर्जा हैं। गहरा लम्बा श्वास अन्दर लेने के बाद इसे कुछ समय तक रोकें तथा ध्यान करें। यह ध्यान करने की मौलिक प्रक्रिया है। श्वास रोकने की इस कुम्भक अवस्था को अपनी आन्तरिक ऊर्जा पर ध्यान के लिए श्रेष्ठ माना जाता है और इसी से अन्ततः भगवान को अनुभव करने के पथ पर प्रगति सम्भव हो सकती है।

शारीरिक रूप से भी वायु प्रकृति का एक तत्त्व होने के कारण हमारी आवश्यक प्राणिक ऊर्जा है। जिसके शरीर में प्रवेश करने पर फेफड़ों की क्षमता के अनुसार कुछ समय कुम्भक वृत्ति के द्वारा स्वागत किया जाना चाहिए। श्वास भरने के बाद जब हम उसे रोककर रखते हैं तो इससे एक दबाव पैदा होता है जो फेफड़ों को शक्ति देता है, फेफड़ों के छिद्रों को खोलता है और बाद में सारा शरीर आक्सीजनयुक्त हो जाता है। इस प्रकार कुम्भक की अवस्था हमें सभी जीवन कार्यों को पूरी योग्यता के अनुसार करने के लिए स्वास्थ्य प्रदान करती है। जो योगी इस प्रकार वायु का स्वागत करते हैं वे प्रकृति के इस महान तत्त्व के महत्त्व को अनुभव करने में सक्षम हो जाते हैं।

मानसिक रूप से श्वास रोकने की अवस्था हमारे तंत्रिका तंत्र को विश्राम प्रदान करती है। तनाव या किसी कष्टकारी समय में यदि हम गहरा श्वास लेकर कुछ क्षण कुम्भक की अवस्था में बितायें तो इससे निश्चित रूप से हमारे अन्दर सद्गुणों का विकास होगा जो हमें तनाव और विपत्तियों से मुक्त कर सकता है। दीर्घकाल

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



परिवर्तन वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

तक ऐसे लम्बे अभ्यास से कोई भी अपने मस्तिष्क में स्थाई शान्ति बनाकर रख सकता है। वायु में शुद्धि करने का दिव्य गुण है। शुद्धि के बाद कोई दुर्गुण नहीं रहता।

वायु को रोककर ध्यान करने के अभ्यास से दिव्य अनुभवों का पथ प्राप्त होता है। सभी सांसारिक पदार्थ सर्वोच्च शक्तिमान ईश्वर की उपस्थिति से सुसज्जित दिखाई देने लगते हैं। शारीरिक और मानसिक स्तर पर अभ्यास करने वाला यह महसूस करता है कि उसमें सद्गुणों का विकास हो रहा है। वायु हमारे जीवन में सद्गुणों के साथ-साथ दिव्यता भी लाती है।

परमात्मा सृष्टि के समस्त सांसारिक पदार्थों का संरक्षक है। प्राणिक ऊर्जा के रूप में वायु हमारे शरीर की रक्षा करती है। परमात्मा तथा वायु हमारे सद्गुणों और ज्ञान की रक्षा करते हैं।

परमात्मा केवल हमारी प्रार्थनाओं को सुनता है। हम भी सुनने तथा जीवन के अन्य कार्यों को करने में सक्षम तभी तक होते हैं जब तक हमारे शरीर में प्राणिक ऊर्जा की तरह वायु प्राप्त होती रहती है। प्राणिक ऊर्जा के रूप जाने को मृत्यु कहा जाता है और हमारी सारी गतिविधियाँ बन्द हो जाती हैं।

जीवन में सार्थकता

परमात्मा का धन्यवाद

तनाव मुक्ति की क्रिया

परमात्मा को हम अनुभव कर सकते हैं अपने प्रत्येक श्वास लेने, उसे रोकने और छोड़ने की प्रक्रिया में। प्रतिदिन हमें लगभग 21 हजार श्वास परमात्मा की तरफ से निशुल्क भेंट प्राप्त होते हैं। हमें प्रत्येक श्वास के साथ परमात्मा का धन्यवाद करना चाहिए और परमात्मा का स्वागत करना चाहिए।

जीवन के किसी भी तनाव, विवाद या अन्य विपत्ति के समय में श्वास रोकने का वैज्ञानिक तथा यौगिक प्रभाव महसूस किया जा सकता है। हमारा मस्तिष्क शान्त हो जायेगा और हमारे स्वभाव में भी परिवर्तन दिखाई देगा।

जहाँ परमात्मा है वहाँ केवल गुण होते हैं, अवगुण नहीं।

जहाँ महादेव वहाँ भर्म कामदेव।

ऋग्वेद मन्त्र 1-2-2

वाय उक्थेभिर्जरन्ते त्वामच्छा जरितारः।

सुतसोमा अहर्विदः ॥२॥

वाय – परमात्मा वायु की तरह सर्वविद्यमान है

उक्थेभि – कई स्रोतों से

जरन्ते – पूजनीय तथा प्रशंसनीय

त्वाम् – आपकी

अच्छ – इच्छा करते हैं

जरितारः – पूजा तथा प्रशंसा करने वालों के द्वारा

सुतसोमा – सभी सोम पदार्थों (सांसारिक पदार्थ, गुण तथा ज्ञान) के आप उत्पत्तिकर्ता तथा देने वाले हैं

अहर्विदः – यह हमने जान लिया है।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

व्याख्या :-

परमात्मा की पूजा वायु के रूप में क्यों की जाती है?

परमात्मा वायु दोनों ही कई स्रोतों से पूजनीय और प्रशंसनीय हैं। जो लोग इनकी पूजा और प्रशंसा करते हैं उन्हें इन दोनों की आवश्यकता है क्योंकि :-

(क) परमात्मा सभी सांसारिक पदार्थों, गुणों तथा ज्ञान का उत्पत्तिकर्ता और देने वाला है।

(ख) वायु हमें सभी गतिविधियाँ करने के लिए जीवित रखती है।

जब एक विवेकशील व्यक्ति वायु के महत्व को जान लेता है कि यह परमात्मा की एक महान भेंट है तो वह एकदम दोनों की ही प्रशंसा और पूजा प्रारम्भ कर देता है। इस प्रकार वह अपने शरीर को शुद्ध करने के योग्य हो जाता है और जीवन में शांति प्राप्त करने लगता है।

जीवन में सार्थकता

कोई रोग नहीं, कोई अपराध नहीं

परमात्मा की अत्यन्त सुन्दर भेंट है – वायु। इसे संरक्षित करके हम परमात्मा की पूजा और प्रशंसा करते हैं जो इस जीवन शक्ति का देने वाला है। इस मौलिक भेंट के साथ ही हम अपना जीवन चलाने के योग्य बनते हैं, सभी सांसारिक पदार्थों, गुणों तथा ज्ञान का प्रयोग करने योग्य बनते हैं जो परमात्मा की अन्य भेंट हैं। दूसरी तरफ, यदि लोग इस मौलिक भेंट का संरक्षण न करें तो निश्चित रूप से समाज को चारों तरफ रोगों और अपराधों का सामना करना पड़ेगा।

ऋग्वेद मन्त्र 1-2-3

वायो तव प्रपृ॒ चती धेना जिगाति दाशुषे ।

उरुची सोमपीतये ॥३॥

वायो – परमात्मा, वायु

तव – आपकी

प्रपृ॒ चती – सभी विज्ञानों का ज्ञान देने वाले (ऋग्वेद – प्राकृतिक विज्ञान, यजुर्वेद – कर्म, सामवेद – अध्यात्म विद्या, अथर्ववेद – युद्ध एवं औषधि विज्ञान), अपनी दिव्यता के साथ सम्पर्क देने वाले

धेना – वेद के रूप में निर्देश देने वाले

जिगाति – प्राप्त होती है

दाशुषे – जो परमात्मा के प्रति समर्पण करते हैं

उरुची – उच्च स्तरों तक ले जाते हैं

सोमपीतये – सभी सांसारिक पदार्थ, गुण तथा ज्ञान उपलब्ध कराते हैं।

व्याख्या :-

वैदिक निर्देशों के महत्वपूर्ण लक्षण क्या हैं?

सर्वविद्यमान परमात्मा! वेद के रूप में आपके निर्देश केवल उन्हीं को प्राप्त होते हैं जो आपके प्रति समर्पण करते हैं। यहाँ वैदिक निर्देशों के दो मुख्य लक्षण हैं :-

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

(क) ये हमें हर प्रकार की वैज्ञानिक तथा सत्य विद्या के साथ-साथ उसके देने वाले परमात्मा से भी सम्बन्धित करते हैं।

(ख) सांसारिक पदार्थों, गुणों तथा ज्ञान के माध्यम से ये हमें उच्च स्तरों तक ले जाते हैं – आध्यात्मिक, मानसिक तथा शारीरिक।

वायु को यदि सामान्य तत्त्व की तरह समझा जाये तो भी वह हमें स्वास्थ्य, ज्ञान तथा अनुभव के उच्च स्तरों तक ले जाती है।

इससे भी अधिक उच्च स्तर प्राप्त करने के लिए हमें जीवन का सब कुछ देने वाले के प्रति भी समर्पण भाव रखना चाहिए।

जीवन में सार्थकता

समझो और बिना थके काम करो

अपने परिवार या सामाजिक जीवन में भी उच्च स्तर प्राप्त करने के लिए हमें अपने वरिष्ठ स्तर के लोगों का सम्मान तथा उनकी सेवा करने का भाव पैदा करना चाहिए। इसके लिए हमें अपनी योग्यताओं के आधार पर बिना थके काम करने की तत्परता दिखानी चाहिए। यह सेवा कार्य करते समय श्वास रोकने के समान ही लगता है। हमेशा अपने काम पर ध्यान रखो और धैर्य धारण करो। आज ही परिणाम प्राप्त करने के लिए अधीर न बनें।

ऋग्वेद मन्त्र 1-2-4

इन्द्रवायू इमे सुता उप प्रयोभिरा गतम् ।
इन्दवो वामुशन्ति हि ॥४॥

इन्द्र – सूर्य, वह व्यक्ति जिसने इन्द्रियों पर नियंत्रण स्थापित कर लिया

वायु – वायु, वह व्यक्ति जो ऊर्जावान तथा सक्रिय है

इमे सुता – प्रयोग के लिए सभी पदार्थ उत्पन्न करता है

उप – मेरे समीप

प्रयोभिः – सभी सांसारिक पदार्थों तथा गुणों का संरक्षण करते हुए

आगतम् – कृपया आइये

इन्दवो – संरक्षित हुए सभी पदार्थ तथा गुण

वाम – आप दोनों के लिए (इन्द्र और वायु)

उशन्ति – इच्छा करते हैं

हि – निश्चित रूप से।

व्याख्या :-

सूर्य (इन्द्र) तथा वायु का हमारे जीवन में क्या महत्त्व है?

सूर्य एक महान चुम्बकीय शक्ति है जो मेघों को धरती के निकट रोक कर रखता है। जब यह मेघों को गर्मी प्रदान करता है तो वर्षा की बूँदें धरती पर आती हैं जिससे कृषि उत्पादन तथा धरती पर जीवन पर

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

सम्भव होते हैं। सूर्य तथा वायु हर वस्तु तथा हर जीवन का संरक्षण करते हैं। इसलिए सभी संरक्षित जीवन भी निश्चित रूप से सूर्य और वायु की ही इच्छा करते हैं।

इन्द्र का अर्थ एक ऐसे व्यक्ति के रूप में भी समझा जा सकता है जिसने अपनी इन्द्रियों पर नियंत्रण स्थापित कर लिया हो। वायु का अर्थ ऊर्जावान तथा सक्रिय व्यक्ति के रूप में समझा जा सकता है। केवल ऐसे ही लोग दिव्य शक्तियों के प्रतिनिधि की तरह समाज में लाभकारी होते हैं। अन्य सामान्य लोग ऐसे ही महान पुरुषों के निकट आने की कामना करते हैं जिनमें इन्द्र और वायु के गुण होते हैं। यहाँ तक कि ऐसे महान लोगों की ऊर्जा और सक्रियता के परिणाम भी उन्हीं के साथ जीने की कामना करते हैं। ऐसे महान लोगों को चारों तरफ से प्रेम प्राप्त होता है।

जीवन में सार्थकता

केवल ऊर्जावान तथा सक्रिय लोगों को ही हर तरफ से सम्मान मिलता है।

सूर्य की तरह ऊर्जावान बनों तथा वायु की तरह सक्रिय बनों जिससे आपके कर्मों के फलों का आनन्द लेने वाले सभी लोग आपको प्रेम करें और आपको पसन्द करें। यहाँ तक कि आपके कर्मों के फल भी आपको पसन्द करेंगे।

समाज में, घर पर या कार्यस्थलों पर सब जगह हम यह देख सकते हैं कि केवल ऊर्जावान और सक्रिय लोगों को ही सबका सम्मान मिलता है। कर्मों के फल बेशक भगवान के नियंत्रण में होते हैं परन्तु वे भी ऐसे लोगों को प्रेम करते हैं। इसका अर्थ यह है कि भगवान भी ऐसे लोगों को प्रेम करते हैं।

ऋग्वेद मन्त्र 1-2-5

वायविन्दश्च चेतथः सुतानां वाजिनीवसू।

तावा यातमुप द्रवत् ॥५॥

वायु इन्द्रश्च – परमात्मा की शक्तियाँ – वायु तथा सूर्य, क्रियाशीलता तथा शक्ति
चेतथः – धारण करना और प्रकाशित करना

सुतानाम् – समस्त उत्पन्न हुए पदार्थ

वाजिनीवसू – प्रतिदिन प्रातः ब्रह्म वेला

तव – यह दोनों

आयातम् उप – निकट आते हैं

द्रवत् – शीघ्रता के साथ।

व्याख्या :-

परमात्मा को हम अपने निकट किस प्रकार अनुभव कर सकते हैं?

वायु तथा सूर्य का संयोग (परिणामतः वर्षा का जल) प्रकृति में अनेकानेक वस्तुओं की उत्पत्ति करता है। हमारे लिए वे सब वस्तुएँ उत्पन्न करके, ये दिव्य शक्तियाँ प्रतिदिन प्रातःकाल ब्रह्म वेला के समय शीघ्रता के साथ हमारे निकट आती हैं। अन्ततः सब पदार्थों की उत्पत्ति करने तथा ज्ञान एवं व्यवहार के उत्तम लक्षण देने

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

वाला परमात्मा प्रतिक्षण हमारे निकट रहता है। हम जिस वस्तु को भी स्पर्श करते हैं, देखते हैं या प्रयोग करते हैं, हमें यह स्मरण रहना चाहिए कि यह परमात्मा की भेट है और परमात्मा हमारे निकट ही है।

यदि हम वायु और इन्द्र का अर्थ क्रियाशीलता तथा शक्तिशाली व्यक्ति के रूप में लें तो हमें ऐसे व्यक्तियों से मिलकर भी परमात्मा की उपस्थिति का भान हो सकता है। ऐसे पुरुष महान् रूप में अन्य लोगों की सेवा में लगे रहकर एक दिव्य पुरुष की तरह ही लगते हैं और वे परमात्मा की शक्ति को प्रतिक्षण अपने निकट महसूस करते हैं।

जीवन में सार्थकता

प्रतिक्षण परमात्मा हमारे निकट हैं।

क्रियाशील तथा शक्तिवान् पुरुष परमात्मा के साथ अधिक निकटता महसूस करते हैं।

परमात्मा हमें सभी सांसारिक पदार्थ तथा व्यवहार के उत्तम लक्षण प्रदान करता है। इन भेटों के साथ वह प्रतिक्षण हमारे निकट रहता है।

इसी प्रकार क्रियाशील तथा शक्तिवान् पुरुष अपने परोपकारी कार्यों के लाभार्थियों से प्रेम और सम्मान प्राप्त करने के साथ-साथ परमात्मा से भी वैसा ही प्रेम और सम्मान प्राप्त करते हैं।

ऋग्वेद मन्त्र 1-2-6

वायविन्द्रश्च सुन्वत आ यातमुप निष्कृतम्।
मक्षिवत्था धिया नरा ॥६॥

वायु इन्द्रश्च — परमात्मा की शक्तियाँ — वायु तथा सूर्य, क्रियाशीलता तथा शक्ति

सुन्वतः — प्रत्येक लाभदायक पदार्थ की उत्पत्ति तथा रक्षा करते हैं

आयातम् उप — हमारे निकट आते हैं

निष्कृतम् — हमारे कर्मों का फल देकर हमें शुद्ध करने के लिए

मक्षिवत्था — (मक्षु) बहुत शीघ्र (इत्था) इस मार्ग से (कर्मों के फल देकर)

धिया — ज्ञान

नरा — प्राप्त करने वाले।

व्याख्या :-

परमात्मा हमें किस प्रकार शुद्ध करते हैं?

परमात्मा वायु और सूर्य रूपी अपनी दिव्य शक्तियों के साथ समस्त पदार्थों तथा ज्ञान आदि की उत्पत्ति करता है और शीघ्रता के साथ हमारे कर्मों का फल देकर हमें शुद्ध करने के लिए हमारे पास रहता है। इस प्रकार वह हमें महान् ज्ञान को प्राप्त करने योग्य बना देता है।

क्रियाशील तथा शक्तिवान् पुरुष सबका भला करता है। इस प्रकार वह शुद्ध होता है और अपने कर्मों के फलस्वरूप वह दिव्य ज्ञान तथा सर्वोच्च शक्ति का समर्थन प्राप्त करता है।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

परमात्मा एक अध्यापक के समान है जो पहले शिक्षा देता है और अपने शिष्यों की योग्यता को परखने की तरह बाद में परीक्षा लेता है तथा उन्हें योग्यतानुसार फल देता है। इस प्रकार शिष्य उस सर्वोच्च अध्यापक के द्वारा प्रतिक्षण शुद्ध होता रहता है।

जीवन में सार्थकता

क्रियाशील तथा शक्तिवान् पुरुष शुद्ध होते हैं।

हमारे कर्मों के फलों पर परमात्मा का अधिकार है जिससे वह हमें शुद्ध कर सके और हमारे ज्ञान में वृद्धि कर सके।

क्रियाशील तथा शक्तिवान् पुरुष शुद्ध होते हैं। उन्हें सर्वोच्च शक्तियाँ प्रेम करती हैं और यथोचित धन—सम्मान भी देती हैं।

ऋग्वेद मन्त्र 1-2-7

मित्रं हुवे पूतदक्षं वरुणं च रिशादसम्।
धियं घृताचीं साधन्ता ॥७॥

मित्रम् – सूर्य (शक्ति)

हुवे – मैं आमंत्रित करता हूँ, प्राप्त करता हूँ, स्वीकार करता हूँ

पूतदक्षम् – पवित्र शक्ति के लिए (अपवित्रताओं से मुक्त तथा शक्तिशाली)

वरुणम् च – और वायु (क्रियाशीलता)

रिशादसम् – बुराईयों, हिंसक तथा शत्रु रूपी प्रवृत्तियों को समाप्त करने के लिए

धियम् – ज्ञान से परिपूर्ण

घृताचीम् – बुराईरहित

साधन्ता – प्राप्त करने के लिए।

व्याख्या :-

क्या हम सूर्य (मित्र) तथा वायु (वरुण) के समान बन सकते हैं?

पवित्र बल तथा बुराईयों से रहित महान् शक्ति को प्राप्त करने के लिए मैं सूर्य की शक्ति को एक मित्र की शक्ति की तरह आमंत्रित करता हूँ।

मैं वायु तथा क्रियाशीलता को समस्त बुरी प्रवृत्तियों को समाप्त करने के लिए आमंत्रित करता हूँ। वायु सदा शुद्धि का कार्य करती है और बुराईयों को समाप्त करती है।

सूर्य तथा वायु मिलकर वर्षा की उत्पत्ति करते हैं। वह भी अपवित्रताओं को धरती से समाप्त करके शक्ति प्रदान करती है।

पूजा का अर्थ है सूर्य (मित्र) तथा वायु (वरुण) के गुणों और शक्तियों की कामना करना। इनकी शक्ति तथा क्रियाशीलता पवित्र है। इस प्रकार की पूजा से किसी को भी बुराईयों से रहित ज्ञान प्राप्त हो सकता है जिससे सबका कल्याण सम्भव है।

जीवन में सार्थकता

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

मित्र तथा वरुण बनों।

प्रत्येक समाज में कुछ लोग मित्र तथा वरुण के रूप में शक्तिशाली और क्रियाशील अवश्य होते हैं। उनकी शक्ति पवित्र तथा उनके कार्य बुराईयों से रहित होते हैं। हमें भी मित्र और वरुण बनकर अन्यों को भी इसके लिए प्रेरित करना चाहिए।

ऋग्वेद मन्त्र 1-2-8

ऋतेन मित्रावावरुणावृतावृधावृतस्पृशा ।

क्रतुं बृहन्तमाशाथे ॥८॥

ऋतेन – परमात्मा अर्थात् सर्वोच्च दिव्य शक्ति के अनुशासन में उत्पन्न तथा निर्धारित

मित्रावरुणा – मित्र (सूर्य) तथा वायु (वरुण)

ऋतावधौ – दिव्य सत्यता को बढ़ाने वाले, वर्षा और ऋतुओं को देने वाले

ऋतस्पृशा – दिव्य सत्यता के साथ सम्पर्क का कारण, वर्षा

क्रतुम् – सृष्टि का यज्ञ

बृहन्तम् – आकार में व्यापक

आशाथे – व्याप्त हुआ (मित्र और वरुण से)।

व्याख्या :-

क्या सूर्य तथा वायु भी परमात्मा के अनुशासन में रहते हैं?

सूर्य तथा वायु प्रकृति के अत्यन्त शक्तिशाली तत्त्व होने के बावजूद सर्वोच्च शक्तिमान परमात्मा के अनुशासन में उत्पन्न तथा निर्धारित हैं।

आध्यात्मिक रूप से वे दिव्य सत्य को बढ़ाने वाले हैं और सर्वोच्च शक्तिमान परमात्मा के साथ सम्बन्ध स्थापित करने में सहायता करते हैं।

भौतिक रूप से वे वर्षा का कारण बनते हैं और सृष्टि के प्रत्येक पदार्थ से सम्पर्क स्थापित करते हैं।

समूची सृष्टि एक बहुत बड़े यज्ञ की तरह इन्हीं दो शक्तिशाली तत्त्वों – सूर्य तथा वायु, शक्ति तथा क्रियाशीलता के माध्यम से ही चल रही है।

इस कारण शक्तिशाली तथा क्रियाशील पवित्र लोग सदा दूसरों के कल्याण में ही लगे रहकर स्वयं परमात्मा की सर्वोच्च सत्ता के अनुशासन में भी रहते हैं। ऐसे लोग भी सबके कल्याण की वृद्धि ही करते हैं। उनका जीवन भी एक यज्ञ की तरह होता है जिससे सबको लाभ प्राप्त होता है।

जीवन में सार्थकता

प्रत्येक को परमात्मा के अनुशासन में ही रहना चाहिए।

सूर्य तथा वायु जैसी शक्तिशाली ताकतें परमात्मा अर्थात् सर्वोच्च सत्ता के अनुशासन में रहती हैं। इसी प्रकार प्रत्येक शक्तिशाली तथा क्रियाशील व्यक्ति को अपने घर पर या समाज में कहीं भी दूसरों का कल्याण करने के साथ-साथ सर्वोच्च अधिकारियों के अनुशासन में ही रहना चाहिए। किसी व्यक्ति को भी अपने आपमें सर्वोच्चता नहीं समझनी चाहिए।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

ऋग्वेद मन्त्र 1-2-9
कवी नो मित्रवरुणा तुविजाता उरुक्षया ।
दक्षं दधाते अपसम् ॥७॥

कवी – साक्षात्कार के लिए

नः – हमारे

मित्रा वरुणा – परमात्मा की शक्तियाँ – सूर्य तथा वायु, शक्ति तथा क्रियाशीलता

तुविजाता – सबका कल्याण करते हुए

उरुक्षया – सभी स्थानों पर

दक्षम् – शक्ति

दधाते – धारण

अपसम् – सभी क्रियाएँ ।

व्याख्या :-

परमात्मा ने अपनी शक्ति किसे प्रदान की?

सूर्य तथा वायु सभी स्थानों पर सबका कल्याण करते हैं । वे हमें साक्षात्कार की अवस्था तक ले जाने के लिए उनके पास हमारी सभी अच्छी या बुरी क्रियाओं के लिए शक्तियाँ हैं ।

परमात्मा ने अपनी महानता को सूर्य और वायु के माध्यम से ही व्यक्त किया है । प्रकृति के इन तत्त्वों की शक्तियाँ वास्तव में हमारे कल्याण के लिए ही हैं । उनके पास शक्तियाँ हैं परन्तु फिर भी वे धरती पर हमारे अच्छे और बुरे सभी कार्यों को सहन करते हैं ।

इसी प्रकार समाज में कुछ शक्तिवान तथा क्रियाशील पुरुष सब लोगों का कल्याण करते हैं । ऐसे लोगों को भगवान से शक्ति प्राप्त होती है । वास्तव में दिव्यता ही ऐसे लोगों के माध्यम से सामने प्रदर्शित होती है । ऐसे शक्तिवान और क्रियाशील पुरुष कम शक्ति वाले, आलसी तथा बुरी मानसिकता वाले लोगों के कार्यों को भी ढक लेते हैं क्योंकि वे महापुरुष सबके लिए समान रूप से कल्याणकारी होते हैं । दूसरी तरफ ऐसे पवित्र और दिव्य लोग देर-सवेर अन्य लोगों के लिए भी प्रेरक बनते हैं ।

जीवन में सार्थकता

शक्तिवान तथा क्रियाशील लोगों की महान सहनशक्ति

परमात्मा सूर्य तथा वायु के माध्यम से ही सबका कल्याण करते हैं । सूर्य तथा वायु में समस्त शक्तियाँ होने के बावजूद भी हमारे अच्छे या बुरे कार्यों को सहन करने की शक्ति होती है । इसी प्रकार शक्तिवान तथा क्रियाशील व्यक्ति भी हमारी संस्थाओं की दिव्य शक्तियाँ हैं । वे कड़ी मेहनत करते हैं, अपनी शक्ति का प्रयोग करते हैं फिर भी अन्य लोगों का आवरण बनते हैं । उनकी सहनशक्ति महान होती है । यदि वे भी कड़ी मेहनत आदि का त्याग कर दें तो संस्थाओं का पतन हो सकता है ।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

ऋग्वेद मण्डल-1, सूक्त-3

ऋग्वेद मन्त्र-1-3-1
अश्विना यज्वरीरिषो द्रवत्पाणी शुभस्पती ।
पुरुभुजा चनस्यतम् ॥१॥

अश्विना – दो का जोड़ा, (महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के अनुसार अग्नि और जल का संयोग)। वैदिक व्याकरण के अनुसार यह (क) भूमि तथा आकाश का जोड़ा, (ख) सूर्य तथा चन्द्रमा का जोड़ा, (ग) दिन और रात का जोड़ा, (घ) विशेषज्ञ चिकित्सक या वैज्ञानिक का जोड़ा भी हो सकता है। हरिशरण जी के अनुसार यह प्राण और अपान का जोड़ा है।

यज्वरी – शिल्पकला का विज्ञान, परोपकार करने वाला बलिदानी व्यक्ति (याज्ञिक)

इषः – इच्छित वस्तुएँ

द्रवत्पाणी – शीघ्र वेग पैदा करने में सहायक

शुभस्पती – महान शुभ गुणों को देने वाला, लाभकारी, महान कार्य

पुरुभुजा – अनेकों दृष्टियों वाला, अनेकों उद्देश्यों वाला, अनेकों लोगों का सहायक

चनस्यतम् – प्रीति के साथ भोजन का सेवन करने वाला

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

व्याख्या :-

अश्विना, दो का जोड़ा, हमारे जीवन में किस प्रकार महत्वपूर्ण है?

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने इस मन्त्र की व्याख्या करते हुए यह स्पष्ट किया है कि विशेषज्ञों को अग्नि और जल तत्त्वों का इच्छित वस्तुओं को प्राप्त कराने वाले शिल्पकला विज्ञान में या भोजन में समुचित प्रयोग करना चाहिए जिससे इन वस्तुओं का उपयोग करते समय लोग शीघ्रता के साथ एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाकर सर्वकल्याण के लिए भिन्न-भिन्न कार्य कर सकें। इस प्रकार बहुत बड़ी संख्या में लोगों का कल्याण होगा। वे सब वस्तुओं का उपयोग प्रीति पूर्वक करेंगे जिस प्रकार भोजन करते समय व्यक्ति करता है।

हरिशंकर जी के अनुसार अश्विना का अर्थ है – प्राण और अपान। श्वास लेने और श्वास छोड़ने की दो प्रक्रियाओं के यह नाम हैं। हमारे जीवन में वायु एक महत्वपूर्ण तत्त्व है। श्वास लेते समय तथा श्वास छोड़ते समय वायु का उचित उपयोग हमें गतिशील तथा कार्यशील बनाने में सहायक होता है और हमारे प्रयासों का लाभ अनेकों लोगों तक पहुँचता है। इसी से हमारा भोजन प्रीति पूर्वक पाचन क्रिया से निकलता है और उसका उचित उपयोग होता है।

जीवन में सार्थकता

जब भी एक ही दिशा और एक ही लक्ष्य के लिए दो ताकतें मिलकर कार्य करती हैं तो परिणाम सदैव महान् तथा अनेकों लोगों के लिए कल्याणकारी होते हैं और ऐसे प्रयासों से इच्छित लक्ष्य भी प्राप्त होते हैं।

जोड़े और भी कई प्रकार के हो सकते हैं जैसे – पति-पत्नी, माता, पिता तथा पुत्र, पुत्री, दो भाई, बहनें, मित्र, दो सामाजिक कार्यकर्ता, नियोक्ता तथा नियुक्त व्यक्ति, दो सांझेदार, दो आत्मिक सहयात्री, सरकार तथा नागरिक, शरीर तथा मन, भगवान् तथा आत्मा।

आध्यात्मिक पथ पर शरीर और मन को अश्विना की तरह मिलकर कार्य करना चाहिए जिससे वे अपनी आन्तरिक आत्मा का अनुभव कर सकें और अन्ततः परमात्मा का अनुभव करें।

जब कभी भी दो ताकतें (अश्विना) मिलकर कार्य करती हैं तो उससे निम्न परिणाम प्राप्त होते हैं :-

- (1) कल्याणकारी गतिविधियाँ
- (2) इच्छित उद्देश्यों की प्राप्ति
- (3) गति
- (4) अनेकों लोगों के लिए महान् लाभ
- (5) यह जोड़ भोजन करते समय मिलने वाले आनन्द की तरह होता है।

यह मंत्र एक सामान्य भाषा के कथन का समर्थन करता है – एक और एक ग्यारह होते हैं।

ऋग्वेद मन्त्र-1-3-2

अश्विना पुरुदंससा नरा शवीरया धिया।
धिष्या वनतं गिरः ॥२॥

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

अश्विना – दो का जोड़ा, (महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के अनुसार अग्नि और जल का संयोग)। वैदिक व्याकरण के अनुसार यह (क) भूमि तथा आकाश का जोड़ा, (ख) सूर्य तथा चन्द्रमा का जोड़ा, (ग) दिन और रात का जोड़ा, (घ) विशेषज्ञ चिकित्सक या वैज्ञानिक का जोड़ा भी हो सकता है। हरिशरण जी के अनुसार यह प्राण और अपान का जोड़ा है।

पुरुदंससा – कई प्रकार के कार्य करने वाला

नरा – कर्मों के फल देने वाला, हमें प्रगतिशील बनाने वाला

शवीरया – वेग देने में सहायक

धिया – अग्नि तथा जल, बुद्धि

धिष्या – गति या कार्य में तीव्रता

वनतम् – प्रयोग करना, लाभकारी

गिरः – शिल्पकलाओं के विज्ञान, बौद्धिक कार्य

व्याख्या :-

अश्विना, दो का जोड़ा, हमारे जीवन में किस प्रकार महत्वपूर्ण है?

यदि हम अश्विना का अर्थ अग्नि और जल के रूप में लें तो इस मन्त्र का अर्थ है कि यह जोड़ा एक महान विज्ञान है और इसमें अनेकों महान कार्य करने की क्षमता है जिससे हमें अच्छे फल मिलें, हमारी गति और कार्यों को तीव्रता प्राप्त हो जिसका प्रयोग अनेकों लाभकारी कार्यों में किया जा सके।

जीवन में सार्थकता

कोई भी जोड़ा जब गम्भीरता और गहरी बुद्धि के साथ कोई भी महान कार्य कर सकता है। यह सिद्धान्त जिस प्रकार निर्जीव तत्त्वों पर लगता है, उसी प्रकार यह जीवों के परस्पर सम्बन्ध पर भी लगता है। यहाँ तक कि आध्यात्मिक पथ पर भी व्यक्ति को अपनी शारीरिक और मानसिक शक्तियों का संयोग करना पड़ता है जिससे वह अपनी आन्तरिक ईश्वरीय शक्ति का अनुभव प्राप्त कर सके।

ऋग्वेद मन्त्र-1-3-3

दस्मा युवाकवः सुता नासत्या वृक्तबर्हिषः ।

आ यातं रुद्रवर्तनी ॥३॥

दस्मा – दुखों का नाश करने वाले

युवाकवः – एक दूसरे से संयुक्त तथा पृथक

सुता – तत्त्वों तथा शक्तियों का उचित एवं पूर्ण उपयोग

नासत्या – जिसमें कुछ भी असत्य नहीं

वृक्त बर्हिषः – महान विद्वान लोग जो संयुक्त कार्यों के परिणाम की व्याख्या करते हैं

आयातम् – उन्हें हमारे निकट आने दो

रुद्रवर्तनी – शत्रुओं का नाश करना

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



व्याख्या :-

हमारे संयुक्त कार्यों के परिणाम अत्यन्त महान् कैसे होते हैं?

परमात्मा का यह निर्देश है कि हम परिस्थितियों की माँग के अनुसार अपनी शक्तियों, योग्यताओं और प्रकृति में उपलब्ध सभी तत्त्वों का संयोग पूर्वक या पृथक उचित तथा पूर्ण प्रयोग करें। इस बात में कुछ भी असत्य नहीं है और किसी भी तत्त्व या सहयोगी की योग्यता, क्षमता तथा शक्ति में कमी नहीं होगी।

महान् तथा विद्वान् लोगों को आमंत्रित करो जिससे वे संयुक्त प्रयासों और कार्यों के परिणामों की व्याख्या कर सकें, शत्रुओं और समस्याओं को समाप्त कर सकें। ऐसे सम्बन्ध तथा गतिविधियाँ हर कष्ट और कठिनाई को समाप्त कर देते हैं।

इसका अर्थ यह हुआ कि तत्त्वों या सहयोगियों की शक्तियों के अतिरिक्त उन महान् विद्वान् लोगों का भी बहुत महत्व है जो हमें हर तत्त्व के उचित उपयोग का मार्ग दर्शन दे सकते हैं और सहयोगियों के मन और मरितष्क को शुद्ध कर सकते हैं।

जीवन में सार्थकता

मन्त्र-1, 2 और 3 एक ही विचार की शृंखला प्रस्तुत करते हैं। मन्त्र-3 तत्त्वों के उचित उपयोग करने के ज्ञान, सहयोगियों की शुद्धता पर है। महान् विद्वान् लोगों अर्थात् विशेषज्ञों की सहायता तो लोगों के प्रत्येक समूह में तथा विज्ञान की प्रत्येक गतिविधि में अपेक्षित है।

ऋग्वेद मन्त्र-1-3-4

इन्द्रायाहि चित्रभानो सुता इमे त्वायवः।

अण्वीभिस्तना पूतासः। ॥4॥

इन्द्र – सर्वशक्तिमान् परमात्मा

आयाहि – कृपया हमारे पास आईये

चित्रभानो – आश्चर्ययुक्त ज्ञान एवं प्रकाश के धारक

सुता – समस्त शुभ गुण तथा ज्ञान, सांसारिक पदार्थ

इमे – ये

त्वायवः – आपके द्वारा उत्पन्न तथा आपके अभिन्न अंग, आपकी कामना वाले

अण्वीभिः – सूक्ष्म कारणों से सर्वत्र व्याप्त

तना – सदैव

पूतासः – शुद्ध तथा पवित्र करने वाले

व्याख्या :-

क्या हमें परमात्मा द्वारा दी गई वस्तुओं से संतुष्ट रहना चाहिए या परमात्मा की कामना करनी चाहिए?

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

सर्वशक्तिमान परमात्मा! कृपया हमारे निकट आईये, सदैव हमारी अनुभूति में रहें और हमें प्रत्येक कदम पर प्रेरित करें। उस सर्वोच्च शक्ति ने आश्चर्यजनक ज्ञान, शक्तियाँ पैदा की हैं और उन सबको हमें प्रदान किया है। जब भी हम इन वस्तुओं का, ज्ञान या शक्तियों का प्रयोग करते हैं तो हमें उस महान दाता की संगति की कामना भी करनी चाहिए, क्योंकि उसके द्वारा प्रदत्त समस्त उपहार सूक्ष्मतम् कारणों से पैदा हुए हैं, अतः सभी शुद्ध हैं और शुद्धि करने वाले हैं।

हमें परमात्मा के द्वारा दी गई वस्तुओं से ही संतुष्ट नहीं रहना चाहिए बल्कि उस महान शक्ति की अनुभूति की कामना भी करनी चाहिए। तभी हम अपने आपको शुद्ध रख पायेंगे। इसी प्रकार इससे विपरीत, यदि हम शुद्धता का ध्यान रखें, तो हम सरलता से उस सर्वोच्च शक्ति की अनुभूति प्राप्त कर सकते हैं।

जीवन में सार्थकता

किसी भी छोटे या बड़े प्रतिष्ठान में प्रत्येक उच्चाधिकारी सांसारिक लाभ, ज्ञान, प्रशिक्षण तथा मान—सम्मान आदि के रूप में आपको कई प्रकार के लाभ देता है। अतः निश्चित ही वह आपके कार्यों और व्यवहार में शुद्धता की कामना करता होगा। यदि हम इस प्रकार की नैतिकता को सिद्ध कर पायें तो निश्चय ही हम अपने उच्चाधिकारियों के साथ निकटता बना सकते हैं।

ऋग्वेद मन्त्र-1-3-5

इन्द्रायाहि धियेषितो विप्रजूतः सुतावतः।
उप ब्रह्माणि वाघतः ॥५॥

इन्द्र — सर्वशक्तिमान परमात्मा

आयाहि — कृपया हमारे पास आईये

धिया — बुद्धि से तथा बुद्धिमत्तापूर्वक किये गये कार्यों से

इषितः — कामना करने योग्य, प्राप्त करने योग्य

विप्रजूतः — बुद्धिमान लोग आपको जानने योग्य हैं

सुतावतः — जो सांसारिक तथा आध्यात्मिक विज्ञानों को जानते हैं, अपने अन्दर शुभ गुणों की रक्षा करते हैं

उप — निकट

ब्रह्माणि — महान विद्वान् तथा बुद्धि में प्रकाशित लोग

वाघतः — जो सबकी प्रसन्नता के लिए यज्ञ तथा कल्याणकारी कार्य सम्पन्न करते हैं

व्याख्या :-

हम परमात्मा से निकटता की अनुभूति किस प्रकार कर सकते हैं?

परमात्मा की सर्वोच्च बुद्धि की अनुभूति की कामना करना तथा उसे प्राप्त करना केवल बुद्धि तथा बुद्धिमत्तापूर्वक किये गये कार्यों से ही सम्भव है। बुद्धि से अभिप्राय सूक्ष्म मन से है। हम अपने मन की अनेकों

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

वैचारिक तरंगों तथा स्वार्थी कामनाओं को नियंत्रित करके अपने मन को परमात्मा की अनुभूति के पथ पर चला सकते हैं।

केवल बुद्धि में प्रकाशित लोग ही उसे जान सकते हैं। क्योंकि उन्होंने ज्ञान के समस्त सांसारिक और आध्यात्मिक पक्षों को जान लिया है और अपने भीतर शुभ गुणों की रक्षा की है।

परमात्मा ऐसे ही लोगों के निकट रहते हैं। जिनके पास महान् ज्ञान तथा जिनकी बुद्धि में प्रकाश होता है और जो सबके लिए यज्ञ अर्थात् कल्याणकारी गतिविधियाँ सम्पन्न करते हैं।

जीवन में सार्थकता

हम अपने उच्चाधिकारियों के साथ निकटता किस प्रकार बना सकते हैं?

हम अपने उच्चाधिकारियों के साथ अपनी महान् बुद्धि के माध्यम से ही निकटता बना सकते हैं। यह निकटता केवल उन्हीं लोगों के लिए सम्भव है जिनके पास निम्न लक्षण हों :—

1. जिनकी बुद्धि में प्रकाश है तथा वे और अधिक जानने की कामना करते हैं।
2. जिन्होंने अपने अन्दर नैतिकता तथा शुभ गुणों को संरक्षित किया है।
3. जो कल्याणकारी कार्य करते हैं।

ऋग्वेद मन्त्र-1-3-6

इन्द्रायाहि तूतुजान उप ब्रह्माणि हरिवः।
सुते दधिष्व नश्चनः ॥६॥

इन्द्र – ब्रह्माण्ड में विद्यमान वायु, हमारी प्राणवायु (यह दोनों दृष्टिकोण परमात्मा को व्यक्त करते हैं)

आयाहि – कृपया हमारे पास आईये

तूतुजानः – शीघ्र गतिवान्

उप – निकट आना

ब्रह्माणि – बुद्धि में प्रकाशित लोग

हरिवः – वेग आदि गुणों से युक्त, इन्द्रियों पर नियंत्रण करने वाला

सुते – लाभकारी सांसारिक पदार्थ तथा महान् शुभ गुण

दधिष्व – धारण करते हैं

नश्चनः – भोजन करने के लिए, पाचन तथा अन्य क्रियाओं के लिए, वस्तुओं का प्रयोग करने के लिए, ज्ञान प्राप्ति के लिए तथा शुभ गुणों के अनुपालन के लिए

व्याख्या :-

वायु के महत्त्व की अनुभूति से परमात्मा की अनुभूति किस प्रकार की जा सकती है?

सारे ब्रह्माण्ड में चारों तरफ व्याप्त वायु परमात्मा का प्रतिनिधित्व करती है। हम अपने व्यक्तिगत जीवन में प्रतिक्षण परमात्मा का स्वागत प्राण के रूप में करते हैं। यह गतिवान् होती है, अतः हमारी समस्त गतिविधियाँ तथा कार्य इसी वायु के कारण सम्भव होते हैं। यहाँ तक कि बुद्धि में प्रकाश करने के लिए तथा गति के लिए

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

दिव्यताएँ हमारे पास आती हैं। हम जो भोजन करते हैं वह पाचन क्रिया से निकलता है और इसी प्रकार एक स्वस्थ जीवन के लिए हम कई अन्य क्रियाएँ करते हैं। स्वस्थ जीवन के साथ ही प्रत्येक प्राणी अपने साथ सम्बद्ध वस्तुओं को धारण करता है जैसे – भिन्न-भिन्न पदार्थ, ज्ञान तथा शुभ गुण। इसका अभिप्राय यह है कि हमारे जीवन की सभी गतिविधियाँ वायु पर आश्रित हैं। वायु परमात्मा का ही एक उपहार है।

इस प्रकार इस ज्ञान तथा स्वार्थ रहित और अहंकार रहित गतिविधियों के बल पर हम परमात्मा की अनुभूति कर सकते हैं। इन लक्षणों को हमें दैनिक भोजन की तरह अपने जीवन में धारण करना चाहिए जिससे हम उस अनुभूति की अवस्था को जारी रख सकें।

जीवन में सार्थकता

वायु का हमारे जीवन में क्या महत्व है?

वायु का अर्थ है जारी रहना। वायु के बिना तीन मिनट में हमारी मृत्यु हो सकती है। वायु हमारे जीवन की सभी गतिविधियों के लिए महत्वपूर्ण है। जिस प्रकार भोजन के पाचन में तथा सभी गतिविधियों को सम्पन्न करने के लिए वायु आवश्यक होती है, सभी सांसारिक पदार्थों तथा शुभ गुणों का प्रयोग करने के लिए हम अपने जीवन को धारण करते हैं, इसी प्रकार हमें अच्छे भविष्य के लिए बुद्धिमत्तापूर्वक प्रयास करने चाहिए।

हमारे उच्चाधिकारियों तथा वृद्ध परिजनों ने भूतकाल में अनेकों बुद्धिमत्तायुक्त कार्य किये जिससे हमारा वर्तमान सुविधाजनक बना। स्वाभाविक है कि वे हमसे भी उसी बुद्धिमत्तायुक्त कार्यों की आशा रखेंगे जिससे एक अच्छे भविष्य का निर्माण हो सके।

हमारे बुद्धिमत्तायुक्त तथा शुभ गुणयुक्त कार्यों के बल पर ही हमारा एक स्तर बनता है और हमारे जीवन की गतिविधियाँ आगे बढ़ती हैं। जीवन की सभी गतिविधियों का उद्देश्य बुद्धिमत्ता तथा शुभ गुणों को बढ़ाने में ही निहित होना चाहिए जिससे यह परम्पराएँ भविष्य में भी चलती रहें।

ऋग्वेद मन्त्र-1-3-7
ओमासशर्षणीधृतो विश्वे देवास आ गत ।
दाश्वांसो दाशषुः सुतम् ॥७॥

ओमासः – परमात्मा का गुण जिसके द्वारा अपनी अपार शक्तियों जैसे ज्ञान, विज्ञान, शुभ गुण तथा अनुभूतियों से वे हर वस्तु की रक्षा करते हैं

चर्षणीधृतः – अपने सत्य उपदेशों (वेद) से सबको धारण करते हैं

विश्वेदेवासः – सभी महान तथा बुद्धि में प्रकाशित महानुभाव जिन्होंने परमात्मा तथा उसके ज्ञान की अनुभूति प्राप्त कर ली है

आ गत – कृपया हमारे पास आईये (हमारी अनुभूति में)

दाश्वांसः – अपने दिव्य लक्षणों से आप हमें भयमुक्त बना सकते हैं

दाशषः – सब लोगों को देते हैं

सुतम् – सभी विज्ञानों तथा शुभ गुणों का ज्ञान

व्याख्या :-

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

परमात्मा किस प्रकार इस ब्रह्माण्ड में सबको धारण तथा संरक्षित करते हैं?

परमात्मा के दो मुख्य लक्षण हैं :—

1. अपनी अपार शक्तियों जैसे ज्ञान, विज्ञान तथा शुभ गुणों के आधार पर वे सबका संरक्षण करते हैं।
2. अपने ज्ञान के आधार पर वे सबको धारण करते हैं।

अतः हमें उन सभी महान व्यक्तियों को आमंत्रित तथा स्वागत करना चाहिए जो परमात्मा के ज्ञान और शक्तियों की अनुभूति प्राप्त कर चुके हैं। ऐसे महान व्यक्ति भी हमारे लिए दो महान लाभकारी कार्य कर सकते हैं :—

1. हमें भयमुक्त बना सकते हैं।

2. हमें सभी विज्ञानों तथा शुभ गुणों का सत्य ज्ञान दे सकते हैं।

जीवन में सार्थकता

पूर्ण ज्ञान तथा विशेषज्ञ अनुभव का क्या महत्त्व है?

किसी भी क्षेत्र के पूर्ण ज्ञान तथा विशेषज्ञ अनुभव का सर्वत्र स्वागत किया जाता है, क्योंकि यह दो मुख्य तरीकों से सहायक होता है :—

1. शक्ति को प्रदान करके यह बाधाओं के प्रति भय समाप्त कर देता है।

2. यह हमें सत्य ज्ञान से अवगत करा देता है।

इसलिए प्रत्येक व्यक्ति को अपने कार्यक्षेत्र में पूर्ण ज्ञानयुक्त तथा शक्तिशाली व्यक्तित्व बनाना चाहिए। प्रगतिशील महान भविष्य तभी सम्भव हो सकता है जब कोई व्यक्ति अपने पूर्ण ज्ञान से अन्य लोगों को भी दुःखों और कष्टों से संरक्षण प्रदान कर सके।

ऋग्वेद मन्त्र-1-3-8

विश्वे देवासो अप्तुरः सुतमागन्त तूर्णयः।

उच्चा इव स्वसराणि ॥८॥

विश्वे देवासः — बुद्धि में प्रकाशित समस्त महान लोग जिन्होंने परमात्मा तथा उनके ज्ञान की अनुभूति प्राप्त कर ली है

अप्तुरः — शीघ्रता से गतिवान तथा तुरन्त कार्य करने वाले

सुतम् आगंत — नियमित रूप से हमारे पास आकर हमें सभी ज्ञान, विज्ञान तथा शुभ गुणों से प्रकाशित करें

तूर्णयः — ज्ञान के प्रकाश को चारों तरफ फैलाने के लिए

उच्चा इव — सूर्य की किरणों के समान

स्वसराणि — प्रातःकाल सुगमतापूर्वक आते हैं

व्याख्या :-

बुद्धि में प्रकाशित लोगों की प्रातःकालीन सूर्य की किरणों के साथ तुलना किस प्रकार की गई है?

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पञ्चांग वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

परमात्मा ने सभी लोगों को निर्देश दिया है कि वे उन लोगों को आमंत्रित तथा स्वागत करें जो बुद्धि में प्रकाशित हैं और शीघ्रतापूर्वक उनके निकट आकर सभी दिशाओं में ज्ञान का प्रकाश करते हैं। वे अच्छे प्रकार से ज्ञान-विज्ञान तथा शुभ गुणों से सबको प्रकाशित कर सकते हैं। वे प्रातःकालीन सूर्य की किरणों के समान ही सुगमतापूर्वक प्रकाश को फैलाने के लिए आते हैं इसलिए वे लाभकारी हैं।

इस मन्त्र को उन सभी ज्ञानी और बुद्धिमान लोगों के लिए एक कर्तव्य की तरह समझा जा सकता है जिससे वे सहज गतिपूर्वक ज्ञान का प्रकाश करते रहें। उनके इस कर्तव्यपालन में कोई बाधा न आये, स्वार्थी लाभ की कामना न पैदा हो, आलस्य न आये। बिना आलस्य के सहज गति महान ज्ञान के साथ सम्बन्धित है। जबकि विलासिता और आलस्य अज्ञानता से सम्बन्धित है।

जीवन में सार्थकता

बुद्धिमान लोगों का सर्वत्र सम्मान क्यों होता है?

अपने क्षेत्र के बुद्धिमान और प्रकाशित लोगों से सदैव सम्बन्ध बनाये रखना चाहिए। ऐसे लोगों की तुलना प्रातःकालीन सूर्य की किरणों से की गई है जो दिन को प्रकाशित करने के लिए स्वाभाविक रूप से आ जाती हैं। हम एक दिन की भी कल्पना नहीं कर सकते जब सूर्य की किरणें न आयें। इसी प्रकार हम बुद्धिमान, ज्ञानवान तथा प्रकाशित लोगों से सम्बन्ध बनाये बिना बुद्धि के प्रकाश, ज्ञान और शुभ गुणों की कल्पना नहीं कर सकते।

बुद्धि में प्रकाशित लोगों का सर्वत्र सम्मान होता है। इसलिए आप भी उसी प्रकार बुद्धि में प्रकाशित बनो या किसी बुद्धि में प्रकाशित व्यक्ति का अनुसरण करो।

ऋग्वेद मन्त्र-1-3-9
विश्वे देवासो अस्त्रिध एहिमायासो अद्रुहः ।
मेधं जुषन्त वद्यः ॥९॥

विश्वे देवासो – सभी महान तत्त्ववेत्ता पुरुष जो भगवान की अनुभूति तथा ज्ञान प्राप्त कर चुके हों।

अस्त्रिध – अनाशवान ज्ञान

एहिमायासो – सदैव सक्रिय (आलस्य रहित)

अद्रुहः – द्वेषरहित

मेधम् – ज्ञान और कर्म को समस्त प्राणियों के लिए संयुक्त करने वाले

जुषन्त – प्रत्येक को प्रसन्नतापूर्वक ऐसे लोगों की संगति का आनन्द लेना चाहिए

वद्यः – उनके कार्य सबकी प्रसन्नता के लिए होते हैं, वे अपने कर्म कर्तव्यों को तत्परता से स्वीकार करते हैं

व्याख्या :-

तत्त्ववेत्ता महापुरुषों के महत्त्वपूर्ण लक्षण कौन से हैं?

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



सभी महान् तत्त्ववेत्ता पुरुषों में निम्न लक्षण होते हैं :-

- (1) उनका ज्ञान अनाशवान् होता है। (अस्त्रिधः)
- (2) वे सदैव सक्रिय होते हैं (एहिमायासो)
- (3) वे द्वेषरहित होते हैं (अद्वृहः)
- (4) वे सबके कल्याण के लिए ज्ञान और कर्म को संयुक्त करते हैं (मैधम्)
- (5) वे अपने कर्म कर्तव्यों को तत्परता से स्वीकार करते हैं (वद्यः)

समस्त अनुयायियों तथा सामान्य लोगों को केवल एक ही कार्य करना होता है कि वे ऐसे लोगों की संगति प्रसन्नता पूर्वक तथा हृदय की गहराई से करें।

जीवन में सार्थकता

महान् व्यक्तियों के पांच दायित्व, सामान्य व्यक्तियों का एक दायित्व।

महान् तथा तत्त्ववेत्ता पुरुषों के महान् दायित्व हैं जबकि सामान्य व्यक्तियों का एक ही दायित्व है कि वे उन तत्त्ववेत्ता महापुरुषों की संगति प्रसन्नतापूर्वक करें।

महान् तत्त्ववेत्ता व्यक्ति तो अपने कड़े दायित्वों का निर्वहन करते हुए भी सहज दिखाई देते हैं, किन्तु सामान्य व्यक्ति अपने एक दायित्व की भी परवाह नहीं करते। वे नहीं चाहते कि कोई भी व्यक्ति उनमें वैदिक विवेक का विकास करने में सहायता करे। आधुनिक जीवन के कष्टों और दुःखों का मूल कारण केवल यही है।

ऋग्वेद मन्त्र-1-3-10

पावका नः सरस्वती वाजेभिर्वाजिनीवती ।

यज्ञं वष्टु धियावसुः ॥१०॥

पावका — पवित्र करने वाली

नः — हमारे लिए

सरस्वती — महान् ज्ञान जो सबके लिए कल्याणकारी तथा सर्वोच्च हो

वाजेभिर्वाजिनीवती — इस ज्ञान को प्राप्त करने के लिए जो भी साधन प्रयोग किये जाते हैं, वह ज्ञान उन सभी साधनों को कई गुना बढ़ाकर वापस करता है

यज्ञम् — कल्याणकारी कार्य

वष्टु — तत्त्व विवेक पैदा करने वाली

धियावसुः — ज्ञान और कर्म को संयुक्त करने वाली

व्याख्या :-

सरस्वती अर्थात् महान् ज्ञान क्या है?

केवल महान्, सबके लिए कल्याणकारी तथा सर्वोच्च ज्ञान हमारे कार्यों और व्यवहार के माध्यम से हमारी शुद्धि करता है। सरस का अर्थ है — समान रस, अर्थात् सबके लिए समान रूप से कल्याणकारी।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

जहाँ भी कहीं महान और कल्याणकारी ज्ञान होता है, वहाँ शुद्धि होती है। अन्यथा केवल सूचनाओं का संग्रह तो अज्ञान होता है और अशुद्धि पैदा कर सकता है।

ऐसे महान ज्ञान को प्राप्त करने के लिए भोजन तथा अन्य वस्तुओं के रूप में जो भी साधन प्रयोग किये जाते हैं या निवेश किये जाते हैं, यह ज्ञान उन सब साधनों को वापिस लौटा देता है। इस प्रकार महान ज्ञान, प्रसन्नता और समृद्धि का एक चक्र बन जाता है। जो ज्ञान सबके लिए कल्याणकारी नहीं होता वह विनाशकारी होता है और उसके परिणाम अपराधों और दुःखों के रूप में सामने आते हैं। ऐसा ज्ञान वास्तव में कोई ज्ञान नहीं अर्थात् अज्ञान होता है।

केवल महान और कल्याणकारी ज्ञान से ही कोई व्यक्ति तत्त्ववेत्ता बनकर अपने महान ज्ञान और सुकर्मों को संयुक्त करके दूसरों के लिए कल्याणकारी कार्य कर सकता है।

सूत्र-1

ज्ञान तथा कर्म का परिणाम महान फल वाले यज्ञ
अज्ञान तथा कर्म का परिणाम कष्ट भोगने के लिए अपराध

सूत्र-2

महान ज्ञान शुद्धि है, जबकि महान ज्ञान का न होना अशुद्धि है

जीवन में सार्थकता

अपने जीवन को सरस अर्थात् सबके लिए समान रूप से कल्याणकारी बनाओ। इससे सिद्ध होगा कि आपके पास सरस्वती अर्थात् महान और कल्याणकारी ज्ञान है। इसके बाद अपने कार्य करो। सरस्वती का प्रतिफल निवेश से कई गुना होता है।

ऋग्वेद मन्त्र-1-3-11
चोदयित्री सूनृतानां चेतन्ती सुमतीनाम् ।
यज्ञं दधे सरस्वती ॥11॥

चोदयित्री – प्रेरक, मस्तिष्क में घुसने वाली
सूनृतानाम् – मधुर तथा सत्य, गम्भीर तथा दयालु
चेतन्ती – चेतना पैदा करने वाली
सुमतीनाम् – उत्तम बुद्धि तथा ज्ञान वालों की
यज्ञम् – कल्याणकारी गतिविधियाँ
दधे – देने वाली, धारण करने वाली
सरस्वती – महान् तथा समानरूप से कल्याणकारी ज्ञान

व्याख्या :-

सरस्वती किस प्रकार यज्ञों अर्थात् कल्याणकारी गतिविधियों को धारण करती है?

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

सरस्वती जो महान तथा सबके लिए समानरूप से कल्याणकारी ज्ञान है, वह मस्तिष्क में घुसकर आन्तरिक रूप से मधुर तथा सत्य वाणी की प्रेरणा करने वाली है। यह उत्तम बुद्धि वाले लोगों में चेतना पैदा करती है। इस प्रकार सरस्वती मस्तिष्क, वाणी तथा सभी इन्द्रियों द्वारा सम्पन्न की जाने वाली गतिविधियों की शुद्धि करती है, जिससे व्यक्ति केवल कल्याणकारी गतिविधियों को ही सम्पन्न करता है। इस प्रकार सरस्वती यज्ञों अर्थात् कल्याणकारी गतिविधियों को धारण करने वाली बन जाती है।

जीवन में सार्थकता

महान और सबके लिए समानरूप से कल्याणकारी सरस्वती अन्दर से ही व्यक्ति को प्रेरित करती है। महान व्यक्तियों के स्तर की चेतना उत्पन्न करती है और कल्याणकारी गतिविधियों को धारण करती है। ऐसे मार्ग का परिणाम जीवन के किसी भी क्षेत्र में स्वाभाविक होता है। ऐसे व्यक्ति समाज की दृष्टि में तथा ईश्वर की अनुभूति के पथ पर भी उत्थान को प्राप्त करते हैं।

ऋग्वेद मन्त्र-1-3-12

महो अर्णः सरस्वती प्रचेतयति केतुना ।
धियो विश्वा वि राजति ॥12॥

महः — महान, अगाध

अर्णः — समुद्र

सरस्वती — महान तथा कल्याणकारी ज्ञान

प्रचेतयति — प्रकाशित करने वाली, प्रेरक

केतुना — श्रेष्ठ बुद्धि तथा शुद्ध गतिविधियों से

धियो विश्वा: — समस्त बुद्धियों को

विराजति — प्रभावित करती है

व्याख्या :-

सरस्वती सारे संसार पर किस प्रकार राज करती है?

सरस्वती की तुलना अगाध समुद्र से की गई है। जिस प्रकार समुद्र हीरे आदि रत्नों का स्रोत होता है, सरस्वती भी शब्दों और विचारों का समुद्र है तथा लोगों की बुद्धियों को प्रकाशित करके और शुद्ध गतिविधियों के द्वारा महान परिणाम उत्पन्न कर सकती है। इस प्रकार केवल सरस्वती, महान ज्ञान ही, समाज पर राज करती है।

जीवन में सार्थकता

हमारा सामान्य ज्ञान किस प्रकार सरस्वती बन सकता है?

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

सरस्वती अर्थात् महान् तथा सबके लिए समानरूप से कल्याणकारी वाणी की वन्दना तथा प्रशंसा करके आप भी अपने आस-पास घरों, कार्यस्थलों या समाज में लोगों के दिलों पर राज कर सकते हो। हम अपने सामान्य ज्ञान से सबके लिए कल्याणकारी कार्य करके उसे भी सरस्वती बना सकते हैं।

ऋग्वेद मण्डल-1, सूक्त-4

ऋग्वेद मन्त्र-1-4-1

सुरूपकृत्नमूलये सुदुधामिव गोदुहे।
जुहूमसि द्यविद्यवि ॥१॥

सुरूपकृत्नम् – सर्वोच्च निर्माता जिसने सब वस्तुओं का निर्माण किया, परमात्मा ऊतये – ज्ञान के लिए

सुदुधामिव – गाय माता से दूध प्राप्त करना

गोदुहे – पोषण की कामना वाले व्यक्ति के द्वारा

जुहूमसि – हम उसकी पूजा और स्तुति करते हैं

द्यवि द्यवि – प्रतिदिन नियमित रूप से

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

व्याख्या :-

हम परमात्मा की पूजा तथा स्तुति क्यों करते हैं?

हम परमात्मा की पूजा तथा स्तुति कब कर सकते हैं?

सृष्टि के सभी पदार्थों के सर्वोच्च निर्माता, परमात्मा, का हम आह्वान करते हैं। जिस प्रकार गाय का सेवक अपनी गाय माता से जब चाहे पोषण की वृद्धि के लिए दूध निकाल सकता है, उसी प्रकार किसी भी समय तथा किसी भी स्थान पर प्रतिदिन अपनी आत्मा की पोषण के लिए हम सर्वोच्च शक्तिमान निर्माता की पूजा तथा प्रशंसा कर सकते हैं। महान दिव्य ज्ञान तथा परमात्मा की अनुभूति हमारी आत्मा के पोषण हैं।

गाय शारीरिक तथा आर्थिक आवश्यकताओं की पूर्ति करने के लिए प्रतिदिन तथा किसी भी समय पर दूध देने के लिए उपलब्ध रहती है, इसीलिए उसकी पूजा माँ के समान की जाती है। इसी प्रकार परमात्मा भी हमारी पूजा स्वीकार करने के लिए, हमें ज्ञान देने के लिए तथा आध्यात्मिक पथ पर उन्नति के लिए हर समय उपलब्ध रहता है।

जीवन में सार्थकता

क्या परमात्मा की तरह हमारी भी प्रशंसा हो सकती है?

सर्वोच्च शक्तिमान परमात्मा हमारी आध्यात्मिक प्रगति के लिए है। गाय हमारी शारीरिक और आर्थिक प्रगति के लिए है। इसलिए दोनों की पूजा किसी भी समय हो सकती है।

यदि आप भी अपने परिवार, समाज या कार्य सम्बन्धी प्रतिष्ठानों की सहायता या सेवा के लिए हर समय उपलब्ध रहते हैं तो आपकी पूजा और प्रशंसा भी परमात्मा और गाय माता की तरह ही होगी। आप भी अपने निकट लोगों की बिना शर्त सेवा करके उनके लिए परमात्मा के समान ही बन सकते हैं।

अन्य लोगों के लिए दूध देने वाली गाय बनो – सुदुघामिव गोदुहे।

ऋग्वेद मन्त्र-1-4-2

उप नः सवनागहि सोमस्य सोमपाः पिब ।
गोदा इद्रेवतो मदः ॥२॥

उप नः – हमारे निकट

सवना – पदार्थों को प्रकाशित करने के लिए, सूर्य की किरणों के द्वारा, बलिदानों अर्थात् यज्ञों को आशीर्वाद देने के लिए

आगहि – कृपया आईये

सोमस्य – सब पदार्थों, ज्ञान और शुभगुणों के निर्माता

सोमपाः – हमारे अन्दर उन सब पदार्थों आदि के संरक्षक

पिब – हम ग्रहण करें

गोदा: – गाय आदि दान में देना, सूर्य की किरणों के द्वारा हमारी दृष्टि को शक्ति प्रदान करना

इत् – इस संकल्प के साथ, इस शक्ति के साथ

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

रेवतः — पदार्थ, ज्ञान तथा शुभ गुणों को धारण करने वाले लोग

मदः — आनन्दित होते हैं (पदार्थों आदि के द्वारा)

व्याख्या :-

भगवान की शक्तियाँ किस प्रकार असंख्य हैं?

भगवान सभी पदार्थों, ज्ञान तथा शुभ गुणों के निर्माता तथा संरक्षक हैं। वे हमें अपने द्वारा प्रदत्त पदार्थों आदि का प्रयोग करने की शक्ति भी देते हैं।

सर्वोच्च निर्माता परमात्मा इन सब पदार्थों आदि को अपने सूर्य की किरणों से प्रकाशित करते हैं, हमारे बलिदानों तथा कल्याणकारी गतिविधियों को आशीर्वाद देकर हमारे निकट आते हैं। हम उस परमात्मा का आह्वान करते हैं कि वे सदैव हमारे निकट अर्थात् हमारी अनुभूति में रहें।

मानवों को यह निर्देश दिया गया है कि वे अपने पास उपलब्ध समस्त वस्तुओं आदि का आनन्द दूसरों के साथ उन्हें सांझा करते हुए प्राप्त करें। परमात्मा इन सभी पदार्थों आदि को अपने सूर्य की किरणों से प्रकाशित करते हैं और साथ ही उसी अपने सूर्य की किरणों से हमारी आँखों तथा अन्य इन्द्रियों को यह शक्ति प्रदान करते हैं कि हम उन पदार्थों आदि का आनन्द ले सकें।

जीवन में सार्थकता

परमात्मा द्वारा प्रदत्त पदार्थों आदि के आनन्द को दीर्घकालिक किस प्रकार बनाया जा सकता है?

परमात्मा हर वस्तु का निर्माता तथा संरक्षक है। इससे भी अधिक वे हमें हर प्रकार की शक्ति प्रदान करते हैं जिससे हम उसकी निर्मित सृष्टि का आनन्द ले सकें। उस आनन्द को अपने जीवन में स्थाई बनाने के लिए हमें भी उन सब पदार्थों को किसी भी समय दूसरों के कल्याण हेतु बलिदान करने के लिए तैयार रहना पड़ेगा। इससे हमारा आनन्द वास्तविक तथा दीर्घकालिक हो सकता है। गोदा इद्रेवतो मदः — केवल दाता ही परमात्मा बन सकता है। इसलिए परमात्मा की तरह दाता बनो।

ऋग्वेद मन्त्र—1—4—3

अथा ते अन्तमानां विद्याम सुमतीनाम्।

मा नो अतिख्य आगहि ॥३॥

अथा — इसके बाद

ते — आपके

अन्तमानाम् — अत्यन्त निकट, आपको हृदय में महसूस करने वाले

विद्याम — आपको जानने में सक्षम

सुमतीनाम् — श्रेष्ठ आचरण करने वाले

मा — ना

नो — हमारे लिए

अतिख्य — अपनी निकटता, अपने ज्ञान और श्रेष्ठताओं को रोकें

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

आगहि – कृपया अपनी उपस्थिति तथा अनुभूति से हमारे आन्तरिक जीवन को प्रकाशित करें

व्याख्या :-

अन्य महानु पुरुषों की तरह आप किस प्रकार महान बन सकते हैं?

अनेकों ऐसे महान ऋषि और सन्त हुए हैं जिन्होंने परमात्मा की उपस्थिति को अपने अत्यन्त निकट, अपने आन्तरिक जीवन में अनुभूति के रूप में अनुभव किया। वे परमात्मा को जानने में सक्षम थे। उन्होंने महान श्रेष्ठ आचरण का व्यवहार दिखाया। इसी प्रकार हम भी परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि ऐसी भावनाओं, ज्ञान तथा शुभ गुणों को हमारे पास आने से न रोकें। हम भी ब्रह्माण्ड की उस सर्वोच्च शक्ति, परमात्मा की अनुभूति प्राप्त कर सकते हैं। हमें उन्हीं महान ऋषियों और सन्तों का अनुसरण करना होगा जिन्होंने परमात्मा की अनुभूति प्राप्त की थी।

(1) हमें अपने बल पर वह सब प्रयास करने चाहिए जिससे हम उन महान लोगों के गुणों को अपने अन्दर धारण कर सकें।

(2) ऐसे महान लोगों की संगति से हमें मार्गदर्शन तथा सहायता प्राप्त करनी चाहिए।

जीवन में सार्थकता

भौतिक तथा सामाजिक जीवन में ऊँचाईयों को किस प्रकार प्राप्त किया जा सकता है?

भगवान की अनुभूति प्राप्त करने के दो माध्यम हैं :-

(1) सीधी अनुभूति

(2) महान लोगों की संगति, वेद आदि महान ग्रन्थों का क्रियात्मक रूप से अनुसरण करना।

इसी सिद्धान्त का अनुसरण भौतिक और सामाजिक उन्नति के लिए भी किया जा सकता है :-

(1) अपनी योग्यताओं, क्षमताओं तथा अवस्था के अनुसार जहाँ कहीं सम्भव हो समाज की सीधी सेवा प्रारम्भ कर दो।

(2) दूसरों की सेवा करने के क्षेत्र में जो लोग पहले ही ऊँचाईयों पर पहुँच चुके हैं उनसे मार्ग दर्शन तथा सहायता प्राप्त करो।

आपके जीवन का लक्ष्य निश्चित रूप से अपने क्षेत्र में ऊँचाईयों को छूना ही होना चाहिए।

ऋग्वेद मन्त्र-1-4-4

परेहि विग्रमस्तृतमिन्द्रं पृच्छा विपश्चितम् ।

यस्ते सखिभ्य आ वरम् ॥4॥

परेहि – सांसारिक विषयों से दूर रहकर

विग्रम् – श्रेष्ठ बुद्धिमान

अस्तृतम् – अहिंसक, शुभ गुण

इन्द्रम् – दिव्यता धारण करने वाले, इन्द्रियों पर नियंत्रण करने वाले

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

पृच्छा — जाओ और पूछो (अपनी जिज्ञासाएँ)

विपश्चितम् (वी, पश, चित्तम) — जिन्होंने भगवान को समझकर अनुभूति प्राप्त कर ली है और उसकी शक्तियों को अपने हृदय में धारण कर लिया है

यः — जो

ते — आपके लिए

सखिभ्य — आपके समान मन वाले मित्र, दिव्यता को प्राप्त करने के इच्छुक

आवरम् — दिव्य ज्ञान, जिसे अर्जित किया जा सकता है, धारण किया जा सकता है और सुरक्षित रखा जा सकता है, उसके देने वाले

व्याख्या :-

महान अनुभूति प्राप्त आत्माओं के लक्षण?

यदि हम आध्यात्मिकता तथा दिव्य ज्ञान को प्राप्त करने के इच्छुक हैं तो हमारे लिए सबसे पहला कार्य यह होगा कि हम स्वयं को सांसारिक इच्छाओं से दूर रखें और उसके बाद उन महान आत्माओं की संगति करें जिनमें निम्न लक्षण हों :—

- (1) श्रेष्ठ बुद्धिमान,
- (2) अहिंसक और शुभ गुण वाले
- (3) दिव्यता धारण करने वाले, इन्द्रियों पर नियंत्रण करने वाले
- (4) भगवान को समझकर अनुभूति प्राप्त करने और उसकी शक्तियों को अपने हृदय में धारण करने वाले।
केवल ऐसे लोग ही दिव्य पथ पर उचित मार्गदर्शन दे सकते हैं।

जीवन में सार्थकता

एक अच्छे मार्गदर्शक के लक्षण?

दिव्य पथ हो या सांसारिक समस्याएँ, मार्गदर्शन ऐसे व्यक्ति से ही लेना चाहिए जिसकी योग्यता, क्षमता तथा व्यवहार सन्देह से परे हो। इस मन्त्र से एक महान मार्गदर्शक के चार लक्षण सिद्ध होते हैं :—

- (1) श्रेष्ठ बुद्धिमान व्यक्ति जिसे अपने विषय का पूर्ण ज्ञान हो
- (2) अहिंसक और शुभ गुण धारण करने वाला हो
- (3) दिव्यता, शुद्धता और दूसरों के कल्याण का भाव रखने वाला हो
- (4) अपने विषय के ज्ञान को जिसने समझकर और अनुभूति करके अपने हृदय में रखा हो।

ऋग्वेद मन्त्र—1-4-5

उत ब्रवन्तु नो निदो निरन्यतश्चिदारत ।

दधाना इन्द्र इहुवः ॥५॥

उत — निश्चित संकल्प के साथ

ब्रवन्तु — बोलते हैं

नो — नहीं

निदो — निन्दा

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

निः आरत – दूर रखते हैं

अन्यतः – अन्य निरर्थक कार्यों और चर्चाओं को

चित् – वास्तव में

दधाना – धारण करते हैं

इन्द्र – परमात्मा

इद – निश्चित रूप से

दुवः – उसकी चर्चा करते हैं

व्याख्या :-

आध्यात्मिक पथ पर उन्नति करने के लिए तीन महान निर्देश कौन से हैं?

आध्यात्मिक पथ पर प्रगति करने के लिए तीन क्रियात्मक निर्देश इस प्रकार हैं :-

(1) किसी की अनुपस्थिति में उनकी निन्दा न करना – हमें पीछे पीछे किसी की भी बुराई करने से स्वयं को रोककर रखना चाहिए। वैसे तो किसी की उपस्थिति में भी उनकी निन्दा नहीं करनी चाहिए। किसी की भी गलती को हमें केवल विनम्रता पूर्वक उसके कल्याण हेतु एक सुझाव की तरह प्रस्तुत करना चाहिए। ऐसा माना जाता है कि किसी गलत कार्य करने वाले व्यक्ति की निन्दा करने से उसके बुरे कार्य हमारे कर्म खाते में भी जुड़ जाते हैं। इससे हमारी शक्ति व्यर्थ जाती है।

(2) निरर्थक कार्यों में या निरर्थक बातों में शामिल नहीं होना चाहिए। समय तथा शक्ति का केवल लाभकारी गतिविधियों में ही प्रयोग करने पर ध्यान एकाग्र करना चाहिए।

(3) सर्वोच्च शक्ति, परमात्मा, के विषय में ही सदैव चर्चा करनी चाहिए। इसके अतिरिक्त अपने व्यक्तिगत जीवन की ऊर्जा, सबके स्वास्थ्य तथा कल्याण के बारे में ही चर्चाएँ होनी चाहिए।

जीवन में सार्थकता

जीवन में शान्ति और उन्नति के लिए तीन महान क्रियात्मक निर्देश कौन से हैं?

हमारे स्थान, समय या कार्यक्षेत्र की भिन्नताओं के बावजूद निम्न तीन निर्देश सर्वमान्य हैं, जो हमारे घर, कार्यस्थल, समाज या आध्यात्मिक पथ पर भी लागू होते हैं :-

(1) किसी की निन्दा नहीं

(2) लाभदायक कार्यों पर ही समय और शक्ति का प्रयोग करना

(3) अपने आपको ऊर्जावान बनाने तथा अन्यों के कल्याण के विषयों पर ही चर्चा करना।

इनका पालन करने से हमारी व्यक्तिगत ऊर्जा का स्तर बढ़ जाता है। हमारे प्रयासों के फल बढ़ जाते हैं। हम कई प्रकार की विकट परिस्थितियों से बच जाते हैं जैसे – गुटबाजी, अहंकार तथा विवाद। ऐसे लोगों की सर्वत्र तथा सबके द्वारा प्रशंसा होती है।

ऋग्वेद मन्त्र-1-4-6

उत नः सुभग्न अरिव॒च्युर्दर्सम् कृष्ट्यः ।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

स्यामेदिन्द्रस्य शर्माणि ॥६॥

उत – भी

नः – हमारा

सुभगान् – प्रशंसाएँ (हमारे कार्यों और गुणों की)

अरि: – शत्रुओं के द्वारा

वोचेयुः – गान हो

दस्म – सर्वोच्च स्वामी जो गलत कार्य करने वालों को दण्ड देता है

कृष्टयः – कड़ी मेहनत करने वाले बनो (प्रसन्नत और संतुलित मन से कार्य करो)

स्याम – प्रेरणा तथा स्थापित

इत् – संकल्प के साथ

इन्द्रस्य – परमात्मा में

शर्माणि – स्थाई सुख

व्याख्या :-

तीन महान् निर्देशों के परिणाम क्या होते हैं?

इस मन्त्र को इसी सूक्त के पांचवें मन्त्र के साथ समझना चाहिए। यदि हम आध्यात्मिक पथ पर प्रगति करने के लिए तीन महान् निर्देशों का अनुसरण करें अर्थात् किसी की निन्दा न करें, समय और शक्ति का सदुपयोग करने पर ध्यान केन्द्रित करें और सदैव सर्वोच्च शक्तिमान परमात्मा की चर्चा करें तो हम एक ऐसा वातावरण बना सकते हैं जिसमें हमारे शत्रु भी हमारी प्रशंसा करेंगे और हमारा गुणगान करेंगे। दूसरों की गलतियाँ हमारी समस्या नहीं हैं। पूर्ण सक्षम परमात्मा प्रत्येक गलत कार्य करने वाले को दण्डित करता है। हमें तो केवल अपने कार्यों पर ही ध्यान केन्द्रित करना चाहिए। हम संतुलित दिमाग से कड़ी मेहनत तभी कर सकते हैं जब हम निर्थक कार्यों तथा चर्चाओं में शामिल न हों। इस प्रकार हम अपने आपको अपने संकल्प के साथ परमात्मा के स्थाई सुख में स्थापित कर पायेंगे।

जीवन में सार्थकता

स्थाई सुख की योजना क्या है?

तीन निर्देश :-

(1) किसी की निन्दा नहीं

(2) लाभदायक कार्यों पर ही समय और शक्ति का प्रयोग करना

(3) केवल सर्वोच्च शक्ति पर ही चर्चा करना।

तीन परिणाम :-

(1) आपके शत्रु आपकी प्रशंसा करेंगे

(2) आप संतुलित मन के साथ कड़ी मेहनत कर सकेंगे

(3) आपको आन्तरिक शक्ति का स्थाई सुख प्राप्त होगा।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पञ्चवती वेदिका

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

सिद्धान्त :— केवल परमात्मा गलत कार्य करने वालों को दण्डित करता है, हम या हमारी चर्चाएँ नहीं।

ऋग्वेद मन्त्र-1-4-7

एमाशुमाशवे भर यज्ञश्रिंय नृमादनम् ।
पतयन्मदयत्सखम् ॥७॥

ईम् — ये

आशुम् — वेग तथा अन्य गुणों वाले पदार्थ, शुभ गुण

आशवे — परमात्मा की अनुभूति के लिए, सुख और शांति दायक सम्पत्ति प्राप्त करने के लिए

भर — धारण

यज्ञश्रियम् — दूसरों का कल्याण करने वाले श्रेष्ठ व्यक्ति की महान् प्रसिद्धि

नृमादनम् — प्रगतिशील व्यक्ति को आनन्द देने वाले

पतयत् — स्वामीपन का आभास

मन्दयत् — आनन्द की अनुभूति

सखम् — मित्र की भाँति

व्याख्या :-

समस्त पदार्थों और शुभ गुणों का क्या उद्देश्य है?

सर्वोच्च कल्याणकारक तथा वस्तुओं के देने वाले परमात्मा की अनुभूति प्राप्त करने के लिए हमें आकाश, वायु, अग्नि, जल और पृथ्वी आदि पाँच तत्त्वों से बने समस्त सांसारिक पदार्थों को तथा शुभ गुणों को धारण करना चाहिए।

ये पदार्थ तथा शुभ गुण हमारी प्रसिद्धि का कारण होते हैं जब हम इन्हें अन्य लोगों के कल्याण अर्थात् यज्ञ के लिए प्रयोग करते हैं।

ये पदार्थ तथा शुभ गुण प्रगतिशील व्यक्ति के जीवन में आनन्द का कारण बनते हैं। दूसरी तरफ ये पदार्थ और शुभ गुण हमें उनके स्वामी भाव की अनुभूति देते हैं। इनकी उपस्थिति मित्र की भाँति आनन्ददायक होती है।

परन्तु हमें सदैव यह स्मरण रखना चाहिए कि इन सब पदार्थों और शुभ गुणों का उद्देश्य जीवन में परमात्मा की अनुभूति प्राप्त करना ही है।

जीवन में सार्थकता

हमें समस्त पदार्थों और शुभ गुणों को धारण करते हुए निम्न विचार मन में रखने चाहिए :—

- (1) ये कल्याणकारी कार्यों को करने के लिए हैं,
- (2) इनसे महान् प्रसिद्धि प्राप्त होती है,
- (3) इनसे अपार आनन्द प्राप्त होता है,

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

- (4) इनसे स्वामीपन का एहसास होता है,
- (5) ये सखा की भाँति प्रतीत होते हैं,
- (6) इन सबका उद्देश्य परमात्मा की अनुभूति प्राप्त करना है।

ऋग्वेद मन्त्र-1-4-8

अस्य पीत्वा शतक्रतो घनो वृत्रणामभवः।
प्रावो वाजेषु वाजिनम् ॥८॥

अस्य पीत्वा – इनका सेवन करने के बाद

शतक्रतो – असंख्य कार्यों को करने वाले

घनो – बादल

वृत्रणाम् अभवः – बुराईयों तथा रोगों को नष्ट करने वाला

प्रावो – रक्षा

वाजेषु – जीवन के इस संग्राम में

वाजिनम् – रक्षक

व्याख्या :-

परमात्मा किसकी रक्षा करता है?

सर्वशक्तिमान् सर्वोच्च सत्ता सम्पन्न परमात्मा इस ब्रह्माण्ड में असंख्य कार्यों को करता है। अपनी महान् कृति, सूर्य के माध्यम से वह बादलों का सेवन करके वर्षा की उत्पत्ति करता है जिससे रोग नष्ट होते हैं और पोषणकारक पदार्थ उत्पन्न होते हैं।

इसी प्रकार सक्रिय तथा बुद्धिमान लोग अनेकों प्रकार की तपस्याओं के बाद परमात्मा की अनुभूति के रूप में अमृतपान करते हैं जिससे बुराईयों को नष्ट करके शुभ गुणों को पैदा किया जा सके। सुदृढ़ और सक्षम शरीर वाले योद्धा अन्य लोगों के कष्टों और दुःखों का सेवन करते हैं जिससे पापी और अपराधी वृत्तियों को समाप्त किया जा सके और सामान्य लोगों की रक्षा की जा सके।

सर्वोच्च स्वामी ऐसे समस्त बुद्धिमान और शक्तिशाली लोगों का संरक्षण करता है जो अपने हितों का बलिदान करके अपने कन्धों पर सामान्य लोगों की रक्षा का दायित्व लेते हैं।

जीवन में सार्थकता

संरक्षण दिव्य सृष्टि का सर्वमान्य सिद्धान्त है।

परमात्मा उनकी रक्षा करता है जो शुभ गुणों की रक्षा करते हैं। यह सर्वमान्य सिद्धान्त है। परिवारों में प्रत्येक व्यक्ति मुखिया सदस्य से प्रेम करता है जो सबके जीवन के सुचारू संचालन के लिए कार्य करता है। कार्यस्थलों पर तथा समाज में सभी उच्चाधिकारी तथा महान नेता सम्मान के पात्र होते हैं, क्योंकि वे अपने

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

निम्न अधिकारियों तथा सामान्यजनों की रक्षा करते हैं। महान् लोग अपने व्यक्तिगत हितों तथा सुविधाओं की अनदेखी करके भी दूसरों के कल्याण के लिए अपने अधिकारों का प्रयोग करते हैं। यह वास्तव में दिव्य सृष्टि की माँग है।

ऋग्वेद मन्त्र-1-4-9
तं त्वा वाजेषु वाजिनं वाजयामः शतक्रतो ।
धनानामिन्द्र सातये ॥९॥

तम् त्वा – उस आपको (शतक्रतो)

वाजेषु – जीवन के इस संग्राम में

वाजिनम् – सर्वोच्च रक्षक, योद्धा

वाजयामः – उसे हम जानने तथा उसकी अनुभूति का प्रयास करते हैं

शतक्रतो – असंख्य कार्यों को करने वाला

धनानाम् – पूर्ण सम्पत्ति के लिए

इन्द्र – परमात्मा

सातये – हम आपकी स्तुति तथा प्रशंसा करते हैं

व्याख्या :-

हम परमात्मा की स्तुति तथा प्रशंसा क्यों करते हैं?

इस सूक्त के मन्त्र 8 और 9 का संयुक्त स्वाध्याय करें – परमात्मा ही अन्ततः हमारा संरक्षक है और असंख्य कार्यों को करने वाला है जिसे हम जानने का तथा उसकी अनुभूति प्राप्त करने का प्रयास करते हैं। हम उस सर्वोच्च शक्तिवान तथा ऊर्जावान परमात्मा की पूजा करते हैं।

जीवन में सार्थकता

अन्य लोगों का संरक्षण करके आप अपने जीवन को महान बना सकते हैं।

अन्ततः हमारा सर्वोच्च संरक्षक परमात्मा ही है, इसलिए हम परमात्मा की पूजा और प्रशंसा करते हैं तथा उसकी अनुभूति प्राप्त करने का प्रयास करते हैं। क्रियात्मक रूप से वास्तव में यदि आपने अपने जीवन को महान् बनाना है तो आपको अपना हर कार्य और व्यवहार दूसरों के संरक्षक की तरह ही करना चाहिए।

ऋग्वेद मन्त्र-1-4-10
यो रायोऽवनिर्महान्त्सुपारः सुन्वतः सखा ।
तस्मा इन्द्राय गायत ॥१०॥

यो – जो

रायः – दिव्य सम्पत्ति – भौतिक, मानसिक तथा आध्यात्मिक

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

अवनि: – उत्पत्तिकर्ता तथा उपलब्ध कराने वाला

महान् – अपनी महानता के कारण पूजा तथा प्रशंसा के योग्य

सुपारः – वह समस्त कार्यों को सुविधाजनक करता है और सब कामनाओं को पूरा करता है

सुन्वतः – अन्य लोगों के कल्याण में लगे हुए लोग

सखा – मित्र

तस्मा – उसकी

इन्द्राय – सर्वोच्च सत्ता

गायत – प्रशंसा में गाओ

व्याख्या :-

परमात्मा की महानता क्या है?

सर्वोच्च संरक्षक होने के नाते परमात्मा अपनी महानताओं के कारण ही पूजनीय है, क्योंकि :-

(1) वह भौतिक, मानसिक और आध्यात्मिक रूपी दिव्य सम्पत्ति का उत्पत्तिकर्ता तथा उपलब्ध कराने वाला है।

(2) वह समस्त कार्यों को सुविधाजनक करता है और सब कामनाओं को पूरा करता है।

(3) वह उन सब लोगों का मित्र है जो दूसरों का कल्याण करते हैं।

अतः उसी सर्वोच्च सत्ता की प्रशंसा का गुणगान करना चाहिए।

जीवन में सार्थकता

जिन लोगों के पास महान् विवेक है, ऊर्जा है तथा सहायता की प्रकृति है, वे भी महान् तथा परमात्मा के मित्र माने जाते हैं।

जिस प्रकार परमात्मा ब्रह्माण्ड में सर्वोच्च है, उसी प्रकार हमारे निकट, परिवारों में, कार्यस्थलों में तथा समाज में ऐसे अनेकों लोग होते हैं जिनका हमारे जीवन में सर्वोच्च महत्त्व है। उनका महान विवेक, उनका ऊर्जा स्तर तथा उनकी सहायता और समर्थन उन्हें अनेकों लोगों के लिए महत्वपूर्ण बना देती हैं। ऐसे लोग सर्वोच्च ऊर्जावान परमात्मा के मित्र होते हैं। हम परमात्मा के ऐसे मित्रों का भी उसी प्रकार सम्मान और प्रशंसा करते हैं जैसे हम परमात्मा की प्रशंसा करते हैं।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

ऋग्वेद मण्डल-1, सूक्त-5

ऋग्वेद मन्त्र-1-5-1

आ त्वेता निषीदतेन्द्रमभि प्रगायत ।
सखायः स्तोमवाहसः ॥१॥

आ – (निषीद के साथ प्रयुक्त)
त्वेता (तू एता) – आप कृपया आओ
निषीदत् (आनिषीदत्) – अपना सम्मानजनक आसन ग्रहण करो
इन्द्रम् – सर्वोच्च नियंत्रक, ऊर्जा, परमात्मा
अभि प्रगायत – परमात्मा की प्रशंसा का गान करो, ऊर्जा प्रयोग के लक्षणों का आविष्कार करो
सखायः – सबके साथ मित्रता का भाव (दिव्य बुद्धि), परमात्मा के मित्र
स्तोमवाहसः – परमात्मा की प्रशंसा करना तथा परमात्मा से निकटता के कारण सबके द्वारा प्रशसित होना

व्याख्या :-

परमात्मा के मित्र कौन हैं और वे सम्मान के अधिकारी क्यों होते हैं?

यह मन्त्र परमात्मा के मित्रों के सम्मान में गाया गया है। उन्हें समूह में एक सम्मानजनक स्थान प्रस्तुत किया जाता है। उनसे आशा और प्रार्थना की जाती है कि वे परमात्मा की प्रशंसा में गाये क्योंकि परमात्मा ब्रह्माण्ड की सर्वोच्च शक्ति है। ऐसे महान् लोगों को परमात्मा का मित्र (सखायः) माना जाता है इसलिए लोग उनसे परमात्मा की प्रशंसा की आशा करते हैं। इसीलिए लोग वापस ऐसे दिव्य पुरुषों की भी प्रशंसा करते हैं।

यदि इन्द्र का अर्थ वायु या अन्य तत्त्वों की शक्ति के रूप में लिया जाये तो वैज्ञान के विशेषज्ञों को समूह में सम्मानजनक स्थान भेट करके उनका स्वागत किया जाता है जिससे उनसे वायु तथा अन्य तत्त्वों के भिन्न प्रयोगों, शोध कार्यों तथा नये आविष्कारों के बारे में जानकारी प्राप्त की जा सके। इस प्रकार ऐसे वैज्ञानिक भी पदार्थों के प्रयोग और नये शोध से सम्बन्धित जानकारियों को प्रस्तुत करने के बदले प्रशंसाएँ प्राप्त करते हैं। ऐसे वैज्ञानिकों को भी इन्द्र अर्थात् वायु तथा प्रकृति के अन्य तत्त्वों का मित्र माना जाता है।

शिक्षण संस्थाओं में अध्यापकों को भी इसी प्रकार का सम्मान प्रदान करते हुए स्वागत प्राप्त होता है जो भिन्न-भिन्न प्रकार के ज्ञान छात्रों को देकर परमात्मा के मित्र के रूप में कार्य करते हैं। परमात्मा स्वयं भी सर्वोच्च अध्यापक है। परमात्मा ने वेद ज्ञान ऋषियों को उनकी ध्यानावस्था में दिया जब वे महान निर्माता की अनुभूति प्राप्त करने का प्रयास कर रहे थे। इसलिए हमें सदैव प्रत्येक अध्यापक का परमात्मा के मित्र की तरह स्वागत करना चाहिए। महान् त्यागी नेता, समाज सुधारक तथा सामाजिक कार्यकर्ता भी परमात्मा के मित्र की तरह होते हैं और गर्मजोशी तथा हृदय से स्वागत के अधिकारी होते हैं।

जीवन में सार्थकता

सबके कल्याण में लगा हर व्यक्ति परमात्मा का मित्र है।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

इस मन्त्र का केन्द्रीय विचार यह है कि परमात्मा के मित्रों का स्वागत होना चाहिए जो परमात्मा की प्रशंसा में गाते हैं। उन्हें भी वापिस उसी प्रकार की प्रशंसा मिलनी चाहिए। प्रत्येक विशेषज्ञ, ज्ञानवान् व्यक्ति, परिवारों में या कहीं भी जो दूसरों के कल्याण के लिए कार्य करते हैं उसे परमात्मा का मित्र ही मानना चाहिए।

ऋग्वेद मन्त्र—1—5—2
पुरुतम् पुरुणामीशानं वार्याणाम् ।
इन्द्रं सोमे सचा सुते ॥२॥

पुरुतम् — परमात्मा, गलती का एहसास करवाकर न्याय का देने वाला
पुरुणाम् ईशानम् — धरती से आकाश तक असंख्य पदार्थों का निर्माता होने की शक्ति केवल परमात्मा में है

वार्याणाम् — अत्यन्त लाभदायक (समस्त निर्मित पदार्थ)
इन्द्रम् — परमात्मा, समस्त लाभदायक पदार्थों का देने वाला
सोमे — ज्ञान के माध्यम से प्राप्त समस्त वस्तुएँ
सचा — ज्ञान के द्वारा सम्पन्न प्रत्येक कार्य
सुते — गतिविधियों से उत्पन्न परिणाम

व्याख्या :-

दिव्य कार्य प्रणाली की श्रृंखला क्या है?

निःसंदेह धरती से आकाश तक समस्त सांसारिक पदार्थों का निर्माता केवल परमात्मा ही है। यह केवल उसी की योग्यता है। इस कार्य को कोई अन्य नहीं कर सकता। परन्तु उसकी न्याय करने की शक्ति, पुरुतम्, को सदैव ध्या में रखना चाहिए। उसकी कार्य प्रणाली की श्रृंखला को सरलता पूर्वक इस प्रकार समझा जा सकता है :-

- (1) सोमे — ज्ञान देता है।
- (2) सचा — उस ज्ञान से लोग असंख्य गतिविधियाँ सम्पन्न करते हैं। प्रत्येक व्यक्ति में ज्ञान का स्तर भिन्न-भिन्न हो सकता है, इसलिए उनकी गतिविधियों की प्रकृति तथा गुणवत्ता भिन्न-भिन्न होती है।
- (3) सुते — परमात्मा प्रत्येक व्यक्ति को उसकी गतिविधियों का परिणाम फल के रूप में देता है। यह फल गतिविधियों को सम्पन्न करने तथा मानसिक नियत के आधार पर निर्धारित होता है।

इसलिए हमें गहराई से समझना चाहिए कि परमात्मा ने सृष्टि के निर्माण के समय वेद ज्ञान प्रदान करके मनुष्यों को क्या निर्देश देने की इच्छा की। अन्यथा कम समझ के साथ या भावनाओं की कमी के कारण हमारे हाथ से गलत या अधूरे कार्य सम्पन्न होने की सम्भावना होगी और उसी के अनुसार हमें गलत या अधूरे परिणाम प्राप्त होंगे। यह परमात्मा का अनुशासन है क्योंकि प्रत्येक कार्य और नियत का फल देने की सर्वोच्च शक्ति परमात्मा के पास ही है।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

जीवन में सार्थकता

ज्ञान, कर्म तथा फल

प्रत्येक स्थान पर हमें किसी न किसी अनुशासन का पालन करना ही होता है। वह स्थान हमारा घर हो, कार्यस्थल हो या समाज। जब भी हम कोई गलती करते हैं तो हमें दण्ड भोगना पड़ता है। यह कर्म और फल का सिद्धान्त है। परमात्मा ब्रह्माण्ड की सर्वोच्च शक्ति है, अतः कर्मफल सिद्धान्त की भी सर्वोच्च अधिकारिक सत्ता है। हमारे कार्य पूरी तरह दोषरहित हो सकते हैं यदि हम सृष्टि निर्माण के पीछे परमात्मा के विचारों को समझ लें। हमारी समझ उचित तथा पूर्णता के निकट होनी चाहिए।

कर्मफल का यह सिद्धान्त समाज के किसी भी क्षेत्र में सर्वमान्य रूप से लागू होता है। इसलिए जीवन के सभी पड़ावों को उचित तरीके से पार करने के लिए हमें यह सुनिश्चित करना चाहिए कि :-

- (1) हम अपने वृद्ध पुरुषों तथा उच्चाधिकारियों के विचारों और नियत को उचित प्रकार से समझें।
- (2) उन विचारों के अनुसार किस प्रकार के कार्यों की आवश्यकता है।
- (3) अपने कार्यों के परिणाम चाहे वो पुरस्कार के रूप में हो या दण्ड के रूप में, स्वीकार करने के लिए सदैव तैयार रहें।

यह नहीं भूलना चाहिए कि सर्वोच्च अनुशासन सत्ता हमें कई प्रकार के भौतिक लाभ और सुविधाएँ प्रदान करती है इसलिए हमें उनके विचारों और नियत के अनुशासन में रहकर ही कार्य करना चाहिए।

ऋग्वेद मन्त्र-1-5-3

स धा नो योग आभुवत्स राये स पुरन्ध्याम्।
गमद्वाजेभिरा स नः ॥३॥

सः — वह सर्वोच्च शक्ति (परमात्मा)

धा — निश्चय ही

नो — हमारे लिए

योग — सुविधाजनक समस्त पदार्थ उपलब्ध करवाता है

आभुवत् — वह हमारे जीवन का प्रकाश है

सः — वह (परमात्मा)

राये — समस्त पदार्थ तथा सम्पत्तियाँ उपलब्ध करवाता है

सः — वह (परमात्मा)

पुरन्ध्याम् — अनेक प्रकार का ज्ञान, बुद्धि आदि देता है

गमत् (आगमत्) — हमारे पास आता है

वाजेभिः — भोजन आदि के साथ

सः — वह (परमात्मा)

नः — हमारे लिए

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

व्याख्या :-

परमात्मा देने वाला है या मार्गदर्शक भी है?

निश्चय ही, परमात्मा, सुविधा की समस्त वस्तुएँ हमें उपलब्ध कराकर प्रतिक्षण हमारे जीवन का प्रकाश बनता है। वह महान् दाता है इसलिए वह हमारे मस्तिष्क में भी प्रवेश करता है। वह हमें हर प्रकार की वस्तु तथा सम्पत्तिया, हर प्रकार का ज्ञान तथा भोजन इत्यादि देता है और हर वस्तु के साथ वह हमारे निकट आता है।

इसलिए यह हमारा कर्तव्य है कि हम उसे अपना मार्गदर्शक भी स्वीकार करें। यह हमारे लिए स्वाभाविक रूप से अच्छा ही होगा। अन्यथा हम हर वस्तु के निर्माता और दाता के विचारों को समझकर उनके अनुसार गतिमान नहीं हो पायेंगे।

जीवन में सार्थकता

देने वाला सदैव हमारे जीवन को प्रभावित करता है।

एक वास्तविक और मूक दाता की महानता इस बात में होती है कि वह मार्गदर्शन देने के लिए हमारे मस्तिष्क में प्रवेश कर जाता है। हमें अपने जीवन में सभी दाताओं को अपना मार्गदर्शक स्वीकार करना चाहिए। इसे एक अनुशासन समझना चाहिए जिससे दाता के साथ हमारे सद्भावनापूर्ण सम्बन्ध बने रहें और हमें शांति तथा समृद्धि प्राप्त हो। इसी से हम अपनी कृतज्ञता भी व्यक्त कर पाते हैं।

घर पर हमारे माता—पिता दाता हैं। उन्हीं के माध्यम से हमें यह सुन्दर शरीर तथा मन प्राप्त हुआ है। उन्हें महान् दाता के रूप में स्वीकार करना चाहिए।

कार्यस्थल पर हमारे उच्चाधिकारी दाता हैं। उनके निर्देशों का पालन अनुशासन है और कानून भी है।

समाज में सरकार नागरिकों के लिए दाता है। इसलिए प्रत्येक नागरिक का यह कर्तव्य है कि वह सरकार के निर्देशों को कानून मानकर पालन करे।

ऋग्वेद मन्त्र-1-5-4

यस्य संस्थे न वृष्टते हरी सहस्रमत्सु शत्रवः।

तस्मा इन्द्राय गायतः ॥४॥

यस्य — जो (परमात्मा)

संस्थे — ब्रह्माण्ड में सब जगह उपस्थित है, भक्त के मन में उपस्थित है, सहायक है

न — नहीं

वृष्टते — हमला, शक्ति का संग्रहण

हरी — इन्द्रियों की सम्पूर्ण शक्ति (दुःखों को दूर करने के लिए), रोगों का उपचार करने के लिए हरियाली

सहस्र — युद्धों में

शत्रवः — शत्रु ताकतें

तस्मा — वह

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

इन्द्राय – परमात्मा, सूर्य

गायत – की स्तुति तथा पूजा करनी चाहिए

व्याख्या :-

परमात्मा को अपने हृदय में स्थापित करने के क्या लाभ हैं?

एक बार जब हम उस सर्वोच्च दाता को अपना मार्गदर्शक स्वीकार कर लेते हैं और उसे हृदय में स्थापित कर लेते हैं तो वह सर्वोच्च ऊर्जा हमारे जीवन में व्यापक हो जाती है।

ऐसी परिस्थिति में शत्रु ताकतें अध्यात्मिक और भौतिकवादी संग्राम में हमारी शारीरिक या मानसिक स्थितियों पर हमला नहीं कर पाती। इस प्रकार दिव्यता का एक स्पर्श हमारे लिए हरी बन जाता है। सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा, की अनुभूति हृदय में उत्पन्न होने तथा उसकी उपस्थिति के एहसास से हमारी समस्त अवस्थाएँ पवित्र तथा शक्तिशाली हो जाती हैं।

इसलिए हमें अपनी आध्यात्मिक यात्रा को प्रभावशाली तरीके से चलाने के लिए उस सर्वोच्च ऊर्जा की प्रशंसा तथा पूजा अवश्य करनी चाहिए।

इन्द्र को सूर्य के रूप में भी व्यक्त किया जाता है। सूर्य भी सब जगह विद्यमान है और इसके प्रभाव से हर स्थान शुद्ध होता है। सूर्य अपने प्रकाश तथा चुम्बकत्व के कारण समस्त ऊर्जाओं और ताकतों का स्रोत है। सूर्य की ऊर्जा के कारण रोग भी ऐसे स्थानों पर हमला नहीं कर पाते जिन्हें हरी कहा जाता है। इसलिए सूर्य के गुणों और शक्तियों का लाभ उठाते हुए हम उसकी पूजा करते हैं। सूर्य उस हरियाली को पोषण देता है तथा सुरक्षित रखता है जो समस्त जीवों के लिए लाभकारी है।

जीवन में सार्थकता

सूर्य से अपने आपको ऊर्जावान बनाओ, क्योंकि वह एक दिव्य ऊर्जा है।

हमें परमात्मा को अपने हृदय में महसूस करना चाहिए। इससे हमारी जीवन यात्रा शान्त तथा प्रगतिशील बन सकेगी और इसमें दुःख, पीड़ाएँ इत्यादि अधिक नहीं होंगे।

हम अपने दैनिक जीवन में सूर्य की ऊर्जा का प्रयोग करते हैं। सूर्य की गर्मी तथा प्रकाश हमारे शरीर और मन के लिए अत्यन्त पोषणकारी है। ठण्डक अनेकों रोगों का कारण है जबकि सूर्य का ताप उपचार है।

भगवान तथा सूर्य दोनों ही शुद्धिकारक हैं और सर्वोच्च रक्षक हैं।

ऋग्वेद मन्त्र-1-5-5

सुतपाने सुदृता इमे शुचयो यन्ति वीतये ।

सोमासो दध्याशिरः ॥५॥

सुतपाने – हमारी रक्षा के लिए परमात्मा द्वारा निर्मित

सुता इसे – समस्त पदार्थ तथा ज्ञान आदि

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

शुचयो – शुद्धिकारक

यन्ति – हमारे द्वारा प्राप्त सभी पदार्थ तथा ज्ञान

वीतये – हमें ज्ञानवान बनाने के लिए तथा हमारे प्रयोग के लिए

सोमासो – सभी पदार्थ तथा ज्ञान

दध्याशिरः – हमें शरीरों को धारण करने योग्य तथा बुरे विचारों का दमन करने योग्य बनाते हैं

व्याख्या :-

सृष्टि का क्या उद्देश्य है?

सभी पदार्थ तथा ज्ञान परमात्मा द्वारा निर्मित हैं, जिससे (1) हमारी रक्षा हो सके, (2) हमारी शुद्धि हो सके तथा (3) हम ज्ञानवान बन सकें।

इस प्रकार हम अपने शरीरों और ज्ञान को धारण करने योग्य बनते हैं तथा बुरे विचारों का दमन करने योग्य बनते हैं। सृष्टि की यह अत्यन्त सामान्य प्रक्रिया है।

सृष्टि का उद्देश्य शुचयो अर्थात् शुद्धि करना है। हमें जो भी पदार्थ तथा ज्ञान प्राप्त होते हैं, वे सब शुद्धिकारक होने चाहिए तभी हम सब वस्तुओं की रक्षा कर पायेंगे और जीवन में प्रगति कर पायेंगे। केवल शुद्धिकारक मन ही बुरे विचारों का दमन कर सकता है। यदि शुद्धि के इस लक्षण को जीवन से हटा दिया जाये तो हमें रोगों, अपराधों और अव्यवस्थाओं का सामना हर स्थान पर करना पड़ेगा। शुद्धि के बिना प्रत्येक पदार्थ और ज्ञान का दुरुपयोग सम्भव है। शुद्धि का सामान्य अर्थ है कल्याण के लिए सुधार करना।

जीवन में सार्थकता

जीवन के सभी क्षेत्रों में शुद्धि ही केन्द्रीय विचार है।

परमात्मा द्वारा दिये गये सभी पदार्थ तथा ज्ञान केवल शुद्धि कार्यों में ही प्रयोग होने चाहिए, तभी हम अपने जीवन से सभी समस्याओं और कठिनाईयों को दूर रख पायेंगे।

शुद्धि सभी क्षेत्रों का केन्द्रीय विचार है, चाहे वह घर हो, कार्यस्थल हो या समाज। शुद्धि लक्षण के साथ ही हम परमात्मा द्वारा दी गई समस्त वस्तुओं की रक्षा करने में सक्षम होंगे।

ऋग्वेद मन्त्र-1-5-6

त्वं सुतस्य पीतये सदृश्यो वृद्धो अजायथा: |

इन्द्र ज्यैष्ठयाय सुक्रतो || 6 ||

त्वम् – तुम

सुतस्य – परमात्मा द्वारा प्रदत्त समस्त वस्तुओं और ज्ञान का अमृत

पीतये – पियो, प्राप्त करो, जीवन में उतारो

सद्यो – बहुत शीघ्र

वृद्धो – सर्वोच्च शुभ ज्ञान को धारण करो और उसके अनुसार कार्य करो

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

अजायथा: — आप योग्य हो सकोगे

इन्द्र — सर्वोच्च शक्ति, परमात्मा

ज्यैष्ठयाय — आपको महान् कल्याणकारी कार्यों को करने के लिए सक्षम बनायेगा

सुक्रतो — आप महान् ज्ञान तथा महान् कल्याणकारी कार्यों के लिए बने हो

व्याख्या :-

मानव जीवन का केन्द्रीय उद्देश्य क्या है?

परमात्मा ने प्रत्येक मनुष्य को यह निर्देश दिया है कि मानव जीवन का अर्थ महान् ज्ञान प्राप्त करने तथा सबके कल्याण हेतु महान् कार्यों को करने के लिए समस्त पदार्थों और ज्ञान के मूल उद्देश्यों को पीये अर्थात् प्राप्त करे और उन्हें जीवन में उतारे। इस सृष्टि का मुख्य उद्देश्य इसके निर्माता के साथ विलय के लिए प्रेम, कल्याण तथा त्याग को धारण करे।

जो लोग इन निर्देशों का पालन करते हैं वे शीघ्र सर्वोच्च शुभ ज्ञान को धारण करने के योग्य होंगे। उसके बाद सर्वोच्च शक्ति परमात्मा उन्हें कल्याण के लिए महान् कार्यों को करने योग्य बनायेगा जिनके लिए वास्तव में मानव की रचना हुई।

जीवन में सार्थकता

परमात्मा द्वारा दिये गये सभी पदार्थ तथा ज्ञान प्रेम, कल्याण तथा त्याग के लिए हैं।

मानव को सुक्रतो कहा जाता है अर्थात् महान् कल्याणकारी कार्यों को करने वाला। परिवार में या समाज में हमारी जो भी भूमिका हो, हमें केवल अच्छा और महान् कार्य करना चाहिए।

हम ऐसा तभी कर पायेंगे जब हम इस सृष्टि तथा अपने जीवन के मूल उद्देश्य को प्राप्त करके जीवन में उतार सकें कि परमात्मा द्वारा दिये गये सभी पदार्थों और ज्ञान का प्रयोग केवल प्रेम, कल्याण और त्याग के लिए ही होना चाहिए। इस प्रकार हम वृद्धो अर्थात् सर्वोच्च शुभ ज्ञान को धारण करने वाले बन पायेंगे तथा ज्यैष्ठयाय अर्थात् महान् कल्याणकारी कार्यों को करने में सक्षम हो पायेंगे।

ऋग्वेद मन्त्र-1-5-7

आ त्वा विशन्त्वाशवः सोमास इन्द्र गिर्वणः।

शन्ते सन्तु प्रचेतसे ॥७॥

आ (विशन्तु से पूर्व प्रयुक्त)

त्वा — आपको

विशन्तु (आविशन्तु) — उपलब्ध हो

आशवः — कार्यों के लिए गति तथा अन्य गुण

सोमासः — सभी पदार्थ

इन्द्र — इन्द्रियों पर नियंत्रण करने वाला

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

गिरणः – महान् प्रशंसनीय कार्य करने में सक्षम
शम् – सभी कल्याणकारी पदार्थ
ते – तुम्हारे लिए
सन्तु – हों
प्रचेतसे – शुद्ध ज्ञान को बढ़ाने वाले, चेतना को केन्द्रित करना 'मैं कौन हूँ' और अहंकाररहित करने वाले।

व्याख्या :-

क्या हम परमात्मा की तरह महान् बन सकते हैं?

परमात्मा हर व्यक्ति को आशीर्वाद देते हैं और कामना करता है कि उसे गति तथा अन्य गुण वाले पदार्थ प्राप्त हों। जिस प्रकार परमात्मा महान् प्रशंसनीय कार्यों को करने में सक्षम है, उसी प्रकार वह उन व्यक्तियों को भी ऐसे ही महान् कार्यों को करने के लिए शक्ति देता है जो अपनी इन्द्रियों पर नियंत्रण कर लेते हैं।

ऐसे इन्द्रियों के नियंत्रक के लिए सभी लाभकारी पदार्थ शुद्ध ज्ञान में वृद्धि करने वाले बन जाते हैं तथा परमात्मा की अनुभूति और अपनी खोज की आध्यात्मिक यात्र पर चेतना प्रदान करते हैं।

जीवन में सार्थकता

इन्द्रियों पर नियंत्रण से आध्यात्मिक तथा भौतिक प्रगति सम्भव है।

जो व्यक्ति अपनी इन्द्रियों जैसे – वाणी, आँखें, हाथ आदि पर नियंत्रण कर लेता है वह अपनी शारीरिक और मानसिक शक्तियों को व्यर्थ नहीं गवाता। वह स्वार्थी नहीं बनता।

इन्द्रियों पर नियंत्रण करने की इस आदत के साथ व्यक्ति आध्यात्मिक यात्र पर सफल होता है और साथ ही घर या समाज के किसी भी क्षेत्र में भी सफलता को प्राप्त करता है। वह निश्चित रूप से प्रचेतसे अर्थात् अपनी मूल शक्ति, अपनी भूमिका तथा अहंकाररहित अवस्था के प्रति संचेत रहता है।

ऋग्वेद मन्त्र-1-5-8

त्वां स्तोमा अवीवृधन् त्वामुक्था शतक्रतो ।
त्वां वर्धन्तु नो गिरः ॥८॥

त्वाम् – आपको

स्तोमा – वेद, ज्ञान

अवीवृधन् – प्रसिद्ध करता है, उन्नति में सहायता करता है

त्वाम् – आपको

उक्था – प्रशंसनीय शब्द

शतक्रतो – असंख्य कार्यों के कर्ता

त्वाम् – आपको

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

वधन्तु – प्रकाशित तथा विस्तृत करे

नो – हमारी

गिरः – ज्ञानयुक्त तथा सत्य वाणी

व्याख्या :-

परमात्मा की प्रशंसा तथा अनुसरण क्यों करें?

परमात्मा अपने समस्त पदार्थरूपी अनुदानों तथा वेद ज्ञान के कारण प्रसिद्ध है और सदैव उन्नति पर रहता है। वह असंख्य गतिविधियों को सम्पन्न करने वाला है इसलिए भी उसकी प्रशंसा में हमारे शब्द प्रयोग होते हैं। हमारा ज्ञान तथा सत्य वाणियाँ भी उसी की चमक बढ़ायें और उसी की शक्ति को विस्तृत करें। जिससे हम भी उसी के पथ का अनुसरण करते हुए जीवन संचालित करें।

जीवन में सार्थकता

उन सभी आत्माओं की प्रशंसा होनी चाहिए जो उसका अनुसरण करते हैं।

परमात्मा अपने समस्त पदार्थ रूपी अनुदानों और वेद ज्ञान के लिए प्रसिद्ध एवं प्रशंसनीय है। अतः हमें भी उसी का आत्मिक अनुसरण करना चाहिए।

अपने घर पर या समाज में हम अपने महान् वृद्ध पुरुषों तथा उच्चाधिकारियों का अनुसरण करते हैं जो हमें भौतिक पदार्थ तथा अपने ज्ञान से हमें मार्गदर्शन देते हैं। हमें सदैव ऐसे ही लोगों की प्रशंसा करनी भी चाहिए तभी हम उनका अनुसरण कर सकेंगे।

ऋग्वेद मन्त्र-1-5-9

अक्षितोति: सनेदिमं वाजमिन्द्रः सहस्रित्रणम् ।

यस्मिन् विश्वानि पौर्स्या ॥१॥

अक्षितोति: (अक्षित उति:) – नित्य, अपरिवर्तनशील, स्थाई ज्ञान

सनेदिमम् (सनेत् इमम्) – जो हमें प्राप्त होता है, साक्षात् होता है

वाजम् – समस्त पदार्थों का मूल विज्ञान

इन्द्रः – परमात्मा द्वारा प्रदत्त, इन्द्रियों के नियंत्रक द्वारा प्रयोग किया गया

सहस्रिणम् – असंख्य सुखों के लिए

यस्मिन् – जिससे

विश्वानि – सब

पौर्स्या – गतिविधियों के लिए शक्ति प्राप्त करते हैं

व्याख्या :-

हम दिव्य ज्ञान कैसे प्राप्त कर सकते हैं?

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

परमात्मा का स्थाई ज्ञान हमें प्राप्त हो और साक्षात् हो जो वास्तव में परमात्मा द्वारा दिये गये समस्त पदार्थों का मूलाधार विज्ञान है। इस ज्ञान को केवल वही लोग क्रियान्वित कर पाते हैं जो अपनी इन्द्रियों पर नियंत्रण करने में सफल होते हैं और वे लोग नहीं प्राप्त कर पाते जो इन्द्रियों के द्वारा नियंत्रित होते हैं। ऐसा साक्षात् और क्रियान्वित ज्ञान असंख्य गतिविधियों का आधार बनता है। प्रत्येक व्यक्ति उसी सर्वोच्च शक्ति से ही कार्य करने की शक्ति प्राप्त करता है।

जीवन में सार्थकता

दिव्य ज्ञान के पाँच लक्षण –

1. आध्यात्मिकता, आध्यात्मिक रूप से हमें यह अनुभव करना चाहिए कि केवल परमात्मा द्वारा दिया गया ज्ञान ही दिव्य तथा स्थाई है।
2. वही ज्ञान समस्त पदार्थों का मूल विज्ञान है अर्थात् प्राकृतिक विज्ञान है।
3. केवल इन्द्रियों पर नियंत्रण करने वाला ही उसे अनुभव कर सकता है।
4. इससे असंख्य लाभ प्राप्त होते हैं।
5. प्रत्येक व्यक्ति उसी सर्वोच्च शक्ति से ही शक्ति प्राप्त करता है।

ऋग्वेद मन्त्र-1-5-10

मा नो मर्ता अद्भिद्रुहन् तनूनामिन्द्र गिर्वणः।
ईशानो यवया वधम् ॥१०॥

मा – मत कीजिए

नः – हमें

मर्ता: – जो इन्द्रियों की तृप्ति के लिए मरते हैं

अभिद्रुहन् (अभि द्रुहन) – वैर भाव

तनूनाम् – इन शरीरों के

इन्द्र – परमात्मा, इन्द्रियों का नियंत्रक

गिर्वणः – रक्षक

ईशानो – सर्वोच्च परमात्मा

यवया – अपने ज्ञान से

वधम् – शत्रुओं, बुराईयों का विनाश करता है

व्याख्या :-

हम उन लोगों से अपने आपको कैसे बचायें जो इन्द्रियों की तृप्ति के लिए मरते हैं?

हमें शत्रुता रखने वाले लोगों से मुक्त रहना चाहिए। जो नैतिक हैं वे हमारे शत्रु नहीं हो सकते। हम परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि जो लोग इन्द्रियों की तृप्ति के लिए मरते हैं उन्हें हमारा शत्रु न बनायें। परमात्मा हमारे शरीर का रक्षक है। वह स्वयं इन्द्र है और उसने हमें भी अपनी इन्द्रियों पर नियंत्रण करने योग्य बनाने की शक्ति देकर इन्द्र बनाया है। इस प्रकार एक इन्द्र अपने भीतर दिव्य शक्तियों के साथ काम,

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

क्रोध, लोभ तथा मोह आदि शत्रुओं का नाश कर सकता है। दिव्य शक्तियाँ परमात्मा के महान नैतिक ज्ञान के माध्यम से ही प्राप्त की जा सकती हैं।

जीवन में सार्थकता

हमें सदैव शत्रुओं से मुक्त रहने का प्रयास करना चाहिए।
नैतिक गुणों वाले लोग हमारे शत्रु नहीं हो सकते।
जो लोग इन्द्रियों की तृप्ति के लिए मरते हैं उनका नाश परमात्मा, इन्द्र अर्थात् इन्द्रियों पर नियंत्रण करने की हमारी शक्ति करेगी।
परमात्मा हमारी बुराईयों का नाश कर सकता है।

ऋग्वेद मण्डल-1, सूक्त-6

ऋग्वेद मन्त्र-1-6-1

यु×जन्ति ब्रह्ममरुषं चरन्तं परितस्थुषः।
रोचन्ते रोचना दिवि ॥1॥

यु×जन्ति – परमात्मा की संगति में
ब्रह्म – जो सूर्य की तरह महान है

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

अरुषम् – जो हमारे शरीर के एक-एक अंग में तथा अग्नि की तरह समूचे ब्रह्माण्ड में विद्यमान है, परन्तु अहिंसक है

चरन्तम् – वह वायु की तरह सर्वविद्यमान होने के कारण सबकुछ जानता है

परितस्थुषः – प्रत्येक जड़ तथा चेतन के चारों तरफ

रोचन्ते – उसकी संगति का आनन्द लेते हैं

रोचना – नक्षत्रों की तरह दिव्य ज्ञान से स्वयं को प्रकाशित कर

दिवि – सर्वोच्च सत्ता परमात्मा के कारण

व्याख्या :-

परमात्मा के साथ संगति स्थापित करने के क्या लाभ हैं?

इस मन्त्र का स्पष्ट आध्यात्मिक दृष्टिकोण यह है कि एक बार जब कोई आध्यात्मिक पुरुष परमात्मा के साथ संगति स्थापित करने में सफल हो जाता है तो वह सर्वोच्च सत्ता परमात्मा के दिव्य ज्ञान से स्वयं को प्रकाशित कर उसकी संगति का आनन्द उठाता है

इस मन्त्र में सर्वोच्च शक्ति, परमात्मा, के चार मुख्य लक्षण बताये गये हैं :–

1. ब्रह्मम् – सूर्य की तरह महान्,

2. अरुषम् – अग्नि की तरह ऊर्जावान्

3. चरन्तम् – वायु की तरह सर्वविद्यमान तथा सर्वज्ञाता

4. परितस्थुषः – प्रत्येक जड़ और चेतन को घेरे हुए

ध्यान-साधना करते हुए हम शरीर के किसी भी अंग पर ध्यान लगाकर यह आभास ले सकते हैं कि –

(क) सूर्य की ऊर्जा के रूप में वह हमारे शरीर में विद्यमान है

(ख) अग्नि के रूप में वह हमारी पाचन शक्ति है

(ग) वायु के रूप में वह हमारे प्राण है।

ध्यान-साधना हमें सदैव ऊर्जा देती है। अतः ध्यान-साधना पूर्ण जीवन के माध्यम से हम स्वयं को प्रकाशित कर सकते हैं, क्योंकि परमात्मा ही अन्ततः सर्वोच्च ऊर्जा है।

जब वैज्ञानिक सूर्य, अग्नि तथा वायु आदि शक्तियों और ऊर्जाओं का अनुसंधान करते हैं तो उन्हें प्रयोग करने के असंख्य विचार प्राप्त होते हैं। जिनसे वे मानव उपयोग तथा सुविधाओं के लिए अनेकों लाभकारी वस्तुओं का निर्माण करते हैं।

जीवन में सार्थकता

वैज्ञानिकों तथा भौतिकवादी लोगों को भी परमात्मा की संगति में रहना चाहिए।

दिव्य शक्तियाँ तथा ऊर्जा मानवीय गतिविधियों के प्रत्येक क्षेत्र में सहायक हैं, चाहे वह आध्यात्मिक, भौतिक या वैज्ञानिक ही क्यों न हों। परमात्मा की शक्तियों के किसी भी पहलू का प्रयोग करते हुए वैज्ञानिक तथा भौतिकवादी लोगों को यह अवश्य मस्तिष्क में रखना चाहिए कि इसका परिणाम केवल मानव की सुविधा के लिए ही हो। परन्तु प्रकृति की शक्तियों का आवश्यकता से अधिक दोहन करने से सदैव विनाशकारी परिणाम ही निकलते हैं। इसलिए वैज्ञानिक और भौतिकवादी लोग प्रकृति के पदार्थों का अत्यधिक दोहन करके अन्ततः मानव के लिए समस्याएँ ही पैदा करते हैं। वे प्रकृति का प्रयोग करके मानव को प्राकृतिक जीवन से दूर रखते हैं। दूसरी तरफ यदि ये लोग परमात्मा की सत्ता के साथ संगति स्थापित करके रखें तो वे मनुष्य को प्रकृति

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

तथा उसके निर्माता के साथ रहकर प्रकृति का प्रयोग करने में उचित मार्गदर्शन कर सकेंगे क्योंकि परमात्मा ही सब वस्तुओं का देने वाला है।

अतः वैज्ञानिकों तथा भौतिकवादी लोगों को भी ब्रह्माण्ड की सर्वोच्च सत्ता परमात्मा की संगति में ही रहना चाहिए।

ऋग्वेद मन्त्र-1-6-2
यु×जन्त्यस्य काम्या हरी विपक्षसा रथे ।
शोणा धृष्णू नृवाहसा ॥२॥

यु×जन्ति – संगति, जोड़ना, नियुक्त करना, जोतना

अस्य काम्या – इच्छाओं की पूर्ति करना (क) आध्यात्मिक रूप से परमात्मा को जानने की (ख) भौतिक स्तर पर सुविधाओं के आनन्द की

हरी – (क) इन्द्रियों रूपी घोड़े (ज्ञान प्राप्त करने के लिए तथा गतिविधियाँ करने के लिए), (ख) सूर्य की शक्तियाँ (प्रकाश तथा आकर्षण), वायु की शक्तियाँ (चलना तथा गति)

विपक्षसा – हरी की विशेष शक्तियाँ – (क) एक बार मन के द्वारा निश्चय होने के बाद इन्द्रियाँ अपने आपको निर्धारित लक्ष्य की प्राप्ति के लिए झोंक देती हैं, (ख) सूर्य तथा वायु के भिन्न-भिन्न प्रयोग

रथे – (क) शरीररूपी रथ, (ख) आवागमन के लिए वाहन

शोणा – वे (हरी) प्रकाशमान तथा उपयोगी हैं

धृष्णू – वे (हरी) दृढ़ संकल्प वाले हैं

नृवाहसा – वे (हरी) रथी को अपने गन्तव्य तक पहुँचाते हैं

व्याख्या :-

इन्द्रियों अर्थात् हरी के क्या लक्षण हैं?

यदि सूर्य तथा वायु की शक्तियाँ भी हरी हैं तो उन्हें केवल दिव्य उद्देश्यों के लिए ही प्रयोग किया जाना चाहिए।

गत मन्त्र के साथ-साथ इस मन्त्र का आध्यात्मिक अर्थ है – परमात्मा के साथ संगति स्थापित करने के लिए हमें अपने शरीर में इन्द्रियों को केवल अपने उद्देश्यों की पूर्ति में ही लगाना चाहिए।

इन्द्रियों के निम्न चार लक्षण हैं :-

(क) वे एक बार मन के द्वारा निश्चय होने के बाद अपने आपको निर्धारित लक्ष्य की प्राप्ति के लिए झोंक देती हैं

(ख) वे प्रकाशमान तथा उपयोगी हैं

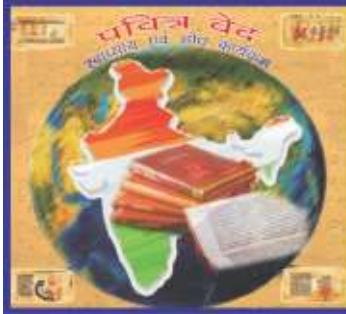
(ग) वे दृढ़ संकल्प वाली हैं

(घ) वे शरीर रूपी रथ के स्वामी को उसके गन्तव्य तक पहुँचाती हैं

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

वैज्ञानिक रूप से यदि हरी का अर्थ सूर्य और वायु की शक्तियों के रूप में लिया जाये तो उनका उपयोग बुद्धिमत्ता पूर्वक ऐसे वाहनों के निर्माण में किया जाना चाहिए जो प्रयोगकर्ता को उसके गन्तव्य तक पहुँचाने में सहायक हो। साथ ही यह भी स्मरण रखना चाहिए कि सूर्य तथा वायु की शक्तियाँ भी परमात्मा की सर्वोच्च सत्ता से ही प्राप्त हुई हैं। अतः सूर्य और वायु की शक्तियों का प्रयोग करके किसी भी वस्तु का निर्माण तथा उपयोग भी परमात्मा की दिव्य योजनाओं के अनुरूप ही होना चाहिए।

जीवन में सार्थकता

इन्द्रियों का बुद्धिमत्ता पूर्वक प्रयोग करने से हम आध्यात्मिक प्रगति कर सकते हैं।

सूर्य और वायु की शक्तियों का बुद्धिमत्ता पूर्वक प्रयोग करने से हम भौतिक प्रगति कर सकते हैं।

आध्यात्मिकता और विज्ञान में कोई टकराव नहीं हो सकता यदि प्रत्येक वैज्ञानिक अपने हर कार्य में रचनात्मकता की दिव्य योजना पर केन्द्रित रहे जिसमें किसी प्रकार का भी विनाशकारी प्रभाव न हो।

ऋग्वेद मन्त्र-1-6-3
केतुं कृष्णन्नकेतवे पेशो मर्या अपेशसे ।
समुष्मिदरजायथा: ॥३॥

केतुम् – उत्तम ज्ञान

कृष्णन् – देना, उत्पन्न करना

अकेतवे – अज्ञानी के लिए

पेशः – भौतिक सम्पत्ति

मर्याः – मनुष्य

अपेशसे – निर्धनता के विनाश के लिए

सम उषभि – दिन के प्रारम्भ में दिव्य निर्देशों के अनुसार

अजायथा: – उठकर सर्वोच्च परमात्मा की संगति में सिद्धि प्राप्त करे

व्याख्या :-

समस्त मनुष्यों के दो महत्त्वपूर्ण और दिव्य कर्तव्य क्या हैं?

यह मन्त्र दो महत्त्वपूर्ण दिव्य कर्तव्यों के निर्वहन के निर्देश के रूप में हैं :–

1. अज्ञान लोगों को ज्ञान देना

2. निर्धन लोगों को भौतिक सहायता देना

इन कर्तव्यों के लिए मनुष्य के लिए उचित है कि वह सूर्य की किरणों के साथ प्रातःकाल उठे। इस प्रकार वह परमात्मा की संगति में स्थापित होकर अन्य लोगों की सहायता तथा उनका उत्थान करने के कार्य कर सकता है।

जीवन में सार्थकता

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

ज्ञान देकर अज्ञानता को दूर करो तथा
भौतिक सहायता देकर गरीबी को दूर करो।
प्रत्येक व्यक्ति को प्रतिदिन प्रातःकालीन प्रथम कर्तव्य की तरह इन दिव्य कर्तव्यों को पूरा करना चाहिए।
यदि अधिकांश लोग इस निर्देश का पालन करने लगें तो खुशियाँ और समृद्धि पूरे समाज में सरलता से सम्भव हो सकती हैं। सामाजिक भेदभाव तथा अशांति का भी अन्त हो सकता है।
समूचे विश्व की सरकारों को भी इन्हीं दो कार्यों को लक्ष्य मानना चाहिए। ज्ञान का प्रसार तो अज्ञानता के साथ-साथ निर्धनता को भी दूर कर सकता है।

ऋग्वेद मन्त्र-1-6-4
आदह स्वधामनु पुनर्गर्भत्वमेरिरे।
दधाना नाम यज्ञियम् ॥४॥

आत् अह – उसके बाद ही (मन्त्र तीन के अनुसार अज्ञानता तथा गरीबी समाप्त करने का संकल्प लेने के बाद)

स्वधामनु – आत्मबोध तथा परमात्मा के बोध का अपना लक्ष्य निर्धारित करके

पुनः – एक बार फिर

गर्भत्वम् – गर्भ में स्थापित होने के लिए (परमात्मा के)

एरिरे – स्वयं को प्रेरित करे

दधाना: – धारण करे

नाम – नाम (परमात्मा का)

यज्ञियम् – त्यागपूर्ण गतिविधियों को सम्पन्न करे

व्याख्या :-

हमारे आध्यात्मिक तथा सामाजिक लक्ष्य क्या होने चाहिए?

मन्त्र-3 तथा 4 परस्पर सम्बन्धित हैं। प्रातःकाल ब्रह्मबेला में उठने के बाद और अन्य लोगों की अज्ञानता तथा निर्धनता दूर करने का संकल्प लेने के बाद ईश्वर भक्त मस्तिष्क को एक विशेष भाव से सुसज्जित करके ध्यान-साधना में बैठता है – ‘मैं अपने आत्मतत्त्व तथा अपने अन्दर परमात्मा की अनुभूति प्राप्त करना चाहता हूँ। मैं एक बार फिर स्वयं को परमात्मा के गर्भ में स्थापित करता हूँ।’ इस संकल्प के साथ वह परमात्मा के सर्वोच्च नाम ओ३म् ध्वनि के साथ प्राणायाम प्रारम्भ करता है। साथ ही वह यज्ञों की तरह अपनी गतिविधियों को संचालित करता है अर्थात् अन्य लोगों के कल्याण के लिए त्याग।

जीवन में सार्थकता

मन्त्र-3 और 4 में आध्यात्मिक तथा सामाजिक निर्देश समाहित है।

सामाजिक रूप से अज्ञानता तथा निर्धनता को दूर करना चाहिए।

आध्यात्मिक रूप से आत्मतत्त्व तथा परमात्मा की अनुभूति प्राप्त करने के पथ पर अग्रसर होना चाहिए।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

अधिकांश लोग अपने सामाजिक दायित्वों के निर्वहन में तो संलग्न देखे जाते हैं परन्तु आध्यात्मिक उद्देश्य की प्राप्ति में बहुत कम लोग दिखाई देते हैं। समूचे विश्व की सरकारों में तो एक भी ऐसी सरकार दिखाई नहीं देती जो अपने नागरिकों को आध्यात्मिक प्रेरणाएँ प्रदान करती हो। सरकारें यदि इस उद्देश्य के लिए कार्य करे तो कलयुग की आंधी अर्थात् अनेकों प्रकार के अपराधों को कम अवश्य ही किया जा सकेगा।

ऋग्वेद मन्त्र-1-6-5
वीलु चिदारुजल्नुभिर्गुहा चिदिन्द्र बहिनभिः ।
अविन्द उस्त्रिया अनु ॥५ ॥

वीलु चित् – मन के दृढ़ संकल्प के साथ
आरुजल्नुभि – भेदन करना तथा नष्ट करना
गुहा चित् – मन में छिपी बुराईयों को, प्रकृति के हानिकारक तत्त्वों को
इन्द्र – परमात्मा, सूर्य, हमारी व्यक्तिगत ऊर्जा, इन्द्रियों का नियंत्रक
बहिनभिः – निर्धारित उद्देश्यों की तरफ ले जाता है
अविन्दः – प्राप्त होने योग्य
उस्त्रिया: – ज्ञान की तरंगे, सूर्य की किरणें
अनु – उसके बाद

व्याख्या :-

बुरे विचारों से छुटकारा कैसे पायें?

आध्यात्मिक रूप से परमात्मा तथा हमारी व्यक्तिगत ऊर्जा मन के दृढ़ संकल्पों के साथ मन में छिपे बुरे विचारों, इच्छाओं आदि को नष्ट कर सकते हैं। फिर परमात्मा तथा हमारी व्यक्तिगत ऊर्जा ध्यान की अवस्था में हमें निर्धारित लक्ष्य की ओर ले चलती है जब हमारा मन भिन्न-भिन्न विचारों के बन्धनों से मुक्त हो जाता है। लम्बी तथा लगातार चलने वाली ध्यान-साधना के अभ्यास से हमें स्वयं आत्मतत्त्व के बारे में तथा सर्वोच्च परमात्मा के बारे में ज्ञान की तरंगे प्राप्त होती हैं।

वैज्ञानिक रूप से सूर्य अपनी ताकतवर किरणों के साथ धरती पर प्रत्येक कण के पास पहुँचता है, उनका भेदन करता है और उनके भीतर की अशुद्धताओं को नष्ट करता है। वायु के साथ टूटे हुए तथा शुद्ध किये हुए कण मध्य आकाश में ले जाये जाते हैं। इससे सृष्टि उत्पत्ति तथा परिवर्तन की शक्ति सिद्ध होती है। बादल वर्षा में परिवर्तित हो जाते हैं और वापिस जल वाष्णीकृत होकर पुनः बादलों के रूप में स्थापित हो जाता है। यह जल चक्र परमात्मा की दिव्य शक्ति को सिद्ध करता है कि सब कुछ परिवर्तनशील है।

जीवन में सार्थकता

ध्यान-साधना के लम्बे तथा लगातार अभ्यास से बुरे विचार समाप्त होने प्रारम्भ हो जाते हैं।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

परमात्मा प्रकृति की हर वस्तु का उत्पत्तिकर्ता है, पालनकर्ता है और नष्ट करके परिवर्तित करता है। हम अनेकों कार्यों को करने का दावा करते हैं, परन्तु वास्तविक कर्ता परमात्मा है। कुछ भी स्थाई नहीं है, सब कुछ नाशवान् और परिवर्तनशील है।

जीवन में हमें अपने बुरे विचारों तथा व्यवहारों पर निगरानी रखनी चाहिए जो प्रदर्शित होते हैं या हमारे दिमाग में छिपे रहते हैं। उन सब बुराईयों को केवल सरलता पूर्वक परमात्मा के समक्ष तथा अपनी व्यक्तिगत ऊर्जा के समक्ष इस प्रार्थना के साथ समर्पित कर दो कि वे उन बुराईयों को नष्ट कर दें। ध्यान-साधना के दौरान परमात्मा तथा आपकी व्यक्तिगत ऊर्जा इस संकल्प के साथ निश्चित रूप से उन बुराईयों को समाप्त कर देगी। उसके बाद आपको उचित ज्ञान प्राप्त होगा।

ऋग्वेद मन्त्र-1-6-6
देवयन्तो यथा मतिमच्छा विदद्वसुं गिरः ।
महामनूषत श्रुतम् ॥६ ॥

देवयन्तः – परमात्मा के साथ संगति की इच्छा करने वाले, सर्वोच्च विज्ञान को जानने की इच्छा करने वाले

यथा मतिम् – वास्तविक ज्ञान वाले

अच्छ – लक्ष्य

विदद्वसुम् – सर्वोच्च शक्ति हमें समस्त पदार्थ उपलब्ध कराती है

गिरः – विद्वान्

महाम् – वह महान् परमात्मा

अनूषत – अनुभूति प्राप्त करता है

श्रुतम् – उसके सर्वोच्च गुणों की व्याख्या करके तथा सुनकर

व्याख्या :-

वास्तविक ज्ञान कैसे प्राप्त किया जा सकता है?

समस्त विद्वान् और बुद्धिजीवी व्यक्ति जो परमात्मा से संगति की कामना करते हैं, उसकी सर्वोच्च शक्तियों को लक्ष्य बनाते हैं जो प्रकृति में हमें समस्त लाभकारी पदार्थों को उपलब्ध करवाती हैं। ऐसे लोगों को वास्तविक ज्ञान होता है। वे उसके सर्वोच्च गुणों तथा शक्तियों की व्याख्या करके और सुनकर भगवान् की अनुभूति प्राप्त करने लगते हैं।

इसी प्रकार सभी वैज्ञानिकों को भी प्राकृतिक पदार्थों की सर्वोच्च शक्तियों को समझना और अनुभव करना चाहिए। वैज्ञानिकों को सभी पदार्थों का मूल तथा वास्तविक ज्ञान प्राप्त करने का प्रयास करना चाहिए। प्रकृति के पदार्थों के महान् गुणों पर चिन्तन करना, उनके बारे में सुनना तथा उस ज्ञान को धारण करना उनके लिए आवश्यक है जिससे वे अपने प्रयोगों तथा आविष्कारों में सफलता प्राप्त कर सकें।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

जीवन में सार्थकता

जीवन में उच्च अवस्थाओं को कैसे प्राप्त करें?

आध्यात्मिक पथ तथा वैज्ञानिक प्रक्रियाओं के अतिरिक्त यह नियम सामान्य जीवन में भी अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं। यदि आप जीवन में उच्च पदों को प्राप्त करना चाहते हो या किसी भी क्षेत्र में सफलता प्राप्त करना चाहते हो तो आपको उससे सम्बंधित मूल तथा वास्तविक ज्ञान होना चाहिए। इसके बावजूद भी केवल अपने ज्ञान से संतुष्ट नहीं रहना चाहिए। अन्य विद्वानों तथा बुद्धिजीवियों से भी उन विषयों पर चर्चा करनी चाहिए और उन्हें सुनना चाहिए जिससे आपका ज्ञान और गहरा हो सके। केवल इसी प्रकार से आप उच्च अवस्थाओं को प्राप्त कर सकते हैं।

ऋग्वेद मन्त्र-1-6-7
इन्द्रेण सं हि दृक्षसे संजग्मानो अबिभ्युषा ।
मन्दू समानवर्चसा ॥७॥

इन्द्रेण – सर्वोच्च शक्ति परमात्मा के साथ

सम् – (दृक्षसे के पूर्व जोड़कर)

हि – निश्चित रूप से

दृक्षसे (समदृक्षसे) – समान रूप से दिखाई देता है (अनुभूति के पथ पर प्रगति के लिए)

संजग्मानो – मिला रहता है

अबिभ्युषा – भयरहित

मन्दू – सदैव आनन्द देने वाला

समानवर्चसा – भगवान के तुल्य दीप्ति वाला

व्याख्या :-

ईश्वर प्रेमियों के क्या लक्षण होते हैं?

जो व्यक्ति ध्यान–साधना के द्वारा या अहंकाररहित रहकर कल्याणकारी गतिविधियाँ सम्पन्न करके या परमात्मा की प्रशंसा करके परमात्मा के साथ संगति बनाकर रहता है, वह निश्चित रूप से ईश्वर अनुभूति के आध्यात्मिक पथ पर प्रगति करता हुआ दिखाई देता है। ऐसे व्यक्ति में तीन मुख्य लक्षण प्रदर्शित होते हैं :-

1. अबिभ्युषा – वह पूरी तरह से भयरहित होता है, क्योंकि भगवान की संगति हर प्रकार के भय को समाप्त कर देती है।

2. मन्दू – वह सदैव आनन्द देने वाला होता है

3. समानवर्चसा – वह भगवान के तुल्य दीप्ति वाला प्रतीत होता है

वैज्ञानिक रूप से इस मन्त्र का अर्थ इस प्रकार समझा जा सकता है कि सूर्य तथा वायु की शक्तियाँ भगवान की शक्तियों के साथ संयुक्त रूप से हर स्थान पर लोगों का कल्याण करते हुए दिखाई देती हैं।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

सूर्य तथा वायु की शक्तियाँ जड़ तथा चेतन सभी में दिव्य दीप्ति की तरह समान रूप से दिखाई देती हैं। प्रत्येक वस्तु में सूर्य तथा वायु की शक्तियों की सार्थकता तभी होती है जब उन्हें भगवान की शक्ति के साथ मिलाकर समझा जाये और उनका अन्वेषण किया जाये।

जीवन में सार्थकता

1. भयरहित, 2. आनन्ददाई, 3. परमात्मा जैसा दिखने वाला।

जीवन के किसी भी क्षेत्र में कार्य करते हुए बड़ी आयु के लोगों को तथा उच्चाधिकारियों को यथोचित सम्मान दिया जाना चाहिए और समस्त कार्यों को करते समय उनके साथ तथा परमात्मा के साथ एकता का भाव महसूस करना चाहिए। इमानदारी, एकता, स्वार्थरहित, इच्छारहित लक्षणों के सहारे सौहार्दपूर्ण सम्बन्ध बनाने में सहायता मिलती है।

इसे तकनीकी रूप से इस प्रकार समझा जा सकता है :-

आप तथा कोई अन्य तथा परमात्मा = भयरहित, आनन्ददायी तथा ईश्वर के समान दिखने वाले।

ऋग्वेद मन्त्र-1-6-8

अनवद्यैरभिद्युभिर्मखः सहस्वदर्च्चति ।

गणैरिन्द्रस्य काम्यैः ॥८॥

अनवद्यैः — पवित्र, बुराईयों से मुक्त

अभिद्युभिः — सब ओर से प्रकाशित, उच्च अवस्थाओं की ओर ले जाने वाला

मखः — यज्ञ अर्थात् अन्यों के संरक्षण तथा सुख के लिए किये गये त्याग

सहस्वत — मजबूत तथा दृढ़ गुणों के लिए

अर्च्चति — प्रार्थना करते हैं

गणैः— सूर्य की किरणें, हमारी प्राणिक ऊर्जा

इन्द्रस्य — परमात्मा, सर्वाच्च ऊर्जा, सर्वाच्च नेतृत्व, शक्तिशाली नियंत्रक

काम्यैः — की प्रार्थना करते हैं

व्याख्या :-

हमें शक्तिशाली कौन बनाता है?

जब हमारी गतिविधियाँ यज्ञों की तरह होती हैं अर्थात् सबके कल्याण के लिए त्याग पर आधारित होती हैं और पवित्र होती हैं अर्थात् बुराईयों से मुक्त और सब ओर से आध्यात्मिक प्रकाश देने वाली होती हैं तो वे हमें उच्च अवस्थाओं तक ले जाती हैं और प्रत्येक व्यक्ति ऐसे दृढ़ और शक्तिशाली गुणों के लिए प्रार्थना करता है। ऐसा व्यक्ति अपनी इन्द्रियों पर नियंत्रण कर लेता है। ऐसा व्यक्ति अजातशत्रु अर्थात् पूरी तरह से शत्रुरहित हो जाता है।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

वैज्ञानिक रूप से सूर्य की किरणें भी पवित्र तथा प्रकाशित करने वाले यज्ञों की माँग करती हैं जो प्रकृति में सबके लिए लाभदायक हो। ऐसे यज्ञ सभी जड़ तथा चेतन के शक्तिशाली तथा दृढ़ लक्षणों को सुनिश्चित करते हैं।

जीवन में सार्थकता

प्रकाशित बुद्धि के साथ शुद्ध कल्याणकारी गतिविधियों को सम्पन्न करना चाहिए।

आध्यात्मिक पथ पर अग्रसर होने वालों के साथ-साथ भौतिकवादी, वैज्ञानिक, कृषकों, सामाजिक कार्यकर्ताओं तथा राजनीतिक नेताओं के लिए भी यह एक सर्वमान्य सिद्धान्त है कि प्रकाशित बुद्धि के साथ सबको पवित्र कल्याणकारी गतिविधियों का संचालन करना चाहिए जिससे उन्हें समाज में शक्तियाँ प्राप्त हों।

ऋग्वेद मन्त्र-1-6-9

अतः परिज्मन्नागहि दिवो वा रोचनादधि ।
समस्मिन्नृ×जते गिरः ॥९॥

अतः — इस भूमि से

परिज्मन्न — सर्वविद्यमान होने के कारण वायु

आगहि — हमारे पास आती है

दिवो — सूर्य से

वा — तथा

रोचनात् अधि — आकाश तथा अन्तरिक्ष से

समस्मिन्नृ×जते — समान रूप से सुशोभित, परमात्मा की संगति में स्थापित

गिरः — संगति के इच्छुक

व्याख्या :-

कौन हमें सुशोभित करता है और हमारा उत्थान करता है?

आध्यात्मिक रूप से ईश्वर अनुभूति का इच्छुक व्यक्ति प्रार्थना करता है कि आकाश तथा अन्तरिक्ष में सर्वविद्यमान वायु की तरह भगवान् स्वयं आकर चारों तरफ से उसका उत्थान करे। क्योंकि वह दिव्यताओं से सुशोभित होना चाहता है, अर्थात् परमात्मा की संगति चाहता है।

वैज्ञानिक रूप से वायु भूमि से जल को लेने आती है। सूर्य के प्रकाश से बादल वापिस वर्षा के रूप में धरती पर आते हैं जिससे सभी लोग लाभान्वित हो सकें और परमात्मा की दिव्य ऊर्जा के साथ एकता को महसूस कर सकें।

जीवन में सार्थकता

परमात्मा, हमारे माता-पिता, हमारे उच्चाधिकारी तथा अनेकों अन्य महान् आत्माएँ हमें सुशोभित करते हैं और चारों तरफ से हमारा उत्थान करते हैं।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

हम प्रभु की कामना करते हैं कि वे आकर चारों तरफ से हमारा उत्थान करें, क्योंकि हमारा जीवन केवल परमात्मा के साथ ही सुशोभित हो सकता है। दिव्य शक्ति के साथ संगति से रहित जीवन को चारों तरफ से विपत्तियाँ, अपराध तथा कठिनाईयाँ झेलनी पड़ती हैं।

घर पर माता-पिता परमात्मा की तरह ही होते हैं। परिवार का जीवन उनके साथ ही सुशोभित होता है। इसलिए हर परिस्थिति में उनके साथ जुड़कर रहना चाहिए और उन्हें पूरा सम्मान देना चाहिए।

हमारे आजीविकादाता, उच्चाधिकारी, व्यापारी, उपभोक्ता तथा समस्त नागरिक भी एक-दूसरे के लिए भगवान के स्वरूप हैं, क्योंकि समाज सबके सुखों के साथ ही सुशोभित होता है। अतः सबके अधिकारों का सम्मान किया जाना चाहिए और सबके प्रति अपने दायित्वों का पालन किया जाना चाहिए।

ऋग्वेद मन्त्र-1-6-10

इतो वा सातिमीमहे दिवो वा पार्थिवादधि ।
इन्द्रं महो वा रजसः ॥१०॥

इतो – यह

वा – और

सातिम – धरती पर भिन्न-भिन्न पदार्थ

ईमहे – हम जानते हैं

दिवो वा – सूर्य तथा अग्नि की ऊर्जा

पार्थिवात् अधि – भूमि के साथ संयोग करके

इन्द्रम् – भगवान्, सूर्य

महः – अति विस्तृत, महान् तथा बड़ा

वा – फिर

रजसः – भूमि तथा अन्य ग्रह

व्याख्या :-

ब्रह्माण्ड में सबसे ज्यादा शक्तिशाली कौन है?

हम भूमि पर भिन्न-भिन्न पदार्थों की शक्तियाँ तथा उनसे होने वाले लाभ को जानते हैं। जब सूर्य की किरणें भूमि के सम्पर्क में आती हैं तो हम उसकी ऊर्जा को भी जानते हैं। इनकी शक्ति महान होती है। परन्तु भगवान की शक्तियाँ भूमि तथा सभी नक्षत्रों पर विद्यमान समस्त पदार्थों की शक्तियों से भी महानतम् है, क्योंकि वह सर्वोच्च ऊर्जा होने के नाते ब्रह्माण्ड के प्रत्येक पदार्थ का निर्माता है।

जीवन में सार्थकता

हम कहीं भी सर्वोच्च नहीं हैं।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

कोई व्यक्ति अपने परिवार में, किसी संस्थान में, समाज में, देश में या अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अपार शक्तियों का स्वामी हो सकता है, परन्तु परमात्मा की शक्तियों को तो वह भी पार नहीं कर सकता। इसलिए यह स्मरण रखते हुए कि परमात्मा हर व्यक्ति में विद्यमान है, हमें समाज के प्रत्येक व्यक्ति का सम्मान करना चाहिए। कभी भी यह महसूस नहीं करना चाहिए कि हम कहीं पर भी सर्वोच्च हो।

ऋग्वेद मण्डल-1, सूक्त-7

ऋग्वेद मन्त्र-1-7-1

इन्द्रमिद् गाथिनो बृहदिन्द्रमर्कभिरकिणः ।
इन्द्रं वाणीरनूषत ॥१॥

इन्द्रम् – सर्वोच्च ऊर्जा परमात्मा

इत् – निश्चित रूप से

गाथिनो – उसकी प्रशंसा में गाने वाले, सामवेद

बृहत् – सर्वोच्च, महान्

इन्द्रम् – परमात्मा

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

अर्कभि: — सत्य विचारों और कार्यों के साथ, ऋग्वेद के विज्ञान

अर्किण: — ऋग्वेद के विद्वान्

इन्द्रम् — परमात्मा

वाणी: — अपनी वाणी से, यजुर्वेद

अनूष्ठत् — आपकी स्तुति तथा पूजा करते हैं

व्याख्या :-

परमात्मा की स्तुति तथा पूजा कैसे की जाये?

वैदिकगान करने वाले परमात्मा, ब्रह्माण्ड की सर्वोच्च ऊर्जा, का गुणगान करते हैं। भगवान की प्रशंसा में गाने के उद्देश्य से सामवेद प्रासंगिक है।

ऋग्वेद प्राकृतिक विज्ञानों को प्रस्तुत करता है। अतः ऋग्वेद के विद्वान् उन सब विज्ञानों के ज्ञान को प्राप्त करके तथा उन पर कार्य करके परमात्मा की स्तुति करते हैं। इन कार्यों के माध्यम से वे असंख्य कल्याणकारी गतिविधियाँ आयोजित करते हैं। इसे ज्ञान और कर्म का मिश्रित वेद माना जाता है।

यजुर्वेद को कर्मवेद कहा जाता है। लोग जीवन में वैदिक गतिविधियों के बारे में चर्चा करके परमात्मा की स्तुति करते हैं।

परमात्मा की स्तुति को केवल प्रक्रियावादी कार्य की तरह नहीं समझा जाना चाहिए। यह एक उच्च आध्यात्मिक तथा वैज्ञानिक, व्यक्तिगत के साथ—साथ सामाजिक क्रिया है।

परमात्मा की स्तुति पूरी तरह से व्यक्तिगत और अलग—थलग कार्य नहीं है। जब भी हम परमात्मा की स्तुति करें हमें उसके विशेष गुणों जैसे — प्रेम, महानता, कल्याण, त्याग आदि को अपने चरित्र में धारण करना चाहिए। हमारे चरित्र में दिखाई देने वाला व्यवहार तथा आध्यात्मिकता हमें वास्तव में आध्यात्मिक पथ पर प्रगति का मार्ग उपलब्ध करायेगी।

परमात्मा की स्तुति का वैदिक मार्ग वैज्ञानिक भी है। ऋग्वेद के विद्वानों से यह अपेक्षित होता है कि वे प्रकृति के भिन्न—भिन्न तत्त्वों जैसे — सूर्य, वायु तथा जल आदि की शक्तियों की गहराई में जायें तथा उन शक्तियों का मानवता के कल्याण के लिए उचित प्रयोग करें।

जीवन में सार्थकता

समाज में अपने उच्चाधिकारियों की प्रशंसा कैसे करें?

अपने वरिष्ठ परिजनों तथा उच्चाधिकारियों की प्रशंसा शब्दों के साथ—साथ उनके कार्यों का अनुसरण करके की जानी चाहिए तथा अपने प्रयासों को सुन्दर व्यवहार के साथ सबके कल्याण के लिए समर्पित करना चाहिए। आपके कार्य विद्वतापूर्ण तथा पूर्ण कुशल होने चाहिए।

ऋग्वेद प्रेरित करता है कि आपको अपने कार्य का उचित ज्ञान होना चाहिए।

यजुर्वेद प्रेरित करता है कि आपके कार्य आपके ज्ञान पर आधारित होने चाहिए।

सामवेद प्रेरित करता है कि प्रत्येक व्यक्ति की प्रशंसा करो तथा मीठा व्यवहार करो।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

ऋग्वेद मन्त्र-1-7-2

इन्द्र इदहर्योः सचा सम्मिश्ल आ वचोयुजा ।
इन्द्रो वज्री हिरण्ययः ॥२॥

इन्द्रः — परमात्मा, वायु, इन्द्रियों पर नियंत्रण रखने वाला
इत् — निश्चित रूप से, जैसे
हर्योः — हरने और देने, ज्ञान तथा कर्म की इन्द्रियों पर नियंत्रण
सचा — सब में मिलने वाला, ज्ञान और कर्म के बीच की संतुचित अवस्था में
सम्मिश्लः — पदार्थ, बिना किसी विवाद
आ — सब तरफ
वचोयुजा — सभी वाणियों में सक्रिय
इन्द्रः — परमात्मा, सूर्य, इन्द्रियों पर नियंत्रण रखने वाला
वज्रीः — तेज ताप, इच्छाशक्ति
हिरण्ययः — प्रकाश करने वाला

व्याख्या :-

सूर्य तथा वायु किस प्रकार ब्रह्माण्ड के प्रत्येक पदार्थ को प्रभावित करने की शक्ति रखते हैं?

इस मन्त्र में इन्द्र का अर्थ वायु तथा सूर्य अर्थात् भगवान की शक्तियों के रूप में समझा जा सकता है। निश्चित रूप से वायु में यह शक्ति है कि वह प्राप्त करती है और देती है। वायु वाष्पीकरण प्रक्रिया के माध्यम से धरती से जल को हर लेती है तथा धरती को जल वापिस भी देती है। वायु अशुद्धताओं को दूर करती है तथा धरती पर सभी प्राणियों को बिना भेदभाव के वाणी आदि जैसी गतिविधियाँ प्रदान करती है। वायु की यह शक्तियाँ सूर्य के तेज ताप तथा प्रकाश जैसी क्षमता के कारण कार्य करती हैं। वायु तथा सूर्य दोनों को ही भगवान के द्वारा शक्तियाँ प्राप्त होती हैं। अतः अन्ततः भगवान ही ब्रह्माण्ड के प्रत्येक पदार्थ को शक्तियाँ देने वाला है।

इन्द्र का अर्थ एक ऐसे उत्तम पुरुष के रूप में समझा जा सकता है जिसने अपनी पाँच ज्ञानेन्द्रियों तथा पाँच कर्मेन्द्रियों एवं मन पर नियंत्रण कर लिया है। ऐसे योग्य उत्तम पुरुष अपने व्यवहार में ज्ञान, कर्म तथा मर्सिष्क के बीच पूर्ण संतुलन प्रदर्शित करते हैं। ऐसे पुरुष कभी किसी विवाद आदि में नहीं रहते बल्कि समस्त पुरुषों के साथ सम्भाव से रहते हैं। अपनी इन्द्रियों पर पूर्ण नियंत्रण स्थापित करने के कारण ही उनकी इच्छाशक्ति मजबूत हो जाती है और वे दूसरों को भी प्रकाशित करते हैं। ऐसे लोगों का सम्मान परमात्मा की तरह किया जाता है।

जीवन में सार्थकता

वायु और सूर्य की शक्तियों की तरह हम भी दिव्यता के वाहक बन सकते हैं।

1. हमें प्रत्येक स्थान पर अपने शामिल होने के दोनों पक्षों पर ध्यान केन्द्रित करना चाहिए — जब भी हम किसी व्यक्ति या किसी स्थान से कुछ लेते हैं तो हमें बराबर मात्र में कुछ देना भी चाहिए।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

2. हमारे कार्य सम्बन्धित विषय की गहरी जानकारी पर आधारित होने चाहिए।
3. हमें कभी भी किसी प्रकार का विवाद या मतभेद खड़ा ही नहीं करना चाहिए।
4. हमारी पहचान एक मजबूत इच्छाशक्ति वाले प्रकाशित पुरुष के रूप में हो जायेगी।

ऋग्वेद मन्त्र—1—7—3
इन्द्रो दीर्घाय चक्षस आ सूर्यं रोहयद्विवि ।
वि गोभिरद्विमरैयत् ॥३॥

इन्द्रः — सर्वोच्च शक्तिमान, परमात्मा
दीर्घाय — सदा के लिए
चक्षसे — दर्शन के लिए
आ (रोहयत से पूर्व जोड़कर)
सूर्यम् — सूर्य
रोहयत (आ — रोयहत) — स्थापित
दिवि — आकाश की ऊँचाईयों में
वि (ऐरयत् से पूर्व जोड़कर)
गोभि: — अपनी किरणों के साथ
अद्रिम् — मेघ
ऐरयत् (वि — ऐरयत) — वर्षा के लिए प्रेरित तथा जल को बादलों के रूप में परिवर्तित करने के लिए

व्याख्या :-

सूर्य तथा वायु का समन्वय किस प्रकार होता है?
मस्तिष्क तथा हृदय का समन्वय किस प्रकार होता है?

इस मन्त्र का स्पष्ट वैज्ञानिक सार सूर्य द्वारा संचालित जल चक्र पर केन्द्रित है। परमात्मा की सर्वोच्च शक्ति ने सूर्य को आकाश की ऊँचाईयों में स्थापित किया है जिसका प्राथमिक उद्देश्य समस्त जीवों को लम्बे समय के लिए दृष्टि की शक्ति प्रदान करना है। द्वितीय, सूर्य की शक्ति बादलों को प्रेरित/बाध्य करती है कि वे वर्षा के रूप में नीचे धरती पर जायें और फिर वापिस जल को ऊपर लाकर बादलों के रूप में स्थापित करें।

आध्यात्मिक रूप से सूर्य को हम मानसिक शक्ति के रूप में समझ सकते हैं जिसे परमात्मा ने हमारे शरीर की ऊँचाई अर्थात् मस्तिष्क में स्थापित किया है। इस मस्तिष्क को यह प्रशिक्षण होना चाहिए कि वह सूर्य जैसी शक्तियों को धारण करे जैसे — मजबूत इच्छाशक्ति, दृढ़ संकल्प तथा परमात्मा के ज्ञान की ऊर्जा। हृदय को यदि हम बादल समझें तो इसे परमात्मा ने हमारे शरीर के मध्य आकाश में स्थापित किया है। मस्तिष्क के द्वारा हृदय को प्रेरणा प्राप्त होनी चाहिए कि वह अन्य लोगों के लाभ के लिए प्रेम तथा कल्याण रूपी वर्षा की बूंदों का निर्माण करे। प्रेम तथा कल्याणकारी समस्त गतिविधियों के प्रतिफल में हमारे मस्तिष्क

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

को परमात्मा से इन्हीं कार्यों की और अधिक शक्तियाँ प्राप्त होंगी। हमारा जीवन आत्मानुभूति के मार्ग पर अग्रसर हो पायेगा। हम इस सच्चाई को भी साक्षात् कर पायेंगे कि वास्तविक शक्तियाँ हमारे मस्तिष्क या हृदय, सूर्य या बादलों की नहीं हैं, परन्तु परमात्मा की हैं।

जीवन में सार्थकता

मस्तिष्क को सूर्य की शक्तियों के समान विकसित करो — मजबूत इच्छाशक्ति, दृढ़ संकल्प तथा दिव्य ज्ञान।

हृदय को बादलों की तरह विकसित करो जो सबके लिए प्रेम और कल्याण की वर्षा कर सके।
आपको भौतिक तथा आध्यात्मिक जीवन में अपार लाभ होगा।

ऋग्वेद मन्त्र-1-7-4

इन्द्र वाजेषु नोऽव सद्गृहस्त्रप्रधनेषु च ।

उग्र उग्राभिरुतिभिः ॥४॥

इन्द्रः — परमात्मा

वाजेषु — संग्रामों में

नो — हमारा

अव — रक्षा करता है

सहस्रप्रधनेषु — हजारों आध्यात्मिक संग्राम (संयम का पालन करके)

च — और

उग्र — आपकी अपार तथा आश्चर्यजनक शक्तियाँ हैं

उग्राभिः — उन आश्चर्यजनक शक्तियों के साथ

ऊतिभिः — हमें समस्त संग्रामों में सफल करते हो

व्याख्या :-

जीवन में दो प्रकार के संग्राम कौन से हैं?

समस्त संग्रामों में सफलता कैसे प्राप्त करें?

प्रत्येक व्यक्ति दो में से किसी एक या दोनों संग्रामों में लगा रहता है :—

(क) भौतिक सम्पत्तियों तथा शक्तियों के लिए सांसारिक संग्राम।

(ख) संयमों का पालन करने के लिए आध्यात्मिक संग्राम।

सर्वोच्च शक्तिमान परमात्मा के पास अपार तथा आश्चर्यजनक शक्तियाँ हैं। इसलिए उनसे यह प्रार्थना की गई है कि अपनी आश्चर्यजनक शक्तियों के साथ हमें सफल करें।

वास्तव में केवल प्रार्थना हमारे लिए लाभकारी नहीं हो सकती। हमें परमात्मा के उन लक्षणों को धारण करके क्रियान्वित करना चाहिए। हमें परमात्मा की शक्तियों की प्रार्थना करनी चाहिए। यदि हम मानसिक

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

प्रशिक्षण से स्वयं में अपार तथा आश्चर्यजनक शक्तियों का विकास कर लें तो हम भौतिक तथा आध्यात्मिक संग्रामों में निश्चित रूप से सफल हो सकते हैं।

जीवन में सार्थकता

जीवन के किसी भी क्षेत्र में सफलता आपके मस्तिष्क की तीव्रता पर निर्भर करती है जिसके साथ आप कोई भी कार्य करते हैं। आपका ज्ञान तथा गतिविधियाँ कितनी आश्चर्यजनक और तीव्र हैं।

- (1) अपने मस्तिष्क को तीव्र करो।
- (2) आश्चर्यजनक ज्ञान प्राप्त करके उसके अनुसार गतिविधियाँ प्रारम्भ करो।
- (3) अपने समस्त कार्यों को 'उग्र उग्राभि: ऊतिभि' प्रार्थना के साथ परमात्मा के प्रति समर्पित कर दो।

ऋग्वेद मन्त्र-1-7-5

इन्द्र वयं महाधन इन्द्रमर्भे हवामहे।
युंज वृद्धत्रेषु वज्जिणम् ॥५॥

इन्द्रम् – समस्त बुराईयों का नाश करने वाला परमात्मा

वयम् – हम

महाधन – महान आध्यात्मिक संग्रामों में

इन्द्रम् – परमात्मा

अर्भ – छोटे भौतिक संग्रामों में

हवामहे – स्मरण और प्रार्थना करते हैं

युजम् – युक्त करें

वृद्धत्रेषु – बादलों में

वज्जिणम् – सूर्य की शक्तिशाली किरणों को

व्याख्या :-

जीवन के सभी संग्रामों में सफलता कैसे प्राप्त करें?

जीवन के प्रत्येक संग्राम में, चाहे वह आध्यात्मिक हो या भौतिक, हम केवल परमात्मा का ही स्मरण करते हैं और उसी से सहायता और सफलता की प्रार्थना करते हैं।

यह मन्त्र भी परमात्मा के आशीर्वाद को प्राप्त करने का सूत्र देता है। जिस प्रकार परमात्मा सूर्य की शक्तिशाली किरणों को बादलों के साथ युक्त करता है और धरती को जल प्राप्त होता है, उसी प्रकार हमें भी महान इच्छाशक्ति, दृढ़ संकल्प तथा ज्ञान को अपने मस्तिष्क में धारण करना चाहिए। इसके बाद इन शक्तियों को हृदय की इच्छाओं के साथ युक्त कर देना चाहिए। हमें सफलता की वर्षा के रूप में परमात्मा का आशीर्वाद प्राप्त होगा।

जीवन में सार्थकता

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

- (1) मजबूत इच्छाशक्ति तथा दृढ़ संकल्प के साथ सम्बन्धित विषय का ज्ञान प्राप्त करो।
- (2) इन्हें हृदय की इच्छाओं पर लागू कर दो।

ऋग्वेद मन्त्र-1-7-6
स नो वृषन्नमुं चरुं सत्रदावन्नपावृधि ।
अस्मभ्यमप्रतिष्कृतः ॥६॥

सः – आप, परमात्मा
नो – हमारे लिए
वृषन्न – वर्षा करते हो
अमुम् – मोक्ष, आकाश में विचरण करने वाले
चरुम् – ज्ञान, मेघ
सत्रदावन्न – सब वस्तुओं देने वाले
अपावृधि – मोक्ष का द्वार खोलने वाले
अस्मभ्यम् – हमारे लिए
अप्रतिष्कृतः – निश्चय करने वाले (हमारे मस्तिष्क में) तथा हमें मना न करने वाले, अपने स्थान पर स्थित
सूर्य

व्याख्या :-

परमात्मा किस प्रकार हमें ज्ञान तथा शक्ति देते हैं?

परमात्मा! आप समस्त पदार्थों के देने वाले हो, हमारे लिए ज्ञान की वर्षा करते हो। ज्ञान को चारू कहा गया है क्योंकि इसकी वर्षा परमात्मा के द्वारा हमारे मस्तिष्क में होती है। इस ज्ञान को मस्तिष्क में दृढ़ रूप से धारण किया जाता है; यह मस्तिष्क का भोजन है; इसे सब लोगों के कल्याण के लिए क्रियान्वित किया जाता है।

परमात्मा! हम आपसे प्रार्थना करते हैं कि अपने महान् ज्ञान की शक्ति से हमारे लिए मोक्ष के द्वार खोल दो। आपके ज्ञान को हमने मस्तिष्क में दृढ़ रूप से धारण करके सबके कल्याण के लिए प्रयोग किया है।

परमात्मा! कृपया हमारे मस्तिष्क में ही दृढ़ रहना, इसमें कोई दूसरा विचार न हो। हमें किसी एक या अन्य इच्छाओं की लागत पर भी केवल परमात्मा की इच्छा करनी चाहिए।

वैज्ञानिक रूप से इस मन्त्र का अर्थ है – परमात्मा! आकाश में विचरते यह बादल वर्षा की बूंदें हमारे लिए प्रदान करते हैं और उसी से धरती पर समस्त पदार्थ उपलब्ध होते हैं। यह प्रक्रिया सूर्य की शक्ति के कारण चलती है जो केवल हमारे लिए अपने स्थान पर स्थापित है।

जीवन में सार्थकता

परमात्मा स्वयं को हमारे जीवन में किस प्रकार व्यक्त करते हैं?

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

परमात्मा हमारे जीवन में माता, पिता, गुरु, निर्देशक आदि के रूप में व्यक्त करते हैं। ये सब महानुभाव केवल हमारे कल्याण के लिए, दुःखों और कष्टों से मुक्ति के लिए हमें अनेक रूपों में ज्ञान देते हैं। ये सब महानुभाव अपनी प्रकृति और प्रवृत्ति से ही हमारे लिए दाता हैं। उनके मन में हमारे लिए जो महत्व था हमें उसकी अनुभूति विकसित करनी चाहिए। हमें उनके प्रति सदैव आदर पूर्वक भाव रखते हुए उन्हें अपनी स्मृति में रखना चाहिए। तभी हम इस जीवन का पूरी तरह आनन्द उठा पायेंगे। जिस प्रकार परमात्मा सर्वोच्च दाता है, उसी प्रकार ये सब महानुभाव भी हमारे दाता ही हैं।

ऋग्वेद मन्त्र-1-7-7
तु×जेतु×जेष्ट य उत्तरे स्तोमा इन्द्रस्य वज्जिणः ।
न विन्दे अस्य सुष्टुतिम् ॥७॥

तु×जे तु×जे – एक-एक पदार्थ
ये – जो है

उत्तरे – निश्चित सिद्धान्त के रूप में
स्तोमा – स्तुति, प्रशंसा तथा पूजा के लिए

इन्द्रस्य – परमात्मा की
वज्जिणः – उसकी सर्वोच्च शक्ति (समस्त बुराईयों को समाप्त करने की)

न – नहीं

विन्दे – सक्षम या योग्य

अस्य – उसके लिए

सुष्टुतिम् – महान और पूर्ण प्रशंसा

व्याख्या :-

क्या हम परमात्मा की पूरी प्रशंसा कर सकते हैं?

हम जिस किसी भी एक-एक पदार्थ के सम्पर्क में आते हैं, वह परमात्मा की प्रशंसा, स्तुति तथा पूजा के लिए है। सृष्टि का यह निश्चित सिद्धान्त है क्योंकि प्रत्येक पदार्थ की रचना परमात्मा के द्वारा अपनी सर्वोच्च शक्ति से ही की गई है जिसके कारण उसे इन्द्र कहा जाता है। हमारे पास केवल सीमित ज्ञान है, हमारी इन्द्रियों की शक्तियाँ भी सीमित हैं। अतः हम इतनी क्षमता अर्जित नहीं कर सकते जिससे परमात्मा की पूरी प्रशंसा कर पायें।

जीवन में सार्थकता

क्या यह पदार्थ परमात्मा की अभिव्यक्ति हैं?

क्या हम अपने ऋण पूरी तरह चुका सकते हैं?

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

परमात्मा की समस्त भेंट उसी की स्तुति, प्रशंसा और पूजा के लिए हैं। यह एक सर्वमान्य सिद्धान्त हैं जो प्रत्येक पदार्थ पर लगता है। अधिकतम पूजा के बावजूद भी हम इतनी योग्यता अर्जित नहीं कर सकते कि हम परमात्मा की प्रशंसा पूरी तरह कर पायें।

इसी प्रकार मानवीय सम्बन्धों में भी हमें उन सबके लिए महान् आदर तथा प्रशंसा व्यक्त करनी चाहिए जो हमारे लिए कुछ भी लाभकारी वस्तु प्रदान करते हैं या आवश्यकता के समय हमारी सहायता करते हैं। यदि आप पदार्थों के रूप में किसी को समान माप के पदार्थ वापिस दे भी दें परन्तु उस कृपा को तो वापिस नहीं दे सकते जो उन्होंने आवश्यकता के समय आप पर की थी। इसलिए प्रत्येक दाता या सहायक के प्रति ऋणी रहना चाहिए और उसकी कृपा को महसूस करना चाहिए।

ऋग्वेद मन्त्र-1-7-8

वृषा यूथेव वंसगः कृष्टीरियत्योजसा ।
ईशानो अप्रतिष्कृतः ॥८॥

वृषा – सुखों की वर्षा करने वाला

यूथेव – गायों के समूह को प्राप्त

वंसगः – शक्तिशाली बैल

कृष्टीः – महान् धर्मात्माओं तथा ऊर्जावान् लोगों को

इयर्ति – प्राप्त होता है

ओजसा – उनकी शक्तियों, अच्छाईयों तथा ऊर्जाओं के कारण

ईशानः – वह स्तुति एवं प्रशंसा योग्य परमात्मा

अप्रतिष्कृतः – निश्चय करने वाले (हमारे मस्तिष्क में) तथा हमें मना न करने वाले, अपने स्थान पर स्थित सूर्य

व्याख्या :-

परमात्मा की अनुभूति कौन प्राप्त कर सकता है?

परमात्मा, जो सुखों की वर्षा करता है, हमें उस मजबूत बैल की तरह प्राप्त होता है जो गायों के लिए उपलब्ध होता है। वह महान् धर्मात्माओं तथा ऊर्जावान् लोगों को उनकी शक्तियों, अच्छाईयों तथा ऊर्जाओं के कारण प्राप्त होता है। स्तुति एवं प्रशंसा के योग्य वह परमात्मा सदा-सदा हमारे मस्तिष्क में दृढ़ रहे। उसकी दिव्यता हमारे जीवन की सभी गतिविधियों में विराजमान हो, हमारा अहंकार नहीं।

जीवन में सार्थकता

जीवन में प्रेम और आस्था से ही आशीर्वाद प्राप्त होता है।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

अपने नाम और अस्तित्व के अहंकार का विचार किये बिना महान् अच्छाईयों तथा ऊर्जाओं के बल पर सबके कल्याण के लिए कार्य करने वाला कोई भी व्यक्ति परमात्मा का आशीर्वाद तथा संगति को अपनी अनुभूति से महसूस कर सकता है।

इसी प्रकार पूरे समाज तथा सभी सम्बन्धों के प्रति प्रेम तथा आस्था के साथ अपनी अच्छाईयों, नैतिकता, सुन्दर व्यवहार तथा ऊर्जाओं का प्रयोग करके कोई भी व्यक्ति समस्त लाभार्थियों के प्रेम तथा आशीर्वाद का आनन्द प्राप्त कर सकता है।

ऋग्वेद मन्त्र-1-7-9
य एकंषणीनां वसूनामिरज्यति ।
इन्द्रः प॒च क्षितीनाम् ॥९॥

यः — वह

एकः — अकेला

चर्षणीनाम् — ऊर्जावान तथा सक्रिय मनुष्य

वसूनाम् — समस्त सम्पत्तियाँ

इरज्यति — प्रशंसा के योग्य

इन्द्रः — सर्वोच्च परमात्मा

प॒च — पाँच

क्षितीनाम् — धरतियाँ (पाँच प्रकार के लोग)

व्याख्या :-

क्या परमात्मा सबके लिए समान है?

परमात्मा अकेली सर्वोच्च शक्ति है जो सब ऊर्जावान तथा सक्रिय मनुष्यों के द्वारा प्रशंसा के योग्य है। वास्तव में वह सभी पाँच प्रकार की धरतियों तथा पाँच प्रकार के लोगों का पालक है — महानतम्, महान्तर, महान्, मध्य श्रेणी तथा निम्न श्रेणी के लोग।

परमात्मा समस्त ऊर्जावान तथा सक्रिय लोगों के लिए एक समान है जो उसकी स्तुति करते हैं।

परमात्मा को किसी प्रकार की सहायता की आवश्यकता नहीं, परन्तु हम सबको उसकी सहायता की आवश्यकता है।

जीवन में सार्थकता

यह मन्त्र स्पष्ट रूप से एक परमात्मा की अवधारणा को सिद्ध करता है — परमात्मा सभी मनुष्यों के लिए, सभी जीव पदार्थों तथा जड़ पदार्थों के लिए एक ही है। वह अच्छे और बुरे सबके लिए सर्वोच्च शक्ति तथा सबका सर्वोच्च पिता है। केवल वही सर्वशक्तिमान है और उसे किसी सहायता की आवश्यकता नहीं है परन्तु हम सबको उसकी सहायता की आवश्यकता है।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

हमारे माता—पिता, गुरु, निर्देशक तथा अन्य उच्चाधिकारी भी अपने बच्चों, शिष्यों, प्रशिक्षार्थियों, कर्मचारियों तथा निम्न स्तर के सहयोगियों के लिए परमात्मा की तरह एक सर्वमान्य छाता बनकर कार्य करते हैं। परमात्मा की तरह वे अपने इन सब छोटे सम्बन्धियों का समर्थन करते हैं।

ऋग्वेद मन्त्र—1—7—10
इन्द्रं वो वि॒त्तृस्परिष्टृ हवामहे जनेभ्यः ।
अद्वृस्माकमस्तु केवलः ॥१०॥

इन्द्रम् — सर्वोच्च पिता
वः — आप सबके लिए
वित्तः — समस्त पदार्थ
परि — परे, श्रेष्ठ
हवामहे — स्तुति योग्य, प्रशंसनीय, पूजनीय
जनेभ्यः — समस्त लोग
अस्माकम् — हमारे लिए
अस्तु — वह है
केवलः — केवल एक

व्याख्या :-

क्या केवल परमात्मा हमारे लिए वास्तविक, मूल तथा आन्तरिक है?
परमात्मा सर्वोच्च पिता होने के कारण सब वस्तुओं, पदार्थों तथा लोगों से परे और श्रेष्ठ है। वह आप सबके लिए है और आपके द्वारा स्तुति के योग्य है। हमारे लिए वही केवल एक है।

जीवन में सार्थकता

इस सूक्त के मन्त्र 9 तथा 10 में यह सिद्ध किया गया है कि —
परमात्मा केवल एक सर्वोच्च पिता है।
केवल वही हमारा अपना है, पूरी तरह सबके लिए व्यक्तिगत।
वह समस्त वस्तुओं और लोगों से परे तथा श्रेष्ठ है।
इसलिए केवल उसी की स्तुति करनी चाहिए, उसके नाम पर किसी अन्य की नहीं।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

ऋग्वेद मण्डल-1, सूक्त-8

ऋग्वेद मन्त्र-1-8-1

ऐन्द्र सानसि रयिं सजित्वानं सदासहम् ।
वर्षिष्ठमूतये भर ॥1॥

इन्द्र – सर्वोच्च शक्ति, परमात्मा

सानसिम् – लगातार और समान रूप से भोगने योग्य

रयिम् – सम्पत्ति (भौतिक तथा आध्यात्मिक)

सजित्वानम् – हमें विजयी बनाते हैं

सदासहम् – सभी कठिनाईयों और कष्टों को झेलने की शक्ति

वर्षिष्ठम् – लगातार वृद्धि

ऊतये – हमारे संरक्षण के लिए

आभर – सब प्रकार से हमें उपलब्ध कराते हैं

व्याख्या :-

समस्त सम्पत्तियों का उत्कृष्ट उपयोग क्या होता है?

सर्वोच्च शक्ति, परमात्मा, हमें हर प्रकार की सम्पत्ति दे, अर्थात् भौतिक और आध्यात्मिक, जिसे हम लगातार तथा समान रूप से उन लोगों के लिए प्रयोग कर सकें जिन्हें इसकी आवश्यकता है। जिस प्रकार धनी व्यक्तियों के द्वारा निर्धन व्यक्तियों को दान दिया जाता है, उसी प्रकार दिव्य और सांसारिक ज्ञान भी विद्वान लोगों के द्वारा उन लोगों के बीच पहुँचाया जाना चाहिए जिन्हें इसकी आवश्यकता है। इस प्रकार सभी सम्पत्तियाँ हर तरफ से हमें संरक्षित करेंगी और हमें यह शक्ति प्रदान करेंगी जिससे हम समस्त कठिनाईयों और कष्टों को झेल सकें। हमें इसी प्रकार से हर प्रकार की सम्पत्ति को प्राप्त करना चाहिए और व्यय करना चाहिए जिससे यह हमारे संरक्षण के लिए बढ़ती रहे।

भौतिक तथा आध्यात्मिक सभी सम्पत्तियों के लिए निम्न वैदिक मापदण्ड हैं :-

1. यह उन सबके द्वारा प्रयोग किये जाने योग्य हो जिन्हें इनकी आवश्यकता है।
2. तभी यह हमें हर प्रकार से विजयी बनायेंगी।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

3. यह हमें इस योग्य भी बनायेगी कि हम सभी कठिनाईयों और कष्टों को झेल सकें।
4. यह सदैव बढ़ती रहेगी।
5. यह हमें लम्बे समय तक संरक्षित करेगी।

जीवन में सार्थकता

भौतिक वस्तुओं और ज्ञान को उन लोगों के साथ साझा करो जिन्हें इनकी आवश्यकता है। तभी यह हमें विजयी, प्रगतिशील, कठिनाईयों को सहन करने योग्य तथा संरक्षण के योग्य बनायेंगी। यदि आपके पास धन है तो इसे निर्धनों के साथ बांटो। यदि आपके पास ज्ञान है तो इसे अपने अनुयायियों में बांटो। यदि आपके पास आध्यात्मिक शक्तियाँ हैं तो अन्य लोगों को भी इसके लिए प्रेरित करो।

ऋग्वेद मन्त्र-1-8-2
नि येन मुष्टिहत्या नि वृत्र रुणधामहै।
त्वोतासो न्यर्वता ॥२॥

नि – मजबूती से

येन – उस सम्पत्ति के साथ

मुष्टिहत्या – मुट्ठी के प्रहार के समान

निवृत्र – हमारे शत्रु

रुणधामहै – उन्हें रोक सकें और कमजोर कर सकें

त्व ऊतासो – हमारे द्वारा संरक्षित

नि – मजबूती से

अर्वता – शत्रुओं को रोके तथा कमजोर करे, हमारे अश्वों अर्थात् इन्द्रियों के साथ

व्याख्या :-

हमारे शत्रु कौन हैं?

शत्रुओं से अपनी रक्षा कैसे करें?

आध्यात्मिक रूप से हमें अपने मानसिक शत्रुओं पर लगातार निगरानी रखनी चाहिए जैसे – काम, क्रोध, लोभ, मोह तथा अहंकार आदि। ये हमारे मानसिक शत्रु हैं और चित्तवृत्तियाँ हैं जैसा योग दर्शन में भी उल्लेख मिलता है। हमें अपनी भौतिक, मानसिक तथा आध्यात्मिक सम्पत्तियों को इस प्रकार प्रयोग करना चाहिए जिससे ये एक मुट्ठी के प्रहार की तरह हमारे शत्रुओं को रोक सकें तथा उन्हें कमजोर कर सकें। एक महान सिद्धान्त हमेशा ध्यान में रखना चाहिए कि हम पहले से ही भगवान के द्वारा संरक्षित हैं जिसने हमें 10 अश्व अर्थात् पांच ज्ञानेन्द्रियाँ और पांच कर्मेन्द्रियाँ प्रदान की हैं जिससे हम अपने मानसिक शत्रुओं पर प्रहार कर सकें। अच्छा पोषक भोजन तथा स्वस्थ जीवन एक सेनानी के समान हैं जो इन शत्रुओं के विरुद्ध लड़ता है।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

शारीरिक रूप से, एक राष्ट्र की तरह, हम लोगों का एक ऐसा समूह हैं जिसकी एक समान संस्कृति तथा अन्य समानताएँ हैं। हमें अपनी सम्पत्तियाँ, धन तथा विशेषज्ञ ज्ञान का प्रयोग करके विशाल सैनिक संगठन तैयार करने चाहिए जो अपनी पूरी शक्ति के साथ अपने हाथों तथा अश्वों, छोटे तथा बड़े हथियारों, वायुयानों तथा सभी नई आविष्कार की गई मशीनों का प्रयोग करके राष्ट्र के शत्रुओं के विरुद्ध लड़ सकें।

जीवन में सार्थकता

धन और सारी ऊर्जा अपने सैनिकों की ताकत बढ़ाने में लगा देनी चाहिए।

धन तथा अपनी सारी ऊर्जा का प्रयोग अपनी शारीरिक तथा मानसिक शक्तियों को बढ़ाने, सैनिक संगठनों तथा तकनीकी ज्ञान की वृद्धि के लिए करने से ही सीधा संरक्षण सम्भव है।

ऋग्वेद मन्त्र-1-8-3

इन्द्र त्वोतास आ वयं वज्रं घना ददीमहि ।
जयेम सं युधि स्पृधः ॥३॥

इन्द्र – परमात्मा

त्वोतास – आपके द्वारा संरक्षित होकर

आ – (ददीमहि से पूर्व जोड़कर)

वयम् – हम

वज्रम् – हथियार, शारीरिक शक्तियाँ

घना – मजबूत, दृढ़ संकल्प

ददीमहि (आददीमहि) – प्राप्त करना, स्वीकार करना

जयेम – विजयी

सम् – पूर्ण रूप से

युधि – सभी संग्रामों में

स्पृधः – अपने शत्रुओं के साथ

व्याख्या :-

सभी संग्रामों में विजयी कैसे हों?

भगवान के द्वारा भिन्न-भिन्न प्रकार की सम्पत्तियों जैसे शरीर, मन तथा आत्मा और सभी भौतिक वस्तुओं से संरक्षित, हमें मजबूत अस्त्रें-शस्त्रें को प्राप्त करना चाहिए जिससे हम अपने शत्रुओं के विरुद्ध सभी संग्रामों में विजय प्राप्त कर सकें। यह हमारी आध्यात्मिक प्रगति के साथ-साथ राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए भी आवश्यक है।

आध्यात्मिक रूप से हमारा ज्ञान, शुभ गुण तथा ईश्वर भक्ति हमारे दृढ़ संकल्प के हथियार हैं जो हमें मानसिक कष्टों, कठिनाईयों, इच्छाओं और अहंकार के सामने विजयी बनाते हैं।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पञ्चवती वेदिका

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए हमारे पास अति आधुनिक विकसित अस्त्र-शस्त्र, वायुयान, मिसाइल और सबसे अधिक आवश्यक समर्पित और मजबूत सैनिकों का होना आवश्यक है जिनका अपनी इन्द्रियों तथा व्यक्तिगत इच्छाओं पर पूर्ण नियंत्रण हो।

जीवन में सार्थकता

दृढ़ संकल्प रूपी मजबूत हथियार, इच्छाशक्ति तथा परमात्मा के प्रति समर्पण भाव हमारी दिव्य शक्तियाँ हैं जो हमें सभी संग्रामों में विजयी बनाती हैं।

भौतिक तथा तकनीकी अस्त्र-शस्त्र द्वितीय स्थान पर हैं।

ऋग्वेद मन्त्र-1-8-4

वयं शूरेभिरस्तृभिरिन्द्रं त्वया युजा वयम्।
सासह्याम पृतन्यतः ॥४॥

वयम् – हम, सैनिक

शूरेभिः – शारीरिक शक्ति तथा तकनीकी ज्ञान वाले अपने महान योद्धाओं के साथ

अस्तृभिः – सब अस्त्रों को प्रयोग करने के विशेषज्ञ

इन्द्र – परमात्मा

त्वया – आप

युजा – संयुक्त, एकता करें

वयम् – हमारे साथ

सासह्याम – शत्रुओं तथा समस्त कठिनाईयों को झेलने तथा उन्हें कमजोर करने में सक्षम

पृतन्यतः – मजबूत शत्रुओं की

व्याख्या :-

समस्त संग्रामों में सबसे महत्त्वपूर्ण तथा मजबूत हथियार कौन सा है?

हम, सैनिक, शारीरिक शक्ति तथा तकनीकी ज्ञान वाले महान योद्धाओं के साथ जो सभी अस्त्रों का प्रयोग करने के विशेषज्ञ हैं, आप (परमात्मा) के साथ संयुक्त होते हैं, जिससे हम मजबूत शत्रुओं की सेना को झेलने तथा कमजोर करने के योग्य बन सकें।

जीवन में सार्थकता

दिव्य संगति के लिए प्रार्थना करें तथा इस एकता पर विश्वास और इसकी अनुभूति करें।

हमारे पास शारीरिक, मानसिक तथा भौतिक शक्तियाँ अतिउत्तम हो सकती हैं, परन्तु सबसे महत्त्वपूर्ण तथा सबसे मजबूत हथियार है – सर्वोच्च शक्ति, परमात्मा के साथ हमारी एकता। इस दिव्य एकता के लिए ही प्रार्थना करें। इस एकता पर विश्वास करें और इसकी अनुभूति करें। यही हमें सभी संग्रामों में विजयी करती है।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

ऋग्वेद मन्त्र-1-8-5

महाँ इन्द्रः पर' च नु महित्वमस्तु वज्रिणे ।
द्यौर्न प्रथिना शवः ॥५॥

महान् – सर्वोच्च तथा महान शक्ति
इन्द्रः – परमात्मा
परः – श्रेष्ठताओं तथा ज्ञान में सर्वोत्तम
च नु – और वह भी
महित्वम् – ये दोनों प्रशंसाएँ, मजबूती तथा श्रेष्ठता
अस्तु – हमारे साथ हों
वज्रिणे – हमारे दृढ़ संकल्प तथा इच्छाशक्ति के लिए
द्यौ – सूर्य की ऊर्जा (ताकत, ऊर्जा तथा प्रकाश)
न – समान
प्रथिना – दूर तक फैली हुई
शवः – हमारी शक्ति

व्याख्या :-

दिव्य शक्तियाँ अपना प्रभाव कैसे उत्पन्न करती हैं?

परमात्मा सर्वोच्च तथा महान शक्ति है। वह श्रेष्ठताओं तथा ज्ञान में भी सर्वोत्तम है। परमात्मा के यह दोनों प्रशंसनीय गुण अर्थात् मजबूती तथा श्रेष्ठ ज्ञान हमारे साथ हों जिससे हमारे संकल्प और इच्छाशक्ति दृढ़ हो सकें। सूर्य अपनी शक्तियों के साथ अपने स्थान पर स्थाई रहता है। परन्तु इसकी शक्तियाँ (ऊर्जा तथा प्रकाश) दूर स्थानों तक पहुँचती हैं। इसी प्रकार हमारी शक्तियाँ भी सूर्य की तरह होनी चाहिए जो शारीरिक या दिखाई देने वाले प्रभाव के बिना शत्रुओं के ऊपर भी प्रभाव उत्पन्न कर सके।

आध्यात्मिक योद्धाओं के जीवन में यह सिद्धान्त अधिक महसूस किया जा सकता है। वे सफलता पूर्वक काम, क्रोध, लोभ, मोह, इच्छाओं तथा अहंकार आदि जैसे अपने शत्रुओं को रोक कर हरा सकते हैं। उनकी आध्यात्मिक शक्तियाँ केवल उनका स्मरण करने से ही या उनके दर्शन मात्र से ही प्रभाव उत्पन्न कर देती हैं।

जीवन में सार्थकता

योद्धाओं को भी आध्यात्मिक रूप से सम्पन्न होना चाहिए।

आध्यात्मिक रूप से सम्पन्न व्यक्ति परमात्मा के महान योद्धा हैं।

योद्धा सैनिकों को भी आध्यात्मिक रूप से परमात्मा अर्थात् सर्वोच्च दिव्य ऊर्जा के साथ संयुक्त होना चाहिए। उन्हें केवल अपने भौतिक अस्त्र-शस्त्रों या मस्तिष्क के तकनीकी ज्ञान पर ही निर्भर नहीं होना चाहिए।

इसी प्रकार एक आध्यात्मिक रूप से सम्पन्न व्यक्ति भी योद्धा के समान ही है जो समाज के मानसिक शत्रुओं के विरुद्ध लड़ता है।

ऋग्वेद मन्त्र-1-8-6

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

समोहे वा य आशत् नरस्तोकस्य सनितौ ।
विप्रासो वा धियायवः ॥६॥

समोहे – शत्रुओं को जीतने के लिए

वा – वे

य – जो

आशत् – कड़ी मेहनत करने के लिए तत्पर, परमात्मा की स्तुति करने के लिए

नरः – मनुष्य

तोकस्य – अपनी सन्तानों के लिए, उनकी आवश्यकताओं की पूर्ति तथा संरक्षण के लिए

सनितौ – विद्या की शिक्षा में लगाना

विप्रासः – महान् ज्ञानवान् लोग

वा – वे

धियायवः – अपने बच्चों को महान् ज्ञान प्रदान करते हैं

व्याख्या :- राष्ट्र की पूर्ण सुरक्षा किस प्रकार हो सकती है?

शक्तिशाली सैनिक नागरिकों की रक्षा तथा अपने राष्ट्र की सीमाओं को सुरक्षित रखने के लिए अपना जीवन बलिदान करने से भी संकोच नहीं करते और सदैव तत्पर रहते हैं। वे इसे परमात्मा की पूजा के समान ही समझते हैं।

आध्यात्मिक रूप से हम परमात्मा की स्तुति रूपी भक्तिभाव के सहारे सामान्यतः अपने मानसिक शत्रुओं तथा वित्त की वृत्तियों को जीत सकते हैं। इस कार्य में परमात्मा का महान् और सर्वोच्च ज्ञान तथा उस परमात्मा की अनुभूति प्राप्त करने का हमारा उद्देश्य सहायक होते हैं।

शारीरिक स्तर पर हमें अपने आपको रोग रूपी शत्रुओं से सुरक्षित रखने की आवश्यकता है। पौष्टिक भोजन तथा प्राकृतिक रहन–सहन से हम अपने शरीर को शक्तिशाली बना सकते हैं – (1) सरल और शान्त मन, (2) वातावरण तथा भोजन से आक्सीजन की बाहुलता, (3) अम्लीय भोजन पर रोक।

समाज को सुरक्षित रखना दूसरा महत्त्वपूर्ण कार्य है जिसके लिए लोगों को ज्ञान में रत रखना चाहिए जिससे वे अपनी सुरक्षा के लिए अधिक सम्पत्ति कमाने के योग्य बन सकें। इससे भी अधिक महत्त्वपूर्ण है, बच्चों को महान् ज्ञान अर्थात् वैदिक विवेक, नैतिकता, ईश्वरभक्ति आदि की शिक्षा दी जाये। महान् ज्ञान से सम्पन्न समाज जीवन के द्वन्द्वों की तुलनात्मक समझ बना लेता है अर्थात् वह समझ पाता है कि उसके लिए क्या अच्छा है और क्या बुरा। आध्यात्मिक ज्ञान से सुसज्जित लोगों वाले समाज को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भी संवेदनशील माना जाता है। अतः आध्यात्मिक तथा विवेकशील अनौपचारिक ज्ञान को औपचारिक शिक्षा पद्धति का अंग बनाया जाना चाहिए जिससे समाज की पूर्ण सुरक्षा सम्भव हो सके। महान् ज्ञान वाले लोग राष्ट्र के भीतर और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भी राष्ट्र के प्रहरी माने जाते हैं।

जीवन में सार्थकता

देश के सैनिक तथा महान् ज्ञान से सुसज्जित नागरिक राष्ट्र का पूर्ण संरक्षण सुनिश्चित कर सकते हैं।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

आध्यात्मिक तथा अनौपचारिक शिक्षा हमें व्यक्तिगत रूप से, हमारे परिवार को, हमारे संस्थानों को, हमारे समाज को तथा हमारे राष्ट्र को भी सुरक्षित करती है। यहाँ तक कि अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भी एक अच्छा और महान समाज आध्यात्मिक और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के साथ शत्रु ताकतों को नैतिक रूप से पराजित कर देता है। यह पूर्ण संरक्षण का सिद्धान्त है।

ऋग्वेद मन्त्र—1—8—7

यः कुक्षिः सोमपातमः समुद्रइव पिन्वते ।
उर्वीरापो न काकुदः ॥ ७ ॥

यः — वह

कुक्षिः — प्रत्येक कण का सार खींचने वाला (उदर की तुलना सूर्य से)

सोमपातमः — सब पदार्थों का संरक्षण (सूर्य)

समुद्र इव — समुद्र के समान

पिन्वते — सबका सेवन करने वाला तथा सब कुछ धरती को वापिस देने वाला

उर्वीः — सब स्थानों पर महान

आपो — कर्म (हमारे प्राणों और श्वासों के द्वारा सम्पन्न किये जाने वाले)

न काकुदः — अपने बारे में अधिक बोलने वाला नहीं होता

व्याख्या :-

सब कार्यों का वास्तविक कर्ता कौन है?

जिस प्रकार सूर्य प्रत्येक पदार्थ के सार को खींचने वाला होता है, वही वर्षा के द्वारा प्रत्येक पदार्थ का संरक्षण करता है; समुद्र वापिस देने के लिए ही सब वस्तुओं का सेवन करता है, लेकिन वे अपने कार्यों के बारे में कुछ नहीं बोलते। इसी प्रकार हमें भी अपने कार्यों के बारे में अधिक नहीं बोलना चाहिए, परन्तु दूसरों के कल्याण के लिए चुप रहकर शान्त भाव से कार्य करना चाहिए।

हमारे जीवन में, प्राण ही हमारी सभी गतिविधियों का कारण है, लेकिन वे अपने महत्त्व के बारे में कभी नहीं बोलते। वास्तव में प्राण हमारे जीवन के प्रत्येक कार्य का कारण है। यदि हम अपने जीवन की इस महत्त्वपूर्ण शक्ति का अनुभव करें और इसे स्मरण रखें तो हमारा शरीर अपने द्वारा सम्पन्न किये गये कार्यों का श्रेय लेना बन्द कर देगा और हम अहंकार रहित हो सकते हैं। प्राणों को भगवान की उपस्थिति के रूप में समझा जा सकता है जो प्रत्येक श्वास के साथ प्रतिपल बनाये रखना चाहिए जैसे परमात्मा सदैव हमारे साथ है।

जीवन में सार्थकता

प्राण हमारे वास्तविक कर्ता हैं, हमारे शरीर या मन का कोई भी अंग वास्तविक कर्ता नहीं है।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

सूर्य तथा समुद्र मूक भाव से सबकी सेवा करते हैं। हमें भी अपने महान कर्मों के बारे में स्वयं कुछ नहीं बोलना चाहिए, क्योंकि हम किसी भी कार्य को केवल प्राण की उपस्थिति के कारण ही कर पाते हैं। अतः प्राण ही वास्तविक कर्ता है, हमारे शरीर या मस्तिष्क का कोई अंग वास्तविक कर्ता नहीं है।

प्राणों को स्वयं अपने कार्यों के बारे में बोलने दो। परन्तु प्राण मूक है। प्राण हमें ईश्वर की अनुभूति करवा सकते हैं जो सर्वोच्च ऊर्जा हैं और हमारे जीवन की मूल शक्ति हैं।

ऋग्वेद मन्त्र-1-8-8

एवा ह्यास्य सूनृता विरष्टी गोमती मही ।
पक्वा शाखा न दाशुषे ॥८॥

एवा – इस प्रकार (पिछले मन्त्र के अनुसार यह अनुभूति हो जाने के बाद कि हमारे प्राण, हमारे श्वास ही वास्तविक कर्ता हैं)

हि अस्य – निश्चित रूप से परमात्मा की

सूनृता – सर्वोत्तम, दुःखों और कष्टों जैसे शत्रुओं को मारने वाला, सत्य ज्ञान

विरष्टी – सभी सत्य विद्याओं से सम्बन्धित ज्ञान

गोमती – गाय के समान मती और कार्य, सुखपूर्वक जीवन जीने के लिए साधन उपलब्ध कराने में सक्षम

मही – अपनी महानता के लिए पूजनीय

पक्वा – परिपक्व, लाभकारी

शाखा – शाखा

न – जैसे

दाशुषे – दान में देना, वेद विद्याओं का प्रकाश करना

व्याख्या :-

वेदों के क्या लक्षण हैं?

जब एक व्यक्ति स्वयं को संरक्षित करने के योग्य हो जाता है, महान कार्य करते हुए अपने समाज को आन्तरिक और बाहरी शत्रुओं से संरक्षित कर लेता है, वह अनुभव करता है कि शरीर, मन या कोई भी अंग वास्तविक कर्ता नहीं है। केवल प्राण, श्वास ही समस्त कार्यों के वास्तविक कर्ता हैं। इसके बाद वह परमात्मा के महान ज्ञान को प्राप्त करता है जिसे वेद कहा जाता है। इसके निम्न महत्वपूर्ण लक्षण हैं :–

(1) यह सूनृता है अर्थात् सर्वोत्तम, दुःखों और कष्टों जैसे शत्रुओं को मारने वाला, सत्य ज्ञान।

(2) यह विरष्टी है अर्थात् सभी सत्य विद्याओं से सम्बन्धित ज्ञान।

(3) यह गोमती है अर्थात् गाय के समान मती और कार्य, सुखपूर्वक जीवन जीने के लिए साधन उपलब्ध कराने में सक्षम।

(4) यह मही है अर्थात् परमात्मा के समान महान और अपनी महानता के लिए पूजनीय।

ज्ञान प्राप्त करने की यह प्रक्रिया इतनी प्राकृतिक है जैसे एक परिपक्व वृक्ष लाभकारी फल प्रदान करता है।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

जीवन में सार्थकता

महान ज्ञान, वेद, को प्राप्त करने के योग्य कौन है?

वेद अर्थात् महान ज्ञान उन लोगों को मिलता है जो –

(1) स्वयं को आन्तरिक और बाहरी शत्रुओं से सुरक्षित करने के योग्य बना लेते हैं।

(2) जो यह अनुभव कर लेते हैं कि प्राण ही सब कार्यों के वास्तविक कर्ता हैं, उनका शरीर या मस्तिष्क नहीं। इस प्रकार वे पूर्ण अहंकार रहित अवस्था को प्राप्त करने का प्रयास करते हैं।

ऋग्वेद मन्त्र-1-8-9

एवा हि ते विभूतय ऊतय इन्द्र मावते।
सद्यश्चित्सन्ति दाशुषे ॥१॥

एवा – इस प्रकार

हि – निश्चित रूप से

ते – आपके

विभूतयः – महान कार्य, महान शक्तियाँ

ऊतय – संरक्षित करने की शक्तियाँ

इन्द्र – परमात्मा

मावते – मेरे समान

सद्य – अतिशीघ्र

चित् – मन

सन्ति – प्राप्त करते हैं

दाशुषे – अपनी वस्तुओं तथा ज्ञान के आधार पर सबका कल्याण करने के लिए

व्याख्या :-

परमात्मा के निकट कौन हैं?

जब व्यक्ति वैदिक ज्ञान अर्थात् परमात्मा के मन को प्राप्त करने के योग्य बन जाता है तो निश्चित रूप से वह परमात्मा के महान कार्यों और उसकी महान शक्तियों को भी जान लेता है। जो लोग परमात्मा की भक्ति में अपने मन को पूरी तरह लगाकर सदैव कल्याण के कार्यों में लगे रहते हैं वे ऐसे ज्ञान को प्राप्त कर लेते हैं।

इसका अभिप्राय है कि ध्यान–साधक तथा महान विद्वान् के समान एक दाता भी परमात्मा के उतना ही निकट होता है यदि वह इस बात को अनुभव कर ले कि प्रत्येक कार्य का वास्तविक कर्ता परमात्मा है।

जीवन में सार्थकता

हमारे संरक्षक कौन हैं?

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

ध्यान—साधना में लगा व्यक्ति, एक महान् विद्वान्, ईश्वर की भक्ति में लगा रहकर दान देने वाला व्यक्ति, परमात्मा के नाम पर जीवन दान करने के लिए तत्पर सैनिक, महान् सूर्य, महान् समुद्र, महान् वायु, महान् जल, महान् भूमि तथा महान् आकाश आदि।

ऋग्वेद मन्त्र—1-8-10

एवा ह्यास्य काम्या स्तोम उक्थं च शंस्या ।
इन्द्राय सोमपीतये ॥10॥

एवा — इस प्रकार

हि — निश्चित रूप से

अस्य — परमात्मा की (परमात्मा के लिए हमारी इच्छा)

काम्या — इच्छा

स्तोमः — परमात्मा के गुणगान करने के लिए (सामवेद), परमात्मा का ज्ञान प्राप्त करने के लिए (अन्य वेद)

उक्थम् — उसके गुणों की स्तुति करने के लिए

च — एवं

शंस्या — उसके महान् कार्यों की प्रशंसा के लिए

इन्द्राय — उसकी अनुभूति प्राप्त करने के लिए

सोमपीतये — प्रत्येक कण में उस महान् सर्वशक्तिमान् परमात्मा की उपस्थिति का अमृत पीना

व्याख्या :-

परमात्मा की प्राप्ति की इच्छा को किस प्रकार व्यक्त करें?

परमात्मा की अनुभूति किस प्रकार हो?

हमारे अन्दर परमात्मा की प्राप्ति की प्रबल इच्छा होनी चाहिए, जो सारे ब्रह्माण्ड की सर्वोच्च शक्ति है। इस इच्छा को हम परमात्मा के प्रति गुणगान के माध्यम से व्यक्त कर सकते हैं, परमात्मा के ज्ञान को प्राप्त करके कर सकते हैं, उसके महान् गुणों और कार्यों की प्रशंसा करके कर सकते हैं। इस प्रकार हम परमात्मा की अनुभूति के मार्ग पर अग्रसर हो सकते हैं। परन्तु अन्ततः परमात्मा की अनुभूति प्राप्त करने का एक ही अन्तिम स्तर होता है — उसकी उपस्थिति को हर स्थान पर, हर कण में, हर समय महसूस करना और उसकी अनुभूति प्राप्त करना।

स्वयं को शारीरिक, मानसिक तथा आध्यात्मिक रूप से आन्तरिक और बाहरी शत्रुओं से सुरक्षित करके ही हमें यह अनुभूति प्राप्त करने का प्रयास करना चाहिए कि हमारे सभी कार्यों का कर्ता हमारा प्राण अर्थात् श्वास है जो परमात्मा के द्वारा दिया गया है। परमात्मा के द्वारा दिये गये ज्ञान को अनुभव करना, जिसे वेद कहा जाता है। इसकी अनुभूति प्राप्त करना कि परमात्मा अपनी भिन्न-भिन्न शक्तियों तथा लोगों के माध्यम से हमें कैसे सुरक्षित रखता है। अन्ततः यह अनुभूति प्राप्त करना कि उसकी उपस्थिति प्रत्येक कण—कण में विद्यमान है और यही अनुभूति उसका अमृत बन जाती है। यही मूल आध्यात्मिक मार्ग है जिसकी साधना ध्यान के द्वारा, भक्तिपूर्ण गतिविधियों के द्वारा तथा वेद ज्ञान की प्राप्ति के द्वारा की जा सकती है।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

जीवन में सार्थकता

एक बार जब हम परमात्मा की अनुभूति प्रत्येक कण—कण में उसकी उपस्थिति के रूप में अनुभव करने में सफल हो जाते हैं तो हम साक्षात् परमात्मा की अनुभूति प्राप्त कर सकते हैं।

इसी प्रकार हम अपने वृद्धजनों, उच्चाधिकारियों आदि के गुणों, उनके कार्यों की प्रशंसा करके उनके साथ भी निकट सम्बन्ध बना सकते हैं। सदैव उनकी संगति तथा पूरी तरह से उनका अनुसरण करने से हम उनके निकट हो जाते हैं।

ऋग्वेद मण्डल-1, सूक्त-9
ऋग्वेद मन्त्र-1-9-1

इन्द्रेहि मत्स्यन्धसो विश्वेभिः सोमपर्वभिः।
महाँ अभिष्टिरोजसा ॥1॥

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

इन्द्र – परमात्मा, सर्वोच्च ऊर्जा

एहि – प्राप्त होती है, निकट आती है

मत्सि – आनन्द देने के लिए

अन्धसो – समस्त भौतिक वस्तुओं के माध्यम से तथा सर्वोच्च ऊर्जा पर ध्यान के माध्यम से

विश्वेभिः – सबके साथ

सोमपर्वभिः – प्रत्येक वस्तु का अंश

महान् – महान्

अभिष्टः – ज्ञानयुक्त, इच्छित

ओजसा – बल

व्याख्या :-

परमात्मा पर ध्यान क्यों करें और इसका क्या परिणाम होता है?

समस्त भौतिक पदार्थों के माध्यम से तथा उनके देने वाली सत्ता पर ध्यान के माध्यम से इन्द्र, परमात्मा, हमारे निकट आता है, अनुभूति में प्राप्त होता है। परमात्मा की अनुभूति का यह मार्ग ही स्थाई आनन्द अर्थात् अन्तिम मोक्ष का एक मात्र माध्यम है। हमें अपने आस-पास उपस्थित समस्त पदार्थों तथा उनके प्रत्येक अंश का प्रयोग करते समय गहराई से परमात्मा के बारे में चिन्तन करना चाहिए।

उसकी संगति अत्यन्त आनन्ददायक है क्योंकि वह महान् है, सर्वोच्च ज्ञानवान् है और सर्वोच्च शक्तिशाली है। इसी प्रकार अनुभूति प्राप्त व्यक्ति भी महान्, ज्ञानवान् तथा शक्तिशाली बन जाते हैं। लोगों के द्वारा परमात्मा की इच्छा इसीलिए की जाती है क्योंकि वह सर्वोच्च शक्ति है।

इन्द्र का अर्थ सूर्य है जो इस सौर मण्डल में ऊर्जा का सर्वोच्च स्रोत है, अतः हमारे आस-पास तथा इस ब्रह्माण्ड में समस्त पदार्थ तथा एक-एक अंश उसी की शक्ति से भरपूर है। जब हम किसी भी पदार्थ का प्रयोग करते हैं तो सूर्य की ऊर्जा ही हमें प्राप्त होती है। अतः किसी भी प्रदार्थ का प्रयोग करते समय हमें सूर्य की मूल ऊर्जा पर ध्यान केन्द्रित करना चाहिए जिससे हम स्वयं को अधिक से अधिक ऊर्जावान बना सकें।

जीवन में सार्थकता

ध्यान का अर्थ है दाता के साथ निकट सम्पर्क स्थापित करना।

सभी पदार्थों तथा उनके एक-एक अंश का जीवन में प्रयोग करते समय भगवान पर या सूर्य पर ध्यान करें। भगवान पर ध्यान करने से, भक्त के अन्दर भी परमात्मा के कुछ गुण और शक्तियाँ प्राप्त हो जाती हैं जैसे – दूसरों से प्रेम करना, यज्ञ करना अर्थात् दूसरों के कल्याण के लिए त्याग करना। इस प्रकार ऐसे लोग अपने अन्दर ही आनन्द को विकसित कर लेते हैं।

इसी प्रकार यदि हम अपने वृद्ध परिजनों, उच्चाधिकारियों, अध्यापकों, महान् पुरुषों, अनुभूति प्राप्त सन्तों या विज्ञान के विशेषज्ञों पर ध्यान करें, अर्थात् उनसे निकट सम्बन्ध बनाकर रखें तो हम भी ऐसे लोगों से ज्ञान तथा उनके गुण प्राप्त कर सकते हैं।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

ऋग्वेद मन्त्र-1-9-2
एमेनं सृजता सुते मन्दिमिन्द्राय मन्दिने ।
चक्रिं विश्वात्रनि चक्रये ॥१२॥

इम् – निश्चित रूप से

एनम् – इन सभी पदार्थों के बारे में

सृजता – ज्ञानवान करता है, उन्हें उचित प्रकार से प्रयोग करने का ज्ञान देता है

सुते – उत्पन्न

मन्दिम् – आनन्द और मोक्ष का दाता

इन्द्राय – इन्द्रियों पर नियंत्रण करने वालों के लिए

मन्दिने – जो मोक्ष की प्रार्थना करते हैं, परमात्मा की प्रशंसा तथा ध्यान करते हैं

चक्रिम् – उन्हें ऊर्जा देता है तथा कार्य करने के साधन देता है

विश्वानि – समस्त गतिविधियों के लिए

चक्रये – जिनमें कार्य करने की स्वाभाविक वृत्ति है

व्याख्या :-

किसी पदार्थ का प्रयोग करने से पूर्व उसका पूर्ण ज्ञान होना क्यों आवश्यक है?

निश्चित रूप से प्रत्येक व्यक्ति को परमात्मा द्वारा उत्पन्न समस्त पदार्थों के प्रयोग हेतु ज्ञान प्राप्त करके स्वयं को प्रकाशित कर लेना चाहिए। इस प्रकार कोई भी व्यक्ति आनन्द तथा मोक्ष का स्तर प्राप्त कर सकता है। यह केवल उन्हीं के लिए सम्भव है जो अपनी इन्द्रियों पर पूर्ण नियंत्रण स्थापित कर लेते हैं। जो व्यक्ति स्थाई आनन्द और मोक्ष की प्रार्थना करता है उसे यह तभी मिलता है जब वह परमात्मा द्वारा प्रदत्त पदार्थों का प्रयोग करते समय परमात्मा पर ध्यान करता है।

कार्य करना तथा भिन्न-भिन्न प्रकार की गतिविधियों में संलिप्त रहना मनुष्य का प्राकृतिक स्वभाव है। इसीलिए मानव जीवन को कर्मयोनि अर्थात् कार्य करने वाला जीवन कहा जाता है। परमात्मा हमें ऊर्जा देते हैं तथा कार्य करने के समस्त साधन उपलब्ध कराते हैं। एक बुद्धिमान व्यक्ति या एक वैज्ञानिक परमात्मा द्वारा प्रदत्त पदार्थों का प्रयोग करने से पूर्व उनके उचित प्रयोग का समस्त ज्ञान प्राप्त करने की प्रार्थना करता है।

यह मन्त्र समस्त पदार्थों के बुद्धिमत्तापूर्ण प्रयोग का निर्देश देता है। पदार्थों का बुद्धिहीन प्रयोग ही समस्त रोगों, अपराधों और आपदाओं का कारण है।

जीवन में सार्थकता

पूर्ण विशेषज्ञता का क्या उद्देश्य है?

किसी भी पदार्थ का प्रयोग करने से पूर्व हमें उसका पूर्ण ज्ञान विकसित कर लेना चाहिए तभी हम उसके प्रयोग से आनन्द, ऊर्जा तथा उचित लाभ प्राप्त कर पायेंगे। किसी भी पदार्थ का प्रयोग करने से पूर्व या किसी भी विषय की पूर्ण विशेषज्ञता प्राप्त करने के लिए ही यह मन्त्र एक प्रेरणा देता है। जीवन के सभी क्षेत्रों में यह

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

समान रूप से लागू होता है, चाहे वह भौतिकवादी क्षेत्र हो, शैक्षणिक क्षेत्र हो या आध्यात्मिक। यह मन्त्र किसी कार्य के सभी स्तरों पर भी लागू होता है, निम्नस्तरीय सेवक से लेकर सर्वोच्च अधिकारी के स्तर तक।

ऋग्वेद मन्त्र—1—9—3
मत्स्वा सुशिप्र मन्दिभिः स्तोमेभिर्विश्वर्षणे ।
सचैषु सवनेष्वा ॥३॥

मत्स्वा — हमें आनन्द तथा मोक्ष देता है
सुशिप्र — महान् ज्ञान का धारक
मन्दिभिः — महान् आनन्द देने वाला
स्तोमेभि — वैदिक स्तुतियों से प्रशंसित
विश्वर्षणे — जो समूचे ब्रह्माण्ड की देखभाल करता है
सचा — के साथ
एषु — समस्त पदार्थ
सवनेषु — हमें आनन्दयुक्त तथा मोक्षयुक्त करता है
आ — कृपया हमारे पास आ (हमारी अनुभूति में)

व्याख्या :-

परमात्मा किस प्रकार आनन्द तथा मोक्ष का दाता है?
वह सर्वोच्च शक्ति हमें आनन्द तथा मोक्ष देता है क्योंकि :—
(क) वह महान् ज्ञान का धारक है।
(ख) केवल वही महान् मोक्ष का प्रदाता है।
(ग) वैदिक स्तुतियों (उसका अपना ज्ञान तथा उसकी अपनी रचना) के द्वारा उसकी प्रशंसा होती है।
(घ) वह समूचे ब्रह्माण्ड की देखभाल करता है।

इसलिए हम उसी की प्रार्थना करते हैं कि वह समस्त पदार्थों के साथ हमारी अनुभूति में आये। सन्त और योगी लोग उसकी अनुभूति ध्यान के माध्यम से प्राप्त करते हैं। ज्ञानी लोग उसकी प्रशंसा करके अनुभूति प्राप्त करते हैं। वैज्ञानिक तथा विशेषज्ञ अपने प्रयासों से समस्त लोगों के कल्याण के लिए नये—नये पदार्थों की खोज तथा आविष्कार करके उसकी अनुभूति प्राप्त करते हैं। त्यागी लोग अपनी कल्याणकारी गतिविधियों के द्वारा उसकी अनुभूति प्राप्त करते हैं।

जीवन में सार्थकता

इस सूक्त के मन्त्र 1, 2 तथा तीन की शृंखला इस प्रकार है :—
मन्त्र—1 — परमात्मा की अनुभूति प्रत्येक पदार्थ तथा उसके सभी अंशों के साथ की जा सकती है।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

मन्त्र-2 — परमात्मा द्वारा दिये गये किसी भी पदार्थ का प्रयोग करने से पूर्व उसका पूर्ण ज्ञान विकसित करें।

मन्त्र-3 — आनन्द तथा मोक्ष का देने वाला परमात्मा ही है।

ऋग्वेद मन्त्र-1-9-4
असृग्रमिन्द्र ते गिरः प्रति त्वामुदहासत ।
अजोषा वृषभं पतिम् ॥४॥

असृग्रम् — अनेक प्रकार से वर्णन किया गया

इन्द्र — परमात्मा

ते — आपकी

गिरः — वैदिक स्तुति

प्रति — महान् और श्रेष्ठ गुणों के साथ

त्वाम् — आप

उदहासत — ज्ञान प्राप्त करवाती है

अजोषा: — ज्ञान के साथ एक समान

वृषभम् — शान्ति तथा आशीर्वाद की वर्षा करने वाला, समस्त इच्छाएँ पूरी करने वाला

पतिम् — सबका रक्षक

व्याख्या :-

परमात्मा स्वयं की अनुभूति किस प्रकार प्राप्त करवाता है?

हे परमात्मा! आपकी वैदिक स्तुतियाँ अनेकों प्रकार से वर्णित हैं। वेद के द्वारा परमात्मा अपने महान् तथा श्रेष्ठ गुणों और अपने पूरे ज्ञान को प्राप्त करवाने के साथ स्वयं की अनुभूति प्राप्त करवाता है। परमात्मा तथा उसका ज्ञान एक ही है, पृथक नहीं। परमात्मा तथा वेद का अर्थ भी एक ही है। इस प्रकार जब हम उसके महान् ज्ञान को अंगीकार करते हैं तो इसका अर्थ है हम परमात्मा को ही अंगीकार कर रहे हैं। परमात्मा तथा उनका ज्ञान सबका रक्षक है, सबको शांति तथा आशीर्वाद देता है, सबकी इच्छाओं की पूर्ति करता है।

जीवन में सार्थकता

परमात्मा तथा वेद (उनके ज्ञान) का सम्बन्ध :-

1. परमात्मा का ज्ञान (वेद) अनेकों प्रकार से वर्णित है।
2. परमात्मा की अभिव्यक्ति उनके ज्ञान से होती है।
3. परमात्मा तथा उनका ज्ञान एक ही है।
4. परमात्मा तथा उनकी वाणी शान्ति और आशीर्वाद की वर्षा करने वाली होती है तथा समस्त इच्छाओं की पूर्ति करती है।
5. परमात्मा तथा उनकी वाणी सबकी रक्षक होती है।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

ऋग्वेद मन्त्र-1-9-5
सं चोदय चित्रमर्वाग्राध इन्द्र वरेण्यम् ।
असदित्ते विभु प्रभु ॥५॥

संचोदय — हमें प्रेरित करता है, हमें प्राप्त होता है

चित्रम् — हमारे मस्तिष्क तथा ज्ञान को बढ़ाता है

अर्वाग — हमारी तरफ

राधः — सम्पूर्ण गौरवशाली धन

इन्द्र — परमात्मा

वरेण्यम् — धारण करने योग्य

असत् — प्राप्त होने योग्य

इत् — निश्चित रूप से

ते — वह (गौरवशाली सम्पदा)

विभु — चारों तरफ से समस्त आवश्यक पदार्थ उपलब्ध कराने में सक्षम

प्रभु — प्रभावशाली

व्याख्या :-

गौरवशाली सम्पदा क्या होती है?

इस मन्त्र को हम परमात्मा की तरफ से एक आश्वासन या परमात्मा को की गई एक प्रार्थना समझ सकते हैं।

परमात्मा हमें प्रेरित करते हैं कि हम गौरवशाली सम्पदा को स्वीकार करें जो धारण करने के योग्य हों। इसका अर्थ है कि हम जो भी सम्पदा अर्जित करें उसके साथ एक सम्मान तथा कल्याण के आशीर्वाद होने चाहिए। यह तभी सम्भव है जब हम उसे ईमानदारी पूर्वक तथा कड़ी मेहनत से अर्जित करें। ऐसी सम्पदा हमारे मस्तिष्क तथा ज्ञान के साथ-साथ विवेक को भी बढ़ाती है जिससे हम इसका प्रयोग सबके कल्याण के लिए उचित प्रकार से कर सकें। ऐसी गौरवशाली सम्पदा के दो दिव्य लक्षण होते हैं — (1) यह अनेकों की आवश्यकताओं की देखभाल करने के योग्य होती है। (2) यह हर प्रकार से प्रभावशाली होती है।

परमात्मा हमें गौरवशाली सम्पदा देते हैं जिससे हम यह सुनिश्चित कर सकें कि वह — (1) चित्रम् अर्थात् ज्ञान तथा बुद्धि की वृद्धि करती हो। (2) विभु अर्थात् वह अनेकों की देखभाल करने के योग्य हो तथा (3) प्रभु अर्थात् वह हर प्रकार से प्रभावशाली हो। यही हमारी प्रार्थना भी है।

जीवन में सार्थकता

धन प्राप्ति की अन्धाधुंध दौड़ से अच्छा है कि प्रत्येक व्यक्ति को गौरवशाली सम्पदा के लिए प्रार्थना करनी चाहिए और उसी के लिए प्रयत्न भी करने चाहिए। ऐसी सम्पदा को प्राप्त करने के लिए भ्रष्टाचारी तरीकों

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



परिवर्तन वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

और साधनों की आवश्यकता नहीं होती। इसके लिए केवल प्रार्थना करनी होती है, एक संकल्प तथा कड़ी मेहनत करनी होती है। परमात्मा निश्चित रूप से तीन दिव्य लक्षणों से युक्त गौरवशाली सम्पदा प्रदान करते हैं। यदि मुद्रा के किसी ढेर में यह तीनों गुण न हों तो उसे गौरवशाली धन नहीं कहा जा सकता, ऐसी मुद्रा केवल विलासिताओं को खरीदने, रोगों तथा अपराधों को आमंत्रण देने की ही योग्यता रखती है।

ऋग्वेद मन्त्र—1—9—6
अस्मान्सु तत्र चोदयेन्द्र राये रभस्वतः ।
तुविद्युम्न यशस्वतः ॥६॥

अस्मान — हमारे लिए
सु — सर्वोत्तम
तत्र — वह (गौरवशाली सम्पदा)
चोदय — प्रेरित
इन्द्र — सर्वशक्तिमान परमात्मा
राये — गौरवशाली सम्पदा के लिए
रभस्वतः — तन्मयता के साथ कड़ी मेहनत
तुविद्युम्न — महान् ज्ञान से सुसज्जित सम्पदा
यशस्वतः — सर्वोत्तम तथा स्तुति सहित प्रशंसा

व्याख्या :-

हम गौरवशाली सम्पदा कैसे अर्जित कर सकते हैं?

हम परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि हमें उत्तम मार्ग पर तन्मयता पूर्वक कड़ी मेहनत करने के लिए प्रेरित करें जिससे हम गौरवशाली सम्पदा अर्जित कर सकें जो महान् ज्ञान तथा स्तुति सहित प्रशंसा को धारण करती हो।

रभस्वतः अर्थात् तन्मयता के साथ कड़ी मेहनत केवल एक ही ऐसा आधार है जिसके द्वारा गौरवशाली सम्पदा को अर्जित किया जा सकता है। यह निश्चित रूप से महान् ज्ञान तथा स्तुति सहित प्रशंसा प्रदान करता है।

जीवन में सार्थकता

तन्मयता के साथ की गई कड़ी मेहनत महान् ज्ञान तथा स्तुति के योग्य प्रसिद्धि प्रदान करती है।

जीवन के किसी भी क्षेत्र में कार्य करते हुए प्रत्येक व्यक्ति को तन्मयता के साथ कड़ी मेहनत के लिए स्वयं को प्रेरित करना चाहिए। यह निश्चित रूप से गौरवशाली सम्पदा प्रदान करेगी जिसके साथ—साथ महान् ज्ञान तथा स्तुति योग्य प्रसिद्धि प्राप्त होती है। इसे गौरवशाली सम्पदा का चौथा लक्षण मानना चाहिए जो वर्तमान सूक्त के मन्त्र—५ में वर्णित हैं — ‘परमात्मा हमें गौरवशाली सम्पदा देते हैं जिससे हम यह सुनिश्चित

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

कर सकें कि वह – (1) चित्रम् अर्थात् ज्ञान तथा बुद्धि की वृद्धि करती हो। (2) विभु अर्थात् वह अनेकों की देखभाल करने के योग्य हो तथा (3) प्रभु अर्थात् वह हर प्रकार से प्रभावशाली हो”

ऋग्वेद मन्त्र-1-9-7
सं गोमदिन्द्र वाजवदस्मे पृथु श्रवो बृहत् ।
विश्वायुर्धेह्यक्षितम् ॥७॥

सम् – वह

गोमत – महान् तथा निर्मल वाणी और बुद्धि का देने वाला

इन्द्र – परमात्मा

वाजवत – लाभदायक तथा पुष्टिवर्द्धक पदार्थों का देने वाला

अस्मे – हमारे लिए

पृथु – हमारी शक्तियों को बढ़ाने वाला

श्रवो – गौरवशाली सम्पदा

बृहत् – हमारी वृद्धि का कारण

विश्वायु – हमें दीर्घ आयु तक स्वस्थ जीवन जीने के योग्य बनाने वाला

धेहि – उपलब्ध करायें

अक्षितम् – क्षीण न होने वाला

व्याख्या :-

गौरवशाली सम्पदा के क्या लक्षण हैं?

हे परमात्मा! कृपया हमें ऐसी गौरवशाली सम्पदा उपलब्ध करायें जिसमें निम्न लक्षण हों :-

1. गोमत – महान् तथा निर्मल वाणी और बुद्धि
2. वाजवत – लाभदायक तथा पुष्टिवर्द्धक पदार्थ
3. पृथु – हमारी शक्तियों को बढ़ाने वाला
4. बृहत् – हमारी वृद्धि का कारण
5. विश्वायु – हमें दीर्घ आयु तक स्वस्थ जीवन जीने के योग्य बनाने वाला
6. अक्षितम् – क्षीण न होने वाला

जीवन में सार्थकता

ऋग्वेद मण्डल-1 सूक्त 9 के मन्त्र 5, 6 तथा 7 में गौरवशाली सम्पदा के आश्चर्यजनक तथा अन्तहीन लक्षणों का विवरण मिलता है। प्रत्येक व्यक्ति को केवल गौरवशाली सम्पदा ही प्रिय होनी चाहिए तथा इसी को प्राप्त करने का प्रयास करना चाहिए।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

ऋग्वेद मन्त्र-१-९-८
अस्मे धेहिष्टु श्रवो बृहद् द्युम्नं सहस्रसातम् ।
इन्द्र ता रथिनीरिषः ॥८॥

अस्मे – हमारे लिए

धेहि – उपलब्ध करायें

श्रवो – गौरवशाली सम्पदा

बृहत् – हमारी पूर्ण उन्नति का कारण

द्युम्नम् – श्रेष्ठ ज्ञान

सहस्रसातम् – हजारों प्रकार से हमारी प्रसन्नता का कारण

इन्द्र – परमात्मा

ता – आप

रथिनीः इषः – अनेक साधनों के द्वारा उस सम्पदा को सबके कल्याण के लिए पहुँचाना

व्याख्या :-

सम्पदा का लाभ सैनिकों सहित सारे समाज को मिलना चाहिए।

परमात्मा से यह प्रार्थना की गई है कि ऐसी गौरवशाली सम्पत्ति हमें उपलब्ध करायें :–

1. जो हमारी पूर्ण उन्नति का माध्यम बनें।
2. जो अपने साथ श्रेष्ठ ज्ञान लेकर आये।
3. जो हजारों प्रकार से हमारी प्रसन्नता का कारण बने।

इस प्रकार के लक्षणों वाली सम्पदा की प्रार्थना करना यह सिद्ध करता है कि सम्पदा केवल धारक या उसके परिवार के लिए ही विलासितापूर्ण जीवन सुनिश्चित न कराती हो। सर्वप्रथम गौरवशाली सम्पदा की आवश्यकता धारक के सम्पूर्ण विकास के लिए होती है अर्थात् शारीरिक, मानसिक तथा आध्यात्मिक विकास उसके व्यक्तिगत स्तर पर और बृहद् रूप से समूचे समाज के लिए भी। सम्पदा के साथ श्रेष्ठ ज्ञान की भी प्रार्थना की गई है जिससे इसका प्रयोग पर्याप्त विवेक के साथ इस प्रकार किया जाये कि यह धारक के लिए या समाज के लिए हानिकारक न हो। विशेष रूप से यह प्रार्थना की गई है कि हमारी सम्पदा हजारों प्रकार से हमारी प्रसन्नता का कारण बनें। एक व्यक्ति कभी भी ऐसे समाज में रहकर पूर्ण प्रसन्नता का अनुभव नहीं कर सकता जहाँ लोग अप्रसन्न हों। एक व्यक्ति की प्रसन्नता निश्चित रूप से उस समाज की प्रसन्नता के साथ जुड़ी होती है जिससे वह सम्बन्धित है।

सम्पदा के साथ रथों की भी प्रार्थना की गई है जिसका अर्थ यह है कि यह सम्पदा भूमि के अन्य भागों में भी लोगों के कल्याण के लिए तथा विशेष रूप से राष्ट्र की सीमाओं की रक्षा करने वाले सैनिकों के कल्याण के लिए प्रयोग हो सके।

जीवन में सार्थकता

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

सम्पत्ति को निम्न उद्देश्यों से साधरण किया जाना चाहिए :-

1. पूर्ण प्रगति ।
2. श्रेष्ठ ज्ञान ।
3. हजारों प्रकार की प्रसन्नताएँ ।

सम्पदा के साथ श्रेष्ठ आचरण के साधन भी होने चाहिए जिससे उस सम्पदा का लाभ भूमि के अन्य हिस्सों में भी पहुँच सके, अपने समाज को अन्दर से तथा सीमाओं पर बाहर से सुरक्षित रख सके। सीमाओं पर हमारे सैनिकों को हर प्रकार सुख-सुविधाएँ उपलब्ध कराई जानी चाहिए जो तभी सम्भव है जब हमारे पास यातायात के उचित साधन हों।

ऋग्वेद मन्त्र-1-9-9
वसोरिन्द्रं वसुपतिं गीर्भिर्गृणन्त ऋग्मियम् ।
होम गन्तारमूतये ॥१॥

वसोः – भूमि पर हमारे अस्तित्व का मूल कारण, सम्पदा तथा ज्ञान

इन्द्रम् – परमात्मा को

वसुपतिम् – वास करने योग्य सभी स्थानों का मालिक (जैसे धरती, वायुमण्डल, आकाश, अग्नि, चन्द्र, तारे, तथा अन्य ग्रह आदि)

गीर्भः – वैदिक वाणियों के साथ

गृणन्तः – उसकी प्रशंसा करना

ऋग्मियम् – वैदिक विवेक

होम – हम प्रार्थना करते हैं, पुकारते हैं

गन्तारम् – सर्वविद्यमान तथा सर्वशक्तिमान

ऊतये – संरक्षण तथा संगति के लिए

व्याख्या :-

हमें भगवान की प्रशंसा क्यों करनी चाहिए?

परमात्मा इस धरती पर हमारे वास का कारण है क्योंकि वह हमें असंख्य भौतिक पदार्थ, सम्पदाएँ, ज्ञान तथा विवेक आदि उपलब्ध कराता है। परमात्मा सभी वासों का मालिक है जैसे – धरती तथा अन्य ग्रह और ब्रह्माण्ड में उपस्थित अन्य आकाशीय स्थल। परमात्मा वैदिक विवेक का देने वाला है जिससे हम यह जान सकें कि क्या अच्छा है और क्या बुरा, भौतिक पदार्थों का सबके कल्याण के लिए किस प्रकार प्रयोग किया जाये।

इसीलिए हम उस दिव्य शक्ति, परमात्मा को भिन्न-भिन्न प्रकार से पुकारते हैं तथा प्रार्थना करते हैं :-

1. कुछ लोग वैदिक वाणियों के द्वारा उसकी प्रशंसा करते हैं।
2. कुछ लोग अपनी सम्पत्तियों और विवेक की रक्षा के लिए उसके आशीर्वाद की प्रार्थना करते हैं।
3. कुछ लोग उसकी संगति की प्रार्थना करते हैं।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

जीवन में सार्थकता

लोग अपने माता—पिता तथा आजीविका देने वाले व्यक्तियों की प्रशंसा क्यों करते हैं?

परमात्मा के बिना हमारा अस्तित्व असंभव है। परमात्मा हमारा उत्पत्तिकर्ता है, हमारा पालन—पोषण कर्ता है और प्रत्येक व्यक्ति या वस्तु में परिवर्तन करने की योग्यता रखता है। इसलिए हमें उसकी स्तुति करनी ही चाहिए और उसकी संगति की कामना करनी चाहिए।

इसी प्रकार परिवारों में हमारा अस्तित्व माता—पिता के बिना विचार में भी नहीं आता। कार्यस्थलों पर हमारा अस्तित्व हमारे वरिष्ठ अधिकारियों या आजीविका देने वाले व्यक्तियों पर निर्भर करता है। यह वरिष्ठ जन हमारे आर्थिक जीवन के सहायक होते हैं। इसलिए ऐसे सभी लोग हमारी प्रशंसाओं तथा स्तुतियों के पात्र होते हैं।

ऋग्वेद मन्त्र 1-9-10
सुतेसुते न्योक्से बृहद् बृहत् एदरिः ।
इन्द्राय शूष्मर्चति ॥१०॥

सुते सुते — प्रत्येक पदार्थ में

न्योक्से — निश्चित रूप से वह वास करता है

बृहद् — श्रेष्ठता तथा दिव्य लक्षणों में महान्

बृहते — हर दृष्टि से महान्

इत् — उसे

आ — अच्छे प्रकार

अरिः — उसके अनुदान प्राप्त करने वाले सभी लोग

इन्द्राय — परमात्मा के लिए

शूष्म — बल तथा प्रसन्नता

अर्चति — प्रार्थना, निवेदन

व्याख्या :-

हमें परमात्मा की प्रशंसा क्यों करनी चाहिए?

निश्चित रूप से परमात्मा अर्थात् दिव्य शक्ति ब्रह्माण्ड के प्रत्येक कण—कण में विद्यमान है। वह दिव्य शक्ति परमात्मा श्रेष्ठताओं और दिव्य लक्षणों में हर प्रकार से महान् है।

सभी लोग उसी दाता से अनुदान, बल तथा प्रसन्नता की प्रार्थना करते हैं।

जीवन में सार्थकता

अपने जीवन की व्यक्तिगत मूल ऊर्जा से प्रेम कौन नहीं करना चाहेगा?

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

ईश्वर की भक्ति केवल मात्र कृतज्ञता व्यक्त करने के समान ही नहीं समझनी चाहिए। ईश्वर की भक्ति हमारे लिए प्रतिक्षण की आवश्यकता है। ईश्वर हमारे अन्दर ही विद्यमान, हमारे व्यक्तिगत जीवन की मूल ऊर्जा है। उस मूल ऊर्जा से अनभिज्ञ रहकर हम कैसे इस जीवन का मूल तथा स्थाई आनन्द प्राप्त कर सकते हैं। बाहरी वस्तुओं का आनन्द भी तो हमारे इस जीवन के कारण ही सम्भव है। यदि यह जीवन नहीं तो बाहरी आनन्द भी नहीं। बाहरी आनन्द तो अस्थाई है जबकि भीतरी आनन्द अर्थात् अपनी मूल ऊर्जा से जुड़ाव का आनन्द स्थाई तथा आलौकिक होता है। उस मूल ऊर्जा के बल पर ही हमारी समस्त शक्तियाँ तथा उपलब्धियाँ निर्भर करती हैं। इसलिए प्रतिक्षण अपनी मूल ऊर्जा अर्थात् अपने अन्दर बसे परमात्मा की उपस्थिति को स्मरण रखते हुए उससे भरपूर प्रेम करना चाहिए। यही आन्तरिक प्रेम हमें बाहर से भी भरपूर आनन्द की वर्षा का अनुभव करवा पायेगा।

ऋग्वेद मण्डल-1, सूक्त-10

ऋग्वेद मन्त्र-1.10.1

गायन्ति त्वा गायत्रिणोऽर्चन्त्यर्कमर्किणः।
ब्रह्माणस्त्वा शतक्रत उद्दंशमिव येमिरे ॥१॥

गायन्ति – गाते हैं

त्वा – आपके लिए

गायत्रिणः – आपकी प्रशंसा में गुणगान करने वाले

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

अर्चन्ति – पूजा करते हैं

अर्कम् – आपकी जो पूजा के योग्य हो

अर्किणः – पूजा की सामग्री से, ऋग्वेदादि ज्ञान से प्राप्त वैज्ञानिक आविष्कारों और पदार्थों से, आपके द्वारा प्रदत्त ज्ञान से

ब्रह्माणः – ब्रह्म में स्थापित, ब्रह्म की अनुभूति प्राप्त, ब्रह्म का प्रशंसक

त्वा – आपको

शतक्रतो – असीम ज्ञान तथा कार्य क्षमता के धारक

उद् – प्रगति को प्राप्त

वशम् – मानव कुल को

इव – जैसे कि

येमिरे – समस्त गुणों के साथ

व्याख्या :-

ईश्वर की कौन और कैसे प्रशंसा करता है?

लोग अपने-अपने जीवन की गतिविधियों के साथ भगवान की अनेकों प्रकार से पूजा और प्रशंसा करते हैं।

सामवेद अर्थात् ईश्वर की पूजा का ज्ञान धारण करने वाले सामज्ञानी भगवान की प्रशंसा में गाते हैं। वे हर विषय में भगवान की सर्वोच्चता की प्रशंसा करते हैं और उसके प्रति समर्पित हो जाते हैं।

ऋग्वेद अर्थात् प्राकृतिक विज्ञान का ज्ञान धारण करने वाले ऋग्वेदी समस्त पदार्थों और ईश्वर प्रदत्त ज्ञान का समुचित तथा उत्तम प्रयोग करते हुए प्रत्येक पदार्थ के विज्ञान और उसके प्रयोग को गहराई से समझकर ईश्वर की पूजा करते हैं।

परमात्मा के साथ एकता में स्थापित ब्राह्मण भी अपने कार्यों, व्यवहार तथा ईश्वर के स्तर समान ज्ञान के बल पर परमात्मा की प्रशंसा करते हैं। वे परमात्मा की अनुभूति के मार्ग पर चलते हैं और लोग भी उनका अनुसरण करते हैं। इस प्रकार वे सब परमात्मा की प्रशंसा तथा अनुभूति प्राप्त करते हैं।

सभी लोग अपने गुणों के आधार पर परमात्मा की पूजा करते हैं जैसे कोई व्यक्ति अपने परिवार और समाज की प्रगति सुनिश्चित करने के लिए कार्य करता है।

कोई यह दावा करे या न करे, स्वीकार करे या न करे परन्तु सृष्टि में प्रत्येक प्राणी प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से परमात्मा की शोभा, प्रशंसा आदि करता ही है। यहाँ तक कि नास्तिक लोग भी परमात्मा द्वारा दिये गये पदार्थों का प्रयोग करते हैं। वैज्ञानिक सभी पदार्थों का उत्तम प्रयोग करने के लिए अपने आविष्कारों और अनुसंधानों के लिए प्रयासरत रहते हैं। परमात्मा भी वैज्ञानिकों से यह आशा करता है कि वे पदार्थों का गहरा ज्ञान प्राप्त करें जिससे अपने मानव परिवार की प्रगति सुनिश्चित हो।

इस प्रकार प्रत्येक व्यक्ति अपने कल्याण कार्यों, परमात्मा द्वारा प्रदत्त पदार्थों के उचित ज्ञान तथा प्रयोग से मानवता का कल्याण करके परमात्मा की प्रशंसा करता ही है।

जीवन में सार्थकता

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

लाभार्थी सदैव देने वाले की स्तुति तथा प्रशंसा करता ही है।

जिस प्रकार प्रत्येक व्यक्ति अपने परिवार की प्रगति चाहता है, उसी प्रकार प्रत्येक व्यक्ति को समूचे समाज तथा संस्थान को, जिसमें वह कार्य करता है तथा अपने व्यक्तिगत लघु परिवार के लिए अनेकों प्रकार की सुविधाएँ प्राप्त करता है, अपना बड़ा परिवार समझते हुए उसकी उन्नति सुनिश्चित करने के लिए प्रयासरत रहना चाहिए। ऐसा व्यक्तित्व सरलता से यह अनुभव कर सकता है कि हमें अपने कार्यों और व्यवहार से तथा विद्वानों और ब्राह्मणों के समान परमात्मा की स्तुति और प्रशंसा करके परमात्मा की पूजा अवश्य करनी चाहिए क्योंकि हम उसी परमात्मा के सर्वोच्च खजाने से सभी पदार्थ, ज्ञान और यहाँ तक कि अपनी जीवनी शक्ति को प्राप्त करते हैं। कोई भी परमात्मा के बराबर या उससे बड़ा नहीं हो सकता।

ऋग्वेद मन्त्र-1.10.2

यत्सानोः सानुमारुहभर्यस्पष्ट कर्त्त्वम् ।
तदिन्द्रो अर्थं चेतति यूथेन वृष्णिरेजति ॥२॥

यत् – जब वह (सूर्य, मनुष्य)

सानोः – पर्वत शिखर की ऊँचाई से, एक कार्य के बाद

सानम् – अन्य पर्वत शिखर की ऊँचाई पर, अन्य कार्य पर

आरुहत् – स्वयं को स्थापित करता है

भूरि: – सुन्दरता के साथ

अस्पष्ट – छूता है, प्रारम्भ करता है

कर्त्त्वम् – अपने दायित्वों को

तद् – तब

इन्द्रो – परमात्मा

अर्थम् – अपने जीवन उद्देश्य को

चेतति – उसे ज्ञान, जागृति देता है

यूथेन – अपनी समस्त शक्तियों के साथ

वृष्णिः – वह कल्याण की वर्षा करता है

एजति – अपने स्थान पर स्वयं को स्थापित करता है, सभी बाधाओं को दूर करता है

व्याख्या :-

अपने कर्त्तव्य के प्रति जागरूक व्यक्ति कैसे कार्य करता है?

इस मन्त्र में सूर्य के कार्यों की तुलना की गई है जो ऊर्जा, प्रकाश तथा चुम्बकत्व का सर्वोच्च प्राकृतिक स्रोत है।

सूर्य प्रातः वेला में, अपनी किरणों के द्वारा, पर्वत शिखर की एक चोटी से दूसरी चोटी को छूता हुआ पहुँचता है। जबकि इन सभी कार्यों को करते हुए वह स्वयं को ही अपने स्थान पर ही स्थापित रखता है। सूर्य अपने अस्तित्व के उद्देश्य के प्रति जागृत है और नियम पूर्वक अपने कर्त्तव्यों का पालन करता है। ऐसा

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

करते हुए अपनी समस्त शक्तियों के साथ वह वर्षा करता है जिससे सबका कल्याण हो, परन्तु स्वयं को अपने स्थान पर ही स्थापित रखता है और अपने मार्ग में किसी बाधा को नहीं आने देता।

इसी प्रकार प्रत्येक मानव को एक कार्य करने के बाद दूसरे कार्य पर अग्रसर होना चाहिए और स्वयं को अपने दायित्व में स्थापित रखे। परमात्मा ऐसे कर्तव्यनिष्ठ व्यक्ति को जीवन का उद्देश्य जानने की योग्यता प्रदान करते हैं। ऐसा चैतन्य व्यक्ति अपनी समस्त शक्तियों के साथ प्रसन्नताओं और सुविधाओं की वर्षा करता है और अपने जीवन पथ पर किसी बाधा को नहीं आने देता। ऐसा कर्तव्यनिष्ठ व्यक्ति ही सबके द्वारा पसन्द किया जाता है। यहाँ तक कि भगवान् भी ऐसे व्यक्तियों को पसन्द करते हैं।

जीवन में सार्थकता

कर्तव्यनिष्ठ व्यक्ति सूर्य की तरह कार्य करता है। सदैव अपने कर्तव्यों में स्थापित, अपने जीवन के चारों तरफ प्रसन्नताओं और सुविधाओं की वर्षा करता हुआ तथा अपने कार्यों में किसी को भी बाधक नहीं बनने देता। वह अपने पथ से कभी भटकता नहीं और न ही असंतोष का शिकार होता है।

ऋग्वेद मन्त्र—1.10.3

युक्ष्वा हि केशिना हरी वृषणा कक्ष्यप्रा ।
अथा न इन्द्र सोमपा गिरामुपश्रुतिं चर ॥३॥

युक्ष्वा — जोड़कर

हि — निश्चय से

केशिना — लक्षणों से युक्त (सूर्य के लक्षण — ऊर्जा, प्रकाश और चुम्बकत्व)

हरी — हरण करने की तथा सर्वत्र व्याप्त करने की शक्ति, ज्ञानेन्द्रियाँ (ज्ञान हरण करने के लिए) तथा कर्मेन्द्रियाँ (कर्मों को व्याप्त करने के लिए)

वृषणा — सबके कल्याण हेतु वर्षा करने वाला

कक्ष्यप्रा — अपने स्थान पर स्थापित, अपने नियमों के प्रति कठिबद्ध

अथा — उसके बाद

न — हमारा

इन्द्र — परमात्मा

सोमपा — सबका रक्षक

गिराम् — वाणियाँ

उपश्रुतिम् — सुनने वाला

चर — स्वीकार करे

व्याख्या :-

अपने कर्तव्यों को उचित प्रकार से किस प्रकार करें?

ऐसे कर्मों का क्या फल मिलता है?

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

सूर्य अपने सभी लक्षणों तथा बलों के साथ सदैव जुड़ा रहकर सबके कल्याण के लिए वर्षा करता है और स्वयं को अपने कक्ष पर स्थापित रखता है। केशिना अर्थात् ऊर्जा, प्रकाश और चुम्बकत्व रूपी सूर्य की शक्तियाँ। उसकी हरण करने तथा व्याप्त करने की शक्ति हरि कहलाती है। वह अपने समस्त लक्षणों और शक्तियों को अपने कर्तव्यों के पालन में प्रयोग करता है।

इसी प्रकार हमें भी अपने लक्षणों, गुणों और शक्तियों के प्रति चेतन रहना चाहिए। उन सबको अपने कर्तव्यों का पालन करते समय अपने कर्मों के साथ संयुक्त कर देना चाहिए।

इस प्रकार, परमात्मा, सबका रक्षक होने के नाते, हमारी वाणियों, प्रार्थनाओं को सुनता है और उन्हें स्वीकार करता है।

जीवन में सार्थकता

प्रत्येक कार्य का परिणाम उसमें लगाई गई योग्यता और शक्ति पर निर्भर करता है।

अपने कर्तव्यों का पालन करते समय प्रत्येक व्यक्ति को अपने सारे लक्षण और सारी शक्तियाँ अपने कर्मों में लगा देनी चाहिए जिससे हमारे कार्यों को अनुपम कुशलता दी जा सके। परमात्मा केवल ऐसे ही व्यक्तियों की प्रार्थनाओं को सुनता है और उन्हें स्वीकार करता है। प्रत्येक कार्य का परिणाम उसमें लगाई गई योग्यता और शक्ति पर निर्भर करता है।

किसी बच्चे के भविष्य की योजना बनाते समय भी उसके लक्षणों, गुणों, शक्तियों और रुचि के आधार पर ही विचार करना चाहिए। आजीविका के लिए कोई कार्य ढूँढ़ते समय भी इसी प्रकार लक्षणों और शक्तियों के अनुरूप ही कार्य करना चाहिए। इनके विरुद्ध कार्य करने से सफलता नहीं प्राप्त होती।

ऋग्वेद मन्त्र—1.10.4

एहि स्तोमां अभि स्वराभि गृणीह्यारुव ।
ब्रह्म च नो वसो सचेन्द्र यज्ञं च वर्धय ॥५॥

एहि – जिस प्रकार

स्तोमान् – आपकी प्रशंसा व स्तुति में कही गई वाणी

अभिस्वर – उचित लय और स्वर में गाई जाती है

अभिगृणीहि – गहराई तथा उचित प्रकार से समझी जाती है

आरुव – जीवन में लागू की जाती है

ब्रह्म – परमात्मा, वेद, ज्ञान

च – तथा

नो – हमारे लिए

वसो – हमें स्थापित करता है और स्वयं भी हमारे अन्दर स्थापित होता है

सचा – हमें ज्ञान और कर्म से युक्त करता है

इन्द्र – परमात्मा

यज्ञम् – दूसरों के कल्याण के लिए त्याग

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

च – और

वर्धय – उन्हें प्रगति और वृद्धि देता है

व्याख्या :-

अपने कर्मों में कुशलता कैसे लाई जाये?

जिस प्रकार विद्वान् लोग परमात्मा की प्रशंसा और स्तुति उचित लय और स्वर में करते हैं, गहराई से समझते हैं और नियम पूर्वक भगवान के ज्ञान को अपने जीवन में लागू करते हैं, उसी प्रकार हमें यह ज्ञान होना चाहिए और इसे महसूस करना चाहिए कि दिव्य शक्ति ने हमारा निर्माण किया है और वह सर्वोच्च शक्ति हमारे भीतर स्थापित है। हमें अपने ज्ञान तथा कर्मों को उचित प्रकार से संयुक्त करना चाहिए। तभी परमात्मा हमारे कल्याणकारी कार्यों को प्रत्येक मार्ग पर प्रगति प्रदान करेंगे।

जीवन में सार्थकता

पहले ज्ञान प्राप्त करो और उसके बाद कर्मों को करो। परमात्मा की सर्वविद्यमानता को समझो और अपने सभी कार्यों को दूसरों के कल्याण के लिए करते हुए परमात्मा के प्रति समर्पित कर दो। केवल ऐसे ही कार्य कुशल होते हैं और प्रशंसा का पात्र बनते हैं। ऐसे कार्य परमात्मा की पूजा के समान ही होते हैं।

ऋग्वेद मन्त्र-1.10.5

उक्थमिन्द्राय शंस्यं वर्धनं पुरुनिष्ठिधे ।
शक्रो यथा सुतेषु णो रारणत्सख्येषु च ॥५॥

उक्थम् – वेद, उपदेश और प्रदत्त प्रेरणाएँ

इन्द्राय – परमात्मा के द्वारा

शंस्यम् – प्रशंसा एवं स्तुति के योग्य

वर्धनम् – प्रगति का कारण, महान् ज्ञान में वृद्धि करते हुए

पुरुनिष्ठिधे – महान् ग्रन्थ एवं महान् कार्य, शत्रुओं पर नियंत्रण करना

शक्रो – सर्वविद्यमान परमात्मा

यथा – जिस प्रकार

सुतेषु – अपने बच्चों के लिए, जो महान् गुणों को संरक्षित रखते हैं

नः – हमारे लिए

रारणत् – प्रकाशित करें

सख्येषु – मित्रों के लिए

च – और

व्याख्या :-

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

सर्वोच्च शक्तिमान परमात्मा किस प्रकार हमें ज्ञान देता है और योग्य बनाता है?

ज्ञान का प्रत्येक भाग हमें परमात्मा से ही प्राप्त होता है। इस महान् उपहार के लिए हमें सदैव परमात्मा की प्रशंसा और स्तुति करनी चाहिए। अन्ततः यह ज्ञान ही समाज में हमारी प्रशंसा का कारण बनता है। परमात्मा द्वारा प्रदत्त ज्ञान हमारी प्रगति तथा जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में उत्थान का कारण है। जब हम इस मौलिक उपहार के लिए परमात्मा की प्रशंसा करते हैं, हमारा मस्तिष्क विनम्र हो जाता है और हम महान् ग्रन्थों, प्राकृतिक विज्ञान को अच्छे प्रकार से समझ सकते हैं और उसके अनुरूप महान् कार्य कर सकते हैं। हम अपने शारीरिक और मानसिक शत्रुओं पर भी नियंत्रण रखने के योग्य बन जाते हैं।

परमात्मा की इस दिव्य सेवा की तुलना उस पिता से की जाती है जो अपने बच्चों को शिक्षित करता है तथा हर प्रकार से शक्तिशाली बनाता है जिससे वे जीवन में योग्यता पूर्वक कार्यों को कर सकें। कुछ मित्र भी पिता के समान ही सहायता करते हैं। इससे प्रेरणा प्राप्त करते हुए हमें भी अन्य लोगों की एक मित्र या पिता की तरह यथा सम्भव शिक्षा तथा अन्य साधनों से सहायता करनी चाहिए।

जीवन में सार्थकता

वैदिक विवेक के अनुसार सबके मस्तिष्क को महान् ज्ञान से शिक्षित करने तथा महान् कार्यों के लिए प्रेरित करने पर अत्यधिक बल दिया गया है। गुरु-शिष्य सम्बन्ध भी पिता और पुत्र की तरह या दो मित्रों की तरह होने चाहिए।

ऋग्वेद मन्त्र-1.10.6
तमित्सखित्व ईमहे तं राये तं सुवीर्ये ।
स शक्र उत नः शकदिन्द्रो वसुदयमानः ॥१६॥

तमित् – उस सर्वोच्च परमात्मा को

सखित्वे – मित्रता के लिए

ईमहे – हम प्रार्थना करते हैं / प्राप्त करने की इच्छा करते हैं

तम् – उस परमात्मा से

राये – हर प्रकार की सम्पत्ति के लिए

तम् – उस परमात्मा से

सुवीर्ये – उत्तम शक्ति, गुणों के लिए

सः – वह

शक्र – व्यापक और सर्वोच्च शक्तिमान

उत – और

नः – हमें

शकत् – शक्तिशाली बनाये

इन्द्रः – परमात्मा

वसु – हमारे सुखी जीवन के लिए सब कुछ

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



दयमानः — प्रदान करता है

व्याख्या :-

हमें किससे मित्रता की कामना करनी चाहिए?

हम हर प्रकार की गौरवशाली सम्पत्ति, सभी शुभ गुणों तथा उत्तम कर्मों के लिए सर्वोच्च परमात्मा से मित्रता की प्रार्थना तथा कामना करते हैं। उस परमात्मा में व्यापक तथा सर्वोच्च शक्तियाँ हैं। इसलिए वही हमें शक्तिशाली बना सकता है। वह हमारे सुखी जीवन के लिए सब कुछ प्रदान करता है। वह सर्वोच्च दाता तथा रक्षक भी है।

जीवन में सार्थकता

जो कोई भी हमें सुखी जीवन के साधन उपलब्ध कराता है, हम उससे मित्रता का प्रयास करते हैं।

हमारे माता—पिता, गुरु, आजीविका उपलब्ध कराने वाले, ग्राहक और यहाँ तक कि मतदाता भी भिन्न—भिन्न योग्यताओं के बल पर दाता और रक्षक हैं। हम ऐसे सभी लोगों के साथ बहुत अच्छे सम्बन्ध बनाने का प्रयास करते हैं। परमात्मा सर्वोच्च दाता है। अतः उसे भी हमें अपने जीवन का प्रथम तथा सबसे अधिक महत्वपूर्ण मित्र मानना चाहिए।

ऋग्वेद मन्त्र—1.10.7

सुविवृतं सुनिरजमिन्द्र त्वादातमिद्यशः ।
गवामप व्रजं वृधि कृणुष्व राधो अद्रिवः ॥७॥

सुविवृतम् — अच्छे प्रकार से व्यापक तथा विस्तार वाला

सुनिरजम् — सरलता से प्राप्त होने वाला, सरलता से हमें उत्तम पथ पर चलाने वाला

इन्द्र — परमात्मा, सूर्य

त्वादातम् — आपके द्वारा शुद्ध किया गया तथा दिया गया

इत् — निश्चित रूप से

यशः — प्रसिद्धि, गौरव

गवाम् — किरणें, इन्द्रियाँ

अप (वृधि से पूर्व लगाकर)

व्रजम् — समूह को

वृधि (अपवृधि) — विस्तृत कर दो, खोल दो

कृणुष्व — हमें उपलब्ध कराता है

राधो — गौरवशाली धन

अद्रिवः — बिना बाधा के, प्रशंसा के योग्य

व्याख्या :-

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

दिव्य ज्ञान तथा उत्तम स्वास्थ्य कैसे प्राप्त करें?

यदि इन्द्र का अर्थ सूर्य के रूप में ग्रहण करें तो इस मन्त्र का भाव है – सूर्य की विस्तृत किरणें प्रत्येक प्राणी तथा प्रत्येक कण को सरलता से प्राप्त होती हैं। यह किरणें सूर्य द्वारा शुद्ध की गई हैं और हमें प्रसिद्धि तथा ज्ञान के लिए प्राप्त होती हैं। सूर्य अपनी किरणों के समूह को पूरी तरह खोल देता है और सर्वत्र व्यापक कर देता है। ऐसा करने के पीछे बिना किसी बाधा के सबको गौरवशाली सम्पदा प्रदान करने का उद्देश्य होता है। वैज्ञानिक रूप से हमें यह स्वीकार करना होगा कि सूर्य का प्रकाश हमारे पूर्ण सुखी जीवन तथा आध्यात्मिक प्रगति के लिए अत्यन्त आवश्यक है। हमें प्रतिदिन सूर्य की किरणों का परमात्मा के प्रथम उपहार के रूप में स्वागत करना चाहिए। ऐसा करने के लिए निश्चित रूप से हमें सूर्य की किरणों के हम तक पहुँचने से पूर्व उठना चाहिए।

यदि इन्द्र को सर्वोच्च शक्तिमान परमात्मा के रूप में ग्रहण करें तो इस मन्त्र का भाव है – परमात्मा की शक्तियाँ सर्वव्यापक हैं और सरलता से हमें उपलब्ध हैं। ये शक्तियाँ स्वयं परमात्मा के द्वारा शुद्ध की गई हैं। परमात्मा अपनी शक्तियाँ महान् गौरवशाली ज्ञान के रूप में देता है। बिना बाधा के दिव्य ज्ञान को प्राप्त करने के लिए हमें अपनी इन्द्रियों के समूह को खोल देना चाहिए। महान् ज्ञान ही अन्ततः गौरवशाली सम्पदा का साधन है और वही ज्ञान हमें परमात्मा की अनुभूति के योग्य बनाता है।

जीवन में सार्थकता

सूर्य का प्रकाश हमारे सुख पूर्वक तथा स्वस्थ जीवन के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण कारक है। यह हमारे शरीर में विटामिन-डी के संरक्षण तथा कई अन्य प्रकार से सहायता करता है। हमें अपने जीवन का दैनिक शुभारम्भ प्रकृति के साथ ही करना चाहिए। इसी प्रकार अपने मानसिक शत्रुओं का नाश करके हमें अपनी इन्द्रियों को भी सशक्त बनाना चाहिए जिससे हम परमात्मा के दिव्य ज्ञान को प्राप्त कर सकें।

इसी प्रकार प्रत्येक व्यक्ति को अपनी शक्तियाँ और योग्यताएँ बढ़ानी चाहिए जिससे वह दूसरों के दिल जीत सके।

अपनी इन्द्रियों को शक्तिशाली बनाने का अर्थ है कि उन्हें निरर्थक विषयों, स्वाद, पसन्द या नापसन्द आदि का गुलाम नहीं बनने देना चाहिए।

ऋग्वेद मन्त्र-1.10.8

नहि त्वा रोदसी उभे ऋघ्यायमाणमिन्वतः ।
जेषः स्वर्वतीरपः सं गा अस्मभ्यं धूनुहि ॥८॥

नहि – नहीं

त्वा – आपको

रोदसी – अन्तरिक्ष तथा भूमि

उभे – दोनों

ऋघ्यायमाणम् – पूजा के योग्य, समस्त शत्रुओं के नाशक

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

इन्वतः — व्याप्त

जेषः — हमारी सफलता के लिए

स्वर्वतीः — हमारे सुखों के लिए

अपः — कर्म

सं (धूनुहि से पूर्व लगाकर)

गाः — इन्द्रियाँ

अदृसमभ्यम् — हमारी

धूनुहि (संधूनुहि) — हमें प्रेरित कीजिए

व्याख्या :-

हमें विभिन्न कर्मों में कौन नियुक्त करता है?

परमात्मा सर्वविद्यमान और सर्वशक्तिमान है। अन्तरिक्ष तथा भूमि भी उसे व्याप्त नहीं कर सकते। वह सबको व्याप्त करता है। जब परमात्मा सर्वव्यापक है तो किसी अन्य सत्ता या शक्ति से प्रार्थना करने का कोई लाभ नहीं है। परमात्मा से हमारी प्रार्थना अत्यन्त सरल है — “हमारी इन्द्रियों को केवल उन्हीं कार्यों को करने के लिए प्रेरित करो जो हमारे सुखी जीवन और सफलता के लिए, निरर्थक कार्यों या असफलता के लिए नहीं।”

इस प्रकार की प्रार्थना के साथ स्वाभाविक रूप से हमारे अन्दर एक वैदिक विवेक विकसित होगा जो अच्छे या बुरे, लाभकारी या हानिकारक की पहचान कर सकेगा। हमारी अपनी प्रार्थना के अनुसार हमारी इन्द्रियाँ स्वाभाविक रूप से केवल अच्छे और लाभकारी कर्मों को ही अपनायेंगी। यदि यही प्रार्थना हमारा संकल्प बन जाती हैं तो उसका परिणाम भी सुखी जीवन और सफलता के रूप में ही होगा।

जीवन में सार्थकता

सुखी जीवन तथा सफलता को कैसे प्राप्त करें?

1. हमें केवल उस सर्वोच्च ऊर्जा के समक्ष ही प्रार्थना करनी चाहिए जो हमारे भीतर ही उपस्थित है।

2. इन्द्रियों को अच्छे और लाभकारी कार्यों में लगाने की ही प्रार्थना की जानी चाहिए। इसके लिए आवश्यक है कि इन्द्रियों पर पूर्ण नियंत्रण स्थापित हो जिससे वे बुरे और हानिकारक कार्यों की तरफ न जायें।

केवल इसी मार्ग पर हम सुखी जीवन और चहुंमुखी सफलता को प्राप्त कर सकते हैं।

ऋग्वेद मन्त्र—1.10.9

आश्रुत्कर्ण श्रुधी हवं नू चिदधिष्ठ मे गिरः।

इन्द्र स्तोममिमं मम कृष्णा युजश्चिदन्तरम् ॥१॥

आश्रुत्कर्ण — लगातार सुनने की क्षमता वाला अर्थात् परमात्मा

श्रुधी — कृपया सुनो

हवम् — स्वीकार करने योग्य सत्य वाणी

नु — शीघ्र

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

चित् – हृदय में

दधिष्ठ – धारण करो

मे – मेरे

गिरः – प्रशंसा युक्त वाणी

इन्द्र – परमात्मा

स्तोमम् – प्रशंसा युक्त वाणियाँ

इम – ये सब

मम – मेरी

कृष्ण – कृपया करें

युज – जोड़ें

चित् – हृदय

अन्तरम् – गहराई से

व्याख्या :-

जीवन में प्रगति कैसे करें?

परमात्मा की सुनने की योग्यता सर्वोच्च है, बिना बाधा के है और लगातार है। अतः हम परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि हमारी स्वीकार करने योग्य और सत्य वाणियों को सुनें जो हम उनकी प्रशंसा में गाते हैं और उन्हें अपने हृदय में रखें। इस प्रकार जब हमारी वाणियाँ परमात्मा के हृदय में स्थापित हो जाती हैं तो दोनों हृदय आन्तरिक रूप से संयुक्त होकर एक हो जाती हैं। हमारा हृदय शुद्ध हो जाता है और अनुभूति की प्रक्रिया के योग्य बन जाता है।

जीवन में सार्थकता

प्रार्थनाएँ केवल तभी स्वीकार होती हैं जब दो हृदय संयुक्त हो जाते हैं।

जब भी आप परमात्मा से या अपने निकट किसी भी व्यक्ति से प्रार्थना करें तो उसकी पहली आवश्यकता यह है कि आपकी प्रार्थना स्वीकार करने योग्य और सत्य आधारित होनी चाहिए। द्वितीय, आपकी प्रार्थना सुनने वाले व्यक्ति के हृदय को छूनी चाहिए। प्रार्थनाएँ केवल तभी स्वीकार होती हैं जब दो हृदय संयुक्त हो जाते हैं।

ऋग्वेद मन्त्र-1.10.10

विद्या हि त्वा वृषन्त्तमं वाजेषु हवनश्रुतम्।

वृषन्त्तमस्य हूमह ऊतिं सहस्रसातमाम् ॥10॥

विद्या – हमारा ज्ञान, अनुभूति

हि –निश्चित रूप से, जिस कारण

त्वा – आप

वृषन्त्तम् – हमारे कल्याण के लिए सब पदार्थों की वर्षा करने वाले

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

वाजेषु — युद्ध में या कठिन समय पर
हवन श्रुतम् — हमारी प्रार्थनाएँ सुनता है
वृषन्तमस्य — हमारे कर्तव्यों की वर्षा करता है
हूमह — हम प्रार्थना करते हैं
ऊतिम् — आपके संरक्षण की
सहस्र सातमाम् — जो हमें असंख्य प्रसन्नताएँ तथा सुविधाएँ देते हैं

व्याख्या :-

- हमें परमात्मा का ज्ञान तथा अनुभूति क्यों प्राप्त करनी चाहिए?
हमें आपका ज्ञान तथा अनुभूति कई कारणों से प्राप्त करनी चाहिए :—
1. आप हमारे लाभ के लिए प्रत्येक वस्तु की वर्षा करते हो।
 2. आप युद्ध के समय या कठिन समय पर हमारी प्रार्थनाओं को सुनते हो।
 3. आप हमारे कर्तव्यों की वर्षा करते हो जो हमें असंख्य प्रसन्नताएँ और सुविधाएँ प्रदान करते हैं।
 4. हम सबके संरक्षण के लिए आपसे प्रार्थना करते हैं।

जीवन में सार्थकता

हम अपने जीवन में लोगों का धन्यवाद क्यों करते हैं?

जो भी हमें हमारी प्रसन्नता या सुविधा के लिए कुछ भी प्रदान करता है हम हृदय की गहराई से ऐसे लोगों का धन्यवाद करते हैं।

हम अपने गुरुओं का धन्यवाद करते हैं, क्योंकि वे हमें ज्ञान प्रदान करते हैं जिसके सहारे हम अपने जीवन का स्तर उठाने में सक्षम होते हैं।

हम आजीविका देने वाले व्यक्तियों का धन्यवाद करते हैं क्योंकि वे हमें सुविधाजनक जीवन जीने के लिए धन कमाने का अवसर देते हैं।

हम उन सब व्यक्तियों का धन्यवाद करते हैं जो हमारी प्रार्थनाएँ सुनते हैं और कठिन समय में हमारी सहायता करते हैं।

परमात्मा हमें असंख्य वस्तुएँ प्रदान करते हैं, हमारे सुखी जीवन का मूलाधार अर्थात् हमारा जीवन। हमें उनके प्रति सदैव धन्यवाद करना चाहिए और उनके साथ अपनी एकता का अनुभव करना चाहिए।

ऋग्वेद मन्त्र—1.10.11

आ तू न इन्द्र कौशिक मन्दसानः सुतं पिव ।
नव्यमायुः प्र सू तिर कृथि सहस्रसामृषिम् ॥11॥

आ — उत्तम रूप में

तू — शीघ्र, कृपा करके

न — हमें

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



इन्द्र – परमात्मा

कौशिक – समस्त ज्ञान की प्रेरणा देने वाला

मन्दसानः – आनन्द दायक, स्तुति योग्य तथा प्रशंसनीय

सुतम् – उत्तम गुण तथा परमात्मा की प्रशंसा में कहे गये शब्द

पिव – स्वीकार, धारण, स्थापित

नव्यमायुः – दीर्घ एवं स्वस्थ जीवन

प्रसूतिर – कृपया दीजिए

कृधि – हमें बनाईये

सहस्रसाम् – समस्त ज्ञान और विज्ञान का ज्ञाता

ऋषिम् – दृष्टा

व्याख्या :-

हम परमात्मा से प्रार्थना क्यों करते हैं? हमारी प्रार्थनाएँ क्या होनी चाहिए?

हम ज्ञान के सर्वोच्च दाता से प्रार्थना करते हैं कि शीघ्र तथा उत्तम रूप में हम पर कृपा करें। वह आनन्ददायक है और हमारे द्वारा स्तुति के योग्य है। हमारी प्रार्थनाएँ तीन प्रकार की हैं :-

1. हमारे उत्तम गुणों तथा परमात्मा की प्रशंसा में कही गई वाणियों को वह स्वीकार करे, धारण करे तथा स्थापित करे।
2. हमें दीर्घ तथा स्वस्थ जीवन दे।
3. हमें दृष्टा की तरह सत्य ज्ञान—विज्ञान का ज्ञाता बनाये।

जीवन में सार्थकता

अध्यापकों का सम्मान परमात्मा की तरह क्यों किया जाता है?

ज्ञान बांटने के लिए ज्ञान की प्राप्ति।

सर्वोच्च ज्ञानवान परमात्मा एक महान् अध्यापक और प्रेरक है। हम समस्त सत्य विद्याओं से युक्त उसके महान् ज्ञान को चाहते हैं अर्थात् एक दृष्टा की तरह हम वेद को चाहते हैं और यह ज्ञान हम अन्य लोगों को देना चाहते हैं और उन्हें प्रेरित करना चाहते हैं। जो लोग सत्य विज्ञान का ज्ञान प्राप्त करने योग्य बन जाते हैं और अन्य लोगों को भी उसके लिए प्रेरित करते हैं वे परमात्मा के समान ही पूजनीय होते हैं। ऐसे लोग लम्बी और स्वस्थ आयु प्राप्त करते हैं। हम ऐसे गुरुओं का सम्मान इसलिए करते हैं क्योंकि वे ज्ञान बांटने के लिए ज्ञान प्राप्त करते हैं।

ऋग्वेद मन्त्र 1.10.12

परि त्वा गिर्वणो गिर इमा भवन्तु विश्वतः।

वृद्धायुमनु वृद्धयो जुष्टा भवन्तु जुष्ट्यः॥१२॥

परि – समस्त दिशाओं से

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

त्वा – आपकी

गिर्वणो – वेद वाणी

गिरः – स्तुति एवं प्रशंसा एँ

इमा: – दृष्टा तथा विद्वानों द्वारा गाइ गई

भवन्तु – अनुभूति प्रदान करने वाली

विश्वतः – सबके लिए

वृद्धायुम् – आयु में वृद्धि

अनु – के अनुपात में

वृद्धयः – बढ़ायें

जुष्टा: – प्रेम और सद्भावना के साथ (स्तुतियाँ)

भवन्तु – अनुभव हो

जुष्टयः – प्रेम और सद्भावपूर्ण

व्याख्या :-

वैदिक ज्ञान और परमात्मा की स्तुति का क्या परिणाम होता है?

वैदिक वाणियाँ अर्थात् दृष्टा एवं विद्वानों के द्वारा परमात्मा की स्तुति और प्रशंसा के साथ प्रस्तुत ज्ञान जो चारों तरफ से सबकी बुद्धि को प्रकाशित करने वाला हो। ऐसे लोग लम्बी और स्वरथ आयु को अनुपात में प्राप्त करते हैं।

परमात्मा के प्रति प्रेम और सद्भावनापूर्ण स्तुतियों के साथ वे परमात्मा का प्रेम अर्थात् आनन्द अनुभव करते हैं। ऐसे लोग प्रेम और सहानुभूति का प्रतिरूप बन जाते हैं जो परमात्मा के समझे जाते हैं और संसार में सम्मान के पात्र होते हैं।

जीवन में सार्थकता

सर्वोच्च वैदिक ज्ञान तथा परमात्मा की स्तुतियों का परिणाम :

1. लम्बी और दीर्घ आयु।
2. प्रेम और सद्भावनापूर्ण आनन्द।
3. समाज में सम्मान और श्रद्धा।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

ऋग्वेद मण्डल-1, सूक्त-11

ऋग्वेद मन्त्र-1.11.1

इन्द्रं विश्वा अवीवृधन्त्समुद्रव्यचसं गिरः ।
रथीतमं रथीनां वाजानां सत्पतिम्पतिम् ॥१॥

इन्द्रम् – परमात्मा की, आध्यात्मिक व्यक्ति की, महान राजा की
विश्वा – समस्त

अवीवृधन् – गुणों एवं महिमा को बढ़ाती है

समुद्रव्यचसम् – समुद्र, आकाश तथा अन्तरिक्ष के समान चारों तरफ विस्तृत
गिरः – वैदिक वाणियाँ, शक्तियाँ

रथीतमम् – उत्तम रथी, महानतम्

रथीनाम् – समस्त रथीयों में, समस्त आत्माओं में

वाजानाम् – समस्त शक्तियों वाला

सत्पतिम् – सत्पुरुषों की रक्षा करने वाला

पतिम् – सर्वरक्षक

व्याख्या :-

परमात्मा हमारे लिए शोभनीय क्यों है?

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

परमात्मा की सभी वाणियाँ अर्थात् सम्पूर्ण ज्ञान उसका विस्तार करते हैं अर्थात् परमात्मा हम सबके लिए शोभनीय है। अपने उस सर्वोच्च ज्ञान के कारण जो उसने सबको दिया है वह वास्तव में एक समुद्र, आकाश और अन्तरिक्ष की तरह चारों तरफ फैला हुआ है। वह समस्त रथियों में सर्वोच्च तथा सर्वोत्तम रथी है। वह समस्त आत्माओं का स्वामी अर्थात् परम आत्मा है। वह समस्त शक्तियों का स्वामी है और सत्पुरुषों और गुणी लोगों का संरक्षक है।

यह मन्त्र आध्यात्मिक व्यक्तियों पर भी लागू होता है। आध्यात्मिक अर्थात् जिसने परमात्मा की अनुभूति प्राप्त कर ली है। ऐसे महापुरुषों का ज्ञान तथा उपदेश उन्हें बड़ा एवं महान् बना देते हैं। ऐसे महान् लोग अपने प्रेम और विवेक के कारण चारों तरफ विस्तृत हो जाते हैं। उन्हें भी एक महान् आत्मा तथा आध्यात्मिक रूप से शक्तिशाली समझा जाता है।

यह मन्त्र उस महान् राजा पर भी लागू होता है जिसके आदेश—निर्देश उसका विस्तार करते हैं। उसकी शक्तियाँ तथा प्रभाव उसके राज्य में चारों तरफ दिखाई देते हैं। वह अपनी सेना का सर्वोत्तम सेनापति होता है। वह अपने राज्य का सर्वोच्च अधिकारी, सभी शक्तियों का धारक और परिणामतः समस्त सत्पुरुषों का संरक्षक होता है।

जीवन में सार्थकता

क्या हम भी परमात्मा की तरह शोभनीय बन सकते हैं?

निम्न लक्षणों को धारणा करके सामान्य लोगों की दृष्टि में कोई भी व्यक्ति परमात्मा के समकक्ष सम्मान का अधिकारी बन सकता है :-

1. स्वयं दिव्य ज्ञान की अनुभूति प्राप्त करके सबको वह ज्ञान बांटकर,
2. समुद्र, आकाश तथा अन्तरिक्ष की तरह विस्तृत हृदय वाला बनकर,
3. प्रत्येक कार्य को उत्तम स्तर की दक्षता के साथ पूरी ऊर्जा और क्रियाशीलता के साथ सम्पन्न करके अर्थात् योगः कर्मसु कौशलम्,
4. अपनी शक्तियों को बढ़ाकर,
5. समस्त सत्पुरुषों का संरक्षक बनकर।

ऋग्वेद मन्त्र 1.11.2

सख्ये त इन्द्र वाजिनो मा भेम शवसस्पते ।
त्वामभि प्र णोनुमो जेतारमपराजितम् ॥२॥

सख्ये — मित्रभाव

ते — आपके साथ

इन्द्र — परमात्मा

वाजिनो — समस्त शक्तियों और पदार्थों का रक्षक

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

मा भेम – भय न करें
शवसस्पते – समस्त शक्तियों का स्वामी
त्वामभि – आपको लक्ष्य करके
प्रणोनुमो – हम आपके समक्ष झुकते हैं और आपका पूजन करते हैं
जेतारम् – विश्व का विजेता और हमें विजय में सहायता करता है
अपराजितम् – स्वयं अपराजित

व्याख्या :-

परमात्मा के साथ मित्रता भाव रखने के क्या लाभ हैं?

परमात्मा के साथ हमें मित्रता भाव रखना चाहिए, क्योंकि वह समस्त शक्तियों और पदार्थों का रक्षक है। वह समस्त शक्तियों का स्वामी है। यदि हम परमात्मा के साथ मित्रता भाव स्थापित करने में सक्षम हो जाते हैं तो हमें कभी किसी से भय नहीं होगा। हम ऐसे मित्र का अभिवन्दन करते हैं जो समूची सृष्टि का विजेता है और वही हमें अपने शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने में सहायता कर सकता है। वह स्वयं सदैव अपराजित रहता है।

जीवन में सार्थकता

शक्तिशाली व्यक्तियों के साथ मित्रता करने के क्या लाभ हैं?

परमात्मा की तरह सभी शक्तिशाली लोग भी सामान्य लोगों की तरफ से उसी प्रकार का सम्मान प्राप्त करते हैं। परमात्मा के साथ मित्रता तथा समाज में प्रत्येक शक्तिशाली व्यक्ति के साथ मित्रता करनी चाहिए जैसे राजनेता, सामाजिक नेता, आध्यात्मिक विशेषज्ञ, आपके सर्वोच्च अधिकारी तथा समाज में वृद्धजन। इस प्रकार हम भी परमात्मा की तरह तथा अन्य शक्तिशाली लोगों की तरह विकसित हो सकते हैं।

ऋग्वेद मन्त्र 1.11.3

पूर्वीरिन्द्रस्य रातयो न वि दस्यन्त्यूतयः।
यदी वाजस्य गोमतः स्तोतृभ्यो मंहते मघम् ॥३॥

पूर्वः – सनातन पालक
इन्द्रस्य – परमात्मा की
रातयो – दान शक्ति
न – नहीं
वि दस्यन्ति – नष्ट होती
उतयः – उसका संरक्षण
यदि – जब भी आवश्यक हो

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

वाजस्य — सुख के लिए समस्त सम्पत्तियों का दाता

गोमतः — उत्तम वाणियाँ

स्तोतृभ्यः परमात्मा की स्तुति करने वाले आध्यात्मिक जन

मंहते — उपलब्ध कराते हैं

मध्म — ज्ञान तथा सम्पत्तियाँ

व्याख्या :-

परमात्मा किस प्रकार सारी सृष्टि का पालन करता है?

सृष्टि उत्पत्ति के समय से परमात्मा के दान इस सम्पूर्ण सृष्टि का पालन कर रहे हैं। उसका संरक्षण अन्तर्हीन है।

वह समस्त प्राणियों की प्रसन्नता के लिए हर प्रकार की सम्पत्तियों का दाता है। वह उन लोगों को श्रेष्ठ वाणियाँ प्रदान करता है जो उसकी स्तुति करते हैं। इस प्रकार वह ज्ञान और पदार्थों को उपलब्ध करवाकर सबका पालन करता है।

जीवन में सार्थकता

हम अपने परिवार, समाज और राष्ट्र का पालन कैसे करते हैं?

परमात्मा सर्वोच्च तथा अन्तर्हीन संरक्षक है क्योंकि सृष्टि उत्पत्तिकाल से ही वह सबको अपने दान उपलब्ध करवाता है और वह अन्तर्हीन समय तक ऐसा करता रहेगा। यह सभी दान हमारे पालन तथा संरक्षण के लिए ही हैं। उसके दान दो प्रकार के हैं :—

1. प्रसन्नता के लिए सम्पत्तियाँ।

2. जो उसकी स्तुति करते हैं उनके लिए ज्ञान।

सृष्टि के पालन के लिए यही दोनों दान आवश्यक हैं।

इसी प्रकार यदि हम अपने परिवार, समाज, किसी संस्था या राष्ट्र का पालन करना चाहते हैं तो हमें सबके लिए इन दोनों प्रकार के दान सुनिश्चित करवाने चाहिए अर्थात् सम्पत्तियाँ तथा ज्ञान प्रत्येक व्यक्ति के लिए। पालन का अर्थ संरक्षण भी होता है।

ऋग्वेद मन्त्र 1.11.4

पुरां भिन्दुर्युवा कविरमितौजा अजायत ।
इन्द्रो विश्वस्य कर्मणो धर्ता वज्री पुरुष्टुतः ॥५॥

पुराम् — शहर, शरीर

भिन्दुः — नष्ट अथवा जीते गये

युवा — गुणों का मेल तथा अवगुणों का त्याग

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

कवि: — एक ऋषि का कवि लक्षण

अमितौजा — अनन्त शक्ति

अजायत — उत्पन्न होती है

इन्द्रो — परमात्मा, योद्धा, सत्पुरुष

विश्वस्य — सबका

कर्मणो — कार्य

धर्ता — पालक, धारक

वज्री — वज्र के समान शक्ति तथा विनाश के अन्य साधन

पुरुष्टुतः — अपार स्तुति के योग्य

व्याख्या :-

परमात्मा की वज्र शक्ति क्या है?

परमात्मा का इतना गुणगान क्यों होता है?

सूर्य प्रकृति में से सभी रोगों के कीटाणुओं को समाप्त कर देता है, शक्ति उत्पन्न करता है तथा दुर्गन्ध दूर करता है और अपने इस अनन्त शक्ति के कारण सबका पालक बन जाता है; एक योद्धा सब लोगों की रक्षा के लिए अपने शत्रुओं का नाश करता है; एक आध्यात्मिक व्यक्ति अपने मानसिक शत्रुओं का नाश करके, अपने जीवन में श्रेष्ठ गुणों को जोड़कर और बुरी आदतों तथा वृत्तियों को छोड़कर अपने अन्दर अनन्त शक्तियों का संग्रहण करता है।

परमात्मा सभी लोगों के कार्यों को धारण करता है। गुणी कार्यों का पालन करता है और बुरे कार्यों को नष्ट करता है। वह सम्पूर्ण शक्तिशाली है। इसीलिए उसका अत्यधिक गुणगान होता है। परमात्मा के द्वारा सभी कार्यों को धारण किये जाने की शक्ति से यह सिद्ध होता है कि उसके पास सभी कार्यों का फल देने की शक्ति भी है, जिसे कर्मफल सिद्धान्त कहा जाता है। परमात्मा की यह महान् वज्र रूपी शक्ति है जिससे वह प्रत्येक प्राणी को नियंत्रण में रखता है, न्याय करता है और इसी शक्ति के कारण उसका इतना गुणगान होता है।

जीवन में सार्थकता

शत्रुओं का नाश करने के पीछे क्या उद्देश्य होता है?

1. सद्गुणों की रक्षा करना,
2. दुर्गुणों का नाश करना तथा
3. न्याय करना।

एक योद्धा तथा वास्तविक आध्यात्मिक व्यक्ति का गुणगान भी परमात्मा की तरह ही होता है क्योंकि वे भी अच्छाई की रक्षा, बुराई के नाश तथा न्याय की स्थापना के लिए अपने शत्रुओं पर विजय प्राप्त करते हैं। उनमें इन कार्यों को करने की शक्ति होती है। इसीलिए ऐसे महान् व्यक्तियों का गुणगान सबके द्वारा किया जाता है।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

प्रत्येक व्यक्ति को अपी वज्र रूपी ताकत के साथ अपने शत्रुओं का नाश करके सम्मान के उस स्तर तक उठने का प्रयास करना चाहिए।

ऋग्वेद मन्त्र 1.11.5
त्वं वलस्य गोमतोऽपावरद्रिवो बिलम् ।
त्वां देवा अबिभ्युषस्तुज्यमानास आविषुः ॥५॥

त्वम् – आपके

वलस्य – बादल, इच्छाएँ

गोमतो – किरणें (सूर्य की, ज्ञान की)

अपावः – अलग कर देता है

अद्रिवः – सूर्य, आत्मा

बिलम् – गैस के रूप में एकत्रित जल, इच्छाओं से दबा हुआ हृदय

त्वाम् – आपकी

देवा – दिव्य प्रवृत्तियाँ

अबिभ्युषः – भयरहित

तुज्यमानास – अपने ही स्थान पर संरक्षण के योग्य

आविषुः – चारों तरफ से विशेष रूप से प्राप्त

व्याख्या :-

हम सबमें कौन सी दिव्य शक्ति है?

सूर्य अपनी किरणों की ऊर्जा से बादलों को अपने अन्दर संचित जल से पृथक कर देता है। आत्मा के पास भी सूर्य के समान ही शक्तियाँ उपलब्ध हैं जिनसे वह अपने ज्ञान की किरणों के बल पर अपनी इच्छाओं को अपने हृदय से पृथक कर सकता है।

सूर्य तथा आत्मा की यह दिव्य शक्तियाँ भयरहित हैं और परमात्मा स्वयं इन शक्तियों की उन्हीं के स्थान पर चारों तरफ से रक्षा करता है।

जीवन में सार्थकता

परमात्मा की वज्र रूपी शक्ति की तरह, जिसके द्वारा वह हमारे कर्मों का फल हमें देता है, हमें भी यह शक्ति दी गई है कि हम अपनी इच्छाओं को अपने हृदय से पृथक कर दें। इच्छाओं का त्याग करने की यह शक्ति भयरहित है और परमात्मा के द्वारा चारों तरफ से संरक्षण के योग्य है।

अपनी शक्तियों का इस प्रकार प्रयोग करने वाला प्रत्येक व्यक्ति जो अपनी इच्छाओं का त्याग कर देता है उसका सम्मान भी परमात्मा की तरह ही होता है।

ऋग्वेद मन्त्र 1.11.6

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

तवाहं शूर रातिभिः प्रत्यायं सिन्धुमावदन्।
उपातिष्ठन्ति गिर्वणो विदुष्टे तस्य कारवः ॥६॥

तव — आपके

अहम् — मैं

शूर — शूरवीर व्यक्ति (शरीर और मन से)

रातिभिः — अपने अनुदानों के द्वारा

प्रत्यायम् — प्राप्त करता है

सिन्धुम् — महान तथा गहरी प्रसन्नता (समुद्र के समान)

आवदनम् — प्रशंसा तथा प्रार्थना

उपातिष्ठन्ति — पूजा करते हुए आपके समीप बैठता है

गिर्वणो — प्रशंसा और स्तुति से पूजा

विदुष्टे — आपको जानता है

तस्य — आपका

कारवः — कार्यकर्ता / सेवक

व्याख्या :-

परमात्मा की अनुभूति कौन प्राप्त कर सकता है?

मेरे जैसा शूरवीर व्यक्ति जो आपकी प्रशंसा तथा आपसे प्रार्थना करता है जिससे वह आपके द्वारा प्रदत्त वस्तुओं के साथ आपकी अनुभूति प्राप्त करे और समुद्र के समान महान और गहरी प्रसन्नता का अनुभव करे। तीन प्रकार के लोग आपकी अनुभूति इस प्रकार प्राप्त कर सकते हैं :—

1. जो आपके निकट बैठकर ध्यानावस्था में आपकी पूजा करते हैं।
2. जो आपकी प्रशंसा तथा स्तुति करते हुए आपकी पूजा करते हैं।
3. जो आपके कार्यकर्ता हैं अर्थात् वे समस्त गतिविधियाँ आपके नाम पर करते हैं, पूर्ण रूप से स्वार्थरहित होकर दूसरों के कल्याण के लिए।

जीवन में सार्थकता

मानवीय सम्बन्धों के महत्व की अनुभूति किस प्रकार करें?

यदि आप अपने परिवार, समाज या किसी भी स्थान पर किसी भी सम्बन्ध को स्थापित या विकसित करना चाहते हैं तो आपको निम्न कार्य करने चाहिए :—

1. निकट बैठो और एक—दूसरे के मनोभावों और समस्याओं को समझने का प्रयास करो।
2. अन्य सम्बन्धित व्यक्ति के सद्गुणों की प्रशंसा तथा गुणगान करो।
3. अन्य सम्बन्धित व्यक्ति के कल्याण के लिए करो।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

ऋग्वेद मन्त्र 1.11.7

मायाभिरिन्द्र मायिनं त्वं शुष्णमवातिरः ।
विदुष्टे तस्य मेधिरास्त्वेषां श्रवांस्युत्तिर ॥७॥

मायाभिः — विशेष मन तथा कार्यों के साथ

इन्द्र — परमात्मा

मायिनम् — दुर्बुद्धि

त्वम् — आप

शुष्णम — मन के संतुलन को व्याकुल करना

अवातिरः — पराजित अथवा नष्ट करना

विदुष्टे — आपको जानता है

तस्य — वह (दुर्गुणों की पराजय)

मेधिराः — बुद्धिमान व्यक्ति

तेषाम् — उन विशेष बुद्धियों को

श्रवांसि — शक्ति तथा प्रसिद्धि

उत्तिर — प्रगतिशील बनाओ

व्याख्या :-

दुर्गुणों को किस प्रकार नष्ट या पराजित किया जा सकता है?

केवल परमात्मा ही दुर्बुद्धि व्यक्तियों को पराजित कर सकता है जो विशेष बुद्धि और कार्यों वाले व्यक्तियों के संतुलन को व्याकुल करते हैं।

ऐसे शूरवीर व्यक्ति जानते हैं कि उनकी विजय केवल परमात्मा के कारण है। ऐसे विशेष बुद्धि वाले लोगों की शक्तियाँ तथा प्रसिद्धि सदैव प्रगति को प्राप्त हो जिससे दुर्बुद्धि लोगों की प्रगति को रोका जा सके।

हमारे मस्तिष्क में भी बुराईयों की वृद्धि हो सकती है। विशेष बुद्धि तथा कार्यों के द्वारा सभी बुराईयों को पराजित किया जा सकता है। परन्तु इसमें भी परमात्मा की सहायता आवश्यक है जो दुर्गुणों से सद्गुणों की रक्षा करता है। इस प्रकार सत्तुणी प्रवृत्तियाँ बढ़ती रहती हैं और दुर्गुणों का नाश होता रहता है।

जीवन में सार्थकता

अपराध निवारण तथा रोग निवारण किस प्रकार सुनिश्चित किया जा सकता है?

1. विशेष सत्तुणी मन का विकास करके तथा उसके अनुसार कार्य करके।

2. अपने अन्दर विद्यमान सर्वोच्च शक्ति परमात्मा को प्रार्थना करके तथा उसकी सहायता माँगकर।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

ऋग्वेद मन्त्र 1.11.8
इन्द्रमीशानमोजसाभि स्तोमा अनूषत ।
सहस्रं यस्य रातय उत वा सन्ति भूयसीः ॥८॥

इन्द्रम् – उस परमात्मा के
इशानम् – उत्पत्तिकर्ता तथा नियंत्रक
ओजसा – अपनी अनन्त शक्ति के साथ
अभि (अनूषत से पूर्व लगाकर)
स्तोमा – वेदवाणी के गान
अनूषत (अभ्यनूषत) – प्रशंसा एवं गुणगान
सहस्रम् – हजारों
यस्य – जिसके
रातयः – दान तथा अनुदान
उत वा – अथवा
सन्ति – हैं
भूयसीः – इससे भी अधिक

व्याख्या :-

क्या परमात्मा, सर्वोच्च निर्माता, एक है या अनेक?
सर्वशक्तिमान परमात्मा अपनी अनन्त शक्ति के साथ सबकी उत्पत्ति करके सब पर नियंत्रण करने वाला है। इसीलिए वेद वाणियों के गाता उसी की प्रशंसा तथा गुणगान करते हैं। यह मन्त्र एक ईश्वरवाद की अवधारणा का समर्थन करता है कि परमात्मा केवल एक ही है जो समूची सृष्टि का निर्माता तथा नियंत्रक है। इसलिए केवल उसी की प्रशंसा और स्तुति उस रूप में करनी चाहिए। उसके दान और अनुदान असंख्य हैं।

जीवन में सार्थकता

एक ईश्वरवाद के समर्थन का मंत्र।

सर्वशक्तिमान परमात्मा सारी सृष्टि का एक मात्र उत्पत्तिकर्ता तथा नियंत्रक है जो उस रूप में एक ही सर्वोच्च शक्ति है। उस सर्वोच्च शक्ति परमात्मा के समकक्ष स्तर का कोई दावा नहीं कर सकता और किसी को वह स्तर प्राप्त होना भी नहीं चाहिए। उसकी शक्तियाँ और दान असंख्य हैं। हमारी दृष्टि में परमात्मा के समान ऐसे लोग हो सकते हैं जो हमारे उत्थान के समर्थक सिद्ध हुए हों परन्तु किसी को भी सारी सृष्टि की सर्वोच्च शक्ति नहीं माना जा सकता।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

ऋग्वेद मण्डल-1, सूक्त-12

ऋग्वेद मन्त्र 1.12.1
अग्निं दूतं वृणीमहे होतारं विश्ववेदसम् ।
अस्य यज्ञस्य सुक्रतुम् ॥१॥

अग्निम् – सर्वशक्तिमान परमात्मा को, भौतिक अग्नि को, ऊर्जा को
दूतम् – सत्य का वाहक, दुर्गुणों का नाशक, ऊर्जा को एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाने का साधन
वृणीमहे – हम स्वीकार करते हैं
होतारम् – समस्त पदार्थों का दाता
विश्ववेदसम् – समस्त ज्ञान
अस्य – इनका
यज्ञस्य – कल्याणकारी गतिविधियों के
सुक्रतुम् – उत्तमकर्ता ।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

नोट :— यह मन्त्र ऋग्वेद 1.12.1 तथा सामवेद 3 में समान है।

व्याख्या :-

हमारे द्वारा सम्पन्न सभी कल्याणकारी गतिविधियों का कर्ता परमात्मा किस प्रकार है?

सृष्टि में अग्नि किस प्रकार सबसे अधिक महत्वपूर्ण पदार्थ है?

अग्नि शब्द के दो अर्थ हैं :— प्रथम, सर्वोच्च ऊर्जा जो सर्वशक्तिमान है और जो प्रत्येक कण के मूल में समाहित है अर्थात् परमात्मा तत्त्व, द्वितीय, भौतिक अग्नि तथा विद्युत का करंट।

अग्नि के प्रथम अर्थ का प्रयोग करें तो इस मंत्र का अर्थ होता है — हम उस सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा को सच्चाई के वाहक तथा दुर्गुणों के नाशक की तरह स्वीकार करते हैं। वह परमात्मा सब पदार्थों को उपलब्ध कराने वाला है। वह स्वयं पूर्ण ज्ञान है। इसलिए हम जो भी अच्छे या कल्याणकारी कार्य करते हैं, वे केवल परमात्मा नामक सर्वोच्च ऊर्जा के मूल स्रोत द्वारा प्रदत्त पदार्थों और ज्ञान के साथ—साथ प्रेरणा और मार्गदर्शन की सहायता से ही सम्पन्न किये जाते हैं। अतः परमात्मा ही सभी कल्याणकारी कार्यों का वास्तविक कर्ता है।

अग्नि के द्वितीय अर्थ का प्रयोग करें तो इस मन्त्र का अर्थ होता है — हम भौतिक अग्नि को सभी ऊर्जाओं के एक स्थान से दूसरे स्थान तक आवागमन का माध्यम स्वीकार करते हैं। यह अग्नि पदार्थ हमें भिन्न-भिन्न प्रयोगों के लिए प्राप्त समस्त पदार्थों की मूल ऊर्जा है। यह अग्नि ऊर्जा वास्तव में समूचे भौतिक संसार की सर्वोच्च तकनीक (ज्ञान) है। इस प्रकार यह अग्नि ऊर्जा ही हमारी सभी गतिविधियों का मूल कारण है। यह अग्नि ऊर्जा सृष्टि की सर्वोच्च, मूल तथा पवित्र ऊर्जा है। इसलिए केवल कल्याणकारी गतिविधियों में ही इसका प्रयोग किया जाना चाहिए। जिससे चारों तरफ वातावरण में सकारात्मकता का निर्माण हो सके। किसी भी पदार्थ को हानिकारक या विनाशकारी गतिविधियों के लिए प्रयोग करना पाप के तुल्य होता है।

जीवन में सार्थकता

विज्ञान तथा आध्यात्मिकता का एक ही पथ है।

हम किसके माध्यम से परमात्मा की अनुभूति प्राप्त कर सकते हैं?

आध्यात्मिकता का अर्थ है अपने जीवन की शक्ति के मूल स्रोत अर्थात् मूल आत्मा से सम्पर्क बनाना तथा इस मूल अवस्था का आनन्द प्राप्त करना।

विज्ञान का अर्थ है पदार्थों से अधिकतम लाभ प्राप्त करने के लिए विशेषज्ञों के द्वारा उन पदार्थों की मूल प्रकृति को समझकर उनसे लाभ उठाने की नई तकनीकों का विकास करना।

इन दोनों कार्यों में मूल ऊर्जा को समझना तथा उसका विकास करना एक समान लक्षण है। परमात्मा, सर्वोच्च ऊर्जा के रूप में सभी जड़ और चेतन की मूल ऊर्जा है। वह सत्य का संदेश देने वाला है, दुर्गुणों का नाशक है तथा ऊर्जा का वाहक है। इस विचार के साथ वैज्ञानिक लोग भी कल्याण मार्ग के पथिक बनने के लिए प्रेरित होंगे। वे किसी भी ऊर्जा को हानिकारक या विनाशकारी गतिविधियों में प्रयोग करने के लिए या लोगों को प्राकृतिक ऊर्जाओं से दूर रखने के लिए प्रेरित नहीं होंगे। यदि भौतिकवादी वैज्ञानिक इस बात पर विश्वास करें और स्वीकार करें कि समस्त ऊर्जाओं का मूल एक सर्वोच्च, मूल तथा पवित्र प्रकृति वाली

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

शक्ति है तो उनके प्रयासों में एक महान् सकारात्मकता और कल्याणकारी भावना का उदय होगा। आध्यात्मिकता चारों तरफ व्यापक दिखाई देगी और प्रत्येक पदार्थ के प्रयोग के साथ ही वह अनुभूति में भी होगी।

जिस प्रकार एक दूत के माध्यम से हम एक प्रधान और सम्मानजनक व्यक्ति को आमंत्रित करते हैं, उसी प्रकार यज्ञ की अग्नि और सभी कल्याण कार्यों के पीछे कार्य करने वाली अग्नि सर्वोच्च ऊर्जा परमात्मा का ही दूत होती है। अतः अग्नि के माध्यम से हम परमात्मा का आह्वान करते हैं। अहंकार रहित और इच्छा मुक्त त्याग कार्यों के माध्यम से हमारे अन्दर दिव्यता बढ़ जाती है और हमें परमात्मा की अनुभूति होती है।

यहाँ तक कि दूत अपने प्रतिनिधि को भी प्रधान अधिकारी की तरह ही होना चाहिए। अतः मेरे अन्दर विद्यमान अग्नि को ऊर्जा और उत्साह से परिपूर्ण होना चाहिए जिससे मेरी कार्य प्रणाली परमात्मा की तरह सुनिश्चित हो सके।

ऋग्वेद मन्त्र 1.12.2
अग्निमग्निं हवीमभिः सदा हवन्त विशपतिम् ।
हव्यवाहं पुरुप्रियम् ॥२॥

अग्निम् – परमात्मा

अग्निम् – हर प्रकार की ऊर्जा

हवीमभिः – हम पुकारते हैं और इच्छा करते हैं

सदा – सदैव

हवन्त – स्वीकार करते हैं

विशपतिम् – सबके संरक्षण के लिए

हव्यवाहम् – एक स्थान से दूसरे स्थान पर आवागमन के लिए (समस्त पदार्थ तथा ज्ञान)

पुरुप्रियम् – सृष्टि में सबकी प्रसन्नता तथा कल्याण के लिए

व्याख्या :-

हमें सर्वोच्च शक्ति, परमात्मा तथा अग्नि ऊर्जा की आवश्यकता क्यों है?

हम अग्नि अर्थात् सर्वोच्च शक्तिमान परमात्मा तथा अग्नि के अन्य रूपों जैसे भौतिक अग्नि, विद्युत तथा सभी पदार्थों की शक्तियों को पुकारते हैं और उनकी इच्छा करते हैं। परमात्मा, सर्वोच्च ऊर्जा, तथा अग्नि, समस्त पदार्थों में उपस्थित ऊर्जा का करंट, प्रत्येक पदार्थ तथा ज्ञान को एक स्थान से दूसरे स्थान पर तथा एक मस्तिष्क से दूसरे मस्तिष्क में ले जाते हैं जिससे सृष्टि के सभी प्राणियों को सुख तथा कल्याण प्राप्त हो।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पञ्चवती वेदिका

पवित्र वेद स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

जीवन में सार्थकता

अग्नि के दिव्य लक्षण।

हमें जड़ तथा चेतन सभी के भीतर हर रूप में तथा हर ऊर्जा की तरह केवल अग्नि की ही इच्छा करनी चाहिए। यह हमारे जीवन, हमारे शरीर तथा हमारे मस्तिष्क तथा आस-पास के सभी पदार्थों की मूल शक्ति है। हमारे जीवन की इस मूल शक्ति की अनुभूति ही हमारे ज्ञान और गुणों के आवागमन का माध्यम बनती है। केवल यही अग्नि हमारी संरक्षक बन सकती है और सबके सुखों और कल्याण को सुनिश्चित कर सकती है।

सांकेतिक यज्ञ अर्थात् अग्नि में आहुतियों की परम्परा जिसमें अग्नि में शुद्ध धी तथा जड़ी-बूटियों की आहुतियाँ दी जाती हैं। यह प्रक्रिया भी दिव्यता से भरपूर है, क्योंकि इसके द्वारा कीटाणुनाशक पदार्थ गैस के माध्यम से एक स्थान से दूसरे स्थान दूर तक जाते हैं और सबके कल्याण के लिए अशुद्धताओं को दूर कर देते हैं।

ऋग्वेद मन्त्र 1.12.3

अग्ने देवां इहा वह ज्ञानो वृक्तबर्हिषे।
असि होता न ईङ्घयः ॥३॥

अग्ने – परमात्मा, अग्नि

देवान् – दिव्य लक्षणों वाले पदार्थ तथा ज्ञान

इह – यहाँ

आवह – उपलब्ध कराते हैं

ज्ञानः – प्रगट कराने

वृक्तबर्हिषे – आकाश तथा अन्तरिक्ष का ज्ञान, हृदय की गहराई में

असि – हैं

होता – उपलब्ध कराने वाला

नः – हमारे लिए

ईङ्घयः – खोज करने योग्य

व्याख्या :-

खोज का क्या उद्देश्य होता है?

खोज का अर्थ है मूल शक्ति का ज्ञान प्राप्त करना।

सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा हमें दिव्य लक्षणों से युक्त पदार्थ तथा ज्ञान यहीं हमारे आस-पास ही उपलब्ध कराता है। वह सृष्टि में प्रत्येक स्थान पर, आकाश और अन्तरिक्ष की ऊँचाईयों तथा समुद्र की गहराईयों में छिपे ज्ञान को प्रगट करता है। उसका ज्ञान हमारे हृदय के गहरे स्थान में ही अनुभूत होता है। वह हमें सभी

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

पदार्थ उपलब्ध कराता है और उस प्रत्येक पदार्थ की मूल शक्ति की खोज करने का कार्य हमारे पर छोड़ देता है। जिससे हम प्रत्येक पदार्थ का सबके सुख और कल्याण के लिए प्रयोग कर सकें।

प्रत्येक पदार्थ के अन्दर छिपे सत्य और उसकी मूल ऊर्जा की खोज करने वाली मानसिकता के साथ ही हम आध्यात्मिक पथ के साथ-साथ वैज्ञानिक तथा भौतिक प्रगति के पथ पर भी अग्रसर हो सकते हैं।

जीवन में सार्थकता

एक महान वैज्ञानिक एक सच्चा अध्यात्मवादी हो सकता है। एक महान अध्यात्मवादी सदैव एक सच्चा वैज्ञानिक होता है।

केवल खोज के द्वारा ही छिपे हुए सत्य और सभी दिव्यताओं को सामने लाया जा सकता है। एक सच्चा खोजी लम्बे काल तक अपने विषय पर पूरा ध्यान एकाग्र करके उसकी धारणा करता है और सफल प्रयोगों को प्राप्त करता है।

एक आध्यात्मिक व्यक्ति परमात्मा को अपने हृदय में प्राप्त करने के लिए अपने अन्दर धारणा और ध्यान करता है।

एक वैज्ञानिक अलग-अलग पदार्थों की छिपी शक्तियों तथा उनके प्रयोगों की जानकारी के लिए उन पर ध्यान एकाग्र करता है।

एक वैज्ञानिक यदि अग्नि अर्थात् इस सृष्टि की सर्वोच्च ऊर्जा के मूल दिव्य लक्षण को ध्यान में रखे और सभी पदार्थों की शक्तियों को सबके पूर्ण कल्याण के लिए ही प्रयोग करे तो वह एक सच्चा अध्यात्मवादी हो सकता है।

एक राजनेता, एक अध्यापक, एक व्यापारी, एक माता-पिता या कोई भी व्यक्ति एक सच्चा अध्यात्मवादी हो सकता है यदि वह नये पदार्थों तथा नये विचारों की खोज अपने अधीनस्थ लोगों के कल्याण के लिए यह सोच कर करे कि परमात्मा के सामने सभी समान शक्तियाँ हैं।

एक महान् आध्यात्मिक व्यक्ति एक सच्चा वैज्ञानिक होता ही है जो अपने शरीर, मन तथा हृदय की गहराई में सदैव, प्रत्येक परिस्थिति में और प्रतिक्षण उस सर्वविद्यमान परमात्मा की अनुभूति प्राप्त करने का प्रयास करता है। वह उस सर्वोच्च ऊर्जा के साथ एकात्म भाव को पूरे संवेदनशील जुड़ाव के साथ महसूस करता है।

ऋग्वेद मन्त्र 1.12.4
ताँ उशतो वि बोधय यदग्ने यासि दृत्यम् ।
देवैरा सत्सि बर्हिषि ॥ १ ॥

तान् – सभी दिव्यताएँ (पदार्थों तथा आत्माओं की)

उशतः – हम इच्छा करते हैं

विबोधय – ज्ञान तथा अनुभूति के लिए

यत् – जिसके

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

अग्ने – परमात्मा, अग्नि

आयासि – प्राप्त करने योग्य है

दूत्यम् – सत्य का संदेश वाहक, दुर्गुणों का नाशक, ऊर्जा का वाहक

देवैः – दिव्य लक्षणों के साथ

सत्सि – दुर्गुणों का नाश करने के बाद स्थापित

बर्हिषि – अन्तरिक्ष में, हृदय में

व्याख्या :-

हमें दिव्यता या पवित्रता की आवश्यकता क्यों है?

हम समस्त पदार्थों तथा अपने जीवन की मूल शक्ति में दिव्यताओं की स्थापना की प्रार्थना करते हैं जिससे हमें उचित ज्ञान तथा अनुभूति प्राप्त हो।

हम परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि हम सत्य के संदेशवाहक तथा अपने जीवन की बुराईयों के नाशक बनें जिससे हमें दिव्य लक्षणों की खोज में सफलता प्राप्त हो।

अग्नि ऊर्जा की वाहक है जिससे सृष्टि की छिपी हुई दिव्यताओं की खोज होती है।

एक बार बुराईयों तथा मन की वृत्तियों का नाश होने के बाद ही हमारे मस्तिष्क और हृदय के आकाश में सभी दिव्य लक्षणों सहित परमात्मा की अनुभूति प्राप्त होती है।

वैज्ञानिक भी प्रत्येक पदार्थ की अशुद्धताओं का नाश करने के बाद ही उसमें छिपे शुद्ध, लाभकारी तथा दिव्य लक्षणों की खोज करते हैं।

जीवन में सार्थकता

दिव्यता तथा पवित्रता स्थाई सुखों की पहचान है।

अग्नि हमें दिव्य लक्षणों से युक्त पवित्रता की मूल प्रकृति की खोज के लिए प्रेरित करती है। केवल पवित्रता ही जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सुखों और कल्याण का वास्तविक स्रोत है। पारिवारिक जीवन में, पेशेगत या व्यापारिक जीवन में, सामाजिक या राजनीतिक जीवन में किसी भी व्यक्ति को सम्मान तभी प्राप्त होता है, यदि वह पवित्र तथा ईमानदार हो। उस पर विश्वास किया जाता है और उसे परमात्मा के बाद अगला स्थान प्राप्त होता है।

ऋग्वेद मन्त्र 1.12.5

घृताहवन दीदिवः प्रति ष्म रिषतो दह ।

अग्ने त्वं रक्षस्विनः ॥५॥

घृताहवन – शुद्ध धी तथा जड़ी-बूटियों की आहुतियाँ पवित्र अग्नि में प्रदान करना, हृदय तथा मन को त्याग से पवित्र करना

दीदिवः – सभी पवित्र तथा लाभकारी लक्षणों से प्रकाशित

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

प्रति स्म दह — कई रूपों में नाश तथा दूर करना
रिष्टः — समस्त निर्दयी लक्षणों जैसे हिंसा, गुस्सा आदि
दह (प्रति स्म के बाद प्रयोग किया गया)
अन्ने — परमात्मा, अग्नि
त्वम् — आप (इसमें विद्यमान)
रक्षस्थिनः — सभी निर्दयताएँ

व्याख्या :-

यज्ञ अर्थात् त्याग का क्या महत्व है?

जब हम अपने हृदय और मन को त्याग और बलिदान से शुद्ध कर लेते हैं, हमारे अन्दर विद्यमान परमात्मा हमें पूरे शुद्ध और लाभकारी लक्षणों से प्रकाशित कर देता है। परमात्मा हमें सभी निर्दयी लक्षणों जैसे गुस्सा, हिंसा आदि को नष्ट करने के योग्य बना देता है। परमात्मा अपनी दिव्य शक्तियों को केवल शुद्धता और त्याग में ही प्रकट करता है और इस प्रकार एक पवित्र शुद्ध अग्नि की तरह सभी अशुद्धताओं को नष्ट करके गहरी अनुभूति के आनन्द के योग्य बना देता है।

सांकेतिक अग्नि यज्ञ में हम जलती हुई समिधा पर शुद्ध धी तथा लाभकारी जड़ी-बूटियों की आहुति देते हैं तो वायुमण्डल से समस्त अपवित्रताएँ नष्ट हो जाती हैं या दूर हो जाती हैं। उस अग्नि में भी परमात्मा प्रगट होते हैं और वायुमण्डल में भी परिवर्तन दिखाई देता है, इसलिए उसे पवित्र अग्नि कहा जाता है। यज्ञ को सभी लोगों के कल्याण को सुनिश्चित करने वाला त्याग माना जाता है। इसमें देवपूजा (प्रकृति के शुद्ध तत्त्वों की पूजा), संगतिकरण (शुद्धता की कामना करने वालों की संगति) तथा दान (प्रकृति के समस्त जड़ और चेतन के कल्याण के लिए त्याग) जैसे लक्षण प्रकट हो जाते हैं। यज्ञ के यह सभी परिणाम समस्त लाभार्थियों तक बिना किसी भेदभाव के पहुँच जाते हैं।

जीवन में सार्थकता

याज्ञिक जीवन के क्या लक्षण हैं?

वैदिक मार्ग वाले जीवन की प्रधान संस्कृति यज्ञ है। यज्ञ का अर्थ है पूरी विनम्रता और बिना भेदभाव के सबके कल्याण के लिए त्याग करना।

- (1) त्याग से हमारा हृदय तथा मन शुद्ध होता है।
- (2) सभी अपवित्रताएँ, बुराईयाँ तथा निर्दयता की भावनाएँ ऐसे जीवन से दूर रहती हैं।
- (3) यज्ञशील जीवन सदैव शान्त तथा प्रसन्न रहता है।
- (4) परमात्मा शुद्धता में प्रगट होते हैं। अतः एक याज्ञिक जीवन अर्थात् त्यागी व्यक्ति के जीवन में परमात्मा प्रगट होते हैं।

यज्ञ का विपरीतार्थक शब्द है अयाज्ञिक अर्थात् स्वार्थी, लालची और केवल 'मैं और मेरे परिवार' के लिए जीने वाला।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

ऋग्वेद मन्त्र 1.12.6
अग्निनामिः समिधते कविर्गृहपतिर्युवा ।
हव्यवाद् जुह्वास्यः ॥६॥

अग्निना – अग्नि से
अग्निः – अग्नि
समिधते – प्रकाशित होती है
कवि: – कवि, दूरदर्शी
गृहपतिः – घर का संरक्षक
युवा – मिलने और पृथक करने
हव्यवाट् – हवियों का वाहन
जुह्वास्यः – त्याग, ज्ञान और विवेक से प्रशंसित मुख

व्याख्या :-

पवित्र अग्नि किस प्रकार कार्य करती है?
यह मन्त्र घोषित करता है कि अग्नि से ही अग्नि प्रकाशित होती है। यह एक सर्वमान्य सिद्धान्त है।
सूर्य की अग्नि से विद्युत पैदा होती है जो प्रकाश देती है।
शिष्य में ज्ञान की अग्नि गुरु के ज्ञान की अग्नि से ही चिंगारी प्राप्त करती है।
आत्मा को परमात्मा के साथ लगातार एवं लम्बे मेल के बाद प्रकाश का उदय महसूस होता है।
सांकेतिक यज्ञ में भी माचिस की अग्नि से या किसी अन्य बाहरी स्रोत से अग्नि प्रज्ज्वलित करवाई जाती है।

इस प्रकार प्रकाशित अग्नि के निम्न परिणाम होते हैं :-

(1) कवि: अर्थात् कवि, दूरदर्शी जो शरीर या मन के साथ कुछ भी देखने या कहीं भी गमन के योग्य होता है।

(2) गृहपतिः अर्थात् घर का संरक्षक जो घर और समाज के अन्य लोगों का जीवन सुखी और सुविधा सम्पन्न बनाने के योग्य होता है।

(3) युवा अर्थात् मिलने और पृथक करने में सक्षम – (क) आत्मा दिव्यता के साथ मिल जाती है और पदार्थों से पृथक हो जाती है, (ख) एक विद्वान् शिष्य मन की पवित्रताओं और श्रेष्ठ आचरण के साथ मिल जाता है परन्तु स्वयं को अपवित्रताओं से पृथक कर लेता है, (ग) यज्ञ की भौतिक अग्नि पवित्रताओं से मिल जाती है और वायुमण्डल से अपवित्रताओं को दूर कर देती है।

कवि, गृहपति तथा युवा के इन लक्षणों के साथ अग्नि का मुख हवियों को ले जाने वाला वाहन बन जाता है जो इन हवियों को त्याग, ज्ञान और विवेक की प्रशंसा के साथ ले जाता है। अग्नि अर्थात् त्याग के इन लक्षणों को गहराई से समझाने वाला व्यक्ति दूसरों का कल्याण करता है और उन्हें भी त्याग के पथ पर प्रकाशित करते हुए अग्नि पूजन के सिद्धान्त की परम्परा को प्रोत्साहित करता है।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

जीवन में सार्थकता

त्याग किस प्रकार कार्य करता है?

त्याग अग्नि का प्रधान लक्षण है। यह सिद्धान्त त्याग करने वाले व्यक्ति को पूर्ण संतोष देता है और उसे सर्वोच्च दाता के साथ जोड़े रखता है क्योंकि इस सारे कार्य के बीच उसकी यह मूल भावना होती है कि वह सर्वोच्च शक्तिमान परमात्मा की सत्ता के प्रोत्साहन के लिए ही कार्य कर रहा है। त्याग के कार्य हमेशा दूसरों को भी प्रोत्साहित करते हैं। कोई भी समाज अन्य लोगों के लिए त्याग की संस्कृति की व्यापकता से ही शांति से रह सकता है। बिना त्याग के चारों तरफ भ्रष्टाचार और रोग ही विद्यमान होते हैं।

ऋग्वेद मन्त्र 1.12.7
कविमग्निमुप स्तुहि सत्यधर्माणमधरे ।
देवमसीवचातनम् । 7 ।

कविम् – कवि, दूरदर्शी, सर्वविद्यमान तथा अन्यों को प्रभावित करने योग्य (परमात्मा तथा अग्नि के लिए प्रयुक्त)

अग्निम् – परमात्मा, अग्नि

उपस्थिति – वर्तमान तथा निकट अनुभूति प्राप्त

सत्यधर्माणम् – सत्य, सनातन तथा सर्वकालिक (परमात्मा तथा अग्नि के लिए प्रयुक्त)

अध्वरे – पूजा के योग्य (परमात्मा तथा अग्नि के लिए प्रयुक्त)

देवम् – सब सुखों का दाता (परमात्मा तथा अग्नि के लिए प्रयुक्त)

अमीवचातनम् – अज्ञानता, बुराईयों तथा अपवित्रताओं का नाशक (परमात्मा तथा अग्नि के लिए प्रयुक्त)

व्याख्या :-

अग्नि के लक्षणों की अनुभूति किस प्रकार प्राप्त करें?

हम परमात्मा तथा अग्नि की उपस्थिति को अपने निकट ही नहीं अपितु अपने शरीर के भीतर बड़ी सरलता के साथ महसूस कर सकते हैं और अपनी अनुभूति में ला सकते हैं। अग्नि के दो अर्थ हैं – परमात्मा तथा भौतिक अग्नि।

सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा तथा अग्नि के निम्न मुख्य लक्षण हैं :—

- (1) कविम् – कवि, दूरदर्शी, सर्वविद्यमान तथा अन्यों को प्रभावित करने योग्य
 - (2) सत्यधर्माणिम् – सत्य, सनातन तथा सर्वकालिक
 - (3) अधरे – पूजा के योग्य
 - (4) देवम् – सब सुखों का दाता
 - (5) अमीवचातनम् – अज्ञानता, बुराईयों तथा अपवित्रताओं का नाशक

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

जीवन में सार्थकता

आस्तिक या नास्तिक, दोनों को ऊर्जा की आवश्यकता होती है।

सर्वोच्च ऊर्जा सभी स्थानों में, जड़ तथा चेतन में विद्यमान है। एक आस्तिक उस ऊर्जा को अपनी संवेदनशीलता के कारण परमात्मा कहता है। परन्तु एक नास्तिक भी अपने जीवन में तथा सर्वत्र उसी ऊर्जा की उपस्थिति से इन्कार नहीं कर सकता। इसमें कोई अन्तर नहीं है कि कोई व्यक्ति आस्तिक है या नास्तिक, परन्तु कोई भी अपनी जीवन ऊर्जा के मूल और आधारभूत स्रोत की अनुभूति प्राप्त किये बिना सुखी नहीं रह सकता।

ऋग्वेद मन्त्र 1.12.8
यस्त्वामग्ने हविष्पतिर्दूतं देव सपर्यति ।
तस्य स्म प्राविता भव ॥८॥

यः — वह जो

त्वाम् — आपको

अग्ने — परमात्मा, अग्नि

हविष्पति — त्याग करने वाला, त्याग का रक्षक

दूतम् देव — सूचना देने वाला (श्रेष्ठ गुणों की), भगवान का संदेश वाहक

सपर्यति — सेवा, पूजा (परमात्मा और अग्नि की)

तस्य — उसके लिए

स्म — निश्चित रूप से

प्राविता — संरक्षक, अनुभूति में

भव — हो वो

व्याख्या :-

परमात्मा तथा अग्नि की अनुभूति कौन प्राप्त करता है?

परमात्मा तथा अग्नि से कौन संरक्षित होता है?

निम्न लक्षणों से युक्त व्यक्ति परमात्मा की अनुभूति प्राप्त कर सकता है और सदैव परमात्मा से संरक्षित रहता है —

(1) वह जो त्याग करता है और त्याग को संरक्षित करता है।

(2) वह जो परमात्मा के संदेशवाहक की तरह सदगुणों का वाहक होता है।

(3) वह जो परमात्मा की सेवा तथा पूजा करता है।

यज्ञ अर्थात् त्याग के तीन लाभ हैं :-

(क) देवपूजा — शुद्धता की पूजा

(ख) संगतिकरण — शुद्धता को चाहने वालों की संगति

(ग) दान — त्याग।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

जो व्यक्ति यज्ञ अर्थात् त्याग करता है और इन तीनों लाभों का प्रवचन करता है उसकी रक्षा निश्चित रूप से उसके यज्ञ अर्थात् त्याग ही करते हैं।

वैज्ञानिक रूप से जो व्यक्ति अग्नि, विद्युत आदि का प्रयोग दूसरों के कल्याण के लिए करता है वह इनसे उत्पन्न सुखों का वाहक बन जाता है और इन्हीं वैज्ञानिक आविष्कारों और अनुसंधानों के बल पर वह स्वयं भी संरक्षित होता है।

जीवन में सार्थकता

अपनी मूल शक्ति की अनुभूति प्राप्त करने के लिए गहराई में जाओ।

परमात्मा अर्थात् सर्वोच्च ऊर्जा या अग्नि समस्त पदार्थों की मूल ऊर्जा है और प्रकृति में महान् है। यह दोनों हर प्रकार के त्याग में रत हैं, त्याग को प्रोत्साहित करते हैं और संरक्षित भी करते हैं। जो व्यक्ति गहराई से इन शक्तियों की अनुभूति प्राप्त करने का प्रयास करता है वह एक महान् आत्मा, एक अनुभूति प्राप्त आत्मा या एक महान् वैज्ञानिक बन जाता है।

ऋग्वेद मन्त्र 1.12.9

यो अग्निं देववीतये हविष्मां आविवासति ।
तरमै पावक मृळय ॥१॥

यो – जो कोई

अग्निम् – परमात्मा को

देववीतये – परमात्मा की अनुभूति के लिए, दिव्य गुणों के लिए

हविष्मान् – त्याग करता है, आहुति देता है

आविवासति – सदैव पूजन करता है

तरमै – उसके लिए

पावक – पवित्र करने वाला, परमात्मा

मृळय – सब परिस्थितियों में प्रसन्न रहता है, सम्भाव

व्याख्या :-

स्थाई सुख के लिए मानसिक सम्भाव कैसे प्राप्त करें?

जो कोई परमात्मा की अनुभूति के लिए या दिव्य गुणों की प्राप्ति के लिए परमात्मा के समक्ष अपनी समस्त इच्छाओं का त्याग कर देता है और सदैव परमात्मा का पूजन करता है, वह पवित्र करने वाला परमात्मा उसे स्थाई रूप से प्रसन्न रखता है अर्थात् उसे सम्भाव अवस्था में स्थापित कर देता है।

इस प्रकार परमात्मा की अनुभूति के मार्ग पर चलने के लिए दो मुख्य आवश्यकताएँ हैं :-

(1) समस्त इच्छाओं का त्याग,

(2) परमात्मा का पूजन, प्रशंसा, स्तुति तथा उसकी सर्वोच्चता में विश्वास रखना।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

परमात्मा एक पवित्र करने वाली सत्ता है। वह ऐसे भक्तों को सभी अवस्थाओं में सम्भाव से रहने की योग्यता देकर स्थाई सुख प्रदान करता है।

हम जलती हुई समिधा में शुद्ध धी तथा जड़ी-बूटियों की आहुतियाँ देते हैं और इसका पूजन करते हैं। इस प्रकार यज्ञ की यह प्रक्रिया हमें स्वरथ तथा सुखी रखने के लिए वायु मण्डल को शुद्ध करती है।

जीवन में सार्थकता

प्रत्येक सामान्य भौतिकवादी जीवन का भी यह क्रियात्मक दृष्टिकोण है कि प्रत्येक व्यक्ति सुख की कामना करता है। स्थाई सुख प्राप्त करने के लिए मन की सम्भाव अवस्था का होना आवश्यक है।

(क) एक बार आप अपनी इच्छाओं का त्याग करना प्रारम्भ कर दो और भिन्न-भिन्न भौतिक वस्तुओं तथा व्यक्तियों पर अपनी निर्भरता को कम करते जाओ,

(ख) परमात्मा में विश्वास रखो और उसकी प्रशंसा करो,

वह सर्वोच्च शक्तिमान आपको मन की सम्भाव अवस्था प्रदान करेगा। इस प्रकार आप शान्त रहने के योग्य बन जाओगे और संकट की परिस्थितियों में भी प्रसन्न रहोगे।

ऋग्वेद मन्त्र 1.12.10

स नः पावक दीदिवोऽग्ने देवाँ इहा वह ।

उप यज्ञं हविश्च नः ॥१०॥

सः — वह, परमात्मा

नः — हमारे लिए

पावक — पवित्रकर्ता

दीदिवः — स्वप्रकाशित

अग्ने — परमात्मा, अग्नि

देवान् — दिव्यताएँ

इहः — यहाँ (हमारे बीच)

आवह — आपके द्वारा प्राप्त होने योग्य

उप — निकट

यज्ञम् — त्याग

हविश्च — तथा आहुतियाँ

नः — हमारी

व्याख्या :-

परमात्मा की अनुभूति के लिए सबसे महत्त्वपूर्ण शर्त क्या है?

परमात्मा स्वप्रकाशक है इसलिए हमारे लिए पवित्रकर्ता है। पवित्र होने के बाद हमारे दिव्य गुणों को परमात्मा प्राप्त करते हैं। इस प्रकार हम परमात्मा के साथ एक हो जाते हैं, स्व-अनुभूति की एक अवस्था

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

इसलिए हमारी प्रार्थना है कि त्याग और आहुतियों की परम्परा सदैव हमारे जीवन में जुड़ी रहे। एक बार यदि हम त्याग की प्रकृति से दूर हो गये तो भगवान् की अनुभूति का मार्ग बाधित हो जायेगा।

जीवन में सार्थकता

अपराधमुक्त तथा रोगमुक्त समाज के लिए सबसे महत्वपूर्ण शर्त क्या है?

त्याग की प्रवृत्ति केवल परमात्मा की अनुभूति के लिए ही सबसे महत्वपूर्ण शर्त नहीं है, अपितु एक सुखी और सन्तुष्ट जीवन के लिए भी यह एक आवश्यक तत्त्व है। इसी से सामाजिक मर्यादायुक्त समाज और एक महान् राष्ट्र का निर्माण होता है।

दूसरी तरफ अपराधों और रोगों का मुख्य कारण स्व-केन्द्रित जीवन के पीछे भागना है जिसमें केवल 'मैं और मेरे परिवार' का सम्बन्ध ही मुख्य रहता है।

ऋग्वेद मन्त्र 1.12.11

स नः स्तवान आ भर गायत्रेण नवीयसा ।

रयिं वीरवतीमिषम् ॥11॥

सः — वह, परमात्मा

नः — हमारे लिए, हमारा

स्तवान — प्रशंसनीय

आभर — धारण करता है, रक्षा करता है

गायत्रेण — गाया जाता है

नवीयसा — नये (वैदिक स्तुतियों / वाणियों)

रयिम् — ज्ञान, सम्पत्ति

वीरवतीम् — वीरता, विद्वता, स्वास्थ्य

इषम् — हम कामना करते हैं

व्याख्या :-

हम परमात्मा की प्रशंसा / स्तुति क्यों करते हैं?

परमात्मा की प्रशंसा हमारे द्वारा होती है और वह हमें धारण / संरक्षित करता है। हम उसकी प्रशंसा नई वैदिक वाणियों के साथ करते हैं जिससे हम उसके संरक्षण को लगातार प्राप्त करते रहें। हम उससे ज्ञान, सम्पदा तथा वीरता आदि की प्रार्थना करते हैं।

जीवन में सार्थकता

अन्य लोगों की प्रशंसा करने के क्या लाभ हैं?

वास्तविकता में यदि आप अपने आस-पास किसी की भी प्रशंसा या स्तुति करें तो आपको उसका संरक्षण, संगति तथा अन्य लाभ निश्चित रूप से प्राप्त होने लगते हैं इसलिए दूसरों की प्रशंसा करने में कभी भी संकोच

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

नहीं करना चाहिए। बल्कि जीवन में सदैव अन्यों की प्रशंसा करने की परम्परा का अनुसरण करते रहना चाहिए। सामान्य परिस्थितियों में किसी की निन्दा नहीं करनी चाहिए। किसी का सुधार भी करना हो तो पहले उसकी प्रशंसा करें और उसके बाद उसकी प्रशंसा में वृद्धि के उद्देश्य से उसे कुछ सुधारों का सुझाव दो।

ऋग्वेद मन्त्र 1.12.12
अग्ने शुद्धक्रेण शोचिषा विश्वाभिर्देवहूतिभिः ।
इमं स्तोमं जुषस्व नः ॥१२॥

अग्ने – प्रकाशमान परमात्मा

शुद्धक्रेण – अनन्त बल के साथ

शोचिषा – पवित्र करने की शक्ति

विश्वाभिः – सबके लिए

देवहूतिभिः – दिव्य तथा विद्वतापूर्ण वाणियों के साथ

इमम् – ये

स्तोमम् – स्तुतियाँ

जुषस्व – प्रेम से स्वीकार करें

नः – हमारी

व्याख्या :-

हम परमात्मा की प्रशंसा क्यों करें?

हम परमात्मा की प्रशंसा कैसे करें?

परमात्मा में अनन्त बल है तथा पवित्र करने की शक्ति है। वह दिव्य और विद्वतापूर्ण वाणियाँ अर्थात् वेद हम सबको देता है। इसलिए उससे प्रार्थना करते हैं कि हमारी स्तुतियों को प्रेम से स्वीकार करें।

हमें पूरे बल, शुद्धि तथा दिव्य वाणियों के साथ परमात्मा की प्रशंसा और स्तुति करनी चाहिए जिससे हमें यह शक्तियाँ आगे भी प्राप्त होती रहें, जब तक हम परमात्मा के साथ एकता का अनुभव न कर लें।

परमात्मा सर्वोच्च शक्ति है। वह हमें असंख्य पदार्थों, गुणों और श्रेष्ठताओं के अतिरिक्त जीवन का मूल तत्त्व हमारे प्राण अर्थात् श्वास देता है। इसलिए हमें सदैव उसके इन उपहारों के साथ ही उसकी प्रशंसा और स्तुति करनी चाहिए।

जीवन में सार्थकता

दूसरों की प्रशंसा करना जीवन का सबसे अधिक लाभकारी व्यवहार है।

जब आपको किसी से भी कुछ लाभ होता है तो उसकी प्रतिक्रिया में आप उसकी प्रशंसा करते हैं। इसी प्रकार इसके विपरीत यदि आप किसी की प्रशंसा करें तो आपको निश्चित रूप से कुछ लाभ ही होगा, प्रशंसा करने से हानि तो कदापि नहीं होगी। दूसरों की प्रशंसा तथा स्तुति करना जीवन का सबसे लाभकारी व्यवहार है। इसे एक स्थाई व्यवहार बना लेना चाहिए।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

ऋग्वेद मण्डल-1, सूक्त-13

ऋग्वेद मन्त्र 1.13.1
सुसमिद्धो न आ वह देवाँ अग्ने हविष्मते ।
होतः पावक यक्षि च ॥1॥

सुसमिद्धः – अच्छे प्रकार से प्रकाशवान
नः – हमारे लिए
आ वह – प्राप्त करवाएं, अनुभूति करवाएं
देवान् – दिव्य (पदार्थ एवं गुण)
अग्ने – परमात्मा, अग्नि
हविष्मते – हमारी आहूतियों के लिये (दानपूर्वक तथा दूसरों के कल्याण के लिये)
होतः – प्राप्त कराने वाला
पावक – शुद्ध करने वाला
यक्षि च – और हमारे साथ संगति करें (हमारी अनुभूति के लिये)

व्याख्या :-

परमात्मा के साथ संगति की इच्छा क्यों करें?
पूर्णप्रकाशवान होने के कारण ही सर्वविद्यमान परमात्मा हमारी अनुभूति के योग्य है। वह सर्वोच्च उर्जा, अग्नि, हमें समस्त दिव्य पदार्थ तथा गुण देता हैं जिन्हें हम दान पूर्वक दूसरों के कल्याण के लिये आहूत कर सकें। वह दाता होने के साथ-साथ शुद्धिकर्ता भी है। अतः अपनी अनुभूति के लिये हम उस से संगति की प्रार्थना करते हैं।

वैज्ञानिक रूप से सूर्य तथा अग्नि की उर्जा हमें समस्त पदार्थ और यहाँ तक की हमारी जीवनी शक्ति प्रदान करती है। यह उर्जा शुद्धिकर्ता भी है। हमें प्रतिदिन वातावरण तथा समस्त जीवों की शुद्धि करने वाले

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

यज्ञ के माध्यम से इस शक्तिशाली तत्व के साथ संगति सुनिश्चित करनी चाहिए। स्वस्थ जीवन के लिये सूर्य के प्रकाश का सेवन करके भी हम इस उर्जा के साथ संगति करते हैं।

जीवन में सार्थकता

अग्नि यज्ञ सिद्धान्त – अग्नि में पहुंचने के बाद आहूति शुद्ध हो जाती है, कई गुना बढ़ जाती है और वापिस आती है।

समाज में जो कोई भी आपको कुछ भी उपलब्ध करवाता है, आप हमेंशा उस के लिये कुछ त्याग करने के लिये तत्पर रहते हो। यह एक प्रकार से अपनी कमाई का पुनः निवेश होता है। यह पुनः निवेश प्रक्रिया देने वाले व्यक्ति के साथ एकता सुनिश्चित कराती है। वह व्यक्ति आपका स्थाई रूप से देने वाला, रक्षक तथा शुद्धिकर्ता सिद्ध होगा।

अग्नि यज्ञ प्रक्रिया भी यही सिद्ध करती है कि आप जो कुछ भी अग्नि को आहूत करते हो वह शुद्ध हो जाता है, कई गुना बढ़ जाता है और वापिस आप तक पहुँचता है।

ऋग्वेद मन्त्र 1.13.2
मधुमन्त्रं तनूनपाद् यज्ञं देवेषु नः कवे।
अद्या कृणुहि वीतये ॥२॥

मधुमन्तम् – मधुर

तनूनपाद् – प्रत्येक छोटे से छोटे कण की रक्षा करने वाला

यज्ञम् – दाता के साथ एकता सिद्ध करने के लिये किये गये बलिदान

देवेषु – देवों के लिये

नः – हमारे लिये

कवे – दृष्टा

अद्य – अभी तुरन्त

कृणुहि – निश्चित करो

वीतये – उत्थान के लिये दिव्य संगति

व्याख्या :-

यज्ञ के क्या लक्षण हैं?

यज्ञ का अर्थ दाता के साथ एकता स्थापित करने के लिये किया गया बलिदान होता है। इसके कई लक्षण हैं :–

(क) मधुमन्तम् – यह सुखदायी तथा मधुर होता है। यह सबके द्वारा पसंद किया जाता है और एकता सुनिश्चित करता है।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

- (ख) तनूनपात् – यह प्रत्येक छोटे से छोटे कण की रक्षा तथा शुद्धि करने वाला होता है।
(ग) देवेषु – यह हमारी संगति देवों के साथ करवाता है।
(घ) कवे – यह हमें ऋषियों के समान दृष्टा बनाता है।
- केवल एक याज्ञिक ही यज्ञ के महत्व को समझ सकता है जो त्याग भाव से दूसरों के कल्याण के लिये बलिदान करता है। इसलिये वह भगवान से प्रार्थना करता है कि उसे सर्वोच्च दाता की अनुभूति हो।

जीवन में सार्थकता

जिस समाज में बलिदान नहीं होते, ऐसे समाज के क्या लक्षण हैं?

त्याग और बलिदान के सिद्धान्त के बिना हमारे परिवार, समाज तथा सम्पूर्ण राष्ट्र नक्क के समान होगा जिसमें को दिव्यता नहीं, एक दूसरे के लिये कल्याण और संरक्षण नहीं होता। बलिदानहीन समाज में लुटेरे और अपराधी व्याप्त होते हैं। इस लिये नागरिकों में याज्ञिक जीवन वाली संस्कृति का होना अत्यन्त आवश्यक है जिससे लोग दूसरों के कल्याण के लिये बलिदान करने को तत्पर रहें। ऐसे सास्कृतिक वातावरण में ही अध्यात्मिक तरंगों का विकास होता है और सब जीवों में स्थायी शान्ति स्थापित होती है।

ऋग्वेद मन्त्र 1.13.3
नराशंसमिह प्रियमस्मिन् यज्ञ उप हवये ।
मधुजिह्वं हविष्कृतम् ॥३॥

नराशंसम् – लोगों द्वारा प्रशंसित

इह – इस संसार में

प्रियम् – प्रेम प्रीति करने वाले

अस्मिन् – इस

यज्ञे – दाता के साथ एकता स्थापित करने के लिए किया गया त्याग

उप ह्ये – हमारे निकट, इच्छित, अनुभूति प्राप्त करने के लिए

मधुजिह्वं – मधुर वाणी वाला

हविष्कृतम् – त्याग की आहुतियों से प्रदीप्त (आहुतियाँ मधुर वाणी का परिणाम होती हैं)

व्याख्या :-

त्याग किस प्रकार परमात्मा की अनुभूति में सहायक हैं?

निःस्वार्थ भाव से तथा दूसरों के कल्याण के लिए किये गये मेरे उस त्याग के माध्यम से मैं सर्वोच्च शक्तिमान परमात्मा के साथ निकटता तथा उसकी अनुभूति प्राप्त करना चाहता हूँ, जो त्याग निम्न लक्षणों से सुसज्जित हो :–

(क) नराशंसम् – लोगों द्वारा प्रशंसित

(ख) प्रियम् – प्रेम प्रीति करने वाले

(ग) मधुजिह्वं – मधुर वाणी वाला

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

त्याग सदैव सबके लिए सुखदायी होते हैं। अतः त्याग और आहुतियाँ मधुर वाणी (परमात्मा) की अनुभूति में सहायक होते हैं। इसी प्रकार इसके विपरीत मधुर वाणी से किया गया प्रेम हमें त्याग और आहुतियों के लिए प्रेरित करता है। दोनों प्रकार से परमात्मा समस्त त्याग कार्यों में प्रमुख महत्व रखता है। त्याग से परमात्मा की अनुभूति की जा सकती है।

त्याग ——— हमारे शरीर में आकाश तत्व को शुद्ध करता है ——— शुद्ध आकाश तत्व में ही परमात्मा की अनुभूति प्राप्त की जा सकती है।

शुद्ध आकाश तत्व का अर्थ है कि मन की स्थिति का अहंकार रहित, विचार रहित तथा विवाद रहित होना। ऐसी अवस्था ही मधुर वाणी (परमात्मा) की अनुभूति का अच्छा आधार बन जाती है। वास्तव में ऐसा शरीर मधुजिह्वा का वास होता है, जिसकी सब लोग परमात्मा के समान प्रशंसा करते हैं और जो सबके लिए प्रेम करने वाला होता है।

शारीरिक रूप से अग्नि यज्ञ की प्रक्रिया जैसे कार्य भी लोगों के द्वारा प्रशंसित होते हैं। प्रत्येक व्यक्ति यज्ञ क्रियाओं से प्रेम करता है क्योंकि यज्ञ समूचे वायुमण्डल को मधुर तथा पवित्र बना देता है।

जीवन में सार्थकता

एक शान्त पारिवारिक जीवन, एक श्रेष्ठ समाज तथा महान राष्ट्र के लिए त्याग अत्यन्त महत्वपूर्ण कारक है। त्याग सबके लिए लाभकारी होते हैं, अतः सबके द्वारा प्रेम के योग्य होते हैं।

ऋग्वेद मन्त्र 1.13.4

अग्ने सुखतमे रथे देवाँ ईळित आ वह।

असि होता मनुर्हितः ॥४॥

अग्ने — परमात्मा, अग्नि

सुखतमे — समस्त सुखों को देने वाला

रथे — शरीर रथ, वाहन

देवान् — दिव्यतायें

ईळित — प्रशंसायें, स्तुतियाँ

आ वह — प्राप्त करना, अनुभूति

असि — वह है

होता — दाता

मनुर्हितः — मन में ज्ञान देकर लाभ देता है।

व्याख्या :-

हमारी जीवन यात्रा के तीन दृष्टिकोण कौन से हैं?

परमात्मा ने हमें यह शरीर दिया है, जिसके माध्यम से हम अपने जीवन में सभी सुख सुविधाओं का प्रबन्ध कर सकते हैं। दूसरे शब्दों में, परमात्मा ने हमें इस शरीर के माध्यम से सभी सुख सुविधायें दी हैं। इसलिए उसकी प्रशंसा तथा अनुभूति प्राप्त करने में ही इस जीवन का प्रयोग करना चाहिए।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

परमात्मा हमारे मस्तिष्क में ज्ञान प्रदान करके हमें सभी सुख सुविधाओं का देने वाला है।

यह मनुष्य के विवेक पर छोड़ दिया गया है कि वह इस शरीर और मस्तिष्क का प्रयोग स्वयं को लाभान्वित करने के लिए तथा अपने मूल दिव्य अस्तित्व की प्रशंसा तथा अनुभूति प्राप्त करने के लिए करे या ऐसा न करते हुए सदैव दुखों और कष्टों को भोगता रहे।

जीवन में सार्थकता

शरीर, मन और आत्मा का उचित प्रयोग करें।

आत्मा की निर्बाध यात्रा के लिए तथा जीवन के मूल उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए हमारे सामने तीन दृष्टिकोण वाले पथ हैं :-

- (क) शरीर का प्रयोग सुविधाजनक स्वरूप जीवन के लिए करना चाहिए।
- (ख) मस्तिष्क का प्रयोग सत्य तथा लाभकारी ज्ञान की प्राप्ति के लिए करना चाहिए।
- (ग) अपने जीवन की मूल दिव्यता की प्रशंसा तथा उसकी अनुभूति प्राप्त करनी चाहिए।

ऋग्वेद मन्त्र 1.13.5
स्तृणीत बर्हिरानुषग् घृतपृष्ठं मनीषिणः।
यत्रमृतस्य चक्षणम् ॥५॥

स्तृणीत – आच्छादित है

बर्हि – अंतरिक्ष, खाली स्थान

आनुषक – सर्वत्र चारों तरफ से

घृतपृष्ठम् – पवित्रता की पृष्ठभूमि के साथ

मनीषिणः – वे बुद्धिमान जो अपने मस्तिष्क पर शासन करते हैं।

यत्र – जहाँ

अमृतस्य – मृत्यु को प्राप्त न होने वाली शक्ति

चक्षणम् – दर्शन होता है

व्याख्या :-

परमात्मा की अनुभूति प्राप्त करने की क्या मूल शर्त है?

आध्यात्मिक रूप से चित्त की वृत्तियों पर विजय प्राप्त करने के बाद जब हमारे शरीर में आकाश तत्व या खाली स्थान अथवा हृदय क्षेत्र सदैव पूर्ण पवित्रता तथा अहंकार रहित पृष्ठभूमि से आच्छादित रहता है। ऐसे स्थान पर मृत्यु को कभी प्राप्त न होने वाली शक्ति अर्थात् परमात्मा की उपस्थिति की अनुभूति होती है।

यज्ञ का विज्ञान तथा आध्यात्मिक पथ

वैज्ञानिक रूप से यज्ञ अर्थात् अग्नि अनुष्ठान का धुआं ऊपर आकाश में जाता है और खाली स्थान को चारों तरफ से आच्छादित कर देता है, ऐसा वायुमण्डल पूरी तरह से पवित्र होता है और बादलों को वर्षा के रूप में परिवर्तित कर देता है। इस प्रकार, पवित्रता तथा वर्षा की बूँदें प्रकृति के समस्त प्राणियों तथा जड़

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

तत्वों के लिए लाभदायक होती हैं। जो व्यक्ति यज्ञ करता है, वह अनेकों लोगों के कल्याण करने का लाभ प्राप्त करता है। ऐसा याज्ञिक व्यक्ति अपने मस्तिष्क पर नियन्त्रण करने के लिए भी सक्षम हो जाता है। अन्ततः, वह कभी न मरने वाली शक्ति अर्थात् परमात्मा तथा अपने जीवन के मूल उद्देश्य की अनुभूति प्राप्त करने में सफल हो जाता है।

जीवन में सार्थकता

परिवार तथा समाज का अभिन्न अंग कैसे बनें?

दिव्य मुद्रा को कैसे धारण करें?

परमात्मा की अनुभूति तथा यज्ञ के सिद्धान्त को पारिवारिक तथा सामाजिक जीवन में लागू किया जा सकता है। अपने साधियों के लिए हर प्रकार के त्याग करके अपने ऊपर स्व नियन्त्रण तथा जीवन में पवित्रता की आदत स्थापित करनी चाहिए। ऐसा व्यक्ति अपने परिवार और समाज का अभिन्न अंग बन जाता है।

आत्म नियन्त्रण तथा त्याग दिव्य मुद्रा के दो पक्ष हैं। यह दिव्य मुद्रा किसी भी समाज में महान कीमत वाली समझी जाती है।

ऋग्वेद मन्त्र 1.13.6
वि श्रयन्तामृतावृधो द्वारो देवीरसश्चतः ।
अद्या नूनं च यष्टवे ॥६॥

वि श्रयन्तम् – परमात्मा का आश्रय

ऋतावृधः – सभी ऋतुओं में, सत्य की वृद्धि करने वाला

द्वारः – द्वार (हमारी इन्द्रियाँ)

देवीः – प्रकाशमय

असश्चतः – अलग–अलग, विषयों से पृथक

अद्य – आज से ही, अभी

नूनम् च – और निश्चय से

यष्टवे – यज्ञ, त्याग के लिए तत्पर

व्याख्या :-

इन्द्रियों के उचित उपयोग तथा ज्ञान से प्रकाशित होने में क्या त्याग हमारी सहायता करते हैं?

आध्यात्मिक रूप से, यदि द्वारः का अर्थ अपने शरीर में ज्ञान के द्वार के रूप में समझें अर्थात् हमारी इन्द्रियों के रूप में और उन्हें नियन्त्रण में रखें तथा विषयों से पृथक रखें तो वे हमारे लिए आश्रय देने वाली तथा सत्य की वृद्धि करने वाली सिद्ध होती हैं और अन्ततः हमें ज्ञान से प्रकाशित करती हैं। इसके लिए हमें अपनत्व के भाव से पृथक रह कर और पूरे निःस्वार्थ भाव के साथ त्याग के लिए सदैव संकल्प करना चाहिए। ऐसा करते हुए हमें अपने अन्दर कर्ता की भावना को भी भूल जाना चाहिए अर्थात् अपने अस्तित्व रूपी अहंकार को भी भूल जाना चाहिए।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

आश्रय बनाओ परन्तु त्याग को मत भूलो।

तकनीकी रूप से यह मन्त्र मनुष्यों को निर्देश देता है कि आश्रय के लिए अपने घर तो अवश्य बनाओ, जिससे सभी ऋतुओं में तुम्हें आश्रय मिले, तुम सभी कार्य कर पाओ और तुम्हारा संरक्षण हो। परन्तु हर प्रकार से अपने परिवार के पूर्ण संरक्षण के बाबजूद हमें कभी भी त्याग का अवसर आने पर आलस्य या कोई दूसरा विचार भी पैदा नहीं होने देना चाहिए, जब हमारी सम्पत्ति का कुछ भाग किसी अन्य के कल्याण या संरक्षण के लिए प्रयोग हो सके।

जीवन में सार्थकता

आत्म नियन्त्रण ———त्याग————आत्म नियन्त्रण

आत्म नियन्त्रण से ही त्याग की प्रवृत्ति पैदा होती है। त्याग से ही आत्म नियन्त्रण पैदा होता है। दोनों प्रकार से आत्म नियन्त्रण का परिणाम ज्ञान के प्रकाश के रूप में ही प्राप्त होता है।

ऋग्वेद मन्त्र 1.13.7

नक्तोषासा सुपेशसाऽस्मिन् यज्ञ उप हवये।

इदं नो बर्हिरासदे ॥७॥

नक्तोषासा – दिन और रात अर्थात् हर समय

सुपेशसा – अच्छे रूप और प्रभाव वाला

अस्मिन् – इसके लिए

यज्ञ – दाता के साथ एकता के लिए त्याग

उप हव्ये – उसकी संगति और निकटता के लिए प्रार्थना

इदम् – इस

नः – हमारे

बर्हि – हृदयाकाश

आसदे – में विराजमान होईये, अनुभूति प्रदान कीजिये

व्याख्या :-

आध्यात्मिक मार्ग पर त्याग का क्या लाभ है?

मेरे त्याग कार्यों का उद्देश्य सर्वोच्च दाता अर्थात् परमात्मा के साथ एकता स्थापित करना है। मेरे त्याग कार्यों के बल पर ही मैं उसकी संगति की प्रार्थना करता हूँ जो सुपेशसा अर्थात् अच्छे रूप और प्रभाव वाला है। मैं दिन और रात हर समय उसी को पुकारता हूँ। वह मेरे हृदय आकाश अर्थात् बर्हि या ब्रह्मरंध्र में मुझे अनुभूति प्रदान करें।

यह मन्त्र त्याग के उद्देश्य को स्पष्ट करता है। केवल एक ईश्वर अनुभूति की इच्छा करते हुए समस्त इच्छाओं का त्याग करना। मेरे मस्तिष्क में ईश्वर की छवि दुनिया के समस्त पदार्थों की छवियों से सर्वोत्तम है। त्याग के बाद ही ईश्वर की अनुभूति होती है। साधक स्वयं ही सुपेशसा अर्थात् सर्वोत्तम छवि का लाभ

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

प्राप्त करता है। वह अपनी व्यक्तिगत आन्तरिक शक्तियों के रूप में तथा उस शक्ति के रूप में अपनी छवि का निर्माण कर लेता है।

सर्वविद्यमान

जीवन में सार्थकता

सामान्य जीवन में त्याग किस प्रकार हमारी सहायता करते हैं?

इसमें कोई सन्देह नहीं कि परमात्मा की अनुभूति के लिए पूर्ण त्याग की आवश्यकता होती है। परन्तु दैनिक ग्रहस्थ जीवन, सामाजिक जीवन, पैशेगत या राजनीतिक जीवन में भी त्याग निम्न प्रकार से सहायक होते हैं :—

- क) जिनके लिए आप त्याग करते हो, उनके साथ आपकी निकटता हो जाती है।
- ख) एक दाता के रूप में आपकी छवि उत्तम बन जाती है।
- ग) आपको उच्च स्तर तक प्रगति प्राप्त होती है।

ऋग्वेद मन्त्र 1.13.8
ता सुजिह्वा उप ह्वये होतारा दैव्या कवी।
यज्ञं नो यक्षतामिमम् ॥८॥

ता — वे (त्याग अर्थात् यज्ञ)

सुजिह्वा — मधुर वाणी

उप ह्वये — मैं निकटता के लिए पुकारता हूँ

होतारा — दाता

दैव्या — दिव्य

कवी — दर्शन, अनुभूति

यज्ञम् — एकता के लिए त्याग

नः — हमारे

यक्षतम् — अनुभूति में सहायक

इमम् — यह

व्याख्या :-

ईश्वर अनुभूति में त्याग किस प्रकार सहायक होते हैं?

वे त्याग जो सर्वोच्च दाता ईश्वर की अनुभूति के निश्चित उद्देश्य के साथ किये जाते हैं वे साधक को अहंकारहित, इच्छारहित तथा मधुर वाणी वाला बना देते हैं। ऐसे त्याग स्वयं में ही एक दिव्य दर्शन और अनुभूति का लाभ प्रदान करते हैं। इस प्रकार त्याग ईश्वर अनुभूति का सीधा कारण बन जाते हैं। अतः परमात्मा की अनुभूति का साधारण मार्ग निम्न प्रकार से निर्धारित होता है :—

निस्वार्थ भाव से त्याग ——— इच्छारहित तथा अहंकारहित ——— मधुर वाणी ——— परमात्मा की अनुभूति

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

जीवन में सार्थकता

त्याग सदैव उच्च दर्जा प्रदान करते हैं।

जब एक व्यक्ति निःस्वार्थ भाव से और अहंकाररहित होकर त्याग करता है तो वह महसूस करता है कि वह कुछ भी महान् कार्य नहीं कर रहा है। वह केवल अपने कर्तव्यों के निर्वहन के स्तर पर ही रहता है। सच्चे त्याग का अर्थ है अपने प्रति अहंकाररहित तथा इच्छारहित रहना अर्थात् एक स्वैच्छिक सेवा की भावना। ऐसे व्यक्ति स्वयं ही मधुर वाणी वाले बन जाते हैं और उन्हें सब तरफ से गहरा सम्मान प्राप्त होता है। यह सम्मान ही अपने आप उनके स्तर में वृद्धि कर देता है।

ऋग्वेद मन्त्र 1.13.9

इळा सरस्वती मही तिस्त्रे देवीर्मयोभुवः।

बर्हिः सीदन्त्वस्त्रिधः ॥१॥

इळा – प्रशंसा और स्तुति के लिए मधुर वाणी

सरस्वती – सबके लिए समान रूप से लाभकारी

मही – परमात्मा की पूजा के लिए

तिस्त्रः – तीन

देवीः – दिव्य भावनायें

मयोभुवः – हमारे कल्याण, प्रकाश तथा अनुभूति के लिए हों।

बर्हिः – हमारे आकाश में (मन तथा हृदय)

सीदन्त्वु – स्थापित हों

अस्त्रिधः – हिंसा रहित, क्षय रहित तथा शोषण रहित

व्याख्या :-

दिव्य वाणी के क्या लक्षण हैं?

दिव्य वाणी के तीन लक्षण हैं :-

(क) इळा – प्रशंसा और स्तुति के लिए मधुर वाणी।

(ख) सरस्वती – सबके लिए समान रूप से लाभकारी।

(ग) मही – परमात्मा की पूजा के लिए।

ऐसी दिव्य वाणी वक्ता के लिए हिंसा रहित, क्षय रहित तथा शोषण रहित ही सिद्ध होती है। अतः प्रत्येक व्यक्ति को यह प्रार्थना करनी चाहिए कि उसकी वाणी इन तीन लक्षणों से सुसज्जित दिव्य वाणी बने और उसके मन तथा हृदय के आकाश स्थान में स्थापित हों।

जीवन में सार्थकता

प्रत्येक व्यक्ति को अपनी वाणी में निम्न तीन लक्षणों का विकास करना चाहिए :—

(क) सदा दूसरों की प्रशंसा करो।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

- (ख) सदा दूसरों के हितकारी विषयों पर चर्चा करो और उन्हें ज्ञान दो।
(ग) सदा सर्वोच्च पिता परमात्मा की भक्ति ही अपनी चर्चाओं में करो।

यदि हमारी वाणियाँ इन तीन लक्षणों से भरपूर होती हैं तो इसके परिणाम निम्न होंगे :—

- (क) वापिस हमें भी प्रशंसायें प्राप्त होंगी।
(ख) हमारा ज्ञान और अनुभव बढ़ेगा।
(ग) ईश्वर अनुभूति के मार्ग पर हमें प्रगति प्राप्त होगी।

ऋग्वेद मन्त्र 1.13.10
इह त्वष्टारमग्नियं विश्वरूपमुप हवये ।
अस्माकमस्तु केवलः ॥१०॥

इह — इसमें (जीवन में)

त्वष्टारम — सर्वोच्च शक्तिमान तथा सर्वविद्यमान, सबको सत्य ज्ञान देने वाला, सभी बुराईयों और दुःखों का नाश करने वाला

अग्नियम् — प्रथम या सब जगह अग्रणी

विश्वरूपम् — सर्वविद्यमान, समूचे ब्रह्माण्ड को रूप देने वाले

उप हवये — मैं अनुभूति के लिए उसे अपने पास बुलाता हूँ।

अस्माकम् — हमारे लिए

अस्तु — है

केवलः — केवल आनन्ददायक, पूजा के योग्य

व्याख्या :-

ईश्वर अनुभूति की प्रार्थना क्यों करें?

मैं सर्वशक्तिमान सर्वोच्च परमात्मा को अनुभूति के लिए इसी जीवन में यहाँ अपने निकट बुलाता हूँ क्योंकि

(क) वह त्वष्टारम अर्थात् सर्वोच्च शक्तिमान तथा सर्वविद्यमान है। वह हम सबके लिए अपने सत्य ज्ञान का खजाना खोल देता है और इस प्रकार बुराईयों और दुःखों का नाश करता है।

(ख) वह अग्नियम् अर्थात् सब जगह प्रथम तथा अग्रणी है। इस प्रकार वह हमारा सर्वोच्च नेता है और हमें भी महान नेता बना सकता है।

(ग) वह विश्व रूपम् अर्थात् प्रत्येक कण में, प्रत्येक रूप में सर्वविद्यमान है परन्तु स्वयं रूप रहित है। उसने समूचे ब्रह्माण्ड को रूप दिया है। इस शक्ति के साथ वह हमें भी अनेकों वस्तुओं का निर्माण करने के योग्य बना सकता है।

(घ) अस्माकम् अस्तु केवलम् अर्थात् केवल वही हमारे द्वारा पूजा और अनुभूति के योग्य है। इस प्रकार वह अपने प्रेम करने वालों को भी प्रशंसा और आनन्द से युक्त कर देता है।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

जीवन में सार्थकता

जैसा वह है, उसके समान बनो।

सर्वोच्च शक्ति के साथ सम्पर्क बनाकर हमारे जीवन में भी कई दिव्य लक्षण स्थापित हो सकते हैं।

(क) परमात्मा समस्त सत्य ज्ञान प्रदान करता है। यदि हम भी उसके इस सत्य ज्ञान प्रदान करने के लक्षण को धारण करें तो हम किसी को धोखा नहीं देंगे।

(ख) हमें समाज से बुराईयाँ तथा कठिनाईयाँ समाप्त करने के लिए अथक प्रयास करने चाहिए।

(ग) हमें अपने त्याग की शक्ति के आधार पर अपने परिवार तथा समाज में अन्य लोगों का नेतृत्व करना चाहिए।

(घ) हमें सदैव निर्माण और सकारात्मकता पर ध्यान लगाना चाहिए, नाश पर कदापि नहीं।

(ङ) हमें लोगों पर प्रेम की वर्षा करते हुए परमात्मा से प्रेम करना चाहिए। इससे परमात्मा की तरह हमें भी प्रशंसनीय जीवन प्राप्त होगा।

ऋग्वेद मन्त्र 1.13.11

अव सृजा वनस्पते देव देवेभ्यो हविः।

प्र दातुरस्तु चेतनम् ॥11॥

अव सृजा – निर्माता

वनस्पते – वनस्पतियों, ज्ञान का

देव – सर्वोच्च दिव्य

देवेभ्यो – दिव्य लक्षणों

हविः – त्याग के लिए आहुतियाँ

प्र दातु – देने वाले के लिए

अस्तु – हैं

चेतनम् – चेतना, अनुभूति

व्याख्या :-

चेतना तथा अनुभूति किस प्रकार प्राप्त की जा सकती है?

सर्वोच्च शक्तिमान परमात्मा समस्त वनस्पतियों और ज्ञान का उत्पत्तिकर्ता है। दिव्य लक्षणों से युक्त इस सृष्टि का प्रयोग केवल त्याग की आहुतियों के रूप में ही किया जाना चाहिए। ऐसा प्रयोग करने वाले अर्थात् दिव्य त्याग करने वाले व्यक्ति के लिए परमात्मा सर्वोच्च चेतना तथा अपनी अनुभूति प्रदान करता है।

जीवन में सार्थकता

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

प्र दातु अस्तु चेतनम् – चेतना तथा अनुभूति केवल देने वाले अर्थात् याज्ञिक के लिए ही आरक्षित हैं। यदि हम अपनी चेतना का विकास करना चाहते हैं और परमात्मा की अनुभूति के पथ पर सशक्त होना चाहते हैं तो हमें परमात्मा द्वारा प्रदत्त समस्त पदार्थों और ज्ञान का लाभ सबको देना चाहिए।

ऋग्वेद मन्त्र 1.13.12
स्वाहा यज्ञं कृणोतनेन्द्राय यज्वनो गृहे।
तत्र देवाँ उप हवये ॥१२॥

स्वाहा – स्वयं को आहुति की तरह प्रस्तुत करना
यज्ञम् – त्याग के लिए
कृणोतन – ऐसे कर्ता बनो
इन्द्राय – ईश्वर अनुभूति के लिए
यज्वनः – याज्ञिक के
गृहे – घर में, शरीर में
तत्र – वहाँ
देवान् – दिव्य लक्षणों और दिव्य लोगों को
उप हवये – मैं पुकारता हूँ, प्रार्थना करता हूँ।

व्याख्या :-

परमात्मा की अनुभूति के लिए पूर्ण त्याग।
सुखी, शान्त तथा सम्मानित जीवन के लिए अग्नि यज्ञ।

परमात्मा की अनुभूति के लिए तो अपने आपका त्याग करने के लिए तैयार रहना चाहिए अर्थात् सम्पूर्ण इच्छाओं और यहाँ तक कि अपने अस्तित्व के अहंकार का त्याग। जो इच्छाओं और शरीर के अहंकार से भी ऊपर उठ चुका हो, ऐसा याज्ञिक व्यक्ति अपने जीवन में दिव्य लक्षणों की प्रार्थना कर सकता है। सभी दिव्य शक्तियाँ ऐसे व्यक्ति की निश्चित रूप से सहायता करती हैं।

अग्नि यज्ञ में भी एक गृहस्थी याज्ञिक अपने घर पर अपनी वस्तुओं जैसे शुद्ध धी तथा लाभकारी जड़ी बूटियों का जलती हुई समिधा में त्याग करता है और दिव्य व्यक्तियों और शक्तियों से प्रार्थना करता है कि वे इस त्याग में उसका साथ दे और सहायता करें। ऐसे याज्ञिक परिवार को सुखी, शान्त और सम्मानित जीवन प्राप्त होता है।

जीवन में सार्थकता

सांकेतिक अग्नि-यज्ञ त्याग की प्रेरणा देता है और अन्ततः ईश्वर अनुभूति के पथ पर अग्रसर करता है।

एक गृहस्थी अपने गृहस्थ जीवन की गतिविधियों का शुभारम्भ अग्नि-यज्ञ से ही करता है, जिसमें वह अपनी कीमती वस्तुओं को वातावरण की शुद्धि तथा बिना भेदभाव के सबके कल्याण के लिए प्रस्तुत करता है। ऐसे दैनिक यज्ञ को करते-करते उसमें सबके कल्याण के लिए त्याग की भावना विकसित हो जाती है।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

यह भावना निश्चित रूप से दिव्य शक्तियों को प्रसन्न करती है और वह याज्ञिक व्यक्ति भी सर्वोच्च शक्तिमान परमात्मा की दिव्यताओं में शामिल हो जाता है। ऐसे यज्ञ की लम्बी साधना के बाद वह अनुभव करने लगता है कि सभी पदार्थ परमात्मा द्वारा दिये गये हैं और उनका प्रयोग सृष्टि की योजना एवं प्रबन्धन के अनुरूप सबके कल्याण के लिए ही किया जाना चाहिए। ऐसा याज्ञिक अपने शरीर की भावनाओं स्तर से ऊपर उठ जाता है और इच्छाओं का भी त्याग कर बैठता है। इस प्रकार परमात्मा की अनुभूति का एक स्पष्ट पथ उसके स्वागत के लिए निर्धारित हो जाता है।

ऋग्वेद मण्डल-1 सूक्त .14

ऋग्वेद मन्त्र 1.14.1
ऐभिरग्ने दुवो गिरो विश्वेभिः सोमपीतये ।
देवभिर्याहि यक्षि च ॥1॥

ऐभिः — इन

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM
Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

अग्ने – परमात्मा, अग्नि

दुवः – सदव्यवहार

गिरः – वैदिक वाणियाँ

विश्वेभिः – समस्त

सोमपीतये – शुभ गुणों का पान करने के लिए

देवेभिः – दिव्य गुण और पदार्थ

याहि – हमें प्राप्त करवाएँ

यक्षि – इश्वर की संगति, अनुभूति

च – और

व्याख्या :-

परमात्मा की अनुभूति के लिए क्या कदम उठाने चाहिए?

हम परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि हमारे सदव्यवहारों तथा वैदिक वाणियों को स्वीकार करें तथा हमें समस्त दिव्य गुणों और पदार्थों को उपलब्ध कराये जिससे हम परमात्मा की संगति का अनुभव प्राप्त करने के लिए दिव्यता का पान कर सकें।

परमात्मा की अनुभूति का मार्ग केवल दो कदम का है –

(क) सदव्यवहार (स्वार्थरहित तथा दयालु)

(ख) वैदिक वाणियाँ (सत्य वाणी)

केवल इन दो लक्षणों के परिणाम स्वरूप परमात्मा की अनुभूति के लिए हमारे जीवन में दिव्यता झलकने लगती है।

जीवन में सार्थकता

लोगों का विश्वास कैसे जीतें?

(क) सदव्यवहार का अर्थ है स्वार्थरहित तथा दयालु व्यवहार जिसका केन्द्रीय लक्ष्य दूसरों का कल्याण करना हो।

(ख) वैदिक वाणियों का अर्थ है अपनी जिज्ञा पर सत्य की स्थापना करना।

यदि हम अपने जीवन में इन दो लक्षणों को विकसित कर लेते हैं तो हर व्यक्ति ऐसे जीवन को दिव्य मानने लगता है। ऐसे जीवन में महान शुभ लक्षण आ जाते हैं।

ऐसा व्यक्ति लोगों का पूर्ण विश्वास जीतकर महान सम्मान का आनन्द लेता है तथा सर्वत्र उच्च स्तर का जीवन जीता है। यह दोनों लक्षण सांसारिक तथा अध्यात्मिक जीवन को मजबूत स्तम्भ सिद्ध होते हैं।

ऋग्वेद मन्त्र 1.14.2

आ त्वा कण्वा अहूषत गृणन्ति विप्र ते धियः।

देवेभिरग्न आ गहि॥१॥

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

आ — समस्त दिशाओं से

त्वा — आप की

कण्वा — बुद्धिमान विद्वान, अनुभूति प्राप्त करने वाले

अहृषत — पुकारते हैं, प्रार्थना करते हैं

गृणन्ति — पूजा, स्तुति करते हैं

विप्र — विशेष रूप से हमारा उत्थान तथा हमें ज्ञान का प्रकाश देनें वाले (परमात्मा)

ते — आपकी

धियः — विद्वतापूर्ण कार्य

देवेभिः — दिव्यताओं के साथदृ

अग्ने — परमात्मा

आ गहि — हमारी अनुभूति में आए।

व्याख्या :-

परमात्मा की अनुभूति का क्या उद्देश्य है?

आध्यात्मिक व्यक्ति हर तरफ से परमात्मा अर्थात् सर्वोच्च दिव्य शक्ति की पूजा, परमात्मा से प्रार्थना तथा परमात्मा की अनुभूति प्राप्त करने का प्रयास करते रहते हैं।

इसके लिये उनका एक निर्धारित लक्ष्य होता है। वह सर्वोच्च शक्ति सबका उत्थान करने वाली तथा सबको ज्ञान से प्रकाशित करने वाली होती है। इस प्रकार परमात्मा सीधे तथा अपनी दिव्यताओं के माध्यम से सब पर प्रेम की वर्षा करते हैं। सभी महान पुरुष प्रत्येक कण तथा प्रकृति के प्रत्येक कार्य में परमात्मा की बुद्धिमत्ता की खोज करते हैं जो इसे बनाने तथा इसके पालन करने में दिखाई देती है।

इस लिए परमात्मा से प्रेम करने वाले सभी लोग परमात्मा कर पूजा करते हैं तथा उसके रहस्यों को जानने के लिए ज्ञान के प्रकाश की प्रार्थना करते हैं और प्रत्येक अवस्था में उसकी अनुभूति में रहना चाहते हैं। इस लिए मानव जीवन का प्रधान उद्देश्य भी यदि है कि उस सर्वोच्च दिव्य शक्ति की अनुभूति उसकी समस्त दिव्य शक्तियों सहित प्राप्त करें।

जीवन में सार्थकता

बुद्धिमत्ता के चक का विकास कैसे करें ?

समाज को आध्यात्मिक कैसे बनायें ?

हमें सदैव बुद्धिमान तथा दिव्य लोगों की संगति में रहना चाहिए। हमें उनकी प्रशंसा गहरे हृदय से बिना सीमा के करनी चाहिए। इस प्रकार हमें उनकी बुद्धिमत्ता का अधिकतम लाभ प्राप्त हो सकेगा। हमें जो भी बुद्धिमत्ता या दिव्यता प्राप्त हो, उसका प्रसार हमें अन्य लोगों में करना चाहिए तथा उन्हें इस चक को जारी रखने की प्रेरणा देनी चाहिए। इस प्रकार यह बुद्धिमत्ता तथा दिव्यता का एक महान चक बन जाएगा जो समाज को आध्यात्मिक बनाएगा।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

ऋग्वेद मन्त्र 1.14.3
इन्द्रवायू बृहस्पतिं मित्रग्निं पूषणं भगम् ।
आदित्यान् मारुतं गणम् ॥३॥

इन्द्र – परमात्मा, इन्द्रियों पर नियन्त्रण करने वाला
वायू – वायु, गति
बृहस्पतिम् – सूर्य, महान रक्षक, आध्यात्मिकता का पथिक
मित्रा – सबका मित्र
अग्निम् – अग्नि, उर्जा
पूषणम् – पौष्टिक भोजन, जड़ी बूटियाँ
भगम् – सुख सुविधाएँ
आदित्यान् – वर्ष के बारह माह, शुभलक्षण धारण करने वाला का स्वभाव
मारुतम् गणम् – बादल के रूप में वायु का समूह या शरीर में प्राणों का समूह

व्याख्या :-

परमात्मा की दिव्य तथा बुद्धिमान शक्तियाँ कौन सी हैं?

इस मन्त्र में परमात्मा की नौ दिव्य तथा बुद्धिमान शक्तियाँ व्यक्त की गयी हैं जिन्हें समान रूप से मनुष्य भी विकसित कर सकता है। एक बार जब मनुष्य आत्म-अनुभूति के पथ पर प्रगति करने लगता है, तभी वह इन शक्तियों के महत्व को अनुभव करता है और उन्हें अपने जीवन में सिद्ध करता है।

(क) इन्द्र – परमात्मा इन्द्र है अर्थात् ब्रह्माणमें सबका नियन्त्रक। इन्द्रियों पर नियन्त्रण करने वाला मनुष्य भी इन्द्र कहलाता है।

(ख) वायू – परमात्मा वायु के समान सर्वविद्यमान है। हमारे शरीर में वायु तत्व सन्तुलित हो तो हम भी वायु की तरह गति करते हुए अनेकों स्थानों पर जा सकते हैं।

(ग) बृहस्पतिम् – परमात्मा सूर्य के रूप में महान रक्षक है। आध्यात्मिकता के पथक पर अग्रसर होने से हम भी बृहस्पति बन सकते हैं। एक महान अध्यात्मवादी व्यक्ति समाज का महान पथ प्रदर्शक तथा संरक्षक होता है।

(घ) मित्रा – परमात्मा सबका मित्र है। हम भी सबके मित्र की तरह व्यवहार कर सकते हैं।

(ङ) अग्निम् – परमात्मा सर्वोच्च उर्जा है। हमें भी उसी सर्वव्यापक उर्जा का एक अंश जीने के लिए दिया गया है जिससे हम दूसरों की सेवा भी कर सकते हैं।

(च) पूषणम् – परमात्मा पौष्टिक भोजन और जड़ी बूटियों का देने वाला है हमें प्रकृति द्वारा दिया गया भोजन ही गृहण करना चाहिए, उसे अम्लीय तथा स्वास्थ के लिए हानि कारक नहीं बनाना चाहिए।

(छ) भगम् – परमात्मा समस्त सुख सुविधाओं का देने वाला है, अतः हमें भी अन्य लोंगों के साथ व्यवहार करते समय यही ध्यान रखना चाहिए। दूसरों के लिए असुविधा पैदा करने वाला कोई कार्य नहीं करना चाहिए।

(ज) आदित्यान् – परमात्मा सदैव शुभ लक्षणों के ही स्वीकार करते हैं और उन्हें विकसित करते हैं। हमें भी केवल शुभलक्षण धारण करने वाला स्वभाव विकसित करना चाहिए।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

(ज) मारुतम् गणम् – परमात्मा वायु के रूप में सर्वविद्यमान है जिसे हम बादल के रूप में वायु के समूह की तरह अनुभव कर सकते हैं। हमारे शरीर में हम प्राणों के समूह के रूप में परमात्मा के रूप में अनुभव कर सकते हैं। प्राण अर्थात् अन्दर जाते हुए तथा बाहर आते हुए श्वास।

अतः सूक्ष्म तथा बृहद स्तर पर, भौतिक तथा आध्यात्मिक स्तर पर प्रत्येक व्यक्ति को दिव्यतायों के महत्व को समझना चाहिए, उनके साथ दिव्य सम्बन्ध बनाकर अधिकतम आनन्ददायक लाभ प्राप्त करने चाहिए।

जीवन में सार्थकता

हम अपने जीवन में दिव्य बुद्धिमान शक्तियाँ कैसे विकसित कर सकते हैं?

जीवन के प्रत्येक क्षेत्र तथा प्रत्येक अवस्था में, पारिवारिक स्तर पर, पेशेगत स्तर पर या समूचे समाज में हमें अपने अन्दर इन दिव्य शक्तियों का विकास करना चाहिए तथा ऐसे दिव्य जनों के साथ सम्बन्धित हामने का प्रयास करना चाहिए। हमारी दिव्यताएं निश्चित रूप से उन सभी लोगों को प्रेरित करेगी जो हमारे सर्वक में आयेंगे। इस प्रकार चारों तरफ दिव्यताओं को प्रोत्साहन मिलेगा। अपने अस्तित्व के सूक्ष्म स्तर पर ध्यान एकाग्र करने के बाद, अन्ततः ब्रह्माण्ड की दिव्य शक्तियाँ हमारे उपर वर्षा करने लगेंगी और चुम्भक की तरह हमारे जीवन में जुड़ जाएंगी।

ऋग्वेद मन्त्र 1.14.4
प्र वो भ्रियन्त इन्दवो मत्सरा मादयिष्वाः ।
द्रप्सा मध्वश्चमूषदः ॥४॥

प्र (भ्रियन्ते से पूर्व लगाना है।)

वः – आपके लिए (साधक के लिए)

भ्रियन्ते – अच्छी प्रकार धारण

इन्दवः – ऊर्जा देने वाले

मत्सरः – विशेष सन्तोष आनन्द देने वाले

मादयिष्वाः – महान् आनन्द के उत्पत्ति करने वाले

द्रप्सः – सोम की बूँदें, ऊर्जा

मध्वः – मधुर प्रकृति वाले

चमूषदः – शरीर में स्थापित

व्याख्या :-

परमात्मा की दिव्यताओं को कैसे अनुभव करें?

हर प्रकार की ऊर्जा जैसे सोम, शुभ गुण तथा सभी पदार्थ परमात्मा के द्वारा धारण और उपलब्ध करवाये जाते हैं। यह सभी ऊर्जायें निम्न लक्षणों वाली हैं –

(क) विशेष सन्तोष देने वाले,

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

(ख) विशेष आनन्द देने वाले,

(ग) मधुर प्रकृति वाले

सभी ऊर्जायें परमात्मा के द्वारा हमारे शरीर में स्थापित की जाती हैं।

एक बार यदि हम यह अनुभव कर लें कि यह ऊर्जायें ही परमात्मा की दिव्यतायें हैं तो हमें अपने शरीर में ही विशेष सन्तोष, महान् आनन्द तथा मधुर प्रकृति का अनुभव होगा। इस अनुभूति के बिना इन ऊर्जाओं का प्रयोग करते हुए लोग गलती कर जाते हैं, अपने जीवन में असंतुलन पैदा कर लेते हैं और असंख्य प्रकार के रोगों असुविधाओं, दुःखों और दर्दों को झेलते हैं।

जीवन में सार्थकता

दिव्यतायें हमारी तभी रक्षा करती हैं यदि हम उनका अनुभव करें और उन दिव्यताओं की रक्षा करें।

परमात्मा की सभी ऊर्जायें हमारे शरीर में हैं। एक बार हम उनकी अनुभूति प्राप्त कर लें तो हम उनके संरक्षण के लिए प्रेरित होंगे और वापिस वे हमें संरक्षित करेंगी। इसके विपरीत यदि हम इन ऊर्जाओं के मार्ग की अनुभूति प्राप्त न करें और अंधाधुध बिना सोचे समझे इनका प्रयोग करें तो ये हमारे जीवन में असंतुलन पैदा करके हमारा विनाश करती हैं। एक प्रसिद्ध सूक्ति है – ‘धर्मो रक्षति रक्षितः’। शुभ गुण उन्हीं की रक्षा करते हैं जो लोग शुभ गुणों की रक्षा करते हैं।

यदि हम बहादुर सैनिकों का सम्मान करेंगे तो वे हमारे देश की रक्षा करेंगे।

यदि हम अपने विद्वानों और अध्यापकों का सम्मान करेंगे तो वे हमारे देशवासियों की रक्षा करेंगे।

यदि हम अपने उच्चाधिकारियों का सम्मान करेंगे तो वे हमारे भविष्य की रक्षा करेंगे,

यदि हम अपने माता-पिता तथा वृद्धजनों का सम्मान करेंगे तो वे हर सम्भव प्रकार से हमारी रक्षा करेंगे।

ऋग्वेद मन्त्र 1.14.5

ईळते त्वामवस्यवः कण्वासो वृक्तबर्हिषः।

हविष्मन्तो अरङ्ग्कृतः ॥५॥

ईळते – पूजा स्तुति करते हैं

त्वाम – आपकी

अवस्यवः – जो अपने आपको संरक्षित करना चाहते हैं

कण्वासः – जो सूक्ष्म रूप से बुद्धिमत्ता प्राप्त करना चाहते हैं, जैसे एक कण के साथ दूसरा कण लगातार जुड़ा रहता है।

वृक्तबर्हिषः – जिन्होंने अपने हृदय और मन को शुद्ध कर लिया हो

हविष्मन्तः – जो दूसरों के कल्याण के लिए आहुति देते हैं

अरङ्ग्कृतः – जिन्होंने अपने आपको शुभ गुणों से सुशोभित किया है।

व्याख्या :-

किस प्रकार के लोग भगवान की सच्ची पूजा करते हैं?

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

यह मन्त्र परमात्मा की पूजा का एक वास्तविक तथा क्रियात्मक धार्मिक रूप प्रस्तुत करता है कि किस प्रकार के लोग भगवान की सच्ची पूजा करते हैं?

परमात्मा का सच्चा प्रेमी बनने के लिए तथा उसकी अनुभूति प्राप्त करने के लिए इस मंत्र में दिये गये पाँच लक्षण हमारे जीवन में दिखायी देने चाहिए –

(क) अवस्थावः – जो अपने आपको संरक्षित करना चाहते हैं

(ख) कणवासः – जो सूक्ष्म रूप से बुद्धिमत्ता प्राप्त करना चाहते हैं, जैसे एक कण के साथ दूसरा कण लगातार जुड़ा रहता है।

(ग) वृक्तबर्हिषः – जिन्होंने अपने हृदय और मन को शुद्ध कर लिया हो

(घ) हविष्मन्तः – जो दूसरों के कल्याण के लिए आहुति देते हैं

(ङ.) अरड़कृतः – जिन्होंने अपने आपको शुभ गुणों से सुशोभित किया है।

पूजा और स्तुति का यह पथ निःसंदेह असंख्य पूजाओं के मार्ग से उत्तम है। यह पाँच लक्षण सभी मनुष्यों की शुद्धि, उत्थान तथा संरक्षण से सम्बन्धित हैं, केवल साधक के लिए नहीं।

जीवन में सार्थकता

समाज की सभी समस्याओं के समाधान के लिए ईश्वर भक्ति का महत्व।

सामाजिक, राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर ईश्वर भक्ति अपराध मुक्त तथा रोग मुक्त समाज सुनिश्चित कर सकती है। सभी सामाजिक और पारिवारिक समस्यायें पूरी तरह से समाप्त हो सकती हैं यदि ईश्वर भक्ति की योग्यता उन सभी लोगों में प्रेरित कर दी जाये, जो ईश्वर में विश्वास करते हैं और ईश्वर को प्राप्त करना चाहते हैं। एक सच्चा ईश्वर भक्त क्रियात्मक रूप से एक महान् और श्रेष्ठ व्यक्तित्व होता है।

ऋग्वेद मन्त्र 1.14.6
घृतपृष्ठा मनोयुजो ये त्वा वहन्ति वहन्यः।
आ देवान्त्सोमपीतये ॥६॥

घृतपृष्ठा मनोयुजो ये त्वा वहन्ति वहयः।
आ देवान्त्सोमपीतये

ये – जो

त्वा – आप

वहन्ति (आ वहन्ति) – आपको अपना साथी जानना

वहयः – पूर्ण लक्ष्य की सिद्धि

आ (वहन्ति से पूर्व लगाया गया)

देवान् – दिव्यताओं के साथ

सोमपीतये – परमात्मा के सोम का पान करना अर्थात् शुभ और श्रेष्ठ ज्ञान

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

व्याख्या :-

पूर्ण सफलता कैसे प्राप्त करें?

पूर्ण सफलता का क्या परिणाम होता है?

मन्त्र पाँच के अनुसार जो लोग पवित्रता की पृष्ठभूमि तथा एक तत्व पर एकाग्रता के साथ ईश्वर भक्ति करते हैं अर्थात् उस सर्वोच्च सत्ता को ही स्थायी साथी मानते हैं, ऐसे लोग महान् लक्ष्यों तक पहुँच जाते हैं। अपने जीवन में सभी दिव्यताओं के साथ वे परमात्मा के सोम का पान करते हैं अर्थात् शुभ और श्रेष्ठ ज्ञान तथा उस परमात्मा की अनुभूति का आनन्द प्राप्त करते हैं।

मन्त्र पाँच में सच्ची ईश्वर भक्ति का पथ निर्देशित किया गया है, उसी के परिणामस्वरूप शुद्धता, एकाग्रता और जीवन के लक्ष्य की प्राप्ति होती है। जीवन का लक्ष्य है परमात्मा की अनुभूति तथा सभी दिव्यताओं और शुभ गुणों का स्थाई आनन्द।

जीवन में सार्थकता

यह प्रेरणायें प्रत्येक व्यक्तिगत जीवन में अत्यन्त आवश्यक हैं जिससे समाज को एक महान् आध्यात्मिक वर्ग के रूप में तैयार किया जा सके और जिससे व्यक्तिगत स्तर पर एक पूर्ण व्यक्तित्व का विकास हो और सफल जीवन सुनिश्चित हो।

भौतिकवादी कार्यों को करते हुए भी यदि कोई व्यक्ति अपने व्यवहार और कार्यों में शत प्रतिशत शुद्ध है तथा अपने कार्यों पर पूरा ध्यान एकाग्र करता है तो वह निश्चित रूप से अपने कार्यों को अन्त तक सफल करेगा, जब तक उसे पूर्ण परिणाम प्राप्त नहीं होते। पूर्ण सफलता का परिणाम होता है एक महान् व्यक्तित्व, जो शुभ गुणों तथा ज्ञान से परिपूर्ण है।

ऋग्वेद मन्त्र 1.14.7
तान् यजत्र॑ ऋतावृथोऽग्ने पत्नीवतस्कृथि ।
मध्वः सुजिहव पायय ॥7॥

तान् – वे (सच्ची ईश्वर भक्ति वाले)

यजत्रान् – त्यागमयी जीवन जीने वाले (यज्ञ करने वाले)

ऋतावृथो – सत्य को बढ़ाने वाले, अनुशासित

अग्ने – सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा

पत्नीवतः – उत्तम पत्नी धारण करने वाले, प्रकृति अर्थात् ब्रह्माण्ड के पति का स्त्रीलिंग

कृथि – संयुक्त कीजिए

मध्वः – मधुर और महान् ज्ञान

सुजिहव – मधुर और महान् वाणी, परमात्मा द्वारा महान् ज्ञान का दान

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पायय – हमें उपलब्ध करवाईये ।

व्याख्या :-

सच्चे ईश्वर भक्त को क्या प्राप्त होता है?

परमात्मा का स्त्रीलिंग रूप क्या है?

परमात्मा की सच्ची भक्ति करने वाले लोगों को तीन लक्षणों के साथ जोड़ा जाता है –

क) दूसरों के लिए त्यागपूर्वक जीवन जीना ।

ख) सत्य तथा परमात्मा के अनुशासन की वृद्धि करना

ग) परमात्मा के स्त्रीलिंग रूप अर्थात् प्रकृति के साथ प्रेम और रक्षा की भावना रखना, एक श्रेष्ठ गृहस्थ जीवन के संचालन के लिए उत्तम पत्नी के साथ मधुर और महान् जीवन जीना ।

जीवन में सार्थकता

एक उत्तम पत्नी किसे प्राप्त होती है?

परमात्मा की सच्ची भक्ति करने वाले लोग जिनके जीवन में पाँचवें मन्त्र में दिये गये लक्षण स्थापित होते हैं, जो एक महान् श्रेष्ठ व्यक्तित्व के मालिक होते हैं और निम्न तीन लक्षणों से युक्त होते हैं –

क) अन्य लोगों के लिए त्याग

ख) सत्यवादी तथा अनुशासित

ग) उत्तम पत्नी की संगति तथा परमात्मा की स्थाई संगति तथा प्रेम की अनुभूति

ऋग्वेद मन्त्र 1.14.8

ये यजत्रा य ईडयास्ते ते पिबन्तु जिहवया ।

मधोरग्ने वषट्कृति ॥८॥

ये यजत्रा य ईडयास्ते ते पिबन्तु जिहवया ।

मधोरग्ने वषट्कृति

ये – जो

यजत्रा – त्याग का जीवन जीते हैं

ये – जो

ईडया: – सच्ची ईश्वर भक्ति करते हैं

ते ते – वे सब लोग

पिबन्तु – पीते हैं, प्रयोग करते हैं

जिहवा – अपनी जिहवा तथा अन्य इन्द्रियों से

मधो: – मधुर और महान् ज्ञान

अग्ने – परमात्मा का

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

वषट्कृति – स्वार्थ रहित त्यागमयी जीवन में

व्याख्या :-

स्वार्थ रहित त्यागमयी जीवन क्या है?

जो लोग स्वार्थ रहित जीवन जीते हैं और परमात्मा की सच्ची भक्ति करते हैं वे अपनी इन्द्रियों के माध्यम से दिव्य ज्ञान का मधुर अमृत पीते हैं। ऐसा जीवन स्वार्थ रहित त्यागमयी जीवन बन जाता है।

त्यागमयी जीवन तथा ईश्वर भक्ति एक ही सिक्के के दो पक्ष हैं, जिसे स्वार्थ रहित जीवन या अनुभूति प्राप्त जीवन अर्थात् वषट्कृति कहा जाता है।

जीवन में सार्थकता

स्वार्थरहित व्यक्ति कौन होता है?

एक सच्चा वषट्कृति अर्थात् एक स्वार्थरहित व्यक्ति को सामान्य लोग एक महान् तथा अनुभूति प्राप्त व्यक्ति समझते हैं और उसे भगवान् के समकक्ष मानते हैं। परमात्मा की तरह वह स्वयं के लिए कोई आशा किये बिना लगातार देता ही रहता है। परमात्मा की तरह उसमें गहरा ज्ञान तथा अनुभूति होती है।

ऋग्वेद मन्त्र 1.14.9

आकीं सूर्यस्य रोचनाद् विश्वान् देवाँ उषर्बुधः।

विप्रो होतेह वक्षति ॥१॥

आकीं सूर्यस्य रोचनाद् विश्वान् देवाँ उषर्बुधः।
विप्रो होतेह वक्षति

आकीम् – चारों दिशाओं से

सूर्यस्य – सूर्य की

रोचनात् – चमक

विश्वान् – सभी

देवान् – दिव्य विद्वानों को

उषर्बुधः – दिव्य प्रातःकाल में जाग्रत

विप्रः – जीवन यात्रा पूर्ण करने के लिए

होता – देने वाला

इह – इस जीवन में ही

वक्षति – लाता है (सम्पूर्ण ज्ञान तथा अन्यों के लिए भक्ति)

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

व्याख्या :-

मुक्ति अर्थात् जीवन और मृत्यु के चक्र का अंत कैसे प्राप्त करें?

सूर्य की चमक के साथ दिव्य विद्वान् प्रातः वेला अर्थात् ब्रह्म वेला में जाग्रत होकर ज्ञान की प्राप्ति में तथा भक्ति में लग जाते हैं। इस प्रकार अन्य लोगों के कल्याण के लिए कार्य करते हैं क्योंकि वे इस जीवन यात्रा को पूर्ण तथा इसका समाप्त इसी जीवन में करना चाहते हैं। यह तभी सम्भव है जब वे प्रतिदिन तथा प्रतिक्षण महान् उपलब्ध करवाने वाले होता बनें। इस प्रकार वे जीवन चक्र का अंत करके मुक्ति प्राप्त करते हैं।

जीवन में सार्थकता

ज्ञान तथा वस्तुओं को उन लोगों से सांझा किया जाना चाहिए, जिन्हें इसकी आवश्यकता है।

यदि हम मुक्ति पर विश्वास करते हैं और उसे प्राप्त करना चाहते हैं अर्थात् हम जीवन और मृत्यु के चक्र को समाप्त करना चाहते हैं तो हमें प्रतिदिन प्रातःकाल ब्रह्म वेला में सबके लिए महान् ज्ञान को उपलब्ध करवाने वाला बनना चाहिए। जो भी ज्ञान या साधन हमारे पास उपलब्ध हैं, उन्हें उन लोगों के साथ सांझा किया जाना चाहिए, जिन्हें इनकी आवश्यकता हो।

ऋग्वेद मन्त्र 1.14.10

विश्वेभिः सोम्यं मध्वऽग्न इन्द्रेण वायुना ।

पिबा मित्रस्य धामभिः ॥१०॥

विश्वेभिः सोम्यं मध्वऽग्न इन्द्रेण वायुना ।

पिबा मित्रस्य धामभिः ॥१०॥

विश्वेभिः — सब

सोम्यम् — दिव्य लक्षण

मधु — मधुर एवं महान्

अग्ने — सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा, व्यक्तिगत ऊर्जा

इन्द्रेण — इन्द्रियों का नियंत्रक होना

वायुना — वायु की तरह गतिशील होकर शुद्धि करना

पिब — पीना, धारण करना

मित्रस्य — सूर्य की तरह (स्व प्रकाशित)

धामभिः — लक्ष्य

व्याख्या :-

दिव्य लक्षण धारण करने के क्या उद्देश्य हैं?

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

हमारी व्यक्तिगत ऊर्जा को मधुर और महान् ज्ञान जैसे सभी दिव्य लक्षण धारण करने चाहिए। इसके तीन मुख्य लक्ष्य हैं –

- क) इन्द्रियों का नियंत्रक होने के लिए वायु की तरह गतिशील होने के लिए
 - ख) शुद्धि के उद्देश्य से वायु की तरह गतिशील होने के लिए
 - ग) सूर्य की तरह बनने के लिए, स्व प्रकाशित बनने के लिए
- यदि हम इन्द्रियों के नियंत्रक बन जाते हैं, शुद्धि करने के लिए गतिशील हो जाते हैं और स्व प्रकाशित हो जाते हैं तो हमें सभी दिव्य लक्षण तथा मधुर एवं महान् ज्ञान का सर्वोच्च उपहार स्वतः ही प्राप्त हो जायेगा।

जीवन में सार्थकता

महान् नेता तथा मार्गदर्शक कैसे बनें?

किसी भी वर्ग के महान् नेता या मार्गदर्शक बनने के लिए हमें सम्बन्धित विषय का मधुर तथा महान् ज्ञान होना चाहिए। इसका परिणाम होगा – क) प्रभावशाली नियंत्रण, ख) सबका सुधार और शुद्धि करने की शक्ति तथा ग) एक स्व प्रकाशित व्यक्तित्व। इस प्रकार कोई भी व्यक्ति एक महान् मित्र, शुभचिंतक, मार्गदर्शक तथा नेता बन सकता है।

इसके विपरीत जब कोई व्यक्ति अपने अधीनस्थ तथा अनुयायियों पर प्रभावशाली नियंत्रणकर्ता बन जाता है, यदि उसमें सबको सुधारने और शुद्धि करने की शक्ति होती है, यदि उसका जीवन स्व प्रकाशित होता है और वह सबका मित्र होता है तो ऐसा व्यक्ति स्वाभाविक रूप से मधुर तथा महान् ज्ञान का अधिकारी बन जाता है। केवल ऐसा ही व्यक्ति अपने परिवार, समाज तथा राष्ट्र का महान् मार्गदर्शक तथा नेता बन सकता है।

ऋग्वेद मन्त्र 1.14.11
त्वं होता मनुर्हितोऽग्ने यज्ञेषु सीदसि ।
सेमं नो अध्वरं यज ॥11॥

त्वं होता मनुर्हितोऽग्ने यज्ञेषु सीदसि ।
सेमं नो अध्वरं यज

त्वम् – आप

होता – देने वाले

मनुर्हितः – हृदय एवं मस्तिष्क में कल्याणकारी ज्ञान

अग्ने – सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा

यज्ञेषु – त्याग में

सीदसि – स्थापित

सः – वह

इसम् – इस

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

नः — हमारे

अध्वरम् — अहिंसक तथा सम्यक् जीवन

यज — पूर्ण करने योग

व्याख्या :-

जीवन के उद्देश्य को पूर्ण रूप से कैसे प्राप्त किया जा सकता है?

परमात्मा के तीन महत्वपूर्ण लक्षण हैं —

क) सर्वोच्च ऊर्जावान परमात्मा समस्त कल्याण का देने वाला है।

ख) वह त्याग में रथापित होता है।

ग) वह हमारे अहिंसक और सम्यक् जीवन को पूर्ण करने योग्य होता है।

हमें उस परमात्मा की अनुभूति प्राप्त करने का प्रयास करना चाहिए जो सीधा उन लोगों के हृदय और मस्तिष्क में सच्चा और महान् ज्ञान प्रदान करता है जो उसका ध्यान करते हैं। उसका ज्ञान एक प्रेरणा की तरह होता है जो हमें त्याग के लिए अग्रसर करता है और परमात्मा की उपस्थित एक सहचर की तरह अनुभव करने के योग्य बना देता है। इस प्रकार वह हमारे जीवन के उद्देश्य को पूर्ण करता है, जिसमें अहिंसक तथा सम्यक् जीवन मोक्ष का रूप बन जाता है।

जीवन में सार्थकता

हम अपने माता—पिता तथा आचार्य की तुलना परमात्मा से क्यों करते हैं?

हमारे माता, पिता तथा आचार्य परमात्मा के समान ही कार्य करते हैं। वे हमें श्रेष्ठ, शुभ गुणों तथा ज्ञान की शिक्षा देते हैं और हमें कल्याणकारी कार्य करने के योग्य बनाते हैं। इस प्रकार वे हमारे जीवन के उद्देश्य को पूर्ण करने में हमारी सहायता करते हैं।

मातृमान, पितृमान, आचार्यमान् पुरुषौ वेद।

माता, पिता तथा आचार्य को ही परमात्मा समझें।

ऋग्वेद मन्त्र 1.14.12

युक्ष्वा ह्यरुषी रथे हरितो देव रोहितः।
ताभिर्देवाँ इहा वह ॥12॥

युक्ष्वा ह्यरुषी रथे हरितो देव रोहितः।

ताभिर्देवाँ इहा वह

युक्ष्वा — जोड़कर ही

हि — निश्चित रूप से

अरुषी — तीव्र गति के साथ

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

रथे — रथ (शरीर)

हरितः — हरण करने वाला (समस्त दुःखों और पीड़ाओं को)

देव — दिव्य

रोहितः — शुभ गुणों की वृद्धि करने वाली इन्द्रियां

ताभिः — इनके साथ (इन्द्रियों के)

देवान् — दिव्य मन

इह — इस जीवन में

आवह — प्राप्त करें

व्याख्या :-

अपनी इन्द्रियों का समुचित प्रयोग कैसे करें?

इन्द्रियों का समुचित प्रयोग करने का क्या परिणाम होगा?

इस मन्त्र में परमात्मा का स्पष्ट निर्देश है कि हमें अपनी इन्द्रियों का प्रयोग किस उद्देश्य से करना चाहिए —

क) भिन्न-भिन्न गतिविधियों के लिए उन्हें सक्रिय रखना।

ख) सभी दर्दों और पीड़ाओं का निवारण करने के लिए उनकी सहायता लेना।

ग) अपने अन्दर शुभ गुणों, श्रेष्ठ तथा महान् ज्ञान को बढ़ाना

जीवन में सार्थकता

इन्द्रियों के उचित प्रयोग से ही भौतिक और आध्यात्मिक सफलता सम्भव है।

इन्द्रियों का प्रयोग भिन्न-भिन्न गतिविधियों के लिए, दुःखों और पीड़ाओं के निवारण के लिए, अपने अन्दर शुभ लक्षण तथा ज्ञान को बढ़ाने के लिए ही करना चाहिए। ऐसा करना आध्यात्मिक मार्ग पर ही नहीं अपितु भौतिकवादी उद्देश्यों की पूर्ति तथा दैनिक जीवन में हर प्रकार की सफलता के लिए भी आवश्यक है।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

ऋग्वेद मण्डल-1 सूक्त .15

ऋग्वेद मन्त्र 1.15.1
इन्द्र सोमं पिब ऋतुना त्वा विशन्त्वन्दवः ।
मत्सरासस्तदोक्षः ॥ ॥ ॥

इन्द्र सोमं पिब ऋतुना त्वा विशन्त्वन्दवः ।
मत्सरासस्तदोक्षः

इन्द्र – सूर्य, इन्द्रियों का नियन्त्रक
सोमम् – सब वनस्पतियों के रस, ज्ञान, शुभ गुण, श्रेष्ठतायें
पिब – पीना
ऋतुना – उचित प्रकार से, ऋतुओं के अनुसार
त्वा – तुझमें
अविशन्तु – प्रवेश करें
इन्दवः – बल देने वाले
मत्सरासः – आनन्ददायक, तृप्ति देने वाले
तदोक्षः – दिव्यताओं के निवास

व्याख्या :-

सूर्य किस प्रकार हमें बल देता है?
महान् शुभ गुण किस प्रकार हमें बल देते हैं?

वैज्ञानिक अर्थ – सूर्य भिन्न-भिन्न ऋतुओं में सभी वनस्पतियों के रस को पीता है, जो वापिस सभी जीव और निर्जीव पदार्थों में प्रवेश करके बलदायक होता है। यह बलदायक तत्व सबके लिए आनन्द देने वाले होते हैं और दिव्यताओं का निवास समझे जाते हैं।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

आध्यात्मिक रूप से, हमारे लिए निर्देश है कि हम इन्द्र बनें, इन्द्रियों पर नियन्त्रण रखें और सोम अर्थात् ज्ञान, शुभ गुण तथा श्रेष्ठताओं का पान करें। जब यह सोम हमारे शरीर में प्रवेश करते हैं, वे बलदायक तथा हमारी आध्यात्मिक प्रगति के लिए आनन्ददायक होते हैं क्योंकि सोम में ही दिव्यताओं का निवास माना जाता है। सर्वोच्च शक्तिमान परमात्मा सोम में ही वास करता है। कोई व्यक्ति सोम का पान तभी कर सकता है यदि वह पहले इन्द्र हो अर्थात् इन्द्रियों का नियंत्रक हो। अतः इन्द्र होना ही दिव्य जीवन की प्राथमिक स्थिति है।

जीवन में सार्थकता

एक दिव्य जीवन की मूल स्थिति क्या है?

हमें अपने जीवन में उचित प्रकार से तथा उचित अवस्था में सभी महान् लक्षणों को धारण करना चाहिए। माता-पिता तथा गुरुओं को इस पर ध्यान देना चाहिए। इस मन्त्र का क्रियान्वयन करने के लिए वे अति उत्तम निर्देशक हो सकते हैं। एक बार समय निकल जाने पर मस्तिष्क अपने विश्वास तथा आदतों में ही परिपक्व हो जाता है और आदतों तथा बचपन में बने हुए चरित्र को भेदना अत्यन्त कठिन कार्य होता है। केवल महान् लक्षण ही हमारा मूल बल तथा आनन्द देने वाले होते हैं क्योंकि दिव्य गुणों में ही दिव्यता का वास होता है।

ऋग्वेद मन्त्र 1.15.2

मरुतः पिबत ऋतुना पोत्रद् यज्ञं पुनीतन ।
यूयं हि ष्ठा सुदानवः ॥२॥

मरुतः पिबत ऋतुना पोत्राद् यज्ञं पुनीतन ।
यूयं हि ष्ठा सुदानवः

मरुतः — वायु, श्वास,

पिबत — पीना

ऋतुना — उचित प्रकार से, ऋतुओं के अनुसार

पोत्रात् — पवित्र करने वाले

यज्ञम् — त्याग

पुनीतन — पवित्र कर दो

यूयम् — आप

हि — निश्चय से

स्था — हो

सुदानवः — बुराईयों के नाशक, प्रत्येक वस्तु सुन्दरता से उपलब्ध करवाने वाले

व्याख्या :-

हमारे लिए वायु का क्या महत्व है?

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

श्वास हमें किस प्रकार पवित्र करते हैं?

वैज्ञानिक रूप से – जिस प्रकार सूर्य समस्त वनस्पतियों के रस को पीता है, वायु भी उन्हीं रसों को पीती है। इस मन्त्र में सोम अव्यक्त है। वायु शुद्धि करने वाली है, अतः यह शुद्ध करती है और हमारे त्याग का विस्तार करती है। वायु निश्चित रूप से सभी बुराईयों की नाशक है जैसे दुर्गन्धि इत्यादि की। इस प्रकार वायु हमें सब कुछ सुन्दर तरीके से उपलब्ध कराती है।

आध्यात्मिक रूप से – हमारे श्वास अर्थात् प्राण तथा अपान, जिस वायु को हम शरीर के अन्दर ले जाते हैं और बाहर छोड़ते हैं, हमारे शरीर को पूरी तरह से शुद्ध करती है। वायु में शुद्ध करने वाले गुण होते हैं। हमारे प्राण हमें शुद्ध करने के साथ–साथ हमारा संरक्षण भी करते हैं और हमारे त्याग को विस्तृत करते हैं। इस प्रकार हमारे प्राण अर्थात् वायु हमारे मस्तिष्क में से निश्चित रूप से सभी बुरे विचारों का नाश कर देती है।

जीवन में सार्थकता

दिव्य शक्तियों का विकास कैसे करें?

बृहद स्तर पर परमात्मा वायुमंडलीय हवा के माध्यम से ही हमें संरक्षित तथा शुद्ध करते हैं। व्यक्तिगत स्तर पर हमारे द्वारा लिये गये श्वास–प्रश्वास हमें संरक्षित करते हैं, शुद्ध करते हैं और हमारे त्याग का विस्तार करते हैं, शुभ लक्षणों की वृद्धि करते हैं और बुरे विचारों का नाश करते हैं। हमें सदैव इन दिव्य शक्तियों पर ध्यान एकाग्र करना चाहिए, जो हम सबको सर्वोच्च दिव्य शक्ति परमात्मा की तरफ से प्रदान किये गये हैं। महान् दिव्य आत्मायें अपनी दिव्यताओं का विस्तार अपने श्वास से भी करते हैं। उनकी उपस्थिति और यहाँ तक कि उन दिव्य आत्माओं का ध्यान अवस्था में विचार करने से ही हमें उनके त्यागमय जीवन का परिणाम प्राप्त होता है।

ऋग्वेद मन्त्र 1.15.3

अभि यज्ञं गृणीहि नो ग्नावो नेष्टः पिब ऋतुना।
त्वं हि रत्नधा असि ॥३॥

अभि यज्ञं गृणीहि नो ग्नावो नेष्टः पिब ऋतुना।
त्वं हि रत्नधा असि

अभि – लक्ष्य करके, समस्त दिशाओं से

यज्ञम् – त्याग

गृणीहि – स्वीकार करना

नः – हमारे

ग्नावः – सभी पदार्थों को देने योग्य

नेष्टः – विद्युत (अग्नि की अत्यंत सूक्ष्म अवस्था), महान् बुद्धि अर्थात् ज्ञान की अग्नि धारण करने वाली

पिब – पीना

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

ऋतुना – ऋतुओं के अनुसार, उचित प्रकार से

त्वम् – आप

हि – निश्चय से

रत्नधा – उत्तम पदार्थों के धारक

असि – हो

व्याख्या

विद्युत करेंट का मूल विज्ञान क्या है?

विद्युत किस प्रकार हमें सुविधा सम्पन्न करती है?

वैज्ञानिक अर्थ – इस मन्त्र का केन्द्रीय विचार नेष्टः है अर्थात् विद्युत, अग्नि का उत्तम रूप जो व्यापक है और सभी कर्णों को धारण करता है तथा उन्हें प्रथक-प्रथक कर देता है। अग्नि की उत्पत्ति विद्युत करंट के सूक्ष्म रूप से होती है और वापिस उसी में मिल जाती है। विद्युत शक्ति में शुद्धि करने तथा पोषित करने के गुण होते हैं। ब्रह्मांड की यह विद्युत शक्ति करंट रूप में ही हर प्रकार के त्याग को धारण करती है और उन्हें स्वीकार करती है। यह हमें हर प्रकार के पदार्थ उपलब्ध कराती है। ब्रह्मांड की यह विद्युत शक्ति सोम अर्थात् वनस्पतियों के रस तथा सभी पदार्थों की शक्तियों को पी जाती है और इस प्रकार वह उत्तम पदार्थों की धारक बन जाती है।

आध्यात्मिक अर्थ – नेष्टः का अर्थ महान् बुद्धिमत्ता भी होता है। ऐसे विद्वान् लोग ही त्याग का सम्मान करते हैं, स्वीकार करते हैं और स्वयं धारण करते हैं। ऐसे लोग हमें अपने विषय का लाभदायक ज्ञान तथा विशेषज्ञतः प्रदान करते हैं। वे सोम अर्थात् ज्ञान शुभ गुण तथा श्रेष्ठताओं का नियमित और उचित प्रकार से पान करते हैं। इसलिए वे उच्च सम्पन्नता के समान हमारे लिए उत्तम ज्ञान धारण करते हैं। ऐसे महान् विद्वानों की तुलना आध्यात्मिक विद्युत शक्ति से की जाती है, जो हमारे अन्दर आध्यात्मिकता को सक्रिय करने में सक्षम होती है।

जीवन में सार्थकता

महान् विद्वानों की तुलना विद्युत करंट से क्यों की जाती है?

भौतिक रूप में विद्युत करंट हमारे सब सुविधाओं का मूल है, हमारे त्याग को स्वीकार करता है और हमें उत्तम पदार्थ प्रदान करता है।

आध्यात्मिक रूप से महान् विद्वत्ता हमारी समस्त मानसिक गतिविधियों का मूल विद्युत करंट है। ऐसे विद्वान् ही ज्ञान, श्रेष्ठ गुणों आदि का सोमपान करते हैं, अतः वे विश्वसनीय होते हैं और हमारे जीवन पथ को सुविधाजनक रूप से प्रगतिशील बनाने में हमारा मार्गदर्शन करते हैं। उनके केवल दर्शनमात्र से, स्पर्श से या उनकी विद्वत्ता के विचार मात्र से हमारे अन्दर भी विद्युत करंट की तरंगें पैदा हो जाती हैं।

ऋग्वेद मन्त्र 1.15.4

अग्ने देवौ इहावह सादया योनिषु त्रिषु ।

परि भूष पिब ऋतुना ॥४॥

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

अग्ने देवाँ इहावह सादया योनिषु त्रिषु ।
परि भूष पिब ऋतुना

अग्ने – अग्नि अर्थात् जलती हुई अग्नि या ज्ञान की अग्नि या ईश्वर प्रेम की अग्नि
देवान् – दिव्यतायें

इह – यहाँ, इस जीवन में

आवह – उपलब्ध करायें

सादया – स्थापित

योनिषु – स्थानों पर

त्रिषु – तीन

परि भूष – हर तरफ से अलंकृत

पिब – पीना

ऋतुना – ऋतु के अनुसार, उचित प्रकार से

व्याख्या :-

अग्नि क्या है और यह हमारे जीवन को किस प्रकार से अलंकृत करती है?

प्रज्जवलित अग्नि दिव्यताओं का पान करती है, आहुतियों को स्वीकार करती है जिससे उन्हें दिव्य पदार्थों में परिवर्तित करके तीनों स्थानों पर उपलब्ध करा सके – ऊपर, नीचे और मध्य में। इस प्रकार अग्नि हर तरफ से सबके जीवन को अलंकृत करती है।

आध्यात्मिक रूप से महान् ज्ञान तथा परमात्मा के लिए प्रेम की अग्नि सोम अर्थात् श्रेष्ठताओं और शुभ गुणों का पान करती है, जिससे हमारे तीनों स्थानों को दिव्य बना सके – हमारी इन्द्रियां हमारा मन और हमारी बुद्धि। यही अग्नि आध्यात्मिक प्रगति के साथ हमारे जीवन को अलंकृत करती है। ज्ञानेन्द्रियाँ तथा कर्मन्द्रियाँ क्रमशः ज्ञान—यज्ञ तथा कर्म—यज्ञ का सम्पादन करती हैं। मन, भवित्व—यज्ञ का सम्पादन करता है। बुद्धि परमात्मा की अनुभूति में सहायता करती है।

जीवन में सार्थकता

हमारी आन्तरिक अग्नि के द्वारा क्या कार्य किये जाते हैं?

अग्नि का सर्वोत्तम कार्य हमारी आहुतियों और हमारे त्याग को स्वीकार करना है। यही हमारे जीवन को अलंकृत करती है। हमारी आन्तरिक अर्थात् आध्यात्मिक अग्नि में हमें ज्ञान—यज्ञ, कर्म—यज्ञ तथा भवित्व—यज्ञ करना चाहिए, जिससे हम इन तीनों यज्ञों के फल से अपनी अन्तरात्मा को अलंकृत कर सकें।

ऋग्वेद मन्त्र 1.15.5

ब्राह्मणादिन्द्र राधसः पिबा सोममृतूर्नु ।

तवेद्धि सख्यमस्तुतम् ॥५॥

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

ब्राह्मणादिन्द्र राधसः पिबा सोममृतूर्नु ।
तवेद्धि सख्यमस्तुतम्

ब्राह्मणात् – सबसे बृहद के लिए, ब्रह्म से सम्बन्धित
इन्द्र – वायु, इन्द्रियों का नियन्त्रणकर्ता

राधसः – सम्पत्तियाँ

पिब – पान

सोमम् – दिव्यता का सार

ऋतून् अनु – ऋतु के अनुसार, उचित प्रकार से

तव – तेरा

इत – है

हि – निश्चित रूप से

सख्यम् – मित्र (ब्रह्म)

अस्तृतम् – अन्तहीन, अविच्छिन्न

व्याख्या :-

सबसे बड़ी सम्पत्ति कौन सी है?

भौतिकवादी दृष्टिकोण – यहाँ इन्द्र का अभिप्राय वायु से है जो सबसे बड़ी सम्पत्ति है, जो ऋतु अनुसार समस्त पदार्थों के सार तत्व को स्वीकार करती है। वायु ही हमारा अन्तहीन तथा अविच्छिन्न मित्र है।

आध्यात्मिक दृष्टिकोण – इन्द्र से अभिप्राय जीव से है जो इन्द्रियों का नियन्त्रणकर्ता है तथा जिसके लिए ब्रह्म अर्थात् परमात्मा ही सबसे बड़ी सम्पत्ति है। हमें, इन्द्र के रूप में, उचित प्रकार से सोम अर्थात् दिव्यताओं का पान करना चाहिए। सोम का अर्थ है महान् ज्ञान, दिव्यतायें तथा श्रेष्ठ गुण आदि जो सबके लिए शान्तिदायक होते हैं। ब्रह्म रूपी यही सम्पत्ति हमारे लिए अन्तहीन तथा अविच्छिन्न मित्र है। इसके अतिरिक्त सभी मित्र कम या अधिक समय के बाद, एक अवस्था में या दूसरी अवस्था में विच्छिन्न होने योग्य हैं।

जीवन में सार्थकता

हमारे सम्बन्ध किस प्रकार अविच्छिन्न हो सकते हैं?

हमारे जीवन में सबसे बड़ी सम्पत्ति ब्रह्म के साथ हमारी सहचरता है। यह मित्रता हमारी अनुभूति में तभी अविच्छिन्न होगी, यदि हम नियमित तथा उचित रूप से सोम का पान करें। इस मानसिकता के साथ तथा इस मित्रता का विधिवत अनुभव करते हुए कि यही हमारी सबसे बड़ी सम्पत्ति है, अब इस सिद्धान्त को घर के भीतर या बाहर अपने सभी सांसारिक सम्बन्धों पर लागू कर सकते हैं। हम सभी सम्बन्धों को अविच्छिन्न बना सकते हैं, यदि हम इन सबमें श्रेष्ठता, शुभ गुणों, ईमानदारी और अन्तरंगता का पालन करें। अनैतिक, दुराचारी या स्वार्थी सम्बन्ध लम्बी अवधि तक नहीं चलते और न ही उन्हें अपनी सम्पत्ति समझा जा सकता है क्योंकि वे एक बोझ के समान होते हैं।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

ऋग्वेद मन्त्र 1.15.6

युवं दक्षं धृतव्रतं मित्रवरुणं दूळभम् ।
ऋतुना यज्ञमाशाथे ॥६॥

युवं दक्षं धृतव्रतं मित्रवरुणं दूळभम् ।
ऋतुना यज्ञमाशाथे

युवम् – तुम दोनों

दक्षम् – बल देने वाले

धृतव्रता – पवित्रता का संकल्प

मित्रा वरुणा – सूर्य एवं वायु, प्राण एवं अपान, प्रेम तथा कल्याण, अश्विन का जोड़ा

दूळभम् – अहिंसक

ऋतुना – ऋतुओं के साथ

यज्ञम् – त्याग

आशाथे – व्याप्त

व्याख्या :-

कल्याणकारी कार्यों के लिए कौन से कारक हमें बल प्रदान करते हैं?

वैज्ञानिक दृष्टिकोण – सूर्य तथा वायु दो ऐसे सहचर हैं जिनके पास सबको बल देने की शक्ति है, जिससे वे अपनी पवित्रता तथा अहिंसा के संकल्प के साथ प्रदान करते हैं। वे हम सबके कल्याण के लिए तथा आवश्यकतानुसार अनेकों कार्य करते हैं।

आध्यात्मिक दृष्टिकोण – हमारे प्राण तथा अपान, प्रेम तथा कल्याण के लक्षण संयुक्त रूप से पवित्रता तथा बल प्रदान करते हैं जिससे हमारे जीवन में आवश्यकतानुसार अनेकों कल्याणकारी कार्य सम्पन्न होते हैं।

जीवन में सार्थकता

पवित्रता और समन्वय का मूल सिद्धान्त क्या है?

हमारे क्रियात्मक जीवन में मित्र तथा वरुण किसी भी जोड़े को कहा जा सकता है, जैसे शरीर और मन, दायाँ और बायाँ मस्तिष्क, दो भाई, बहिनें, पति तथा पत्नी या कोई भी सम्बन्धी। हमें दूसरों के कल्याण के लिए पवित्रता, निःस्वार्थ भावना तथा त्याग भाव से दोनों की शक्तियों का सर्वोत्तम प्रयोग करना चाहिए। तभी हम अपने जीवन में एक महान् बल की उत्पत्ति कर पायेंगे, जिससे त्याग के अनेकों श्रेष्ठ कार्य सम्पन्न हो सकें।

भौतिकवाद का एक मूल सिद्धान्त मानव के बलशाली होने में भी लागू होता है। दो किनारों के बीच पवित्रता तथा समन्वय एक ऐसा मूल नियम है, जिससे करंट, बल आदि की उत्पत्ति होती है, जिसका प्रयोग त्याग तथा कल्याणकारी कार्यों के लिए किया जा सकता है।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

ऋग्वेद मन्त्र 1.15.7

द्रविणोदा द्रविणसो ग्रावहस्तासो अध्वरे ।
यज्ञेषु देवमीळते ॥७॥

द्रविणोदा द्रविणसो ग्रावहस्तासो अध्वरे ।
यज्ञेषु देवमीळते

द्रविणोदा: — धन और बल का देने वाला, हमारे कर्मों का फल देने वाला

द्रविणसः: — धन और बल का इच्छुक, कर्मों का इच्छुक

ग्रावहस्तासः: — अपने हाथ में पूजा की शक्ति लिये (त्याग के द्वारा)

अध्वरे — अहिंसक

यज्ञेषु — त्याग के द्वारा

देवम् — परमात्मा, सर्वोच्च दिव्य शक्ति

ईळते — पूजन

व्याख्या :-

‘अपने हाथों पर परमात्मा की पूजा’ से क्या अभिप्राय है?

जो लोग परमात्मा के नाम पर त्याग कर्म करते हैं, परमात्मा के लिए परमात्मा से धन और बल माँगते हैं, ऐसे लोग अपने हाथों पर परमात्मा की पूजा करते हैं।

जिस व्यक्ति ने अपने जीवन को त्याग की प्रतिमूर्ति बना लिया हो, ऐसा व्यक्ति यदि धन और बल की इच्छा करता है तो वह भी त्याग के लिए ही होगी। परमात्मा की पूजा त्याग के द्वारा ही होती है। इसलिए ऐसे व्यक्तियों के द्वारा धन और बल की इच्छा भी परमात्मा की इच्छा के समान है।

परमात्मा हमारे कर्मों के फल देने वाले हैं। इसलिए हमारे कर्म इतने शुद्ध और त्यागमयी होने चाहिए, जिन्हें परमात्मा सरलतापूर्वक स्वीकार कर लें। हमें सभी कर्म परमात्मा की पूजा की तरह ही करने चाहिए। इस प्रकार हम परमात्मा का पूजन बड़े गौरवशाली तरीके से अपने हाथों पर ही कर पायेंगे और गर्व से उनके फलों की कामना करेंगे जो परमात्मा के प्रेम के रूप में हमें प्राप्त होंगे।

जीवन में सार्थकता

‘अपने हाथों पर सेवा’ से क्या अभिप्राय है?

जो व्यक्ति सदैव दूसरों के कल्याण के लिए कार्य करता है और त्याग के लिए सदैव तत्पर रहता है, इसका अर्थ यह है कि उसकी सभी वस्तुएं उस कल्याण के लिए ही लगी हैं। ऐसा व्यक्ति किसी भी त्याग को महान् नहीं समझता। परमात्मा यह सोचकर ऐसे व्यक्ति को ही हर प्रकार का धन और बल प्रदान करते हैं कि वह हर वस्तु का प्रयोग दूसरों के कल्याण के लिए ही करेगा।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

इसी प्रकार यदि आप अपने संस्थान के संरक्षण तथा प्रगति के लिए अपना समर्पण करते हो तो उच्च अधिकारी आप पर विश्वास करेंगे और सहर्ष आपको और अधिक साधन तथा शक्तियाँ इस विश्वास के साथ प्रदान करेंगे कि आपके द्वारा प्रत्येक शक्ति का प्रयोग संस्थान के कल्याण के लिए ही किया जायेगा।

ऋग्वेद मन्त्र 1.15.8

द्रविणोदा ददातु नो वसूनिष्ट यानि शृणिवरे।
देवेषु ता वनामहे ॥४॥

द्रविणोदा ददातु नो वसूनि यानि शृणिवरे।
देवेषु ता वनामहे

द्रविणोदा: — धन और बल का देने वाला, हमारे कर्मों का फल देने वाला
ददातु — दे

नः — हमें

वसूनि — वह धन और बल

यानि — जो कि

शृणिवरे — सुना जाये

देवेषु — दिव्य उद्देश्यों के लिए

ता — उन्हें (धन और बल)

वनामहे — हम स्वीकार और सेवन करते हैं

व्याख्या :-

हमारे कार्य और उनके फल कब सबके द्वारा सुने जाते हैं?

इस मन्त्र में धन और बल के दाता से यह प्रार्थना की गयी है कि हमें केवल वही धन और बल दे जो सबके द्वारा सुने जाने योग्य हो। इसमें यह प्रतिज्ञा की गयी है कि हम उस धन और बल को केवल दिव्य उद्देश्यों के लिए ही स्वीकार करेंगे तथा सेवन करेंगे।

इसका अभिप्राय यह है कि जब धन और बल का प्रयोग दिव्य उद्देश्यों के लिए किया जाता है, त्याग और कल्याण के लिए ही किया जाता है, ऐसा धन और बल सबके द्वारा सुना जाता है। ऐसे धन और बल का परिणाम इसके धारक और प्रयोग करने वाले के लिए एक महान् और सम्मानजनक प्रसिद्धि के रूप में प्राप्त होता है।

यदि हमारे कर्म शुद्ध और त्यागपूर्ण हैं तो निश्चित रूप से वे सबके द्वारा सुने जाते हैं और ऐसे कर्मों के परिणाम भी सबके द्वारा सुने जाते हैं।

जीवन में सार्थकता

धन और बल का प्रयोग कैसे करें?

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

यह मन्त्र सभी धन—सम्पन्न, सामाजिक और राजनीतिक कार्यकर्ताओं के लिए एक महान् निर्देश है, जिससे वे उस धन और बल का प्रयोग केवल दिव्य उद्देश्यों के लिए ही करें जैसे त्याग, कल्याण आदि। ऐसे दिव्य कार्यों से महान् प्रसिद्धि प्राप्त होती है क्योंकि दिव्य कार्य ही सुनने के योग्य होते हैं। ऐसे दिव्य कार्य स्वयं ही बोलते हैं।

ऋग्वेद मन्त्र 1.15.9

द्रविणोदा: पिपीषति जुहोत प्र च तिष्ठत ।
नेष्ट्रादृतुभिरिष्यत ॥१॥

द्रविणोदा: पिपीषति जुहोत प्र च तिष्ठत ।
नेष्ट्रादृतुभिरिष्यत

द्रविणोदा: — धन और बल का देने वाला, हमारे कर्मों का फल देने वाला
पिपीषति — पीता है

जुहोत — त्याग के लिए प्रयोग करना
प्र (तिष्ठत से पूर्व लगाकर)

च — और
तिष्ठत (प्र तिष्ठत) — प्रतिष्ठा को प्राप्त करो, उत्थान
नेष्ट्रात् — प्रगतिशील भविष्य के लिए
ऋतुभिः — ऋतु के अनुसार, आवश्यकतानुसार
इष्यत् — कामना करो

व्याख्या :-

आध्यात्मिक पथ पर उत्थान कैसे प्राप्त करें?

यदि हम अपने धन और बल का प्रयोग केवल त्याग के लिए करें तो एक तरफ हमें समाज में सम्मानजनक स्थान प्राप्त होता है और हमें आध्यात्मिक पथ पर भी उत्थान मिलता है, दूसरी तरफ त्याग का सेवन धन और बल के दाता भगवान करते हैं अर्थात् वे उन्हें स्वीकार करते हैं। जीवन में उन्नति करने के लिए प्रत्येक व्यक्ति को ऐसे ही धन और बल की कामना करनी चाहिए और भिन्न-भिन्न प्रकार से त्याग करने में ही उनका प्रयोग होना चाहिए। त्याग को भगवान पसन्द करते हैं और हमारी आध्यात्मिक यात्रा का उत्थान भी त्याग के माध्यम से ही होता है।

यदि हमारे कार्य पूरी तरह शुद्ध होते हैं तो भगवान उनका सेवन अर्थात् उन्हें स्वीकार करते हैं। ऐसे कार्यों का परिणाम ही मुक्ति के रूप में प्राप्त होता है अर्थात् परमात्मा की गोद में हमारा वास तथा जन्म-मृत्यु से मुक्ति

जीवन में सार्थकता

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

अपने से वृद्धजनों तथा अपने उच्च अधिकारियों की दृष्टि में कैसे ऊपर उठें?

अन्य लोगों के कल्याण के लिए किये गये हमारे त्याग कर्म अत्यन्त श्रेष्ठ माने जाते हैं, जिन्हें हमारे वृद्ध जन तथा उच्चाधिकारी पसन्द करते हैं। हमें उनकी दृष्टि में उत्थान प्राप्त होता है, वे हमारे कार्यों का पान करते हैं अर्थात् उन्हें स्वीकार करते हैं, उन्हें पसन्द करते हैं और उन पर गर्व करते हैं। जीवन के किसी भी क्षेत्र में हमें बिना आलस्य के और बिना समय गंवाये जब भी आवश्यक हो तुरन्त श्रेष्ठ कार्य करने चाहिए।

ऋग्वेद मन्त्र 1.15.10

यत्वा तुरीयमृतभिर्द्विषोदो यजामहे ।

अथ स्मा नो ददिर्भव ॥ 10 ॥

यत् – जिस

त्वा – आपको

तुरीयम् – परमात्मा (स्थूल, सूक्ष्म और कारण शरीर के बाद की अवस्था), परमात्मा चौथी अवस्था है, जो कारण शरीरों का भी कारण है।

ऋतुभिः – ऋतु के अनुसार, उचित रूप से

द्रविषोदः – धन और बल का देने वाला, हमारे कर्मों के फल का देने वाला

यजामहे – पूजते हैं

अथ – अब

स्मा – आपको

नः – हमारे लिए

ददिः – दाता

भव – होवो

व्याख्या :-

हम परमात्मा को कहाँ पर अनुभव और उसका पूजन कर सकते हैं?

परमात्मा हमारे शरीर में चौथी अवस्था है, उसी अवस्था में हम उसका पूजन और उसकी अनुभूति प्राप्त कर सकते हैं। शरीर की चार अवस्थायें इस प्रकार हैं :–

क) स्थूल शरीर अर्थात् भौतिक शरीर

ख) सूक्ष्म शरीर अर्थात् मानसिक शरीर

ग) कारण शरीर अर्थात् जीवात्मा

घ) कारण शरीर का कारण अर्थात् हमारी मूल और आन्तरिक शक्ति, इस जीवन का पूर्ण और अन्तिम कारण, परमात्मा ।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

इस चौथी अवस्था में परमात्मा की पूजा लगातार और उचित प्रकार से हर समय चलनी चाहिए क्योंकि वही समस्त धन और बल का देने वाला है, वही हमारे कर्मों के फल देता है। हम उसी शक्ति से प्रार्थना करते हैं कि वह अपनी कृपा और अपनी अनुभूति प्रदान करना सदैव जारी रखे।

जीवन में सार्थकता

क्या परमात्मा सबके लिए एक ही सर्वोच्च शक्ति है?

जी हाँ, परमात्मा सबके लिए एक ही सर्वोच्च शक्ति है जो हमारे शरीर के भीतर और बाहर विद्यमान है। चौथी अवस्था अर्थात् तुरीयम् कारण शरीर का भी कारण है, जो हमारे शरीर के भीतर ही है और यही सबसे निकट स्थल है, जहाँ हम परमात्मा की अनुभूति प्राप्त कर सकते हैं। हमें परमात्मा की पूजा भीतर ही करनी चाहिए। इसमें कोई सन्देह नहीं होना चाहिए कि परमात्मा के पास हमें सब कुछ देने की शक्ति है। यहाँ तक कि मुक्ति भी परमात्मा की कृपा से ही प्राप्त होती है।

एक बार यदि हम यह विश्वास कर लें कि परमात्मा हमारे जीवन की चौथी अवस्था है अर्थात् शरीर, मन और आत्मा से परे, स्थूल, सूक्ष्म और कारण शरीर से भी परे, तो उसकी अनुभूति के लिए हमें भी इन तीनों स्तरों से ऊपर उठकर उसी तुरीया अवस्था में पहुँचने का प्रयास करना चाहिए, जहाँ न कोई अच्छा है, न बुरा, न कुछ खोया, न पाया, न कोई अहंकार और न इच्छायें।

ऋग्वेद मन्त्र 1.15.11

अश्वना पिबतं मधु दीद्यग्नी शुचिव्रता ।

ऋतुना यज्ञवाहसा ॥11॥

अश्वना – दो का जोड़ा, शरीर और मन, प्राण और अपान, परमात्मा और जीवात्मा

पिबतम् – पीते हैं

मधु – मधुर (कर्मों के फल)

दीद्यग्नी – प्रकाश के लिए

शुचिव्रता – शुद्धि करने वाले

ऋतुना – ऋतु के अनुसार, उचित प्रकार से

यज्ञवाहसा – त्याग को धारण करने वाला

व्याख्या :-

हम त्याग, शुद्धि, प्रकाश और अनुभूति के चक्र का प्रबन्धन कैसे कर सकते हैं?

अश्वना, दो का जोड़ा, कर्मों के मधुर फलों को ऋतु अनुसार अर्थात् उचित प्रकार से पीता है क्योंकि यही जोड़ा सभी त्यागों को धारण करता है। उन्हीं त्यागों का परिणाम शुद्धि और ज्ञान के प्रकाश के रूप में प्राप्त होता है।

एक बार जब हम यह अनुभूति प्राप्त कर लें कि परमात्मा ही हमारे सभी कर्मों के फलों का देने वाला है तो हमें अपने जीवन के प्रत्येक क्षण पर लगातार दृष्टि रखनी चाहिए, जिससे हम केवल पवित्र, पावन और त्यागमयी कार्यों को ही कर पायें, तभी हमारा शरीर और मस्तिष्क अपने कार्यों के मधुर फलों का पान कर

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

पायेंगे, तभी हमारा शरीर और मस्तिष्क आगे शुद्धि के लिए तथा ज्ञान के प्रकाश के रूप में मिलने वाले कर्म फलों का मधुर पान कर पायेंगे। हमारा जीवन त्याग, शुद्धि, ज्ञान प्रकाश अर्थात् अनुभूति का एक चक्र बन जायेगा। इस प्रकार जीवन का यह मूल सिद्धान्त समझ आयेगा कि परमात्मा ही हमारे कर्मों के फल का देने वाला है। अपने जीवन को शुद्ध करने के लिए इस पर विश्वास करना चाहिए

जीवन में सार्थकता

समाज में बुरे कार्यों के लिए लोगों को दण्डित और श्रेष्ठ कार्यों के लिए पुरुस्कृत क्यों किया जाता है?

सामान्यतः हमारे परिवारों में और पूरे समाज में हमारे माता-पिता, वृद्धजन, उच्चाधिकारी तथा सरकारें कर्मों का फल देने वाले होते हैं। प्रत्येक व्यक्ति को बुरे कार्यों के फलस्वरूप प्रताङ्गना तथा दण्ड मिलता है। अच्छे और श्रेष्ठ कार्यों के लिए प्रत्येक व्यक्ति प्रशसित और पुरुस्कृत होता है। इस प्रक्रिया का उद्देश्य शुद्धिकरण तथा ज्ञान प्रकाश पैदा करना है, जिससे प्रत्येक व्यक्ति बुरे कार्य करने से हतोत्साहित हो और अच्छे कार्यों के लिए प्रोत्साहित हो। प्रत्येक स्तर पर कानूनों और नियमों की रचना भी शुद्धि तथा ज्ञान प्रकाश की स्थापना के लिए ही की जाती है।

ऋग्वेद मन्त्र 1.15.12

गार्हपत्येन सन्त्य ऋतुना यज्ञनीरसि ।
देवान् देवयते यज ॥12॥

गार्हपत्येन – गृहस्थ जीवन में कर्तव्यों और व्यवहारों के लिए

सन्त्य – परमात्मा, सब पदार्थों का देने वाला

ऋतुना – ऋतु के अनुसार, उचित प्रकार से

यज्ञनीः – त्याग करने के योग्य

असि – हमें प्राप्त कराओ

देवान् – दिव्य गुण और लक्षण

देवयते – दिव्यता के इच्छुक के लिए

यज – संगम कीजिए।

व्याख्या :-

एक श्रेष्ठ गृहस्थी परमात्मा से क्या प्रार्थना करता है?

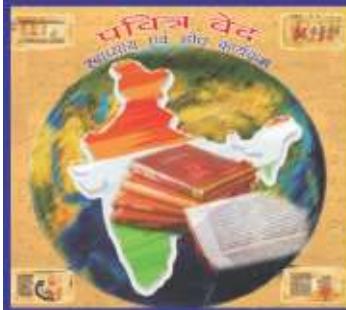
एक श्रेष्ठ गृहस्थी सब पदार्थों के देने वाले परमात्मा से प्रार्थना करता है कि उसे त्याग के योग्य बनाओ। एक श्रेष्ठ गृहस्थी आध्यात्मिक स्तर पर दिव्यता का इच्छुक भी होता है। इसलिए ऐसे दिव्यता के इच्छुक का संगम स्वतः ही दिव्य लक्षणों के साथ होता है।

जीवन में सार्थकता

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

दिव्यता की प्राप्ति कैसे हो?

यदि आपको दिव्यता चाहिए तो आपको दिव्य लक्षण प्राप्त होंगे। दिव्यता के बारे में एक लगातार चेतन विचार ही निश्चित रूप से आपको दिव्य बना देगा। दिव्यता का चेतन विचार नियमित रूप से लम्बी ध्यान साधना के माध्यम से और बलशाली किया जा सकता है।

ऋग्वेद मण्डल-1 सूक्त 16

ऋग्वेद मन्त्र 1.16.1

आ त्वा वहन्तु हरयो वृषणं सोमपीतये ।
इन्द्र त्वा सूरचक्षसः ॥१॥

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



आ (वहन्तु से पूर्व लगाकर)

त्वा – आप (परमात्मा)

वहन्तु (आ वहन्तु) – बुलाता हूँ

हरयः – दुखों के हरने वाले, यज्ञों का आहरण करने वाले

वृषणं – सुखों की वर्षा करने वाले

सोमपीतये – ज्ञान और शुभ गुणों का धारण और रक्षण करने वाले

इन्द्रम् – परमात्मा अर्थात् सर्वोच्च नियन्त्रक, जीव अर्थात् इन्द्रियों का नियन्त्रक

त्वा – आप

सूरचक्षसः – सूर्य में दर्शनीय, दिव्य, शुभ ज्ञान तथा व्यवहार में दर्शनीय

व्याख्या :-

परमात्मा के दर्शन कहाँ पर हो सकते हैं?

परमात्मा की अनुभूति कैसे हो सकती है?

हम उस सर्वोच्च शक्तिमान परमात्मा को बुलाते हैं, जो :-

क) दुखों का हरने वाला है,

ख) सुखों की वर्षा करने वाला है,

ग) ज्ञान और शुभ गुणों की रक्षा करने वाला है,

घ) दिव्य शुभ गुणों, व्यवहार तथा सूर्य में दर्शनीय है।

इस मन्त्र की व्याख्या एक अन्य प्रकार से यह होती है कि जिस ईश्वरानुरागी व्यक्ति में निम्न लक्षण होते हैं, केवल वे ही परमात्मा को अपनी अनुभूति में बुलाने के योग्य होते हैं।

क) जो अन्य लोगों के दुखों का हरने वाला है,

ख) जो सब पर सुखों की वर्षा करने वाला है,

ग) जो ज्ञान और शुभ गुणों की रक्षा करने वाला है,

घ) जो अपने दिव्य शुभ गुणों, ज्ञान तथा व्यवहार आदि में दर्शनीय है।

इस मन्त्र की एक तीसरी व्याख्या के अनुसार सूर्य में यह सभी लक्षण होते हैं, अतः परमात्मा सूर्य के माध्यम से दर्शनीय होते हैं।

क) सूर्य धरती से हर वस्तु के तत्त्वों का आहरण करता है,

ख) सूर्य धरती पर जल की वर्षा के माध्यम से सब पर सुखों की वर्षा करता है,

ग) सूर्य सोम अर्थात् जड़ी बूटियों एवं वनस्पतियों के तत्त्वों की रक्षा करता है,

घ) सूर्य अपनी दिव्य शक्तियों जैसे ऊर्जा, प्रकाश तथा समस्त आकाशीय पिण्डों को अपनी चुम्बकीय शक्ति से धारण करने के कारण दर्शनीय होता है।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

जीवन में सार्थकता

ज्ञान तथा दर्जे में उच्च लोगों की संगति कैसे प्राप्त की जा सकती है?

जब आप किसी उच्चाधिकारी या किसी सम्मानित बड़े व्यक्ति की संगति या आशीर्वाद को चाहते हैं तो स्वाभाविक रूप से आपके मन में उनसे कुछ लाभ लेने की इच्छा होती है। आप उनकी संगति तथा आशीर्वाद तभी प्राप्त कर सकते हो, जब वास्तव में आप उन्हीं के लक्षणों को धारण करें और उनका अनुसरण करें। किसी भी व्यक्ति के साथ मजबूत सम्बन्ध बनाने के लिए आपको उन्हीं के पथ का अनुसरण करना होगा। सर्वोच्च अवस्था में यदि आप परमात्मा की अनुभूति प्राप्त करना चाहते हैं तो आपको उस सर्वोच्च शक्तिमान के महान् और दिव्य लक्षणों का अनुसरण करना पड़ेगा।

ऋग्वेद मन्त्र 1.16.2

इमा धाना घृतस्नुवो हरी इहोप वक्षतः ।
इन्द्रं सुखतमे रथे ॥१॥

इमा – यह

धाना – धारण करने वाली

घृतस्नुवो – ज्ञान और पवित्रता को चारों ओर फैलाने वाली

हरी – किरणें, इन्द्रियाँ, दुःखों को हरने वाली, पदार्थों को हरने वाली

इह – यहाँ

उप – समीप

वक्षतः – प्राप्त करते हैं

इन्द्रम् – सर्वोच्च नियंत्रक परमात्मा, सूर्य, इन्द्रियों पर नियन्त्रण करने वाला

सुखतमे – सुख के लिए

रथे – रथ, शरीर

व्याख्या :-

किसी व्यक्ति की तुलना सूर्य से किस प्रकार की जा सकती है?

वैज्ञानिक व्याख्या – सूर्य सभी वस्तुओं के सार तत्व को लेता है, उन्हें धारण करता है और पवित्र रूप में उन्हें सब तरफ फैला देता है। वाहन उपलब्ध करवा कर हमारी गति को सुविधाजनक बनाता है। सूर्य ही हमारे शरीर को गति के लिये शक्ति देता है।

आध्यात्मिक व्याख्या – एक व्यक्ति अपनी जीवात्मा को शक्तिशाली बनाने के बाद अपनी इन्द्रियों का नियंत्रक बन जाता है, उन्हें धारण करके उनकी शुद्धता को चारों तरफ प्रसारित करता है, अशुद्धताओं का नाश करके दुःखों को दूर करता है। इस प्रकार ऐसा जीव भी हरी बनकर अपने निकट अर्थात् अपने शरीर रूपी रथ में ही परमात्मा की अनुभूति का कार्य सरल कर लेता है।

जीवन में सार्थकता

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

सूर्य की तरह कार्य करने के लिए हम अपने आपको किस प्रकार प्रशिक्षित कर सकते हैं?
सूर्य की तरह कार्य करने के लिए हम अपने आपको निम्न प्रकार से प्रशिक्षित कर सकते हैं :—
क) हरी अर्थात् अपने तथा अन्य लोगों के जीवन से अशुद्धताओं का हरण करना।
ख) घृतस्नुवो अर्थात् ज्ञान और पवित्रता को चारों ओर फैलाने वाला
इस प्रकार अपने शरीर रूपी रथ के माध्यम से हम सुखतमे रथे अर्थात् अपनी जीवन यात्रा को सुविधाजनक रूप में आनन्दित कर पायेंगे और दिव्यता को अपने निकट ही अनुभव कर पायेंगे।

ऋग्वेद मन्त्र 1.16.3

इन्द्रं प्रातर्हवामह इन्द्रं प्रयत्यधरे ।
इन्द्रसोमस्य पीतये ॥३॥

इन्द्रम् — सर्वोच्च नियंत्रक परमात्मा, सूर्य, इन्द्रियों पर नियन्त्रण करने वाला

प्रातः — प्रतिदिन प्रातःकाल

हवामहे — आवाहन, प्रार्थना करें

इन्द्रम् — सर्वोच्च नियंत्रक परमात्मा, सूर्य, इन्द्रियों पर नियन्त्रण करने वाला

प्रयति — उत्तम ज्ञान का देने वाला, प्रकाश और ऊर्जा का देने वाला

अधरे — दोषरहित पवित्र त्याग

इन्द्रम् — सर्वोच्च नियंत्रक परमात्मा, सूर्य, इन्द्रियों पर नियन्त्रण करने वाला

सोमस्य — समस्त जड़ी बूटियों और वनस्पतियों के सार रस, ज्ञान तथा शुभ गुण

पीतये — पीता है, संरक्षण के लिए आहरण करता है।

व्याख्या :-

हमें परमात्मा का, सूर्य का और अपनी आन्तरिक शक्तियों का आह्वान प्रतिदिन क्यों करना चाहिए?

वैज्ञानिक व्याख्या — हम सूर्य का आह्वान तथा स्वागत प्रतिदिन प्रातःकाल करते हैं क्योंकि यह हमें हमारी समस्त गतिविधियों, त्याग तथा यज्ञों आदि के लिए प्रकाश और ऊर्जा देता है। यह समस्त पदार्थों के रस का आहरण करता है, जिससे कई गुना अधिक करके हमें वापस दे सके। यह मन्त्र ऊर्जा तथा वायु पर भी इसी प्रकार से लागू होता है।

आध्यात्मिक व्याख्या — हम प्रतिदिन प्रातःकाल परमात्मा का आह्वान करते हैं कि वे हमारी अनुभूति में आये क्योंकि उन्हीं से हमें उत्तम ज्ञान प्राप्त होता है जिससे हम सभी शुद्ध गतिविधियाँ, त्याग तथा कल्याण के कार्य कर पाते हैं। वही हमारे सोम रसों अर्थात् ज्ञान, शुभ गुणों तथा श्रेष्ठताओं के रक्षक हैं।

प्रतिदिन हम इन्द्रियों के नियंत्रक अपनी आत्मा का भी आह्वान करते हैं कि वह उस परमात्मा की अनुभूति करे, जो महान् और सर्वोच्च ज्ञान का धारक है, पवित्र त्याग आदि कार्यों का करने वाला है और समस्त शुभ लक्षणों का रक्षक है।

अतः प्रतिदिन परमात्मा का आह्वान दो मुख्य कारणों से करना चाहिए :—

क) अपने अन्दर शुद्धता, बुद्धिमत्ता और त्याग को बढ़ाने के लिए

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

ख) अपने अन्दर अशुद्धता, अज्ञानता और इच्छाओं को कम करने के लिए

जीवन में सार्थकता

जीवन में नियमित प्रगति सुनिश्चित किस प्रकार की जायें?

हमें लगातार अपने जीवन में सर्वोच्च शक्तिमान परमात्मा का आह्वान करना चाहिए। हमारे अन्दर सर्वोच्च शक्ति के उजागर होते ही प्रत्येक क्षेत्र में उन्नति की योग्यतायें बढ़ जायेंगी। सर्वोच्च शक्ति में ज्ञान, गुण, श्रेष्ठ लक्षण तथा उत्तम योग्यतायें शामिल हैं। प्रगतिशील लोग सदैव इन शुभ लक्षणों की प्रगति में ही लगे रहते हैं।

ऋग्वेद मन्त्र 1.16.4

उप नः सुतमा गहि हरिभिरिन्द्र केशिभिः ।
सुते हि त्वा हवामहे ॥४॥

उप – निकट

नः – हमारे

सुतम – उत्पन्न हुए

आगहि – प्राप्त

हरिभिः – हरण करने की शक्ति सहित

इन्द्र – सर्वोच्च नियंत्रक परमात्मा, सूर्य, इन्द्रियों पर नियन्त्रण करने वाला

केशिभिः – केश, किरणें, बहुआयामी शक्तियाँ

सुते – उत्तम व्यवहारों के साथ

हि – निश्चित रूप से

त्वा – आपको

हवामहे – ग्रहण करते हैं।

व्याख्या :-

परमात्मा की अनुभूति किस प्रकार करें और उसके द्वारा किस प्रकार पसन्द किये जायें?

मनुष्य के लिए यह निर्देश है कि वह सर्वोच्च शक्ति परमात्मा के साथ सम्पर्क बनायें और यह प्रार्थना करें कि वह शक्ति अपने द्वारा उत्पन्न की गयी हर वस्तु के साथ स्वयं उसकी अनुभूति में आये।

सूर्य, वायु, सर्वव्यापक ऊर्जा और यहाँ तक कि हमारी व्यक्तिगत जीवात्मा के पास भी अनेकों शक्तियाँ हैं, जिससे वे बहुमूल्य सार तत्त्वों का आहरण कर सकें और उससे दुःखों का नाश कर सकें। इन सभी शक्तियों के साथ जब वह उत्तम व्यवहार करता है तो निश्चित रूप से उसे परमात्मा की अनुभूति होती है।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

इस मन्त्र को परमात्मा की तरफ से प्रत्येक मानव जीवात्मा को एक आश्वासन की तरह से भी समझा जा सकता है कि इन्द्र अर्थात् इन्द्रियों का नियंत्रक होने के नाते वह सोम रसों का आहरण करे अर्थात् महान् ज्ञान, शुभ गुणों और श्रेष्ठताओं को अपने निकट धारण करे। इन सबका आहरण करने के लिए वह अपनी बहुआयामी शक्तियों का प्रयोग करे। परमात्मा निश्चित रूप से उत्तम व्यवहार और कर्मों को करने वाले ऐसे लोगों का स्वागत करेंगे।

जीवन में सार्थकता

सबके द्वारा हम पसन्द कैसे किये जायें?

यदि आप चाहते हैं कि सब लोग आपको पसन्द करें, विशेष रूप से आपके उच्चाधिकारी तथा वृद्ध जन आदि तो आपको निम्न प्रयास करने चाहिए :-

क) महान् ज्ञान, शुभ गुणों और श्रेष्ठ आचरण को अपने भीतर उत्पन्न करें तथा उनकी वृद्धि करें।

ख) परमात्मा द्वारा प्रत्येक व्यक्ति को प्रदत्त बहुआयामी शक्तियों का प्रयोग करते हुए अपनी अशुद्धताओं और अज्ञानताओं को समाप्त करके अपने दुःखों को दूर करें।

ऋग्वेद मन्त्र 1.16.5

सेमं नः स्तोममा गद्युपेदं सवनं सुतम् ।

गौरो न तृष्णितः पिब ॥५॥

सः — वह

इमम् — इन

नः — हमारे

स्तोमम् — स्तुतियों, सबके लिए लाभदायक प्रशंसनीय कार्यों

आगहि इदम् — इन्हें ग्रहण करने वाला, स्वीकार और पसन्द करने वाला

सवनम् — शुभ कार्य

सुतम् — दूसरों के कल्याण के लिए उत्पन्न

गौरः — हिरण

नः — जैसे

तृष्णितः — प्यासे

पिब — पीता है

व्याख्या :-

हम परमात्मा की अनुभूति के लिए कामना करते हैं। क्या परमात्मा भी हमारी कामना करता है?

इस मन्त्र को वैदिक निर्देश देने वाले एक दृष्टान्त के साथ समझा जा सकता है। एक हिरण जब प्यासा होता है तो वह पानी पीने के लिए भागता है। यदि हमारी प्यास परमात्मा की अनुभूति के लिए है तो हमें इस मन्त्र में दिये निम्न तीन निर्देशों का पालन करना चाहिए :-

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

क) स्तोमम् – हमारी परमात्मा के प्रति स्तुतियाँ और सबके लिए लाभदायक प्रशंसनीय कार्य वास्तव में परमात्मा के द्वारा भी स्तुति एवं प्रशंसा के योग्य होते हैं।

ख) सवनम् – सभी शुभ कार्य परमात्मा के द्वारा प्रशंसनीय होते हैं।

ग) सुतम् – हमें दूसरों के कल्याण के लिए ही वस्तुएं और विचार उत्पन्न करने चाहिए।

जब हम क्रियात्मक जीवन में इन तीन निर्देशों का पालन करते हैं तो परमात्मा हमारी अनुभूति में आ जाता है। हमें ऐसे जीवन की तरफ उसी प्रकार भागना चाहिए, जैसे एक प्यासा हिरण पानी पीने के लिए भागता है। प्रतिक्रियात्मक रूप में परमात्मा भी हमारी अनुभूति के लिए भागेगा।

एक प्यासे हिरण की तरह ही सूर्य भी अपनी किरणों के साथ हमारी तरफ भागता है जब हम यज्ञ करते हैं अर्थात् दूसरों के कल्याण के लिए कार्य करते हैं। ऐसे कार्यों से ही परमात्मा की स्तुति भी होती है।

जीवन में सार्थकता

हमें अपने वृद्धजनों एवं उच्चाधिकारियों के आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए क्या करना चाहिए?

जीवन के किसी भी क्षेत्र में हमें निम्न तीन सिद्धान्त क्रियात्मक रूप में सुनिश्चित ही करने ही चाहिए :—

क) स्तोमम् – हमेशा अपने वृद्धजनों, उच्चाधिकारियों आदि की प्रशंसायें पूरे सम्मान के साथ करें। कभी किसी की निन्दा, अपमान या आज्ञा का उल्लंघन नहीं करना चाहिए।

ख) सवनम् – आपके सभी कार्य श्रेष्ठ तथा सबके कल्याण के लिए होने चाहिए, जिससे आपके वृद्धजन तथा उच्चाधिकारी आप पर गर्व करें।

ग) सुतम् – आपको दूसरों के कल्याण के लिए ही वस्तुएं और विचार उत्पन्न करने चाहिए।

यदि हम इन तीन निर्देशों का पालन उसी उत्साह के साथ करें, जैसा प्यासे हिरण में पानी की तरफ भागते हुए दिखायी देता है, तो हमारे वृद्धजनों और उच्चाधिकारियों के आशीर्वाद और शुभ कामनायें भी हमारी तरफ प्यासे हिरण की तरह ही भागेंगी।

ऋग्वेद मन्त्र 1.16.6

इमे सोमास इन्दवः सुतासो अधि बर्हिषि ।

ताँ इन्द्र सहसे पिब ॥६॥

इमे – ये

सोमासः – महान् ज्ञान, शुभ गुण तथा श्रेष्ठतायें

इन्दवः – शक्तिशाली बनाने वाले

सुतासा – परमात्मा के द्वारा उत्पन्न

अधि – बढ़ते हैं

बर्हिषि – वासना/इच्छा शून्य हृदय और मस्तिष्क में, अन्तरिक्ष में

तान् – उन

इन्द्र – सर्वोच्च नियंत्रक परमात्मा, सूर्य, इन्द्रियों पर नियन्त्रण करने वाला

सहसे – सहनशावित, बल

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पिब – पीओ

व्याख्या :-

महान् ज्ञान और समस्त पदार्थों का निर्माण कैसे होता है?

महान् ज्ञान और पदार्थों का प्रभाव कैसे बढ़ता है?

महान् ज्ञान, शुभ गुण, श्रेष्ठतायें और समस्त पदार्थ आदि परमात्मा के द्वारा रचे जाते हैं। इनका विस्तार अन्तरिक्ष में होता है। इनका उद्देश्य हमारी सहनशक्ति, ताकत और बल को बढ़ाना होता है।

वैज्ञानिक रूप से इन्द्र का अर्थ सूर्य तथा वायु से है जो धरती के समस्त पदार्थों के सार तत्वों का आहरण करते हैं, उन्हें अन्तरिक्ष में ले जाते हैं और उन्हें कई गुना बढ़ा कर वापिस बढ़ी हुई ताकत के साथ धरती को देते हैं। लोग ऐसे सभी पदार्थों और ज्ञान धाराओं का उपभोग करते हैं, जिन्हें प्राकृतिक शक्तियों ने उनकी ताकत और बल के लिए पैदा किया है।

आध्यात्मिक रूप से सभी पदार्थों, ज्ञान धाराओं, शुभ गुणों और श्रेष्ठताओं का उत्पत्तिकर्ता परमात्मा ही है। यदि हम इन्हें अपने गहरे मस्तिष्क और हृदय में ले जायें, उन पर एकाग्रतापूर्वक ध्यान करें तो यह सभी लक्षण हमारे जीवन में बढ़ने लगते हैं। इन्द्रियों का नियन्त्रक जीव इसी प्रकार अपनी शक्ति के लिए इनका पान करता है।

जीवन में सार्थकता

किसी भी कार्य को करते हुए हमें अपने हृदय और मस्तिष्क को एकाग्र क्यों करना चाहिए?

हम जिन पदार्थों का भी प्रयोग करते हैं या विचारों को धारण करते हैं, उन सबका प्रभाव हमें अपने मस्तिष्क और हृदय की गहराई तक ले जाना चाहिए। इससे हमारे शक्ति और उत्साह में वृद्धि होगी। उदाहरण के लिए जब हम भोजन करते हैं तो हमें अपना मस्तिष्क भोजन को चबाने में लगने वाले प्रत्येक क्षण पर केन्द्रित रखना चाहिए और अपने शरीर और मस्तिष्क पर पड़ने वाले उस भोजन के प्रभाव पर विचारशील रहना चाहिए। ऐसे समय हमें एकदम शान्त और स्थिर मस्तिष्क रखना चाहिए। ऐसे भोजन का प्रभाव निश्चित रूप से बढ़ जाता है।

इसी प्रकार जब हम किसी भी रूप में किसी अन्य की सेवा करते हैं तो हमें वह कर्तव्य हृदय की गहराई और एकाग्र मन के साथ करना चाहिए। इससे हमारे कार्यों का प्रभाव बढ़ जायेगा और भविष्य के लिए हमें अधिक ताकत और उत्साह प्राप्त होगा।

ऋग्वेद मन्त्र 1.16.7

अयं ते स्तोमो अग्नियो हृदिस्पृगस्तु शन्तमः।

अथा सोमं सुतं पिब ॥७॥

अयम् – यह

ते – आपका

स्तोमः – परमात्मा की स्तुतियाँ, प्रशंसनीय कार्य

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

अग्रियः – प्रगतिशील

हृदिस्पृक अस्तु – हृदय को छूने वाले हों, गहरा संतोष देने वाले हों।

शन्तम् – शान्ति देने वाले

अथा – अतः

सोमम् – पदार्थ, ज्ञान, शुभ गुण तथा श्रेष्ठतायें

सुतम् – परमात्मा द्वारा उत्पन्न

पिब – पीओ

व्याख्या :-

अपने जीवन की गतिविधियों को दिव्य कैसे बनायें?

दिव्य जीवन का क्या परिणाम होता है?

जब भी हम किसी भौतिक पदार्थ या ज्ञान का प्रयोग करते हैं तो हमारे अन्दर यह चेतन भाव होना चाहिए कि सब कुछ परमात्मा के द्वारा दिया गया है। प्रत्येक पदार्थ और ज्ञान के लिए इस प्रकार की चेतना उसे सोम सुतम् अर्थात् परमात्मा द्वारा उत्पन्न किया हुआ ही सिद्ध कर देती है। इससे हमारे जीवन के प्रत्येक क्षण और प्रत्येक गतिविधि को दिव्य स्पर्श मिल जाता है।

इस प्रकार की चेतना के साथ ही परमात्मा के प्रति हमारी स्तुतियाँ और हमारे प्रशंसनीय कार्य निम्न परिणाम देते हैं :-

क) जीवन में प्रगतिशील उन्नति

ख) हृदयस्पर्शी गहरा संतोष

ग) पूर्ण शान्ति

जीवन में सार्थकता

जीवन में प्रगति, शान्ति और संतोष कैसे प्राप्त करें?

जीवन में प्रगति, शान्ति और संतोष प्राप्त करने के लिए हमें एक मूल वास्तविकता पर गहरी चेतना बनाकर रखनी चाहिए कि समस्त वस्तुएं तथा ज्ञान ईश्वर प्रदत्त हैं और हम भगवान के इन दिव्य उपहारों का केवल प्रयोग कर रह हैं। इस प्रकार हमें अहंकार रहित होकर जीने का प्रशिक्षण प्राप्त हो जायेगा। हम अपने कार्यों पर और अधिक एकाग्र होकर ध्यान केन्द्रित कर सकेंगे तथा सबके प्रति कल्याण की भावना धारण कर सकेंगे। हमारे व्यवहार और कार्यों में एक अच्छा बदलाव आयेगा, अच्छे परिणाम मिलेंगे।

हमारे परिवार में भी हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि धन सम्पत्तियाँ तथा अन्य साधन हमारे माता-पिता तथा पूर्वजों के द्वारा दिये गये हैं। लगातार चलने वाली यह चेतना हमारे वृद्धजनों के प्रति हमें सम्मान और श्रद्धा से भरपूर कर देगी। हम अहंकाररहित हो जायेंगे। केवल अपने स्वार्थ पर केन्द्रित न होकर हम पूरे परिवार के कल्याण पर ध्यान लगा सकेंगे।

इसी प्रकार किसी संस्था में कार्य करते हुए हमें इस तथ्य के प्रति चेतन रहना चाहिए कि इस संस्था का स्वामित्व तथा प्रबन्धन हमारे उच्च अधिकारियों के हाथ में है, जो हमारे ही कल्याण के लिए है। हमें अहंकाररहित रहकर और संस्था तथा उच्चाधिकारियों के प्रति समर्पण भाव से कार्य करना चाहिए।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

ऋग्वेद मन्त्र 1.16.8

विश्वमित्सवनं सुतमिन्द्रो मदाय गच्छति ।
वृत्रहा सोमपीतये ॥४॥

विश्वम् – सर्वकालिक, सब स्थानों पर
इत – निश्चित रूप से
सवनम् – महान् त्याग कार्य
सुतम् – उत्पन्न हुए परिणाम
इन्द्रः – सर्वोच्च नियंत्रक परमात्मा, सूर्य, इन्द्रियों पर नियन्त्रण करने वाला
मदाय – आनन्द के लिए
गच्छति – प्राप्त करता है
वृत्रहा – वृत्रों, अज्ञान तथा मेघ का नाशक
सोम – दिव्यताये
पीतये – संरक्षक

व्याख्या :-

त्यागमय जीवन के क्या परिणाम होते हैं?

जब एक व्यक्ति सत्य रूप में इन्द्र अर्थात् इन्द्रियों का नियंत्रक बन जाता है और महान् त्याग कार्यों का करता है तो निश्चित रूप से वह एक महान् आनन्दमयी अवस्था में पहुँच जाता है। तब वह अपनी अज्ञानमयी वृत्तियों का नाश करके अपनी दिव्यताओं का रक्षक बन जाता है। इस प्रकार से वह अपने त्यागमय जीवन द्वारा निम्न तीन परिणाम सुनिश्चित करता है :-

- क) महान् आन्तरिक आनन्द
- ख) अज्ञान वृत्तियों का नाश
- ग) दिव्यताओं का संरक्षक

जीवन में सार्थकता

किस प्रकार कुछ लोग महान् बन जाते हैं?

समस्त महान् व्यक्तियों के पीछे त्याग की एक प्रबल पृष्ठभूमि देखी जा सकती है। केवल त्याग ही व्यक्ति को महान् बनाते हैं।

एक व्यक्ति जो परिवार के सभी सदस्यों को प्रेम करने वाला, उनका ध्यान रखने वाला और उनके लिए त्याग करने वाला होता है, उसी को महान् समझा जाता है।

एक कर्मचारी जो ईमानदार हो, अपने कर्तव्यों प्रति समर्पित हो और संस्था के उत्थान के लिए हर प्रयास को करने के लिए तत्पर हो, उसे महान् समझा जाता है।

वे सामाजिक और धार्मिक नेता महान् समझे जाते हैं, जो लोगों के दुःख दर्दों को अपने ऊपर ले लेते हैं।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

ऋग्वेद मन्त्र 1.16.9

सेमं नः काममा पृण गोभिरश्वैः शतक्रतो ।
स्तवाम त्वा स्वाध्यः ॥१९॥

सः — वह (परमात्मा)

इमम् — इस

नः — हमारी

कामम् — इच्छा

अपृण — सर्वथा पूरी करे

गोभिः — ज्ञानेन्द्रियों के द्वारा

अश्वैः — कर्मेन्द्रियों के द्वारा

शतक्रतो — असंख्य कार्यों को सिद्ध करने वाला

स्तवाम — स्तुतियाँ, प्रशंसायें और पूजा

त्वा — आपकी

स्वाध्यः — एकाग्रतापूर्वक ध्यान

व्याख्या :-

हमारी मुख्य इच्छा क्या होनी चाहिए?

परमात्मा असंख्य कार्यों को सिद्ध करने वाला है। हमारे अन्दर ज्ञानेन्द्रियों और कर्मेन्द्रियों को प्रेरित करके वह हमारी इच्छाओं को पूर्ण करता है। हमारी प्रार्थना केवल एक विषय पर केन्द्रित होनी चाहिए — “एकाग्रतापूर्वक ध्यान करते हुए हम केवल आपकी ही पूजा करें (स्तवाम त्वा स्वाध्यः)”

जीवन में सार्थकता

क्रियात्मक रूप में कर्मफल सिद्धान्त क्या है?

हमारे चारों तरफ जो कुछ भी होता हुआ दिखायी देता है, वह वास्तव में परमात्मा के द्वारा ही होता है। परमात्मा असंख्य कार्यों को सिद्ध करने वाला है। हम तो कार्यों को करते हुए केवल दिखायी देते हैं, परन्तु वास्तविकता में परमात्मा ही हर कार्य का कर्ता है।

अपनी दिनचर्या की गतिविधियों को करते हुए हमें एकाग्रतापूर्वक ध्यान लगाकर उसकी पूजा अवश्य करनी चाहिए। अपने अस्तित्व रूपी अहंकार को अपने समस्त कृत्यों से अलग देखते हुए तथा परिणामों की इच्छा से भी अलग रखते हुए यह पूजा सम्भव होती है।

कर्म फल का यह मूल सिद्धान्त है — कर्ता भाव से पृथक रह कर हर कार्य को करो। अपनी आन्तरिक शक्ति को ध्यान के माध्यम से परमात्मा के साथ जोड़ दो।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

ऋग्वेद मण्डल-1 सूक्त 17

ऋग्वेद मन्त्र 1.17.1

इन्द्रावरुणयोरहं सम्राजोरव आ वृणे ।
ता नो मृळात ईदृशे ॥1॥

इन्द्रावरुणयोः — इन्द्र तथा वरुण का, सूर्य तथा वायु, जल और चन्द्रमा का, इन्द्रियों के नियन्त्रक इन्द्र तथा संकल्पवान व्यक्ति वरुण का
अहम् — मैं

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

सप्राजोः — ज्ञानवान् तथा उत्तम शासन वाले

अवः — रक्षण के लिए

आ वृणे — पूरी तरह से स्वीकार करता हूँ

ता — वे (दोनों इन्द्र तथा वरुण)

नः — हमें

मूलात — प्रसन्न तथा सुखी रखें

ईदृशे — विशाल प्रभाव वाले

व्याख्या :-

समस्त पदार्थों तथा सुख सुविधाओं के उपलब्ध कराने वाले कौन हैं?

हमारे रक्षक कौन हैं?

प्रत्येक अवस्था में हम प्रसन्न तथा सुविधाजनक कैसे रह सकते हैं?

मैं पूरी तरह से इन्द्र और वरुण के उत्तम तथा प्रकाशवान् शासन को अपने जीवन में स्वीकार करता हूँ। जो कि प्रत्येक अवस्था में हमारी रक्षा करता है। अपने विशाल प्रभाव से वह हमें सदैव प्रसन्न तथा सुविधाजनक रखता है।

वैज्ञानिक रूप से — इन्द्र का अर्थ सूर्य है, जल की शक्ति है तथा विद्युत शक्ति है। वरुण का अर्थ है वायु, जल तथा चन्द्रमा। इन्द्र तथा वरुण दोनों का सारे ब्रह्माण्ड पर शासन है। यह हमारी रक्षा सुनिश्चित करते हैं। इनके प्रभाव तथा प्रयोग इतने विशाल हैं कि वे प्रसन्नता और सुख सुविधाओं के समस्त कारणों का मूल हैं। प्रकृति की इन शक्तियों के बिना तो जीवन भी सम्भव न होता। अतः हमें इस पवित्र और प्राकृतिक दिव्य विज्ञान को तथा प्रकृति की इन दो शक्तियों के प्रकाशवान् एवं संरक्षण करने वाले शासन को परमात्मा की अनमोल भेंट की तरह पूर्णरूपेण स्वीकार कर लेना चाहिए।

आध्यात्मिक रूप से — इन्द्र तथा वरुण हम सबके भीतर विद्यमान हैं। इन्द्र का अर्थ है इन्द्रियों का नियन्त्रक। यदि कोई व्यक्ति अपनी इन्द्रियों पर पूर्ण नियन्त्रण स्थापित करने के लिए इस महान् शक्ति का विकास कर ले तो हमारा आध्यात्मिक विकास भी निश्चित रूप से तीव्र गति से होगा। वरुण का अर्थ है संकल्पवान् होगा। हमें अपने जीवन में अनेकों संकल्प धारण करने चाहिए, जिससे हमारा मन समस्त दिशाओं में भ्रमित होने से रुक जाये। संकल्पवान् होने से अपने निर्धारित लक्ष्य की तरफ एकाग्रचित्त प्रयासों के साथ अग्रसर होने की क्षमता बढ़ जाती है। इन्द्र और वरुण नामक यह दोनों लक्षण हमें शत्रुओं से अपनी रक्षा करने और अपना प्रकाशवान् तथा उत्तम शासन स्थापित करने में सहायता करते हैं। हमें उनका शासन पूरी तरह से स्वीकार कर लेना चाहिए। इन्द्र और वरुण लक्षण हमारे जीवन में बहुत विशाल प्रभाव पैदा कर देते हैं और हमें सदैव प्रसन्न तथा सुविधाजनक रखते हैं।

जीवन में सार्थकता

कलियुग अर्थात् अन्धकार का युग भी इन्द्र और वरुण का कुछ बिगड़ नहीं सकता।

विज्ञान के रूप में इन्द्र तथा वरुण समस्त प्राणियों के लिए भौतिकवादी सुखों और प्रसन्नताओं के लिए परमात्मा की एक महान् भेंट है।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

हमारे व्यक्तिगत लक्षण के रूप में इन्द्र और वरुण हमें प्रत्येक अवस्था में प्रसन्न तथा सुविधाजनक बना सकते हैं। हमें कोई भी विपत्ति या बाधा तंग नहीं कर सकती। यहाँ तक कि कलियुग भी उस व्यक्ति का कुछ नहीं बिगड़ सकता, जो इन्द्र और वरुण रूपी अपनी शक्तियों को ताकतवर बनाता है।

ऋग्वेद मन्त्र 1.17.2

गन्तारा हि स्थोऽवसे हवं विप्रस्य मावतः ।
धर्तारात्र चर्षणीनाम् ॥२॥

गन्तारा: — जानते हुए
हि — निश्चित रूप से
स्थ — है
अवसे — संरक्षण के लिए
हवम् — हमारी प्रार्थना और पुकार
विप्रस्य — विशेष रूप से पूर्ण
मावतः — ज्ञानी
धर्तारा — धारक
चर्षणीनाम् — श्रमशील तथा कड़ी मेहनत करने वाला

व्याख्या :-

कौन हमारी प्रार्थनायें सुनता है?
कौन हमारा रक्षण कर सकता है?
कौन हमें पूर्ण व्यक्तित्व प्रदान कर सकता है?
कौन हमें ज्ञानी बना सकता है?
कौन हमें श्रमशील तथा कड़ी मेहनत करने वाला बना सकता है?

इसी सूक्त के प्रथम मन्त्र की व्याख्या के अनुसार इन्द्र तथा वरुण दो सर्वशक्तिमान सत्तायें हैं। वे हमारे जीवन में तथा बाहर समूचे ब्रह्माण्ड में विद्यमान हैं। एक बार जब हम इन पर ध्यान एकाग्र करके इन्हें विकसित करते हैं तो वे निश्चित रूप से हमारी प्रार्थनाओं को हमारी अपनी आन्तरिक एवं व्यक्तिगत शक्ति के रूप में जानते हैं व सुनते हैं। यही हमारा रक्षण करने के लिए बाध्य हैं। यह हमें विशेष रूप से ज्ञानी तथा पूर्ण व्यक्तित्व बनाते हैं। इन्द्र तथा वरुण श्रमशील तथा कड़ी मेहनत करने वालों को धारण करते हैं।

यदि किसी को पूर्ण संरक्षण की आवश्यकता हो, यदि किसी को पूर्ण व्यक्तित्व बनना हो, यदि किसी को ज्ञानी पुरुण बनना हो तो उसे अपनी इन्द्रियों पर पूर्ण नियन्त्रण रखते हुए एक संकल्पवान पुरुष बनना चाहिए। यह दो लक्षण हमें कड़ी मेहनत वाला श्रमशील बना सकते हैं। तभी हम अपनी व्यक्तिगत शक्ति इन्द्र और वरुण के द्वारा संरक्षित हो पायेंगे, जो वास्तव में परमात्मा की ही दिव्य शक्तियाँ हैं।

जीवन में सार्थकता

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

जीवन की अनेक समस्याओं का समाधान – इन्द्र और वरुण बनो।
यदि आपको इन्द्र और वरुण की सहायता से संरक्षण की आवश्यकता है तो आपको स्वयं इन्द्र और वरुण बनना होगा।

ऋग्वेद मन्त्र 1.17.3

अनुकामं तर्पयेथामिन्द्रावरुण राय आ
ता वां नेदिष्ठमीमहे ॥३॥

अनुकामम् – इच्छाओं और गतिविधियों के लिए
तर्पयेथाम् (आ तर्पयेथाम्) – पूरी तरह से सन्तुष्ट
इन्द्रावरुण – इन्द्र तथा वरुण, सूर्य तथा वायु, जल और चन्द्रमा, इन्द्रियों के नियन्त्रक तथा संकल्पवान व्यक्ति

राय – गौरवशाली सम्पदा के साथ (भौतिक, मानसिक तथा आध्यात्मिक)

आ (तर्पयेथाम् से पूर्व लगाया गया)

ता – वे

वाम् – दोनों, इन्द्र तथा वरुण

नेदिष्ठम् – अत्यन्त निकट

ईमहे – इच्छा करते हैं और प्राप्त करते हैं।

व्याख्या :-

कौन हमारी इच्छाओं को सन्तुष्ट कर सकता है और कैसे?

इन्द्र तथा वरुण प्रकृति की दो सर्वोच्च शक्तियाँ होने के नाते हमारी सारी इच्छाओं और गतिविधियों को गौरवशाली सम्पदा के साथ सम्पन्न करते हैं। हमें उन्हें अपने निकट ही प्राप्त करना चाहिए। हमें प्रकृतियों की इन शक्तियों के अनेकों प्रयोगों पर अनुसंधान करना चाहिए, जिससे हमारी समस्त इच्छायें पूरी तरह से सन्तुष्ट हो सकें।

आध्यात्मिक रूप से हमें अपने व्यक्तिगत जीवन में इन्द्र अर्थात् इन्द्रियों के नियन्त्रक और वरुण अर्थात् संकल्पशीलता जैसे लक्षणों का विकास करने की आवश्यकता है और आध्यात्मिक प्रगति के लिए इन लक्षणों को मजबूती से धारण करना चाहिए। इन्द्र और वरुण लक्षण हमें पूर्ण व्यक्तित्व बना सकते हैं, जो हर प्रकार की सफलता को प्राप्त करने तथा परमात्मा की अनुभूति के पथ पर अग्रसर होने के लिए सक्षम हो।

जीवन में सार्थकता

इन्द्र तथा वरुण का अर्थ है क्रियात्मक दिव्य जीवन।

यदि हम क्रियात्मक रूप से अपने जीवन में इन्द्र और वरुण लक्षणों को संरक्षित कर लें तो स्वाभाविक रूप से हमारा जीवन दिव्य जीवन बन जायेगा। इन्द्र का अर्थ है अपनी ज्ञानेन्द्रियों जैसे आँखें, कान, त्वचा,

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

जिह्वा तथा नाक और कर्मन्दियों जैसे हाथ, पैर, जीभ, मल और मूत्र अंग पर पूर्ण नियन्त्रण करना। ऐसा संयमित व्यक्ति कभी भी किसी प्रकार का भी कोई गलत कार्य नहीं करेगा। इसी प्रकार वरुण का अर्थ है संकल्पवान् व्यक्ति। ऐसा व्यक्ति अपनी भूलों और गलत आदतों को तत्काल बदल लेता है, यदि वह एक बार उस भूल या गलती को स्वीकार कर ले और उसके त्याग का संकल्प कर ले।

ऋग्वेद मन्त्र 1.17.4

युवाकु हि शचीनां युवाकु सुमतीनाम् ।
भूयाम् वाजदानाम् ॥४॥

युवाकु – मिश्रित
हि – निश्चित रूप से
शचीनाम् – पवित्र मन, वाणी और कार्यों के माध्यम से
युवाकु – मिश्रित
सुमतीनाम् – महान् ज्ञानियों के साथ
भूयाम् – होना
वाजदानाम् – ज्ञान तथा भौतिक पदार्थों को देने वाला परमात्मा

व्याख्या :-

क्या हम भी भगवान के ज्ञान तथा पदार्थों के देने वाले बन सकते हैं?

भगवान के ज्ञान तथा पदार्थों के दाता बनने के लिए हमें निम्न दो लक्षणों को सुनिश्चित करना होगा :—
क) मन, वाणी और कर्मों की पवित्रता के साथ शत प्रतिशत मिश्रित हो जाना।

ख) परमात्मा के महान् ज्ञान तथा उसकी दिव्य प्रकृति और शक्तियों के साथ मिश्रित हो जाना।

पूर्ण रूप से पवित्रता ही आध्यात्मिक विकास की प्रथम शर्त है। पवित्र भोजन, पवित्र विचार, पवित्र व्यवहार तथा पवित्र कार्य ही आपको परमात्मा के प्रति सोचने, परमात्मा से प्रेम करने तथा परमात्मा और उसके प्रसाद के महान् ज्ञान की अनुभूति प्राप्त करने की योग्यता प्रदान करेंगे। इस सत्य ज्ञान की अनुभूति के लिए किसी शारीरिक अध्यापक या ग्रन्थों की आवश्यकता नहीं है। अनुभूति की यह प्रक्रिया अत्यन्त प्राकृतिक है। पवित्र जीवन के साथ परमात्मा पर ध्यान करना ही उसकी अनुभूति प्राप्त करने का एकमात्र मार्ग है। एक बार जब आप उस अनुभूति को प्राप्त कर लो, तभी आप उस अनुभूति से प्राप्त ज्ञान को अन्य लोग तक पहुँचा सकते हैं। यहाँ तक कि आपके शब्दों या लेखन के बिना भी केवल आपकी उपस्थिति आपके ज्ञान और प्रेरणाओं को अन्य लोगों तक पहुँचा देगी। अपने जीवन को पूरी तरह से शुद्ध और पवित्र बनाना ही सर्वोच्च पथ है। इसके लिए किसी कार्य को करने की आवश्यकता नहीं होती। इसके लिए केवल मात्र अपवित्रता से स्वयं को अलग रखने की आवश्यकता होती है।

जीवन में सार्थकता

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्रता तथा पूर्ण ज्ञान ही जीवन के किसी भी क्षेत्र में सफलता की दो सामूहिक शर्तें हैं।

पवित्रता तथा पूर्ण ज्ञान ही किसी भी व्यवसाय, समाज या राजनीतिक उन्नति के लिए भी दो सामूहिक शर्तें हैं। यदि आप पवित्र हैं तथा आपको अपने विषय का पूर्ण और गहरा ज्ञान है तो कोई भी ताकत आपकी प्रगति को रोक नहीं सकती, चाहे आपके आसपास कितना ही भ्रष्टाचार या अपवित्रता क्यों न हो?

ऋग्वेद मन्त्र 1.17.5

इन्द्रः सहस्रदानां वरुणः शंस्यानाम् ।

क्रतुर्भवत्युवर्थ्यः ॥५॥

इन्द्रः – सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा, सूर्य, इन्द्रियों का नियंत्रक
सहस्रदानाम् – असंख्य पदार्थों का देने वाला

वरुणः – परमात्मा, वायु, जल
शंस्यानाम् – प्रशंसनीय कार्यों और पदार्थों में उत्तम कर्ता

क्रतु – उत्तम कार्यों का कर्ता

भवति – होता है

उवर्थ्यः – शुद्ध जीवन के साथ ज्ञान तथा कार्यों में रत

व्याख्या :-

हमारे जीवन की गतिविधियों की मूल शक्ति क्या है?

वैज्ञानिक रूप से – इसमें कोई संदेह नहीं कि इन्द्र अर्थात् सूर्य के रूप में परमात्मा की सर्वोच्च शक्ति तथा उससे सम्बन्धित अन्य शक्तियाँ और वरुण अर्थात् वायु तथा जल असंख्य पदार्थों को देने वाली हैं। ये शक्तियाँ उत्तम रूप से अनेकों प्रशंसनीय कार्य करती हैं। ये शक्तियाँ हमारी हर गतिविधि में सहायक हैं। यहाँ तक कि ये शक्तियाँ हमारे जीवन की मूल शक्तियाँ हैं। अतः ये हमारी सब गतिविधियों की वास्तविक केन्द्रीय शक्तियाँ हैं।

बृहद आध्यात्मिक रूप से – इन्द्र तथा वरुण उस सर्वोच्च शक्तिमान परमात्मा के दो पहलू हैं, जो हर वस्तु का दाता है, जिससे हम उत्तम तथा प्रशंसनीय कार्यों को कर सकें। अतः परमात्मा ही समस्त श्रेष्ठ एवं उत्तम कार्यों का वास्तविक कर्ता है।

सूक्ष्म आध्यात्मिक रूप से – हमारे व्यक्तिगत जीवन में हम अपने शरीर की शक्तियों के साथ कार्य करते हैं। यदि हम इन्द्र को अपने जीवन में धारण करें और इन्द्रियों के नियंत्रक बन जायें एवं वरुण को धारण करें और दृढ़ संकल्प वाले बन जायें तो हम भी अपने जीवन में उत्तम कार्य कर पायेंगे। हमें पूरी पवित्रता के साथ महान् ज्ञान का अनुसरण करना चाहिए। यह तभी सम्भव है जब हम इन्द्र और वरुण को धारण करें।

जीवन में सार्थकता

क्या हम भी भावी पीढ़ियों के लिए मूल ऊर्जा बन सकते हैं?

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

जिस प्रकार आध्यात्मिक रूप से सृष्टि के समस्त जीवों के लिए परमात्मा इन्द्र तथा वरुण है, उसी प्रकार हमारे वृद्धजन हमारे उच्चाधिकारी आदि भी हमारे परिवार, समाज तथा व्यवसायों आदि में हमारे इन्द्र और वरुण बन सकते हैं क्योंकि वे हमें उत्तम कार्य करने के समस्त साधन, अपना संरक्षण तथा मार्गदर्शन उपलब्ध कराते हैं। यह हमारा निश्चित कर्तव्य होना चाहिए कि हम उनके सहयोग को समुचित सम्मान दें तथा शुद्धता के साथ ज्ञान का अनुसरण करें। भावी पीढ़ियों के लिए हम भी इन्द्र तथा वरुण बन सकते हैं। यदि हम अपनी ऊर्जा के साथ उनकी मूल जड़ों को मजबूत कर सकें।

ऋग्वेद मन्त्र 1.17.6

तयोरिदवसा वयं सनेम नि च धीमहि ।
स्यादुत प्रेरेचनम् ॥६॥

तयोः — उसके कारण

इत् — निश्चित रूप से

अवसा — उनकी शक्तियाँ तथा गुण

वयम् — हम

सनेम् — सेवन करने के योग्य

नि (धीमहि से पूर्व लगाकर)

च — और

धीमहि (नि धीमहि से पूर्व लगाकर) — भविष्य के लिए सुरक्षित रखें

स्यात् — सिद्ध करें

उत — भी

प्रेरेचनम् — दूसरों की प्रेरणा तथा कल्याण के लिए

व्याख्या :-

हमने समस्त ज्ञान एवं सम्पत्तियाँ किस प्रकार अर्जित की हैं?

उस ज्ञान और सम्पत्तियों का क्या उद्देश्य है?

निश्चित रूप से बृहद एवं सूक्ष्म स्तरों पर इन्द्र और वरुण की शक्तियों के कारण ही हम समस्त ज्ञान और सम्पत्तियों को अर्जित करने के योग्य बन पाते हैं। हम उन सभी अनुदानों का भोग करते हैं और कुछ राशि भविष्य के लिए भी बचाकर रखते हैं। उस बचत को अन्य लोगों की प्रेरणाओं और कल्याण के लिए प्रयोग करना चाहिए। इस सम्पत्ति का केवल उसके धारक के द्वारा अपने लिए या अपने परिवार के लिए ही प्रयोग नहीं होना चाहिए, परन्तु इससे अन्य लोगों को प्रेरणायें और उनका कल्याण भी होना चाहिए।

जीवन में सार्थकता

सम्पत्तियों और ज्ञान का सामाजीकरण ही उनकी अविरलता को निर्बाधित कर सकता है।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

हमारी समस्त सम्पत्तियाँ तथा ज्ञान केवल सर्वोच्च दिव्य शक्ति के दो पहलुओं, इन्द्र और वरुण, के कारण ही हैं। बिना किसी भेदभाव के केवल आवश्यकताओं के अनुसार इनका प्रयोग समाज में किया जाना चाहिए, जिससे इन दिव्य उपहारों के बल पर सामाजीकरण को प्रोत्साहन मिले। इस प्रकार अनेकों लोगों के लिए हम भी इन्द्र और वरुण बन सकते हैं। हमें पदार्थ, ज्ञान आदि देते हुए भगवान की भी यही भावना होगी। केवल इसी प्रक्रिया से इन्द्र और वरुण की शक्तियों को अविरल रूप से प्रवाहित करना सम्भव होगा।

ऋग्वेद मन्त्र 1.17.7

इन्द्रावरुण वामहं हुवे चित्रय राधसे ।
अस्मान्त्सु जिग्युषस्कृतम् ॥7॥

इन्द्रावरुण – बृहद तथा सूक्ष्म स्तरों पर दिव्य शक्तियाँ, सूर्य, वायु तथा जल, इन्द्रियों का नियन्त्रक तथा संकल्पशीलता

वाम् – इन दोनों को

अहम् – मैं

हुवे – स्वीकार करता हूँ, पुकारता हूँ।

चित्राय – प्रसिद्धि के लिए, सम्पत्तियों के लिए

राधसे – भिन्न-भिन्न गतिविधियाँ संचालित करने के लिए, सम्पत्तियों के लिए

अस्मान् – हमें

सुजिग्युषः – महान् विजेता

कृतम् – करो

व्याख्या :-

जीवन में सफलता का प्रधान कारण क्या है?

मैं परमात्मा की दोनों दिव्य शक्तियों, इन्द्र (सूर्य) तथा वरुण (जल) को बृहद स्तर पर पुकारता हूँ और आमन्त्रित करता हूँ, जिससे मैं स्वयं इन्द्रियों का नियन्त्रक और संकल्पवान बनकर सूक्ष्म स्तर पर इन्द्र और वरुण बन सकूँ। आध्यात्मिक स्तर पर यह दोनों शक्तियाँ अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं, जिनके बिना कोई भी प्रगति सम्भव नहीं। भौतिक जीवन में भी सम्पत्तियों से प्रसिद्धि तथा सामाजिक स्तर अर्जित करने और भिन्न-2 गतिविधियों के लिए भी ये दोनों अत्यन्त आवश्यक हैं। इन दोनों के साथ जीवन के किसी भी क्षेत्र में कोई भी व्यक्ति प्रगति प्राप्त कर सकता है।

जीवन में सार्थकता

वैज्ञानिक तथा आध्यात्मिक रूप से भी इन्द्र तथा वरुण ही हर स्थान पर सफलता के आधार हैं।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

प्रतिक्षण हमें केवल इन्द्र और वरुण पर ही ध्यान एकाग्र करना चाहिए, जिससे यह दोनों शक्तियाँ संरक्षित और विकसित हों। वैज्ञानिक और आध्यात्मिक दोनों दृष्टियों से जीवन के प्रत्येक कदम पर विजय प्राप्त करने के लिए इन दोनों शक्तियों का संरक्षण आवश्यक है।

ऋग्वेद मन्त्र 1.17.8

इन्द्रावरुण नू नु वां सिषासन्तीषु धीष्वा।
अस्मभ्यं शर्म यच्छतम् ॥४॥

इन्द्रावरुण – बृहद तथा सूक्ष्म स्तरों पर दिव्य शक्तियाँ, सूर्य, वायु तथा जल, इन्द्रियों का नियन्त्रक तथा संकल्पशीलता

नू – गति के साथ

नु – उद्देश्य के लिए

वाम् – ये दोनों

सिषासन्तीषु – उत्तम गतिविधियों के लिए

धीषु – बुद्धि में

अस्मभ्यम् – हमारे लिए

शर्म – प्रसन्नता और सुख देने वाले, दुःखों तथा कष्टों का नाश करने वाले

आयच्छतम् – सर्वत्र विस्तार करते हैं

व्याख्या :-

हम प्रसन्नताओं और सुविधाओं का जाल सर्वत्र किस प्रकार फैला सकते हैं?

सातवें मन्त्र की लय के अनुसार इस मन्त्र में भी इन्द्र और वरुण को पुकारने और धारण करने का निर्देश है, जिससे वे उत्तम गतिविधियों को करने के उद्देश्य से शीघ्रता के साथ हमारी बुद्धियों में आयें। ये शक्तियाँ हमें प्रसन्नतायें और सुख देने वाली हैं, दुःखों और कष्टों का नाश करने वाली हैं और अपने प्रभाव क्षेत्र को सर्वत्र फैलाने वाली हैं।

उत्तम गतिविधियों को करने के लिए जिस प्रकार हम साधनों की इच्छा करते हैं, मस्तिष्क में ज्ञान की इच्छा करते हैं, उसी प्रकार हमें चारों तरफ इन्द्र और वरुण के विस्तार की इच्छा करनी चाहिए। हम अपने साथ-साथ दूसरों के लिए भी प्रसन्नता और सुविधाओं की प्रार्थनायें करें। हम प्रत्येक व्यक्ति के लिए बृहद और सूक्ष्म स्तरों पर इन्द्र और वरुण से लाभान्वित होने की इच्छा करें।

ऐसी प्रार्थनाओं के बल पर ही प्रसन्नता और सुविधाओं का जाल चारों तरफ फैल सकेगा। इन्द्र और वरुण की शक्तियाँ स्वयं को सब तक पहुँचाने में कोई भेदभाव नहीं करती। इससे यह सिद्ध होता है कि दिव्यता कभी भी भेदभाव नहीं करती है। केवल मानवीय स्वार्थों के कारण ही लोगों के पास या तो आवश्यकता से अधिक है या आवश्यकता से कम, परन्तु यह निश्चित है कि ये दोनों अवस्थायें रोग पैदा करती हैं। इसी प्रकार आवश्यकता से अधिक और आवश्यकता से कम के बीच की दूरी ही अपराधों का भी कारण है।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

जीवन में सार्थकता

क्या दिव्यता भेदभाव करती है?

दिव्यता बिल्कुल भी भेदभाव नहीं करती है। एक दिव्य व्यक्ति बनो, आप भी कभी भेदभाव नहीं करेंगे। भेदभाव के कारण ही आवश्यकता से अधिक या आवश्यकता से कम वालों की श्रेणियाँ बनती हैं और दोनों ही समस्याओं की जननी हैं। इसलिए हमें बृहद तथा सूक्ष्म स्तरों पर इन्द्र और वरुण की शक्तियाँ अर्जित करके सबके कल्याण के लिए उनके विस्तार का साहस करना चाहिए।

ऋग्वेद मन्त्र 1.17.9

प्र वामश्नोतु सुष्टुतिरिन्द्रावरुण यां हुवे ।

यामृधाथे सधस्तुतिम् ॥९ ॥

प्र (श्नोतु) के बाद लगाकर

वाम – आप दोनों

श्नोतु (प्र श्नोतु) – अत्यन्त व्याप्त

सुष्टुतिः – स्तुति के योग्य

इन्द्रावरुण – बृहद तथा सूक्ष्म स्तरों पर दिव्य शक्तियाँ, सूर्य, वायु तथा जल, इन्द्रियों का नियन्त्रक तथा संकल्पशीलता

याम् – जिसको

हुवे – मैं ग्रहण करता हूँ

याम् – जो

ऋधाथे – बढ़ाते हैं

सधस्तुतिम् – यश और सुकीर्ति के साथ सुख सुविधायें

व्याख्या :-

हम इन्द्र और वरुण जैसी दिव्य शक्तियों की सर्वोच्चता क्यों स्वीकार करें?

इन्द्र और वरुण हर दृष्टिकोण से परमात्मा की दो दिव्य शक्तियाँ हैं। ये शक्तियाँ सर्वत्र व्याप्त हैं और स्तुति के योग्य हैं, जिन्हें मैं स्वीकार और ग्रहण करता हूँ। यह दो शक्तियाँ प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में यश और सुकीर्ति के साथ सुख सुविधायें बढ़ाती हैं।

अतः यह हमारा नैतिक दायित्व है कि हम परमात्मा के प्रति ऋणी महसूस करें, जो इन दो अत्यन्त महत्वपूर्ण शक्तियों का निर्माता तथा उपलब्ध कराने वाला है। इन शक्तियों के बिना स्थायी शान्ति के साथ एक सुविधाजनक जीवन की कल्पना ही असम्भव है। यह शक्तियाँ समाजवाद का दृढ़ आधार हैं। अतः इन शक्तियों पर आधारित जीवन निश्चित रूप से यश और सुकीर्ति से भरपूर होगा।

जीवन में सार्थकता

परमात्मा की वास्तविक और क्रियात्मक पूजा क्या है?

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

अपने जीवन में चहुमुखी विकास के लिए इन्द्र और वरुण रूपी शक्तियों की अनुभूति करो।

सर्वोच्च दिव्य शक्ति, परमात्मा, की पूजा प्रतिदिन किये जाने वाला कोई धार्मिक अनुष्ठान मात्र नहीं है। वास्तविक और सच्ची पूजा तो अपने जीवन में प्रतिदिन और प्रतिक्षण उसकी दिव्य शक्तियों, इन्द्र और वरुण, की अनुभूति तथा उन पर एकाग्रतापूर्वक ध्यान करने से होगी। उसी से हम परमात्मा के साथ अपने जीवन की एकात्मता बना कर इस जीवन का श्रेष्ठ और सर्वोत्तम उपयोग सुनिश्चित कर सकते हैं। यह दो शक्तियाँ समस्त प्राणियों का चहुमुखी विकास तथा संरक्षण सुनिश्चित करती हैं, विशेष रूप से हम मानवों का क्योंकि हम अपने भीतर इन्द्र और वरुण को विकसित करने के लिए विशेष प्रयास कर सकते हैं।

सूक्ष्म स्तर पर इन्द्र और वरुण की शक्ति हमारा आध्यात्मिक विकास सुनिश्चित करती है।

बृहद स्तर पर इन्द्र और वरुण की शक्ति हमारा भौतिक विकास सुनिश्चित करती है।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

ऋग्वेद मण्डल-1 सूक्त 18

ऋग्वेद मन्त्र 1.18.1

सोमानं स्वरणं कृणुहि ब्रह्मणस्पते ।
कक्षीवन्तं य औशिजः ॥ १ ॥

सोमानम् – त्याग रूपी यज्ञ, दयालु हृदय, सोम अर्थात् शुभ गुणों जैसे श्रेष्ठता, नैतिकता तथा महान् ज्ञान का रक्षक,

स्वरणम् – उत्तम एवं श्रेष्ठ वाणी

कृणुहि – मुझे कीजिए, बनाईये

ब्रह्मणस्पते – परमात्मा, ब्रह्माण्ड का रक्षक

कक्षीवन्तम् – अपनी धुरी पर दृढ़ निश्चय वाला, अपने विषय का विशेषज्ञ

यः – जो मैं

औशिजः – महान् विद्वान् के पुत्रवत तथा महान् ज्ञान के प्रकाश के रूप में विश्वविख्यात

व्याख्या :-

किन लक्षणों के आधार पर आप महान् ज्ञान के प्रकाश के रूप में सुविख्यात हो सकते हैं?

ब्रह्माण्ड के रक्षक परमात्मा को एक विनम्र प्रार्थना की जा रही है, जो किसी भौतिक पदार्थ के लिए नहीं है। इस प्रार्थना में हम तीन लक्षणों की कामना करते हैं :–

क) सोमानम् – त्याग रूपी यज्ञ, दयालु हृदय, सोम अर्थात् शुभ गुणों जैसे श्रेष्ठता, नैतिकता तथा महान् ज्ञान का रक्षक।

ख) स्वरणम् – उत्तम एवं श्रेष्ठ वाणी, सरस्वती के समान सबके लिए कोमल और लाभदायक।

ग) कक्षीवन्तम् – अपनी धुरी पर दृढ़ निश्चय वाला, अपने विषय के विशेषज्ञ के रूप में कार्य करने वाला।

इन लक्षणों का उद्देश्य स्वयं को महान् विद्वान् के पुत्र के रूप में बनना तथा सबके बीच में महान् ज्ञान के प्रकाश के रूप में सुविख्यात होना है।

जीवन में सार्थकता

महान् व्यक्तित्व, परमात्मा के पुत्र की तरह बनने के लिए प्रार्थना तथा कार्य करना।

हम परमात्मा से प्रार्थना करते हैं और उस प्रार्थना के अनुसार कार्य करते हैं, जिससे हम बहुत सामान्य परन्तु महान् लक्षणों को धारण करते हुए एक महान् व्यक्तित्व के पुत्र की तरह जाने जा सकें।

(क) त्याग करने वाले तथा दयालु हृदय,

(ख) उत्तम तथा मधुर वाणी वाले

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

(ग) दृढ़ निश्चयी तथा अपने क्षेत्र के विशेषज्ञ

एक बार जब आप एक महान् व्यक्तित्व के पुत्र की तरह सोचना प्रारम्भ करते हैं और वैसा ही मानकर कार्य करने लगते हैं तो आप भी समूचे विश्व में महान् ज्ञान के प्रकाश के रूप में जाने जाओगे।

ऋग्वेद मन्त्र 1.18.2

यो रेवान् यो अमीवहा वसुवित्पुष्टिवर्धनः।

स नः सिषक्तु यस्तुरः॥२॥

यो – जो

रेवान् – ज्ञान का धनी

यो – जो

अमीवहा – अज्ञानता, शत्रुओं और रोगों का नष्ट करने वाला

वसुवित् – सबका निवास, सबका ज्ञाता

पुष्टिवर्धनः – शरीर, बुद्धि तथा आत्मा के बल को बढ़ाने वाला

सः – वह

नः – हमें

सिषक्तु – संयुक्त करे, मिश्रित करे

यः – जो

तुरः – चौथी अवस्था अर्थात् तुरिया अवस्था में रहने वाला, शरीर, मन और आत्मा से परे, हमारी कमियों को दूर करने वाला, तीव्र गति से कार्य करने वाला

व्याख्या :-

जिस परमात्मा के साथ हम मिश्रित होना चाहते हैं, उसके कौन से लक्षण हैं?

(क) रेवान् – ज्ञान का धनी

(ख) अमीवहा – अज्ञानता, शत्रुओं और रोगों को नष्ट करने वाला

(ग) वसुवित् – सबका निवास, सबका ज्ञाता

(घ) पुष्टिवर्धनः – शरीर, बुद्धि तथा आत्मा के बल को बढ़ाने वाला

(ड.) तुरः – चौथी अवस्था अर्थात् तुरिया अवस्था में रहने वाला, शरीर, मन और आत्मा से परे, हमारी कमियों को दूर करने वाला, तीव्र गति से कार्य करने वाला

यह समस्त लक्षण ब्रह्माण्ड की सर्वोच्च सत्ता अर्थात् परमात्मा में पाये जाते हैं। हमें केवल परमात्मा की प्रशंसा, स्तुति करने, उसके अनुदान के लिए उसका धन्यवाद करने या किसी भी रूप में उसकी पूजा करने या उसे गहराई से जानने मात्र से ही संतुष्ट नहीं रहना चाहिए। हमें इसके लिए कड़ा प्रयास करना चाहिए कि हम उसके साथ मिश्रित हो जायें, अपने शरीर, मन और आत्मा के स्तरों को भुलाकर उसके साथ पूर्ण एकता का अनुभव कर सकें। उसके साथ मिश्रित होना हमारी संगति और उस परमात्मा की अनुभूति का लक्षण होना चाहिए।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

जीवन में सार्थकता

समाज के नेता, माता-पिता तथा गुरु किस प्रकार हमारे व्यक्तिगत भगवान हो सकते हैं?

हमें प्रार्थना करनी चाहिए कि हमारे नेता, माता-पिता तथा गुरु निम्न लक्षणों वाले हों :-

- (क) सत्य ज्ञान के धनी,
- (ख) अज्ञानता, शत्रुओं और रोगों के नाशक,
- (ग) हमारे बारे में सब कुछ जानने वाले,
- (घ) हमारे बल को बढ़ाने वाले,
- (ड.) सांसारिक कमजोरियों से रहित तथा हर क्षेत्र में क्रियाशील।

केवल ऐसे ही नेता, माता-पिता तथा गुरु मिश्रित होने के योग्य होते हैं और व्यक्तिगत भगवान से कम नहीं होते। हमें उनके जीवन के एक-एक लक्षण का अनुसरण करना चाहिए, जिससे हम दोनों आत्माओं के मिश्रित होने की अनुभूति प्राप्त कर सकें और अपने जीवन का भरपूर लाभ एवं आनन्द उठा सकें।

ऋग्वेद मन्त्र 1.18.3

मा नः शंसो अररुषो धूर्तिः प्रणङ् मर्त्यस्य।
रक्षा णो ब्रह्मणस्पते ॥३॥

मा – नहीं

नः – हमारे

शंसः – प्रशंसनीय कार्य तथा व्यवहार

अररुषः – अधार्मिक

धूर्तिः – विनाशकारी, भ्रष्ट

प्रणङ् – हमारे से पृथक

मर्त्यस्य – विनाश के योग्य पदार्थों की इच्छा करने वाले

रक्ष – रक्षा करो

नः – हमारी

ब्रह्मणस्पते – ब्रह्माण्ड के रक्षक, परमात्मा

व्याख्या :-

हमारी सकारात्मक प्रार्थना क्या होनी चाहिए?

नकारात्मकताओं से सुरक्षा के लिए हमारी क्या प्रार्थना होनी चाहिए?

परमात्मा से केवल एक सकारात्मक प्रार्थना – मा नः शंसः प्रणङ्, अर्थात् मेरे प्रशंसनीय कार्यों और व्यवहारों को मेरे जीवन से प्रथक न करना।

ब्रह्माण्ड के रक्षक परमात्मा से निम्न तीन नकारात्मकताओं से सुरक्षा के लिए प्रार्थनायें :-

- (क) अररुषः – अधार्मिक

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

(ख) धूर्ति: – विनाशकारी, भ्रष्ट

(ग) मर्त्यस्य – विनाश के योग्य पदार्थों की इच्छा करने वाले

परमात्मा की इच्छा के बिना हमारे सकारात्मक कार्य भी सम्भव नहीं हैं। इसलिए हमें केवल एकमात्र सकारात्मक प्रार्थना से ही परमात्मा का आशीर्वाद प्राप्त करना चाहिए कि वह हमें सदैव प्रशंसनीय कार्यों और व्यवहारों में लगाये रखे। इसी प्रकार अपने आपको नकारात्मक प्रवृत्तियों से संरक्षित करने के लिए हमें परमात्मा के संरक्षण की ही आवश्यकता है कि वह हमें नकारात्मक लोगों और लक्षणों से बचाकर रखे और उनसे बिल्कुल प्रथक रखे। जब हमारे जीवन का अस्तित्व ही पूरी तरह सर्वोच्च पिता पर निर्भर है तो हम अपने जीवन में किसी भी अच्छाई के बारे में उसकी इच्छा के बिना सोच ही नहीं सकते। हमारे कार्य तथा उनके फल अर्थात् कर्म और फल दोनों ही परमात्मा पर निर्भर हैं।

जीवन में सार्थकता

एक महान् आध्यात्मिक जीवन के लिए या अत्यन्त सामान्य प्रसन्न और श्रेष्ठ जीवन के लिए हमें परमात्मा से प्रार्थना करनी चाहिए कि वह हमारे अन्दर सकारात्मकता को विकसित करे और समस्त नकारात्मकताओं और बुरी प्रवृत्तियों से हमारी रक्षा करे।

ऋग्वेद मन्त्र 1.18.4

स घा वीरो न रिष्यति यमिन्द्रो ब्रह्मणस्पतिः।
सोमो हिनोति मर्त्यम् ॥४॥

सः – वह

घा – निश्चय से

वीरः – वीर (शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने वाला)

न – नहीं

रिष्यति – नष्ट होता

यम – जो

इन्द्रः – सर्वोच्च नियन्त्रक

ब्रह्मणस्पतिः – परमात्मा, ब्रह्माण्ड का रक्षक

सोमः – प्राकृतिक वनस्पतियां तथा दिव्य गुण

हिनोति – बढ़ाता है

मर्त्यम् – मरने योग्य

व्याख्या :-

मनुष्य जो मरने के योग्य है, वह कैसे अनाशवान हो सकता है?

एक वीर पुरुष कभी भी नहीं मरता, क्योंकि वह अपने शत्रुओं पर विजय प्राप्त कर लेता है और ब्रह्माण्ड का रक्षक एवं सर्वोच्च नियन्त्रक उसे सदैव प्राकृतिक वनस्पतियों तथा दिव्य गुणों के साथ आगे बढ़ाता है।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

अतः इस वास्तविकता के साथ कि प्रत्येक व्यक्ति शारीरिक रूप से मरने योग्य है, परन्तु एक वीर आत्मा मुक्ति के दिव्य स्तर तक उठता जाता है और पुनः जन्म एवं मृत्यु का कारण नहीं बनता।

इसका अभिप्राय यह है कि मुक्ति का स्तर प्राप्त करने के लिए हमें निम्न लक्षण धारण करने चाहिए :—

(क) वीर अर्थात् अपने सब शत्रुओं पर विजय प्राप्त करना। विशेष रूप से अपने भीतरी मानसिक और आध्यात्मिक शत्रुओं पर जैसे वासना, गुस्सा, लालच तथा राग आदि।

(ख) सोम के साथ जीना दिव्य गुणों अर्थात् प्राकृतिक भोजन, दिव्य गुण आदि क्योंकि परमात्मा ने इन्हीं को रक्षा के बल के रूप में निर्धारित किया है।

जीवन में सार्थकता

वीर पुरुष का संरक्षण परमात्मा करते हैं।

परमात्मा का संरक्षण हमें वीर बना देता है।

यह एक सर्वमान्य नियम है कि जब एक व्यक्ति अपने मानसिक शत्रुओं पर विजय प्राप्त करके वीर बन जाता है तो परमात्मा समस्त सोम आदि प्राकृतिक भोजन और दिव्य गुणों के साथ उसकी रक्षा करते हैं। इसके विपरीत जब किसी व्यक्ति की रक्षा परमात्मा के आशीर्वाद से प्राकृतिक भोजन और दिव्य गुणों से होने लगती है तो वह वीर बन जाता है और अपने समस्त मानसिक शत्रुओं पर विजय प्राप्त कर लेता है।

ऋग्वेद मन्त्र 1.18.5

त्वं तं ब्रह्मणस्पते सोम इन्द्रश्च मर्त्यम्।

दक्षिणा पात्वंहसः । १५ ॥

त्वम् — आप

तम् — उस

ब्रह्मणस्पते — परमात्मा, ब्रह्माण्ड का रक्षक

सोम — प्राकृतिक वनस्पतियाँ तथा दिव्य गुण

इन्द्रः — इन्द्रियों का नियंत्रक

च — एवं

मर्त्यम् — मरने के योग्य

दक्षिणा — दान तथा त्याग

पातु — रक्षण करो

अहसः — पाप से

व्याख्या :-

परमात्मा पापों से हमारी रक्षा कैसे करते हैं?

ब्रह्माण्ड के रक्षक परमात्मा निम्न प्रकार से पापों से हमारी रक्षा करते हैं।

(क) सोम अर्थात् प्राकृतिक भोजन तथा अपने दिव्य गुण हमें देकर,

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

(ख) हमें इन्द्र बनाकर अर्थात् अपनी इन्द्रियों पर पूर्ण नियन्त्रण करने योग्य बनाकर,
(ग) हमें अपने दान और त्याग शक्ति की दक्षिणा देकर।
सोम अर्थात् प्राकृतिक भोजन तथा दिव्य गुण हमारी शारीरिक और मानसिक रक्षा करते हैं। इन्द्र और दक्षिणा के लक्षण हमारी आध्यात्मिक रक्षा करते हैं।

जीवन में सार्थकता

अपनी आन्तरिक दिव्यता से जुड़ने पर हमें परमात्मा का आशीर्वाद प्राप्त होता है।
क) सोम अर्थात् प्राकृतिक भोजन तथा दिव्य गुणों को ग्रहण करने वाला कभी पाप नहीं करता।
(ख) इन्द्रियों पर प्रभावशाली नियन्त्रण रखने वाला कभी पाप नहीं करता।
(ग) जो व्यक्ति अपनी वस्तुओं को दान में देने के लिए या त्याग के लिए सदैव तत्पर रहता है, वह कभी पाप नहीं करता।

यदि हम अपने जीवन में क्रियात्मक रूप से इन तीन लक्षणों को स्वीकार कर लें और रथायी रूप से धारण कर लें तो हम सदैव स्वयं को पापों से दूर रख पायेंगे। अपनी भीतरी दिव्यता से सम्बन्ध बनाये बिना हमें न तो परमात्मा का आशीर्वाद प्राप्त होगा और न ही हम इन लक्षणों को धारण कर पायेंगे।

ऋग्वेद मन्त्र 1.18.6

सदस्स्पतिमभुतं प्रियमिन्द्रस्य काम्यम् ।
सनिं मेधामयासिषम् ॥६॥

सदस्स्पतिम् – न्याय का सर्वोच्च रक्षक, परमात्मा
अभुतम् – अद्भुत (परमात्मा)
प्रियम् – प्रेम करने योग्य
इन्द्रस्य – इन्द्रियों के नियन्त्रण करने वाले से
काम्यम् – कामना करने योग्य
सनिम् – प्रत्येक कार्य का समुचित फल देने वाली सर्वोच्च सत्ता
मेधाम् – महान् बुद्धिमान
अयासिषम् – अनुभूति प्राप्त हो और उसके साथ एकात्मता हो।

व्याख्या :-

इन्द्रियों पर नियन्त्रण रखने वाला किस प्रकार महान् बुद्धि प्राप्त करता है और परमात्मा की अनुभूति प्राप्त करता है?

न्याय का सर्वोच्च रक्षक परमात्मा तथा उसकी शक्तियाँ और उसकी सृष्टि अद्भुत है। न्याय की रक्षा के लिए उसके पास प्रत्येक कार्य का फल देने की सर्वोच्च शक्ति है। जब एक व्यक्ति अपनी इन्द्रियों पर पूर्ण नियन्त्रण स्थापित करने के बाद इन्द्र बन जाता है तो वह केवल परमात्मा से ही प्रेम करता है और उसी की

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

इच्छा करता है। इस प्रकार वह उसकी महान् और दिव्य बुद्धि प्राप्त करने की प्रार्थना करता है, जो उसे परमात्मा की अनुभूति और परमात्मा के साथ एकात्मता के रूप में प्राप्त होती है।

केवल एक इन्द्र ही अपनी इन्द्रियों पर पूर्ण नियन्त्रण कर सकता है। उसकी कोई भौतिक इच्छायें शेष नहीं रहतीं। वह केवल परमात्मा से प्रेम करता है और परमात्मा की ही इच्छा करता है। परमात्मा के साथ दीर्घ काल तक चलने वाले मित्र सम्बन्ध को प्राप्त करने के लिए वह परमात्मा की अनुभूति और एकात्मता के माध्यस से दिव्य और महान् बुद्धि की प्रार्थना करता है।

जीवन में सार्थकता

बुद्धि की एकात्मता से ही प्रत्येक सम्बन्ध दीर्घकालिक होता है।

हमारे परिवार और सामाजिक सम्बन्धों में भी जब हम दो बुद्धियों में एकता स्थापित कर लेते हैं और प्रसन्नतापूर्वक उसे स्वीकार कर लेते हैं तो हमारा यह सम्बन्ध दो शरीरों में एक मस्तिष्क की तरह प्रतीत होता है। यह नियम किसी भी सम्बन्ध में लगाया जा सकता है। मस्तिष्क की एकता से दीर्घकालिक और मधुर सम्बन्ध सुनिश्चित होते हैं, जिनमें मतभेद और विवाद नहीं होते। इस एकता को प्राप्त करने के लिए हमें अपनी व्यक्तिगत इच्छाओं का त्याग करना होता है, दूसरे व्यक्ति को अपना प्रेम देना होता है और उसके कल्याण की कामना करनी होती है।

ऋग्वेद मन्त्र 1.18.7

यस्मादृते न सिध्यति यज्ञो विपश्चितश्चन ।
स धीनां योगमिन्वति ॥७॥

यस्मात् – जिस

ऋते – के बिना

न – नहीं

सिध्यति – सफल, सिद्ध होना

यज्ञः – उसकी सृष्टि, त्याग कार्य

विपश्चितः – अनन्त ज्ञान और शक्ति

च नः – और नहीं

सः – वह

धीनाम् – बुद्धि तथा कार्य

योगम् – संयुक्त रूप से, मिलकर

इन्वति – व्याप्त

व्याख्या :-

परमात्मा किस प्रकार सबके लिए न्याय देता है।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

परमात्मा ने अपने अनन्त ज्ञान और शक्ति के साथ एक यज्ञ के रूप में इस सृष्टि की रचना की। इस सृष्टि में उसके बिना कुछ भी सिद्ध या सफल नहीं हो सकता क्योंकि वह प्रत्येक व्यक्ति के कार्यों तथा बुद्धियों में व्याप्त है। इसका अर्थ यह है कि वह प्रत्येक व्यक्ति को अन्दर और बाहर से जानता है। इस सर्वज्ञान की शक्ति के कारण ही वह न्याय का सर्वोच्च दाता बन जाता है। वह न्यायाधीश भी है और दृष्टा अर्थात् गवाह भी स्वयं ही है। यह मन्त्र कर्मफल सिद्धान्त का एक मजबूत आधार है।

जीवन में सार्थकता

किस प्रकार हम पापरहित जीवन जी सकते हैं?

हमें सदैव इस सत्य के प्रति चेतन रहना चाहिए कि परमात्मा हमारी बुद्धियों और कार्यों दोनों में व्याप्त है। वह हमारे कार्यों, हमारी वाणी और यहाँ तक कि हमारे विचारों तक का भी गवाह है। इस चेतनता के साथ ही हम विचारों, वाणी और कार्यों में एक शुद्ध जीवन बिता सकते हैं। केवल यही चेतनता हमारे जीवन को पूरी तरह से पापरहित कर सकती है।

ऋग्वेद मन्त्र 1.18.8

आदृध्नोति हविष्कृतिं प्राप्तं कृणोत्यध्वरम्।
होत्र देवेषु गच्छति ॥८॥

आत् – अहंकाररहित

ऋध्नोति – बढ़ाते हैं

हविष्कृतिम् – त्याग की आहुतियाँ

प्राप्तम् – सब स्थानों तथा सब जीवों में व्याप्त

कृणोति – करते हैं

अध्वरम् – पापरहित कार्य

होत्रा – त्याग के परिणाम

देवेषु – दिव्य गुणों में

गच्छति – प्राप्त होता है।

व्याख्या :-

हमारे कार्य किस प्रकार दिव्य बन सकते हैं?

अपने कार्य को दिव्य बनाने की यात्रा केवल तीन कदमों की है :-

(क) आहुतियाँ देते समय या त्याग करते समय हमें केवल इस बात की अनुभूति रखनी चाहिए कि प्रत्येक वस्तु का देने वाला तथा प्रत्येक कार्य का करने वाला केवल परमात्मा ही है। ऐसे अहंकार रहित त्याग कई गुना बढ़ जाते हैं और अनेकों लोग बिना संकोच के उनका लाभ उठाते हैं।

(ख) क्योंकि परमात्मा हर स्थान पर एवं हर कार्य में व्याप्त है और वह हमारे अहंकार रहित जीवन को देखकर हमारे कार्यों को दोषरहित तथा शुद्ध बना देता है।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



(ग) ऐसे अहंकार रहित और दोष रहित कार्य दिव्यता में मिश्रित हो जाते हैं और स्वयं ही दिव्य बन जाते हैं।

जीवन में सार्थकता

अहंकार हमारे कर्मों की यात्रा को किस प्रकार नष्ट कर देता है?

किसी त्याग के साथ यदि अहंकार या अहसान करने की भावना जुड़ी हो तो वह किसी भी रूप में कोई त्याग नहीं है। ऐसे अहंकारी त्यागों को केवल कुछ जरूरतमंद मजबूर लोंग ही बिना मर्यादा के स्वीकार करेंगे। ऐसे अहंकारी कार्यों को दोषरहित और शुद्ध नहीं माना जा सकता, इसलिए इन्हें दिव्यता स्वीकार नहीं करती। इस प्रकार अहंकार हमारे कर्मों की यात्रा को नष्ट कर देते हैं।

ऋग्वेद मन्त्र 1.18.9

नराशंसं सुधृष्टममपश्यं सप्रथस्तमम् ।

दिवो न सद्यमखसम् ॥१९॥

नराशंसम् – सब मनुष्यों के द्वारा प्रशंसनीय

सुधृष्टमम् – ब्रह्माण्ड को संकल्पपूर्वक धारण करने वाला, बुराईयों का नाशक

अपश्यम् – परमात्मा की अनुभूति (बुद्धि में)

सप्रथस्तमम् – सर्वत्र व्यापक

दिवो न – प्रकाश की तरह

सद्यमखसम् – जिसमें समूचा विश्व निवास करता है, अर्थात् जड़ और चेतन सबका आवास

व्याख्या :-

उस परमात्मा की क्या प्रकृति है, जिसकी हम अनुभूति प्राप्त करना चाहते हैं?

जब हमारे अहंकार रहित और दोष रहित कार्य दिव्यता में मिश्रित हो जाते हैं तो हम ध्यानावस्था में ज्ञान के प्रकाश के रूप में परमात्मा की अनुभूति प्राप्त करने योग्य बन सकते हैं।

(क) नराशंसम् – सब मनुष्यों के द्वारा प्रशंसनीय

(ख) सुधृष्टमम् – ब्रह्माण्ड को संकल्पपूर्वक धारण करने वाला, बुराईयों का नाशक

(ग) सप्रथस्तमम् – सर्वत्र व्यापक

(घ) सद्यमखसम् – जिसमें समूचा विश्व निवास करता है, अर्थात् जड़ और चेतन सबका आवास

परमात्मा की अनुभूति प्राप्त करने के नियम इस बात का आधार हैं कि हमें क्या अनुभूति होगी। यह मन्त्र सर्वोच्च सत्ता के चार लक्षणों को स्पष्ट करता है, जिसकी हम अनुभूति प्राप्त करना चाहते हैं, यदि वह सर्वोच्च सत्ता हमें आशीर्वाद दे तो। हमें परमात्मा के यह चार लक्षण सदैव ध्यान में रखने चाहिए। यह चेतनता निश्चित रूप से हमारी बुद्धि को उस सर्वोच्च परमात्मा की सत्य प्रकृति पर ध्यान लगाने में सहायक होगी और यह ध्यान गलत मार्गदर्शन वाला या निरर्थक नहीं होगा।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

प्रथम लक्षण नराशंसम् सिद्ध करता है कि सभी महान् शुद्ध और अनुभूति प्राप्त आत्मायें केवल उसी सर्वोच्च शक्तिमान परमात्मा की प्रशंसा करती हैं।

अन्य तीनों लक्षणों में सर्वविद्यमानता का लक्षण विद्यमान है, अर्थात् वह हमारे भीतर तथा बाहर सब जगह है —

- (क) संकल्पवान धारक का अर्थ है कि वह हम सबको अपने दृढ़ संकल्प से ही धारण करता है।
- (ख) सर्वत्र व्याप्त होने का अर्थ है कि वह सृष्टि में प्रत्येक वस्तु को आच्छादित करता है।
- (ग) जिसमें समूचा संसार आवास करता है अर्थात् प्रत्येक व्यक्ति उसके भीतर है।

जीवन में सार्थकता

लोग आपकी महानता की अनुभूति कैसे प्राप्त कर सकते हैं?

जिस प्रकार परमात्मा की अनुभूति प्राप्त करने का एक सामान्य अभ्यास निश्चित रूप से एक अच्छे मानव जीवन को सुनिश्चित करता है।

आध्यात्मिक रूप से, ध्यानावस्था में, हमें भगवान के केवल एक लक्षण पर अपना ध्यान केन्द्रित करना चाहिए कि वह हमसे भिन्न होने योग्य नहीं है। हमारे सामान्य जीवन में भी परमात्मा के साथ एकता का विचार हमें अपनी चेतनता में रखना चाहिए। प्रत्येक व्यक्ति और वस्तु के भीतर एवं बाहर वह विद्यमान है। परमात्मा के साथ एकता का भाव एवं उसकी सर्वविद्यमानता के प्रति चेतनता चारों तरफ हमारे व्यवहार को सुधार देगी। यह हमारे जीवन का एक मजबूत मार्गदर्शक सिद्धान्त बन जायेगा। एक बार ऐसे व्यक्तित्व के माध्यम से झलकती हुई महानता को जब लोग अनुभव कर लेते हैं तो आपकी प्रशंसा और सम्मान समाज में बढ़ जायेगा।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

ऋग्वेद मण्डल-1 सूक्त 19

ऋग्वेद मन्त्र 1.19.1

प्रति त्यं चारुमध्वरं गोपीथाय प्र हूयसे ।
मरुभिरग्न आ गहि ॥१॥

प्रति – प्रत्येक

त्यम् – उपरोक्त

चारुम् – सुन्दर, सफल

अध्वरम् – दोषरहित त्याग

गोपीथाय – रक्षण के लिए

प्र हूयसे – बुलाया, युक्त किया

मरुभिः – वायु के साथ

अग्ने – परमात्मा, अग्नि, जीव

आ गहि – निकट आने वाला

व्याख्या :-

अहंकाररहित त्याग करते समय तथा उसके बाद क्या होता है?

वैज्ञानिक अर्थ – वायु के साथ सूर्य की ऊर्जा, सौर विद्युत, अग्नि हमारे निकट आते हैं। सूर्य का यह एक अति सुन्दर और दोषरहित त्याग है। हम इसके लाभ को अपने निकट बुलाते हैं और सबके कल्याण तथा रक्षा के लिए इनका प्रयोग करते हैं।

आध्यात्मिक अर्थ – एक आध्यात्मिक और सामाजिक व्यक्ति अन्य लोगों की रक्षा के लिए यज्ञ करते हुए, प्रत्येक त्याग को करते हुए वायु अर्थात् अपने श्वास, प्राणों के साथ परमात्मा को अपने निकट बुलाने की प्रार्थना करता है। उसका यह विश्वास होता है कि सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा प्रत्येक कार्य का वास्तविक कर्ता है। अतः उसकी अनुभूति के बिना कोई भी त्याग कार्य पूर्ण नहीं हो सकता है। वह तो त्याग भी परमात्मा के नाम पर करता है और प्रतिक्षण परमात्मा के आशीर्वाद की प्रार्थना करता है। दूसरी तरफ प्रत्येक यज्ञ अर्थात् एक अहंकाररहित व्यक्ति के द्वारा दूसरों की रक्षा के लिए किये गये त्याग के बाद परमात्मा ऐसे अहंकाररहित श्रद्धालु भक्त को वायु अर्थात् प्राणायाम के द्वारा स्वयं अपने निकट बुलाते हैं।

जीवन में सार्थकता

अहंकाररहित त्याग महान् दिखायी देते हैं तथा परमात्मा सहित सभी लोगों के द्वारा पसन्द किये जाते हैं।

अहंकाररहित त्याग न केवल परमात्मा के द्वारा पसन्द किये जाते हैं, अपितु प्रत्येक व्यक्ति ऐसे त्यागों को पसन्द करता है।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

अहंकाररहित त्याग दिव्य माने जाते हैं क्योंकि ऐसे त्यागों को करते हुए अहंकाररहित व्यक्ति अपनी विनम्रता दिखाता है और प्रत्येक कार्य को भगवान के नाम पर करता है।

जीवन के किसी भी क्षेत्र में इस प्रेरणा का अनुसरण करना चाहिए और यह सुनिश्चित करना चाहिए कि न केवल आपके कार्य सबके द्वारा पसन्द किये जायें, अपितु हमारा व्यवहार और हमारा समग्र जीवन दिव्य दिखायी देना चाहिए। यह दिव्यता प्रत्येक त्याग कार्य को करते हुए तथा उसके बाद भी दिखायी देनी चाहिए।

ऋग्वेद मन्त्र 1.19.2

नहि देवो न मर्त्यो महस्तव क्रतुं परः ।
मरुभिरग्न आ गहि ॥२॥

नहि – न तो

देवः – महान् ज्ञान के विद्वान्

नहि – और न

मर्त्यः – महान् ज्ञान से अनभिज्ञ सामान्य व्यक्ति

महस्तव (महः तव) – आपकी महिमा

क्रतुम् – कार्य

परः – असीम, महान्

मरुभिः – वायु के साथ

अग्ने – परमात्मा, अग्नि, जीव

आ गहि – निकट आने वाला

व्याख्या :-

अहंकाररहित त्याग की तुलना परमात्मा के असीम और महान् कृत्यों के साथ की जाती है।

न तो महान् ज्ञान के विद्वान् और न ही नाशवान् सांसारिक वस्तुओं के लिए मरने वाले अज्ञानी लोग परमात्मा की महिमा उसके कार्यों से अधिक नहीं जान सकते या वेदों में बताये गये ज्ञान से अधिक नहीं जान सकते। इसका अभिप्राय यह है कि उसको यथावत जानना सम्भव नहीं है परन्तु परमात्मा वायु के साथ अर्थात् प्राणायाम और ध्यान साधना के माध्यम से एक अहंकाररहित भक्त के निकट आते हैं।

इसकी एक और व्याख्या हो सकती है कि अहंकाररहित त्याग की महिमा का असीम और महान् प्रभाव न तो महान् ज्ञान के विद्वान् जानते हैं और न ही सामान्य अज्ञानी लोग जानते हैं, यह केवल भगवान् ही जान सकते हैं। इसलिए भगवान् वायु के माध्यम से ऐसे व्यक्ति की अनुभूति में आते हैं।

जीवन में सार्थकता

भगवान की वास्तविक महिमा पूर्ण रूप से नहीं जानी जा सकती। इसी प्रकार अहंकाररहित त्याग का प्रभाव भी नहीं जाना जा सकता। परन्तु परमात्मा ऐसे व्यक्ति की अनुभूति में ही उसके निकट आते हैं।

केवल अहंकाररहित और इच्छारहित व्यक्ति ही परमात्मा की अनुभूति कर सकता है।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

ऋग्वेद मन्त्र 1.19.3

ये महो रजसो विदुर्विश्वे देवासो अद्रुहः ।
मरुभिरग्न आ गहि ॥३॥

ये – वे जो

महः – महान्

रजसः – त्यागपूर्ण कार्य, अन्तरिक्ष

विदुः – जानते हैं, प्राप्त करते हैं

विश्वे – सब

देवासः – दिव्य लोगों

अद्रुहः – शत्रुता से रहित

मरुभिः – वायु के साथ

अग्ने – परमात्मा, अग्नि, जीव

आ गहि – निकट आने वाला

व्याख्या :-

शत्रु रहित किस प्रकार बना जा सकता है?

वे दिव्य लोग जो बिना अहंकार के महान् त्याग कार्य करते हैं, वे अन्तरिक्ष के समान बड़े विशाल हृदय और बुद्धि के साथ कार्य करते हैं। उनके लिए समूचा ब्रह्माण्ड एक समान है। ऐसे लोग उस परमात्मा के लिए कार्य करते हैं, जिसकी किसी के साथ शत्रुता नहीं है। इसलिए वे किसी प्रकार का भेदभाव नहीं करते और शत्रुरहित होकर कार्य करते हैं। वे अपने निकट आने वाले प्रत्येक व्यक्ति में परमात्मा की अनुभूति करते हैं और वे अपने प्रत्येक श्वास के साथ भी परमात्मा की अनुभूति प्राप्त करते हैं।

जीवन में सार्थकता

अहंकार के द्वन्द्व मिटाने के लिए स्वयं अहंकाररहित बनो।

स्वार्थ के द्वन्द्व मिटाने के लिए त्यागशील व्यक्ति बनो।

प्रत्येक व्यक्ति शत्रुरहित होना चाहता है परन्तु विरला ही कोई अपने समस्त कार्यों को अहंकाररहित त्याग कार्यों के रूप में करने के लिए तत्पर होता है।

यदि हमारे कार्य अहंकाररहित नहीं हैं तो प्रत्येक स्थान पर अहंकार के द्वन्द्व पैदा होंगे और शत्रुता में बदल जायेंगे।

यदि हमारे कार्य त्यागपूर्ण नहीं हैं तो प्रत्येक कार्य में स्वार्थ के द्वन्द्व पैदा होंगे और शत्रुता में बदल जायेंगे।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

इसलिए शान्ति से जीने के लिए और इस भौतिक संसार में प्रगति के लिए हमें अहंकाररहित त्याग ही करने चाहिए। ऐसे व्यक्ति के लिए आध्यात्मिक प्रगति तथा भगवान की अनुभूति प्राप्त करना बहुत कठिन नहीं होता। यह उतना ही सरल होता है, जितना श्वास लेना।

ऋग्वेद मन्त्र 1.19.4

य उग्रा अर्कमानृचुरनाधृष्टास ओजसा।
मरुभिरग्न आ गहि ॥४॥

ये – जो

उग्रा: – उत्तम, तीव्र तेजस्वी
अर्कम् – पूजनीय परमात्मा
आनृचुः – प्रशंसा, स्तुति
अनाधृष्टास – अपराजित
ओजसा – शक्तिशाली
मरुभिः – वायु के साथ
अग्ने – परमात्मा, अग्नि, जीव
आ गहि – निकट आने वाला

व्याख्या :-

सर्वोच्च दाता, परमात्मा की प्रशंसा और स्तुति क्यों करें?

जो लोग महान् तेजस्वी, ओजस्वी अर्थात् शक्तिशाली, अपराजित और प्रशंसनीय होते हैं, वे परमात्मा की पूजा करते हैं। उनमें यह गुण अहंकाररहित त्याग के कारण पैदा होते हैं। परमात्मा ऐसे ही लोगों की श्वास एवं ध्यान साधना के माध्यम से उनके निकट अनुभूति में आते हैं। दूसरी तरफ जो लोग पूजनीय प्रभु की प्रशंसा एवं स्तुति करते हैं, उनमें तीन लक्षण स्वाभाविक रूप से आ जाते हैं।

(क) उनमें तेजस्वी शक्तियाँ तथा उत्तमता विकसित हो जाती है।

(ख) वे शक्तिशाली बन जाते हैं।

(ग) वे अपराजित होते हैं।

इन सबका परिणाम परमात्मा की अनुभूति के रूप में प्राप्त होता है।

जीवन में सार्थकता

प्रत्येक दाता की प्रशंसा करना हमारा नैतिक दायित्व है।

पूजनीय प्रभु जो सर्वोच्च दाता है, उसकी सदा प्रशंसा और स्तुति करनी चाहिए जिससे वह हमें अहंकाररहित बनाकर उत्तमता, शक्ति तथा अपराजिता जैसे लक्षणों को प्रदान करें।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

अपने जीवन में प्रत्येक दाता की प्रशंसा और स्तुति करनी चाहिए, जिससे आपकी कृतज्ञता व्यक्त हो। आपको अपने सामान्य जीवन में भी उत्तमता, शक्ति तथा अपराजित जैसे लक्षण प्राप्त होंगे। वैसे भी प्रत्येक दाता की प्रशंसा करना हमारा नैतिक दायित्व भी है।

ऋग्वेद मन्त्र 1.19.5

ये शुभ्रा घोरवर्पसः सुक्षत्रसो रिशादसः ।
मरुभिरग्न आ गहि ॥५॥

ये – वे जो

शुभ्रा: – दिव्य लक्षणों से सुसज्जित

घोरवर्पसः: – तेजस्वी रूप वाले

सुक्षत्रासः: – व्यापक अन्तरिक्ष में प्रभावशाली, बलशाली

रिशादसः: – रोगों और बुराईयों के नाशक

मरुभिः: – वायु के साथ

अग्ने – परमात्मा, अग्नि, जीव

आ गहि – निकट आने वाला

व्याख्या :-

जीवन में दिव्य लक्षणों के क्या परिणाम होते हैं?

जो लोग दिव्य लक्षणों से सुसज्जित होते हैं, वे सदैव दिव्य कार्य करते हैं, दिव्य रूप वाले होते हैं और अपने आपको कभी मलिन नहीं होने देते। उन्हें निम्न लक्षण प्राप्त होते हैं:-

(क) तेजस्वी रूप

(ख) व्यापक अन्तरिक्ष में प्रभावशाली

(ग) रोगों और बुराईयों के नाशक

परमात्मा को ऐसे लोगों के निकट महसूस किया जा सकता है क्योंकि परमात्मा उनकी अनुभूति में होते हैं।

यज्ञ, अर्थात् पवित्र अग्नि में शुद्ध धी और मूल्यवान जड़ी बूटियों की आहुतियाँ, व्यापक वायु मण्डल को शुद्ध करते हैं और रोगों का नाश करते हैं। इसीलिए यज्ञ को दिव्य माना जाता है। इसमें उपरोक्त तीनों लक्षण समाहित होते हैं। हमारे जीवन का प्रत्येक कार्य यज्ञ रूप ही होना चाहिए।

जीवन में सार्थकता

दिव्यता का अर्थ है एक पूर्ण उत्तम जीवन जिसे सर्वत्र सम्मान प्राप्त होता है।

दिव्य लक्षण एक महान् और श्रेष्ठ व्यक्तित्व को व्यक्त करते हैं, जो हर विषय में उत्तम होता है। ऐसा व्यक्तित्व सर्वत्र सम्मानित होता है क्योंकि वह सबके लिए लाभदायक है।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

ऋग्वेद मन्त्र 1.19.6

ये नाकस्याधि रोचने दिवि देवास आसते ।
मरुभिरग्न आ गहि ॥६॥

ये – वे जो

नाकस्य – जो बिना किसी दर्द को महसूस किये सन्तुष्ट और सुविधाजनक रहते हैं।

अधि – अत्यन्त, पूर्ण

रोचने – दीप्ति वाले, रुचिकारक

दिवि – दिव्य प्रकाश में

देवासः – दिव्य, शुभ गुण वाले

आसते – आसीन

मरुभिः – वायु के साथ

अन्ने – परमात्मा, अग्नि, जीव

आ गहि – निकट आने वाला

व्याख्या :-

परमात्मा की अनुभूति प्राप्त करने में कौन सी परिस्थितियाँ सहायक होती हैं?

जिन लोगों में निम्न लक्षण होते हैं, परमात्मा श्वास पर केन्द्रित ध्यान साधना के माध्यम से ऐसे लोगों के निकट अनुभूति में प्राप्त होते हैं :–

(क) दर्द को महसूस किये बिना वे सन्तुष्ट और सुविधाजनक रहते हैं।

(ख) वे दिव्य प्रकाश युक्त दीप्ति वाले और रुचिकारक होते हैं।

(ग) वे दिव्य और शुभ गुणों में रक्षापित होते हैं।

जीवन में सार्थकता

परस्पर सौहार्दपूर्ण और शान्तिदायक सम्बन्ध कैसे सुनिश्चित किये जा सकते हैं?

कोई भी सम्बन्ध सौहार्दपूर्ण और शान्तिदायक हो सकता है। यदि उसमें निम्न लक्षण हों :–

(क) उसमें सन्तोष की भावना हो अर्थात् सदैव प्रसन्नता का भाव

(ख) वह ज्ञान से सुसज्जित हो।

(ग) उस जीवन में शुभ गुण विद्यमान हो।

ऋग्वेद मन्त्र 1.19.7

य ईङ्गयन्ति पर्वतान् तिरः समुद्रमर्णवम् ।

मरुभिरग्न आ गहि ॥७॥

ये – वे जो

ईङ्गयन्ति – तोड़ते हैं, पार करते हैं, हिला देते हैं

पर्वतान् – पर्वतों को

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

तिरः – तिरस्कृत करते हैं
समुद्रम् – समुद्र को
अर्णवम् – जलों से परिपूर्ण
मरुभिः – वायु के साथ
अग्ने – परमात्मा, अग्नि, जीव
आ गहि – निकट आने वाला

व्याख्या :-

आध्यात्मिक वीरता क्या है?

जो लोग पहाड़ों को छिन्न–भिन्न करके पार कर जाते हैं और गहरे समुद्र के जलों को भी तिरस्कृत कर देते हैं, परमात्मा श्वास के माध्यम से उनकी अनुभूति में आते हैं।

वह व्यक्ति आध्यात्मिक रूप से वीर माना जाता है, जिसकी इच्छाशक्ति दृढ़ और महान् होती है। एक बार यदि हम महान् इच्छाशक्ति को धारण कर लें तो हम भी परमात्मा की अनुभूति के स्तर तक पहुँच सकते हैं, जो अत्यन्त दुर्लभ अवस्था होती है। पर्वतों को पार करने का अर्थ है जीवन की बड़ी–बड़ी बाधाओं को पार करना। गहरे समुद्री जलों को तिरस्कृत करने का अर्थ है उन सांसारिक आकर्षण की वस्तुओं का त्याग करना जिनमें सामान्यतः लोग डूबे रहते हैं।

एक बार शक्तिशाली मस्तिष्क के साथ परमात्मा की अनुभूति का लक्ष्य निर्धारित हो जाये तो इस पथ पर समूचे ब्रह्माण्ड की कोई शक्ति बाधा उत्पन्न नहीं कर सकती।

जीवन में सार्थकता

मानसिक वीरता को कैसे प्राप्त करें?

परमात्मा की अनुभूति के पथ पर आध्यात्मिक वीरता की आवश्यकता होती है, परन्तु वास्तव में जीवन के किसी भी क्षेत्र में कुछ भी प्राप्त करने के लिए एक सुदृढ़ मानसिकता और इच्छाशक्ति का होना अत्यन्त आवश्यक है। इसी को मानसिक वीरता कहते हैं, जो हमें समस्त बाधाओं को पार करने तथा जीवन के आकर्षणों का तिरस्कार करने की शक्ति देती है। बिना मानसिक वीरता के तो हम जीवन की छोटी से छोटी बाधाओं और आकर्षणों के सामने भी टिक नहीं सकेंगे। जब भी हम किसी लक्ष्य की प्राप्ति में असफल होते हैं तो हमें अपने भीतर मानसिक वीरता की कमी पर ही ध्यान करना चाहिए और अगले दौर में सफलता प्राप्त करने के लिए उस मानसिक वीरता को सुदृढ़ करने का प्रयास करना चाहिए।

ऋग्वेद मन्त्र 1.19.8

आ ये तन्वन्ति रश्मिभिस्तिरः समुद्रमोजसा ।

मरुभिरग्न आ गहि ॥१८॥

आ – तन्वन्ति से पूर्व लगाने के लिए

ये – वे जो

तन्वन्ति (आ तन्वन्ति) – व्यापक, विस्तृत

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

रशिमि: — किरणों के साथ, तरंगों के साथ

तिरः — तिरस्कृत

समुद्रम् — समुद्र को

ओजसा — बल के द्वारा

मरुभिः — वायु के साथ

अग्ने — परमात्मा, अग्नि, जीव

आ गहि — निकट आने वाला

व्याख्या :-

आध्यात्मिक वीरता को कैसे प्राप्त करें?

जो लोग अपने जीवन को ज्ञान की तरंगों, परमात्मा की अनुभूति की इच्छा और प्रयासों की तरंगों से व्यापक कर लेते हैं, परमात्मा श्वासों के माध्यम से उनके निकट अनुभूति में प्राप्त होते हैं।

आध्यात्मिक वीरता या इच्छाशक्ति या सुदृढ़ मानसिकता जीवन में क्षणिक रूप से प्राप्त नहीं होती। इसके लिए लम्बे और लगातार प्रयासों की आवश्यकता होती है। परन्तु परमात्मा की अनुभूति के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए तो एक अद्भुत लक्षण की नितान्त आवश्यकता होती है — हमारी समूची मानसिकता, इच्छाएं और प्रयास परमात्मा की अनुभूति के पथ पर डूब जाने चाहिए। उस दिव्यता से प्रेम करने और उसकी अनुभूति के लिए हमारा मस्तिष्क विलीन हो जाना चाहिए। इससे हमारे मन और समूचे जीवन में वही एकमात्र इच्छा व्यापक हो जायेगी।

जीवन में सार्थकता

पूर्ण सफलता को कैसे सुनिश्चित करें?

जीवन के किसी भी क्षेत्र में आप सरलतापूर्वक सफलता सुनिश्चित कर सकते हैं, यदि आप अपने मन में केवल उसी एक लक्ष्य को तथा उसके पथ को व्यापक कर दें। आपके मन में केवल उसी लक्ष्य का ज्ञान और प्रयास छा जायें। व्यापक करने का अर्थ है गहरी सोच, उत्तम योजना और कड़ी मेहनत। यह लक्षण तब तक जारी रहने चाहिए, जब तक हमें लक्ष्य प्राप्त न हो।

एक छात्र के लिए यह आवश्यक है कि वह अपने मन और मस्तिष्क को ज्ञान और सफलता के प्रयासों से व्यापक कर ले।

एक राजनेता के लिए यह आवश्यक है कि वह अपने मस्तिष्क को समाज सेवा की पूर्ण इच्छा एवं प्रयासों से व्यापक कर ले।

एक व्यापारी, एक वैज्ञानिक, एक डॉक्टर, एक वकील या एक इंजीनियर, सभी को अपने—अपने लक्ष्यों, ज्ञान और प्रयासों से अपने मस्तिष्क को व्यापक कर लेना चाहिए। मस्तिष्क को इस प्रकार व्यापक करना सफलता को सुनिश्चित करने के समान है क्योंकि मस्तिष्क के सभी पहलू और सभी कार्य शक्तियाँ एक ही लक्ष्य पर लग जाती हैं।

ऋग्वेद मन्त्र 1.19.9

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

अभि त्वा पूर्वपीतये सृजामि सोम्यं मधु ।
मरुभिरग्न आ गहि ॥१॥

अभि — लक्ष्य करके

त्वा — तुझे

पूर्वपीतये — पूर्व में पिये हुए, पूर्व में प्राप्त आनन्द

सृजामि — उत्पन्न करता हूँ

सोम्यम् — दिव्य

मधु — मधुर अमृत

मरुभिः — वायु के साथ

अग्ने — परमात्मा, अग्नि, जीव

आ गहि — निकट आने वाला

व्याख्या :-

“हम दिव्यता का आनन्द तो ले रहे हैं, परन्तु उसकी अनुभूति प्राप्त नहीं कर रहे।”

हे परमात्मा! मैं आपको लक्ष्य करके दिव्यता का उत्पन्न करता हूँ। मैंने पहले भी वह मधुर अमृत पिया है और उसका आनन्द प्राप्त किया है। जो लोग ऐसा महसूस करते हैं, परमात्मा श्वासों पर ध्यान के माध्यम से उनकी अनुभूति में उनके निकट आते हैं।

यह एक तथ्यात्मक सिद्धान्त है कि परमात्मा की अनुभूति हमें एक भावी लक्ष्य की तरह लगता होगा, परन्तु वास्तव में परमात्मा की शक्ति पहले से ही हमारे भीतर विद्यमान है और हम लगातार उस अमृत का पान कर रहे हैं। परन्तु मस्तिष्क एवं उसकी असंख्य वृत्तियों के द्वारा प्रभावित होने के कारण हम उस आनन्ददायक दिव्यता को महसूस नहीं कर पा रहे हैं। हम समूचे ब्रह्माण्ड के इस मूल सिद्धान्त का आनन्द तो ले रहे हैं, परन्तु उसकी अनुभूति से दूर हैं। अब हमने यह लक्ष्य धारण कर लिया है, ज्ञान प्राप्त कर लिया है और इस दिशा में प्रयास प्रारम्भ कर दिये हैं। हम उस दिव्य शक्ति की प्रशंसा, स्तुति और उसका ध्यान करते हैं। यह पूरा सूक्त हमें आश्वस्त करता है कि परमात्मा श्वास पर ध्यान साधना के माध्यम से ऐसे लोगों के निकट अनुभूति में आते हैं।

जीवन में सार्थकता

एक सदा सत्य रहने वाला तथ्यात्मक सिद्धान्त — दिव्य ऊर्जा, परमात्मा, प्रत्येक जीवन और प्रत्येक कण का अभिन्न अंग है।

जब हम यह जान लेते हैं और विश्वास कर लेते हैं कि दिव्य ऊर्जा अर्थात् परमात्मा प्रत्येक जीवन और प्रत्येक कण का अंग है तो उस महान् शक्ति को अपने अन्दर अनुभूति से महसूस करना बहुत कठिन नहीं रहता। एक बार जब हम उस अनुभूति के पथ पर चलने लगते हैं तो निश्चित रूप से हमें अपने सामान्य जीवन की गतिविधियों में बेल प्राप्त होने लगता है और साथ ही हमें यह सुदृढ़ विचार प्राप्त हो जाता है कि वह सर्वोच्च दिव्य शक्ति सदैव हमारे साथ है।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

ऋग्वेद मण्डल-1 सूक्त 20

ऋग्वेद मन्त्र 1.20.1

अयं देवाय जन्मने स्तोमो विप्रेभिरासया ।
अकारि रत्नधातमः ॥१॥

अयम् – यह
देवाय – दिव्य गुणों से युक्त
जन्मने – जन्म के लिए
स्तोमः – प्रशंसा, स्तुति
विप्रेभिः – महान् विद्वान
आसया – अपने मुख से
अकारि – करते हैं
रत्नधातमः – गौरवशाली सम्पदा

व्याख्या :-
परमात्मा की प्रशंसा, स्तुति से हम क्या प्राप्त कर सकते हैं?

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

महान् विद्वानों के मुख से परमात्मा की प्रशंसा और स्तुतियाँ उन्हें दिव्य जन्म तथा गौरवशाली सम्पदाये प्रदान करती हैं।

दिव्य का अर्थ है शुभ गुणों से युक्त और गौरवशाली सम्पदा एक ऐसी सम्मानजनक सम्पदा है, जो सुखों के लिए तथा दूसरों के कल्याण के लिए प्रयोग की जाती है। इसमें मानसिक और आध्यात्मिक सम्पदा भी शामिल है।

यह मन्त्र स्तुतियों का एक उद्देश्य स्थापित करता है। यह उद्देश्य है दिव्य जन्म। जब एक उद्देश्य मरित्तिष्ठ में स्थापित हो जाता है तो वह इच्छा बन जाती है और लक्ष्य के रूप में स्थापित हो जाती है। इसके बाद उस इच्छा की प्राप्ति की दिशा में निश्चित प्रयास प्रारम्भ हो जाते हैं।

जीवन में सार्थकता

दूसरों की प्रशंसा करके हम क्या प्राप्त कर सकते हैं?

जीवन के किसी भी क्षेत्र में प्रत्येक व्यक्ति को सुखी और प्रसन्न जीवन की आवश्यकता होती है। प्रत्येक व्यक्ति को गौरवशाली सम्पदा की आवश्यकता होती है। प्रत्येक व्यक्ति दिव्य जीवन चाहता है। यदि हमारा लक्ष्य किसी निर्धारित स्तर को प्राप्त करने के लिए निर्धारित हो चुका है तो हमें इस सिद्धान्त का अनुसरण करना चाहिए कि हम परमात्मा की प्रशंसा और स्तुति करें। निंदा या निरर्थक वार्तालाप के विपरीत प्रशंसायें, परमात्मा की हों या अपने वरिष्ठ परिजनों, अधिकारियों की हों, हमें अनेकों परिणाम देती हैं। परमात्मा की तथा अन्य लोगों की प्रशंसायें हमें प्रसन्न रखती हैं, हमें अपने लक्ष्य के बारे में गहरे चिन्तन का अवसर प्रदान करती हैं। ऐसे एकाग्रचित्त प्रयास निश्चित रूप से हमें सुन्दर उपलब्धियाँ तथा दिव्य जीवन प्रदान करते हैं।

ऋग्वेद मन्त्र 1.20.2

य इन्द्राय वचोयुजा ततक्षुर्मनसा हरी।
शमीभिर्यज्ञमाशत ॥ 2 ॥

ये – वे

इन्द्राय – परमात्मा की अनुभूति के लिए

वचोयुजा – महान् वाणियों के साथ

ततक्षुः – सूक्ष्म बनाते हैं।

मनसा – मन (ज्ञान, विज्ञान)

हरी – इन्द्रियां (धारण और गमन गुण वाली)

शमीभिः – शान्तिपूर्वक

यज्ञम् – त्याग कार्य

आशत – पूर्ण, व्यापक

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

व्याख्या :-

परमात्मा की अनुभूति प्राप्त करने के लिए हमें क्या करना चाहिए?

एक दिव्य जीवन से भी ऊपर आध्यात्मिक यात्रा को जारी रखने के लिए एक साधक अपनी महान् वाणियों, अपने मन तथा अपनी समस्त इन्द्रियों को सूक्ष्म बनाकर ईश्वर अनुभूति के लिए बढ़ता है।

वह स्व प्रशंसा के बिना तथा अपने कार्यों के बदले में बिना कुछ आशा किये पूरे अहंकार से रहित होकर अपने त्याग भी शान्तिपूर्वक सम्पन्न करता है।

यह मन्त्र चार स्पष्ट निर्देशों/लक्षणों के साथ परमात्मा की अनुभूति अर्थात् मुक्ति के लिए प्रेरणा देता है :-

(क) अपनी समस्त महान् वाणियों को सूक्ष्म बना दो। कभी भी व्यर्थ की बातें, चर्चायें या बहस आदि नहीं होनी चाहिए। आपका व्यवहार, आपकी आँखें, आपके शरीर की भाषा ही उस भाव को व्यक्त करने लगे जो आप कहना चाहते हैं।

(ख) अपने मन को सूक्ष्म बना दो। निर्णयों पर पहुँचने में तेजी न दिखाओ। सब घटनाओं को अपने आप प्राकृतिक तरीके से घटित होने दे। मन को सरल तरीके से प्रयोग करो। अपनी इच्छाओं और सांसारिक लक्ष्यों को एक किनारे पर रखो क्योंकि वे ही मन का कार्य बढ़ाते हैं।

(ग) अपनी इन्द्रियों को भी सूक्ष्म बनाओ क्योंकि इन्द्रियों की तुष्टि करने में ही ऊर्जा व्यर्थ होती रहती है और व्यवहार भी जटिल हो जाता है।

(घ) जितने भी त्याग के कार्य किये जा सकते हैं, उन्हें शान्तिपूर्वक करो और ऐसा करते समय अहंकार की भावना पैदा मत होने दो। सदैव एक मूलभूत सिद्धान्त को पकड़ कर रखो कि प्रत्येक कार्य का कर्ता वह सर्वोच्च ऊर्जावान परमात्मा ही है।

जीवन में सार्थकता

एक उदार व्यक्तित्व की उच्च छवि कैसे प्राप्त करें?

परमात्मा की अनुभूति के लिए आवश्यक चार लक्षण समाज में एक उदार व्यक्तित्व की उच्च छवि प्राप्त करने के लिए भी महत्वपूर्ण हैं।

(क) अधिक मत बोलो, कार्य ज्यादा करो।

(ख) कानूनों, नियमों और वृद्धजनों एवं उच्चाधिकारियों के निर्देशों का पालन करते समय ज्यादा मत सोचो।

(ग) अपनी ऊर्जा को इन्द्रियों की तुष्टि में व्यर्थ मत गंवाओ। एक साधारण जीवन व्यतीत करो।

(घ) सबकी मूक और अहंकारहित भाव से सेवा करो। प्रत्येक व्यक्ति आपके त्याग से प्रेम करेगा।

ऋग्वेद मन्त्र 1.20.3

तक्ष्मासत्याभ्यां परिज्मानं सुखं रथम् ।

तक्ष्मेनुं सर्वदुधाम् ॥ 3 ॥

तक्ष्म - बनाते हैं।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

नसत्याभ्याम् – प्राणायाम अर्थात् श्वास नियन्त्रण के द्वारा, ऊर्जा और गतिविधि के द्वारा
परिज्ञानम् – गतिमान

सुखम् – सुखकारी

रथम् – वाहन

तक्षन् – बनाते हैं

धेनुम् – गाय के समान वाणी

सबदुर्घाम् – सबका कल्याण करने जैसा दूध देने वाला

व्याख्या :-

अपने जीवन को दिव्य कैसे बनायें?

दिव्य लोग अपने शरीर रथ को प्राणायाम अर्थात् श्वास नियन्त्रण के माध्यम से सुखपूर्वक गमनशील बनाये रखते हैं और स्वयं को प्राकृतिक ऊर्जा तथा गतिविधियों से दुरुस्त बनाकर रखते हैं। उनके व्यवहार में किसी प्रकार का आलस्य नहीं होता है। उनकी वाणियाँ सबके लिए कल्याणकारी होती हैं, जिस प्रकार गाय सबके लिए दूध देती है।

हमें परमात्मा की प्रशंसा और स्तुति से दिव्य जन्म प्राप्त हो सकता है। ऐसे दिव्य जीवन में साधक को प्राणायाम अर्थात् योग साधना के माध्यम से स्वयं को ऊर्जावान बना लेना चाहिए, जिससे वह आलस्य और रोगों से रहित व्यस्त कार्यशील जीवन बिता सके। दिव्य जीवन की प्रथम आवश्यकता है पूर्ण स्वरथ जीवन, द्वितीय आवश्यकता है कोमल और विनम्र वाणी जो सबके कल्याण के लिए सबको ज्ञान प्रदान करे।

जीवन में सार्थकता

एक सफल जीवन के लिए क्या आवश्यक है?

जीवन के किसी भी क्षेत्र में सफलता का आंकलन दो मूल लक्षणों से होता है :-

(क) पूर्ण स्वरथ जीवन

(क) सबका कल्याण सुनिश्चित करने के लिए ज्ञान देने वाली विनम्र वाणी

इन दो लक्षणों के साथ हमारा जीवन ऊर्जावान तथा कार्यशील बन सकता है। ऐसा जीवन अन्य लोगों के कल्याण के साथ-साथ हमारे अपने लिए भी लाभदायक होता है।

ऋग्वेद मन्त्र 1.20.4

युवाना पितरा पुनः सत्यमन्त्र ऋजूयवः ।
ऋभवो विष्टयक्रत् ॥ 4 ॥

युवाना – पवित्र प्रकृति (बुराईयों से मुक्त और अच्छाईयों से युक्त)

पितरा – पालन हेतु

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

पुनः – बार–बार
सत्यमन्त्रा – सत्य विचार
ऋजूयवः – अपने कार्यों से उत्पन्न सरलता
ऋभवः – विनम्र और बुद्धिमान
विष्टी – व्यापक
अक्रत् – वर्तमान, करते हैं।

व्याख्या :-

हम किस प्रकार अपने जीवन से परे भी व्यापक हो सकते हैं?
दिव्य लोग पवित्र प्रकृति और व्यवहार वाले होते हैं। उनमें निम्न तीन लक्षण पाये जाते हैं।

- (क) सत्यमन्त्रा – सत्य विचार
(ख) ऋजूयवः – अपने कार्यों से उत्पन्न सरलता
(ग) ऋभवः – विनम्र और बुद्धिमान

इन लक्षणों के साथ ही वे जीवन में सभी कार्य कुशलतापूर्वक करते हैं और अपने भावी जन्मों में भी व्यापक हो जाते हैं। उनके कार्य ही उन्हें बार–बार धारण करने जीवन प्रदान करते हैं। उनके वर्तमान पवित्र प्रकृति वाले कर्म उनके भविष्य के पितर बन जाते हैं। ऐसा जीवन निश्चित रूप से वर्तमान जीवन से परे अर्थात् भविष्य में भी व्यापक हो सकता है।

जीवन में सार्थकता

हम इतिहास का निर्माण कैसे कर सकते हैं?

अपने वर्तमान जीवन में हम इतिहास पुरुणों का अनुसरण करते हैं, जो जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में हमारे निर्देशक और प्रेरक होते हैं। हम उनके जीवन में भी महानता को उनके निम्न लक्षणों के आधार पर ही देखते हैं:-

- (क) सत्यतापूर्ण जीवन
(ख) अपने कार्यों के कारण सरल जीवन
(ग) विनम्रता और बुद्धिमत्ता

इन लक्षणों के कारण उनका जीवन पवित्र प्रकृति वाला बन जाता है। वे हमारे जीवन में व्यापक हो जाते हैं। हम भी पूर्वकाल के उन महान् व्यक्तियों के पद चिह्नों का अनुसरण करके तथा विशेष रूप से उनके सत्यतापूर्ण जीवन, सरल जीवन, विनम्रता और बुद्धिमत्ता रूपी लक्षणों को अपनाकर अपना एक इतिहास निर्मित कर सकते हैं।

ऋग्वेद मन्त्र 1.20.5

सं वो मदासो अग्मतेन्द्रेण च मरुत्वता ।

आदित्येभिश्च राजभिः ॥ ५ ॥

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

सम् (अग्मत् से पूर्व लगाकर)

वः — आपको

मदासः — हर्ष और आनन्द के लिए

अग्मत् (सम् अग्मत) — प्राप्त करने योग्य, आते हैं

इन्द्रेण — सूर्य के समान ऊर्जा

च — और

मरुत्वता — वायु के समान गतिविधियाँ

आदित्येभिः — लगातार प्राप्त महान् ज्ञान

च — और

राजभिः — प्रकाशित एवं अनुशासित जीवन

व्याख्या :-

प्रसन्नता और आनन्द के क्या लक्षण होते हैं?

प्रसन्नता और आनन्द के लिए दिव्य लोगों के पास परमात्मा की तरफ से चार लक्षण प्राप्त होते हैं :-

(क) सूर्य के समान ऊर्जा

(ख) वायु के समान गतिविधियाँ

(ग) लगातार प्राप्त महान् ज्ञान

(घ) प्रकाशवान एवं अनुशासित जीवन

ऋग्वेद मन्त्र 1.20.6

उत त्यं चमसं नवं त्वष्टुर्देवस्य निष्कृतम् ।

अकर्त चतुरः पुनः ॥ 6 ॥

उत — और

त्यम् — वह

चमसम् — शरीर रथ

नवम् — नवीन

त्वष्टुः — निर्माता के लिए

देवस्य — परमात्मा

निष्कृतम् — पूर्ण सिद्ध

अकर्त — बना देते हैं

चतुरः — चार के लिए (जीवन के चार उद्देश्य — धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष) (चार वर्ण — ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र) (चार आश्रम — ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ, संन्यास)

पुनः — दोबारा

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

व्याख्या :-

सृष्टि के निर्माता की अनुभूति के लिए मानव शरीर अन्तिम रूप से किसको मिलता है?

दिव्य लोग जीवन के चार भिन्न-2 पहलुओं, उद्देश्यों और गतिविधियों को सम्पन्न करने के साथ जब अपने जीवन को पूर्ण बना लेते हैं तो उन्हें अपने अन्तिम शेष उद्देश्य अर्थात् सृष्टि के निर्माता की अनुभूति के लिए एक नया जीवन प्राप्त होता है। एक पूर्ण दिव्य जीवन सम्पन्न करने के बाद व्यक्ति को विशेष रूप से परमात्मा की अनुभूति के लिए मानव जीवन प्राप्त होता है। इसीलिए ईश्वर अनुभूति प्राप्त महान् लोगों पर गृहस्थ जीवन की जिम्मेदारियाँ कम से कम होती हैं और वे लोग परमात्मा की संगति स्थापित करने के लिए पूरी तरह से एकाग्र जीवन व्यतीत कर पाते हैं। ऐसे महान् लोग इस प्रकार से चलते हुए, कार्य करते हुए या जीवन जीते हुए दिखाई देते हैं, जैसे मानव शरीर में परमात्मा अवतरित हो। उनका जीवन हर दृष्टि से दिव्य दिखायी देता है।

जीवन में सार्थकता

हेनरी वाडसवर्थ का एक प्रसिद्ध कथन है – “महान् लोगों के जीवन हमें स्मरण कराते हैं कि हम भी अपने जीवन को चमका सकते हैं, और, जाते हुए, अपने पीछे छोड़ सकते हैं, समय की रेत पर अपने पद-चिह्न।”

अतः ईश्वर की अनुभूति के लिए, सर्वप्रथम हमें एक दिव्य जीवन की तरह अपनी भूमिका का पूर्ण निर्वहन करना होगा अर्थात् मानव के चतुरकोणीय दायित्व। एक दिव्य जीवन के बीच में हमें क्या करना चाहिए, उसका वर्णन इसी सूक्त के पूर्व मन्त्रों में प्राप्त होता है। केवल इसके बाद ही हमें परमात्मा की अनुभूति का अवसर देने के लिए एक नया मानव शरीर प्राप्त होगा।

ऋग्वेद मन्त्र 1.20.7

ते ना रत्नानि धत्तन त्रिरा साप्तानि सुन्चते ।

एकमेकं सुशस्तिभिः ॥ ७ ॥

ते – वे

नः – हमारे लिए

रत्नानि – गौरवशाली सम्पदा

धत्तन – सुन्दरता से धारण करें

त्रिरा – त्रिकोणीय

साप्तानि – सात (दायित्व, पहलू)

सुन्चते – प्राप्त करें

एकम् एकम् – एक-एक अर्थात् प्रत्येक

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

सुशस्तिभि: – प्रशंसनीय कार्य

व्याख्या :-

दिव्य लोग किस प्रकार की गौरवशाली सम्पदा धारण करते हैं?

दिव्य लोग हमारे लिए अपनी समूची गौरवशाली सम्पदा को सुन्दरता के साथ धारण करते हैं। इस सम्पदा में सात दायित्व अथवा पहलू होते हैं, जिनमें प्रत्येक के तीन स्तर होते हैं – मन, वचन और कर्म।

सात दायित्वों के बारे में एक पहलू है –

- (क) ब्रह्मचर्य जीवन अर्थात् विद्या अध्ययन
- (ख) गृहस्थ जीवन
- (ग) वानप्रस्थ अर्थात् सामाजिक और आध्यात्मिक जीवन
- (घ) संन्यास अर्थात् केवल आध्यात्मिक जीवन
- (ङ.) देव पूजा अर्थात् दिव्यता की पूजा
- (च) संगतिकरण अर्थात् श्रेष्ठ विद्वानों की संगति
- (छ) दान अर्थात् त्याग और बलिदान।

दिव्य लोग उक्त सात दायित्वों का निर्वहन मन, वचन और कर्म रूपी तीनों स्तरों पर करते हैं।

एक दिव्य जीवन वास्तव में एक महान् श्रेष्ठ जीवन होता है, जिसने अपने सातों दायित्वों अर्थात् कर्मों को तीनों स्तरों अर्थात् मन, वचन और कर्म से पूर्ण कर लिया है।

एक अच्युत विचार के अनुसार हमारे अस्तित्व से जुड़े ज्ञान के सात पहलू हैं –

- (क) महतत्व
- (ख) अहंकार
- (ग) शब्द
- (घ) स्पर्श
- (ङ.) रूप
- (च) रस
- (छ) गंध

उपरोक्त में अन्तिम पाँच पहलू पंच महाभूत तत्वों (आकाश, वायु, अग्नि, जल और पृथ्वी) की तन्मात्रायें हैं।

एक दिव्य जीवन में मानव अस्तित्व के इन सातों पहलूओं का स्पष्ट ज्ञान होता है और यह ज्ञान सत्त्व, रज और तम नामक तीनों अवस्थाओं में होता है।

जब एक जीवन में ज्ञान और कर्म पूर्ण हो जाते हैं, वह दिव्य जीवन परमात्मा की अनुभूति के मार्ग पर अग्रसर होने लगता है।

ऐसे दिव्य लोगों का अनुसरण किस प्रकार किया जाये, इस प्रश्न का उत्तर भी इसी निर्देश में समाहित है कि अपने जीवन को उसी प्रकार के प्रशंसनीय कार्यों से सुसज्जित कर लिया जाये, जिन्हें दिव्य लोगों ने अपने जीवन के दायित्वों को पूर्ण करते हुए किया। अतः हमारी गतिविधियों का केन्द्र केवल इसी बात पर होना चाहिए कि हमें वह गौरवशाली सम्पदा प्राप्त हो, जो दिव्य लोगों को प्राप्त हुई थी क्योंकि वह सम्पदा उन्होंने हमारे लिए ही धारण की थी।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

जीवन में सार्थकता

आध्यात्मिक सम्पदा की तरह प्रत्येक व्यक्ति को अपने वृद्धजनों तथा उच्चाधिकारियों के जीवन का अनुसरण पूरे मनोयोग से करना चाहिए, जिससे उनकी भौतिक सम्पदा और सांसारिक ज्ञान को भी सुन्दर नैतिक तरीके से धारण किया जा सके।

ऋग्वेद मन्त्र 1.20.8

अधारयन्त वहनयोऽभजन्त सुकृत्यया ।

भागं देवेषु यज्ञियम् ॥ 8 ॥

अधारयन्त – वे जो धारण करते हैं

वहयः – पवित्र कार्य और महान् गुण

अभजन्त – जिन्होंने अंगीकार कर लिया

सुकृत्यया – श्रेष्ठ कर्मों से

भागम् – अंश

देवेषु – महान् दिव्य लोगों की संगति

यज्ञियम् – महान् अहंकाररहित त्याग से

व्याख्या :-

महान् दिव्य लोगों का अनुसरण कैसे करें?

जिन लोगों ने पवित्र कार्य और महान् गुणों को अपने जीवन में धारण किया और जिन्होंने श्रेष्ठ कर्मों को अपने जीवन में अंगीकार किया, वे ऐसा दो प्रकार से कर पाये:-

(क) उन्होंने महान् दिव्य लोगों के साथ संगतिकरण किया।

(ख) उन्होंने उनके अहंकाररहित त्याग कार्यों का अनुसरण किया।

केवल इन दो प्रकार के कार्यों से ही कोई व्यक्ति दिव्य लोगों के पद चिह्नों का एक-एक करके अनुसरण कर सकता है जैसा इस सूक्त के पिछले मंत्र सात में बताया गया है।

जीवन में सार्थकता

ज्ञान और प्रेरणाओं को प्राप्त करने के लिए महान् दिव्य लोगों की संगति करनी चाहिए।

उनके समान अहंकाररहित त्याग कार्य करने चाहिए।

भौतिकवादी कार्यों में भी प्रत्येक व्यक्ति को अपने वृद्धजनों तथा उच्चाधिकारियों की संगति प्राप्त करनी चाहिए, जिससे वह उनके ज्ञानपथ को प्राप्त कर सके और उनके महान् अहंकाररहित त्याग कार्यों का अनुसरण कर सके।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

ऋग्वेद मण्डल-1 सूक्त 21
ऋग्वेद मन्त्र 1.21.1

इहेन्द्राग्नी उप हवये तयोरित्स्तोमपुश्मसि ।
ता सोमं सोमपातमा ॥ 1 ॥

इह – यहाँ (इस जीवन में, ब्रह्माण्ड में)
इन्द्राग्नी – इन्द्र का अर्थ ऊर्जा, अग्नि का अर्थ आग, ताप, गर्मी और प्रकाश
उप हवये – पूजा करते हैं, निकट बुलाते हैं
तयोः – उनसे
इत् – और
स्तोमम् – प्रशंसा, स्तुति को
उश्मसि – चाहते हैं
ता – वे
सोमम् – शुभ गुणों के रक्षक
सोमपातमा – शुभ गुणों के धारक

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

व्याख्या :-

हमें ऊर्जा एवं प्रकाश की आवश्यकता क्यों होती है?

वर्तमान 21वाँ सूक्त इन्द्र और अग्नि पर प्रकाश डालता है। इन्द्र अर्थात् ऊर्जा और अग्नि अर्थात् आग, ताप, गर्भ और प्रकाश। यह दो शक्तियाँ एक ही तत्व के लक्षण हैं। ऊर्जा, अपने प्रकाश और गर्भ के साथ, ब्रह्माण्ड का मूल तत्व है। सभी जड़ पदार्थों और चेतन जीवों सहित समस्त गतिविधियों और समूचे ब्रह्माण्ड का मूल तत्व ऊर्जा ही है।

मानव जीवन में ऊर्जा से अभिप्राय शारीरिक बल है और प्रकाश से अभिप्राय मानसिक बल है। मैं इन्द्र और अग्नि अर्थात् ऊर्जा और प्रकाश दोनों की ही पूजा करता हूँ और उन्हें इस जीवन में अपने निकट चाहता हूँ। इन दो शक्तियों का उचित प्रयोग करके मैं उनसे प्रशंसा और स्तुति चाहता हूँ। आध्यात्मिक जीवन में, भौतिक तथा वैज्ञानिक कार्यों में, प्रशंसा एवं स्तुतियाँ अर्जित करने के लिए, प्रत्येक व्यक्ति को इन दोनों शक्तियों का समुचित प्रयोग करना चाहिए। इन महत्वपूर्ण शक्तियों को व्यर्थ नहीं गंवाना चाहिए।

यदि इन शक्तियों का समुचित प्रयोग किया जाये तो ये हमारे ज्ञान, शुभ गुणों और समस्त पदार्थों की वास्तविक रक्षक सिद्ध होंगी। इस प्रकार इन्द्र एवं अग्नि अर्थात् ऊर्जा और प्रकाश हमारे समस्त पदार्थों आदि की पालक बन जाती हैं।

जीवन में सार्थकता

ऊर्जा तथा प्रकाश किस प्रकार हमारे वास्तविक संरक्षक हैं?

सभी जीव, प्राणियों तथा निर्जीव तत्वों में ऊर्जा तथा अग्नि विद्यमान होती है। यदि हम उनके महत्व को समझ लें और अपने लक्ष्य उनके साथ निर्धारित करें तो हम अपने आपको कभी भी ऐसे किसी कार्य में शामिल नहीं करेंगे जिनसे यह शक्तियाँ व्यर्थ जायें। जीवन के किसी भी क्षेत्र में हम तभी प्रशंसा तथा अन्य कीमती वस्तुयें प्राप्त कर सकते हैं, यदि हम अपनी ऊर्जा और ज्ञान का उचित प्रयोग सुनिश्चित करें। इसलिए हमें इनकी पूजा अवश्य करनी चाहिए। उन्हें अपने जीवन में आमंत्रित करो और उनका विकास करो क्योंकि वे हमारे जीवन में प्रत्येक वस्तु के वास्तविक पालक और संरक्षक हैं।

ऋग्वेद मन्त्र 1.21.2

ता यज्ञेषु प्रशंसतेन्द्राग्नी शुभ्मता नरः।
ता गायत्रेषु गायत ॥ 2 ॥

ता – उनको

यज्ञेषु – कल्याण के लिए किये गये त्याग में

प्रशंसत – प्रशंसित करो, उनके सद्गुणों का प्रयोग करो

इन्द्राग्नी – ऊर्जा तथा प्रकाश

शुभ्मता – अलंकृत

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

नरः – व्यक्ति (जो इन्द्र और अग्नि का समुचित प्रयोग करते हैं)

ता – उनको

गायत्रेषु – प्राणों के रक्षक (गाय का अर्थ है प्राण, त्रा का अर्थ है रक्षा)

गायत – गान करो

व्याख्या :-

हमें ऊर्जा तथा प्रकाश का स्तुति गान क्यों करना चाहिए?

ऊर्जा और गर्मी अर्थात् इन्द्र और अग्नि के समस्त शुभ गुणों को प्रशंसित एवं उनका उचित प्रयोग भिन्न-भिन्न प्रकार के त्याग एवं कल्याण कार्यों में करना चाहिए। वे निश्चित रूप से आपके जीवन को अलंकृत कर देंगे। उसके बाद इस ऊर्जा और ताप की प्रशंसा में गीत गाओ क्योंकि वे हमारे प्राणों के रक्षक हैं।

आपकी ऊर्जा तथा प्रकाश आपके प्राणों के रक्षक होने के नाते आपके जीवन के रक्षक हैं। अतः हमें उनका प्रयोग केवल कल्याणकारी त्याग कार्यों में करना चाहिए, जिससे हमें चारों तरफ से प्रशंसा और स्तुतियाँ प्राप्त हों। इसीलिए हमें अपनी ऊर्जा और प्रकाश की भी प्रशंसा और स्तुति करना चाहिए।

ऋग्वेद मन्त्र 1.21.3

ता मित्रस्य प्रशस्तय इन्द्राग्नी ता हवामहे ।

सोमपा सोमपीतये ॥ ३ ॥

ता – वे

मित्रस्य – मित्र की

प्रशस्तय – प्रशंसायें

इन्द्राग्नी – ऊर्जा तथा गर्मी (प्रकाश)

ता – वे

हवामहे – मैं पुकारता हूँ

सोमपा – शुभ गुणों के रक्षक

सोमपीतये – शुभ गुणों के धारक

व्याख्या :-

हमें ऊर्जा तथा प्रकाश की आवश्यकता क्यों है?

हम ऊर्जा और प्रकाश को बुलाते हैं और स्वीकार करते हैं, जिससे हम अपने मित्र, परमात्मा, की प्रशंसा कर सकें। जीवन की इन मूल शक्तियों का संरक्षण करके ही हम परमात्मा की अनुभूति के पथ पर अग्रसर हो सकते हैं। यह शक्तियाँ परमात्मा की भेंट हैं, इसलिए परमात्मा द्वारा प्रदत्त प्रत्येक वस्तु की वे पालक और रक्षक हैं।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

परमात्मा ने हमें बहुत सी वस्तुयें दी हैं। वह इन सबका पालन तथा रक्षा हमारी ऊर्जा और प्रकाश के माध्यम से ही सुनिश्चित करता है। इसलिए हमें भौतिक सुख सुविधाओं के साथ-साथ आध्यात्मिक प्रगति के लिए भी इस ऊर्जा और प्रकाश की भी आवश्यकता है।

ऋग्वेद मन्त्र 1.21.4

उग्रा सन्ता हवामह उपेदं सवनं सुतम् ।
इन्द्राग्नी एह गच्छताम् ॥ 4 ॥

उग्रा – शक्तिशाली (वर्तमान तथा प्रगतिशील)

सन्ता – होती हुई

हवामहे – हम पुकारते हैं

उप इदम् – अपने निकट

सवनम् – त्याग के लिए

सुतम् – शुभ गुणों के लिए

इन्द्राग्नी – ऊर्जा तथा गर्भी

इह – यहाँ इस जीवन में

आगच्छताम् – प्राप्त हों

व्याख्या :-

ऊर्जा तथा गर्भी के क्या लक्षण हैं?

हम ऊर्जा तथा गर्भी को कई कारणों से आमंत्रित करते हैं :–

(क) यह शक्तिशाली हैं।

(ख) यह वर्तमान और प्रगतिशील हैं।

(ग) इनका प्रयोग त्याग कार्यों में होता है।

(घ) इनका प्रयोग शुभ गुणों और ज्ञान को प्राप्त करने में होता है।

शेष गुण मन्त्र पाँच में दिये गये हैं।

ऋग्वेद मन्त्र 1.21.5

ता महान्ता सदस्पती इन्द्राग्नी रक्ष उब्जतम् ।

अप्रजाः सन्त्वत्रिणः ॥ 5 ॥

ता – वे

महान्ता – महान्

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

सदस्पती – समाज के रक्षक
इन्द्रागनी – ऊर्जा, गर्भी और प्रकाश
रक्षः – राक्षसी व्यवहार
उब्जतम् – नष्ट होते हैं
अप्रजाः – सन्तानहीन
सन्तु – हों
अत्रिणः – शत्रु, अशुभ प्रवृत्तियाँ

व्याख्या :-

ऊर्जा तथा गर्भी के क्या लक्षण हैं?
हम ऊर्जा तथा गर्भी को निम्न कारणों से पुकारते हैं:-
मन्त्र चार से आगे के लक्षण –
(ड.) यह महानतम शक्तियाँ हैं।
(च) यह पूरे समाज की रक्षक है।
(छ) यह दुष्ट प्रवृत्तियों की नाशक है।
(ज) यह शत्रुओं और बुराईयों को सन्तानहीन बना देती है।

ऋग्वेद मन्त्र 1.21.6

तेन सत्येन जागृतमधि प्रचेतुने पदे ।
इन्द्रागनी शर्म यच्छतम् ॥ 6 ॥

तेन – वे
सत्येन – अनाशवान
जागृतम् अधि – अपने जागृत लक्षणों के लिए प्रसिद्ध
प्रचेतुने – आनन्ददायक, महान् चेतना
पदे – व्यवहार
इन्द्रागनी – ऊर्जा, गर्भी और प्रकाश
शर्म – उत्तम सुख
यच्छतम् – देने वाले

व्याख्या :-

ऊर्जा तथा गर्भी के क्या लक्षण हैं?
हम ऊर्जा तथा गर्भी को निम्न कारणों से पुकारते हैं:-
मन्त्र पाँच से आगे के लक्षण –

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

- (झ) ये अनाशवान शक्तियाँ हैं।
- (ट) ये अपने जागृत लक्षणों के लिए प्रसिद्ध हैं।
- (ठ) ये आनन्ददायक तथा महान् चेतनापूर्ण व्यवहार उत्पन्न करती हैं।
- (ड) यह उत्तम सुविधायें प्रदान करती हैं।

जीवन में सार्थकता

अपने जीवन में ऊर्जा और गर्मी का संरक्षण कैसे करें?

यह सूक्त ऊर्जा और गर्मी (प्रकाश) के महत्व पर प्रकाश डालता है। हमें इन शक्तियों के अधिकतम प्रयोग के लिए इनका संरक्षण करना चाहिए। इनको संरक्षित करने का सर्वोत्तम उपाय है, इन्हें व्यर्थ होने से बचायें। हमें इन शक्तियों तथा इनके देने वाले सर्वोच्च शक्तिमान परमात्मा की प्रशंसा का गुणगान करके अपनी चेतना और विवेकशीलता का विकास करना चाहिए। इस प्रकार हम चेतन और ज्ञान से प्रकाशित हो जायेंगे तो स्वतः ही इनका व्यर्थ उपयोग समाप्त होगा और हम इनका सदुपयोग जीवन के वास्तविक उद्देश्य के लिए कर पायेंगे। जीवन का वास्तविक उद्देश्य है परमात्मा की अनुभूति प्राप्त करना, जिसके लिए हमें राक्षसी जीवन से उठकर मानवीय जीवन और अन्ताः दिव्य जीवन की ओर बढ़ना होगा।

ऋग्वेद मण्डल-1 सूक्त 22

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

ऋग्वेद मन्त्र 1.22.1

प्रातर्युजा वि बोधयाश्विनावेह गच्छताम् ।
अस्य सोमस्य पीतये ॥ १ ॥

प्रातः – प्रात काल में
युजा – साथ मिल कर
वि बोधय – पूर्ण चेतन
अश्विना – दो का जोड़ा (सूर्य एवं वायु; पूरक एवं रेचक वायु; शरीर एवं मन; ऊर्जा एवं प्रकाश; परमात्मा एवं प्रकृति आदि)
इह – इस जीवन में, गतिविधियाँ
अगच्छताम् – प्राप्त करने योग्य
अस्य – इस
सोमस्य – पदार्थ, ज्ञान, शुभ गुण आदि
पीतये – पीना, भोग करना, धारण करना

व्याख्या :-

अश्विना क्या हैं और उनकी क्या भूमिका है?

अश्विना का अर्थ हैं दो का जोड़ा। हमारे जीवन में इस के कई पहलु हैं। कोई भी जोड़ा तभी लाभदायक होता है जब दोनों साथी अपने—अपने कर्तव्यों के प्रति पूर्ण चेतन हो। ऐसा जोड़ा अपने कर्तव्यों के प्रति चेतन होने के कारण प्रातः काल ही सयुक्त रूप से मिलते हैं। हम प्रार्थना करते हैं कि हम भी अपने जीवन की सभी गतिविधियों में किसी ऐसे ही जोड़े का भाग बने। ऐसे जोड़े के परस्पर समन्वय से ही हम परमात्मा द्वारा प्रदत्त समस्त वस्तुओं, ज्ञान तथा शुभ गुणों का अधिकतम भोग करते हुए उन्हें धारण कर सकते हैं।

जीवन में सार्थकता

हम अश्विना का गठन केसे करें?

परमात्मा दाता होने के नाते भी प्रकृति के साथ जोड़े का गठन करता है, तभी सृष्टि की रचना तथा पालन होता है। परमात्मा हम सब के साथ भी जोड़े का गठन करता है। इसी प्रकार सृष्टि के कण—कण के साथ परमात्मा जोड़ा बनाता है। परमात्मा और प्रकृति माता सर्वोच्च अश्विना हैं। सूक्ष्म स्तर पर तथा आध्यात्मिक रूप से हमारी आत्मा परमात्मा के साथ जोड़ा बनाती है, भौतिक रूप से हमारा शरीर मन के साथ जोड़ा बनाता है और इस जोड़े को अपने कर्तव्यों के प्रति सजग रहना चाहिए।

सूर्य और वायु भी अश्विना बनते हैं और अपने कर्तव्यों के प्रति पूर्ण चेतन रहते हैं। हमारी व्यक्तिगत ऊर्जा तथा प्रकाश को भी चेतन रहते हुए कार्य करने के लिए प्रशिक्षित किया जाना चाहिए।

प्रतिदिन प्रातः काल यह अश्विना अपने—अपने कर्तव्य क्षेत्रों में कार्य प्रारम्भ कर देते हैं जिस से हम उनका अधिकतम लाभ उठा पाते हैं। इसी प्रकार हमे जीवन में अन्य श्रेष्ठ लोगों के साथ अश्विना का गठन करना

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

चाहिए – अपने परिवार में, कार्य स्थलों पर, सम्पूर्ण समाज में और अपने कर्तव्यों के प्रति चेतन रहकर सबके लिए लाभकारी बनना चाहिए।

ऋग्वेद मन्त्र 1.22.2

या सुरथा रथीतमोभा देवा दिविस्पृशा ।
अश्विना ता हवामहे ॥ २ ॥

या – वे
सुरथा – उत्तम रथ
रथीतमा – उत्तम सारथी
उभा – दोनों
देवा: – दिव्य
दिविस्पृशा – दिव्यता को स्पर्श करने योग्य
अश्विना – जोड़ा
ता – वह
हवामहे – आमन्त्रित करना, ग्रहण करना

व्याख्या :-

यह अश्विना कितने शक्तिशाली होते हैं?

परमात्मा की यह सारी सृष्टि इतनी सुदंर है कि इस में अश्विना के दोनों साथी उत्तम सारथी बनते हैं और उन्हें जीवन यात्रा के लिए उत्तम रथ दिया गया है। सभी अश्विना महान और दिव्य शक्तियों के धारक होते हैं। वे अपने आप में ही दिव्य होते हैं और दिव्यताओं को स्पर्श करने के योग्य होते हैं।

जीवन में सार्थकता

अश्विना किस प्रकार दिव्य हो सकते हैं?

भिन्न-भिन्न प्रकार से तथा भिन्न-भिन्न योग्यताओं के साथ अश्विना का गठन करके अपने जीवन में हमें दिव्यताओं को आमन्त्रित करना चाहिए। सभी अश्विनाओं को अपनी शक्तियों और कर्तव्यों के प्रति पूर्ण चेतन होना चाहिए जिस से दिव्यता की सहायता से विस्मयकारी परिणाम उत्पन्न किये जा सकें।

समुचित सृष्टि के चक को संचालित करने तथा प्रत्येक जड़ और चेतन पदार्थ के कल्याण के लिए सूर्य और वायु अश्विना का एक महान उदाहरण हैं। अश्विना की शक्तियों को पूरी तरह समझने के बाद ही वैज्ञानिक विस्मयकारी अविष्कार करने में सक्षम हो पाते हैं। हम भी जीवन के भिन्न-भिन्न अवसरों और अवस्थाओं में असर्व अश्विनाओं का गठन कर सकते हैं।

ऋग्वेद मन्त्र 1.22.3

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

या वां कशा मधुमत्यश्विना सूनृतावती ।
तया यज्ञं मिमिक्षतम् ॥ ३ ॥

या – वे

वाम् – तुम दोनो

कशा – वाणियाँ

मधुमति – मधुर

अश्विना – दो का जोड़ा

सूनृतावती – उत्तम, सत्य, दर्द नाशक, प्रशंसनीय

तया – उसके साथ

यज्ञम् – त्याग

मिमिक्षतम् – मोक्ष की अभिलाषा

व्याख्या :-

महान् अश्विना हमारी सहायता किस प्रकार करते हैं?

महान् अश्विना के दो सहयोगियों की वाणियाँ अत्यन्त मधुर तथा उत्तम, सत्य, प्रशंसनीय तथा कष्ट निवारक होती हैं। वाणियों में केवल मुख से बोलने वाले शब्द ही नहीं अपितु अश्विना जोड़े के समस्त कार्य और व्यवहार भी शामिल होते हैं क्योंकि वे भी स्वयं में बोलते हैं। ऐसे महान् अश्विना जोड़ों के कार्यों के फल सबके लिए अत्यन्त सुखकारी होते हैं। ऐसे सुखकारी परिणाम लाभार्थी लोगों के मन में अश्विना की एक महान् छवि का निर्माण करते हैं। इस प्रकार अपनी दिव्यता के कारण अश्विना का महान् जोड़ा त्याग कार्य करने तथा प्रकाश की कामना करने में सफल हो पाता है।

जीवन में सार्थकता

अश्विना किस प्रकार त्याग कार्य सम्पन्न करते हैं और प्रकाशवान होने में सहायता करते हैं?

वैज्ञानिक रूप से, सूर्य और वायु कि अत्यन्त प्रशंसनीय वाणियाँ अर्थात् प्रभाव हैं। इसी कारण वे अनेकों कल्याणकारी कार्य करते हैं और स्वप्रकाशित हैं।

आध्यात्मिक रूप से, पूरक तथा रेचक श्वांस अर्थात् भीतर जाने वाली तथा बाहर निकले वाली वायु पर प्राणायाम तथा ध्यान साधना में जब हम एकाग्र होते हैं तो आध्यात्मिक मार्ग पर अत्यन्त सुदर्शन परिणाम उत्पन्न होते हैं। पूरक और रेचक श्वांसों का अश्विना जोड़ा हमें सासांसिक उद्देश्यों से पृथक् करके आन्तरिक प्रकाश की ओर अग्रसर करता है।

अतः, जीवन में कियात्मक रूप से, जब भी अश्विना का कोई जोड़ा अपनी दिव्यता का एहसास करता है और चेतन बुद्धि से कार्य करता है तो वे अत्यन्त लाभकारी परिणाम उत्पन्न करता है और प्रकाश की ओर अग्रसर होने में सहायक होता है।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

ऋग्वेद मन्त्र 1.22.4

नहि वामस्ति दूरके यत्र रथेन गच्छथः ।
अश्विना सोमिनो गृहम् ॥ 4 ॥

नहि – नहीं

वाम् – दोनों

अस्ति – हो

दूरके – बहुत दूर

यत्र – जहाँ

रथेन – रथ से

गच्छथः – जाते हैं

अश्विना – दोनों का जोड़ा

सोमिनः – परमात्मा, समस्त सोम अर्थात् पदार्थों, ज्ञान और शुभ गुणों को पैदा करने वाला

गृहम् – गृह

व्याख्या :-

अश्विना जोड़ा कितनी दूर तक जा सकता हैं?

अश्विना जोड़े से परमात्मा कि अनुभूति कितनी दूर हैं?

वह परमात्मा जो समस्त सोम अर्थात् पदार्थों, ज्ञान और शुभ गुणों को पैदा करने वाला है, उसका निवास अश्विना जोड़े से दूर नहीं हैं जहाँ वे रथ पर बैठकर जाते हैं।

वैज्ञानिक रूप से, पूरक और रेचक श्वास वायु हमारे शरीर रथ में कमशः प्रवेश करती है तथा बाहर निकलती है और अपनी सूक्ष्म प्रकृति के कारण वे सदैव परमात्मा, सर्वोच्च ऊर्जा तथा वायु के संसर्ग में रहती हैं। उनके माध्यम से ही हम भी परमात्मा की अनुभूति कर सकते हैं। इसका अर्थ यह हुआ कि प्राणायाम कि लम्बी तथा लगातार साधना से ईश्वर की अनुभूति को सरल तथा अपने निकट महसूस किया जा सकता है।

जीवन में सार्थकता

अश्विना, दिव्य जोड़ा, दिव्यता कि अपार उच्चाईयों को छू सकता है। वे जीवन के किसी भी क्षेत्र में असीमित प्रगति कर सकते हैं। उन्हें लक्ष्यों की प्राप्ति भी शीघ्र हो जाती है। वे परमात्मा अर्थात् सर्वोच्च दिव्यता के अत्यन्त निकट पहुंच सकते हैं।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

ऋग्वेद मन्त्र 1.22.5

हिरण्यपाणिमूतये सवितारमुप हवये ।
स चेत्ता देवता पदम् ॥ 5 ॥

हिरण्यपाणिम् – गौरवशाली सम्पदा देने वाला
ऊतये – प्रेम और संरक्षण के लिए
सवितारम् – परमात्मा, सब का सृजन करने वाला
उप ह्ये – पुकारते हैं, स्वीकार करते हैं
सः – वह (परमात्मा)
चेत्ता – पूर्ण ज्ञान
देवता – सब वस्तुओं का देने वाला, पूजनीय
पदम् – समस्त जीव और निर्जीव जगत को प्राप्त

व्याख्या :-

परमात्मा क्यों पूजनीय हैं?

मैं उस परमात्मा को पुकारता हूँ और स्वीकार करता हूँ। जिसने सब वस्तुओं को रचा है और गौरवशाली सम्पदा का देने वाला है। मैं प्रेम और संरक्षण के लिए उसे पुकारता हूँ। वह अपने आप मैं पूर्ण ज्ञान है। उसका आवास सर्वत्र है क्योंकि वह समस्त जीव और निर्जीव जगत को प्राप्त होता है। इन सब कारणों से वह परमात्मा सब के द्वारा पूजनीय है।

जीवन में सार्थकता

क्या परमात्मा हर हालात में हमारे लिए सब कुछ है?

परमात्मा हमारा लक्ष्य हैं क्योंकि वही हमारा प्रारम्भ है, वे हमारा पालक है, वे पूर्ण ज्ञान है। प्रत्येक व्यक्ति को ऐसे सर्वोच्च पिता से प्रेम करना चाहिए क्योंकि उसी ने हमारा सृजन किया है और वही हमारी रक्षा करने के योग्य है।

वह सर्वोच्च शक्ति समस्त तत्वों का निर्माता है। इन तत्वों के बिना कोई भी विज्ञान प्रगति नहीं कर सकता। वह समस्त ऊर्जाओं का लगातार स्रोत है। इसलिए वैज्ञानिकों के लिए भी परमात्मा की अनुभूति आवश्यक है। जिससे वे सभी तत्वों के मूल स्रोत को जान सकते हैं। जिसका नाम वैज्ञानिकों ने भी प्रत्येक कण की मूल शाक्ति का नाम गॉड-पार्टिकल रखा है।

वह समस्त सुविधाओं, ज्ञान और गुणों का स्रोत है। हम वर्तमान समय में जिस रूप या अवस्था में भी हैं, वह केवल उसी सर्वोच्च शाक्ति के कारण है। भविष्य में प्रगति करने के लिए भी हमें महान् और दिव्य प्रेरणाएं उसी से प्राप्त करनी होंगी। यह केवल उस की प्रशंसा और पूजा से ही सम्भव है।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

ऋग्वेद मन्त्र 1.22.6

अपां नपातमवसे सवितारमुप स्तुहि ।
तस्य व्रतान्युश्मसि ॥ ६ ॥

अपाम् – जो सर्वत्र और सब वस्तुओं में व्यापक हो
न पातम् – अविनाशी, कभी अशुद्ध न होने वाला
अवसे – रक्षा के लिए
सवितारम् – उत्पन्न करने वाला, प्रेरक
उप स्तुहि – समीपता से प्रशंसा, पूजा करना
तस्य – उसकी
व्रतानि – सकल्प, महान् धर्म युक्त कार्य
उश्मसि – प्राप्त होने की कामना (उसके जैसा बनना, उसके कार्यों को प्राप्त करना)

व्याख्या :-

क्या हम भगवान का अनुसरण कर सकते हैं?

मैं भगवान की प्रशंसा तथा पूजा बहुत निकट से करता हूँ अपने हृदय तथा बुद्धि में, क्योंकि (क) वह सर्वोच्च ऊर्जा है जो अपाम् अर्थात् सर्वत्र तथा सब वस्तुओं में व्यापक है, (ख) वह न पातम् अर्थात् अविनाशी, अनन्त तथा कभी अशुद्ध न होने वाला है, (ग) वह सवितारम् अर्थात् उत्पन्न करने वाला तथा प्रेरक है, (घ) वह अवसे अर्थात् हमारी रक्षा के लिए सभी कार्य करता है।

उसकी प्रशंसा और पूजा करने के बाद अब मैं उसे प्राप्त करने और उसके संकल्पों और महान् कार्यों का वरण करने की कामना करता हूँ। मैं उसी के समान बनना चाहता हूँ उसी के समान महान् कार्य करना चाहता हूँ अपने कर्मों के बल पर सब जगह व्याप्त होना चाहता हूँ दूसरों के लिए प्रेरना बनना चाहता हूँ सदैव शुद्ध रहना चाहता हूँ।

जीवन में सार्थकता

महानता के पदचिन्हों का अनुसरण करो और वही बन जाओ।

परमात्मा के समान बनना असंभव नहीं है। किसी भी महान् आदर्श पुरुष, महान् माता-पिता, श्रेष्ठ उच्चाधिकारी तथा दार्शनिक, वैज्ञानिक तथा उद्योगपति की तरह हम भी महान् बन सकते हैं। जीवन के किसी भी क्षेत्र में महान् पुरुषों के पदचिन्हों का अनुसरण करके हम भी वही बन सकते हैं। वास्तव में सभी महान् पुरुषों ने भगवान का अनुसरण किया था और वे भी भगवान की तरह पूजा के योग्य बन गये। हम भी वही बन सकते हैं।

ऋग्वेद मन्त्र 1.22.7

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

विभक्तारं हवामहे वसोश्चित्रस्य राधसः
सवितारं नृचक्षसम् ॥ 7 ॥

विभक्तारम् – विभाग करने वाला, देने वाला (हमारे कर्मों के फल)

हवामहे – हम प्राप्त करते हैं, आमन्त्रित करते हैं

वसोः चित्रस्य – ब्रह्माण्ड की प्रत्येक अवस्था में विद्यमान

राधसः – गौरवशाली सम्पदा (वस्तुएँ, ज्ञान तथा शुभ गुण आदि)

सवितारम् – ब्रह्माण्ड का निर्माता

नृचक्षसम् – ज्ञान का आतंरिक स्रोत

व्याख्या :-

परमात्मा के किन लक्षणों का हम अनुसरण कर सकते हैं?

हम उस सर्वोच्च शक्ति, ब्रह्माण्ड के निर्माता को आमन्त्रित करते हैं और प्राप्त करते हैं जो हमारे लिए गौरवशाली सम्पदा को बाँटने वाला तथा हमारे कर्मों का फल देने वाला है। वह हम सबके लिए ज्ञान का आंतरिक स्रोत है। वह हमारे सारे कर्मों को जानता है, यहाँ तक की सूक्ष्म स्तर पर हमारे विचारों और स्वज्ञ अवस्था को भी जानता है, क्योंकि वह ब्रह्माण्ड की प्रत्येक वस्तु का अभिन्न अंग है। अतः, सर्वोच्च शक्ति होने के नाते, वह तीन विशेष कार्य करता है – (क) न्याय, (ख) ज्ञान देने वाला, (ग) गौरवशाली सम्पदा देने वाला।

जीवन में सार्थकता

न्याय, ज्ञान और दान

कोई भी व्यक्ति परमात्मा के इन तीनों लक्षणों का अनुसरण करके परमात्मा का अनुसरण कर सकता है – (क) बिना पक्षपात के न्याय पूर्वक कार्य करना, (ख) अज्ञानी लोगों को ज्ञान देना, (ग) योग्यता के अनुसार दूसरों की निर्धनता दूर करना।

ऋग्वेद मन्त्र 1.22.8

सखाय आ नि षीदत सविता स्तोम्यो नु नः।
दाता राधांसि शुभ्मति ॥ 8 ॥

सखायः – मित्र कि भाँति

आ नि षीदत् – स्थापित हो

सविता – ब्रह्माण्ड का निर्माता

स्तोम्यः – प्रशंसा के योग्य

नु – अब, अतिशीघ्र

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

नः — हमारा

दाता — देने वाला

राधांसि — समस्त सम्पदा

शुभ्मति — हमारे जीवनों को सुशोभित करता है

व्याख्या :-

हमारा भगवान के साथ क्या सम्बन्ध है?

ब्रह्मण्ड का महान् निर्माता तुरंत हर प्रकार की प्रशंसा और पूजा के योग्य है और वह एक महान् और स्थायी मित्र की तरह स्थापित करने योग्य है क्योंकि वह समस्त सम्पदाओं का देने वाला है जैसे सभी वस्तुएँ, ज्ञान तथा शुभगुण, जिनसे हमारे सब के जीवन सुशोभित होते हैं।

जीवन में सार्थकता

सर्वत्र मित्रों की तालाश कैसे करें?

परमात्मा सर्वोच्च दाता है, हमारा शुभचिंतक है और इस कारण वह एक मित्र है। समस्त मानवीय सम्बन्ध इसी प्रकार के मित्र की तरह होने चाहिए अर्थात् एक शुभचिंतक तथा आवश्यकता पड़ने पर देने वाला। अन्य लोगों के जीवनों को सुशोभित करो, किसी को व्यथित या नष्ट-भ्रष्ट मत करों।

एक मित्र को सदैव शुभचिंतक ही होना चाहिए, बेशक हमारे सम्बन्धों का नाम कुछ भी हो। सम्बन्ध तभी सुचारू रूप से चलते हैं जब उनमें परस्पर शुभचिंतक होने का भाव होता है। परमात्मा समस्त जीवों का शुभचिंतक हैं क्योंकि वह असंख्य वस्तुएँ देता है। इस लक्षण का अनुसरण करते हुए हम भी किसी प्रकार से अन्य लोगों की सहायता करके उनके साथ मित्र सम्बन्ध बना सकते हैं। हमारी प्रकृति में यदि सब के शुभचिंतक होने का यह एक लक्षण हो तो हमारे सभी सम्बन्ध मित्र की भाँति ही होंगे, सम्बन्धों के अलग-अलग शब्दों से भिन्न। हमारे माता-पिता, बच्चे, पड़ोसी, उच्चाधिकारी तथा अन्य सभी हमें तब तक अपना मित्र ही समझेंगे जब तक हम उनके शुभचिंतक बने रहें तथा आवश्यकता के समय उन्हें कुछ देते रहें। हमें सबके जीवन को सुशोभित करना चाहिए। किसी को व्यथित या नष्ट-भ्रष्ट नहीं करना चाहिए। शुभचिंतक बनने वाले इस एक लक्षण के साथ हमें चारों तरफ केवल मित्र ही प्राप्त होंगे।

ऋग्वेद मन्त्र 1.22.9

अग्रे पत्नीरिहा वह देवानामुशतीरूप।

त्वष्टारं सोमपीतये ॥ 9 ॥

अग्ने — परमात्मा, सर्वोच्च ऊर्जा, शक्तिशाली व्यक्तिगत ऊर्जा

पत्नीः — जो पतन से बचाए (हमारी इनद्रियों कि शक्ति)

आ वहा उप — निकट प्राप्त करना और उचित प्रयोग करना

देवानाम् — दिव्य

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

उशती: – कल्याण चाहने वाले, शक्तियों को प्रकाशित करने वाली

उप (वह के साथ लगाकर)

त्वष्टारम् – समस्त ऊर्जाओं का दीप्ति केंद्र

सोमपीतये – सोम कि रक्षा के लिए (पदार्थों, ज्ञान और गुणों कि रक्षा के लिए)

व्याख्या :-

हमारी पत्नियाँ कौन है ?

मैं सर्वोच्च ऊर्जा अर्थात् परमात्मा से दिव्य पत्नियों कि प्रार्थना करता हूँ अर्थात् इन्द्रियों कि वह शक्तियाँ जो मुझे पतन से बचाए। मुझे ऐसी दिव्य शक्तियों को प्राप्त करने से प्रसन्नता होगी। यह दिव्य शक्तियाँ मेरे जीवन कि दिव्य पत्नियाँ हैं जिन्हें उचित प्रकार से प्रयोग किया जाना चाहिए। ऐसी दिव्य शक्तियों (पत्नियों) के निम्न लक्षण होते हैं :-

(क) अपनी शक्तियों के अनुसार ये सदैव कल्याण चाहने वाली और बुद्धि को प्रकाशित करने वाली होती हैं।

(ख) ये समस्त शक्तियों का दीप्ति केंद्र होती हैं।

(ग) ये सोम अर्थात् हमारें समस्त पदार्थों, ज्ञान तथा गुणों की रक्षा करती हैं।

जीवन में सार्थकता

एक धर्मपत्नी किस प्रकार वास्तविक दिव्य पत्नी बन सकती हैं ?

हमारी व्यक्तिगत इन्द्रियों कि दिव्य शक्तियों को उचित ही पत्नी कहा गया है। यह शब्द भारत में धर्मपत्नी के लिए प्रयोग किया जाता है। इन्द्रियों कि दिव्य शक्तियों का कार्य भी भारतीय धर्मपत्नियों कि तरह ही है। एक धर्मपत्नी का कर्तव्य है कि वह अपने पति को हर प्रकार के पतन से बचाए। वह सबसे निकट और सबसे प्रभावशाली शुभचितंक होती है। वह अपने पति कि ऊर्जा का दीप्ति केंद्र होती है, उसकी प्रेरक और मार्गदर्शक होती है। वह अपने पति कि समस्त सम्पत्तियों अर्थात् समस्त पदार्थ, ज्ञान और गुणों की रक्षा के लिए कर्तव्यबद्ध होती है।

ऋग्वेद मन्त्र 1.22.10

आ ग्ना अग्न इहावसे होत्रं यविष्ठ भारतीम् ।

वरुत्रों धिषणां वह ॥ 10 ॥

आ (वह से पूर्व लगाकर)

ग्नाः – दिव्य शक्तियाँ

अग्ने – परमात्मा, सर्वोच्च ऊर्जा, हमारी व्यक्तिगत ऊर्जा

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

इह – यहाँ

अवसे – रक्षा के लिए

होत्राम् – शारीरिक शक्ति अर्थात् अन्नमय कोष

यविष्ठ – गुणों को धारण करके तथा अवगुणों को तिरस्कृत करके शुद्ध करना

भारतीम् – धारण शक्ति अर्थात् प्राणमय कोष

वरुत्रीम् – बुराईयों और शत्रुओं को नष्ट करने की शक्ति अर्थात् मनोमय कोष

धिषणाम् – बोद्धिक शक्ति अर्थात् विज्ञानमय कोष

वह (आ वह) – प्राप्त करना

व्याख्या :-

ये दिव्य शक्तियाँ (पत्नियाँ) क्या करती हैं ?

मेरी व्यक्तिगत ऊर्जा यहाँ इसी जीवन में पूर्ण रक्षन के लिए सभी दिव्य शक्तियों को प्राप्त करने की प्रार्थना करती है। मैं शुद्धि में विश्वास रखता हूँ और इसलिए ऐसी दिव्य शक्तियों (पत्नियों) की कामना करता हूँ जो निम्न लक्षणों को धारण करते हुए शुद्धिकरण में मेरी सहायक बन सकें :–

(क) होत्राम् – शारीरिक शक्ति अर्थात् अन्नमय कोष

(ख) भारतीम् – धारण शक्ति अर्थात् प्राणमय कोष

(ग) वरुत्रीम् – बुराईयों और शत्रुओं को नष्ट करने की शक्ति अर्थात् मनोमय कोष

(घ) धिषणाम् – बोद्धिक शक्ति अर्थात् विज्ञानमय कोष

जीवन में सार्थकता

क्या शुद्धिकरण से सम्पूर्ण शांति और भौतिक एवं आध्यतिक प्रगति सुनिश्चित की जा सकती हैं ?

शुद्धिकरण आध्यतिक प्रगति का साफ और स्पष्ट पथ है। इस पथ पर ही हम अपने जीवन में दिव्यताओं को आमन्नित कर पाते हैं। अतः यह शुद्धिकरण प्रक्रिया समस्त मानवीय सम्बन्धों में लागू की जानी चाहिए, विशेष रूप से और सबसे महत्वपूर्ण पति-पत्नी सम्बन्ध में। दोनों सहयोगियों को शुद्धिकरण मंत्र का प्रबल अनुसरण करना चाहिए। ऐसा जोड़ा ही शारीरिक शक्ति, आजीवन प्राणिक ऊर्जा, प्रसन्न मस्तिषक और महान् बुद्धियों को सुनिश्चित कर सकता है। प्रगति और शांति ऐसे जीवन में रस्थापित हो जाती है और लगातार चारों तरफ से प्राप्त होती रहती हैं।

ऋग्वेद मन्त्र 1.22.11

अभि नो देवीरवसा महः शर्मणा नृपत्नीः ।

अच्छिन्नपत्रः सचन्ताम् ॥ 11 ॥

अभि (सचन्ताम् से पूर्व लगाकर)

नः – हमे

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

देवी: – इन्द्रियों की दिव्य शक्तियाँ, पत्नियाँ,
अवसा – रक्षा के लिए
मह: – महान, शक्तिशली
शर्मणा – सुख
नृपत्नी: – पूर्ण पुरुष की शक्ति (कियाशील तथा ऊर्जावान)
अच्छन्नपत्रा: – अन्तहीन, निर्बद्ध श्रेष्ठ गतिविधयाँ
सचन्ताम् (अभि सचन्ताम) – पूर्णतः प्राप्त

व्याख्या :-

किसे दिव्य शक्तियाँ अर्थात पत्नियाँ प्राप्त हो सकती है ?

हमें शुद्धि तथा सुविधाओं के लिए इन्द्रियों की दिव्य शक्तियाँ अर्थात पत्नियाँ प्राप्त हों। जीवन में दिव्य शक्तियों के साथ हम पूर्णरूप से संयुक्त हों अर्थात यह मेल अविच्छिन्न हों। यह दिव्य शक्तियाँ उन जोगों को मिलती हैं जो पूर्ण आर्यपुरुष अर्थात कियाशील तथा ऊर्जावान होते हैं और जिनकी श्रेष्ठ गतिविधियाँ अन्तहीन होती हैं।

जीवन में सार्थकता

दिव्य शक्तियों अर्थात पत्नियों को धारण करने की योग्यता तथा एक व्यक्ति और उसकी दिव्य शक्तियों के बीच संबन्ध निम्न लक्षणों पर निर्भर करता है :–

- (क) उसे एक पूर्ण पुरुष होना चाहिए, शरीर और बुद्धि से कियाशील तथा ऊर्जावान।
- (ख) उसकी श्रेष्ठ गतिविधियाँ अन्तहीन होनी चाहिए।
- (ग) उसे अंहकार रहित रहकर अपनी रक्षा तथा सुविधाओं के लिए ही दिव्य शक्तियाँ स्वीकार करनी चाहिए।
- (घ) उसे दिव्य शक्तियाँ पूर्णरूप से स्वीकार करनी चाहिए जिनके साथ वह कभी भी पृथक न हो

ऋग्वेद मन्त्र 1.22.12

इहेन्द्राणीमुप हवये वरुणानीं स्वस्तये ।
अग्नायीं सोमपीतये ॥ 12 ॥

इह – यहाँ इस जीवन में।

इन्द्राणीम् – बुराईयों का नाश करने के लिए सूर्य की शक्तियों को धारण करना।

उप हव्ये – हम प्राप्त करते हैं।

वरुणानीम् – बुराईयाँ दूर करने के लिए वायु की शक्तियों को धारण करने के लिए।

स्वस्तये – रक्ष के लिए।

अग्नायीम् – स्वस्थ रहने के लिए अग्नि की शक्तियों को धारण करना।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

सोमपीतये – सोम की रक्षा के लिए।

व्याख्या :-

दिव्य शक्तियों अर्थात् पत्नियों के क्या लक्षण होते हैं ?

यहाँ इस जीवन में हम अपनी रक्षा के लिए ऐसी दिव्य शक्तियों अर्थात् पत्नियों की कामना और प्रार्थना करते हैं जिनमें निम्न लक्षण हो :–

(क) सूर्य की शक्ति जिसकी ऊर्जा तथा प्रकाश दुर्गन्ध, अज्ञानता के अंधकार और बुराईयों आदि का नाश कर देती है

(ख) वायु और जल की शक्ति दिमाग को ठंडा रखने के लिए, गुस्से को नष्ट करने के लिए तथा विवेकशीलता को बनाए रखने के लिए।

(ग) अग्नि की शक्ति स्वास्थ तथा ऊर्जा को बनाए रखने के लिए।

जीवन में सार्थकता

हमें अपनी पत्नियों का सम्मान क्यों करना चाहिए ?

प्रत्येक व्यक्ति को इन्द्र, वरुण और अग्नि अर्थात् सूर्य, जल, वायु और अग्नि की शक्तियों पर ध्यान एकाग्र करना चाहिए अर्थात् हमारे जीवन में सूर्य, जल, वायु और अग्नि की शक्तियाँ प्राप्त हो। हमारे जीवन की गुणवत्ता इन्हीं की ऊर्जाओं पर निर्भर करती है। हमारी मानसिक अवस्था, पूर्ण स्वास्थ्य तथा समस्त गतिविधियाँ इन्हीं बृहद दिव्य ऊर्जाओं का परिणाम हैं। यह दिव्य शक्तियाँ ही हमारे जीवन की वास्तविक पत्नियाँ हैं जो हमें पतन से बचाती हैं। इसलिए हमें इनका सम्मान करना चाहिए।

रक्षण और सम्मान पर आधारित सम्बन्ध प्रत्येक मानवीय व्यवहार में पालन के योग्य है, विशेषरूप से गृहस्थ पति और पत्नी।

ऋग्वेद मन्त्र 1.22.13

मही द्यौः पृथिवी च न इमं यज्ञं मिमिक्षताम् ।

पिपृताम् नो भरीमणिः ॥ 13 ॥

मही – महान्, व्यापक, बड़ा

द्यौः – अन्तरिक्ष (परमात्मा का अव्यक्त प्रकाश)

पृथिवी – भूमि (बिना प्रकाश का व्यक्त संसार)

च – और

नः – हमारे

इमम् – इन

यज्ञम् – त्याग (कार्यों एवं विचारों में)

मिमिक्षताम् – मेरे लिए प्रकाशित करने वाले

पिपृताम् – पालन तथा पूरित करने वाले

नः – हमें

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

भरीमभि: – दिव्य शक्तियों, स्वस्थ प्रदान करने वाले गुणों से

व्याख्या :-

कौन हमारे त्याग कार्यों को स्वीकार करता है?

हमारे त्याग कार्यों के परिणाम क्या होते हैं?

हमारे त्याग कार्य महान् और विशाल भूमि द्वारा स्वीकार किये जाए। यह दोनों सर्वोच्च शक्ति के दो अत्यन्त मूल पहलू हैं। हमारे त्याग कार्य इन के द्वारा स्वीकार किये जाने के बाद वापिस हमें प्रकाशित करने के लिए प्राप्त हो। मेरे त्याग तथा उनकी वापसी मुझे समस्त दिव्यताओं और पूर्ण स्वस्थ देने वाले गुणों से संतुष्ट करे।

जीवन में सार्थकता

समूचा ब्रह्माण्ड हमारे त्याग कार्यों को किस प्रकार स्वीकार करता है?

त्याग के परिणाम है – दिव्यता से प्रकाशित तथा संतुष्टि।

प्रत्येक वह कार्य और विचार जो बिना किसी स्वार्थ के होता है, वह त्याग ही होता है। ऐसे कार्य और विचार ब्रह्माण्ड में पहुंच जाते हैं – धरती पर तथा अकाश में; व्यक्त और अव्यक्त में; जीव में और परमात्मा में; अंधकार में और प्रकाश में; शरीर में और मन में। सभी त्याग कार्य अन्ततः हमारे लिए दिव्य प्रकाश उत्पन्न करते हैं और हमें पालन और रक्षण करने वाले समस्त गुणों से संतुष्ट रखते हैं।

तुम जहाँ भी रहते हो या कार्य करते हो, तुम्हे केवल त्याग पर ही ध्यान केन्द्रित करना चाहिए, यही सच्चा यज्ञ है। इनसे अध्यात्मिक और भौतिक सभी लाभ मिलते हैं। त्याग कार्यों का अध्यात्मिक फल है – दिव्यता का प्रकाश। त्याग कार्यों का भौतिक फल है – रक्षण और पालन के लिए समस्त दिव्य शक्तियाँ।

ऋग्वेद मन्त्र 1.22.14

तयोरिद् धृतवत्पयो विप्रा रिहन्ति धीतिभि:।

गन्धर्वस्य ध्रुवे पदे॥ 14 ॥

तयो: – उनके (अन्तरिक्ष और पृथिवी)

इत – निश्चित रूप से

धृतवत – शुद्ध पेय की तरह

पयः – पीना

विप्रा: – ज्ञानवान् (जो विशेष रूप से स्वयं को पूर्ण करते हैं)

रिहन्ति – गति करते हैं, आनन्द करते हैं

धीतिभि: – धारण और आर्कषण करने कि शक्तियों के साथ

गन्धर्वस्य – परमात्मा का (वेद धारण करने वाला)

ध्रुवे – स्थापित

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

पदे – स्थान

व्याख्या :-

त्याग कार्यों से किस प्रकार परमात्मा की अनुभूति होती है?

एक बार जब हमारे त्याग कार्य समान रूप से धरती और अन्तरिक्ष द्वारा स्वीकार हो जाते हैं तो एक बुद्धिमान मनुष्य जिसने अपना जीवन दिव्य ज्ञान से पूर्ण कर लिया हो, वह इस प्रकार गमन करता है और आनन्दित रहता है जैसे उसने कोई शुद्ध पेय का पान कर लिया हो और वह रक्षण और धारण करने कि शक्तियों से अलंकृत हो, परमात्मा को अर्थात् उसके शरीर में अपने स्थान पर स्थापित सर्वोच्च दिव्य ऊर्जा को आकर्षित कर रहा हो।

जीवन में सार्थकता

त्याग कार्य किस प्रकार सर्वोच्च स्तर प्रदान करते हैं?

एक त्यागी व्यक्ति कभी भी हानि में नहीं रहता। वह सदैव बिना भय के गमन करता है और आनन्दित रहता है। वह अपने त्याग कार्यों से धारण करने की शक्तियाँ रखता है और अपने उच्चाधिकारियों, वृद्ध पुरुषों तथा सभी को आकर्षित करता है। उसमें दिव्य ऊर्जा स्थापित हो जाती है।

केवल त्याग करने वाले नेता, त्याग करने वाले माता-पिता, त्याग करने वाले व्यापारी, तथा त्याग करने वाले कर्मचारी ही समाज का महत्त्वपूर्ण अंग माने जाते हैं।

ऋग्वेद मन्त्र 1.22.15

स्योना पृथिवि भवानृक्षरा निवेशनी।

यच्छा नः शर्म सप्रथः ॥ 15 ॥

स्योना – सुविधाजनक, सुखकारी

पृथिवि – विस्तारयुक्त धरती

भव – हो

अनृक्षरा – बिना बाधाओं, कठिनाईयों या दुःखों के

निवेशनी – दिव्यताओं से भरपूर स्थान

यच्छ – देती है

नः – हमें

शर्म – शरण, सुख

सप्रथः – दिव्य शक्तियों से विस्तारयुक्त

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

व्याख्या :-

हमारे त्याग हमें कहाँ ले जाते हैं?

त्याग कार्यों के बाद जो भूमि हमें प्राप्त होती है, वह अत्यन्त सुविधाजनक, सुखकारी तथा ऐसी भूमि बाधाओं, कठिनाईयों या दुःखों के बिना होती है। ऐसी भूमि दिव्यताओं से भरपूर स्थान मानी जाती है और हमें दिव्य शक्तियों वाले समस्त पदार्थ शरण एवं सुख प्रदान करती है।

जीवन में सार्थकता

त्याग कार्य हमें दिव्य स्थानों पर ले जाते हैं, दिव्य शक्तियाँ तथा बाधामुक्त जीवन देते हैं।

त्याग कार्यों के प्रतिफल में हमें जो कुछ भी प्राप्त होता है, वह पूर्ण दिव्य होता है। हमसे सम्बन्धित वस्तुये और गुण आदि भी विस्तारयुक्त दिव्य शक्तियों वाले हो जाते हैं। हमें पूर्ण बाधामुक्त जीवन पाप्त होता है।

ऋग्वेद मन्त्र 1.22.16

अतो देवा अवन्तु नो यतो विष्णुर्विचक्रमे ।
पृथिव्या: सप्त धामभिः ॥ 16 ॥

अतः — अतः, इस प्रकार

देवा: — दिव्य शक्तियाँ

अवन्तु — रक्षण करती हैं

नः — हमारी

यतः — जिसके लिए

विष्णुः — सर्वव्यापक परमात्मा

विचक्रमे — विशेष रूप से निर्माण करता है

पृथिव्या: — धरती से

सप्त — सात

धामभिः — धारण

व्याख्या :-

दिव्य शक्तियों के साथ दिव्य स्थान का क्या उद्देश्य है?

सर्वव्यापक परमात्मा ने त्याग कार्यों के रक्षण के उद्देश्य से विशेष रूप से उस भूमि की रचना की है जो समस्त पदार्थों और शक्तियों सहित त्याग कार्यों के फलस्वरूप ही धारण करने योग्य सात शक्तियों के साथ प्राप्त होती है।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

सात धारण योग्य शक्तियाँ हैं – पाँच महाभूत (आकाश, वायु, सूर्य, जल तथा अर्थ), अणु तथा प्रकृति माता।

मानव जीवन में सात धारण योग्य शक्तियाँ हैं – भौतिक भोजन के सात रस (रस, रक्त, मौस, मेघ, अस्थि, मज्जा और वीर्य)।

जीवन में सार्थकता

त्याग हमें किस प्रकार महान् बनाते हैं?

लूट हमें किस प्रकार रोगी तथा अपराधी बनाती है?

अपनी समस्त धारण योग्य शक्तियों के साथ भूमि का उद्देश्य त्याग है, लूट या संग्रहण नहीं। आत्मा की अनन्त यात्रा पर संग्रहण किसी के साथ नहीं चलता और ब्रह्म की अनुभूति में सहायक भी नहीं होता। जब कि त्याग कार्य आत्मा की अनन्त यात्रा पर साथ चलते हैं और ब्रह्म की अनुभूति में सहायक होते हैं। त्याग आपको महान् बनाते हैं। लूट आपको रोगी तथा अपराधी बनाती है।

अन्ततः सृष्टि के उद्देश्य को समझने के लिए, सृष्टि निर्माता के मस्तिष्क को समझने का प्रयास करो, उस मस्तिष्क की गहराई में जाओ। आपको निश्चित रूप से अपने आप ही सृष्टि का उद्देश्य समझ में आ जायेगा।

ऋग्वेद मन्त्र 1.22.17

इदं विष्णुर्विं चक्रमे त्रेधा नि दधे पदम्।
समूळहमस्य पांसुरे ॥ 17 ॥

इदम् – यह (सृष्टि)

विष्णुः – सर्वव्यापक परमात्मा

वि चक्रमे – विशेष रूप से रचित

त्रेधा – तीन प्रकार से

नि दधे – धारण

पदम् – कदम

समूळहम – तर्कपूर्वक, कर्तव्यबद्ध

अस्य – यह

पांसुरे – व्यापक आकाश में

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

व्याख्या :-

सृष्टि रचना के तीन पहलू कौन से हैं?

सर्वव्यापक परमात्मा ने विशेष रूप से इस सृष्टि की रचना की है और उसे व्यापक रूप से आकाश में धारण किया है। यह सृष्टि तर्क पर खरी है और संचालन में कर्तव्यबद्ध है। इस सृष्टि के तीन पहलू हैं :-

(क) इस सृष्टि का कारण अदृश्य है।

(ख) इसमें सूर्य तथा अन्य आकाशीय शरीर प्रकाश तथा ऊर्जा देते हैं। •

(ग) भूमि प्रकाश रहित शरीर है।

जीवन में सार्थकता

हमारे जीवन के तीन पहलू कौन से हैं?

आईये, हम सृष्टि के तीन पहलुओं पर गहरा चिन्तन करें – (क) कारण, (ख) प्रकाश पैदा करने वाले शरीर, (ग) प्रकाश रहित शरीर।

इसी प्रकार के तीन पहलू मानव जीवन में देखने को मिल सकते हैं। सर्वप्रथम, वह दिव्य शक्ति परमात्मा ज्ञान का प्रकाश पैदा करने के लिए सदैव विद्यमान है। द्वितीय, कुछ तत्व मिलकर मानव शरीर का रूप लेते हैं। तृतीय, प्राणों का प्रवेश वह कारण है जो इस जीवन को पूर्ण बनाता है।

अतः जीवन का उद्देश्य उस दिव्य शक्ति के प्रति पूरी तरह स्पष्ट और एकाग्र होना चाहिए, जो ज्ञान का प्रकाश उत्पन्न करने के लिए हम सबके भीतर विद्यमान है। जब हम इस एकाग्रता से भटक जाते हैं तो हम अज्ञानी रह जाते हैं और असंख्य परेशानियों और विपत्तियों से पीड़ित होते हैं।

ऋग्वेद मन्त्र 1.22.18

त्रीणि पदा विचक्रमे विष्णुर्गोपा अदाभ्यः ।

अतो धर्माणि धारयन् ॥ 18 ॥

त्रीणि – तीन प्रकार से

पदा – कदम

वि चक्रमे – विशेष रूप से रचित

विष्णुः – सर्वव्यापक परमात्मा

गोपा – समूची सृष्टि का रक्षक

अदाभ्यः – अहिंसनीय, विनष्ट न होने योग्य

अतः – अतः

धर्माणि – गुण, ज्ञान

धारयन् – धारण करना

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

व्याख्या :-

परमात्मा किस प्रकार शुभ गुणों अर्थात् धर्म को धारण करता है?

परमात्मा ने इस सृष्टि की रचना तीन पहलुओं से की है – (क) सृष्टि का कारण, (ख) प्रकाश पैदा करने वाले शरीर, (ग) प्रकाश रहित शरीर।

इस सृष्टि की रचना के बाद परमात्मा इस विशाल सृष्टि को किस प्रकार धारण तथा पालन करता है?

यह कार्य उपरोक्त तीन पहलुओं के कारण ही सम्भव होता है।

(क) क्योंकि वह स्वयं सृष्टि का कारण है, बल्कि उसने स्वयं को सृष्टि के प्रत्येक रूप में अभिव्यक्त किया है, अतः वह सर्वव्यापक है; वह प्रत्येक वस्तु में होने वाली प्रत्येक हलचल को जानता है, यहाँ तक कि वह हमारे हृदय और मस्तिष्क में उठने वाले विचार को भी जानता है। (ख) वह स्वयं अपने आपका अर्थात् इस सृष्टि का रक्षण करने के लिए कर्तव्यबद्ध है। (ग) वह स्वयं अव्यक्त होने के कारण न तो हिंसनीय है और न ही नष्ट होने योग्य।

इस प्रकार उसके ये तीन लक्षण उसे इस योग्य तथा शक्ति सम्पन्न बना देते हैं कि वह अपने महान् ज्ञान, गुणों तथा व्यवहारों को धारण कर सके। यही सृष्टि के धर्म हैं। परमात्मा स्वयं धर्म है। अतः परमात्मा धर्म को सामान्य रूप से धारण कर लेता है।

जीवन में सार्थकता

हम कैसे धर्म को धारण कर सकते हैं?

हम भी धर्म को बिना किसी कठिनाई के धारण कर सकते हैं। इसके लिए हमें परमात्मा के तीन लक्षणों पर गहरा चिन्तन, उनका अनुसरण और उन्हें जीवन में उतारना होगा।

(क) हम भी व्यापक हो सकते हैं। इसके लिए हमें अपने हृदय सबके कल्याण के लिए खोलने होंगे और कभी भी किसी के विरुद्ध बुरा नहीं सोचना होगा। अपने स्वार्थ रहित तथा अहंकार रहित व्यवहार से हम असंख्य हृदयों तक अपनी पहुँच बना सकते हैं।

(ख) केवल अपना रक्षण करने के स्थान पर हमें अन्य लोगों के हितों का रक्षण करना चाहिए।

(ग) यदि हम स्वार्थरहित और अहंकाररहित हो जाते हैं तो हम भी स्वतः ही अहिंसनीय तथा नष्ट न होने योग्य बन जायेंगे।

इसके अतिरिक्त एक बार जब हम अपने अस्तित्व के आध्यात्मिक स्तर पर स्थापित हो जाते हैं तो हम सरलतापूर्वक यह अनुभूति प्राप्त कर लेंगे कि हमारा मूल अस्तित्व अर्थात् आत्मा अहिंसनीय तथा अनाशवान है।

इस प्रकार के विचार से हम भी धर्म को अर्थात् महान् ज्ञान, गुण तथा समस्त अच्छाईयों को धारण कर पायेंगे।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

ऋग्वेद मन्त्र 1.22.19

विष्णोः कर्मणि पश्यत यतो व्रतानि पस्पशे ।
इन्द्रस्य युज्यः सखा ॥ 19 ॥

विष्णोः – सर्वव्यापक परमात्मा के
कर्मणि – कार्य (सृष्टि निर्माण, न्यायपूर्वक पालन, परिवर्तन)
पश्यत – गहराई से देखना और समझना
यतः – जिससे
व्रतानि – संकल्प, प्रतिबद्धता, सत्य और न्याय
पस्पशे – प्राप्त होते हैं
इन्द्रस्य – परमात्मा की
युज्यः – संगति
सखा – मित्र के समान

व्याख्या :-

परमात्मा के साथ मित्रता कैसे करें?

जो व्यक्ति परमात्मा के कार्यों को देखता है, समझता है और गहराई से उनकी अनुभूति प्राप्त करता है, वह समान रूप से महान् और पवित्र संकल्पों, सत्य के प्रति प्रतिबद्धता और न्यायिक व्यवहार को अपने में स्थापित कर लेता है। इस प्रकार, परमात्मा की संगति के साथ वह परमात्मा को अपना मित्र बना लेता है। यह वास्तव में एक पवित्र मित्रता अर्थात् कर्मों की मित्रता होती है।

परमात्मा के कार्यों को समझो और परमात्मा का अनुसरण करने के लिए अपने संकल्पों का निरीक्षण करो। ऐसी गम्भीर प्रतिबद्धता के साथ ही आप परमात्मा को अपना मित्र बना सकते हो।

जीवन में सार्थकता

महान् व्यक्तियों के साथ मित्रता कैसे करें?

दो मनुष्यों के बीच मित्रता विचारों या कार्यों में समानता के आधार पर ही होती है। अपने माता-पिता, वरिष्ठ जनों, नेताओं आदि का अनुसरण करो। अपना जीवन उनसे मित्रता करने की प्रतिबद्धता के साथ आहूत कर दो। आपको निश्चित रूप से मित्रता का एक प्रबल बंधन महसूस होगा।

ऋग्वेद मन्त्र 1.22.20

तदिवष्णोः परमं पदं सदा पश्यन्ति सूरयः ।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

दिवीव चक्षुराततम् ॥ 20 ॥

तत् – वह

विष्णोः – सर्वव्यापक परमात्मा

परमम् – सर्वोच्च

पदम् – स्थान, कार्य, अस्तित्व

सदा – सदैव

पश्यन्ति – देखता, महसूस करता है

सूरयः – परमात्मा का अनुसरण करने वाले विद्वान्

दिवि – अन्तरिक्ष

इव – यह

चक्षुः – परमात्मा, सूर्य की आँखों के समान

आततम् – सर्वत्र फैला हुआ

व्याख्या :-

भगवान की अनुभूति किस प्रकार सम्भव है?

परमात्मा का आध्यात्मिक रूप से अनुसरण करने वाले विद्वान् सर्वत्र व्यापक परमात्मा, उसके सर्वोच्च अस्तित्व और कार्यों की अनुभूति प्राप्त करने के योग्य होते हैं। वे परमात्मा को चारों तरफ सूर्य के रूप में देखते हैं, जो परमात्मा की दृष्टि के समान है और चारों तरफ फैला हुआ है।

सूर्य तथा हमारी आँखें संयुक्त रूप से ही हमें देखने योग्य बनाती हैं। यही परमात्मा के साथ हमारी एकता का प्रमुख सूत्र है।

हम अपनी आँखों से देखने योग्य तभी हो पाते हैं, जब सूर्य के द्वारा उत्पन्न किया गया प्रकाश उस वस्तु पर पड़ता है। सूर्य के बिना हम स्वस्थ आँखों के होते हुए भी कुछ देखने योग्य नहीं होंगे। सूर्य ही परमात्मा की सृष्टि की मूल तथा सबसे महत्वपूर्ण रचना है। सूर्य की शक्ति जब हमारे आँखों में पहुँचती है तो वह हमारी व्यक्तिगत आँखों के साथ-साथ परमात्मा की आँखें भी बन जाती हैं। अतः अपनी आँखों को परमात्मा की आँखों के साथ संयुक्त करके ही हम अपने चारों तरफ पदार्थों को देख पाते हैं। यदि हम परमात्मा के साथ अपनी एकता पर लगातार चिन्तन करते रहें तो हम गहराई में जाकर उसे सर्वत्र और अपने जीवन के प्रत्येक कदम पर महसूस कर पायेंगे। हमारी आँखें हमारे लिए सूर्य बन जायेंगी।

जीवन में सार्थकता

हम जीवन में किस प्रकार महान बन सकते हैं?

जब भी आप महान लोगों का अनुसरण करने की इच्छा करो तो उनके हर कार्य को उन्हों की आँखों से देखने की कोशिश करो।

एक महान व्यक्तित्व का महान पुत्र या पुत्री बनने के लिए अपने माता-पिता के मस्तिष्क का अनुसरण करने की कोशिश करो।

एक महान नौकर बनने के लिए अपने महान निर्देशक के मस्तिष्क का अनुसरण करने की कोशिश करो।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

एक महान नेता बनने के लिए किसी महान नेता के मस्तिष्क का अनुसरण करने की कोशिश करो।

ऋग्वेद मन्त्र 1.22.21

तद्विप्रासो विपन्यवो जागृवांसः समिन्धते।
विष्णोर्यत्परमं पदम् ॥ 21 ॥

तत् – उसको

विप्रासः – महान् विद्वान् जो विशेष रूप से अपने जीवन को पूर्ण करते हैं।

विपन्यवः – परमात्मा की अनेक प्रकार से प्रशंसा करते हैं

जागृवांसः – शुभ गुणों और ज्ञान में जाग्रत्

समिन्धते – उत्तम अनुभूति

विष्णोः – सर्वव्यापक परमात्मा

यत् – जो

परमम् – सर्वोच्च

पदम् – स्थान, कार्य, अस्तित्व

व्याख्या :-

अपने जीवन को विशेष रूप से पूर्ण कैसे करें?

केवल विप्रासः अर्थात् महान् विद्वान् ही अपने जीवन को विशेष रूप से पूर्ण कर पाते हैं और उस सर्वोच्च शक्ति परमात्मा के अस्तित्व को सुन्दरता के साथ महसूस कर लेते हैं, जो सर्वव्यापक है। ऐसे लोग समाज में अत्यन्त दुर्लभ होते हैं जो निम्न दो प्रकार से कार्य करते हैं:-

(क) जो परमात्मा की अनेक प्रकार से प्रशंसा करते हैं,

(ख) जो गुणों एवं महान् ज्ञान में क्रियात्मक रूप से जागृत हैं।

जीवन में सार्थकता

जीवन में विशेष रूप से सफलता कैसे प्राप्त करें?

इसमें कोई सन्देह नहीं है कि मानव जीवन का मूल एवं अन्तिम उद्देश्य परमात्मा की अनुभूति प्राप्त करना है। इसके लिए परमात्मा के प्रति श्रद्धा से समर्पित एक पूर्ण व्यक्तित्व की आवश्यकता है। बाहरी रूप से वह बेशक एक सांसारिक व्यक्ति दिखाई दे, परन्तु उसके कार्यों की पूर्णता उसे परमात्मा की अनुभूति के योग्य बनाती है।

हमारे सांसारिक जीवन की गतिविधियों में भौतिक सफलता को अर्जित करना बहुत कठिन नहीं है। अपने दैनिक जीवन में भी दिव्य सिद्धान्तों को लागू करना चाहिए। इसके बाद महान् परिणाम प्राप्त होंगे।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

(क) विप्रासः बनो – अपने सभी कार्यों एवं कर्तव्यों को विशेष रूप से पूर्ण करो। सब कार्य समय पर हों और पूरी विशेषज्ञता के साथ हों।

(ख) विपन्न्यव बनो – सबकी प्रशंसा करो, विशेष रूप से अपने वृद्धजनों और उच्चाधिकारियों की।

(ग) जागृत्वांसः बनो – अपने क्षेत्र के ज्ञान में जागृत रह कर उच्च गुणों को धारण करो।

कोई भी शक्ति आपको सफलता से एक कदम पूर्व भी रोक नहीं सकती।

ऋग्वेद मण्डल-1 सूक्त 23

ऋग्वेद मन्त्र 1.23.1

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

तीव्राः सोमास आ गह्याशीर्वन्तः सुता इमे ।
वायो तान्प्रस्थितान्पिब ॥ १ ॥

तीव्राः – दृढ़ और शक्तिशाली तरंगें
सोमासः – ज्ञान, गुण आदि
आ गहि – प्राप्त हों
आशीर्वन्तः – प्रशंसनीय आशीर्वाद
सुता – उत्पन्न
इमे – ये
वायो – वायु
तान् – वे (ज्ञान और गुण)
प्रस्थितान् – सूक्ष्म रूप से प्रगतिशील
पिब – समाहित कर लेना ।

व्याख्या :-

हमारे संकल्पों को आशीर्वाद किस प्रकार मिलता है?

जब हमारे शरीर और मस्तिष्क में उत्पन्न ज्ञान और गुण इतने दृढ़ और शक्तिशाली रूप से तरंगित होने लगते हैं तो उन्हें प्रशंसनीय आशीर्वाद मिलता है। हमारी वायु अर्थात् प्राण हमारे मस्तिष्क में उत्पन्न होने वाली तरंगों को सूक्ष्म रूप से अपने अन्दर समाहित कर लेते हैं, जिससे प्रगति का मार्ग प्रशस्त हो। प्राणायाम के द्वारा हमारे संकल्प सदा के लिए हमारे मन मस्तिष्क में व्याप्त हो जाते हैं, उत्साह तथा शक्ति उत्पन्न करते हैं, जिससे सफलता प्राप्त की जा सके। इस प्रकार हमारे ज्ञान और गुणों की दृढ़ और शक्तिशाली तरंगें क्रियात्मक रूप में हमारे जीवन में अनुभूत होने लगती हैं। वृद्धजनों और उच्चाधिकारियों के आशीर्वाद भी तभी सफल होते हैं, जब हमारे अपने ज्ञान और गुण इतने दृढ़ और शक्तिशाली हों कि वे हमारी प्राणवायु में सूक्ष्म रूप में समाहित हो चुके हों।

जीवन में सार्थकता

आशीर्वाद किस प्रकार सफल होते हैं?

परमात्मा से या अपने वृद्धजनों से प्राप्त आशीर्वाद को सफल करने के लिए हमें निम्न कार्य करने चाहिए :-

- (क) हमारे अन्दर दृढ़ और शक्तिशाली ज्ञान और गुणों का मजबूत आधार होना चाहिए।
- (ख) हमें उन ज्ञान और गुणों को ध्यान और प्राणायाम आदि साधना से अपनी आन्तरिक वायु में सूक्ष्म रूप से समाहित कर देना चाहिए।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

जब भी कुछ प्राप्त करने की इच्छा हो तो हमें अपने सारे शरीर को उस इच्छा से तरंगित कर लेना चाहिए, उससे सम्बन्धित ज्ञान और गुणों को प्राप्त करना चाहिए। उस पर ध्यान साधना के बाद कार्य प्रारम्भ करना चाहिए। इसके बाद आशीर्वाद और सफलता अवश्य ही सत्य सिद्ध होगी।

ऋग्वेद मन्त्र 1.23.2

उभा देवा दिविस्पृशेन्द्रवायू हवामहे ।
अस्य सोमस्य पीतये ॥ २ ॥

उभा – दोनों

देवा – दिव्य शक्तियाँ

दिविस्पृशा – दिव्यता का स्पर्श (ज्ञान का प्रकाश तथा सफलता की ऊचाईयाँ)

इन्द्रवायू – ऊर्जा तथा क्रियाशीलता

हवामहे – पुकारना, आमंत्रित करना, साधना

अस्य – वे

सोमस्य – ज्ञान और गुण

पीतये – धारण करना, समाहित करना, पीना

व्याख्या :-

ज्ञान और गुणों को किस प्रकार अपने अन्दर धारण और समाहित करें?

यह मन्त्र केवल दो शब्दों में इस प्रश्न का स्पष्ट उत्तर उपलब्ध कराता है :–

(क) इन्द्र अर्थात् ऊर्जा,

(ख) वायु अर्थात् क्रियाशीलता।

ये दो लक्षण दिव्यता को स्पर्श कराने वाले हैं। दिव्यता ज्ञान के प्रकाश और सफलता की ऊचाईयों को कहा जाता है। यदि हम ऊर्जा एवं क्रियाशीलता को अपने जीवन में साध लें तो निश्चित रूप से हम ज्ञान और गुणों को क्रियात्मक रूप से अपने अन्दर धारण और समाहित कर पायेंगे। ऐसी अवस्था में ज्ञान और गुण केवल शाब्दिक नहीं रहेंगे।

जीवन में सार्थकता

परमात्मा तथा सूर्य ऊर्जा का प्रतिनिधित्व करते हैं।

वायु तथा जल क्रियाशीलता का प्रतिनिधित्व करते हैं।

ऊर्जा हमारे ज्ञान का प्रतिनिधित्व करती है। क्रियाशीलता हमारी शारीरिक शक्ति का प्रतिनिधित्व करती है। यह दोनों शक्तियाँ, शारीरिक और मानसिक, हमारे स्वज्ञों और इच्छाओं को सत्य सिद्ध करती हैं। सब

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

दिशाओं से ऊर्जा अर्थात् ज्ञान का संकलन करो और सब दिशाओं में क्रियाशीलता के लिए तैयार रहो। सूर्य तथा परमात्मा समस्त ऊर्जाओं और ज्ञान के मूल स्रोत हैं। वायु तथा जल क्रियाशीलता के स्रोत हैं।

ऋग्वेद मन्त्र 1.23.3

इन्द्रवायू मनोजुवा विप्रा हवन्त ऊतये ।
सहस्राक्षा धियस्पती ॥ ३ ॥

इन्द्र वायू – सूर्य तथा वायु, ऊर्जा तथा क्रियाशीलता
मनोजुवा – मन की गति वाला, प्रेरक मन
विप्रा: – विद्वान्
हवन्त – पुकारना, आमंत्रित करना, साधना
ऊतये – रक्षा तथा सफलता के लिए
सहस्राक्षा – असंख्य पहलू (शक्तियाँ)
धियस्पती – विद्वता और सुकर्मों के रक्षक।

व्याख्या :-

सूर्य (इन्द्र) तथा वायु के क्या लाभ हैं?

सूर्य (इन्द्र) अर्थात् ऊर्जा तथा वायु मन को प्रेरणा देते हैं और गति प्रदान करते हैं। अब तक ऐसी कोई मशीन नहीं बनी जो मन को प्रेरणा दे सके या उसकी गति को माप सके, जो एक क्षण से भी कम समय में दूर तक जा सकता है। मन का यह लक्षण केवल हमारी उस ऊर्जा एवं क्रियाशीलता के कारण है, जो हमें सूर्य तथा वायु अर्थात् इन्द्र और वरुण के द्वारा प्रदान की जाती हैं। सभी विद्वान् लोग अपने जीवन की रक्षा और सफलता के लिए इन्द्र और वायु के इन लक्षणों को पुकारते हैं, धारण करते हैं और उन्हें साध लेते हैं। इन्द्र और वायु अर्थात् ऊर्जा और क्रियाशीलता के असंख्य पहलू अर्थात् शक्तियाँ हैं।

जीवन में सार्थकता

ऊर्जा और क्रियाशीलता के क्या लाभ हैं?

हमारे घरों में या समाज में कहीं पर भी हमारे जीवन की सभी गतिविधियों में हमें ऊर्जा और क्रियाशीलता को साधने पर ध्यान एकाग्र करना चाहिए। सूर्य तथा वायु अर्थात् ऊर्जा और क्रियाशीलता भगवान की दिव्य शक्तियाँ हैं। इन शक्तियों के साथ आप जीवन में कुछ भी इच्छा कर सकते हैं और उसे प्राप्त कर सकते हैं। ये शक्तियाँ हमारे ज्ञान, हमारी विद्वता और गतिविधियों की वास्तविक संरक्षक हैं। ऊर्जा और क्रियाशीलता के बिना या तो कोई रोगी होगा या मृत होगा।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

ऋग्वेद मन्त्र 1.23.4

मित्रं वयं हवामहे वरुणं सोमपीतये ।
जज्ञाना पूतदक्षसा ॥ 4 ॥

मित्रम् – प्राण (जीवन के लिए), हमारे अन्दर तथा शरीर के बाहर
वयम् – हम

हवामहे – पुकारते, आमंत्रित करते हैं

वरुणम् – शरीर में ऊपर आने वाली वायु

सोमपीतये – ज्ञान और गुणों को धारण करने के लिए

जज्ञाना – ऊर्जा के विज्ञान के लिए

पूत दक्षसा – हमारी ऊर्जा और शक्ति की शुद्धि के लिए ।

व्याख्या :-

हमारी जीवन शक्ति के पीछे आध्यात्मिक पहलू क्या हैं?

हम प्राणों को स्वागतपूर्वक आमंत्रित करते हैं, जो हमारे शरीर के अन्दर तथा बाहर विद्यमान महत्वपूर्ण वायु है। यह वायु हमारे जीवन की मूल शक्ति है, जिसके बिना हमारा शरीर रोगी या मृत हो जायेगा। हमारे शरीर में ऊपर आने वाली वायु को उदान कहा जाता है, जो हमारी जीवनी शक्ति का महत्वपूर्ण अंग है। इस जीवनी शक्ति के इस पहलू के निम्न उद्देश्य हैं :–

- (क) ज्ञान और गुणों को धारण करना,
- (ख) ऊर्जा के विज्ञान को जानना और उसकी अनुभूति प्राप्त करना,
- (ग) ऊर्जा और शक्ति के शुद्धिकरण के लिए।

इन तीनों पहलुओं को वर्तमान जीवन में व्याप्त करने के लिए ही हमें जीवनी शक्ति मिलती है। हमें जीवनी शक्ति के इस उद्देश्य पर इसी जीवन में ध्यान एकाग्र करना चाहिए। एक बार जब हम अपने प्राणों पर ध्यान एकाग्र करके इस पथ पर चलने के योग्य बन जाते हैं, हमारी गतिविधियाँ तथा सम्पूर्ण जीवन की दिशा परिवर्तित हो जायेगी और पूर्ण शुद्धता की तरफ, अन्ततः ईश्वर की अनुभूति की तरफ अग्रसर होगी।

जीवन में सार्थकता

अपनी व्यक्तिगत ऊर्जा के विज्ञान की अनुभूति किस प्रकार प्राप्त करें और इसे किस प्रकार शुद्ध करें?

हम जीवन में जिस किसी भी व्यवस्था में जी रहे हैं, हमें से प्रत्येक व्यक्ति किसी न किसी रूप में ऊर्जा प्राप्त करता ही है, जैसे योग्यताओं, क्षमताओं और कलाओं के भिन्न-भिन्न स्तर। हमें अपनी व्यक्तिगत ऊर्जा के विज्ञान की अनुभूति प्राप्त करने का प्रयास करना चाहिए और उस जीवनी शक्ति तथा उसके उद्देश्य पर

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

ध्यान एकाग्र करके उसे शुद्ध करने का प्रयास करना चाहिए। शरीर में ऊपर आने वाले प्राण ही मूल जीवनी शक्ति हैं।

ऋग्वेद मन्त्र 1.23.5

ऋतेन यावृतावृधावृतस्य ज्योतिषस्पती ।
ता मित्रवरुणा हुवे ॥ ५ ॥

ऋतेन – समय पर, परमात्मा द्वारा उत्पन्न और धारण किया गया
यौ – जो

वृता वृधौ – सत्य को बढ़ाने वाला

ऋतस्य – वास्तविक ज्ञान

ज्योतिषः पती – आन्तरिक प्रकाश का रक्षक (ज्ञान और गुणों का)

ता – वह

मित्रा वरुणौ – सूर्य तथा वायु, ऊर्जा तथा क्रियाशीलता

हुवे – मैं पुकारता हूँ, आमंत्रित करता हूँ, साधता हूँ।

व्याख्या :-

हमारा आन्तरिक प्रकाश क्या है, इसकी रक्षा तथा शुद्धि कैसे करें?

हम सूर्य तथा वायु अर्थात् ऊर्जा तथा क्रियाशीलता को अपने जीवन के लिए पुकारते हैं। इन ऊर्जाओं के निम्न लक्षण हैं :-

(क) वे ऋतेन हैं अर्थात् समय पर, परमात्मा द्वारा उत्पन्न और धारण किये गये हैं।

(ख) वे वृता वृधौ हैं अर्थात् सत्य को बढ़ाने वाले हैं।

(ग) वे ऋतस्य हैं अर्थात् वास्तविक ज्ञान हैं।

(घ) वे ज्योतिषः पती हैं अर्थात् ज्ञान और गुणों रूपी आन्तरिक प्रकाश के रक्षक हैं।

प्रत्येक व्यक्ति को अपनी व्यक्तिगत ऊर्जा के इन लक्षणों की अनुभूति प्राप्त करने का प्रयास करना चाहिए। अन्तिम लक्षण यह कहता है कि हमारी व्यक्तिगत तथा मूल ऊर्जा सर्वोच्च दिव्य ऊर्जा का सार है, वही भगवान है और वही ज्ञान और गुण रूपी हमारे आन्तरिक प्रकाश की रक्षक है। इसका अर्थ यह हुआ कि परमात्मा का महान् और सर्वोच्च ज्ञान तथा सभी महान् गुण हमारे अन्दर ही छिपे हैं, परन्तु यह हमारे मस्तिष्क के आवरण से ढके रहते हैं क्योंकि वह भौतिक पदार्थों के ज्ञान अर्जन में ही लगा रहता है। ध्यान साधना अर्थात् प्राणों पर ध्यान एकाग्र करने की प्रक्रियाओं से हम उन सभी छिपे हुए आन्तरिक ज्ञान और गुणों को प्रकाशित कर सकते हैं।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

जीवन में सार्थकता

आन्तरिक प्रकाश से क्या हम अपने जीवन की गतिविधियों को श्रेष्ठ बना सकते हैं?

अपने आन्तरिक प्रकाश पर ध्यान एकाग्र करके तथा उसका सम्बद्धन करके हम निश्चित रूप से इसका प्रयोग अपने जीवन की गतिविधियों में कर सकते हैं। इससे हमारे सांसारिक जीवन में निश्चित रूप से एक महान् सुधार सुनिश्चित होगा।

ऋग्वेद मन्त्र 1.23.6

वरुणः प्राविता भुवन्मित्रे विश्वाभिरुतिभिः ।

करतां नः सुराधसः ॥ 6 ॥

वरुणः — शरीर में ऊपर आने वाली वायु

प्राविता — सुविधाओं को देने वाले

भुवत् — हो

मित्रः — जीवन शक्ति, वायु

विश्वाभिः — सब

ऊतिभिः — सब वस्तुओं के रक्षक

करताम् — करते हैं

नः — हमें

सुराधसः — महान् ज्ञान और गौरवशाली सम्पदा के धारक ।

व्याख्या :-

जीवनी शक्ति अर्थात् शरीर में ऊपर आने वाले प्राण क्या हमारी सांसारिक प्रगति में सहायता करते हैं?

मित्र और वरुण अर्थात् क्रियाशीलता और ऊर्जा सब वस्तुओं और सुविधाओं के उपलब्ध करवाने वाले तथा रक्षक हैं। वे हमें महान् ज्ञान और गौरवशाली सम्पदा को धारण करने योग्य बनाते हैं, जो सबके कल्याण के लिए आवश्यक हैं।

वैज्ञानिक रूप से भी इस तथ्य से इन्कार नहीं किया जा सकता है कि प्राण शक्ति ही हमारे जीवन की ताकत है और इसी के बल पर हम सभी पदार्थ, ज्ञान तथा गुण धारण करने के योग्य बनते हैं, जिनके आधार पर हमें अच्छा स्तर प्राप्त होता है। हमारी जीवन शक्ति केवल हमारे शारीरिक माता और पिता के द्वारा उत्पन्न की गयी भौतिक शक्ति के रूप में नहीं है, यह सर्वोच्च शक्तिमान परमात्मा की सर्वोच्च भेंट है। यह मूल जीवन शक्ति हमें समस्त भौतिक पदार्थों को अर्जित करने के साथ-साथ सर्वोच्च दाता की अनुभूति प्राप्त करने के योग्य बनाती है।

जीवन में सार्थकता

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

हमें अपने माता-पिता और मार्गदर्शकों का सम्मान क्यों करना चाहिए?

हमारे माता-पिता हमारे जीवन का स्रोत हैं, वही हमारी जीवनी शक्ति के दाता के समान हैं, जिसके परिणामस्वरूप हमें समस्त सुख और ज्ञान प्राप्त होते हैं। हमें इसी रूप में उन्हें स्वीकार करना चाहिए और उनके समक्ष नतमस्तक होना चाहिए। हमारे सम्माननीय गुरु, हमारे उच्चाधिकारी और अन्य मार्गदर्शक भी किसी न किसी रूप में हमारे लिए दाता होते हैं। वे भी हमारे पूर्ण सम्मान के अधिकारी हैं।

ऋग्वेद मन्त्र 1.23.7

मरुत्वन्तं हवामह इन्द्रमा सोमपीतये ।
सजूर्गणेन तृम्पतु ॥ 7 ॥

मरुत्वन्तम् – वायु के साथ, क्रियाशीलता
हवामहे – मैं पुकारता हूँ, आमंत्रित करता हूँ, साधता हूँ।
इन्द्रमा – सूर्य, ऊर्जा
सोमपीतये – ज्ञान और गुणों आदि को धारण करने के लिए
सजूः – के साथ
गणेन – वायु का समूह, क्रियायें
तृम्पतु – सन्तुष्ट, तृप्ति ।

व्याख्या :-

ऊर्जा तथा क्रियाशीलता एकत्रित रूप में ही क्यों लाभकारी होती हैं?

मैं सूर्य अर्थात् ऊर्जा को, वायु अर्थात् ज्ञान और गुणों को धारण करने की क्रियाशीलता के साथ पुकारता हूँ जिससे मैं अनेकों प्रकार की गतिविधियाँ सम्पन्न कर सकूँ तभी मैं सन्तुष्ट और तृप्त हो सकूँगा।

इस मन्त्र से ऊर्जा तथा क्रियाशीलता के दो लक्षण निकलते हैं :-

(क) किसी भी रूप में हमारी ऊर्जा तभी लाभदायक होगी, जब यह किसी गतिविधि के साथ जुड़ी हो। बिना क्रियाशीलता के ऊर्जा बिना कर्म के ज्ञान समान है। ऐसी ऊर्जा या ज्ञान किसी लाभ का नहीं।

(ख) हमें पूर्ण सन्तुष्टि तभी प्राप्त होगी, जब हम भिन्न-भिन्न प्रकार की गतिविधियाँ सम्पन्न करें, अर्थात् हमारी ऊर्जा से बड़ी संख्या में लोग लाभान्वित हों।

जीवन में सार्थकता

हम अपने जीवन में किस प्रकार सन्तुष्ट रह सकते हैं?

हमें जीवन में जो भी ज्ञान मिलता है, उसे क्रियात्मक प्रयोग के साथ अवश्य जोड़ा जाना चाहिए। कोई भी ज्ञान तब तक लाभदायक नहीं हो सकता, जब तक उसके आधार पर कोई गतिविधियाँ आधारित न हों।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

हम एक परिवार और समाज का अंग हैं। इसलिए हमें सदैव यह ध्यान रखना चाहिए कि उन सबके प्रति हमारी अनेक जिम्मेदारियाँ हैं। अपने चारों तरफ सभी जीवों के लाभ के लिए हमें अपने ज्ञान और समस्त ऊर्जाओं का प्रयोग करना चाहिए।

ऋग्वेद मन्त्र 1.23.8

इन्द्रज्येष्ठा मरुदगणा देवासः पूषरातयः ।
विश्वे मम श्रुता हवम् ॥ 8 ॥

इन्द्र ज्येष्ठा: – सर्वोच्च एवं प्रशंसनीय सूर्य

मरुदगणा: – वायु के समूह, गतिविधियाँ

देवासः – दिव्य गुणों वाले

पूषरातयः – सब पदार्थों को देने वाला, सूर्य की ऊर्जा से सम्बन्धित

विश्वे – सब

मम – मेरे

श्रुता – सुनो

हवम् – शब्द, पुकार

व्याख्या :-

हम समस्त गतिविधियाँ किस प्रकार सम्पन्न करते हैं?

सूर्य सर्वोच्च तथा प्रशंसनीय ऊर्जा है। इसके दिव्य गुण हैं और सूर्य की शक्तियों से सम्बन्धित समस्त पदार्थ यह हमें उपलब्ध कराता है। मैं वायु समूहों अर्थात् अपनी गतिविधियों से प्रार्थना करता हूँ कि वे मेरी ऊर्जा की पुकार को सुनें। मेरी समस्त गतिविधियों से अपेक्षित है कि वे मेरी ऊर्जा की प्रशंसा करें और उसका भरपूर प्रयोग करें। ऊर्जा तथा गतिविधियाँ दोनों ही सर्वोच्च शक्ति परमात्मा के द्वारा प्रदत्त हैं, बिना ऊर्जा के कोई भी गतिविधि सम्पन्न नहीं की जा सकती। गत मन्त्र में यह स्पष्ट स्थापित किया गया है कि ऊर्जा तभी लाभदायक है यदि इसे गतिविधि के साथ संयुक्त किया जाये। अब यह मन्त्र कहता है कि ऊर्जा सर्वोच्च है और समस्त गतिविधियों से यह अपेक्षित है कि वे उसकी प्रशंसा करें और उसका भरपूर प्रयोग करें।

जीवन में सार्थकता

ऊर्जा किस प्रकार सर्वोच्च एवं प्रशंसनीय है?

जीवन में किसी भी गतिविधि को प्रारम्भ करने से पूर्व हमें अपनी ऊर्जा का स्तर ध्यान में लाकर उसकी प्रशंसा इस प्रार्थना के साथ करनी चाहिये कि वह गतिविधियों को सर्वोत्तमता के साथ सम्पन्न करे। यदि आपको अपनी ऊर्जा का स्तर किसी दृष्टि से कमजोर लगता हो तो सर्वप्रथम अपनी ऊर्जा का स्तर बढ़ाओ। सदैव यह ध्यान में रखना चाहिए कि ऊर्जा वास्तव में सर्वोच्च तथा प्रशंसनीय है। हमारी सभी गतिविधियाँ तथा उनकी सफलता ऊर्जा पर ही निर्भर करती है।

ऋग्वेद मन्त्र 1.23.9

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

हत वृत्रं सुदानव इन्द्रेण सहसा युजा ।
मा नो दुःशंस ईशत || 9 ||

हत — नष्ट करना

वृत्रम् — वृत (अज्ञानता के, बादलों के)

सुदानवः — दाता होने का सर्वोत्तम लक्षण धारण करने वाला

इन्द्रेण — सूर्य, ऊर्जा

सहसा — शक्ति, बल

युजा — जुड़ा हुआ

मा — नहीं

नः — हमारा

दुःशंस — दुःख, बुराई

ईशत — नियम, शासन ।

व्याख्या :-

ऊर्जा किस प्रकार सर्वोच्च है?

ऊर्जा शक्ति के साथ जुड़ी है और इसमें दाता तथा रक्षक होने का सर्वोत्तम लक्षण धारण करने की योग्यता है। सूर्य की ऊर्जा सर्वोत्तम दाता है। सूर्य की ऊर्जा के बिना हम एक शक्तिहीन व्यक्ति की तरह हो जायेंगे। केवल हमारी ऊर्जा ही अज्ञानता के वृत को नष्ट कर सकती है, जिस प्रकार सूर्य की ऊर्जा बादलों के वृतों को नष्ट कर देती है। अतः केवल ऊर्जा ही यह सुनिश्चित कर सकती है कि हमारे जीवन में कभी कोई बुराई शासन न करे।

जीवन में सार्थकता

हम बुराई का शासन किस प्रकार टाल सकते हैं?

ऊर्जा सदैव शक्ति के साथ जुड़ी होती है। ऊर्जा हमें सब कुछ उपलब्ध कराती है। हम जीवन में जो कुछ भी अर्जित करते हैं, वह केवल ऊर्जा का ही फल होता है। यहाँ तक कि हमारा ज्ञान, गुण, योग्यता एवं क्षमता आदि भी हमारी ऊर्जायें ही होती हैं। हमें अपनी ऊर्जा पर लगातार निगरानी रखनी चाहिए, उसका संरक्षण तथा सम्वर्द्धन करना चाहिए और यह सुनिश्चित करना चाहिए कि निर्थक गतिविधियों में इसे बेकार नहीं करना चाहिए। संरक्षित ऊर्जा ही हमारे जीवन में से बुराईयों के शासन को टाल सकती है।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

ऋग्वेद मन्त्र 1.23.10

विश्वान्देवान्हवामहे मरुतः सोमपीतये ।
उग्रा हि पृश्निमातरः ॥ 10 ॥

विश्वान् – सब

देवान् – दिव्यतायें

हवामहे – मैं पुकारता हूँ, आमंत्रित करता हूँ, साधता हूँ

मरुतः – वायु

सोमपीतये – ज्ञान, गुणों को अंगीकार करने के लिए

उग्राः – शक्तिशाली तथा सक्रिय

हि – निश्चित रूप से

पृश्निमातरः – आकाश में उत्पन्न, विकास के लिए ऊँचाईयों को छूना।

व्याख्या :-

महान् विद्वान् और शक्तिशाली लोगों को आकाश में पैदा हुआ क्यों माना जाता है?

मैं ज्ञान और गुणों को अंगीकार करने के लिए वायु को पुकारता तथा साधता हूँ क्योंकि वायु दिव्यताओं से भरी होती है। केवल वायु की सहायता से ही शक्तिशाली और क्रियाशील लोग आकाश में पैदा होते हैं। इसका अर्थ यह है कि वे विकास की ऊँचाईयों को छूते हैं।

वायु का सर्वोत्तम उपयोग प्राणायाम अभ्यास से ही किया जा सकता है, जो श्रद्धालु व्यक्ति को आध्यात्मिक विकास की ऊँचाईयाँ छूने के योग्य बनाते हैं। यह आध्यात्मिक ऊँचाई अपने भीतर की गहराई ही है। हमारे शरीर के अन्दर विद्यमान आकाश अर्थात् हमारे मन और हृदय की आकाश से तुलना की गयी है। प्राणायाम के द्वारा हम अपने शरीर में वायु को पुकारते व आमंत्रित करते हैं, जिससे हमारा मन और हृदय ज्ञान और गुणों को अंगीकार कर सके।

जीवन में सार्थकता

क्या प्राणायाम तथा सक्रिय जीवन किसी भी क्षेत्र में विकास सुनिश्चित कर सकता है?

जीवन के किसी भी क्षेत्र में, आध्यात्मिक या भौतिकवादी, कोई व्यक्ति वायु को आमंत्रित करके ही ऊँचाईयों को छू सकता है। प्राणायाम जीवन की वह मूल प्रक्रिया है जो वायु को नियंत्रित करने तथा सम्बद्धन करने का कार्य करती है, जिससे विकास के लिए ज्ञान और गुणों को अंगीकार किया जा सके। वायु गतिविधियों को भी कहा जाता है। केवल चुस्त क्रियाशील जीवन ही सफलता और प्रगति सुनिश्चित कर सकता है।

ऋग्वेद मन्त्र 1.23.11

जयतामिव तन्यतुर्मरुतामेति धृष्णुया ।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

यच्छुभं याथना नरः ॥ 11 ॥

जयताम् इव – बहादुर और विजयी लोगों की तरह
तन्यतुः – तरंगित करंट

मरुताम् – वायु के

एति – प्राप्त

धृष्णुया – दृढ़ता युक्त

यत् – जो भी

शुभम् – श्रेष्ठ तथा कल्याणकारी

याथना – पथ

नरः – लोग ।

व्याख्या :-

कौन तरंगित करंट पैदा कर सकता है?

विजयी बहादुर लोग जिस प्रकार सफलता की ध्वनि उत्पन्न करते हैं, उसी प्रकार वायु का तरंगित करंट दृढ़ता प्राप्त करता है। सभी श्रेष्ठ एवं कल्याणकारी गतिविधियों का मार्ग भी तरंगित करंट पैदा करता है। यह करंट अनेकों अन्य लोगों को प्रेरित करता है और बुराईयों को दूर रखता है।

जीवन में सार्थकता

विजयी, श्रेष्ठ लोग तथा योगी किस प्रकार बुराईयों को दूर रखते हैं?

यह मन्त्र विजयी बहादुर लोगों को तथा प्राणायाम करने वाले दिव्यता के इच्छुक योगियों को एवं श्रेष्ठ व कल्याणकारी पथ पर चलने वाले लोगों को एक समान मानता है क्योंकि यह सभी प्रकार के लोग एक तरंगित करंट पैदा करते हैं, जो बुराईयों को दूर रखने के लिए पर्याप्त बलशाली होता है।

आप जीवन में जो भी श्रेष्ठ कार्य करते हैं, उन्हें महान् और दृढ़ विश्वास के साथ करना चाहिए। आपकी विजय आपके अपने दिमाग पर तथा अन्य लोगों पर भी लम्बी अवधि वाला प्रभाव उत्पन्न करेगी। आपको आगे भी दृढ़ विश्वास प्राप्त होगा, जिसके परिणामस्वरूप बुराईयाँ स्वतः ही आपसे दूर भाग जायेंगी। महान्, श्रेष्ठ और पवित्र दृढ़ता के साथ बुराईयाँ कभी जीवित नहीं रहतीं।

ऋग्वेद मन्त्र 1.23.12

हस्काराद्विद्युतस्पर्यतो जाता अवन्तु नः ।

मरुतो मृळयन्तु नः ॥ 12 ॥

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



हस्कारात् – भारी प्रकाश के कारण (ज्ञान, गतिविधियों और गुणों के)

विद्युतः – विद्युत, करंट

परि – साधना

अतः – इसलिए

जाताः – उत्पन्न, प्रकट हुआ

अवन्तु – रक्षा, प्राप्त

नः – हमें

मरुता – वायु

मृलयन्तु – सुविधा सम्पन्न करते

नः – हमें।

व्याख्या :-

हमारे जीवन में विद्युत करंट का विज्ञान किस प्रकार लागू होता है?

महान् ज्ञान तथा महान् गतिविधियाँ उस भारी प्रकाश की तरह हैं, जो विद्युत करंट की तरह उत्पन्न तथा प्रकट होता है। इसलिए हमें इसे साधना चाहिए, इसका उचित उपयोग करना चाहिए क्योंकि यह हमारी तथा हमारे कार्यों की रक्षा करता है। इस भारी करंट की सहायता से वायु भी हमें सुविधा सम्पन्न बना देती है।

सूर्य का भारी प्रकाश विद्युत करंट पैदा करता है, जिसका प्रयोग वायु करती है और हमारी सुविधा के लिए वर्षा उत्पन्न करती है। यह विज्ञान सभी महान् और पवित्र ज्ञान तथा गतिविधियों पर लागू होता है, जो तरंगित करंट पैदा करती हैं।

जीवन में सार्थकता

महान् गतिविधियों का क्या प्रभाव पैदा होता है?

हमारी समस्त गतिविधियों में महानता, श्रेष्ठता, कल्याण, प्रेम तथा सर्वोच्च शक्ति परमात्मा के प्रति श्रद्धा का समावेश होना चाहिए। ऐसी गतिविधियाँ भारी प्रकाश के समान दिखायी देती हैं और तरंगित करंट पैदा करती हैं, जिसका प्रयोग वायु के द्वारा सबके संरक्षण और सुविधाओं के लिए किया जाता है।

ऋग्वेद मन्त्र 1.23.13

आ पूषन्चित्रबहिष्माघृणे धरुणं दिवः।

आजा नष्टं यथा पशुम्॥ 13॥

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



आ (घृणे से पूर्व लगाकर)

पृष्ठन् – स्वस्थ (शरीर तथा मन से)

चित्र बर्हिषम् – हृदयाकाश में विस्मयकारी अनुभवि

आ घुणे – महान् प्रकाश की किरणें

धरुणम् – धारक

दिवः - दिव्यतायें

आजा – प्रकाशित, प्राप्त

नष्टम् - नष्ट

यथा – जिस प्रकार

पश्चात् गृहा त्रिपत्ना
पश्चाम – पश्च सम्पत्तियाँ।

व्याख्या :-

बलशाली तरंगित करंट के क्या लाभ हैं?

जब महान् ज्ञान तथा गतिविधियों के द्वारा बलशाली तरंगित करंट पैदा होता है तो उसके निम्न परिणाम पैदा होते हैं :—

- (क) पूषन् – पूर्ण स्वास्थ्य (शरीर और मन का)
 (ख) चित्र बर्हिषम् – हृदयाकाश में विस्मयकारी अनुभूति
 (ग) आ धृणे – महान् प्रकाश की किरणें
 (घ) धरुणम् दिवः – दिव्यता का धारक।

ऐसी अवस्था में लगता है कि उसने महान् प्रकाश को प्राप्त किया है जैसे किसी को अपना खोया हुआ पश्च प्राप्त होता है।

जीवन में सार्थकता

हम अपने जीवन में किस प्रकार एक दिव्य व्यक्तित्व का विकास कर सकते हैं?

प्रथम पद – सभी कार्यों को पूरे प्रेम, श्रद्धा, ईमानदारी तथा कल्याणकारी आदि भावों के साथ करना चाहिए।

द्वितीय पद – आपके कार्य तरंगित करंट पैदा करेंगे।

तृतीय पद – आपको प्राप्त होगा – (क) पूर्ण स्वास्थ्य, (ख) आपका मन तथा हृदय अर्थात् आकाश रथल परेशानियों के बोझ से मुक्त रहेगा, (ग) आपको स्वयं ही महान् प्रकाश की किरणों की अनुभूति होगी, (घ) आपकी उपस्थिति में लोग भी दिव्यता की अनुभूति प्राप्त करेंगे।

ऋग्वेद मन्त्र 1.23.14

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

पूषाराजानमाघृणिरपगूलहं गुहा हितम् ।

अविन्दन्वित्रबर्हिषम् ॥ 14 ॥

पूषा – जो पूर्ण स्वस्थ देता है (शरीर, मन और आत्मा का), परमात्मा

राजानम् – जो सर्वोच्च शासक है, परमात्मा

अघृणि: – जो पूर्ण प्रकाश है, परमात्मा

अपागूलहम् – जो अत्यन्त गुप्त है, परमात्मा

गुहा हितम् – जो हमारे हृदयान्तर में विराजमान है, परमात्मा

अविन्दत् – जो सब कुछ और सबको जानता है, परमात्मा

चित्र बर्हिषम् – जो विस्मयकारी रूप से आंतरिक आकाश में अनुभूत होता है, परमात्मा ।

व्याख्या :-

आन्तरिक आकाश में किसकी अनुभूति होती है?

एक दिव्य शक्ति जो आकाश में अनुभूत होती है, उसके अनन्य लक्षण और शक्तियाँ हैं, जिनमें से कुछ इस मन्त्र में सूचीबद्ध हैं। यह भगवान के कुछ गुण हैं:-

(क) पूषा – जो पूर्ण स्वस्थ देता है (शरीर, मन और आत्मा का), परमात्मा

(ख) राजानम् – जो सर्वोच्च शासक है, परमात्मा

(ग) अघृणि: – जो पूर्ण प्रकाश है, परमात्मा

(घ) अपागूलहम् – जो अत्यन्त गुप्त है, परमात्मा

(ङ) गुहा हितम् – जो हमारे हृदयान्तर में विराजमान है, परमात्मा

(च) अविन्दत् – जो सब कुछ और सबको जानता है, परमात्मा

इन सबके बीच, परमात्मा के दो गुण तो वास्तव में विस्मयकारी हैं – वह हमारे हृदयान्तर में विराजमान है, परन्तु फिर भी अत्यन्त गुप्त है।

जीवन में सार्थकता

समस्त महान् पुरुषों में परमात्मा किस प्रकार दिखायी देता है?

जब कोई व्यक्ति परमात्मा की अनुभूति प्राप्त कर लेता है या दिव्यताओं को प्राप्त कर लेता है या मानव जीवन में सामान्य सी महानता को भी प्राप्त कर लेता है तो वह भी परमात्मा के कई गुणों को धारण कर लेता है।

(क) ऐसा व्यक्ति अपनी प्रेरणाओं से लोगों को पूर्ण स्वास्थ्य के लिए मार्गदर्शन देता है।

(ख) वह लोगों के दिलों पर राज करता है।

(ग) वह ज्ञान के प्रकाश को प्राप्त कर लेता है।

(घ) वह भौतिक संसार से दूर या छिपा रहता है।

(ङ) वह लोगों के दिलों में विद्यमान रहता है।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

(च) वह अच्छे और बुरे के बारे में जानता है और उनमें भेद बनाये रखता है। परमात्मा समस्त महान् पुरुषों में ऐसे लक्षणों के साथ ही दिखायी देता है।

ऋग्वेद मन्त्र 1.23.15

उतो स मह्यमिन्दुभिः षडयुक्ताँ अनुसेषिधत्।
गोभिर्यवं न चर्कृष्टत् ॥ 15 ॥

उतो – और निश्चय से

सः – वह

मह्यम् – मेरे लिए

इन्दुभिः – समस्त पदार्थ

षडयुक्तान् – छः मौसमों के साथ, भोजन के छः रसों के साथ, छः इन्द्रियों के साथ (मन तथा पाँच ज्ञानेन्द्रियों)

अनुसेषिधत् – उपलब्ध कराता है

गोभिः – समस्त जीव

यवम् – समस्त अन्नादि

न – जैसे कि

चर्कृष्टत् – बार-बार जोतने वाला किसान।

व्याख्या :-

परमात्मा किस प्रकार सबके लिए दाता है?

एक बार जब हम सर्वोच्च शक्ति, परमात्मा की अनुभूति प्राप्त कर लें या महसूस कर लें या केवल विश्वास ही कर लें तो हम निश्चित रूप से यह अनुभूति कर ही लेंगे कि वह हमारे लिए सर्वोच्च दाता है, जो सभी पशुओं तथा अन्नादि को सभी छः मौसमों में, छः रसों के साथ और हमारी छः इन्द्रियों के साथ हमें सभी पदार्थ उपलब्ध कराता है। वह सबका दाता है। वह हर क्षण और बार-बार हमें देता रहता है, जैसे एक किसान बार-बार अपने खेत को जोतता है, जिससे वह अच्छी फसल प्राप्त कर सके।

जीवन में सार्थकता

एक किसान की परमात्मा से तुलना करने पर किस सिद्धान्त की उत्पत्ति होती है?

किसान के इस उदाहरण से यह सिद्धान्त प्राप्त होता है कि परमात्मा हमें बार-बार देता है क्योंकि वह समस्त मानवों में किसी एक महान् व्यक्तित्व के रूप में एक अच्छी फसल की कामना करता है।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

इस समान उदाहरण से एक और सिद्धान्त प्राप्त होता है कि यदि हम सबके लिए दाता बन जायें, हर फसल के रूप में कुछ देने के बाद जो किसान बार-बार अपना खेत जोतता है, हम भी समाज के कल्याण के लिए एक अच्छी फसल उत्पन्न कर सकते हैं।

ऋग्वेद मन्त्र 1.23.16

अम्बयो यन्त्यध्यभिर्जामयो अध्वरीयताम् ।
पृन्चतीर्मधुना पयः ॥ 16 ॥

अम्बया – रक्षा करने वाला जल
यन्ति – प्राप्त होता है
अध्यभिः – मार्ग में (भिन्न-2 तरीकों से)
जामयाः – भाई (समान रूप से उत्पन्न)
अध्वरीयताम् – दोष रहित त्याग के लिए
पृन्चतीः – देता है
मधुना – मधुरता
पयः – पीने के लिए रस

व्याख्या :-

जल चक्र से क्या प्रेरणायें प्राप्त हो सकती हैं?

अपनी दो तरफा यात्रा, आकाश से भूमि और भूमि से आकाश, पर जल प्राप्त होता है। इस जल यात्रा का उद्देश्य है कि सब जीवों को भिन्न-2 प्रकार के मधुर रस तथा अन्य खाद्य पदार्थ प्राप्त हों। इसी प्रकार भाईयों को भी एक दूसरे के लिए हर प्रकार से दोषरहित त्याग के लिए तत्पर रहना चाहिए। समस्त जीव एक ही सर्वोच्च ऊर्जा से पैदा हुए हैं। अतः हमें सदैव सबके लिए त्याग करने के मार्ग पर तैयार रहना चाहिए।

जीवन में सार्थकता

हमें सदैव और सबके लिए त्याग करने वाला व्यक्ति क्यों बनना चाहिए?

प्रकृति में सभी तत्व परमात्मा से ही दिव्य शक्तियाँ प्राप्त करते हैं क्योंकि वे इन शक्तियों का सदुपयोग बिना किसी भेदभाव के सभी जीवों के लिए करते हैं। हमें भी यह सुनिश्चित करना चाहिए कि हमारी सभी वस्तुयें सबके प्रयोग और कल्याण के लिए प्रस्तुत हों। इस प्रकार हम भी जल आदि की तरह दिव्य बन सकते हैं।

रक्त वर्ग ओ (निगेटिव) को सबके लिए दाता माना जाता है। इसे प्रत्येक आपात स्थिति में सम्मानपूर्वक स्वीकार किया जाता है। जल सब जीवों के लिए जीवन का महत्वपूर्ण आधार है। इससे शिक्षा लेते हुए हमें

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

भी सदैव और सबके लिए त्याग करने वाला व्यक्ति बनना चाहिए। इससे हमारा भी सम्मान बढ़ेगा और हमें लोग शुद्ध और पवित्र जल की तरह ही समझेंगे।

ऋग्वेद मन्त्र 1.23.17

अमूर्या उप सूर्ये याभिर्वा सूर्यः सह ।
ता नो हिन्वन्त्वधरम् ॥ 17 ॥

अमूर्या – जो दिखायी नहीं देता
उप सूर्य – सूर्य के निकट
याभिः – जो है
वा – या
सूर्यः सह – सूर्य के साथ
ता: – वे
नः – हमारे
हिन्वन्तु – बढ़ते हुए
अधरम् – त्याग

व्याख्या :-

जल हमारे लिए क्या करता है?

जब सूर्य के निकट होता है या सूर्य के साथ होता है तो जल अदृश्य होता है और हमारे त्याग कार्यों को बढ़ाता है।

जीवन में सार्थकता

जल और सूर्य में क्या समानता है?

जल हमारे आध्यात्मिक जीवन में किस प्रकार महत्वपूर्ण है?

बादलों में विद्यमान जल अदृश्य होता है और सूर्य के निकट अथवा सूर्य के साथ होता है। पानी का सूत्र है भृत्यर्थात् हाईड्रोजन और ऑक्सीजन। सूर्य को हाईड्रोजन का जलता हुआ रूप माना जाता है। ऑक्सीजन के बिना जलने की क्रिया नहीं हो सकती। अतः सूर्य के तत्व पानी के ही समान हैं – हाईड्रोजन तथा ऑक्सीजन।

जब हम धरती पर अग्निहोत्र अर्थात् यज्ञ करते हैं तो जल, शुद्ध धी और जड़ी बूटियों के जलने से उत्पन्न गैसें ऊपर जाती हैं और बादलों में समाहित हो जाती हैं। बादलों की गुणवत्ता बढ़ जाती है। बादल सूर्य की ऊर्जा के द्वारा वर्षा में बदल जाते हैं। ऐसी वर्षा के जल की गुणवत्ता भी अच्छी हो जाती है। कृषि पदार्थों

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

अर्थात् भोजन की गुणवत्ता भी बढ़ जाती है। इस चक्र में यज्ञ अर्थात् त्याग कार्यों से समूची सृष्टि की गुणवत्ता बढ़ जाती है। जल और सूर्य त्याग के इस चक्र में महत्वपूर्ण घटक हैं।

जल हमारे त्याग कार्यों को एवं उनकी गुणवत्ता को भी बढ़ाता है। जल अपने शीतलता वाले लक्षण के कारण जाना जाता है। जब हम ध्यान साधना में इसकी शीतलता पर एकाग्र होते हैं तो हम अपने मस्तिष्क को भी शान्त और अहंकार रहित बना सकते हैं। अहंकार रहित त्याग कार्यों को शीतल त्याग माना जाता है और इनका लाभार्थी के साथ—साथ हमारे ऊपर भी महान् प्रभाव पड़ता है। जल सूर्य के निकट है तथा उसके साथ है। इसलिए पानी में शक्ति भी है। इस प्रकार हमारे अहंकाररहित त्याग शीतल होने के साथ—साथ बलशाली भी होते हैं।

ऋग्वेद मन्त्र 1.23.18

अपो देवीरूप हवये यत्र गावः पिबन्ति नः।

सिन्धुभ्यः कर्त्त्वं हविः ॥ 18 ॥

अपः — जल

देवीः — दिव्य शक्तियों के साथ

उप हवये — स्वीकार

यत्र — जहाँ

गावः — सूर्य की किरणें

पिबन्ति — पीना

नः — हमारे लिए

सिन्धुभ्यः — जल क्षेत्रों से (समुद्रों और नदियों से)

कर्त्त्वम् — उत्पन्न करने के लिए, कर्तव्यों के पालन करने के लिए

हविः — त्याग।

व्याख्या :-

जल चक्र के पीछे क्या सिद्धान्त है?

सूर्य किरणों की कार्यशैली पूरी तरह प्राकृतिक एवं वैज्ञानिक है, जो धरती के समस्त जल क्षेत्रों जैसे समुद्र, नदियाँ तथा तालाब आदि से जल पीती हैं। सूर्य किरणों की यह दिव्य शक्ति ही जल चक्र का निर्माण करती है। सूर्य की किरणें जल की शक्ति को निकालती हैं, उन्हें आकाश में ले जाती हैं तथा वापिस वर्षा के रूप में उस शक्ति को सारी पृथ्वी पर फैला देती हैं। इस जल चक्र का मुख्य उद्देश्य सबके कल्याण के लिए धरती पर भिन्न-2 वस्तुओं को उत्पन्न करना है। यह जल चक्र ही सूर्य का कर्तव्य है। सूर्य के इस दिव्य कर्तव्य से एक आध्यात्मिक प्रेरणा भी सामने आती है। इस जल चक्र के कारण ही मनुष्य सभी पदार्थों का भोग कर पाता है। प्रत्येक मनुष्य का यह निर्धारित कर्तव्य है कि पदार्थों का प्रयोग त्यागपूर्वक

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

करते हुए सबके कल्याण का लक्ष्य रखे। किसी भी व्यक्ति को प्राकृतिक साधनों का दुरुपयोग नहीं करना चाहिए।

जीवन में सार्थकता

त्याग की श्रृंखला का निर्माण कैसे करें?

सूर्य के प्रबन्धन में चलने वाले जल चक्र की तरह त्याग की श्रृंखला भी हम सब आगे बढ़ा सकते हैं, यदि हम अपने वृद्धजनों तथा उच्चाधिकारियों को सूर्य की किरणों की तरह समझें और अपने जीवन को हम जल की तरह समझें। जिस प्रकार जल इस बात से इन्कार नहीं कर सकता कि सूर्य की किरणें उसकी शक्ति का हरण करें, उसी प्रकार हमें भी अपने से बड़ों के निर्देश को कभी इन्कार नहीं करना चाहिए। बड़ों के प्रति हमारे आज्ञा पालन के भाव के फलस्वरूप हमें सम्मान, आशीर्वाद और सम्पत्तियाँ आदि वापिस प्राप्त होते हैं। हमें इन सब प्राप्त वस्तुओं आदि को त्याग के लिए ही प्रयोग करना चाहिए। इस प्रकार त्याग की यह श्रृंखला सबके कल्याण के लिए आगे बढ़ती जायेगी।

ऋग्वेद मन्त्र 1.23.19

अपस्वन्तरमृतमप्सु भेषजमपामुत् प्रशस्तये।

देवा: भवत वाजिनः ॥ 19 ॥

अप्सु – जल के

अन्तः – अन्दर

अमृतम् – न मरने वाला रस

अप्सु – जल में

भेषजम् – औषधियाँ

अपाम् – जल से

उत – और

प्रशस्तये – उनके प्रशंसनीय और लाभकारी गुण

देवा: – दिव्य लोग

भवत – हो जाओ

वाजिनः – महान् बुद्धिमत्तापूर्ण शक्ति।

व्याख्या :-

जल का क्या महत्व है?

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

जल में अमृत होता है, अर्थात् एक ऐसा स्वास्थ्यवर्द्धक तत्व जो रोगों के आधार पर मृत्यु का कारण नहीं बनेगा। जल में भेषजं अर्थात् औषधियाँ होती हैं। जल के अनेकों औषधात्मक गुण हैं। जल के प्रशंसनीय गुणों के बल पर महान् विद्वान् लोगों ने दिव्य शक्तियों का विकास किया। स्वास्थ्य को बनाये रखने के लिए जल का भिन्न-भिन्न प्रकार से प्रयोग किया जाता है और रोगग्रस्त लोगों का उपचार किया जाता है।

जीवन में सार्थकता

क्या जल हमारा सदाबहार साथी है?

जल के औषधात्मक गुण इसे समस्त मानवों के लिए अत्यन्त लाभकारी बना देते हैं। योगी लोग जल के उचित उपयोग से ही महान् अनुभूति प्राप्त विद्वान् बन जाते हैं।

जल एक ऐसी औषधि है, जो किसी को भी एक महान् चिकित्सक बना देती है। जल शब्द दो अक्षरों से बना है – ज और ल। ज से जन्म और ल से प्रलय अर्थात् सृष्टि की समाप्ति समझा जा सकता है। जल सबके लिए इस सृष्टि के जन्म से लेकर प्रलय काल तक उपयोगी है। यह सृष्टि जल से ही उत्पन्न हुई और जल में ही इसका प्रलय होगा।

ऋग्वेद मन्त्र 1.23.20

अप्सु मे सोमो अब्रवीदन्तर्विश्वानि भेषजा ।

अग्निं च विश्वंशभुवमापश्च विश्वभेषजीः ॥ 20 ॥

अप्सु – जल

मे – मेरे लिए

सोमः – सभी औषधियों का राजा, परमात्मा, चन्द्र

अब्रवीत – स्थापित, प्रसिद्ध

अन्तः – अन्दर

विश्वानि – सब

भेषजा – औषधियाँ

अग्निम् – अग्नि में

च – और

विश्वः शाभुवम् – सबके कल्याण के लिए

आपः – जल

च – और

विश्व भेषजीः – समस्त औषधियाँ।

व्याख्या :-

“जल का मूल लक्षण शीतलता है।”

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

क्या गर्म पानी अधिक लाभकारी है?

परमात्मा ने मेरे लिए चन्द्रमा की शीतलता जल में डाल दी है। इस लिए जल समस्त औषधात्मक प्रयोगों के लिए स्थापित और प्रसिद्ध है। जब जल को अग्नि पर गर्म किया जाता है तो यह सबके कल्याण के लिए अधिक लाभकारी बन जाता है।

जीवन में सार्थकता

“हमारे वृद्धजन मूलतः हमारे लिए ठण्डक देने वाले ही हैं।”

वृद्धजनों के क्रोध को हमें क्या समझना चाहिए?

अपने शीतलता वाले लक्षण के कारण ही जल को इस समूची प्रकृति में एक महान् उपयोगी तत्व माना जाता है। परन्तु जब इसको गर्म किया जाता है तो यह सबके कल्याण के लिए अधिक लाभकारी बन जाता है। जल में इसके मूल लक्षण ठण्डक और अग्नि के मूल लक्षण शक्ति का बड़ा विचित्र समावेश है। गर्म जल में औषधात्मक लक्षण कई प्रकार से बढ़ जाते हैं। सामान्य जल हमारे स्वास्थ्य के लिए अच्छा है, जब कि गर्म जल से हम अनेकों रोगों का उपचार कर सकते हैं?

हमारे वृद्धजन, उच्चाधिकारी तथा महान् आध्यात्मिक एवं सामाजिक नेता तब तक हमारे लिए अत्यन्त शीतल बने रहते हैं, जब तक हम उनके आदेशों, निर्देशों और विचारों का अनुसरण करते रहें। परन्तु जब हम मानसिक रूप से बीमार हो जाते हैं और उनकी आज्ञा का निरादर करते हैं तो हमें उनके क्रोध को गर्म पानी की तरह समझना चाहिए, जो हमारे बिगड़े हुए मस्तिष्क को ठीक मार्ग पर लाने का कार्य करता है। हमारे वृद्धजनों की शीतलता हमारे लिए निर्देश प्राप्ति में सहायक है, जब कि उनका क्रोध हमें ठीक मार्ग पर लाने के लिए एक औषधि की तरह है।

ऋग्वेद मन्त्र 1.23.21

आपः पृणीत भेषजं वरुथं तन्वे मम ।

ज्योक् च सूर्य दृशे॥ 21 ॥

आपः — जल

पृणीत — परिपूर्ण

भेषजम् — औषधि

वरुथम् — रोगों के निवारण के लिए

तन्वे — शरीर के लिए

मम — मेरे

ज्योक् — दीर्घ आयु के लिए

च — और

सूर्यम् — सूर्य लोक के

दृशे — दिखाने।

व्याख्या :-

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

क्या जल दीर्घ आयु सुनिश्चित करता है?

जल मेरे शरीर के रोगों का निवारण करने के लिए एक पूर्ण औषधि है। जल दीर्घ जीवन सुनिश्चित करने के साथ—साथ लम्बे समय तक सूर्य दर्शन के योग्य भी बनाता है। इस प्रकार जल स्वास्थ्य और शारीरिक बल सहित दीर्घ आयु सुनिश्चित करता है।

जीवन में सार्थकता

क्या जल एक भोजन भी है?

उचित मात्रा में नियमित रूप से जल का सेवन निम्न लक्षण सुनिश्चित करता है :—

(क) समस्त रोगों का निवारण

(ख) दीर्घायु

(ग) सूर्य दर्शन (शरीर की शक्ति)

इन लक्षणों से सिद्ध होता है कि औषधात्मक गुणों के अतिरिक्त जल शरीर की शक्ति का एक समुचित स्रोत है। इसका अभिप्राय है कि यह भोजन का कार्य भी कर सकता है।

ऋग्वेद मन्त्र 1.23.22

इदमापः प्र वहत यत्किं च दुरितं मयि ।
यद्वाहमभिदुद्रोह यद्वा शेप उतानृतम् ॥ 22 ॥

इदम् — यह

आपः — जल

प्र वहत — बहकर दूर जाता है।

यत्किम् च — जो कुछ भी हो

दुरितम् — बुराई, पाप कार्य

मयि — मेरे जीवन में

यत् वा — और जो भी

अहम् — मेरे में

अभिदुद्रोह — द्रोह करने वाली बुद्धि

यत् वा — और जो भी

शेपे — गुस्से वाला मन

उत अनृतम् — अनिच्छा से बोला गया असत्य।

व्याख्या :-

क्या जल हमारे मरितिष्क का संतुलन बनाने में सहायक है?

निश्चित रूप से जल इस प्रकृति में किसी भी चीज को बहा सकता है। यह बहा सकता है :—

(क) हमारे जीवन से बुराईयाँ और पाप

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

(ख) द्रोह करने वाली बुद्धि

(ग) गुस्से वाला मन

(घ) अनिच्छा से बोले गये असत्य शब्द

जल के यह लक्षण और शक्तियाँ सिद्ध करती हैं कि जल हमारे मानसिक असंतुलन को ठीक कर सकता है। द्रोह करने वाली बुद्धियाँ, क्रोध और असत्य वादन सहित सभी बुराईयाँ केवल मानसिक असंतुलन के कारण ही होती हैं।

जीवन में सार्थकता

क्या जल मानसिक रोगों के लिए एक औषधि है?

क्यों और किस प्रकार हमें पीने से पूर्व जल से प्रार्थना करनी चाहिए?

जल पीने से पूर्व हमें जल से प्रार्थना करनी चाहिए कि वह हमें बुराईयों से मुक्त रखे और हमारे पवित्र संकल्पों को शक्ति दे। हमें अपने शत्रुओं को भी इसी प्रार्थना के साथ जल पिलाना चाहिए कि उनका मन संतुलित अवस्था में रहे।

इसका अर्थ यह है कि जल एक दिव्य औषधि बन सकता है। अवसाद, तनाव या किसी भी उत्तेजना पूर्ण परिस्थिति में जल का प्रयोग मानसिक सन्तुलन बनाने में सहायक होता है।

हाल ही में कुछ वैज्ञानिकों ने यह निष्कर्ष निकाला है कि जल में अत्यधिक शक्तिशाली स्मृति है। यह स्मृति कम्प्यूटर के चिप से भी अधिक शक्तिशाली है। इसलिए पीने से पूर्व आप अपनी सभी प्रार्थनायें एवं संकल्प जल को दें। ऐसी प्रार्थनायें एवं संकल्प जल के साथ आपके शरीर में प्रवेश करेंगी, आपके रक्त का हिस्सा बन जायेंगी और आपको प्रेरित तथा उत्तेजित करती रहेंगी कि आप अपने लक्ष्य की ओर अग्रसर होते रहो। परमात्मा ऐसे संकल्पवान् व्यक्ति को सहायता तथा आशीर्वाद अवश्य उपलब्ध कराते हैं।

ऋग्वेद मन्त्र 1.23.23

आपो अद्यान्वचारिषं रसेन समग्रस्महि ।

पयस्वानग्न आ गहि तं मा सं सृज वर्चसा ॥ 23 ॥

आपः — जल

अद्य — वर्तमान, इसके बाद

अनु अचारिषम् — स्थापित विधि के अनुसार प्रयोग करना

रसेन — इसके लक्षणों सहित

समग्रस्महि — हम संगति करते हैं

पयस्वान् — प्रशंसनीय जल के साथ

अग्ने — अग्नि

आ गहि — प्राप्त हो

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

तम् – आपको

मा – मुझे

सम् सृज – मुझे शक्तिशाली बनाये

वर्चसा – दीप्ति और वर्चस के साथ।

व्याख्या :-

जल का अधिकतम लाभ कैसे प्राप्त हो?

वर्तमान से ही हमें जल के लक्षणों से अत्यधिक लाभ प्राप्त करने के लिए और इसे अधिक प्रशंसनीय बनाने के लिए अग्नि के साथ संयोग करके ही इसका उपयोग करना चाहिए। इस प्रकार गर्म जल हमें दीप्ति और वर्चस के साथ शक्तिशाली बना सकता है।

जीवन में सार्थकता

सूर्य की किरणें हमारा वर्चस और दीप्ति किस प्रकार बढ़ाती हैं?

जल हमारा वर्चस बढ़ाता है। हमें जल को पीने के लिए कभी भी देरी या आलस्य का प्रदर्शन नहीं करना चाहिए। सूर्य की किरणें प्रशंसनीय जल के साथ हम तक पहुँचती हैं। इसी लिए वे हमारी दीप्ति और वर्चस को बढ़ाती हैं। इस प्रकार सूर्य की किरणों में जल और अग्नि दोनों के गुण होते हैं।

हम सीधा सूर्य की किरणों वाले स्थान पर काँच की बोतल में कुछ घंटे जल भरकर उस जल को सूर्य की शक्ति से ओतप्रोत करके उसका उपयोग कर सकते हैं।

ऋग्वेद मन्त्र 1.23.24

सं माग्ने वर्चसा सृज सं प्रजया समायुषा ।

विद्युर्मे अस्य देवा इन्द्रो विद्यात्सह ऋषिभिः ॥ 24 ॥

सम् (सृज से पूर्व लगाकर)

मा – मेरा

अग्ने – अग्नि

वर्चसा – दीप्ति और वर्चस

सृज (सम सृज) – अलंकृत

सम् (सृज तथा प्रजया से पूर्व लगाकर)

प्रजया (सम प्रजया) – संतति के साथ

समायुषा – स्वारथ्य और दीर्घ आयु के साथ

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

विद्युर्म् – मुझे जानकर

अस्य – ये (वर्चस, संतति, स्वास्थ्य जीवन)

देवा – दिव्य लोग

इन्द्रः – परमात्मा, इन्द्रियों का नियंत्रक

विद्यात् – इन्हें जानता है (वर्चस आदि को)

सह – साथ

ऋषिभिः – अनुभूति प्राप्त संत |

व्याख्या :-

ऊर्जा हमें किस प्रकार लाभ देती है?

अग्नि अर्थात् गर्मि, बल तथा ऊर्जा हमारे जीवन को वर्चस, संतति और स्वस्थ दीर्घायु से अलंकृत करती है। दिव्य लोग अग्नि के इन लक्षणों से परिचित होते हैं। इन्द्रियों का नियंत्रक भी अग्नि के लक्षणों को जानता है, जब वह अनुभूति प्राप्त संतों की संगति में रहता है।

जीवन में सार्थकता

सूर्य की किरणों तथा जल से हम अधिकतम किस प्रकार प्राप्त सकते हैं?

सूर्य की किरणें तथा अग्नि में जल के गुण होते हैं, इसलिए ये हमें निम्न लक्षण उत्पन्न करा सकते हैं :–

(क) दीप्ति तथा वर्चस

(ख) संतति

(ग) दीर्घ स्वस्थ आयु

इन लक्षणों को प्राप्त करने के लिए हमें अपनी इन्द्रियों पर पूर्ण नियंत्रण रखना चाहिए और अनुभूति प्राप्त संतों की संगति में रहना चाहिए।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

ऋग्वेद मण्डल-1 सूक्त 24

ऋग्वेद मन्त्र 1.24.1

कस्य नूनं कतमस्यामृतानां मनामहे चारु देवस्य नाम।
को नो मह्या अदितये पुनर्दातिपतरं च दृशेयं मातरं च ॥ 1 ॥

कस्य — कौन0

नूनम् — निश्चित रूप से आनन्ददायक

कतमस्य — अनेकों के लिए

अमृतानाम् — मोक्ष प्राप्त जीवात्मायें

मनामहे — हम जाने

चारु — सुन्दर

देवस्य — सर्वोच्च दिव्य के

नाम — नाम

को — जो

नः — हमें

मह्या — नाश रहित कारण

अदितये — जीवन के लिए

पुनर्दात् — पुनः देता है

पितरम् — पिता

च — और

दृशेयम् — देखने के लिए

मातरम् — माता

च — और।

व्याख्या :-

कौन हमें मुक्ति और पुनर्जन्म देता है?

कौन निश्चित रूप से समस्त मोक्ष प्राप्त जीवात्माओं के लिए आनन्ददायक है, हम उसे और उसके सुन्दर नाम को जानना चाहते हैं क्योंकि वह सर्वोच्च दिव्य शक्ति है।

हमें माता-पिता को बार-बार देखने योग्य बनाने वाला अर्थात् बार-बार जीवन देने वाला स्थायी कारण क्या है?

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

जीवन में सार्थकता

स्थायी प्रसन्नता के लिए सर्वोच्च अधिकारियों से निकटता कैसे बनाई जा सकती है?

हमें उस सर्वोच्च अधिकारी को जानने का प्रयास करना चाहिए, जो हमें समस्त सुविधायें तथा सम्मान आदि प्रदान करता है। हमें उस अधिकारी के साथ निकटता बनाने का प्रयास करना चाहिए क्योंकि सर्वोच्च अधिकारियों के साथ निकटता ही हमारे जीवन में स्थायी प्रसन्नता सुनिश्चित कर सकती है।

ऋग्वेद मन्त्र 1.24.2

अग्नेर्वयं प्रथमस्यामृतानां मनामहे चारु देवस्य नाम ।
स नो मह्या अदितये पुनर्दात्पितरं च दृशेयं मातरं च ॥ 2 ॥

अग्ने – सर्वोच्च ज्ञान और ऊर्जा

वयम् – हम

प्रथमस्य – सबमें प्रथम

अमृतानाम् – मोक्ष प्राप्त जीवात्मायें

मनामहे – हम जानें

चारु – सुन्दर

देवस्य – सर्वोच्च दिव्य के

नाम – नाम

सः – वह

नः – हमें

मह्या – नाश रहित कारण

अदितये – जीवन के लिए

पुनर्दात् – पुनः देता है

पितरम् – पिता

च – और

दृशेयम् – देखने के लिए

मातरम् – माता

च – और ।

व्याख्या :-

मुक्ति का प्रथम कारक अग्नि अर्थात् सर्वोच्च ज्ञान और ऊर्जा है। यह मन्त्र प्रथम मन्त्र में व्यक्त प्रश्न का उत्तर प्रदान करता है।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

अग्ने अर्थात् सर्वोच्च ज्ञान और ऊर्जा अर्थात् परमात्मा, जिसे हम समस्त मुक्त जीवात्माओं में प्रथम कारक के रूप में जानते हैं और उसी के साथ निकटता का प्रयास करते हैं। उसका नाम सर्वोच्च दिव्यता है। केवल वही हमें बार-बार माता-पिता के लिए जीवन देता है। वह हमारा स्थायी कारण शरीर है।

जीवन में सार्थकता

महान् उपलब्धियों में कौन सहायक है?

सर्वोच्च ऊर्जा ही सर्वोच्च दाता है। वह केवल भौतिक वस्तुयें ही प्रदान नहीं करतीं, अपितु स्थायी कारण शरीर भी है, जिसके कारण हम भिन्न-भिन्न रूपों में जीवन प्राप्त करते हैं। हमारी सभी वस्तुयें, समस्त गौरवशाली सम्पदायें, केवल उसी सर्वोच्च ऊर्जा के कारण हैं। उसके साथ स्थायी सम्बद्धता ही हमें ऊर्जावान बनाये रख सकती है और हमें महान् आनन्ददायक अवस्था प्राप्त करने के योग्य बना सकती है। सर्वोच्च अधिकारी के साथ स्थायी और समर्पित सम्बद्धता ही सर्वत्र हमें महान् उपलब्धियों के योग्य बना सकती है।

ऋग्वेद मन्त्र 1.24.3

अभि त्वा देव सवितरीशानं वार्याणाम् ।
सदावन्भागमीमहे ॥ ३ ॥

अभि – की और

त्वा – आपके

देव – सर्वोच्च दिव्यता, परमात्मा

सवितः – सर्वोच्च निर्माता, प्रकाश, परमात्मा

ईशानम् – सबका स्वामी तथा नियन्त्रक

वार्याणाम् – हमारे द्वारा सब कुछ धारण और स्वीकार किया गया

सदावन् – सदैव संरक्षक

भागम् – गौरवशाली सम्पदा का अंश

ईमहे – हम प्रार्थना करते हैं।

व्याख्या :-

हमारी गौरवशाली सम्पदा का सदैव कौन संरक्षक है?

वर्तमान सूक्त के प्रथम दो मन्त्रों में हमने यह महसूस किया कि समस्त मुक्त जीवात्माओं में सर्वप्रथम कारक परमात्मा ही है और हमें उसी के साथ निकटता बनानी चाहिए। अतः यह मन्त्र परमात्मा की तरफ अग्रसर होने के लिए ही हमारा मार्गदर्शन करता है। परमात्मा सबका सर्वोच्च दिव्य निर्माता है, अतः हमारे द्वारा धारण की गयी प्रत्येक वस्तु का वह वास्तविक स्वामी है। उस परमात्मा की तरफ अग्रसर होने के लिए

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

हमें अपने भीतर ही इस प्रार्थना के साथा ध्यान करना होगा कि वह भौतिक, मानसिक तथा आध्यात्मिक गौरवशाली सम्पदा में से हमारे अंश की रक्षा करे।

जीवन में सार्थकता

हमें किसकी शरण लेनी चाहिए?

हम जीवन में जो कुछ भी उपलब्धि प्राप्त करते हैं, वह केवल उस सर्वोच्च निर्माता, दाता, परमात्मा के कारण ही सम्भव होती है। अतः हमें उसी का संरक्षण प्राप्त करना चाहिए।

हमारे माता-पिता, हमारे नियोक्ता, उच्चाधिकारी आदि भी हमारे निर्माता और दाता हैं। इसलिए हमें केवल उन्हीं की शरण में रहना चाहिए।

ऋग्वेद मन्त्र 1.24.4

यश्चिद्दि त इत्था भगः शशमानः पुरानिदः ।
अद्वेषो हस्तयोर्दधे ॥ 4 ॥

यः — वह

चित् हि — निश्चित है

ते — तुम्हारे लिए

इत्था — सुखों के लिए

भगः — गौरवशाली सम्पदा का अंश

शशमानः — प्रशंसनीय

पुरा — दूर

निदः — निंदा, दोषारोपण

अद्वेषः — द्वेष रहित

हस्तयोः — हाथों में

दधे — धारण करता है।

व्याख्या :-

गौरवशाली सम्पदा के क्या लक्षण हैं?

सर्वोच्च दिव्य अर्थात् परमात्मा हमारा प्रथम निर्माता, दाता तथा हमारी गौरवशाली सम्पदा सहित समूची सृष्टि का संरक्षक है। यह महसूस करने के बाद, वर्तमान मन्त्र यह सुनिश्चित करता है कि हमारी गौरवशाली सम्पदा निश्चित रूप से हमारे सुखों के लिए ही है। लेकिन हमें इस बात की भी अनुभूति होनी चाहिए और हमें यह सुनिश्चित भी करना चाहिए कि हमारी सम्पदा में निम्न लक्षण अवश्य अभिव्यक्त हों :—

(क) यह प्रशंसनीय होनी चाहिए,

(ख) इसमें निन्दा या दोष आदि न हों,

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



(ग) यह शत्रुता से रहित हो।

इस प्रकार की गौरवशाली सम्पदा को ही धारण करने की प्रेरणा है। हमें अपनी सम्पदा को दूसरों के कल्याण हेतु त्याग करने के लिए भी सदैव तैयार रहना चाहिए। यह गौरवशाली सम्पदा केवल अपने सुखों के लिए व्यक्तिगत सम्पत्ति की तरह नहीं समझी जानी चाहिए।

जीवन में सार्थकता

हमारी सम्पदा किस प्रकार शान्तिदायक तथा आध्यात्मिक प्रगति में सहायक हो सकती है?

यदि हमारी गौरवशाली सम्पदा प्रशंसनीय है, निंदा या दोषरहित है और शत्रु विहीन है तथा धारक के मन में इसे सबके कल्याण के लिए व्यय करने की तत्परता हो तो ऐसी गौरवशाली सम्पदा ही शान्तिदायक होने के साथ-साथ आध्यात्मिक प्रगति में भी सहायक हो सकती है और ऐसी सम्पदा ही सर्वोच्च दाता के द्वारा संरक्षण प्राप्त करती है।

ऋग्वेद मन्त्र 1.24.5

भग्भक्तस्य ते वयमुदशेम तवावसा ।
मूर्धानं राय आरभे ॥ ५ ॥

भग – गौरवशाली सम्पदा का अंश

भक्तस्य – उचित विभाग तथा सदुपयोग

ते – आपके

वयम् – हम

उदशेम – प्रगति के लिए ऊपर उठें।

तव – आपके

अवसा – संरक्षण

मूर्धानम् – उत्तम उपलब्धि

राय – सम्पत्ति

आरभे – नये त्याग प्रारम्भ करने के लिए।

व्याख्या :-

गौरवशाली सम्पदा का क्या उद्देश्य है?

हमें यह गौरवशाली सम्पदा कल्याणकारी गतिविधियों में विभाग तथा सदुपयोग करने के लिए ही धारण करनी चाहिए। इसी से जीवन में प्रगति सुनिश्चित होगी और परमात्मा की अनुभूति सुनिश्चित होगी। ऐसी सम्पदा नये त्याग का प्रारम्भ करने के लिए ही होती है। इस प्रकार गौरवशाली सम्पदा का जब त्याग कार्यों

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

में प्रयोग होता है तो यह एक अंतर्हीन शृंखला बन जाती है। गौरवशाली सम्पदा की अभिव्यक्ति केवल भौतिक सम्पदा तक ही सीमित नहीं रहती, अपितु उसमें मानसिक और आध्यात्मिक उपलब्धियाँ भी शामिल हो जाती हैं।

जीवन में सार्थकता

परमात्मा का सच्चा श्रद्धालु अथवा भक्त कौन होता है?

प्रत्येक व्यक्ति प्रगति की कामना करता है। जो लोग आध्यात्मिक प्रगति की कामना करते हैं, उनके लिए केवल त्याग ही एकमात्र मार्ग है, इसके अतिरिक्त अन्य कोई मार्ग नहीं है। पूर्ण आध्यात्मिक प्रगति के लिए पूर्ण त्याग। परमात्मा का सच्चा भक्त और सच्चा श्रद्धालु केवल वही हो सकता है, जो त्याग के मार्ग पर अपनी गौरवशाली सम्पदा को सबके कल्याण के लिए विभक्त करता है।

ऋग्वेद मन्त्र 1.24.6

नहि ते क्षत्रं न सहो न मन्युं वयश्चनामी पतयन्त आपुः।
नेमा आपो अनिमिषं चरन्तीर्न ये वातस्य प्रमिनन्त्यभ्वम् ॥ 6 ॥

नहि – निश्चित रूप से नहीं

ते – आपकी

क्षत्रम् – शासन

न – नहीं

सहः – शक्ति और सहनशीलता

न – नहीं

मन्युम् – बुराईयों और दुष्टताओं पर क्रोध

वयः – पक्षी

च – और

न – नहीं

अमि – उच्चाकाश में

पतयन्तः – सर्वत्र गतिशील

आपुः – व्यापक

न – नहीं

इमा – ये

आपः – जल

अनिमिषम् – बिना रुकावट के लगातार

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

चरन्ति: — चलते हैं

न — नहीं

ये — ये

वातस्य — वायु की गतिविधियाँ

प्रमिनन्ति — परिमाण

अभ्वम् — सत्ता का निषेध

व्याख्या :-

परमात्मा के बारे में तीन प्रश्न हैं :—

(क) क्या कोई शक्ति उसे व्याप्त कर सकती है?

(ख) क्या कोई शक्ति उसे माप सकती है?

(ग) क्या कोई शक्ति उसका उल्लंघन कर सकती है?

उच्चाकाशों में सर्वत्र उड़ते हुए पक्षी भी निश्चित रूप से उसके शासन को, उसकी शक्ति और सहनशीलता को तथा बुराईयों और दुष्टताओं पर क्रोध को भी व्याप्त नहीं कर सकते।

बिना रुकावट के लगातार चलते हुए जल तथा वायु की समस्त गतिविधियाँ भी न तो उसको माप सकती हैं और न ही उसके शासन का उल्लंघन कर सकती हैं।

परमात्मा ने अपनी निर्मित सृष्टि को अनेकों प्रकार की शक्तियाँ दी हैं, किन्तु वह सर्वोच्च शक्ति है। पक्षियों, जल और वायु के उदाहरण तो केवल इस सिद्धान्त का प्रतीक हैं कि उसकी सृष्टि में कुछ भी उसे व्याप्त नहीं कर सकता, उसे माप नहीं सकता और न ही उसकी सर्वोच्चता का उल्लंघन कर सकता है।

जीवन में सार्थकता

क्या अपने निर्माताओं और दाताओं का उल्लंघन या उनकी निंदा करना नैतिक है?

नहीं, अपने निर्माताओं और दाताओं जैसे — हमारे माता-पिता, अध्यापक, नियोक्ता, महान् और उच्च विद्वानों का उल्लंघन करना या उनकी निंदा करना हमारे लिए नैतिक या धार्मिक कार्य कदापि नहीं हो सकता।

ऋग्वेद मन्त्र 1.24.7

अबुधे राजा वरुणो वनस्योर्ध्वं स्तूपं ददते पूतदक्षः।

नीचीना: स्थरुपरि बुध्न एषामस्मे अन्तर्निहिताः केतवः स्युः ॥ ७ ॥

अबुधे — अन्तरिक्ष से परे

राजा — ज्ञानवान् एवं शासक

वरुणः — सबका नियामक

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

वनस्पति – समस्त भौतिक संसार

ऊर्ध्वम् – ऊपर

स्तूपम् – किरणे (सूर्य की ऊर्जा और प्रकाश के स्तम्भ)

ददते – देता है

पूतदक्षः – शुद्ध शक्ति तथा हमारी शक्ति की शुद्धि

नीचीनाः – नीचे आता है

स्थुः – रुकता है

उपरि – ऊपर

बुधनः – अन्तरिक्ष तथा सांसारिक पदार्थ

एषाम् – ये पदार्थ

अस्मे – हमारे

अन्तः – अन्दर

निहिताः – स्थापित

केतवः – प्रकाश तथा जीवन की किरणे

स्युः – हों

व्याख्या :-

सूर्य का विज्ञान क्या है?

सर्वोच्च शक्ति एक महान् ज्ञानवान् तथा अन्तरिक्ष से भी परे शासन करने वाली सबका नियामक है। वह समूचे भौतिक संसार के ऊपर अपनी किरणे छोड़ता है। यह किरणे सूर्य की ऊर्जा और प्रकाश के स्तम्भ रूप में होती हैं। वह स्वयं शुद्ध शक्ति है, इसलिए उसकी किरणे हमारे लिए भी शुद्धिकर्ता बन जाती हैं। जब यह किरणे नीचे आती हैं तो सृष्टि के समस्त भौतिक पदार्थों के ऊपर रुक कर यह हमारे जीवन में स्थापित हो जाती है। इस प्रकार, प्रकाश की यह किरणें हमारे जीवन की किरणें बन जाती हैं।

जीवन में सार्थकता

सूर्य की आध्यात्मिकता क्या है?

सूर्य हमारे लिए केवल भौतिक लाभ की ही वस्तु नहीं है, अपितु हमारे जीवन का कारण है। यह उस सर्वोच्च शक्ति के साथ लगातार जुड़ा रहता है, जिसने इसे शक्ति दी है। इस प्रकार, हमारे माता और पिता की तरह, सूर्य भी हमारे और परमात्मा के बीच सम्पर्क का माध्यम है।

ऋग्वेद मन्त्र 1.24.8

उरुं हि राजा वरुणश्चकार सूर्याय पन्थामन्वेतवा उ।

अपदे पादा प्रतिधातवेऽकरुतापवक्ता हृदयाविधश्चित् ॥ 8 ॥

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

उरुम् – विस्तारयुक्त ही
हि – निश्चित रूप से
राजा – ज्ञानवान् एवं शासक
वरुणः – सबका नियामक
चकार – स्थापित
सूर्याय – सूर्य के लिए
पन्थाम् – पथ
अन्वेतवै – गमनागमन
अपदे – जहाँ पद रखने की सम्भावना नहीं हैं।
पादा – पद
प्रतिधातवे – रखने के लिए
अकः – स्थापित
उत – और
अपवक्ता – बुराईयों का नाशक
हृदयाविधः – हृदय तोड़ने वाले
चित् – निश्चित रूप से, जैसे कि

व्याख्या :-

सूर्य को भौतिक और आध्यात्मिक शक्तियाँ देने के क्या दिव्य उद्देश्य हैं?

ज्ञानवान् तथा शासन करने वाले राजा, सबका नियामक परमात्मा, निश्चित रूप से विस्तारयुक्त है और उसी ने सूर्य की किरणों आदि के आने जाने, लाने ले जाने के लिए पथ स्थापित किये हैं। उसी ने सूर्य को शक्तियाँ दी हैं, जिनके बल पर वह सबको धारण करता है और उन स्थानों तक भी पहुँच सकता है, जहाँ पहुँचना कठिन है। यह बुराईयों के नाशक की तरह हृदय को तोड़ने वाली शक्तियों को भी धारण कर सकता है। सूर्य को इतनी विस्तृत शक्तियाँ देकर वास्तव में परमात्मा स्वयं सृष्टि में सर्वत्र व्यापक हो गये।

जीवन में सार्थकता

हमारे जीवन में सर्वोच्च अधिकारियों की क्या भूमिका है?

परमात्मा सूर्य के माध्यम से ही अपनी विस्तार युक्त शक्तियाँ लागू करते हैं। यह एक प्रकार से अपने अधिकारों का विकेन्द्रीकरण है। अधिकारों के विकेन्द्रीकरण से ही हमारे वृद्ध जन तथा उच्चाधिकारी अपने अधिकारों को लागू करते हैं। हमें उनके द्वारा प्रदत्त अधिकारों के साथ-2 उन वृद्ध जनों तथा उच्चाधिकारियों का भी सम्मान करना चाहिए। इन अधिकारियों को हमें बुराईयों के नाशक के रूप में देखना चाहिए, जो हमारे मरित्सुष्क में और हमारे सम्पूर्ण जीवन में व्याप्त रहें।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

ऋग्वेद मन्त्र 1.24.9

शतं ते राजभिषजः सहस्रुर्वी गभीरा सुमतिष्ठे अस्तु ।
बाधस्व दूरे निर्वर्तिं पराचैः कृतं चिदेनः प्र मुमुग्धस्मत् ॥ 9 ॥

शतम् – सैकड़ों

ते – आपके

राजन् – लोगों पर शासन करने वाले

भिषजः – औषधियाँ

सहस्रम् – हजारों

उर्वी – विस्तार युक्त भूमि

गभीरा – गहरी

सुमतिः – महान् सर्वोच्च बुद्धि

ते – आपकी

अस्तु – है

बाधस्व – बाधायें एवं रोग

दूरे – दूर रखो

निर्वर्तिम् – उन सब भूमियों से

पराचैः – धर्म से दूर रहने वाली दुष्ट बुद्धि

कृतम् – किये गये कार्य

चित् – छाप

एनः – समस्त बुराईयाँ

प्र मुमुग्धि – पृथक करो (बुराईयों से)

अस्मत् – हमारी ।

व्याख्या :-

सर्वोच्च राजा किस प्रकार इस सृष्टि पर शासन करता है। लोगों पर शासन करने वाले सर्वोच्च राजा के पास सैकड़ों औषधियाँ हैं और हजारों विस्तार युक्त और गहरी भूमियों के साथ-साथ अपनी महान् बुद्धि के बल पर वह हमें समस्त बाधाओं और रोगों से दूर रखता है। जो दुष्ट बुद्धियाँ धर्म से दूर हो जाती हैं, उन्हें भी हमसे दूर रखता है। वह राजा हमें पूर्व काल में किये गये समस्त बुरे कार्यों की छाप से भी पृथक कर दे। इस सृष्टि के व्यापक दृष्टिकोण हैं। बुरे कार्यों के कारण अनेकों बाधायें और रोग पैदा होते हैं। केवल उस सर्वोच्च राजा की शक्तियाँ ही हमें उन सब बुरे कार्यों तथा उनके प्रभावों से मुक्त रख सकती हैं। बल्कि वह तो हमारी बुद्धियों को उन बुरे कार्यों की छाप से भी दूर रख सकता है।

जीवन में सार्थकता

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

परमात्मा किस प्रकार एक उपदेशकर्ता है, एक चिकित्सक है और एक अध्यापक है?

परमात्मा एक उपदेशकर्ता है, एक चिकित्सक है और एक अध्यापक है, जो सर्वप्रथम अपने बहुआयामी विचारों और तरीकों से हमें एक अच्छे स्वस्थ जीवन के लिए प्रेरित करता है। दूसरे स्तर पर वह अपनी औषधियों की सहायता से हमारे जीवन में आने वाली बाधाओं और रोगों को दूर करने में हमारी सहायता करता है। तीसरे स्तर पर वह हमें एक अध्यापक की तरह हमारे गलत कार्यों की छाप से भी पृथक कर सकता है और हमारे भविष्य के उत्थान का मार्गदर्शन दे सकता है।

ऋग्वेद मन्त्र 1.24.10

अमी य ऋक्षा निहितास उच्चा नक्तं ददृशे कुह चिद्वेयुः।
अदब्धानि वरुणस्य व्रतानि विचाकश्चन्द्रमा नक्तमेति ॥ 10 ॥

अमी – प्रत्यक्ष दिखायी देने वाला

ये – ये

ऋक्षा: – चन्द्र और तारे आदि

निहितास: – अपने स्थान पर स्थापित

उच्चा: – ऊपर (आकाश में)

नक्तम् – रात्रि में

ददृशे – दिखायी देने वाले

कुह चित – जहाँ वास्तव में

दिवा – दिन में

ईयुः – जाते हैं

अदब्धानि – हिंसा रहित

वरुणस्य – सबके नियामक के

व्रतानि – व्रत, संकल्प, नियम

विचाकशत – अच्छे प्रकार दृष्टिमान तथा रहने वाले

चन्द्रमा: – चन्द्र

नक्तम् – रात्रि में

एति – पुनः आते हैं।

व्याख्या :-

दिन में चन्द्र और तारे कहाँ जाते हैं?

चन्द्र और तारे प्रत्यक्ष ऊपर विद्यमान हैं और अपने—अपने स्थानों पर स्थापित हैं, परन्तु दिन में ये सब कहाँ चले जाते हैं? सबके नियामक परमात्मा के संकल्प और नियम हिंसा रहित हैं। समस्त पदार्थ अपने—अपने स्थानों पर ही रहते हैं और पुनः रात्रि में दृष्टिमान होते हैं। परमात्मा द्वारा सारी सृष्टि में निर्मित कुछ भी

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

परमात्मा के नियमों का उल्लंघन नहीं कर सकता। दृष्टा और दिखायी देने वाली वस्तु के दृष्टिकोण बदल जाते हैं। यह सारी सृष्टि किसी एक या अन्य रूप में सदैव अस्तित्व में रहती है। इसमें परिवर्तन हो सकते हैं, परन्तु दिव्य नियमों का उल्लंघन नहीं हो सकता है।

जीवन में सार्थकता

उच्च स्तर के बाबजूद प्रत्येक व्यक्ति नियमों के बंधन में क्यों रहता है?
कोई व्यक्ति कितना ही बड़ा स्तर प्राप्त कर ले, परन्तु वह सरकार के नियमों का उल्लंघन नहीं कर सकता। हमारे स्तर में परिवर्तन हो सकता है, किन्तु सर्वोच्च कानूनों का प्रबन्धन सदैव यथावत रहता है।

ऋग्वेद मन्त्र 1.24.11

तत्त्वा यामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदा शास्ते यजमानो हविर्भि ।
अहेळमानो वरुणोह बोध्युरुशंस मा न आयुः प्र मोषीः ॥ 11 ॥

तत् – वह

त्वा – आपका

यामि – प्रार्थना

ब्रह्मणा – वैदिक वाणी तथा कार्य

वन्दमान् – प्रशंसा तथा स्तुति

तत् – वह

आ शास्ते – मैं भी इच्छा करता हूँ

यजमानः – कर्ता

हविर्भि: – त्याग

अहेळमानः – कभी आपका अनादर नहीं करता, किसी पर क्रोध नहीं करता

वरुण – सबका नियामक

बोधि – मुझे अपनी अनुभूति प्रदान करो

उरुशंस – सबके द्वारा प्रशंसनीय

मा – नहीं

नः – हमारी

आयुः – आयु

प्र मोषीः – व्यर्थ जाये।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

व्याख्या :-

इस जीवन का आध्यात्मिकीकरण तथा उचित उपयोग कैसे करें?

समस्त वैदिक वाणी और कार्यों के साथ मैं परमात्मा की प्रशंसा और स्तुति करता हूँ। मुझे त्याग कार्यों को करते समय आपकी अत्यन्त चमक की आवश्यकता है। मैं आपका कभी अनादर नहीं करता। मैं कभी किसी पर क्रोध नहीं करता। सबके नियामक तथा प्रशंसनीय होने के कारण कृपया मुझे अपनी अनुभूति प्राप्त करवाईये। कृपया मेरे जीवन को व्यर्थ न जाने देना।

यह मन्त्र परमात्मा की अनुभूति प्राप्त करने के अन्तिम लक्ष्य की सिद्धि के लिए अपने जीवन का आध्यात्मिकीकरण करने के लिए अत्यन्त सरल उपाय सूचीबद्ध करता है:-

(क) वैदिक वाणियों और कार्यों के साथ परमात्मा की स्तुति करो।

(ख) त्याग के बल पर उसकी चमक की इच्छा करो।

(ग) परमात्मा का कभी अनादर न करो और किसी भी व्यक्ति या अवस्था पर क्रोध न करो। परमात्मा के प्रति पूरी तरह से बिना शर्त के समर्पण कर दो।

ऐसे जीवन के बल पर ही कोई परमात्मा की अनुभूति की कामना कर सकता है और अपने जीवन को व्यर्थ होने से बचा सकता है।

जीवन में सार्थकता

जीवन में उच्च स्तर कैसे प्राप्त करें?

परमात्मा की अनुभूति के यह तीन कदम जीवन में उच्च स्तर प्राप्त करने के लिए भी समान रूप से सहायक हैं। इनके साथ-साथ हमें अपने वृद्धजनों और उच्चाधिकारियों के पद चिह्नों का अनुसरण करना चाहिए।

(क) सदैव उनकी प्रशंसा करो,

(ख) कड़ी मेहनत और त्याग के बल पर उन्हीं के समान स्तर की कामना करो,

(ग) उनका कभी अनादर न करो और उनके साथ कोई विवाद न करो।

ऋग्वेद मन्त्र 1.24.12

तदिनकं तद्विवा मह्यमाहस्तदयं केतो हृद आ वि चष्टे।

शुनः शेषो यमहृद गृभीतः सो अस्मान् राजा वरुणो मुमोक्तु ॥ 12 ॥

तत् – उस

इत – यह

नक्तम् – रात्रि में

तत् – वह

दिवा – दिन में

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

महाम् – मेरे लिए (परमात्मा की अनुभूति प्राप्त करने वाले के लिए)

आहुः – उपदेश

तत् – वह

अयम् – यह

केतः – सर्वोत्तम अनुभूति

हृदः – हृदय और मन में

आ वि चष्टे – ज्ञानवान होना

शुनः शेषे – परमात्मा की अनुभूति की इच्छा

यम – जो

अव्घृत् – पुकारता, उपदेश

गृभीतः – भिन्न-2 वृत्तियों में फंसा हुआ

सः – वह

अस्मान् – हमारा

राजा – सबका सर्वोच्च शासक

वरुणः – सबका नियामक

मुमोक्तु – मुक्त करें।

व्याख्या :-

कौन हमें मन की समस्त वृत्तियों से मुक्त कर सकता है?

वह परमात्मा जिसकी अनुभूति की हम इच्छा करते हैं, उसका उपदेश हम, ब्रह्म अनुरागियों के लिए दिन-रात किया जाता है और हमें उसका प्रकाश हृदय और मन में होता है। जो लोग परमात्मा की अनुभूति की इच्छा करते हैं और उसे पुकारते हैं, किन्तु भिन्न-भिन्न प्रकार की मानसिक वृत्तियों में फंसे रहते हैं, उन्हें भी वही सबका नियामक शासक सबसे मुक्त होने के योग्य बना देता है।

जीवन में सार्थकता

हमारी समस्त समस्याओं का समाधान कौन कर सकता है?

जीवन की छोटी से छोटी समस्याओं और कठिनाईयों से लेकर परमात्मा की अनुभूति तक सभी समाधान एक सर्वोत्तम अनुभूति के रूप में हमारे हृदय और मन में प्राप्त होते हैं। यह एक सत्य है। हमारे मन सदैव भिन्न-2 प्रकार की वृत्तियों में फंसे रहते हैं, परन्तु वह सर्वोच्च नियामक और दयालु इतना सक्षम है कि वह हमें हर दर्द से मुक्ति दे सकता है।

ऋग्वेद मन्त्र 1.24.13

शुनःशेषो ह्यहृद गृभीतस्त्रिष्वादित्यं द्रुपदेषु बद्धः।
अवैनं राजा वरुणः ससृज्याद्विद्वाँ अदब्धो विमुमोक्तु पाशान् ॥ 13 ॥

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

शुनः शेषः — ईश्वर अनुभूति की इच्छायें
हि — निश्चित रूप से
अङ्गत् — पुकार, उपदेश
गृभीतः — वृत्तियों में फंसा हुआ
त्रिषु — तीनों संसार (सत, रज, तम), (ज्ञान, कर्म और उपासना)
आदित्यम् — अविनाशी, परमात्मा
द्रुपदेषु — अहिंसनीय, अथक
बद्धः — बंधन
अव (ससृज्यात् से पूर्व लगाकर)
एनम् — यह (बंधन में व्यक्ति)
राजा — सर्वोच्च शासक
वरुणः — सबका नियामक
अव ससृज्यात् — गुणों से संयुक्त
विद्वान् — विद्वान
अदद्धः — अत्यन्त प्रशंसनीय, अथक
विमुमोक्तु — मुक्त
पाशान् — समर्पत बंधनों से।

व्याख्या :-

जीवन के तीन बंधन कौन से हैं?

जो व्यक्ति परमात्मा की अनुभूति का इच्छुक होता है, वह भी मन की तीन वृत्तियों अर्थात् बंधनों में फंसा होता है। अतः वह निश्चित रूप से उस अविनाशी परमात्मा को पुकारता है, जो स्वयं अहिंसनीय और अथक होता है। वह सर्वोच्च शासक और नियामक सबसे बुद्धिमान और कभी न क्षय होने वाला है, इसलिए वह सब बंधनों से मुक्त कर सकता है। मन की तीन वृत्तियाँ अर्थात् बंधन हैं — सत, रज और तम या ज्ञान, कर्म और उपासना।

जीवन में सार्थकता

जीवन के तीन बंधनों से हमें कौन मुक्त कर सकता है?

परमात्मा की अनुभूति की इच्छा करने वाले व्यक्ति को तीनों बंधनों से भी ऊपर उठना पड़ता है। एक श्रद्धालु का उत्थान या पतन इन्हीं तीन स्तरों पर ही होता है। परन्तु इन तीन स्तरों से ऊपर उठना केवल सर्वोच्च नियामक परमात्मा की कृपा से ही सम्भव होता है।

ऋग्वेद मन्त्र 1.24.14

अव ते हेठो वरुण नमोभिरव यज्ञेभिरीमहे हविर्भिः।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

क्षयन्त्रस्मभ्यमसुर प्रचेता राजनेनासि शिश्रथः कृतानि ॥ 14 ॥

अव — कभी नहीं

ते — आपके

हेडः — अनादर, क्रोध

वरुण — सबका नियामक

नमोभिः — नमस्कार के साथ

अव (शिश्रथः से पूर्व लगाकर)

यज्ञोभिः — यज्ञों के साथ, दिव्य पूजा, सत्संगति तथा त्याग के साथ

ईमहे — इच्छा

हविर्भिः — त्याग

क्षयन — कमजोर करना, नष्ट करना

अस्मभ्यम् — हमारी

असुर — बुराईयाँ

प्रचेता — सर्वोच्च चेतना, परमात्मा

राजन् — सर्वोच्च शासक

एनांसि — पाप

शिश्रथः (अव शिश्रथः) — कमजोर करना

कृतानि — पहले से किये गये।

व्याख्या :-

बुराईयों को किस प्रकार कमजोर या नष्ट किया जा सकता है?

सर्वोच्च नियामक, परमात्मा! हम कभी भी आपका निरादर नहीं करते और कभी आपके क्रोध को नहीं चाहते क्योंकि हम आपके समक्ष प्रस्तुत करते हैं:-

(क) हमारे नमस्कार,

(ख) हमारे यज्ञ अर्थात् कल्याणकारी गतिविधियाँ जिसमें देव पूजा, सत्संगति तथा दान शामिल होते हैं,

(ग) हमारे समर्पण त्याग।

कृपया हमारे अवगुणों और बुराईयों को कमजोर और नष्ट कर दो। सर्वोच्च चेतनता तथा राजा ने हमारे पापों को पहले ही कमजोर कर दिया है।

जीवन में सार्थकता

परमात्मा अर्थात् दिव्य शक्ति निश्चित रूप से हमारी बुराईयों और पापों को नष्ट कर देती है यदि हम अपने जीवन में निम्न तीन लक्षण सुनिश्चित कर पायें:-

(क) उस सर्वोच्च नियामक के प्रति हम सदैव नतमस्तक रहें और कभी उसका निरादर न करें।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

(ख) हम यज्ञ करें अर्थात् ऐसे कल्याणकारी कार्य करें जिसमें तीन दृष्टिकोण समाहित हों – देवपूजा, संगतिकरण और त्यागपूर्वक दान।

(ग) पूर्ण त्याग।

ऋग्वेद मन्त्र 1.24.15

उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवाधमं वि मध्यमं श्रथाय ।
अथा वयमादित्य व्रते तवानागसो अदितये स्याम ॥ 15 ॥

उत् – उनसे

उत्तमम् – सर्वोत्तम

वरुण – सबका नियामक

पाशम् – बंधन

अस्मत् – हमारे में से

अधमम् – निकृष्ट

वि (श्रथाय से पूर्व लगाकर)

मध्यमम् – मध्यम

श्रथाय (वि श्रथाय) – पूरी तरह से नष्ट

अथ – इसके बाद

वयम् – हम

आदित्य – अविनाशी परमात्मा

व्रते – संकल्प

तव – आपका

आनागसः – निरपराधी, निष्पापी

अदितये – अविनाशी प्रसन्नता, आनन्द

स्याम् – योग्य हूँ।

व्याख्या :-

अविनाशी आनन्द की अवस्था को कैसे प्राप्त करें?

इस मन्त्र में सबके नियामक परमात्मा से प्रार्थना की गयी है कि वह उत्तम, मध्यम तथा निकृष्ट तीनों प्रकार के बंधनों को पूरी तरह नष्ट कर दे। इसके बाद हम आप, अविनाशी अर्थात् आदित्य के समक्ष संकल्प करते हैं कि हम सदैव निष्पापी रहेंगे, जिससे हम आपके समान अविनाशी आनन्द की अवस्था को प्राप्त कर सकें।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

जीवन में सार्थकता

तीन बंधनों से मुक्ति कैसे हो और उसका क्या परिणाम होगा?

तीन बंधनों का विवरण इस प्रकार है:-

(क) उत्तम बंधन – कल्याणकारी गतिविधियों और त्याग कार्यों जैसे सात्त्विक जीवन से उत्पन्न प्रसन्नता या अहंकार।

(ख) मध्यम बंधन – सेवा का क्रियाशील और अधिकारिक जीवन।

(छ) निकृष्ट बंधन – जीवन की तामसिक अवस्था, विलासितायें और अपराध आदि।

हम परमात्मा के प्रति लम्बी और लगातार ध्यान साधना से ही इन तीनों बंधनों से मुक्त हो सकते हैं। ध्यान के लिए यह स्मरण रखना होगा कि वह सर्वोच्च नियामक परमात्मा भी तीनों बंधनों से मुक्त है। हमें भी उसके समान बनना होगा और इसी संकल्प के साथ अभ्यास करना होगा। ऐसा करते हुए अपने मन, अपने विचारों, अपनी प्रतिक्रियाओं और अपने व्यवहारों पर भी दृष्टि रखनी होगी। उसके बाद ही परमात्मा इन तीनों बंधनों से हमें मुक्त करेंगे। इन तीन बंधनों से ऊपर उठने के परिणामस्वरूप ही हम पूरी तरह से निर-अपराधिक जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

ऋग्वेद मण्डल-1 सूक्त 25

ऋग्वेद मन्त्र 1.25.1

यच्चिद्धि ते विशो यथा प्र देव वरुण व्रतम् ।
मिनीमसि द्यविद्यवि ॥ १ ॥

यत् चित् हि – जो कुछ भी
ते – आपके
विशो – प्रजायें, आपके नियन्त्रण में
यथा – जैसे
प्र (मिनीमसि से पूर्व लगाकर)
देव – आनन्ददायक, सब पापों पर नियन्त्रण करने वाले
वरुण – सबका नियामक
व्रतम् – संकल्प, नियम
मिनीमसि (प्र मिनीमसि) – हिंसित करते, उल्लंघन करते,
द्यविद्यवि – दिन–प्रतिदिन ।

व्याख्या :-

जब कोई दिव्य नियमों या संकल्पों का उल्लंघन करता है तो क्या होता है?

हम सबके नियामक परमात्मा की प्रजायें दिन–प्रतिदिन दिव्य नियमों तथा संकल्पों का उल्लंघन करते रहते हैं। सर्वोच्च देवता के जो भी नियम और संकल्प हैं, उन सबका उद्देश्य हमें आनन्दित करना और हमारे पापों पर नियन्त्रण करवाना है। अतः वह हमारे सब उल्लंघनों को गलत समझ कर या तो हमें प्रेरित करता है या हमें दण्डित करता है, जिससे हम दिव्य संकल्पों का उल्लंघन न करें।

यह मन्त्र हम सबके लिए एक चेतावनी है कि हमें दिव्य नियमों और संकल्पों का उल्लंघन नहीं करना चाहिए।

जीवन में सार्थकता

जब कोई व्यक्ति समाज या राष्ट्र के कानूनों या नियमों का उल्लंघन करता है तो क्या होता है?

दिव्य नियमों और संकल्पों की तरह, हमारे सामाजिक और राष्ट्रीय कानून भी हम सबको आनन्दित करने के लिए तथा अपराधों पर नियन्त्रण करने के लिए होते हैं। परमात्मा की तरह हमारे शासक भी प्रथम हमें

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

शिक्षा के द्वारा कानूनों को न तोड़ने और गलतियाँ न करने की प्रेरणायें देते हैं। इसके बावजूद यदि हम उनका अनुसरण नहीं करते तो हमें अपनी गलतियों के लिए दण्डित किया जाता है।

ऋग्वेद मन्त्र 1.25.2

मा नो वधाय हत्त्वे जिहीळानस्य रीरधः ।
मा हृणानस्य मन्यवे ॥ २ ॥

मा – नहीं

नः – हमें

वधाय – वध के लिए

हत्त्वे – चोट देने के लिए

जिहीळानस्य – घृणा या निरादर करने वाला

रीरधः – प्रेरक

मा – नहीं

हृणानस्य – जो हम पर क्रोध करे या जो अपने पापों पर लज्जित हो।

मन्यवे – क्रोधित होना

व्याख्या :-

पापियों से कैसा व्यवहार करें?

नियमों आदि का उल्लंघन करने वाले को प्रेरित करके या चेतावनी देने के बाद यह मन्त्र पीड़ितों को प्रेरित करता है कि वे ऐसे व्यक्तियों का न तो वध करें, न उन्हें चोट पहुँचायें और न ही उन पर क्रोध करें, जो :-

क) जो उनका निरादर करते रहे हैं,

ख) जो क्रोध करते हैं और अपने व्यवहार पर लज्जित होते हैं।

इसका अभिप्राय यह है कि यदि हम ऐसे पापियों को क्षमा कर दें तो परमात्मा स्वयं ऐसे पापों पर ध्यान देते हैं और पापियों को प्रेरित करते हैं। यह मन्त्र समस्त पीड़ितों को सहनशक्ति की प्रेरणा देता है।

जीवन में सार्थकता

अपराधियों से कैसा व्यवहार करें?

यदि कोई पीड़ित स्वतः ही अपराधियों को सजा देना प्रारम्भ कर दे तो इससे अराजकता उत्पन्न हो जायेगी। एक अपराधी गलती करता है और पीड़ित उसको सजा देने पर कानून की दृष्टि में गलती करेगा। यह दूसरी गलती, जिसमें पीड़ित अपराधी को सजा दे, असंतुलित या आवश्यकता से अधिक भी हो सकती है। इसके बाद अपराधी पुनः बदला लेने के लिए तैयारी करेगा। इस प्रकार बदले की एक श्रृंखला चल पड़ेगी,

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

जो सामाजिक ताने—बाने का सारा भविष्य ही नष्ट कर देगी। अतः सामान्य अवस्था में अपराधी को सरकारों पर या परमात्मा पर ही छोड़ देना चाहिए।

ऋग्वेद मन्त्र 1.25.3

वि मृळीकाय ते मनो रथीरश्वं न सन्दितम् ।
गीर्भिर्वरुण सीमहि ॥ ३ ॥

वि (सीमहि से पूर्व लगाकर)
मृळीकाय — स्थायी सुख और आनन्द के लिए
ते — आपके
मनः — मन
रथीः — रथ
अश्वम् — घोड़ों को
न — जैसे
सन्दितम् — परस्पर बाँध कर
गीर्भिः — वैदिक वाणियों के साथ
वरुण — सबका नियामक
सीमहि (वि सीमहि) — विशेष रूप से बांधते

व्याख्या :-

हमें भगवान पर तथा उसके निर्देशों अर्थात् वेदों पर ध्यान क्यों और कैसे लगाना चाहिए?
हमें वैदिक वाणियों अर्थात् भगवान की बुद्धि पर विशेष रूप से अपना ध्यान लगाना चाहिए, जैसे घोड़ों को रथ के साथ बाँध कर रखा जाता है। परमात्मा के साथ यह बंधन स्थायी सुख अर्थात् आनन्द के लिए होता है।

जीवन में सार्थकता

हमारे जीवन का सर्वोच्च आधार क्या है?

जैसे भौतिक सुखों के लिए लोग उन पर ध्यान लगाते हैं, जिनका उच्च भौतिक स्तर होता है, उसी प्रकार स्थायी आध्यात्मिक सुख के लिए हमें सर्वोच्च दिव्य शक्ति पर एक प्रेमी और एक श्रद्धालु की तरह ध्यान लगाना चाहिए।

यदि हम भगवान के द्वारा दी गयी भौतिक सम्पत्तियों के साथ अपने मन को बाँध लेंगे तो हमारे सुख लम्बी अवधि तक नहीं रह सकते क्योंकि सभी भौतिक वस्तुओं का जीवन छोटा ही होता है और अन्ततः इन्हें नष्ट होना ही होता है।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

परमात्मा के साथ हमारे बंधन ही स्थायी हो सकते हैं क्योंकि केवल परमात्मा ही अविनाशी है।

एक बेल वाला पौधा किसी वृक्ष पर केवल उसी ऊँचाई तक जा सकता है, जितनी ऊँचाई उस वृक्ष की हो। सहायता देने वाला वृक्ष जितना लम्बा, उतनी ही लम्बी बेल की ऊँचाई। इसमें कोई सन्देह नहीं कि इस समूची सृष्टि में सर्वशक्तिमान परमात्मा ही सर्वोच्च है। अतः केवल परमात्मा का आधार ही हमारे जीवन के लिए सर्वोच्च आधार हो सकता है।

ऋग्वेद मन्त्र 1.25.4

परा हि मे विमन्यवः पतन्ति वस्य—इष्टये ।

वयो न वसतीरुप ॥ 4 ॥

परा — दूर

हि — निश्चित रूप से

मे — मुझसे और मेरे जीवन से

विमन्यवः — क्रोध आदि समस्त बुराईयाँ

पतन्ति — चली जायें

वस्य — महान् जीवन

इष्टये — इच्छित लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए

वयः — पक्षी

नः — जैसे

वसतीः — निवास

उप — की ओर, निकट ।

व्याख्या :-

अपने जीवन से समस्त बुराईयों को दूर क्यों और कैसे करना चाहिए?

हम परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि समस्त बुराईयों को मुझसे तथा मेरे जीवन से दूर रखें, जिससे मैं अपने महान् जीवन के इच्छित उद्देश्यों को प्राप्त कर सकूँ जैसे पक्षी अपने निवास अर्थात् घोंसलों की ओर जाते हैं।

जीवन में सार्थकता

महान् उद्देश्यों को कौन प्राप्त कर सकता है?

क्रोध आदि समस्त बुराईयाँ हमारे अपने—अपने उद्देश्यों को प्राप्त करने के मार्ग पर बहुत बड़ी बाधायें हैं। बुराईयों की उपरिथिति में कोई भी लक्ष्य प्राप्त नहीं किया जा सकता। एक महान् जीवन के लिए तो यह अत्यन्त आवश्यक है कि अपने जीवन को पूरी तरह से बुराईयों से मुक्त रखें। बुराईयों से मुक्त जीवन ही महान् उद्देश्यों को प्राप्त कर सकता है।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

ऋग्वेद मन्त्र 1.25.5

कदा क्षत्रश्रियं नरमा वरुणं करामहे ।
मृळीकायोरुचक्षसम् ॥ 5 ॥

कदा — कब
क्षत्र श्रियम् — सब राजाओं का राजा, सब बलों का आधार
नरम् — प्रेरणा देने वाला, आगे ले चलने वाला
आ (करामहे से पूर्व लगाकर)
वरुणम् — सबका नियामक
करामहे (आ करामहे) — प्राप्त करें, स्थापित करें ।
मृळीकाय — स्थायी सुख और आनन्द के लिए
उरुचक्षसम् — अनेक प्रकार के ज्ञान के साथ ।

व्याख्या :-

सबके नियामक परमात्मा में हम कब अपने आपको स्थापित कर पायेंगे?
इस प्रश्न का उत्तर जानने से पूर्व हमें यह जानना चाहिए कि सबके नियामक परमात्मा में हमें क्यों स्थापित करना चाहिए, जो :-

- (क) सब बलों का आधार है,
- (ख) सबके लिए प्रेरक तथा सबको लक्ष्य की ओर ले चलने वाला है,
- (ग) हमारे स्थायी सुख के लिए है,
- (घ) जिसमें अनेक प्रकार की दृष्टियाँ और सर्वोच्च ज्ञान है।

जीवन में सार्थकता

हमें अपने जीवन में सर्वोच्च लक्ष्य क्यों निर्धारित करना चाहिए?
हमें अपने जीवन में सर्वोच्च लक्ष्य ही निर्धारित करना चाहिए क्योंकि सर्वोच्च लक्ष्य हमें हर समय सही दिशा में उच्च उत्साह के साथ बढ़ने के लिए प्रेरित करता रहता है। यहाँ तक कि भौतिक संसारी जीवन में भी हमें दिन प्रतिदिन प्रगति करने के लिए सर्वोच्च लक्ष्य ही निर्धारित करना चाहिए, जिससे अंततः हम उच्च अवस्था को प्राप्त कर सकें।

ऋग्वेद मन्त्र 1.25.6

तदित्समानमाशाते वेनन्ता न प्र युच्छतः ।
धृतव्रताय दाशुषे ॥ 6 ॥

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

तत् – वह
इत् – निश्चित रूप से
समानम् – समान रूप से
आशाते – इच्छा, व्याप्त
वेनन्ता – प्रार्थना, गान
न – जैसे
प्र युच्छतः – आनन्द करते हुए
धृत ब्रताय – पवित्र संकल्पों के साथ
दाशुषे – दान, त्याग।

व्याख्या :-

- हम स्थायी आनन्द किस प्रकार प्राप्त कर सकते हैं?
सबके नियामक परमात्मा में स्वयं को स्थापित करके हम स्थायी आनन्द प्राप्त कर सकते हैं।
(क) हमें उस सर्वोच्च शक्ति को व्याप्त कर लेना चाहिए। उसे केवल प्रार्थना से ही व्याप्त किया जा सकता है।
(ख) जिस प्रकार एक गायक या संगीतज्ञ गान करते हुए या वाद्य यन्त्रों को बजाते हुए आनन्दित होता है, ध्यान साधना में प्रार्थना करते हुए हमें भी उसी प्रकार आनन्दित होना चाहिए।
(ग) हमें पवित्र संकल्पों को धारण करना चाहिए।
(घ) अपने जीवन को शुद्ध करने के लिए हमें कुछ भी और सब कुछ त्याग करने के लिए सदैव तैयार रहना चाहिए।

जीवन में सार्थकता

- पवित्रता और त्याग किस प्रकार इच्छित लक्ष्यों की प्राप्ति में सहायता करते हैं?
जीवन के किसी भी क्षेत्र में सफलता के लिए निम्न प्रयासों की आवश्यकता है :—
(क) उसे व्याप्त करने की प्रार्थना,
(ख) ध्यान में की गयी प्रार्थनाओं पर आनन्दित होना,
(ग) पवित्र संकल्प,
(घ) त्यागमय पवित्र जीवन।
पवित्रता और त्याग हमारी प्रार्थनाओं को वायु और सूर्य के माध्यम से निर्धारित लक्ष्य तक ले जाते हैं।

ऋग्वेद मन्त्र 1.25.7

वेदा यो वीनां पदमन्तरिक्षेण पतताम्।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

वेद नावः समुद्रियः ॥ 7 ॥

वेद – जानता है

यः – जो

वीनाम् – उड़ते हुए (पक्षी आदि)

पदम् – मार्ग

अन्तरिक्षेण – आकाश में, अंतरिक्ष में

पतताम् – चलते हुए

वेद – जानता है

नावः – नाव आदि

समुद्रियः – समुद्र में और सागर में

व्याख्या :-

यह किस प्रकार माना जा सकता है कि परमात्मा सब जगह विद्यमान है और सब कुछ जानता है?

परमात्मा सर्वविद्यमान और सर्वशक्तिमान है क्योंकि वह आकाश और अन्तरिक्ष में एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाने के लिए उड़ती हुई वस्तुओं जैसे पक्षी और हवाई जहाज आदि के बारे में भी जानता है। वह गहरे समुद्रों, सागरों तथा अन्य जलाशयों के बीच चलने वालों को भी जानता है। जब परमात्मा ऊँचे आकाश और गहरे समुद्रों के बीच सब कुछ जानता है तो वह निश्चित रूप से भूमि पर भी हर वस्तु को जानता है।

जीवन में सार्थकता

परमात्मा की शक्तियों को जानने का क्या लाभ है?

क्या हम परमात्मा से अपने विचारों को छिपा सकते हैं?

परमात्मा सब कुछ और सब स्थानों के बारे में जानता है और हम परमात्मा को जानने और उसकी अनुभूति प्राप्त करने का प्रयास करते हैं। इसका अर्थ यह है कि हम उसकी क्षमताओं को जानते हैं और हम केवल यह जानने की कोशिश करते हैं कि परमात्मा की किन शक्तियों का प्रयोग हम अन्य सहजनों के कल्याण और सुविधा के लिए कर सकते हैं।

द्वितीय, कोई भी अपने आपको और यहाँ तक कि अपने विचारों को परमात्मा से छिपा नहीं सकता है क्योंकि वह सर्वविद्यमान और सर्वशक्तिमान है।

ऋग्वेद मन्त्र 1.25.8

वेद मासो धृतव्रतो द्वादश प्रजावतः ।

वेदा य उपजायते ॥ 8 ॥

वेद – जानता है

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

मासः — महीने

धूतव्रतः — पवित्र संकल्प धारण करने वाला

द्वादश — बारह

प्रजावतः — प्रजाजनों के लिए उत्तम पदार्थ उत्पन्न करने वाला

वेद — जानता है

यः — जो

उपजायते — तीन वर्ष के बाद उत्पन्न अतिरिक्त माह

व्याख्या :-

परमात्मा कहाँ तक सर्वज्ञाता है?

परमात्मा समस्त जीवों के लिए उत्तम पदार्थ उत्पन्न करने हेतु वर्ष के बारह महीनों को जानता है। यहाँ तक कि वह उस अतिरिक्त माह को भी जानता है जो तीन वर्ष के बाद उत्पन्न होता है। परमात्मा का सर्वज्ञान उसके पवित्र संकल्पों के कारण है, जिसके द्वारा उसने सारी सृष्टि को प्रेम, कल्याण और त्याग के सिद्धान्त पर उत्पन्न किया, पालन कर रहा है और परिवर्तन करता है।

जीवन में सार्थकता

हम किस प्रकार परमात्मा की अनुभूति और उसकी कुछ शक्तियों को प्राप्त कर सकते हैं?

यदि हम परमात्मा को जानना चाहते हैं तो हमें भी प्रेम, कल्याण और त्याग जैसे पवित्र संकल्पों को धारण करना होगा, तभी हम परमात्मा की अनुभूति के साथ-साथ उसकी कुछ शक्तियाँ भी प्राप्त कर सकेंगे।

यहाँ तक कि भौतिक जीवन में सफलता भी पवित्र संकल्पों पर निर्भर करती है।

ऋग्वेद मन्त्र 1.25.9

वेद वातस्य वर्तनिमुरोर्घषस्य बृहतः।

वेदा ये अध्यासते ॥ ९ ॥

वेद — जानता है

वातस्य — वायु के

वर्तनिम् — मार्ग

ऋघ्षस्य — अत्यन्त महान्

बृहतः — बड़ा, व्यापक

वेद — जानता है

ये — जो

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

अध्यासते – वायु के आधार को।

व्याख्या :-

क्या परमात्मा वायु और उसके आधार के बारे में भी जानता है?

परमात्मा तो वायु के मार्ग को भी जानता है, जो अत्यन्त व्यापक और विस्तृत होते हैं और समस्त जीव पदार्थों का अस्तित्व उस वायु पर ही निर्भर करता है। वह वायु के आधार के बारे में भी जानता है कि वायु किस प्रकार उत्पन्न हुई, इसके स्थूल तथा सूक्ष्म तत्व क्या हैं, जिनके बारे में आधुनिक वैज्ञानिक भी बहुत कम जानते हैं।

जीवन में सार्थकता

वायु मण्डल के बारे में हम अपने ज्ञान को कैसे बढ़ा सकते हैं?

जब हम परमात्मा की अनुभूति प्राप्त करने की इच्छा प्राप्त करते हैं तो हमारा अपना सीमित ज्ञान भी उस सर्वोच्च दिव्य शक्तियों को समझना प्रारम्भ कर देता है और उसके साथ जुड़कर आनन्दित होता है।

भौतिक जीवन में भी हमें अपने वातावरण और संस्थाओं के भिन्न-2 विषयों के बारे में ज्ञान को बढ़ाने का प्रयास करते रहना चाहिए, जिससे हम वातावरण को श्रेष्ठ और लाभकारी बना सकें।

ऋग्वेद मन्त्र 1.25.10

नि षसाद धृतव्रतो वरुणः पस्त्या स्वा |

साम्राज्याय सुक्रतुः ॥ 10 ॥

नि षसाद (आ नि षसाद) – अच्छे प्रकार से स्थापित

धृतव्रतो – पवित्र संकल्प धारण करने वाला

वरुणः – सबका नियामक

पस्त्यासु – सब लोगों में

आ (नि षसाद से पूर्व लगाया गया)

साम्राज्याय – शासन के लिए

सुक्रतुः – उत्तम कार्यों के साथ

व्याख्या :-

परमात्मा सब लोगों में किस प्रकार स्थापित है?

वह महान् कार्यों को करने के लिए अपनी शक्तियाँ किसको देता है?

परमात्मा सबका नियामक होने के नाते और पवित्र संकल्प धारण करने के लिए सब लोगों में स्थापित है, जिससे वह उत्तम कार्यों के माध्यम से सृष्टि पर शासन कर सके। इस मन्त्र की यह स्पष्ट व्याख्या और

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

परिणाम है कि परमात्मा उत्तम कार्यों की जिम्मेदारी उन्हीं लोगों को देता है, जो परमात्मा के समान पवित्र संकल्प धारण करते हैं। परमात्मा की सारी शक्ति उसके पवित्र संकल्पों पर ही आधारित है। अतः हमें भी केवल पवित्र संकल्प ही धारण करने चाहिए, जिससे हम उस सर्वोच्च दिव्य शक्ति से निकटता बना सकें और उसका विश्वास जीत सकें। इस प्रकार वह दिव्य शक्ति महान् कार्यों को करने की शक्ति ऐसे ही लोगों को प्रदान करते हैं।

जीवन में सार्थकता

पवित्र संकल्पों का क्या महत्व है?

प्रेम, कल्याण और त्याग रूपी पवित्र संकल्प एक आध्यात्मिक जीवन के साथ-साथ सांसारिक जीवन की भी सर्वोच्च आवश्यकतायें हैं। यही पवित्र संकल्प हमारे जीवन को स्वर्ग बना सकते हैं और इन संकल्पों के बिना हमारा जीवन एक नर्क के समान हो जाता है। पवित्र संकल्पों से युक्त व्यक्ति किसी भी स्थान पर अपने उत्तम कार्यों के बल पर शासन कर सकता है।

ऋग्वेद मन्त्र 1.25.11

अतो विश्वान्यभुता चिकित्वां अभि पश्यति ।
कृतानि या च कर्त्वा ॥ 11 ॥

अतः — उसके बाद

विश्वानि — सब

अद्भुत — आश्चर्यजनक

चिकित्वान् — चेतना, जागृति उत्पन्न करने वाला

अभि पश्यति — सब प्रकार से देखता है

कृतानि — पूर्व कार्य

या — जो

च — और

कर्त्वा — कार्य

व्याख्या :-

परमात्मा के आश्चर्यजनक कार्य कौन से हैं?

परमात्मा सब स्थानों पर और सबके भीतर देख सकता है। वह पूर्व और भविष्य के भी सभी कार्यों को जानता है। उसकी चेतना और जागृति पैदा करने की शक्तियाँ आश्चर्यजनक हैं। जब एक चेतन व्यक्ति परमात्मा की अनुभूति प्राप्त लेता है तो वह उसकी आश्चर्यजनक शक्तियों के बारे में भी अनुभूति प्राप्त करता है। वह भी पूर्व के कार्यों को देख पाता है और भविष्य की जानकारी भी उसे प्राप्त हो जाती है। वह लोगों में

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

चेतना का विस्तार करने योग्य हो जाता है। हमारे पूर्व कर्मों का फल देकर और भविष्य में सुन्दर कार्यों को करने की प्रेरणा देकर परमात्मा हमारे अन्दर चेतना का विस्तार करते हैं।

जीवन में सार्थकता

सभी सरकारें, संस्थायें और यहाँ तक कि हमारे माता-पिता हम पर निगरानी क्यों रखते हैं?

सभी सरकारें, संस्थायें और यहाँ तक कि हमारे माता-पिता हमारे कार्यों और व्यवहार पर निगरानी करते हैं, जिससे वे हमें भविष्य में सावधानीपूर्वक कार्य करने की प्रेरणा देकर या दण्डित करके हमारी बुद्धियों में चेतनता उत्पन्न कर सकें। अनुभूति प्राप्त सन्त और ईश्वरानुरागी लोग इसी महान् चेतनता का विस्तार लोगों में करते हैं।

ऋग्वेद मन्त्र 1.25.12

स नो विश्वाहा सुक्रतुरादित्यः सुपथा करत् ।
प्र ण आयूषि तारिषत् ॥ 12 ॥

सः – वह

नः – हमें

विश्वाहा – सदैव

सुक्रतुः – श्रेष्ठ कार्यों को करने वाला

आदित्यः – अविनाशी

सुपथा – श्रेष्ठ मार्ग

करत् – प्रेरित करता है

प्र (तारिषत् से पूर्व लगाकर) –

नः – हमें

आयूषि – आयु, जीवन

तारिषत् (प्र तारिषत्) – लम्बा और सार्थक

व्याख्या :-

हमें लम्बा और सार्थक जीवन किस प्रकार प्राप्त हो सकता है?

वह अविनाशी और सदा रहने वाला परमात्मा सदैव श्रेष्ठ कार्यों को करता है और हमें भी लम्बे और सार्थक जीवन की प्राप्ति के लिए श्रेष्ठ मार्ग की ओर अग्रसर करता है, जैसे सूर्य और वायु अविनाशी हैं, प्रकाशित हैं और समस्त जीवों को जीवन देते हैं, इस जीवन का सदुपयोग करने के लिए समय को दिन और रात्रि में विभाजित करते हैं, उसी प्रकार हमें भी इस दिव्य लक्षण का अनुसरण करना चाहिए और अपने ज्ञान प्रकाश

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

के लिए केवल श्रेष्ठ कार्य ही करने चाहिए तथा दूसरों को भी ऐसा ही मार्गदर्शन देना चाहिए। हमें अपनी इन्द्रियों पर नियन्त्रण रखते हुए लम्बा और सार्थक जीवन केवल इसी मार्ग पर मिल सकता है।

जीवन में सार्थकता

एक सफल जीवन की प्राप्ति कैसे करें?

जीवन में सफलता प्राप्त करने के लिए तथा लगातार लम्बे समय तक दिव्य रूप से उसका आनन्द प्राप्त करने के लिए पूर्ण श्रेष्ठ मार्ग ही एकमात्र मार्ग है। एक बार यदि जीवन की गाड़ी इस श्रेष्ठ मार्ग से उत्तर जाती है तो दुर्घटनायें होती हैं और भविष्य भी नष्ट हो जाता है।

ऋग्वेद मन्त्र 1.25.13

बिभ्रद् द्रापि हिरण्ययं वरुणो वस्त निर्णिजम् ।
परि स्पशो नि षेदिरे ॥ 13 ॥

बिभ्रत् – धारण करते हुए

द्रापिम् – चमकदार अस्त्र, दिव्य ज्ञान, प्रकाश (सूर्य का), गति (वायु की), विद्वत्ता,

हिरण्ययम् – स्वर्ण अग्नि

वरुणः – सबका नियामक

वस्त (परि वस्त) – ढांपना, सबको व्याप्त करने वाला

निर्णिजम् – शुद्ध हृदय

परि (वस्त से पूर्व लगाया गया)

स्पशः – स्थूल और सूक्ष्म सबको स्पर्श करता

नि षेदिरे – स्थापित।

व्याख्या :-

दिव्य स्वर्ण अग्नि क्या है?

सबका नियामक परमात्मा ज्ञान रूपी चमकदार अस्त्र को धारण करता है, जो स्वर्ण अग्नि की तरह है। यह सबको स्पर्श करता है और सबको व्याप्त करता है। यह शुद्ध हृदयों में स्थापित होकर उनकी अनुभूति में रहता है।

जीवन में सार्थकता

इस अग्नि को हम अपने जीवन में किस प्रकार स्थापित कर सकते हैं?

यह स्वर्ण अग्नि सूर्य में प्रकाश की तरह विद्यमान है, वायु में यह गति के रूप में है, महान् विद्वानों में यह दिव्य ज्ञान तथा तपस्या करने की शक्ति के रूप में पायी जाती है।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

इसलिए परमात्मा, सूर्य और वायु की तरह प्रत्येक व्यक्ति अपने व्यक्तिगत हितों को त्याग कर दूसरों के कल्याण के रूप में इस अग्नि को अपने जीवन में स्थापित कर सकता है।

ऋग्वेद मन्त्र 1.25.14

न यं दिष्पन्ति दिष्पवो न द्रुह्वाणो जनानाम् ।
न देवमभिमातयः ॥ 14 ॥

न – नहीं
यम् – जो
दिष्पन्ति – विरोध
दिष्पवः – शत्रु
न – नहीं
द्रुह्वानो – द्रोह करने वाले
जनानाम् – मनुष्यों के
न – नहीं
देवम् – दिव्य, दाता
अभिमातयः – अभिमानी, अधर्मी ।

व्याख्या :-

क्या परमात्मा पूरी तरह से अपराजेय है?
जिसे कोई भी शत्रु पराजित नहीं कर सकते, मनुष्यता के शत्रु भी द्रोह नहीं कर सकते, अभिमानी और अधर्मी भी उसे हरा नहीं सकते क्योंकि वह सर्वोच्च, दिव्य दाता और देवता है।

जीवन में सार्थकता

क्या हम भी अपराजेय बन सकते हैं?
यदि हम उस सर्वोच्च शक्ति को जान लें, उसकी अनुभूति प्राप्त कर लें और उसका अनुसरण करें तो निश्चित रूप से हमें भी कोई शत्रु, मनुष्यता के द्रोही, अभिमानी और अधर्मी लोग पराजित नहीं कर पायेंगे। समाज में दाता बनो, सदैव त्याग के लिए तैयार रहो, कोई भी बुराई आपके सामने द्रोह नहीं कर पायेगी।

ऋग्वेद मन्त्र 1.25.15

उत यो मानुषेष्वा यशश्चक्रे असाम्या ।
अस्माकमुदरेष्वा ॥ 15 ॥

उत – और

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

यः — जो

मानुषेषु — मानवों में

यशः — नाम, सम्मान और प्रसिद्धि पैदा करने वाले कार्य

आचक्रे — ढांप लेना और स्थापित होना

असामि — पूर्ण रूप से

अस्माकम् — हम सबका

उदरेषु — अंदर, भीतर।

व्याख्या :-

हमारी गतिविधियों प्रसिद्धि और सम्मान को कौन निर्धारित करता है?

वह पूरी तरह से उन गतिविधियों में व्याप्त और स्थापित होता है, जिनसे समस्त मनुष्यों को प्रसिद्धि और सम्मान प्राप्त होता है।

विगत मन्त्र में यह स्पष्ट किया गया कि उसके प्रति द्रोह नहीं हो सकता और बुरी ताकतें उसे पराजित नहीं कर सकतीं। अब यह वर्तमान मन्त्र हमें आश्वस्त करता है कि हमारी गतिविधियां, प्रसिद्धि और सम्मान भी उसी के द्वारा ही निर्धारित होता है। इसका अभिप्राय यह है कि वह सर्वोच्च शक्ति जो हमारे भीतर विद्यमान है, वह बाहर भी विद्यमान है।

जीवन में सार्थकता

अपने अन्दर और बाहर परमात्मा की अनुभूति किस प्रकार करें?

जिस प्रकार परमात्मा का अनुसरण करने से हम बुराईयों के प्रभाव से मुक्त हो जाते हैं, उसी प्रकार अपने समस्त शुभ कार्यों को भी हमें परमात्मा के प्रति समर्पित कर देना चाहिए। हमें यह विश्वास रखना चाहिए कि उसी ने हमारे सभी कार्य निर्धारित किये हैं। इस प्रकार ध्यान साधना के माध्यम से आप परमात्मा को अपने अंदर ही महसूस करेंगे और उन सब कार्यों तथा उनके परिणाम को परमात्मा के प्रति समर्पित करत हुए उसे बाहर भी महसूस करेंगे।

ऋग्वेद मन्त्र 1.25.16

परा मे यन्ति धीतयो गावो न गव्यूतीरनु ।

इच्छन्तीरुचक्षसम् ॥ 16 ॥

परा (यन्ति से पूर्व लगाकर)

मे — मेरा

यन्ति (परा यन्ति) — अच्छे प्रकार प्राप्त

धीतयः — कार्यों और विचारों की वृत्तियां

गावः — गायें

न — जैसे कि

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

गव्यूतीः — चारागाह
अनु — अनुसरण
इच्छन्तीः — इच्छा करती
उरुचक्षसम् — सर्वज्ञाता।

व्याख्या :-

हमारे विचारों और कार्यों की वृत्तियाँ कहाँ जाती हैं?

जिस प्रकार गाय अपनी वृत्ति के अनुसार चारागाह की तरफ जाती हैं, उसी प्रकार हमारे विचारों और कार्यों की वृत्तियाँ भी अपनी प्रकृति के अनुसार उस सर्वज्ञाता दिव्य सर्वोच्च शक्ति के द्वारा प्राप्त होती हैं, जो हमारे भीतर ही है। यह मन्त्र कर्म सिद्धान्त का समर्थन करता है कि हमारे विचारों और कार्यों की वृत्तियाँ परमात्मा के पास जाती हैं और फल के रूप में हमारे पास आती हैं।

जीवन में सार्थकता

कर्म का सिद्धान्त क्या है?

आत्मा की अनन्त यात्रा क्या है?

दिन में गायें चारागाह की तरफ जाती हैं और सायंकाल अपने आश्रय स्थल पर वापिस आ जाती हैं। इसी प्रकार हमारे वर्तमान जीवन के कर्म अर्थात् दिन, परमात्मा के पास जाते हैं और भविष्य में वापिस आते हैं अर्थात् रात्रि। हम सबको अपने विचार और कार्य वापिस प्राप्त होंगे। इसलिए इसी क्षण उन्हें सुधारना प्रारम्भ कर दो।

शरीर और मन की सभी इच्छाओं का अन्त अवश्य होता है, परन्तु आत्मा की इच्छा अर्थात् आध्यात्मिक यात्रा का कभी अन्त नहीं होता। इसलिए आत्मा की अनन्त यात्रा पर परमात्मा की संगति में अपनी दिव्य यात्रा आज ही प्रारम्भ कर देनी चाहिए।

ऋग्वेद मन्त्र 1.25.17

सं नु वोचावहै पुनर्यतो मे मध्वाभृतम् ।
होतेव क्षदसे प्रियम् ॥ 17 ॥

सम् — आप और मैं

नु — परस्पर

वोचावहै — वार्ता करें

पुनः — पुनः

यतः — जिससे कि

मे — मुझमें

मधु — मधुरता

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

अभृतम् – भर जाये और धारण हो
होता इव – एक महान् दाता होने के नाते
क्षदसे – संरक्षक
प्रियम् – प्रिय।

व्याख्या :-

हमें परमात्मा के साथ नियमित वार्ता या उसकी पूजा क्यों करनी चाहिए?
परमात्मा के द्वारा सृष्टि निर्माण के तीन उद्देश्य क्या हैं?
आप और मैं दोनों बार—बार वार्ता करें, जिससे आपकी मधुरता मेरे भीतर भर जाये और मेरे द्वारा धारण हो, क्योंकि आप एक महान् दाता हो, संरक्षक हो और प्रेम करने वाले हो। यह मन्त्र परमात्मा के द्वारा सृष्टि निर्माण के तीन उद्देश्य स्पष्ट करता है – प्रेम, कल्याण और त्याग :–
(क) होता इव – एक महान् दाता जैसे त्यागी व्यक्ति,
(ख) क्षदसे – एक संरक्षक जो माता—पिता के समान सबका कल्याण करता है,
(ग) प्रियम् – प्रेम करने वाला।

जीवन में सार्थकता

हमें अपने माता—पिता, अच्छे अध्यापकों और महान् मार्गदर्शकों के साथ नियमित वार्ता क्यों करनी चाहिए?
हमारे माता—पिता, अच्छे अध्यापक और महान् मार्गदर्शक हमेशा प्रेम करने वाले, संरक्षण करने वाले और त्याग करने वाले व्यक्तित्व होते हैं। ऐसे माता—पिता, अध्यापकों और मार्गदर्शकों की संगति से हमें अनेकों लाभ होंगे। इसलिए ऐसे महान् दाताओं के साथ हमें नियमित वार्ता करते रहना चाहिए और गहरे हृदय से उनका सम्मान करना चाहिए।

ऋग्वेद मन्त्र 1.25.18

दर्श नु विश्वदर्शतं दर्श रथमधि क्षमि
एता जुषत मे गिरः ॥ 18 ॥

दर्शम् – देखना, अनुभूति,
नु – निश्चित रूप से
विश्वदर्शतम् – सबके द्वारा अनुभूति के योग्य
दर्शम् – देखने या अनुभूति के लिए
रथम् – शरीर में, वाहन में
अधि क्षमि – स्थापित करके, एकाग्रता से, द्वन्द्वों से अप्रभावित
एता – यह
जुषत – स्वीकर

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

मे – मेरी

गिरः – परमात्मा की प्रशंसायें, वैदिक वाणियाँ, विचार और कार्य आदि।

व्याख्या :-

हम परमात्मा की अनुभूति कैसे प्राप्त कर सकते हैं?

परमात्मा की अनुभूति निश्चित रूप से हो सकती है क्योंकि वह सबके द्वारा अनुभूति के योग्य है। उसकी अनुभूति एकाग्रता और ध्यान के माध्यम से इस शरीर रथ में हो सकती है। इसके लिए द्वन्द्वों से अप्रभावित जीवन जीना होता है। एक बार यदि हमारी वैदिक सत्य वाणी, हमारे विचार और कार्य तथा उसके लिए हमारी प्रशंसायें उसके द्वारा स्वीकार हो जायें तो हमें उसकी अनुभूति हो सकती है। हमारा प्रत्येक विचार और कार्य हमारे अन्दर विराजमान परमात्मा के पास पहुँच जाता है।

यह मन्त्र परमात्मा की अनुभूति के लिए दो तत्व निर्धारित करता है :–

(क) उस पर मन को एकाग्र करते हुए ध्यान साधना,

(ख) अहंकार और सांसारिक इच्छाओं के बिना वैदिक जीवन जीना।

जीवन में सार्थकता

हम जीवन में सफलता कैसे प्राप्त कर सकते हैं?

किसी भी कार्य को करते हुए हमारी एकाग्रता का स्तर ही सफलता को निर्धारित करता है। हमारा जीवन हमारी जीवन पद्धति पर निर्भर करता है और सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि किसी कार्य को करते हुए हमारा उस कार्य के साथ जुड़ाव कितना था, परिणाम के साथ नहीं। कार्य के प्रति हमारा समर्पण परमात्मा द्वारा प्रदत्त एक कर्तव्य की तरह समझा जाये, तभी हमारा जीवन वैदिक विवेक से परिपूर्ण होगा। ऐसा जीवन परमात्मा के नाम पर अहंकाररहित त्याग को समर्पित होगा और सरलता के साथ हर प्रकार की सफलता के रूप में फलित होगा।

ऋग्वेद मन्त्र 1.25.19

इमं मे वरुण श्रुधी हवमद्या च मृळ्य।

त्वामवस्युरा चके ॥ 19 ॥

इमम् – यह

मे – मेरा

वरुण – सबका नियामक

श्रुधी – सुनें

हवम् – स्वीकार करने योग्य

अद्य – आज

च – और

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

मृल्य — महान् ज्ञान के द्वारा मुझे प्रकाशित करें

त्वाम — आपका

अवस्था — संरक्षण की इच्छा

आ चके — प्रशंसा और स्तुति ।

व्याख्या :-

परमात्मा हमारा संरक्षण कैसे करता है?

प्रार्थना — हे सबके नियामक! कृपया आज मेरी स्वीकार करने वाली प्रार्थना सुनो, “मैं आपके प्रकाश और संरक्षण की प्रार्थना करता हूँ। मैं इस प्रार्थना के साथ आपकी प्रशंसा और स्तुति करता हूँ।”

यह मन्त्र परमात्मा को की जाने वाली प्रार्थना एक अत्यन्त सार्थक और सारगर्भित प्रेरणा के रूप में प्रस्तुत करता है। जब हम परमात्मा से संरक्षण चाहते हैं तो वह सर्वप्रथम अपने ज्ञान और प्रेम से प्रकाशित करेगा। उस ज्ञान और प्रेम के साथ कोई भी व्यक्ति स्वयं को संरक्षित कर सकता है। दूसरी तरफ जब हम परमात्मा से प्रकाश मांगते हैं तो स्वतः ही हम संरक्षित हो जाते हैं। वह हमें सब कुछ देता है और अपने ज्ञान और प्रेम रूपी प्रकाश के माध्यम से संरक्षण भी देता है।

जीवन में सार्थकता

ज्ञान और प्रकाश की कड़ी का क्या महत्व है?

परमात्मा का ज्ञान और प्रेम ही दिव्य प्रकाश है, जो पूर्ण संरक्षण सुनिश्चित कर सकता है। यहाँ तक कि भौतिक सांसारिक जीवन में भी हमें बच्चों को शिक्षा देने के महत्व को कम नहीं मानना चाहिए। अतः प्रत्येक बुद्धिमान व्यक्ति का यह दायित्व है कि अपने बच्चों में ज्ञान का विस्तार करे। ज्ञान की यह कड़ी समाज के पूर्ण संरक्षण के लिए जारी रहनी चाहिए।

परमात्मा ने अनुभूति प्राप्त संतों में दिव्य प्रकाश का विस्तार किया, जिन्होंने वापिस सामान्य व्यक्तियों को प्रेरित किया।

माता—पिता तथा विद्वानों को भी पूरे समाज के संरक्षण के लिए अपने बच्चों को शिक्षा अवश्य देनी चाहिए।

ऋग्वेद मन्त्र 1.25.20

त्वं विश्वस्य मेधिर दिवश्च ग्मश्च राजसि ।

स यामनि प्रति श्रुधि ॥ 20 ॥

त्वम् — आप

विश्वस्य — सबके लिए

मेधिर — पूर्ण ज्ञान और विद्वत्ता के दाता

दिवः च — और प्रकाशवान् वस्तुओं जैसे सूर्य आदि के

ग्मः च — और अप्रकाशवान् वस्तुओं जैसे धरती आदि के

राजसि — कल्याण के द्वारा शासन

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

सः — वह

यामनि — सदैव और सब जगह

प्रति श्रुधि — समर्थन देते हुए सुनना।

व्याख्या :-

परमात्मा सब स्थानों पर और सदैव कैसे शासन करता है?

परमात्मा मेधिर है अर्थात् सबके लिए पूर्ण ज्ञान और दिव्यता का दाता है। वह राजसी है, अर्थात् अपने कल्याणकारी कार्यों के द्वारा वह प्रकाशवान् वस्तुओं जैसे सूर्य आदि पर सर्वत्र शासन करता है तो दूसरी तरफ अप्रकाशवान् वस्तुओं जैसे धरती आदि पर भी शासन करता है। यदि हम उसकी बुद्धि को प्राप्त करना चाहें तो वह हमारी प्रार्थना को सकारात्मक रूप से सुनता है।

इस मन्त्र से यह सिद्धान्त रथापित होता है कि परमात्मा सब स्थानों पर सबका शासक है। उसका शासन सबके कल्याण के लिए है, जिसके लिए वह अपना ज्ञान धारण करने के लिए हमें महान् बुद्धि देता है। वह सभी प्रार्थनाओं को सकारात्मक रूप से सुनता है। यह सदा सत्य रहने वाला नियम सब स्थानों पर और सब कालों में लागू होता है।

जीवन में सार्थकता

मस्तिष्क रूपी दिव्य भेट का प्रयोग कैसे करें?

हम सब दिव्य नियमों के अधीन हैं। हमें उसका ज्ञान सदा और सब स्थानों पर प्राप्त हो सकता है। वह सबको ज्ञान देने की प्रक्रिया से ही सब पर शासन करता है। किन्तु अल्प संख्या में कुछ महान् व्यक्ति ही ध्यान साधना के द्वारा उससे जुड़े रहते हैं। जब कि अधिकतर लोग परमात्मा के द्वारा प्रदत्त बुद्धि का प्रयोग करके भौतिक साधनों को जुटाने में ही खोये रहते हैं, जिससे वे भौतिक और अस्थायी लाभ प्राप्त कर सकें। इसमें कोई संदेह नहीं कि भगवान् के द्वारा मनुष्यों को एक दिव्य भेट के रूप में बुद्धि प्राप्त हुई है। इसलिए इस दिव्य बुद्धि का प्रयोग केवल दिव्य ज्ञान के लिए ही किया जाना चाहिए और उस दिव्य ज्ञान का प्रयोग केवल दूसरों के कल्याण के लिए ही होना चाहिए। तभी हम दिव्य संरक्षण का स्थायी आनन्द प्राप्त कर पायेंगे।

जिस प्रकार समूची सृष्टि के निर्जीव शरीर दो श्रेणियों में विभक्त है :—

- (क) प्रकाशवान् शरीर जैसे सूर्य आदि जो प्रकाश देते हैं,
- (ख) अप्रकाशवान् शरीर जैसे धरती आदि जो प्रकाश नहीं देते।

उसी प्रकार जीव शरीर भी दो प्रकार के हैं :—

- (क) प्रकाशित महान् संत जो अन्य लोगों को भी ज्ञान प्रकाश देते हैं और
- (ख) अप्रकाशित लोग जो केवल भौतिक सुविधाओं का आनन्द लेते हुए पशुओं की तरह जीवन जीते हैं।

ऋग्वेद मन्त्र 1.25.21

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

उदुत्तमं मुमुग्धि नो वि पाशं मध्यमं चृत।
अवाधमानि जीवसे ॥ 21 ॥

उत (मुमुग्धि से पूर्व लगाकर)
उत्तमम् – अति उत्तम
मुमुग्धि (उन मुमुग्धि) – छुड़वाना
नः – हमारी
वि (चृत से पूर्व लगाकर)
पाशम् – बंधन
मध्यमम् – मध्यम
चृत (वि चृत) – पृथक
अव – दूर करना
अधमानि – निकृष्ट
जीवसे – लम्बे और सुन्दर जीवन के लिए।

व्याख्या :-

बंधनों से मुक्ति में कौन हमारी सहायता कर सकता है?

पूर्ण ज्ञान का देने वाला सर्वोच्च दाता परमात्मा तीनों बंधनों से मुक्ति में हमारी सहायता कर सकता है – उत्तम बंधन को खोल कर, मध्यम बंधन को हमसे पृथक करके और निकृष्ट बंधन को हमसे दूर करके। बंधनों से यह मुक्ति परमात्मा की अनुभूति के मार्ग पर अन्तिम सफलता होगी। एक बार जब हम उस महान् ज्ञान के प्रति कड़ी मेहनत प्रारम्भ कर देते हैं तो वह निश्चित रूप से प्रकाश प्रक्रिया के माध्यम से हमें मुक्त करते हैं।

जीवन में सार्थकता

अन्ततः सफलता की ओर कैसे अग्रसर हों?

हम भौतिक सफलता के मार्ग पर भी तभी अग्रसर हो सकते हैं, जब हम बंधनों, सीमाओं और कमजोरियों से मुक्त हो जायें और किसी एक या दूसरी सफलता पर सन्तुष्ट न हों। इस जीवन में अच्छे कार्यों को सदैव करते रहना चाहिए, जिससे धीरे-धीरे इस जीवन को अति सुन्दर बनाया जा सके। किसी एक सफलता पर प्रशंसाओं आदि का आनन्द लेते हुए खड़े नहीं हो जाना चाहिए। नकारात्मक टिप्पणियों पर ध्यान नहीं देना चाहिए, अपितु उनका प्रयोग सुधार के लिए किया जाना चाहिए। हमेशा आगे सफलता को प्राप्त करने के लिए कदम बढ़ाने पर ही विचार करना चाहिए।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

ऋग्वेद मण्डल-1 सूक्त 26

ऋग्वेद मन्त्र 1.26.1

वसिष्ठा हि मियेध्य वस्त्रण्यूर्जा पते ।
सेमं नो अध्वरं यज ॥ 1 ॥

वसिष्ठा — धारण करते हुए

हि — केवल

मियेध्य — अग्नि, ऊर्जा द्वारा पदार्थों को फैलाने वाले

वस्त्राणि — वस्त्र (शरीर रूपी)

ऊर्जाम् पते — ऊर्जा का रक्षक

सः — वह

इमम् — वे

नः — हमारे

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



अध्वरम् – दोष रहित कल्याणकारी कार्य
यज – संगति

व्याख्या :-

शरीर को वस्त्र क्यों कहा गया है?
शरीर के क्या कर्तव्य निर्धारित किये गये हैं?

इस शरीर रूपी वस्त्र को धारण करते हुए हमें परमात्मा से यह निर्देश प्राप्त हुआ है कि हम अपनी ऊर्जा के माध्यम से कल्याणकारी कार्यों का विस्तार करें, जिस प्रकार यज्ञ की अग्नि में आहृत समस्त तत्वों को वह फैला देती है। हमें अपनी ऊर्जाओं की रक्षा करनी चाहिए, केवल तभी हम अपने कल्याणकारी कार्यों का विस्तार कर पायेंगे। हम उस सर्वोच्च दिव्य ऊर्जा, परमात्मा, से यह प्रार्थना करते हैं और हम आश्वस्त हैं कि परमात्मा अवश्य ही हमारे दोष रहित कल्याणकारी कार्यों के साथ सम्बद्ध रहेंगे।

सभी कल्याणकारी कार्य तथा परमात्मा के आशीर्वाद सहित संगति इस मानव शरीर में ही सम्भव है, जो हमें धारण करने के लिए मिला है परन्तु यह स्थायी नहीं है, यह वस्त्रों की तरह बदलता रहता है।

जीवन में सार्थकता

शरीर के दायित्व कैसे निभाये जा सकते हैं?

शरीर एक वस्त्र की तरह है। इसे रोगी अवस्था में नहीं रखना चाहिए। केवल एक स्वरथ शरीर ही कल्याणकारी कार्यों के प्रभाव का विस्तार करने जैसे दायित्व को निभा सकता है। शरीर की इस ऊर्जा का संरक्षण सात्त्विक भोजन और कल्याणकारी विचारों से करना चाहिए।

ऋग्वेद मन्त्र 1.26.2

नि नो होता वरेण्यः सदा यविष्ठ मन्मभिः ।
अग्ने दिवित्मता वचः ॥ २ ॥

नि – हृदय में स्थापित

नः – हमारे

होता – दाता, परमात्मा, प्रकाशवान् व्यक्ति

वरेण्यः – वरण, स्वीकार करने योग्य

सदा – सदैव

यविष्ठ – सर्वोच्च शक्ति, परमात्मा, बुराईयों को दूर रखने वाला

मन्मभिः – सर्वोच्च ज्ञान, परमात्मा

अग्ने – अग्नि, ऊर्जा

दिवित्मता – दिव्य प्रकाश, परमात्मा, प्रकाशवान् व्यक्ति

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

वचः — वाणी

व्याख्या :-

परमात्मा तथा प्रकाशवान् व्यक्तियों की संगति के क्या लाभ हैं?

हमें अपने दाता, सर्वोच्च शक्ति रूप परमात्मा तथा प्रकाशवान् व्यक्तियों की वाणियों को पूरी तत्परता के साथ स्वीकार करके उनका वरण करना चाहिए क्योंकि केवल यही शक्तियाँ निम्न लक्षण प्रदान कर सकती हैं।

- (क) बुराईयों को दूर रखने की सर्वोच्च क्षमता।
- (ख) सर्वोच्च ज्ञान,
- (ग) परमात्मा तथा प्रकाशवान् महानुभावों की दिव्य बुद्धियां प्रदान करने वाली वाणी।

जीवन में सार्थकता

कौन वास्तविक दाता है?

ध्यान साधना के द्वारा परमात्मा की सर्वोच्च ऊर्जा को स्वीकार करने या महान् प्रकाशवान् व्यक्तियों की ऊर्जा को स्वीकार करने से ही हम अपनी बुराईयों को दूर रखने की क्षमता के साथ—साथ दिव्य बुद्धि और दिव्य ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं। अतः परमात्मा और प्रकाशवान् व्यक्तियों की संगति को धारण करने पर ही ध्यान देना चाहिए क्योंकि वे महान् ज्ञान और दर्शन के दाता हैं। प्रत्येक दाता को एक महान् साथी के रूप में स्वीकार किया जाना चाहिए। ऐसे दाता बुराईयों को दूर रखने में हमारे सहायक होते हैं।

ऋग्वेद मन्त्र 1.26.3

आ हि षा सूनवे पितापिर्यजत्यापये ।

सखा सख्ये वरेण्यः ॥ ३ ॥

आ (यज्ञति से पूर्व लगा कर)

हि – निश्चित रूप से

षा – उपकार के लिए संगति

सूनवे – पुत्र के लिए

पिता – पिता

आपि – महान् विद्वान् ।

यजति (आ यजति) – उत्तम प्रयास करना

आपये – शिष्य के लिए

सखा – मित्र

सख्ये – मित्र के लिए

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

वरेण्यः — वरण ।

व्याख्या :-

परमात्मा किस प्रकार सभी जीवों के साथ सम्बन्धित रहता है?

यदि हम त्याग के द्वारा कल्याणकारी कार्य करना चाहते हैं तो हमें ऐसे लोगों के साथ संगति करनी होगी, जिनका कल्याण करने के लिए हम उन्हें स्वीकार करें और उत्तम प्रयास करें, जिस प्रकार एक पिता पुत्र के लिए करता है, एक महान् विद्वान् अपने शिष्य के लिए करता है और एक मित्र अपने मित्र के लिए करता है। वास्तव में परमात्मा प्रत्येक जीव के साथ एक पिता की तरह, एक अध्यापक की तरह तथा एक मित्र की तरह सम्बन्धित रहते हैं।

जीवन में सार्थकता

श्रेष्ठ लोग अन्य लोगों के साथ क्यों जुड़ते हैं?

श्रेष्ठ लोगों के पास वैदिक विवेक होता है, जिसके कारण वे अन्य लोगों के साथ उन्हीं के कल्याण के लिए एक पिता की तरह, एक अध्यापक की तरह और एक मित्र की तरह जुड़े रहते हैं।

ऋग्वेद मन्त्र 1.26.4

आ नो बर्ही रिशादसो वरुणो मित्रे अर्यमा ।

सीदन्तु मनुषो यथा ॥ 4 ॥

आ (सीदन्तु से पूर्व लगाकर)

नः — हमारे

बर्हीः — हृदय स्थान

रिशादसः — बुराईयों को समाप्त करना

वरुणः — सबका नियामक

मित्रः — मित्र

अर्यमा — न्यायिक (न्याय करने वाला)

सीदन्तु (आ सीदन्तु) — स्थापित

मनुषः — सभ्य व्यक्ति

यथा — जैसे ।

व्याख्या :-

परमात्मा हमें किस प्रकार सभ्य व्यक्तित्व बना सकते हैं?

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

परमात्मा एक नियामक की तरह, एक मित्र की तरह और एक न्यायिक शक्ति की तरह समस्त सभ्य लोगों के हृदय स्थान में स्थापित होकर बुराईयों का नाश करते हैं। अतः हमें भी उन्हें अपने हृदय स्थान में स्थापित कर लेना चाहिए। जब परमात्मा को एक मित्र की तरह, एक दार्शनिक तथा मार्गदर्शक की तरह हम पूर्ण समर्पण भाव से अपने हृदय में स्थापित कर लेते हैं तो वह हमारी समस्त बुराईयों का नाश कर देते हैं और हमें एक सभ्य व्यवितत्व बना देते हैं।

जीवन में सार्थकता

सभ्य व्यक्तियों का अनुसरण कैसे करें?

हमें सभ्य लोगों का अनुसरण करने के लिए यह देखना चाहिए कि सभ्य लोग किस प्रकार अपने हृदय में परमात्मा को निश्चित रूप से स्थापित कर लेते हैं। उसी प्रकार हमें भी उनका अनुसरण करना चाहिए।

ऋग्वेद मन्त्र 1.26.5

पूर्वं होतरस्य नो मन्दस्व सख्यस्य च ।

इमा उ षु श्रुधी गिरः ॥ ५ ॥

पूर्व – पूर्व काल से सम्बन्धि

होतः – दाता

अस्य – यह

नः – हमारा

मन्दस्व – इच्छा, प्रसन्नता

सख्यस्य – मित्रता के लिए

च – और

इमाः – यह

उ – और

सु – अति उत्तम

श्रुधी – सुनो

गिरः – प्रशंसात्मक वाणियाँ ।

व्याख्या :-

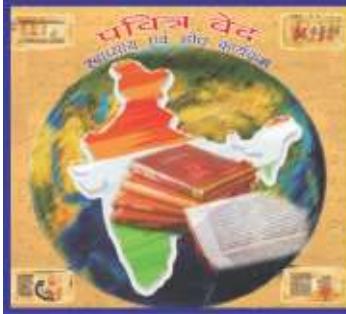
हम किसे अपना स्थायी मित्र समझें?

हमारी इच्छा है कि हम सर्वोच्च दाता के साथ मित्रता करें, जो पूर्व काल से सम्बन्धित है अर्थात् सृष्टि की रचना से भी पूर्व। जब हम परमात्मा को अपना मित्र मानते हैं तो हमें अत्यन्त प्रसन्नता होती है। उसकी प्रसन्नता में बोली गयी उत्तम वाणी को वह सुनता है। हमें यह देखकर उत्थान महसूस होता है कि परमात्मा हमारा स्थायी मित्र है। इसी प्रकार हमें पूर्वकालिक विद्वानों अर्थात् अपने से वृद्धजनों के साथ मित्रता की इच्छा करनी चाहिए और उस मित्रता को सुदृढ़ करने के लिए हमें उनकी प्रशंसा करनी चाहिए।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

जीवन में सार्थकता

सबका मित्र क्यों बनना चाहिए?

परमात्मा तथा उसके महान् विद्वानों का मित्र बनो। अपने माता-पिता तथा उच्चाधिकारियों का मित्र बनो, जिससे उनका ज्ञान, अनुभव और आशीर्वद प्राप्त हो सके। अपने आसपास सभी लोगों का मित्र बनो क्योंकि प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से प्रत्येक व्यक्ति किसी न किसी रूप में दाता अवश्य होता है। परमात्मा प्रत्येक जीव में विद्यमान हैं। अतः सबके मित्र की तरह व्यवहार करो और प्रत्येक को अपना मित्र समझो।

ऋग्वेद मन्त्र 1.26.6

यच्चिद्धि शश्वता तना देवंदेवं यजामहे ।
त्वे इद्युते हविः ॥ 6 ॥

यत् चित हि – यह निश्चित रूप से है (परमात्मा के साथ मित्रता)

शश्वता – सदा विद्यमान

तना – सर्वत्र विस्तृत

देवम् देवम् – प्रत्येक दिव्यता

यजामहे – हम सम्बद्ध हैं

त्वे इत् – आपमें

हुयते – प्रस्तुत, समर्पित करते हैं।

हविः – आहुति, त्याग।

व्याख्या :-

हमें परमात्मा के निकट मित्र की तरह क्यों बनना चाहिए?

हमें अपने त्याग परमात्मा को समर्पित क्यों करने चाहिए?

हम परमात्मा के साथ मित्रता की कामना करते हैं क्योंकि वही सर्वोच्च शक्ति है, जो सदैव विद्यमान है और सारी सृष्टि में विस्तृत है। मित्र की तरह महसूस करने के बाद हम उसकी सभी वस्तुओं और जीवों की दिव्यताओं के साथ जुड़ सकते हैं और अपनी आहुतियाँ और त्याग उन्हें समर्पित कर सकते हैं।

यह मन्त्र सिद्ध करता है कि सभी वस्तुयें और जीव परमात्मा के द्वारा उत्पन्न किये गये हैं, जो समय और स्थान में सर्वोच्च होने के कारण इन भिन्न-भिन्न रूपों में अभिव्यक्ति हुआ है। अतः हमें उस सर्वोच्च दिव्यता के लिए ही सब कुछ आहूत कर देना चाहिए। इस प्रकार एक मित्र की तरह परमात्मा से निकट सम्बन्ध बनने पर हमारा अस्तित्व भी सार्थक होगा।

जीवन में सार्थकता

परमात्मा किस प्रकार सबका दाता है?

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

परमात्मा किस प्रकार एक प्राकृतिक मित्र है?

परमात्मा किस प्रकार सभी त्याग कार्यों को कई गुना रूप में वापिस करता है?

हमें अपने प्रत्येक दाता के साथ एक निकट सम्बन्ध बनाकर रखना चाहिए क्योंकि हमारी समस्त सम्पदायें उन्हीं के कारण हैं। हमें अपने त्याग उस सर्वोच्च दाता को समर्पित कर देने चाहिए। सर्वोच्च तथा सबका दाता होने के कारण वह हमारे समस्त त्याग कई गुना रूप में हमें वापिस कर देता है। हमारा स्थाई साथी होने के कारण वह हमारा प्राकृतिक मित्र है।

हमें अपने प्रत्येक दाता के साथ एक निकट सम्बन्ध बनाकर रखना चाहिए क्योंकि हमारी समस्त सम्पदायें उन्हीं के कारण हैं। हम अपने वृद्धजनों, माता-पिता तथा उच्चाधिकारियों के लिए त्याग करते हैं और निश्चित रूप से हमें उनके उत्तम फल प्राप्त होते हैं। इस सिद्धान्त का अनुसरण जीवन की प्रत्येक अवस्था में करना चाहिए।

ऋग्वेद मन्त्र 1.26.7

प्रियो नो अस्तु विश्वपतिर्होता मन्द्रो वरेण्यः ।

प्रिया: स्वग्नयो वयम् ॥ 7 ॥

प्रिया: — प्रिय

नः — हमारे

अस्तु — हैं

विश्वपतिः — सबके रक्षक

होता: — दाता

मन्द्राः — प्रशंसनीय

वरेण्यः — स्वीकार

प्रिया: — प्रिय

स्वग्नः — स्व—आहुति करने वाले, दिव्य ऊर्जा से प्रकाशित

वयम् — हम ।

व्याख्या :-

परमात्मा तथा महान् लोग एक दूसरे के तथा सबके प्रिय क्यों होते हैं?

सबका रक्षक परमात्मा एक सर्वोच्च दाता तथा आनन्ददायक होने के कारण अत्यन्त प्रशंसनीय है। इसलिए वह हम सबका प्रिय है और हम उसे एक मित्र की तरह स्वीकार करते हैं। उस सर्वोच्च ऊर्जा का प्रिय बनने के लिए हमें भी स्व—आहुति के लिए तत्पर व्यक्ति बनना चाहिए।

यह मन्त्र हमें प्रेरित करता है कि जिस प्रकार परमात्मा अपने दिव्य गुणों के कारण हम सबका प्रिय है, हम भी केवल एक स्व—आहुति रूपी लक्षण के साथ उसके प्रिय बन सकते हैं। इसलिए स्व—आहुति के लिए तत्पर व्यक्ति तथा परमात्मा एक—दूसरे के प्रिय होते हैं और इसी लिए ये दोनों सबको प्रिय होते हैं।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

जीवन में सार्थकता

एक त्यागशील व्यक्ति सबका प्रिय क्यों होता है और जीवन में उन्नति क्यों करता है?

सामान्य जीवन में भी एक त्यागशील व्यक्ति सबका प्रिय होता है क्योंकि वह एक दाता की श्रेणी में आ जाता है। त्याग हमें दूसरों की दृष्टि में महान् बना देते हैं। त्याग कार्यों को हमारे भीतर की सर्वोच्च शक्ति सदैव पसन्द करती है। इस लिए हम स्वयं अपने लिए ही प्रिय हो जाते हैं। जब हम अपनी दृष्टि में अपने भीतर उन्नति करने लगते हैं तो वह अवस्था हमारे भौतिक तथा आध्यात्मिक चहुमुखी विकास में सहायक होती है।

ऋग्वेद मन्त्र 1.26.8

स्वग्नयो हिवार्य देवासो दधिरे च नः ।
स्वग्नयो मनामहे ॥ 8 ॥

स्वग्नयः – स्व—आहुति करने वाले, दिव्य ऊर्जा से प्रकाशित हि – निश्चित रूप से

वार्यम् – स्वीकार करने योग्य (ज्ञान, वस्तुयें)

देवासः – दिव्य शक्ति

दधिरे – धारण

च – और

नः – हमारे लिए

स्वग्नयः – स्व—आहुति करने वाले, दिव्य ऊर्जा से प्रकाशित

मनामहे – जानते हैं।

व्याख्या :-

दिव्य शक्तियों को कौन जानता एवं धारण करता है तथा किसके लिए?

केवल स्व—आहुति के लिए तत्पर ही महान् व्यक्ति ही निश्चित रूप से उस ज्ञान और वस्तुओं को धारण करते हैं, जो स्वीकार किये जाने तथा धारण करने योग्य हैं। वे अन्य सब लोगों के मार्गदर्शन के लिए एक दिव्य व्यक्तित्व बन जाते हैं। केवल ऐसे लोग ही सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा को जानते हैं और हमें भी उसकी प्राप्ति के लिए प्रेरित करते हैं।

स्व—आहुति के लिए तत्पर लोगों में दिव्य अग्नि अथवा ऊर्जा प्रकाशित होती है। उनकी उपस्थिति, उनकी वाणी तथा उनका स्पर्श अन्य लोगों को भी सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा को जानने, प्राप्त करने और धारण करने के दिव्य पथ पर चलने के लिए प्रेरित करते हैं।

जीवन में सार्थकता

कौन सबका मित्र बनता है?

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

स्व-आहुति के लिए तत्पर व्यक्ति दिव्य ऊर्जा से भरे होने के कारण केवल आध्यात्मिक पथ पर ही नहीं अपितु जीवन के सभी क्षेत्रों में अग्नि की तरह प्रकाशित होते हैं। स्व-आहुति के लिए तत्पर जीवन में अपने स्वयं के लिए कुछ नहीं होता, सब कुछ दूसरों के कल्याण और प्रेरणाओं के लिए होता है। एक बार जब हम स्व-आहुति की आदत को समझकर क्रियात्मक रूप में अपना लेते हैं तो स्वतः ही हम सबके मित्र बन जायेंगे।

ऋग्वेद मन्त्र 1.26.9

अथा न उभयेषाममृतं मर्त्यानाम् ।

मिथः सन्तु प्रशस्तयः ॥ ९ ॥

अथ — अतः

न — हम

उभयेषाम् — दोनों प्रकार के

मर्मृत — न मरने वाले

मर्त्यानाम् — मरने वाले

मिथः — परस्पर एक दूसरे के लिए

सन्तु — हों

प्रशस्तयः — प्रशंसनीय

व्याख्या :-

आत्म—सन्तुष्ट जीवन किस प्रकार जिया जा सकता है?

जीवन में त्याग रूपी लक्षण को अपनाने के बाद यह मन्त्र हमें प्रेरित करता है कि हम हर प्रकार के लोगों और परिस्थितियों, मरने वाले या न मरने वाले, सबको प्रशंसनीय समझते रहें। सृष्टि के किसी भी व्यक्ति या वस्तु के विरुद्ध कोई घृणा नहीं, शत्रुता का भाव नहीं और न ही कोई शिकायत। न मरने वाले और मरने वाले लक्षण अनेकों जोड़ों का प्रतिनिधित्व करते हैं जैसे परमात्मा तथा सृष्टि, आत्मा तथा शरीर, महान् विद्वान् तथा सामान्य लोग, जीव और निर्जीव आदि। किसी का किसी भी प्रकार से भी तिरस्कार नहीं होना चाहिए। ऐसा जीवन निश्चित रूप से एक आत्म—सन्तुष्ट जीवन होगा अर्थात् बिना शिकायत का जीवन।

जीवन में सार्थकता

प्रत्येक व्यक्ति और वस्तु की प्रशंसा किस प्रकार करें?

सबकी प्रशंसा करके ही हमें शान्ति प्राप्त हो सकती है, आध्यात्मिक प्रगति प्राप्त हो सकती है और यहां तक कि निर्बाधित भौतिक प्रगति का वातावरण प्राप्त हो सकता है। यदि किसी में सुधार करना हो तो उस सुधार प्रक्रिया को सरल बनाने के लिए पहले उसकी अच्छाईयों की प्रशंसा करनी चाहिए। इस सृष्टि में कुछ भी पूरी तरह से बुरा या पूरी तरह से अच्छा नहीं है। केवल अच्छाईयों पर दृष्टि रखो और प्रत्येक व्यक्ति तथा

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

प्रत्येक अवस्था की प्रशंसा करते रहो। सर्वत्र सफलता प्राप्त करने के लिए यह एक महान् लक्षण बन सकता है।

ऋग्वेद मन्त्र 1.26.10

विश्वेभिरग्रे अग्निभिरिमं यज्ञमिदं वचः।
चनो धाः सहसो यहो ॥ 10 ॥

विश्वेभि: — सबका

अग्ने — सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा

अग्निभि: — अग्नियाँ

इमम् — यह

यज्ञम् — त्याग

इदम् — यह

वचः — वाणियाँ, ज्ञान के शब्द

चनः — शुद्ध खाने पीने की वस्तुयें

धाः — धारण, स्वीकार

सहसः — शक्ति

यहो — उत्पन्न करने वाले।

व्याख्या :-

हमारी ऊर्जा, त्याग और शुद्ध भोजन को कौन धारण करता है?

सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा, के पास सभी अग्नियाँ अर्थात् ऊर्जायें उत्पन्न करने के लिए सम्पूर्ण शक्ति है। अतः वह हमारी ऊर्जाओं और त्याग कार्यों को धारण करता है, जो स्वतः ही अपने बारे में बोलते हैं। ऊर्जायें और त्याग ज्ञान के शब्द होते हैं। वही परमात्मा हमारे शुद्ध खान—पान को भी धारण करता है। इन सबका उद्देश्य हमारे कल्याण में ही निहित होता है।

यह मन्त्र एक सिद्धान्त की स्थापना करता है कि निम्न लक्षण सर्वोच्च ऊर्जा परमात्मा के द्वारा हमारे शरीर के भीतर तथा सृष्टि में धारण किये जाते हैं और हमें इनका समुचित फल प्राप्त होता है :—

(क) हमारी ऊर्जायें, हमारा उत्साह, हमारे महान् विचार किन्तु ऊर्जाहीनता या रोग नहीं,

(ख) हमारे वास्तविक त्याग कार्य जो स्वतः अपने बारे में बोलते हैं, परन्तु त्याग के नाम पर दिखावा जैसे प्रसिद्धि और प्रचार पाने के लिए दान नहीं होते,

(ग) हमारा शुद्ध और पवित्र भोजन जो स्वास्थ्यवर्द्धक होता है, परन्तु रोगजनक भोजन नहीं।

जीवन में सार्थकता

कौन से तत्त्व सकारात्मकता उत्पन्न करते हैं?

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

ऊर्जायें, त्याग तथा पवित्र भोजन हमारे जीवन में शक्ति देने वाले तत्व हैं। यह तीन लक्षण हमें भौतिक प्रगति में भी सहायता करते हैं। हमें किसी भी भटकाव वाले लालच से दूर रहते हुए इन तीन लक्षणों को बनाकर रखना चाहिए। यह जीवन के सकारात्मक लक्षण हैं। सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा, स्वतः ही इन सकारात्मकताओं की प्रतिक्रिया के रूप में सकारात्मकता ही प्रदान करते हैं।

ऋग्वेद मण्डल-1 सूक्त 27

ऋग्वेद मन्त्र 1.27.1

अश्वं न त्वा वारवन्तं वन्दध्या अग्निं नमोभि ।
सप्राजन्त्मध्वराणाम् ॥ 1 ॥

अश्वम् – घोड़े

न – जैसे

त्वा – आपके

वारवन्तम् – लहराते बालों के साथ

वन्दध्या – हम वन्दना, पूजा करते हैं

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

अग्निम् – सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा, महान् उत्तम विद्वान्

नमोभिः – नम्रतापूर्वक नमन

सम्राजन्तम् – प्रकाशवान् साम्राज्य

अधराणाम् – दोषरहित, हिंसारहित त्याग

व्याख्या :-

परमात्मा तथा महान् विद्वानों की तुलना उड़ते हुए बालों वाले अश्वों के साथ किस प्रकार की गयी है?

हम परमात्मा तथा उन महान् विद्वानों की पूजा तथा उन्हें नमन करते हैं क्योंकि वे ऐसे प्रकाशवान् राजा हैं जो पूर्णतया दोषरहित और हिंसारहित त्याग कार्यों को सम्पन्न करते हैं और हमारी इस प्रकार सहायता करते हैं, जैसे कोई अश्व अपने उड़ते हुए बालों से मक्खियों और मच्छरों को दूर करता है। परमात्मा तथा महान् विद्वान् भी बुराईयों और दुराचारी प्रवृत्तियों को दूर करने में हमारा मार्गदर्शन और सहायता करते हैं।

जीवन में सार्थकता

बुराईयों और दुराचारी आदतों को जीवन से दूर कैसे रखें?

हर प्रकार के बुरे विचारों को अपने जीवन से दूर रखने के लिए हमें अपने मन को उड़ाते हुए बालों वाली पूँछ की तरह प्रयोग करना चाहिए। सर्वोच्च शक्तिमान परमात्मा तथा महान् विद्वान् भी उड़ाते हुए बालों वाली पूँछ रखने वाले अश्व के समान हमारी सहायता करते हैं। हमें अपने मन का प्रशिक्षण इस प्रकार करना चाहिए, जिससे हम हर प्रकार की बुराईयों और दुराचरण वाले विचार को बिना किसी दूसरे विचार के अपने जीवन से दूर उड़ा सकें। पशुओं से हमें एक सामान्य शिक्षा ग्रहण करने की आवश्यकता है। अश्वों तथा गाय आदि पशुओं का यह दिव्य लक्षण होता है कि वे अपनी पूँछ से अपने आपको मक्खी और मच्छरों के प्रभावों से मुक्त रखते हैं। इसी प्रकार हमें अपने मन का प्रयोग उड़ाती हुई पूँछ के समान बुरे विचारों को दूर उड़ाने के लिए करना चाहिए, केवल तभी परमात्मा भी हमारे सहायक होंगे।

ऋग्वेद मन्त्र 1.27.2

स घा नः सूनुः शवसा पृथुप्रगामा सुशेवः ।

मीढ़वाँ अस्माकं बभूयात् ॥१ ॥

सः – वह (परमात्मा)

घा – निश्चित रूप से

नः – हमारी

सूनुः – परमात्मा की प्रेरणादायक शक्ति, अनुशासित पुत्र, अग्नि

शवसा – अपने पूरे बल के साथ

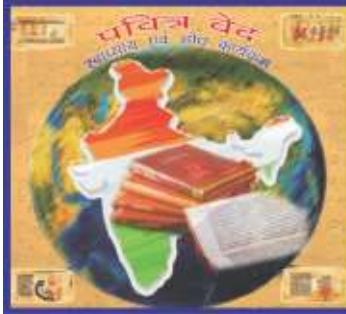
पृथु प्रगामा – विस्तृत गति देने वाले

सुशेवः – उत्तम कल्याण

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

मीढ़वान् – सुखों की वर्षा करने वाले

अस्माकम् – हम पर

बभूयात् – होवें

व्याख्या :-

अनुशासित पुत्र तथा अग्नि की तुलना परमात्मा से किस प्रकार की गयी है?

परमात्मा निश्चित रूप से हम पर सुखों की वर्षा करने वाली शक्ति है। निम्न लक्षणों से यह सिद्ध होता है :—

- (क) उसकी शक्ति,
- (ख) चारों तरफ प्रत्येक स्थान पर उसकी गति,
- (ग) उसके द्वारा उत्तम कल्याण,

वह एक महान् प्रेरणा शक्ति है।

एक पुत्र भी सुखों की वर्षा करने वाला सिद्ध हो सकता है, यदि वह निम्न लक्षण धारण कर ले :—

- (क) शारीरिक और मानसिक ऊर्जा रूपी शक्ति,
- (ख) गतिशीलता अर्थात् कर्मशीलता,
- (ग) कल्याण की भावनाओं से प्रेरित उत्तम मन।

वैज्ञानिक रूप से, अग्नि भी यही तीनों लक्षण धारण करती है और अनेक प्रकार की कल्याणकारी वस्तुओं को उपलब्ध करवा कर हमारे लिए सुखों की वर्षा करने वाली बन जाती है।

जीवन में सार्थकता

एक अनुशासित पुत्र किस प्रकार सब पर सुखों की वर्षा करने वाला बनता है?

जब समाज का एक पुत्र समाज के नौकर की तरह कार्य करता है और अपनी सारी शक्तियों और गतिविधियों का प्रयोग अन्य लोगों पर सुखों की वर्षा के लिए करता है तो उसे समाज का एक अनुशासित पुत्र मानते हुए उसका सम्मान परमात्मा की तरह ही होता है।

ऋग्वेद मन्त्र 1.27.3

स नो दूराच्चासाच्च नि मर्त्यादघायोः।

पाहि सदमिद्विश्वायुः॥ ३॥

सः – वे (परमात्मा)

नः – हमें

दूरात् – दूर से

च – और

आसात् – निकट से

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

च – और

नि – निश्चित रूप से

मत्यात् – मरने योग्य मनुष्य आदि

अघायोः – पाप की कामना करने वाले

पाहि – संरक्षण करो

सदः – सदैव

इत् – निश्चित रूप से

विश्वायुः – सम्पूर्ण आयु।

व्याख्या :-

सम्पूर्ण आयु, निकट से या दूर से, हर प्रकार के पापों से कौन हमारी रक्षा करता है?

वह, परमात्मा, एक अनुशासित पुत्र तथा अग्नि, निकट से या दूर से, सदैव उन सभी मरणधर्मा नरों एवं पशुओं आदि को सम्पूर्ण आयु संरक्षित करते हैं, जो पापों की इच्छा करते हैं।

जीवन में सार्थकता

सर्वोच्च ऊर्जा परमात्मा के साथ हमें लगातार सम्पर्क बना कर क्यों रखना चाहिए?

परमात्मा, एक अनुशासित पुत्र तथा अग्नि सम्पूर्ण आयु हमारे संरक्षक होते हैं। यदि हम इन संरक्षकों को अपनी अनुभूति में रखते हैं तो कोई भी पाप हमारा अनिष्ट नहीं कर सकता।

परमात्मा के संरक्षणपूर्ण हाथ सदैव हमारे साथ हैं चाहे हम उसकी अनुभूति के निकट हों या दूर हों, हम उसकी सहायता के लिए आवाहन करें या न करें, कोई चाहे उसकी प्रशंसा करें या निन्दा करें और यहाँ तक कि चाहे उसके अस्तित्व को भी न मानें।

द्वितीय, वह हमारे निकट तथा दूर के सभी शब्दों से हमारा संरक्षण करते हैं। यह मन्त्र आश्वस्त करता है कि सम्मोहन, जादू टोना या तन्त्र मन्त्र आदि से कोई भी नकारात्मक विचार हमें हानि नहीं पहुँचा सकते। इस प्रकार की हरकतें कोई हमारे निकट बैठकर करें या दूर बैठकर करें, ईश्वर हर हालत में हमारे कर्मानुसार रक्षण करते ही हैं।

एक अनुशासित पुत्र को भी परमात्मा की तरह ही कार्य करना चाहिए। अपने माता-पिता तथा समस्त परिजनों की निकट या दूर रहकर पूर्ण आयु उन सब लोगों से रक्षा करनी चाहिए, जो इनके विरुद्ध पाप करना चाहते हैं।

सर्वोच्च ऊर्जा होने के नाते परमात्मा प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में तथा प्रत्येक स्थान पर विद्यमान है। हमारे अन्दर विद्यमान उसी शक्ति का नाम अग्नि है, जो सम्पूर्ण आयु पापों से हमारी रक्षा करती है, यदि हम उस परमात्मा की संगति में जीवनयापन करें। इसलिए सर्वोच्च ऊर्जा परमात्मा के साथ हमें लगातार सम्पर्क बनाकर रखना चाहिए।

ऋग्वेद मन्त्र 1.27.4

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

इमू षु त्वमस्माकं सनि गायत्रं नव्यांसम् ।
अने देवेषु प्र वोचः ॥ 4 ॥

इम् – इस प्रकार

ऊ – भिन्न-2

षु – उत्तम

त्वम् – आप

अस्माकम् – हमारे लिए

सनिम् – प्रसन्नता देने वाले

गायत्रम् – गाने योग्य (गायत्री आदि वेद मन्त्र)

नव्यांसम् – नये ज्ञान के देने वाले

अने – सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा

देवेषु – पवित्र दिव्य आत्माओं में

प्र वोचः – प्रवचन कीजिए ।

व्याख्या :-

महान् ज्ञान अर्थात् भगवान से प्राप्त वेद ज्ञान कौन प्राप्त कर सकता है?

(क) परमात्मा हमें हर प्रकार के सुखों के देने वाले हैं,

(ख) परमात्मा हमें उत्तम तथा नया ज्ञान देने वाले हैं,

(ग) परमात्मा हमें ऐसा महान् ज्ञान देते हैं, जो गाने के लायक है, जिसे वेद कहा जाता है ।

सर्वोच्च ज्ञान के देने वाले परमात्मा अपना यह ज्ञान केवल शुद्ध और दिव्य आत्माओं को अनुभूति में प्रदान करते हैं ।

जीवन में सार्थकता

शुद्ध, दिव्य आत्माओं के क्या लक्षण हैं?

शुद्धता और दिव्यता हमारी मूल प्रकृति में हो, हम अहंकाररहित और इच्छारहित जीवन जीयें । दिव्य ज्ञान प्राप्त करने की यही शर्त है ।

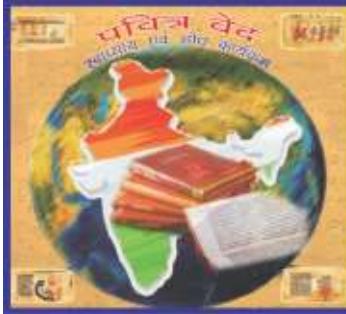
दिव्य ज्ञान प्राप्त करने के लिए हमें प्राकृतिक रूप से शुद्ध और दिव्य होना होगा अर्थात् अपने साथ जुड़ी वस्तुओं को धारण करने के अहंकार से मुक्त, यहाँ तक कि अपने शरीर धारण करने के अहंकार से मुक्त, हर प्रकार के मोह से मुक्त तथा हर प्रकार की इच्छाओं से मुक्त । परमात्मा ने ऐसे महान् आत्माओं को ही अपना महान् ज्ञान प्रदान किया और हम भी उसी ज्ञान को प्राप्त कर सकते हैं ।

ऋग्वेद मन्त्र 1.27.5

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

आ नो भज परमेष्ठा वाजेषु मध्यमेषु।
शिक्षा वस्त्रो अन्तमस्य ॥ ५ ॥

आ — भज से पूर्व लगाकर

नः — हमें

भज (आ भज) — उपलब्ध कराईये, योग्य बनाईये

परमेषु — उत्तम तथा सर्वोच्च

वाजेषु — सम्पत्ति

मध्यमेषु — मध्यम

शिक्ष — प्रदान कीजिए

वसवः — सम्पत्ति

अन्तमस्य — अन्तिम ।

व्याख्या :-

तीन प्रकार की सम्पत्तियाँ कौन सी हैं?

कर्मानुसार तथा हमारी योग्यता के अनुसार सर्वोच्च ज्ञानवान् परमात्मा हमें तीन प्रकार की सम्पत्तियाँ प्रदान करते हैं :-

(क) सबसे उत्तम — आध्यात्मिक और महान् ज्ञान,

(ख) मध्यम — शारीरिक स्वास्थ्य एवं

(ग) सबसे अन्तिम — धन और सम्पत्तियों के रूप में भौतिक सम्पदा ।

जीवन में सार्थकता

अपना निरीक्षण करो!

आपकी पहली पसन्द क्या है? (क) भौतिक सम्पदा, (ख) शारीरिक स्वास्थ्य या (ग) परमात्मा की अनुभूति के रूप में आध्यात्मिक सम्पदा (नोट — केवल एक को चुनिये ।)

हमारी इच्छायें तथा हमारी योग्यतायें, हमारी तीव्र अभिलाषा और हमारे प्रयास आदि वे मूल लक्षण हैं जो इसका निर्धारण करते हैं कि हमें किस प्रकार की सम्पत्ति प्राप्त होगी।

बहुतायत लोग भौतिक सम्पत्ति को प्राप्त करके पूरी तरह से सन्तुष्ट दिखायी देते हैं, जो वास्तव में तीन सम्पदाओं में अन्तिम स्तर की है। वे सीमा से बाहर रहकर उस सम्पत्ति को आनन्द लेते हैं। यहाँ तक कि वे समाज में परस्पर जीवन जीने के मूल लक्षण समानता आदि के प्रति भी सम्वेदनायें खो बैठते हैं। भौतिक सम्पदा का असीमित प्रयोग कई प्रकार के शारीरिक रोग पैदा कर देता है। इस प्रकार वे अन्तिम स्तर की सम्पत्ति के बल पर मध्यम स्तर की सम्पत्ति से भी हाथ धो बैठते हैं और उत्तम स्तर की सम्पत्ति को प्राप्त

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

करने के पथ पर तो कभी चल ही नहीं पाते। इससे भी अधिक वे यह विश्वास करने लगते हैं कि वे अपनी भौतिक सम्पत्ति के बल पर डाक्टरों और अस्पतालों के माध्यम से स्वास्थ्य खरीद सकते हैं।

ऐसे लोग बहुत कम होते हैं, जो मध्यम सम्पत्ति अर्थात् शारीरिक और प्राकृतिक स्वास्थ्य की प्रार्थना करते हैं।

सर्वोच्च तथा उत्तम सम्पत्ति की कामना अर्थात् परमात्मा की अनुभूति के आध्यात्मिक मार्ग पर चलने वाले लोग तो अत्यन्त दुर्लभ ही होते हैं। वास्तव में केवल ऐसे ही लोग स्थिति में सबसे सुखी लोग होते हैं। वे सदैव शारीरिक स्वास्थ्य का आनन्द लेते हैं और आकस्मिक रोगों से भयभीत भी नहीं होते हैं। भौतिक सम्पदा की तो वे परवाह ही नहीं करते। इस प्रकार वे ईश्वर अनुभूति के मंगलानन्द में खोये रहते हैं।

ऋग्वेद मन्त्र 1.27.6

विभक्तासि चित्रभानो सिन्धोरुलमा उपाक आ।
सद्यो दाशुषे क्षरसि ॥१६॥

विभक्तासि – विभाजन करने वाले और देने वाले
चित्रभानो – महान् दीप्ति के साथ (परमात्मा या महान् उत्तम विद्वान्)
सिन्धोः – समुद्रों की
ऊर्मी – जल की लहरें
उपाके – निकट आती हैं
सद्यः – अति शीघ्र
दाशुषे – त्याग करने वाले के लिए
क्षरसि – देते हो।

व्याख्या :-

परमात्मा तथा महान् विद्वान् किस प्रकार ज्ञान प्रदान करते हैं?

परमात्मा तथा उसके महान् विद्वान् अपने ज्ञान का विभाजन पात्र व्यक्ति की योग्यता के अनुसार करते हैं और अपना महान् वैभव अर्थात् सम्पूर्ण सम्पत्ति त्यागशील व्यक्ति को प्रदान कर देते हैं। यह सर्वोच्च कार्य समुद्र में उठने वाली जल की तरंगों के समान होता है, जो वाष्णीकृत होकर समुद्र से पृथक हो जाती हैं और मेघ बन कर सब पर सुखों की वर्षा करने के लिए निर्धारित होती हैं। इसी प्रकार परमात्मा और महान् विद्वान् लोगों की योग्यता के अनुसार अपने ज्ञान का विभाजन करते हैं।

जीवन में सार्थकता

वैदिक समाजवाद क्या है?

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

वैदिक समाजवाद से अभिप्राय है पूर्ण गौरवशाली सम्पदा को एकत्रित करना और उसका उचित विभाजन करना।

समुद्र में असीम जल होता है और असंख्य तरंगे होती हैं। समुद्र अपने जल के कुछ अंश को वाष्णीकृत करवा कर मेघ के रूप में भेज देता है, जिससे सब पर सुखों की वर्षा होती है। इसी प्रकार हमें जो भी सम्पत्ति प्राप्त हो, उसे हमें परमात्मा को समर्पित करते हुए समाज में यथायोग्य वितरण के लिए निर्धारित करना चाहिए। इसे वैदिक समाजवाद कहा जाता है।

ऋग्वेद मन्त्र 1.27.7

यमने पृत्सु मत्यमवा वाजेषु यं जुनाः ।
स यन्ता शश्वतीरिषः ॥ ७ ॥

यम् – वह जो
अग्ने – सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा
पृत्सु – संग्रामों में
मत्यम् – मरने योग्य मनुष्य आदि
अवा: – संरक्षण करते हो
वाजेषु – गौरवशाली शक्तियाँ
यम् – जिन्हें
जुनाः – आप प्रेरित करते हो
सः – वह
यन्ता – धारण करता है।
शश्वतीः – अनादि काल से
इषः – संरक्षण तथा प्रेरणा।

व्याख्या :-

कौन हमारा अनादि एवं अनन्त प्रेरक और संरक्षक है?

सर्वोच्च शक्तिमान परमात्मा अपनी भव्य शक्तियों के द्वारा हर प्रकार के संघर्ष में समस्त जीवों की रक्षा करते हैं। जो लोग परमात्मा से प्रेरणायें प्राप्त करते हैं, वे उसके द्वारा अनादि तथा अन्तहीन संरक्षण और प्रेरणायें प्राप्त करते ही रहते हैं।

इस मन्त्र के अनुसार परमात्मा ही हमारा अनादि एवं अन्तहीन संरक्षक और प्रेरक है। परमात्मा हमारे मस्तिष्क में पैदा होने वाली प्रत्येक प्रेरणा का मूल स्रोत है। अपने मन में उत्पन्न प्रत्येक विचार के साथ ही हमें उसके प्रति चेतना को जोड़ देना चाहिए और केवल उसी विचार का प्रयोग करें, जो हमारे लिए तथा अन्य सब लोगों के लिए लाभकारी हैं। हमें सभी नकारात्मक और हानिकारक विचारों को प्रारम्भ में ही इस

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

प्रार्थना के साथ दूर कर देना चाहिए कि परमात्मा हमें केवल महान् विचारों को प्रदान करें क्योंकि वह हर विचार के अनादि स्रोत हैं और केवल त्याग कार्यों का संरक्षण करते हैं।

जीवन में सार्थकता

अपने वर्तमान विचारों को किस प्रकार नियन्त्रित करें?

हमारे वर्तमान विचार हमारे पूर्व जीवन का ही परिणाम हैं। हमें वर्तमान विचारों को एक अच्छे भविष्य के लिए ही क्रियान्वित करना चाहिए और परमात्मा की दिव्य प्रेरणाओं की कामना करनी चाहिए।

हमें अपने विचारों का स्रोत ढूँढना चाहिए और इस बात की अनुभूति करनी चाहिए कि वर्तमान जीवन की पूर्व स्मृतियों और पूर्व जन्मों के आधार पर ही हमारे वर्तमान विचार पैदा हुए हैं। सर्वोच्च नियामक परमात्मा उन सभी विचारों और प्रेरणाओं के अनादि स्रोत हैं, जो वर्तमान समय में हमारे मन में उत्पन्न हो रहे हैं। हमें परमात्मा के प्रति यह प्रार्थना भी समर्पित करनी चाहिए कि इनमें से किन विचारों का हम अच्छे भविष्य के लिए क्रियान्वयन करें।

ऋग्वेद मन्त्र 1.27.8

नकिरस्य सहन्त्य पर्येता कयस्य चित ।
वाजो अस्ति श्रवाय्यः ॥ ८ ॥

नकि – कुछ भी नहीं

यस्य – जिसका

सहन्त्य – सहनशील

पर्येता – अपनी इच्छाओं से नियन्त्रित नहीं

कयस्य – आनन्द की ओर अग्रसर

चित – निश्चित रूप से

वाजः – शक्ति

अस्ति – है

श्रवाय्यः – प्रशंसनीय, सुनने योग्य ।

व्याख्या :-

कौन सबसे अधिक प्रशंसनीय है?

जो लोग सहनशील हैं और जिनमें ऐसा कुछ नहीं है, जिससे उन्हें नियन्त्रित किया जा सके अर्थात् जिनकी कोई इच्छायें ही नहीं हैं, केवल ऐसे लोग ही आनन्दपूर्ण जीवन की तरफ बढ़ते हैं। इनकी शक्ति ही प्रशंसनीय होती है।

जीवन में सार्थकता

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

कौन एक महान् नेता, एक मार्गदर्शक तथा एक महान् अध्यापक है?

जो सबसे अधिक प्रशंसनीय है, उसी को एक महान् नेता, एक महान् मार्गदर्शक तथा एक महान् अध्यापक स्वीकार किया जा सकता है।

अन्य लोगों की प्रशंसायें प्राप्त करने के लिए निम्न लक्षणों को धारण करना अत्यन्त आवश्यक है :-

(क) एक सहनशील व्यक्ति अर्थात् शान्त और किसी भी प्रतिकूल परिस्थिति में क्षणिक प्रतिक्रिया व्यक्त न करने वाला,

(ख) जिसे उसकी इच्छाओं के कारण नियंत्रित नहीं किया जा सकता।

इस प्रकार सहनशीलता और इच्छामुक्त अवस्था दो ऐसे महान् लक्षण हैं, जिनका होना एक महान् नेता, एक महान् मार्गदर्शक और एक महान् अध्यापक के लिए आवश्यक है।

यह दोनों लक्षण निश्चित रूप से परमात्मा में विद्यमान हैं, इसीलिए जिन लोगों में यह दोनों लक्षण विद्यमान होते हैं उन्हें भी परमात्मा की तरह समाज कर पूजा जाता है।

ऋग्वेद मन्त्र 1.27.9

स वाजं विश्वर्चर्षणिर्वभिरस्तु तरुता ।
विप्रेभिरस्तु सनिता ॥ ९ ॥

स – यह

वाजम् – संग्राम में

विश्वर्चर्षणि: – सदैव क्रियाशील, सबका संरक्षक

अर्वभिः – पूरी शक्तियों के साथ, इन्द्रियों पर पूरे नियन्त्रण के साथ

अस्तु – हो

तरुता – विघ्न और बाधाओं को पार करने में सहायक

विप्रेभिः – विद्वान् और योग्य व्यक्ति

अस्तु – हो

सनिता – प्रसन्नता और ज्ञान का देने वाला।

व्याख्या :-

एक प्रशंसनीय व्यक्ति किस प्रकार सबका संरक्षक बनने के योग्य है?

एक प्रशंसनीय व्यक्ति सदैव कार्यशील और सभी संग्रामों में रक्षा करने वाला होता है क्योंकि वह अपनी इन्द्रियों पर पूर्ण नियन्त्रण रखते हुए अपनी सारी शक्तियों के साथ कार्य करता है। ऐसा व्यक्ति जीवन के सभी विघ्न और बाधाओं को पार करने में सबका सहायक होता है। वह ऐसे कार्य करने में बुद्धिमान और अत्यन्त योग्य होता है और सबको सुख और ज्ञान देने वाला होता है। लोग ऐसे ही महान् नेता और मार्गदर्शक की प्रार्थना करते हैं, जो सबके द्वारा प्रशंसनीय हो।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

जीवन में सार्थकता

एक प्रशंसनीय व्यक्ति किस प्रकार सबके संरक्षक की शक्ति रखता है?

जब एक व्यक्ति अपनी सहनशक्ति और इच्छामुक्त अवस्था के कारण प्रशंसनीय बन जाता है तो वह बुद्धिमान और सबका संरक्षण करने वाली शक्तियों का धारक भी बन जाता है और सबको सुख और ज्ञान देने वाला बनता है। लोग ऐसे व्यक्ति को सच्चा नेता मान लेते हैं। यह सिद्धान्त एक उत्तम लोकतान्त्रिक समाज का मूल स्तम्भ बन सकता है, जहाँ केवल 50 प्रतिशत मतों वाले नेता मान्यता प्राप्त नहीं कर सकते। एक प्रशंसनीय व्यक्ति तो सबके द्वारा प्रशंसनीय होता है और लोग एक स्थानीय भगवान की तरह उसका सम्मान करते हैं।

ऋग्वेद मन्त्र 1.27.10

जराबोध तद्विविद्धि विशेषिशे यज्ञियाय ।
स्तोमं रुद्राय दृशीकम् ॥ 10 ॥

जराबोध – प्रशंसाओं से जानने योग्य

तत् – वह

विविद्धि – व्यापक और विस्तृत

विशेषिशे – प्रत्येक जीव के लिए

यज्ञियाय – अपने त्याग और कल्याण कार्यों से

स्तोमम् – उसकी प्रशंसायें

रुद्राय – दुष्टों को रुलाने में सक्षम

दृशीकम् – देखने योग्य ।

व्याख्या :-

किस प्रकार एक प्रशंसनीय नेता समाज में व्यापक प्रभाव वाला हो जाता है?

एक प्रशंसनीय तथा सबके द्वारा स्वीकार्य नेता अपनी प्रशंसाओं के द्वारा ही जाना जाता है। ऐसा व्यक्ति अपने त्याग कार्यों और सबके कल्याण कार्यों के कारण सर्वत्र व्यापक हो जाता है। उसकी प्रशंसायें एक तरफ दर्शनीय होती हैं तो दूसरी तरफ अपवित्र और दुराचारी लोगों को रोने के लिए मजबूर कर देती हैं।

जीवन में सार्थकता

एक सच्चा सामाजिक राजनीतिक जीवन क्या है?

एक सच्चा सामाजिक राजनीतिक जीवन सबके लिए कल्याणकारी होता है और दर्शनीय होता है। ऐसे सामाजिक राजनेता भ्रष्ट नेताओं को रोने के लिए मजबूर कर देते हैं।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

यह वर्तमान सूक्त वैदिक समाजवाद और राजनीतिक नेतृत्व के सिद्धान्तों को स्पष्ट करता है।

जब एक प्रशंसनीय व्यक्ति सबका रक्षक बन जाता है तो वह अपने अनुयायियों और लाभार्थियों के मस्तिष्क में व्यापक हो जाता है क्योंकि उसके त्याग और कल्याण कार्य सबके लिए होते हैं। जब ऐसे महान् नेता समाज में उन्नति करते हैं तो भ्रष्ट और सिद्धान्तहीन नेता रोने के लिए मजबूर हो जाते हैं। ऐसे सामाजिक और राजनैतिक श्रद्धालु व्यक्तियों का जीवन देखने योग्य होता है। ऐसा जीवन स्वयं में ही अपनी व्याख्या प्रस्तुत करता है।

ऋग्वेद मन्त्र 1.27.11

स नो महाँ अनिमानो धूमकेतुः पुरुश्चन्द्रः।
धिये वाजाय हिन्वतु ॥ 11 ॥

सः – वह (परमात्मा)

नः – हमारे

महान् – महान्

अनिमानः – जिसका कोई परिमाण नहीं

धूमकेतुः – धुयों से आच्छादित अग्नि

पुरुश्चन्द्रः – सबके लिए आनन्द देने वाला

धिये – विद्वत्तापूर्ण कार्य

वाजाय – शक्तियाँ

हिन्वतु – प्रेरणा करता है, तृप्ति करता है।

व्याख्या :-

परमात्मा तथा प्रशंसनीय सामाजिक राजनैतिक नेता किस उद्देश्य से हमें प्रेरित करते हैं?

परमात्मा तथा सर्वत्र प्रशंसनीय सामाजिक और राजनीतिक नेता एक महान् धूमकेतु के समान होते हैं, एक ऐसी अग्नि जिसका धूँआ सर्वत्र सबके कल्याण के लिए व्यापक हो जाता है, ऐसे लोगों की महानता को मांपा नहीं जा सकता क्योंकि वे सबके लिए समान रूप से आनन्ददायक होते हैं और सबको दो उद्देश्यों से प्रेरित करके कार्यों में लगाते हैं :–

(क) बुद्धि पर आधारित गतिविधियाँ तथा

(ख) हर प्रकार की शक्तियों का संग्रहण।

जीवन में सार्थकता

देश की आन्तरिक और अन्तर्राष्ट्रीय सुरक्षा को कैसे सुनिश्चित किया जाये?

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

देश की आन्तरिक सुरक्षा को सुनिश्चित करने के लिए बुद्धि पर आधारित गतिविधियाँ संचालित होनी चाहिए।

देश की अन्तर्राष्ट्रीय सुरक्षा को पूर्ण शक्तियों के संग्रहण से सुनिश्चित किया जा सकता है।

एक बार जब एक प्रशंसनीय सामाजिक और राजनीतिक नेता लोगों को स्वीकार्य हो जाता है तो उसकी महानता को मापा नहीं जा सकता क्योंकि वह सबके लिए आनन्ददायक होता है और सारे समाज को भी इन्हीं दो उद्देश्यों से प्रेरित करता है :—

(क) बुद्धि पर आधारित गतिविधियाँ देश की आन्तरिक सुरक्षा सुनिश्चित करती हैं। इसमें शिक्षा तथा हर प्रकार की तकनीकी योग्यतायें शामिल हैं।

(ख) देश में हर प्रकार की शक्तियों का संग्रहण जैसे सीमाओं की सुरक्षा तथा देश की अन्तर्राष्ट्रीय छवि का निर्माण।

ऋग्वेद मन्त्र 1.27.12

स रेवाँइव विश्पतिर्देव्यः केतुः शृणोतु नः ।
उवथैरग्निर्बृहभानुः ॥ 12 ॥

सः — वह

रेवान् — धन सम्पन्न व्यक्ति

इव — के समान

विश्पतिः — सबका संरक्षक

दैव्यः — दिव्य

केतुः — सभी कठिनाईयों और रोगों को दूर करने वाला

शृणोतु — सुनता है

नः — हमें

उवथैः — वेदों के द्वारा प्रशंसनीय

अग्निः — सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा

बृहत् भानुः — ज्ञान का सर्वोच्च प्रकाश।

व्याख्या :-

परमात्मा किस प्रकार हमारी प्रार्थनायें सुनता है?

परमात्मा की प्रशंसा किस प्रकार की जा सकती है?

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

सर्वोच्च शक्तिमान परमात्मा हमारी प्रार्थनायें एक ऐसे धन सम्पन्न व्यक्ति की तरह सुनता है, जो गरीबों और जरूरतमंद लोगों की आवश्यकताओं, कठिनाईयों और विपत्तियों को दूर करता है। परमात्मा की प्रशंसा वेद अर्थात् महान् ज्ञान के द्वारा होती है क्योंकि वह स्वयं वेद अर्थात् ज्ञान का सर्वोच्च प्रकाश है।

जीवन में सार्थकता

एक धनी व्यक्ति किस प्रकार हमारी प्रार्थनायें सुनता है?

एक धनी व्यक्ति की प्रशंसा किस प्रकार की जा सकती है?

एक वास्तविक धनी और सम्पन्न व्यक्ति ऐसा उदारवादी व्यक्ति होता है जो हर कमजोर व्यक्ति को सुनता है, जो उसके पास सहायता के लिए पहुँचता है और उसे यथासम्भव सहायता प्राप्त होती है। ऐसा प्रत्येक सम्पन्न व्यक्ति अपने ज्ञान और योग्यताओं से ही प्रशंसनीय होता है। वह आपकी सहायता भौतिक रूप में करता है तो आप उसकी प्रशंसा ज्ञान और योग्यता से कर सकते हैं।

वेद स्वयं भगवान का ही नाम हैं, जो ज्ञान का सर्वोच्च प्रकाश है। जब हम क्रियात्मक रूप से उस ज्ञान को अपने जीवन में उतार कर उसी ज्ञान से उसकी प्रशंसा करते हैं तो वह हमारी प्रार्थनायें एक उदारवादी धनी व्यक्ति की तरह सुनता है और हमारी कठिनाईयों को दूर करता है।

ऋग्वेद मन्त्र 1.27.13

नमो महदभ्यो नमो अर्भकेभ्यो नमो युवभ्यो नम आशिनेभ्यः।
यजाम देवान्यदि शक्रवाम मा ज्यायसः शंसमा वृक्षि देवाः॥ 13 ॥

नमः — सम्मानपूर्वक नमन

महदभ्यः — पूर्ण विद्यायुक्त

नमः — सम्मानपूर्वक नमन

अर्भकेभ्यः — कम विद्यायुक्त

नमः — सम्मानपूर्वक नमन

युवभ्यः — बल में युवा

नम — सम्मानपूर्वक नमन

आशिनेभ्यः — समस्त ज्ञानों में व्यापक वृद्ध, अनुभवी

यजाम — जोड़ दें

देवान् — महान् विद्वान

यदि — यदि

शक्रवाम — योग्य, सक्षम तथा शक्तिशाली

मा — नहीं

ज्यायसः — प्रशंसनीय बुद्धि वाले

शंसम् — प्रशंसायें तथा अनुशासन

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

अ वृक्षि – काटना, उल्लंघन करना
देवा: – दिव्य विद्वानों का।

व्याख्या :-

हमें समाज में किसका सम्मान करना चाहिए?

हमें ऐसे लोगों को सम्मानपूर्वक नमन करना चाहिए, जो :-

- (क) उच्च विद्वान हैं,
- (ख) कम विद्वान हैं,
- (ग) शक्ति में युवा हैं,
- (घ) अनुभव में वृद्ध औन ज्ञान में व्यापक हैं।

यदि आपमें योग्यता, क्षमता और शक्ति है तो आपको ऐसे महान् विद्वानों की संगति करनी चाहिए, जो विद्वानों में भी प्रशंसनीय हैं। ऐसे लोगों की प्रशंसा में कमी नहीं करनी चाहिए और न ही उनके अनुशासन को भंग करना चाहिए क्योंकि वे दिव्य हैं और परमात्मा के प्रतिनिधि हैं।

जीवन में सार्थकता

समाज में कौन हमारे वास्तविक मार्गदर्शक, नेता तथा संरक्षक हैं?

ज्ञान, बुद्धि, त्याग तथा समाज में हर प्रकार की सेवाओं का हर हालत में सम्मान होना चाहिए। हमारी योग्यतायें और शक्तियाँ कुछ भी हों, हमें सदैव ऐसे विद्वानों की संगति करनी चाहिए। न तो उनकी प्रशंसाओं में कमी होनी चाहिए और न ही उनके अनुशासन को भंग करना चाहिए। उनके मस्तिष्क ही हमारे सत्य मार्गदर्शक तथा नेता बनने के योग्य हैं। आधुनिक युग के भ्रष्ट, अज्ञानी और अहंकारी नेताओं से भिन्न ऐसे महान् लोग हमारे वास्तविक संरक्षक हैं।

यह वर्तमान सूक्त सामाजिक और राजनीतिक नेतृत्व की एक महान् योजना प्रस्तुत करता है, जिसका केन्द्रीय बिन्दु महान् ज्ञान और त्याग कार्य हैं।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

ऋग्वेद मण्डल-1 सूक्त 28

ऋग्वेद मन्त्र 1.28.1

यत्र ग्रावा पृथुबुध्न ऊर्ध्वो भवति सोतवे ।
उलूखलसुतानामवेद्विन्द्र जल्युलः ॥ १ ॥

यत्र – जहाँ

ग्रावा – ईश्वर की स्तुति में गाने वाला

पृथुबुध्न – मजबूत आधार और दृढ़ निश्चय वाला

ऊर्ध्वो – उच्चावरण की तरफ प्रगतिशील

भवति – होता है

सोतवे – उत्तम गुणों को पैदा करने के लिए

उलूखल – गहरा हृदय अंतरिक्ष

सुतानाम् – महान् ज्ञान और गुण

अव – स्वतः उत्पन्न समझने वाला

इत – यह

इन्द्र – इन्द्रियों का नियंत्रक

जल्युलः – धारण, व्याप्त |

व्याख्या :-

कौन महान् ज्ञान और गुणों को धारण कर सकता है?

जड़ी बूटियों में से स्वारथ्यवर्धक अंश किस प्रकार निकलते हैं?

जब एक भक्त अपनी इच्छा शक्ति और दृढ़ निश्चय के मजबूत और व्यापक आधार के साथ परमात्मा के गुणों का गान करता है, वह गुणों को पैदा करने की दिशा में सदैव अग्रसर रहता है। उसका गहरा हृदय अन्तरिक्ष और कड़ी तपस्या उसके लिए महान् ज्ञान और गुणों को पैदा करती है। वह इन गुणों को अपना

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

समझता है, जो उसके भीतर पैदा होते हैं। वह अपने जीवन में इन्हीं को धारण करता है और अपने जीवन में इन्हें व्याप्त कर लेता है।

यह मन्त्र औषधीय जड़ी बूटियों से स्वास्थ्यवर्धक अंश को पैदा करने की प्रक्रिया का भी संकेत करता है। इसके लिए हमारे पास एक व्यापक आधार वाला पत्थर होना चाहिए, जिस पर जड़ी बूटियों को घिस-घिस कर हम उसके स्वास्थ्यवर्धक अंश निकालते हैं। ग्रावा का अर्थ है मूसल और उलूखला का अर्थ है वह ओखली जिसमें जड़ी बूटी को रख कर कूटा जाता है, जिससे उसके अंश प्राप्त किये जा सकें। जल्युलः का अर्थ है उस अंश को लाभदायक बनाने के लिए परस्पर मिलाना।

जीवन में सार्थकता

जीवन में महान् परिणाम कैसे धारण करें?

आध्यात्मिक अर्थ को सामान्यतः कोई भी कार्य करते हुए हर उद्देश्य में प्रयोग किया जा सकता है। इसके लिए आपके पास इच्छा शक्ति और दृढ़ निश्चय के साथ कड़ी तपस्या का मजबूत आधार होना चाहिए, तभी महान् परिणाम प्राप्त होंगे। ऐसे महान् परिणाम जीवन में स्वतः ही धारण हो जाते हैं क्योंकि वे अपनी कड़ी मेहनत से पैदा किये जाते हैं।

ऋग्वेद मन्त्र 1.28.2

यत्र द्वाविव जघनाधिषवण्या कृता ।
उलूखलसुतानामवेद्विन्द्र जल्युलः ॥ २ ॥

यत्र — जहाँ

द्वाविव — दोनों के समान

जघना — जाँघे

अधिषवण्या — अलग करते हुए

कृता — करते हैं

उलूखल — गहरा हृदय अंतरिक्ष

सुतानाम् — महान् ज्ञान और गुण

अव — स्वतः उत्पन्न समझने वाला

इत — यह

इन्द्र — इन्द्रियों का नियंत्रक

जल्युलः — धारण, व्याप्त।

व्याख्या :-

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

जीवन के दो स्तरों को भिन्न-2 कैसे किया जाये?

जब एक श्रद्धालु जीवन के दो स्तरों को इस प्रकार भिन्न-2 समझता है, जैसे चलते हुए दो जाँघें भिन्न-2 दिखायी देती हैं तो उसका गहरा हृदय अन्तरिक्ष और कड़ी तपस्या उसके लिए महान् ज्ञान और गुणों को पैदा करती है। वह इन गुणों को अपना समझता है, जो उसके भीतर पैदा होते हैं। वह अपने जीवन में इन्हीं को धारण करता है और अपने जीवन में इन्हें व्याप्त कर लेता है।

हमारे जीवन में हमें शरीर को आत्मा से तथा मन को हृदय से पृथक समझना ही चाहिए, जिससे हम इस बात पर चिन्तन कर सकें कि स्थाई क्या है और परमात्मा की अनुभूति करवाने की क्षमता किसमें है। शरीर तो आत्मा के लिए एक साधन मात्र है, जिसकी सहायता से आत्मा परमात्मा की अनुभूति प्राप्त कर सके और उसके साथ एकता स्थापित कर सके। मन का कार्य महान् ज्ञान को धारण करना है, जब कि हृदय उस सर्वोच्च ज्ञान अर्थात् परमात्मा से प्रेम करता है। एक श्रद्धालु मन और हृदय को अलग-2 मानते हुए इन पर लगातार दृष्टि बनाकर रखता है। वह परमात्मा से अपने हृदय अन्तरिक्ष की गहराई से प्रेम करता है। उसके गहरे हृदय अन्तरिक्ष को उलूखल कहा जाता है, जहाँ महान् ज्ञान और गुण पैदा होते हैं। वह श्रद्धालु ऐसे गुणों और ज्ञान को धारण करता है क्योंकि वह उन्हें स्वयं में पैदा हुआ मानता है। तभी ऐसे गुण उसके हृदय और मन दोनों के लिए सहायक होते हैं, तभी ये गुण उसकी आत्मा एवं शरीर के लिए भी सहायक होते हैं।

जड़ी बूटियों के सार तत्व को निकालने की प्रक्रिया में मूसल तथा ओखली रूपी बर्तन का प्रयोग किया जाता है, जो मुख्य तत्व को वर्धा तत्वों से अलग कर देता है और जड़ी बूटियों से महत्वपूर्ण औषधि वाला अंश हमारे सामने आ जाता है।

जीवन में सार्थकता

हमारा गहरा हृदय कितना प्रभावशाली है?

प्रत्येक गतिविधि में हमें प्रतिक्षण यह दृष्टि बनाकर रखनी चाहिए कि क्या हम सामान्य रूप में मन से काम कर रहे हैं या गहरे हृदय स्थान से। यदि हम कार्य करते समय प्रतिक्षण अपने गहरे हृदय पर एकाग्र होते हैं तो उसके परिणाम अत्यन्त महान् होंगे और निश्चित रूप से हमें आत्मानुभूति की तरफ ले जाने वाले होंगे। हमें सर्वोच्च शक्ति के साथ एकता का अनुभव होगा।

ऋग्वेद मन्त्र 1.28.3

यत्र नार्यपच्यवमुपच्यवं च शिक्षते ।

उलूखलसुतानामवेद्विन्द्र जल्युलः ॥ ३ ॥

यत्र – जहाँ

नारी – नारी

अपच्यवम् – हृदय से अलग अर्थात् मस्तिष्क

उपच्यवम् – हृदय में

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

च – और

शिक्षते – ज्ञान प्राप्त करें

उलूखल – गहरा हृदय अंतरिक्ष

सुतानाम् – महान् ज्ञान और गुण

अव – स्वतः उत्पन्न समझने वाला

इत – यह

इन्द्र – इन्द्रियों का नियंत्रक

जल्मुलः – धारण, व्याप्ति ।

व्याख्या :-

क्या महिलायें महान् ज्ञान प्राप्त करने और आध्यात्मिकता के पथ पर चलने के योग्य हैं?

जब महिलायें अपने मन में तथा गहरे हृदय स्थान में महान् ज्ञान को प्राप्त करती हैं तो उनका गहरा हृदय अन्तरिक्ष और कड़ी तपस्या उनके लिए महान् ज्ञान और गुणों को पैदा करता है। वह इन गुणों को अपना समझती हैं, जो उनके भीतर पैदा होते हैं। वह अपने जीवन में इन्हीं को धारण करती हैं और अपने जीवन में इन्हें व्याप्त कर लेती हैं।

जीवन में सार्थकता

महिलाओं का ज्ञान और गुण सारे समाज में कैसे व्याप्त हो जाते हैं?

यह मन्त्र स्पष्ट करता है कि महिलाओं को भी महान् ज्ञान प्राप्त करना चाहिए। इससे भी अधिक, जब एक महिला आध्यात्मिक मार्ग पर चलती है, उसका ज्ञान और गुण उसके व्यक्तिगत जीवन में ही नहीं अपितु पूरे परिवार और समाज में व्याप्त हो जाते हैं।

यह मन्त्र महिला शिक्षा और उसकी पुरुषों के साथ समानता के महत्व को भी उजागर करता है। इस मन्त्र को समझने के उपरान्त किसी को भी महिलाओं के मुख से वेद मंत्रों के उच्चारण या उनके धार्मिक और आध्यात्मिक मार्ग पर उन्नति पर आपत्ति नहीं करनी चाहिए। यह वेद मन्त्र महिलाओं के द्वारा समस्त ज्ञान और गुणों को धारण करने के महत्व की घोषणा करता है। महिला के गुण पुरुषों से भी अधिक समूचे परिवार को तथा समाज को प्रभावित कर सकते हैं।

ऋग्वेद मन्त्र 1.28.4

यत्र मन्थां विबधन्ते रश्मीन्यमितवाइव ।

उलूखलसुतानामवेद्विन्द्र जल्मुलः ॥ 4 ॥

यत्र – जहाँ

मन्थाम् – मन्थन करता हुआ मस्तिष्ठ

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

विबद्धनते – बाँधता है

रश्मीन – किरणों को, घोड़े की लगाम को

यमितवै – सूर्य के द्वारा, सारथी के द्वारा

इव – जैसे

उलूखल – गहरा हृदय अंतरिक्ष

सुतानाम् – महान् ज्ञान और गुण

अव – स्वतः उत्पन्न समझने वाला

इत – यह

इन्द्र – इन्द्रियों का नियंत्रक

जल्मुलः – धारण, व्याप्ति ।

व्याख्या :-

अपने जीवन में गुणों की किरणों और परमात्मा के प्रति प्रेम को किस प्रकार बाँध कर रखा जाये?

जब प्रतिक्षण अपने पर दृष्टि रखने और उसे नियंत्रण में रखने के बाद ज्ञान और गुणों की किरणें हमारे जीवन में बंध जाती हैं, आध्यात्मिकता और परमात्मा के प्रति प्रेम इस प्रकार बंध जाता है, जैसे सूर्य अपनी किरणों से सभी ग्रहों को बांध कर रखता है, जैसे एक रथ की लगाम से घोड़े बंधे रहते हैं, उसका गहरा हृदय अन्तरिक्ष और कड़ी तपस्या उसके लिए महान् ज्ञान और गुणों को पैदा करती है। वह इन गुणों को अपना समझता है, जो उसके भीतर पैदा होते हैं। वह अपने जीवन में इन्हीं को धारण करता है और अपने जीवन में इन्हें व्याप्त कर लेता है।

जीवन में सार्थकता

मस्तिष्क के द्वारा कड़े चिंतन का प्रभाव क्या होता है?

मस्तिष्क का कड़ा चिंतन महान् ज्ञान, गुण, आध्यात्मिकता, परमात्मा के प्रति प्रेम और सभी श्रेष्ठ विचारों को पकाने के समान है। मस्तिष्क के कड़े चिंतन का अर्थ है कि अपने ऊपर लगातार दृष्टि बनाकर रखना और सभी महान् विचारों का अनुसरण करना। इससे हमें उन सब विचारों को अपने जीवन में बांधने में सहायता प्राप्त होगी।

मस्तिष्क के कड़े चिंतन में गहरे हृदय अन्तरिक्ष को प्रेम, कल्याण और अपने सभी कार्यों में त्याग की तरह प्रयोग करना चाहिए।

एक कड़ी चेतावनी – मस्तिष्क का कड़ा चिंतन केवल सकारात्मक और रचनात्मक विचारों के लिए ही प्रयोग होना चाहिए, नकारात्मक और बुरे विचारों के लिए कदापि नहीं। बुरे विचारों पर मस्तिष्क का कड़ा चिंतन निश्चित रूप से कई प्रकार के मानसिक रोगों जैसे तनाव, अवसाद, उत्तेजना तथा अन्य मानसिक झटकों के रूप में सामने आता है।

सूक्त 28 के प्रथम चार मंत्र गहरे हृदय अंतरिक्ष की कार्य प्रणाली के चार मार्ग बताते हैं। इस कार्य प्रणाली में महान् ज्ञान तथा गुण पैदा करने के लिए कड़ी तपस्यायें और उन्हें जीवन में व्यापक बनाने के प्रयास शामिल हैं।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

मन्त्र 1 – अपनी इच्छा शक्ति और दृढ़ निश्चय के मजबूत और व्यापक आधार के साथ परमात्मा के गुणों का गान करना।

मन्त्र 2 – अपने हृदय और मन को पृथक मानते हुए लगातार दृष्टि बनाये रखना। परमात्मा को हृदय से प्रेम करना और महान् ज्ञान को मन में प्राप्त करना।

मन्त्र 3 – महिलाओं को महान् ज्ञान हृदय की गहराई से मन में प्राप्त करना चाहिए।

मन्त्र 4 – ज्ञान, गुण, परमात्मा के प्रति प्रेम और त्याग की किरणों को अपने जीवन में बांधने के लिए मरितष्क का कड़ा चिंतन।

ऋग्वेद मन्त्र 1.28.5

यच्चिद्धि त्वं गृहेगृह उलूखलक युज्यसे ।
इह द्युमत्तमं वद जयतामिव दुन्दुभिः ॥ ५ ॥

यत् – जो

चित – निश्चित रूप से

हि – है

त्वम् – आपका

गृहे गृहे – प्रत्येक स्थान पर

उलूखलक – कड़ी तपस्या के साथ गहरा हृदय अंतरिक्ष

युज्यसे – जुड़ता है

इह – यहाँ

द्युमत्तमम् – महान् व्यवहार

वद – बोलता है

जयताम् – विजयी

इव – जैसे

दुन्दुभिः – बड़ी आनन्ददायक ध्वनि

व्याख्या :-

गहरे हृदय अंतरिक्ष से कार्य करने के क्या लाभ हैं?

आपके (परमात्मा के) साथ निश्चित रूप से कड़ी तपस्या और गहरा हृदय अंतरिक्ष ही सम्बन्धित है, जैसे यह उसी का घर हो। ऐसे व्यक्ति के महान् व्यवहार इस प्रकार बहुत ऊँची और आनन्ददायक ध्वनि की तरह बोलते हैं, जो किसी विजयी योद्धा की जीत पर सुनाई देती है।

जीवन में सार्थकता

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

हमारा गहरा हृदय किस प्रकार हमारे जीवन को प्रभावित करता है?

जब हम प्रत्येक कार्य गहरे हृदय से और कड़ी मेहनत के साथ करते हैं तो हमारा जीवन दिव्यताओं के घर की तरह महसूस होने लगता है और सबके लिए एक समान व्यवहार का प्रकट होना एक महान् आनन्द, शान्ति और सुविधाजनक जीवन की अनुभूति पैदा करता है।

ऋग्वेद मन्त्र 1.28.6

उत स्म ते वनस्पते वातो वि वात्यग्रमित् ।
अथो इन्द्राय पातवे सुनु सोममुलूखल ॥ 6 ॥

उत — और

स्म — गति करता है

ते — आपके जीवन में

वनस्पते — वनस्पति, ज्ञान और गुणों को पैदा करने वाला तथा उनका स्वामी

वातः — वायु

वि वाति — विशेष रूप से गति करने वाली

अग्रम् इत् — सर्वोच्च, सर्वप्रथम

अथो — अतः

इन्द्राय — इन्द्रियों का नियंत्रक

पातवे — सर्वत्र व्यापक होने के लिए

सुनु — स्थापित करता है

सोमम् — गुणों को

उलूखल — कड़ी तपस्या के साथ गहरा हृदय अंतरिक्ष

व्याख्या :-

हमारा गहरा हृदय किस प्रकार कार्य करता है?

वनस्पतियों और पौधों में जो औषधात्मक गुण पैदा होते हैं, वे वायु के द्वारा विशेष रूप से पौधे की सबसे ऊपर की शाखाओं तक पहुँच जाते हैं। इसी प्रकार हम भी वनस्पति बन सकते हैं अर्थात् ज्ञान और गुणों के पैदा करने वाले और उनके मालिक जिससे उन्हें वायु के द्वारा अर्थात् अपने प्राणों के द्वारा अपने शरीर के उच्च स्तर अर्थात् मस्तिष्क तक तथा छोटे से बड़े सभी जीवों तक पहुँचा सकें। अतः इन्द्रियों को नियंत्रण में रखने वाला व्यक्ति अपने गहरे हृदय अंतरिक्ष में गुणों को स्थापित करता है और उन्हें सर्वत्र व्यापक कर देता है।

जीवन में सार्थकता

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

दिव्यता हमारे गहरे हृदय को किस प्रकार स्पर्श करती है?

जब हम कोई भी कार्य गहरे हृदय से करते हैं तो वह सब तरफ व्यापक हो जाता है और उसका प्रभाव दूर तक जाता है। एक तरफ गहरे हृदय से सम्पन्न किये गये हमारे त्याग कार्यों से लाभान्वित लोग उस प्रेम के प्रभाव के धारक बनते हैं तो दूसरी तरफ त्याग कार्यों को करने वाला व्यक्ति स्वयं अपने गहरे हृदय अंतरिक्ष में एक आनन्ददायक वातावरण की अनुभूति करता है क्योंकि दिव्यता हमेशा गहरे हृदय को छूती है और उसमें स्थापित होती है।

ऋग्वेद मन्त्र 1.28.7

आयजी वाजसातमा ता हयू च्चा विजर्भृतः।
हरीइवान्धांसि बप्तता ॥ ७ ॥

आयजी – गुणों को प्राप्त करने और उनकी संगति करने वाले
वाज सातमा – शक्तिशाली और विजयी होते हैं
ता – वे
हि – निश्चित रूप से
उच्च – सर्वोच्च स्तर पर
विजर्भृतः – कार्य को करने वाले विशेषज्ञ
हरी – घोड़े
इव – जैसे
अंधांसि – अन्न कण
बप्तता – खाये हुए

व्याख्या :-

जब गुण और ज्ञान हमारे जीवन में व्यापक होते हैं तो उसका परिणाम क्या होता है?

जो लोग गुणों को प्राप्त करते हैं और उनके साथ एक हो जाते हैं, वे निश्चित रूप से शक्तिशाली और विजयी होकर प्रत्येक कार्य को एक विशेषज्ञ की तरह उच्च स्तर पर पूर्ण करते हैं। ऐसे लोग उन घोड़ों की तरह सक्रिय और ऊर्जावान होते हैं, जिन्होंने पर्याप्त घास खायी है।

जीवन में सार्थकता

पर्याप्त खाये हुए घोड़े के समान कौन कार्य करता है?

जब किसी व्यक्ति का ज्ञान और गुण उसके जीवन में इतने व्यापक होकर सबके द्वारा देखे और महसूस किये जाते हैं तो वह व्यक्ति अपनी कार्य शैली में वास्तव में एक उत्तम विशेषज्ञ की तरह कार्य करता है। अतः

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

एक पर्याप्त खाये हुए घोड़े के समान दिखने के लिए हमें अपने विषय और कार्य क्षेत्र का सबसे अधिक ज्ञान प्राप्त करना चाहिए और जीवन के सभी क्रियात्मक स्तरों पर गुणों को धारण करना चाहिए।

ऋग्वेद मन्त्र 1.28.8

ता नो अद्य वनस्पती ऋष्वावृष्वेभि: सोतृभिः ।
इन्द्राय मधुमत्सुतम् ॥ 8 ॥

ता – वै

नः – हमारे

अद्य – आज

वनस्पती – वनस्पतियाँ, ज्ञान और गुणों को पैदा करने वाले तथा उनके स्वामी

ऋष्वौ – महान् बनने के लिए

ऋष्वेभि: – महान् ऋषियों के

सोतृभिः – ज्ञान और गुणों का सार निकालना

इन्द्राय – परमात्मा की अनुभूति के लिए

मधुमत् – मधुर गुण

सुतम् – स्थापित करते हैं

व्याख्या :-

महान् सन्तों का अनुसरण क्यों और कैसे किया जाये?

महान् लोग महान् ज्ञान और गुणों को पैदा करने वाले और उनके स्वामी होते हैं। ऐसे लोग ज्ञान और गुणों का सार महान् सन्तों से प्राप्त करते हैं और उसकी मधुरता को अपने जीवन में स्थापित करते हैं, जिससे ईश्वर की अनु भूति प्राप्त कर सकें।

जीवन में सार्थकता

महान् कैसे बना जा सकता है?

जीवन कि किसी भी क्षेत्र में ऊँचाईयों को छूने के लिए हमें उस क्षेत्र के महान् व्यक्तियों का अनुसरण करना चाहिए। इस प्रकार हम उसके ज्ञान और कार्य शैली के सार तत्व को प्राप्त करके उसका अनुसरण कर पायेंगे। हमें महान् लोगों का अनुसरण करते हुए तथा सामान्यजनों के बीच रहते हुए अपने व्यवहार में मधुरता, विनम्रता तथा प्रेम बनाये रखना चाहिए।

ऋग्वेद मन्त्र 1.28.9

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

उच्छिष्टं चमोर्भर सोमं पवित्र आ सृज ।
नि धेहि गोरथि त्वचि ॥ ९ ॥

उत् – भर से पूर्व लगाकर
शिष्टम् – शिक्षित करने के लिए
चम्बोः – दोनों ताकतें (शरीर और मन)
भर – उत भर – उत्तम रूप से धारण करने के लिए
सोमम् – ज्ञान और गुण
पवित्र – पवित्र
आ सृज – अलंकृत, व्याप्त
नि धेहि – स्थापित एवं सुरक्षित
गौः अधि – अपार ज्ञान
त्वचि – सम्पर्क में

व्याख्या :-

हमें अपने जीवन को किन लक्षणों से अलंकृत और व्यापक करना चाहिए?

हमें अपने जीवन की दोनों शक्तियों – शारीरिक और मानसिक, को महान् ज्ञान गुणों और सबसे उत्तम पवित्रता से अलंकृत और व्याप्त रखना चाहिए। हमें सर्वोत्तम रूप में स्वयं को इन लक्षणों से सुशिक्षित करके इन्हें धारण करना चाहिए। हमें ऐसे महान् ज्ञान, गुणों और पवित्रता के साथ अत्यन्त निकट सम्बन्ध में रहना चाहिए, जिससे हम इन लक्षणों को अपने जीवन में स्थापित तथा संरक्षित कर सकें।

जीवन में सार्थकता

सभी जीवों का कल्याण कैसे सुनिश्चित करें?

जिस प्रकार शरीर और मन हमारी व्यक्तिगत शक्तियाँ हैं, उसी प्रकार समाज और राष्ट्र में हमारी अनेकों संयुक्त शक्तियाँ भी हैं। एक सैनिक राष्ट्रीय सीमाओं का संरक्षण करने वाली शक्ति है। एक शिक्षित बुद्धि वाला व्यक्ति, हमारे नेतागण, हमारे वैज्ञानिक, तकनीकी योग्यताओं सहित या सामान्य मजदूर और यहाँ तक कि देश के सभी नागरिक किसी एक या अन्य प्रकार से मूल्यवान शक्तियाँ होती हैं, जिन्हें सामूहिक रूप से मानवीय शक्ति कहा जाता है। हमें अपने गहरे हृदय से यह प्रयास करना चाहिए कि हम अपने जीवन में ज्ञान और गुणों को धरती के सभी जीवों के कल्याण के लिए स्थापित और संरक्षित करें।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

ऋग्वेद मण्डल-1 सूक्त 29

ऋग्वेद मन्त्र 1.29.1

यच्चाद्वि सत्य सोमपा अनाशस्ताइव स्मसि ।
आ तू न इन्द्र शंसय गोष्ठश्वेषु शुभ्रिषु सहस्रेषु तुवीमघ ॥ 1 ॥

यत् – जो

चित् – निश्चित रूप से

हि – हैं

सत्य – अविनाशी, सदा रहने वाले, परमात्मा

सोमपा – गुणों के रक्षक, परमात्मा

अनाशस्ता – अप्रशंनीय, निंदनीय

इव – जैसे

स्मसि – हम हैं

(आ – शंसय से पूर्व लगाकर)

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

तू – अभी

नः – हमें

इन्द्र – परमात्मा

(शंसय – आ शंसय) प्रशंसनीय बनाता है

गोषु – भूमि, गाय, ज्ञानेन्द्रियाँ

अश्वेषु – घोड़े, कर्मेन्द्रियाँ

शुश्रेषु – सुख देने वाले

सहस्रेषु – असंख्य

तुवीमध – प्रशंसनीय गौरवशाली सम्पत्तियाँ।

व्याख्या :-

प्रशंसनीय गौरवशाली सम्पत्तियाँ कमाने के लिए हमें किसने योग्य बनाया?

सर्वोच्च प्रशंसनीय और दिव्य शक्ति परमात्मा सदैव विद्यमान, अविनाशी तथा गुणों और महान् ज्ञान का संरक्षक है। हम निश्चित रूप से प्रशंसनीय नहीं हैं और यदि किसी समय हम निंदनीय बन जाते हैं तो केवल परमात्मा ही हमारे अन्दर सुधार पैदा करके हमें प्रशंसनीय बनाते हैं और हमें ज्ञानेन्द्रियों और कर्मेन्द्रियों की शक्ति के साथ–साथ असंख्य प्रशंसनीय तथा गौरवशाली सम्पत्तियाँ भी देते हैं।

जीवन में सार्थकता

परमात्मा के दिव्य मार्ग क्या हैं?

कोई भी व्यक्ति जन्म से प्रशंसनीय नहीं होता। हमें प्रशंसनीय बनाने के लिए परमात्मा हमें ज्ञान और कर्मों की इन्द्रियाँ देते हैं, जिनसे हम भिन्न-2 अच्छे कार्य कर पाते हैं। परमात्मा हमें अनेकों प्रशंसनीय गौरवशाली सम्पत्तियाँ भी देते हैं। जीवन की इस यात्रा में भी यदि हम कभी प्रशंसाओं के अयोग्य बन जायें तो परमात्मा पुनः हमें ज्ञान और कर्म की इन्द्रियों पर नियन्त्रण करने के योग्य बनाने के साथ–साथ प्रशंसनीय गौरवशाली सम्पत्तियाँ भी देते हैं। ज्ञान, गुण और सुधार परमात्मा के तीन दिव्य मार्ग हैं। यह सम्पूर्ण सूक्त इन दिव्य मार्गों पर ही केन्द्रित हैं।

ऋग्वेद मन्त्र 1.29.2

शिप्रिन्वाजानां पते शचीवस्तव दंसना।

आ तू न इन्द्र शंसय गोष्वश्वेषु शुश्रेषु सहस्रेषु तुवीमध ॥ २ ॥

शिप्रिन – गौरवशाली सम्पत्तियाँ और सुखों का देने वाला

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

वाजानाम् – संग्रामो में

पते – संरक्षक

शाचीवः – अनेक प्रकार की बुद्धि और कार्य

तव – आपके

दंसना – वैदिक वाणियाँ

(आ – शंसय से पूर्व लगाकर)

तू – अभी

नः – हमें

इन्द्र – परमात्मा

(शंसय – आ शंसय) प्रशंसनीय बनाता है

गोषु – भूमि, गाय, ज्ञानेन्द्रियाँ

अश्वेषु – घोड़े, कर्मेन्द्रियाँ

शुभ्रिषु – सुख देने वाले

सहस्रेषु – असंख्य

तुवीमघ – प्रशंसनीय गौरवशाली सम्पत्तियाँ।

व्याख्या :-

प्रशंसनीय गौरवशाली सम्पत्तियाँ अर्जित करने के लिए हमें अपनी बुद्धि का प्रयोग किस प्रकार करना चाहिए?

परमात्मा गौरवशाली सम्पत्तियों और सुखों का देने वाला है। वह सभी संग्रामों में हमारा रक्षक होता है। बुद्धियाँ और कार्य अनेकों प्रकार के होते हैं, परन्तु सबका आधार परमात्मा की वैदिक वाणी अर्थात् वेद होना चाहिए, जो सबके लिए सर्वोच्च ज्ञान है तभी केवल परमात्मा ही हमारे अन्दर सुधार पैदा करके हमें प्रशंसनीय बनाते हैं और हमें ज्ञानेन्द्रियों और कर्मेन्द्रियों की शक्ति के साथ-साथ असंख्य प्रशंसनीय तथा गौरवशाली सम्पत्तियाँ भी देते हैं।

जीवन में सार्थकता

इस जीवन को सफल कैसे बनायें?

हमारी बुद्धियाँ तथा सभी कार्य वैदिक विवेक के आधार पर होने चाहिए, तभी इनका परिणाम प्रशंसनीय और गौरवशाली सम्पत्ति के रूप में प्राप्त होगा, जिससे हमारा जीवन सफल हो पायेगा

ऋग्वेद मन्त्र 1.29.3

नि ष्वापया मिथूदृशा सस्तामबुध्यमाने ।

आ तू न इन्द्र शासय गोष्वश्वेषु शुभ्रिषु सहस्रेषु तुवीमघ ॥ 3 ॥

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

नि ष्वापया – पूरी तरह निवारण

मिथूदृशा – माया जाल, असत्य और बुराईयों का विनाश

सस्ताम् – शरीर का नाश, निद्रा या आलस्य, कड़ी मेहनत का अभाव

अबुध्यमाने – वह बुद्धि जो हमें परमात्मा की अनुभूति से दूर रखती है
(आ – शंसय से पूर्व लगाकर)

तू – अभी

नः – हमें

इन्द्र – परमात्मा

(शंसय – आ शंसय) प्रशंसनीय बनाता है

गोषु – भूमि, गाय, ज्ञानेन्द्रियाँ

अश्वेषु – घोड़े, कर्मेन्द्रियाँ

शुभ्रिषु – सुख देने वाले

सहस्रेषु – असंख्य

तुवीमध – प्रशंसनीय गौरवशाली सम्पत्तियाँ।

व्याख्या :-

प्रशंसनीय गौरवशाली सम्पत्तियाँ अर्जित करने के लिए किन तत्वों का बहिष्कार करना चाहिए?

प्रशंसनीय और गौरवशाली सम्पत्तियाँ अर्जित करने के लिए अपने जीवन से निम्न तीन तत्वों को बहिष्कृत कर देना चाहिए :-

(क) मिथूदृशा – माया जाल, असत्य और बुराईयों का विनाश,

(ख) सस्ताम् – शरीर का नाश, निद्रा या आलस्य, कड़ी मेहनत का अभाव,

(ग) अबुध्यमाने – वह बुद्धि जो हमें परमात्मा की अनुभूति से दूर रखती है।

तभी केवल परमात्मा ही हमारे अन्दर सुधार पैदा करके हमें प्रशंसनीय बनाते हैं और हमें ज्ञानेन्द्रियों और कर्मेन्द्रियों की शक्ति के साथ-साथ असंख्य प्रशंसनीय तथा गौरवशाली सम्पत्तियाँ भी देते हैं।

जीवन में सार्थकता

शरीर, बुद्धि और आत्मा की शुद्धि के लिए तीन दृष्टिकोण वाले सूत्र क्या हैं?

यह मन्त्र शरीर, बुद्धि और आत्मा की शुद्धि के लिए तीन दृष्टिकोण वाले सूत्र स्पष्ट करता है:-

(क) शरीर को पवित्र, पावन, सात्विक आहार से हल्का रखना चाहिए। केवल हल्का शरीर ही निद्रा और आलस्य को समाप्त कर सकता है।

(ख) हमारी बुद्धि हमारे शरीर और परमात्मा के बीच सेतु का कार्य करती है। इस बुद्धि को माया जाल, असत्य और बुराईयों से मुक्त रखना अत्यन्त आवश्यक है। पूरी तरह से स्वच्छ एवं पवित्र बुद्धि ही सभी सफलताओं का मूलाधार है।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

(ग) आत्मा को सदैव परमात्मा की अनुभूति में लगाये रखना चाहिए। परन्तु जब शरीर रोगी हो और मन छल करने वाला हो तो आत्मा परमात्मा की अनुभूति पर केन्द्रित नहीं हो सकती।

ऋग्वेद मन्त्र 1.29.4

ससन्तु त्या अरातयो बोधन्तु शूर रातयः।
आ तू न इन्द्र शंसय गोष्ठश्वेषु शुभ्रिषु सहस्रेषु तुवीमघ ॥ 4 ॥

ससन्तु – निद्रा

त्या: – जो

अरातयः – दान वृत्ति, त्याग तथा निःस्वार्थता के अभाव वाली प्रवृत्ति

बोधन्तु – अनुभूति के लिए जाग्रत

शूर – बहादुर, शत्रुओं को पराजित करने वाले, परमात्मा

रातयः – दानी, दूसरों के कल्याण के लिए त्याग करने वाले

(आ – शंसय से पूर्व लगाकर)

तू – अभी

नः – हमें

इन्द्र – परमात्मा

(शंसय – आ शंसय) प्रशंसनीय बनाता है

गोषु – भूमि, गाय, ज्ञानेन्द्रियाँ

अश्वेषु – घोड़े, कर्मन्द्रियाँ

शुभ्रिषु – सुख देने वाले

सहस्रेषु – असंख्य

तुवीमघ – प्रशंसनीय गौरवशाली सम्पत्तियाँ।

व्याख्या :-

परमात्मा की अनुभूति तथा प्रशंसनीय गौरवशाली सम्पत्तियाँ अर्जित करने के लिए सबसे महत्वपूर्ण तत्व क्या है?

जिन लोगों में दान, त्याग और स्वार्थरहित त्याग की प्रवृत्तियों का अभाव होता है, वे आध्यात्मिक लक्ष्य की तरफ तो सुशुप्त होते हैं। ऐसे लोग केवल भौतिक सम्पत्तियों का ही आनन्द लेते हैं और वह भी रोगों, अपराधी और नकारात्मक कर्मों के साथ। यह भौतिकवादी मार्ग है।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

जब कि जो लोग सबके लिए दानी, दूसरों के कल्याण के लिए कुछ भी त्याग करने के लिए सदैव तत्पर और निःस्वार्थ कार्यों को करने वाले होते हैं, वे सदैव एक शूरवीर सर्वोच्च सत्ता, परमात्मा, की अनुभूति के प्रति जाग्रत होते हैं। यह आध्यात्मवादी मार्ग है।

यदि हम सबके लिए दानी बनने का प्रयास करें, सदैव सब कुछ त्याग करने के लिए तत्पर, तभी केवल परमात्मा ही हमारे अन्दर सुधार पैदा करके हमें प्रशंसनीय बनाते हैं और हमें ज्ञानेन्द्रियों और कर्मेन्द्रियों की शक्ति के साथ-साथ असंख्य प्रशंसनीय तथा गौरवशाली सम्पत्तियाँ भी देते हैं।

जीवन में सार्थकता

“देने वाला प्राप्त करता है” – यह क्या सूत्र है?

दान और त्याग करने की प्रवृत्तियाँ अन्ततः आपको न केवल आध्यात्मिक मार्ग पर अपितु किसी भी भौतिकवादी मार्ग पर सफलता उपलब्ध कराती है। एक देने वाले पर उसके लाभार्थी तथा अन्य सभी लोग सरलतापूर्वक विश्वास करते हैं। अन्ततः, एक देने वाले व्यक्ति को सभी प्रशंसाओं के साथ स्थायित्व वाली गौरवशाली सम्पत्तियाँ प्राप्त होती हैं। अतः “देने वाला प्राप्त करता है” – यह सूत्र सदैव सत्य स्थापित होता है। देते जाओ, पाते जाओ।

ऋग्वेद मन्त्र 1.29.5

समिन्द्र गर्दभं मृण नुवन्तं पापयामुया ।
आ तू न इन्द्र शंसय गोष्वश्वेषु शुभ्रिषु सहस्रेषु तुवीमघ ॥ ५ ॥

(सम – मृण से पूर्व लगाकर)

इन्द्र – परमात्मा, न्याय का सर्वोच्च राजा

गर्दभम् – गधे की तरह

(मृण – सम मृण) – उचित प्रकार से दण्डित

नुवन्तम् – बोलते हुए, करते हुए

पापयामुया – पापपूर्वक, धोखे से

(आ – शंसय से पूर्व लगाकर)

तू – अभी

नः – हमें

इन्द्र – परमात्मा

(शंसय – आ शंसय) प्रशंसनीय बनाता है

गोषु – भूमि, गाय, ज्ञानेन्द्रियाँ

अश्वेषु – घोड़े, कर्मेन्द्रियाँ

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

शुभ्रिषु – सुख देने वाले

सहस्रेषु – असंख्य

तुवीमघ – प्रशंसनीय गौरवशाली सम्पत्तियाँ।

व्याख्या :-

झूठ बोलने वाले एवं पापियों से कैसा व्यवहार करें?

परमात्मा न्याय की सर्वोच्च शक्ति के रूप में कार्य करता है और उन लोगों को समुचित दण्ड देता है, जो एक गधे की तरह पापपूर्वक या धोखे के उद्देश्य से बोलते हैं या कार्य करते हैं।

सर्वप्रथम हमें यह अनुभूति रखनी चाहिए कि दूसरों को धोखा देने के उद्देश्य से बोलना या कार्य करना एक पाप है और हमें ऐसे पापकर्म तथा वाणी से दूर रहना चाहिए।

द्वितीय समाज ऐसे लोगों को एक गधे के समान समझें, जो कभी भी ठीक पथ पर नहीं चलता और इसके लिए उसे लगातार दण्ड से दण्डित करना पड़ता है।

अतः ऐसे दुराचारी मन वाले लोगों को तब तक उचित दण्ड दिया जाना चाहिए, जब तक उनमें सुधार न हो जाये। तभी केवल परमात्मा हमारे अन्दर सुधार पैदा कर सकते हैं, हमें प्रशंसनीय बनाते हैं और हमें ज्ञानेन्द्रियों और कर्मन्दियों की शक्ति के साथ-साथ असंख्य प्रशंसनीय तथा गौरवशाली सम्पत्तियाँ भी देते हैं।

जीवन में सार्थकता

समाज को विश्वसनीय कौन बनाता है और प्रशंसनीय गौरवशाली सम्पदा कैसे अर्जित होती है?

झूठ बोलना सभी अपराधों का मूल है। सत्यवादन हमें विश्वसनीय बनाता है।

समाज में आपराधिक न्याय व्यवस्था की आवश्यकता ही न पड़े। यदि सभी नागरिक झूठ बोलना बन्द कर दें और धोखा देने की प्रवृत्तियों का त्याग कर दें। जब किसी समाज के लोग पूर्ण सत्यवादी हो जाते हैं तो पुलिस, अदालतों, जेलों और समूची न्याय व्यवस्था की आवश्यकता ही नहीं रहती। इन सभी पर होने वाले सरकारी खर्च भी बचाये जा सकते हैं।

कानून की अदालतों में जितने भी मुकद्दमे विचाराधीन हैं, उनमें से निश्चित रूप से कोई एक पक्ष सत्य होता है तो दूसरा असत्य। यदि समाज के द्वारा सत्यवादी मनुष्य बनने की संस्कृति का अनुसरण किया जाये तो कानून की अदालतों में बहुत कम मुकद्दमे होंगे।

केवल सत्यवादिता ही हमारे समाज को विश्वसनीय बनाती है और प्रशंसनीय गौरवशाली सम्पदा अर्जित हो पाती है।

ऋग्वेद मन्त्र 1.29.6

पताति कुण्डृणाच्या दूरं वातो वनादधि।

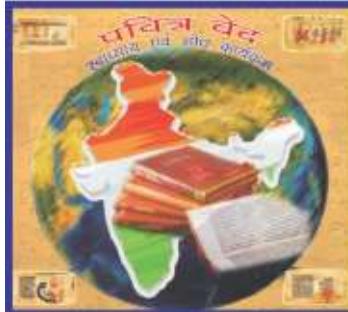
आ तू न इन्द्र शंसय गोष्वशेषु शुभ्रिषु सहस्रेषु तुवीमघ ॥ 6 ॥

पताति – चलती है

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

कुण्डृणाच्या — बुराई, कुटिलता, धूर्तता
 दूरम् — दूर
 वातः — वायु
 वनात् — वनों से
 अधि — अत्यन्त
 (आ — शंसय से पूर्व लगाकर)
 तू — अभी
 नः — हमें
 इन्द्र — परमात्मा
 (शंसय — आ शंसय) प्रशंसनीय बनाता है
 गोषु — भूमि, गाय, ज्ञानेन्द्रियाँ
 अश्वेषु — घोड़े, कर्मेन्द्रियाँ
 शुश्रिषु — सुख देने वाले
 सहस्रेषु — असंख्य
 तुवीमघ — प्रशंसनीय गौरवशाली सम्पत्तियाँ

व्याख्या :-

प्रशंसनीय गौरवशाली सम्पदा अर्जित करने के लिए हम बुरे विचारों को अपने से दूर कैसे रखें? जैसे एक तूफानी वायु वनों से दूर रहती है, उसी प्रकार बुराईयाँ, धूर्तता आदि वाले विचार भी हमारे मनरूपी वन से दूर रहते हैं। तभी केवल परमात्मा ही हमारे अन्दर सुधार पैदा करके हमें प्रशंसनीय बनाते हैं और हमें ज्ञानेन्द्रियों और कर्मन्द्रियों की शक्ति के साथ-साथ असंख्य प्रशंसनीय तथा गौरवशाली सम्पत्तियाँ भी देते हैं।

जीवन में सार्थकता

दिव्यता का घना वन कौन सा है?

वनों के बड़े-2 और पुराने वृक्ष अत्यन्त ताकतवर होते हैं और एक-दूसरे को सहारा देते हैं क्योंकि उनका घनत्व अधिक होता है और वे एक दूसरे के निकट होते हैं। इसलिए तूफानी वायु ऐसे घने वनों की हानि नहीं कर पाती और दूर चली जाती है। महान् दिव्य विचार भी हमारे मन के भीतर दिव्यता के घने विचारों की तरह कार्य करते हैं। ऐसे मस्तिष्क में बुरे विचार कभी प्रवेश नहीं करते और ऐसे महान् श्रेष्ठ और दिव्य मन से सदैव अत्यन्त दर रहते हैं।

ऋग्वेद मन्त्र 1.29.7

सर्वं परिक्रोशं जहि जम्भया ककदाश्वम् ।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on theyedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

आ तू न इन्द्र शंसय गोष्ठश्वेषु शुभ्रिषु सहस्रेषु तुवीमघ ॥ ७ ॥

सर्वम् – सभी

परिक्रोशम् – क्रोध

जहि – नाश करो

जम्भया – नाश करो

कृकदाश्वम् – दर्द देने वाली, हिंसक वृत्तियाँ
(आ – शंसय से पूर्व लगाकर)

तू – अभी

नः – हमें

इन्द्र – परमात्मा

(शंसय – आ शंसय) प्रशंसनीय बनाता है

गोषु – भूमि, गाय, ज्ञानेन्द्रियाँ

अश्वेषु – घोड़े, कर्मेन्द्रियाँ

शुभ्रिषु – सुख देने वाले

सहस्रेषु – असंख्य

तुवीमघ – प्रशंसनीय गौरवशाली सम्पत्तियाँ।

व्याख्या :-

क्रोध के साथ कैसे निपटा जाये?

परमात्मा से प्रार्थना करो और अपने मन में यह दृढ़ निश्चय करो कि क्रोध किसी भी कारण उत्पन्न हुआ हो, उसे नष्ट करना ही है और दूसरों को दर्द देने वाले अर्थात् हिंसक प्रवृत्ति का नाश करना है, तभी केवल परमात्मा ही हमारे अन्दर सुधार पैदा करके हमें प्रशंसनीय बनाते हैं और हमें ज्ञानेन्द्रियों और कर्मेन्द्रियों की शक्ति के साथ-साथ असंख्य प्रशंसनीय तथा गौरवशाली सम्पत्तियाँ भी देते हैं।

जीवन में सार्थकता

क्रोध और हिंसा हमारी क्या हानि करते हैं?

क्रोध और हिंसा न केवल अनेकों अन्य लोगों की हानि करते हैं, अपितु हमारी अपनी अधिक गहरी हानि करते हैं। वे हमारे मन और हमारी आध्यात्मिक प्रगति को भी बाधित करते हैं। एक क्रोधी व्यक्ति कभी भी दूसरों के द्वारा पसन्द नहीं किया जाता। इसलिए गौरवशाली सम्पदा, भौतिकवादी या आध्यात्मिक सम्पदा, को अर्जित करने के लिए हमें सदा के लिए अपने मन से क्रोध और हिंसा के नाश का दृढ़ संकल्प करना ही होगा।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

ऋग्वेद मण्डल-1 सूक्त 30

ऋग्वेद मन्त्र 1.30.1

आ व इन्द्रं क्रिविं यथा वाजयन्तः शतक्रतुम् ।
मंहिष्ठं सिन्च इन्दुभिः ॥ १ ॥

(आ – सिन्च से पूर्व लगाकर)

व – आप

इन्द्रम् – परमात्मा, इन्द्रियों का नियन्त्रक

क्रिविम् – कुंआ,

यथा – के समान

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

वाजयन्तः – शक्तिशाली और विजयी
शतक्रतुम् – असंख्य गतिविधियों वाला
मंहिष्ठम् – महान्
(सिन्च – आ सिन्च) सींचना, पूर्ण सेवा
इन्दुभिः – बूँदों से

व्याख्या :-

कुंए के लक्षणों की तुलना भगवान से किस प्रकार की गयी है?
परमपिता परमात्मा, आप! एक कुंए के समान हो – (क) शक्तिशाली एवं विजयी, (ख) असंख्य कार्यों वाले, (ग) महान् एवं (घ) सिंचित करते हो, अपनी बूँदों से पूर्ण सेवा करते हो।
यह चारों लक्षण कुंए के हैं और भगवान पर भी लागू होते हैं। भगवान के शक्तिशाली कुंए की गहराई की कोई सीमा नहीं है। इसीलिए वह अत्यन्त शक्तिशाली और विजयी है। वह ऐसे असंख्य कार्य करता है, जो सब महान् हैं और सृष्टि के सभी जीवों के जीवन को सिंचित करते हैं। इसी प्रकार एक कुंआ भी अपने आसपास की भूमि और असंख्य लोगों के लिए भगवान की तरह ही कार्य करता है।

जीवन में सार्थकता

इन्द्रियों के नियंत्रक की तुलना कुंए से किस प्रकार की गयी है?
इन्द्रियों पर नियंत्रण करने वाला एक सच्चा व्यक्ति भी असंख्य कार्यों और सबको आशीर्वाद देने वाला कुंआ होता है। इन्द्रियों के नियंत्रक व्यक्ति के लिए भी इन्द्र शब्द प्रयोग होता है। जब एक व्यक्ति इन्द्र बन जाता है तो इस बात की पूरी सम्भावना होती है कि वह परमात्मा, सर्वोच्च दिव्यता, का एक महान् सत्य प्रतिनिधि है। वह जीवन के सभी संग्रामों में शक्तिशाली और विजयी बन जाता है। वह ऐसे सैकड़ों कार्य करता है जो समाज के लिए सामान्यतः महान् महत्व के होते हैं और इस प्रकार वह असंख्य लोगों की प्यास बुझाता है तथा एक कुंए की तरह आसपास की भूमि के सभी क्षेत्रों को सिंचित करता है। जीवन की गतिविधियों को करते हुए हमें कुंए के इन लक्षणों का अनुसरण करना चाहिए और एक दिव्य व्यक्तित्व की तरह सबके प्रेम का अधिकारी बनना चाहिए।

ऋग्वेद मन्त्र 1.30.2

शतं वा यः शुचीनां सहस्रं वा समाशिराम् ।
एदु निम्नं न रीयते ॥ २ ॥

शतम् – सैकड़ों
वा – और
यः – जो
शुचीनाम् – शुद्ध करने वाले कार्य

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

सहस्रम् – हजारे

वा – और

समाशिराम् – बुराईयों का नाश तथा परिपक्वता अर्जित करने के लक्षणों की स्थापना।

(एदु – इत उ) निश्चित रूप से वह

निम्नम् – निम्न

न – नहीं

रीयते – प्राप्त करता

व्याख्या :-

हमें शुद्ध करने तथा बुराईयों का नाश करने के कारण क्या परमात्मा लोगों की नजरों में गिर जाता है?

अपनी दिव्य शक्तियों के साथ परमात्मा असंख्य लोगों और वस्तुओं को शुद्ध करता है, हम सबमें परिपक्वता लाने तथा बुराईयों के नाश के लिए अनेकों विशेष लक्षणों और गुणों को पैदा करता है, परन्तु फिर भी परमात्मा और उसकी शक्तियां निम्न कोटि की नहीं मानी जाती। वे सब महान् दिव्य शक्तियों की तरह पूजी जाती हैं।

जीवन में सार्थकता

अन्य लोगों की सेवा करते समय क्या हमें अपने स्तर में हीनता का भाव महसूस करना चाहिए?

यदि हम लोगों के मस्तिष्क को शुद्ध करते हैं, उनमें परिपक्वता लाने के लिए उन्हें ज्ञान देते हैं और बुरे विचारों के नाश के लिए उन्हें आध्यात्मिक पथ पर प्रगतिशील करते हैं तो हमें स्वयं को लोगों की दृष्टि में कभी भी हीन नहीं समझना चाहिए। बल्कि प्रत्येक व्यक्ति ऐसे शुद्धीकरण करने वाले और लोगों को शिक्षित करने वाले लोगों का सम्मान करता है। हमें अपने व्यक्तिगत हितों की लागत पर भी ऐसी गतिविधियां सम्पन्न करनी चाहिए। ऐसा करते हुए हमें अपनी व्यक्तिगत पसन्द, नापसन्द तथा सोच की भी परवाह नहीं करनी चाहिए।

अग्नि का एक प्राकृतिक लक्षण है ऊपर की दिशा में जाना परन्तु सूर्य की गर्भी भूमि पर आती है, जिससे लोगों को शुद्ध कर सके।

पानी का प्राकृतिक लक्षण है, नीचे की दिशा में जाना परन्तु सूर्य का ताप इसे वाष्णीकृत करके ऊपर ले जाता है और इसे बादल का रूप देता है, जिससे यह पुनः सबके कल्याण के लिए धरती पर वर्षा रूप में आ सके।

इस प्रकार, अग्नि और जल दोनों केवल हमारे कल्याण के लिए अपनी प्राकृतिक गति वाले लक्षण के विपरीत गति करते हैं।

ऋग्वेद मन्त्र 1.30.3

सं यन्मदाय शुभिण एना ह्यस्योदरे।

समुद्रो न व्यचो दधे ॥ 3 ॥

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

सम् – समान रूप से, उच्च रूप से

यत् – जो

मदाय – आनन्द का अनुभव करने वाला

शुष्मिणे – बुराईयों और शत्रुओं को कमजोर करने वाली प्रशंसनीय शक्ति

एना – वह

हि – केवल

अस्य – उसकी

उदरे – मध्य क्षेत्र

समुद्रः – समुद्र

न – जैसे

व्यचः – विस्तृत

दधे – धारण

व्याख्या :-

भगवान की आनन्ददायक शक्तियाँ किसमें स्थापित होती हैं?

सूर्य और वायु भगवान की समान और उच्च शक्तियाँ हैं, जो सबके लिए आनन्ददायक हैं तथा अवगुणों, अपवित्रताओं और शत्रुओं को कमजोर करने के लिए इनके पास प्रशंसनीय शक्तियाँ हैं। प्रकाश, वायु और ऊर्जा आदि ये शक्तियाँ सूर्य तथा बादलों के रूप में मध्य क्षेत्रों में स्थापित हैं। एक समुद्र की तरह इन दिव्य खगोलीय पिण्डों के पास अनेकों दिव्य शक्तियां हैं।

जीवन में सार्थकता

महान लोगों में शक्तियाँ कहाँ स्थापित होती हैं?

समाज में महान् लोग भी उच्च स्तर के आनन्ददायक और प्रशंसनीय शक्ति वाले होते हैं, जिससे वे अवगुणों, अपवित्रताओं और शत्रुओं का नाश करते हैं। वे ऐसी शक्तियाँ अपने दिल में रखते हैं, जो समुद्र की तरह विस्तृत होता है। ऐसे लोग प्रेम, कल्याण और त्याग जैसी भावनाओं के साथ उदार हृदय होते हैं।

ऋग्वेद मन्त्र 1.30.4

अयम् ते समतसि कपोतइव गर्भधिम् ।

वचस्तच्चिन्न ओहसे ॥ 4 ॥

अयम् – यह (आनन्द तथा प्रशंसनीय शक्तियाँ)

ते – निश्चित रूप से जानता

ते – आपकी

सम – समान, नियमित

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

अतसि – आता, प्राप्त करता
कपोत – कबूतर
इव – जैसे कि
गर्भधिम् – कबूतरी
वचः – वाणी
तत् – वह
चित् – स्थापित
नः – हमारे
ओहसे – उत्तम रूप से प्राप्त

व्याख्या :-

हमें भगवान का ज्ञान किस प्रकार प्राप्त होता है?

विगत तीसरे मन्त्र में वर्णित आनन्ददायक और प्रशंसनीय शक्तियों के बारे में हम यह जानते हैं कि ये शक्तियाँ समान तथा नियमित रूप से परमात्मा के द्वारा हमारे पास भेजी जाती हैं। इन शक्तियों का आगमन उस प्रकार होता है जैसे एक कबूतरी अपने नर कबूतर के द्वारा प्राप्त की जाती है।

ये शक्तियाँ हमारे गहरे हृदय में उत्तम प्रकार से प्राप्त और स्थापित ज्ञान की तरह होती हैं।

जीवन में सार्थकता

प्राकृतिक ज्ञान को दिव्य ज्ञान में कैसे परिवर्तित करें?

कबूतरी के गर्भ में वीर्य की स्थापना के उद्देश्य से उस कबूतरी का कबूतर के द्वारा प्राप्त किया जाना सभी जीव जोड़ों में एक सर्वमान्य लक्षण है।

यही दृष्टान्त दिव्य ज्ञान पर लागू किया जा सकता है, जिसे हम हर क्षण प्राप्त करते हैं। हमें अपने गहरे हृदय में एक गर्भ में उत्पन्न होने वाले बालक की तरह इस ज्ञान को प्राप्त करने, समझने और स्थापित करने की आवश्यकता है, जिससे हमारा आध्यात्मिक विकास हो।

ज्ञान और गुणों का प्राकृतिक प्रवाह प्रतिक्षण हम सबमें हो रहा है। सर्वोच्च शक्ति परमात्मा के साथ एक स्पष्ट और संवेदनशील जुड़ाव के सहारे हमें ज्ञान के इस प्राकृतिक प्रवाह को महसूस, प्राप्त, विकसित और जीवन में लागू करना चाहिए। हमें इस ज्ञान को दिव्य बनाने के लिए अपने गहरे हृदय में स्थापित करना चाहिए। इस प्रकार ज्ञान का वह प्राकृतिक प्रभाव एक विद्युत करंट की तरह हमारे भीतर तथा हमारे चारों तरफ दिव्यता का रूप ले सकता है, जब हम अपने गहरे हृदय में एक गर्भस्थ बालक की तरह सदैव स्थापित हों।

ऋग्वेद मन्त्र 1.30.5

स्तोत्रं राधानां पते गिर्वाहो वीर यस्य ते ।

विभूतिरस्तु सूनृता ॥ ५ ॥

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

स्तोत्रम् — ईश्वर का स्तुति गान

राधानाम् — सुख, सफलतायें

पते — संरक्षक

गिर्वाहो — वैदिक ज्ञान के ज्ञाता

वीर — बहादुर

यस्य — जो

ते — आपका

विभूतिः — विशेष शक्तियाँ

अस्तु — हों

सूनृता — महान् और सत्य वाणी

व्याख्या :-

कौन एक बहादुर व्यक्ति है?

ईश्वर की प्रशंसा करने के क्या लाभ हैं?

“वीर यस्य ते स्तोत्रम्” जो व्यक्ति परमात्मा की प्रशंसा का गान करता है, वही वीर पुरुष है। वह “राधानाम् पते” अर्थात् सब सुखों और सफलताओं का संरक्षक है। वह “गिर्वाहो” अर्थात् वैदिक ज्ञान का एक विद्वान् है। वह “विभूतिः” अर्थात् विशेष शक्तियों को प्राप्त करता है। उसकी वाणी “सूनृता” अर्थात् महान् और सत्य होती है।

जीवन में सार्थकता

वैदिक विवेक को प्राप्त करने तथा स्वयं को दिव्य बनाने की क्या प्रक्रिया है?

इस मन्त्र का मूल भाव हमें प्रेरित करता है कि हम परमात्मा की स्तुति में गान करें। इसका अर्थ है कि हम प्रत्येक अवस्था में यह महसूस करते रहें कि यह सर्वोच्च शक्ति का महान् दान है और इस सन्तुष्टि भाव से हम उसकी प्रशंसा करते हैं। प्रत्येक परिस्थिति हमारे अपने ही पुराने कर्मों का फल है। परमात्मा कभी कोई गलती नहीं करता। इस सोच के साथ जब हम परमात्मा की प्रशंसा और स्तुति करते हैं तो हमारे मन को शक्ति मिलती है। वह पूरी सकारात्मक सोच के साथ अपने सुखों और सफलताओं की रक्षा करने के योग्य बन जाता है। हमारी नकारात्मकता पूरी तरह से समाप्त हो जाती है। हमें वैदिक ज्ञान अनुभूति की प्रक्रिया से विशेष शक्तियों के साथ प्राप्त होता है। हमारी वाणी भी महान् और सत्यवादी हो जाती है। यह सभी उपलब्धियाँ परस्पर सम्बन्धित होती हैं।

अपने परिवार और समाज में भी हमें वृद्धजनों अर्थात् अपने माता-पिता, वरिष्ठ और उच्चाधिकारी, महान् नेता तथा मार्गदर्शक लोगों की स्तुति करते रहना चाहिए।

प्रत्येक परिस्थिति में संतोष ————— सकारात्मकता की उपलब्धि और नकारात्मकता का अंत ————— वैदिक विवेक की उपलब्धि ————— विशेष शक्तियों की उपलब्धि ————— वाणी पर महानता और सत्यता की स्थापना।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

ऋग्वेद मन्त्र 1.30.6

ऊर्ध्वस्तिष्ठा न ऊतयेऽस्मिन्वाजे शतक्रतो ।
समन्येषु ब्रवावहै ॥ 6 ॥

ऊर्ध्वः – उच्च स्थान

तिष्ठ – स्थापित

न – हमारी

ऊतये – संरक्षण के लिए

अस्मिन – इनमें

वाजे – संग्राम

शतक्रतो – असंख्य कर्मों का कर्ता

(सम – ब्रवावहै से पूर्व लगाकर)

अन्येषु – अन्य

(ब्रवावहै – सम ब्रवावहै) विनम्रतापूर्वक तथा लोकतांत्रिक रूप से बातचीत और व्यवहार करना

व्याख्या :-

हमें अपने जीवन में परमात्मा को कहाँ पर स्थापित करना चाहिए?

सर्वोच्च शक्ति होने के नाते परमात्मा असंख्य कार्यों का कर्ता है। हमें अपने जीवन में उसे सर्वोच्च स्तर पर अर्थात् गहरे हृदय में स्थापित करना चाहिए, जिससे हर प्रकार के संग्रामों और कठिनाईयों में हमारी रक्षा हो सके। हमें अन्य सभी लोगों के साथ पूरी विनम्रता लोकतांत्रिक व्यवहार के साथ सबकी सोच का आदर करते हुए व्यवहार करना चाहिए।

जीवन में सार्थकता

जीवन में उच्च अवस्था को कैसे प्राप्त करें?

अपने जीवन में परमात्मा को सर्वोच्च मार्गदर्शक शक्ति तथा प्रेम से भरे व्यक्तित्व की तरह स्वीकार और स्थापित करना चाहिए एवं सबके साथ सुन्दर व्यवहार करना चाहिए। आपको दिव्य ऊर्जायें प्राप्त होंगी और आप भी असंख्य कार्यों के कर्ता बन पाओगे। तब लोग आपकी सेवाओं को तथा आपको भी एक मार्गदर्शक और प्रेमपूर्ण शक्ति की तरह स्वीकार करेंगे।

अपने परिवार में, समाज में, किसी गैर सरकारी संस्था में या सरकार में केवल वही व्यक्ति उच्च स्तरों तक पहुँचते हैं, जो निम्न तीन बिन्दुओं को अपना लक्षण बनाते हैं :-

- क) परमात्मा को अपने मस्तिष्क में स्थापित करना,
- ख) अधिकाधिक कल्याणकारी कार्यों को करना,
- ग) विनम्रता और लोकतांत्रिक रूप से सबके साथ कार्य करना।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

ऋग्वेद मन्त्र 1.30.7

योगेयोगे तवस्तरं वाजेवाजे हवामहे ।
सखाय इन्द्रमूतये ॥ 7 ॥

योगे योगे – प्रत्येक संयुक्तीकरण पर
तवस्तरम् – हमारी शक्तियों और ज्ञान का संरक्षणकर्ता
वाजे वाजे – प्रत्येक संग्राम में
हवामहे – हम उसे पुकारते हैं
सखाय – मित्रवत होवे
इन्द्रम् – परमात्मा, इन्द्रियों का नियंत्रक, सक्रिय व्यक्ति
ऊतये – संरक्षण के लिए

व्याख्या :-

हमें परमात्मा की संगति और उसके साथ मित्रता क्यों करनी चाहिए?
हमें क्रियाशील और ऊर्जावान लोगों की संगति क्यों करनी चाहिए?

जब भी हम अपने भीतर परमात्मा से जुड़ते हैं तो वह हमारी शक्तियों और ज्ञान की रक्षा करता है, इसलिए शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक सभी संग्रामों में हम उसे पुकारते हैं। परमात्मा एक महान् विद्वत्तापूर्ण तथा संवेदनशील शक्ति है। हमें अपने हर प्रकार के रक्षण के लिए उस शक्ति के साथ मित्रता अवश्य करनी चाहिए।

इसी प्रकार इन्द्रियों के नियंत्रक को भी इन्द्र कहा जाता है। वह अत्यन्त क्रियाशील एवं ऊर्जावान व्यक्ति होता है। जब हम ऐसे व्यक्ति से जुड़ते हैं तो वह हमारा रक्षक भी बन सकता है। इसीलिए कठिन परिस्थितियों में हम ऐसे व्यक्ति को पुकारते हैं। प्रत्येक व्यक्ति अपने रक्षण के लिए ऐसे व्यक्ति के साथ ही मित्रता रखना चाहता है।

जीवन में सार्थकता

मित्र कैसे बनें?

आध्यात्मिक रूप से परमात्मा के मित्र बनो। परमात्मा के साथ इस मित्रता को महसूस करो, उसका सम्वर्द्धन करो और इसे सब लोगों पर लागू कर दो। इस प्रकार अपनी-अपनी रक्षा के लिए हर व्यक्ति आपको मित्र रूप में स्वीकार करेगा। आवश्यकता के समय काम आने वाला मित्र ही वास्तविक मित्र है।

ऋग्वेद मन्त्र 1.30.8

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

आ घा गमद्यादि श्रवत्सहस्त्रिणीभिरुतिभिः ।
वाजेभिरुप नो हवम् ॥१॥

(आ – गमत से पूर्व लगाकर)

घा – निश्चित रूप से

(गमत – आ गमत) आता है, प्राप्त करता है

यदि – यदि

श्रवत – सुनता है

सहस्रिणीभिः – हजारों

ऊतिभिः – संरक्षण

वाजेभिः – संग्रामों के विजयी होने की शक्तियां

उप – निकट

नः – हमारी

हवम् – प्रार्थनायें

व्याख्या :-

क्या परमात्मा हमारी प्रार्थनाओं को सुनता है?

यदि परमात्मा हमारी प्रार्थनाओं को सुनता है तो वह सभी संग्रामों में हमारी रक्षा और सफलता के लिए हमारे निकट निश्चित रूप से आता है अर्थात् वह हमारे हृदय में महसूस होता है।

यह निश्चित करने के लिए कि कोई हमारी प्रार्थनाओं को सुने, हमारी प्रार्थनाओं को इतना मजबूत और गहरा होना चाहिए कि वह उसके हृदय और मस्तिष्क में प्रवेश कर जाये। हमारी प्रार्थनायें हमारी योग्यताओं और प्रयासों के बाद ही होनी चाहिए।

जीवन में सार्थकता

प्रार्थनाओं का क्या अर्थ है?

प्रार्थना सदैव किसी के द्वारा सहायता मांगने के रूप में होती हैं। इसका यह कदापि अर्थ नहीं है कि कोई दूसरा व्यक्ति हमारे सारे कर्तव्यों का पालन कर दे। प्रार्थनायें तभी सफल होती हैं, जब हम अपने दायित्व का निर्वाह कर चुके हों तथा किसी अन्य स्रोत से कुछ अन्य सहायता मॉगे। एक प्रसिद्ध कथन है – “परमात्मा उनकी सहायता करता है, जो स्वयं अपनी सहायता करते हैं।”

इस मन्त्र का आध्यात्मिक पक्ष यह है कि हमारे प्रयास तभी सफल और प्रभाव में दीर्घजीवी होंगे, जब अपने शारीरिक प्रयासों के बाद हम सर्वोच्च शक्ति से यह प्रार्थना करें कि वे हमारे प्रयासों को स्वीकार करें और उनमें अपना शुभाशीष सम्मिलित करें।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

ऋग्वेद मन्त्र 1.30.9

अनु प्रल्स्यौकसो हुवे तुविप्रतिं नरम् ।
यं ते पूर्वं पिता हुवे ॥ ९ ॥

अनु – अनुसरण

प्रल्स्य – अज्ञात काल से

ओकसः – सबका आधार

हुवे – आमंत्रित करते, पुकारते

तुविप्रतिम् – असीमित शक्तियां

नरम् – प्रोत्साहित करता है, नियुक्त करता है

यम् – जो

ते – आपके

पूर्वम् – पूर्वकालिक

पिता – पिता

हुवे – आमंत्रित, पुकारते

व्याख्या :-

हमें किसको पुकारना, अनुसरण करना और प्रार्थना करनी चाहिए?

हमें उस सर्वोच्च और असीम शक्ति का अनुसरण करते हुए उसे ही पुकारना चाहिए, जो हमें उत्साहित करते हैं और भिन्न-2 गतिविधियों के लिए हमें नियुक्त करते हैं, जो सब वस्तुओं और कार्यों के आधार हैं तथा जिन्हें हमारे पूर्वज भी पुकारते रहे हैं और उनका अनुसरण करते रहे हैं।

जीवन में सार्थकता

एक-ईश्वरवाद के क्या लाभ हैं?

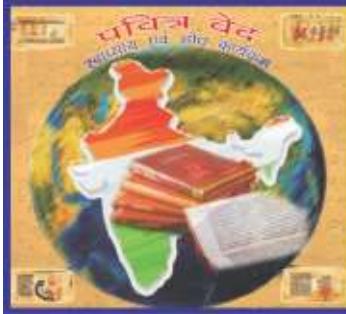
इस मन्त्र का मुख्य विचार एक-ईश्वरवाद है, अर्थात् एक परमात्मा, एक मानवीय सम्बन्ध और परस्पर व्यवहार। एक-ईश्वरवाद सामाजिक भिन्नताओं पर आधारित अनेकों समस्याओं का समाधान कर सकता है। यदि हर व्यक्ति अपने ही भीतर विद्यमान सर्वोच्च शक्ति परमात्मा के साथ जुड़ना प्रारम्भ कर दे तो सामाजिक एकता और आध्यात्मिक एकता का एक सर्वमान्य मार्ग निकल सकता है। छोटी-2 भिन्नताओं पर आधारित सामाजिक भेदभाव की कई समस्यायें समाप्त हो सकती हैं। एक परमात्मा का भाव और उसकी अनुभूति के परिणामस्वरूप सर्वत्र एक मानवीय व्यवहार दिखाई देने लगेगा।

ऋग्वेद मन्त्र 1.30.10

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

तं त्वा वयं विश्ववाराऽस्तु शास्महे पुरुहुतः ।
सखे वसो जरितृभ्यः ॥ 10 ॥

तम् – वह

त्वा – आपके

वयम् – हम

विश्ववार – सृष्टि को भिन्न-2 प्रकार से पालन करता है।

आशास्महे – इच्छा करते

पुरुहुत – अनेकों द्वारा प्रशंसित और इच्छित

सखे – सबका मित्र

वसो – सबका वास

जरितृभ्यः – जो आपकी अनुभूति करते हैं, आपको भूलते नहीं और सदैव आपकी प्रशंसा करते हैं, उनके द्वारा

व्याख्या :-

परमात्मा को प्राप्त करने की हमारी इच्छा की पूर्ति में कौन हमारी सहायता कर सकता है?

हम परमात्मा की इच्छा करते हैं, जो भिन्न-2 प्रकार से इस सृष्टि का पालन करता है, जो अनेकों लोगों के द्वारा प्रशंसनीय और इच्छा के योग्य, जो सबका मित्र है और सबका आधार है। हमारी इच्छा केवल उन लोगों के माध्यम से पूर्ण हो सकती है, जिन्होंने परमात्मा की अनुभूति प्राप्त कर ली है, जो उसे भूलते नहीं हैं और हर परिस्थिति में उसकी प्रशंसा करते हैं।

जीवन में सार्थकता

अनुभूति प्राप्त संतों का आशीर्वाद कैसे प्राप्त करें?

परमात्मा को प्राप्त करने की इच्छा अनुभूति प्राप्त संतों के माध्यम से पूर्ण हो सकती है क्योंकि –

(क) उनके जीवन अपने आपमें एक क्रियात्मक प्रेरणा प्रस्तुत करते हैं, जो किताबी ज्ञान, सिद्धान्तों और अवधारणाओं से भिन्न होते हैं।

(ख) हम उनके पद चिह्नों का अनुसरण करने के लिए प्रेरित हो जाते हैं।

(ग) उनकी प्रेरणायें अनेकों प्रकार की होती हैं, जैसे – उनके द्वारा स्पर्श किये जाने पर, उनसे वार्तालाप करके, उन्हें देखकर तथा उनके जीवन एवं विचारों को पढ़कर।

ऋग्वेद मन्त्र 1.30.11

अस्माकं शिप्रिणीनां सोमपाः सोमपालाम् ।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

सखे वज्रिन्त्सखीनाम् ॥ 11 ॥

अस्माकम् – हमारी

शिप्रिणीनाम् – गृहपत्नियां, नासिकायें

सोमपा: – समूची सृष्टि के संरक्षक

सोमपानाम् – समूची सृष्टि के उत्पत्तिकर्ता

सखे – मित्र, सुखों को देने वाला

वज्रिन – शत्रुओं का नाश करने के लिए हथियार

सखीनाम् – परमात्मा के साथ मित्रता की इच्छा करने वाला ।

व्याख्या :-

सभी सम्बन्धों की सुरक्षा के लिए मूल प्रेरणा क्या हो सकती है?

नारी शक्ति और श्वांस लेने वाली नासिकाओं पर यह अत्यन्त सुन्दर मन्त्र है।

हमारी गृहपत्नियाँ परमात्मा के साथ मित्रता की इच्छा करने वाली होनी चाहिए, तभी वे परमात्मा की तरह हमारे गुणों को पैदा करने वाली और उनकी रक्षा करने वाली बन पायेंगी, तभी वे सुखों को देने वाली और शत्रुओं का नाश करने वाली बन पायेंगी ।

महिलाओं में निम्न गुण / लक्षण होते हैं –

(क) सोमपा: – समूची सृष्टि के संरक्षक

(ख) सोमपानाम् – समूची सृष्टि के उत्पत्तिकर्ता

(ग) सखे – मित्र, सुखों को देने वाला

(घ) वज्रिन – शत्रुओं का नाश करने के लिए हथियार

(ङ) सखीनाम् – परमात्मा के साथ मित्रता की इच्छा करने वाला ।

हमारी नासिकायें अर्थात् हमारे श्वांस भी परमात्मा की इच्छा करें। प्रतिक्षण हमें केवल परमात्मा की इच्छा करनी चाहिए। केवल ऐसा जीवन ही परमात्मा की अनुभूति के मार्ग पर प्रगति करता है।

हमारी नासिकायें भी उक्त लक्षणों से समान रूप में सुसज्जित होती हैं, जो लक्षण नारी शक्ति को दिये गये हैं।

जीवन में सार्थकता

कौन परमात्मा के साथ मित्रता की इच्छा करता है?

परमात्मा के साथ मित्रता का क्या परिणाम होता है?

गृहस्थ जीवन की गतिविधियों का केन्द्र नारी शक्ति ही होती है। यदि नारी शक्ति आत्मानुभूति और परमात्मा की अनुभूति के आध्यात्मिक पथ पर चलती है तो इसकी परिवार के सभी सदस्यों के ऊपर गहरी छाप दिखायी देती है।

परमात्मा की अनुभूति के पथ पर चलने वाले सभी महान् संत भी महिलाओं की तरह कोमल स्वभाव होते हैं और समाज पर उनका प्रभाव भी दूरगमी होता है।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

यही अवस्था हमारी नासिकाओं की है, जो परमात्मा का मार्ग माने जाते हैं क्योंकि परमात्मा श्वांस के साथ इसी मार्ग से अन्दर और बाहर गतिमान रहते हैं। (सन्दर्भ ऋग्वेद 1.22.4)

महिलाओं, महान् संतों और हमारी नासिकाओं की तरह जो भी परमात्मा के साथ मित्रता की इच्छा करता है, वह गुणों का उत्पत्तिकर्ता और रक्षक बन जायेगा, वह सबका मित्र होगा और शत्रुओं को नाश करने का एक अस्त्र होगा।

ऋग्वेद मन्त्र 1.30.12

तथा तदस्तु सोमपाः सखे वज्जित्तथा कृणु ।
यथा त उश्मसीष्टये ॥ 12 ॥

तथा – इस मार्ग पर

तत् – आपकी मित्रता

अस्तु – हो

सोमपाः – समूची सृष्टि के संरक्षक

सखे – मित्र, सुखों को देने वाला

वज्जिन – शत्रुओं का नाश करने के लिए हथियार

तथा – इस प्रकार

कृणु – करता है

यथा – जिससे कि

ते – आपके

उश्मसि – हम इच्छा करते हैं

इष्टये – अपनी प्रशंसा के लिए

व्याख्या :-

क्या सभी को परमात्मा के साथ मित्रता की इच्छा रखनी चाहिए?

विगत मन्त्र (ऋग्वेद 1.30.11) के अनुसार हमारी गृह पत्नियाँ, महान् सन्त और हमारी नासिकायें परमात्मा के साथ मित्रता की इच्छा करते हैं। उसी प्रकार हम सब भी आपकी मित्रता की कामना करते हैं। कृपया आप हमारे साथ रहें क्योंकि आप गुणों के रक्षक हैं, सबके मित्र हैं और शत्रुओं के नाशक हैं। कृपया हमारे सुखों के लिए आपके साथ हमारी मित्रता की इच्छा को सफल करें।

जीवन में सार्थकता

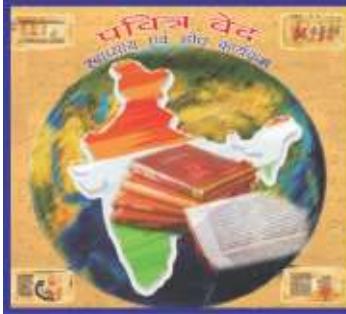
क्या परमात्मा के साथ मित्रता हमें पूरी तरह से सुरक्षित कर सकती है?

ऋग्वेद 1.30.11 तथा 12 प्रत्येक व्यक्ति को परमात्मा के साथ मित्रता की इच्छा के लिए प्रेरित करते हैं क्योंकि वह निम्न लक्षणों से सुरक्षित होता है –

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

- (क) सोमपा: — समूची सृष्टि के संरक्षक
(ख) सोमपालाम् — समूची सृष्टि के उत्पत्तिकर्ता
(ग) सखे — मित्र, सुखों को देने वाला
(घ) वज्रिन — शत्रुओं का नाश करने के लिए हथियार
परमात्मा के साथ मित्रता का एक लक्षण जीवन को पूर्ण कर देगा और सदैव सुरक्षा को सुनिश्चित करेगा।

ऋग्वेद मन्त्र 1.30.13

रेवतीर्नः सधमाद इन्द्रे सन्तु तुविवाजाः ।
क्षुमन्तो याभिर्मदेम ॥ 13 ॥

रेवतीः — प्रशंसनीय गौरवशाली सम्पदा
नः — हमारी
सधमाद — संयुक्त प्रशंसा के लिए
इन्द्रे — भगवान की मित्रता के लिए
सन्तु — हों
तुविवाजाः — प्रशंसनीय भोजन
क्षुमन्तः — भूख
याभिः — उससे
मदेम — हम आनन्दित होते हैं।

व्याख्या :-

हमारी सम्पदा तथा भोजन किस प्रकार प्रशंसनीय हो सकते हैं?

प्रशंसित सम्पदा और भोजन की सार्थकता अनेकों लोगों के सुख सुनिश्चित कराने में होती है। इसकी बड़ी मात्रा से अनेकों लोगों की भूख और प्यास बुझाई जानी चाहिए। इसी लक्षण के साथ हमें अपनी अत्यधिक सम्पदा और भोजन का आनन्द लेना चाहिए। यदि हमारी सम्पदा और भोजन दूसरों की भूख मिटाने में प्रयोग होती है तो हमें अपनी भूख का भी आनन्द लेना चाहिए।

जीवन में सार्थकता

सम्पदा का समुचित प्रयोग कैसे होता है?

हमारी धन सम्पदा और भोजन तभी प्रशंसनीय हो सकते हैं यदि वे अनेकों लोगों की भूख और प्यास शान्त करने के योग्य हों और दूसरों की कठिनाईयों को कम कर सके। हमें अपनी सम्पदा और भोजन का प्रयोग इसी रूप में करना चाहिए, चाहे इसके लिए हमें स्वयं को भूखा रहना पड़े। हमारे अन्दर अपनी भूख सहन करने की ओर दूसरों की भूख मिटाने की शक्ति होनी चाहिए।

ऋग्वेद मन्त्र 1.30.14

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

आ घ त्वावान्त्मनाप्तः स्तोतृभ्यो धृष्णवियानः ।
ऋणोरक्षं न चक्रयोः ॥ 14 ॥

(आ – ऋणों से पूर्व लगाकर)

घ – निश्चित रूप से

त्वावान – आपके जैसा होने की इच्छा करने वाला

त्मना आप्तः – स्व-अनुभूति में संतुष्ट

स्तोतृभ्यः – परमात्मा के श्रद्धालुओं के लिए

धृष्णो – शत्रुओं का नाश करने वाला परमात्मा

इयानः – सदैव उन्नतिशील, राजा की तरह

(ऋणोः – आ ऋणोः) प्राप्त कर्ता

अक्षम् – अक्ष, धुरी

न – जैसे

चक्रयोः – पहिये में

व्याख्या :-

हमारे जीवन का एकिसस अर्थात् मूलाधार क्या है?

परमात्मा अपने श्रद्धालु भक्तों के शत्रुओं का नाश करता है, बेशक, उनकी तपस्या और त्याग कार्यों के प्रतिफल में उन्हें शक्तिशाली बनाकर। श्रद्धालु भगवान के समान बनना चाहता है और आत्मानुभूति के मार्ग और अपने प्रयासों से सन्तुष्ट रहता है। वह सदैव इस पथ पर प्रगतिशील रहता है। वह भगवान को अपने जीवन चक्र के एकिसस अर्थात् मूलाधार की तरह प्राप्त करने की प्रार्थना करता है

जीवन में सार्थकता

पहिए में एकिसस का क्या महत्व होता है?

यदि एकिसस मजबूत होगा तो पहिया अधिक बोझ वहन कर सकता है।

यदि हम भगवान को अपने मूल, केन्द्रीय और सर्वशक्तिमान अंग की तरह स्वीकार और स्थापित कर लें जैसे पहिए में एकिसस होता है, तो स्वाभाविक रूप से हमारी आत्मा और मन की शक्ति बढ़ जायेगी, जिससे हमारे बाहरी और आन्तरिक सभी शत्रु नष्ट हो जायेंगे। ऐसा व्यक्ति अपने मार्ग पर एक राजा की तरह प्रगति करता है। उसकी सबसे बड़ी शक्ति आत्मानुभूति और अन्ततः ईश्वर अनुभूति की इच्छा और प्रयास ही होते हैं। यदि हम परमात्मा को अपने जीवन चक्र का एकिसस मान लें तो इसमें कोई सन्देह नहीं रह सकता कि हमारा जीवन उस सर्वोच्च शक्ति के चारों तरफ ही गति करेगा। यदि एकिसस मजबूत होगा पहिया अधिक बोझ वहन कर सकता है।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

ऋग्वेद मन्त्र 1.30.15

आ यदुवः शतक्रतवा कामं जरितृणाम् ।
ऋणोरक्षं न शचीभिः ॥ 15 ॥

(आ – ऋणोः से पूर्व लगाकर)

यत् – जो है

दुवः – परमात्मा की सेवा या परमात्मा की अनुभूति में

शतक्रतो – परमात्मा, असंख्य कर्मों का करने वाला

कामम् – इच्छा करता

जरितृणाम् – श्रद्धालुओं की

(ऋणोः – आ ऋणोः) – प्राप्त कर्ता

अक्षम् – अक्ष, धुरी

न – जैसे

शचीभिः – ज्ञान और गतिविधियां

व्याख्या :-

एकिसस और पहिए को चलने योग्य कौन बनाता है?

परमात्मा जो असंख्य कार्यों का कर्ता है, वह उन श्रद्धालुओं की सभी इच्छाओं को जानता है, जो उसकी सेवा में हैं या उसकी अनुभूति के लिए लालायित हैं। ऐसे लोग परमात्मा को अपने ज्ञान और गतिविधियों के बीच लगे एकिसस की तरह ही प्राप्त करते हैं और अनुभूति करते हैं।

जीवन में सार्थकता

परमात्मा किस प्रकार हमारा मार्गदर्शक शक्ति बन जाता है?

एक बार जब हम परमात्मा को अपने जीवन चक्र के बीच एकिसस के रूप में स्थापित कर लेते हैं और सदैव परमात्मा की सेवा में जीते हैं या उसकी अनुभूति के लिए तत्पर रहते हैं, जो सर्वोच्च शक्ति और असंख्य कार्यों का कर्ता है, जो हमारी इच्छा को जानता है और हमारे ज्ञान और गतिविधियों के बीच एकिसस की तरह कार्य करता है। वह हमें ज्ञान देता है और उसके बाद कार्य करने के लिए हमें प्रेरित करता है। इस प्रकार वह हमारे ज्ञान और गतिविधियों की निर्देशन शक्ति बन जाता है। इस प्रकार यह एकिसस जीवन रूपी चक्र का संचालन करता है।

ऋग्वेद मन्त्र 1.30.16

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

शशवदिन्दः पोप्रथाभिर्जिगाय नानदभिः शाश्वसभिर्धनानि ।
स नो हिरण्यरथं दंसनावान्त्स नः सनिता सनये स नोऽदात् ॥ 16 ॥

शशवत् – सदा रहने वाला
इन्द्रः – परमात्मा, सृष्टि का रचयिता
पोप्रथादभिः – स्थूल पदार्थों के साथ
जिगाय – उन्नति करता है
नानददभिः – महान् उत्साह के साथ
शाश्वसदभिः – प्रशंसनीय जीव
धनानि – भौतिक सम्पत्ति
सः – वह
नः – हमारे, हमारे लिए
हिरण्यरथम् – दिव्य रथ
दंसनावान – हमारे कर्मों का फल देने वाला
सः – वह
नः – हमारे लिए
सनिता – सभी ज्ञान, सुविधाजनक वस्तुयें
सनये – उपभोग के लिए
सः – वह
नः – हमारे
अदात् – देता है

व्याख्या :-

- कौन हमें दिव्य रथ उपलब्ध कराता है?
परमात्मा किस प्रकार इस सृष्टि पर नियन्त्रण करता है?
परमात्मा इस सृष्टि का रचयिता है और सदा विद्यमान शक्ति है।
(क) वह हमें एक दिव्य रथ अर्थात् यह शरीर उपलब्ध कराता है।
(ख) वह हमें सभी ज्ञान देता है और भोग के लिए सभी वस्तुएं देता है। वह हमें सदैव देता है क्योंकि वह सदा देने वाला दाता है।
(ग) वह सभी प्रशंसनीय जीवों को सभी स्थूल पदार्थों, भौतिक सम्पदा तथा महान् उत्साह के साथ प्रगति के योग्य बनाता है।
(घ) वह हमारे कर्मों का फल देता है।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

जीवन में सार्थकता

एक दाता के अनुशासन का क्या महत्व है?

इस सृष्टि में सभी जीव एक सर्वोच्च अनुशासन के अन्तर्गत कार्य करते हैं। इस नियम के मुख्य निम्न दृष्टिकोण हैं, जिनसे यह झलकता है कि हमारे जीवन के हर पक्ष में परमात्मा विद्यमान है :-

प्रथम - हिरण्यरथम् अर्थात् एक दिव्य रथ (परमात्मा द्वारा प्रदत्त)

द्वितीय - सनिता सनये अर्थात् सभी ज्ञान, सुविधाजनक वस्तुयें उपभोग के लिए (परमात्मा द्वारा प्रदत्त)

तृतीय - जिगाय नानददभिः अर्थात् महान् उत्साह के साथ उन्नति करता है (परमात्मा द्वारा योग्य बनाया गया)

चतुर्थ - दंसनावान अर्थात् हमारे कर्मों का फल देने वाला (परमात्मा)

इस प्रकार सृष्टि की यह अनादि सत्ता हमारी आत्मा की अनन्त यात्रा की भी अनादि सत्ता है।

इस मन्त्र का अनुपात भौतिक जीवन में भी देखा जा सकता है, चाहे यह हमारा व्यक्तिगत जीवन हो, पारिवारिक या सामाजिक जीवन हो। हमारे माता-पिता हमें जन्म देने के साथ-साथ हमें उन्नति तथा सम्पन्न होने की समस्त सुविधायें भी देते हैं। अन्ततः प्रत्येक माता-पिता का यह अधिकार है कि वे हमारी गतिविधियों के आधार पर या उनके लिए हमारे प्रेम और सेवा के आधार पर हमें प्रसन्न करें या नाप्रसन्न करें। इसी प्रकार हमें रोजगार देने वाले नियोक्ता तथा हमारे वरिष्ठ अधिकारी हमें जीवन चलाने और सुविधाजनक रूप से रहने में सहायक होते हैं। अन्ततः वे हमारे कार्यों का, हमारे अनुशासन का और हमारी वफादारी का मूल्यांकन करते हैं, जिससे यह निर्धारित हो सके कि हमें उनकी इकाई में जारी रहना है या नहीं।

इसलिए जब कोई व्यक्ति गम्भीरता के साथ सर्वोच्च पिता, माता, दाता और संरक्षक रूपी परमात्मा के साथ गम्भीरता के साथ जुड़ा रहता है तो उसके द्वारा आध्यात्मिक प्रगति सहज, सुन्दर और उत्साहवर्धक होती है।

ऋग्वेद मन्त्र 1.30.17

आश्विनावश्वावत्येषा यातं शवीरया ।

गोमद्धस्त्रा हिरण्यवत् ॥ 17 ॥

आश्विनौ - दो का जोड़ा (प्राण-अपान, शरीर-मन)

अश्व वत्या - घोड़ों के समान, उत्तम इन्द्रियों के साथ

इषा - इच्छित

आयातम् - हमें लक्ष्य तक पहुंचाने वाला

शवीरया - उत्तम गति के साथ

गोमत् - विनम्र बुद्धि के साथ

दस्त्रा - सभी कमजोरियों और अभावों का नाश करने वाला

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



हिरण्यवत् – दिव्य रथ की तरह

व्याख्या :-

हम इस मानव शरीर को किस प्रकार दिव्य बना सकते हैं?
दो का जोड़ अर्थात् हमारे प्राण–अपान, शरीर और मन ही हमें इच्छित लक्ष्य तक पहुँचा सकते हैं :-
(क) घोड़ों के समान कार्य करने वाली उत्तम इन्द्रियों के साथ,
(ख) उत्तम गति के साथ,
(ग) विनम्र बुद्धि के साथ,
(घ) सभी कमजोरियों का नाश करने के बाद।

इस प्रकार हमारा शरीर और उसकी गतिविधियाँ एक दिव्य रथ की तरह दिखाई देंगी।

जीवन में सार्थकता

आपके जीवन को दिव्य रथ बनाने के लिए चार अनुशासन बिन्दु कौन से हैं?

हमारे जीवन का सबसे चमकदार उद्देश्य यह होना चाहिए कि हम अपने शरीर को एक दिव्य रथ बना सकें।

यह मन्त्र चार बिन्दुओं का अनुशासन प्रदान करता है, जिससे जीवन के किसी भी क्षेत्र में इच्छित लक्ष्य पर पहुँचा जा सकता है, चाहे वह भौतिक हो या आध्यात्मिक :-

(क) उत्तम इन्द्रियाँ अर्थात् स्वस्थ शरीर और मन
(ख) उत्तम गति अर्थात् दूसरों के कल्याण के लिए सदैव सक्रिय। किसी भी प्रकार का कोई भी आलस्य नहीं होना चाहिए
(ग) विनम्र बुद्धि अर्थात् सबके साथ कोमल और अहंकार रहित व्यवहार,
(घ) सभी कमजोरियों का नाश करने के लिए योग दर्शन के पाँच यमों का क्रियात्मक पालन।

अनुशासन के इन चार बिन्दुओं का पालन करने के बाद आपका जीवन एक ऐसा दिव्य रथ प्रतीत होगा, जिस पर हर व्यक्ति सवारी करना चाहेगा।

ऋग्वेद मन्त्र 1.30.18

समानयोजनो हि वाँ रथो दस्त्रावमर्त्यः।
समुद्रे अश्वनेयते ॥ 18 ॥

समान योजनः – समान योजना एवं विकास

हि – हैं

वाम् – दोनों (प्राण–अपान, शरीर–मन)

रथः – इस दिव्य रथ के

दस्त्रौ – सभी कमजोरियों का नाश करते हुए

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

अमर्त्यः – मरता नहीं

समुद्रे – समान रूप से आनन्ददायक

अशिवना – दो का जोड़ा (प्राण–अपान, शरीर–मन)

ईयते – गति के साथ

व्याख्या :-

इस शरीर रथ के विकास की योजना कैसे बनायी जाये?

यदि शरीर में श्वास लेने और छोड़ने की संतुलित प्रक्रिया का विकास किया जाये, शरीर और मन की सामूहिक देखभाल हो, तभी हम अपनी सभी कमजोरियों का नाश कर सकते हैं और रोगों, अपराधों तथा व्यक्तिगत भौतिक लक्ष्यों के लिए नहीं मरेंगे। तभी केवल यह शरीर रथ सामान्य रूप से आनन्ददायक होगा और सभी गतिविधियों को उचित गति, आलस्य और स्वार्थ के बिना सम्पन्न कर पायेगा।

जिस वाहन में अग्नि, वायु और जल उचित संतुलन में होते हैं, केवल वही उचित गति और बिना बाधा के अपने लक्ष्य तक पहुँच पाता है।

जीवन में सार्थकता

शरीर और मन का संतुलित विकास क्या है?

शरीर और मन, प्राण और अपान का जीवन में संतुलित विकास ही सभी द्वन्द्वों में सम भाव बनाने के समान है।

मन विवेक को समझता है, जिससे वह हानियों को लाभ से पृथक कर पाता है। परन्तु शरीर को सुविधाओं की आवश्यकता होती है और वे मन को पथ भ्रमित करते हैं। इस प्रकार दोनों ही गलत आचरण करने लगते हैं। इसलिए शरीर और मन दोनों को समान रूप से विकसित किया जाना चाहिए। जिस विचार को मन अपनी गहराई तक ले जाता है, शरीर को भी उसका अनुसरण करना चाहिए। ऐसा जीवन आनन्ददायक हो सकता है, जिसमें मन महान् ज्ञान और विवेक को विकसित करे और शरीर उसके अनुशासन का पालन करे। ऐसा संतुलित शरीर और मन निम्न लक्षण सुनिश्चित करायेगा :–

- (क) कमजोरियों के अभाव में रोगों और अपराधों का कोई प्रभाव नहीं,
- (ख) सर्वदा आनन्द की अवस्था,
- (ग) बिना आलस्य के गति के साथ सभी गतिविधियाँ

ऋग्वेद मन्त्र 1.30.19

न्य घ्न्यस्य मूर्धनि चक्रं रथस्य येमथुः।

परि द्यामन्यदीयते ॥ 19 ॥

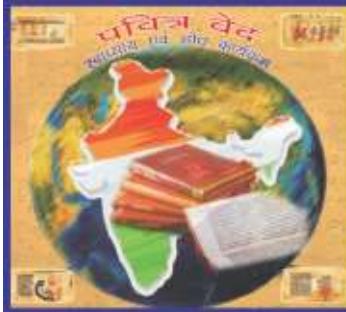
(नि – येमथुः से पूर्व लगाकर)

अघ्न्यस्य – अविनाशी, अपराजित

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

मूर्धनि – उत्तम, सर्वोच्च
चक्रम् – अक्ष, धुरी
रथस्य – रथ की
(येमथुः – नि येमथुः) स्थापित
परि – दूर
द्याम – लक्ष्य
अन्यत – कुछ विशेष
ईयते – गतिपूर्वक

व्याख्या :-

एक दिव्य रथ में एकिसस की क्या आवश्यकता होती है?

दिव्य रथ में एकिसस उत्तम और उच्चावस्था में स्थापित होता है। यह अविनाशी और अपराजेय होता है। इस वास्तविकता के प्रति चेतना विशेष लक्ष्यों तक पहुँचने के लिए उचित गति प्रदान करती है, जिसके लिए एकिसस सर्वोच्च अवस्था में स्थापित होता है।

जीवन में सार्थकता

मानव जीवन के लक्ष्य तक उचित गति के साथ कैसे पहुँचा जा सकता है?

इस दिव्य रथ का एकिसस परमात्मा है, जिसके चारों तरफ हमारी सभी गतिविधियाँ संचालित होती हैं। इसे सर्वोच्च शक्ति के रूप में महसूस किया जाना चाहिए, जो हमारे शरीर के सर्वोच्च स्थल पर मस्तिष्क में स्थापित है। मस्तिष्क की इस दिव्यता पर ध्यान लगाना चाहिए, जो अविनाशी और अपराजेय है। तभी हम उचित गति के साथ आत्मा की इस यात्रा को पार कर पायेंगे और अपने विशेष गन्तव्य तक पहुँच पायेंगे – परि द्याम अन्यत ईयते।

ऋग्वेद मन्त्र 1.30.20

कस्त उषः कधप्रिये भुजे मर्तो अमर्त्ये ।
कं नक्षसे विभावरि ॥ 20 ॥

कः – जो

ते – आपके

उषः – सूर्य की प्रथम किरणें, अन्धकार को दूर करने वाली

कधप्रिये – प्रेम के शब्द और संकल्प, ईश्वर से प्रेम

भुजे – सुखों और प्रसन्नताओं का आनन्द लेना, पालन करना

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

मर्त्यः — मरने योग्य

अमर्त्ये — जो भौतिक पदार्थों के लिए नहीं मरते, मुक्ति प्राप्त करते हैं

कम् — जिसे

नक्षसे — आप प्राप्त करते हो।

विभावरि — सभी पदार्थों को प्रकाशित करने वाला।

व्याख्या :-

सूर्य की प्रथम किरणों अर्थात् ऊषावेला में शरण लेने का क्या उद्देश्य है?

जो व्यक्ति सूर्य की पहली किरणों अर्थात् ऊषावेला या ब्रह्मवेला का आनन्द लेता है, वह सदा सुख और शान्ति का आनन्द लेता है। बेशक यह शरीर मृत्यु के योग्य है, परन्तु इसमें रहते हुए भी ऐसा व्यक्ति भौतिक सुखों के लिए नहीं मरता और मुक्ति प्राप्त अवस्था में रहता है क्योंकि सूर्य की प्रथम किरणों में परमात्मा की प्राप्ति होती है, जो सब वस्तुओं को प्रकाशित करता है। इस प्रकार सूर्य की प्रथम किरणों अर्थात् ऊषावेला या ब्रह्मवेला दोनों ही समान है क्योंकि दोनों ही सब वस्तुओं को प्रकाशित करती हैं।

जीवन में सार्थकता

सूर्य की पहली किरणों अर्थात् ऊषावेला के क्या लाभ हैं?

सूर्य की पहली किरणों अर्थात् ऊषावेला के निम्न लाभ हैं :—

- (क) ये किरणें प्रातःवेला में व्यक्त शब्दों और संकल्पों से प्रेम करती हैं।
- (ख) ये संकल्प सबके सुखों और खुशियों के लिए होने चाहिए।
- (ग) ऐसा व्यक्ति भौतिक रूप से बेशक मृत्यु के योग्य है, परन्तु भौतिक वस्तुओं के लिए नहीं मरता और मुक्ति को प्राप्त करता है।
- (घ) एक ब्रह्मवेला प्रेमी अन्य लोगों को अपनी बुद्धि और गतिविधियों से प्रकाशित करता है क्योंकि उसे यह ताकत सूर्य से प्राप्त होती है।
- (ड.) एक ब्रह्मवेला प्रेमी सदैव अपने पालन के लिए अच्छे स्वास्थ्य का आनन्द लेता है।
- (च) परमात्मा, सूर्य की पहली किरणों और ब्रह्मवेला प्रेमी जो इन दोनों के साथ जीता है, तीनों ही सृष्टि की प्रकाशित शक्तियाँ हैं।

ऋग्वेद मन्त्र 1.30.21

वयं हि ते अमन्महाऽन्तादा पराकात्।

अश्वे न चित्रे अरुषि ॥ 21 ॥

वयम् — हम

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

हि – निश्चित रूप से

ते – आपके

अमन्महि – मन में ध्यान करते हैं

आ अन्तात् – अन्दर, निकट, एक किनारे से

अपराकात् – बाहर, दूर, दूसरे किनारे तक, सफलता तक

अश्वे – ज्ञान और गतिविधियों में संयुक्त

न – जैसे

चित्रे – अद्भुत

अरुषि – सूर्य की प्रथम किरणें

व्याख्या :-

हमें अपनी ध्यान साधना, ज्ञान साधना और कर्म साधना का संचालन कैसे करना चाहिए?

हम निश्चित रूप से आपका ध्यान अन्दर मन में तथा बाहर करते हैं, अत्यन्त निकट तथा दूर करते हैं और एक कोने से प्रारम्भ करके यह ध्यान प्रक्रिया सफलता के दूसरे कोने तक चलती रहती है। हम ज्ञान और कर्म में इस प्रकार लिप्त हैं, जैसे शक्तिशाली और दिव्य सूर्य की पहली किरणें जो ब्रह्मवेला में प्रकट होती हैं।

जीवन में सार्थकता

अन्दर भगवान का ध्यान, बाहर भगवान के लिए काम?

यह मन्त्र एक प्रेरणा है और भगवान के सामने संकल्प है कि हम निश्चित रूप से सूर्य की पहली किरणों के सहभागी हैं अर्थात् ऊषावेला या ब्रह्मवेला प्रेमी हैं और हम भगवान का ध्यान अन्दर और बाहर दोनों तरफ करते हैं। अन्दर भगवान के ज्ञान के पथ पर और बाहर भगवान के लिए गतिविधियाँ सम्पन्न करके।

मुख में हो राम नाम,

राम सेवा हाथ में।

ऋग्वेद मन्त्र 1.30.22

त्वं त्येभिरा गहि वाजेभिर्दुहितर्दिवः ।

अस्मे रथिं नि धार्य ॥ 22 ॥

त्वम् – आपकी

त्येभि: – उत्तम शक्तियां (समय के खण्डों में विभाजित जैसे सेकेंड, मिनट, घंटे, दिन आदि)

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

आगहि – हमारे द्वारा प्राप्त हों।

वाजेभि: – भोजन तथा सम्पदा अर्जित करने की शक्तियों के साथ

दुहितः – बेटी के समान (सूर्य की प्रथम किरणें अर्थात् ऊषा)

दिवः – सूर्य द्वारा उत्पन्न

अस्मे – हमारे लिए

रथिम् – पूर्ण सम्पदा

नि धारय – लगातार उपलब्ध करवाता है।

व्याख्या :-

सूर्य की प्रथम किरणें इतनी महत्वपूर्ण क्यों हैं?

परमात्मा ने अपनी काल रूपी उत्तम शक्ति को भी धन सम्पदाओं और भोजन के साथ हमें प्रदान कर दिया है। काल का अर्थ है सेकेण्ड, मिनट, घण्टे, दिन, माह और वर्ष आदि के रूप में समय का विभाजन। यह शक्तियाँ हमें प्राप्त हों अर्थात् समय का गतिविधियों में विभाजन और उनका उत्तम प्रयोग करने की शक्ति सूर्य की पुत्री के समान है, जिसे सूर्य ने ऊषावेला या ब्रह्मवेला नाम पहली किरणों के रूप में पैदा किया है। इन प्रथम किरणों की शक्ति के साथ ही हमें हर प्रकार की सम्पदा लगातार मिल सकती है।

जीवन में सार्थकता

ऊषावेला या ब्रह्मवेला से कोई व्यक्ति किस प्रकार लाभान्वित होता है?

यह एक मान्य विज्ञान है कि जो व्यक्ति सूर्य की पहली किरणों के साथ प्रातःकाल में जाग्रत होता है, वह भगवान की उत्तम शक्तियों को प्राप्त करने के योग्य बन जाता है। भगवान की उत्तम शक्ति है – काल का विभाजन। अतः ऐसा व्यक्ति अपने दिन भर के समय को अलग-2 कार्यों के लिए विभाजित करके स्वयं अपने अनुशासन में समस्त गतिविधियों को संचालित करता है और समय का सदुपयोग करता है। इस प्रकार वह जीवन के हर क्षेत्र में प्रगतिशील रहता है।

द्वितीय, प्रातःकाल जल्दी उठने वाला व्यक्ति सदैव स्वस्थ रहता है। उसकी ऊर्जा सदैव बढ़ती रहती है। वह कभी अपने कर्तव्यों से पीछे नहीं हटता।

आध्यात्मिक रूप से ऋग्वेद 1.30.20 मन्त्र में यह स्थापित हो चुका है कि सूर्य की प्रथम किरणों के साथ दिव्यता प्रवाहित होती है।

आयुर्वेद भी इस बात का उल्लेख करता है कि ब्रह्मवेला अर्थात् प्रातः 3 से 6 बजे तक के समय में दाक्षिणात्य वायु प्रवाहित होती है, जिसमें दिव्य शक्तियाँ सम्मिलित होती हैं।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

ऋग्वेद मण्डल-1 सूक्त 31

ऋग्वेद मन्त्र 1.31.1

त्वमग्ने प्रथमो अंगिरा ऋषिर्देवो देवानामभवः शिवः सखा ।
तव व्रते कवयो विद्यमनापसोऽजायन्त मरुतो भ्राज दृष्टयः ॥ 1 ॥

त्वम् — आप

अग्ने — सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा

प्रथमः — प्रथम (नेतृत्व करने के लिए)

अंगिरा: — धरती पर सभी जीवों का शाश्वत जीवन, सर्वत्र विद्यमान, सबका अंग

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

ऋषि: — सबका ज्ञाता (परमात्मा)

देव: — सर्वोच्च दिव्य दाता

देवानाम — दिव्य दाताओं के लिए (ज्ञान और वस्तुयें देने वाले)

अभवः — हैं

शिवः — आनन्दित

सखा — मित्र

तव — आपमें

व्रते — संकल्प, निर्देश

कवयः — विवेकशील

विर्तिपासः — सत्य ज्ञान के साथ कार्य करने वाले, ऋषि

अजायन्त — कार्यों में रत, होते हैं

मरुतः — विचारपूर्वक बोलने वाले

भ्राज दृष्ट्यः — प्रकाशवान् दृष्टि वाले

व्याख्या :-

हमारे जीवन का प्रथम और अत्यन्त महत्वपूर्ण अंग कौन हैं?

कौन उसकी आनन्दित करने वाली मित्रता के योग्य है?

एक दृष्टा ऋषि किस प्रकार बनता है?

हे सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा! आप हमारा नेतृत्व करने में अग्रणी हैं क्योंकि आप सब जीवों के शाश्वत जीवन हैं, आप सर्वविद्यमान हैं और आप सर्वोच्च दिव्य दाता हैं। इसलिए आप उन सबको आनन्दित करने वाले और उनके मित्र हैं, जो ज्ञान और वस्तुओं के दिव्य दाता हैं। एक दिव्य दाता अहंकाररहित होता है और वह सर्वोच्च दाता के नाम पर ही देता है। ऐसे दिव्य दाता विवेकशील बन जाते हैं क्योंकि वे अपने संकल्पों तथा सर्वोच्च दाता परमात्मा के निर्देशों का पालन करते हैं। सत्य, ज्ञान और विवेकशीलता के साथ कार्य करते हुए ऐसे लोग उचित कार्य करते हैं और दृष्टा ऋषि बन जाते हैं, जो सदैव विचारपूर्वक वाणी का प्रयोग करते हैं, न कि उद्देश्यहीन वार्ता करने वालों की तरह। अतः केवल ऐसे ही दृष्टा ऋषि प्रकाशित दृष्टि को प्राप्त करते हैं।

जीवन में सार्थकता

उच्चाधिकारियों के साथ प्रगति कैसे करें?

सदैव इस दिव्य विज्ञान की अनुभूति रखनी चाहिए कि परमात्मा हमारा प्रथम नेतृत्वकर्ता है क्योंकि वह इस ब्रह्माण्ड की और हमारे व्यक्तिगत जीवन की भी पहली ऊर्जा है। इस सिद्धान्त को अपने माता-पिता, अध्यापकों, वृद्धजनों तथा उच्चाधिकारियों पर लागू करें, जिन्होंने हमें पैदा होने का तथा / अथवा उन्नति करने

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

का अवसर प्रदान किया। ऐसे वृद्धजनों की आनन्दित संगति और मित्रता प्राप्त करने के लिए निम्न लक्षणों को अपने जीवन में लागू करना चाहिए:-

- (क) उनकी सेवा में दान दें और उच्चाधिकारियों के नाम पर काम करें,
- (ख) उनके निर्देशों और इच्छाओं की पूर्ति के लिए काम करें,
- (ग) केवल उचित वाणी बोलें और उचित कार्य करें।

ऋग्वेद मन्त्र 1.31.2

त्वमग्ने प्रथमो अंगिरस्तमः कविर्देवानां परि भूषसि व्रतम्।
विभुर्विश्वस्मै भुवनाय मेधिरो द्विमाता शयुः कतिधा चिदायवे ॥ २ ॥

त्वम् – आप

अग्ने – सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा

प्रथमः – प्रथम (नेतृत्व करने के लिए)

अंगिरस्तमः – सभी जीवनों में सर्वोच्च

कविः – सर्व ज्ञाता (वेद)

देवानाम् – दिव्य लोग

परि भूषसि – सब दिशाओं से सुसज्जित

व्रतम् – व्रत

विभुः – सर्व विद्यमान

विश्वस्मै – सबके लिए

भुवनाय – विश्व

मेधिराः – महान् चेतना के साथ एकीकृत

द्विमाता – दोहरी माता, प्रकाशवान तथा प्रकाशहीन वस्तुओं का निर्माता

शयुः – प्रलय काल में सबको विश्राम देने वाला

कतिधा – अनेक प्रकार से धारण करने वाला

चित – निश्चित रूप से

आयवे – उन्नतिशील सक्रिय व्यक्ति।

व्याख्या :-

महान् व्यक्तियों के संकल्प किस प्रकार प्रशंसनीय होते हैं?

हमारी दोहरी माता कौन है?

सब आत्माओं की उन्नति कौन सुनिश्चित करता है?

हे सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा! आप हमारा नेतृत्व करने में अग्रणी हैं। आप सब जीवनों से सर्वोच्च हैं, अतः सबको जानते हैं अर्थात् आप वेद हैं। वेद होने के नाते, परमात्मा सब दिव्य लोगों को जानते हैं और उनके संकल्पों को हर प्रकार से अलंकृत करते हैं। इसलिए कठिनाईयों और बाधाओं के बावजूद दिव्य लोगों के

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

संकल्प पूर्ण हो जाते हैं। परमात्मा समूची सृष्टि में सर्वविद्यमान है, इसलिए वह दिव्य लोगों की चेतना के साथ जुड़ जाता है।

उसे द्विमाता अर्थात् दोहरी माता कहते हैं क्योंकि वह प्रकाशवान् तथा प्रकाशहीन वस्तुओं का निर्माता है, हमारे शरीर और हमारे मन का निर्माता है, जीव और निर्जीव सबका निर्माता है।

प्रलयकाल में वह सब आत्माओं को विश्राम देते हैं और अनेकों प्रकार से उन्हें धारण करते हैं। अतः परमात्मा निश्चित रूप से हमारी सक्रिय उन्नति अर्थात् आत्माओं की अन्तहीन यात्रा सुनिश्चित करते हैं।

जीवन में सार्थकता

जीवन में महान् कैसे बनें?

परमात्मा सर्व विद्यमान हैं, अतः सब लोगों में उपस्थित है, परन्तु महान् सन्त लोगों की चेतना परमात्मा के साथ एकीकृत हो जाती है। इसलिए उनके संकल्प सदैव प्रशंसनीय होते हैं। हर प्रकार से पवित्रता का अभ्यास करके कोई भी व्यक्ति महान् बन सकता है। प्रलयकाल में भी परमात्मा समस्त आत्माओं की उन्नति सुनिश्चित करते हैं, उन्हें अनेक प्रकार से धारण करके और नयी सृष्टि में उन्हें जन्म देकर।

महान् बनने के लिए पवित्र बनो।

ऋग्वेद मन्त्र 1.31.3

त्वमग्ने प्रथमो मातरिश्वन आविर्भव सुक्रतूया विवस्वते।

अरेजेतां रोदसी होतृवूर्यऽसघ्नोभारमयजो महो वसो ॥ 3 ॥

त्वम् – आप

अग्ने – सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा

प्रथमः – प्रथम (नेतृत्व करने के लिए)

मातरिश्वनः – वायु (अपनी माँ, आकाश के साथ)

आविर्भव – प्रकट होते

सुक्रतूया – उत्तम कार्यों को करने की शक्ति के साथ

विवस्वते – उचित ज्ञान की तरंगों वाले

अरेजेताम् – अपने अनुशासन में चमकते हुए

रोदसी – धरती और आकाश में, शरीर और मन, कर्म और ज्ञान

होतृवूर्य – भक्तों द्वारा स्वीकृत और स्थापित हुए

असघ्नोः – स्वीकार, सहन

भारम् – कर्तव्यों का बोझ, कठिनतायें

अयजः – त्याग कार्यों को पूर्ण करने वाले

महः – महान्, पूजा के योग्य

वसो – सबका वास

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

व्याख्या :-

वायु की दिव्यता क्या है?

हमारे जीवन तथा समूचे ब्रह्माण्ड में वायु किस प्रकार अपनी दिव्यता प्रदर्शित करती है?

सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा! आप वायु के माध्यम से हमारा नेतृत्व करने में अग्रणी हैं। वायु अपनी माता आकाश से उत्पन्न हुई है। वायु भिन्न-2 कार्यों को करने की शक्ति के साथ उपस्थित होती है और इसमें उचित ज्ञान की किरणें होती हैं। वायु अपनी शक्तियों के अनुशासन में भूमि पर तथा अन्तरिक्ष में, हमारे शरीर और मन में, समस्त कार्यों और ज्ञान में चमकती है। वायु हमें केवल स्वीकार करती है और स्थापित करती है। यह हमें धारण करती है, जिससे हम अपने कर्तव्यों और कठिनाईयों का बोझ वहन कर सकें। यह समस्त त्याग कार्यों को प्रसारित करती है और पूर्ण करती है। यह सबका वास है। इसीलिए यह महान् तथा पूजा के योग्य है।

जीवन में सार्थकता

वायु क्यों पूजनीय है?

वायु किस प्रकार हमारे त्याग कार्यों को प्रसारित करती है?

हमारे शरीर के अन्दर तथा बाहर वायु तत्व का दिव्य महत्व है। इसके बिना किसी जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती है। अतः हमारे शरीर में तथा सर्वत्र वायु की उपस्थिति के परिणामस्वरूप ही समस्त गतिविधियाँ चलती हैं। हमारा ज्ञान भी हमारे जीवन पर ही आधारित है। अतः यह केवल वायु ही है, जो हमारी सभी गतिविधियों और यहाँ तक कि हमारी कठिनाईयों के बोझ को वहन करती है। हम सब वायु में ही जीवित हैं। यह सबका सर्वव्यापक वास है। इसलिए यह पूजा के योग्य है।

वैज्ञानिक रूप से भी केवल वायु ही आकाश में उड़ने वाले भारी से भारी वायुयानों का बोझ वहन करती है।

सामाजिक और आध्यात्मिक रूप से यज्ञ अर्थात् त्याग कार्यों के लाभ को वायु व्यापक क्षेत्रों में तथा अन्तरः परमात्मा तक पहुँचाती है।

ऋग्वेद मन्त्र 1.31.4

त्वमग्ने मनवे द्यामवाशयः पुरुरवसे सुकृते सुकृत्तरः ।
श्वात्रेण यत्पित्रेमुच्यसे पर्याऽत्त्वा पूर्वमनयन्नापरं पुनः ॥ 4 ॥

त्वम् — आप

अग्ने — सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा

मनवे — उचित विचारवान् व्यक्ति

द्याम — द्यु लोक, मन

अवाशयः — स्थापित

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

पुरुरवसे – उचित ज्ञान के बल पर उत्तम शब्द बोलने वाले

सुकृते – उत्तम कार्यों को करने के लिए

सुकृतरः – अत्यधिक सुन्दर कार्यों को करने वाले

श्वात्रेण – आध्यात्मिक और वैज्ञानिक ज्ञानवान्

यत् – जो

पित्रोः – पिता के (माता के)

मुच्यसे – मुक्त होता है

परि आ – सभी दिशाओं से

त्वा – आपकी तरफ

पूर्वम् – पूर्वकालिक

अनयन् – ले जाता है

न – नहीं

अपरम् – निम्न जन्म

पुनः – बार-बार

व्याख्या :-

किसको प्रकाश तथा मुक्ति प्राप्त होती है?

सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा! आप उन विचारशील लोगों के मन में स्थापित हों, जो सही सोचते हैं और उचित ज्ञान के शब्दों का उच्चारण करते हैं तथा आपकी अनुभूति के साथ उत्तम कार्यों को करते हैं क्योंकि आप ही सभी सुन्दर कार्यों के करने वाले हो। जिन लोगों के पास आध्यात्मिक और वैज्ञानिक ज्ञान है, वे सब मार्गों पर मुक्त रहते हैं। अतः ऐसे लोग माता-पिता के माध्यम से बार-बार जन्म के चक्र से भी मुक्त रहते हैं। परमात्मा उन्हें अपने पूर्व निर्धारित स्थान अर्थात् ब्रह्मलोक में ले जाता है, जैसे परमात्मा की गोद के समान कोई स्थान हो और ऐसे लोग निचली योनियों में बार-बार जन्म लेकर नहीं जाते।

जीवन में सार्थकता

स्व-अनुभूति का क्या मार्ग है?

जब हम उचित ज्ञान के आधार पर उत्तम शब्दों का उच्चारण करने के अभ्यस्त हो जाते हैं और इस अनुभूति के साथ सभी उत्तम कार्यों को करते हैं कि वह सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा हम सबमें स्थापित है और इसी कारण वही समस्त कार्यों का वास्तविक कर्ता है, हम व्यक्तिगत रूप में नहीं, तो हमें प्रकाश प्राप्त होता है। स्व-अनुभूति और अन्ततः परमात्मा की अनुभूति का यही मार्ग है। ऐसी अवस्था ही हमें मुक्ति प्रदान करती है, जो हमारा मूल और अधिकृत स्थान है, जिसे ब्रह्मलोक कहते हैं। इसके बाद हम निचली योनि में बार-बार जन्म नहीं लेंगे।

ऋग्वेद मन्त्र 1.31.5

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

त्वमग्ने वृषभः पुष्टिवर्धन उद्यतस्तुचे भवसि श्रवाय्यः ।
य आहुतिं परि वेदा वषट्कृतिमेकायुरग्रे विश आविवाससि ॥ ५ ॥

त्वम् – आप
अग्ने – सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा
वृषभः – सुखों की वर्षा करने वाले
पुष्टिवर्धनः – स्वास्थ्य बढ़ाने वाले
उद्यतस्तुचे – त्याग के लिए सदैव तत्पर
भवसि – होते हैं
श्रवाय्यः – अपने विवेक के लिए प्रसिद्ध
यः – जो
आहुतिम् – आहुतियाँ, सहयोग
परि वेदा – सम्पूर्ण जीवन को जानने वाला
वषट्कृतिम् – उत्तम गतिविधियों के साथ
एकायुः – अद्वितीय गतिशील पुरुष
अग्रे – सन्तुलित आयु के साथ, लगातार
विश – प्रारम्भ से उन्नतिशील
आविवाससि – अंधकार को दूर करके प्रकाश युक्त

व्याख्या :-

प्रसन्नता, स्वास्थ्य और प्रसिद्धि का आनन्द कौन लेता है?
लोगों के जीवन में से अन्धकार को कौन दूर करता है?
सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा! जो लोग सदैव त्याग के लिए तैयार रहते हैं, आप उनके लिए प्रसन्नता की वर्षा करते हैं और स्वास्थ्य को उत्साहित करते हैं। ऐसे लोग अपनी विवेकशीलता के कारण श्रवण के योग्य हैं अर्थात् लोग उन्हें सुनते हैं। उनकी आहुतियाँ तथा सम्पूर्ण जीवन लगातार उत्तम गतिविधियों के साथ उनका सहयोग सर्वत्र प्रसिद्ध होता है। वे लोगों के जीवन से अन्धकार को दूर करके उन्हें प्रकाशित करते हैं, प्रारम्भ से ही उन्हें प्रगतिशील बनाते हैं और इस प्रकार वे अग्रणी व्यक्ति बन जाते हैं।

जीवन में सार्थकता

त्याग सर्वत्र प्रशंसनीय क्यों होते हैं?

लोगों के द्वारा ही नहीं, अपितु, भगवान के द्वारा भी हर काल में तथा हर युग में त्याग सर्वत्र प्रशंसनीय होते हैं। एक त्यागशील व्यक्ति सदैव उत्तम स्वास्थ्य का आनन्द लेता है और अन्ततः वह प्रसन्नता को प्राप्त करता है। इंग्लैण्ड की हार्ट केयर फाउण्डेशन नामक संस्था ने भी एक अनुसंधान परिणाम प्रकाशित किया है कि एक दानी के जीवन में हृदय रोगों की सम्भावना कम होती है क्योंकि उसमें दान देने की प्रवृत्ति है, उसकी

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

हृदय धमनियाँ विश्राम मुद्रा में रहती हैं। त्याग और दानशीलता का आपके स्वास्थ्य पर दूरगामी प्रभाव उत्पन्न होता है। इसके कुछ स्वास्थ्य लाभ इस प्रकार सूचीबद्ध किये जा सकते हैं :-

- (क) रक्वचाप को कम करना,
- (ख) आत्म—गौरव को बढ़ाना,
- (ग) अवसाद को कम करना,
- (घ) तनाव के स्तर को कम करना,
- (ड) लम्बी आयु,
- (च) अधिक प्रसन्नता तथा सन्तोष।

सार्वजनिक रूप से भी एक त्यागशील व्यक्ति समाज में तथा राष्ट्र में नेता के रूप में स्वीकृत होने के लिए उत्तम होता है।

ऋग्वेद मन्त्र 1.31.6

त्वमग्ने वृजिनवर्तनिं नरं सकमन्पिपर्षि विदथे विचर्षणे ।
यः शूरसाता परितकम्ये धने दध्रेभिश्चित्समृता हंसि भूयसः ॥ 6 ॥

त्वम् – आप

अग्ने – सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा

वृजिनवर्तनिम् – पापी व्यवहार वाले

नरम् – व्यक्ति

सकमन – संग होने पर

पिपर्षि – पालन और वर्धन

विदथे – ज्ञान में

विचर्षणे – विशेष ज्ञान वाले परमात्मा

यः – जो

शूरसाता – वीर व्यक्तियों द्वारा प्रशंसित

परितकम्ये – खतरे से भरे

धने – संग्राम

दध्रेभिः चित् – न्यून साधनों के साथ

समृता – सत्यता के बल पर लड़ने वाले

हंसि – नष्ट कर देते हैं

भूयसः – अनेकों को।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

व्याख्या :-

एक अधर्मी व्यक्ति को दिव्य ज्ञान की तरफ कैसे प्रोत्साहित किया जा सकता है?

अल्प साधनों के साथ एक योद्धा कैसे विजयी हो सकता है?

परमात्मा के प्रति प्रेम, अर्थात् भक्ति के दो विशेष लाभ इस मन्त्र में दिये गये हैं?

(क) सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा, एक अधार्मिक व्यक्ति का भी पालन करते हैं और ज्ञान में प्रोत्साहित करते हैं, जब वह उनके सम्पर्क में आता है।

(ख) परमात्मा के पास विशेष ज्ञान है, अतः वह बहादुर लोगों के द्वारा प्रशंसनीय होता है और उन्हें सत्य मार्ग पर संघर्ष करने की शक्ति देता है। वह अल्प साधनों के बावजूद भी खतरनाक संग्रामों में अनेकों बाधाओं को नष्ट करने के योग्य बनाता है।

जीवन में सार्थकता

भक्ति मार्ग किस प्रकार सर्वमान्य तथा सबके लिए सर्वोच्च शक्ति का दाता है?

एक अधार्मिक व्यक्ति स्वाभाविक रूप से उचित एवं महान् ज्ञान से वंचित होता है। यदि ऐसा व्यक्ति किसी भी रूप में भक्ति मार्ग के द्वारा परमात्मा से जुड़ जाये तो उसका पालन और महान् ज्ञान में उसका विकास परमात्मा के द्वारा सुनिश्चित होता है।

एक बहादुर सैनिक अल्प साधनों के साथ भी अनेकों बाधाओं का नाश कर सकता है और सत्यपूर्वक संघर्ष कर सकता है, यदि वह भक्ति मार्ग के द्वारा परमात्मा की प्रशंसा और स्तुतिगान के माध्यम से परमात्मा के साथ जुड़ा हो।

भक्ति मार्ग सर्वमान्य है और सबके लिए समान रूप से सहायक है – एक महान् श्रद्धालु या एक अधार्मिक व्यक्ति, एक बहादुर और शक्तिशाली सैनिक या अल्प साधनों से शत्रु से लड़ने वाला एक सामान्य सैनिक।

ऋग्वेद मन्त्र 1.31.7

त्वं तमग्ने अमृतत्वं उत्तमे मर्तं दधासि श्रवसे दिवेदिवे।
यस्तातुषाण उभयाय जन्मने मयः कृणोषि प्रय आ च सूरये ॥ 7 ॥

त्वम् – आप

तम् – उस

अग्ने – सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा

अमृतत्वे – मरण रहित, मुक्ति

उत्तमे – उत्तम

मर्तम् – मृत्यु के योग्य, मनुष्य

दधासि – धारण करते हो

श्रवसे – परमात्मा को सुनने योग्य और लोगों के द्वारा सुनने योग्य

दिवे दिवे – प्रतिदिन

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

यः तातृषाण – जो पूरी तरह सन्तुष्ट हैं, जिसकी कोई इच्छा नहीं बची
उभयाय – दोनों के लिए

जन्मने – जीवन

मयः – कल्याण

कृणोषि (आ कृणोषि) – स्थापित,

प्रयः – पूर्ण आनन्द

आ (कृणोषि से पूर्व लगाया गया)

च – और

सूरये – प्रकाशवान् ज्ञानी पुरुषों के लिए

व्याख्या :-

मुक्ति क्या है और इसके क्या लाभ हैं?

सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा, आप मुक्ति रूपी उत्तम अवस्था प्रदान करते हो, जो अमर्त्य है अर्थात् मरने योग्य मानव शरीर में दिव्य आनन्द की स्थिति प्रदान करते हों। इस प्रकार के लोग परमात्मा को सुनने के योग्य बन जाते हैं और प्रतिदिन लोगों के सुनने योग्य बन जाते हैं। ऐसे प्रकाशवान् लोग अपने जीवन में पूर्ण सन्तुष्ट होते हैं और कल्याण और पूर्ण प्रसन्नता को दोनों जीवनों में अर्थात् वर्तमान और भावी जीवन में स्थापित करने के योग्य बन जाते हैं। वे ऐसा अन्य मानवों तथा पशुओं के लिए भी सुनिश्चित कर सकते हैं क्योंकि परमात्मा सब जीवों को उनकी अपनी-अपनी योग्यता के अनुसार प्रसन्नता प्रदान करता है।

जीवन में सार्थकता

क्या एक अनुभूति प्राप्त व्यक्ति अपनी मुक्ति अनुभूति को दूसरों के साथ सांझा कर सकता है?

निःसन्देह मुक्ति मनुष्य जाति के लिए सर्वोच्च आनन्द की अवस्था है। एक बार यह अवस्था प्राप्त होने के बाद यह पूर्ण शान्ति और प्रसन्नता उस व्यक्ति के साथ-साथ ऐसे अन्य लोगों को भी प्राप्त होती है, जो गम्भीरता से ऐसे महान् सन्तों के साथ जुड़ जाते हैं।

इसका सिद्धान्त सूत्र यह है कि इस भौतिक जीवन में अर्जित होने वाले हर प्रकार के आनन्द, प्रसन्नता और लाभ आदि को दूसरों के साथ सांझा अवश्य करना चाहिए, जिन्हें इनकी गम्भीर आवश्यकता हो। अपने अर्जित आनन्द को दूसरों के साथ सांझा करके हम परमात्मा के प्रति अपनी भक्ति को भी न्यायोचित सिद्ध कर सकते हैं क्योंकि वही हर वस्तु का वास्तविक दाता है।

ऋग्वेद मन्त्र 1.31.8

त्वं नो अग्ने सनये धनानां यशसं कारुंकृणुहि स्तवानः।

ऋध्याम कर्मापसा नवेन देवैर्द्यावापृथिवी प्रावतं नः॥ ८ ॥

त्वम् – आप

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

नः — हमारे लिए
अग्ने — सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा
सनये — प्रयोग तथा त्याग के लिए
धनानाम् — सम्पूर्ण सम्पदा
यशस्मि — यशस्वी
कारुम् — गतिविधियों में रत
कृणुहि — मुझे योग्य बनाओ
स्तवानः — प्रशंसित होते हुए (परमात्मा)
ऋध्यामः — उस समृद्धि और योग्यता के साथ
कर्म अपसा — अनेकों के लिए गतिविधियाँ
नवेन — स्तुति के साथ
देवैः — दिव्यताओं और दिव्य लक्षणों के साथ
द्यावा पृथिवी — मन और शरीर, सूर्य और धरती
प्रावतम् — रक्षित करने वाले
नः — हमें

व्याख्या :-

हमें अपनी सम्पत्ति का प्रयोग किस प्रकार करना चाहिए?

सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा! लोगों के द्वारा स्तुति किये जाने के कारण कृपया मुझे भी इस योग्य बनायें कि मैं भी अपनी सम्पत्तियों को स्वयं प्रयोग करने के साथ—साथ त्याग कार्यों में तथा ऐसी गतिविधियों में लगाऊँ, जिससे मेरी भी आपकी तरह स्तुतियाँ हों। उस सम्पन्नता और योग्यता के साथ मैं भी दिव्य लक्षणों सहित शानदार गतिविधियाँ सम्पन्न करूँ, जो अनेकों के लिए लाभदायक हों, जो हमारा संरक्षण कर सके, हमारे शरीर और मन का, धरती से लेकर सूर्य तक सम्पूर्ण प्रकृति का।

जीवन में सार्थकता

बुरी ताकतों को नष्ट करके संरक्षण कैसे सुनिश्चित करें?

एक बार परमात्मा के साथ जुड़ाव होने पर हमारी अधार्मिक मार्ग से मुक्ति हो जाती है और अन्य अधार्मिक शक्तियाँ भी हमारे सामने धार्मिक दिखाई देने लगती हैं, जो पहले हमारे शान्तिपूर्वक जीवन में बाधा थी। हम परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि हमें कुछ भी और सब कुछ ऐसा करने योग्य बनाये, जिससे हमारी चमक भी परमात्मा की अपनी चमक के समान हो जाये। परमात्मा के साथ जुड़ाव का निश्चित अर्थ है कि हमारे जीवन से सभी बुरी ताकतों का नाश और इस प्रकार हमारा संरक्षण। परमात्मा के साथ हमारा जुड़ाव निश्चित रूप से परमात्मा की चमक को हमारी चमक के रूप में परिवर्तित कर देगा और हमारी सम्पत्तियों का संरक्षण होगा।

ऋग्वेद मन्त्र 1.31.9

त्वं नो अग्ने पित्रेरुपस्थ आ देवो देवेष्वनवद्य जागृतिः ।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

तनूकृद् बोधि प्रमतिश्च कारवे त्वं कल्याण वसु विश्वमोपिषे ॥ ९ ॥

त्वम् — आप

नः — हमारे लिए

अग्ने — सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा

पित्रोः — माता तथा पिता में

उपस्थे — निकट, गोद में

आ — हर प्रकार से

देवः — सर्वोच्च प्रकाशित करने वाला

देवेषु — दिव्य लोगों तथा दिव्य वातावरण में

अनवद्य — सब दिव्यताओं के ज्ञाता

जागृतिः — सदैव जाग्रत

तनूकृत् — समूची सृष्टि (जीव और निर्जीव) के निर्माता

बोधि — हमें प्रकाशित

प्रमतिः — उत्तम बुद्धि के देने वाले

च — और

कारवे — सुन्दरता से कार्य करने वालों के लिए

त्वम् — आप

कल्याण — कल्याण के देने वाले

वसु — वास तथा सुख सुविधायें

विश्वम् — समस्त

आ ऊपिषे — उपलब्ध कराते हो।

व्याख्या :-

परमात्मा हमारी देखभाल कैसे करते हैं?

सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा! आप हर प्रकार से प्रकाशित करने वाली सर्वोच्च शक्ति हैं। आप सभी दिव्यताओं के ज्ञाता हैं। हम अपने पालन और संरक्षण के लिए सदैव आपका स्वागत करते हैं। आप ही हमें हमारे माता—पिता के निकट लाते हैं और उनके माध्यम से अपनी संरक्षण शक्तियों को हम तक पहुँचाते हैं। आप समूची सृष्टि अर्थात् सभी जीवों और निर्जीव पदार्थों के निर्माता हैं। आप उत्तम बुद्धि के दाता हैं। इसलिए आप ही हमें प्रकाशित करते हैं, जिससे हम सुन्दर कार्य कर सकें और इस प्रकार आप हर प्रकार के कल्याण, निवास और सुविधाओं की वर्षा करने वाले बन जाते हैं।

जीवन में सार्थकता

हमारे अन्दर और बाहर सभी ऊर्जाओं का मूल स्रोत कौन है?

हमारे लिए असीमित ताप, प्रकाश और ऊर्जाओं का स्रोत सूर्य है। परन्तु सूर्य भी इन सभी शक्तियों को परमात्मा से प्राप्त करता है, अतः अन्ततः परमात्मा ही सर्वोच्च दाता है।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

हमें अपने माता-पिता का संरक्षण प्राप्त होता है, परन्तु इस संरक्षण की सारी शक्तियाँ हमारे माता-पिता परमात्मा से ही प्राप्त करते हैं। अतः सुन्दर कार्य करने के लिए बुद्धि, सुखपूर्वक जीवन के लिए आवास आदि जो कुछ भी हमारे पास है, वह सब अन्ततः परमात्मा के द्वारा ही दिया गया है।

ऋग्वेद मन्त्र 1.31.10

त्वमग्ने प्रमतिस्त्वं पितासि नस्त्वं वयस्कृतव जामयो वयम्।
सं त्वा रायः शतिनः सं सहस्रिणः सुवीरं यन्ति व्रतपाम दाभ्य || 10 ||

त्वम् – आप

अग्ने – सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा

प्रमति – प्रथम एवं सर्वोच्च बुद्धि, प्रथम एवं सर्वोच्च प्रसिद्धि

त्वम् – आप

पिता असि – संरक्षण करने वाले पिता हो

नः – हमारे

त्वम् – आप

वयः कृत – समूचा जीवन कार्य करने योग्य बनाते हो

तव – आप

जामयः – भाई जैसे, समान उत्पन्न

वयम् – हम

सम् – समान रूप से हम

त्वा – आपके आशीर्वाद के साथ

रायः – सम्पदा, वस्तुएं, ज्ञान तथा गुण

शतिनः – सैकड़ों में

सम् – हम

सहस्रिणः – हजारों में

सुवीरम् – बहादुर (शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक)

यन्ति – हम हों

व्रतपाम – व्रतों की रक्षा करने वाले

अदाभ्य – इच्छाओं से नष्ट न होने वाले

व्याख्या :-

परमात्मा एक पिता के तुल्य या भाई के समान किसका संरक्षण करता है?

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा! आप प्रथम तथा सर्वोच्च बुद्धि हैं, प्रथम तथा सर्वोच्च प्रसिद्धि हैं। आप एक पिता अथवा भाई के समान हमारा संरक्षण करते हैं। आपके दिव्य प्रबन्धन के फलस्वरूप ही हमें महान् पिता तथा श्रेष्ठ भ्राता प्राप्त होते हैं। आपके आशीर्वाद से ही सभी वस्तुओं, ज्ञान और गुणों सहित हमें असीम गौरवशाली सम्पदा प्राप्त होती है। इसके लिए हमें निम्न लक्षणों को सुनिश्चित करना होता है :-

- (क) हम शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक रूप से बहादुर हों।
- (ख) हमें इतना बलशाली होना चाहिए, जिससे हम अपने संकल्पों की रक्षा कर सकें।
- (ग) हमें अपनी इच्छाओं से स्वयं को नष्ट नहीं करना चाहिए।

जीवन में सार्थकता

हम जीवन में किस प्रकार प्रगति कर सकते हैं और एक नेतृत्वकारी व्यक्तित्व बन सकते हैं? हमारा संरक्षण किस प्रकार हो सकता है?

एक शासक और एक नागरिक के बीच किस प्रकार का सम्बन्ध होना चाहिए? प्रगति और संरक्षण के लिए तीन मुख्य लक्षण होने चाहिए :-

- (क) बहादुर बनो,
- (ख) अपने संकल्पों की रक्षा करो,
- (ग) अपनी इच्छाओं से स्वयं को नष्ट न करो।

इन लक्षणों के परिणामस्वरूप हम निश्चित रूप से अपने कर्तव्य पथ पर बिना भटकाव के ध्यान केन्द्रित कर सकते हैं। जब एक व्यक्ति सदैव अपने कर्तव्यों पर ध्यान केन्द्रित रखता है तो उसके वरिष्ठ अधिकारी उसका संरक्षण करने में गर्व महसूस करते हैं। ऐसा व्यक्ति स्वयं भी सभी नियमों और यहाँ तक कि अपने उच्चाधिकारियों का सम्मान परमात्मा की तरह ही करता है। वह नियमित रूप से प्रगति करता है। इन्हीं लक्षणों के आधार पर ही कोई व्यक्ति नेतृत्वकारी बन सकता है, जैसे परमात्मा बुद्धि में और प्रसिद्धि में नेतृत्वकारी होते हैं।

ऋग्वेद मन्त्र 1.31.11

त्वमग्ने प्रथममायुमायवे देवा अकृण्वन्नहुषस्य विश्पतिम्।
इङ्गमकृण्वन्मनुषस्य शासनीं पितुर्यत्पुत्रे ममकस्य जायते। 11 ॥

त्वाम् – आप

अग्ने – सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा

प्रथमम् – शाश्वत रूप से प्रथम

आयुम् – प्राप्त

आयवे – उत्तम जीवन के लिए उत्तम ज्ञान को प्राप्त करना

देवा: – दिव्य लोगों के द्वारा

अकृण्वन – प्रकाशवान् होने तथा महान् कार्यों के लिए

नहुषस्य – लोगों को एक दूसरे के साथ अनुशासन में बांधने के लिए

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

विश्पतिम् – सबका संरक्षक

इळाम – महान् सर्वोच्च ज्ञान, वेद

अकृष्णन – प्रकाशवान होने तथा महान् कार्यों के लिए

मनुषस्य – मनुष्यों के द्वारा

शासनीम् – शासन के योग्य

पितुः – पिता के

यत – जैसे कि

पुत्रः – पुत्र के लिए

ममकर्स्य – प्रिय और प्रेम के योग्य

जायते – हो जाता है।

व्याख्या :-

एक शासक को अपनी प्रजा पर किस प्रकार शासन करना चाहिए?

सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा! आप दिव्य संतों के द्वारा प्राप्त किये जाने के लिए आदरणीय हैं, जिससे वे उत्तम जीवन के लिए उत्तम ज्ञान प्राप्त कर सकें। वह ज्ञान स्वयं को प्रकाशित करने के लिए तथा महान् दिव्य कार्यों को करने के लिए होता है। वह ज्ञान लोगों को एक—दूसरे के साथ उस महान् शासक और सबके संरक्षक के अनुशासन में बाँधने के लिए होता है। इस प्रकार महान् सर्वोच्च ज्ञान अर्थात् वेद निश्चित रूप से उन लोगों के प्रकाशित होने के लिए और महान् कार्यों के लिए होता है, जो उस पिता के समान शासन करने के योग्य होते हैं, जो अपने पुत्र/पुत्रियों के लिए प्रेम करने वाला होता है।

जीवन में सार्थकता

अनुशासन की स्थापना कैसे करें?

सुशासन के लिए क्या वैदिक विवेक हैं?

एक शासक एक उच्चाधिकारी और एक पिता के पास महान् सर्वोच्च ज्ञान जिसे वैदिक विवेक कहा जाता है, अवश्य होना चाहिए, जिससे वह परमात्मा के समान अपनी प्रजा को महान् अनुशासन में रख सके। इसका अभिप्राय यह है कि परमात्मा, शासन तथा पिता एक समान हैं, जहाँ तक अनुशासन का सम्बन्ध है। किसी भी शासन में वैदिक विवेक के चार नियम निम्न प्रकार हैं :—

(क) प्रजाजनों को ज्ञान और अनुशासन के लिए उसी प्रकार अपने शासक को स्वीकार करना चाहिए, जैसे दिव्य लोग परमात्मा को स्वीकार करते हैं।

(ख) शासक को महान् प्रकाशवान् विद्वानों से सहायता लेनी चाहिए।

(ग) शासक को सुशासन के लिए ही अच्छे कानूनों की रचना करनी चाहिए।

(घ) शासक को एक पिता के समान अपनी प्रजा से प्रेम करना चाहिए।

ऋग्वेद मन्त्र 1.31.12

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

त्वं नो अग्ने तव देव पायुभिर्मधोनो रक्ष तन्वश्च वन्द्य।
त्रता तोकस्य तनये गवामस्यनिमेषं रक्षमाणस्तव ब्रते ॥ 12 ॥

त्वम् – आप
नः – हमारे
अग्ने – सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा
तव – आपके
देव – सर्वोच्च दिव्यता
पायुभिः – आपकी संरक्षण शक्तियों के साथ
मधोनः – प्रशंसनीय, धनी तथा त्याग करने वाले व्यक्ति
रक्ष – संरक्षित करो
तन्वः – हमारे शरीरों को
च – और
वन्द्य – पूजा के योग्य, परमात्मा
त्राता – संरक्षक
तोकस्य – हमारी संतति
तनये – हमारे बच्चों में
गवाम् – ज्ञानेन्द्रियों के संरक्षक
असि – हो
अनिमेषम् – सदैव, सावधानी के साथ
रक्षमाण – संरक्षक
तव – आपके
ब्रते – संकल्पवान, दिव्य नियमों के अनुशासित अनुयायी।

व्याख्या :-

परमात्मा किसका संरक्षण करता है?
सर्वोच्च ऊर्जा तथा दिव्य शक्ति, परमात्मा! अपनी संरक्षण शक्तियों के द्वारा आप हमारा संरक्षण करो, हमारी प्रशंसनीय सम्पत्तियों और त्यागशील व्यक्तियों का भी संरक्षण करो।
आप हमारी संततियों अर्थात् हमारे बच्चों के भी संरक्षक हो और उनकी ज्ञानेन्द्रियों का भी संरक्षण करो।
आप अपने अनुयायियों के सदैव और सावधान संरक्षक हो, जो संकल्पवान हैं और आपके दिव्य अनुशासन का अनुसरण करते हैं।

जीवन में सार्थकता

याज्ञिक संस्कृति के तीन लक्षण कौन—कौन से हैं?

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

परमात्मा सदैव और सावधानीपूर्वक उन लोगों का संरक्षण करता है, जो उसके नियमों का संरक्षण करते हैं :—

- (क) जो त्यागशील हैं,
- (ख) जो अपने बच्चों की ज्ञानेन्द्रियों की रक्षा करते हैं,
- (ग) जो अनुशासित हैं और दिव्य कानूनों के संकल्पशील अनुयायी हैं।
याज्ञिक संस्कृति के तीन लक्षण ही यज्ञ के परिणाम हैं :—
- (क) देव—पूजा अर्थात् अनुशासनपूर्वक प्राकृतिक देवताओं का पोषण जैसे वायुमण्डल एवं पर्यावरण संरक्षण,
- (ख) संगतिकरण अर्थात् ज्ञानशील, सत्यवादी और सम बुद्धि संतों की संगति जो अपने बच्चों की ज्ञानेन्द्रियों की रक्षा करते हैं,
- (ग) दान अर्थात् अपनी गौरवशाली सम्पदा को दूसरों के कल्याण के लिए दान देना और त्याग करना जैसे कीमती जड़ी—बूटियों और धी आदि को पवित्र अग्नि में आहुत किया जाता है।

जो लोग अपनी गतिविधियों के फलस्वरूप इन तीनों परिणामों को सुनिश्चित करते हैं, उन्हें याज्ञिक ही माना जाता है जैसे उन्होंने कोई यज्ञ किया हो। ऐसे लोग निश्चित रूप से परमात्मा के द्वारा सदैव और सावधानीपूर्वक संरक्षित होते हैं। ऐसे लोग परमात्मा की अनुभूति प्राप्त करते हैं और मुक्ति भी प्राप्त करते हैं अर्थात् सदा—सदा के लिए परमात्मा का संरक्षण।

ऋग्वेद मन्त्र 1.31.13

त्वमग्ने यज्यवे पायुरन्तरोऽनिषग्डाय चतुरक्ष इध्यसे ।
यो रातहव्योऽवृकाय धायसे कीरेश्चन्मन्त्रं मनसा वनोषि तम् ॥ 13 ॥

त्वम् — आप

अग्ने — सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा

यज्यवे — त्यागशील पुरुष

पायुः — संरक्षक

अन्तरः — भीतर से

अनिषप्ताय — प्रथक, इच्छारहित

चतुरक्षः — सब दिशाओं से रक्षा करने वाले

इध्यसे — उसे प्रकाशित करते हो, उसे वीर और प्रशंसनीय बनाते हो

यः — जो (परमात्मा)

रातहव्यः — त्याग के लिए सब पदार्थों को देने वाले

अवृकाय — लालच और पापों से मुक्त

धायसे — धारण करते हो

कीरे: — परमात्मा की स्तुतियाँ और विनम्रता

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

चित् – हृदय में
मन्त्रम् – विचार एवं ज्ञान
मनसा – मन में
वनोषि – स्वीकार, सेवन
तम् – उनको।

व्याख्या :-

परमात्मा एक त्यागशील व्यक्ति को किस प्रकार संरक्षित करते हैं?

सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा! आप एक त्यागशील, संसार से पृथक और इच्छाविहीन व्यक्ति को प्रकाशित करके, उसे बहादुर और तेजशील बनाकर उसकी रक्षा करते हैं। परमात्मा त्याग के लिए समस्त वस्तुओं के दाता हैं। अतः परमात्मा के संरक्षण के कारण ही वह व्यक्ति उन सभी वस्तुओं को बिना लालच और बिना पाप के धारण करता है। परमात्मा का तेज और विनम्रता ऐसे व्यक्तियों के हृदय, महान विचारों और ज्ञान में विकसित हो जाते हैं। अतः उसके सभी कार्य परमात्मा के द्वारा स्वीकार और धारण किये जाते हैं।

जीवन में सार्थकता

हमारे त्याग कहाँ जाते हैं और उन त्याग कार्यों का क्या परिणाम होता है?

त्याग करने वाला, पृथक रहने वाला और इच्छारहित व्यक्ति अन्दर और बाहर हर प्रकार से संरक्षित होता है। ऐसे व्यक्ति के पास जो कुछ भी होता है, वह उसे परमात्मा के द्वारा प्रदत्त मानता है और स्वयं लोभरहित तथा पापरहित रहता है। परमात्मा उसके मस्तिष्क और हृदय में महान विचार और गुण आदि विकसित कर देते हैं, जिसके फलस्वरूप परमात्मा उसके सभी कार्यों को पूजा की तरह स्वीकार करते हैं। हमारे परिवार और समाज में भी उपलब्ध समस्त वस्तुएं या सम्मान आदि जो हमें प्राप्त होता है, वह अन्ततः परिवार और समाज के द्वारा ही प्रयोग किया जाता है। अन्ततः हमारे द्वारा धारण की गयी सभी वस्तुएं तथा हमारे कार्य ऐसे स्थान पर जाते हैं, जहाँ से उन्हें हमारे पास ही आना होता है। महान विचारों और विनम्र त्याग कार्यों को परमात्मा शवितशाली बनाता है और अन्ततः वे ही परमात्मा की पूजा और हमारी उसके साथ एकता का माध्यम बन जाते हैं।

ऋग्वेद मन्त्र 1.31.14

त्वमग्ने उरुशंसाय वाघते स्पार्ह यद्रेकणः परमं वनोष्णि तत्।

आध्रस्य चित्प्रमतिरुच्यसे पिता प्र पाकं शास्सि प्रदिश्शो विदुष्टरः ॥ 14 ॥

त्वम् – आप

अग्ने – सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा

उरुशंसाय – अनेक प्रकार से परमात्मा की पूजा और स्तुति करने वाले

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



परिवर्तन वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

वाघते – बुद्धिमान तथा संकल्पवान व्यक्ति

स्पार्हम् – इच्छित

यत् – जो

रेकणः – सम्पदा

परमम् – सर्वोच्च

वनोष्णि – प्राप्त कराते हैं

तत् – वह

आध्रस्य – आपके समर्थन के योग्य

चित – जैसा, गरीब या कमजोर

प्रमति – उत्तम बुद्धि के देने वाले

उच्यसे – पुकारे जाते हैं, जाने जाते हैं

पिता – पिता

प्र (शास्त्र से पूर्व लगाकर)

पाकम् – पवित्र करने वाले

शास्त्र (प्र शास्त्र) – उत्तम ज्ञान एवं अनुशासन

प्रदिश्शः – उत्तम दिशा

विदुष्टरः – भिन्न-2 दर्दों, बुराईयों और शत्रुओं का नाश करने वाला

व्याख्या :-

परमात्मा भिन्न-2 प्रकार के लोगों को किस प्रकार भिन्न-2 साधन और समर्थन उपलब्ध कराता है?

सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा! आप उन लोगों को सर्वोच्च शक्ति प्रदान करते हो, जो ज्ञानशील और संकल्पशील हैं और जो भिन्न-भिन्न प्रकार से आपकी पूजा और प्रशंसा करते हैं। आप उन लोगों के लिए सर्वोत्तम बुद्धि के दाता माने जाते हैं, जो आपके समर्थन के लिए अधिकृत हैं वे चाहे गरीब हों या कमजोर हों। एक पिता के समान आप सबके शुद्धिकर्ता हो और सबको सर्वोत्तम ज्ञान और अनुशासन तथा उत्तम दिशा देते हो। आप भिन्न प्रकार के कष्टों, बुराईयों और शत्रुओं के नाशक हो।

जीवन में सार्थकता

लोगों को बल के आधार पर किस प्रकार वर्गीकृत किया जाता है?

लोगों को बल के आधार पर दो श्रेणियों में वर्गीकृत किया जाता है – ताकतवर और कमजोर।

ताकतवर वे लोग हैं जो बुद्धिशील और संकल्पशील हैं। ऐसे लोग परमात्मा की पूजा और प्रशंसा अनेक प्रकार से करते हैं और सबके कल्याण के लिए ताकतवर लोगों को ही सर्वोच्च और गौरवशाली सम्पदा प्राप्त होती है।

कमजोर और गरीब वो लोग हैं जो परमात्मा की पूजा और प्रशंसा नहीं करते। वे लोग अपने जीवन में पवित्र संकल्पों का पालन भी नहीं करते। ऐसे लोगों को भी परमात्मा की सहायता, उत्तम ज्ञान, अनुशासन

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

और जीवन में प्रगति के लिए दिशा की आवश्यकता होती है। वास्तव में परमात्मा विदुष्टरः हैं अर्थात् वे भिन्न-2 दर्दों, बुराईयों और शत्रुओं के नाश करने वाले हैं।

ऋग्वेद मन्त्र 1.31.15

त्वमग्ने प्रयतदक्षिणं नरं वर्मव स्यूतं परि पासि विश्वतः ।
स्वादुक्षध्मा यो वसतौ स्योनकृज्जीवयाजं यजते सोपमा दिवः ॥ 15 ॥

त्वम् – आप

अग्ने – सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा

प्रयतदक्षिणम् – वस्तुओं और ज्ञान के रूप में उत्तम दान देने वाले

नरम् – विनम्र पुरुष

वर्म इव – रक्षण करने वाले कवच की भौति

स्यूतम् – अच्छे प्रकार से सिला हुआ, दक्ष

परि पासि – सब तरफ से रक्षा और पालन करता है

विश्वतः – सब प्रकार से

स्वादुक्षर्मा – शुद्ध भोजन करना

यः – जो

वसतौ – जीता है

स्योनकत् – सबको सुख देने वाले

जीवयाजम् – सबके लिए त्याग करने वाले

यजते – करते हैं

सः – वह

उपमा – तुलना

दिवः – सूर्य ।

व्याख्या :-

सूर्य किस प्रकार परमात्मा की तरफ से सर्वोच्च उपहार है?

सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा! आप उन विनम्र लोगों के लिए उस सुरक्षा कवच की तरह हैं, जो विधिवत जुड़ा हुआ और कलावान हैं। ऐसे लोग भौतिक वस्तुओं के रूप में और ज्ञान के रूप में उत्तम ज्ञान को देने वाले हैं। आप ऐसे दानी लोगों की हर प्रकार से और हर दिशा से रक्षा करते हैं। दूसरा, जो लोग शुद्ध भोजन करके सबको प्रसन्नता देते हैं। ऐसे सभी लोगों की तुलना सूर्य से की जाती है।

जीवन में सार्थकता

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

दानी, स्वस्थ और त्यागशील लोग किस प्रकार परमात्मा के द्वारा संरक्षित होते हैं और उनकी तुलना सूर्य से क्यों की जाती है?

एक दानी अपनी भौतिक सम्पदा और ज्ञान जरूरतमंद लोगों को दान करता है।

एक स्वस्थ व्यक्ति सबको स्वास्थ्य के बारे में ज्ञान और मार्गदर्शन देता है।

त्याग सबके लिए सूर्य की किरणों की तरह होती हैं। इसीलिए ऐसे लोगों की तुलना सूर्य से की जाती है। हमें सभी वस्तुएं, ज्ञान और स्वास्थ्य आदि सूर्य से ही मिलता है, जो सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा का सर्वोच्च उपहार है। यह हमारे पूर्ण संरक्षण के लिए है। इससे हमें जीवनदायिनी शक्ति, सभी सम्पदायें और जीवन का आनन्द लेने का वातावरण प्राप्त होता है। सूर्य ब्रह्माण्ड के राजा की तरह है। सभी राजाओं और नेताओं को भी सूर्य की तरह दाता बनना चाहिए।

ऋग्वेद मन्त्र 1.31.16

इमामग्ने शरणि॑ मीमृषो न इममध्वानं यमगाम दूरात् ।

आपि॒ पिता प्रमति॑ः सोम्यानां॒ भृमिरस्यृषिकृन्मर्त्यानाम् ॥ 16 ॥

इमाम् – इस

अग्ने – सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा

शरणिम् – अज्ञानता, त्रुटियाँ (जो उचित ज्ञान का नाश करती हैं)

मीमृषः – दूर रखता है

नः – हमारे

इमम् – इस

अध्वानम् – उचित मार्ग

यम – जो

अगाम – हमें निकट लाते हैं

दूरात् – जिनसे हम दूर चले गये

आपि॒ – प्रेम से प्राप्त

पिता – संरक्षक

प्रमति॑ः – उत्तम रूप से प्रेरित करने वाली बुद्धि

सोम्यानाम् – शान्त और सौम्य स्वभाव

भृमि॒ – मुख मोड़ने वाले

अस्य – हैं

ऋषिकृत् – ऋषि कोटि के

मर्त्यानाम् – मरण योग्य मनुष्य ।

व्याख्या :-

परमात्मा हमारे जीवन को दृष्टा ऋषियों के धार्मिक पथ पर किस प्रकार चलाता है?

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

परमात्मा की चलायमान ऊर्जा कौन है?

सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा, हमें उस अज्ञानता से दूर रखते हैं, जो उचित ज्ञान का नाश करती है। इस प्रकार हमें धार्मिक पथ पर लाते हैं, जहाँ से हम भटक गये थे। परमात्मा को पूरे प्रेम के साथ हमें एक संरक्षक की तरह स्वीकार करना चाहिए, जो हमें उत्तम प्रेरणादायक बुद्धि, शान्ति और विनम्र व्यवहार प्रदान करता है। उसकी ऊर्जायें सब स्थानों पर घूमती हैं, जिससे मर्त्य मानवों को दृष्टा ऋषि बना सकें। उसकी चलायमान ऊर्जायें सूर्य तथा अन्य आकाशीय पिण्डों की तरह महान सन्त और बुद्धिमान लोग हैं।

जीवन में सार्थकता

धार्मिक पथ पर कैसे चलें?

परमात्मा की चलायमान ऊर्जाओं की क्या भूमिका है?

परमात्मा हमें दो प्रकार से दृष्टा ऋषियों के धार्मिक पथ पर चलाते हैं :-

(क) सीधा और प्रत्यक्ष पथ – जब हम परमात्मा को प्रेमपूर्वक अपने संरक्षक की तरह स्वीकार करें, जो हमें महान ज्ञान और गुण आदि देता है। यह सीधा और प्रत्यक्ष पथ है – ध्यान साधना का पथ जिसे देव पूजा भी कहा जाता है अर्थात् परमात्मा को प्रेम करना और उसकी पूजा करना।

(ख) अप्रत्यक्ष पथ – दृष्टा ऋषियों के रूप में अपनी चलायमान ऊर्जाओं के माध्यम से वह मर्त्य मानवों को दृष्टा ऋषियों के रूप में परिवर्तित कर देता है। यह अप्रत्यक्ष पथ पवित्र और सत्य सन्तों की संगति के रूप में है, इसलिए इसे संगतिकरण कहते हैं।

यह दोनों पथ केवल त्याग कर्मों अर्थात् दान के बाद ही सफल होते हैं।

ऋग्वेद मन्त्र 1.31.17

मनुष्वदग्ने अग्निरस्वदग्निरो ययातिवत्सदने पूर्ववच्छुचे ।
अच्छ याह्या वहा दैव्यं जनमा सादय बर्हिषि यक्षि च प्रियम् ॥ 17 ॥

मनुष्वदत् – मननशील मनुष्य की भाँति

अग्ने – सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा

अग्निरस्वत् – सबसे प्रथम

अग्निरः – सबका अंग

ययातिवत् – वायु की तरह, सदैव गतिशील

सदने – अपने अन्तिम गृह के लिए

पूर्ववत् – पूर्व की भाँति

शुचे – शुद्ध, पवित्र, मन की वृत्तियों की अशुद्धताओं से मुक्त

अच्छ – उत्तम प्रकार से

आयाहि – प्रभु को प्राप्त, प्रभु की ओर

आवह – सब दिशाओं से

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

दैव्यम् – दिव्य

जन्म – जन्म

आसादय – स्थापित

बर्हिषि – गहरे हृदय आकाश में

यक्षि – संगति

च – और

प्रियम् – आपके प्रिय परमात्मा, व्यवहार

व्याख्या :-

मनुष्यों का वास्तविक आवास क्या है?

इस मन्त्र में अग्नि का प्रयोग व्यक्तिगत ऊर्जा के लिए किया गया है, जिसे परमात्मा निम्न निर्देश दे रहे हैं :-

(क) वैदिक विवेक के साथ एक विचारशील मानव की तरह कार्य करना,

(ख) स्वयं को हर वस्तु का अंग समझना, जैसे परमात्मा सबमें अग्रणी है,

(ग) वायु की तरह रहना, सदैव क्रियाशील,

(घ) पवित्र रहना, पूर्व की भाँति मन की वृत्तियों से उत्पन्न अपवित्रताओं से मुक्त।

इन चार प्रयासों के बाद चारों दिशाओं से एक उत्तम पथ पर चलना जिससे हमें एक दिव्य जीवन प्राप्त हो। अपने गहरे हृदय में अपने प्रिय परमात्मा को स्थापित करना और सदैव उसकी संगति में रहना और उसी प्रकार व्यवहार करना, जिससे हम अपने वास्तविक गृह अर्थात् मुक्ति, परमात्मा की गोद में पहुँच सकें।

जीवन में सार्थकता

आत्मा की यात्रा पर मुक्ति के चार कदम कौन से हैं?

यह मन्त्र मुक्ति का स्पष्ट पथ उपलब्ध कराता है। हमें अपने जीवन का संचालन इन चार पदों पर ही करना चाहिए :-

(क) मनुष्यवत – मननशील मनुष्य की भाँति

(ख) अपिंस्वत अपिरा: – सबसे प्रथम, सबका अंग

(ग) ययातिवत् – वायु की तरह, सदैव गतिशील

(घ) पूर्ववत् शुचे – पूर्व की भाँति, शुद्ध, पवित्र, मन की वृत्तियों की अशुद्धताओं से मुक्त

इसके बाद हमें एक दिव्य जीवन प्राप्त होगा, जो हमें मुक्ति की ओर ले जायेगा। हमें परमात्मा को अपने गहरे हृदय में स्थापित करके उसकी संगति करनी चाहिए और एक गुणवान व्यक्ति की तरह व्यवहार करना चाहिए। मुक्ति प्राप्त होने तक हमें परमात्मा से प्रेम और उसी पर ध्यान करना चाहिए, ब्रह्माण्ड के साथ एकता महसूस करनी चाहिए और सदैव दूसरों की सेवा और कल्याण हेतु हर त्याग के लिए तत्पर रहना चाहिए और सदैव पवित्र रहना चाहिए।

ऋग्वेद मन्त्र 1.31.18

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

एतेनाग्ने ब्रह्मणा वावृथस्व शक्ती वा यत्ते चकृमा विदा वा ।
उत प्र णेष्यभि वस्यो अस्मान्त्सं नः सृज सुमत्या वाजवत्या ॥ 18 ॥

एतेन – इसके साथ

अग्ने – सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा

ब्रह्मणा – सर्वोच्च दिव्य ज्ञान के साथ

वावृथस्व – लगातार प्रगतिशील

शक्ती – बल

वा – के द्वारा

यत ते – जो आपका है (प्रेम)

चकृमा – पूरी तरह से प्राप्त

विदा – ज्ञान

वा – के द्वारा

उत – और आप

प्रणेषि – हमें उत्तम अनुभूति की ओर ले चलो

अभि – की ओर

वस्यः – उत्तम वस्तुएं तथा वातावरण

अस्मान् – हमें

सम् (सृज से पूर्व लगाकर)

नः – हमारे

सृज (सम सृज) – संयुक्त कीजिए, अलंकृत कीजिए

सुमत्या – उत्तम बुद्धि के साथ

वाजवत्या – समस्त संग्रामों में शक्तिशाली

व्याख्या :-

मुक्ति के पथ पर कौन हमारी सहायता करता है?

इसी सूक्त के 17वें मन्त्र के निर्देशों के अनुसार जब हम जीवन जीते हैं तो हमारी व्यक्तिगत ऊर्जा लगातार प्रगति करते हुए सर्वोच्च दिव्य ज्ञान और परमात्मा की शक्ति को पूरी तरह से प्राप्त करने की ओर अग्रसर होती है। परमात्मा ऐसे मनुष्यों को उत्तम रूप में उत्तम अनुभूति देने के लिए स्वीकार करते हैं। वह हमारे जीवन को हर प्रकार के उत्तम ज्ञान और उत्तम शक्तियों से अलंकृत करते हैं।

जीवन में सार्थकता

परमात्मा किसके स्थायी मित्र और निर्देशक बनते हैं?

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

मुक्ति के पथ पर जब हम इस सूक्त के 17वें मन्त्र में निर्देशित चार कदमों का जीवन में अनुसरण करते हैं तो परमात्मा निश्चित रूप से हमें उत्तम वातावरण, ज्ञान और शक्तियाँ प्रदान करते हैं और हमारे जीवन को एक दृष्टा ऋषि की तरह अलंकृत कर देते हैं। ऐसे दृष्टा ऋषि के लिए परमात्मा स्थायी मित्र और निर्देशक बन जाते हैं।

ऋग्वेद मण्डल-1 सूक्त 32

सूर्य और बादलों के बीच युद्ध का सूक्त

ऋग्वेद मन्त्र 1.32.1

इन्द्रस्य नु वीर्याणि प्र वोचं यानि चकार प्रथमानि वज्री ।
अहन्नहिमन्वपस्ततर्द प्र वक्षणा अभिनत्पर्वतानाम् ॥ १ ॥

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

इन्द्रस्य — परमात्मा, सूर्य, राजा, इन्द्रियों का नियंत्रक

नु — अब

वीर्याणि — बहादुर कार्य

प्र वोचम् — सर्वप्रथम कहने वाला, अग्रणी वचन

यानि — जो

चकार — प्रस्तुत करता है

प्रथमानि — सर्वप्रथम, प्रसिद्ध

वज्री — मजबूत बलों के साथ

अहन्न — टूटता है

अहिम — बादल, अहंकार, इच्छाएं, अपराध

अनु — उसके बाद

अपः — जल

ततर्द — गति के लिए तैयार, रेंगने वाला

प्र वक्षणाः — भिन्न-2 नदियों में, शक्ति के स्रोतों में

अभिनत — बहने के लिए प्रेरित करता है

पर्वतानाम् — सबसे भारी बादल, अहंकार, इच्छाएं और अपराध आदि।

व्याख्या :-

जीवन के भारीपन को कौन तोड़ सकता है?

परमात्मा अपनी सबसे मजबूत शक्तियों के आधार पर जो कार्य करता है, उनमें से सबसे प्रथम सुप्रसिद्ध और सर्वोच्च वीरता का कार्य सर्वप्रथम कहा जाता है। वह बादलों के भारीपन को तोड़ देता है और उसके बाद उन्हें तरलता में परिवर्तित करके उन्हें नदियों के समान भिन्न-2 दिशाओं में जाने के लिए प्रेरित करता है।

यदि इन्द्र को हम सूर्य के रूप में समझें तो सत्य है कि यह बादलों के भारीपन को तोड़ता है।

यदि इन्द्र को एक राजा की तरह समझा जाये तो वह समाज में व्याप्त अपराध तथा राष्ट्र विरोधी गतिविधियों रूपी भारीपन को तोड़ता है। वह दुराचारी ताकतों को तरल कर देता है और उन्हें लोगों से दूर जाने के लिए प्रेरित तथा व्यवस्थित करता है।

यदि इन्द्र को इन्द्रियों के नियंत्रक के रूप में समझा जाये तो वह मजबूत शक्तियों को प्राप्त करके अहंकार और इच्छाओं रूपी जीवन के भारीपन को तोड़ता है। इसके उपरान्त वह अपनी ऊर्जा को वीर्य रूपी तरल पदार्थ में परिवर्तित करता है, जिससे वह वीरता और त्याग के भिन्न-2 कार्य कर सके।

जीवन में सार्थकता

संरक्षण शक्तियों को कौन धारण करता है?

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

सूर्य को सभी शक्तियाँ परमात्मा से प्राप्त होती हैं। सभी मनुष्य सूर्य से ऊर्जा प्राप्त करते हैं। सभी मनुष्यों में केवल इन्द्रियों पर नियन्त्रण करने वाले मनुष्य ही अपने व्यक्तिगत जीवन के भारीपन को तोड़ने के योग्य होते हैं। केवल ऐसे इन्द्रियों के नियंत्रक ही समाज का नेतृत्व करने के योग्य होते हैं और एक राजा बन कर समाज को सुखपूर्वक जीवन की सुविधा देने के लिए तथा सबके संरक्षण के लिए अपराधों और राष्ट्रद्वोही कार्यों के भारीपन को तोड़ सकते हैं। इस प्रकार दिव्य शक्तियाँ ही नकारात्मकता या बुरी प्रवृत्तियों को महान सकारात्मकता में परिवर्तित करके उन्हें नदियों की तरह बहा सकती हैं।

ऋग्वेद मन्त्र 1.32.2

अहन्हि॑ पर्वते॒ शिश्रियाण॑ त्वष्टास्मै॒ वज्रं॒ स्वर्यं॒ ततक्ष॑।
वाश्राइव॑ धेनवः॒ स्यन्दमाना॑ अंजः॒ समुद्रमव॑ जग्मुरापः॒ ॥२॥

अहन् – तोड़ता है

अहिम् – बादल

पर्वते – पर्वतों के समान भारी

शिश्रियाणम् – शरण लेता है

त्वष्टा – आप

अस्मै – मेरे लिए

वज्रम् – शक्तिशाली

स्वर्यम् – बहुत ऊँची आवाज, सुख सुविधाएं

ततक्ष – बनाता है, उपलब्ध कराता है

वाश्रा – ऊँची ध्वनि करने वाला

इव – जैसे कि

धेनवः – गऊएं

स्यन्दमाना – अपने नवजात बछड़े की तरफ भागती हुई

अंजः – प्रकाशवान व्यक्ति

समुद्रम् – दिव्य समुद्र (परमात्मा का)

अव जग्मु – नदियों के समान

आपः – जल के समान बहते हुए गुण।

व्याख्या :-

एक दृष्टा ऋषि किस प्रकार परमात्मा से मिलता है?

जब पर्वत रूपी बादल तोड़ दिये जाते हैं तो वे बहुत जोर से गर्जना करते हैं और सबके कल्याण के लिए परमात्मा की व्यवस्था में शरण लेते हैं, जिस प्रकार अपने नवजात बछड़े की तरफ जाती हुई गाय जोर से गर्जना करती है। इसी प्रकार ज्ञानी और प्रकाशवान व्यक्ति, अपने अहंकार और इच्छाओं का पूर्ण त्याग करके,

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

परमात्मा के दिव्य समुद्र में समाहित हो जाते हैं तथा अपने गुणों और ज्ञान के बल पर ऐसे बहते हैं, जैसे नदियों का जल।

जीवन में सार्थकता

एक दृष्टा का निर्माण किस प्रकार होता है?

जब बछड़े का जन्म होता है तो गाय अपने नवजात को मिलने के लिए उसकी ओर दौड़ती है। एक बार जब बादल टूट जाते हैं तो उनका जल नदियों की ओर दौड़ता है। एक बार जब अहंकार, इच्छायें और अज्ञानता नष्ट हो जाती है तो व्यक्ति दृष्टा बन जाता है और उसका जीवन गुणों से भर जाता है तथा वह परमात्मा की तरफ दौड़ता है।

ऋग्वेद मन्त्र 1.32.3

वृषायमाणोऽवृणीत् सोमं त्रिकद्वुकेष्पिबत्सुतस्य ।
आ सायकं मधवादत्त वज्रमहनेनं प्रथमजामहीनाम् ॥ ३ ॥

वृषायमाण् – एक प्रकाशवान व्यक्ति की तरफ गुणों की वर्षा करने वाला

अवृणीत् – स्वीकार करता है

सोमम् – दिव्यता और गुणों के रस

त्रिकद्वुकेषु – तीन लक्षणों वाला ब्रह्माण्ड (उत्पत्ति, पालन और नाश)

अपिबत् – भोग करता, धारण करता

सुतस्य – दिव्यता और गुणों के रस उत्पन्न करने के लिए

आ –

सायकम् – मजबूत वज्र, अहंकार और सभी इच्छाओं का नाश

मधवा – सूर्य की शक्तियों से भरपूर

आदत – धारण करता है

वज्रम् – वज्र

अहन् – तोड़ता है, नष्ट करता है

एनम् – इन भारीपन को

प्रथमजाम् – सबसे पहले प्रस्तुत होने वाला

महीनाम् – नष्ट होने के योग्य।

व्याख्या :-

मानव जीवन में कौन से शान्तु सर्वप्रथम उपस्थित होते हैं?

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

सूर्य पूरे ब्रह्मण्ड से शक्तियाँ स्वीकार करता है, जिस ब्रह्मण्ड के तीन लक्षण होते हैं – उत्पत्ति, पालन तथा संहार। सूर्य अपनी शक्तियों का प्रयोग करके अपने ताप रूपी सबसे बलशाली हथियार से वर्षा करता है। इसके लिए वह बादलों को तोड़ता है जो सर्वप्रथम उत्पन्न होते हैं और संहार के योग्य होते हैं।

प्रकाशवान् व्यक्ति दिव्यता के रस को स्वीकार करते हैं और उनका पान करते हैं। उनके गुण दिव्यता के रस हैं और वे उन गुणों की वर्षा करते हैं। उनके गुण ही उनके सबसे बड़े हथियार हैं, जिनकी सहायता से वे अहंकार और अपनी समस्त इच्छाओं का संहार करते हैं। अहंकार और इच्छाएं संहार के योग्य हैं क्योंकि वे अत्यन्त भारी होते हैं। वे मानव जीवन पर भारी बोझ के समान हैं।

जीवन में सार्थकता

हम अहंकार और इच्छाओं का नाश किस प्रकार कर सकते हैं?

अहंकार तथ्या इच्छाएं हमारे जीवन में आध्यात्मिक पथ के शत्रु की तरह सर्वप्रथम उपस्थित होते हैं। उनका संहार केवल गुणों से सुसज्जित आध्यात्मिक पथ से ही सम्भव है, जो सच्ची और पूर्ण ईश्वर भवित की तरफ जाता हो। पवित्र गुणों वाली आध्यात्मिकता का यह हथियार तो अन्य लोगों की नकारात्मकता को भी सकारात्मकता में परिवर्तित कर सकता है।

ऋग्वेद मन्त्र 1.32.4

यदिन्द्राहन्प्रथमजामहीनामान्मायिनाममिनाः प्रोत मायाः ।
आत्सूर्यं जनयन्द्यामुषासं तादीला शत्रुं न किला विवित्से ॥ 4 ॥

यत् – जब

इन्द्र – परमात्मा, सूर्य, राजा, इन्द्रियों का नियंत्रक

अहन् – नष्ट हुआ

प्रथमजाम् – प्रथम उत्पन्न (अहंकार और इच्छाएं आदि)

अहीनाम् – नष्ट होने योग्य

उत् – और

मायिनाम् – आच्छादित, अंधकार करने वाला

(अमिनाः – प्र अमिनाः) बहुत अच्छी तरह से नष्ट

प्र – अमीनः से पूर्व लगाया हुआ

आत् – यह

मायाः – बादल, अहंकार और इच्छाएं

आत् – उसके बाद

सूर्यम् – सूर्य में, मन में

जनयन् – उत्पन्न, अनुभूति प्राप्त ज्ञान

द्याम् – गहरे अन्तरिक्ष में

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

ऊषासम् – प्रकाशित
तादीत्ता – उसके बाद
शत्रुम् – शत्रु
न – नहीं
किल – निश्चित रूप से
विवित्से – प्राप्त किए।

व्याख्या :-

हम किस प्रकार शत्रुओं से रहित हो सकते हैं?

सूर्य उन बादलों को नष्ट करता है जो उसकी शक्तियों को ढकने का प्रयास करते हैं। बादल प्रथम उत्पन्न होते हैं और संहार के योग्य होते हैं। इस प्रकार उनके गहरे आकाश में प्रकाश उत्पन्न होता है और तीव्र गर्जना होती है, जब वे धरती पर वर्षा करते हैं। इसी प्रकार एक महान राजा और इन्द्रियों के नियंत्रक को उन सभी शत्रुओं का नाश कर देना चाहिए, जो प्रथम अवस्था में उत्पन्न होते हैं जैसे अहंकार और इच्छाएं। यह नाश प्रथम अवस्था में ही हो जाना चाहिए। एक बार इनके पूरी तरह नष्ट होने के बाद ज्ञान और गुणों का प्रकाश हमारे हृदय और मन के आन्तरिक आकाश में पैदा होता है और इन शत्रुओं को दोबारा उत्पन्न नहीं होने देता। इस प्रकार हम शत्रु रहित हो सकते हैं।

जीवन में सार्थकता

अपनी सकारात्मकताओं का उचित प्रयोग किस प्रकार किया जाए?

अपने शत्रुओं से मुक्ति प्राप्त करने के लिए हमें अपनी सारी शक्तियों का उपयोग करते हुए नकारात्मक ऊर्जाओं की वर्षा करके उन्हें बहा देना चाहिए। अपने मन के साथ-साथ शत्रुओं की सकारात्मक ऊर्जा की भी प्रशंसा और उचित प्रयोग करके महत्वपूर्ण कार्य करने चाहिए। यदि अपराधियों के आन्तरिक मन को श्रेष्ठ कार्यों के लिए प्रोत्साहित किया जाए तो उन्हें भी महान श्रेष्ठ व्यक्ति बनाया जा सकता है। यहाँ तक कि राष्ट्र के शत्रु, चाहे वे आन्तरिक हों या विदेशी, उन्हें भी पालतू बनाकर अपने लिए लाभकारी बनाया जा सकता है। आध्यात्मिक रूप से हमें अपनी सकारात्मकता तथा परमात्मा के प्रति प्रेम पर लगातार नजर रखनी चाहिए और अपने भीतर श्रेष्ठ गुणों को बढ़ाते रहना चाहिए।

ऋग्वेद मन्त्र 1.32.5

अहन्वृत्रं वृत्रतरं व्यंसमिन्द्रो वज्रेण महता वधेन।
स्कन्धांसीव कुलिशेना विवृक्षणाऽहिः शयत उपपृक्षुथिव्याः ॥ ५ ॥

अहन् – टूटा हुआ

वृत्रम् – बादल, अहंकार, इच्छाये

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

वृत्तरम् – अधिक घना, प्रकाश को ढका हुआ

व्यंसम् – टुकड़ों में नष्ट

इन्द्रः – परमात्मा, सूर्य, राजा, इन्द्रियों का नियंत्रक

वज्रेण – मजबूत वज्रों के साथ

महता – महान्

वधेन – नष्ट करते हुए

स्कन्धांसि – कंधे

इव – समान

कुलिशेना – काटने वाले हथियारों के साथ

विवृक्षणा – पृथक, कटा हुआ, नष्ट हुआ

अहिः – बादलों को नष्ट करता हुआ

शयत् – निद्रा

उपपृक – ऊपर, स्पर्श करते हुए

पृथिव्या: – पृथिवी।

व्याख्या :-

क्या हम सदा के लिए अपने शत्रुओं का नाश कर सकते हैं?

सूर्य घने बादलों को तोड़ देता है, जो उसके प्रकाश को ढकने की कोशिश करते हैं और लोगों के लिए भारी अन्धकार पैदा कर देते हैं। सूर्य का सबसे बड़ा हथियार उसका ताप है, जिसके कारण टूटते हुए बादल टुकड़ों में बंटकर तथा धरती पर गिर कर सोने के लिए मजबूर हो जाते हैं, जैसे किसी शत्रु के कंधे कटे हों और वह टुकड़ों में विभाजित होकर धरती पर सदा—सदा के लिए सो गया हो।

जब इन्द्रियों का नियन्त्रक अपने अहंकार और इच्छाओं को टुकड़ों में नष्ट कर देता है अर्थात वह अपने जीवन से उन्हें सदा के लिए समाप्त कर देता है तो उसके भौतिकवादी जीवन का अन्त हो जाता है। सूर्य की तरह हमें भी ईश्वर भवित रूपी एक महान वज्र की आवश्यकता है। इस ईश्वर भवित में परमात्मा के प्रति पूर्ण समर्पण तथा महान श्रेष्ठताओं के साथ परमात्मा के प्रति प्रेम शामिल है। इस वज्र के सहारे हमारा अहंकार और इच्छाएं सदा—सदा के लिए समाप्त हो सकती हैं।

जीवन में सार्थकता

पूर्ण आध्यात्मिक जीवन का क्या प्रभाव होता है?

पूर्ण श्रेष्ठ जीवन से भरा जीवन, सभी सम्बन्धों में प्रेम, दर्द भरा तथा सम्वेदनशील व्यवहार तथा सबसे अधिक परमात्मा के लिए पूर्ण प्रेम और उसकी दिव्य सर्वोच्च शक्ति के प्रति समर्पण उस महान वज्र को उत्पन्न कर सकते हैं, जिससे आन्तरिक और बाहरी, मानसिक और शारीरिक सभी शत्रुओं का सदा—सदा के लिए नाश किया जा सके।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

ऋग्वेद मन्त्र 1.32.6

अयोद्धे दुर्मद आ हि जुहवे महावीरं तुविबाधमृजीषम् ।
नातारीदस्य समृतिं वधानां सं रुजानाः पिपिष इन्द्रशत्रुः ॥ 6 ॥

अयोद्धा – हारने योग्य, कमजोर

इव – जैसे

दुर्मदः – बुरी मति वाला

(आ – जुह्वे से पूर्व लगाकर)

हि – निश्चित रूप से

(जुह्वे – आ जुह्वे)

महावीरम् – महान् बल (सूर्य)

तुविबाधम् – मजबूत शत्रुओं का नाशक

ऋजीषम् – अनेकों का रस एकत्र करने वाला

न – नहीं

अतारीत – सहन करना

अस्य – वह (सूर्य, इन्द्रियों का नियंत्रक)

समृतिम् – सामूहिक प्रभाव

वधानाम् – वज्र

समरुजानाः – बहती हुई नदी की तरह भागता हुआ

पिपिष – पीस डालने वाला

इन्द्र शत्रुः – सूर्य के शत्रु, इन्द्रियों के नियंत्रक के शत्रु ।

व्याख्या :-

जब कोई बुरी शक्ति किसी मजबूत बलशाली को चुनौती देती है तो क्या होता है?

निश्चित रूप से बुरी शक्तियाँ हारने के योग्य होती हैं । वे महान शक्तियों को ईर्ष्यापूर्वक चुनौती देती हैं । महान शक्तियों ने अनेकों बार अमृत पान किया होता है और अपने अत्यधिक बलशाली शत्रुओं का नाश करने के योग्य होती हैं । जब कि बुरी ताकतें महान शक्तियों के प्रभाव को बर्दाश्त नहीं कर पाती हैं । महान शक्तियों के द्वारा अमृत के रसपान का सामूहिक प्रभाव यह होता है कि बुरी शक्तियों को कुचल दिया जाता है, जो बहती हुई नदियों के समान भागने लगती हैं ।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

बादल भी पराजित होने योग्य शक्ति है। वे सूर्य को चुनौती देते हैं, उसके प्रकाश को ढक कर और नीचे विद्यमान लोगों के लिए अन्धकार पैदा करके। परन्तु महान् शक्ति, सूर्य का ताप, बादलों को कुचल देता है और उन्हें नदियों के रूप में बहने के लिए धरती पर भेज देता है।

अतः यदि हम स्वयं को परमात्मा के प्रति प्रेम की तरफ अपनी आध्यात्मिक शक्तियों को मोड़ कर उन्हें बलशाली बना लें तो हमारे अन्दर का अहंकार, इच्छाएं और बुरी प्रवृत्तियाँ कुचली जा सकती हैं और हमारे जीवन को छोड़ कर भाग सकती हैं।

जीवन में सार्थकता

बुरी शक्तियों को किस प्रकार कुचला जाए?

हमें अपने जीवन तथा समाज में गुणों को मजबूत बनाना चाहिए, बुराईयाँ अपने आप ही कुचली जायेंगी और दूर चली जाएंगी। ईमानदारी को यदि बलशाली बनाया जाए तो बैर्मानी स्वतः ही कुचली जाती है। आध्यात्मिक शक्तियों को बलशाली बनाया जाए तो भौतिकवादी उद्देश्य, अहंकार और इच्छाएं आदि स्वतः ही कुचले जाते हैं।

ऋग्वेद मन्त्र 1.32.7

अपादहस्तो अपृतन्यादिन्द्रमास्य वज्रमधि सानौ जघान।
वृष्णो वधिः प्रतिमानं बुभूषन्पुरुत्र वृत्रे अशयद्व्यरस्तः ॥ 7 ॥

अपाद हस्तः — बाहों और लातों के बिना
अपृतन्यत् — युद्ध के लिए तत्पर योद्धा के समान
इन्द्रम् — परमात्मा, सूर्य, राजा, इन्द्रियों का नियंत्रक
अस्य — उसकी
वज्रम — बलशाली बज्र
अधि — उत्तम रूप से
सानौ — सबसे ऊपर
आजघान — आक्रमण
वृष्णो — शक्तिशाली वर्षा करने वाला
वधिः — कमजोर, अनुउपजाऊ
प्रतिमानम् — समान स्तर का युद्ध
बुभूषन — इच्छा करता हुआ
पुरुत्रा — अनेकों अंगों एवं अनेकों स्थानों में
वृत्रः — अज्ञान से ढका हुआ
अशयत् — मृत के समान सोया हुआ

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

व्यस्तः – अनेकों टुकड़ों में फैला हुआ।

ब्याख्या :-

एक महान शक्ति तथा एक कमजोर अनुपजाऊ अस्तित्व के मध्य संग्राम होने पर क्या होता है?

यह मन्त्र इन्द्र और वृत्र के मध्य संग्राम का इशारा करता है। यदि इन्द्र सूर्य है तो वृत्र बादल है। यदि इन्द्र इन्द्रियों का नियन्त्रक है तो वृत्र मनुष्यों की कमजोर प्रवृत्तियाँ हैं, जैसे अहंकार, भौतिकवादी इच्छाएं आदि। यदि इन्द्र एक महान श्रेष्ठ राजा है तो वृत्र उसके कमजोर शत्रु हैं।

वृत्र बाँह विहीन तथा पांव विहीन शत्रु है, जो महान और शक्तिशाली के विरुद्ध संग्राम के लिए हिम्मत करते हैं। ऐसे वृत्र भी एक योद्धा की तरह युद्ध करना चाहते हैं। वे कमजोर हैं और अनुपजाऊ हैं, परन्तु फिर भी महान शक्तियों के साथ बराबर के स्तर का युद्ध चाहते हैं। ऐसे युद्ध में महान शक्ति अपने शक्तिशाली हथियारों के साथ वृत्रों के ऊपर उत्तम तरीके से हमला करती है और उन्हें पिघला देती है। वृत्रों पर अज्ञानता आच्छादित होती है। इसलिए पिघलने के बाद नीचे जाने पर वे कई भागों में विभक्त हो जाते हैं और मृत वस्तु की तरह सो जाते हैं।

जीवन में सार्थकता

कमजोर और अनुपजाऊ अस्तित्व के विरुद्ध युद्ध कैसे करें?

प्रत्येक राजा और प्रत्येक व्यक्ति को सूर्य की तरह शक्तिशाली होना चाहिए, महान श्रेष्ठ कार्यों से महान ऊर्जा एकत्र करें और इन्द्रियों का नियन्त्रक बनें। उन्हें महान दिव्य शक्तियों को एकत्र करके उन्हें बनाकर रखना चाहिए। जब कभी भी कमजोर शक्ति के विरुद्ध युद्ध का मुकाबला करना हो तो उस कमजोर शक्ति के ऊपर अपने महान और शक्तिशाली वज्र का प्रयोग करते हुए उत्तम तरीके से हमला करना चाहिए। उन्हें यह स्मरण रखना चाहिए कि कमजोर शक्ति के हाथ या पाँव नहीं होते। इसका अर्थ है कि कमजोर शक्तियों के पास कोई स्थायी समर्थन नहीं होता। कमजोर प्रवृत्तियों की पराजय को कई टुकड़ों में विभाजित मृत, सुषुप्त के समान समझा जाता है।

ऋग्वेद मन्त्र 1.32.8

नदं न भिन्नममुया शयानं मनो रुहाणा अति यन्त्यापः ।
श्याश्चिद् वृत्रे महिना पर्यतिष्ठत्तासामहिः पत्सुतः शीर्बभूव ॥ 8 ॥

नदम् – भारी बहने वाली नदी
न भिन्नम – किनारों से रहित, टूटे किनारे
अमुया – धरती पर पहुँचती है
शयानम् – सोते हुए के समान
मनः – गहरी बुद्धि

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

रुहाणा: — उत्साह सहित

अति यन्ति — तेज गति से पार करती है

आप: — जल

श्यत — जो

चित — मन

वृत्रः — वृत्तियाँ, संस्कार

महिना — महानता के साथ

पर्यतिष्ठत् — चारों तरफ से संगठित

तासाम — उन जलों में

अहिः — नष्ट हुआ

पत्सुतः शीः — पैरों के नीचे सोये हुए

बभूव — हो गया।

व्याख्या :-

अहंकार और इच्छाओं का अन्त कैसे हो?

जब भारी बहती हुई नदी के किनारे टूट जाते हैं तो उसका जल भूमि पर चारों तरफ फैल जाता है और ऐसा लगता है कि जैसे वह भूमि के साथ सो गया हो। नदी के अन्दर अपने गहरे मस्तिष्क में वही जल पूरे उत्साह से भरा हुआ था। एक बार जब किनारे टूटते हैं तो जल का अहंकार समाप्त हो जाता है और वह अपनी महानता का अहंकार छोड़ कर ऐसे दिखायी देता है, जैसे हारा हुआ शत्रु मारे जाने के बाद सो जाता है।

यह प्रकरण एक सामान्य सिद्धान्त प्रस्तुत करता है — जब अहंकार, इच्छाएं आदि अपनी महानता प्रदर्शित करने का प्रयास करती हैं तो ऐसी प्रवृत्तियाँ हमारे अन्दर अनेक रूपों में एकत्र हो जाती हैं। ऐसी प्रवृत्तियों के किनारे तोड़े ही जाने चाहिए, जिससे वे बाहर बह सकें। एक बार उनको बाहर का मार्ग दिखा दिया जाए तो भूमि पर उनका नाश हो जाएगा, जैसे लोगों के कदमों में सोए हुए के समान।

जीवन में सार्थकता

हमारी क्या कमजोरियाँ हैं और हमारी क्या शक्तियाँ हैं?

हमारी कमजोरियाँ हमारे अहंकार और इच्छाओं का शक्तिशाली होना है।

हमारी शक्ति हमारे अहंकार और इच्छाओं का कमजोर होना है।

बुरी प्रवृत्ति वाले लोग अपने अहंकार और इच्छाओं को पूरे उत्साह के साथ प्रस्तुत करते हैं, जैसे उनका उत्साह उनके दिमाग से निकल रहा हो और कूद रहा हो। परन्तु जब एक बार अहंकार और इच्छाओं को मन के किनारे छोड़ कर बाहर निकलने के लिए मजबूर कर दिया जाए तो उनका अस्तित्व उन लोगों के पैरों के नीचे मिट्टी में मिला नजर आएगा, जिन्होंने अपनी इन्द्रियों पर नियन्त्रण कर लिया हो।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

अहंकार और इच्छाएं हमारी कमजोरियों के कारण ही हमारे ऊपर राज्य करती हैं। हमारी कमजोरी ही यह है कि हम इन बुरी शक्तियों को कमजोर नहीं कर पाते हैं। यदि हम सफलतापूर्वक अहंकार और इच्छाओं को कमजोर कर लें तो हम हर क्षेत्र में शक्तिशाली और मजबूत बन पाएंगे।

ऋग्वेद मन्त्र 1.32.9

नीचावया अभवद् वृत्रपुत्रेन्द्रो अस्या अव वधर्जभार ।
उत्तरा सूरधरः पुत्र आसीद्वानुः शये सहवत्सा न धेनुः ॥ ९ ॥

नीचावया: — भयंकर आकर्षण (निरर्थक वस्तुओं के लिए)

अभवत् — है

वृत्र पुत्रा — अहंकार, इच्छाएं और बादल के नाम वाले पुत्र रखने वाला

इन्द्रः — परमात्मा, सूर्य, राजा, इन्द्रियों का नियंत्रक

अस्या: — उसके

(अव — जभार से पूर्व लगाकर)

वधः — नष्ट करता है

(जभार — अव जभार) उसके गिरने के लिए

उत्तरा — ऊपर

सूः — यह था

अधरः — नीचे

पुत्र — पुत्र

आसीत् — था

दानुः — सबका देने वाला

शये — सोती है

सहवत्सा — अपने पुत्र के साथ

न — जैसे

धेनुः — बछड़े को जन्म देने वाली गाय।

व्याख्या :-

बादलों की माँ कौन है?

हमारे अहंकार, इच्छाओं और बुराइयों की माँ कौन है?

वैज्ञानिक रूप से बादलों की माँ धरती है। सूर्य बादलों का नाश करता है और उन्हें नीचे जल बरसाने के लिए मजबूर करता है। इस प्रकार माँ पुत्र के ऊपर दिखाई देती है, जैसे माँ की गोद में बैठा हुआ बच्चा।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

ऐसा इसलिए होता है क्योंकि बादल अपनी अहंकारपूर्ण महानता दिखाने और सूर्य के ताप और प्रकाश को रोकने की कोशिश करते हैं।

आध्यात्मिक रूप से निरर्थक वस्तुओं या सांसारिक चीजों के प्रति मोह ही अहंकार, इच्छाओं और समस्त बुराईयों की माँ है। जब एक इन्द्रियों का नियंत्रक, सूर्य की भाँति, सभी अहंकारों इच्छाओं और बुराईयों का नाश कर देता है तो वे अपनी माँ के साथ जुड़ाव के साथ निरर्थक और नष्ट हो जाते हैं।

जीवन में सार्थकता

नकारात्मक प्रवृत्तियों के क्या प्रभाव हैं?

प्रेम, कल्याण, त्याग और अहंकारशून्यता वास्तव में परमात्मा के लक्षण हैं, जो सर्वोच्च दिव्य ऊर्जा है। इसके विपरीत यदि हम नकारात्मक प्रवृत्तियों जैसे अहंकार, इच्छाओं और बुराईयों को अनुमति दें तो यह हमारे जीवन की मूल और केन्द्रीय शक्ति परमात्मा की प्रकृति के विरुद्ध होगा।

ऐसी नकारात्मक प्रवृत्तियों का प्रभाव बाहरी रूप में समृद्धि तथा शक्ति के दाता के रूप में पड़ता है, परन्तु अन्ततः वे वास्तव में पूरी तरह से अस्तित्वहीन सिद्ध होते हैं क्योंकि ये प्रकृति के नियमों के विरुद्ध हैं और सर्वोच्च ऊर्जा अर्थात् परमात्मा इनका कभी समर्थन नहीं करता।

ऋग्वेद मन्त्र 1.32.10

अतिष्ठन्तीनामनिवेशनानां काष्ठानां मध्ये निहितं शरीरम्।

वृत्रस्य निष्यं वि चरन्त्यापो दीर्घं तम आशयदिन्द्र शत्रुः ॥ 10 ॥

अतिष्ठन्तीनाम् – सदैव गतिमान

अनिवेशनानाम् – कभी स्थापित नहीं

काष्ठानाम् – सभी दिशाओं में

मध्ये – मध्य में

निहितम् – स्थापित

शरीरम् – शरीरों में

वृत्रस्य – बादल, अहंकार, इच्छायें

निष्यम् – छिपा हुआ

वि चरन्ति – विशेष रूप से गति करता है

आपः – जल, भिन्न-2 कार्य करते हुए लोग

दीर्घम् तमः – भयंकर अंधकार

आशयत् – स्थापित, निद्रालीन

इन्द्र शत्रु – सूर्य का शत्रु, इन्द्रियों का नियन्त्रक।

व्याख्या :-

क्या बादल हमेशा के लिए मर सकते हैं?

वैज्ञानिक रूप से बादल हमेशा सब दिशाओं में घूमते हैं और कभी भी स्थिर नहीं होते।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

नष्ट होने के बाद भी वे इस भूमि के शरीर के रूप में छिपे रहते हैं और जल के रूप में विशेष प्रकार से चलते हैं। वे पूर्ण अंधकार में सो जाते हैं, परन्तु निश्चित रूप से वे सूर्य के शत्रु हैं। इस ब्रह्माण्ड के अस्तित्व जारी रहने तक बादल उत्पन्न होते ही रहेंगे।

आध्यात्मिक रूप से हमारे अहंकार और इच्छाएँ भी हमें जीवन में चलने के योग्य बनाते हैं। कुचले जाने के बाद भी वे सब लोगों में छिपे रहते हैं, जो भिन्न-2 गतिविधियों में तब तक शामिल रहते हैं, जब तक हमारे कर्म बैंक चलते रहते हैं।

जीवन में सार्थकता

क्या अहंकार और इच्छाएँ सदा के लिए मर सकते हैं?

हमें यह जीवन कुछ दायित्व निभाने के लिए प्राप्त हुआ है। अहंकार और इच्छाएँ एक सक्रिय जीवन में छिपे रहते हैं। अहंकार और इच्छाओं का अस्तित्व हमारे कर्म बैंक के अन्त तक जारी रहेगा, अर्थात् कर्म बैंक का समाप्त होना या कर्मों से मुक्ति। अतः अहंकार और इच्छाएँ बेशक सदा के लिए नहीं मरतीं, परन्तु उन्हें दबा कर रखना चाहिए और ऊर्जाओं का ध्यान केवल आध्यात्मिक प्रगति पर होना चाहिए।

ऋग्वेद मन्त्र 1.32.11

दासपत्नीरहिगोपा अतिष्ठन्निरुद्धा आपः पणिनेव गावः।
अपां बिळमपिहितं यदासीद् वृत्रं जघन्वाँ अप तद्वार ॥ 11 ॥

दासपत्नीः — दास की पत्नी (बादलों की दास पत्नी जल है, सामान्य लोग अहंकार और इच्छाओं की दास पत्नी के समान हैं)

अहिगोपा: — संरक्षक (बादल, अहंकार, इच्छायें)

अतिष्ठन — स्थापित

निरुद्धा — रुका हुआ, बन्दी

आपः — जल, गतिविधियाँ करते हुए लोग

पणिनेव — देखभाल और पालन करने के लिए

गावः — गऊएँ

अपाम् — जल के, गतिमान लोगों के

बिळम् — आवास

अपिहितम् — ढका हुआ

यत् — जो

आसीत् — है

वृत्रम् — बादल, अहंकार, इच्छाएँ

जघन्वान् — मार देती हैं

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

(अप – ववार से पूर्व लगाकर)

तद् – वह

(ववार – अप ववार) सीमायें लाँघ कर।

व्याख्या :-

क्या जल बादलों की दास पत्नी है?

हमें किसने गुलाम बना रखा है?

हमें गुलामी से मुक्त कौन कर सकता है?

वैज्ञानिक रूप से बादलों के अन्दर पानी उनकी दास पत्नी की तरह ही है। बादल जलों की रक्षा करते हैं। सूर्य के द्वारा जब बादलों का नाश हो जाता है तो जल को गुलामी से मुक्ति मिल जाती है। जल को बादलों में ऐसे रखा जाता है, जैसे गऊओं को गौशाला में पूरी देखभाल और पालन के लिए छत के नीचे रखा जाता है। सूर्य बादलों को नष्ट करता है और सबके कल्याण के लिए जल को मुक्त कर देता है।

आध्यात्मिक रूप से सामान्य लोग अपने—अपने अहंकार और इच्छाओं की दास पत्नी हैं, जो देखने में उनके संरक्षक की तरह कार्य करते हैं। अहंकार और इच्छाएं हमारे जीवन की देखभाल करने वाले और पालन—पोषण करने वाले दिखाई पड़ते हैं। इन्द्रियों का नियन्त्रक अहंकार और इच्छाओं को मारकर अपने आपको मुक्त कर लेता है, मुक्ति की अनुभूति प्राप्त करता है और आध्यात्मिक रूप से सबके कल्याण के लिए वर्षा करता है।

जीवन में सार्थकता

गुलामी क्या है?

मुक्ति क्या है?

गुलामी एक बंधन है। मुक्ति पूर्ण स्वतन्त्रता है। जब हम मुक्ति की कामना करते हैं तो हमें सभी बंधनों को तोड़ना होता है। सूर्य जल को वाष्पीकृत करता है, जिससे वह उन्हें बादलों के बंधन में रख सके। केवल सूर्य ही इस गुलामी को तोड़ सकता है। हमारी मनोवृत्तियाँ ही हमें अहंकार और इच्छाओं का गुलाम बनाती हैं, इसलिए हमारा मन ही केवल हमें इस गुलामी से मुक्त कर सकता है। जो अपने मन को नियन्त्रण में कर लेता है, उसे इन्द्रियों का नियन्त्रक अर्थात् सूर्य की भाँति इन्द्र माना जाता है। केवल ऐसा व्यक्ति ही मुक्ति प्राप्त कर सकता है।

ऋग्वेद मन्त्र 1.32.12

अश्व्यो वारो अभवस्तदिन्द्र सृके यत्त्वा प्रत्यहन्देव एकः।
अजयो गा अजयः शूर सोममवासृजः सर्तवे सप्त सिन्धून् ॥ 12 ॥

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

अश्वः — अश्व के समान बल, गति तथा अति उत्साह

वारः — स्वीकार करने योग्य

अभवः — है

तत् — तब आप

इन्द्र — परमात्मा, सूर्य, राजा, इन्द्रियों का नियंत्रक

सृके — वज्र, किरणें, गतिविधियाँ

यत् त्वा — वह आप

प्रत्यहन — प्रहार करता है

देवः — दिव्य

एकः — अकेला

अजयः — जीतता है

गा — वज्रों के साथ, किरणों के साथ और इन्द्रियों के साथ

अजयः — जीतता है

शूर — एक वीर शक्ति की तरह

सोमम् — गुण

आवासृज — उत्पन्न करता है

सर्तवे — लगातार गति के लिए

सप्त — सात

सिन्धून् — जल क्षेत्र।

व्याख्या :-

जीवन में दिव्यताओं और शुभ गुणों के क्या परिणाम होते हैं?

परमात्मा, सूर्य, राजा और इन्द्रियों के नियन्त्रक की दिव्य प्रकृति के कारण उनकी महान शक्ति, गति और उत्साह हमला करने के लिए सदैव सक्षम होते हैं। इस महानता, शक्ति, गति और उत्साह के साथ ये दिव्य शक्तियाँ सदैव शुभ परिणाम ही प्राप्त करती हैं और सात जल केन्द्र अर्थात् बहती हुई नदी के समान अपने कल्याणकारी कार्यों की लगातार गति स्थापित करती हैं।

जीवन में सार्थकता

इन्द्र कैसे बना जा सकता है?

इन्द्र द्वारा किए गए कार्यों के परिणाम क्या होते हैं?

परमात्मा इस सृष्टि की सर्वाच्च सत्ता है। इस सृष्टि का प्रबन्धन और पालन करने के दिव्य मार्ग उस शक्ति के पास हैं। सूर्य, महान राजा तथा उसके महान भक्त उसकी दिव्यता का प्रतिनिधित्व करते हैं, जो अपनी इन्द्रियों पर पूर्ण नियन्त्रण स्थापित कर लेते हैं।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

जो व्यक्ति अपनी इन्द्रियों पर पूर्ण नियन्त्रण स्थापित करने के बाद अपने जीवन में शुभ गुणों के प्रवाह की अनुभूति कर लेता है, वह इन्द्र बन जाता है। इन्द्रियों का सच्चा नियन्त्रक अपने आध्यात्मिक और सामाजिक जीवन को पूर्ण समर्पण के साथ चलाता है। एक सामान्य गृहस्थी को भी इन्द्र के स्तर पर उन्नति करने के लिए स्वयं को प्रशिक्षित करना चाहिए, यदि वह जीवन में स्थायी शान्ति, प्रसन्नता और समृद्धि के महत्व को समझता है।

ऋग्वेद मन्त्र 1.32.13

नास्मै विद्युत्र तन्यतुः सिषेध न यां मिहमकिरद्धादुनिं च।
इन्द्रश्च यद्युयुधाते अहिश्चोतापरीभ्यो मधवा वि जिग्ये ॥ 13 ॥

न – नहीं

अस्मै – उस इन्द्र के लिए

विद्युत – बिजली, प्रकाश करने वाली

न – नहीं

तन्यतुः – गर्जना करती हुई ध्वनि

सिषेध – रोकने वाली, बाधा करने वाली

न – नहीं

याम् – वह जो

मिहम – वर्षा, ओले

अकिरत् – बूँदें

द्धादुनिम् – ध्वनि

च – और

इन्द्रः – परमात्मा, सूर्य, राजा, इन्द्रियों का नियंत्रक

च – और

यत् – जब

युयुधाते – एक-दूसरे के साथ युद्ध करते हैं

अहिः – बादल, अहंकार, इच्छायें

च – और

उत – और

अपरीभ्यः – अन्य योद्धाओं के साथ (बादलों की, अहंकार के और इच्छाओं के)

मधवा – सूर्य

विजिग्ये – जीतता है।

व्याख्या :-

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

क्या बादल सूर्य के कार्यों पर कोई प्रभाव डालते हैं?

बादल अपनी उपस्थिति के कारण अनेक प्रभाव उत्पन्न करते हैं। वे भयंकर धृणि, बिजली, भारी वर्षा तथा वर्फबारी पैदा करते हैं। परन्तु इनमें से कोई प्रभाव इतना शक्तिशाली नहीं है कि सूर्य को अपने कार्य करने से रोके या उसके कार्यों में किसी प्रकार की बाधा उत्पन्न करे।

जब सूर्य और बादल एक-दूसरे के विरुद्ध संग्राम करते हैं तो स्वाभाविक रूप से सूर्य विजयी होता है। बादल के साथ और भी योद्धा हो सकते हैं, परन्तु वे सब पराजित होते हैं। सूर्य अकेला होने के बाबजूद भी विजयी होने के लिए निश्चित है। यह उदाहरण एक दिव्य राजा और इन्द्रियों के दिव्य नियन्त्रक पर बराबर अनुपात और ताकत के साथ लागू होता है। इन्द्रियों का ऐसा नियंत्रक भगवान् और सूर्य से शक्तियाँ प्राप्त करता है।

जीवन में सार्थकता

क्या अहंकार और इच्छाएं किसी इन्द्र की गतिविधियों पर कोई प्रभाव पैदा करती हैं?

अहंकार और इच्छाएं बादलों की भाँति अनेकों विस्मयकारी प्रभाव पैदा करते हैं, जैसे प्रसिद्धि भारी भौतिक सम्पदाएं आदि, परन्तु इन सबका इन्द्रियों के नियन्त्रक पर कोई प्रभाव नहीं होता, जो युद्ध को जीतने के लिए निर्धारित है।

ऋग्वेद मन्त्र 1.32.14

अहेर्यातारं कमपश्य इन्द्र हृदि यते जघ्नुषो भीरगच्छत् ।
नव च यन्नवतिं च स्वन्तीः श्येनो न भीतो अतरो रजासि ॥ 14 ॥

अहे: — बादल, अहंकार, इच्छाये

यातारम् — आक्रमण करने वाले, नष्ट करने वाले

कम — जिसको

अपश्य — देखने के लिए

इन्द्र — परमात्मा, सूर्य, राजा, इन्द्रियों का नियंत्रक

हृदि — हृदय में

यत — जब

ते — आपके

जघ्नुषो — शत्रुओं को नष्ट करके

भी: — भय

आगच्छत् — आता है

नव — नौ

च — और

नवतिम् — नब्बे

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

च — और

स्वर्वन्तीःश — बहती हुई

श्येन: — चील

न — जैसे

भीतः — डरा हुआ

अतरः — तैर जाता है

रजांसि — समस्त क्षेत्र।

व्याख्या :-

जब आपको अहंकार और इच्छाओं से भय लगे तो क्या करना चाहिए?

जब शत्रुओं को मारते समय या अहंकार और इच्छाओं के बादलों को हटाते समय हमारे मन में भय पैदा हो तो हमें किसे देखना और प्रार्थना करनी चाहिए?

इन्द्र अर्थात् परमात्मा, सूर्य, महान राजा या इन्द्रियों के नियन्त्रक का ध्यान करो। वे हमारे अहंकार और इच्छाओं का नाश कर सकते हैं। उनकी उपस्थिति में समस्याएं और बाधाएं चील की तरह डरना शुरू हो जाती हैं क्योंकि वे सभी क्षेत्रों को पार करती हुई नदी के समान उन बाधाओं को दूर भगा सकते हैं।

जीवन में सार्थकता

जब भयंकर ध्वनि और प्रकाश पैदा करते हुए बादल गरजते हैं और डर पैदा करते हैं तो क्या होता है?

जब गरजते हुए और प्रकाश उत्पन्न करते हुए बादल लोगों में डर पैदा करते हैं तो इन्द्र अर्थात् सूर्य उन बादलों को नष्ट कर देता है। प्रत्येक व्यक्ति को इन्द्र बनना चाहिए, अर्थात् इन्द्रियों का नियन्त्रक बन कर अहंकार और इच्छाओं का नाश करना चाहिए।

यह मानव जीवन का एक तथ्य है कि अहंकार और इच्छाएं अपने ही दुश्मन बन कर हर प्रकार के डर पैदा कर देते हैं। ऐसी अवस्था में हमें इन्द्र अर्थात् इन्द्रियों का नियन्त्रक बनने का विचार पैदा करना चाहिए। एक बार जब आप इन्द्र बन जाते हो तो अहंकार और इच्छाएं भाग खड़ी होती हैं। जब बादल लोगों के मन में भय पैदा करते हैं तो वे सब सूर्य को प्रार्थना करते हैं। उसी प्रकार अपने अन्दर इन्द्र अर्थात् इन्द्रियों के नियन्त्रक होने की शक्ति पैदा करके ही अहंकार और इच्छाओं की अवास्तविक शक्ति पैदा करने वाले अज्ञानता के बादलों को नष्ट किया जा सकता है। इन्द्र की शक्ति अर्थात् अपनी इन्द्रियों पर नियन्त्रण करने की योग्यता को सर्वोच्च इन्द्र अर्थात् परमात्मा की सहायता से ही विकसित किया जा सकता है।

ऋग्वेद मन्त्र 1.32.15

इन्द्रो यातोऽ वसितस्य राजा शमस्य च शृणिष्णो वज्रबाहुः।
सेतु राजा क्षयति चर्षणीनामरात्र नेमि: परि ता बभूव ॥ 15 ॥

इन्द्रः — परमात्मा

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

यातः — गति करता हुआ

अवसितस्य — एक स्थान में स्थित, गतिहीन

राजा — स्वामी, प्रकाशवान्

शमस्य — शान्त स्वभाव वाला

च — और

शृणुः — हिंसक, सींग वाले क्रूर पशु

वज्रबाहुः — दृढ़ बल

सः — वह

इत — निश्चित रूप से

राजा — स्वामी

क्षयति — आवास

चर्षणीनाम् — कड़ी मेहनत करने वाले लोग

अरान् — आरा, पहिया

न — जिस प्रकार

नेमि: — चक्र का मूलाधार

परि — बभूव से पूर्व लगाकर

ता — उन सबके लिए

(बभूव — परि बभूव) चारों दिशाओं में व्यापक।

व्याख्या :-

सरल रूप में परमात्मा की व्याख्या करें।

परमात्मा एक सर्वोच्च प्रकाशवान् शक्ति है, उत्पत्तिकर्ता होने के कारण सभी गतिशील तथा स्थिर वस्तुओं में विद्यमान है। वह शान्त मस्तिष्क के साथ—साथ हिंसक पशु के समान है। वह समस्त कड़ी मेहनत करने वाले मानवों का आवास है। पहिए के एकिसस की तरह वह सबका आवास है और सबको चारों तरफ से व्याप्त करता है।

जीवन में सार्थकता

क्या हम परमात्मा के साथ एकता वाला जीवन व्यतीत कर सकते हैं?

यह मन्त्र परमात्मा अर्थात् सर्वोच्च प्रकाशवान् शक्ति की व्याख्या करता है :-

(क) सबका आवास, सब उसमें आवास करते हैं, उसने केवल हमें उत्पन्न ही नहीं किया, अपितु हमें रहने का स्थान भी दिया है।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

(ख) वह सबको व्याप्त करता है। वह सबके अन्दर और बाहर है और सबको अपने चारों तरफ एक पहिए के एकिसस की तरह बांध कर रखता है। इस प्रकार वह हम सबके प्रत्येक कार्य और यहां तक कि मस्तिष्क के विचारों को भी देखता है और तदनुरूप हमें फल देता है।

अतः इस मानव जीवन में ही हम ऐसा विवेक उत्पन्न कर सकते हैं कि हम अपने भीतर ही उसके साथ पूर्ण एकता को महसूस कर सकें और एक महान दिव्य जीवन जी सकें, जो बाहरी संसार को भी प्रेरित करता हो।

ऋग्वेद मण्डल-1 सूक्त 33

ऋग्वेद मन्त्र 1.33.1

एतायामोप गव्यन्त इन्द्रमस्माकं सु प्रमतिं वावृधाति ।
अनामृणः कुविदादस्य रायो गवां केतं परमावर्जते नः ॥ १ ॥

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

इत – यहाँ

आ – आओ

अयाम – प्राप्त

उप – निकट

गव्यन्तः – गाय के समान इन्द्रियों के इच्छुक

इन्द्रम् – परमात्मा, सूर्य, महान् राजा, इन्द्रियों पर नियन्त्रण करने वाले का

अस्माकम् – हमारे

सुप्रमतिम् – उत्तम बुद्धि

वावृधाति – बढ़ती है

अनामृणः – अहिंसक, पक्षपात रहित

कुवित – अनेक प्रकार की

आत् – अतः

अस्य – उसकी (परमात्मा की)

रायः – गौरवशाली सम्पदा

गवाम् – गान के (ज्ञान के)

केतुम् – ज्ञान

परम् – सर्वोच्च

आवर्जते – उपलब्ध कराते हैं

नः – हमें

व्याख्या :-

गौरवशाली सम्पदा में वृद्धि कैसे की जा सकती है?

इस सूक्त के ऋषि हिरण्यस्तूप हैं, जो उन सबके लिए प्रेरणादायक हैं, जो गव्यन्त अर्थात् गाय के समान इन्द्रियों की इच्छा रखते हैं, जिससे वे सुप्रमतिम् अर्थात् उत्तम बुद्धि को प्राप्त करने एवं उसके सम्बद्धन के लिए परमात्मा के निकट आ सकें। ऐसी मति जो अनामृणः हो अर्थात् अहिंसक और पक्षपात रहित हो। इसलिए परमात्मा हमें रायः अर्थात् अनेकों प्रकार की गौरवशाली सम्पदा उपलब्ध कराते हैं। परम केतुम् अर्थात् सर्वोच्च ज्ञान और गवाम अर्थात् उस सर्वोच्च ज्ञान के गीत गाने की योग्यता भी उपलब्ध कराते हैं।

जीवन में सार्थकता

सर्वोच्च ज्ञान के गीत कौन से हैं?

एक सिद्ध ऋषि के निर्देशों के अनुसार किसी भी व्यक्ति को दो मुख्य लक्षणों को अपने जीवन में मूल आधार के रूप में स्थापित रखना चाहिए :-

(क) गाय के समान इन्द्रियों को धारण करने की इच्छा और प्रयास, जो हर प्रकार से तथा हर परिस्थिति में श्रेष्ठ हों।

(ख) ध्यान साधना के अभ्यास से परमात्मा के निकट रहने का प्रयास।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

जीवन में इन दो लक्षणों के स्थापित हो जाने पर परमात्मा निश्चित रूप से हमें तीन फल देते हैं :-

(क) सबके कल्याण के लिए अनेकों प्रकार की गौरवशाली सम्पदा।

(ख) सर्वोच्च दिव्य ज्ञान।

(ग) उस सर्वोच्च ज्ञान के गीत गाने की योग्यता।

इन तीनों के बल पर परमात्मा के ऐसे सिद्ध प्रेमियों की संगति में आने वाले अन्य लोग भी लाभान्वित होते हैं। ऐसे लोग वेद और सद्गुणों का ज्ञान रखते हैं और उनका प्रचार करते हुए परमात्मा के गीत गाते हैं। इस मन्त्र का क्रियात्मक सूत्र यह है कि “ज्ञान बांटने के लिए ज्ञान प्राप्त करो।”

ऋग्वेद मन्त्र 1.33.2

उपेदहं धनदामप्रतीतं जुष्टां न श्येनो वसति पतामि ।

इन्द्रं नमस्यनुपमेभिरकैयः स्तोतृभ्यो हव्यो अस्ति यामन् ॥ २ ॥

उप – निकट

इत् – निश्चित रूप से

अहम् – मैं

धनदाम – गौरवशाली सम्पदा का देने वाला

अप्रतीतम् – इन्द्रियों से न समझे जाने वाला, निंदा से प्रभावित न होने वाला

जुष्टाम् – पूर्व में प्राप्त आनन्द

न – जैसे

श्येनः – पक्षी

वसतिम् – आराम करते हैं, जीते हैं

पतामि – प्राप्त करते हैं

इन्द्रम् – परमात्मा, सूर्य, महान् राजा, इन्द्रियों पर नियन्त्रण करने वाले

नमस्यन् – पूजा करते हुए

उपमेभिः – तुलना के योग्य

अर्केः – प्रशंसा में कही गयी वाणी

स्तोतृभ्यः – उसकी प्रशंसा करने वाले

यः – जो

हव्यः – सब वस्तुओं का देने वाला

अस्ति – है

यामन् – इस संसार में

व्याख्या :-

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

हम परमात्मा की पूजा क्यों करते हैं?

मैं निश्चित रूप से परमात्मा को अत्यन्त निकट प्राप्त करता हूँ, अर्थात् स्वागत करता हूँ क्योंकि :-

(क) वह गौरवशाली सम्पदा का दाता है और विश्व की सब वस्तुओं का देने वाला है।

(ख) उसे इन्द्रियों के द्वारा समझा नहीं जा सकता, अतः वह निंदा भाव से दूर है।

(ग) वह पूर्व काल में प्राप्त आनन्द है, जैसे एक पक्षी विश्राम के लिए अपने घोसले की तरफ उड़ता है।

(घ) वह सर्वोच्च नियंत्रक है।

इसलिए मैं अपनी वाणियों के साथ उसकी प्रशंसा करता हूँ और पूजा करता हूँ क्योंकि केवल उसकी प्रशंसा करने वाले ही उसकी अनुभूति प्राप्त कर सकते हैं।

जीवन में सार्थकता

परमात्मा हमारा स्थाई और मूल आनन्द किस प्रकार है?

परमात्मा निंदा से प्रभावित क्यों नहीं होता है?

हम किस प्रकार निंदा से अप्रभावित रह सकते हैं?

वास्तव में परमात्मा की अनुभूति पूर्व काल में भोगा गया आनन्द है, इसलिए जो भी व्यक्ति उस सर्वोच्च दाता की प्रशंसा करता है, वह इस आनन्द को प्राप्त करता है। इसका अभिप्राय यह है कि हमारी इच्छाएं और अहंकार हमें उस आनन्द से दूर रखती हैं, जो हमारी वास्तविकता है, हमारी मूल सम्पत्ति है, लेकिन हम सांसारिक सम्पत्तियों के पीछे भागते हैं, जो न तो कीमती हैं और न स्थाई। सभी सांसारिक वस्तुएं अन्ततः पीड़ादायक ही सिद्ध होती हैं। दूसरी तरफ यदि कोई व्यक्ति परमात्मा की निन्दा करता है तो भी वह पूरी तरह अप्रभावित रहता है क्योंकि उसे इन्द्रियों से समझा नहीं जा सकता और कोई भी निन्दा भाव उस तक नहीं पहुँचते। इसलिए जो लोग उसकी प्रशंसा, पूजा और अनुभूति प्राप्त करते हैं, वे लोग अहंकार रहित होकर निन्दा से परे हो जाते हैं, जब कि जो लोग उस परमात्मा की निंदा करते हैं, वे स्वयं ही उसके स्थाई और मूल आनन्द से वंचित हो जाते हैं। ऐसे लोग सांसारिक अहंकार और इच्छाओं में ही फंसे रह जाते हैं।

ऋग्वेद मन्त्र 1.33.3

नि सर्वसेन इष्ठींरसक्त समर्यो गा अजति यस्य वष्टि ।

चोष्कूयमाण इन्द्र भूरि वामं मा पणिर्भूरस्मदधि प्रवृद्ध ॥ ३ ॥

नि – निश्चित रूप से

सर्व – सर्वत्र विद्यमान

स – वह

इनः – सबका स्वामी

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

इषुधीन् – प्रेरणा का धारक, तीर धारण करने वाला तर्कश

असत्त – जुड़ा हुआ

सम – सन्तुलित रूप में

अर्यः – इन्द्रियों का नियंत्रक

गा – इन्द्रियाँ

अजति – गति करता है, प्रयोग करता है

यस्य – जिसका

वष्टि – कल्याण, प्रकाशोदय निर्धारित है

चोष्कूयमाणः – शत्रुओं को पराजित करने के लिए बल का देने वाला

इन्द्र – परमात्मा, सूर्य, महान् राजा, इन्द्रियों पर नियन्त्रण करने वाले

भूरि – अपार

वामम् – बुरे कार्य

मा – नहीं

पणि – सत्य कार्य

भूः – हों

अस्मत् अधि – हमारे

प्रवृद्ध – सदैव वृद्धि पर

व्याख्या :-

परमात्मा हमें किस प्रकार श्रेष्ठ पथ पर प्रेरित करता है?

निश्चित रूप से वह सर्व विद्यमान ऊर्जा अर्थात् परमात्मा सब स्थानों पर विद्यमान होने के कारण सबका स्वामी है। वही हमारी प्रेरणाओं और गुणों का धारक है, जैसे एक तर्कश तीरों को धारण करता है या एक राजा शक्तियों को धारण करता है। इस प्रकार परमात्मा हमें अपने साथ जोड़े रखता है। एक महान नियंत्रक की तरह वह इन्द्रियों अर्थात् अपनी शक्तियों और तीरों का प्रयोग करता है। शत्रुओं को पराजित करने के लिए अत्यन्त बल को देने वाला परमात्मा उन लोगों को ऐसी शक्ति देता है, जिनका कल्याण और प्रकाशित होने की अवस्था निर्धारित है। अपने अन्दर सत्य को ही वृद्धि पर रखना चाहिए, बुराईयों को नहीं।

जीवन में सार्थकता

परमात्मा, सूर्य, एक महान राजा और इन्द्रियों के नियंत्रक में कौन से लक्षण समान हैं?

(क) परमात्मा सर्व विद्यमान है।

(ख) वह हमारी प्रेरणाओं और गुणों का धारक है।

(ग) वह आवश्यकता पड़ने पर हमारी इन्द्रियों को गति प्रदान करता है।

(घ) जब हमारा कल्याण और प्रकाश निर्धारित होता है, वह हमारी इन्द्रियों को शक्ति देकर शत्रुओं को पराजित करता है।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

(ड.) वह केवल सत्य कार्यों में सहायता करता है, बुरे कार्यों में नहीं।

परमात्मा, सूर्य, एक महान राजा और इन्द्रियों के नियंत्रक की कार्य प्रणाली के समान लक्षण होते हैं। परमात्मा की तरह सूर्य शक्तिशाली तीरों की तरह अपनी किरणों को धारण करता है। एक महान राजा अपनी प्रशासनिक शक्तियों को धारण करता है। इन्द्रियों का नियन्त्रक अपनी इन्द्रियों की शक्तियों को धारण करता है। इन सबके पास अपने—अपने शत्रुओं को पराजित करने की तथा कल्याण के सुन्दर कार्यों को करने की पर्याप्त शक्तियाँ होती हैं, बुरे लोगों की रक्षा के लिए नहीं। इस प्रकार ये सब एक श्रेष्ठ वातावरण को सुनिश्चित करते हैं।

ऋग्वेद मन्त्र 1.33.4

वधीर्हि दस्युं धनिनं धनेन् एकश्चरनुपशाकेभिरिन्द्र |
धनोरधि विषुणक्ते व्यायन्नयज्वानः सनकाः प्रेतिमीयुः ॥ 4 ॥

वधीः — नष्ट करता है

हि — निश्चित रूप से

दस्युम् — बुरे, धूर्त और लालची लोगों को

धनिनम् — केवल भौतिक सम्पदा के इच्छुक

धनेन् — शक्तिशाली वज्रों और ज्ञान के द्वारा

एकः — दृढ़ संकल्पित, निश्चयपूर्वक स्थापित

चरन् — गति करता हुआ, ज्ञान रखता हुआ

उपशाकेभिः — प्रत्येक श्वास और प्रत्येक कार्य के साथ अपने निकट शक्ति प्राप्त करता हुआ

इन्द्रः — परमात्मा, सूर्य, महान् राजा, इन्द्रियों पर नियन्त्रण करने वाले

धनोः — कमान

अधि — तीर

विषुणक् — विशेष रूप से पूरी तरह नष्ट

ते — वे (बुराईयाँ)

व्यायन् — भिन्न-2 दिशाओं में भागते

अयज्वानः — त्याग न करने वाले

सनकाः — लालच से दूसरों की सम्पदा लूटने वाले

प्रेतिम् — मृत्यु, विनाश

ईषु — प्राप्त करते हैं।

व्याख्या :-

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

परमात्मा के अधार्मिक शत्रु कौन से हैं?

एकः चरन् उपशाकेभिः — परमात्मा अपने कार्यों और शक्तियों को पूरी तरह से जानता हुआ दृढ़ संकलिप्त और दृढ़ता के साथ स्थापित है। वह निश्चित रूप से सभी बुराईयों, धूर्तताओं और लालच को नष्ट करता है। अपने बलशाली वज्रों तथा ज्ञान के द्वारा वह तीर कमान के समान ऐसे लोगों को पूरी तरह से नष्ट कर देता है, जो केवल भौतिक वस्तुओं की ही इच्छा करते हैं। इसलिए ऐसी बुराईयां भिन्न-भिन्न दिशाओं में भागती हैं। ऐसे लोग निश्चित रूप से मृत्यु और विनाश को प्राप्त करते हैं, जिनमें दो प्रवृत्तियाँ होती हैं :—

(क) लालच से सम्पदा को लूटना।

(ख) त्याग और बलिदान की भावना न होना।

ऐसे लोग परमात्मा के अधार्मिक शत्रु हैं। ऐसे लोग द्वन्द्वों के चक्र जैसे जन्म और मृत्यु में ही घूमते रह जाते हैं और कभी मुक्ति की अनुभूति प्राप्त नहीं करते।

सूर्य, एक महान राजा तथा इन्द्रियों के नियन्त्रक सदैव परमात्मा के इस पथ का अनुसरण करते हैं और धूर्त एवं लालची प्रवृत्तियों को नष्ट करने के भरसक प्रयास करते रहते हैं।

जीवन में सार्थकता

परमात्मा किस प्रकार शत्रु रहित है?

दो कारणों से परमात्मा शत्रु रहित है —

(क) वह एकः चरन् उपशाकेभिः है, अर्थात् वह अपने ज्ञान और शक्तियों में मजबूती से स्थापित है और उसके अनुसार ही कार्य करता है।

(ख) अपने ज्ञान और शक्ति के साथ वह उन सबको नष्ट कर देता है, जो लुटेरे हैं और त्यागशील नहीं हैं।

सूर्य बादलों को नष्ट करता है।

महान राजा आन्तरिक और बाहरी शत्रुओं को नष्ट करता है।

एक इन्द्रियों के नियन्त्रक व्यक्ति से भी परमात्मा की तरह ही अपेक्षा होती है कि वह अपने श्वास और अपने कार्यों के बल पर अपने निकट परमात्मा की अनुभूति प्राप्त करे।

पारिवारिक और सामाजिक दायित्वों में भी प्रत्येक व्यक्ति को अपने ज्ञान और कार्यों पर दृढ़ता के साथ स्थापित रहना चाहिए तथा उच्चाधिकारियों को अपने निकट की अनुभूति में रखना चाहिए।

ऋग्वेद मन्त्र 1.33.5

परा चिच्छीर्षा ववृजुस्त इन्द्राऽयज्वानो यज्वभिः स्पर्धमानाः।

प्र यद्विवो हरिवः स्थातरुग्र निरव्रतां अधमो रोदस्योः॥ ५॥

पराचित् — दूसरी तरफ

शीर्षा — शिखर

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

वृद्धः – छोड़ देते हैं

ते – वे

इन्द्र – परमात्मा, सूर्य, महान् राजा, इन्द्रियों पर नियन्त्रण करने वाले

अयज्वानः – त्याग न करने वाले

यज्वभिः – त्याग करने वालों के साथ

स्पर्धमानः – प्रतियोगी, ईश्वालु

प्र – दृढ़ता के साथ

यत – जो

दिवः – दिव्यता के द्वारा

हरिवः – अपनी शक्तियों के साथ, इन्द्रियों की शक्ति के साथ

स्थातः – स्थापित

उग्र – तेजस्वी

निर – पूर्ण रूप से

अव्रतान् – व्रत, संकल्प रहित

अधमः – नाश कर देता है

रोदस्योः – अन्तरिक्ष से और भूमि से, शरीर से और मन से

व्याख्या :-

एक त्यागशील व्यक्ति और एक अत्यागशील व्यक्ति के बीच युद्ध में कौन विजयी होता है?

अत्यागशील व्यक्ति और बुरी ताकतें दूसरी तरफ मुंह मोड़ कर भाग खड़ी होती हैं, जब उनका मुकाबला एक त्यागशील व्यक्ति से होता है। त्यागशील शक्तियाँ निर्भय होकर अपनी मजबूत दिव्य शक्तियों के साथ दृढ़तापूर्वक स्थापित रहती हैं और संकल्पहीन दुराचारी लोगों को धरती और आकाश में से नष्ट कर देती हैं। इसी प्रकार ऐसी शक्तियों को अपने शरीर और मन में से भी नष्ट कर देती हैं, जैसे सूर्य बादलों को नष्ट करता है।

जीवन में सार्थकता

अत्यागशील व्यक्तियों का मुख्य नेतृत्व कौन करता है?

परमात्मा सर्वोच्च त्यागशील शक्ति है। इसलिए केवल त्यागशील लोग ही उसके निकट पहुँचते हैं। अत्यागशील व्यक्ति अपना मुख दूसरी तरफ मोड़ कर चल देते हैं।

केवल त्यागशील व्यक्ति ही दिव्य शक्तियों को प्राप्त कर पाते हैं और अन्ततः अत्यागशील व्यक्तियों के विरुद्ध सभी संग्रामों को जीतते हैं।

त्यागशील व्यक्ति निर्भय होकर स्थापित होते हैं और इस प्रकार अत्यागशील तथा धूर्त शक्तियों को पराजित करते हैं।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

समाज में कहीं भी केवल त्यागशील लोगों का ही सम्मान होता है और ऐसे ही लोग सर्वोच्च सत्ता के निकट पहुँच पाते हैं, जब कि अत्यागशील व्यक्ति दूसरी दिशा में जाने के लिए बाध्य हो जाते हैं। अत्यागशील व्यक्तियों की इच्छाएं और अहंकार ही उनका मुख्य नेतृत्व करते हैं, जबकि इच्छा रहित और अहंकार रहित व्यक्ति त्यागशील कहलाते हैं और एक दिव्य जीवन बन जाते हैं।

ऋग्वेद मन्त्र 1.33.6

अयुयुत्सन्नवद्यस्य सेनामयातयन्त क्षितयो नवग्वाः।
वृषायुधो न वधयो निरष्टाः प्रवदिभिन्द्राच्चितयन्त आयन् ॥ 6 ॥

अयुयुत्सन् – युद्ध की कामना वाले
अनवद्यस्य – न हारने वाले
सेनाम् – बलों के साथ
अयातयन्त – पीड़ित किए गये शत्रु
क्षितयः – गतिशील लोग
नवग्वाः – नये ज्ञान, साधनों और प्रशंसनीय चरित्र वाले
वृषायुधः – बहादुर व्यक्ति के साथ संघर्ष करते हुए
न – जैसे
वधयः – नपुंसक, कमजोर
निरष्टाः – दूर फेंके गए
प्रवदभिः – निम्न मार्ग की तरफ
इन्द्रात् – परमात्मा, सूर्य, महान् राजा, इन्द्रियों पर नियन्त्रण करने वाले
चितयन्तः – अपनी आंतरिक कमजोरी को जानते हुए
आयन् – भाग जाते हैं।

व्याख्या :-

जब एक कमजोर व्यक्ति किसी अपराजेय शक्ति के साथ युद्ध की इच्छा करता है तो उसका क्या परिणाम होता है?

अहंकार और इच्छाओं के रूप में दलित शत्रु उस अपराजेय सत्ता के साथ युद्ध की इच्छा करते हैं, जो ऊर्जावान और सक्रिय है, जिसके पास नवीन और उत्कृष्ट ज्ञान, शक्तियाँ और प्रशंसनीय चरित्र है। बहादुर लोगों के साथ इस युद्ध में परमात्मा, सूर्य, एक महान राजा और इन्द्रियों के नियन्त्रक के द्वारा कमजोर लोगों को निम्न मार्ग पर धकेल दिया जाता है। इस प्रकार कमजोर शत्रु भाग खड़े होते हैं।

जीवन में सार्थकता

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

अपराजेय शक्ति किस प्रकार बन सकते हैं?

इस ब्रह्माण्ड में कोई भी शक्ति परमात्मा की उस अपराजेय सर्वोच्च सत्ता से लड़ नहीं सकती। सूर्य के साथ युद्ध में मेघ कभी जीत नहीं सकते। कमजोर शत्रु कभी भी किसी महान और बलशाली राजा से जीतने की सोच भी नहीं सकते। इसी प्रकार उस इन्द्र के सामने अहंकार और इच्छाएं सदैव पराजित रहती हैं, जिसने अपनी इन्द्रियों पर पूर्ण नियन्त्रण कर लिया हो।

अपराजित होने के लिए हमें दो लक्षण धारण करने चाहिए :-

- (क) इन्द्र अर्थात् इन्द्रियों पर नियन्त्रण स्थापित करना।
- (ख) नवग्वा: अर्थात् नवीन और उत्कृष्ट ज्ञान साधन और प्रशंसनीय चरित्र धारण करना।

ऋग्वेद मन्त्र 1.33.7

त्वमेतान् रुदतो जक्षतश्चायोधयो रजस इन्द्र पारे ।
अवादहो दिव आ दस्युमुच्चा प्र सुन्वतः स्तुवतः शंसमावः ॥ 7 ॥

त्वम् – आप

एतान् – ये (शत्रु ताकतें)

रुदतः – रोते हुए (अपने अपवित्र कार्यों के कारण)

जक्षतः – पर्याप्त भोजन प्राप्त करने वाला, प्रसन्नचित्त (अपने पवित्र कार्यों के कारण)

च – और

अयोधयः – युद्ध के लिए प्रेरित करता है

रजसः – संसार से

इन्द्र – परमात्मा, सूर्य, महान् राजा, इन्द्रियों पर नियन्त्रण करने वाले

पारे – दूर करता है

अवादहः – जला देता है, नष्ट कर देता है

दिवः आ – प्रकाश के साथ

दस्युम् – अपवित्र शत्रु

उच्चः – प्रशंसनीय कार्य

प्रसुन्वतः – त्याग में स्थापित

स्तुवतः – परमात्मा की प्रशंसा और स्तुति में गाते हुए

शंसम् – प्रशंसनीय जीवन

आवः – संरक्षित

व्याख्या :-

कमजोर ताकतों के साथ परमात्मा किस प्रकार व्यवहार करता है?

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

परमात्मा कमजोर शत्रु ताकतों को उनके बुरे कार्यों के कारण कभी रोने—चिल्लाने के लिए मजबूर करता है तो कभी उनके अच्छे कार्यों के कारण पेट भर भोजन देकर उन्हें खुश रखता है। इस प्रकार वह उन्हें संघर्ष में लगाए रखता है। अन्तः ज्ञान प्रकाश के प्राप्त होते ही यह शत्रु ताकतें जल कर नष्ट हो जाती हैं और प्रशंसनीय कार्यों में बदल जाती हैं, जो :-

- (क) विधिवत त्याग कार्यों में स्थापित और
 - (ख) परमात्मा की प्रशंसा और स्तुति का गान करती दिखाई देती हैं।
- इस प्रकार कोई भी व्यक्ति प्रशंसनीय और संरक्षित जीवन जी सकता है।

जीवन में सार्थकता

प्रकाशवान होने का उद्देश्य क्या है?

सदैव एक महान सकारात्मकता पर ध्यान केन्द्रित करना ही चाहिए। शत्रुओं को भी परिवर्तित करके मित्रवत बनाया जा सकता है। अत्यधिक भौतिकवादी व्यक्ति भी एक महान आध्यात्मिक व्यक्ति बन सकता है। आज तुम्हारी निन्दा करने वाला कल तुम्हारी प्रशंसा कर सकता है। प्रकाश का उदय होते ही सभी नकारात्मकतायें जल कर समाप्त हो जाती हैं। सूर्य बादलों को नष्ट कर देता है — अवादहः दिवः आ। अतः हर व्यक्ति को स्वयं को प्रकाशित करना चाहिए, जिससे वह अन्यों को भी प्रकाशित कर सके। केवल प्रकाश का उदय ही हमें दो कार्यों के लिए योग्य बना सकता है :—

- (क) त्याग कार्यों के लिए
- (ख) परमात्मा से प्रेम और प्रशंसा के लिए

ऋग्वेद मन्त्र 1.33 .8

चक्राणासः परीणहं पृथिव्या हिरण्येन मणिना शुभ्ममानाः।
न हिन्चानासस्तितिरुस्त इन्द्रं परि स्पशो अदधात्सूर्यं ॥ 8 ॥

चक्राणासः — गति करते हुए, कार्य करते हुए
परीणहम् — चारों ओर से बंधन में

पृथिव्या — पृथ्वी, शरीर

हिरण्येन — स्वर्णिम प्रकाश

मणिना — मणि की तरह

शुभ्ममानाः — सुन्दर और अलंकृत दिखने वाला

न — नहीं

हिन्चानासः — प्रगतिशील, शान्ति देने वाला

तितिरुः — उल्लंघन करता है

इन्द्रम् — परमात्मा, सूर्य, महान् राजा, इन्द्रियों पर नियन्त्रण करने वाले

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

परि – चारों तरफ से

स्पशः – संरक्षित गुण, महान् और बलशाली व्यक्ति

अदधात् – धारण करता है

सूर्येण – सूर्य की तरह, प्रकाशवान् पुरुषों की तरह

व्याख्या :-

शत्रुओं को रोक कर उन पर कौन नियंत्रण कर सकता है?

वैज्ञानिक रूप में धरती को घेरे हुए और चलते हुए बादल सुन्दर प्रतीत होते हैं और शान्तिदायक होते हैं, परन्तु वे सूर्य का या धरती का उल्लंघन नहीं कर सकते क्योंकि सूर्य धरती को चारों तरफ से धारण करता है और संरक्षित करता है।

आध्यात्मिक रूप से हमारे अहंकार और इच्छाएं भी एक इन्द्र पुरुष अर्थात् इन्द्रियों पर नियन्त्रण करने वाले व्यक्ति के चारों तरफ घूमती हैं, परन्तु उसका उल्लंघन नहीं कर पातीं क्योंकि परमात्मा स्वयं ऐसे व्यक्ति को धारण करते हैं और उसका संरक्षण करते हैं।

महान् राजा भी अपने राज्य को धारण करके उन शत्रुओं से रक्षा करते हैं जो उनके ऊपर मंडराते रहते हैं, परन्तु उस महान् राजा का उल्लंघन नहीं कर पाते।

जीवन में सार्थकता

शत्रुओं से कभी भी कौन नहीं डरता?

अहंकार, इच्छाएं, बुराईयाँ, बादल और शत्रु बेशक देखने में सुन्दर लगते हैं, परन्तु कोई भी भगवान्, सूर्य, एक महान् राजा और एक इन्द्र पुरुष की सत्ता को बाधित नहीं कर सकता। इसीलिए इन शक्तिशाली सत्ताओं को इन्द्र कहा जाता है। वास्तव में यह शत्रु ही इन्द्र शक्ति के लिए सम्मान पैदा करने वाले सिद्ध होते हैं क्योंकि एक सच्चा इन्द्र पुरुष इन्हीं शत्रुओं के कारण विजयी सिद्ध होता है। एक सच्चा इन्द्र पुरुष कभी भी इन शत्रुओं से नहीं डरता।

ऋग्वेद मन्त्र 1.33.9

परि यदिन्द्र रोदसी उभे अबुभोजीर्महिना विश्वतः सीम्।

अमन्यमानां अभि मन्यमानैर्निर्ब्रह्मभिरधमो दस्युमिन्द्र ॥ ९ ॥

परि – चारों दिशाओं से, सब प्रकार से

यत् – जिसे

इन्द्र – परमात्मा, सूर्य, महान् राजा, इन्द्रियों पर नियन्त्रण करने वाले

रोदसी – आकाश और भूमि, शरीर और मन

उभे – दोनों

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

अबुभोजी – पालन करते हैं, ध्यान रखता है
महिना – अपनी महिमा के साथ
विश्वतः – सब प्रकार से, सब दिशाओं से
सीम् – प्रसन्नता का आनन्द
अमन्यमानान् – मेघ, अन्धकार और पूर्वाग्रह
अभि – अधमः से पूर्व लगाकर
मन्यमानैः – विवेकशील और पूर्वाग्रह से मुक्त पुरुषों के माध्यम से
ब्रह्मभिः – भगवान् द्वारा प्रदत्त ज्ञान अर्थात् वेदों के साथ
अधमः (अभि अधमः) – आत्मा और भौतिकता का ज्ञान देता है
दस्युम् – धूर्त, कपटी, शत्रु
इन्द्रः – परमात्मा, सूर्य, महान् राजा, इन्द्रियों पर नियन्त्रण करने वाले

व्याख्या :-

परमात्मा किस प्रकार विरोधी ताकतों को रोककर नियंत्रित और सन्तुलित करता है ?

परमात्मा, सूर्य, एक महान् राजा तथा इन्द्रियों के नियंत्रक पुरुष क्रमशः आकाश तथा भूमि, राज्य की सीमा तथा नागरिकों, शरीर और मन आदि का चारों तरफ से ध्यान रखते हुए हर प्रकार से प्रसन्नता के अनुभव के साथ इनका पालन करते हैं। बादलों को कल्याण का पथ दिखाया जाता है। अज्ञानी और पूर्वाग्रह से ग्रसित लोगों को वेद अर्थात् भगवान् के ज्ञान का पथ दिखाया जाता है। शत्रुओं को मित्रता का पथ दिखाया जाता है। यह सब परमात्मा की सर्वोच्च शक्ति, सूर्य तथा महान् विवेक वाले लोगों के माध्यम से सम्पन्न किया जाता है, जो पूर्वाग्रह से मुक्त होते हैं और आत्मा तथा भौतिक वस्तुओं का ज्ञान देते हैं। इस प्रकार इन्द्र पुरुष बुरी और दुष्ट ताकतों का नाश करते हैं।

जीवन में सार्थकता

वास्तविक इन्द्र की क्या शक्तियाँ हैं?

एक वास्तविक इन्द्र नकारात्मकता को सकारात्मकता में परिवर्तित करने के लिए कठिनाई का अनुभव नहीं करता क्योंकि एक सच्चे इन्द्र के पास महान् ज्ञान और विवेक होता है। वह पूर्वाग्रह से मुक्त होता है। उसमें किसी के लिए कोई बुरी भावना नहीं होती। एक सच्चे इन्द्र प्राकृतिक विरोधी ताकतों को भी संतुलित करने के योग्य होता है।

ऋग्वेद मन्त्र 1.33.10

न ये दिवः पृथिव्या अन्तमापुर्न मायाभिर्धनदां पर्यभूवन् ।
युजं वज्रं वृषभश्चक्र इन्द्रो निर्ज्योतिषा तमसो गा अदुक्षत् ॥ 10 ॥

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

न – नहीं

ये – ये (मेघ, अन्धकार, अज्ञानता, बुराईयां, अहंकार, इच्छाएं)

दिवः – सूर्य का प्रकाश

पृथिव्या: – पृथ्वी का

अन्तम् – अन्तिम, अन्ततः

आपुः – प्राप्त करता है

न – नहीं

मायाभिः – सांसारिक और भौतिक प्रभाव के साथ

धनदाम् – सम्पत्तियों के दाता (भूमि)

पर्यभूवन् – तिरस्कार, आच्छादित

युजम् – जोड़ना

वज्रम् – बलशाली वज्रों के साथ, किरणों के साथ, सदगुणों के साथ

वृषभः – वर्षा करने वाला

चक्रे – चारों तरफ से

इन्द्रः – परमात्मा, सूर्य, महान् राजा, इन्द्रियों पर नियन्त्रण करने वाले

निः – हटाकर

ज्योतिषा – अपने प्रकाश, बल के साथ

तमसः – अन्धकार

गा: – पृथ्वी से, शरीर से

अधुक्षत् – पूर्ण करता है।

व्याख्या :-

क्या बादल सूर्य को या पृथ्वी को ढकने में सक्षम हैं?

पृथ्वी के मूल लक्षण क्या हैं?

अपने भौतिक प्रभाव के साथ बादल उस पृथ्वी को ढकने या उसका अपमान करने के लायक नहीं होते, जो लोगों को समूची सम्पदा प्रदान करती है, इसी प्रकार सूर्य को जो प्रकाश और ऊर्जा का दाता है। सूर्य प्रकाश की किरणों के रूप में अपने शक्तिशाली वज्र का प्रयोग करके समूची पृथ्वी से अंधकार को मिटा देता है। इस प्रकार सूर्य अर्थ को पूर्ण करता है और उसके कल्याणकारी कार्यों की रक्षा करता है।

इसी प्रकार अपने भौतिकवादी आर्कषण के बावजूद अज्ञानता, बुराईयाँ, इच्छाएं और अहंकार कभी भी परमात्मा या इन्द्रियों के नियंत्रक की हानि नहीं कर पाते, जिनका लक्ष्य ही परोपकार करना है। परमात्मा अपनी शक्तियों के माध्यम से अज्ञानता को बहने के लिए मजबूर कर देता है और उसे ज्ञान में बदल देता है, अंधकार को दूर करके उसे आत्मा के प्रकाश के रूप में बदल देता है। इस प्रकार परमात्मा इस शरीर को पूर्ण करता है।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

जीवन में सार्थकता

दूसरों के कल्याण के लिए किए गए समस्त कार्य परमात्मा के द्वारा क्यों संरक्षित होते हैं।

जब भी अज्ञानता और कठिनाईयों के बादल दिखाई दें तो सदैव इस महान् सिद्धान्त का स्मरण करो कि आपके आन्तरिक और वास्तविक अस्तित्व को न तो कोई अपमानित कर सकता है और न ही कोई हानि पहुँचा सकता है। परमात्मा सभी कठिनाईयों को दूर जाने के लिए मजबूर कर देते हैं और उन्हें प्रसन्नता के क्षणों में परिवर्तित कर देते हैं। केवल यह अनुभूति प्राप्त करो कि आपका अस्तित्व कल्याण के लिए है। परमात्मा दूसरों के कल्याण के लिए सभी त्याग कार्यों को संरक्षित करते हैं।

ऋग्वेद मन्त्र 1.33.11

अनु स्वधामक्षरन्नापो अस्याऽवर्धत मध्य आ नाव्यानाम् ।
सध्रीचीनेन मनसा तमिन्द्र ओजिष्ठेन हन्मनाहन्नभि द्यून ॥ 11 ॥

अनु – के अनुसार, अनुसरण

स्वधाम् – आत्मा का लक्ष्य, आत्मा का लक्ष्य ब्रह्म की अनुभूति है, मेघों का लक्ष्य धरती है, हमारे अहंकार और समस्त इच्छाएं भी अन्तः परमात्मा में ही विलीन होंगी।

अक्षरन् – पवित्रता के लिए अग्रसर

आप: – जल, शरीर के तरल तत्त्व

अस्य – ये (मेघ, अहंकार और इच्छाएं)

आवर्धत – चारों तरफ से वृद्धि को प्राप्त होते हैं

मध्य – बीच में

आ – वर्धत से पूर्व लगाया गया

नाव्यानाम् – समुद्र और नदियों जैसे जल स्थानों के बीच, हमारे शरीर रूपी नाव में

सध्रीचीनेन – लगातार गतिशील, विचार करता हुआ

मनसा – मन से

तम – मेघ, अहंकार और इच्छाएं

इन्द्र – परमात्मा, सूर्य, महान् राजा, इन्द्रियों पर नियन्त्रण करने वाले

ओजिष्ठेन – अत्यन्त बलशाली

हन्मना – विनाश के साधनों और बल के साथ

अहन् – नष्ट करता है

अभिद्यून – महान् प्रकाश के साथ, ज्ञान प्रकाश के साथ

व्याख्या :-

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

सूर्य बादलों को क्यों नष्ट करता है?

हमें चित्त की वृत्तियों को नष्ट क्यों करना चाहिए?

अपने गन्तव्य, पृथ्वी का अनुसरण करते हुए यह बादल पृथ्वी के जलाशयों को पवित्र करने के लिए अग्रसर होते हैं। यह बादल मध्य में स्थापित होते हैं, परन्तु अन्ततः चारों तरफ से बढ़ते हुए पूरी ताकत के साथ लगातार गतिमान रहते हैं। इन्द्र अर्थात् सूर्य अपने प्रकाश और ऊर्जा रूपी शक्तियों के माध्यम से इन बादलों को नष्ट कर देते हैं।

इस घटनात्मक सिद्धान्त को आध्यात्मिक रूप से समझना चाहिए। हमारे चित्त की वृत्तियाँ अन्ततः हमारे मूल स्वरूप अर्थात् परमात्मा में विलीन होने के लिए निर्धारित हैं। उनका अपना कोई अस्तित्व नहीं है, परन्तु वे हमारे हृदय और मन के मध्य में स्थापित हो जाती हैं। इन्द्रियों का नियंत्रक अपनी असीम शक्तियों से इन चित्त वृत्तियों को नष्ट करने के योग्य होता है, जो इच्छाओं और अहंकार से उत्पन्न होती हैं। इसके बाद यह वृत्तियाँ हमारे शरीर रूपी नाव के जल में विलीन होकर वृद्धि को प्राप्त होती हैं और अन्ततः नष्ट हो जाती हैं।

जीवन में सार्थकता

जीवन यात्रा में निरन्तरता कैसे सुनिश्चित हो?

हमारे मन की सभी वृत्तियाँ हमारे मन के साथ ही बह जानी चाहिए, जिसका लक्ष्य ईश्वर की अनुभूति प्राप्त करना है। यह कार्य प्रतिक्षण लगाता चलना चाहिए। किसी भी कार्य को करते हुए अन्तिम लक्ष्य निर्धारित होना चाहिए और मन में रखना चाहिए। उस लक्ष्य में बाधा बनने वाली सभी शक्तियों को पूरे बल के साथ नष्ट करना चाहिए। ऐसी मानसिकता ही जीवन की यात्रा को निरन्तरता प्रदान कर सकती है।

ऋग्वेद मन्त्र 1.33.12

न्याविध्यदिलीबिशस्य दृढ़हा वि शृग्णिणमभिनच्छुष्णमिन्दः।
यावत्तरो मधवन्यावदोजो वज्रेण शत्रुमवधीः पृतन्युम् ॥ 12 ॥

न्याविध्यत् – निश्चित रूप से नष्ट करने वाला

इलीबिशस्य – गड़ों और तालाबों के लिए निश्चित मेघ, हृदय में छिपे अहंकार और इच्छाओं की वृत्तियाँ

दृढ़ा – प्रबल निश्चय

नि – अभिनत् से पूर्व लगाकर

शृणिम् – भयंकर विनाशकारी वज्र

अभिनत् (नि अभिनत्) – पृथक करता है

शुष्णम् – शोषक शत्रु

इन्द्र – परमात्मा, सूर्य, महान् राजा, इन्द्रियों पर नियन्त्रण करने वाले

यावत् – जो भी

तरः – बल

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

मधवन् – सम्पत्तियों का सर्वोच्च दाता

यावत् – जो भी

ओजः – बल

वज्रेण – प्रबल वज्रों के साथ

शत्रुम् – शत्रु को

अवधीः – नाश

पृतन्युम् – पूरे बल के साथ आक्रमण

व्याख्या :-

क्या हमें ताकतवर दिखाई देने वाले शत्रु से डरना चाहिए?

बादलों की परिणति गिर कर गड्ढों, तालाबों, नदियों और समुद्रों में पहुँचने के लिए ही निर्धारित है। वे निश्चित रूप से नष्ट होने योग्य हैं। यह बादल दृढ़ निश्चयी और सूर्य के मार्ग में बाधक दिखाई देते हैं, परन्तु सूर्य की दिव्य और महान शक्तियाँ अपनी पूरी ताकत के साथ इस शत्रु को मार्ग से हटा देती हैं। सूर्य सम्पदा का दाता है। यह शत्रु पर पूरी ताकत के साथ हमला करता है।

जीवन में सार्थकता

क्या हमें अपनी इच्छाओं और अहंकार से डरकर उनका अनुसरण करना चाहिए?

इन्द्रियों के नियन्त्रक होने के नाते हमें अपने भीतर के शत्रुओं पर कभी भी उदारता नहीं दिखानी चाहिए। अहंकार और इच्छाओं की सभी वृत्तियों को पूरी ताकत के साथ नष्ट करना चाहिए। अहंकार और इच्छाएं देखने में अत्यन्त आकर्षक और शक्तिशाली प्रतीत होती हैं, परन्तु उनके विरुद्ध पूरी ताकत का प्रयोग करने से उनका नाश किया जा सकता है। अतः हमें अहंकार और इच्छाओं से न तो डरना चाहिए और न ही उनका अनुसरण करना चाहिए।

ऋग्वेद मन्त्र 1.33.13

अभि सिध्मो अजिगादस्य शत्रून्चि तिग्मेन वृषभेणा पुरोऽभेत् ।

सं वज्रेणासृजद् वृत्रमिन्दः प्र स्वां मतिमतिरच्छाशदानः ॥ 13 ॥

अभि – जाता है

सिध्मो – वज्रों के साथ

अजिगात – आक्रमण करता है

अस्य – यह

शत्रून – शत्रुओं के विरुद्ध

नि – अभेत से पूर्व लगाकर

तिग्मेन – तीव्र

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

वृषभेण – वर्षा करने की शक्ति, नष्ट करने की शक्ति

पुरः – बादलों के झुण्ड

अभेत् (नि अभेत्) – नष्ट करता है, पृथक करता है

सम् – सृजत से पूर्व लगाकर

वज्रेण – शक्तिशाली वज्र के साथ

सृजत (सम सृजत) – संयुक्त करता है, आक्रमण करता है

वृत्रम् – बादल, वृत्तियाँ

इन्द्र – इन्द्र – परमात्मा, सूर्य, महान् राजा, इन्द्रियों पर नियन्त्रण करने वाले

प्र – अतिरित से पूर्व लगाकर

स्वाम् – अपना

मतिम् – बुद्धि, बल

अतिरत् (प्र अतिरत्) – वृद्धि करता है

शांशदानः – वासनाओं को समाप्त करने की शक्ति, पृथक करने की शक्ति

व्याख्या :-

शत्रु को नष्ट करने के लिए किस प्रकार दोहरी धार वाले वज्र का प्रयोग करें?

सूर्य अपने शत्रु बादलों के विरुद्ध अपनी विजयी शक्तियों, तीव्र वर्षा करने वाली ताकत का प्रयोग करके उन्हें नष्ट कर देता है, बादलों को पृथक–पृथक कर देता है। वह बादलों पर अपने ताप से हमला करता है। बादलों को पृथक करने की शक्तियों का प्रयोग करने के बाद सूर्य ऊर्जा और प्रकाश रूपी अपनी शक्तियों को प्रदर्शित करता है।

सूर्य और बादलों के इस दृष्टांत को अपनी आत्मा के उत्थान तथा अहंकार और इच्छाओं से उत्पन्न चित्त वृत्तियों के नाश पर लगाने के लिए यह मन्त्र एक स्पष्ट निर्देश देता है कि आत्मा की पूरी ताकत के साथ इन सब वृत्तियों का नाश किया जाना चाहिए। इस नाश के बाद ही हम अपनी बुद्धि का विकास करके परमात्मा की अनुभूति के लक्ष्य की ओर अग्रसर हो सकते हैं।

जीवन में सार्थकता

दोधारी वज्र क्या है?

सर्वप्रथम, शत्रु को पूरी तरह से पृथक करके नष्ट करना चाहिए।

इसके बाद अपनी बुद्धि और तपस्या को बढ़ाना चाहिए। सदकार्यों का अनुसरण और उनका उपदेश करके अपनी बुद्धि के अनुसार वातावरण तैयार करना चाहिए।

सर्वप्रथम, हमें अपने अहंकार, इच्छाओं और सभी बुरी प्रवृत्तियों पर हमला करना चाहिए।

इसके बाद हमें अच्छाईयों की वृद्धि करते हुए परमात्मा की अनुभूति के मार्ग पर अग्रसर होना चाहिए।

सर्वप्रथम, हमें भौतिकवादी मार्ग को भूल जाना चाहिए।

इसके बाद हमें अपने जीवन में आध्यात्मिक मार्ग का शुभारम्भ करते हुए जीवन में तपस्या की वृद्धि करनी चाहिए।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

ऋग्वेद मन्त्र 1.33.14

आवः कुत्समिन्द्र यस्मिंचाकन्प्रावो युध्यन्तं वृषभं दशद्युम् ।
शफच्युतो रेणुर्नक्षत द्यामुच्छैत्रेयो नृषाह्याय तस्थौ ॥ 14 ॥

आवः – सुरक्षित करते हो
कुत्सम् – बुराईयों का नाश करने वाले को
इन्द्र – परमात्मा, सूर्य, महान् राजा, इन्द्रियों पर नियन्त्रण करने वाले
यस्मिन् – जिसमें
चाकन् – संगति करने वाला, प्रेम वाला
प्रावः – लगातार और पूर्ण रक्षा करते हो
युध्यन्तम् – संग्राम में लगे हुए
वृषभम् – वर्षा करने वाले
दशद्युम् – दस दिशाओं में दीप्तिवान
शफच्युतः – शान्त
रेणुः – निरन्तर सक्रिय
नक्षत द्याम – ज्ञान के प्रकाश को प्राप्त करने वाला
उत् – तस्थौ से पूर्व लगाकर
श्वैत्रेयः – शिवा का पुत्र, पवित्र कल्याण
नृषाह्याय – सबके लिए
तस्थौ (उत तस्थौ) – उठ खड़ा होता है

व्याख्या :-

क्या परमात्मा हमारे शत्रुओं को कल्याण के रूप में परिवर्तित कर सकते हैं?

परमात्मा केवल उनकी रक्षा करते हैं, जो बुराईयों का नाश करते हैं। जब मेघ, सूर्य के विरुद्ध संग्राम छेड़ते हैं तो उन्हें जल के रूप में बहने के लिए मजबूर कर दिया जाता है। उन्हें दसों दिशाओं में बहा दिया जाता है। वे शान्त और चुप थे। वे लगातार विद्युत का प्रकाश प्राप्त कर रहे थे। कीचड़ के रूप में परिवर्तित किए जाने के बावजूद वे कल्याण के पुत्र की तरह बना दिए गए। वर्षा के जल ने पृथ्वी पर सब लोगों का कल्याण प्रारम्भ कर दिया।

आध्यात्मिक रूप से एक श्रद्धालु बुराईयों के विरुद्ध संग्राम में जुटा रहता है। वास्तव में वह स्वयं उन सभी बुराईयों, इच्छाओं और अहंकारों की संगति कर रहा था। लेकिन अब इन्द्र के रूप में वह उन सब वृत्तियों को अर्थात् इच्छाओं और अहंकार को इस प्रकार परिवर्तित करने योग्य बन जाता है कि वे सब श्रेष्ठताओं और गुणों, शान्ति और दसों इन्द्रियों की दसों दिशाओं में प्रकाश स्थापित करने वाले बन जाते हैं। वह लगातार

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

ज्ञान का प्रकाश प्राप्त करता है। वह शिव अर्थात् पवित्र कल्याण का पुत्र बन जाता है और सबके कल्याण के लिए खड़ा हो जाता है।

जीवन में सार्थकता

नकारात्मकताओं को सकारात्मकताओं में कैसे परिवर्तित किया जा सकता है?

परमात्मा उनकी रक्षा करता है, जो सभी बुराईयों को नष्ट करने के योग्य होते हैं और साथ ही सभी नकारात्मकताओं को सकारात्मकताओं में परिवर्तित कर देते हैं। सभी इच्छाएं और अहंकार जो पहले नकारात्मकता के रूप में स्थापित थे, अब परमात्मा की अनुभूति की यात्रा पर महान् सकारात्मकता के रूप में स्थापित हो जाते हैं। इन सकारात्मकताओं के पाँच महान् लक्षण हैं :—

- (क) श्रेष्ठताओं और गुणों की वर्षा करने में सक्षम
- (ख) दसों इन्द्रियों में प्रकाशित
- (ग) शान्त एवं चुप
- (घ) लगातार ज्ञान प्रकाश प्राप्त करने में सक्रिय
- (ड.) सबका पवित्र कल्याण करने के प्रतीक शिव का पुत्र बनकर खड़ा होने वाला

ऋग्वेद मन्त्र 1.33.15

आवः शमं वृषभं तुग्र्यासु क्षेत्रजेषे मधवछिंव्रयं गाम् ।
ज्योक् चिदत्र तस्थिवांसो अक्रंचत्रयतामधरा वेदनाकः ॥ 15 ॥

आवः — सुरक्षित करते हो

शमम् — शान्त स्वभाव वाले को

वृषभम् — वर्षा करने वाले को

तुग्र्यासु — रोगों का नाश करने वाले

क्षेत्रजेषे — संग्राम में विजयी के लिए

मधवन् — गौरवशाली सम्पदा के सर्वोच्च दाता

शिवत्रयम् — कल्याण के लिए पूर्ण

गाम् — अग्रसर

ज्योक् — लम्बे समय के लिए लगातार

चित् — निश्चित रूप से

अत्र — यहाँ

तस्थिवांसः — ठहरने वाले

अक्रंचन् — करता है

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

शत्रूयताम् – शत्रुओं के लिए

अधरा – बलशाली

वेदना – पीड़ा

अकः – देता है।

व्याख्या :-

परमात्मा लोगों को पूरी तरह संरक्षित किस प्रकार करते हैं?

परमात्मा गौरवशाली सम्पदा के दाता हैं। वे समस्त संग्रामों में विजयी रहते हैं। वे पृथ्वी पर शान्त चित्त लोगों की रक्षा करते हैं। परमात्मा सूर्य को यह शक्ति देते हैं कि वे अपनी किरणों को बादलों में प्रविष्ट करें और वर्षा करें। इस प्रकार सूर्य रोगों का नाश करके सबका पूर्ण कल्याण करता है। इस प्रकार सूर्य अपने कार्यों को लगातार करते हुए आगे बढ़ता है, लोगों को पृथ्वी पर रहने तथा समस्त कार्यों के योग्य बनाता है। इस पथ पर सूर्य अपने शत्रु बादलों को कड़ी पीड़ा देते हैं।

इस दृष्टांत को आध्यात्मिक रूप से लागू करने पर यह पता लगता है कि आत्मा को सभी मानसिक संग्रामों में मजबूत और विजयी रहना चाहिए, तभी वह जीवन में एक शान्त वातावरण का निर्माण कर पाएगा। मानसिक शत्रुओं जैसे अहंकार और इच्छाओं का नाश करने के बाद ही हम श्रेष्ठताओं और गुणों की वर्षा करने वाले बन सकते हैं, रोगों के नाशक बन सकते हैं और लम्बे समय तक अपने जीवन की गतिविधियाँ संचालित कर सकते हैं। हमें अपनी इच्छाओं और अहंकार को कड़ी पीड़ा देने में संकोच नहीं करना चाहिए।

एक महान राजा को भी यह सिद्धान्त आन्तरिक और बाहरी शत्रुओं से नागरिकों की रक्षा के लिए लागू करना चाहिए और शत्रुओं को कड़ी पीड़ा देने में संकोच नहीं करना चाहिए। केवल यही सिद्धान्त समाज में शान्ति, प्रकाश और समृद्धि सुनिश्चित कर सकता है।

जीवन में सार्थकता

अपने जीवन को संकटों से कैसे मुक्त करें?

परमात्मा पृथ्वी के पूर्ण आनन्द के लिए समस्त शत्रु ताकतों का नाश करते हैं। एक महान राजा राष्ट्र की पूर्ण सुरक्षा के लिए राष्ट्रीय शत्रुओं का नाश करता है। हमें भी अपने जीवन को संकटों से मुक्त करने के लिए और जीवन में आध्यात्मिक उन्नति के लिए इच्छाओं और अहंकार रूपी अपने व्यक्तिगत, आन्तरिक शत्रुओं का नाश करना चाहिए।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

ऋग्वेद मण्डल-1 सूक्त 34

ऋग्वेद मन्त्र 1.34.1

त्रिश्चन्नो अद्या भवतं नवेदसा विभुर्वा याम उत राति रश्वना ।
युवोर्हि यन्त्रं हिम्येव वाससोऽभ्यायसेन्या भवतं मनीषिभिः ॥ १ ॥

(त्रिः) तीन बार, बार—बार (चित्) निश्चय से (नः) हमारे (अद्य) आज (भवतम्) होओ (नवेदसा) पूर्ण ज्ञान देने वाले (विभुः) सब दिशाओं में व्याप्त (वाम्) तुम दोनों (यामः) रथ (उत्) और (रातिः) त्याग, दान, इच्छारहित, अहंकाररहित (अश्विना) दोनों (प्राण—अपान, दिन और रात) (युवोः) तुम दोनों का ही (हि) निश्चय से (यन्त्रम्) प्रबन्ध, सम्बन्ध (हिम्या) रात्रि से (इव) जैसे कि (वाससः) सूर्य की किरणों से आच्छादित दिन (अभ्यायम् सेन्या) किसी उद्देश्य से जुड़ना, मिशन (भवतम्) हो (मनीषिभिः) मन पर शासन करने वाले ।

व्याख्या :-

पूर्ण और सम्पन्न प्रयासों का मार्ग क्या है?

हम भगवान से प्रार्थना करते हैं कि वह हमें समस्त पूर्ण ज्ञान के देने वाले हों, आज ही तीन बार अर्थात बार—बार, तीन प्रकार का ज्ञान अर्थात परमात्मा, आत्मा और पदार्थ, तीन गुण अर्थात सत्त्व, रज और तम, तीन

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

दोष अर्थात् वात, पित्त और कफ। इस दिव्य ज्ञान के साथ दोनों प्राणों वाला हमारा शरीर रथ सभी दिशाओं में अपने त्याग, दान, इच्छारहित और अहंकाररहित प्रकृति और गतिविधियों के कारण व्याप्त होता है। आत्मा और परमात्मा का सम्बन्ध तथा प्रबन्ध दिन और रात्रि के समान है, जो सूर्य के द्वारा व्याप्त होते हैं। दोनों ही लगातार प्रतिक्षण अटूट सम्बन्ध से जुड़े होते हैं और एक-दूसरे पर निर्भर होते हैं। इसलिए परमात्मा और आत्मा एवं प्राण और अपान दोनों का सम्बन्ध एक महान दिव्य उद्देश्य एवं मिशन के लिए सदैव संयुक्त रहना चाहिए, जो मन पर शासन कर सके।

जीवन में सार्थकता

पूर्ण और सम्पन्न प्रयासों को कैसे सुनिश्चित किया जाये?

हमें आध्यात्मिक, मानसिक और शारीरिक स्तर पर सभी गतिविधियों में अत्यन्त गहरा और गम्भीर होना चाहिए :—

(क) आध्यात्मिक स्तर पर परमात्मा और आत्मा के परस्पर सम्बन्ध पर ध्यान एकाग्र करने का दिव्य महत्व होता है।

(ख) मानसिक स्तर पर हमारे उद्देश्यों, मिशन और विचारों पर एकाग्रता भी दिन और रात्रि के तरह होनी चाहिए। इससे जीवन के किसी भी क्षेत्र में सफलता सुनिश्चित की जा सकती है।

(ग) शारीरिक स्तर पर प्राण और अपान के बीच सम्बन्ध पर एकाग्रता पूर्ण स्वस्थ जीवन सुनिश्चित करती है।

हमें अपने जीवन की गतिविधियों में गहरा और गम्भीर होना चाहिए, जिससे हम यह सुनिश्चित कर सकें कि वे दिन और रात्रि की तरह प्रत्येक स्थान पर जारी रहें।

ऋग्वेद मन्त्र 1.34.2

त्रयः पवयो मधुवाहने रथे सोमस्य वेनामनु विश्व इद्विदुः।

त्रयः स्कम्भासः स्कम्भितास आरभे त्रिर्क्तं याथस्त्रिर्वशिवना दिवा ॥ 2 ॥

(त्रयः) तीन (पवयः) पवित्र करने वाले पहिये – इन्द्रियाँ, मन और बुद्धि (मधु वाहने) मधुरता पैदा करने वाले, सुविधाजनक (रथे) रथ के लिए (सोमस्य) सात्त्विक शक्ति (वेनाम) प्रशंसायें

(अनु) अनुपात में (विश्वे) सब (इत) निश्चित रूप से (विदुः) जानते हैं (त्रयः) तीन (स्कम्भासः) बाँधने के खम्भे (स्कम्भितासः) स्थापित (आरभे) यात्रा प्रारम्भ करने के लिए (त्रिः) तीन बार (नक्तम) रात्रि में (याथः) प्रगति (त्रिः) तीन बार (अश्विना) तुम दोनों (दिवा) दिन में।

व्याख्या :-

हमारे शरीर रथ के तीन पहिये कौन से हैं?

हमारे शरीर रथ के तीन पहिये (इन्द्रियाँ, मन और बुद्धि) मधुरता पैदा करने वाले और हमारी जीवन यात्रा को सुखपूर्वक बनाने वाले हैं। यह तीनों पहिये गुणों और प्राण शक्ति की चमक के अनुपात में ही ज्ञानवान

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

होते हैं, प्राणशक्ति की चमक जितनी अधिक होगी, उतना ही इन्द्रियों, मन और बुद्धि के ज्ञान का स्तर होगा। यह तीनों पहिए हमारी जीवन यात्रा की शुरुआत को स्थापित करने और उसे बांधने के मजबूत स्तम्भ होते हैं। केवल यही तीनों स्तम्भ हमारे शरीर, मन और आत्मा की प्रगति सुनिश्चित कर सकते हैं – तीन बार अर्थात् बार–बार, दिन में और रात में भी।

जीवन में सार्थकता

जीवन की प्रगति और यात्रा को सुविधाजनक कैसे बनाया जाये?

एक प्रगतिशील जीवन यात्रा को सुनिश्चित करने के लिए इन्द्रियां, मन और बुद्धि का मजबूत होना अत्यन्त आवश्यक है।

हमारे शरीर रथ के यह तीन पहिए जीवन यात्रा को सुविधाजनक बनाने के लिए उतने ही महत्वपूर्ण हैं, जितने हवाई जहाज के तीन पहिए, जो अत्यन्त सुविधाजनक वाहन हैं।

यह तीनों पहिए प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में गुणों और प्राण शक्ति से भरपूर होने चाहिए। यदि यह स्तम्भ मजबूत हैं तो हमारी जीवन यात्रा निश्चित रूप से परमात्मा की अनुभूति के लक्ष्य की ओर शानदार रूप से प्रगति करेगी, अन्यथा यह रथ निम्न योनियों में ही घूमता रह जायेगा और समस्त दुखों को भोगता रहेगा। मजबूत स्तम्भ के साथ हम बार–बार दिन–रात और प्रतिक्षण अपनी प्रगति की अनुभूति प्राप्त कर सकते हैं।

ऋग्वेद मन्त्र 1.34.3

समाने अहन्त्रिरवद्यगोहना त्रिरद्य यज्ञं मधुना मिमिक्षतम् ।
त्रिर्वज्जवतीरिषो अश्विना युवं दोषा अस्मभ्यमुषसश्च पिन्वतम् ॥ ३ ॥

(समाने) सम भाव से, महान सुविधाजनक, उन्नत (अहन्) दिन (त्रिः) तीन बारए बार–बार, तीन स्तरों पर (अवद्य गोहना) सब बुराईयों, दोषों से बचाने वाले (त्रिः) तीन बार, बार–बार (अद्य) आज (यज्ञम) त्यागमयी जीवन (मधुना) मधुरता के साथ (मिमिक्षतम) सिंचाई करो, पूर्ण सन्तुष्ट करो (त्रिः) तीन बारए बार–बार (वाजवतीः – सुविधाएः और प्रसन्नता देने वाले (इषः) इच्छित (अश्विना) जोड़ा (युवम) दोनों का (दोषा) रात्रि में, अज्ञानता में, चन्द्रमा (अस्मभ्यम) हमारे लिए (उषसः) दिन में, ज्ञान में (च) और (पिन्वतम) स्वीकार।

व्याख्या :-

प्रसन्न, सुविधाजनक और मधुर जीवन के लिए तीन कदम कौन से हैं?

प्रार्थना – दिन में तीन बार का अर्थ है बार–बार (क) कृपया हमारा दिन महान सुविधाओं के साथ उन्नत तरीके से समभावपूर्वक बीते, (ख) हमें शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक तीनों स्तरों पर बुराईयों से बचायें, (ग) हमारे त्याग पूर्ण रूप से सन्तुष्टि पैदा करने वाले हों और मधुरता से सिंचित हों, (घ) हमारा जीवन

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

सुविधाओं और प्रसन्नताओं के साथ बीते, (ड.) मेरा ज्ञान और अज्ञान सूर्य और चन्द्रमा की तरह दिन-रात आपको स्वीकृत हो।

जीवन में सार्थकता

सम्भाव की भूमिका और महत्व क्या है?

शरीर और मन का सम्भाव सदैव बना रहना चाहिए। इसके कई कारण हैं :—

(क) यदि हमारे शरीर और मन, प्राण और अपान में सम्भाव है, अर्थात् सन्तुलन है तो हमारा जीवन प्रगतिशील और उन्नत होगा।

(ख) यदि हम अपने ज्ञान और कर्मों को बुराईयों से बचा कर रखते हैं तो निश्चित रूप से हम रोग रहित सुविधाजनक जीवन जी सकते हैं।

(ग) यदि हम अपने जीवन को त्यागपूर्वक व्यतीत करते हैं तो हमारा जीवन मधुरता से सिंचित हो जाता है।

(घ) यदि हम अपनी सारी योग्यतायें – ज्ञान और अज्ञान, सब कुछ परमात्मा को समर्पित कर देते हैं तो हमारा जीवन सम्भाव और सन्तुष्ट हो जाता है। जीवन का यह सम्भाव दिन और रात्रि प्रतिक्षण चलना चाहिए।

इन्द्रियों पर नियन्त्रण के लिए सम्भाव प्रथम शर्त है, जो हमें त्याग के मार्ग पर चलने के लिए और अपने समस्त प्रयास, ज्ञान और अज्ञान सब कुछ परमात्मा को समर्पित करने के लिए प्रेरित करती है।

ऋग्वेद मन्त्र 1.34.4

त्रिवर्तिर्यातं त्रिरनुव्रते जने त्रिः सुप्राव्ये त्रेधेव शिक्षतम् ।

त्रिर्नान्द्यं वहतमशिवना युवं त्रिः पृक्षो अस्मे अक्षरेव पिन्वतम् ॥ 4 ॥

(त्रिः) तीन बार, बार-बार (वर्ति:) महान पथ (यातम्) अनुसरण करो (त्रिः) तीन बार (बार-बार) (अनुव्रते जने) संकल्पशील लोग (त्रिः) तीन बार, बार-बार (सुप्राव्ये) उत्तम रूप से संरक्षण करने में सक्षम (त्रेधा इव) तीन प्रकार से (शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक)

(शिक्षतम्) शिक्षित करो, शक्तिशाली बनाओ (त्रिः) तीन बार, बार-बार (नान्द्यम्) प्रसन्नता के लिए सम्पन्नता (वहतम्) प्राप्त कराओ (अशिवना) जोड़ा (युवम्) तुम दोनों का (त्रिः) तीन बार, बार-बार (पृक्षः) ज्ञान तथा भौतिक वस्तुयें (अस्मे) हमारे लिए (अक्षरा इव) जल की तरह

(पिन्वतम्) हमें प्राप्त करो।

व्याख्या :-

महान श्रेष्ठ पथ का अनुसरण कैसे करें?

हम महान श्रेष्ठ पथ का अनुसरण बार-बार निम्न प्रकार से कर सकते हैं :—

(क) बार-बार संकल्पशील व्यक्तियों का अनुसरण करें।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

- (ख) बार—बार उत्तम रूप से संरक्षण के योग्य बनें।
(ग) स्वयं को तीन तरफ से शिक्षित करें और ताकतवर बनायें – शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक।
(घ) समृद्धि और प्रसन्नता के लिए प्रार्थना और प्रयास करें।
(ङ) जिस प्रकार जल सबके कल्याण के लिए बहता रहता है, उसी प्रकार हम भी बार—बार सबके कल्याण के लिए ज्ञान और समस्त भौतिक सम्पदायें धारण करें।

जीवन में सार्थकता

महान् श्रेष्ठ मार्ग को सर्वमान्य कैसे बनायें?

हमारे जीवन में महान् श्रेष्ठ मार्ग मुक्ति तक सर्वमान्य बना रहे।

यदि आप बार—बार महान् श्रेष्ठ मार्ग के अनुसार का संकल्प करते हो तो 5 प्रयास पूरी आस्था के साथ करने चाहिये, आपको निश्चित रूप से प्रगतिशील और प्रसन्न जीवन प्राप्त होगा। इस संकल्प का अनुसरण करते हुए आपके संकल्प और आपके कार्य आपको बार—बार मानव जीवन प्राप्त करवायेंगे, जब तक आप मुक्ति की अवस्था को प्राप्त न कर लें और प्रत्येक जन्म में आप इस महान् श्रेष्ठ मार्ग का अनुसरण करते रहें। इस महान् श्रेष्ठ मार्ग के 5 प्रयास आपको जीवन में पूरे क्रियात्मक रूप से शामिल कर लेने चाहिए :—

- (क) अनुवृते – संकल्पशील लोगों का अनुसरण करो।
(ख) सुप्राप्ये – अपने आपको तथा अन्यों को संरक्षण देने के योग्य बनो।
(ग) शिक्षात्म – तीनों स्तरों की पूर्ण शिक्षा ग्रहण करो।
(घ) नान्द्यम् – प्रसन्नता के लिए समृद्धि प्राप्त करो।
(ङ) पृक्षः अक्षरा इव – ज्ञान और सम्पदा को जल की तरह धारण करो।

ऋग्वेद मन्त्र 1.34.5

त्रिनो रयिं वहतमश्विना युवं त्रिदेवताता त्रिरुतावतं धियः।

त्रिः सौभगत्वं त्रिरुत श्रवांसि नस्त्रिष्ठं वां सुरे दुहिता रुहद्रथम् ॥ ५ ॥

(त्रिः) तीन बार, बार—बार (न:) हमारे लिए (रयिम्) गौरवशाली सम्पदा (वहतम्) प्राप्त कराओ (अश्विना) दोनों (प्राण—अपान, धरती और आकाश की तरह) (युवम्) तुम दोनों के (त्रिः) तीन बार, बार—बार (देवताता) दिव्यतायें बढ़ाओ (त्रिः) तीन बार, बार—बार (उत) और (अवतम्) संरक्षित करो (धियः) बुद्धियाँ (त्रिः) तीन बार, बार—बार (सौभगत्वम्) उत्तम सुविधाएं और सौभाग्य (त्रिः) तीन बार, बार—बार (उत) और (श्रवांसि) सुनने योग्य (न:) हमारे (त्रिष्ठम्) तीन स्थापित (शरीर, मन और आत्मा), (इन्द्रियां, मन और बुद्धि) (वाम) तुम्हारे (सूरे:) सूर्य की (दुहिता) पुत्री (प्रशंसनीय प्रकाश) (अरुहत) आरुङ्, स्थापित (रथम्) रथ (शरीर)।

व्याख्या :-

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

प्रगति और समृद्धि के लिए हमारी क्या प्रार्थनायें होना चाहिए?

समृद्धि का उद्देश्य क्या है?

प्रगति और समृद्धि के लिए 5 प्रार्थनायें हैं। ये प्रार्थनायें अशिवना अर्थात् दोनों प्राणों, धरती—आकाश और परमात्मा—प्रगति को की गयी हैं :—

- (क) हमें बार—बार गौरवशाली सम्पदा प्राप्त करवाओ (रथिम्)।
- (ख) हमारे अन्दर बार—बार दिव्यताओं की वृद्धि करो (देवताता)।
- (ग) विद्वानों को बार—बार संरक्षित करो (अवतम् धियः)।
- (घ) उत्तम सुख और सौभाग्य हमें बार—बार उपलब्ध करवाओ (सौभगत्वम्)।
- (ङ) हमें सुनने लायक वाणी अर्थात् वेद बार—बार उपलब्ध करवाओ (श्रवांसि)।

इन प्रार्थनाओं का उद्देश्य यह है कि हमारे तीन दृष्टिकोण (शरीर, मन और आत्मा) (इन्द्रियां, मन और बुद्धि) इस शरीर रथ पर सूर्य के यश के समान यशस्वी रूप में यात्रा कर सकें, जो स्वतः ही चमकता है।

जीवन में सार्थकता

सूर्य के यश के समान अपने जीवन को स्वतः चमकने वाला कैसे बनायें?

हमारी सम्पत्ति, दिव्यताओं, संरक्षण, सौभाग्य और महान ज्ञान का उद्देश्य सूरे दुहिता के समान लक्षण धारण करना होना चाहिए। सूरे दुहिता का अर्थ है सूर्य की बेटी अर्थात् यशस्वी प्रकाश की किरणें। हमें स्वतः चमक वाला होना चाहिए, जो दूसरों को भी देखने में सहायक बन सके। कोई भी लक्षण जो केवल हमारे व्यक्तिगत जीवन तक सीमित रहता है, वह निरर्थक है। वह न हमारे लिए लाभकारी है और न अन्यों के लिए। हमारी सभी वस्तुयें और ज्ञान आदि बहते हुए जल की तरह होनी चाहिए। जैसा इस सूक्त के चौथे मन्त्र में बताया गया है।

ऋग्वेद मन्त्र 1.34.6

त्रिनो अशिवना दिव्यानि भेषजा त्रिः पार्थिवानि त्रिरु दत्तमभ्यः।
ओमानं शंयोर्ममकाय सूनवे त्रिधातु शर्म वहतं शुभस्पती॥ 6॥

(त्रिः) तीन बार, बार—बार (न:) हमारे लिए (अशिवना) दोनों (दिव्यानि) दिव्यता से (भेषजा) औषधि, भोजन (त्रिः) तीन बार, बार—बार (पार्थिवानि) पृथ्वी से (त्रिः) तीन बारए बार—बार

(उ) और (दत्तम्) दीजिए (अदभ्यः) जल से, वायुमण्डल से, अन्तरिक्ष से (ओमानम्) व्यवहार, शान्ति और आनन्द के संरक्षण के लिए (शंयोः) प्रसन्नता के लिए, सुविधाजनक जीवन के लिए (ममकाय) मेरे लिए (सूनवे) वैदिक

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

विवेक की प्रेरणा (त्रिधातु) तेज के तीन गुण (वात, पित्त, कफ), (सत्त्व, रज, तम) (शर्म) सन्तुलित, समन्वय (वहतम्) उपलब्ध कराओ (शुभस्पती) कल्याणकारी गतिविधियाँ।

व्याख्या :-

तीन प्रकार के भोजन और औषधियाँ क्या हैं?

इन भोजन और औषधियों के क्या परिणाम हैं?

परमात्मा और प्रकृति माता से प्रार्थना है कि वे हमें तीन प्रकार के भोजन और औषधियां प्राप्त करायें :-

(क) दिव्यता से हमें आध्यात्मिक प्रकाश प्राप्त हो, जिससे हम अपनी आन्तरिक शक्ति पर ध्यान लगाकर परमात्मा की अनुभूति प्राप्त कर सकें।

(ख) धरती से हमें भिन्न-2 प्रकार के भोजन और औषधियाँ प्राप्त हों।

(ग) जल, वायुमण्डल तथा अन्तरिक्ष से हमें वायु तथा जलीय औषधियाँ प्राप्त हों।

इन तीन प्रकार के भोजन और औषधियों के फलस्वरूप हमें निम्न परिणाम प्राप्त होते हैं :-

(क) संरक्षण योग्य व्यवहार की शक्ति, शान्ति और आनन्द,

(ख) प्रसन्नता और सुखी जीवन,

(ग) वैदिक विवेक की हमारी अपनी प्रेरणा,

(घ) प्राण शक्ति की तीनों धातुओं की एक सन्तुलित अवस्था,

(ङ) सबके कल्याण के लिए सभी गतिविधियाँ।

जीवन में सार्थकता

पूर्ण स्वस्थ कैसे सुनिश्चित करें?

पूर्ण स्वास्थ्य के लिए प्रत्येक भोजन और औषधि हमें शुद्ध रूप में प्राप्त होनी चाहिए। हमारी एकाग्रता इन तीनों प्रकार के भोजनों को उनके शुद्ध रूप में, बिना मिलावट के, औषधि की तरह भोग करने में होनी चाहिए। दिव्य कार्यों में तो शुद्धता की नितान्त आवश्यकता है। अनुभूति का परम्पराओं से न्यून सम्बन्ध नहीं है। स्वास्थ्य के लिए दिव्य औषधि सर्वोच्च कारक है।

इन तीन प्रकार के भोजनों और औषधियों के परिणाम स्वरूप एक व्यक्ति ही नहीं, अपितु पूरे समाज का पूर्ण विकास सम्भव है।

ऋग्वेद मन्त्र 1.34.7

त्रिर्णो अश्विना यजता दिवेदिवे परि त्रिधातु पृथिवीमशायतम् ।
तिञ्चो नासत्या रथ्या परावत आत्मेव वातः स्वसराणि गच्छतम् ॥ 7 ॥

(त्रिः) तीन बार, बार-बार (नः) हमें (अश्विना) दोनों (आत्मा और परमात्मा, प्राण और अपान)

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

(यजता) संगति (दिवे दिवे) प्रतिदिन (परि) व्याप्त (त्रिधातु) तीन तत्व (वात, पित्त, कफ), (सत्त्व, रज, तम) (पृथिवीम्) भौतिक शरीर में, पृथ्वी में (अशायतम्) निवास करते हैं (तिस्रः) तीन स्तर (शरीर, मन और आत्मा), (वायु के तीन मार्ग – इडा, पिंगला और सरस्वती) (नासत्या) असत्य को स्वीकार न करने वाला (रथ्या) शरीर रथ (परावतः) सुदूर (आत्मा इव) आत्मा की तरह (वातः) सदैव गतिशील (स्वसराणि) आत्मा के लक्ष्य की ओर प्रगति करते हुए, आत्मा के लिए निर्धारित लक्ष्यों की गतिविधियों के लिए (गच्छतम्) जाते हैं।

व्याख्या :-

आत्मा के गन्तव्य तक पहुँचने में कौन हमारी सहायता करता है?

अश्विना अर्थात् दोनों प्राण—अपान तथा आत्मा—परमात्मा का जोड़ा प्रतिदिन बार—बार मिलता रहे और तीनों तत्वों के बीच सदैव व्याप्त रहे – वात—पित्त—कफ, सत्त्व—रज—तम आदि।

वे दोनों जीवन के किसी भी स्तर अथवा किसी भी वायु मार्ग में असत्य को अन्दर नहीं आने देते। जीवन के तीन स्तर हैं – शरीर, मन और आत्मा, जीवन के तीन वायु मार्ग हैं – इडा, पिंगला और सरस्वती। वे सदैव शरीर को बहुत दूर ले जाते हैं, जहाँ आत्मा का गन्तव्य स्थान है और आत्मा के निर्धारित कर्तव्य हैं।

जीवन में सार्थकता

परमात्मा और आत्मा के संगतिकरण का क्या प्रभाव है?

परमात्मा और आत्मा की संगतिकरण अर्थात् सामूहिक वास हमारे जीवन का एक सर्वमान्य लक्षण है। हमारे शरीर और मन पर भिन्न-2 तत्वों जैसे वात—पित्त—कफ तथा सत्त्व—रज—तम का भिन्न-2 प्रभाव हो सकता है, परन्तु परमात्मा और आत्मा का संगतिकरण जीवन की हर अवस्था से परे है। यह वास्तव में इन तत्वों से भी ऊपर है। हमारे जीवन की आन्तरिक और सर्वमान्य शक्ति कभी भी असत्य और अशुद्धि को अनुमति नहीं देती। यह हमारे शरीर और मन की अज्ञानता के विषय हैं। यदि हम अश्विना अर्थात् प्राण और अपान की सहायता से परमात्मा और आत्मा की मूल आन्तरिक शक्ति पर ध्यान एकाग्र करें तो ये निश्चित रूप से हमें आत्मा के गन्तव्य तक ले जाते हैं और उसके बीच में अन्य पूर्व निर्धारित लक्ष्यों पर भी ले जाते हैं।

ऋग्वेद मन्त्र 1.34.8

त्रिरश्विना सिन्धुभिः सप्तमातृभिस्त्रय आहावास्त्रेधा हविष्कृतम् ।

तिस्रः पृथिवीरूपरि प्रवा दिवो नाकं रक्षेथे द्युभिरक्तुभिर्हितम् ॥ ८ ॥

(त्रिः) तीन बार, बार—बार, जीवन की तीन अवस्थाएं – बचपन, युवा तथा वृद्ध (अश्विना) दोनों (परमात्मा और आत्मा, प्राण और अपान) (सिन्धुभिः) जल (वीर्य) (सप्त मातृभिः) मातृत्व वाले सात तत्व (त्रयः) तीन (आहावाः) जल के आधार (त्रेधा) तीन प्रकार के (हवि: कृतम्) त्यागपूर्ण कार्य, आहुतियाँ (तिस्रः) तीन (पृथिवीः) शरीर (स्थूल, सूक्ष्म और कारण)

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

(उपरि) उच्च (प्रवा) उठाने वाले (दिवः) दिव्य (नाकम) क्रीड़ा से (रक्षेथ) सुरक्षित करते हो
(द्युभिः) दिन, प्रकाश (अक्तुभिः) प्रकाश की किरणों के साथ (हितम) स्थापित।

व्याख्या :-

हम स्वयं को जीवन के कष्टदायक खेल से कैसे संरक्षित करें?

एक सर्वमान्य तथ्य बार—बार दोहराया जाता है कि हमारी जीवन के निम्न पहलू पूरी तरह से अशिवना अर्थात् आत्मा और परमात्मा की एकता वाली ताकत पर निर्भर हैं अर्थात् हमारे दिव्य जीवन पर निर्भर हैं और हमारे प्राण, अपान की शक्ति अर्थात् हमारी श्वासों पर निर्भर हैं :—

- (क) हमारा पूर्ण जीवन अर्थात् हमारा बचपन, युवावस्था और वृद्धावस्था,
- (ख) हमारा वीर्य अर्थात् हमारे भोजन का अन्तिम परिणाम,
- (ग) मातृत्व रूपी सात धातुएं जिन्हें हमारा भोजन उत्पन्न करता है — रस, रक्त, मांस, मेघ, अस्थि, मज्जा और वीर्य।

हमारे शरीर में वीर्य की पूर्ण शक्ति ही हमारी इन्द्रियों, मन और बुद्धि की शक्ति का आधार है।

इस प्रकार हमारे त्यागपूर्ण कार्यों में महान शक्ति प्रदर्शित होती है।

- (क) इन्द्रियों के स्तर पर, हम केवल श्रेष्ठ कार्य ही करते हैं,
- (ख) मानसिक स्तर पर, हम अहंकाररहित और इच्छारहित हो जाते हैं,
- (ग) बुद्धि के स्तर पर, हम स्व—अनुभूति की तरफ बढ़ते और प्रगति करते हैं।

जीवन की ऐसी यात्रा हमें सदा के लिए शरीर के तीनों स्तरों — स्थूल, सूक्ष्म और कारण शरीर, से ऊपर उठा देती है।

जीवन का ऐसा स्तर ही जीवन के कष्टदायक खेल से सुरक्षित करने के योग्य हो सकता है और जीवन को कष्टरहित बना सकता है, जिससे किरणों के प्रकाश के साथ हम प्रकाश की ओर बढ़ सकें।

जीवन में सार्थकता

एक महान आध्यात्मिक जीवन के 5 कदम क्या हैं?

(क) हमारा सम्पूर्ण जीवन हमारे प्राणों पर तथा परमात्मा और आत्मा की एकता के ध्यान केन्द्रित करने पर निर्भर है।

(ख) हमारे शरीर की मूल शक्ति, हमारा वीर्य हमारी इन्द्रियों, मन और बुद्धि का आधार है। यदि वीर्य को संरक्षित रखा जाये तो यह तीनों श्रेष्ठ रूप में कार्य करते हैं।

(ग) ऐसा वीर्य तीन प्रकार के त्यागपूर्ण कार्यों में अपनी शक्ति परिलक्षित करता है।

(घ) ऐसा जीवन स्थूल, सूक्ष्म और कारण शरीर के स्तरों से ऊपर उठ जाता है।

(ङ) केवल ऐसा जीवन ही जीवन के खेल से बच जाता है, जो प्रत्येक स्तर पर कष्टदायक होता है।

ऋग्वेद मन्त्र 1.34.9

क्व॑ त्री चक्रा त्रिवृतो रथस्य क्व॑ त्रयो बन्धुरो ये सनीलः।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

कदा योगो वाजिनो रासभस्य येन यज्ञं नासत्योपयाथः ॥ ९ ॥

(क्व) कहाँ हैं (त्री) तीन (चक्रा) पहिए (त्रिवृतः) तीन चक्र (रथस्य) इस रथ के, शरीर के (क्व) कहाँ हैं (त्रयः) तीन (बन्धुरः) बन्धन (ये) जो, कहाँ (सनीळः) मिलकर रहना (कदा) कब (योगः) योग, मेल (वाजिनः) शक्तिशाली (रासभस्य) सर्वोच्च आनन्ददायक ज्ञान के देने वाले (येन) जिसके साथ (यज्ञम्) त्यागपूर्ण कार्य (नासत्य) कभी असत्य नहीं, स्थाई सत्य, परमात्मा (उपयाथः) समीपता से प्राप्त ।

व्याख्या :-

इस रथ के तीन वृत कौन से हैं?

इस रथ के तीन पहिये कौन से हैं?

तीन बंधन कौन से हैं और वे कहाँ पर हैं?

सर्वोच्च आनन्ददायक ज्ञान के दाता जो करीब से समर्त त्यागपूर्ण कार्यों को प्राप्त करता है, उसके साथ मैं एकता की अनुभूति कब करूँगा?

इन सब प्रश्नों के उत्तर के रूप में कहा जा सकता है कि वह जो कभी असत्य नहीं है अर्थात् सदा सत्य है, अर्थात् परमात्मा है। इन सब प्रश्नों के आध्यात्मिक उत्तर इस प्रकार हैं :-

(क) तीन वृत तीन पथ हैं या मानव जीवन के तीन प्रयास हैं – धर्म (नैतिकता), अर्थ (धन शक्ति) तथा काम (इन्द्रियां या सांसारिक इच्छाएं)। प्रत्येक जीवन इन तीन पथों पर चलता है।

(ख) तीन पहिये हैं – हमारी इन्द्रियां, मन और बुद्धि जिनके आधार पर हमारा शरीर रथ उपरोक्त तीन पथों पर चलता है।

(ग) तीन बंधन हैं – शारीरिक स्तर पर वात, पित्त, कफ और मानसिक स्तर पर सत्त्व, रज, तम। रोगों को दूर रखने के लिए हमें इन तीनों बंधनों को संतुलित अवस्था में रखना चाहिए। हमें इन तीनों मानसिक बंधनों से ऊपर उठना चाहिए, जिससे हम अपनी बुद्धि को परमात्मा की अनुभूति के योग्य बना सकें।

(घ) जब हम सत्त्व, रज और तम से ऊपर उठ जाते हैं, तभी हम उस सर्वमान्य सत्य अर्थात् परमात्मा के साथ एकता की आशा कर सकते हैं, जो हमारे त्याग को करीब से प्राप्त करता है। बिना त्याग के हम सत्त्व, रज और तम से ऊपर नहीं उठ सकते।

जीवन में सार्थकता

विवाद और झगड़े से मुक्त जीवन कैसे जिया जा सकता है?

मानव जीवन में बहु आयामी गतिविधियाँ और प्रभाव होते हैं। प्रत्येक मानव धर्म, अर्थ और काम में व्यस्त है। बिरला ही कोई एक इन तीन वृतों से मुक्त होकर मोक्ष मार्ग की तरफ बढ़ता है।

इन तीन वृतों पर हम तीन पहियों की सहायता प्राप्त करते हैं – हमारी इन्द्रियां, मन और बुद्धि। एक जीवन तभी श्रेष्ठ माना जाता है, जिसमें ये तीन पहिये मजबूत और चमकदार हों, अन्यथा जीवन स्वयं ही एक नरक बन जाता है, जो रोगों और बुरे कार्यों से आच्छादित होता है। ये तीनों बंधन हमेशा जीवन को परेशान करते हैं। अतः इस मन्त्र का मूल भाव यह निकलता है कि हमें शारीरिक बंधनों को संतुलित अवस्था में रखना चाहिए, जिससे हमारा शरीर स्वस्थ रह सके। इसके उपरान्त बुराईयों, विवादों और कलह से ऊपर उठने के

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

लिए हमें मानसिक बंधनों से ऊपर उठना चाहिए। जब कोई व्यक्ति मानसिक बंधनों से ऊपर उठने के लिए स्वयं को प्रशिक्षित कर लेता है और जब वह सत्त्व, रज और तम की अपनी समझ के आधार पर अच्छे और बुरे निष्कर्ष से अलग हो जाता है, तभी वह विवाद और कलह से मुक्त जीवन जी सकता है। हमें किसी भी अवस्था पर अपनी समझ के आधार पर अच्छा या बुरा निष्कर्ष निकालने से स्वयं को रोकना चाहिए। किसी अवस्था के कुछ अन्य कारण भी हो सकते हैं, जो हमारे ज्ञान में न हों।

ऋग्वेद मन्त्र 1.34.10

आ नासत्या गच्छतं हूयते हविर्मध्वः पिबतं मधुपेभिरासभिः ।
युवोहिं पूर्वं सविताषसो रथमृताय चित्रं घृतवन्तमिष्यति ॥ 10 ॥

(आ) आओ (नासत्या) कभी असत्य नहीं, स्थाई सत्य, परमात्मा (गच्छतम्) जाओ (हूयते) प्रस्तुत (हविः) आहुतियाँ (त्यागपूर्वक की गई) (मध्वः) मधुर, तरल (पिबतम्) पीओ (मधुपेभिः) मधुर का पान करो (आसभिः) मुख से (युवोः) तुम दोनों (हि) निश्चित (पूर्वम्) पूर्व (सविता) निर्माता, प्रकाश देने वाला (उषसः) सूर्य की प्रथम किरणें (रथम्) रथ, शरीर (ऋताय) सच्ची प्रसन्नता के लिए (चित्रम्) अद्भुत गुणों वाले (घृतवन्तम्) शुद्ध एवं प्रकाशवान (इष्यति) प्रेरित करता है।

व्याख्या :-

त्याग में दी जाने वाली आहुतियों का दाता और प्राप्तकर्ता कौन है?

त्याग में दी जाने वाली आहुतियाँ उसी स्थायी सत्य, परमात्मा, से आती हैं और वहीं पर जाती हैं। यह आहुतियाँ मधुर पेय प्राप्त करवाती हैं, जो हम अपने मुख से पीते हैं, जो केवल शुद्ध और पोषक भोजन के रसों को पीने के लिए ही बना है क्योंकि केवल शुद्ध भोजन ही हमें त्याग के लिए प्रेरित कर सकता है।

प्राण और अपान दोनों निश्चित रूप से अपनी गतिविधियाँ जारी रखते हैं, जिससे वे हमारे लिए प्रसन्नता अर्जित कर सकें, यहाँ तक कि सूर्य की प्रथम किरणों के आने से पूर्व। परमात्मा उन्हें प्रेरित करता है और योग्य बनाता है कि वे हमें शुद्ध और प्रकाशवान सर्वोच्च गुण प्रदान कर सकें।

जीवन में सार्थकता

त्याग में आहुतियों की तुलना प्राण और अपान से किस प्रकार की गयी है?

आहुतियों का स्रोत केवल परमात्मा ही है और त्याग के बाद ये आहुतियाँ परमात्मा के पास ही जाती हैं। इस प्रकार उस स्थायी सत्य, परमात्मा, के साथ सम्पर्क बनाने के लिए यह एक समुचित मार्ग है। इसके बदले हमें हर प्रकार के मधुर और पोषक रस प्राप्त होते हैं।

जिस प्रकार प्राण और अपान सूर्य की प्रथम किरणों के आगमन से भी पूर्ण सम्पूर्ण जीवन सक्रिय रहते हैं, हमें भी ऐसी ही प्रेरणा की प्रार्थना करनी चाहिए, जिससे हम आवश्यकता पड़ने पर कभी भी और कहीं भी त्याग के लिए अग्रणी रहें। जिस प्रकार प्राण और अपान परमात्मा से आते हैं और परमात्मा के पास जाते हैं, जो सर्व विद्यमान है, हमारे त्याग भी परमात्मा से आते हैं और परमात्मा के पास ही जाते हैं।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

ऋग्वेद मन्त्र 1.34.11

आ नासत्या त्रिभिरेकादशैरिह देवेभिर्यातं मधुपेयमश्विना ।
प्रायुस्त्तारिष्टं नी रपांसि मृक्षतं सेधतं द्वेषो भवतं सचाभवा ॥ 11 ॥

(आ – यातम से पूर्व लगाकर) (नासत्या) कभी असत्य नहीं, स्थाई सत्य, परमात्मा (त्रिभि: एकादशैः) तीन बार ग्यारह अर्थात तैतीस (इह) यहाँ, इस शरीर में (देवेभिः) दिव्य शक्ति (यातम् – आ यातम) – आओ (मधु पेयम) मधुर तरल, दिव्य औषधि, वीर्य (अश्विना) दोनों (प्र – तारिष्टम से पूर्व लगाकर) (आयुः) आयु (तारिष्टम – प्र तारिष्टम) – विस्तृत करने के लिए (नि: – ऋक्षतम् और सेधतम् से पूर्व लगाकर) (रपांसि) बुराईयां और गलतियां (ऋक्षतम् – नि: ऋक्षतम) – पूरी तरह से दूर करके (सेधतम् – नि: सेधतम) – रोक दो (द्वेषः) द्वेष पूर्ण विचार (भवतम) होओ (सचाभ्वा) सत्य एवं स्थाई।

व्याख्या :-

मधुर पेय अर्थात् दिव्य औषधि किस प्रकार प्राप्त करें?

प्राण और अपान, परमात्मा और आत्मा तैतीस शक्तियों की दिव्यता सुनिश्चित कराने के लिए आते हैं, जिससे मधुर पेय अर्थात् दिव्य औषधियाँ सोम तथा वीर्य प्राप्त होता है। जीवन के तीन स्तर अर्थात् शरीर, मन और आत्मा को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि दस इन्द्रियां और एक मन शुद्ध रहे। इस प्रकार तैतीस शक्तियाँ होती हैं – ग्यारह इन्द्रियों की शुद्धि शरीर के स्तर पर, ग्यारह इन्द्रियों की शुद्धि मन के स्तर पर और ग्यारह इन्द्रियों की शुद्धि आध्यात्मिक स्तर पर।

इसके परिणामस्वरूप प्राप्त मध्यर पेय निश्चित रूप से निम्न परिणाम सुनिश्चित करेगा :-

- (क) आयु की वृद्धि,
(ख) बुराईयों और दोषों का पूर्ण निवारण,
(ग) शत्रुतापूर्ण विचारों का निवारण,
(घ) परमात्मा की सच्ची और स्थाई संगति।

जीवन में सार्थकता

मधुर पेय अर्थात् दिव्य औषधि के क्या परिणाम हैं?

प्रेय मार्ग और श्रेय मार्ग क्या हैं?

जीवन के सभी स्तरों पर ग्यारह इन्द्रियों की शुद्धि कार्यशैली एक सुन्दर पथ का निर्माण कर सकती है, जिस पर आध्यात्मिक प्रगति सम्भव हो। ग्यारह इन्द्रियों की शुद्धि का प्रयोग महान और दिव्य गतिविधियों के लिए किया जाना चाहिए। ऐसी दिव्य इन्द्रियां मधुर रस पैदा करती हैं। हमारी इन्द्रियों को निरर्थक और हानिकारक गतिविधियों में संलिप्त नहीं होना चाहिए क्योंकि केवल विलासिताओं से इन्द्रियों की संतुष्टि उन्हें

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

कमजोर ही करती है, जब कि श्रेष्ठ कार्यों के लिए इन्द्रियों का प्रयोग मधुर पेय प्राप्त करवाता है। इसलिए दोनों में से एक स्पष्ट पथ का चयन करना चाहिए – (क) पेय मार्ग अर्थात् प्रिय मार्ग और (ख) श्रेय मार्ग अर्थात् श्रेष्ठ मार्ग।

श्रेय मार्ग पर चलते हुए ही आप अपनी ग्यारह इन्द्रियों को शरीर, मन और आत्मा के उत्थान के लिए लगा सकते हैं और अन्ततः भगवान पर ध्यान केन्द्रित कर सकते हैं।

ऋग्वेद मन्त्र 1.34.12

आ नो अश्विना त्रिवृता रथेनाऽवांचं रथिं वहतं सुवीरम् ।
शृण्वन्ता वामवसे जोहवीमि वृधे च नो भवतं वाजसातौ ॥ 12 ॥

(अ) वहतम से पूर्व लगाकर (न:) हमारे लिए (अश्विना) दोनों (त्रिवृता) तीन चक्र, तीन मानवीय प्रयास – धर्म, अर्थ और काम अर्थात् श्रेष्ठ कर्म, अर्थ व्यवस्था और इच्छाएं (रथेन) रथ, मानव शरीर (अर्वाचम) ऊपर से नीचे तक, पूर्णरूपेण (रथिम) गौरवशाली सम्पदा (वहतम – आ वहतम) – प्राप्त करवाईए (सुवीरम्) वीरता के साथ, उत्तमता के साथ (शृण्वन्ता) मेरी प्रार्थनाओं को सुनने योग्य (वाम) आप (अवसे) पूर्ण सुरक्षा के लिए (जोहवीमि) आपको बार-बार बुलाता हूँ (वृधे) प्रगति और सफलता के लिए (च) और (न:) हमारे (भवतम्) होओ (वाजसातौ) संग्रामों में।

व्याख्या :-

तीन दायित्व अर्थात् मानव जीवन के तीन प्रयास पूर्ण करने के लिए किसको प्रार्थना करें?

हम परमात्मा और आत्मा के साथ-साथ प्राण और अपान रूपी अश्विना जोड़ों को प्रार्थना करते हैं कि हमें वीरता और ऊपर से नीचे तक श्रेष्ठता सहित समस्त गौरवशाली सम्पदा प्रदान करें, जिससे हम मानव जीवन के तीन प्रयास अर्थात् धर्म, अर्थ और काम को पूर्ण कर सकें।

तुम दोनों अश्विना ही पूर्ण संरक्षण के लिए प्रगति और सफलता के लिए तथा समस्त संग्रामों में हमारे साथ रहने के लिए हमारी प्रार्थनायें सुनने में सक्षम हों। इसलिए हम बार-बार तुम्हारा आह्वान करते हैं।

जीवन में सार्थकता

मानव अस्तित्व के चौथे और अन्तिम स्तर अर्थात् मुक्ति को कैसे प्राप्त किया जाये?

मानव होने के नाते हम सबकी तीन मूल जिम्मेदारियाँ हैं – धर्म, अर्थ और काम, जिनका हमें पूरी वीरता और श्रेष्ठता के साथ निर्वहन करना चाहिए। केवल परमात्मा और आत्मा, हमारे प्राण और अपान ही जीवन में हमारी सहायता कर सकते हैं। इस प्रकार हमें ध्यान करते हुए, प्रार्थना करते हुए तथा सहायता मांगते हुए केवल आन्तरिक शक्तियों पर ध्यान एकाग्र करना चाहिए। हमें अपना समय, साधन और शक्तियाँ धर्म के नाम पर निरर्थक प्रक्रियाओं में व्यर्थ नहीं करना चाहिए। धार्मिक होने का अर्थ है गहराई से अन्दर आध्यात्मिक होना।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

और बाहर श्रेष्ठ तथा मानवीय होना। यह सिद्धान्त हमें अपनी जिम्मेदारियों के निर्वहन में सहायता कर सकता है और हम निश्चित रूप से मानव अस्तित्व के चौथे और अन्तिम स्तर अर्थात् मुक्ति को प्राप्त कर सकते हैं।

ऋग्वेद मण्डल-1 सूक्त 35 सूर्य पर सूक्त

ऋग्वेद मन्त्र 1.35.1

हवयाम्यनिं प्रथमं स्वस्तये हवयामि मित्रवरुणाविहावसे ।
हवयामि रात्रीं जगतो निवेशनीं हवयामि देवं सवितारं मूतये ॥ १ ॥

हवयामि – आह्वान करता हूँ पुकारता हूँ

अग्निम् – प्रत्येक ऊर्जा में अग्रणी

प्रथमम् – सबसे प्रथम

स्वस्तये – सुविधा, संरक्षण और स्वास्थ्य के लिए

हवयामि – आह्वान करता हूँ पुकारता हूँ

मित्रा वरुणौ – दोनों प्राण, जीवन और रोग प्रतिरोधक शक्ति का संरक्षण

इह – यहाँ, इस जीवन में

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

अवसे – संरक्षण के लिए

हवयामि – आहवान करता हूँ, पुकारता हूँ

रात्रीम् – रात्रि

जगतः – समूचे संसार में

निवेशनीम् – विश्राम के लिए और पुनः निवेश के लिए

हवयामि – आहवान करता हूँ, पुकारता हूँ

देवम् – प्रकाशित करने वाले, दिव्य

सवितारम् – सूर्य, निर्माण शक्ति

ऊतये – पूर्ण स्वरथ और क्रियाशील जीवन के संरक्षण के लिए

व्याख्या :-

एक स्वरथ और सक्षम जीवन के लिए चार मूल और अत्यन्त महत्वपूर्ण लक्षण क्या हैं?

सर्वप्रथम, मैं परमात्मा (अग्नि) का आहवान करता हूँ और उसे पुकारता हूँ, जो प्रत्येक ऊर्जा में अग्रणी है और जो सुविधाओं, संरक्षण और स्वास्थ्य के लिए सर्वोच्च ऊर्जा है।

द्वितीय, मैं दोनों प्राणों (मित्र और वरुण) का आहवान करता हूँ और उन्हें पुकारता हूँ, यहाँ इसी जीवन में संरक्षण और रोग प्रतिरोधक शक्ति के लिए।

तृतीय, मैं रात्रि (रात्रिम) का आहवान करता हूँ और उसे पुकारता हूँ, विश्राम के लिए और सारे संसार की ऊर्जाओं का पुनर्निवेश करने के लिए।

अन्त में, मैं प्रकाशित करने वाले दिव्य सूर्य (सवितारम) का आहवान करता हूँ और उसे पुकारता हूँ, जो समूचे ब्रह्माण्ड में एक सक्षम स्वरथ और कार्यशील जीवन की निर्माण शक्ति है।

जीवन में सार्थकता

एक सक्षम जीवन के चार मूल और अत्यन्त महत्वपूर्ण लक्षणों का प्राप्त करने के लिए क्रियात्मक पथ क्या है?

(क) ऊर्जा के लिए प्रत्येक व्यक्ति को अपने भोजन और रहन-सहन की आदतों पर ध्यान करना चाहिए, जिससे भरपूर ऊर्जा प्राप्त हो। प्राकृतिक और पोषक भोजन, जीने के लिए सकारात्मक वातावरण, सर्वोच्च ऊर्जा परमात्मा पर ध्यान एकाग्र करने के साथ-साथ सकारात्मक सोच ऊर्जा के महान स्रोत हैं।

(ख) शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य के साथ-साथ परमात्मा पर ध्यान एकाग्र करने के लिए प्राणों पर उचित नियन्त्रण अत्यन्त आवश्यक है।

(ग) रात्रि में उचित निद्रा आवश्यक है। रात्रि के अन्धकारयुक्त समय का उपयोग केवल निद्रा और ध्यान साधना के लिए किया जाना चाहिए।

(घ) एक स्वरथ और कार्यशील जीवन के लिए आप दिन के प्रकाश का स्वागत तभी कर पायेंगे, यदि आप प्रथम तीन बिन्दुओं को उचित रूप में अनुशासन सहित अनुसरण करेंगे।

ऋग्वेद मन्त्र 1.35.2

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

आ कृष्णन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च ।
हिरण्ययेन सविता रथेनाऽ देवो याति भुवनानि पश्यन् ॥ 2 ॥

आ कृष्णन – चुम्बकीय शक्ति से आकर्षित करना

रजसा – सभी भौतिक शरीरों में व्याप्त

वर्तमानः – वर्तमान

निवेशयन – अपने—अपने स्थानों पर स्थापित

अमृतम् – न मरने योग्य शक्ति

मर्त्यम् – मृत्यु के योग्य

च – और

हिरण्ययेन – स्वर्ण, चमकदार, अपने ही प्रकाश से चमकता हुआ

सविता – प्रकाशित करने योग्य, प्रत्येक को सकारात्मकता की ओर प्रेरित करने वाला

रथेन – रथ

देवः – पूर्ण दिव्यता

आयाति – गतिशील, सभी वस्तुओं के द्वारा प्राप्त

भुवनानि – समस्त सांसारिक पदार्थ

पश्यन् – देखभाल करता है।

व्याख्या :-

परमात्मा किस प्रकार इस सृष्टि में सबकी देखभाल करते हैं?

सर्वशक्तिमान परमात्मा सभी सांसारिक शरीरों को आकर्षित करते हैं और उनमें व्याप्त होते हैं, चाहे वे मरण योग्य हों या नहीं, जो अपने—अपने स्थान पर और अपने—अपने कार्यों में वर्तमान हैं और स्थापित हैं। जब कि वह सर्वोच्च शक्ति, सर्वोच्च दिव्य और सबका रचयिता अपने स्वर्णिम रथ पर सवार होकर चारों तरफ घूमता है और सबको सकारात्मकता के लिए प्रेरित करने वाला है और वह सृष्टि के सभी पदार्थों के द्वारा सबकी देखभाल के लिए ही प्राप्त होता है।

- (क) परमात्मा चुम्बक की तरह सभी सांसारिक पदार्थों को आकृष्ट करते हैं।
- (ख) सभी सांसारिक पदार्थों का अर्थ है मरने योग्य या न मरने योग्य।
- (ग) सभी सांसारिक पदार्थ अपने निर्धारित स्थान और कार्यों में नियुक्त हैं।
- (घ) परमात्मा अपनी दिव्य शक्ति और ज्ञान रूपी स्वर्णिम रथ पर बैठकर गतिशील होते हैं।
- (ड) परमात्मा सबको रचनात्मकता के लिए प्रेरित करते हैं।
- (च) इस प्रकार परमात्मा सबको समीपता से देखते हुए उनके कर्मों का फल देकर उनका ध्यान रखते हैं।

जीवन में सार्थकता

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

एक निरीक्षक अधिकारी को किस प्रकार अपने अधीनस्थ कार्यकर्ताओं की देखरेख करनी चाहिए?
एक निरीक्षक में क्या गुण होने चाहिए?

जिस प्रकार परमात्मा सभी सांसारिक पदार्थों का समीपता से ध्यान रखते हैं, सबको कार्य करने के लिए प्रेरित करते हैं और उसके बाद उनके कार्य का फल प्रदान करते हैं, उसी प्रकार प्रत्येक वरिष्ठ और वृद्ध व्यक्ति को अपने अधीनस्थ कार्यकर्ताओं, शिष्यों और कनिष्ठ सदस्यों की देखरेख करनी चाहिए। प्रत्येक निरीक्षक में निम्न गुण होने चाहिए :—

- (क) प्रेम और कल्याण की चुम्बकीय शक्ति,
- (ख) अपने महान ज्ञान और शक्ति के साथ प्रत्येक व्यक्ति के निकट उसके स्थान पर घूमना,
- (ग) प्रत्येक व्यक्ति को कार्य के लिए प्रेरित करना,
- (घ) प्रत्येक व्यक्ति को उचित सम्मान और पुरुस्कार देकर उनका ध्यान रखना।

ऋग्वेद मन्त्र 1.35.3

याति देवः प्रवता यात्युद्धता याति शुभ्राभ्यां यजतो हरिभ्याम् ।
आ देवो याति सविता परावतोऽ प विश्वा दुरिता बाधमानः ॥ ३ ॥

याति — गतिशील, सभी वस्तुओं के द्वारा प्राप्त

देवः — दिव्य शक्ति

प्रवता — निम्न मार्ग से

याति — गतिशील, सभी वस्तुओं के द्वारा प्राप्त

उद्धता — उच्च मार्ग से

याति — गतिशील, सभी वस्तुओं के द्वारा प्राप्त

शुभ्राभ्याम् — शुद्धता के साथ

यजतः — जुड़ने के योग्य

हरिभ्याम् — ऊर्जा और प्रकाश की किरणों के साथ, दर्द निवारण के लिए सक्षम

आ — याति से पूर्व लगाकर

देवः — दिव्य शक्ति

याति — गतिशील, सभी वस्तुओं के द्वारा प्राप्त

सविता — प्रकाशित करने योग्य, सबको रचनात्मकता के लिए प्रेरित करने वाला

परावतः — अत्यन्त दूर

अप — वाधमानः से पूर्व लगाकर

विश्वा — समस्त

दुरिता — बुराईयाँ

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

बाधमानः (अप बाधमानः) – दूर रखता है।

व्याख्या :-

बुराईयों को बहुत दूर कैसे रखा जाये?

भगवान की दिव्य शक्ति गतिशील रहती है और निम्न मार्ग तथा उच्च मार्ग पर चलने वाले सबको प्राप्त होती हैं, जो किरणों के साथ जुड़ने योग्य हैं, ऊर्जा और प्रकाश के साथ जुड़ने योग्य हैं और जो हर प्रकार के दुख, दर्दों को शुद्धता के साथ नष्ट करने योग्य हैं। वह दिव्य शक्ति प्रकाशवान शक्ति के रूप में प्राप्त होती है, जो सबको रचनात्मक कार्यों के लिए प्रेरित करती है। वही दिव्य शक्ति सभी बुराईयों को बहुत दूर रखती है।

इस प्रकार दिव्यता की उपस्थिति में कोई भी बुराई अस्तित्व में नहीं रहती। अतः हमें परमात्मा की दिव्य शक्ति को अपने चारों तरफ महसूस करके प्राप्त करना चाहिए। अपने भीतर और बाहर एक दिव्य संरक्षक की तरह।

जीवन में सार्थकता

समाज को बुराईयों से मुक्त रखने के लिए एक राजा और अन्य नियन्त्रक संस्थाओं के क्या कर्तव्य हैं?

परमात्मा और सूर्य की तरह एक महान राजा भी अपनी शक्तियों, कानूनों, नियमों और अनुशासन से अपने राज्य की सीमा में सर्वत्र व्याप्त होता है, ऐसे प्रभावशाली राजा की विद्यमानता में उसकी सीमा के अन्दर या बाहर और उसके निकट कोई भी बुरी शक्तियाँ प्रगति नहीं करती। उसे निम्न प्रयास सुनिश्चित करने चाहिए :—

- (क) उसे अपने अधीनस्थ प्रजाओं के दुख-दर्द दूर करने के लिए अग्रणी भूमिका निभानी चाहिए।
 - (ख) उसे अपने अधीनस्थ प्रजाओं को रचनात्मक कार्यों में लगाने के लिए ज्ञान और प्रेरणा देनी चाहिए।
- माता-पिता, एक महान् अध्यापक एक समाजसेवी, एक श्रेष्ठ और समर्पित नेता, एक पुलिस अधिकारी या मिलेट्री अधिकारी को भी निम्न बातों पर ध्यान देना चाहिए :—
- (क) अपने प्रिय अनुयायियों के दुख-दर्दों को समाप्त करना।
 - (ख) उन्हें उचित ज्ञान देकर प्रकाशित करना।
 - (ग) उन्हें रचनात्मक कार्यों के लिए प्रेरित करना।

ऋग्वेद मन्त्र 1.35.4

अभीवृतं कृशनैर्विश्वरूपं हिरण्यशम्यं यजतो बृहन्तम्।

आस्थाद्रथं सविता चित्रभानुः कृष्णा रजांसि तविषों दधानः ॥ 4 ॥

अभीवृतम् – वर्तमान और सभी दिशाओं में पहुँचता है

कृशनैः – आकर्षण शक्ति के साथ, सबके सार को ग्रहण कर्ता हुआ

विश्वरूपम् – समूचे विश्व को आकार देता है

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

हिरण्य शम्यम् – प्रत्येक किरण स्वर्ण बाण की तरह है या स्वर्णिम प्रकाश की विद्यमानता में सब प्रकाश क्षीण लगते हैं

यजतः – संगति के योग्य

बृहन्तम् – महान प्रगति के लिए

आस्थात् – स्थापित

रथम् – रथ के ऊपर

सविता – सृष्टि का महान कारण और सबको प्रेरित करने वाला

चित्रभानुः – भिन्न-भिन्न प्रकार से यशस्वी

कृष्णा – चुम्बक की तरह, आकर्षण शक्तियों सहित

रजांसि – सांसारिक शरीर

तविषीम् – शक्तिशाली बनाता

दधानः – धारण करता है।

व्याख्या :-

सूर्य के दिव्य लक्षण क्या हैं?

इस मन्त्र में सूर्य के 7 दिव्य लक्षण सूची बद्ध हैं :-

(क) अभीवृतम् – वर्तमान और सभी दिशाओं में पहुँचता है।

(ख) कृशनैः विश्वरूपम् – आकर्षण शक्ति के साथ, सबके सार को ग्रहण कर्ता हुआ, समूचे विश्व को आकार देता है।

(ग) हिरण्य शम्यम् – प्रत्येक किरण स्वर्ण बाण की तरह है या स्वर्णिम प्रकाश की विद्यमानता में, सब प्रकाश क्षीण लगते हैं।

(घ) यजतः बृहन्तम् – संगति के योग्य और महान प्रगति के लिए।

(ङ) आस्थात् रथम् सविता – सृष्टि का महान कारण रथ के ऊपर स्थापित है और सबको सृष्टि के महान कारण के साथ प्रेरित करता है।

(च) चित्रभानुः – भिन्न-भिन्न प्रकार से यशस्वी।

(छ) कृष्णा रजांसि तविषीम् दधानः – चुम्बक की तरह सांसारिक शरीर की आकर्षण शक्तियों को धारण करता है और उन्हें शक्तिशाली बनाता है।

जीवन में सार्थकता

दिव्य प्रबन्धन के क्या लक्षण हैं?

वह प्रत्येक व्यक्ति जो जीवन में महान प्रगति चाहता हो, उसे सूर्य के इन 7 लक्षणों पर चिन्तन करना चाहिए और जीवन में उन्हें क्रियात्मक रूप से धारण करना चाहिए। एक महान राजा, एक महान आध्यात्मिक नेता, एक महान माता-पिता, एक महान गुरु, एक महान सामाजिक कार्यकर्ता, एक महान, श्रेष्ठ और समर्पित

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

नेता, एक महान पुलिस अधिकारी या फौजी बनने के लिए प्रत्येक व्यक्ति को अपने अनुयायियों और कनिष्ठ अधिकारियों में सूर्य के समान आचरण करना चाहिए :—

- (क) सब तक उसकी पहुँच होनी चाहिए और वह स्वयं भी सबके लिए उपलब्ध हो।
- (ख) सबकी शक्तियों और योग्यताओं को प्राप्त करे और उनका अच्छा निर्माण करे।
- (ग) आपका ज्ञान, शक्ति और उदारता सर्वोच्च होनी चाहिए।
- (घ) सबके लिए आप उन्नति सुनिश्चित करें।
- (ड) सबको कार्य के लिए प्रेरित करें।
- (च) आपका यश बहुरूपी होना चाहिए।
- (छ) अपनी शक्तियों को प्रेम, कल्याण और उदारता के आकर्षण के साथ धारण करें।

ऋग्वेद मन्त्र 1.35.5

वि जनांछयावाः शितिपादो अख्यन्त्रथं हिरण्यपउगं वहन्तः ।
शशवद्विशः सवितुर्दैव्यस्योपरथे विश्वा भुवनानि तरथुः ॥ ५ ॥

वि — अख्यन से पूर्व लगाकर

जनान् — सब लोगों के लिए अर्थात् सब जीवों के लिए

श्यावः — प्राप्त करने योग्य किरणें

शितिपादः — सफेद पैर की तरह

अख्यन् (वि अख्यन) — विशेष रूप से उपस्थित और प्रकाशवान

रथम् — रथ

हिरण्य प्रउगम् — स्वर्णम् प्रकाश से सुसज्जित चेहरा

वहन्तः — धारण करता है और बढ़ावा देता है

शशवत् — सदैव, शाश्वत

विशः — समस्त विषय

सवितुः — सूर्य, प्रकाशित करने योग्य, सबको रचनात्मकता में प्रेरित करने वाला

दैव्यस्य — परमात्मा की विशेष शक्ति

उपरथे — गोद में

विश्वा — सब

भुवनानि — सांसारिक पदार्थ

तरथुः — स्थापित ।

व्याख्या :-

इस सौर मंडल में हमारा क्या स्थान है?

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

सूर्य का चेहरा स्वर्णिम प्रकाश से सुसज्जित है। वह अपने रथ पर सवार है। सफेद पैर की तरह वह सब जीवों के लिए उपलब्ध है, विशेष रूप से विद्यमान है, सबको प्रकाशित करता है, सबको धारण करते हुए बढ़ावा देता है।

परमात्मा की विशेष शक्ति होने के कारण सूर्य सब पदार्थों को अपनी चुम्बकीय शक्ति से अपनी गोद में बिठाता है और सबको रचनात्मक कार्यों के लिए प्रेरित करता है। यह सूर्य का शाश्वत लक्षण है। इस प्रकार सभी सांसारिक वस्तुएं उसकी गोद में स्थापित हैं।

जीवन में सार्थकता

सूर्य की शक्तियों की अनुभूति कैसे करें?

सूर्य पर ध्यान कैसे करें?

इस मन्त्र को सूर्य किरण चिकित्सा में प्रयोग किया जा सकता है, ध्यान साधना के द्वारा जीवनी शक्ति को सुदृढ़ करने के लिए आध्यात्मिक प्रगति सुनिश्चित कराने के लिए। यह महसूस करो कि सूर्य के साथ हमारा सम्बन्ध पिता और पुत्र की तरह है। हम सूर्य की गोद में बैठे हैं और उसका सारा ताप, प्रकाश और ऊर्जा को प्राप्त करते हैं तथा प्रत्येक दिन और प्रत्येक रात्रि उसके साथ एक शक्तिशाली चुम्बकीय सम्पर्क में रहते हैं। इस प्रकार के ध्यान से हम सूर्यवंशी के समान महसूस कर सकते हैं, जो सूर्य के बृहद परिवार से सम्बन्धित है।

ऋग्वेद मन्त्र 1.35.6

तिस्रो द्यावः सवितुद्वा उपस्थाँ एका यमस्य भुवने विराषाट्।

आणि न रथ्यममृताधि तरथुरिहब्रवीतु य उ तच्चिकेतत् ॥ 6 ॥

तिस्रः – तीन

द्यावः – प्रकाशित करने वाला

सवितु – सूर्य, प्रकाशवान, सबको रचनात्मकता में प्रेरित करने वाला

द्वौ – दो

उपस्था – सूर्य के निकट रहना

एका – एक

यमस्य – सब स्थानों पर बहने वाला, नियम में रखने वाला

भुवने – वातावरण में

विराषाट् – विद्युत, महान बल धारण करने वाला

आणि – बहादुर, विजयी योद्धा

न – जैसे

रथम् – रथ को चलाने योग्य

अमृताः – अमृत अर्थात् न मरने योग्य

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

अधितस्थुः – स्थापित हैं (उस तीसरी शक्ति में)

इह – यहाँ, इस संसार में, इस ज्ञान में

ब्रवीतु – प्रचार करना या मार्गदर्शन देना

यः – वे जो

उ – यह, निश्चित रूप से

तत् – वह (सूर्य का यश)

चिकेतत् – जानता है।

व्याख्या :-

सूर्य की तीन महान शक्तियाँ कौन सी हैं?

महान सूर्य एक बहादुर और सफल योद्धा राजा की तरह सृष्टि के रथ को चलाने के लिए सक्षम है। सूर्य प्रत्येक व्यक्ति और वस्तु को रचनात्मकता में प्रेरित करता है। सूर्य की तीन महान शक्तियाँ हैं – ताप, प्रकाश और करंट अर्थात् विद्युत तरंग। ताप और प्रकाश, पहली दो शक्तियाँ सूर्य के निकट ही रहती हैं। तीसरी शक्ति करंट सर्वत्र वायुमण्डल में बहता है, यहाँ तक कि ऐसे स्थानों पर जहाँ ताप और प्रकाश भी नहीं पहुँच पाते। यह करंट ही सबको शक्ति देकर सबका संचालन करता है। यह करंट बहादुर शक्ति को धारण करता है। इस करंट में न मरने योग्य भी स्थापित हैं और इसी से शक्ति प्राप्त करते हैं। जो लोग सूर्य के इस यश को जानते हैं, वे निश्चित रूप से इस विश्व में सबको उपदेश और मार्गदर्शन देते हैं। इसका अभिप्राय है कि ताप और प्रकाश तो मरने योग्य और न मरने योग्य दोनों के लिए हैं, जब कि करंट केवल न मरने योग्य के लिए है।

जीवन में सार्थकता

सूर्य का आध्यात्मिक दृष्टिकोण क्या है?

सूर्य के करंट पर ध्यान करो।

सूर्य का करंट ही सारे ब्रह्माण्ड की आध्यात्मिक शक्ति है। सूर्य के ताप और प्रकाश के प्रभाव को भी इसी करंट के माध्यम से ही समझा जा सकता है। ताप और प्रकाश के बिना यह करंट रात्रि में भी महसूस किया जा सकता है। ताप और प्रकाश सूर्य की भौतिक शक्तियाँ हैं। करंट सूर्य की न मरने योग्य शक्ति है। हमारी आत्मा भी न मरने योग्य है। बिना आत्मा के हमारा मृत शरीर तो सूर्य के ताप और प्रकाश को भी महसूस नहीं कर पायेगा। करंट के माध्यम से केवल आत्मा ही शरीर को सूर्य की अन्य दो शक्तियों को महसूस करवाती है। हम सूर्य के करंट के माध्यम से अपनी आत्मा को शक्तिशाली बना सकते हैं।

अपनी आत्मा पर ध्यान करो।

परमात्मा पर ध्यान करो।

सूर्य के करंट पर ध्यान करो।

सूर्य तथा परमात्मा के साथ एक सम्पर्क को महसूस करो। यह सदा रहने वाला आध्यात्मिक और न मरने योग्य सम्पर्क होगा।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

ऋग्वेद मन्त्र 1.35.7

वि सुपर्णो अन्तरिक्षाण्यख्यद् गभीरवेपा असुरः सुनीथः ।
कवश्दानीं सूर्यः कश्चिकेत कतमां द्यां रश्मिरस्या ततान ॥ ७ ॥

वि – अख्यत से पूर्व लगाकर

सुपर्णः – सूर्य की किरणें सबकी उत्तम रूप से देखभाल करती हुई

अन्तरिक्षाणि – अन्तरिक्ष और वायुमण्डल में समस्त आकाशीय शरीर

अख्यत् (वि अख्यत) – विशेष रूप से विद्यमान और प्रकाशित करने वाला

गभीर वेपा: – सूक्ष्म गति और तरंगे

असुरः – सबको जीवन देने वाला, जागृत करने वाला, निद्रा के बाद उठने पर चेतना देने वाला

सुनीथः – सब वस्तुयें उपलब्ध कराने वाला, देखने में सहायक

कव – कहाँ है

इदानीम् – रात्रि में वह

सूर्यः – सूर्य

कः – कौन

चिकेत – उचित प्रकार से जानता है

कतमाम् – किसमें

द्याम् – क्षेत्र

रश्मिः – किरणें

अस्य – इसके

आततान् – विस्तृत होते हैं ।

व्याख्या :-

सूर्य हमारे लिए किस प्रकार सबसे अधिक शक्तिदाता है?

रात्रि में सूर्य कहाँ चला जाता है?

(क) सूर्य सुपर्णः अन्तरिक्षाणि है – सूर्य की किरणें अन्तरिक्ष और वायुमण्डल में समस्त आकाशीय शरीरों में सबकी उत्तम रूप से देखभाल करती हैं ।

(ख) सूर्य वि अख्यन है – सूर्य विशेष रूप से विद्यमान और सबको प्रकाशित करने वाला है ।

(ग) सूर्य असुरः है – सूर्य सबको जीवन देने वाला, जागृत करने वाला, निद्रा के बाद उठने पर चेतना देने वाला है ।

(घ) सूर्य सुनीथः है – सूर्य सब वस्तुयें उपलब्ध कराने वाला और देखने में सहायक है ।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

परन्तु सबसे अधिक शक्ति देने वाला यह सूर्य रात्रि में कहाँ जाता है? कौन यह उचित प्रकार से जानता है कि जब रात्रि होती है, तब सूर्य किस क्षेत्र में विस्तृत हो रहा होता है।

जीवन में सार्थकता

सूर्य से सम्पर्क बनाये रखने के लिए सन्ध्याकालीन ध्यान क्या है?

इस सूक्त के मन्त्र 6 को जारी रखते हुए यह मन्त्र हमें प्रेरित करता है कि हम सूर्य के विज्ञान को जानें। जो लोग इस महान विज्ञान के आन्तरिक ज्ञान का लाभ प्राप्त करते हैं वे सूर्य की महान शक्तियों के सम्पर्क में रहते हैं। ऐसे महान स्रोत को नमन करें, जो समूची सृष्टि की प्रथम रचना है। सूर्य सभी जीवनों का आधार है। सन्ध्या काल में ध्यान साधना के लिए बैठें। परमात्मा और सूर्य का ध्यान और धन्यवाद करें। इसके करंट के माध्यम से अगले दिन की प्रातः वेला के उदय होने तक सूर्य के साथ सम्पर्क बनाये रखने की प्रार्थना करें।

ऋग्वेद मन्त्र 1.35.8

अष्टौ व्यख्यत्कुभः पृथिव्यास्त्री धन्वं योजना सप्त सिन्धून्।

हिरण्याक्षः सविता देव आगाह्यद्रत्ना दाशुषे वार्याणि ॥ 8 ॥

अष्टौ – आठ में

वि अख्यत् – विशेष रूप से विद्यमान और प्रकाशित करने वाला

ककुभः – दिशायें

पृथिव्याः – भूमि की

त्री – तीन में

धन्वः – क्षेत्र (भूमि, मध्य आकाश और अन्तरिक्ष)

योजना – उचित साधनों से सबका आनन्द लेता हुआ, सब शरीरों का आधार

सप्त सिन्धून् – सात समुद्र, जल क्षेत्र (भूमि और आकाश में स्थित)

हिरण्याक्षः – चमकता हुआ स्वर्णिम प्रकाश

सविता – निर्माता

देवः – दिव्य (सूर्य)

आगात् – आता है, प्राप्त होने योग्य

दधत् – धारण करता है

रत्ना – मूल्यवान आनन्ददायक उपहार

दाशुषे – त्यागशील याज्ञिक के लिए

वार्याणि – चुने हुए।

व्याख्या :-

सूर्य का प्रभाव कहाँ तक पहुँचता है?

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

सूर्य, दिव्य उत्पत्तिकर्ता और प्रेरक, सबको उचित साधनों से जोड़ता है और भूमि की आठों दिशाओं और उप दिशाओं में, भूमि और आकाश में विद्यमान सात समुद्रों और जल क्षेत्रों में सभी आकाशीय और सांसारिक शरीरों का आधार है। सूर्य सबके लिए विशेष रूप से विद्यमान है और सबको प्रकाशित करता है।

सूर्य एक चमकता हुआ स्वर्णिम प्रकाश है, जो सबका दिव्य उत्पत्तिकर्ता और प्रेरक है। इसका प्रभाव सबके लिए प्राप्त होने योग्य है। जो लोग त्याग और यज्ञ करते हैं, उनके लिए यह चुने हुए और आनन्ददायक उपहार धारण करता है।

जीवन में सार्थकता

सूर्य किसके लिए चुने हुए उपहार धारण करता है?

अग्नि यज्ञ समूचे वायुमण्डल के लिए लाभदायक होते हैं और विशेष रूप से उन लोगों के लिए जो इन यज्ञों को करते हैं क्योंकि आहुतियाँ सूर्य के पास जाती हैं, सभी दिशाओं में फैलती हैं और यज्ञ के करने वालों को चुने हुए मूल्यवान उपहार प्रदान करती हैं।

दूसरे के कल्याण के लिए किये गये त्याग अनेकों लोगों को लाभकारी होते हैं, परन्तु जो लोग इन कार्यों को करते हैं, उनके लिए निश्चित रूप से यह फलदायक होते हैं। जब एक व्यक्ति दूसरे को ज्ञान देता है तो उसका अपना ज्ञान बढ़ता है। एक संत जब दूसरों को आशीर्वाद देता है तो उसकी अपनी दिव्यता बढ़ती है। एक सच्चा सामाजिक या राजनैतिक नेता जब अन्य लोगों का कल्याण करता है तो उसका अपना नेतृत्व चमकता है। जो अपने परिवार या समाज के लिए त्याग करता है तो लोगों की दृष्टि में उसकी विश्वसनीयता और आदर बढ़ता है।

ऋग्वेद मन्त्र 1.35.9

हिरण्यपाणि: सविता विचर्षणिरुमे द्यावापृथिवी अन्तरीयते।

अपामीवां बाधते वेति सूर्यमभि कृष्णेन रजसा द्यामृणोति ॥ 9 ॥

हिरण्य पाणि: — हाथों में स्वर्ण का प्रभाव

सविता — उत्पत्तिकर्ता, प्रेरक

विचर्षणि: — सबके टूटे हुए कण

उमे — दोनों

द्यावा पृथिवी — अन्तरिक्ष और भूमि

अन्तः — मध्य में

ईयते — प्राप्त होता है

अप — बाधते से पूर्व लगाकर

अमीवाम् — रोग पैदा करने वाले कीटाणु

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

बाधते (अप बाधते) – निवारण करते, दूर फेंकते

वेति (अभि वेति) – सीधा दिखाई देने वाला

सूर्यम् – सूर्य की उत्तम किरणें

अभि – वेति से पूर्व लगाया गया

कृष्ण – प्रकाशहीन शरीर (जैसे भूमि)

रजसा – सभी वस्तुओं और स्थानों के साथ

द्याम – प्रकाश

ऋणोति – प्राप्त

व्याख्या :-

सूर्य की किरणों के प्रभाव को स्वर्णिम क्यों कहते हैं?

सूर्य, उत्पत्तिकर्ता और प्रेरक, अपने हाथों में स्वर्णिम प्रभाव के साथ प्रकृति के सभी कणों को तोड़ता है। सूर्य अन्तरिक्ष और भूमि के मध्य में प्राप्त होता है और स्थापित होता है। सूर्य रोग पैदा करने वाले जीवनुओं के निवारण और उन्हें दूर फेंकने में सक्षम है। सूर्य की उत्तम किरणें सीधे उत्पन्न होती हैं, जिससे भूमि जैसे प्रकाशहीन शरीरों तथा सब स्थानों पर सभी वस्तुओं के द्वारा प्राप्त हो सकें।

जीवन में सार्थकता

सूर्य किस प्रकार एक दिव्य प्रकाश और दिव्य औषधि है?

आयुर्वेद में शारीरिक और मानसिक शक्तियों और ऊर्जाओं को बढ़ाने के लिए स्वर्ण भस्म को सबसे अधिक प्रभावशाली धातु माना जाता है। सूर्य की किरणों का प्रभाव और भी अधिक मूल्यवान है और हमारे शरीर, मन और आत्मा की पूर्ण शक्ति बढ़ाने के लिए यह एक दिव्य औषधि है। सूर्य की किरणों को प्रत्येक व्यक्ति के हाथ में असीमित स्वर्ण के रूप में समझा जाना चाहिए। सूर्य अपने हाथ से अर्थात् किरणों के माध्यम से स्वर्ण सीधा प्रदान करता है।

सूर्य हमें दिव्य प्रकाश भी देता है, जिसे पलक्स प्रकाश के रूप में मापा जाता है। सूर्य का प्रकाश मनुष्य द्वारा निर्मित प्रकाश उत्पन्न करने वाले सैकड़ों उपकरणों से भी अधिक है।

ऋग्वेद मन्त्र 1.35.10

हिरण्यहस्तो असुरः सुनीथः सुमृळीकः स्ववाँ यात्वर्वाङ् ।

अपसेधन्त्रक्षसो यातुधानानस्थाद्वः प्रतिदोषं गृणानः ॥ 10 ॥

हिरण्य हस्तः – हाथों में स्वर्ण के प्रभाव के साथ

असुरः – प्राणी को ऊर्जा देने वाला और संरक्षण करने वाला

सुनीथः – उत्तम प्रकार से और सुन्दरता के साथ प्राप्त होने योग्य

सुमृळीकः – उत्तम प्रकार से सब रोगों का निवारण करके सुख और प्रसन्नता देने वाला

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

स्ववान् – उत्तम स्पर्श

यातु – यहाँ

अर्वाङ् – हमारे अत्यन्त निकट प्राप्त होने योग्य

अपसेधन – निवारण करने वाला

रक्षसः – बुरे कार्य करने वाले (जीवाणु)

यातु धानान् – दर्द और कष्ट देने वाला

अस्थात् – अपने को स्थापित करना

देवः – दिव्य शक्तियाँ

प्रतिदोषम् – प्रतिदिन और रात

गृणानः – वाणियों से प्रशंसनीय

व्याख्या :-

सूर्य की किरणों के क्या महान और दिव्य लाभ हैं?

(क) सूर्य की किरणें असुरः हैं – प्राणियों को ऊर्जा देने वाली और संरक्षण करने वाली ।

(ख) सूर्य की किरणें सुनीथः हैं – उत्तम प्रकार से और सुन्दरता के साथ प्राप्त होने योग्य ।

(ग) सूर्य की किरणें सुमृलीकः हैं – उत्तम प्रकार से सब रोगों का निवारण करके सुख और प्रसन्नता देने वाली ।

(घ) सूर्य की किरणें स्ववान् हैं – इनका स्पर्श उत्तम है ।

(ङ) सूर्य की किरणें यातु अर्वाङ् हैं – यहाँ हमारे अत्यन्त निकट प्राप्त होने योग्य ।

(च) सूर्य की किरणें अपसेधन रक्षसः यातु धानान् हैं – बुरे कार्य करने वाले (जीवाणु) जो दर्द और कष्ट देते हैं, उनका निवारण करने वाली ।

(छ) सूर्य की किरणें अस्थात् देवः हैं – दिव्य शक्तियाँ जो अपने को स्थापित करती हैं, दूसरों के दुख और दर्द दूर करने के लिए ।

(ज) सूर्य की किरणें प्रतिदोषम् गृणानः हैं – प्रतिदिन और रात वाणियों से प्रशंसनीय है ।

जीवन में सार्थकता

सूर्य किरण चिकित्सा क्या है, जिसमें सूर्य की किरणों से अनेकों रोगों का उपचार होता है?

सूर्य की किरणों की अपार शक्तियों का प्रभाव सूर्य स्नान या सूर्य किरण चिकित्सा में प्रयोग होता है, जिससे त्वचा रोगों, तंत्रिका तंत्र असन्तुलन, शारीरिक शक्ति बढ़ाने, रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने या दीर्घ आयु के लिए प्रयोग होता है ।

ऋग्वेद मन्त्र 1.35.11

ये ते पन्थाः सवितः पूर्वासोऽ रेणवः सुकृता अन्तरिक्षे ।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

तेभिर्ना अद्य पथिभि: सुगेभी रक्षा च नो अधि च ब्रूहि देव ॥ 11 ॥

ये – वे

ते – आपके

पन्थाः – मार्ग

सवितः – सूर्य, उत्पत्तिकर्ता, प्रेरक

पूर्व्यासः – पूर्व की भाँति

अरेणवः – धूल और प्रदूषण से मुक्त

सुकृताः – उत्तम रूप से निर्मित

अन्तरिक्षे – अन्तरिक्ष में

तेभिः – वे

नः – हमारे

अद्य – आज, वर्तमान में

पथिभि: – मार्ग

सुगेभी: – सुविधाजनक रूप से भोगने योग्य

रक्ष – संरक्षण

च – और

नः – हमें

अधि – ब्रूहि से पूर्व लगाकर

च – और

ब्रूहि (अधि ब्रूहि) – उपदेश करो

देव – दिव्य शक्ति

व्याख्या :-

सूर्य का दिव्य मार्ग क्या है?

आपके मार्ग पूर्व काल में अन्तरिक्ष में उत्तम रूप से निर्मित किये गये, धूल और प्रदूषण से मुक्त। उन मार्गों का हमें उपदेश करो, जिससे आपकी दिव्य शक्ति को हम प्रदूषण रहित वर्तमान में भी सुविधाजनक तरीके से भोग सकें।

वैज्ञानिक रूप से यह सिद्धान्त सूर्य पर लगता है, जिसके मार्ग प्रदूषण रहित ही रहते हैं, जब तक उसकी किरणें धरती तक न पहुँच जायें। इस प्रकार हमारे संरक्षण के लिए सूर्य हमें शुद्ध किरणें उपलब्ध कराता है। वह दिव्य शक्ति हमें यह उपदेश करे कि किस प्रकार उन मार्गों को उत्तम संरक्षण और सुविधाजनक भोग के लिए वर्तमान में भी हम प्रदूषण रहित बना सकें।

आध्यात्मिक रूप से, सर्वोच्च निर्माता परमात्मा ने महान ऋषियों के हृदयाकाश में स्पष्ट और प्रदूषण रहित मन और हृदय प्रदान किये, जिससे उनका आध्यात्मिक संरक्षण और विकास हो सके। वह दिव्यता आज पुनः हमें भी उपदेश करे कि हम अपने हृदयाकाश अर्थात् मन और हृदय को मुक्त और बाधा रहित रख सकें।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

जीवन में सार्थकता

ऋषियों का आध्यात्मिक मार्ग क्या था?

हमें सूर्य के महत्वपूर्ण लक्षणों का अनुसरण करते हुए स्वयं को प्रेरित करना चाहिए :—

(क) सूर्य अपने स्थान पर स्थापित है।

(ख) यह लगातार कार्य करता है — इसने पूर्वकाल में सबको लाभ दिया, वर्तमान काल में जारी है और भविष्य में भी ऐसे करता रहेगा।

(ग) इसके मार्ग स्वच्छ और प्रदूषण रहित हैं। हम इसकी दिव्यता को प्रार्थना करते हैं कि हमें यह उपदेश करे कि हम वर्तमान में भी उन्हें शुद्ध रख सकें।

आध्यात्मिक रूप से विकसित लोगों के भी समान लक्षण होते हैं :—

(क) वे अपनी आत्मा में स्थित थे।

(ख) वे सबके कल्याण के लिए लगातार कार्य करते रहे।

(ग) उनके हृदयाकाश अर्थात् मन और हृदय स्वच्छ और प्रदूषण रहित थे। वे पूरे समत्व में जिए। उनकी दिव्यता हमें उपदेश करे कि हम भी अपने जीवन को प्रकाशित रख सकें।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

ऋग्वेद मण्डल-1 सूक्त 36

ईश्वर के प्रति पूर्ण समर्पण

ऋग्वेद मन्त्र 1.36.1

प्र वो यह्वं पुरुणां विशां देवयतीनाम् ।
अग्नि सूक्तेभिर्वचोभिरीमहे यं सीमिदन्य ईलते ॥ १ ॥

प्र — बल के साथ

वः — आप

यह्म — जानने और बुलाने के योग्य, असीमित गुण और शक्तियों वाला

पुरुणाम — स्वयं को संरक्षित और पोषित करने वाला

विशाम — सबकी प्रसन्नता के लिए

देवयतीनाम् — दिव्य लक्षणों की कामना करना

अग्निम — उस अग्रणी शक्ति को, परमात्मा को

सूक्तेभिः — प्रकाशित होने के साथ

वचोभिः — वाणियाँ

ईमहे — प्रार्थना करते हैं और अनुसरण करते हैं

यम — जिनको

सीम — समस्त स्थानों पर, हर प्रकार से

इत — निश्चित रूप से

अन्ये — अन्य सभी श्रेष्ठ पुरुष

ईर्ति — पूजा और प्रशंसा करते हैं ।

व्याख्या :-

ईश्वर की पूजा कौन करता है?

आप सभी स्थानों पर अग्रणी रहने वाले प्रथम हैं। आपकी शक्तियाँ और गुण असीम हैं। जो लोग सबकी प्रसन्नता के लिए स्वयं को संरक्षित और पोषित करते हैं और जो लोग प्रकाशित ज्ञान और वाणियों के साथ दिव्यताओं की कामना करते हैं जिससे वे सर्वोच्च शक्ति की स्तुति कर सकें, आप उनके द्वारा जानने के योग्य हों। हम आपकी पूजा और अनुसरण करते हैं, जिसकी अन्य सभी लोग हर प्रकार से पूजा और सर्वत्र प्रशंसा करते हैं। इसका अभिप्राय है कि सभी लोग ईश्वर की पूजा और प्रशंसा करते हैं।

जीवन में सार्थकता

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

क्या नास्तिक लोग भी परमात्मा की पूजा और प्रशंसा करते हैं?

ऐसा कोई भी व्यक्ति नहीं है जो परमात्मा की पूजा और प्रशंसा नहीं करता। समुचित मानव जाति परमात्मा अर्थात् सर्वोच्च सत्ता के सम्बन्ध में तीन श्रेणियों में वर्गीकृत है :—

(क) जो लोग स्वयं को संरक्षित और पोषित करते हैं वे सुविधाओं के लिए परमात्मा की पूजा और प्रशंसा करते हैं।

(ख) जो लोग दिव्यताओं की कामना करते हैं वे परमात्मा की अनुभूति के लिए उसकी पूजा और प्रशंसा करते हैं।

(ग) नास्तिक लोग तो केवल नाम के नास्तिक हैं जो कहते हैं कि वे परमात्मा के अस्तित्व में विश्वास नहीं करते। परन्तु ऐसे लोग भी अपने भीतर किसी मूल शक्ति में विश्वास करते हैं। वे उस शक्ति को अपनी व्यक्तिगत शक्ति मानते हैं। वे स्वयं को अर्थात् अपनी मूल शक्ति को ही प्रशंसित और सम्मानित करते हैं। वे इस वास्तविकता के प्रति सचेत नहीं हैं कि उनके भीतर की मूल शक्ति वास्तव में परमात्मा ही है। इस प्रकार अचेतन होते हुए भी वे परमात्मा की ही प्रशंसा और स्तुति करते ही हैं। अतः वास्तव में इस संसार में कोई भी नास्तिक नहीं है क्योंकि अपने अस्तित्व और अपनी मूल शक्ति में विश्वास करना ही परमात्मा में विश्वास करना है।

ऋग्वेद मन्त्र 1.36.2

जनासो अग्निं दधिरे सहोवृद्धं हविष्मन्तो विधेम ते।

स त्वं नो अद्य सुमना इहाविता भवा वाजेषु सन्त्य ॥ 2 ॥

जनासः — ज्ञानवान् तथा अपनी शक्तियों का विस्तार करने वाले

अग्निम् — अग्रणी, परमात्मा

दधिरे — धारण करता है, स्वीकार करता है, ध्यान में रखता है

सहोवृद्धम् — जो हमारे ज्ञान और बल को बढ़ाता है

हविष्मन्तः — पदार्थों को अन्य लोगों को प्रदान करके प्रयोग करना

विधेम — पूजा करना, स्वीकार करना

ते — आप

सः — वह

त्वम् — आपका

नः — हमारा

अद्य — आज

सुमनाः — हमारी बुद्धियों को उत्तम बनाना

इह — यहाँ

अविता — संरक्षक

भव — होवो

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

वाजेषु – संग्रामो में
सन्त्य – सब शक्तियाँ देने वाला।

व्याख्या :-

लोग परमात्मा की पूजा क्यों करते हैं?

जिन लोगों के पास महान ज्ञान है और जो अपनी शक्तियों का विस्तार करना चाहते हैं, वे आपको स्वीकार करते हैं, धारण करते हैं और सदैव आपको अपने ध्यान में रखते हैं कि आप सर्वत्र और सबको नेतृत्व देने में प्रथम हो। आप हमारी शक्तियाँ बढ़ाते हो। जो लोग अन्य लोगों को सामग्री भेंट करने के बाद स्वयं प्रयोग करते हैं वे परमात्मा की पूजा और उन्हें धारण करते हैं। वे आप कृपया हमारे मन को आज ही उत्तम बनाइए और सभी संग्रामों में हमारी रक्षा कीजिए क्योंकि आप ही सभी शक्तियों के दाता हैं।

जीवन में सार्थकता

सर्वोच्च दिव्यता से दिव्य शक्तियाँ कैसे प्राप्त करें?

कोई भी व्यक्ति अपनी सफलता के लिए निश्चित नहीं है। कोई भी व्यक्ति यह नहीं जानता की उसके पास कितनी शक्ति है। ज्ञान प्राप्त करने की शक्ति भी उसी सर्वोच्च दिव्यता ने दी है। हर परिणाम के लिए हम उसी सर्वोच्च दिव्यता पर निर्भर करते हैं। अतः उस दिव्यता पर धारणा और ध्यान लगाना अवश्य ही लाभकारी होगा। दिव्य शक्तियाँ प्राप्त करने के लिए हमें सदैव उस सर्वोच्च शक्ति के संपर्क में ही रहना चाहिए। उसके बाद उन दिव्य शक्तियों का प्रयोग दूसरों के कल्याण के लिए करना चाहिए। तब आप अपनी गतिविधियों के परिणाम का आनन्द लेते हुए, परमात्मा की संगति की अनुभूति प्राप्त कर पायेंगे कि वह सर्वत्र हमारा संरक्षक है।

ऋग्वेद मन्त्र 1.36.3

प्र त्वा दूतं वृणीमहे होतारं विश्ववेदसम्।
महस्ते सतो वि चरन्त्यर्चयो दिवि स्पृशन्ति भानवः ॥ ३ ॥

प्र – बल के साथ

त्वा – आपको

दूतम् – तपस्या से सबको शुद्ध करने वाला

वृणीमहे – हम स्वीकार करते हैं और धारण करते हैं

होतारम् – उपलब्ध कराने वाला

विश्व वेदसम् – समस्त ज्ञान

महः – सर्वोच्च महान

ते – आपके

सतः – अस्तित्व की सत्यता

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

वि चरन्ति – विशेष रूप से जीना, अस्तित्व

अर्चयः – जो आपका पूजन करते हैं

दिवि – दिव्य

स्पृशन्ति – स्पर्श

भानवः – ज्ञान की किरणें धारण करने वाले, सूर्य की किरणें।

व्याख्या :-

परमात्मा को स्वीकार करने और धारण करने के क्या लाभ हैं?

अध्यात्मिक रूप से हम आपको (परमात्मा को) पूरी शक्ति के साथ स्वीकार करते हैं और धारण करते हैं क्योंकि (क) आप प्रत्येक उस व्यक्ति को शुद्ध करते हो जो त्याग करता है। (ख) अपने अस्तित्व के सर्वोच्च सत्य का महान ज्ञान आप ही उपलब्ध कराते हो।

जो आपको स्वीकार करते हैं और धारण करते हैं – (क) वे विशेष जीवन जीते हैं। उनका अस्तित्व आपकी तरह वास्तविक होता है। (ख) उनकी उपस्थिति और स्पर्श भी दिव्य होता है।

वैज्ञानिक रूप से, सूर्य तथा वायु, प्रकृति की महान शक्तियाँ, शुद्धता और हमारे अस्तित्व का सर्वोच्च स्रोत है। जो लोग सूर्य की पूजा करते हैं और उसकी ऊर्जा, प्रकाश और चुम्बकीय करंट का भरपूर लाभ उठाते हैं, वे दिव्य स्पर्श वाला विशेष जीवन जीते हैं। इसी प्रकार जो लोग वायु की पूजा करते हुए उसका भरपूर लाभ उठाते हैं, वे भी दिव्य स्पर्श वाला विशेष जीवन जीते हैं। सूर्य और वायु दिव्य औषधियाँ हैं तथा दिव्य जीवन का स्रोत हैं।

जीवन में सार्थकता

अपने उच्चाधिकारियों पर ध्यान लगाने के क्या लाभ होते हैं?

गायत्री मन्त्र (भर्गो देवस्य धीमही) हमें यह प्ररित करता है कि हम अपनी मानसिक शक्तियों को भगवान पर कन्दित करें। इस सिद्धान्त की लगातार और लंबी साधना हमें शुद्ध करती हैं और महान ज्ञान प्राप्त करने में हमारी सहायता करती है। इस प्रकार हमारा अस्तित्व विशेष और दिव्य बन जाता है। इसी प्रकार, जीवन के किसी भी क्षेत्र में, जब हम अपना ध्यान गुरुओं, उच्चाधिकारीयों और वृद्धजनों पर लगातें हैं, तो निश्चित रूप से हमें जीवन में प्रेम और विश्वसनीयता के साथ-साथ अच्छी उन्नति प्राप्त होती है, जो हमारे जीवन को विशेष और दिव्य बना देती हैं।

प्रत्येक उच्चाधिकारी परमात्मा की तरह ही हमें शुद्ध करता है और महान ज्ञान प्रदान करता है। हमें अपने अंहकार और इच्छाओं का उनके सामने त्याग करना चाहिए। अपने उच्चाधिकारीयों के प्रति समर्पित भाव भी त्याग की तरह है जिसका सुंदर परिणाम निकलता है। सोना अग्नि में तपने के बाद ही शुद्ध होता है।

ऋग्वेद मन्त्र 1.36.4

देवासस्त्वा वरुणो मित्रे अर्यमा सं दूतं प्रलमिन्धते।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

विश्वं सो अग्ने जयति त्वया धनं यस्ते ददाश मर्त्यः ॥ ४ ॥

देवासः – दिव्य गुणों के साथ

त्वा – आपको

वरुणः – द्वेष या दुर्भावना के बिना

मित्रः – सबके साथ स्नेह करने वाला, मित्र

अर्यमा – त्यागशील तथा इन्द्रियों का नियन्त्रक

सम् – इन्धते से पूर्व लगाकर

दूतम् – शुद्ध, पवित्र, बुद्धिमान और न्यायिक बुद्धि

प्रलम् – सदा से विद्यमान

इन्धते (सम इन्धते) – हृदय और बुद्धि में स्थापित

विश्वम् – सब

सः – वह

अग्ने – सर्वोच्च ऊर्जा

जयति – विजय प्राप्त करने वाला

त्वया – आपके साथ

धनम् – सब सम्पत्तियाँ

यः – जो भी

ते – आपको

ददाश – समर्पित, अर्पित

मर्त्यः – मरणधर्मा, विनाश के योग्य ।

व्याख्या :-

दिव्य व्यक्ति के क्या लक्षण होते हैं?

जब कोई व्यक्ति दिव्य गुणों से युक्त होता है, तो उसमें निम्न लक्षण आने लगते हैं :–

(क) उसकी किसी के प्रति शत्रुता या दुर्भावना नहीं होती ।

(ख) वह सबसे प्रेम करने वाला और मित्रवत होता है ।

(ग) वह त्यागशील और इन्द्रियों का नियन्त्रक होता है ।

(घ) वह शुद्ध, विद्वतापूर्ण और न्यायिक बुद्धि वाला होता है । उसके यह गुण स्थाई रूप से उसके मन-मरित्सुष्क में स्थापित होते हैं ।

एक बार जब दिव्य व्यक्ति परमात्मा के प्रति पूर्ण समर्पण कर देता है तो उसे परमात्मा के साथ-साथ गौरवशाली सम्पदा प्राप्त होती है और इस वास्तविकता के बावजूद कि वह एक मरणधर्मा शरीर है, वह सबके लिए परमात्मा का सच्चा प्रतिनिधि सिद्ध होता है ।

जीवन में सार्थकता

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

एक नैतिक और श्रेष्ठ व्यक्ति के क्या लक्षण होते हैं?

समान्य भाषा में कोई व्यक्ति बेशक इसे दिव्यता न माने, परन्तु प्रत्येक वह व्यक्ति जो परिवार और समाज में नैतिक और श्रेष्ठ आचरण वाला है, वह क्रियात्मक रूप से दिव्य व्यक्तित्व ही होता है। ऐसे व्यक्ति का सर्वत्र सम्मान होता है और वह सदैव लाभ में रहता है। उसकी विश्वसनीयता दिन-प्रतिदिन बढ़ती जाती है और वह अपने जीवन में लगातार उन्नति करता है।

ऋग्वेद मन्त्र 1.36.5

मन्द्रो होता गृहपतिरग्ने दूतो विशामसि ।
त्वे विश्वा संगतानि व्रता ध्रुवा यानि देवा अकृण्वत ॥ 5 ॥

मन्द्रः – आनन्दित
होता – सब वस्तुओं का दाता
गृहपतिः – हमारे आवास और शरीर का रक्षक
अग्ने – सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा
दूतः – पवित्र, बुद्धिमान, न्यायिक बुद्धि
विशाम – सब लोग
असि – हैं
त्वे – आपमें
विश्वा – सब
संगतानि – संगतिकरण
व्रता – संकल्प
ध्रुवा – दृढ़
यानि – जो
देवाः – दिव्य
अकृण्वत – अनुसरण, पालन ।

व्याख्या :-

हमारे संकल्प किस प्रकार पूर्ण होते हैं?

सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा :-

(क) हमें प्रत्येक आनन्ददायक वस्तु उपलब्ध करवाते हैं।

(ख) हमारें आवास और शरीरों के संरक्षक हैं।

(ग) हमें बुद्धि और न्यायिक विवेक देकर हमारें मनों को शुद्ध करते हैं।

यदि हम उस परमात्मा की संगति को महसूस करते हुए अपने संकल्पों का अनुसरण और अनुपालन करें तो हमारें दिव्य और दृढ़ संकल्प परमात्मा में स्थापित हो जाते हैं। परमात्मा की संगति को लगातार महसूस

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

किये बिना एक सामान्य व्यक्ति यह समझ नहीं पाता कि वही परमात्मा हमें सब पदार्थ देने वाले, संरक्षक और शुद्धि करता है। परिणाम स्वरूप ऐसे व्यक्तियों के संकल्प भी कमज़ोर रहते हैं। ऐसे व्यक्ति अपने अहंकार से उत्पन्न इस काल्पनिक विचार में रहते हैं कि वे अपना जीवन और सभी पदार्थों का प्रबन्ध स्वयं कर रहे हैं। इस प्रकार वे सर्वोच्च ऊर्जा अर्थात् सर्वोच्च दाता से सम्पर्क नहीं बना पाते।

जीवन में सार्थकता

हमें समस्त प्रयास अपने उच्चाधिकारियों के प्रति समर्पित क्यों करने चाहिए?

जीवन के किसी भी क्षेत्र में यह स्मरण रखना चाहिए कि हमारे माता-पिता ही हमारे जीवन दाता है, हमारे गुरु ज्ञान के दाता हैं और हमारे उच्चाधिकारी हमारी उन्नति के मार्गदर्शक हैं। हमें ऐसे सभी दाताओं से लगातार सम्पर्क बना कर रखना चाहिए और अपने सभी प्रयास उनके प्रति समर्पित करने चाहिए। जितना अधिक सम्भव हो, उनका सम्मान और पूजा करनी चाहिए। केवल तभी हम उनके आशीर्वाद सहित उन्नति का स्थाई आनन्द प्राप्त कर पायेंगे। हमें सदैव उनका संरक्षक मिलता रहेगा और हमारी शुद्धता, ईमानदारी और एकात्मता विकसित होती रहेगी।

ऋग्वेद मन्त्र 1.36.6

त्वे इदग्ने सुभगे यविष्ठय विश्वमा हूयते हविः ।
स त्वं नो अद्य सुमना उतापरं यक्षि देवान्त्सुवीर्या । 6 । ।

त्वे – आपको

इत – निश्चित रूप से

अग्ने – सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा

सुभगे – उत्तम ऐश्वर्य

यविष्ठय – श्रेष्ठताओं का आनन्द लेने के लिए और बुराईयों को दूर रखने के लिए

विश्वम – समस्त

अहूयते – आहूति, समर्पित

हविः – आहूति की तरह

सः – वह

त्वम – आप

नः – हम

अद्य – आज

सुमनाः – उत्तम बुद्धि वाले

उत – और

अपरम – अगले दिन भी

यक्षि – हमें उत्तम बनाओ

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

देवान् – दिव्य

सुवीर्या – उत्तम शक्तियाँ।

व्याख्या :-

हम सदा के लिए दिव्य शक्तियाँ कैसे प्राप्त कर सकते हैं?

हे! सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा, यज्ञ की अग्नि, हमारी सभी आहुतियाँ केवल आपके लिए हैं, क्योंकि यह यज्ञ उत्तम कल्याण के लिए, श्रेष्ठ गुणों से जुड़ने के लिए और सभी बुराईयों को दूर रखने के लिए होते हैं। परिणामस्वरूप आप हमारे मनों को उत्तम बना देते हो, हमें दिव्यता का विजेता बना देते हो, हमें आज ही और अगले दिन अर्थात् भविष्य में भी उत्तम शक्तियाँ देते हो।

जीवन में सार्थकता

हमें समस्त प्रयास अपने उच्चाधिकारियों के प्रति समर्पित क्यों करने चाहिए?

जिस प्रकार एक यज्ञ में हम सभी आहुतियाँ परमात्मा के नाम पर समर्पित करते हैं, उसी प्रकार हमें समस्त प्रयास भी अपने उच्चाधिकारियों के प्रति समर्पित करने चाहिए। हमें उत्तम बुद्धिवाला समझा जायेगा और हम अपने उच्चाधिकारियों का विश्वास और उनकी शक्तियाँ प्राप्त कर पायेंगे।

ऋग्वेद मन्त्र 1.36.7

तं घेमित्था नमस्विन उप स्वराजमासते ।

होत्रभिरग्निं मनुषः समिन्धते तितिर्वासो अति स्त्रिधः ॥ 7 ॥

तम – वह

घ – दृढ़ता के साथ

ईम – सत्य के साथ

इत था – इस प्रकार

नमस्विन – नमनपूर्वक झुकना

उप – आसते से पूर्व लगाकर

स्वराजम – हमारे राजा, हम स्वयं, आन्तरिक दिव्य शक्ति, परमात्मा

आसते (उप आसते) – निकट ही उसकी पूजा करना और अनुभूति प्राप्त करना

होत्राभिः – त्याग के कार्य

अग्निम – प्रथम अग्रणी के लिए

मनुषः – विचारशील पुरुष

समिन्धते – हृदय में उसे प्रकाशित करना

तितिर्वासः – तैर जाते हैं, पार कर जाते हैं

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

अति – सुन्दर रूप से

स्थित – अहिंसा आदि समस्त शत्रुओं को।

व्याख्या :-

किस प्रकार एक सफल अध्यात्मिक जीवन प्राप्त किया जा सकता है?

इस सूक्त का मुख्य सिद्धान्त है – “अपने सभी कार्य ईश्वर के प्रति समर्पित करें”

एक मननशील व्यक्ति जो दृढ़ संकल्पित है कि अपने अंदर दिव्य शक्ति के प्रति नतमस्तक होता हुआ अपने सभी त्याग कार्यों को उसके प्रति समर्पित करदे जो उसके जीवन कि वास्तविक और मूल शक्ति है, जिससे वह उसकी अनुभूति अपने अत्यन्त निकट प्राप्त कर सकें ऐसा व्यक्ति उसे वास्तविकता में प्रथम नेतृत्व की तरह स्वीकार करता है। इस मार्ग पर ही वह हिंसा आदि सभी विकारों के समुद्र को पार कर जाता है और एक शान्त तथा सफल जीवन जी पाता है।

जीवन में सार्थकता

किस प्रकार एक बाधारहित भौतिक जीवन प्राप्त किया जा सकता है?

हमारे महान् वृद्धजन, नेता, उच्चाधिकारी आदि परमात्मा के बाद दूसरे दर्जे पर माने जाते हैं। हमें अपने सभी त्याग कार्य उनके प्रति समर्पित करके उनके प्रति भी उसी प्रकार का सम्मान व्यक्त करना चाहिए। भौतिक जीवन को बाधारहित और सफल बनाने के लिए यहीं एक मार्ग है। इस प्रकार हमारें जीवन में न कभी अंहकार का विवाद होगा और न कभी न कोई बुरी प्रवृत्तियाँ हमारे जीवन में प्रवेश कर पायेंगी।

ऋग्वेद मन्त्र 1.36.8

छन्तो वृत्रमतरन्नोदसी अप उरु क्षयाय चक्रिरे ॥
भुवत्कण्वे वृषा द्युम्न्याहुतः क्रन्ददश्वो गविष्टिषु ॥ ८ ॥

छन्तः – प्रहार करना, नष्ट करना

वृत्रम – मन की वृत्तियाँ, ज्ञान पर पर्दा डालने वाली वासनायें, शत्रुओं के बादल

अतरन – पार करना, नियन्त्रण करना

रोदसी – भूमि और वायुमण्डल, शरीर और मन

अपः – अन्तरिक्ष को

उरु क्षयाय – उत्तम जीवन के लिए

चक्रिरे – विशाल बनाते हैं

भुवत – होते हैं

कण्वे – एक बुद्धिमान व्यक्ति में

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

वृषा – प्रसन्नताओं और सुविधाओं की वर्षा करने वाले

द्युम्नी – बुद्धिवर्धक

आहुतः – समस्त आवश्यक पदार्थ

क्रन्दत – विजयनाद करते हुए

अश्वः – घोड़े

गविष्टिषु – गाएं तथा अन्य पशुओं में।

व्याख्या :-

परमात्मा के प्रति सर्मपणभाव के क्या लाभ हैं?

सूर्य अपनी शक्ति का मेघ में प्रवेश करवाता है जिससे उसकी किरणें वायुमंडल से होती हुई भूमि तक पहुँच सके। इसी प्रकार जब एक व्यक्ति अपने समस्त कार्य उस परमात्मा के प्रति समर्पित कर देता है, जो हमारा प्रथम नेतृत्व है, तो ऐसा व्यक्ति अपने शरीर और मन पर नियंत्रण करने के योग्य हो जाता है। वह अपने आकाश स्थान, अपने हृदय और मन, को विस्तरित करके एक अच्छे और गतिशील जीवन के योग्य बना देता है। परमात्मा, जो सब जीवों में सर्वोच्च तथा प्रथम नेतृत्व है, ऐसे बुद्धिमान व्यक्ति के लिए खुशियों और सुविधाओं कि वर्षा करने वाला बन जाता है। वह ऐसे व्यक्ति को बढ़ी हुई बुद्धि तथा सभी पदार्थ उपलब्ध कराता है। ऐसा व्यक्ति उस घोड़े की तरह दिखाई देता है तो गाय आदि अन्य पशुओं के बीच अपनी आवाज से विशेष उपस्थिति दर्ज करवाता है।

जीवन में सार्थकता

अपने उच्चाधिकारियों के प्रति सर्मपण भाव के क्या लाभ हैं?

जब आप परमात्मा के प्रति समर्पित हाते हो तो वह सभी प्रसन्नताओं और सुविधाओं कि वर्षा करता है। इसी प्रकार जब आप अपने सभी कार्य अपने उच्चाधिकारियों के प्रति समर्पित करते हो तो वे भी अपने आशीर्वाद कि वर्षा आपके ऊपर करते हैं। बहादुर योद्धा अपने त्याग कार्य अपनी मातृभूमि के लिए समर्पित करते हैं तो उन्हें महान् सफलता और प्रशंसा प्राप्त होती है। महान् नेता जब अपने व्यक्तिगत जीवन और सुविधाओं को परमात्मा तथा लोगों के लिए समर्पित करते हैं तो उन्हें महान् सम्मान और दिव्यता प्राप्त होती है। प्रत्येक व्यक्ति को अपने संस्थान के उत्तम हितों के लिए स्वयं को समर्पित करना चाहिए तभी वह महान् सफलता प्राप्त कर सकता है।

ऋग्वेद मन्त्र 1.36.9

सं सीदस्व महोऽ असि शोचस्व देववीतमः।

वि धूममग्रे अरुषं मियेध्य सृज प्रशस्त दर्शतम् ॥ ११ ॥

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

सम सीदस्व – सभी बुराईयाँ और भूलों का नाश करने वाले
महान – महान गुण और शक्तियाँ

असि – आप हो

शोचस्व – शुद्धता के साथ प्रकाशित करो

देववीतमः – दिव्य लोगों में उपस्थित

वि धूमम् – धुएं की तरह पवित्र

अग्ने – पवित्र अग्नि के

अरुषम् – अत्यधिक चमक वाला, प्रकाश करने योग्य

मियेध्य – संगतिकरण के योग्य, अनुभूति के योग्य

सृज – उत्पन्न करना, पैदा करना

प्रशस्त – प्रसिद्धि

दर्शतम – देखने योग्य।

व्याख्या :-

हमें कौन शुद्ध कर सकता है?

परमात्मा के पास महान गुण और शक्तियाँ हैं। वह समस्त बुराईयों, दुर्गुणों और गलतियों को हमारे जीवन से हटा सकता है। वह हमें प्रकाशित कर सकता है और पवित्र बना सकता है। वह दिव्य लोगों में उजागर होता है। वह और उसके दिव्य लोग पवित्र अग्नि के धुएं की तरह पवित्र होते हैं। इसलिए परमात्मा उत्तम रूप से चमक वाला, प्रकाशित करने वाला और संगतिकरण के योग्य है। वह हमारे जीवन को महान प्रसिद्धि से अलंकृत कर सकता है और हमें दर्शन के योग्य बना सकता है।

जीवन में सार्थकता

एक शुद्ध व्यक्ति के क्या लक्षण होते हैं?

पूर्ण पवित्रता और शुद्धता का एक ही स्रोत है – परमात्मा। जो व्यक्ति पूर्ण त्यागमय जीवन जीता है, वह परमात्मा का सच्चा प्रतिनिधि बन जाता है। ऐसा व्यक्ति अपने कार्य परमात्मा की तरह ही करता है और निम्न लक्षण धारण करता है :–

- (क) उसकी संगति समस्त बुराईयाँ दूर कर सकती हैं।
- (ख) वह अन्यों को ज्ञान से प्रकाशित और पवित्र कर सकता है।
- (ग) उसमें दिव्यता उजागर होती है।
- (घ) वह पवित्र अग्नि के धुएं की तरह पवित्र होता है।
- (ङ) वह संगतिकरण के योग्य होता है।
- (च) उसकी महान प्रसिद्धि होती है और वह दर्शन के योग्य होता है।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

ऋग्वेद मन्त्र 1.36.10

यं त्वा देवासो मनवे दधुरिह यजिष्ठं हव्यवाहन।
यं कण्वो मेध्यातिथिर्धनस्पृतं यं वृषा यमुपस्तुतः ॥ 10 ॥

यम — वह

त्वा — आपको

देवासः — दिव्य

मनवे — महान् तथा संत बुद्धि

दधु — धारण करना

इह — यहाँ, इस जीवन में

यजिष्ठम — यज्ञ करने वाले, त्याग करने वाले

हव्य वाहन — पवित्र साधन और पदार्थ धारण करने वाले जिन्हें त्याग कार्यों में आहुत किया जा सके

यम — वह

कण्वः — अध्यापक

मेध्यातिथिः — अध्यात्मिक और पवित्र शिष्यों वाले

धनस्पृतम — गौरवशाली सम्पदा वाले

यम — वह

वृषा — प्रसन्नाओं कि वर्षा करने वाला

यम — वह

उपस्तुतः — सर्वोच्च शक्ति के निकट बैठना।

व्याख्या :-

सर्वोच्च शक्ति, परमात्मा, को कौन धारण करता है?

आप, सर्वोच्च शक्ति, परमात्मा, वह हो जिन्हें यज्ञ और त्याग करते हुए तथा पवित्र साधनों और पदार्थों को त्याग में आहुत करने के लिए धारण करते हुए दिव्य, महान् और संत मन वाले लोग अपने जीवन में धारण करते हैं। आप वह हो जिन्हें गौरवशाली सम्पदा धारण करने वाले लोग धारण करते हैं। आप वह हो जिन्हें सर्वोच्च शक्ति के साथ संगतिकरण तथा उसकी अनुभूति की इच्छा वाले लोग धारण करते हैं।

इस प्रकार निम्न लक्षणों वाले लोग परमात्मा को धारण करते हैं :-

(क) देवासः मनवे — दिव्य, महान् तथा संत बुद्धि,

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

- (ख) यजिष्ठम हव्य वाहन – यज्ञ करने वाले, त्याग करने वाले, पवित्र साधन और पदार्थ धारण करने वाले जिन्हें त्याग कार्यों में आहुत किया जा सके,
- (ग) कण्वः मेध्यातिथिः – अध्यात्मिक और पवित्र शिष्यों वाले अध्यापक,
- (घ) धनस्पृतम – गौरवशाली सम्पदा वाले,
- (ङ) उपस्तुतः – सर्वोच्च शक्ति के निकट बैठने वाले।

जीवन में सार्थकता

अपने उच्चाधिकारियों तथा वृद्धजनों आदि के साथ निकटता प्राप्त करने के पाचं लक्षण कौन से हैं? प्रत्येक व्यक्ति को अपने उच्चाधिकारियों तथा वृद्धजनों आदि के साथ निकटता प्राप्त करने के लिए निम्न पाचं लक्षण पर ध्यान देना देना चाहिए :-

- (क) संत व्यक्ति – अपने वर्ग या समाज के संत तथा विनम्र सदस्य बनकर रहना चाहिए।
- (ख) त्यागशील व्यक्ति – दूसरों के कल्याण के लिए सदैव त्याग करने में तत्पर रहना चाहिए।
- (ग) संत और त्यागशील व्यक्तियों का नेतृत्व – आपको स्वयं ऐसा संतभाव और त्यागशीलता का लक्षण बनाकर रखना चाहिए जिससे अन्य संतभाव वाले और त्यागशील लोग आपको अपना नेतृत्व समझें।
- (घ) गौरवशाली सम्पदा – सदैव गौरवशाली सम्पदा को धारण करें अर्थात् ऐसा धन जो उचित तरीके से कमाया गया हो और उचित रूप से खर्च किया जाये।
- (ङ.) अपने उच्चाधिकारियों और वृद्धजनों के साथ निकटता स्थापित करों।

ऋग्वेद मन्त्र 1.36.11

यमग्निं मेध्यातिथिः कण्व ईधं ऋतादधि ।
तस्य प्रेषो दीदियुस्तमिमा ऋचस्तमग्निं वर्धयामसि ॥ 11 ॥

यम – वह

अग्निम – सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा

मेध्यातिथिः – अध्यात्मिक और पवित्र शिष्यों वाले

कण्वः – गुरु

ईधे – प्रकाशित

ऋतात अधि – अपने कार्यों को लगातार और नियमित रूप से बढ़ाने वाले

तस्य – वह

प्र – पूर्ण रूप से

इषः – आहुतिया स्वीकार करने वाली किरणें

दीदियुः – प्रकाशित

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

तम — उसे

इमा: — वे सब

ऋचः — वेद के मन्त्र, परमात्मा कि प्रशंसाए

तम — उसे

अग्निम — सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा

वर्घ्यामसि — अपनी पूजा बढ़ाते हैं।

व्याख्या :-

परमात्मा किसको धारण करते हैं और प्रोत्साहित करते हैं?

सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा, उन सभी गुरुओं को प्रकाशित करते हैं जिन के पवित्र और अध्यात्मिक शिष्य होते हैं। ऐसे लोगों के कार्य लगातार और नियमित रूप से वृद्धि को प्राप्त होते हैं। परमात्मा ऐसे सभी लोगों की आहुतियाँ पूर्ण रूप से स्वीकार करते हैं जो त्यागशील हैं और परमात्मा का गुणगान अर्थात् वेद मन्त्रों का उच्चारण करते हैं। इस प्रकार, परमात्मा उनकी पूजा भवित को बढ़ाते हैं। इससे सिद्ध होता है कि ऋग्वेद 1.36.10 में बताये गये पाचँ लक्षणों को जो लोग धारण करते हैं वे अपने कार्यों और पूजा में परमात्मा को ही धारण करते हैं। उनके कार्य और पूजा परमात्मा के द्वारा स्वीकार किये जाते हैं और प्रतिफल में उन कार्यों में परमात्मा उनकी ओर अधिक सहायता और समर्थन करते हैं। इसका अभिप्राय है कि परमात्मा ऐसे लोगों के जीवन और गतिविधियों को स्वीकार करते हैं।

जीवन में सार्थकता

कौन एक पूर्ण व्यक्तित्व बनता है?

कोई भी व्यक्ति जो ऋग्वेद 1.36.10 में बताये गये पाचँ लक्षणों में से कोई भी एक या अधिक लक्षण धारण करता है वह पूर्ण व्यक्तित्व बन जाता है। परन्तु कठिनाई से ही कोई ऐसा व्यक्ति मिलेगा जिसके एक जीवन में पाचों लक्षण दिखाई देते हो। भगवान् राम और भगवान् कृष्ण के जीवन में यह पाचों लक्षण विद्यमान थे :—

- (क) वे संत थे।
- (ख) वे दूसरों के कल्याण के लिए त्यागशील थे।
- (ग) उनके आजतक भी अनेकों अध्यात्मिक और पवित्र शिष्य हैं।
- (घ) उनके पास गौरवशाली सम्पदा थी।
- (ङ) वे ध्यान साधना में परमात्मा के निकट बैठते थे।

ऋग्वेद मन्त्र 1.36.12

रायस्पूर्धि स्वधावोऽस्ति हि तेऽग्ने देवेष्वाप्यम् ।
त्वं वाजस्य श्रुत्यस्य राजसि स नो मृळ महाँ असि ॥ 12 ॥

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

रायः — गौरवशाली सम्पदा
पूर्धि — पूर्ण रूप से उपलब्ध कराते हैं
स्वधावः — स्वयं को शुद्ध करने वाले
अस्ति — हैं
हि — निश्चित रूप से, इस कारण
ते — आप
अग्ने — सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा
देवेषु — दिव्य लोक
आप्यम — मित्र बनाते हैं
त्वम — आप
वाजस्य — संग्रामों में
श्रुत्यस्य — सुनने योग्य
राजसि — वर्चस्व
सः — वह
नः — हम
मृळ — हमें प्रसन्न और सुविधाजनक बनाते हैं
महान — गुणों में महान
असि — हैं।

व्याख्या :-

दिव्य लोग परमात्मा के साथ मित्रता की कामना क्यों करते हैं?

आप निश्चित रूप से सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा, हों जो हमें पूर्ण गौरवशाली सम्पदा उपलब्ध कराते हों, शुद्धता में हमारी सहायता करते हों। इससे भी अधिक आप सभी दिव्य लोगों को संग्रामों में संरक्षित करते हों। इसलिए दिव्य लोग आपके साथ मित्रता चाहते हैं। सभी जीवनों में आपका प्रभाव सुनने के योग्य है केवल आप ही अपने महान गुणों के कारण हमें प्रसन्न और सुविधाजनक रख सकते हों।

जीवन में सार्थकता

हम अन्य लोगों का प्रेम कैसे प्राप्त करें?

परमात्मा के तीन महान् गुण हैं जिसके लिए दिव्य लोग उनके साथ मित्रता की कामना करते हैं :-

- (क) वह गौरवशाली सम्पदा को उपलब्ध कराने वाले हैं।
- (ख) वह हमें शुद्ध करते हैं।
- (ग) वह सभी संग्रामों में संरक्षक होते हैं।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

कोई भी व्यक्ति इन तीन गुणों को धारण करके सबके द्वारा पसंद और प्रेम प्राप्त करने योग्य बन सकता है :—

- (क) जिन्हें भौतिक सहायता की आवश्यकता हो, उन्हें उपलब्ध करायें।
 - (ख) उचित मार्गदर्शन से सबको पवित्र करें।
 - (ग) कठिन परिस्थितियों में अन्य लोगों को संरक्षण दें।
- एक महान माता-पिता, एक महान उच्चाधिकारी, एक महान नेता यही तीनों कार्य करते हैं। इसलिए समान्य लोग भी ऐसे ही वास्तविक महान लोगों के साथ मित्रता की कामना करते हैं।

ऋग्वेद मन्त्र 1.36.13

ऊर्ध्वं ऊ षु ण ऊतये तिष्ठा देवो न सविता ।
ऊर्ध्वो वाजस्य सनिता यदजिंभिर्वाघभिर्विहवयामहे ॥ 13 ॥

ऊर्ध्वः — सम्मान जनक और उच्च स्थान

सु — ऊतय तथा तिष्ठा से पूर्व लगाकर

नः — हमारे लिए

ऊतये (सु ऊतये) — उत्तम संरक्षण

तिष्ठ (सु तिष्ठ) — सम्मान के साथ बैठे हुए

देवः — दिव्य

न — जैसे

सविता — सूर्य, प्रकाशित

ऊर्ध्वः — सम्मान जनक और उच्च स्थान

वाजस्य — संग्रामों में

सनिता — ज्ञान और शक्ति देने वाले

यद— जब

अजिंभिः — बुद्धिमान विद्वान

वाघभिः — त्याग करने वाले

विहवयामहे — ज्ञान कि प्राप्ति और त्याग के लिए मिलकर कार्य करने वाले।

व्याख्या :-

परमात्मा किस प्रकार संग्रामों में हमारी सहायता करते हैं?

परमात्मा का हमारे जीवन में एक सम्मानजनक और उच्चस्थान हैं जैसे सूर्य का है, अकाश में अत्यन्त उच्चार्ह पर। वह हमें उत्तम रूप से संरक्षित करते हैं। अपनी उच्च दया से वह हमें ज्ञान, मार्गदर्शन तथा सभी संग्रामों के लिए शक्ति देते हैं। (वह हमारे शरीर में ब्रह्मरन्द्र रूपी उच्चस्थान पर सम्मानजनक रूप से प्रभाव रखते हैं)।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

ज्ञान और शक्ति को अर्जित करना तभी सम्भव है जब हम महान विद्वानों और त्यागशील लोगों के मध्य बैठकर उनके साथ कार्य करें और ज्ञान तथा त्याग का प्रशिक्षण प्राप्त करें।

जीवन में सार्थकता

हमारे उच्चाधिकारी और महान शासक कब उत्तम रूप से हमें संरक्षित करते हैं?

प्रतिक्षण हम छोटे बड़े संग्रामों में संघर्ष करते रहते हैं। इन सभी संग्रामों में हमें यह विश्वास करना चाहिए और इसकी अनुभूति करनी चाहिए कि हमारे मस्तिष्क के ब्रह्मरन्द्र नामक उच्चस्थान पर सम्मानजनक रूप से बैठी हुई वह सर्वोच्च शक्ति, परमात्मा, निश्चित रूप से अपने मार्गदर्शन, प्रेरणा और शक्ति से हमें संरक्षित करते हैं। इसके लिए हमें केवल एक ही कार्य करना है कि हम उस शक्ति के प्रति पूर्ण समर्पण कर दें।

अपने परिवार और सामाजिक जीवन में भी यदि हम अपने वृद्धजनों और उच्चाधिकारियों आदि के प्रति पूर्ण समर्पण भाव रखें, उनके जीवन से शिक्षायें प्राप्त करें और उनका आशीर्वाद प्राप्त करें तो वे निश्चित रूप से हमारे मार्गदर्शन करेंगे और हमें हर प्रकार की सहायता भी उपलब्ध करायेंगे।

एक महान शासक निश्चित रूप से अपने नागरिकों का संरक्षण करता है, यदि सभी देशवासी निम्न कार्य करें :—

- (क) उस शासक का सम्मान और प्रशंसा करें।
- (ख) अपने जीवन में तथा अन्य देशवासियों के जीवन में ज्ञान का संवर्धन करें।
- (ग) एक दूसरे के लिए तथा राष्ट्र के लिए त्याग भावनाओं को प्रोत्साहित करें।

ऋग्वेद मन्त्र 1.36.14

ऊर्ध्वो नः पाह्यंहसो नि केतुना विश्वं समत्रिणं दह।
कृधी न ऊर्ध्वाचरथाय जीवसे विदा देवेषु नो दवः ॥ 14 ॥

ऊर्ध्वः — सम्मान जनक और उच्च स्थान

नः — हमारे

पाहि (नि पाहि) — लगातार संरक्षक

अंहसः — चोरी करने का पाप

नि — पाहि से पूर्व लगाया गया

केतुना — उत्तम ज्ञान के साथ

विश्वम् — सब

सम — दह से पूर्व लगाकर

अत्रिणम् — अन्याय

दह (सम दह) — पूर्ण रूप से नाश करने के लिए जलाना

कृधी — बनाना

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

नः — हमारे

ऊर्ध्वान् — ज्ञान, कार्यों और व्यवहार में उन्नति

चरथाय — एक अच्छे जीवन के लिए

जीवसे — इस जन्म में

विदाः — हमें उपलब्ध कराती है

देवेषु — दिव्य बुद्धिमानों में

नः — हमारे

दुवः — सेवा, संगति ।

व्याख्या :-

एक महान् नैतिक जीवन के लिए हमारी क्या प्रार्थना और आचरण होना चाहिए?

सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा, जो हमारे जीवन में सम्मानजनक उच्चस्थान पर विद्यमान हैं, उससे हमारी पहली प्रार्थना यह है कि वह चोरी जैसे पाप से हमारा संरक्षण करें। द्वितीय, हम ऐसे उत्तम और महान् ज्ञान की प्रार्थना करते हैं जो अन्याय भावना को जलाकर नष्ट कर दे। तृतीय, हम प्रगतिशील ज्ञान, कार्यों और व्यवहार में इसी जन्म में एक सुंदर जीवन की प्रार्थना करते हैं। अन्तिम, हम दिव्य विद्वानों की संगति और सेवा में जीवन व्यतीत करें।

जीवन में सार्थकता

अध्यात्मिक प्रगति के क्या आधार हैं?

निम्न चार प्रार्थनाओं का उद्देश्य अपराध—मुक्त, रोग—मुक्त, उच्च नैतिक और आध्यात्मिक समाज का निर्माण करना है :-

(क) हमें चोरी जैसे पापों से बचाएं।

(ख) अन्याय को नष्ट करें।

(ग) ज्ञान कार्यों और व्यवहार में प्रगतिशीलता हो।

(घ) दिव्य विद्वानों की संगति का विकास हो।

ऋग्वेद मन्त्र 1.36.15

पाहि नो अग्ने रक्षसः पाहि धूर्तराष्ट्रः ।

पाहि रीषत उत वा जिघांसतो बृहद्भानो यविष्टय ॥ 15 ॥

पाहि — संरक्षण

नः — हमारा

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

अग्ने – सर्वोच्च ऊर्जा परमात्मा
रक्षसः – दूसरो का नाश करने वाले स्वार्थी लोग
पाहि – संरक्षण
धूर्तः – धूर्त
अराणः – त्याग न करने वाले
पाहि – संरक्षण
रीषतः – हिंसक
उत – और
वा – भी
जिघांसतः – हमें मारने के कामना वाले
बृहद भानुः – महान कार्य करने वाले
यविष्ट्य – पाप से पृथक और पवित्रता से जुड़े हुए।

व्याख्या :-

अपराध—मुक्त समाज के लिए किसको प्रार्थना करें?
अपराध—मुक्त तथा सुरक्षित समाज के लिए हम सर्वोच्च तथा दिव्य ऊर्जा, परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे निम्न से हमारा संरक्षण करें :—

- (क) रक्षसः – दूसरो का नाश करने वाले स्वार्थी लोग,
- (ख) धूर्तः – धूर्त लोग,
- (ग) अराणः – त्याग न करने वाले लोग,
- (घ) रीषतः – हिंसक जीव,
- (ङ) जिघांसतः – हमें मारने की कामना करने वाले।

इन सब संरक्षणों के लिए हम परमात्मा से ही प्रार्थना करते हैं क्योंकि वह सर्वोच्च पवित्र शक्ति है जो बृहदभानुः अर्थात् महान कार्य करने वाले हैं तथा जो यविष्ट्य अर्थात् पाप से पृथक और पवित्रता से जुड़े हुए है।

इस मन्त्र से यह सिद्धान्त निकलता है कि – ‘जो शक्ति स्वयं अपराध—मुक्त है, वही केवल अपराधों से हमारा पूर्ण संरक्षण कर सकती है। परमात्मा के विरुद्ध कोई अपराध नहीं किया जा सकता। इसी प्रकार उसके पूर्ण प्रेमी और अनुयायी अपने आस—पास एक पवित्र आभामंडल का विकास कर लेते हैं जिससे कठोर से कठोर अपराधी भी उनके आभामंडल में प्रवेश करते ही अपनी अपराधिक मानसिकता छोड़ देते हैं।

जीवन में सार्थकता

अपराधी मन को अध्यात्मिक मन में कौन परिवर्तित कर सकता है?

हम परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि अपराधों से हमारी रक्षा करें। इस प्रार्थना का प्रथम लाभ यह है कि हम परमात्मा की सर्वोच्चता में यह विश्वास करते हैं कि वही समस्त महान कार्यों को करता है क्योंकि वह स्वयं पूर्णतः अपराध—मुक्त है। इस प्रार्थना का दूसरा लाभ यह है कि हम अपने जीवन को भी अपराध—मुक्त

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

रखने का संकल्प व्यक्त करते हैं। कोई प्रार्थना तभी सफल होती है जब वह हमारा संकल्प बनती है और हम उसको दृढ़ता से क्रियान्वित करते हैं। एक बार जब हमारा जीवन परमात्मा के प्रेम में आध्यात्मिक जीवन परमात्मा के प्रति पूर्ण समर्पण तथा एक नैतिक चारित्रिक जीवन की तरह स्थापित हो जाता है तो हमारे विरुद्ध भी कोई अपराध नहीं होगा। एक आध्यात्मिक जीवन चुम्बक की तरह बन जाता है जो अपराधी मन में भी आध्यात्मिकता उत्पन्न कर देता है। अपराधी मानसिकताओं को परिवर्तित करने के लिए और अपराध—मुक्त समाज का पथ निर्धारण करने के लिए महान बनों तथा पवित्र आध्यात्मिक बनो।

महान शासक तथा पुलिस आदि का यह निश्चित कर्तव्य है कि समाज को अपराध मुक्त रखें। इसके लिए यह आवश्यक है कि हमारे शासक और पुलिस अधिकारी महान आध्यात्मिक पुरुष हो। दूसरी तरफ प्रत्येक नागरिक का भी यह कर्तव्य है कि वह पवित्र आध्यात्मिक पुरुष बनें जिससे वे स्वयं को अपराधों से संरक्षित कर सकें और अपराधियों को आध्यात्मवादी बनाने के पथ का निर्माण कर सकें।

ऋग्वेद मन्त्र 1.36.16

घनेव विष्वग्वि जह्यराव्वास्तपुर्जम्भ यो अस्मधुक् ।
यो मर्त्यः शिशीते अत्यक्तुभिर्मा नः स रिपुरीशत ॥ 16 ॥

घनेव – ठोस के समान

विष्वक् – सब प्रकार से बलशाली

विजहि – विशेष रूप से विजयी

अराव्वः – त्याग न करने वाले

तपुर्जम्भ – शत्रु को नष्ट करने में संक्षम

यः – जो

अस्मधुक् – हमारा उलंघन करता है

यः – जो

मर्त्यः – मृत्यु के लायक

शिशीते (अति शिशीते) – हमे कमजारे करने के लिए हिंसा करता है

अति – शिशीते से पूर्व लगाया गया

अक्तुभिः – रात्रि में

मा – नहीं

नः – हमारा

सः – वह

रिपुः – शत्रु

ईशत – प्रभावी ।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

व्याख्या :-

परमात्मा के शत्रु कौन है?

परमात्मा हर प्रकार से एक ठोस पदार्थ की तरह शक्तिशाली है। वह अत्यागशील लोगों को नियन्त्रित करने में और उन्हें जीतने में सक्षम है। वह शत्रुओं को नष्ट करने में सक्षम है। वे मरणशील लोग, जो मरने योग्य हैं, हिंसा करके हमारा उल्लंघन करते हैं और रात्रि में हमें कमज़ोर करते हैं। केवल परमात्मा ही यह सुनिश्चित कर सकते हैं कि ऐसे शत्रु हमारे ऊपर प्रभावी न हों। इसका अभिप्राय यह है कि वे मरणधर्मा लोग जो अत्यागशील हैं और हिंसक हैं, वे परमात्मा के शत्रु माने जाते हैं।

जीवन में सार्थकता

समाज में सबके द्वारा पसन्द किये जाने योग्य कैसे बने?

अत्यागशील और हिंसक व्यक्ति समाज को कमज़ोर करते हैं, अतः उन्हें न तो परमात्मा पसन्द करते हैं और न ही शासक तथा समान्य नागरिक। अतः हमें यह दो लक्षण अपने जीवन में कभी नहीं आने देने चाहिए। बल्कि हमें दूसरों के कल्याण के लिए, प्रेम और देखभाल के लिए किसी भी त्याग की आवश्यकता पड़ने पर तत्पर रहना चाहिए। इन दो सकारात्मक लक्षणों के साथ हमें समाज भी पसन्द करेगा और परमात्मा भी।

भौतिकवाद एक नकारात्मक पथ है— एक भौतिकवादी व्यक्ति अपने भौतिक शरीर को हानि पहुँचाता है और उसे नष्ट करता है जिससे वह कुछ नाशवान भौतिक पदार्थ संकलित कर सके। ऐसा व्यक्ति अपराधों और रोगों के निकट रहता है।

आध्यात्मवाद एक सकारात्मक पथ है— एक आध्यात्मिक व्यक्ति अपनी आध्यात्मिकता का विकास करता है जिससे वह अनाशवान सर्वोच्च अनुभूति को प्राप्त कर सके। वह अपराधों और रोगों से मुक्त रहता है।

ऋग्वेद मन्त्र 1.36.17

अग्निर्वने सुवीर्यमग्निः कण्वाय सौभगम् ।

अग्निः प्रावन्मित्रेत मेध्यातिथिमग्निः साता उपस्तुतम् ॥ 17 ॥

अग्निः — सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा

वने — याचना करना

सुवीर्यम् — उत्तम पवित्र शक्तियों के लिए

अग्निः — सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा

कण्वाय — एक विद्वान के लिए

सौभगम् — उत्तम सौभग्य

अग्निः — सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

प्रावत् – संरक्षण के लिए

मित्रा – मित्र (एक दूसरे के साथ प्रेम और ध्यान रखने वाले)

मेध्यातिथिम् – कौशलपूर्ण विद्वान् के लिए

अग्नि: – सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा

सातौ – सम्पदा और शक्ति देने वाले

उपस्तुतम् – प्रशंसनीय गुण।

व्याख्या :-

सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा, को हम किस उद्देश्य से मानते हैं?

सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा, की अपने जीवन में प्रबलता और आर्थीवाद हम निम्न कारणों से मानते हैं :-

(क) योद्धाओं के लिए उत्तम शक्तियाँ,

(ख) विद्वानों के लिए उत्तम किस्मत,

(ग) एक दूसरे से प्रेम करने वाले और देखभाल करने वाले मित्रों का संरक्षण,

(घ) कुशल विद्वानों के लिए धन सम्पदा तथा प्रशंसा।

वैज्ञानिक पक्ष :

हम सबके पूर्ण कल्याण के लिए विद्वानों, कुशल कारिगरों, सबके मित्रों और योद्धाओं के माध्यम से सर्वोच्च ऊर्जा, अग्नि, सूर्य की ऊर्जा और प्रकाश तथा विद्युत करंट मानते हैं। समाज का प्रत्येक व्यक्ति ऊर्जावान होना चाहिए जिससे वह रोग—मुक्त रहकर सबके कल्याण में लगा रहे।

आध्यात्मिक पक्ष :

हमारी व्यक्तिगत ऊर्जा सम्पूर्ण प्रकृति की सर्वोच्च ऊर्जा से प्राप्त हुई है जो सर्वोच्च निर्माता की अभिव्यक्ति है। इस ऊर्जा के माध्यम से हमें निर्माता के साथ एक सम्पर्क स्थापित करके रखना चाहिए। सभी आध्यात्मिकता की माँग करने वाले लोग प्रकृति में ही जीना चाहते हैं, प्रकृति के साथ जीना चाहते हैं, प्रकृति के लिए जीना चाहते हैं क्योंकि प्रकृति सबके लिए समान है, यह कभी भेद—भाव नहीं करती। इसीलिए एक आध्यात्मिक व्यक्ति बिना भेद—भाव के सबके लिए प्रार्थना करता है।

जीवन में सार्थकता

सबसे उच्च सामाजिक—आध्यात्मिक सिद्धान्त क्या है?

आध्यात्मिकता का सामाजिक पक्ष :

वैदिक विवेक हमें प्रेरित करता है की हम परमात्मा की पूजा और उससे प्रार्थना केवल अपने व्यक्तिगत कल्याण के लिए नहीं अपितु सब महान लोगों के शुभ के लिए, धन—सम्पदा और प्रशंसाओं के लिए प्रार्थना करें जो समाज के स्तम्भ हैं, जैसे श्रेष्ठ ब्रह्मण, हमारे महान योद्धा अर्थात् क्षत्रिय, हमारे कुशल विद्वान जैसे व्यापारी तथा कारिगर और हमसे प्रेम और देखभाल करने वाले मित्र तथा वे सब लोग जो हमारे कल्याण के लिए त्याग करते हैं और हमारे सेवक जो हमारी सुविधाओं का ध्यान रखते हैं।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

इस प्रकार यह महान समाजिक सिद्धान्त निकलता है कि – किसी को केवल अपनी व्यक्तिगत उन्नति से ही सन्तुष्ट नहीं रहना चाहिए अपितु पूरे समाज की उन्नति में ही अपनी उन्नति समझनी चाहिए।

ऋग्वेद मन्त्र 1.36.18

अग्निना तुर्वशं यदुं परावत उग्रादेवं हवामहे ।
अग्निर्नयनवास्त्वं बृहद्रथं तुर्वीतिं दस्यवे सहः ॥ 18 ॥

अग्नि – सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा, के साथ
तुर्वशम – तुरन्त, त्वरित नियंत्रक
यदुम – गौरवशाली सम्पदा के लिए प्रयासरत
परावतः – सभी अंगों से, सभी दिशों से
उग्रादेवम – दिव्य और तेजस्वी गुणों वाले लोग
हवामहे – हम पुकारते हैं
अग्निः – सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा
नयत – हमारे लिए निर्धारित, हमे देता है
नववास्त्वम – नये आवास
बृहद रथम – बड़े, उन्नतिशील रथ, शरीर
तुर्वीतिम – बुराईयों के नाशक
दस्यवे सहः – बुरा करने वाले को कुचलने की शक्ति ।

व्याख्या :-

सर्वोच्च ऊर्जा से सम्पर्क के क्या परिणाम होते हैं?
एक बार हम सामाजिक और आध्यात्मिक प्रार्थनाओं के साथ सर्वोच्च ऊर्जा के सम्पर्क में आ जाते हैं तो हम पुनः निम्न प्रार्थनाएँ और संकल्प करते हैं :-
(क) तुरन्त नियंत्रक बनने की शक्ति,
(ख) गौरवशाली सम्पदा कमाने की शक्ति,
(ग) हर दिशा से दिव्य गुण वाले लोगों का स्वागत करने की शक्ति ।
ऐसी सम्पूर्ण प्रार्थनाओं और संकल्पों का निम्न परिणाम होता है :-
(क) नये सुविधाजनक आवास,
(ख) बड़े और प्रगतिशील रथ अर्थात् यह शरीर तथा जीवन के अन्य साधन,
(ग) सभी बुराईयों का नाश और बुरा करने वाले को प्रताड़ित करने की शक्ति ।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

जीवन में सार्थकता

बुराईयों से मुक्त समाज के पथ का निर्माण कैसे किया जा सकता है?

सर्वोच्च ऊर्जा से सम्पर्क हमारी प्रार्थनाओं को दृढ़ संकल्पों में परिवर्तित कर देता है। उच्च स्तर के दृढ़ संकल्प स्वाभाविक रूप से नियंत्रण शक्ति प्राप्त कर लेते हैं और वैदिक सम्पदा तथा सकारात्मकता चारों तरफ से उनमें प्रवेश करने लगती है। ऐसे जीवन को नये आवास मिलते हैं, प्रगतिशील शरीर तथा साधन प्राप्त होते हैं जिससे बुराईयों को नष्ट किया जा सकें। ऐसा जीवन स्वयं ही बुराईयों से मुक्त होकर सारे समाज के लिए भी बुराईयों से मुक्ति का मार्ग स्थापित कर देता है।

ऋग्वेद मन्त्र 1.36.19

नि त्वामग्ने मनुर्दधे ज्योतिर्जनाय शश्वते ।
दीदेथ कण्व ऋतजात उक्षितो यं नमस्यन्ति कृष्टयः ॥ 19 ॥

नि – दधे से पूर्व लगाकर

त्वाम – आपको

अग्ने – सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा

मनुः – मननशील मनुष्य, अनुभूति की कामना वाला

दधे (नि दधे) – हृदय में स्थापित

ज्योति: – प्रकाश (ज्ञान का)

जनाय – जीवों के संरक्षण के लिए

शश्वते – सदा रहने वाला

दीदेथ – प्रकाशित करना

कण्वे – बुद्धिमान मनुष्यों में

ऋतजातः – सत्यवादिता के लिए प्रसिद्ध

उक्षितः – आनन्द देता है

यम – जिसे

नमस्यन्ति – झुकते और प्रणाम करते

कृष्टयः – गतिविधियों में संलग्न (कर्मयोगी) ।

व्याख्या :-

आध्यात्मिक रूप से चेतन लोग कहाँ पर परमात्मा को स्थापित करके उसकी अनुभूति प्राप्त करते हैं?

वास्तव में परमात्मा को नमन कौन करता है?

एक मननशील व्यक्ति अर्थात् आध्यात्मिक रूप से चेतन व्यक्ति सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा, को अपने गहरे हृदय में सारे जीवन के लिए स्थापित कर लेता है क्योंकि परमात्मा अर्थात् ज्ञान का प्रकाश एक शाश्वत

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

सर्वोच्च ऊर्जा है जो सबका संरक्षण कर सकती है। यही प्रकाश विद्वान् लोगों की चमक बढ़ाता है और सत्यवान् लोगों में प्रसिद्ध होकर उन्हें आनन्द प्रदान करता है। कर्मयोगी की तरह अपने कार्यों में जुटे सभी लोग उसी सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा, को नमन करते हैं। दूसरे शब्दों में, एक सच्चा कर्मयोगी ही परमात्मा को नमन करने के योग्य होता है और परमात्मा भी एक सच्चे कर्मयोगी का ही नमन स्वीकार करते हैं।

जीवन में सार्थकता

परमात्मा का एक कर्मयोगी के साथ क्या संबंध होता है?

यह विज्ञान का एक शाश्वत नियम है कि सर्वोच्च ऊर्जा सभी जीवों के बीच समान रूप से स्थापित है और सबका संरक्षण करती है, इस बात से अनभिज्ञ रहकर कि कोई नास्तिक है या आस्तिक है, एक नियम में विश्वास करता है या दूसरे नियम में, एक जाति का है या दूसरी जाति का। यह सर्वोच्च ऊर्जा केवल महान् कर्मयोगी में ही अभिव्यक्त होती है जो दूसरों के लिए अपना जीवन आहुत करता है और सत्यवादी रहता है। परमात्मा सच्चे कर्मयोगियों और सत्यवादी लोगों में ही प्रसिद्ध होता है अर्थात् जाना जाता है और उन्हें आर्शीवाद देता है। केवल ऐसे लोग ही वास्तव में उसे नमन करते हैं, केवल शब्दों से या प्रक्रियाओं से नहीं। परमात्मा सबका पिता है परन्तु केलव सच्चे कर्मयोगी ही उसके महान् पुत्र है।

ऋग्वेद मन्त्र 1.36.20

त्वेषासो अग्नेरमवन्तो अर्चयो भीमासो न प्रतीतये ।
रक्षस्त्विनः सदमिद्यातुमावतो विश्वं समत्रिणं दह ॥ 20 ॥

त्वेषासः – दीप्त, प्रकाशित

अग्ने – सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा

अमवन्तः – शक्तिशाली

अर्चयः – ज्वालाएँ (परमात्मा की, सूर्य की, ज्ञान की)

भीमासः – भयंकर

न – जैसे

प्रतीतये – अनुभूति के लिए

रक्षस्त्विनः – राक्षसी भावनाओं को

सदम इत – सदैव निश्चित रूप से

यातुमावतः – मेरी तरह सबको संरक्षण

विश्वम – सबको

सम – दह से पूर्व लगाकर

अत्रिणम – धूर्त, अन्यों की वस्तुओं को ताकत से लेने वाले

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

दह (सम दह) – पूर्व रूप से नष्ट।

व्याख्या :-

अग्नि हमारे लिए क्या कर सकती है?

परमात्मा, सूर्य और ज्ञान की अग्नि ज्वालाएँ अत्यन्त शक्तिशाली और प्रतिभाशाली होती हैं, विशेष रूप से उनके लिए जो भागवान की अनुभूति प्राप्त करना चाहते हैं और अपने भौतिक साधनों तथा ऊर्जा का उचित प्रयोग करना चाहते हैं और जिनका एक महान विद्वतापूर्ण जीवन होता है। दिव्य ज्वालाएँ सभी बुराईयों, गन्दगीं और अज्ञानता के लिए डरावनी होती हैं। ऐसी ज्वालाएँ सभी धूर्त, बुरी और राक्षसी ताकतों को पूरी तरह से नष्ट करके सबकी रक्षा करती हैं।

जीवन में सार्थकता

अग्नि क्या है?

अग्नि एक पवित्र ऊर्जा है जो किसी रूप में सदैव अच्छाईयों की रक्षा करती है और निश्चित रूप से सभी बुराईयों का नाश करती है। अग्नि परमात्मा की अनुभूति के लिए परमात्मा की पूजा है, अग्नि ताप के लिए भौतिक ऊर्जा है, अग्नि सूर्य की किरणों में है, अग्नि महान ज्ञान में ही है।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

ऋग्वेद मण्डल-1 सूक्त 37

वायु ध्यान साधना पर सूक्त
ऋग्वेद मन्त्र 1.37.1

क्रीळं वः शर्धो मारुतमनर्वाणं रथेशुभम् ।
कण्वा अभि प्र गायत ॥ १ ॥

क्रीळम् – कीड़ा

वः – आपके लिए

शर्धो – शक्ति, बल

मारुतम् – वायु के

अनर्वाणम् – शत्रुता से रहित, बिना अश्वो के

रथे – रथ

शुभम् – शोभायमान, पवित्र

कण्वाः – विद्वान्

अभि प्र गायत – सुन्दरता से गायन, उपदेश और अनुसरण ।

व्याख्या :-

ब्रह्माण्ड में वायु की कीड़ा किस प्रकार सर्वोत्तम है?

हमारे जीवन में श्वास की कीड़ा किस प्रकार सर्वोत्तम है?

वायु की कीड़ा आपके लिए अत्यन्त बलशाली और शक्ति देने वाली है। यह बिना घोड़ों के सर्वोत्तम, शुभ तथा सुन्दर है। महान् विद्वान् इसी का गुणगान और उपदेश करते हुए, इसका सुन्दर रूप में अनुसरण करते हैं।

आध्यात्मिक रूप से, वायु की कीड़ा का संकेत श्वास की कीड़ा से ही है जिसे परम शक्ति, परमात्मा, द्वारा दिया गया है। यही श्वास हमारे शरीर रथ को सर्वोत्तम तथा शुभ बनाता है, यह शरीर बिना घोड़ों के इस श्वास के कारण ही दोड़ता है। इस श्वास का कोई शत्रु नहीं है। महान् विद्वान् इसी श्वास कीड़ा की महत्ता का गुणगान करते हैं, प्राणायाम और ध्यान के द्वारा इससे शक्ति लेते हैं जिससे परमात्मा की अनुभूति यात्रा पर प्रकाश प्राप्त कर सकें।

वैज्ञानिक रूप से, प्रकृति में वायु कीड़ा इस समुचि सृष्टि के रथ को बिना घोड़ों के चलाएमान रखती है और इसे सर्वोत्तम, शुभ और सुन्दर बनाती है। महान् पर्यावरणविद् प्रकृति में इसी वायु तत्व की महत्ता का गुणगान करते हैं।

जीवन में सार्थकता

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

इस जीवन को सर्वोत्तम कैसे बनाए?

इस श्वास के कारण ही यह शरीर कुछ भी तथा सब कुछ करने के योग्य होता है। वायु अर्थात् श्वास केवल हमारे व्यक्तिगत जीवन का ही नहीं अपितु समुचित सृष्टि का मूल तत्व है। इस श्वास पर मन को एकाग्र करते हुए ध्यान लगाना उस सर्वोच्च शक्ति के साथ एकात्मता की अनुभूति का उत्तम मार्ग है जिसने इस तत्व की रचना की है। अपने वृद्धजनों, उच्चाधिकारियों और महान् नेताओं के उत्तम लक्षणों पर विचार करते हुए उन पर ध्यान लगाना चाहिए जिससे हमारा जीवन भी उत्तम बन सकें।

ऋग्वेद मन्त्र 1.37.2

ये पृष्ठीभिर्ऋष्टिभिः साकं वाशीभिरजिंभिः ।

अजायन्त स्वभानवः ॥ २ ॥

ये – जो (वायु की प्राकृतिक कीड़ा को समझने वाले)

पृष्ठीभिः – हृदय में प्रसन्नता उत्पन्न करने वाले

ऋष्टिभिः – सत्य ज्ञान से प्रकाशित

साकम् – साथ होते हैं

वाशीभिः – वाणियाँ

अर्जिजभिः – दिव्य गुणों के साथ जीवन को अलंकृत करने वाले

अजायन्त – होते हैं

स्वभानवः – आत्मा का स्व-प्रकाशित प्रकाश अर्थात् सर्वोच्च प्रकाश ।

व्याख्या :-

कौन उस सर्वोच्च प्रकाश का प्रकाश बन सकता है?

वायु के महान् और दिव्य लक्षण क्या हैं?

जो लोग वायु की इस प्राकृतिक कीड़ा को समझते हैं और इसका अनुसरण करते हैं उनमें तीन महान् और दिव्य लक्षण उनकी वाणी के साथ आ जाते हैं जिससे वे सर्वोच्च प्रकाश का प्रकाश बन जाते हैं :-

(क) पृष्ठीभिः – हृदय में प्रसन्नता उत्पन्न करने वाले,

(ख) ऋष्टिभिः – सत्य ज्ञान से प्रकाशित,

(ग) अर्जिजभिः – दिव्य गुणों के साथ जीवन को अलंकृत करने वाले ।

ऐसे लोग स्वप्रकाशित बन जाते हैं क्योंकि वे परमात्मा की सर्वोच्च ऊर्जा की अनुभूति प्राप्त करके परमात्मा के साथ एकात्मता अनुभव कर लेते हैं।

जीवन में सार्थकता

कौन समाज का मशालधारी बन सकता है?

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

पूरे समाज के लिए मशालधारी अर्थात् एक सच्चा मार्गदर्शक और सच्चा नेता बनने के लिए हमें अपने जीवन में निम्न तीन लक्षण अवश्य धारण करने चाहिए :—

(क) अपने हृदय में प्रसन्नता धारण करनी चाहिए, कभी किसी अवस्था के विरुद्ध शिकायत या असंतोष व्यक्त नहीं करना चाहिए।

(ख) उचित तथा तर्क संगत ज्ञान प्राप्त करने के साथ-साथ कियात्मक रूप से विवेकशीलता को धारण करना चाहिए।

(ग) दया, सर्वेदनशीलता तथा सबके प्रति भावुक व्यवहार और दूसरों के कल्याण के लिए त्याग करने की प्रवृत्ति जैसे दिव्य लक्षणों से अपने जीवन को सुसज्जित करना चाहिए।

ऐसे लोगों का सदा सम्मान होता है और उन्हें लोग सच्चे नेता और मार्गदर्शक के रूप में स्वीकार करते हैं क्योंकि वे अन्य सभी लोगों के साथ एकात्मता महसूस करते हैं जिनके जीवन का एक ही स्रोत है।

ऋग्वेद मन्त्र 1.37.3

इहेव शृण्व एषां कशा हस्तेषु यद्वदान्।
नि यामचिंत्रमृंजते ॥ ३ ॥

इह — यहाँ, इस जीवन में

इव — जैसे

शृण्वे — सुनाई देना

ऐषां — इन वायु का

कशा: — सत्य दिव्य ज्ञान

हस्तेषु — हाथों में

यत् — जब

वदान् — बोलना

नि — त्रृजते से पूर्व लगाकर

यामन् — जीवन यात्रा में

चित्रम् — सुसज्जित

त्रृजते (नि त्रृजते) — निश्चित रूप से स्थापित तथा सत्य सिद्ध।

व्याख्या :-

आध्यात्मिक यात्रा को प्रगतिशील कैसे बनाया जा सकता है?

जब सत्य और दिव्य ज्ञान प्राप्त करने के लिए वायु की शक्ति को इस जीवन में हम समझ लेते हैं तो यह स्वाभाविक रूप से हमारी जीवन यात्रा को सुसज्जित कर देती है और इसी जीवन में स्वतः बोलती हुई दिखाई देती है। यह एक स्थापित सत्य है।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

अतः आध्यात्मिक यात्रा को प्रगतिशील बनाने के लिए हमें प्राणायाम और ध्यान प्रक्रियाओं का मार्ग अपनाना चाहिए जिससे हम वायु की शक्तियों पर ध्यान केंद्रित कर सकें।

जीवन में सार्थकता

आन्तरिक आध्यात्मिकता की प्रगति किस प्रकार सुनिश्चित करें?

प्राणायाम और ध्यान प्रक्रिया के माध्यम से वायु हमें दिव्य ज्ञान और विवेकशीलता प्रदान करती है। एक बार जब यह अभ्यास जीवन में स्थापित हो जाता है तो यह आत्मा की भावी यात्रा पर भी जारी रहता है। इस प्रकार आन्तरिक आध्यात्मिक प्रगति सुनिश्चित होती है। आध्यात्मिक यात्रा पर बढ़ने के लिए वायु ही एक मात्र माध्यम है।

ऋग्वेद मन्त्र 1.37.4

प्र वः शर्धाय घृष्ये त्वेषद्युम्नाय शुभिणे ।

देवतं ब्रह्म गायत ॥ 4 ॥

प्र — गायत् से पूर्व लगाकर

वः — आपके

शर्धाय — प्राणों के बल के लिए

घृष्ये — शत्रुओं को कमजोर करने के लिए

त्वेषद्युम्नाय — प्रकाशित ज्ञान और चमकदार प्रसिद्धि देने वाला

शुभिणे — शत्रुओं का नाश करने वाला

देवतम् — परमात्मा द्वारा प्रदत्

ब्रह्म — सर्वोच्च ज्ञान

(गायत — प्र गायत) — भक्ति के साथ खूब गान।

व्याख्या :-

जीवन में प्राण किस प्रकार लाभकारी है?

प्राणों की शक्ति निम्न दिव्य कार्य करने के लिए सक्षम है :-

(क) घृष्ये — शत्रुओं को कमजोर करने के लिए,

(ख) त्वेषद्युम्नाय — प्रकाशित ज्ञान और चमकदार प्रसिद्धि देने वाला,

(ग) शुभिणे — शत्रुओं का नाश करने वाला।

अतः हमें पूरी भक्ति भावना के साथ उस सर्वोच्च ज्ञान का गान करना चाहिए जो परमात्मा ने हमें प्राणों के माध्यम से दिया, जिसे प्राणायाम और ध्यान प्रक्रियाओं से नियमित किया गया।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

जीवन में सार्थकता

वायु के साथ ध्यान क्यों करें?

सर्वोच्च ज्ञान और सर्वोच्च दाता की गरिमा का गान करो।

प्राणों को प्राणायाम साधना के माध्यम से नियमित करने के महत्व को समझना चाहिए। प्राणायाम हमें शारीरिक, मानसिक तथा आध्यात्मिक स्तरों पर अधिकतम लाभ प्रदान करते हैं। प्राणायाम प्रक्रियाओं का परिणाम प्रकाशित ज्ञान और गरिमामयि प्रसिद्धि के रूप में प्राप्त होता है। ऐसा अनुभूति प्राप्त ज्ञान सभी शत्रुतापूर्ण विचारों को कमज़ोर करके उनका नाश कर देता है। परमात्मा ही सर्वोच्च ज्ञान का दाता है। अतः उस सर्वोच्च दाता, परमात्मा, तथा उसकी सर्वोच्च भेंट अर्थात् सत्य ज्ञान के बारे में हमें पूरी भवित और भावनाओं के साथ गान करना चाहिए।

ऋग्वेद मन्त्र 1.37.5

प्रशंसा गोष्ठद्यं क्रीळं यच्छर्धो मारुतम् ।
जम्भे रसस्य वावृधे ॥ ५ ॥

प्रशंस – प्रशंसा, शिक्षा

गोषु – पदार्थ, इन्द्रियाँ, गाय आदि पशु

अद्यम् – अनाशवान

क्रीळम् – सभी कार्यों के लिए, खेल के लिए

यत् – वह

शर्धः – शक्ति, बल

मारुतः – वायु के

जम्भे – मुख में

रसस्य – भोजन के रस, शक्ति

वावृधे – बढ़ते हैं।

व्याख्या :-

वायु प्रशंसनीय क्यों है?

वायु की शक्ति अविनाशी है। यह प्रशंसनीय है क्योंकि :-

(क) यह सभी पदार्थों, इन्द्रियों और सभी जीवों के जीवन का आधार है,

(ख) यह हमारी सभी कीड़ाओं और गतिविधियों का आधार है,

(ग) मुख में यह वायु खाए गये भोजन का रस तथा जीवनी शक्ति पैदा करती है।

हमें वायु की शक्ति के बारे में अन्य लोगों को भी शिक्षित करना चाहिए।

जीवन में सार्थकता

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

वायु की शक्ति कैसे बढ़ाई जाए?

वायु हमारे जीवन का महत्वपूर्ण तत्व है और सम्पूर्ण सृष्टि के अस्तित्व का आधार है। वायु के बिना कोई भी कार्य नहीं किया जा सकता। वायु न होने का अर्थ है श्वास नहीं और जीवन नहीं। वायु हमारे मुख में एक औषधि की तरह महत्वपूर्ण है। वायु लार की उत्पत्ति में सहायता करती है जिससे भोजन चबाया जाता है। इसलिए, मुख में भोजन के प्रत्येक टुकड़े के साथ हमें चिकित्सिय महत्व वाली इस वायु प्रक्रिया तथा लार उत्पत्ति पर ध्यान केन्द्रित करना चाहिए। हमें प्रत्येक ग्रास अधिक से अधिक बार चबाना चाहिए।

एक खिलाड़ी की भावना का विकास करने के लिए हमें वायु की शक्ति बढ़ानी चाहिए।

ऋग्वेद मन्त्र 1.37.6

को वो वर्षिष्ठ आ नरो दिवश्च ग्मश्च धूतयः ।
यत्सीमन्तं न धूनुथ ॥ 6 ॥

कः – कौन

वः – हे वह

वर्षिष्ठः – ज्ञान की सर्वोच्च वर्षा करने वाला
(आ – धूनुथ से पूर्व लगाकर)

नरः – शरीर को बुद्धिमता से चलाने वाले

दिवः – सूर्य के समान प्रकाशवान, प्रकाशित बुद्धि

च – और

ग्मः – अप्रकाशवान, हमारा भौतिक शरीर

च – और

धूतयः – पवित्र करने के लिए कम्पित करता है

यत् – जब

सीम् – सब दिशाओं से

अन्तम् – अन्तिम

न – जैसे

धूनुथ (आ धूनुथ) – अच्छी तरह कम्पित करता है।

व्याख्या :-

प्रकाशवान और अप्रकाशवान शरीरों को कौन कम्पित करता है?

हमारे शरीर और मन को कौन कम्पित करता है?

ज्ञान की सर्वोच्च वर्षा करने वाला कौन है?

कौन सभी शरीरों को बुद्धिमत्तापूर्वक कम्पित करने का कार्य करता है?

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पञ्चवती वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

प्रकाशवान शरीरों से अभिप्राय है सूर्य आदि, प्रकाशित मस्तिष्क।
अप्रकाशवान शरीरों से अभिप्राय है धरती आदि, अप्रकाशित मरने योग्य शरीर।
परमात्मा की कम्पन्न शक्ति उस प्रकार है जैसे गंडे कपड़ों से धूल आदि हटाने के लिए उन्हें कम्पित करना।

जीवन में सार्थकता

कम्पित करने का क्या उद्देश्य है?
कम्पित करने का उद्देश्य शुद्ध करना है। परमात्मा समस्त शरीरों को शुद्ध करने के लिए ही कम्पित करते हैं।
एक छात्र को शिक्षा के लिए गुरु कम्पित करता है।
एक न्यायाधीश सजा के द्वारा अपराधी को कम्पित करता है, जिससे वह अपराध का त्याग करे।
राष्ट्र की रक्षा के लिए राष्ट्रविरोधी तत्वों को कम्पित किया जाता है।
रोगी के रोगों को दूर करने के लिए एक चिकित्सक उसे कम्पित करता है।

ऋग्वेद मन्त्र 1.37.7

नि वो यामाय मानुषो दध्र उग्राय मन्यवे।
जिहीत पर्वतो गिरिः ॥ ७ ॥

(नि – दध्रे से पूर्व लगाकर)

वः – वह

यामाय – इन्द्रियों पर उचित नियंत्रण के बाद उचित व्यवहार

मानुषः – एक बुद्धिमान नेता, मार्गदर्शक

(दध्रे – नि दध्रे) – निश्चित रूप से धारण करता है

उग्राय – अत्यन्त शक्तिशाली

मन्यवे – रोष

जिहीत – भागना

पर्वतः – पर्वतों पर

गिरिः – बादल।

व्याख्या :-

एक बुद्धिमान नेता और मार्गदर्शक कौन बनता है?

बुराईयों और धूर्त वृत्तियों को कैसे भगाए?

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



जो लोग इन्द्रियों पर उचित नियंत्रण के बाद अपने श्वांसों पर नियंत्रण कर लेते हैं और जो लोग उचित व्यवहार प्रस्तुत करते हैं, वे एक बुद्धिमान नेता और मार्गदर्शक बनने के योग्य हैं और निश्चित रूप से धूर्त व्यक्तियों और विचारों के विरुद्ध प्रबल रोष रखते हैं। ऐसे लोगों की उपरिथिति में बुराईयाँ और धूर्त वृत्तियाँ ऐसे दूर भाग जाती हैं जैसे पहाड़ों पर बिखरे बादल जोरदार हवा के चलने से भाग जाते हैं।

जीवन में सार्थकता

सत्य की सदा विजय होती है। तपस्या का सदा राज होता है।

जब एक नेता, मार्गदर्शक, उच्चाधिकारी, गुरु या माता-पिता त्याग तपस्या करते हैं तो उनके अनुयायी स्वतः ही सरक्षित हो जाते हैं। ऐसे लोग पूरे समाज के सच्चे नेता बनते हैं। तपस्या और बुराईयाँ इकट्ठी नहीं रह सकती। तपस्या सूर्य की भाँती एक महान और शक्तिशाली अग्नि है और वायु की तरह प्रभावशाली है जो डरे हुए बादलों को भागने के लिए मजबूर कर देती है तथा दुर्गंध और रोगों का भी नाश कर देती है। श्वास तथा इन्द्रियों पर नियंत्रण के बाद ही तपस्या की जाती है।

ऋग्वेद मन्त्र 1.37.8

येषामज्मेषु पृथिवी जुजुवाँश्व विश्पतिः।
भिया यामेषु रेजते ॥ ८ ॥

येषाम् – वे (वायु, श्वांस)

अज्मेषु – गति देने में सक्षम

पृथिवी – भूमि आदि

जुजुवाँश्वनिव – पुरानी और कमजोर स्थिति में पहुँचा

विश्पतिः – सब लोगों का रक्षक (राजा)

भिया – भय से

यामेषु – अपने निर्धारित स्थानों पर

रेजते – गति करता।

व्याख्या :-

ब्रह्माण्ड में सबको गतिमान करने के लिए कौन सक्षम है?

एक कमजोर राजा, बुढ़ापे की अवस्था के कारण, अपने रोगों से या शत्रुओं के हमले से काँपता रहता है। इसी प्रकार धरती अपने—अपने निर्धारित स्थानों पर तथा कक्षों में घूमती हैं क्योंकि वायु सबको गतिमान करने में सक्षम है।

जीवन में सार्थकता

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

चमत्कारी आध्यात्मिक पथ पर गति कैसे करें?

भौतिकवादी समाज विश्वास करता है – “धन ही राजा को गतिमान करता है।” परन्तु वेद की घोषणा है – “वायु सबको गतिमान करती है।”

भौतिकवादी विचार भ्रष्टाचारी बुद्धि की तरफ संकेत करता है जबकी वैदिक विचार आध्यात्मिकता के सच्चे विज्ञान की तरफ संकेत करता है। महान संतो और योगियों ने यह सिद्ध करने के लिए श्वास नियंत्रण से ही कड़ी तपस्याँए की है कि उनके इशारे पर चमत्कार हो सकते हैं।

अतः, प्रत्येक व्यक्ति को प्राणायाम अभ्यास के साथ ध्यान साधना करनी चाहिए जिससे वह अपना ज्ञान और मस्तिष्क शक्ति बढ़ा सके। इन्द्रियों को इच्छाओं के बंधन से मुक्त ध्यान साधना वाला जीवन प्रत्येक कदम पर ऐसे चमत्कारों की अनुभूति करता है। ऐसा जीवन सभी प्रकार की कमजोरियों से भी मुक्त होता है।

ध्यान साधना तथा प्राणायाम अभ्यासों के बिना लोग अपनी इन्द्रियों की इच्छाओं के जाल में ही फंसे रह जाते हैं और अपने जीवन को अन्तहीन भौतिकवादी लक्ष्यों के पीछे नष्ट कर देते हैं।

ऋग्वेद मन्त्र 1.37.9

स्थिरं हि जानमेषां वयो मातुर्निरेतवे ।
यत्सीमनु द्विता शवः ॥ १ ॥

स्थिरम् – स्थिर, गतिहीन

हि – निश्चित रूप से

जानम् – जन्म स्थान (आकाश)

एषाम् – इसका (वायु)

वयः – गतिशील प्राण, पक्षी आदि

मातुः – एक योगी के लिए

निर एतवे – जन्म और मृत्यु के चक से बाहर

यत् – जिसका

सीम् – सब

अनु – उचित अनुसरण

द्विता – दोनों का (शरीर और मन, स्पर्श और शब्द)

शवः – शक्ति ।

व्याख्या :-

वायु का जन्म स्थान क्या है?

वायु का जन्म स्थान आकाश है जो स्थिर और गतिहीन है। योगी के द्वारा नियंत्रण में किया गया श्वास उसे मुक्त का अधिकारी बनाकर जीवन और मृत्यु के चक से बाहर कर देता है।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

प्रत्येक व्यक्ति को अपने शरीर और मन की शक्ति के लिए वायु की शक्ति का उचित अनुसरण करना चाहिए। पक्षी भी वायुमंडल के मध्य में उड़ते हैं क्योंकि उनके शरीर वायु की गति के अनुकूल निर्धारित होते हैं। स्पर्श और शब्दों की शक्ति भी वायु ही है।

जीवन में सार्थकता

अपने मन को स्थिर कैसे करें?

अपने जीवन को प्रभावशाली कैसे बनाएं?

वायु का विज्ञान एक आध्यात्मिक सिद्धांत प्रस्तुत करता है – “एक गतिहीन तत्व असंख्य गतिविधियों को जन्म दे सकता है। एक गतिहीन तत्व गति पैदा कर सकता है।”

यदि हमारा मन स्थिर है तो हम अपने शरीर का अधिक प्रभावशाली उपयोग कर सकते हैं। अपने मन को स्थिर करने के लिए हमें वायु पर अर्थात् अपने श्वास पर अवश्य ध्यान करना चाहिए। ब्रह्माण्ड में सभी गतिविधियों का कारण वायु है, यहाँ तक की हमारे जन्म और मरण का कारण भी वायु है। यदि यह वायु नियंत्रित हो जाए, हमारा स्थिर मन हमें मुक्ति तक ले जायेगा अर्थात् जीवन और मृत्यु के चक्र का अन्त।

एक योग ग्रन्थ का प्रसिद्ध कथन है – “चले वाते, चले चित्तं, निश्चलं निश्चले भवेत्।” इसका अर्थ है – जब वायु चलती है तो मन भी चलता है और यदि वायु रुक जाये तो मन भी रुक जाता है। इस प्रकार, यह केवल वायु ही है जो हमारे मन को चलाती है। यदि हम वायु के आवागमन को रोक लें तो मन भी रुक जायेगा।

ऋग्वेद मन्त्र 1.37.10

उदु त्ये सूनवो गिरः काष्ठा अज्मेष्वल्तत |
वाश्रा अभिज्ञु यातवे || 10 ||

उत् उ – हमें प्रगतिशील बनाते हैं

त्ये – वे (प्राण, वायु)

सूनवः – प्रेरणा करते हैं

गिरः – वाणियाँ (बोले गये भारी शब्द तथा आन्तरिक अनुभूति प्राप्त ज्ञान)

काष्ठः – यह जीवन, जल

अज्मेषु – शुद्धि के बाद गति के साथ

अल्तत् – विस्तार, लक्ष्य तक पहुँचना

वाश्रा – वाणियों के साथ (परमात्मा की प्रशंसा युक्त)

अभिज्ञु – ज्ञुकर्ते हुए, विनम्र

यातवे – यात्रा पर प्रगति करो।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

व्याख्या :-

वायु किस प्रकार हमारी आत्मा की यात्रा की प्रगति सुनिश्चित कर सकती है?

ये प्राण, वायु, ही हमें यात्रा पर प्रगति के योग्य बनाते हैं। यही हमारी वाणियों, बाहरी बोले गये शब्द तथा अन्दर परमात्मा की वाणी, वेद, अनुभूति प्राप्त ज्ञान, के प्रेरक हैं। यह जीवन शुद्धिकरण के बाद अपने लक्ष्य तक पहुँचने के लिए ओग बढ़ता है।

श्रेष्ठ और विनम्र वाणी के साथ ही कोई व्यक्ति जाघों के बल झुकी हुई गाय के समान दिखता है और यात्रा पर तीव्र प्रगति करता है।

जीवन में सार्थकता

क्या हमारी आत्मा की यात्रा में सांसारिक और आध्यात्मिक दोनों पक्ष जुड़े हैं?

दोनों स्तरों पर सफलता कैसे प्राप्त करें?

हम मुख से जो भी शब्द निकालते हैं वे केवल वायु के कारण ही सम्भव होते हैं। प्राणायाम तथा ध्यान साधना के अभ्यास से इस वायु पर ध्यान करके हम अपने शब्दों को श्रेष्ठ और विनम्र बना सकते हैं। हमारी वाणी शुद्ध हो जायेगी और आत्मा की यात्रा पर हमारी गति तीव्र हो सकती है। श्रेष्ठ वाणियों की तुलना जांघ पर झुकी हुई गाय से की जाती है।

- (क) वायु पर ध्यान करों जो सब वाणियों की प्रेरक है,
- (ख) अपनी वाणियों को शुद्ध करों,
- (ग) एक विनम्र व्यक्तित्व बनों।

यह तीन प्रयास निश्चित रूप से हमारे जीवन की सांसारिक और आध्यात्मिक यात्रा पर सफलता सुनिश्चित कर सकते हैं।

ऋग्वेद मन्त्र 1.37.11

त्यं चिद् घा दीर्घं पृथुं मिहो नपातममृधम् ।
प्र च्यावयन्ति यामभिः ॥ 11 ॥

त्यम् – ये (वायु, प्राण)

चित् घ – मन पर आवरण

दीर्घम् – बहुत लम्बा, अन्तर्हीन

पृथुम् – विस्तरित (आकाश में बादलों की तरह)

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

मिहः – आनंद की वर्षा न होना
नपातम् – ज्ञान की वर्षा को रोकता है
अमृध्रम् – सरलता से मरता नहीं
प्र च्यावयन्ति – एक शत्रु की तरह नष्ट करता है
यामभिः – अपनी गति के साथ।

व्याख्या :-

मन के आवरण के क्या लक्षण हैं?

मन के आवरण से छुटकारा कैसे प्राप्त करें?

वायु अर्थात् प्राण, श्वास नियंत्रण की प्रक्रियाओं की गति के साथ, मन के आवरण को एक शत्रु की तरह नष्ट कर देते हैं। हमारी इच्छाएँ और अंहकार अर्थात् अज्ञानता हमारे मन का आवरण बन जाती हैं और इसे एक शांत जीवन के लिए महान विवेक का लाभ प्राप्त करने देती। मन के यह आवरण निम्न हैं :-

- (क) दीर्घम् – बहुत लम्बे, अन्तहीन,
- (ख) पृथुम् – विस्तरित (आकाश में बादलों की तरह),
- (ग) मिहः – आनंद की वर्षा न होने देने वाले,
- (घ) नपातम् – ज्ञान की वर्षा को रोकने वाले,
- (ङ) अमृध्रम् – सरलता से मरते नहीं।

परन्तु जब एक योगी, एक भक्त, प्राणों को नियंत्रण में रखता है तो मन के यह आवरण नष्ट होने लगते हैं।

वैज्ञानिक अर्थ – वायु बादलों के रूप में आवरणों को नष्ट कर देती है। बादलों के इन आवरणों के भी यही उक्त पाँच लक्षण होते हैं। वे बहुत लम्बे होते हैं, विस्तरित होते हैं, देखने में अच्छे लगते हैं परन्तु स्वतः बरसते नहीं, वर्षा को रोकते हैं और सरलता से मरते नहीं। परन्तु वायु इनको कमजोर करके इन्हें हटा देती है।

जीवन में सार्थकता

हमारी इच्छाओं और अंहकार के क्या लक्षण हैं?

हमारी इच्छाएँ और अंहकार अर्थात् अज्ञानता हमारे मन के ऊपर आवरण हैं और शांत जीवन में बहुत बड़ी बाधा का निर्माण करते हैं। वे लम्बे समय तक सक्रिय रहते हैं और लम्बे समय तथा सुदूर स्थानों तक विस्तरित रहते हैं। ये आनन्ददायक दिखते हैं परन्तु आधारहीन होते हैं। ये मन में महान और उचित ज्ञान का विकास नहीं होने देते। ये आसानी से मरते नहीं। हम केवल प्राणायाम की श्वास नियंत्रक प्रक्रियाओं के माध्यम से ही इन आवरणों से छुटकारा प्राप्त कर सकते हैं। वायु सर्वोच्च ऊर्जा के अत्यन्त निकट है और सदैव उसके सम्पर्क में रहती है। (सन्दर्भ ऋग्वेद 1.22.4).

ऋग्वेद मन्त्र 1.37.12

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

मरुतो यद्व वो बलं जनाँ अचुच्यवीतन ।
गिरीरचुच्यवीतन ॥ 12 ॥

मरुतः – वायु, प्राण
यत् ह – जो प्रसिद्ध है
वः – आपकी
बलम् – शक्ति, बल
जनान् – लोगों को
अचुच्यवीतन् – गतिदेता, प्रेरणा करता, शुद्ध करता है
गिरीन् – पर्वतों को (बादलों के, अज्ञानता के)
अचुच्यवीतन् – गतिदेता, प्रेरणा करता, शुद्ध करता है ।

व्याख्या :-

कौन सबको गतिमान करता है?

वायु की शक्ति निश्चित रूप से सर्वविदित है कि यह गति देती है, प्रेरणा देती है और सब लोगों को शुद्ध करती है, यहाँ तक कि बादलों और अज्ञानता के पहाड़ों को भी । जब हम वायु पर ध्यान केंद्रित करते हैं, ध्यान साधना करते हैं और अपने प्राणों की शक्ति का सदुपयोग करते हैं तो हमारे मस्तिष्क में बने हुए अंहकार और अज्ञानता के पर्वत नष्ट हो जाते हैं । हम शुद्ध हो जाते हैं और हमें बुद्धिमता प्राप्त होती है ।

जीवन में सार्थकता

वायु किस प्रकार पूर्ण स्वास्थ सुनिश्चित करती है – अर्थात् शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक स्वास्थ? यदि हम प्रतिदिन नियमित रूप से प्राणायाम साधना करें तो हमारा भौतिक शरीर विषाणु रहित हो जाता है ।

हमारा मानसिक शरीर शुद्ध हो कर अधिकाधिक दिव्य ज्ञान प्राप्त करता है ।

आध्यात्मिक रूप से हम अनुभूति के पथ पर सफल हो सकते हैं ।

इस प्रकार वायु से शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक स्वास्थ्य के साथ पूर्ण स्वास्थ्य सुनिश्चित होता है ।

प्रत्येक राजा, प्रत्येक उच्चाधिकारी, माता-पिता तथा गुरुओं को वायु की तरह स्वयं को शक्तिशाली बनाना चाहिए जिससे वे अपने अनुयायिओं को श्रेष्ठता के पथ पर तथा बुराइयों से दूर करने के लिए गतिमान कर सकें, प्रेरणा दे सकें और शुद्ध कर सकें ।

ऋग्वेद मन्त्र 1.37.13

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

यद्ध यान्ति मरुतः सं ह ब्रुवतेऽध्वना ।
शृणोति कश्चिदेषाम् ॥ 13 ॥

यत् – जो
ह – निश्चित रूप से
यान्ति – आते और जाते
मरुतः – वायु, प्राण
सम् – समान रूप से
ह – निश्चित रूप से
ब्रुवते – प्रेरणा और उत्थान
अध्वना – प्रत्येक मार्ग पर
शृणोति – सुनते हैं
कर्पित् – विरला ही कोई, जो
एषाम् – वायु, प्राणों की ध्वनि ।

व्याख्या :-

प्राण तो सबको उपलब्ध है परन्तु कितने लोग इसके लाभ के प्रति सचेत हैं?

वायु अर्थात् प्राण निश्चित रूप से प्रतिक्षण हमारे शरीर के अन्दर आते हैं और बाहर जाते हैं। ये निश्चित रूप से हमें प्रेरणा देने और जीवन मार्ग पर उत्थान करने में सक्षम है, परन्तु बहुत कम लोग इन प्राणों की वाणियों को सुनने में सक्षम होते हैं।

जीवन में सार्थकता

प्राणों का क्या महत्व है?

प्राण प्रतिक्षण बहने वाली दिव्य ऊर्जा है। हमारा श्वास इडा और पिंगला नाड़ी के माध्यम से पूरे पथ पर गतिमान है। ये दो वायु मार्ग हैं जो रीढ़ के माध्यम से तीसरे सरस्वती मार्ग में मिल जाते हैं। इसके उपरान्त यह वायु मार्ग सिर के सर्वोच्च स्थान ब्रह्मरन्ध्र तक पहुँचता है। इस मार्ग में वायु सभी चक्रों से होकर गति करती है – मूलाधार, स्वाधिष्ठान, मणिपुर, अनाहत, विशुद्धि, आज्ञा और सहस्रार।

अतः वायु पर गहरी और लंबी ध्यान साधना निश्चित रूप से हमें इन प्राणों के प्रभाव को जानने में सहायता कर सकती है, और हमें अपने शरीर और मन पर नियंत्रण करने में सक्षम बना सकती है। अन्ततः चमत्कार की तरह हम अपने जीवन में दिव्य प्रेरणाओं की अनुभूति प्राप्त कर सकते हैं।

ऐसी ध्यान साधनाएँ सबके लिए समान रूप से लाभकारी सिद्ध होती हैं – एक भौतिक वादी या आध्यात्मिक व्यक्ति, एक अमीर या गरीब व्यक्ति, एक शिक्षित या अशिक्षित व्यक्ति। परन्तु बहुत ही कम लोग एक सार्थक जीवन, शांत, स्वस्थ और आध्यात्मिक जीवन के लिए इन प्राणों का प्रयोग कर पाते हैं।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

ऋग्वेद मन्त्र 1.37.14

प्र यात शीभमाशुभिः सन्ति कण्वेषु वो दुवः।
तत्रे षु मादयाधौ ॥ 14 ॥

प्र यात – प्रगति, लक्ष्य तक पहुँचना
शीभम् – शीघ्रता से
आशुभिः – कड़ी मेहनत करने वाले पुरुष के साथ
सन्ति – हो
कण्वेषु – महान् अनुभूति प्राप्त विद्वानों में
वः – आपके
दुवः – आपका कल्याण
तत्र उ – वहाँ उनमें
सु मादयाधौ – उत्तम सन्तुष्टि ।

व्याख्या :-

शीघ्रता से कार्य करने का क्या महत्व है?

प्रत्येक व्यक्ति को अपने गन्तव्य तक प्रगति करने के लिए शीघ्रता से मेहनत करने वाले लोगों के साथ कार्य करना चाहिए। आपका कल्याण इसी में है कि आप महान अनुभूति प्राप्त बुद्धिमानों की संगति में रहें। ऐसे लोगों के साथ ही कोई व्यक्ति गहरे और सुन्दर संतोष को प्राप्त कर सकता है।

जीवन में सार्थकता

गहरे संतोष के साथ अपने गन्तव्य तक कैसे पहुँचे?

वायु अथवा प्राण जो हम श्वास द्वारा ग्रहण करते हैं वे एक क्षण भी गवाए बिना शीघ्रतापूर्वक अपने गन्तव्य तक पहुँचते हैं। हमारे प्राण एक क्षण के लिए भी कहीं रुकते नहीं हैं। प्राणों का शीघ्रतापूर्वक कार्य करना ही हमारे स्वास्थ्य का सूत्र है। इसी प्रकार, प्राणों की तरह, हमें अपने दायित्व शीघ्रतापूर्वक पूर्ण करने चाहिए।

प्रत्येक क्षेत्र में हमारे सक्रिय और ऊर्जावान कार्य ही हमारी आध्यत्मिक प्रगति को भी सुनिश्चित करते हैं। कर्मों को समाप्त किए बिना हम आध्यत्मिक प्रगति नहीं कर सकतें। कर्मों को शीघ्रता से करने वाला व्यक्ति एक श्रेष्ठ जीवन जीते हुए अपने आध्यत्मिक स्तर के गन्तव्य पहुँच पाता है। ऐसे जीवन के लिए, हमें सक्रिय और ऊर्जावान लोगों की संगति में रहना चाहिए।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

अनुभूति प्राप्त बुद्धिमानों को ही कण्ठ कहा जाता है। उन्होंने अपने सांसारिक कर्मों को पूर्ण करने के बाद इच्छारहित और अंहकाररहित अवस्था को प्राप्त किया जिससे वे आध्यात्मिक उत्थान प्राप्त कर सकें।

ऋग्वेद मन्त्र 1.37.15

अस्ति हि ष्मा मदाय वः स्मसि ष्मा वयमेषाम् ।
विश्वं चिदायुर्जीवसे ॥ 15 ॥

अस्ति – हो
हि – निश्चित रूप से
ष्मा – निरन्तरता के लिए
मदाय – आनन्द
वः – आपके
स्मसि – हो
ष्मा – निरन्तरता के लिए
वयम् – हम
एषाम् – इनके (वायु, प्राण)
विश्वम् – सब
चित् – निश्चित रूप से
आयुः – जीवन
जीवसे – जीने के लिए ।

व्याख्या :-

जीवन में हमारा स्थाई सहयोगी कौन है?
स्थाई सहयोगी निश्चित रूप से हमारे स्थाई आनन्द के लिए है। हम भी स्थाई रूप से उनके लिए है। ऐसी संगति पूर्ण जीवन की संगति सुनिश्चित करती है।
इस सूक्त के देवता मरुतः अर्थात् वायु है। अतः यह मन्त्र वायु को सम्बोधित करता है जो हमारी स्थाई सहयोगी है।

जीवन में सार्थकता

जीवन के सभी क्षेत्रों में किस प्रकार की साधना सहायक होती है?
वायु अर्थात् हमारे श्वास, हमारे स्थाई आनन्द के लिए है। सांसारिक वस्तुओं के पीछे भागने वाला एक भौतिक जीवन हो या अनुभूति की इच्छा वाला एक आध्यात्मिक जीवन, दोनों श्वासों पर निर्भर करते हैं।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

प्राण ध्यान साधना में हमें अपने श्वासों को नियंत्रित करने का अभ्यास करना चाहिए। इसका अभिप्राय है अपने छोटे-छोटे लक्षणों और इच्छाओं को विश्राम देना तथा जीवन के अन्तिम लक्ष्य पर ध्यान केन्द्रित करना। उस अन्तिम लक्ष्य की प्राप्ति तक यह श्वास हमारे स्थाई सहयोगी बने रहेंगे और जीवन के किसी भी क्षेत्र में हमारी प्रेरणाओं तथा शुद्धि में सहायक होंगे।

ऋग्वेद मण्डल-1 सूक्त 38

वैदिक विवेक, आध्यात्मिकता और वेद स्वाध्याय
ऋग्वेद मन्त्र 1.38.1

कद्म नूनं कधप्रियः पिता पुत्रं न हस्तयोः।
दधिध्वे वृत्तबर्हिषः ॥ १ ॥

कत् ह – कब निश्चय से

नूनम् – मेरे त्याग, पूजा

कधप्रियः – प्राणों के साथ प्रेम, वाणी और कथाओं के साथ प्रेम, प्राणों से उत्पन्न शक्ति

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

पिता – पिता

पुत्रम् – पुत्र को

न – जैसे

हस्तयोः – हाथ में धारण करता है

दधिधे – धारण करोगे

वृत्त बर्हिषः – पवित्र हृदय में।

व्याख्या :-

परमात्मा के प्रति हमारे प्रेम को परमात्मा किस प्रकार धारण करते हैं?

हे परमात्मा! आपको मैं अपने प्राणों के माध्यम से प्रेम करता हूँ; प्राणायाम ध्यान साधना के माध्यम से प्रेम करता हूँ, वाणियों और कथाओं के माध्यम से प्रेम करता हूँ। मेरी इन सब क्रियाओं को प्राणों से ही शक्ति मिलती है। आप मेरे इन त्याग कार्यों, पूजा और प्रशंसा कार्यों को निश्चित रूप से कब धारण करेंगे, जैसे एक पिता पुत्र के हाथ पकड़ कर रखता है। यह सब कार्य मेरे शुद्ध और पवित्र हृदय में से आते हैं।

जीवन में सार्थकता

परमात्मा हमारे त्याग कार्यों को किस प्रकार धारण करते हैं?

अपने प्रत्येक कार्य को प्राणों के साथ सम्बद्ध रखो।

मैं परमात्मा को तीन प्रकार से प्रेम करता हूँ :–

(क) अपने प्राणों के माध्यम से,

(ख) अपनी वाणियों और कथाओं के माध्यम से,

(ग) अपने त्याग कार्यों के माध्यम से।

वास्तव में हमारे शरीर और मन के द्वारा किये गये सभी कार्य प्राणों से शक्ति प्राप्त करते हैं। हमें यह अनुभूति रहनी चाहिए कि हम जीवन में जो भी कार्य करते हैं, वह सब उन प्राणों के माध्यम से ही सम्भव हो पाते हैं, जो परमात्मा द्वारा हमें प्रदान किए गए हैं।

अतः हमें अपने प्रत्येक कार्य को प्राणों के साथ सम्बद्ध रखना चाहिए। यह अपना प्रत्येक कार्य परमात्मा के प्रति समर्पण की भाँति होगा। इस प्रकार हमारा गहरा हृदय पूरी तरह से शुद्ध हो जाएगा और हमारे सभी कार्यों को परमात्मा उस प्रकार स्वीकार करेंगे, जैसे एक पिता अपने पुत्र को हाथों में धारण करता है।

हमारी सभी इन्द्रियाँ भिन्न-भिन्न प्रकार के कार्य केवल प्राणों के कारण ही सम्पन्न कर पाती हैं। इन्द्रियों के सभी अंग भौतिक अंग होने के कारण अपना कार्य बंद कर सकते हैं, परन्तु प्राण परमात्मा की इच्छा तक अपना कार्य बन्द नहीं करते।

ऋग्वेद मन्त्र 1.38.2

व नूनं कद्मो अर्थं गन्ता दिवो न पृथिव्याः।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

क्व वो गावो न रण्यन्ति ॥ २ ॥

क्व — कहाँ है

नूनम् — त्याग, पूजा

कत् — कब

वः — आपके

अर्थम् — उद्देश्य

गन्त — प्राप्त होगा

दिवः — सूर्य की किरणें

न — जैसे कि

पृथिव्या: — पृथिवी

क्व — कहाँ है

वः — आपकी

गावः — गाय

न — नहीं

रण्यन्ति — ध्वनि करती ।

व्याख्या :-

हमारे त्याग और पूजा कहाँ हैं?

हम जीवन के उद्देश्य को कब प्राप्त कर पायेंगे?

जिन त्याग कार्यों और पूजा को आपने प्राणों की सम्बद्धता के साथ अनुभव किया, वे कहाँ पर हैं?

जिस प्रकार सूर्य की किरणें अपने लक्ष्य की तरह धरती को प्राप्त करती हैं, उस प्रकार आपको अपने जीवन का उद्देश्य कब प्राप्त होगा?

आपका वह लक्ष्य कहाँ है, जैसा गायों का होता है, जो उस वक्त ध्वनि पैदा करना बंद कर देती है, जब वे अपने बछड़ों को मिलती हैं?

जीवन में सार्थकता

जब हम अपने गन्तव्य पर पहुँचेंगे तो हमारी क्या अवस्था होगी?

हमारे त्याग कार्यों और पूजा का परिणाम दूसरों का कल्याण होता है। सूर्य की किरणों का लाभ सबके द्वारा तभी अनुभव किया जाता है, जब वे धरती पर पहुँच जाती हैं। उसी प्रकार हमारी सब योग्यताएं, गुण, साधन और सामान तभी लाभकारी सिद्ध होंगे, जब उनका लाभ सबको प्राप्त हो।

हमारा गन्तव्य ऐसा स्थान होना चाहिए, जो उन गायों के गन्तव्य की तरह हो, जो अपने बछड़ों को मिलने के बाद ध्वनि करनी बंद कर देती हैं और शान्त तथा सन्तुष्ट हो जाती हैं। इसी प्रकार हमारा गन्तव्य अपने सर्वोच्च पिता परमात्मा के साथ एकता की अनुभूति होना चाहिए क्योंकि उस वक्त हमारी इन्द्रियाँ अपने अहंकार और इच्छाओं की ध्वनि करना बंद कर देंगी।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

जीवन का वास्तविक और अन्तिम उद्देश्य प्राप्त करने के लिए हमें दूसरों के कल्याण के लिए कार्य करने की समझ और अभ्यास होना चाहिए, इससे जो संतोष प्राप्त होगा, वह उसी गाय के समान होगा, जो अपने बछड़ों को मिलने के बाद ध्वनि नहीं करती।

ऋग्वेद मन्त्र 1.38.3

क्व वः सुम्ना नव्यांसि मरुतः क्व सुविता ।
क्वोऽ विश्वानि सौभगाः ॥ ३ ॥

क्व — कहाँ है

वः — आपके

सुम्ना — सुविधाएं

नव्यांसि — नई

मरुतः — प्राण, वायु

क्व — कहाँ है

सुविता — उत्तम लक्षण, योग्यताएं

क्व — कहाँ है

उ — और

विश्वानि — सब

सौभगा — सौभाग्य ।

व्याख्या :-

प्राण ध्यान अर्थात् अपने श्वांस पर ध्यान करने के क्या लाभ हैं?

प्राणों के सम्बन्ध में हमारे तीन प्रश्न हैं :—

(क) तुम्हारी सुविधाएं कहाँ हैं?

(ख) तुम्हारे उत्तम लक्षण और योग्यताएं क्या हैं?

(ग) तुम्हारे समस्त सौभाग्य कहाँ हैं?

हमारी सुविधाओं, हमारे उत्तम लक्षणों, योग्यताओं और सौभाग्य के दाता केवल प्राण ही हैं।

जीवन में सार्थकता

एक सफल जीवन के लिए क्या कदम होते हैं?

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

हमें अपने प्राणों को लेकर उनका अनुसरण करना चाहिए, उन पर ध्यान करना चाहिए और उन पर एकाग्रता बढ़ाने के लिए उनका नियन्त्रण करना चाहिए। हमें प्रत्येक कार्य करते हुए अपने प्राणों की शक्ति का अनुभव और अनुभूति बनाए रखनी चाहिए।

प्राणों पर ध्यान करने से मन भी ध्यानमग्न हो जाता है, जिससे जीवन के किसी भी क्षेत्र में हम अपने कार्यों से अच्छे परिणाम दे सकते हैं।

प्राणायाम ————— एकाग्रता ————— सौभाग्य।

ऋग्वेद मन्त्र 1.38.4

याद्यूं पृश्नमातरो मर्तासः स्यातन् ।
स्तोता वो अमृतः स्यात् ॥ 4 ॥

यत – यद्यपि

यूथम् – तुम सब

पृश्न मातरः – आकाश से उत्पन्न (प्राण)

मर्तासः – मृत्यु के योग्य

स्यातन – है, फिर भी

स्तोता – स्तुति करने वाला, प्रशंसा करने वाला

वः – तुम्हारी

अमृतः – न मरने योग्य

स्यात् – होता है।

व्याख्या :-

कौन मृत्यु के योग्य नहीं है?

ब्रह्माण्ड में हर वस्तु मरने के योग्य है, यहाँ तक कि आकाश द्वारा उत्पन्न प्राण भी। परन्तु जो परमात्मा की प्रशंसा और स्तुति करते हैं, वे मरने के योग्य नहीं होते हैं।

जब एक बार कोई साधक परमात्मा की प्रशंसा और स्तुति के द्वारा तथा त्यागपूर्वक जीवन जीने से परमात्मा की अनुभूति प्राप्त कर लेता है तो वह मुक्ति की अवस्था प्राप्त करता है, अर्थात् न जन्म, न मृत्यु। इस प्रकार वह मरने के योग्य नहीं होता।

जीवन में सार्थकता

किस प्रकार की प्रशंसाएं स्वीकार होती हैं?

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

सांसारिक जीवन में भी प्रत्येक योग्य व्यक्ति की प्रशंसाओं और स्तुतियों के फलस्वरूप कई लाभ और महान सफलताएं प्राप्त होती हैं। आपको अपने सभी जानकार व्यक्तियों की प्रशंसा और स्तुति करनी चाहिए, विशेष रूप से अपने माता-पिता, पति-पत्नी, उच्चाधिकारी, वरिष्ठ जन और महान नेताओं की प्रशंसा, स्तुति तो अत्यावश्यक है। इससे अपनी ईमानदारी और एकता के फलस्वरूप आपको महान लाभ और सफलता प्राप्त होगी।

केवल सच्ची प्रशंसाओं और स्तुतियों को ही स्वीकार किया जाता है, जब उनके साथ सत्य स्वरूप कड़ी मेहनत होती है।

ऋग्वेद मन्त्र 1.38.5

मा वो मृगो न यवसे जरिता भूदजोष्यः ।
पथा यमस्य गादुप ॥ ५ ॥

मा – नहीं

वः – आपकी

मृगः – हिरण

न – जैसे

यवसे – घास खाने के लिए प्रेरित

जरिता – श्रद्धालु, महान विद्वान

भूत – हों

अजोष्यः – उदासीन, असंवेदनशील, पृथक

पथा – पथ

यमस्य – मृत्यु का

गात उप – गमन।

व्याख्या :-

मृत्यु को दूर कैसे रखा जा सकता है?

जैसे एक हिरण प्रेमपूर्वक घास खाता है, आपका श्रद्धालु, एक महान विद्वान आपके प्रति कभी भी उदासीन, असंवेदनशील और पृथक नहीं हो सकता और कभी भी मृत्यु के पथ पर अर्थात् जन्म मृत्यु के चक्र में नहीं फंसता।

जीवन में सार्थकता

रोगों को दूर कैसे रखा जा सकता है?

प्राकृतिक रूप से शाकाहारी बनने के लिए हिरण से सीखो।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

हिरण के उदाहरण का प्रयोग, जिसमें वह प्रेमपूर्वक घास खाता है, एक विशेष उद्देश्य से प्रस्तुत किया गया है – पूर्ण शाकाहार अर्थात् सरल और प्राकृतिक खान–पान जिसमें हिंसा का लेशमात्र भी स्पर्श न हो। एक श्रद्धालु को अप्राकृतिक तथा मांसाहारी भोजन कदापि नहीं करना चाहिए और स्वयं को सर्वोच्च दिव्यता से पृथक् नहीं करना चाहिए। इस प्रकार वह जीवन और मृत्यु के चक्र से मुक्त हो सकता है और स्वाभाविक रूप से रोगों से भी मुक्त हो सकता है। एक रोगी व्यक्ति दर्द और कष्टों से प्रतिक्षण मरता है। रोगों का अर्थ है, वास्तविक मृत्यु से पूर्व अनेकों बार मृत्यु का दर्शन।

भौतिकवादी जीवन रोगों और मृत्यु की तरफ अग्रसर होता है। आध्यात्मिक जीवन पूर्ण स्वस्थ जीवन की तरफ अग्रसर होता है और अन्ततः मुक्ति का मार्ग प्राप्त करता है, जहाँ न जन्म होता है और न मृत्यु। हमें आध्यात्मिक पथ पर इस प्रकार स्वाभाविक रूप से प्रेमपूर्वक जीना चाहिए, जैसे एक हिरण तथा गाय अपने प्राकृतिक खान–पान की तरह प्रेम से घास खाते हैं।

ऋग्वेद मन्त्र 1.38.6

मो षु णः परापरा निर्दृष्टिर्दुर्घणा वधीत् ।
पदीष्ट तृष्णाया सह ॥ 6 ॥

(मो – पदीष्ट से पूर्व लगाकर)

(षु – वधीत से पूर्व लगाकर)

नः – हमें

परापरा – अत्यन्त उत्कृष्ट तथा अत्यन्त निकृष्ट

निर्दृष्टिः – दुराचरण

दुर्घणा – कठिनाई से नष्ट होने योग्य, बुरी तरह नष्ट करने वाला

(वधीत् – षु वधीत) मरने योग्य, नष्ट करने वाला

(पदीष्ट – मो पदीष्ट) कभी न मिलना

तृष्णाया – लोभ (सम्पदा का)

सह – साथ।

व्याख्या :-

बुरी प्रवृत्तियों के क्या लक्षण होते हैं?

प्रत्येक बुरा व्यवहार देखने में सुन्दर लगता होगा, परन्तु अन्ततः दुःख पैदा करता है। ऐसी बुरी प्रवृत्तियों को नष्ट करना बहुत कठिन होता है, जो सब कुछ नष्ट कर देती है। हमें ऐसी बुरी प्रवृत्तियों के साथ तथा धन सम्पदा के लोभ के साथ कभी मृत्यु प्राप्त न हो।

जीवन में सार्थकता

किस प्रकार की मृत्यु को दूर रखा जा सकता है?

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



बुरी प्रवृत्तियों और व्यवहार के निम्न लक्षण होते हैं :-

- (क) ऊपर से देखने में यह बड़े सुखद होते हैं।
- (ख) अन्ततः यह दुःखदायी होते हैं।
- (ग) इनको नष्ट करना बहुत कठिन होता है।
- (घ) यह बहुत बुरे तरीके से हमें नष्ट कर देते हैं, हमारे वर्तमान जीवन को ही नहीं अपितु हमारे भविष्य के जन्मों को भी।
- (ङ) इनमें सामान्यता लोभ—लालच किसी न किसी रूप में अवश्य जुड़े रहते हैं।

सर्वप्रथम अपने बुरे लक्षणों की पहचान करो और तुरन्त उसे नष्ट करने का प्रयास करो। यह प्रयास इसी वर्तमान जीवन में मृत्यु से पूर्व संकल्पित होना चाहिए कि मैं सभी बुरी आदतों को छोड़ दूँगा।

बुरे व्यवहार से व्यक्ति रोगों और दुःखों के रूप में प्रतिदिन मृत्यु को प्राप्त होता है। अतः बुराईयों के साथ मृत्यु को दूर किया जाना चाहिए। मृत्यु से पूर्व जल्दी से जल्दी सभी बुराईयों का त्याग कर देना चाहिए।

ऋग्वेद मन्त्र 1.38.7

सत्यं त्वेषा अमवन्तो धन्वचिंदा रुद्रियासः ।
मिहं कृणवन्त्यवाताम् ॥ ७ ॥

सत्यम् – सत्यवादिता

त्वेषाः – दीप्ति प्रकाश वाले (अन्दर से एवं बाहर से)

अमवन्तः – अत्यन्त बल वाले

धन्वन् – आकाश में

चित् – प्राण

रुद्रियासः – बुराईयों को रुलाता

मिहम् – वर्षा

कृणवन्ति – करने वाले

अवाताम् – बिना वायु।

व्याख्या :-

एक सत्यवादी जीवन के क्या परिणाम होते हैं?

सत्यवादी कार्य सूर्य किरणों के करंट की तरह अन्दर से तथा बाहर से अत्यन्त प्रकाशवान होते हैं। वे प्राणों को अन्तरिक्ष में बलशाली बना देते हैं। वे सभी बुराईयों को रुला देते हैं। वे बिना वायु के अन्तरिक्ष में वर्षा पैदा कर देते हैं। हमारे शरीर में गहरा मन और हृदय आकाश स्थान हैं। ऐसे आकाश स्थानों पर दिव्यता की वर्षा की अनुभूति होती है।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

जीवन में सार्थकता

सत्यवादी जीवन के साथ प्राणायाम के क्या परिणाम होते हैं?

सत्यवादी व्यक्ति का जीवन अन्दर से तथा बाहर से प्रकाशित होता है। उसके अपने जीवन में प्राणों की ऊर्जा तथा शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता और मन की शक्तियाँ अत्यन्त बलशाली हो जाती हैं। ऐसे जीवन में कोई बुराई शेष नहीं रहती। प्राणायाम के कुम्भक काल में महान ज्ञान की वर्षा होती है, जिससे ऐसा व्यक्ति दिव्यता की अनुभूति प्राप्त करता है और दूसरों के लिए भी प्रेरक बन जाता है।

ऋग्वेद मन्त्र 1.38.8

वाश्रेव विद्युन्मिमाति वत्सं न माता सिषक्ति ।
यदेषां वृष्टिरसर्जि ॥ ८ ॥

वाश्रा – शब्द करती हुई गाय

इव – के समान

विद्युत् – अन्तरिक्ष की विद्युत, हमारे अन्तराकाश का प्रकाश

मिमाति – शब्द करती

वत्सम् – बछड़े को

न – जैसे

माता – माता

सिषक्ति – सेवन करवाती (दूध)

यत् – जब

एषाम् – ये (प्राण, विद्युत)

वृष्टि – वर्षा (जल की, प्रसन्नता की, महान ज्ञान की)

असर्जि – उत्पन्न होती है।

व्याख्या :-

गाय अपने बच्चे को दूध पिलाते समय ध्वनि क्यों करती है?

वर्षा से पूर्व अन्तरिक्ष में विद्युत ध्वनि क्यों करती है?

आध्यात्मिक रूप से प्रकाशवान व्यक्ति तथा एक अनुभूति प्राप्त व्यक्ति प्रेरणाओं से तरंगित क्यों होता है?

जिस प्रकार एक गाय अपने बछड़े को दूध पिलाते समय ध्वनि करती है, वर्षा से पूर्व विद्युत आकाश में जोरदार गर्जना करती है, उसी प्रकार एक प्रकाशित व्यक्ति के अन्तरिक्ष में प्रकाश से तरंगित ध्वनियाँ पैदा होती हैं, जिससे खुशियों, महान ज्ञान तथा गुणों की वर्षा होती है, जो सबके लिए कल्याणकारी होते हैं।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

जीवन में सार्थकता

क्या दूसरों की सेवा करने का उत्साह आध्यात्मिक प्रगति को प्रदर्शित करता है?

गाय माता ध्वनि करते हुए अपने बछड़े को दूध पिलाने के लिए भागती है। इसका उद्देश्य है बछड़े का तथा अनेकों अन्य लोगों का कल्याण।

अन्तरिक्ष में विद्युत ध्वनि करती है और वर्षा करने के लिए भागती है। इसका उद्देश्य है धरती पर सबका कल्याण।

जो व्यक्ति अपने हृदय अन्तरिक्ष में प्रकाशित होता है, वह खुशियों, महान ज्ञान और गुणों को पैदा करने के लिए तरंगित होता है। इसका उद्देश्य है अनेकों लोगों को प्रेरणा देना। उसकी तरंगें ध्वनि से भी अधिक प्रभावशाली होती हैं।

एक गाय की ध्वनि तथा अन्तरिक्ष में विद्युत की ध्वनि और एक आध्यात्मिक व्यक्ति की तरंगें दूसरों की सेवा के उत्साह की उच्चावस्था प्रदर्शित करती हैं।

जो व्यक्ति शुद्ध हृदय से दूसरों की सेवा करता है, उसके कार्यों में ऐसा उत्साह पैदा हो जाता है, जिससे उसके कार्यों में उस प्रकार की शुद्धता और प्रेम दिखाई देता है, जैसा एक गाय में, अन्तरिक्ष में विद्यमान विद्युत में तथा एक प्रकाशित आध्यात्मिक व्यक्ति में होता है। ऐसा उत्साह प्रत्येक व्यक्ति को महान आध्यात्मिक बना देता है।

ऋग्वेद मन्त्र 1.38.9

दिवा चित्तमः कृण्वन्ति पर्जन्येनोदवाहेन ।

यत्पृथिवीं व्युन्दन्ति ॥ 9 ॥

दिवा – दिन में

चित – भी

तमः – अन्धकार

कृण्वन्ति – उत्पन्न करती

पर्जन्येन – बादलों के साथ, प्राणों के साथ

उदवाहेन – जल धारण करने वाले, ज्ञान धारण करने वाले

यत – जब

पृथिवी – भूमि, शरीर

व्युन्दन्ति – सिंचित होता है।

व्याख्या :-

जब भारी बादल दिन के समय अंधेरा उत्पन्न कर देते हैं तो उससे क्या प्राप्त होता है?

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

जब एक आध्यात्मिक पुरुष स्वयं को सांसारिक जीवन से पृथक कर लेता है तो उससे क्या प्राप्त होता है?

पानी से भरे बादल दिन के समय भी अंधेरा उत्पन्न कर देते हैं, जिसके कारण सारी धरती सिंचित होती है। ज्ञान से भरे प्राण मन में सांसारिक और भौतिक वस्तुओं के प्रति भारी अंधकार उत्पन्न कर देते हैं। यह अवस्था भी दिन के अंधकार की तरह होती है, जहाँ सारा संसार आनन्दित हो रहा होता है, जब कि वह व्यक्ति दिव्य महान ज्ञान की अनुभूति से सिंचित होता है। ऐसा जीवन ही उचित रूप से सबके कल्याण के लिए प्रयोग हो पाता है।

जीवन में सार्थकता

किसी कार्य से सम्बन्धित गहरे ज्ञान के साथ क्या प्राप्त होता है?

जब हमारे हाथ में आए कार्य को करने के लिए निर्धारित गहरा ज्ञान हमारे मन में होता है तो यह मन अन्य विषयों पर इधर-उधर नहीं भटकता और अपने कार्यों पर केन्द्रित होता है। उचित ज्ञान के आधार पर अपने कर्तव्यों का निवर्हन करने से ही जीवन में प्रसन्नताओं की वर्षा होती है। अतः किसी भी कार्य को करने से पूर्व अपनी बुद्धि पर हमें सम्बन्धित ज्ञान के भारी बादल एकत्र कर लेने चाहिए, जिससे हम सफल परिणाम उत्पन्न कर सकें और अपने जीवन को सिंचित करने के साथ-साथ दूसरों का कल्याण कर सकें।

ऋग्वेद मन्त्र 1.38.10

अध स्वनान्मरुतां विश्वमा सद्यम् पार्थिवम् ।

अरेजन्त प्र मानुषाः ॥ 10 ॥

अध – इसके बाद

स्वनात् – ध्वनि में से

मरुताम् – वायु की, प्राणों की

विश्वमा – यह सब

सर्व – चमकता है, तरंगित होता है

पार्थिवम् – भूमि, शरीर

(अरेजन्त – प्र अरेजन्त) – अत्यन्त सुन्दरता से चमकते

(प्र – अरेजन्त से पूर्व लगया गया)

मानुषाः – विवेकशील मनुष्य।

व्याख्या :-

वर्षा के बाद क्या होता है?

जब एक आध्यात्मिक योगी के प्राण तरंगित होने लगते हैं, तब क्या होता है?

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

ऋग्वेद मन्त्र 1.38.10 के अनुसार भारी बादल दिन में अंधकार उत्पन्न कर देते हैं, वर्षा उत्पन्न करते हैं और परिणामतः धरती को सिंचित करते हैं।

उसके बाद वायु की ध्वनि से जब बादल वर्षा करते हैं तो समूची धरती सुन्दर रूप में चमकने लगती है। विवेकशील पुरुष, वैज्ञानिक तथा पर्यावरणविद्, इसको समझते हैं।

प्राणों की ध्वनि और तरंगों से एक आध्यात्मिक योगी का शरीर सुन्दर रूप से चमकने लगता है। विवेकशील पुरुष, आध्यात्मिक इच्छा वाले लोग, इसको समझते हैं और इसकी अनुभूति करते हैं।

जीवन में सार्थकता

जब हमारे कार्य गहरे ज्ञान पर आधारित होते हैं तो क्या होता है?

जब गतिविधियाँ उससे सम्बन्धित गहरे ज्ञान पर आधारित होती हैं तो उनके परिणाम कर्ता के जीवन को पूर्ण सफलता के साथ अलंकृत कर देते हैं। केवल विवेकशील पुरुष ही इस क्रियात्मिक सिद्धान्त की अनुभूति करते हुए उसका अनुसरण करते हैं। ऐसे लोग वास्तविक कर्मयोगी होते हैं, जो अपने कार्य पर एकाग्र प्रयासों का निवेश करते हैं।

ऋग्वेद मन्त्र 1.38.11

मरुतो वीळुपाणिभिश्चत्र रोधस्वतीरनु ।

यातेमखिद्रयामभिः ॥ 11 ॥

मरुतः — प्राण, लोग (प्राणों पर ध्यान के साथ प्रगति करने वाले)

वीळुपाणिभिः — दृढ़ हाथों से, पूर्ण संरक्षण के साथ

चित्राः — अद्भुत

रोधस्वतीः — सभी बाधाओं को पार करते हुए (नदियाँ, रक्त वाहनियाँ)

अनु — अनुसरण करना, लक्ष्यबद्ध

यात — गतिशील

इम — उनके समान

अखद्रयामभिः — लगातार गति के साथ।

व्याख्या :-

एक अच्छी नदी और स्वस्थ रक्त वाहिनियों के क्या सिद्धान्त हैं?

जो लोग अपने प्राणों पर ध्यान करते हुए अर्थात् संकल्पपूर्वक प्रगति करना चाहते हैं, उन्हें अच्छी नदी और स्वस्थ रक्त वाहिनियों के सिद्धान्त का अनुसरण करना चाहिए, जो क्रमशः जल और रक्त के लगातार प्रवाह को सुनिश्चित करती है।

यह सिद्धान्त तीनमुखी है :-

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

- (क) गति ।
- (ख) सभी बाधाओं को पार करते हुए लगातार प्रवाह ।
- (ग) दृढ़ निश्चय और पूर्ण संरक्षण ।

जीवन में सार्थकता

समय पर सफलता प्राप्त करने के लिए हमें किन सिद्धान्तों का अनुसरण करना चाहिए?

नदियों और स्वस्थ रक्त वाहिनियों की तरह प्रत्येक व्यक्ति को निम्न तीन लक्षणों को सुनिश्चित करना चाहिए :—

- (क) गति — यदि हमारी गति धीमी है तो हम समय पर कोई भी परिणाम प्राप्त नहीं कर पाएंगे ।
- (ख) समस्त बाधाओं को पार करते हुए लगातार प्रवाह — यदि हम अपने प्रयासों में समस्त बाधाओं को पार करते हुए लगातार कार्य नहीं करते तो यह सम्भावना रहती है कि हम आधे मार्ग पर अटक जाएंगे या हमारी सफलता प्राप्ति में देर होगी ।
- (ग) दृढ़ निश्चय और पूर्ण संरक्षण — यदि हमारे पास यह लक्षण न हो तो भी हम असफल होंगे या सफलता प्राप्ति में देर करेंगे ।

यदि कोई नदी अपनी धीमी गति और कम शक्ति के कारण मार्ग की बाधाओं को पार नहीं कर पाती तो उसका जल एक स्थान पर खड़ा रहेगा या उसका जल कई भागों में विभाजित होकर भिन्न-भिन्न दिशाओं में चला जाएगा ।

यदि हमारी रक्त वाहिनियाँ भारी रक्त के कारण या रक्त में भारी जमाव के कारण स्वस्थ नहीं हैं तो वे कई रोगों का कारण बन सकती हैं ।

ऋग्वेद मन्त्र 1.38.12

स्थिरा वः सन्तु नेमयो रथा अश्वास एषाम् ।
सुसंस्कृता अभीशावः ॥ 12 ॥

स्थिराः — सुदृढ़ और स्थिर

वः — आपके

सन्तु — हों

नेमयः — चक्र और उनकी परिधि, कर्म

रथः — रथ का, शरीर का

अश्वासः — अश्व, इन्द्रियाँ

एषाम् — इनके

सुसंस्कृताः — सुसंस्कृत, शुद्ध

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

अभीशवः — घोड़ों की लगाम, मन पर नियन्त्रण (ज्ञान और कर्म की छठी इन्द्री), मन की वृत्तियाँ।

व्याख्या :-

जीवन की सुगम यात्रा के लिए किस प्रकार के रथ की आवश्यकता होती है?

प्रार्थना — हमारे रथ के रिम और पहिए मजबूत और स्थिर हों। हमारे घोड़े तथा उनकी लगामें सुसंस्कृत अर्थात् अनुशासित हों।

हमारे जीवन अर्थात् शरीर रूपी रथ के कर्म भी मजबूत और स्थिर होने चाहिएं। हमारी इन्द्रियाँ और मन सुसंस्कृत अर्थात् अनुशासित, शुद्ध और नियंत्रित होने चाहिएं।

ऐसा रथ और ऐसा शरीर गति और बाधाओं से बाधित हुए बिना लगातार यात्रा के लिए अत्यन्त आवश्यक है।

जीवन में सार्थकता

आत्मा की सुगम और प्रगतिशील यात्रा के लिए किस प्रकार का जीवन अर्थात् शरीर रथ आवश्यक है?

हमारे कार्य हमारे जीवन अर्थात् शरीर रूपी रथ के रिम और पहियों की तरह हैं। हमारी इन्द्रियाँ और हमारा मन घोड़ों और लगामों की तरह हैं। यदि हमारे कार्य स्थिर और मजबूत हैं, यदि हमारी इन्द्रियाँ और मन शुद्ध, सुसंस्कृत तथा अनुशासित हैं तो हम आत्मा की सुगम और प्रगतिशील यात्रा की आशा कर सकते हैं।

यह मन्त्र कठोपनिषद के श्लोक (1.3.3 तथा 4) का आधार है, जो शरीर रथ की व्याख्या इस प्रकार करता है :—

- (क) आत्मा इस रथ का रथी है,
- (ख) शरीर रथ है,
- (ग) बुद्धि सारथी है,
- (घ) मन लगामें हैं,
- (ङ) इन्द्रियाँ घोड़े हैं (जो हमें अलग—अलग विषयों में ले जाते हैं),
- (च) विषय वस्तुएं मार्ग हैं,
- (छ) आत्मा, बेशक शरीर और मन से जुड़ा होने के कारण, भोक्ता है।

यह श्लोक इस प्रकार है :—

आत्मानं रथिनं विद्धि शरीरं रथमेव तु ।
बुद्धिं तु सारथिं विद्धि मनः प्रग्रहमेव च ॥
इन्द्रियाणि हयानाहुर्विषयांस्तेषु गोचरान् ।
आत्मेन्द्रियमनोयुक्तं भोक्तेत्याहुर्मनीषिणः ॥

ऋग्वेद मन्त्र 1.38.13

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

अच्छा वदा तना गिरा जरायै ब्रह्मणस्पतिम् ।
अग्निं मित्रं न दर्शतम् ॥ 13 ॥

अच्छा — अच्छा
वद — उच्चारण करो
तना — ज्ञान का विस्तार करने वाली (प्रशंसनीय)
गिरा — वाणियाँ
जरायै — स्तुति के लिए
ब्रह्मणस्पतिम् — समस्त महान ज्ञान और सृष्टि का संरक्षक
अग्निम् — शक्ति और ऊर्जा वाले
मित्रम् — मित्र
न — जैसे
दर्शतम् — देखने तथा मिलने योग्य ।

व्याख्या :-

परमात्मा एक मित्र की तरह सदैव साथ रखने योग्य क्यों है?
हमें सदा उस महान ज्ञान और सृष्टि के संरक्षक की उदारतापूर्वक और प्रशंसनीय वाणियों से संगति करनी चाहिए, जो सर्वोच्च ऊर्जा और शक्ति धारण करने वाला मित्र है। अतः वह बार—बार देखने, संगति करने और अनुभूति करने के योग्य है।
इस प्रकार परमात्मा हमारा स्थाई और सर्वोच्च मित्र है। इसलिए हमें आत्मा की लगातार और सुगम यात्रा सुनिश्चित करने के लिए उसकी अनुभूति अवश्य प्राप्त करनी चाहिए।

जीवन में सार्थकता

एक महान मित्र लगातार संगति के लिए क्यों आवश्यक है?
प्रत्येक श्रेष्ठ, ज्ञानी, शक्तिशाली और लाभकारी सम्बन्ध बार—बार संगति के योग्य होता है, जिसे उदार और प्रशंसनीय वाणियों से बनाकर रखना चाहिए क्योंकि ऐसे लोग ऊर्जावान, शक्तिशाली और लाभकारी होते हैं।

ऋग्वेद मन्त्र 1.38.14

मिमीहि श्लोकमास्ये पर्जन्यइव ततनः ।
गाय गायत्रमुक्थ्यम् ॥ 14 ॥

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

मिमीहि – बना लें, निर्माण करें
श्लोकम् – वैदिक विवेक पर आधारित वाणियां
आस्ये – मुख में
पर्जन्य – बादल
इव – जैसे कि
ततनः – फैला दें
गाय – गान करें
गायत्रम् – गायत्री जैसे मन्त्रों का
उक्थयम् – स्तुतिपूर्वक कहने योग्य।

व्याख्या :-

वेद का स्वाध्याय और विस्तार किस प्रकार करना चाहिए?
वैदिक विवेक का अनुसरण करने वाले लोगों के लिए यह मन्त्र तीन निर्देश प्रदान करता है :–
(क) मिमीहि श्लोकम् आस्ये – वैदिक विवेक पर आधारित वाणियां मुख में बना लें, निर्माण करें।
(ख) पर्जन्य इव ततनः – इन्हें ऐसे फैला दें, जैसे बादल वायु को सबके लिए लाभदायक वर्षा की तरह फैलाते हैं।
(ग) गाय गायत्रम् उक्थयम् – गायत्री जैसे मन्त्रों का गान करें क्योंकि मन्त्र गाने योग्य हैं, समझने योग्य हैं, अनुसरण करने और व्याख्या करने योग्य हैं।

जीवन में सार्थकता

वैदिक विवेक के आधार पर जीवन कैसे जिए?

जिन महान ऋषियों और सन्तों ने वैदिक विवेक पर आधारित पवित्र ग्रन्थों की रचना की, उक्त तीनों निर्देशों का पालन किया; वे सभी महान वीर जिन्होंने वैदिक विवेक के साथ जीवन जिया और दूसरों के लिए अपने जीवन को आहूत कर दिया, वे आज भी लोगों के मध्य महान चेतना का विस्तार करते हैं। वे अपना जीवन सत्य रूप में वैदिक विवेक के साथ जीते रहे। हम भी उनके पद चिह्नों का अनुसरण कर सकते हैं।

समस्त महान पुरुषों के जीवन हमें स्मरण कराते हैं, हम भी अपने जीवन को उत्कृष्ट बना सकते हैं, और, जाते हुए, अपने पीछे छोड़ सकते हैं, काल की रेत पर अपने पद चिह्न।हेनरी वाडसवर्थ लांगफेलो, एक अमेरिकन कवि तथा शिक्षक।

ऋग्वेद मन्त्र 1.38.15

वन्दस्व मारुतं गणं त्वेषं पनस्युमर्किणम् ।
अस्मे वृद्धा असन्निह ॥ 15 ॥

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

वन्दस्व – स्तुति कर, आशा कर
मारुतम् – वायु, प्राण
गणम् – वर्ग
त्वेषम् – प्रकाश वाला (शरीर, मन और आत्मा के लिए)
पनस्युम् – प्रभु की अनुभूति के लिए आत्मा के साथ जोड़ने वाला
अर्किणम् – वेद मन्त्रों के अर्थ की अनुभूति में सहायक
अस्मे – हमारे अन्दर
वृद्धा – वृद्धि को प्राप्त, आयु और ज्ञान में वृद्ध
असन – स्थापित हों
इह – यहाँ, इस जीवन में।

व्याख्या :-

हमें प्राणों की प्रशंसा और चाहना क्यों करनी चाहिए?
हमें अपने महान वृद्ध जनों के लिए प्रार्थना क्यों करनी चाहिए?
हम वायु के समूह अर्थात् प्राणों की प्रशंसा और चाहना करते हैं। इन प्राणों के तीन लक्षण हैं :–
(क) त्वेषम् – प्रकाश वाला (शरीर, मन और आत्मा के लिए),
(ख) पनस्युम् – प्रभु की अनुभूति के लिए आत्मा के साथ जोड़ने वाला,
(ग) अर्किणम् – वेद मन्त्रों के अर्थ की अनुभूति में सहायक।
इसलिए हम प्रार्थना करते हैं कि यह प्राण हमारे इसी जीवन में स्थापित हो जाएं और महान ज्ञान की वृद्धि करें, जिससे हम परमात्मा की अनुभूति की ओर अग्रसर हो सकें।
हम यह भी प्रार्थना करते हैं कि आयु और ज्ञान में हमारे वृद्ध जन भी हमारे बीच यहीं इसी जीवन में लम्बे समय तक हमारे मार्गदर्शन के लिए स्थापित रहें।

जीवन में सार्थकता

ध्यान साधनापूर्वक जीवन के क्या लाभ हैं?
अपने जीवन को ध्यानार्थित बनाने के लिए हमें लगातार अपने प्राणों पर लगातार ध्यान लगाना चाहिए। ऐसे ध्यानार्थित जीवन की प्रगति के साथ हमें अनेकों लाभ प्राप्त होंगे :–
(क) अपने जीवन के सभी स्तरों पर – शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक स्तरों पर प्रकाश की प्राप्ति,
(ख) आत्मा की मूल शक्ति से संयुक्त होना,
(ग) परमात्मा की अनुभूति के लिए महान दिव्य ज्ञान की प्राप्ति।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

ऋग्वेद मण्डल-1 सूक्त 39
महान योद्धा, महान विद्वान् और अनुभूति प्राप्त आत्मा

ऋग्वेद मन्त्र 1.39.1

प्र यदित्था परावतः शोचिन्म मानमस्यथ ।
कस्य क्रत्वा मरुतः कस्य वर्षसा कं याथ कं ह धूतयः ॥ १ ॥

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

(प्र – अस्यथ से पूर्व लगाकर)

यत् – जब

इत्था – उस उद्देश्य के लिए

परावतः – दूर से

शोचिः – सूर्य प्रकाश की किरणेण

न – जैसे कि

मानस् – प्रभाव

(अस्यथ – प्र अस्यथ) – बूँदें

कस्य – किसके लिए

क्रत्वा – कर्म और ज्ञान

मरुतः – वायु, महान विद्वान, योद्धा

कस्य – किसके लिए

वर्पसा – बल

कम् – वह आनन्द देने वाला

याथ – प्राप्त करता है

कम् – वह आनन्द देने वाला

ह – निश्चित रूप से

धूतयः – सबको भय से कम्पित करने वाला।

व्याख्या :-

दिव्य शक्तियों का चक्र क्या है?

सूर्य प्रकाश की किरणों और वायु का प्रभाव दूर से आता है, जिसका उद्देश्य है जीवन में परमात्मा के स्थायी संगतिकरण की अनुभूति प्राप्त करना और उन कार्यों, ज्ञान और शक्ति को प्राप्त करना। वायु, महान विद्वान और योद्धा उस सुख दाता तथा सर्वोच्च ऊर्जा परमात्मा को प्राप्त करते हैं और प्रत्येक व्यक्ति को भय से कम्पित कर देते हैं।

यदि हम इन दिव्य शक्तियों का प्रयोग अपने शरीर के अहंकार और मन के बिना करें तो हमारे सभी ज्ञान, कर्म और शक्तियाँ दिव्यता में संयुक्त हो जाती हैं और जीवन का उद्देश्य प्राप्त हो सकता है। अन्यथा, अहंकार के साथ सभी श्रेष्ठ कार्य करते हुए अर्थात् अच्छे कार्यों पर गर्व करते हुए हमें अपने कर्मों के महान फल प्राप्त हो सकते हैं, परन्तु परमात्मा के साथ संयुक्तता का भाव प्राप्त नहीं होगा।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

जीवन में सार्थकता

हमारी शक्तियाँ कहाँ से आती हैं और किसमें संयुक्त हो जाती हैं?
अपने जीवन से भय को कैसे दूर करें?
दिव्य प्रभाव की वर्षा किसके कार्यों और ज्ञान के लिए होती है?
वह प्रभाव किसके बल के लिए है?
हमारे जीवन की मूल शक्ति, हमारा अस्तित्व और हमारा पालन—पोषण हमें चुपचाप प्राप्त होता है क्योंकि उसे सर्वोच्च शक्ति बहुत दूर से हमारे एकदम निकट फेंकती है।

प्रत्येक योद्धा तथा अनुभूति प्राप्त आत्माएं इस दिव्य प्रभाव को सर्वोच्च आनन्द के दाता से प्राप्त करती हैं, जो सबको भय से कम्पित करने में सक्षम हैं। इसका अर्थ यह हुआ कि सर्वोच्च शक्तियों का प्रभाव उसी से आता है, हमारे अन्दर स्थापित होता है और अन्ततः हमारे कर्मों और ज्ञान के द्वारा उसी में संयुक्त हो जाता है। यदि हम इसके महत्व को न समझें या दुरुपयोग करें तो वही शक्ति हमें भय से कम्पित कर देती है।

यह मन्त्र एक दिव्य शक्ति चक्र को स्थापित करता है। दिव्य शक्ति सबके द्वारा बहुत दूर से प्राप्त होती है, हमारे भीतर स्थापित होती है और यदि हम अपने ज्ञान और कर्मों से उसका उचित उपयोग करें तो वह उसी सर्वोच्च दिव्य शक्ति में संयुक्त हो जाती है। यदि इसका उचित उपयोग न किया जाए तो भी यह वापिस सर्वोच्च दिव्य शक्ति के पास जाती है जो हमारे गलत कार्यों और ज्ञान का फल देकर हमें भय से कम्पित कर देता है।

एक बार यदि हम इस दिव्य खेल चक्र की अनुभूति प्राप्त कर लें तो हमारा सारा भय समाप्त हो सकता है।

ऋग्वेद मन्त्र 1.39.2

स्थिरा वः सन्त्वायुधा पराणुदे वीलू उत प्रतिष्कमे।
युष्माकमस्तु तविषी पनीयसी मा मर्त्यस्य मायिनः ॥ २ ॥

स्थिरा — दृढ़ निश्चयी, स्थापित
वः — आपके
सन्तु — हों
आयुधा — अस्त्र, शस्त्र
पराणुदे — शत्रुओं को दूर करने के लिए
वीलू — अत्यन्त बलशाली
उत — और
प्रतिष्कमे — उनके आक्रमण रोकने के लिए
युष्माकम् — आपके
अस्तु — हों

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

तविषी – दृढ़ ज्ञान और बल

पनीयसी – सम्मान और स्तुति के योग्य

मा – नहीं

मर्त्यस्य – मृत्यु के योग्य, नाशवान पदार्थों के लिए मरने वाले

मायिनः – धूर्त, पापी।

व्याख्या :-

एक फौज अपने राष्ट्र के लिए किस प्रकार सम्मान अर्जित करती है?

हमारी व्यक्तिगत सेना कौन सी है?

आपकी सेना दृढ़ निश्चयी और स्थापित रहे। (हमारी इन्द्रियों के अंग, हमारा मन अन्य सभी अंग और यहाँ तक कि हमारे पास उपलब्ध सभी साधन और पदार्थ हमारी सेना हैं।) आपकी यह सेना तथा सैन्य सामान इतने बलशाली होने चाहिए कि वे दो महत्वपूर्ण लक्ष्य को प्राप्त कर सकें :-

(क) सभी शत्रुओं और बुरी प्रवृत्तियों को दूर भगा सकें,

(ख) उन सबके हमलों को रोक सकें।

ऐसी बलशाली, दृढ़ निश्चयी और स्थापित सेना के परिणामस्वरूप हम सर्वत्र सम्मान और स्तुति के अधिकारी बन जाते हैं।

दूसरी तरफ जो सेना नाशवान भौतिक लाभ के लिए मरना चाहती है, जो धूर्त और पापी है, उसका न कहीं सम्मान होता है और न स्तुति।

जीवन में सार्थकता

भारतीय सैनिक अपने लिए तथा अपने राष्ट्र के लिए सम्मान क्यों प्राप्त करते हैं?

दृढ़ निश्चयी और स्थापित सेना का सिद्धान्त राष्ट्र के लिए भी महान सम्मान अर्जित करता है। किसी देश की सेना और सैन्य सामान भी देश के लिए सम्मानजनक तभी होता है, जब वे शत्रुओं को दूर भगा सकें और उन्हें आक्रमण से रोक सकें। भारत के सैनिक अपने जीवन की आहुति देने की मानसिकता से ही सेना में शामिल होते हैं। वे न धूर्त हैं न पापी हैं और न ही नाशवान पदार्थों की इच्छा से जीते हैं। वे अपने राष्ट्र की रक्षा में मरने के लिए ही जीते हैं, इसलिए वे अपने लिए और अपने राष्ट्र के लिए भी सम्मान अर्जित करते हैं।

ऋग्वेद मन्त्र 1.39.3

परा ह यत्स्थिरं हथ नरो वर्तयथा गुरु।

वि याथन वनिनः पृथिव्या व्याशा पर्वतानाम् ॥ ३ ॥

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

(परा – हथ से पूर्व लगाकर)

ह – निश्चित रूप से

यत् – जो

स्थिरम् – बड़ा, मजबूत (बाधाएं)

(हथ – परा हथ) – नष्ट करता है, पृथक करता है

नरः – योद्धा मनुष्य

वर्तयथ – उलट देते हैं

गुरु – भारी

वि याथन – अलग करके मध्य मार्ग

वनिनः – बड़े और घने वृक्ष जो जंगल का रूप लेते हैं।

पृथिव्या: – पृथकी पर

वि आशा – सब दिशाओं को

पर्वतानाम् – पर्वतों की।

व्याख्या :-

महान सैनिकों से क्या आशा की जाती है?

मन्त्र 1.39.2 की व्याख्या के अनुसार, वे महान सैनिक निश्चित रूप से अपने मार्ग पर आने वाली विशाल और मजबूत बाधाओं को भी नष्ट करके पृथक कर देते हैं। वे भारी से भारी बाधाओं को भी उलट देते हैं। वे बड़े और घने वृक्षों को भी पृथक कर देते हैं, जिनसे जंगलों का निर्माण होता है, जिससे वे धरती पर तथा पर्वतों की सभी दिशाओं में अपना मार्ग बना सकें।

जीवन में सार्थकता

समाज में एक सभ्य जीवन कौन सुनिश्चित करता है?

एक सच्चा मानव इतना सक्षम होना चाहिए कि वे अपने जीवन पथ पर आने वाली किसी भी बाधा को समाप्त कर सके, चाहे वह भूमि पर हो, पर्वतों पर हो, जंगलों में हो या गहरे समुद्री जल में हो। वे अनेकों समस्याओं के जंगलों में से भी समाधान निकाल लेते हैं।

सभी महान शासकों, महान योद्धाओं, महान न्यायविदों, महान आध्यात्मवादियों, महान गुरुओं, महान मार्गदर्शकों, महान नेताओं और महान माता-पिता से यह आशा होती है कि वे अपने निर्देशों और प्रेरणाओं से सबके लिए एक अच्छा जीवन सुनिश्चित करने के लिए समाज से हर प्रकार की बाधाओं को दूर कर सकें।

ऋग्वेद मन्त्र 1.39.4

नहि वः शत्रुर्विदे अधि द्यवि न भूम्यां रिशादसः ।
युष्माकमस्तु तविषी तना युजा रुद्रासो नू चिदाधृषे ॥ 4 ॥

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

नहि – न तो

वः – आपके

शत्रुः – शत्रु

विविदे – विद्यमान हैं

अधि द्यवि – अन्तरिक्ष में

न – न ही

भूम्याम् – समस्त भूमि पर

रिशादसः – शत्रुओं को रुलाने वाले

युष्माकम् – आपके

अस्तु – हों

तविषी – सेना

तना – बड़ी

युजा – संयुक्त रूप से (मन में)

रुद्रासः – शत्रुओं को रुलाने वाले

नु – बहुत शीघ्र

चित् – जो

आधृषे – व्यवहार से जीतने वाले।

व्याख्या :-

महान योद्धा किस प्रकार एक ही समय पर एक शेर और एक गाय के रूप में जीवन जीते हैं?

वे समस्त महान योद्धा जो अपने शत्रुओं को रुलाने की क्षमता रखते हैं, उनका कोई भी शत्रु न तो इस समूचे भूमि पर होता है और न ही अन्तरिक्ष में, उनकी विशाल सेना को मस्तिष्क में जोड़कर रखना चाहिए।

उन्हें अपने शत्रुओं को रुलाने के योग्य होना चाहिए और उसके बाद उन शत्रुओं को अपने व्यवहार से जीतने के लिए भी योग्य होना चाहिए।

इस प्रकार महान योद्धा पहले अपने शत्रुओं को रुलाकर स्वयं शत्रु रहित जीवन जीते हैं और उसके बाद अपने अच्छे व्यवहार से उनका मन भी जीत लेते हैं। इस प्रकार वे महान योद्धा एक शेर और एक गाय दोनों की तरह जीवन जीते हैं।

जीवन में सार्थकता

क्या शत्रुओं को भी अच्छा व्यवहार दिखाना चाहिए?

जिस प्रकार वायु बिना किसी शत्रु के समूचे वायुमण्डल में तथा धरती पर गति करती है, उसी प्रकार महान योद्धा सर्वत्र शत्रुरहित होते हैं। इस प्रकार वे दो अवस्थाओं को सुनिश्चित करते हैं :-

(क) अपने शत्रुओं को रुला देते हैं, और

(ख) अपने उदार व्यवहार से उन्हीं शत्रुओं का मन जीत लेते हैं।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

इस प्रकार यह स्पष्ट है कि हमें पहले अपने शत्रुओं को कुचल देना चाहिए और उसके बाद अपना अच्छा व्यवहार दिखाकर उनका दिल जीतना चाहिए। एक शेर और एक गाय की तरह जीवन जीने के लिए दोनों कार्य अत्यन्त आवश्यक हैं।

ऋग्वेद मन्त्र 1.39.5

प्र वेपयन्ति पर्वतान्ति विंचन्ति वनस्पतीन् ।
प्रो आरत मरुतो दुर्मदा इव देवासः सर्वया विशा ॥ ५ ॥

प्र वेपयन्ति – कम्पित करते
पर्वतान – पर्वत
वि विंचन्ति – हिला डुलाकर
वनस्पतीन् – वृक्ष और वनस्पतियाँ
प्रो आरत – निश्चित रूप से प्रगति
मरुतः – योद्धा, वायु के समान मजबूत और प्रिय
दुर्मदाः – अहंकार और बुराईयों के मद में
इव – जैसे कि
देवासः – शत्रुओं को जीतने की कामना वाले
सर्वया – सब
विशा – प्रजा के सुख के लिए

व्याख्या :-

बलशाली और प्रेम करने वाले योद्धा किस प्रकार कार्य करते हैं?
मजबूत और प्रेम करने वाली वायु पहाड़ों को कम्पित कर देती है और वृक्षों तथा वनस्पतियों को भी हिला देती है।

इसी प्रकार बलशाली और प्रेम करने वाले योद्धा भी सफलतापूर्वक निश्चित प्रगति करते हैं। वे उनका सामना करते हैं, जो अहंकार और बुराईयों के नशे में जीते हैं। ऐसे महान् योद्धा सब लोगों के सुविधाजनक जीवन के लिए उन शत्रुओं को जीतना चाहते हैं।

जीवन में सार्थकता

सब महान् योद्धाओं का अन्तिम उद्देश्य क्या होता है?
भौतिक और आध्यात्मिक जीवन में एक महान् योद्धा पहाड़ जैसी बाधाओं और कठिनाईयों के घने जंगलों को नष्ट कर देता है। वह अहंकार और बुराईयों का समान रूप से सफलतापूर्वक सामना करता है। सभी

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

महान योद्धाओं का उद्देश्य उनके लिए व्यक्तिगत नहीं होता, परन्तु वे सबकी बाधारहित यात्रा के लिए जीते हैं। महान शासक, महान सैनिक, महान न्यायविद, महान आध्यात्मवादी, महान गुरु, महान मार्गदर्शक, महान नेता और महान माता-पिता वास्तव में महान योद्धा ही होते हैं जिनका उद्देश्य बिना भेदभाव के अपने समस्त अनुचरों के लिए सुविधाजनक जीवन सुनिश्चित कराना होता है।

ऋग्वेद मन्त्र 1.39.6

उपो रथेषु पृष्टीरयुग्धं प्रष्टिर्वहति रोहितः ।
आ वो यामाय पृथिवी चिदश्रोदबीभयन्त मानुषाः ॥ 6 ॥

उपो – निश्चय से निकटरथ
रथेषु – रथ में (शरीर, वाहन)
पृष्टीः – भय और शत्रुओं को दबाने वाली
अयुग्धम् – जोड़ना
प्रष्टः – ज्ञान की प्यास वाले
वहति – बोझ वहन करने वाले
रोहितः – दृढ़ शक्तियों वाले
(आ – श्रोत से पूर्व लगा कर)
वः – आपकी
यामाय – उन्नति
पृथिवी – समूची भूमि
चित् – निश्चित रूप से
(श्रोत् – आ श्रोत) – सुनता है
अबीभयन्त – डर से कापना
मानुषाः – मनुष्य ।

व्याख्या :-

किसको समूची भूमि सुनती है?
शत्रुओं को डर से कम्पित करने में कौन सक्षम होता है?
अपने मजबूत बलों और ज्ञान की प्यास के बल पर जब महान योद्धा अपने रथ (शरीर), के निकट डर और शत्रुओं को दबा देते हैं और समाज का भार वहन करते हैं, समूची धरती उनकी प्रगति को सुनती है और उनकी विरोधी शक्तियाँ डर से काँप जाती हैं।

जीवन में सार्थकता

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

एक सफल जीवन के क्या आधार हैं?

एक महान् व्यक्ति के व्यक्तित्व में एक सफल जीवन बनने के लिए दो मूल लक्षणों का होना अत्यन्त आवश्यक है :—

(क) मजबूत शरीर अर्थात् शारीरिक बल और

(ख) ज्ञान की प्यास अर्थात् गहरे महान् ज्ञान को धारण करते हुए उच्च मानसिक स्तर और मन का सन्तुलन।

इन दो लक्षणों के आधार पर प्रत्येक व्यक्ति की यह इच्छा और क्षमता होनी चाहिए कि वह डर को तथा समस्त शत्रुओं को दबा सके, चाहे वे आन्तरिक हों या बाहरी। हमारे अपने मन में कोई डर नहीं होना चाहिए और न ही बाहर से किसी का भय। मन में कोई बुराई न हो और बाहर कोई शत्रु न हो।

एक मजबूत शरीर रथ पर यात्रा करता हुआ ऐसा ही जीवन समूचे समाज के भार को वहन कर सकता है। ऐसे जीवन के परिणाम दो मुखी होते हैं :—

(क) समूचा समाज ऐसे जीवन को सुनता है और उसके लिए प्रार्थना करता है,

(ख) शत्रु ताकतें भी ऐसे जीवन को सुनती हैं और उससे डर कर कांपती हैं।

ऋग्वेद मन्त्र 1.39.7

आ वो मक्षु तनाय कं रुद्रा अवो वृणीमहे।
गन्ता नूनं नोऽवसा यथा पुरेत्था कण्वाय बिभ्युषे ॥ ७ ॥

(आ — वृणीमहे से पूर्व लगाकर) —

वः — आपके

मक्षु — बहुत शीघ्र

तनाय — शक्तियों की प्रगति और समृद्धि के लिए

कम् — सुविधाजनक जीवन के लिए

रुद्राः — शत्रुओं को रुलाने में सक्षम

अवः — सुरक्षा के लिए

(वृणीमहे — आ वृणीमहे) — स्वीकार और धारण करना

गन्त — सदैव सक्रिय

नूनम् — निश्चित रूप से

नः — हमारे

अवसा — संरक्षण के लिए

यथा — जैसे कि

पुरा — पूर्व काल में

इत्था — उसी प्रकार नये भी

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

कण्वाय – भौतिकवादी सम्पदा तथा/अथवा महान ज्ञान के कणों को एकत्र करने वाले विद्वान
बिभ्युषे – बुरी ताकतों और कष्टों से डरने वाले।

व्याख्या :-

रुद्रों की क्या भूमिका और क्या महत्व होता है?

हम अपनी शक्तियों की प्रगति और समृद्धि के लिए आपको स्वीकार करते हैं और धारण करते हैं, जिससे हमें सुविधाजनक जीवन और संरक्षण प्राप्त हो सके क्योंकि आप ही शीघ्रता से शत्रुओं को रुलाने की क्षमता रखते हो। आप सदैव सक्रिय और निश्चित रूप से हमारा संरक्षण करने वाले रुद्र हो। रुद्र पूर्व काल में भी सदा सक्रिय थे और उन कणों की रक्षा करते थे, जो भौतिक सम्पदा और महान ज्ञान के एक-एक कण को एकत्र करते थे, परन्तु बुरी शक्तियों, दर्दों और कष्टों से डरते थे। इसी प्रकार वर्तमान में भी रुद्र अपने कार्य में सक्रिय हैं।

जीवन में सार्थकता

समाज में रुद्र कौन हैं?

समाज को भयरहित कैसे बनाया जाए?

यदि कोई व्यक्ति रुद्र बनना चाहता है तो उसे स्वयं हर प्रकार के भय से मुक्त होकर शारीरिक और मानसिक रूप से बलशाली बनना होगा। समाज में सभी महान लोग रुद्र माने जाते हैं, जो हमारे जीवन को प्रगतिशील, समृद्ध, सुविधाजनक और सुरक्षित बनाते हैं। प्रत्येक समाज हर प्रकार के भय से मुक्त हो सकता है, यदि हम रुद्रों को स्वीकार करें, धारण करें और उनका सम्मान करें।

ऋग्वेद मन्त्र 1.39.8

युष्मेषितो मरुतो मर्त्येषित आ यो नो अभ्व ईषते ।
वि तं युयोत शवसा व्योजसा वि युष्माकामिरुतिभिः ॥ ८ ॥

युष्मेषितः – आपको जीतने की इच्छा वाला

मरुतः – महान योद्धा और महान विद्वान

मर्त्येषितः – अन्य लोगों को जीतने की इच्छा वाला

आ – सब दिशाओं से

यः – जो

नः – हम पर

अभ्वः – शत्रु

ईषते – आक्रमण करता है

(वि – युयोत से पूर्व लगाकर)

तम् – उसे

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

(युयोत – वि युयोत) – पृथक कीजिए

शवसा – शारीरिक शक्ति

व्योजसा – दिव्य शक्तियां

वि – पृथक

युष्माकाभि – अपनी शक्ति से

ऊतिभिः – संरक्षण से।

व्याख्या :-

महान लोगों के क्या दायित्व होते हैं?

हम कर्तव्यबद्ध महान योद्धाओं और महान विद्वानों से प्रार्थना करते हैं कि एक विरोधी को सभी भौतिक तथा दिव्य शक्तियों से वंचित कर दो। एक विरोधी की अपनी सुरक्षा भी छीन लेनी चाहिए क्योंकि वह आप पर या अन्य लोगों पर और हम सब पर विजय प्राप्त करने की इच्छा रखता है। ऐसे विरोधी पर चारों तरफ से हमले किए जाने चाहिए।

जीवन में सार्थकता

समाज के विरोधियों की पहचान और उन पर नियन्त्रण किस प्रकार करें?

समस्त महान नेताओं और माता-पिता आदि का यह कर्तव्य है कि वे अपने अनुचरों, अपने नियमों, अपनी सत्ता और अनुशासन के विरोधियों पर कड़ी निगरानी रखें। कानून विरोधियों और बुराईयों पर उचित नियन्त्रण रखने के लिए ही यह कर्तव्य निर्धारित है। यह असामाजिक तत्व और प्रवृत्तियाँ शासकों तथा महान लोगों के लिए भी बुरी हैं क्योंकि वे सबके लिए बुराईयाँ हैं। इसलिए, महान शासक को ऐसे बुरे व्यक्तियों से सब भौतिक और दिव्य शक्तियाँ छीन लेनी चाहिए। ऐसे बुरे तत्वों को उनकी सुरक्षा से भी वंचित कर दिया जाना चाहिए। महान लोग ऐसे विरोधी तत्वों को गलत और बुरी प्रवृत्तियाँ छोड़ने के लिए शिक्षित करें तथा प्रेरित करें।

ऋग्वेद मन्त्र 1.39.9

असामि हि प्रयज्यवः कण्वं दद प्रचेतसः।

असामिभिर्मरुत आ न ऊतिभिर्गन्ता वृष्टिं न विद्युतः ॥ ९ ॥

असामि – पूर्ण

हि – निश्चय से

प्रयज्यवः – परोपकारी गतिविधियाँ जैसे यज्ञ

कण्वम् – महान विद्वान

दद – स्वीकार, धारण करना

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



प्रचेतसः — उत्तम ज्ञान
 असामिभिः — अविभाजित, अमृत
 मरुतः — महान विद्वान्, महान् योद्धा
 (आ — गन्त से पूर्व लगाकर)
 न — हमारे लिए
 ऊतिभिः — संरक्षण
 (गन्त — आ गन्त) — प्राप्त हों
 वृष्टिम् — वर्षा को
 न — जैसे
 विद्युतः — बिजली, सूर्य आदि।

व्याख्या :-

महान् योद्धा और महान् विद्वान् हमारे लिए क्या करते हैं?
 महान् योद्धा और महान् विद्वान् निश्चित रूप से यज्ञ की तरह पूरे परोपकारी कार्य करते हैं और वर्षा तथा विद्युत की तरह हमें महान् ज्ञान देते हैं, जिससे बिना भेदभाव के सबका पूर्ण कल्याण हो। हमें अपनी अविभाजित तथा अनाशवान् सुरक्षा के लिए ऐसे महान् विद्वानों को स्वीकार और धारण करना चाहिए।

जीवन में सार्थकता

हम अपना पूर्ण संरक्षण कहाँ प्राप्त कर सकते हैं?

जो लोग महान् योद्धा और महान् विद्वान् हैं या ऐसा बनना चाहते हैं, उनके लिए दो महत्वपूर्ण कर्तव्य हैं

:-

- (क) यज्ञ की तरह सबके लिए पूर्ण परोपकारी कार्यों को करें,
- (ख) सबको महान् ज्ञान और प्रेरणाएं दें।

इन दो कर्तव्यों को लगातार और पूर्ण रूप से बिना किसी भेदभाव के पूरा करना चाहिए।

जो लोग ऐसे महान् लोगों का संरक्षण चाहते हैं, उन्हें प्रेरणा और अनाशवान् संरक्षण के लिए ऐसे लोगों की संगति में पहुँचना चाहिए।

ऋग्वेद मन्त्र 1.39.10

असाम्योजो बिभूथा सुदानवोऽसामि धूतयः शवः ।
 ऋषिद्विषे मरुतः परिमन्यव इषुं न सृजत द्विषम् ॥ 10 ॥

असामि — पूर्ण

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

ओजः — महान शक्ति

बिभूथा — धारण करो

सुदानवः — शत्रुओं को कमजोर करने में सक्षम बहादुर योद्धा

असामि — पूर्ण

धूतयः — शत्रुओं को कम्पित करने वाले

शवः — शक्ति

ऋषिद्विषे — महान संतों और अनुभूति प्राप्त आत्माओं से द्वेष करने वाले

मरुतः — महान विद्वान, महान योद्धा

परिमन्यवे — क्रोध से भरे

इषुम् — शत्रुओं की तरफ तीर फेंकने वाले

न — जैसे कि

सृजत — उत्पन्न करो

द्विषम् — घृणा, अप्रीति ।

व्याख्या :-

समाज को बचाने की शक्ति कौन रखता है?

बलशाली योद्धा और महान विद्वान शत्रुओं को कमजोर करने की महान शक्ति धारण करते हैं। अपनी शक्ति से वे शत्रुओं को कम्पित कर देते हैं। ऐसे महान योद्धा और महान विद्वानों को उन लोगों के प्रति घृणा और न पसन्द का वातावरण उत्पन्न करना चाहिए, जो महान सन्तों, महान योद्धाओं, अनुभूति प्राप्त आत्माओं और दिव्य ज्ञान के शत्रु हैं और जो क्रोध और हिंसा से भरे पड़े हैं। जिस प्रकार एक योद्धा शत्रुओं पर बाण फेंकता है, उसी प्रकार समाज विरोधी शक्तियों पर घृणा के बाण फेंके जाने चाहिए।

जीवन में सार्थकता

हमें समाज की प्रगति और समृद्धि के लिए क्या करना चाहिए?

उसे लगातार जारी कैसे रखा जाए?

किसी समाज और राष्ट्र की प्रगति के लिए दो लक्षण अत्यन्त आवश्यक हैं :-

(क) दिव्य आध्यात्मिक ज्ञान,

(ख) शान्ति और समरसता ।

यदि कुछ लोग इन दो लक्षणों का विरोध करते हैं या इनमें बाधा उत्पन्न करते हैं, उन्हें समाज का शत्रु समझना चाहिए। हमारे बहादुर और महान योद्धाओं तथा विद्वानों को ऐसे लोगों को नापसन्द करना चाहिए और उनके लिए हर प्रकार के सुधार और प्रेरणाओं को लागू करना चाहिए, जिससे अन्ततः ऐसी प्रवृत्तियाँ और ऐसे तत्व समाज से नष्ट हो सकें, तभी उपरोक्त दो लक्षण लगातार जारी रह सकते हैं, जिससे समाज की प्रगति एवं समृद्धि भी लगातार बनी रहे।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

ऋग्वेद मण्डल-1 सूक्त 40

गौरवशाली सम्पदा और वेद

ऋग्वेद मन्त्र 1.40.1

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



उत्तिष्ठ ब्रह्मणस्पते देवयन्तस्त्वेमहे ।
उप प्र यन्तु मरुतः सुदानव इन्द्र प्राशूर्भवा सचा ॥ १ ॥

उत्तिष्ठ – उठो, जागो
ब्रह्मणस्पते – दिव्य ज्ञान के संरक्षक, स्वामी
देवयन्तः – दिव्य प्रकाश की कामना से
त्वा ईमहे – आपको प्राप्त करने की प्रार्थना करते हैं
उप प्र यन्तु – हमारे निकट प्राप्त हो
मरुतः – सक्रिय महान विद्वान, महान योद्धा
सुदानवः – गौरवशाली सम्पदा के उत्तम दानी
इन्द्र – इन्द्रियों के नियन्त्रक, परमात्मा
प्राशूः – वृत्रों, वासनाओं के नाशक
भव – होवो
सचा – पूर्ण रूप से ।

व्याख्या :-

हमें दिव्य प्रकाश कैसे प्राप्त हो सकता है?

एक श्रद्धालु भगवान से प्रार्थना करता है, एक महान विद्वान से प्रार्थना करता है और एक महान योद्धा से प्रार्थना करता है कि उठो, दिव्य ज्ञान के संरक्षक होने के नाते उसे अर्थात् दिव्य प्रकाश की आशा करने वाले श्रद्धालु को प्राप्त होवो। वह इन संरक्षकों से प्रार्थना करता है कि गौरवशाली सम्पदा के एक सर्वोत्तम दानी होने के नाते उसे उसके निकट आकर मिलो। इन्द्रियों का नियन्त्रक अपनी पूरी वृत्तियों का पूर्ण नाशक हो सकता है और परमात्मा तथा महान विद्वानों की संगति कर सकता है।

जीवन में सार्थकता

हमें गौरवशाली सम्पदा कैसे प्राप्त हो सकती है?

हमें परमात्मा, महान विद्वानों और योद्धाओं की संगति तथा उनका महान संरक्षण दिव्य प्रकाश की आशा के लिए प्राप्त हो सकता है। यह तभी सम्भव है जब हम स्वयं इन्द्रियों के नियन्त्रक बनें तथा अपनी समस्त वृत्तियों को समाप्त करने में सक्षम बनें।

ऋग्वेद मन्त्र 1.40.2

त्वामिद्धि सहस्रस्पुत्र मर्त्य उपबूते धने हिते ।
सुवीर्य मरुत आ स्वश्वयं दधीत यो व आचके ॥ २ ॥

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

त्वाम इत हि – निश्चय से आपके लिए
सहसः – सर्वोच्च बल (शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक)
पुत्र – पुत्र
मर्त्यः – मानव
उपब्रूते – प्रार्थना करता है, शिक्षित करता है
धने – सम्पत्ति
हिते – कल्याण
सुवीर्यम् – उत्तम वीर्य और बल रखने वाले
मरुतः – सक्रिय विद्वान
(आ – दधीत से पूर्व लगाकर) –
स्वश्वयम् – अश्वों के समान उत्तम इन्द्रियों वाले
(दधीत – आ दधीत) – पूर्ण रूप से धारण करता है
यः – जो कोई
व – आपको
आचके – इच्छा करता है, प्रार्थना करता है, सन्तुष्ट करता है।

व्याख्या :-

एक महान गुरु कौन सी सम्पदा देता है?

सर्वोच्च शक्ति अर्थात शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक शक्ति का पुत्र निश्चित रूप से आप सब मानवों के लिए है क्योंकि वह तुम्हारे कल्याण के लिए ही तुम्हें सभी ज्ञान प्रदान करता है। वह ज्ञान ही महान सम्पत्ति है।

सर्वोत्तम ताकत तथा शक्ति और उत्तम इन्द्रियाँ धारण करने वाला व्यक्ति जब सर्वोच्च शक्ति के पुत्र अर्थात एक महान गुरु के निकट जाकर निवेदन करता है तो वह गुरु उसके कल्याण के लिए उसे धारण करता है।

जीवन में सार्थकता

सर्वोच्च शक्ति के पुत्र कौन हैं?

एक महान गुरु से महान सम्पदा प्राप्त करने का अधिकारी कौन है?

एक महान गुरु, एक महान मार्गदर्शन, एक महान नेता, एक महान उच्चाधिकारी और महान माता-पिता सर्वप्रथम सर्वोच्च शक्ति परमात्मा के पुत्र बनते हैं। सभी महान पुरुष शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक शक्तियों के धारक होते हैं। ऐसे महान पुरुष स्वाभाविक रूप से यह इच्छा करते हैं कि उनकी सम्पदा सबके कल्याण के लिए प्रयोग हो।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

दूसरी तरफ सर्वोच्च शक्ति के ऐसे महान पुत्रों से महान शिक्षा और कल्याण की प्राप्ति के लिए हमें स्वयं पवित्र ताकत, शक्ति और उत्तम इन्द्रियाँ धारण करनी चाहिए। इस मूल योग्यता के बिना महान लोगों की संगति की आशा नहीं की जा सकती।

ऋग्वेद मन्त्र 1.40.3

प्रैतु ब्रह्मणस्पतिः प्र देव्येतु सूनृता ।
अच्छा वीरं नर्यं पंकित राधसं देवा यज्ञं नयन्तु नः ॥ ३ ॥

प्रैतु — पूर्ण रूप से प्राप्त करना
ब्रह्मणः — महान और सर्वोच्च ज्ञान
पतिः — संरक्षक, प्रचारक
(प्र — एतु से पूर्व लगाकर) —
देवी — दिव्य
(एतु — प्र एतु) — पूर्ण रूप से प्राप्त करना
सूनृता — पवित्र तथा सत्य वाणी
अच्छा — की तरफ
वीरम् — बहादुर पुत्र
नर्यम् — सब जीवों के कल्याण के लिए
पंकित राधसम् — बिना भेदभाव के सबका कल्याण
देवाः — महान विद्वान
यज्ञम् — कल्याणकारी कार्य
नयन्तु — ले चलें
नः — हमें।

व्याख्या :-

हमारी सर्वोच्च और दिव्य प्रार्थनाएं क्या होनी चाहिए?

हम पूरी तरह से पवित्र और सत्य वाणी को प्राप्त करने की प्रार्थना करते हैं। हम पूर्ण महान और सर्वोच्च ज्ञान के संरक्षक की प्रार्थना करते हैं। हम सभी महान विद्वानों से प्रार्थना करते हैं कि हमें अपने बहादुर पुत्रों और पुत्रियों की तरह बिना भेदभाव के सबके कल्याण के कार्यों की तरफ ले चलें। ऐसे कार्यों को यज्ञ कहते हैं।

जीवन में सार्थकता

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

जीवन का सर्वोच्च उद्देश्य क्या है?

इस मन्त्र में जीवन के सर्वोच्च उद्देश्य को सूत्रबद्ध किया गया है।

सर्वप्रथम तो हमें यह सुनिश्चित करना चाहिए कि हमारी वाणी पवित्र और सत्य हो। यही हमारे जीवन का मूल आधार है। यही मूल लक्षण यह सुनिश्चित कर सकता है कि हमें सब महान और सर्वोच्च ज्ञान प्राप्त हो। इसके बाद हमारे सभी कार्य उस महान और सर्वोच्च ज्ञान के आधार पर होने चाहिए, जिससे बिना भेदभाव के सबका कल्याण हो। ऐसे कार्य जीवन का यज्ञ बन जाते हैं।

अतः जीवन का सर्वोच्च उद्देश्य तीन कदमों में निहित है :-

- (क) पवित्र तथा सत्य वाणियाँ,
- (ख) महान तथा सर्वोच्च ज्ञान,
- (ग) यज्ञ अर्थात् सबका पूर्ण कल्याण।

इनमें से भी पहला कदम शेष दो कदमों की नींव है।

ऋग्वेद मन्त्र 1.40.4

यो वाघते ददाति सूनरं वसु स धते अक्षिति श्रवः ।
तस्मा इळां सुवीराम यजामहे सुप्रतूर्तिमनेहसम् ॥ 4 ॥

यः – जो

वाघते – उच्च विद्वान और बुद्धिमान व्यक्ति के लिए

ददाति – देता है

सूनरम् – श्रेष्ठ वीर बनाने के लिए

वसु – धन

सः – वह

धते – धारण करता है

अक्षिति – अमृत, अनाशवान

श्रवः – धन, प्रसिद्धि

तस्मा – ऐसे व्यक्ति के लिए

इळाम् – ज्ञान की वाणी

सुवीराम – श्रेष्ठ वीर बनाता है।

आ यजामहे – उसके साथ संगति करो और उसके कार्य करो

सुप्रतूर्तिम् – पवित्र और त्वरित उत्पादक

अनेहसम् – अहिंस्य, रक्षा के योग्य।

व्याख्या :-

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

हमें अपनी सम्पदा कहाँ खर्च करनी चाहिए?
हमें किसके साथ मिलकर कार्य करना चाहिए?
जो व्यक्ति अपनी सम्पदा उच्च विद्वानों आदि को प्रदान करता है, जो श्रेष्ठ वीरों को उत्पन्न कर सकें, वह अनाशवान और अन्तहीन प्रसिद्धि प्राप्त करता है।
हमें ऐसी शक्ति के साथ जुड़ कर कार्य करना चाहिए, जिसकी ज्ञान वाणियाँ श्रेष्ठ वीरों का निर्माण करती हैं। यह समाज के लिए पवित्र और त्वरित निर्माण प्रक्रिया है और यह पूरी तरह अहिंसनीय है।

जीवन में सार्थकता

महान् श्रेष्ठ शैक्षणिक केन्द्रों के क्या परिणाम होते हैं?
समाज में गौरवशाली सम्पदा की उत्पत्ति कैसे की जाए?
यह मन्त्र सब लोगों को प्रेरणा देता है कि उदारतापूर्वक अपनी सम्पत्ति उन उच्च श्रेष्ठ और शिक्षित लोगों को देनी चाहिए, जो मातृभूमि के लिए श्रेष्ठ वीरों को पैदा कर सकें। इसके लिए महान् शैक्षणिक केन्द्रों की आवश्यकता होती है। समाज के सभी लोगों को ऐसे ही महान् विद्वानों के साथ जुड़कर कार्य करना चाहिए, जिनकी ज्ञान वाणियाँ श्रेष्ठ वीरों को तैयार कर सकती हैं। शिक्षा के ऐसे स्थान समाज के लिए पवित्र और त्वरित उत्पत्ति स्थान होते हैं और पूरी तरह से अहिंसनीय होते हैं। कोई भी शत्रु महान् शिक्षा की पूँजी को चुरा नहीं सकता। महान् और श्रेष्ठ शिक्षा के लिए सभी साधनों को आहूत किया जाना चाहिए, जिससे भौतिक, मानसिक और आध्यात्मिक रूप से गौरवशाली सम्पदा की उत्पत्ति सुनिश्चित की जा सके, जो समाज को हर प्रकार से और हर रूप में उत्थान करने में सक्षम होती है।

ऋग्वेद मन्त्र 1.40.5

प्र नूनं ब्रह्मणस्पतिर्मन्त्रं वदत्युक्थ्यम् ।
यस्मिन्निन्द्रो वरुणो मित्रे अर्यमा देवा ओकांसि चक्रिरे ॥ ५ ॥

(प्र – वदति से पूर्व लगाकर) –

नूनम् – निश्चित रूप से

ब्रह्मणस्पति – दिव्यता और सवोच्च ज्ञान के संरक्षक

मन्त्रम् – वेदों का अनुभूत ज्ञान

(वदति – प्र वदति) – पूर्ण रूप से व्यक्त

उक्थ्यम् – उपदेश और प्रशंसों के योग्य

यस्मिन् – जिसमें

इन्द्रः – ऊर्जा

वरुणः – सूर्य, चन्द्रमा, समुद्र

मित्रः – प्राणिक ऊर्जा

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

अर्यमा – वायु

देवा: – प्रकृति की अन्य दिव्य शक्तियाँ, दिव्य विद्वान

ओकांसि – निवास को, पालन को

चक्रिरे – बनाते हैं।

व्याख्या :-

सर्वोच्च दिव्य ज्ञान अर्थात् वेद की अभिव्यक्ति किसने की?

सर्वोच्च दिव्यता के संरक्षक ने मंत्र रूपी वाणियों के रूप में अर्थात् सूत्र रूप में सर्वोच्च ज्ञान को अभिव्यक्त किया, यही ज्ञान निश्चित रूप से वाणी और प्रशंसाओं के योग्य हैं। प्रकृति की सभी शक्तियाँ ब्रह्म में ही निवास करती हैं और वहीं पालित-पोषित होती हैं। ब्रह्म स्वयं सर्वोच्च दिव्य ज्ञान है। प्रकृति की शक्तियाँ हैं – इन्द्र (ऊर्जा), वरुण (सूर्य, चन्द्र और समुद्र आदि), मित्र (प्राणिक ऊर्जा), अर्यमा (वायु) तथा देवा (प्रकृति की अन्य शक्तियाँ) आदि।

जीवन में सार्थकता

परमात्मा को प्रेम और उसकी अनुभूति कैसे करें?

इस सृष्टि की सर्वोच्च शक्ति ब्रह्म (परमात्मा) है, जिसने सर्वोच्च ज्ञान की अभिव्यक्ति की ओर जिसने प्रकृति की सभी शक्तियाँ निवास करती हैं। अतः यदि कोई व्यक्ति परमात्मा की पूजा और उसकी अनुभूति प्राप्त करना चाहता है, जो सर्वोच्च ब्रह्म है तो उसे उसके ज्ञान की अनुभूति प्राप्त करनी चाहिए तथा प्रकृति की अन्य सभी शक्तियों की पूजा, उनके साथ प्रेम और उनका प्रयोग सावधानी के साथ और परमात्मा से प्रेम की चेतना के साथ करना चाहिए।

प्रकृति की अनुभूति अर्थात् उसकी दिव्यता को प्राप्त करके प्रकृति को प्रेम करो।

परमात्मा की अनुभूति अर्थात् उसके सर्वोच्च दिव्य ज्ञान (वेद) को प्राप्त करके परमात्मा को प्रेम करो।

ऋग्वेद मन्त्र 1.40.6

तमिद्वोचेमा विदथेषु शम्भुवं मन्त्रं देवा अनेहसम्।

इमां च वाचं प्रतिहर्यथा नरो विश्वेद्वामा वो अश्नवत् ॥ 6 ॥

तम – उस (वेद)

इत – केवल

वोचेम – उपदेश करो, बोलो

विदथेषु – ज्ञान के लिए, कर्म के लिए

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

शम्भुवम् – कल्याण सुनिश्चित करते हुए
मन्त्रम् – मन्त्र, सूत्र, गागर में सागर
देवाः – महान विद्वान
अनेहसम् – अहिंसनीय
इमाम् – इस
च – और
वाचम् – वैदिक ज्ञान
प्रतिहर्यथा – प्रतिदिन बार–बार कामना करो और प्राप्त करो
नरः – प्रगतिशील जीव, मानव
विश्वा – सब
इत – निश्चय से
वामा – सुन्दर, प्रशंसनीय
वः – आप
अशनवत – व्याप्त हो।

व्याख्या :-

हमें सर्वोच्च और सर्वमान्य ज्ञान अर्थात् वेद क्यों प्राप्त करने चाहिए?

महान विद्वान केवल उसी सर्वोच्च और सर्वमान्य ज्ञान अर्थात् वेद का ही उपदेश और उच्चारण करते हैं, जिससे सबके कल्याण को जाना जा सके और उसका अभ्यास किया जा सके। यह ज्ञान एक सूत्र की तरह कैप्सूल रूप में होता है, जैसे गागर में सागर भर दिया हो। यह ज्ञान अहिंसनीय है और महान विद्वानों को भी अहिंसनीय बना देता है अर्थात् जन्म और मृत्यु के बंधनों से मुक्त। प्रगतिशील जीव अर्थात् मानवों को केवल यही वैदिक ज्ञान की इच्छा और प्राप्ति करनी चाहिए। यह वास्तव में अत्यन्त सुन्दर और प्रशंसनीय है तथा आपको भी व्यापक कर देगा।

जीवन में सार्थकता

सर्वोच्च और सर्वमान्य ज्ञान अर्थात् वेद के क्या लक्षण हैं?

सभी मानव पशुओं से उच्च स्तर के हैं क्योंकि वे सर्वत्र प्रगतिशील हैं, भौतिक संसार में तथा अन्दर आत्मा के आन्तरिक मार्ग पर भी। अतः, किसी भी अवस्था में और जीवन के किसी भी क्षेत्र में, प्रत्येक व्यक्ति को उस सर्वोच्च और सर्वमान्य ज्ञान वेद को ही जानना और उसका अभ्यास करना चाहिए।

इस सर्वोच्च सर्वमान्य ज्ञान वेद के निम्न लक्षण हैं :-

- (क) यह सब जीवों और वस्तुओं का कल्याण सुनिश्चित करता है।
- (ख) यह कैप्सूल या सूत्र रूप में है। हम ध्यान साधना प्रक्रियाओं के माध्यम से इस ज्ञान का अन्वेषण कर सकते हैं।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

(ग) यह ज्ञान अहिंसनीय है और हमें अहिंसनीय बना देता है। एक बार इसकी गहरी अनुभूति होने के बाद व्यक्ति जन्म और मृत्यु के बंधनों से मुक्त हो जाता है।

(घ) केवल यही ज्ञान हमें समाज में व्याप्त कर सकती है। केवल महान मनुष्य ही परिवार में और समूचे समाज में व्याप्त होते हैं।

ऋग्वेद मन्त्र 1.40.7

को देवयन्तमशनवज्जनं को वृक्तबर्हिषम् ।
प्र प्र दाश्वान्परस्त्याभिरस्थिताऽन्तर्वावत्क्षयं दधे ॥ ७ ॥

कः — वह

देवयन्तम् — दिव्यता की कामना करने वाले

अशनवत् — प्राप्त होता है

जन्म — जन्म

कः — वह

वृक्त बर्हिषम् — पवित्र गहरा अन्तरिक्ष

(प्र प्र — दाश्वान तथा अस्थित से पूर्व लगाकर)

(दाश्वान — प्र दाश्वान) — पूर्ण तथा उत्तम दानी

पस्त्याभिः — उत्तम जीवन

(अस्थित — प्र अस्थित) — उत्तम स्थापित

अन्तर्वावत — आन्तरिक सम्पन्नता और सन्तुष्टि से पूर्ण

क्षयम् — निवास

दधे — धारण करता है।

व्याख्या :-

कौन सर्वोच्च और सर्वमान्य ज्ञान, भगवान, की अनुभूति प्राप्त कर सकता है?

सर्वोच्च सर्वमान्य ज्ञान, भगवान, केवल उन्हें प्राप्त होते हैं, जो केवल दिव्यता की इच्छा से पैदा होते हैं। वह उनकी अनुभूति में आते हैं, जो अपने पवित्र गहरे हृदय पर ध्यान एकाग्र करते हैं। वे उनके द्वारा प्राप्त होते हैं, जो पूर्ण और उत्तम दानी हैं; जो उत्तम निवास स्थान में स्थापित हैं; जो आन्तरिक सम्पन्नता और सन्तोष से पूर्ण है। परमात्मा ऐसे श्रद्धालुओं को धारण करता है और सरलता से उनकी अनुभूति में रहता है।

जीवन में सार्थकता

दिव्य जीवन के क्या लक्षण हैं?

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

एक बार जब हम दिव्य होने की कामना करते हैं तो परमात्मा इसे सम्भव बना देते हैं। दिव्य जीवन के निम्न लक्षण हैं :—

- (क) एक दिव्य जीवन की अनुभूति केवल पवित्र गहरे हृदय में होती है, जो बुराईयों और घृणा, अहंकार और इच्छाओं से मुक्त होता है।
- (ख) एक दिव्य जीवन पूर्ण दानी होता है अर्थात् दूसरों के कल्याण के लिए सब कुछ त्याग करने के लिए तत्पर।
- (ग) एक दिव्य जीवन उत्तम आवास में स्थापित होता है, अर्थात् दूसरों के कल्याण के लिए पूर्ण मानसिक समर्त्व।
- (घ) एक दिव्य जीवन आन्तरिक सम्पन्नता और पूर्ण सन्तोष से पूर्ण होता है।

ऋग्वेद मन्त्र 1.40.8

उप क्षत्रं पृंचीत हन्ति राजभिर्भये चित्सुक्षितिं दधे ।
नास्य वर्ता न तरुता महाधने नार्भ अस्ति वज्जिणः ॥ 8 ॥

(उप – पृंचीत से पूर्व लगाकर)

क्षत्रम् – शारीरिक शक्ति

(पृंचीत – उप पृंचीत) – उसके बाद प्राप्त करता है (सर्वोच्च सर्वमान्य ज्ञान के बाद द्वितीय स्तर पर)

हन्ति – नाश करने के लिए

राजभिः – राजा के

भये – भय

चित – भय भी

सुक्षितिम् – उत्तम स्थापित

दधे – धारण करता है

न – नहीं

अस्य – उसका

वर्ता – मुकाबला करने वाला

न – नहीं

तरुता – लांघना, हराना

महाधने – बड़े युद्धों में

न – नहीं

अर्भ – छोटे युद्धों में

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

अस्ति – होता है
वज्जिणः – दृढ़ बल वाला

व्याख्या :-

दिव्य ज्ञान के पथ पर प्रगति करने के बाद एक समग्र जीवन के लिए दूसरी क्या आवश्यकता है? सर्वोच्च सर्वमान्य ज्ञान अर्थात् वेद को प्राप्त करने या उसकी प्राप्ति की ओर अग्रसर होने तथा परमात्मा की अनुभूति के बाद व्यक्ति को ऐसी शारीरिक शक्ति धारण करनी होती है, जिससे वह अपने मन से राजा का भय भी समाप्त कर दे और स्वयं को समाज में उत्तम रूप से स्थापित कर ले।

ऐसे महान् योद्धा के मन में कोई भी ऐसा नहीं होता, जिसका वह विरोध करे या किसी को शारीरिक रूप से पराजित करे। ऐसे बल और शक्ति वाला व्यक्ति समस्त छोटे बड़े युद्धों में विजयी ही होता है।

जीवन में सार्थकता

एक समग्र जीवन क्या है?

आध्यात्मिक प्रगति के साथ-साथ हमारे पास शारीरिक शक्ति भी होनी चाहिए, जिससे हम राजा सहित किसी से भी न डरें। एक ईमानदार और बहादुर व्यक्ति कानूनों से या अदालतों से नहीं डरता। शारीरिक और मानसिक रूप से बहादुर व्यक्ति आन्तरिक और बाहरी शत्रुओं का शिकार नहीं होता।

इच्छाएं आन्तरिक शत्रु पैदा करती हैं। लालच बाहरी शत्रु पैदा करता है, परन्तु एक समग्र जीवन जिसमें आध्यात्मिक ज्ञान हो और शारीरिक शक्ति हो, वह एक कमजोर व्यक्ति की अपेक्षा जीवन में कभी नहीं हारता।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

ऋग्वेद मण्डल-1 सूक्त 41

ऋग्वेद मन्त्र 1.41.1

यं रक्षन्ति प्रचेतसो वरुणो मित्रे अर्यमा ।
नू चित्स दभ्यते जनः ॥ १ ॥

यम् – जिसकी

रक्षन्ति – रक्षा करते हैं

प्रचेतसः – पूर्ण विवेकशील मनुष्य

वरुणः – विशेष और उत्तम

मित्रः – सबके मित्र (परमात्मा, सामाजिक नेता)

अर्यमा – श्रेष्ठ, न्यायकारी

नू – शीघ्र

चित् – भी

स – वह

दभ्यते – मारे जाने योग्य या मारने योग्य

जनः – मनुष्य ।

व्याख्या :-

क्या दिव्य लोग मारे जाने योग्य नहीं होते?

अपने आन्तरिक और बाहरी शत्रुओं को नष्ट करने में कौन सक्षम होता है?

जो व्यक्ति विवेकशील पुरुषों, विशिष्ट और गुणकारी, श्रेष्ठ, न्यायकारी और सबके मित्र स्वरूप शक्तियों से संरक्षित होता है, वह भी मारे जाने योग्य होता है । (यह दृष्टिकोण महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का है । उन्होंने 'दभ्यते' की व्याख्या के रूप में कहा है – मारे जाने योग्य ।)

अन्य विद्वानों ने 'दभ्यते' का अर्थ किया है – मारने में सक्षम । इस प्रकार इस मन्त्र की दूसरी व्याख्या यह हो सकती है – 'वह व्यक्ति जो विवेकशील पुरुषों से संरक्षित है, वह अपने आन्तरिक और बाहरी शत्रु ताकतों को मारने में सक्षम है ।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

जीवन में सार्थकता

क्या मृत्यु वास्तव में अनिवार्य है?

एक दिव्य जीवन कैसे जिया जाए?

महान लोग दिव्य शक्तियों को धारण करते हैं। महान विद्वान, विशिष्ट, गुणकारी, सच्चे सामाजिक कार्यकर्ता, श्रेष्ठ तथा न्यायकारी लोग महान होते हैं। हमें इनका सम्मान करना चाहिए और इनके साथ अच्छे सम्बन्ध बनाकर रखना चाहिए, जिससे आवश्यकता के समय हमें इनका संरक्षण प्राप्त हो सके।

एक बार जब हम ऐसे महान लोगों के संरक्षण का आनन्द लेते हैं तो उनकी दिव्यता हमें अपने आन्तरिक और बाहरी शत्रुओं को मारने में सहायता करती है। भौतिक संसार में सभी महान और दिव्य शक्तियों का संरक्षण प्राप्त करने के बाबजूद हर व्यक्ति शीघ्र या विलम्ब से, एक रूप में या किसी अन्य तरीके से मृत्यु के योग्य होता है।

इसमें कोई सन्देह नहीं है कि मृत्यु अनिवार्य है। दिव्य सन्त, उनके अनुयायी या दुरात्माओं के संगठन सभी शारीरिक मृत्यु के योग्य हैं। परन्तु इस जीवन का महत्वपूर्ण तत्व यह है कि हम किसके साथ जिए, कैसे जिए, किसकी संगति की और किसका अनुसरण किया। हमें दिव्य शक्तियों के निकट ही अपना जीवन जीना चाहिए।

हमें मृत्यु से नहीं डरना चाहिए, लेकिन हमें दिव्य जीवन जीने से प्रेम करना चाहिए।

दिव्य जीवन दिव्यता के संकल्प के साथ दिव्य लोगों की संगति में ही प्राप्त हो सकता है।

ऋग्वेद मन्त्र 1.41.2

यं बाहुतेव पिप्रति पान्ति मर्त्यं रिषः ।

अरिष्टः सर्वं एधते ॥ २ ॥

यम् – जिसे (दिव्य शक्तियां संरक्षित करती हैं)

बाहुतेव – अनेकों शस्त्रों को धारण करने वाले योद्धा की तरह

पिप्रति – समस्त सुविधाओं से पूर्ण

पान्ति – रक्षण करता है

मर्त्यम् – मरने योग्य मनुष्य

रिषः – हिंसक शत्रुओं से

अरिष्टः – बिना किसी बाधा के

सर्वम् – सब

एधते – वृद्धि करता है।

व्याख्या :-

अन्य लोगों को संरक्षण देने में कौन सक्षम है?

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

जो व्यक्ति सभी दिव्य शक्तियों से संरक्षित होता है, जिसके पास अनेकों बाहों के समान बल और शक्तियाँ होती हैं और जो समस्त सुविधाओं से सम्पन्न है, वही अन्य लोगों को हिंसक शत्रुओं से संरक्षित करने में सक्षम है। वह बिना किसी बाधा के सभी दिशाओं में प्रगति करता है।

जीवन में सार्थकता

जीवन में सर्वप्रमुख कौन सी परिस्थिति और उपलब्धि है?

जीवन की सबसे महत्वपूर्ण परिस्थिति और उपलब्धि यही है कि हम दिव्य शक्तियों का समर्थन प्राप्त करें। इस प्रकार, एक व्यक्ति न केवल सभी सुविधाओं को धारण करता है और सभी दिशाओं में प्रगति करता है, बल्कि वह अन्य लोगों को भी संरक्षित कर पाता है।

ऋग्वेद मन्त्र 1.41.3

वि दुर्गा वि द्विषः पुरो घन्ति राजान् एषाम् ।
नयन्ति दुरिता तिरः ॥ ३ ॥

(वि – घन्ति से पूर्व लगाकर)

दुर्गा – विघ्नकारी कठिनाईयों को

(वि – घन्ति से पूर्व लगाकर)

द्विषः – घृणा, शत्रु

पुरः – नगर, किले

(घन्ति – वि घन्ति) – नष्ट करता है, तोड़ देता है, समाप्त करता है

राजानः – अन्यों पर अनुशासनपूर्वक शासन करना

एषाम् – इनका

नयन्ति – नाश

दुरिता – बुराईयाँ

तिरः – लाँघ जाता है।

व्याख्या :-

दिव्य लोग किस प्रकार अन्य लोगों का संरक्षण करते हैं?

विगत मन्त्र के अनुसार जो लोग दिव्य लोगों और शक्तियों की संगति करते हैं और दूसरों के संरक्षण की क्षमता प्राप्त कर लेते हैं, वे अन्य लोगों को अनुशासन में रखने के लिए राजा की तरह व्यवहार करते हैं और कठिनाईयों तथा शत्रुओं के किले और नगरियाँ नष्ट कर देते हैं। वे सभी बुराईयों को लाँघ कर उन्हें नष्ट कर देते हैं।

जीवन में सार्थकता

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

वास्तविक शासक कौन है?

इस जीवन में दिव्यताओं को प्राप्त करने के बाद व्यक्ति अन्य लोगों को संरक्षित करने के योग्य बन जाता है। ऐसे विवेकशील पुरुष ही वास्तविक राजा माने जाते हैं, जो लोगों के दिलों पर राज्य करते हैं और बुराईयों को दूर रखने में सक्षम होते हैं, जीवन की एक सुगम यात्रा की सुविधा उपलब्ध कराते हैं और इस प्रकार सभी समस्याओं और कठिनाईयों के दुर्ग नष्ट कर देते हैं।

ऋग्वेद मन्त्र 1.41.4

सुगः पन्था अनृक्षर आदित्यास ऋतं यते ।

नात्रवखादौ अस्ति वः ॥ ४ ॥

सुगः — सुविधाजनक

पन्था: — पथ

अनृक्षरः — विघ्नरहित

आदित्यासः — दिव्य लोगों के लिए

ऋतम् — सत्य, ब्रह्म

यते — प्राप्त करने की कामना

न — नहीं

अत्र — यहाँ इस पथ पर

अवखादः — भय

अस्ति — हो

वः — ऐसे लोगों को ।

व्याख्या :-

दिव्य लोगों को क्या प्राप्त होता है?

(क) दिव्य लोग सदैव ब्रह्म अर्थात् अन्तिम सत्य की कामना करते हैं।

(ख) इसीलिए वे सदैव कठिनाईयों से रहित और सुविधाजनक पथ पर चलते हैं।

(ग) इस पथ पर चलने वाले लोगों के लिए कोई भय नहीं होता है।

जीवन में सार्थकता

एक सत्यवादी जीवन के क्या लाभ हैं?

इसमें कोई सन्देह नहीं है कि हमारे आन्तरिक, आध्यात्मिक जीवन की अन्तिम उपलब्धि परमात्मा की अनुभूति ही है। हमारे सांसारिक दैनिक जीवन में भी समस्या रहित जीवन के लिए सत्यता एक मूल आवश्यकता है। प्रत्येक लेन—देन में और प्रत्येक व्यवहार में हमें सत्य पर अडिग रहना चाहिए। कभी भी अपने आपको किसी भी प्रकार के दबाव या लोभ के सामने झुकने नहीं देना चाहिए। यदि हमारी जिहवा पर दिन में और

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

स्वप्न में भी सत्य स्थापित हो जाता है तो हमारा सांसारिक जीवन भी आध्यात्मिक उद्देश्य की तरफ अग्रसर होने लगता है। एक सत्यवादी मनुष्य कभी किसी से नहीं डरता।

ऋग्वेद मन्त्र 1.41.5

यं यज्ञं नयथा नर आदित्या ऋजुना पथा ।
प्र वः स धीतये नशत् ॥ ५ ॥

यम् – जो

यज्ञम् – कल्याण के लिए त्याग

नयथा – पूर्ण करते हैं

नरः – मनुष्य

आदित्यः – दिव्य शक्तियों के साथ

ऋजुना – पवित्र और सरल

पथा – पथ

(प्र – नशत से पूर्व लगाकर)

वः – आपके

सः – वह (यज्ञ)

धीतये – कल्याण के लिए

(नशत् – प्र नशत्) – पूर्ण तथा लगातार प्राप्त।

व्याख्या :-

दिव्य शक्तियों के आधार पर किए गए त्याग कार्यों का क्या होता है?

दिव्य शक्तियों वाले लोग दूसरों के लिए अपने त्याग कार्य पूर्ण पवित्रता के साथ और सरलता के साथ सम्पन्न कर लेते हैं। वे अपने पथ पर दृढ़ निश्चयी होते हैं। इसके बदले उन्हें ऐसे सभी त्याग पूर्ण रूप से और लगातार वापिस प्राप्त हो जाते हैं।

जीवन में सार्थकता

प्रतिक्रियात्मक कल्याण का दिव्य नियम क्या है?

प्रतिक्रियात्मक कल्याण एक दिव्य नियम है। जब एक श्रद्धालु पवित्र यज्ञ करता है, पवित्र अग्नि में शुद्ध धी और कीमती जड़ी-बूटियाँ आहूत करता है तो उसमें से अनेकों लाभकारी गैसें आसपास के सब जीवों के कल्याण हेतु निकलती हैं, परन्तु सर्वप्रथम यह गैसें उस श्रद्धालु का कल्याण करती हैं, जो यज्ञ के सबसे निकट बैठा है। जब कोई व्यक्ति अन्य लोगों के लिए मीठे शब्द बोलता है तो उन शब्दों को सबसे पहले अपने आनन्द के लिए बोलने वाला व्यक्ति स्वयं सुनता है।

जब कोई दूसरे के लिए अच्छा सोचता है तो सबसे पहले उसका अपना मन आनन्दित होता है।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

इस प्रकार, आपके समस्त त्याग कार्यों की प्रथम और अन्तिम लाभार्थी आपकी आत्मा और आपका मन होता है, जो आप उन दिव्य शक्तियों के बल पर करते हो, जिन्हें सर्वोच्च दिव्य शक्ति ने आपको उपलब्ध कराया है।

ऋग्वेद मन्त्र 1.41.6

स रत्नं मर्त्यो वसु विश्वं तोकमुत त्मना ।
अच्छा गच्छत्यस्तृतः ॥ 6 ॥

सः – वह
रत्नत् – रमणीय वस्तुएं
मर्त्यः – मरणशील मनुष्य
वसु – उत्तम पदार्थ और निवास
विश्वम् – सब
तोकम् – उत्तम संतति
उत – और
त्मना – हमारी आत्मा और बुद्धि के समान
अच्छा गच्छति – अच्छे प्रकार से प्राप्त करता है
अस्तृतः – बिना हिंसा के।

व्याख्या :-

यज्ञ अर्थात् त्याग का क्या परिणाम होता है?

जो व्यक्ति सबके कल्याण के लिए यज्ञ अर्थात् त्याग करता है, उसे आनन्ददायक वस्तुएं, आवास और उत्तम सन्तान प्राप्त होती है, जो उसकी अपनी आत्मा और मन की तरह होती है। उसे अपनी उपलब्धियों के लिए कोई ताकत या हिंसा का प्रयोग नहीं करना पड़ता।

जीवन में सार्थकता

अपनी ही छवि वाली सन्तान कैसे प्राप्त करें?

त्याग व्यर्थ नहीं जाते। शीघ्र या विलम्ब से त्याग के फलस्वरूप ही सुविधाएं प्राप्त होती हैं। त्याग का सबसे महत्वपूर्ण फल है – आपकी आत्मा और मन के समान उत्तम सन्तान। इसीलिए उत्तम और सुसंस्कृत पुत्र और पुत्रियों को माता-पिता की उत्तम कमाई कहा जाता है। यह मन्त्र सभी माता-पिता को एक स्पष्ट मार्ग उपलब्ध कराता है कि वे दूसरों के कल्याण के लिए हर सम्भव त्याग करें, जिससे उन्हें उत्तम सन्तान प्राप्त हो सके। ऐसी सन्तान उनकी अपनी आत्मा और मन की छवि वाली होगी। ऐसे लोगों को बिना बल

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

प्रयोग किए या बिना हिंसा के हर प्रकार के फल मिलते हैं। ऐसा जीवन हिंसा मुक्त होता है – न उनके द्वारा कोई अपराध और न उनके विरुद्ध कोई अपराध।

ऋग्वेद मन्त्र 1.41.7

कथा राधाम सखायः स्तोमं मित्रस्यार्यम्णः ।
महि प्सरो वरुणस्य ॥ ७ ॥

कथा – कैसे

राधाम् – लक्षणों को प्राप्त करें

सखायः – मित्र के समान

स्तोमम् – स्तुति का गान करें

मित्रस्य – सबका मित्र

अर्यम्णः – न्याय का दाता

महि – सर्वोत्तम और महान

प्सरः – सुविधाएं

वरुणस्य – सबसे अधिक गुणकारी राजा ।

व्याख्या :-

सर्वोच्च मित्र, परमात्मा के लक्षणों को कैसे प्राप्त करें?

सबके मित्र अर्थात् मित्रस्य, न्याय का दाता अर्थात् अर्यम्ना तथा सबसे गुणकारी राजा अर्थात् वरुणस्य के लक्षणों को कैसे प्राप्त करें?

अपने सर्वोच्च मित्र, परमात्मा के साथ मित्र भाव महसूस करो और उसकी चमक के गीत गाओ। आपके जीवन की सर्वोत्तम तथा महानतम सुविधा केवल यही हो सकती है।

जीवन में सार्थकता

अपने जीवन को महान कैसे बनाएं?

यदि हम किसी महान संत, महान नेता या महान माता-पिता के लक्षणों को प्राप्त करना चाहते हैं तो हमें उनके साथ मित्रता का भाव महसूस करना चाहिए और ऐसे सभी महान लोगों की चमक का गान करना चाहिए।

ऐसे महान लोगों और निःसन्देह परमात्मा का अनुसरण निम्न तीन प्रकार से करना चाहिए :-

(क) सबके मित्र बनो,

(ख) एक न्यायकारी व्यक्ति बनो, और

(ग) अपने परिवार एवं समाज में सबसे श्रेष्ठ गुणकारी व्यक्ति बनो।

ऐसा जीवन निश्चित रूप से हमारे लिए तथा अन्य सबके लिए सर्वोत्तम और सुविधाजनक जीवन होगा।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

ऋग्वेद मन्त्र 1.41.8

मा वो घन्तं मा शपन्तं प्रति वोचे देवयन्तम् ।
सुम्नैरिद्व आ विवासे ॥ ८ ॥

मा – नहीं

वः – आप

घन्तम् – पीड़ा करते हो

मा – नहीं

शपन्तम् – श्राप देते हुए

प्रति वोचे – बोलते हो

देवयन्तम् – दिव्य लोग

सुम्नैः – सुविधाओं से पूर्ण, वाणियों से प्रशंसित

इत् – निश्चित रूप से

आ विवासे – सेवा, पूजा ।

ब्याख्या :-

ऐसे लोगों के साथ क्या व्यवहार करें, जो दिव्य लोगों को ठेस पहुँचाते हैं या उन्हें अपशब्द कहते हैं?
दिव्य लोगों के साथ कैसे व्यवहार करें?

मुझे ऐसे व्यक्ति के साथ तो बोलना भी नहीं चाहिए, जो दिव्य लोगों को ठेस पहुँचाते हैं या उन्हें अपशब्द कहते हैं। यहाँ तक कि सुविधा सम्पन्न और सम्मान प्राप्त लोगों के प्रति भी बुरा व्यवहार स्वीकार्य नहीं होता। मैं तो दिव्य और सम्मान प्राप्त लोगों की सेवा और पूजा करूँगा।

जीवन में सार्थकता

हमें किसकी संगति करनी चाहिए?

महान अनुभूति प्राप्त संत, आध्यात्मिक व्यक्ति जो परमात्मा की अनुभूति के पथ पर चलते हैं और वे जिनका सर्वत्र सम्मान होता है, सभी दिव्य पुरुष होते हैं। उनकी वाणियाँ, उनके कार्य और यहाँ तक कि उनका दर्शन मात्र भी दिव्य होता है।

हमें ऐसे व्यक्ति से तो बोलना भी नहीं चाहिए, जो इन दिव्य लोगों को ठेस पहुँचाता है या उन्हें और उनके कार्यों, वाणियों आदि के प्रति अपशब्द बोलता है।

इसी प्रकार परिवार और समाज की परम्पराएं, राष्ट्र के कानून और नियम सब दिव्य होते हैं, जहाँ तक कि वे सबको अनुशासन में रखते हैं। हमें ऐसे लोगों से बोलना भी नहीं चाहिए, जो किसी भी प्रकार से इन परम्पराओं, कानूनों और नियमों का उल्लंघन करते हैं।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

हमें सभी दिव्य और अनुशासित लोगों की ही संगति, सेवा और पूजा करनी चाहिए। ऐसे लोगों से कोई सम्पर्क नहीं रखना चाहिए, जो समाज के, राष्ट्र के या समूची मानवता के उल्लंघनकर्ता या शत्रु हैं।

ऋग्वेद मन्त्र 1.41.9

चतुरश्चिद्दद्मानाद्विभीयादा निधातोः ।
न दुरुक्ताय स्पृहयेत ॥ ९ ॥

चतुरः – दूसरों को पीड़ा देने वाले, बुराई देने वाले
चित् – और इनके साथ
दद्मानात् – दूसरों को विष देने वाले
विभीयात् – सदैव डरते हैं
निधातोः – दूसरों की सम्पत्ति और अधिकार चुराना
न – नहीं
दुरुक्ताय – दूसरों के लिए बुरा बोलना
स्पृहयेत – मित्रता की कामना।

व्याख्या :-

हमें किससे कभी भी मित्रता नहीं करनी चाहिए?
निम्न लोगों के साथ कभी भी मित्रता की कामना नहीं करनी चाहिए, अपितु उनकी संगति से भी दूर रहना चाहिए :–

- (क) जो दूसरों को ठेस पहुँचाते हैं और अपशब्द बोलते हैं,
- (ख) जो दूसरों के लिए विषकारी होते हैं,
- (ग) जो दूसरों की सम्पत्ति और अधिकार चुराते हैं,
- (घ) जो दूसरों के लिए बुरा बोलते हैं।

जीवन में सार्थकता

नकारात्मक मस्तिष्क से मित्रता करने के क्या परिणाम होते हैं?

यदि हम ऐसे लोगों से मित्रता करें, जो दूसरों को ठेस पहुँचाते हैं, अपशब्द बोलते हैं, दूसरों के लिए विषकारी होते हैं, दूसरों की सम्पत्तियाँ या अधिकार चुराते हैं या दूसरों के लिए बुरा बोलते हैं तो हमारे जीवन में भी निम्न परिणाम आ सकते हैं :–

- (क) हम भी वैसे ही नकारात्मक और अपराधी मन की तरह पहचाने जाएंगे।
- (ख) ऐसी नकारात्मकता और अपराधी मानसिकता हमारे जीवन का भी एक अंग बन जाएगी।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

(ग) यदि हम ऐसी नकारात्मक और अपराधी मानसिकता में भाग न भी लें, केवल उसकी संगति ही वह सभी प्रभाव अर्थात् हमारे आन्तरिक मन में चित्त की वृत्तियाँ उत्पन्न कर देंगी जो आध्यात्मिक मार्ग पर स्वयं ही बहुत बड़ी बाधा होती हैं। ऐसे नकारात्मक लोगों से दूरी बना कर हम सरलतापूर्वक उनसे बच सकते हैं।

ऋग्वेद मण्डल-1 सूक्त 42

पूषण अर्थात् सबका स्वास्थ्यवर्धक पोषक

ऋग्वेद मन्त्र 1.42.1

सं पूषन्नध्वनस्तिर व्यंहो विमुचो नपात्।
सक्ष्वा देव प्र णस्पुरः ॥ 1 ॥

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

(सम् – तिर से पूर्व लगाकर)

पूषण – स्वास्थ्यवर्धक पोषण तथा शक्ति के साथ सबका पोषक

अध्वन् – पथ से

(तिर – सम तिर) – समान रूप से और पूरी तरह से लक्ष्य तक पहुँचने में सहायक, जैसे आपने जीवन पथ को पार किया है।

व्यंहः – पाप, रोग (समस्त विघ्नों का कारण)

विमुचः – छोड़ना (पाप को)

नपात् – न गिरना

(सक्ष्वा – प्र सक्ष्वा) – हमें प्रेरित करो, हमारा नेतृत्व करो

देव – दिव्य

(प्र – सक्ष्वा से पूर्व लगाया गया)

नः – हमारे

पुरः – आगे, प्रथम।

व्याख्या :-

समस्त विघ्नों का क्या कारण है?

परमात्मा हमारे जीवन के लिए आवश्यक स्वास्थ्यवर्धक तत्वों और शक्तियों के साथ हमारे सर्वोच्च पोषक हैं। हम जानते हैं कि पाप और रोग ही समस्त विघ्नों के कारण हैं। जो लोग समस्त पाप कार्यों का त्याग कर देते हैं, वे अधोगति को प्राप्त नहीं होते।

जिस प्रकार दिव्य लोगों ने सुन्दर तरीके से सांसारिक जीवन के मार्ग को पार किया है, उन्हें समान रूप से अन्य लोगों की सहायता करनी चाहिए, जिससे वे भी उसी प्रकार सांसारिक जीवन के मार्ग को पार कर सकें। हम दिव्य लोगों से प्रार्थना करते हैं कि वे हमारे अग्रणी बनकर एक महान बौद्धिक मार्गदर्शक की तरह हमें प्रेरणाएं दें और हमें सन्मार्ग पर लगाएं।

जीवन में सार्थकता

जीवन में हमें किसका अनुसरण करना चाहिए?

हमें उस परमात्मा के साथ सम्पर्क स्थापित करना चाहिए, जो सबका सर्वोच्च पोषणकर्ता है। उस शक्ति के अनुशासन में रहने से ही हम जीवन में अधोगति से बच सकते हैं। सांसारिक जीवन में हमें समस्त वृद्ध लोगों तथा उच्चाधिकारियों से एकता बना कर रखनी चाहिए और उनके आदेशों, निर्देशों का पालन करना चाहिए।

जिस प्रकार दिव्य लोग परमात्मा के प्रतिनिधि समझे जाते हैं, उसी प्रकार हमारे विद्वान वृद्ध तथा हमारे जीवन के उच्चाधिकारी आदि भी हमारे लिए महान गुरु हैं। हमें विनम्रतापूर्वक उनके आदेशों और मार्गदर्शन को स्वीकार करना चाहिए। समस्त दिव्य मार्गदर्शक हमारे लिए ज्ञान के व्यवित्रित सूर्य के समान हैं।

ऋग्वेद मन्त्र 1.42.2

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



यो नः पूषन्नघो वृको दुःशेव आदिदेशति ।
अप स्म तं पथो जहि ॥ २ ॥

यः – जो कोई

नः – हमें

पूषन् – पोषक, परमात्मा

अघः – पापमय

वृकः – दुःखों और कष्टों का कारण

दुःशेव – पापों में सुषुप्त, बुराईयों का आनन्द लेता हुआ

आदि देशति – उद्देश्यपूर्वक पाप करने वाला, अन्यों को भी पाप में लगाने वाला
(अप – जहि से पूर्व लगाकर)

स्म – कीजिए

तम् – उसको

पथः – पथ से

(जहि – अप जहि) – दूर भगाईए, नष्ट कीजिए।

व्याख्या :-

पापी कौन हैं?

हम अपने पोषणकर्ता, सर्वशक्तिमान परमात्मा, से प्रार्थना करते हैं कि ऐसे लोगों को पापों के मार्ग से हटाएं जो :-

(क) अघः अर्थात् स्वयं पापमय हैं।

(ख) वृकः अर्थात् अन्य लोगों के लिए दुःखों और कष्टों का कारण हैं।

(ग) दुःशेव अर्थात् पापों में सुषुप्त तथा बुराईयों का आनन्द लेते हैं।

(घ) आदि देशति अर्थात् उद्देश्यपूर्वक पाप करते हैं और अन्यों को भी पाप में लगाते हैं।

जीवन में सार्थकता

हमें समाज से पाप और अपराध किस प्रकार दूर करने चाहियें?

हमें परमात्मा से प्रार्थना करनी चाहिए कि समस्त पापियों को पाप के मार्ग से दूर कर दें, प्रथम, उन्हें शिक्षित करके और प्रेरित करके, द्वितीय, यदि आवश्यक हो, उन्हें समाज से पृथक करके और पर्याप्त रूप से दण्डित करके। अन्यथा, अपराधों का खतरनाक दुःश्चक्र अपना प्रभाव बढ़ाता जाएगा। पापी और अपराधी केवल स्वयं पाप ही नहीं करते और आनन्दित होते, अपितु अन्य लोगों को भी इन कार्यों में लगाते हैं।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

अतः पवित्र और दिव्य लोगों के द्वारा समस्त अन्य लोगों को प्रेरित किया जाना चाहिए कि श्रेष्ठ पथ का अनुसरण करें और पाप को त्याग दें। इसके बाबजूद यदि आवश्यक हो तो पापियों को समाज से पृथक कर देना चाहिए।

ऋग्वेद मन्त्र 1.42.3

अप त्यं परिपन्थिनं मुषीवाणं हुरश्चितम् ।
दुरमधि सुतेरज ॥ ३ ॥

अप – दूर

त्यम् – वे (पापयुक्त)

परिपन्थिनम् – नियम से परे, मार्ग से परे

मुषीवाणम् – धोखे से तस्करी करने वाले

हुरश्चितम् – कुटिल हृदय (धूर्त, धोखेबाज)

दूरम् – दूरी पर

अधि – अधिक

सुते: – मार्ग से

अज – भेजिए

व्याख्या :-

पापियों से किस प्रकार बर्ताव करें?

परमात्मा निम्न प्रकार के लोगों को उस मार्ग से दूर हटा दें, जो सरल स्वभाव लोगों के लिए बना है :–

(क) परिपन्थिनम् अर्थात् नियम से परे तथा मार्ग से परे हैं,

(ख) मुषीवाणम् अर्थात् धोखे से तस्करी करने वाले हैं,

(ग) हुरश्चितम् अर्थात् कुटिल हृदय (धूर्त, धोखेबाज) हैं।

ऐसे पापियों को दूर स्थानों पर रखना चाहिए और प्रेरणादायक शिक्षाओं या दण्ड के द्वारा उनका सुधार किया जाए।

जीवन में सार्थकता

पापियों एवं अपराधियों के प्रति जेलों, विद्यालयों तथा अन्य कार्यस्थलों जैसी संस्थाओं के मुखिया क्या दायित्व निभाएं?

एक राजा, किसी संस्था के प्रमुख या छोटे से परिवार के मुखिया को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि कानून के दायरे बाहर कार्य करने वाले, धोखेबाज, आज्ञाओं का पालन न करने वाले तथा धूर्त लोगों को सामान्य सरल स्वभाव लोगों से दूर रखना चाहिए। पापियों को पहले शिक्षित किया जाए और उसके बाद यदि

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

आवश्यक हो तो सुधार के लिए दण्डित किया जाए। यदि ऐसा न किया गया तो समाज में पापियों की संख्या बढ़ती जाएगी।

ऋग्वेद मन्त्र 1.42.4

त्वं तस्य द्वयाविनो ऽघशंसस्य कर्स्य चित् ।
पदाभि तिष्ठ तपुषिम् ॥ 4 ॥

त्वम् – आप

तस्य – उस

द्वयाविनः – दोनों प्रकार के पापी (प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष)

अघशंसस्य – दुष्ट शासक के

कर्स्य चित् – किसी के भी

पदा – पैरों से

अभि तिष्ठ – उन्हें नष्ट करके तथा स्वयं को स्थापित करके

तपुषिम् – जो अन्यों के लिए दर्द पैदा करता है।

व्याख्या :-

पापियों से कैसे बर्ताव किया जाए?

तुम सभी प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष पापियों को पैरों से कुचल दो और उनके ऊपर स्वयं को स्थापित कर दो। जो कोई दूसरों को दर्द देता है और एक दुष्ट राजा की तरह व्यवहार करता है, उसके साथ भी यही वर्ताव किया जाना चाहिए।

जीवन में सार्थकता

एक पाप तथा अपराध में क्या अन्तर है?

पाप मुक्त जीवन कैसे सुनिश्चित करें?

एक पाप और एक अपराध दो स्तरों पर होता है – प्रथम, मानसिक स्तर पर तथा द्वितीय, शारीरिक स्तर पर। भूमि के कानून दोनों को एकत्रित रूप में ही स्वीकार करते हैं और तभी अपराधी को दण्डित करते हैं। केवल मानसिक स्तर पर बुरे विचारों को कानून के द्वारा दण्डित करने का कोई प्रावधान नहीं है, जब तक उन विचारों का क्रियान्वयन न किया जाए क्योंकि मानसिक विचारों का कोई प्रमाण नहीं होता। परन्तु दिव्यता में प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष दोनों प्रकार के पाप चित्त की वृत्तियाँ बन जाते हैं, जिनका बराबर और विपरीत फल प्राप्त होता है। अतः मन के स्तर पर किसी बुरे कर्म को करने का विचार मात्र भी नष्ट कर दिया जाना चाहिए। यह आत्मा का दायित्व है कि मन से बुरे विचारों को पूरी तरह नष्ट करें और स्वयं को स्थापित करें।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

समाज में सरकारें अपराधियों की स्वतन्त्रता को नष्ट करके, उन्हें जेल की सलाखों के पीछे डाल कर उन्हें दण्डित करती हैं। जब कि दिव्यता में प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष सभी बुराईयों के बदले सर्वोच्च दिव्य शक्ति, परमात्मा के द्वारा उस प्रकार के हालात बनाकर दण्डित किया जाता है। इस प्रकार, प्रतिकूल तथा असुविधाजनक हालात हमें अपने भविष्य को सुधारने की प्रेरणा की तरह कार्य करते हैं। अपने मस्तिष्क को सर्वोच्च दिव्यता के साथ जोड़ना ही एकमात्र पथ है, जिससे हम स्वयं को पाप मुक्त जीवन के लिए प्रेरित कर सकें। इस प्रकार पाप वाली वृत्तियाँ नष्ट हो जाती हैं और दिव्य आत्मा का शासन स्थापित हो जाता है।

ऋग्वेद मन्त्र 1.42.5

आ तत्ते दस्त्र मन्तुमः पूषन्नवो वृणीमहे।
येन पितृनचोदयः ॥ ५ ॥

(आ – वृणीमहे से पूर्व लगाकर)

तत् – उस

ते – आपके

दस्त्र – दुष्टों का नाशक

मन्तुमः – उत्तम विचारशील मन

पूषन – पोषक

अवः – हमारी रक्षा के लिए

(वृणीमहे – आ वृणीमहे) – हम पूरी तरह स्वीकार करते हैं

येन – जिसके द्वारा

पितृन् – हमारे पितृ माता-पिता

अचोदयः – प्रेरित करते हैं।

व्याख्या :-

हमें पोषित करने और संरक्षित करने का क्या दिव्य मार्ग है?

हम आपकी सर्वोच्च शक्ति को पूरी तरह स्वीकार करते हैं और धारण करते हैं, जो उत्तम बौद्धिक मन के साथ हमारा पोषण और संरक्षण करते हुए बुराईयों को नष्ट करती है और जिससे हमारे पूर्वज माता-पिता भी प्रेरित होकर हमें प्रेरित करते हुए और हमारे सुधार के लिए हमें दण्डित करते हुए बुराईयों को नष्ट करने के मार्ग पर चले थे।

जीवन में सार्थकता

हमारे पूर्वजों ने हमारा पोषण और संरक्षण किस प्रकार किया?

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

हमारी सरकारें हमारा पोषण और संरक्षण किस प्रकार करती हैं?

बच्चों को प्रेरणाओं के द्वारा सुधारना और, यदि आवश्यक हो, तो दण्ड के द्वारा सुधारना सर्वोच्च वैदिक विवेकशीलता है। परमात्मा भी बुराईयों को समाप्त करने के लिए और गुणों को स्थापित करने के लिए इसी प्रक्रिया को लागू करते हैं। हमारे पूर्वज माता-पिता ने भी हमारे सुधार के लिए इसी विवेक का अनुसरण किया। हमें भी इसी विवेक का अनुसरण करते हुए अपने व्यक्तिगत जीवन में से तथा समाज में से बुराईयों को नष्ट कर देना चाहिए। यहाँ तक कि सरकारें भी इसी विवेक का अनुसरण करते हुए समाज का पोषण और संरक्षण करती हैं।

ऋग्वेद मन्त्र 1.42.6

अधा नो विश्वसौभग हिरण्यवाशीमत्तम ।
धनानि सुषणा कृधि ॥ 6 ॥

अध – इसके बाद

नः – हमारे लिए

विश्वसौभग – समस्त सौभाग्य

हिरण्य वाशीमत्तम – स्वर्णिम वाणी वाले

धनानि – गौरवशाली सम्पदा

सुषणा – स्वस्थ जीवन का सदुपयोग करने वाला

कृधि – कीजिए।

व्याख्या :-

गौरवशाली सम्पदा को प्राप्त करने के अधिकारी हम कब बनते हैं?

उसके बाद अर्थात् प्रेरणाओं और दण्ड के माध्यम से हमारा पोषण और संरक्षण होने पर, हम स्वर्णिम वाणियाँ धारण करने वाले परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि हमें समस्त सौभाग्य और गौरवशाली सम्पदा प्रदान करें, जिसका प्रयोग अच्छे स्वास्थ्य और मन की शान्ति के लिए किया जा सके।

जीवन में सार्थकता

हमारे सौभाग्य और सम्पत्तियाँ कब सार्थक होंगे?

जब एक जीवन पाप से मुक्त होता है और एक समाज अपराधों से मुक्त होता है तो चारों तरफ शान्ति का साम्राज्य स्थापित होता है और जिससे सबके लिए स्वास्थ्य सुनिश्चित होता है। पापों और अपराधों के साथ मानव सम्पदा की सार्थक प्रगति नहीं हो सकती।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

सरकारों को भी इस सर्वोच्च विवेकशीलता के आवाहन पर जागरुक होना चाहिए। प्रत्येक व्यक्ति भी अपने जीवन में इस विवेकशीलता को सुनिश्चित करे। हमारे मन किसी के प्रति भी पाप या बुराई से सदैव मुक्त हों। हमारे सभी सौभाग्य और सम्पत्तियाँ तभी सार्थक प्रयोग में लाई जा सकती हैं, जब हमारे मन शान्त हों।

ऋग्वेद मन्त्र 1.42.7

अति नः सश्चतो नय सुगा नः सुपथा कृणु ।
पूषन्निः क्रतुं विदः ॥ ७ ॥

(अति – नय से पूर्व लगाकर)

नः – हमें

सश्चतः – अपनी आत्मा को न्यायोचित ठहराने वाला वैज्ञानिक चेतनायुक्त सुन्दर पथ।

(नय – अति नय) – प्रबल शक्ति के साथ हमें गति देने वाला

सुगा – सुविधाजनक रूप से

नः – हमें

सुपथा – महान पथ

कृणु – योग्य बनाईए

पूषन् – सबका पोषक

इह – यहाँ, इसी जीवन में

क्रतुम् – करने योग्य कार्य

विदः – प्रेरित करें और काम में लगाएं।

व्याख्या :-

कौन हमें प्रेरित करके श्रेष्ठ और योग्य कार्यों में लगा सकता है?

हमें मजबूत शक्ति के साथ उस सुन्दर पथ पर चलाओ, जिस पर वैज्ञानिक चेतना के साथ हमारी आन्तरिक अनुभूति के साथ न्याय हो। महान पथ पर सुविधाजनक तरीके से चलने के लिए हमें योग्य बनाओ। सबके पोषक होने के नाते हमें प्रेरित करो कि हम यहाँ, इसी जीवन में योग्य कार्यों को कर सकें।

जीवन में सार्थकता

श्रेष्ठ और योग्य कार्यों के क्या लक्षण होते हैं?

हम जीवन में जो भी कार्य करते हैं, वे निम्न दो लक्षणों से सुसज्जित होने चाहिए :-

(क) उन कार्यों को करने के लिए हमारे पास पूर्ण बलशाली ताकत होनी चाहिए। यदि हम ताकत में अपूर्ण हैं तो हमारी सफलता की सम्भावना नहीं होगी।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

(ख) हमारे पास गहरी और वैज्ञानिक चेतना होनी चाहिए, जो जीवन में प्रत्येक कार्यों को करने से पूर्व हमारी आन्तरिक अनुभूति के साथ न्याय कर सके। यदि ऐसा होगा तभी हम सन्तुलित मन के साथ गहरा सन्तोष अनुभव कर सकेंगे।

हमें परमात्मा से प्रार्थना करनी चाहिए कि हमें जीवन में केवल योग्य कार्यों में ही लगाए रखें। अयोग्य कार्य निरर्थक रूप में हमारे कर्म खाते में बोझ बनते रहते हैं, जिनका नकारात्मक परिणाम भावी दुःखों और पीड़ाओं के रूप में सामने आता है।

ऋग्वेद मन्त्र 1.42.8

अभि सूयवसं नय न नवज्वारो अध्वने ।
पूषन्निह क्रतुं विदः ॥ 8 ॥

(अभि – नय से पूर्व लगाकर)

सूयवसम् – उत्तम औषधिरूप भोजन

(नय – अभि नय) – मुख्य रूप से हमें उस तरफ ले चलिए

न – नहीं

नव – नया

ज्वारः – बुखार, रोग

अध्वने – श्रेष्ठ मार्ग पर चलने के लिए

पूषन् – सबका पोषक

इह – यहाँ, इसी जीवन में

क्रतुम् – करने योग्य कार्य

विदः – प्रेरित करें और काम में लगाएं।

व्याख्या :-

एक स्वस्थ जीवन के लिए प्रेरित करते हुए हमें कार्यों में कौन लगा सकता है?

हमें प्रमुख रूप से उत्तम औषधि स्वरूप भोजन की तरफ ले चलो, जो श्रेष्ठ मार्ग पर चलने वाले हम लोगों को नए बुखार और रोग न लगाए। सबके पोषक होने के नाते हमें यहाँ और इसी जीवन में स्वस्थ जीवन और खान–पान के साथ योग्य कार्यों के लिए प्रेरित करें और उन्हीं कार्यों में लगाएं।

जीवन में सार्थकता

स्वस्थ भोजन के क्या लक्षण हैं?

जो भोजन हम करते हैं, वह निम्न लक्षणों से सुसज्जित होना चाहिए :-

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

(क) वह औषधि स्वरूप भोजन होना चाहिए। मात्रा और गुणवत्ता में हम अच्छा स्वास्थ्य देने वाला भोजन ही करें।

(ख) जब हम श्रेष्ठ मार्ग पर चल रहे हों तो हमारा भोजन नए बुखार और रोग पैदा करने वाला न हो। हमें भगवान से प्रार्थना करनी चाहिए कि हमें प्रेरणा दें और उचित मात्रा में केवल स्वास्थ्यवर्धक भोजन ही करें, जिससे हम इस जीवन में योग्य कार्यों को कर सकें।

ऋग्वेद मन्त्र 1.42.9

शाधि पूर्धि प्र यंसि च शिशीहि प्रास्युदरम् ।
पूषान्निह क्रतुं विदः ॥ ९ ॥

शाधि – सुविधाजनक जीवन के लिए शक्तियाँ
पूर्धि – पूर्ण करो, उपलब्ध कराओ
प्र यंसि – बुरे कार्यों से दूर रखने के लिए प्रेरित करो
च – और
शिशीहि – तीक्ष्ण बुद्धि
प्रासि – सब अंगों, प्रत्यंगों की शक्ति
उदरम् – पेट को
पूषन् – सबका पोषक
इह – यहाँ, इसी जीवन में
क्रतुम् – करने योग्य कार्य
विदः – प्रेरित करें और काम में लगाएं।

व्याख्या :-

एक योग्य जीवन के लिए हमारी क्या आवश्यकता है?

हमें एक सुविधाजनक जीवन के लिए पूर्ण शक्तियाँ उपलब्ध करवाओ, हमें प्रेरित करो कि हम स्वयं को बुरे कार्यों से बचा सकें और हमें तीक्ष्ण बुद्धि दो, हमारे शरीर के सभी अंगों और उदर को शक्तिशाली बनाओ। सबके पोषणकर्ता होने के नाते हमें इसी जीवन में स्वस्थ खान—पान के साथ योग्य कार्य करने के लिए प्रेरित करो।

जीवन में सार्थकता

हम एक सुविधाजनक जीवन का आनन्द कैसे ले सकते हैं?

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

योग्य जीवन ही सुविधाजनक जीवन सुनिश्चित करा सकता है। हमें शरीर के सभी अंगों और उदर आदि को शक्तिशाली बनाने की आवश्यकता है। योग्य कार्यों को करने के लिए हमें तीक्ष्ण बुद्धि की आवश्यकता है। हमारे योग्य कार्य सबका कल्याण सुनिश्चित करें और साथ ही हमारा जीवन सुविधाजनक बनाएं।

पोषणकर्ता होने के नाते परमात्मा हमें समस्त शक्तियाँ और बुद्धि दूसरों के कल्याण के लिए उपलब्ध कराते हैं, केवल हमारे व्यक्तिगत हितों के लिए नहीं। एक बार जब हम कल्याणकारी कार्यों को करने की अनुभूति प्राप्त कर लेते हैं तो हमें व्यक्तिगत रूप से तथा हमारे परिवार को निश्चित रूप से सुविधाजनक जीवन प्राप्त होता है। अतः हम सर्वोच्च पिता से प्रार्थना करते हैं कि हमें सबके कल्याण के लिए केवल योग्य कार्यों में ही प्रेरित करें।

ऋग्वेद मन्त्र 1.42.10

न पूषणं मेथामसि सूक्तौरभि गृणीमसि ।
वसूनि दस्मीमहे ॥ 10 ॥

न – नहीं

पूषणम् – सर्वोच्च पोषक

मेथामसि – हिंसित करते, लाँघते

सूक्तौः – वैदिक वाणियाँ

अभि गृणीमसि – शुभ गुणों को दिन–रात धारण करके प्रभु की प्रशंसा

वसूनि – हमारे आवास के लिए समस्त आवश्यक पदार्थ

दस्मम् – समस्त बुराईयों और शत्रुओं के नाशक

ईमहे – माँगते हैं।

व्याख्या :-

सर्वोच्च पोषणकर्ता, परमात्मा, के साथ कैसा व्यवहार करें?

सबके सर्वोच्च पोषणकर्ता का कभी उल्लंघन मत करो। दिन–रात, जागृत या सुषुप्त अवस्था में, वैदिक वाणियों के साथ उसकी प्रशंसा करो। हम सब बुराईयों और शक्तियों के नाशक से प्रार्थना करते हैं कि हमारे आवास के लिए समस्त आवश्यक वस्तुएं प्रदान करें।

जीवन में सार्थकता

हमें सर्वोच्च पोषणकर्ता से क्या प्रार्थना करनी चाहिए?

हमारी प्रार्थनाएं किस प्रकार सफल हो सकती हैं?

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

समस्त बुराईयों और शत्रुओं से मुक्त जीवन ही शान्त और प्रगतिशील हो सकता है। मानसिक स्तर पर हमारी बुराईयाँ हमारे आन्तरिक शत्रु बन जाते हैं और बाहर भी हमारे शत्रु पैदा कर देते हैं। अतः हमारे जीवन में सबसे महत्वपूर्ण कदम यही होना चाहिए कि हम सर्वोच्च पोषणकर्ता की प्रशंसा करते हुए और उसका अनुसरण करते हुए उसके साथ लगातार सम्पर्क बनाकर रखें। तभी हमारे आवास के लिए समस्त आवश्यक वस्तुओं की हमारी प्रार्थना सफल होगी।

परमात्मा के साथ लगातार संगतिकरण के लिए हमें सुनिश्चित करना चाहिए :—

(क) कि हम सर्वोच्च पोषणकर्ता परमात्मा, उसकी प्रकृति तथा उसके गुणों जैसे प्रेम, कल्याण और त्याग आदि का कभी उल्लंघन न करें।

(ख) उसके गुणों को दिन और रात धारण करके उनकी प्रशंसा करें।

ऋग्वेद मण्डल-1 सूक्त 43

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

रुद्र, शाश्वत शान्ति पर सूक्त

ऋग्वेद मन्त्र 1.43.1

कद् रुद्राय प्रचेतसे मीळहुष्टमाय तव्यसे ।
वोचेम शन्तम् हृदे ॥ १ ॥

कत् – जब0

रुद्राय – हमें रुलाने में सक्षम (ईश्वर, जीव, वायु)

प्रचेतसे – प्रशंसनीय ज्ञान वाला, उस ज्ञान को हमें देने में सक्षम

मीळहुष्टमाय – समस्त पीड़ाओं और दुःखों आदि को नष्ट करने के लिए ज्ञान की अत्यधिक वर्षा करने में सक्षम

तव्यसे – अत्यन्त प्रगतिशील

वोचेम – वक्ता, प्रचारक

शन्तम् – शाश्वत शान्ति के लिए

हृदे – हमारे अन्तर हृदय में स्थापित ।

व्याख्या :-

शाश्वत शान्ति कौन सुनिश्चित कर सकता है?

वह सर्वोच्च पिता हमारी शाश्वत शान्ति के लिए कब बोलेंगे और उपदेश देंगे?

इस मन्त्र में मानव जाति के लिए यह सबसे महत्वपूर्ण प्रश्न रखा गया है और उसका उत्तर भी दिया गया है। यह प्रश्न सर्वोच्च शक्तिमान, परमात्मा, को सम्बोधित किया गया है, जो शाश्वत शान्ति का स्रोत है और जिसके पाँच निम्न लक्षण हैं :-

(क) रुद्राय – वह हमें रुलाने में सक्षम है – ईश्वर, जीव, वायु ।

(ख) प्रचेतसे – वह प्रशंसनीय ज्ञान वाला तथा उस ज्ञान को हमें देने में सक्षम है ।

(ग) मीळहुष्टमाय – वह समस्त पीड़ाओं और दुःखों आदि को नष्ट करने के लिए ज्ञान की अत्यधिक वर्षा करने में सक्षम है ।

(घ) तव्यसे – वह अत्यन्त प्रगतिशील है ।

(ङ.) हृदे – वह हमारे अन्तर हृदय में स्थापित है ।

इस प्रकार उत्तर स्पष्ट है कि सर्वोच्च शक्तिमान तथा शाश्वत शान्ति का स्रोत ही हमें शाश्वत शान्ति देने में सक्षम है ।

जीवन में सार्थकता

रुद्र की तीन पक्ष कौन से हैं?

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

सभी रुद्र किस प्रकार शाश्वत शान्ति सुनिश्चित करते हैं?

क्योंकि शाश्वत शान्ति की सबसे महत्वपूर्ण प्रार्थना उस शक्ति से की गई है, जिसके पाँच लक्षण हैं, आईए उस प्रथम लक्षण, रुद्र, का विश्लेषण करें जो हमें रुलाने में सक्षम है और यह पता लगाने का प्रयास करें कि ऐसी शक्ति हमें किस प्रकार शाश्वत शान्ति दे सकती है।

रुद्र के तीन दृष्टिकोण हैं – परमात्मा, जीव तथा वायु।

(क) परमात्मा – कर्मों का फल देने की अपनी वज्र शक्ति के साथ वह किसी को भी उसके बुरे विचारों, बुरी वाणियों और बुरे कार्यों के कारण रुला सकता है। इस प्रकार रुद्र कर्म फल सिद्धान्त का प्रधान नियंत्रक है। रुद्र का लक्ष्य अन्तः सबको बुराईयों से रोक कर प्रगति के मार्ग पर तथा शाश्वत शान्ति के लिए अग्रसर करना है।

(ख) जीव भी रुद्र है, जब वह मरणशील शरीर के साथ जुड़ता है। हर प्रकार की संगति उसके जुड़ाव के स्तर का परीक्षण करती है। शरीर से निकलते समय उस जुड़ाव की समाप्ति पर वह सबको रुला देता है, जब वह परीक्षा में असफल हो जाता है और पुनः जन्म–मृत्यु के मार्ग पर तब तक वापिस भेज दिया जाता है, जब तक वह सभी मरणशील वस्तुओं के साथ जुड़ाव को समाप्त न कर दे। इस प्रकार इसका उद्देश्य भी शाश्वत शान्ति की ओर ले जाना है।

(ग) वायु भी रुद्र है। इसकी प्रगति सबके कल्याण के लिए गति करना है। समस्त मानव शरीरों में यदि यह गतिशील न हो तो वह अनेकों समस्याएं पैदा करके हमें दर्दों पर रोने के लिए मजबूर कर सकती है। दूसरी तरफ, जो शरीर वायु के समर्थन से दूसरों का कल्याण करने के लिए सदैव क्रियाशील रहता है, उसे ऐसी समस्याओं का सामना नहीं करना पड़ता है। इससे भी अधिक, वायु पर ध्यान केन्द्रित करना अर्थात् ध्यान साधना और प्राणायाम, एक महान् दिव्य प्रक्रिया है, जिससे हम अपने वर्तमान जीवन में ही शाश्वत शान्ति रूपी दिव्यता की अनुभूति प्राप्त कर सकते हैं।

अतः इन तीनों दृष्टिकोणों से रुद्र हमें प्रेरित करता है कि :-

(क) हम शुभ कर्म करें, जिससे बुरे परिणामों को दूर रख सकें।

(ख) शरीर और मन के झूठे संगतिकरण का शिकार न बनें। बिना किसी भेदभाव और बिना अहंकार के सबका कल्याण करने वाले त्याग पथ का अनुसरण करें।

(ग) अधिक से अधिक शारीरिक गतिविधियाँ और तपस्या करें। लम्बे समय तक ध्यान साधना करते हुए प्राणों को नियंत्रित करें।

इस प्रकार सर्वोच्च शक्ति परमात्मा या जीव या वायु सभी के पाँच लक्षण हैं, जो शाश्वत शान्ति के लिए हमारी सहायता करते हैं।

(क) रुद्राय – वह हमें रुलाने में सक्षम हैं – ईश्वर, जीव, वायु।

(ख) प्रचेतसे – वह प्रशंसनीय ज्ञान वाला तथा उस ज्ञान को हमें देने में सक्षम हैं।

(ग) मीळहुष्टमाय – वह समस्त पीड़ाओं और दुःखों आदि को नष्ट करने के लिए ज्ञान की अत्यधिक वर्षा करने में सक्षम हैं।

(घ) तव्यसे – वह अत्यन्त प्रगतिशील हैं।

(ङ.) हृदे – वह हमारे अन्तर हृदय में स्थापित हैं।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

ऋग्वेद मन्त्र 1.43.2

यथा नो अदिति: करत्पश्वे नृभ्यो यथा गवे।
यथा तोकाय रुद्रियम्॥ २॥

यथा – जैसे कि
नः – हमारे लिए
अदिति: – माता (धरती)
करत् – करती है
पश्वे – पशुओं के लिए
नृभ्यः – मनुष्यों के लिए
यथा – जैसे कि
गवे – इन्द्रियों के लिए
यथा – जैसे कि
तोकाय – नवजात शिशु जैसे कि
रुद्रियम् – रुद्र भी वैसे ही करते हैं।

व्याख्या :-

रुद्र हमारे लिए क्या करते हैं?

जिस प्रकार धरती माता समस्त पशुओं के लिए करती है (उनके खाने के लिए घास आदि उत्पन्न करके); मनुष्यों के लिए करती है (उनके जीवन के लिए समस्त खाद्य सामिग्री उत्पन्न करके); जिस प्रकार जन्म देने वाली वास्तविक माता अपने नवजात शिशु के लिए करती है, उसी प्रकार रुद्र (अपने तीनों रूपों में अर्थात् ईश्वर, जीव और वायु में) भी हमारे लिए वही करते हैं।

जीवन में सार्थकता

हमें रुद्रों से डरना चाहिए या प्रेम करना चाहिए?

इसमें कोई सन्देह नहीं है कि रुद्र हमें रुलाने के लिए शक्तिशाली ताकतें हैं, परन्तु परमात्मा, जीवात्मा और वायु के द्वारा यह शक्तियाँ तभी लागू की जाती हैं, जब हम इन तीनों में लगातार सामंजस्य नहीं बना कर रखते।

रुद्र के सभी पक्ष वास्तव में धरती माता की तरह ही कार्य करते हैं, जो पशुओं और मानवों के लिए समान रूप से सब कुछ उत्पन्न करती है। रुद्र उसी प्रकार कार्य करते हैं जैसे एक व्यक्तिगत जीवात्मा अपनी इन्द्रियों के लिए करती है और जैसे जन्म देने वाली माता अपने नवजात शिशु को प्रेम और उसके पालन के रूप में करती है।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

अतः रुद्रों से डरने की आवश्यकता नहीं, किन्तु उन्हें प्रेम करने की और वापिस उनसे प्रेम प्राप्त करने की आवश्यकता है।

ऋग्वेद मन्त्र 1.43.3

यथा नो मित्रे वरुणो यथा रुद्रश्चिकेतति ।
यथा विश्वे सजोषसः ॥ ३ ॥

यथा – जैसे कि
नः – हमारे लिए
मित्रः – मित्र
वरुणः – उपदेशक
यथा – जैसे कि
रुद्रः – परमात्मा, जीव तथा वायु
चिकेतति – प्रकाशित करें
यथा – जैसे कि
विश्वे – सब
सजोषसः – समान रूप से लाभकारी विद्वान् ।

व्याख्या :-

रुद्रों के साथ हमारा क्या सम्बन्ध है?

रुद्र हमारे मित्रों की तरह और एक उपदेशक की तरह हैं (मित्र और वरुण अर्थात् अच्छे मार्गदर्शक तथा आवश्यकता पड़ने पर सहायक); वे परमात्मा, जीव और वायु की तरह हमें प्रकाशित करते हैं (चिकेतति); सभी उच्च विद्वानों की तरह हैं, जो हमारे लिए समान रूप से लाभकारी होते हैं (सजोषसः)।

जीवन में सार्थकता

रुद्रों से शाश्वत शान्ति कैसे प्राप्त हो?

यह मन्त्र विगत मन्त्र को आगे जारी रखते हुए स्पष्ट करता है कि रुद्रों की शक्तियाँ तथा उनका हमारे साथ सम्बन्ध एक मित्र, एक उपदेशक तथा एक उच्च विद्वान् की तरह है।

हमें यह सुनिश्चित करना चाहिए कि रुद्रों के ये तीनों पक्ष आपस में समन्वय पूर्वक रहें, परिवार में तथा समाज में, परस्पर लगातार सम्पर्क में रहें और एक सर्वमान्य लक्ष्य की तरफ आगे बढ़ें – स्वयं की तथा परमात्मा की अनुभूति प्राप्त करके शाश्वत शान्ति को प्राप्त करें।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



ऋग्वेद मन्त्र 1.43.4

गाथपतिं मेधपतिं रुद्रं जलाषभेषजम् ।
तच्छंयोः सुम्नमीमहे ॥ 4 ॥

गाथपतिम् – परमात्मा की वैदिक वाणियों और प्रशंसाओं के संरक्षक

मेधपतिम् – बुद्धि और त्याग के संरक्षक

रुद्रम् – प्रभु की शरण में

जलाष भेषजम् – जल के रूप में औषधि

तत् – उसके साथ

शंयोः – सांसारिक सुविधाएं

सुम्नम् – आध्यात्मिक आनन्द अर्थात् मुक्ति

ईमहे – प्रार्थना करते हैं।

व्याख्या :-

क्या हम सांसारिक सुख तथा आध्यात्मिक आनन्द इकट्ठे प्राप्त कर सकते हैं?

सर्वोच्च शक्ति, परमात्मा, उन वैदिक वाणियों और प्रशंसनीय गान का संरक्षक है, जो उसकी प्रशंसा में गाए जाते हैं; वह समस्त विद्वानों और दूसरों के कल्याण के लिए किए गए त्याग का संरक्षक है; वह सबको संरक्षण देने में सक्षम है; उसने जल के रूप में समस्त ऊर्जाएं औषधि की तरह डाल दी है। हम परमात्मा सहित समस्त सांसारिक सुखों और आध्यात्मिक आनन्द की प्रार्थना करते हैं।

जीवन में सार्थकता

परमात्मा के क्या गुण-लक्षण हैं?

परमात्मा के इन गुण-लक्षणों को हम कैसे अपने जीवन में उतार सकते हैं?

यह मन्त्र परमात्मा के तीन गुण-लक्षण सूचीबद्ध करता है :-

(क) गाथपतिम् – परमात्मा की वैदिक वाणियों और प्रशंसाओं के संरक्षक।

(ख) मेधपतिम् – बुद्धि और त्याग के संरक्षक।

(ग) रुद्रम् – प्रभु की शरण में।

(घ) जलाष भेषजम् – जल के रूप में औषधि।

हम इन गुण-लक्षणों के माध्यम से परमात्मा की संगति करना चाहते हैं, जिससे हमारा पूर्ण कल्याण हो, अर्थात् सांसारिक और आध्यात्मिक। परमात्मा की पूजा का अर्थ है, उसकी तरह जीना। अतः जब हम अपने

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

व्यक्तिगत जीवन में इन गुण—लक्षणों को धारण करते हैं तो हमें निम्न लक्षण अपने जीवन में सुनिश्चित करने चाहिए :—

- (क) हमें अपनी वाणी को श्रेष्ठ बनाना चाहिए।
- (ख) हमें महान विद्वानों तथा त्यागशील लोगों का अनुसरण करते हुए उनका सम्मान करना चाहिए।
- (ग) हमें सबको शरण देने के लिए तत्पर रहना चाहिए।
- (घ) हमें सबको औषधि स्वरूप भोजन और पेय पदार्थ भेंट करने चाहिए।

ऐसा जीवन वास्तव में एक दिव्य जीवन होगा तथा कल्याण की एक महान सामाजिक—राजनैतिक व्यवस्था पैदा करेगा।

जारी मन्त्र 5 में।

ऋग्वेद मन्त्र 1.43.5

यः शुक्र इव सूर्यो हिरण्यमिव रोचते ।
श्रेष्ठो देवानां वसुः ॥ ५ ॥

यः — जो

शुक्र — प्रकाशवान, दीप्तिमान

इव — जैसे

सूर्यः — सूर्य की तरह

हिरण्यम् — चमकदार स्वर्णिम

इव — जैसे

रोचते — देदीप्यमान

श्रेष्ठः — सर्वोत्तम

देवानाम् — देवताओं में

वसुः — स्वयं में सबको वास देने वाला।

व्याख्या :—

परमात्मा के क्या गुण—लक्षण हैं?

ऋग्वेद 1.43.4 में सूचीबद्ध परमात्मा के गुण—लक्षणों को आगे बढ़ाते हुए यह मन्त्र भी परमात्मा के अन्य निम्न गुण—लक्षणों को सूचीबद्ध करता है :—

- (क) शुक्र — प्रकाशवान, दीप्तिमान;
- (ख) हिरण्यम् — चमकदार स्वर्णिम;
- (ग) श्रेष्ठः — सर्वोत्तम;

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



(घ) वसुः – स्वयं में सबको वास देने वाला।

जीवन में सार्थकता

समाज के सच्चे वीर पुरुष कौन हैं?

लोग किसको अपना नेता चुनें?

जो लोग परमात्मा के गुण लक्षणों का अनुसरण करते हैं, वैदिक विवेकशीलता का पथ निर्धारित करते हैं और परमात्मा के सच्चे प्रतिनिधियों की तरह सम्मान प्राप्त करते हैं, केवल वही महान लोग वास्तविक वीरों की तरह सम्मानित होते हैं, जो लोगों के दिलों पर राज्य करते हैं।

आधुनिक सरकारों के लोकतान्त्रिक स्वरूप में लोगों को केवल उन्हीं सामाजिक नेताओं को चुनना चाहिए, जो क्रियात्मक रूप से परमात्मा के गुण लक्षणों को दर्शाते हैं।

जारी मन्त्र 6 में।

ऋग्वेद मन्त्र 1.43.6

शं नः करत्यर्वते सुगं मेषाय मेष्ये ।
नृभ्यो नारिभ्यो गवे ॥ 6 ॥

शम् – कल्याण, सुविधाएं

नः – हमारे लिए

करति – करते हो

अर्वते – घोड़ों के लिए

सुगम् – सरल और सुविधाजनक

मेषाय – भेड़ों के लिए

मेष्ये – बकरियों के लिए

नृभ्यः – मनुष्यों के लिए

नारिभ्यः – नारियों के लिए

गवे – गाय के लिए।

व्याख्या :-

सर्वोच्च शक्ति, परमात्मा का सर्वोच्च गुण लक्षण क्या है?

सर्वोच्च शक्ति, परमात्मा का सर्वोच्च गुण लक्षण है – “शम नः करति सुगम – वह सबके लिए समान रूप से कल्याण और सुविधाएं सरल और सुविधाजनक बनाता है, चाहे वह अश्व जाति हो, भेड़, बकरियाँ, गाय, नर या नारियाँ हों।”

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

जीवन में सार्थकता

एक दिव्य जीवन तथा दिव्य सामाजिक-राजनैतिक तन्त्र कैसे प्राप्त करें?

प्रत्येक दिव्य जीवन का यह गुण-लक्षण होना चाहिए कि बिना किसी भेदभाव के सबका कल्याण सुनिश्चित करे। महान विद्वानों, महान नेताओं या माता-पिता इस गुण-लक्षण के साथ ही दिव्य जीवन बन सकते हैं।

अतः जीवन में दिव्यता प्राप्त करने के लिए एक ही मार्ग है कि अपने व्यक्तिगत हितों को त्याग कर सबके कल्याण को सुनिश्चित करना और इसके साथ-साथ यह अनुभूति रखना कि सभी त्याग और कल्याण के समस्त कार्य सर्वोच्च संरक्षक, परमात्मा, द्वारा प्रदत्त शक्ति से ही सम्पन्न होते हैं। एक दिव्य जीवन ही सर्वोच्च संरक्षक का रक्षा प्रतिनिधि होता है। यही हमारे व्यक्तिगत स्तर पर अहंकार रहित और इच्छा रहित जीवन का मार्ग है।

सामाजिक और राजनैतिक नेताओं को इसी प्रकार प्रशिक्षित करना चाहिए, जिससे वे समाज में इसी कल्याण पथ को सामाजिक राजनैतिक तन्त्र की तरह विकसित कर सकें।

ऋग्वेद मन्त्र 1.43.7

अस्मे सोम श्रियमधि नि धेहि शतस्य नृणाम् ।
महि श्रवस्तुविनृम्णम् ॥ ७ ॥

अस्मे – हम में

सोम – शान्ति और प्रसन्नता का सर्वोच्च स्रोत, शान्तिदायक, दिव्य गुण, परमात्मा

श्रियम् – प्रकाशवान, गौरवशाली सम्पदा

अधि नि धेहि – पूरी तरह से स्थापित करो

शतस्य – सैकड़ों में

नृणाम् – पुरुषों की

महि – महान प्रशंसनीय

श्रवः – सुनने योग्य ज्ञान

तुवि नृम्णम् – अनेक प्रकार की शक्तियाँ।

व्याख्या :-

हमारे जीवन में सुख और शान्ति लाने वाला कौन है?

सर्वोच्च संरक्षक, परमात्मा, हमारे जीवन में सुख और शान्ति का सर्वोत्तम स्रोत है। हम उससे प्रार्थना करते हैं कि हमारे जीवन में तीन तथ्यों को पूरी तरह से स्थापित कर दे :–

(क) श्रियम् – प्रकाशवान, गौरवशाली सम्पदा;

(ख) श्रवः – सुनने योग्य ज्ञान;

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

(ग) तुवि नृम्णम् — अनेक प्रकार की शक्तियाँ।

इन तीन कारकों के साथ हम जीवन में शान्ति और परिणामस्वरूप सुख प्राप्त कर सकते हैं। ऐसा जीवन ही हमें आध्यात्मिक प्रगति की तरफ ले जा सकता है। इसीलिए परमात्मा को सोम अर्थात् समस्त पदार्थों का दाता, मानसिक और आध्यात्मिक प्रगति का देने वाला तथा पूर्ण सुखों को देने वाला कहा जाता है।

जीवन में सार्थकता

आध्यात्मिक प्रगति के लिए तीन स्तम्भ कारक कौन से हैं?

(क) गौरवशाली प्रशंसनीय सम्पदा — यदि हम अपनी सम्पदाओं को केवल दूसरों के कल्याण के लिए प्रयोग करें तो यह गौरवशाली सम्पदा बन जाती है और दिव्य चमक अर्जित करती है। ऐसी सम्पदा ही हमें कर्म ऋणों को समाप्त करने में सहयोगी होती है।

(ख) महान् दिव्य ज्ञान — कोई भी ज्ञान तभी प्रशंसनीय होता है, जब वह लोगों के सुनने योग्य हो और उन्हें स्थाई आन्तरिक शान्ति दे, जीवन यात्रा में उत्तरोत्तर प्रगति के लिए अच्छा मार्गदर्शन दे।

(स) शक्ति देने वाला भोजन — केवल सात्त्विक अर्थात् शुद्ध, पवित्र तथा स्वास्थ्यवर्धक भोजन ही सब प्रकार की शक्तियों का स्रोत होता है अर्थात् शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक।

हमें यह सुनिश्चित करना चाहिए कि हमारी सम्पदा, हमारा ज्ञान और हमारा भोजन स्वास्थ्य दिव्य गुणों वाला हो, तभी ये तीनों कारक आध्यात्मिक प्रगति में हमारी सहायता करेंगे।

ऋग्वेद मन्त्र 1.43.8

मा नः सोमपरिबाधो मारातयो जुहुरन्तः ।

आ न इन्दो वाजे भज ॥ 8 ॥

मा — नहीं

नः — हमें

सोम परिबाधः — दिव्य गुणकारी कार्यों में बाधा पहुँचाने वाले

मा — नहीं

अरातयः — कभी दान न देने वाले

जुहुरन्तः — पीड़ित करना, उलट देना

(आ — भज से पूर्व लगाकर)

न — हमें

इन्दो — विद्वान् एवं शक्तिशाली मस्तिष्क

वाजे — शत्रुओं को पराजित करने वाली शक्ति में।

(भज — आ भज) हमें संयुक्त करो।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

व्याख्या :-

दिव्य शुभ कार्यों तथा त्याग में हमें किसकी सहायता लेनी चाहिए?

हम सर्वोच्च बुद्धि और सर्वोच्च शक्ति, परमात्मा, को आमंत्रित करते हैं कि वह शत्रुओं को पराजित करने वाली अपनी शक्तियों के साथ हमारे जीवन से जुड़े और हम सब प्रार्थना करते हैं कि दो प्रकार के लोग किसी को तंग न करें, चोट न पहुँचायें और दिव्य कार्यों से हमें दूर न करें :—

- (क) जो दिव्य शुभ कार्यों में बाधाएं उत्पन्न करते हैं और
- (ख) जो कभी दान नहीं करते।

जीवन में सार्थकता

हमारे दिव्य शुभ कार्यों में तथा त्याग कार्यों में किसे हम कभी भी दखल देने की अनुमति न दें?

हमारे दैनिक जीवन में भी हमें किसी ऐसे व्यक्ति को दखल देने की अनुमति नहीं देनी चाहिए, जो दिव्य शुभ कार्यों में बाधाएं उत्पन्न करते हैं और जो लोग कभी त्याग और दान नहीं करते। हमें परिवार में और समाज में ऐसे सक्षम लोगों को मुखिया बनाना चाहिए, जो विद्वान हैं और शक्तिशाली हैं; जो अपनी शक्तियों को हमारे साथ जोड़कर गुणों और त्याग कार्यों के शत्रुओं को पराजित करते हैं।

ऋग्वेद मन्त्र 1.43.9

यास्ते प्रजा अमृतस्य परस्मिन्धामन्त्रतस्य ।
मूर्धा नाभा सोम वेन आभूषन्तीः सोम वेदः ॥ ९ ॥

या: — जो

ते — आपके

प्रजा: — प्रजा, प्रेमी

अमृतस्य — अमृत के, न मरने योग्य के

परस्मिन — सर्वोच्च

धामन — स्थान

ऋतस्य — सत्य स्वरूप, न्यायकारी

मूर्धा — सर्वोच्च

नाभा — स्थायी आनन्द के लिए लक्ष्यबद्ध, भुवन की नाभि — यज्ञ, सबके कल्याण के लिए त्याग

सोम — शान्तिदायक, दिव्य गुण, परमात्मा

वेन: — प्रेम करते हो, चाहते हो

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

आभूषन्तीः – अलंकृत करते हो
सोम – शान्तिदायक, दिव्य गुण, परमात्मा
वेदः – जानिए।

व्याख्या :-

परमात्मा किसको जानता है, प्रेम करता है और किसकी इच्छा करता है?

शान्ति और गुणों की सर्वोच्च शक्ति, परमात्मा! आपके वे अनुयायी, प्रेमी, जो आपके लिए अर्थात् अमृत के लिए जीते हैं और इस उद्देश्य को अपने सर्वोच्च स्थान पर रखते हैं; जो एक सत्यवादी और न्यायिक जीवन जीते हैं; जो यज्ञ का जीवन जीते हैं अर्थात् सबके कल्याण के लिए त्याग करते हैं और सदैव स्थाई आनन्द पर केन्द्रित रहते हैं, आप उन्हें जानते हैं, प्रेम करते हैं और उनकी इच्छा करते हैं; आप उन्हें अपने दिव्य ज्ञान और अनुभूति से अलंकृत करते हैं।

जीवन में सार्थकता

समाज में सर्वोच्च स्तर कैसे प्राप्त करें?

परमात्मा का प्रेम और ज्ञान प्राप्त करने के लिए हमें जीवन में तीन लक्षण अवश्य सुनिश्चित करने चाहिए :—

(क) उस अमृत शक्ति के साथ अपने मस्तिष्क के सर्वोच्च स्थल पर निकट सम्बन्ध पर ध्यान बनाकर रखना।

(ख) एक सच्चा और न्यायिक जीवन जीना।

(ग) यज्ञ स्वरूप कार्य करना अर्थात् सबके कल्याण के लिए त्याग करना।

स्वयं को स्थाई और शाश्वत शान्ति के लिए निश्चित कर लो और अस्थाई असुविधाओं या कष्टों के लिए कभी चिन्तित न रहो।

इसी प्रकार अपने परिवार और समाज में सर्वोच्च स्तर अर्जित करने के लिए, सबका प्रेम और सम्मान अर्जित करने के लिए, हमें यह सुनिश्चित करना चाहिए कि :—

(क) हमारे लक्ष्य सर्वोच्च होने चाहिए। हमें अपने कार्यों के बल पर उत्तरोत्तर प्रगति पर ध्यान देना चाहिए, अधोगति पर नहीं।

(ख) हमारी एकता और ईमानदारी असमान्तर होनी चाहिए।

(ग) हमें अपने व्यक्तिगत हितों की लागत पर भी सबकी सहायता के लिए सदैव तत्पर रहना चाहिए।

सदा सन्तुष्ट रहो, कभी शिकायत न करो।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

ऋग्वेद मण्डल-1 सूक्त 44

ब्रह्म वेला, परमात्मा के प्रतिनिधि पर सूक्त

ऋग्वेद मन्त्र 1.44.1

अग्ने विवस्वदुषसश्चित्रं राधो अमर्त्यं।
आ दाशुषे जातवेदो वहा त्वमद्या देवाँ उषर्बृधः ॥ १ ॥

अग्ने – सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा
विवस्वत् – स्व प्रकाशित के समान
उषसः – ब्रह्म वेला (प्रातः वेला)

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

चित्रम् – अद्भुत चेतना

राधः – सम्पदा

अमर्त्यः – न मरने योग्य

(आ – वह से पूर्व लगाकर)

दाशुषे – त्यागशील, दानशील

जातवेदः – सबका ज्ञाता (जो पैदा हुआ या उत्पन्न हुआ)

(वह – आवह) – प्राप्त करवाईए

त्वम् – आप

अद्य – आज

देवान् – दिव्य लोगों को

उषर्बुधः – प्रातःकालीन ब्रह्म वेला में जागृत होने वाले।

व्याख्या :-

सर्वोच्च चेतना की प्रकृति क्या है?

सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा! जो कुछ भी पैदा हुआ या उत्पन्न किया गया, आपको उन सबका ज्ञान है। कृपया स्वप्रकाशित ज्ञान की तरह अद्भुत चेतना उन लोगों को भी उपलब्ध कराईए, जो ब्रह्म वेला में प्रातःकाल ही जाग्रत होते हैं और त्यागशील हैं। आपकी वह स्वप्रकाशित चेतना न मरने योग्य है। समस्त दिव्य लोगों को यह सम्पदा आज ही प्राप्त हो।

जीवन में सार्थकता

ब्रह्म वेला में जाग्रत होने के क्या लाभ हैं?

परमात्मा द्वारा उपलब्ध कराई गई चेतना स्व प्रकाशित ज्ञान की तरह है, जो कभी नष्ट नहीं होती।

जो कुछ भी इस सृष्टि में पैदा हुआ या निर्मित किया गया, उस सबके बारे में केवल परमात्मा को ही सर्वोच्च ज्ञान है क्योंकि प्रत्येक कण और प्रत्येक जीवन परमात्मा की अनुभूति है।

परमात्मा वह दिव्य चेतना उन लोगों को उपलब्ध कराते हैं :-

(क) जो ब्रह्म वेला में प्रातः काल जल्दी जाग्रत हो जाते हैं।

(ख) जो सब कुछ त्याग कर इच्छा रहित जीवन जीते हैं।

ऋग्वेद मन्त्र 1.44.2

जुष्टो हि दूतो असि हव्यवाहनोऽग्ने रथीरध्वराणाम् ।

सजूरश्विभ्यामुषसा सुवीर्यमस्मे धेहि श्रवो बृहत् ॥ 2 ॥

जुष्टः – प्रीतिपूर्वक, प्रेम करने योग्य

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

हि – निश्चित रूप से
दूतः – दूत, धूर्त शत्रुओं के नाशक
असि – हैं
हव्यवाहनः – सब पदार्थों और वाहनों के देने वाले
अग्ने – सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा
रथीः – रथचालक
अध्वराणाम् – अहिंसक त्याग
सजूः – के साथ
अश्विभ्याम् – वायु तथा ऊर्जा
उषसा – प्रातःकाल, सूर्योदय
सुवीर्यम् – उत्तम ऊर्जा
अस्मे – हमारे लिए, हमारे भीतर
धेहि – स्थापित करो, प्रदान करो
श्रवः – सुनने योग्य
बृहत् – बड़ा।

व्याख्या :-

परमात्मा का दूत बनने के योग्य कौन है?

एक दिव्य दूत को परमात्मा से क्या प्राप्त होता है?

निश्चित रूप से एक प्रसन्न और प्रेम करने वाला व्यक्ति धूर्त शत्रुओं का नाश करके आपका दूत बनने के योग्य है। सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा, केवल आप ही हिंसारहित त्याग कार्यों के सारथी होने के नाते समस्त पदार्थों तथा वाहनों के दाता हैं।

आप प्रत्येक प्रातः सूर्योदय के समय वायु और ऊर्जा सहित हमारे साथ संयुक्त होते हो। कृपया हमारे अन्दर सर्वोत्तम ऊर्जा को स्थापित कर दो, जो सुनने योग्य बड़े त्याग कार्यों के लिए हो। •

जीवन में सार्थकता

एक अच्छे दूत तथा प्रतिनिधि से क्या लक्षण अपेक्षित हैं?

दूत किसी उच्च अधिकारी का प्रतिनिधि होता है। हम सब अपने परिवार, उसकी परम्पराओं, अपने समाज तथा उसके रीति-रिवाजों, अपने-अपने संस्थानों और कभी-कभी अपने राष्ट्र और उसकी संस्कृति के दूत होते हैं। अतः यह हमारा निश्चित कर्तव्य है कि हम जिस उच्च संस्था का प्रतिनिधित्व करते हैं, उसका संरक्षण करें। यदि हम स्वयं को एक सच्चा प्रतिनिधि सिद्ध करते हैं तो वह उच्च संस्था निश्चित रूप से हमें सभी आवश्यक पदार्थ, वाहन तथा शक्तियाँ उपलब्ध करायेगी।

एक अच्छा दूत तथा प्रतिनिधि बनने के लिए हमें निम्न लक्षणों को सुनिश्चित करना चाहिए :-

- (क) हम प्रसन्न तथा प्रेम करने वाले हों।
- (ख) हम शत्रुओं के नाशक हों।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

- (ग) प्रत्येक सूर्योदय के समय हम अपने कर्तव्यों के बारे में विचार प्रारम्भ करें और उन्हें सम्पन्न करें।
(घ) हम सुनने योग्य सभी बड़े से बड़े त्याग कार्यों के लिए तैयार रहें।

ऋग्वेद मन्त्र 1.44.3

अद्या दूतं वृणीमहे वसुमग्निं पुरुप्रियम् ।
धूमकेतुं भात्रजीकं व्युष्टिषु यज्ञानामध्वरश्रियम् ॥ ३ ॥

अद्य — आज

दूतम् — दूत को

वृणीमहे — वरण करते हैं

वसुम् — निवास

अग्निम् — समस्त अग्नियाँ

पुरु प्रियम् — समाज में सबके प्रिय

धूमकेतुम् — जिसकी महिमा एक ध्वज की तरह वायुमण्डल में है

भात्रजीकम् — कामनाओं का प्रकाश

व्युष्टिषु — समस्त कामनाओं में

यज्ञानाम् — समस्त यज्ञों में

अध्वर श्रियम् — हिंसारहित यज्ञों अर्थात् त्याग की महिमा।

व्याख्या :-

एक दिव्य दूत के क्या लक्षण हैं?

आज हम उस दूत या प्रतिनिधि को स्वीकार करते हैं, जो निम्न लक्षणों से सुसज्जित है :-

(क) वसुम् अग्निम् — समस्त अग्नियों का निवास।

(ख) पुरु प्रियम् — समाज में सबके प्रिय।

(ग) धूमकेतुम् — जिसकी महिमा एक ध्वज की तरह वायुमण्डल में है।

(घ) भात्रजीकम् व्युष्टिषु — जो समस्त कामनाओं में कामनाओं का प्रकाश है।

(ड.) यज्ञानाम् अध्वर श्रियम् — जो समस्त यज्ञों में हिंसारहित यज्ञों अर्थात् त्याग की महिमा है।

जीवन में सार्थकता

हमें किसको अपना प्रतिनिधि चुनना चाहिए?

राष्ट्र का शासन करने के लिए हमें अपने प्रतिनिधि चुनने पड़ते हैं। जो लोग समाज और राष्ट्र का संचालन करना चाहते हैं, उन्हें यह सुनिश्चित करना चाहिए कि वे निम्न विशेष लक्षणों को धारण करते हैं और अपने अन्दर उनका विकास करते हैं :-

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

(क) वे समाज के विभिन्न पक्षों से सम्बन्धित अपार ज्ञान के साथ ऊर्जावान हों। लोग उनसे ज्ञान तथा ऊर्जा प्राप्त करने की प्रेरणाओं को प्राप्त करें।

(ख) वे बिना भेदभाव के सबको समान रूप से प्रेम करने वाले हों और सबका ध्यान रखें। इसके बदले वे लोगों से गहरा प्रेम और सम्मान प्राप्त करें।

(ग) उनके कल्याण, प्रेम और त्याग के कार्य इतने महान होने चाहिए कि वे उनकी महिमा का सर्वोच्च ध्वज दिखाई देते हों।

(घ) वे लोगों की कामनाओं को पूरा करने में ऐसे सक्रिय हों, जिससे प्रत्येक व्यक्ति उनके भीतर अपनी ही कामनाओं और इच्छाओं को देखने लगे।

(ङ) वे समाज में प्रत्येक कार्य में सक्रिय भागीदार हों। वे स्वयं त्यागशील पुरुष होने चाहिए, जो सबके सामान्य कल्याण के लिए दूसरों को भी त्याग के लिए प्रेरित कर सकें।

ऋग्वेद मन्त्र 1.44.4

श्रेष्ठं यविष्टमतिथिं स्वाहुतं जुष्टं जनाय दाशुषे ।
देवाँ अच्छा यातवे जातवेदसमग्निमीळे व्युष्टिषु ॥ 4 ॥

श्रेष्ठम् – सर्वोत्तम

यविष्टम् – सबसे शक्तिशाली

अतिथिम् – सेवा के योग्य

स्वाहुतम् – सबके दाता

जुष्टम् – प्रीति वाले

जनाय – उन मनुष्यों के लिए

दाशुषे – जो सब कृछ त्याग करते हैं

देवान् – दिव्य लोगों के लिए

अच्छ – इच्छा

यातवे – प्राप्त करने के लिए

जातवेदसम् – सबका ज्ञान रखने वाले

अग्निम् – सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा

ईळे – पूजा

व्युष्टिषु – विशेष कामनाओं में, दिन के प्रारम्भ में।

व्याख्या :-

हम परमात्मा की पूजा क्यों करते हैं?

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

हम दिन के प्रारम्भ में ही अपनी विशेष कामनाओं में सर्वोच्च ऊर्जा परमात्मा की पूजा करते हैं क्योंकि वह जातवेदसम है अर्थात् उसे सबका सर्वोच्च ज्ञान है।

हम दिव्यता तथा दिव्य लोगों को भी प्राप्त करना चाहते हैं, जो अन्य लोगों के लिए सब कुछ त्याग कर देते हैं।

परमात्मा भी ऐसे लोगों को प्रेम करते हैं। परमात्मा तथा ऐसे लोग निम्न प्रकार के होते हैं :-

- (क) श्रेष्ठम् अर्थात् सर्वोत्तम्,
- (ख) यविष्ठम् अर्थात् सबसे शक्तिशाली,
- (ग) अतिथिम् अर्थात् सेवा के योग्य,
- (घ) स्वाहुतम् अर्थात् सबके दाता।

इन सबका सार यह है कि परमात्मा एक त्यागशील व्यक्ति को प्रेम करते हैं।

जीवन में सार्थकता

हमें दिव्य लोगों का सम्मान तथा उनकी महिमा क्यों करनी चाहिए?

एक दिव्य पहेली – हम परमात्मा की कई कारणों से पूजा करते हैं, परन्तु परमात्मा दिव्य लोगों को केवल एक मुख्य कारण से प्रेम करता है, वह क्या कारण है?

हम परमात्मा की कई कारणों से पूजा करते हैं। लेकिन परमात्मा दिव्य लोगों को केवल एक मुख्य कारण से प्रेम करते हैं और वह है, उनका अन्य लोगों के लिए त्यागशील जीवन। ऐसे दिव्य लोग बिना किसी अहंकार के सब कुछ त्याग करने के लिए सदैव तत्पर रहते हैं।

परमात्मा तथा सभी दिव्य लोगों में चार मुख्य समानताएं होती हैं :-

- (क) श्रेष्ठम् – दोनों सर्वोत्तम होते हैं,
- (ख) यविष्ठम् – दोनों सबसे शक्तिशाली होते हैं,
- (ग) अतिथिम् – दोनों सेवा के योग्य होते हैं,
- (घ) स्वाहुतम् – दोनों सबके दाता होते हैं।

इसलिए हम परमात्मा तथा ऐसे सभी दिव्य लोगों की पूजा और महिमा करते हैं। प्रतिदिन हमारी विशेष कामनाएं हैं कि हमें उनके दिव्य गुण प्राप्त हों और हम स्वयं को वासना पूर्ण कामनाओं से सुरक्षित कर सकें।

ऋग्वेद मन्त्र 1.44.5

स्तविष्यामि त्वामहं विश्वस्यामृत भोजन।
अग्ने त्रतारममृतं मियेध्य यजिष्ठं हव्यवाहन ॥ ५ ॥

स्तविष्यामि – महिमा गान करेंगे, पूजा करेंगे
त्वाम् – आपकी
अहम् – मैं

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

विश्वस्य — सबका

अमृत — न मरने योग्य, न नष्ट होने योग्य

भोजन — पालन के लिए भोजन

अग्ने — सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा

त्रातारम् — संरक्षक

अमृतम् — हमें न मरने योग्य बनाने वाले, सांसारिक कामनाओं से हटाकर

मियेध्य — संगतिकरण के योग्य

यजिष्ठम् — यज्ञ, त्याग करने के लिए

हव्यवाहन — त्याग के लिए समस्त वस्तुओं को लाने वाले।

व्याख्या :-

हम परमात्मा की पूजा तथा महिमा क्यों करते हैं?

मैं तीन कारणों से सर्वोच्च ऊर्जा परमात्मा की पूजा तथा महिमा करूँगा :-

(क) विश्वस्य अमृत भोजन आप सबके पालन के लिए वह भोजन देते हो, जो न मरने योग्य और न नष्ट होने योग्य हैं।

(ख) त्रातारम् अमृतम् आप हमारे संरक्षक हो और हमें न मरने योग्य बनाने वाले हो। हमें सांसारिक कामनाओं से हटाते हो।

(ग) मियेध्य यजिष्ठम् हव्यवाहन — आप संगतिकरण के योग्य हो, जिससे हम यज्ञ, त्याग करने में सक्षम होते हैं क्योंकि त्याग के लिए समस्त वस्तुओं को लाने वाले केवल आप ही हो।

जीवन में सार्थकता

जो व्यक्ति यज्ञ अर्थात् त्याग करता है, उसके क्या लक्षण होते हैं?

यज्ञ के तीन लक्षणों को कैसे सुनिश्चित करें?

तीन सबसे महत्वपूर्ण कारण जिसके लिए सबको यज्ञ करना चाहिए :-

(क) क्योंकि पालन के लिए समस्त भोजन को देने वाले परमात्मा हैं,

(ख) क्योंकि वह सबके संरक्षक हैं,

(ग) क्योंकि वह यज्ञों में संगतिकरण के योग्य हैं, क्योंकि यज्ञ के लिए सभी पदार्थ वही उपलब्ध कराते हैं।

यही तीन कारण हमारे जीवन का लक्ष्य होने चाहिए। परमात्मा की पूजा हमें परमात्मा के लक्षणों को अपने भीतर धारण करने के योग्य बनाती है।

यदि हम परमात्मा की भक्ति की इस प्रकृति पर ध्यान एकाग्र करें तो हमारे अन्दर भी निम्न लक्षण दिखाई देने लगेंगे :-

(क) हम भी दूसरों के पालन—पोषण के लिए उनकी सहायता और मार्गदर्शन करने योग्य बन जाएंगे। इसे दान कहते हैं।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

(ख) हम अन्य लोगों को अपनी आन्तरिक न मरने वाली शक्ति पर ध्यान करने में मार्गदर्शक बन सकते हैं, जो सामान्यतया भौतिक जीवन के लिए मरने वाली वस्तुओं पर ध्यान करते हैं। इसे अमृत दिव्यता की पूजा कहते हैं। यह देव पूजा है।

(ग) हम यह अनुभूति प्राप्त करने में सफल हो सकते हैं कि परमात्मा की संगति के कारण ही हमें यह जीवन मिला और हम यज्ञ करने के योग्य बने। इसे दिव्य संगतिकरण कहते हैं।

वास्तव में यज्ञ या त्यागशील जीवन के यही तीन लक्षण हैं।

ऋग्वेद मन्त्र 1.44.6

सुशंसो बोधि गृणते यविष्टय मधुजिह्वः स्वाहुतः ।
प्रस्कण्वस्य प्रतिरन्नायुर्जीवसे नमस्या दैव्यं जनम् ॥ 6 ॥

सुशंसः – उत्तम महिमा प्राप्त

बोधि – ज्ञान

गृणते – आपकी और सत्यता की महिमा करने वालों के लिए

यविष्टये – शत्रुओं को पराजित करने में सबसे शक्तिशाली

मधुजिह्वः – मधुर वाणी वाले

स्वाहुतः – उत्तम आहुति यज्ञ के लिए

प्रस्कण्वस्य – महान विद्वान

प्रतिरन् – दुःखों और दर्दों से ऊपर उठने की शक्ति

आयुः – आयु

जीवसे – जीवन के लिए

नमस्या – मेरा प्रणाम और पूजा

दैव्यम् – दिव्य लोगों के

जनम् – जीवन को।

व्याख्या :-

परमात्मा की महिमा के क्या लाभ हैं?

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा, शत्रुओं को पराजित करने के लिए सबसे महिमा प्राप्त तथा शक्तिशाली सत्ता है। वह उन लोगों में भी निम्न लक्षण सुनिश्चित करता है, जो उसकी महिमा करते हैं और सत्यता से उसका अनुसरण करते हैं :—

- (क) बोधि — ज्ञान का प्रकाश,
- (ख) मधुजिह्वः — मधुर वाणी वाले,
- (ग) स्वाहुतः — उत्तम आहुति यज्ञ के लिए,
- (घ) प्रस्कण्वस्य प्रतिरन् आयुः — ऐसे महान विद्वानों में स्वस्थ जीवन और दीर्घायु के लिए दुःखों और दर्दों से ऊपर उठने की शक्ति देते हैं।

आईए! परमात्मा तथा ऐसे दिव्य जीवन वाले लोगों को अपने प्रणाम प्रस्तुत करें — नमस्या दैव्यम् जनम्।

जीवन में सार्थकता

अपने उच्चाधिकारियों का सम्मान और उनका अनुसरण करने के क्या लाभ होते हैं?

हमारे पारिवारिक या सामाजिक जीवन में प्रत्येक व्यक्ति को अपने वृद्धजनों तथा उच्चाधिकारियों के साथ गहरा और गम्भीर सम्बन्ध बनाकर रखना चाहिए। निम्न लाभ प्राप्त करने के लिए उनका सम्मान, उनकी महिमा तथा उनका अनुसरण होना चाहिए :—

- (क) उनके ज्ञान के साथ उनका प्रकाश। महिमा प्राप्त उच्चाधिकारी अपने श्रद्धालुओं और अनुशासित लोगों पर अपने ज्ञान की वर्षा करते हैं।
 - (ख) वृद्ध जनों के साथ हमारा दिव्य सम्बन्ध हमें मधुर भाषी बना देता है।
 - (ग) हम समस्त त्याग कार्यों के लिए तैयार हो जाते हैं क्योंकि हम यह जान जाते हैं कि हमारे उच्चाधिकारी हमें उसका पर्याप्त प्रतिफल देंगे।
 - (घ) महिमा प्राप्त उच्चाधिकारी ऐसे श्रद्धालुओं को इतनी शक्ति देते हैं कि वे कष्टों और दर्दों को सहन कर सकें क्योंकि वे भी उच्चाधिकारियों की तरह दूरदर्शी हो जाते हैं।
- वे सब लोग जो वरिष्ठ अधिकारियों का सम्मान, महिमा और अनुसरण करते हैं, उन्हें प्रत्येक संस्थान में सम्मान और प्रगति प्राप्त होती है।

ऋग्वेद मन्त्र 1.44.7

होतारं विश्ववेदसं सं हि त्वा विश इन्धते ।
स आ वह पुरुहुत प्रचेतसोऽग्ने देवाँ इह द्रवत् ॥ 7 ॥

होतारम् — त्याग के लिए सब पदार्थों के दाता
विश्व वेदसम् — सबका धान रखने वाले
(सम — इन्धते से पूर्व लगाकर)
हि — निश्चय से

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

त्वा — आप

विशः — सब प्रजाएँ

(इन्धते — सम इन्धते) — हमारे हृदयों में स्थापित होकर प्रकाशित कीजिए

सः — वह (परमात्मा)

आवह — प्राप्त होवो

पुरुहूत — अनेकों द्वारा पुकारे गए

प्रचेतसः — प्रकाशवान चेतना वाले

अग्ने — सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा

देवान् — दिव्य

इह — यहाँ, इस जीवन में

द्रवत् — शीघ्र।

व्याख्या :-

कौन परमात्मा की अनुभूति प्राप्त कर सकता है?

त्याग के लिए समस्त पदार्थों के दाता और सबके ज्ञाता, आप निश्चित रूप से सब जीवों के हृदय में स्थापित हों और सबको प्रकाशित करते हों। उन्हें सब बुलाते हैं, परन्तु वे केवल उन दिव्य लोगों की अनुभूति में आते हैं, जिनके पास प्रकाशित चेतना है।

जीवन में सार्थकता

हम जीवन में किसकी खोज कर रहे हैं?

परमात्मा सबमें स्थापित है, परन्तु केवल उन्हीं दिव्य लोगों की अनुभूति में होते हैं, जिनके पास प्रकाशित चेतना है।

सांसारिक पदार्थों के लिए चलने वाले मन से ऊपर होती है प्रकाशित चेतना। यह इस सृष्टि की अव्यक्त सत्ता है। यह परमात्मा से सम्बन्धित है और इसीलिए यह दिव्य है। जो व्यक्ति इस सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा, पर ध्यान एकाग्र करता है, वह निश्चित रूप से प्रकाशित चेतना और परमात्मा को प्राप्त कर लेता है।

इसीलिए आध्यात्मिक खोज में लगे हुए लोग ऐसे दिव्य लोगों की खोज करते रहते हैं, जिससे उन्हें भी उच्च चेतना को प्राप्त करने का मार्गदर्शन मिल सके और वे भी परमात्मा की संगति के पथ पर अग्रसर हो सकें। ऐसे दिव्य लोगों की दृष्टि, उनका स्पर्श और उनकी वाणी सदैव प्रेरणादायक होती है।

इसी प्रकार, सांसारिक जीवन में भी हमें अपने वृद्धजनों और उच्चाधिकारियों के साथ श्रद्धावान सम्बन्ध बना कर रखने चाहिए, जिससे उत्तम प्रकार से हमारा उत्थान सम्भव हो। यदि हम अपने वृद्धजनों और उच्चाधिकारियों के रूप में ऐसे महान आत्माओं, दयालु और समर्थक हृदयों की संगति प्राप्त कर सकें तो हमारी प्रगति निश्चित है।

ऋग्वेद मन्त्र 1.44.8

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पञ्चवती वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

सवितारमुषसमशिवना भगमग्निं व्युष्टिषु क्षपः ।
कण्वासस्त्वा सुतसोमास इन्धते हव्यवाहं स्वधर ॥ ८ ॥

सवितारम् – सूर्य को

उषसम् – ऊषाकाल के प्रकाश को

अशिवना – दोनों (वायु और जल)

भगम् – सुविधाओं को

अग्निम् – ऊर्जा को

व्युष्टिषु – कामनाओं में, दिन में

क्षपः – रात्रि में

कण्वासः – महान विद्वान

त्वा – आपक

सुतसोमासः – उत्तम लक्षणों को उत्पन्न करने वाले, स्वयं में बुद्धिमान

इन्धते – उनमें दीप्ति कीजिए, प्रकाशित कीजिए

हव्यवाहम् – त्याग के लिए वस्तुएं देने वाले

स्वधर – स्वयं को त्याग के लिए प्रस्तुत करने वाले ।

व्याख्या :-

परमात्मा हमें क्या देते हैं?

हमारा आध्यात्मिक दायित्व क्या है?

जीवन का प्रधान आध्यात्मिक उद्देश्य क्या है?

हे परमात्मा! आप त्याग के लिए सब पदार्थों को प्रदान करते हैं और दोषरहित सभी त्याग कार्यों में आप ही सफलता प्रदान करते हो। जो लोग सर्वोच्च दाता का अनुसरण करते हैं, वे स्वयं को त्याग के लिए समर्पित कर देते हैं।

आपके महान विद्वान, आपके प्रेमी उत्तम लक्षणों, बुद्धि और अपनी कामनाओं में सूर्य के प्रकाश और उसकी ऊर्जा जैसी दिव्य शक्तियों को धारण करके स्वयं को प्रकाशित करते हैं, जिससे उन्हें दिन और रात सुविधा प्राप्त हो।

यह मन्त्र हमें प्रेरित करता है कि हम सदैव यह ध्यान रखें कि इस जीवन का प्रधान और आध्यात्मिक उद्देश्य त्याग करना ही है।

जीवन में सार्थकता

हमारे माता—पिता हमारे लिए क्या करते हैं?

सांसारिक जीवन में हमारे क्या दायित्व हैं?

सांसारिक जीवन का प्रधान उद्देश्य क्या है?

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

परमात्मा की तरह हमारे माता-पिता, उच्चाधिकारी और मार्गदर्शक आदि हमारे जीवन के लिए दो महत्वपूर्ण दायित्व निभाते हैं :—

- (क) वे हमारे सुविधाजनक जीवन के लिए सभी पदार्थ प्रदान करते हैं।
(ख) प्रत्येक कदम पर वे हमारी सफलता के लिए हमें आशीर्वाद देते हैं।
इस पृष्ठभूमि के साथ, यह हमारा कर्तव्य है कि :—
(क) हम उत्तम चारित्रिक लक्षणों और बुद्धि के साथ अपने मन और मस्तिष्क को प्रकाशित करें।
(ख) अपने शान्तिपूर्ण और सन्तुलित जीवन के लिए प्रतिक्षण हम आत्मा की ऊर्जा और उसके प्रकाश को बनाकर रखें, यही सांसारिक जीवन का प्रधान उद्देश्य समझा जाना चाहिए। इन लक्षणों और बुद्धि के साथ हम अपने लिए तथा अपने उच्चाधिकारियों और माता-पिता के लिए एक अच्छा नाम अर्जित कर सकते हैं।

ऋग्वेद मन्त्र 1.44.9

पतिर्हृध्वराणामग्ने दूतो विशामसि ।
उषबुध आ वह सोमपीतये देवाँ अद्य स्वर्दृशः ॥ ९ ॥

पति: — पालक, संरक्षक

अध्वराणाम् — हिंसारहित त्याग कार्यों के

अग्ने — सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा

दूतः — दूत

विशाम् — समस्त जीव

असि — हो

उषबुधः — प्रातः बेला में जागृत

आवह — प्राप्त होवो

सोमपीतये — दिव्य लक्षणों, आदतों को धारण और सेवन करने वाले

देवान् — दिव्य लोगों को

अद्य — आज

स्वः दृशः — स्वः की अनुभूति प्राप्त करने वाले।

व्याख्या :—

आध्यात्मिक पथ पर उन्नति किस प्रकार प्राप्त हो सकती है?

सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा, उन समस्त हिंसारहित त्याग कार्यों का पालक और संरक्षक है, जो वास्तव में शुद्ध होते हैं। वह सब जीवों का दूत है।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

प्रातःकालीन ब्रह्मबोला में उठने वाले लोग उसके दिव्य लक्षणों का पान करके और उन्हें धारण करके स्वयं उस ब्रह्म को प्राप्त करते हैं। ऐसे दिव्य लोगों के लिए वह ब्रह्म ही उनकी स्व-अनुभूति का अन्तिम लक्ष्य बन जाता है, जो परमात्मा की अनुभूति के बराबर होता है।

जीवन में सार्थकता

सांसारिक जीवन में उन्नति कैसे सुनिश्चित करें?

परमात्मा की अनुभूति और उसकी प्राप्ति हमारे अपने ही रूप में तथा हमारे अपने ही भीतर होगी। जीवन में उस स्तर को प्राप्त करने के लिए दिव्यता की प्राप्ति ही स्पष्ट मार्ग है। प्रातःकालीन वेला में उठने वाले लोगों को ध्यान साधनाओं और शुद्ध त्याग कार्यों से ही दिव्यता की प्राप्ति होती है।

(क) त्याग कार्य (शरीर की शुद्धता अर्थात् अहंकारहित अवस्था के साथ)

(ख) ध्यान स्थित जीवन (मन की शुद्धता अर्थात् कामनारहित अवस्था के साथ)

त्याग और ध्यानपूर्ण जीवन जी दिव्यता की तरफ ले जाता है।

दिव्यता स्व-अनुभूति अर्थात् परमात्मा की अनुभूति की तरफ ले जाती है।

परमात्मा की अनुभूति के इस मार्ग से जो अनुपातिक सूत्र निकलता है, वह सांसारिक उपलब्धियों में भी लागू होता है। अपने समस्त प्रयास प्रधान लक्ष्य के लिए आहूत करो, जो आपके सामने हैं और गहरे ज्ञान की आहूति देकर उस पर अपना ध्यान एकाग्र करो। गहरा ज्ञान और अथक प्रयास किसी भी क्षेत्र में सफलता प्राप्त करवा सकते हैं।

ऋग्वेद मन्त्र 1.44.10

अग्ने पूर्वा अनूषसो विभावसो दीदेथ विश्वदर्शतः।

असि ग्रामेष्विता पुरोहितोऽसि यज्ञेषु मानुषः ॥ 10 ॥

अग्ने – सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा

पूर्वा: – पूर्व काल में

अनु – अनुसरण करते

उषसः – वर्तमान और भविष्य में

विभावसो – विशेष प्रकाश की वर्षा करने वाले

दीदेथ – अच्छे प्रकार से जानते हो

विश्व दर्शतः – समूचे ब्रह्माण्ड को देखने वाले

असि – हो

ग्रामेषु – समस्त आवास

अविता – संरक्षक

पुरोहितः – समूची सृष्टि का कल्याण करने वाले

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

असि – हो

यज्ञेषु – त्याग कार्यो में

मानुषः – मनुष्यों के।

व्याख्या :-

परमात्मा किस प्रकार सबका कल्याण सुनिश्चित करते हैं?

सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा, पूर्व काल से विशेष प्रकाश की वर्षा करते रहे हैं और वर्तमान में भी कर रहे हैं। हमें यह जानना चाहिए कि वे समूचे संसार को जानने में सक्षम हैं।

वे समस्त जीवों के संरक्षक हैं।

वे समूची सृष्टि का कल्याण महान व्यक्तियों के त्याग कार्यों अर्थात् यज्ञों से करते हैं।

जीवन में सार्थकता

एक नेता को सबका कल्याण कैसे सुनिश्चित करना चाहिए?

परमात्मा के सर्वोच्च नियम का अनुसरण करते हुए, प्रत्येक परिवार, संस्थान और राष्ट्र के मुखिया को त्याग कार्य करते हुए उदाहरण निर्धारित करने चाहिए, जिससे उनके सब अनुयायी भी त्याग पथ का अनुसरण कर सकें। त्याग का यह सिद्धान्त ही सबका कल्याण सुनिश्चित कर सकता है। आधुनिक युग की राजनीति धन लूटने पर केन्द्रित है, जब कि वैदिक विवेकशीलता समस्त राजनीतिज्ञों को यह प्रेरित करती है कि वे सबके कल्याण के लिए त्याग के पथ का अनुसरण करें। केवल यही नियम लोगों के हृदय और मन में शासकों को स्थापित कर सकता है।

ऋग्वेद मन्त्र 1.44.11

नि त्वा यज्ञस्य साधनमग्ने होतारमृत्विजम् ।
मनुष्वदेव धीमहि प्रचेतसं जीरं दूतममर्त्यम् ॥ 11 ॥

(नि – धीमहि से पूर्व लगाकर)

त्वा – आपके

यज्ञस्य – त्याग कार्यों के लिए

साधनम् – त्याग कार्यों को सफल बनाने के साधन

अग्ने – सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा

होतारम् – सब पदार्थों के देने वाले (यज्ञ के लिए)

ऋत्विजम् – पूजा के योग्य (यज्ञ में)

मनुष्य वत् – विचारशील मनुष्य

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

इव – जैसे

(धीमहि – नि धीमहि) – लगातार धारण करते हैं

प्रचेतसम् – प्रकाशित ज्ञान धारण करने वाले

जीरम् – हमारे दुर्गणों को कमज़ोर करने वाले, गति वाले

दूतम् – समस्त ज्ञान के दूत

अमर्त्यम् – न मरने योग्य।

व्याख्या :-

परमात्मा किस प्रकार यज्ञ कार्य में सहायता करते हैं?

सर्वोच्च उर्जा, परमात्मा! एक सच्चे मानव की तरह, हम लगातार आपको यज्ञों अर्थात् त्याग कार्यों की सफलता के साधन के रूप में धारण करते हैं।

(क) आप होतारम् हो अर्थात् आप यज्ञ के लिए सब पदार्थों के देने वाले हैं।

(ख) आप ऋत्विजम् हो अर्थात् आप यज्ञ में पूजा के योग्य हो।

(ग) आप प्रचेतसम् हो अर्थात् प्रकाशित ज्ञान धारण करने वाली एकमात्र शक्ति।

(घ) आप जीरम् हो अर्थात् हमारे दुर्गणों को कमज़ोर करने वाले और गति वाले हो।

(ङ) आप दूतम् हो अर्थात् समस्त ज्ञान के दूत हो।

(च) आप अमर्त्यम् हो अर्थात् केवल एकमात्र न मरने योग्य सत्ता।

परमात्मा के यह सब गुण-लक्षण त्यागशील पुरुषों द्वारा अपनाए जाते हैं, जिसके बदले में उनके त्याग कार्यों में उन्हें परमात्मा से सहायता प्राप्त होती है।

जीवन में सार्थकता

कौन वास्तविक मानव है?

किसे समाज से महान सम्मान और प्रेम प्राप्त होता है?

परमात्मा केवल त्याग कार्यों के माध्यम से ही इस सृष्टि का पालन करते हैं और जो लोग त्याग कार्य करते हैं, वही वास्तविक मानव हैं। इसलिए केवल ऐसे ही लोग परमात्मा के साथ निकटता और एकता का आनन्द लेते हुए उसकी अनुभूति प्राप्त करते हैं।

इसी प्रकार परिवार और समाज में त्याग करने वाला व्यक्ति समाज से महान सम्मान और प्रेम प्राप्त करता है।

ऋग्वेद मन्त्र 1.44.12

यदेवानां मित्रमहः पुरोहितो ऽन्तरो यासि दूत्यम्।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

सिन्धोरिव प्रस्वनितास ऊर्मयो उग्नेर्भाजन्ते अर्चयः ॥ 12 ॥

यत् — जब, जो
देवानाम् — दिव्य विद्वानों के
मित्रमहः — सर्वोच्च मित्र
पुरोहितः — सबका कल्याण करने वाले
अन्तरः — अन्तरःकाश, अन्तर्हृदय में स्थापित
यासि — प्राप्त होते हो
दूत्यम् — दूत की तरह, दूत का व्यवहार
सिन्धोरिव — समुद्र की तरह
प्रस्वनितास — ध्वनि करते हुए
ऊर्मयः — लहरे
अग्ने: — दिव्य लोगों के जीवन
भ्राजन्ते — चमकते हैं
अर्चयः — ज्ञान की किरणें।

व्याख्या :-

किसके हृदय में परमात्मा स्थापित हैं?

दिव्य लोग दिखने में कैसे लगते हैं?

जो दिव्य विद्वान दूसरों के कल्याण के लिए त्याग कार्य करते हैं, उनका सर्वोच्च मित्र उनके हृदय में स्थापित होता है। वह ऐसे लोगों को दिव्य दूत के रूप में प्राप्त होता है और वैसा ही दिखाई देता है। ऐसे दिव्य लोगों का जीवन ज्ञानरूपी किरणों के रूप में इस प्रकार चमकता है, जैसे समुद्र की लहरें ध्वनि करती हुई उपस्थित होती हैं।

जीवन में सार्थकता

प्रेरणादायक प्रसिद्धि और महिमा किसको प्राप्त होती है?

जो लोग अपने हितों का त्याग कर देते हैं, वे दिव्य समझे जाते हैं क्योंकि उनके हृदय में परमात्मा स्थापित होते हैं। उनके त्याग समाज में चर्चा का विषय बनते हैं और स्वयं में बोलते हुए दिखाई देते हैं। ऐसे लोग समाज के द्वारा गहरे हृदय को स्पर्श करती हुई प्रशंसा के साथ महान और दिव्य प्रेरणा के रूप में स्वीकार होते हैं। वे दिव्य रूप में चमकते हैं क्योंकि उनके भीतर दिव्यता की किरणें चमकती हैं। इसलिए केवल पवित्र और पूर्ण त्याग ही दिव्य ज्ञान के रूप में प्रकट होते हैं और प्रेरणादायक प्रसिद्धि और महिमा का कारण बनते हैं।

ऋग्वेद मन्त्र 1.44.13

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

श्रुधि श्रुत्कर्ण वद्दिभिर्देवैरग्ने सयावभिः ।
आ सीदन्तु बर्हिषि मित्रे अर्यमा प्रातर्यावाणो अध्वरम ॥ 13 ॥

श्रुधि – सुनो

श्रुत्कर्ण – सुनने के लिए सक्षम

वद्दिभिः – मुक्ति देने में सक्षम, सत्य अवस्था

देवैः – दिव्य

अग्ने – सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा

सयावभिः – सबके साथ (समान रूप से)

आ सीदन्तु – प्राप्त होने के लिए, स्थापित होने के लिए

बर्हिषि – हृदयाकाश में

मित्रः – प्रिय और लाभकारी

अर्यमा – न्यायकारी बुद्धि

प्रातर्यावाणः – प्रतिदिन सक्रिय

अध्वरम – दोषरहित, हिंसारहित त्याग ।

व्याख्या :-

हमारी प्रार्थनाओं को सुनने के लिए कौन सक्षम है?

वह किसकी सुनता है?

केवल दिव्य सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा, ही हमारी प्रार्थनाओं को सुन सकता है क्योंकि वह सुनने में सक्षम है; मुक्ति अर्थात् सत्य अवस्था प्रदान करने में सक्षम है; प्राप्त करने तथा अपने हृदय आकाश में स्थापित करने के योग्य है क्योंकि वह सबके साथ एक है; वह सबका प्रिय और लाभकारी है; वह न्यायिक बुद्धि वाला तथा सर्वोच्च कर्ता है।

वह केवल उनकी सुनता है, जो प्रतिदिन प्रातः काल से दोषरहित तथा हिंसारहित त्याग कार्यों के लिए सक्रिय रहते हैं।

जीवन में सार्थकता

कौन सबसे गहरे हृदय स्पर्शी सम्मान के साथ उच्च अवस्था को प्राप्त करता है?

हमारा जीवन सदैव शुद्ध, दोष रहित तथा हिंसा रहित त्याग कार्यों में लगा रहना चाहिए। ऐसा जीवन ही अहंकार रहित तथा इच्छा रहित मानसिकता वाला हो सकता है। हमारे माता-पिता तथा उच्चाधिकारियों सहित सारा समाज केवल ऐसे ही इच्छा रहित और लाभकारी लोगों को प्रसन्न करता है और उन्हें हर सम्भव सहायता देता है। समाज अहंकार रहित और लाभकारी सहयोग को लेने के लिए सदैव तैयार रहता है। इस पृष्ठभूमि के साथ ही हम समाज में उच्च स्तर तथा सबका हृदय स्पर्शी सम्मान प्राप्त कर सकते हैं।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

ऋग्वेद मन्त्र 1.44.14

शृण्वन्तु स्तोमं मरुतः सुदानवोऽग्निजिहवा ऋतावृधः ।
पिबतु सोमं वरुणो धृतव्रतोऽशिवभ्यामुषसा सजूः ॥ 14 ॥

शृण्वन्तु – सुनो
स्तोमम् – ज्ञान की महिमा और प्रकाश
मरुतः – शरीर और मन से सक्रिय
सुदानवः – उत्तम दानी
अगि, जिह्वा – दिव्य ज्ञान वाली वाणी
ऋतावृधः – सत्य और उत्तम कार्यों के सम्बद्धक
पिबतु – पीओ
सोमम् – गुण
वरुणः – सबके मित्र
धृतव्रतः – उत्तम संकल्पों को धारण करने वाले
अशिवभ्याम् – अशिवनों के साथ, दोनों प्राणों के साथ
उषसा सजूः – प्रातःकालीन सूर्य की किरणों के साथ ।

व्याख्या :-

- कौन परमात्मा की महिमा सुनने के योग्य है?
परमात्मा की महिमा सुनने के क्या परिणाम हैं?
जो परमात्मा की महिमाओं को या उसके ज्ञान के प्रकाश को सुनता है, वह निम्न लक्षणों को प्राप्त कर लेता है :–
- (क) मरुतः – वह शरीर और मन से सक्रिय होता है।
 - (ख) सुदानवः – वह उत्तम दानी होता है।
 - (ग) अगि, जिह्वा – वह दिव्य ज्ञान वाली वाणी प्राप्त करता है।
 - (घ) ऋतावृधः – वह सत्य और उत्तम कार्यों का सम्बद्धन करता है।
- परमात्मा की महिमाओं को सुनने के योग्य बनाने के लिए, हमें निम्न लक्षण धारण करने चाहिए :–
- (क) पिबतु सोमम् – हमें जीवन में गुणों को पीकर अपनाना चाहिए।
 - (ख) वरुणः – हमें सबके मित्र की तरह व्यवहार करना चाहिए।
 - (ग) धृतव्रतः अशिवभ्याम् उषसा सजूः – हमें अशिवनों अर्थात् दोनों प्राणों के साथ तथा प्रातःकालीन सूर्य की किरणों के साथ उत्तम संकल्पों को धारण करना चाहिए।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

जीवन में सार्थकता

दिव्य लक्षण क्या हैं?

दिव्य लक्षणों को कैसे प्राप्त करें?

जो व्यक्ति एक पूर्वयोग्यता की तरह जीवन में निम्न तीन लक्षणों को धारण करता है, उसे परिणाम की तरह चार लक्षण स्वाभाविक रूप से प्राप्त होते हैं।

तीन मूल लक्षण निम्न हैं :-

- (क) सद्गुणों को अपनाओ,
- (ख) सबके मित्र बनो,
- (ग) सदैव उत्तम संकल्पों को धारण करो।

उपरोक्त के परिणाम स्वरूप चार दिव्य लक्षण प्राप्त होंगे :-

- (क) वह सदैव शरीर और मन में सक्रिय रहता है और कभी रोगी नहीं होता।
- (ख) वह समाज में उत्तम दानी बनता है। वह केवल भौतिक सामान ही वितरित नहीं करता, अपितु महान ज्ञान और आशीर्वाद भी वितरित करता है।

- (ग) वह दिव्य ज्ञान की वाणी धारण करता है। वह सत्य बोलता है और उसके विचारों को समाज में निर्धारित सम्मान प्राप्त होता है।

- (घ) वह सत्य, सद्गुणों और उत्तम त्याग कार्यों का समाज में सम्वर्द्धन करता है।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

ऋग्वेद मण्डल-1 सूक्त 45

परमात्मा तथा दिव्य लोगों के लक्षणों पर सूक्त

ऋग्वेद मन्त्र 1.45.1

त्वमने वसूरिह रुद्राँ आदित्याँ उत ।
यजा स्वधरं जनं मनुजातं घृतप्रुषम् ॥ १ ॥

त्वम् — आप

अग्ने — सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा

वसून् — सर्वत्र व्यापक

इह — यहाँ, इस जीवन में

रुद्रान् — बुराईयों को रुलाने वाले (सब कर्मों का फल देने की शक्ति से)

आदित्यान् — ज्ञान का सर्वोच्च प्रकाश

उत — और

यज — संगति करो

स्वधरम् — दोषरहित और हिंसारहित त्याग कार्य

जनम् — उत्पन्न, प्रोत्साहित

मनुजातम् — वास्तविक मानव (परमात्मा तथा उसके ज्ञान की संगति के लिए समर्पित)

घृतप्रुषम् — पोषक, शक्तिदाता (शुद्ध धी की तरह) ।

व्याख्या :-

परमात्मा के क्या लक्षण हैं?

सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा! आप निम्न लक्षणों से सुसज्जित हो :—

(क) वसून् — सर्वत्र व्यापक,

(ख) रुद्रान् — बुराईयों को रुलाने वाले (सब कर्मों का फल देने की शक्ति से),

(ग) आदित्यान् — ज्ञान का सर्वोच्च प्रकाश ।

परमात्मा हमें इस जीवन में निम्न लक्षणों से संयुक्त कर सकते हैं :—

(क) स्वधरम् — दोषरहित और हिंसारहित त्याग कार्यों को करने में सक्षम बनाते हैं ।

(ख) जनम् मनुजातम् — हमें वास्तविक मानव (परमात्मा तथा उसके ज्ञान की संगति के लिए समर्पित) उत्पन्न करने और प्रोत्साहित करने के योग्य बनाते हैं ।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

(ग) घृतप्रुषम् – हमें शुद्ध धी की तरह पोषक और शक्तिदाता बनाते हैं।

जीवन में सार्थकता

जो लोग ईश्वर पर ध्यान करते हैं, उनके क्या लक्षण होते हैं?

परमात्मा के तीन महत्वपूर्ण लक्षण हैं – सर्वविद्यमान, न्यायकारी और सर्वोच्च ज्ञान।

बच्चों का यह मनोविज्ञान है कि वे नकल करते हैं और बिना किसी निर्देश के दूसरों का अनुसरण करते हैं। यदि आप बच्चे को अहिंसक बनाना चाहते हैं तो आपको अपने गुस्से पर पूर्ण नियन्त्रण करना चाहिए। आप सदा सत्य बोलने वाले बन जाओ, आपके बच्चे भी सत्यवादी होंगे।

यदि आप परमात्मा पर और उनके लक्षणों पर ध्यान लगाओ तो आप भी स्वतः ही वही बन जाओगे। उपरोक्त तीन लक्षणों पर ध्यान लगाओ और धारणा बना लो कि वह सर्वव्यापक है तो आपके दोषरहित और हिंसारहित त्याग कार्य आपको भी सर्वत्र प्रसिद्ध कर देंगे। उसकी न्यायकारी बुद्धि पर ध्यान लगाओ तो सभी महान और न्यायिक विवेक वाले लोग आपकी बुद्धि को पसंद करेंगे। उसके सर्वोच्च ज्ञान पर ध्यान लगाओ तो आपका मन, आपके विचार और आपका सम्पूर्ण व्यक्तित्व सबके लिए लाभकारी और शक्तिदाता बन जाएगा।

ऋग्वेद मन्त्र 1.45.2

शृष्टीवानो हि दाशुषे देवा अग्ने विचेतसः।
तान् रोहिदश्व गिर्वणस्त्रयस्त्रिंशतमा वह ॥ २ ॥

शृष्टीवानः – सृष्टि की वास्तविकता को जानने वाला
हि – निश्चित रूप से

दाशुषे – उत्तम दानी और त्यागशील व्यक्ति

देवाः – दिव्य लोग

अग्ने – सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा

विचेतसः – विशेष चेतना

तान् – वे

रोहिदश्व – सदैव प्रगतिशील और सर्वत्र व्यापक, हमारी इन्द्रियों को शक्तिशाली बनाने में सहायक

गिर्वणः – विशेष वाणियों से प्रशंसित

त्रयस्त्रिंशतम् – 33 दिव्य गुण

आवह – उन्हें हमें प्राप्त कराइए।

व्याख्या :-

सृष्टि की वास्तविकता को जानने के बाद क्या प्राप्त होता है?

दिव्यता प्राप्त करने के बाद कोई क्या बन जाता है?

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

शृष्टीवानः हि दाशुषे – सृष्टि की वास्तविकता को जानने वाला निश्चित रूप से उत्तम दानी और त्यागशील व्यक्ति होता है।

देवा: अग्ने विचेतसः – सर्वोच्च ऊर्जा परमात्मा दिव्य लोगों को विशेष चेतना के साथ चमका देता है।

परमात्मा सदैव प्रगतिशील है और सर्वत्र व्यापक है, इन्द्रियों को शक्तिशाली बनाने में सबका सहायक है। अतः उसकी विशेष वाणियों से प्रशंसा होती है। वही समस्त सृष्टिवानः तथा देवा: लोगों को 33 दिव्य शुभ गुण प्राप्त करने के योग्य बनाता है।

जीवन में सार्थकता

इस सृष्टि की क्या वास्तविकता है?

विशेष चेतना क्या है?

इस सृष्टि की वास्तविकता है कि सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा! ने स्वयं को असंख्य रूपों और प्रकारों में प्रकट किया है, जिससे सृष्टि कहते हैं और जिसमें समस्त जीव तथा निर्जीव तत्त्व सम्मिलित हैं। उस सृष्टि निर्माता के साथ अपने मन को ध्यान के माध्यम से जोड़ने के स्थान पर तथा उसकी अनुभूति प्राप्त करने के स्थान पर सामान्यतया मानव मन इस सृष्टि का आनन्द लेने में ही लगा रहता है। एक बार जब व्यक्ति गहराई से सृष्टि की वास्तविकता को समझ लेता है तो वह निश्चित रूप से उस निर्माता के साथ अपने आपको जोड़कर आनन्दमयी अवस्था का आनन्द लेता है और स्वयं को सृष्टि से पृथक रखता है। इस प्रकार वह उत्तम दानी और त्यागशील व्यक्ति बन जाता है।

अनुभूति के इस पथ पर चलते हुए वह निश्चित रूप से एक दिव्य मन बन जाएगा और उसे परमात्मा के साथ स्थाई सम्बन्ध के रूप में सर्वोच्च उपहार प्राप्त होगा, जिसका नाम है विशेष चेतना। ऐसा व्यक्ति अन्य लोगों को कई प्रकार से प्रेरित करने के योग्य होता है – देखकर, स्पर्श करके या वार्ता करके।

ऋग्वेद मन्त्र 1.45.3

प्रियमेधवदत्रिवज्जातवेदो विरुपवत् ।
अङ्गिगरस्वन्महिव्रत प्रस्कण्वस्य श्रुधी हवम् ॥ ३ ॥

प्रियमेधवत् – परमात्मा के दिव्य प्रकाश की इच्छा और प्रेम करने वाले

अत्रिवत् – तीन प्रकार के दुःखों और बंधनों से अबाधित (काम, क्रोध और लोभ)

जातवेदः – पूर्ण ज्ञान वाले परमात्मा

विरुपवत् – अनेकों योग्यताओं वाले, महिमावान चेहरा

अङ्गिगरस्वत – स्वास्थ्य की संतुलित अवस्था वाले (शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक)

महिव्रत – महान व्रतों वाले

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

प्रस्कर्णवस्य – ऐसे महान विद्वान की

श्रुधी – सुनो

हवम् – पुकार, प्रार्थना ।

व्याख्या :-

परमात्मा किसकी प्रार्थनाओं को सुनता है?

वह सर्वज्ञाता, परमात्मा! उन सब महान विद्वानों की प्रार्थना सुनता है, जिनमें निम्न लक्षण हों :–

(क) प्रियमेधवत् – परमात्मा के दिव्य प्रकाश की इच्छा और प्रेम करने वाले,

(ख) अत्रिवत् – तीन प्रकार के दुःखों और बंधनों से अबाधित (काम, क्रोध और लोभ),

(ग) विरूपवत् – अनेकों योग्यताओं वाले, महिमावान चेहरा,

(घ) अप्पिरस्वत् – स्वास्थ्य की संतुलित अवस्था वाले (शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक),

(ङ) महिव्रत – महान व्रतों वाले ।

जीवन में सार्थकता

सब लोग किसकी पुकार और प्रार्थनाएं सुनते हैं?

भौतिकवादी सांसारिक जीवन में भी यदि हम चाहते हैं कि हमारी स्थापना एक ऐसे व्यक्ति के रूप में हो, जिसके कथनों और प्रार्थनाओं को सभी छोटे-बड़े सुनें तो हमारे अन्दर निम्न लक्षण होने चाहिए :–

(क) हमें सदैव ज्ञान की प्यास होनी चाहिए, सभी स्रोतों से ज्ञान को प्राप्त करें और एकत्रित करें।

(ख) हमें विवाद और संकटों से मुक्त जीवन जीना चाहिए। किसी भी छोटी सी असुविधाजनक अवस्था में हमें कभी भी नकारात्मक या शिकायतकर्ता नहीं बनना चाहिए।

(ग) हमें अनेकों योग्यताओं वाला बनना चाहिए, जो अधिक से अधिक अवस्थाओं को संभालने में सक्षम हो।

(घ) हमें पूर्ण स्वास्थ्य की संतुलित अवस्था धारण करनी चाहिए।

(ङ) हमें अपनी जीवन में दूसरों के कल्याण से सम्बन्धित महान व्रतों को अपना कर उन्हें धारण करना चाहिए।

ऋग्वेद मन्त्र 1.45.4

महिकेरव ऊतये प्रियमेधा अहूषत ।

राजन्तमध्वराणामग्निं शुक्रेण शोचिषा ॥ 4 ॥

महिकेरवः – सुन्दरता से उत्तम कार्य करने वाले

ऊतये – संरक्षण के लिए

प्रियमेधा – उत्तम तथा दिव्य बुद्धि को प्रेम करने वाले

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

अहूषत – पुकारते हैं, प्रार्थना करते हैं
राजन्तम – चमकते हुए, महिमा प्राप्त
अध्वराणाम – हिंसारहित त्याग
अग्निम् – सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा
शुक्रेण – पवित्र, ज्ञान से प्रकाशित
शोचिषा – शुद्ध, ईमानदार।

व्याख्या :-

कौन अपने कार्यों में परमात्मा की उपस्थिति सुनिश्चित करता है?

जो लोग सुन्दरता से उत्तम कार्य करते हैं और उत्तम तथा दिव्य बुद्धि से प्रेम करते हैं, सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा, को पुकारते हैं और उसी से प्रार्थना करते हैं कि वे उनके चमकते हुए और महिमावान हिंसारहित त्याग कार्यों को संरक्षित करें क्योंकि वे शुद्ध, प्रकाशित और अपने कार्यों में ईमानदार हैं। केवल ऐसे ही लोगों को यह आध्यात्मिक अधिकार होता है कि वे अपने पवित्र और दिव्य कार्यों में परमात्मा की उपस्थिति सुनिश्चित करवा सकें।

जीवन में सार्थकता

हमें अपने कार्यों में क्या लक्षण धारण करने चाहिए, जिससे हम परमात्मा का आशीर्वाद प्राप्त कर सकें? सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा, उन लोगों के अधिकारों का सम्मान करता है, जो शुद्ध और दिव्य त्याग करते हैं। जिस प्रकार भगवान राम ऋषियों और सन्तों के द्वारा संरक्षण की पुकार पर उनके दिव्य यज्ञों में उपस्थित रहते थे; जिस प्रकार भगवान कृष्ण दिव्य न्याय की रक्षा के लिए पाण्डवों के साथ युद्ध में खड़े रहे, उसी प्रकार सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा, हमारे वास्तविक पवित्र और दिव्य ब्रतों और प्रयासों में आशीर्वाद देते हैं। परमात्मा का आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए हमें अपनी गतिविधियों में निम्न लक्षण सुनिश्चित करने चाहिए :-

- (क) उत्कृष्टता के साथ उत्तम कार्यों को करना,
- (ख) उत्तम बुद्धि के लिए प्रेम,
- (ग) अपने सभी कर्तव्य सदैव त्याग की भावना से करना,
- (घ) पूर्ण ज्ञानवान के स्तर को प्राप्त करने का प्रयास करना,
- (ङ) अपने व्यवहार में शुद्धता और ईमानदारी को बनाकर रखना।

ऋग्वेद मन्त्र 1.45.5

घृताहवन सन्त्येमा उ षु श्रुधी गिरः।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

याभि: कण्वस्य सूनवो हवन्तेऽवसे त्वा ॥ ५ ॥

घृताहवन् – त्याग के लिए उत्तम साधनों को प्रयोग करने वाले
सन्त्य – प्रसन्नता और सुविधा के लिए

इमाः – ये

उ – निश्चित रूप से

सु – उत्तम प्रकार से

श्रुधी – सुनिए

गिरः – वाणियाँ, प्रार्थनाएँ

याभि: – जिन वाणियों से

कण्वस्य – महान विद्वानों के

सूनवः – पुत्र, अनुयायी

हवन्ते – पुकारते हैं, प्रार्थना करते हैं

अवसे – संरक्षण के लिए

त्वा – आपको ।

ब्याख्या :-

परमात्मा किसकी वाणियों को सुनता है?

जो अन्य लोगों की प्रसन्नता और सुविधाओं के लिए त्याग में उत्तम साधनों का सदुपयोग करते हैं, उनकी वाणियाँ भी निश्चित रूप से परमात्मा द्वारा उत्तम रूप में सुनी जाती हैं।

महान विद्वानों के सुपुत्र और शिष्य जब भी संरक्षण के लिए भगवान को पुकारते हैं तो उनकी वाणियाँ भी परमात्मा द्वारा सुनी जाती हैं।

जीवन में सार्थकता

गुरु की दिव्यता का उसके सच्चे अनुयायियों के जीवन पर क्या प्रभाव पड़ता है?

यदि कोई व्यक्ति वास्तविक त्याग करता है तो वह दिव्यता में अधिकार प्राप्त कर लेता है। यहाँ तक कि उनके वंशज पुत्र, पुत्रियाँ और शिष्य यदि गुरु का सत्यता में अनुसरण करते हैं तो वे भी दिव्यता में अधिकार प्राप्त करते हैं। सच्चे अनुयायी और शिष्य महान और दिव्य आत्माओं के परिवार की तरह होते हैं।

ऋग्वेद मन्त्र 1.45.6

त्वां चित्रश्वस्तम हवन्ते विक्षु जन्तवः ।
शोचिष्केशं पुरुप्रियाऽग्ने हव्याय वोळहवे ॥ ६ ॥

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



त्वाम — आपको

चित्र श्रवस्तम् — सुनने योग्य दिव्य शक्तिशाली रूप में प्रकट, परमात्मा

हवन्ते — स्वीकार करते हैं, पुकारते हैं

विक्षु — सर्वत्र व्याप्त

जन्तवः — यहाँ उत्पन्न हुए

शोचिष्ठेशम् — ज्ञान के प्रकाश की दिव्य और शुद्ध किरणों को धारण करने वाले

पुरुष्ट्रिय — सबको प्रेम करने वाले

अग्ने — सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा

हव्याय — त्याग कार्यों को करने के लिए

वोळहवे — ज्ञान प्राप्त करने के लिए।

व्याख्या :-

उस परमात्मा के क्या लक्षण हैं, जिसे हम बुलाते और स्वीकार करते हैं?

जीवन के प्रधान उद्देश्य क्या हैं?

वे सब जो यहाँ जन्मे हैं, सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा, को पुकारते और स्वीकार करते हैं, जिसमें निम्न लक्षण हैं :—

- (क) चित्र श्रवस्तम् — सुनने योग्य दिव्य शक्तिशाली रूप में प्रकट, परमात्मा,
- (ख) विक्षु — सर्वत्र व्याप्त,
- (ग) शोचिष्ठेशम् — ज्ञान के प्रकाश की दिव्य और शुद्ध किरणों को धारण करने वाले,
- (घ) पुरुष्ट्रिय — सबको प्रेम करने वाले।

अतः हम आपको निम्न दो प्रधान उद्देश्यों के कारण पुकारते हैं :—

- (क) त्याग कार्य करने के लिए,
- (ख) ज्ञान प्राप्त करने के लिए।

जीवन में सार्थकता

दूसरों के साथ हमारा सम्बन्ध किस पर निर्भर करता है?

परमात्मा के साथ निकट सम्बन्ध की अनुभूति प्राप्त करने के लिए हमारे जीवन के दो प्रधान उद्देश्य हैं।

जीवन के किसी भी क्षेत्र में अन्य लोगों के साथ हमारा सम्बन्ध भी दो प्रश्नों पर ही निर्भर है :—

- (क) हम दूसरों के लिए कितने त्यागशील हैं?
- (ख) दूसरों के कल्याण के लिए हमें कितना गहरा ज्ञान है और उसके लिए हमारी कितनी गहरी तत्परता है?

ऋग्वेद मन्त्र 1.45.7

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



नि त्वा होतारमृत्विजं दधिरे वसुवित्तम् ।
श्रुत्कर्णं सप्रथस्तमं विप्रा अग्ने दिविष्टिषु ॥ ७ ॥

नि – निश्चित रूप से

त्वा – आप

होतारम् – इस सृष्टि में सब वस्तुओं को देने वाले, परमात्मा

ऋत्विजम् – सदैव संगति के योग्य, परमात्मा

दधिरे – धारण करते हैं

वसुवित्तम् – सबको आवास देने वाले, परमात्मा

श्रुत्कर्णम् – सबकी प्रार्थना सुनने वाले, परमात्मा

सप्रथस्तम् – चारों तरफ पूर्ण रूप से व्यापक, परमात्मा

विप्रा: – महान् विद्वान्

अग्ने – सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा

दिवि इष्टिषु – दिव्य लक्ष्यों के लिए (परमात्मा का सर्वोच्च प्रकाश प्राप्त करने के लिए) ।

व्याख्या :-

हम किस दिव्य उद्देश्य के लिए परमात्मा को धारण करते हैं?

परमात्मा के क्या दिव्य गुण-लक्षण हैं?

महान् विद्वान् आपको अर्थात् सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा, को आपके सर्वोच्च प्रकाश की प्राप्ति रूपी दिव्य उद्देश्य के लिए धारण करते हैं क्योंकि वे जानते हैं कि आपके निम्न गुण लक्षण हैं :–

(क) होतारम् – इस सृष्टि में सब वस्तुओं को देने वाले, परमात्मा,

(ख) ऋत्विजम् – सदैव संगति के योग्य, परमात्मा,

(ग) वसुवित्तम् – सबको आवास देने वाले, परमात्मा,

(घ) श्रुत्कर्णम् – सबकी प्रार्थना सुनने वाले, परमात्मा,

(ङ) सप्रथस्तम् – चारों तरफ पूर्ण रूप से व्यापक, परमात्मा ।

सभी महान् विद्वान् यह जानते हैं कि जो व्यक्ति परमात्मा को धारण करता है, उसके बदले परमात्मा भी उसे धारण करते हैं ।

जीवन में सार्थकता

हम अपने वृद्धजनों का सम्मान और आज्ञा पालन क्यों करें?

आध्यात्मिकता के सिद्धान्त मानव और सामाजिक सम्बन्धों पर भी लागू होते हैं । आप अपने वृद्धजनों तथा समस्त दाता लोगों के लिए एक सम्मान धारण करते हो और उनकी आज्ञा का पालन करते हो । इसके बदले वे भी आपको आशीर्वाद और अन्य कई लाभ प्रदान करते हैं । हमें एक सच्चाई की अनुभूति रखनी चाहिए कि

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

सभी वृद्धजन तथा उच्चाधिकारी किसी न किसी प्रकार से हमें देते ही हैं। इस अनुभूति के बाद हम अपने जीवन में ऐसे लोगों के लिए महान सम्मान निश्चित रूप से धारण करेंगे और इसके बदले उनके आशीर्वाद तथा लाभ प्राप्त करते रहेंगे।

ऋग्वेद मन्त्र 1.45.8

आ त्वा विप्रा अचुच्यवुः सुतसोमा अभि प्रयः ।
बृहभा बिप्रतो हविरगग्ने मर्ताय दाशुषे ॥ 8 ॥

आ त्वा – आपको
विप्रा – महान विद्वान
अचुच्यवुः – प्राप्त करते हैं
सुतसोमा – शुभ गुण पैदा करने के लिए
अभि – प्रत्येक क्षण, प्रत्येक दिशा में
प्रयः – भोजन आदि को
बहुत भा: – उत्कृष्ट और अपार ज्ञान
बिप्रतः – धारण करते हैं
हवि: – त्याग में प्रस्तुत करने के लिए, आहुति
अग्ने – सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा
मर्ताय – मरने योग्य पुरुष
दाशुषे – पूर्ण दानी।

व्याख्या :-

महान विद्वान परमात्मा की अनुभूति क्यों प्राप्त करते हैं?
हम भोजन तथा व्यापक ज्ञान क्यों धारण करते हैं?
सभी महान विद्वान आपको अर्थात् सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा, को समस्त दिशाओं से और प्रतिक्षण गुणों और प्रेरणाओं को पैदा करने के लिए प्राप्त करते हैं।
वे सभी मरणशील मनुष्य, जो पूर्ण दानी हैं, भोजन तथा व्यापक ज्ञान धारण करते हैं, जिससे वे अन्य लोगों के लिए त्याग करते हुए सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा, को आहुतियाँ प्रदान कर सकें।

जीवन में सार्थकता

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

मानवों द्वारा अपनाए जाने के लिए दो मार्ग कौन से हैं?

एक आध्यात्मिक व्यक्ति तथा एक भौतिकवादी व्यक्ति के बीच क्या अन्तर है और क्या समानताएं हैं?

समूची सृष्टि परमात्मा अर्थात् सर्वोच्च दिव्य ऊर्जा का प्रकट स्वरूप है। लोगों द्वारा अपनाए जाने के लिए दो प्रकार के मार्ग हैं – परमात्मा की प्राप्ति के लिए आध्यात्मिक मार्ग और / अथवा भौतिक सुख–सम्पदाओं की प्रार्थना करने के लिए भौतिकवादी मार्ग। आध्यात्मिक व्यक्ति निर्माता का ध्यान करता है, जबकि भौतिकवादी व्यक्ति निर्माण अर्थात् भौतिक वस्तुओं पर ध्यान करता है।

आध्यात्मिक व्यक्ति परमात्मा की संगति चाहता है। परमात्मा के साथ एकता का अनुभव करके वे दूसरों के मार्गदर्शन के लिए अनेकों गुण और प्रेरणाएं पैदा करते हैं। परमात्मा ऐसे लोगों को प्रेम करते हैं।

भौतिकवादी व्यक्ति भोजन, कपड़ा और मकान आदि सुविधाओं की तथा उनका प्रयोग करने के लिए व्यापक ज्ञान की कामना करता है। इस मार्ग पर वे यह अनुभव करते कि एक दिन सब कुछ छोड़ के वे मृत्यु को प्राप्त होंगे, इसलिए उनसे आशा की जाती है कि वे पूर्ण दानी बनें। उन्हें अपने पदार्थ तथा ज्ञान अन्य लोगों के कल्याण के लिए आहुति की तरह त्याग करने चाहिए। परमात्मा ऐसे लोगों को भी प्यार करते हैं।

इस प्रकार दोनों प्रकार के लोगों को परमात्मा प्रेम करते हैं। आध्यात्मिक व्यक्ति परमात्मा के साथ सीधे सम्बन्धित होते हैं, जबकि भौतिकवादी व्यक्ति त्याग कार्यों के रूप में अपने कर्तव्य पूर्ण करके अप्रत्यक्ष रूप से परमात्मा के साथ एकता की अनुभूति प्राप्त करने की तरफ अग्रसर होते हैं।

ऋग्वेद मन्त्र 1.45.9

प्रातर्याणः सहस्कृतं सोमपेयाय सन्त्य।

इहाद्य दैव्यं जनं बर्हिरा सादया वसो ॥ ९ ॥

प्रातर्याणः – प्रातः काल से अपने लक्ष्य के लिए समर्पित
सहस्कृत – वीर, अपने कर्तव्यों को सरलता से पूरा करने वाला
सोमपेयाय – गुणों को धारण करने और सुरक्षित करने के लिए
सन्त्य – प्रसन्नता और सुविधा के लिए

इह – यहाँ

अद्य – अभी

दैव्यम् जनम् – दिव्य लोग

बर्हिः – गहरे हृदयाकाश में

आसादया – प्राप्त कराईए।

वसो – सबका वास।

व्याख्या :-

दिव्य लोग कौन होते हैं?

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

उनके लिए विशेष क्या होता है?

निम्न लक्षणों वाले लोग दिव्य जीवन होते हैं :-

- (क) प्रातर्याणः - वे प्रातः काल से अपने लक्ष्य के लिए समर्पित होते हैं।
- (ख) सहस्रृत - वे वीर, अपने कर्तव्यों को सरलता से पूरा करने वाले होते हैं।
- (ग) सोमपेयाय - वे गुणों को धारण करने और सुरक्षित करने वाले होते हैं।
- (घ) सन्त्य - वे सदैव प्रसन्न और सुविधाजनक रहते हैं।

ऐसे लोगों को परमात्मा की तरफ से यह आश्वासन होता है कि वह उनके गहरे हृदयाकाश में यहीं इसी जीवन में प्राप्त होगा क्योंकि परमात्मा सबका वास है।

जीवन में सार्थकता

दिव्य लोग दिव्य पैदा होते हैं या कोई भी व्यक्ति दिव्य बन सकता है?

यह चर्चा का प्रश्न है कि क्या दिव्य लोग दिव्य ही पैदा होते हैं या दिव्य जीवन के चार लक्षणों को अपने अन्दर स्थापित करके कोई भी दिव्य बन सकता है। दोनों प्रकार से उत्तर सकारात्मक है।

इसमें कोई सन्देह नहीं है कि हम कुछ महान सन्तों को बहादुर, आध्यात्मिक योद्धा के रूप में दिव्य जन्म लेते हुए देखते हैं क्योंकि बचपन से ही उनमें दिव्यता की झलक मिलती है।

परन्तु यह भी समान रूप से सत्य है कि वे जन्मजात दिव्य लोग अक्सर अनेकों लोगों के लिए गहरी प्रेरणा का स्रोत बन जाते हैं, जो दिव्यता के लक्षणों का अनुसरण करते हैं। इस प्रकार दिव्यता का विकास भी किया जा सकता है।

अपने जीवन में निम्न लक्षणों को स्थापित करना न तो असम्भव है और न अत्यन्त कठिन :-

(क) प्रातःकाल जल्दी ब्रह्मबेला में उठना और अपने जीवन तथा गतिविधियों पर विचार करना। परमात्मा की भक्ति तथा मानवता का कल्याण निश्चित रूप से साथ-साथ चल सकते हैं।

(ख) एक बार जब हम अपने जीवन और गतिविधियों पर प्रातःकाल से ध्यान करते हैं तो हमारे अन्दर प्रत्येक अवस्था में विजय प्राप्त करने की सम्भावना बढ़ जाती है। हम शक्तिशाली और वीर समझे जाते हैं।

(ग) ऐसे समर्पित जीवन के साथ, हमें शुभ गुणों को भी धारण करना चाहिए। ऐसे जीवन का सबके द्वारा सम्मान होता है।

(घ) अन्तः: हम अपने जीवन को प्रसन्न और सुविधाजनक बना पाते हैं और दूसरों को भी प्रत्येक अवस्था में प्रसन्न और सुविधाजनक रहने के लिए प्रेरित कर सकते हैं।

ऋग्वेद मन्त्र 1.45.10

अर्वाचं दैव्यं जनमग्ने यक्ष्य सहूतिभिः।

अयं सोमः सुदानवस्तं पात तिरोअहनयम् ॥ 10 ॥

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

अर्वांचम् – अन्तर्मुख वाला, स्व-विचार करने वाला

दैव्यम् जनम् – दिव्य लोग

अग्ने – सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा

यक्ष – संगति कीजिए

सहूतिभिः – प्रार्थना में समान

अयम् – यह

सोमः – शुभ गुण

सुदानवः – उत्तम दानी

तम् – वह (गुण)

पात् – संरक्षित

तिरः – अन्दर सम्मिलित

अहन्यम् – जीवन में व्यापक।

व्याख्या :-

क्या सभी दिव्य लोग अपनी प्रार्थनाओं में एक समान होते हैं और आन्तरिक रूप से सम्बन्धित होते हैं?

सभी दिव्य लोग सदैव अन्तर्मुखी तथा अपने जीवन पर चिन्तन करने वाले होते हैं। उनकी प्रार्थनाएं समान होती हैं। अतः वे एक-दूसरे के साथ आन्तरिक रूप से सम्बन्धित होते हैं।

वे गुणों के उत्तम दानी होते हैं। वे अपने गुणों को देखते हैं और उन्हें संरक्षित करते हैं, जो उनके जीवन में व्यापक होते हैं।

जीवन में सार्थकता

समस्त दिव्य लोगों की प्रार्थनाओं में एक समान क्या होता है?

एक दिव्य जीवन कैसे जिया जाए?

दिव्य लोग प्रार्थनाओं में समान होते हैं क्योंकि वे सांसारिक पदार्थों के लिए कभी प्रार्थना नहीं करते, वे अपने अहंकार को बढ़ाने के लिए कभी प्रार्थना नहीं करते। उनकी न कोई इच्छाएं होती हैं और न कोई अहंकार। इच्छाएं और अहंकार ही मतभेद और विवाद पैदा करने के मूल कारक हैं। इसलिए सभी वास्तविक दिव्य लोग प्रार्थना में एक समान होते हैं – परमार्थ की अनुभूति।

हमारे परिवार तथा समाजिक जीवन में भी एक दिव्य जीवन जीने के लिए जो मतभेद, विवाद और तनाव से रहित हो, हमें त्यागशीलता पर ध्यान देना चाहिए। एक त्यागशील व्यक्ति का सर्वत्र सम्मान होता है और वह एक सच्चा नेता बनता है। वह तो एक कर्ता की तरह भी अपना अहंकार त्याग देता है क्योंकि उसे इस बात की अनुभूति होती है कि परमात्मा ही वास्तविक कर्ता हैं।

अतः त्यागशीलता, सामाजिक प्रकृति तथा अहंकाररहित व्यक्तित्व ही आपके जीवन को एक भौतिकवादी घरेलू जीवन से उठा कर एक दिव्य सर्वमान्य जीवन बना सकते हैं।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

ऋग्वेद मण्डल-1 सूक्त 46

ऋग्वेद मन्त्र 1.46.1

एषो उषा अपूर्वा व्युच्छति प्रिया दिवः।
स्तुषे वामशिवना बृहत् ॥ 1 ॥

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

एषो – यह निश्चित रूप से
उषा: – प्रातःकालीन सूर्य की प्रथम किरणेण
अपूर्वा – अनिश्चितकाल से उत्पन्न
व्युच्छति – अन्धकार दूर करता है (अन्दर और बाहर)
प्रिया – आकर्षित करने वाली
दिवः – प्रकाश के लिए
स्तुषे – प्रशंसा करना, महिमा कहना और स्थापित करना
वामशिवना – दोनों प्राण
बृहत् – बहुत।

व्याख्या :-

प्रातःकालीन सूर्य की प्रथम किरणों के क्या लक्षण हैं?
प्रातःकालीन सूर्य की प्रथम किरणेण अनिश्चितकाल से लगातार उदित हो रही हैं। इन किरणों के निम्न विशेष लक्षण हैं।
(क) व्युच्छति – वे अन्दर का और बाहर का दोनों अन्धकार दूर करती हैं।
(ख) प्रिया दिवः – वे प्रकाश को आकर्षित करती हैं।
(ग) स्तुषे वामशिवना बृहत् – वे दोनों प्राणों की बहुत प्रशंसा, महिमागान और उन्हें स्थापित करती हैं।

जीवन में सार्थकता

प्रातःकालीन सूर्य की प्रथम किरणों को ब्रह्मवेला क्यों कहते हैं?
प्रकृति के विज्ञान के अनुसार, प्रातःकालीन सूर्य की प्रथम किरणेण अन्धकार दूर करती हैं और प्रकाश को आकर्षित करती हैं। क्वांटम विज्ञान के अनुसार, उदय होते हुए सूर्य का समय स्वारूप्य के लिए भी बहुत अच्छा होता है, क्योंकि इस समय का तापमान और वायु प्राणायाम तथा योगाभ्यास के लिए दिव्य होते हैं।
यदि हम प्रातः जल्दी उठकर इस समय का सदुपयोग करें तो हमारे प्राण, हमारा श्वसन तन्त्र, हमारा तंत्रिका तन्त्र और परिणामस्वरूप पूरा शरीर तथा मन संतुलित रूप से कार्य करते हैं। एक सन्तुलित मन ही अन्ततः आध्यात्मिक मार्ग पर प्रगति करता है।

आध्यात्मिक विज्ञान के अनुसार, प्रातःकालीन समय को यदि ध्यान–साधना में बिताया जाये तो हमारी बुद्धि का अन्धकार अर्थात् अज्ञानता दूर करने में सहायता मिलती है और दिव्य ज्ञान अर्थात् वह ज्ञान जो अन्य लोगों को प्राप्त नहीं होता, उसके द्वारा भी खुलते हैं। यह कार्य सीधा भगवान से हमारे मस्तिष्क में होता है अर्थात् ब्रह्मा से आत्मा तक। इसीलिए प्रातःकालीन सूर्य की प्रथम किरणों को ब्रह्मवेला कहा जाता है।

ऋग्वेद मन्त्र 1.46.2

या दस्मा सिन्धुमातरा मनोतरा रयीणाम् ।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

धिया देवा वसुविदा ॥ २ ॥

या – जो (उदय होते हुए सूर्य की प्रथम किरणों को स्थापित करते हुए हमारे प्राण)

दस्त्रा – दुःखों और रोगों का नाश करने वाला

सिन्धु मातरा – हमारे जल स्थलों अर्थात् रक्तवाहिनियों में व्यापक

मनोतरा – मन को इच्छाओं से मुक्त करने वाला

रयीणाम् – गौरवशाली सम्पदा

धिया – ज्ञान पूर्वक कर्मों के द्वारा

देवा – देता है

वसुविदा – सुन्दर निवास देने वाला ।

व्याख्या :-

ब्रह्मवेला में स्थापित दिव्य प्राणिक ऊर्जा के क्या लक्षण हैं?

प्रतिदिन ब्रह्मवेला में, उदय होते हुए सूर्य की प्रथम किरणों में स्थापित प्राण निम्न लक्षणों से सुसज्जित हो जाते हैं।

(क) दस्त्रा – दुःखों और रोगों का नाश करने वाला ।

(ख) सिन्धु मातरा – हमारे जल स्थलों अर्थात् रक्तवाहिनियों में व्यापक ।

(ग) मनोतरा – मन को इच्छाओं से मुक्त करने वाला ।

(घ) रयीणाम् धिया देवा – गौरवशाली सम्पदा के साथ ज्ञान पूर्वक कर्मों के दाता ।

(ड) वसुविदा – सुन्दर निवास देने वाला ।

जीवन में सार्थकता

प्रातःकाल जल्दी उठने वाले व्यक्ति की आध्यात्मिक अनुभूति का क्या मार्ग है?

जब प्राण भौतिक शरीर में उपस्थित होते हैं तो उसे जीवन कहा जाता है। परन्तु यही जीवन आत्मा और परमात्मा की एकता की अनुभूति के लिए एक सुन्दर आवास बन जाता है जब उसके प्राण ब्रह्मवेला का महिमा मंडन करते हैं और उसमें स्थापित हो जाते हैं। ऐसे दिव्य प्राण आध्यात्मिक ऊँचाई तक पहुँच जाते हैं।

ऐसी जीवनी शक्ति अर्थात् प्राण समस्त दुःखों और रोगों के नाशक बन जाते हैं। ऐसे दिव्य प्राणों का प्रथम भौतिक लाभ के रूप में हमें उत्तम स्वास्थ्य प्राप्त होता है। इस उत्तम स्वास्थ्य का वैज्ञानिक कारण यह है कि हमारे शरीर की रक्तवाहिनियों में सर्वत्र सूर्य की दिव्य किरणों का प्रभाव व्याप्त हो जाता है। यह दिव्य प्राणिक ऊर्जा शरीर के सभी तन्त्रों और अंगों के उत्तम स्वास्थ्य में परिवर्तित हो जाती है।

मानसिक स्तर पर, प्राणायाम में कुम्भक की कड़ी साधना के दौरान दिव्य प्राण मन को निरर्थक सांसारिक भौतिक इच्छाओं से मुक्त कर देते हैं।

तीसरे स्तर पर, दिव्य प्राणिक ऊर्जा के साथ व्यक्ति को अपने बौद्धिक और पवित्र कर्मों के बल पर अपार गौरवशाली सम्पदा प्राप्त होती है और उस सम्पदा को वह पुनः सबके कल्याण के लिए प्रयोग करता है। इस

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

प्रकार दिव्य प्राणिक ऊर्जा के अनेकों लाभ होते हैं – शारीरिक, मानसिक, भौतिक और आध्यात्मिक। इन सभी लाभों के बल पर वह आध्यात्मिक अनुभूति की तरफ प्रगति करता है।

ऋग्वेद मन्त्र 1.46.3

वच्यन्ते वां ककुहासो जूर्णायामधि विष्टपि ।
यद्वां रथो विभिष्ठतात् ॥ ३ ॥

वच्यन्ते – उच्चारण करते हैं

वाम् – आपका

ककुहासः – महान महिमा

जूर्णायाम् – विशेष रूप से पूर्ण प्रशंसित

अधि विष्टपि – उच्च और गहरे स्थान पर

यत् – जब

वाम् – आपके

रथः – रथ (मानव शरीर, वाहन)

विभिः – इन्द्रियों की लगाम से जुड़े

पतात् – प्रगति करता है।

व्याख्या :-

आध्यात्मिक पथ की ऊँचाईयों को कौन छू सकता है?

इन्द्रियों पर पूरे नियंत्रण को बनाये रखते हुए जब हम जीवन में प्रगति करते हैं तो परमात्मा के लिए महान् महिमा और विशेष पूर्ण प्रशंसाएँ हमारे गहरे हृदय स्थलों से उच्चारित होती हैं। ऐसा जीवन स्व अनुभूति के रूप में ऊँचाईयों को छूता है।

जीवन में सार्थकता

जीवन में इच्छा रहित और अहंकार रहित अवस्था का क्या महत्त्व है?

जब हम अपनी इन्द्रियों पर सफलता पूर्वक नियंत्रण स्थापित कर लेते हैं तो हम मन में इच्छा रहित हो जाते हैं।

इच्छा रहित अवस्था के परिणामस्वरूप हम परमात्मा की महिमा का उच्चारण करते हैं और प्रत्येक कार्य के लिए उसकी प्रशंसा करते हैं। इससे हम अहंकार रहित हो जाते हैं।

हमारी इच्छा रहित और अहंकार रहित अवस्था अन्ततः हमारे लिए आध्यात्मिक अनुभूति की ऊँचाईयों का मार्ग निश्चित रूप से प्रशस्त करती है।

इच्छा रहित का अर्थ है – मैं भौतिक वस्तुओं के लिए कार्य नहीं करता।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

अहंकार रहित का अर्थ है – मैं कार्य ही नहीं करता, बल्कि यह परमात्मा है जो इस शरीर के माध्यम से कार्य कर रहा है।

इस प्रकार हम परमात्मा के साथ एकता की अनुभूति प्राप्त करते हैं।

सांसारिक और सामाजिक जीवन में भी जब हम अपने स्वार्थी हितों को छोड़ देते हैं और परिवार, संगठन या समाज के सामूहिक मिशन के लिए कार्य करते हैं तो हम सबके सहयोग की प्रशंसा करते हैं और अपने मुखिया, उच्चाधिकारियों और वृद्धजनों का सम्मान करते हैं। ऐसे लक्षण हमें ऊँचाईयों को छूने के योग्य बनाते हैं।

ऋग्वेद मन्त्र 1.46.4

हविषा जारो अपां पिपर्ति पपुरिन्नरा ।
पिता कुटस्य चर्षणि: ॥ 4 ॥

हविषा – आहुतियों के द्वारा

जार: – वाष्णीकृत करके

अपास् – जलों को

पिपर्ति – संरक्षण एवं पालन करता है

पपुरि: – पूर्ण रूप से

नरा – लोग

पिता – संरक्षण करने वाला पिता

कुटस्य – कुटिल मार्ग का प्रदर्शक

चर्षणि: – सूर्य जिसे दिखाता है।

व्याख्या :-

सूर्य का कुटिल मार्ग क्या है?

संरक्षण करने वाले पिता की तरह, सूर्य भी कल्याण का कुटिल मार्ग दिखाता है। सूर्य पृथ्वी के जल-स्थलों से जल को वाष्णीकृत करता है, जिससे उन्हें कुटिलता सहनी पड़ती है। परन्तु वाष्णीकृत जल को सभी जीवों के पूर्ण संरक्षण और पालन के लिए आहुति की तरह वापिस भेज दिया जाता है।

जीवन में सार्थकता

जल चक्र वास्तव में किस प्रकार कल्याण का चक्र है?

यह एक प्रसिद्ध कथन है कि यज्ञ करते हुए हाथ जलते ही हैं। सभी त्याग कार्यों में कुछ कठिनाई अवश्य शामिल होती है। प्रथम दृष्टि में सूर्य की ऊर्जा के द्वारा जल-स्थलों से जल का वाष्णीकृत करना कुटिलता दिखाई देती है, परन्तु वास्तव में यह एक विज्ञान के साथ-साथ आध्यात्मिकता भी है।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

वैज्ञानिक रूप से, इसे जल चक्र कहा जाता है।

आध्यात्मिक रूप से, यह त्याग का चक्र है। सूर्य के द्वारा सभी प्राणियों के कल्याण के लिए हमें इस त्याग चक्र की शिक्षा को जीवन के एक सिद्धान्त के रूप में समझना चाहिए। परमात्मा की कृपा से हमें जो कुछ भी मिलता है उसका प्रयोग जल-स्थलों की तरह सबके कल्याण के लिए ही किया जाना चाहिए।

ऋग्वेद मन्त्र 1.46.5

आदारो वां मतीनां नासत्या मतवचसा ।

पातं सोमस्य धृष्णुया ॥ ५ ॥

आदारः — शत्रुओं का नाश करने के लिए

वाम् — आपकी

मतीनाम् — बुद्धियाँ

नासत्या — असत्य नहीं

मतवचसा — महान् बुद्धि के साथ बोलने वाले

पातम् — संरक्षण के लिए

सोमस्य — महान् ज्ञान, गुण और पवित्रता

धृष्णुया — शत्रुओं का नाश करने वाले (जैसे अहंकार और इच्छाएँ) ।

व्याख्या :-

शत्रुओं को मारने का क्या उद्देश्य है?

हमारी बुद्धियों के शत्रुओं का नाश करने में कौन से कारक सहायक होते हैं?

हमारी बुद्धियों के शत्रु आन्तरिक भी हैं और बाहरी भी जैसे — अहंकार और इच्छाएँ। इनके नाश का उद्देश्य है, अपने महान् ज्ञान, गुणों, पवित्रता और भक्ति का संरक्षण करना। इन शत्रुओं का नाश करने में दो कारक बहुत सहायक हैं :—

(क) नासत्या — असत्य नहीं अर्थात् पूरी तरह सत्यवादी बनों ।

(ख) मतवचसा — सदैव महान् बुद्धि के साथ बोलो ।

जीवन में सार्थकता

इच्छाओं और अहंकार के क्या प्रभाव होते हैं?

महान् ज्ञान के आधार पर सदैव सत्य बोलने के क्या लाभ हैं?

इच्छाएँ और अहंकार हमारे सबसे बड़े शत्रु जाने जाते हैं।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

इच्छाएँ हमारे आन्तरिक शत्रु हैं। इच्छाएँ पूरी हों या अधूरी, दोनों ही हमारे सामाजिक और आध्यात्मिक विकास के लिए अच्छी नहीं हैं। पूरी हो चुकी इच्छाएँ हमें कमजोर बना देती हैं – तृष्णा न जीर्णा, वयं एव जीर्णा। दूसरी तरफ अधूरी इच्छाएँ हमें हताश और निराश कर देती हैं।

इसी प्रकार अहंकार भी हमारा आन्तरिक शत्रु है, जो बाहर प्रकट होता है। सफल या असफल, अहंकार बाहरी संसार में हमेशा हमारे शत्रुओं की संख्या बढ़ाता है। इसके अतिरिक्त यह हमारी मानसिक स्वतंत्रता में बाधक होता है।

स्वयं की प्रशंसा करके यदि हम अपने अहंकार की तुष्टि करें तो अन्य लोग ईर्ष्या महसूस करते हैं।

यदि हमारा अहंकार असंतुष्ट रहे तो हमारा मन असंतुष्टि का प्रदर्शन करता है, क्रोध का विकास करता है और हमारे आध्यात्मिक पथ पर एक बाधा बन जाता है।

इसलिए हमें लगातार इच्छाओं और अहंकार के नाश का प्रयास करते रहना चाहिए। इस सम्बन्ध में दो संकल्प हमारे सहायक हो सकते हैं – सदा सत्यवादी बनों और एक संतुलित वक्ता बनों जो महान् ज्ञान के बल पर बोले। यह दो लक्षण आपकी चमक समाज में बढ़ा देंगे और आध्यात्मिक पथ पर सहायता करेंगे।

ऋग्वेद मन्त्र 1.46.6

या नः पीपरदश्विना ज्योतिष्मती तमस्तिरः ।
तामस्मे रासाथामिषम् ॥ 6 ॥

या – वह जो

नः – हमें

पीपरत – पार लगाने वाला

अश्विना – दोनों प्राण, सूर्य और चन्द्र, पति और पत्नी

ज्योतिष्मती – प्रकाशित करने वाला, बुद्धि को ज्ञानवान बनाने वाला

तमः – अन्धकार, अज्ञानता, रोग, बुराईयाँ

तिरः – दूर रखता है

ताम् – उसको

अस्मे – हमारे लिए

रासाथाम् – उपलब्ध कराता है

इषम् – इच्छाएँ, प्रयास, बुद्धि, भोजन, आनन्द, सुविधाएँ।

व्याख्या :-

'इषम्' के भिन्न-भिन्न आयाम कौन-कौन से हैं?

हमारे 'इषम्' किस प्रकार के होने चाहिए?

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

इस मन्त्र में 'इषम्' शब्द अत्यन्त महत्वपूर्ण है। क्योंकि यह बहुआयामी है। इसके अनेक अर्थ हैं जैसे – इच्छाएँ, प्रयास, बुद्धि, भोजन, आनन्द, सुविधाएँ आदि। इन अलग-अलग अर्थों के आधार पर, यह मन्त्र अलग-अलग प्रेरणाएँ देता है।

हम परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि हमें ऐसी 'इषम्' प्रदान करें जिनके निम्न लक्षण हों :–

- (क) पीपरत – जो जीवन पथ को पार करने में हमारी सहायता करता है।
- (ख) ज्योतिष्मती – प्रकाशित करने वाला और बुद्धि को ज्ञानवान बनाने वाला
- (ग) तमः तिरः – जो हमारे जीवन से अन्धकार, अज्ञानता, रोग, बुराईयों आदि को दूर रखता है

जीवन में सार्थकता

एक सफल जीवन के क्या लक्षण हैं?

- (1) यदि 'इषम्' को इच्छा के रूप में समझें तो :–
 - (क) हमारी इच्छाएँ यह सुनिश्चित करने वाली हों कि हम जीवन पथ की बाधाओं को पार कर सकें और कभी भी इच्छाओं के दुष्क्र में न फंसें।
 - (ख) हमारी इच्छाएँ हमारे अन्दर महान् बुद्धि का प्रकाश उत्पन्न कर सकें।
 - (ग) हमारी इच्छाएँ हमें अन्धकार, अज्ञानता, बुराईयों और रोगों से दूर रख सकें।
- (2) यदि 'इषम्' को प्रयासों के रूप में समझें तो :–
 - (क) हमारे प्रयास यह सुनिश्चित करने वाले हों कि हम जीवन पथ की बाधाओं को पार कर सकें और कभी भी प्रयासों के दुष्क्र में न फंसें।
 - (ख) हमारे प्रयास हमारे अन्दर महान् बुद्धि का प्रकाश उत्पन्न कर सकें।
 - (ग) हमारे प्रयास हमें अन्धकार, अज्ञानता, बुराईयों और रोगों से दूर रख सकें।
- (3) यदि 'इषम्' को भोजन के रूप में समझें तो :–
 - (क) हमारा भोजन यह सुनिश्चित करने वाला हो कि हम जीवन पथ की बाधाओं को पार कर सकें और कभी भी भोजन के दुष्क्र में न फंसें।
 - (ख) हमारा भोजन हमारे अन्दर महान् बुद्धि का प्रकाश उत्पन्न कर सकें।
 - (ग) हमारा भोजन हमें अन्धकार, अज्ञानता, बुराईयों और रोगों से दूर रख सकें।
- (4) यदि 'इषम्' को बुद्धि के रूप में समझें तो :–
 - (क) हमारी बुद्धि यह सुनिश्चित करने वाली हो कि हम जीवन पथ की बाधाओं को पार कर सकें और कभी भी बुद्धि के दुष्क्र में न फंसें।
 - (ख) हमारी बुद्धि हमारे अन्दर महान् बुद्धि का प्रकाश उत्पन्न कर सकें।
 - (ग) हमारी बुद्धि हमें अन्धकार, अज्ञानता, बुराईयों और रोगों से दूर रख सकें।
- (5) यदि 'इषम्' को सुविधाओं के रूप में समझें तो :–

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

(क) हमारी सुविधाएँ यह सुनिश्चित करने वाली हों कि हम जीवन पथ की बाधाओं को पार कर सकें और कभी भी सुविधाओं के दुष्क्र में न फंसें।

(ख) हमारी सुविधाएँ हमारे अन्दर महान् बुद्धि का प्रकाश उत्पन्न कर सकें।

(ग) हमारी सुविधाएँ हमें अन्धकार, अज्ञानता, बुराईयों और रोगों से दूर रख सके।

समग्र रूप से, हमारे जीवन का प्रत्येक आयाम हमें संसार सागर से पार लगाने में सहायक होना चाहिए, हमारे अन्दर महान् और दिव्य बुद्धि का प्रकाश करके तथा हर प्रकार की बुराईयों और कमजोरियों को हमसे दूर करके।

इन्हीं तीन परिणामों को एक सफल जीवन कहा जा सकता है।

ऋग्वेद मन्त्र 1.46.7

आ नो नावा मतीनां यातं पाराय गन्तवे।
युंजाथामश्विना रथम् ॥ 7 ॥

(आ – यातम से पूर्व लगाकर)

नः – हमें

नावा – नौकायान

मतीनाम् – बुद्धि

(यातम् – आयातम्) – अनुभूति में आओ

पाराय – पार करने के लिए

गन्तवे – लक्ष्य

युंजाथाम् – जोड़ो

अश्विना – दोनों प्राण

रथम् – उत्तम रथ में।

व्याख्या :-

मानव जीवन की उत्पत्ति के दो कदम क्या हैं?

मानव जीवन का क्या उद्देश्य है?

मानव जीवन की उत्पत्ति के दो कदम हैं :-

(क) परमात्मा ने इस शरीर रथ के साथ दो प्राणों को जोड़ा, और

(ख) नौकायान की तरह बुद्धि प्रदान की।

मानव जीवन के दो उद्देश्य हैं :-

(क) परमात्मा को अनुभूति में आने दें।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

(ख) इस संसार सागर के लक्ष्य को पार करें अर्थात् मुक्ति।

जीवन में सार्थकता

मानव जीवन में बुद्धि की क्या भूमिका है?

सांसारिक जीवन की गतिविधियों के लिए या आध्यात्मिक जीवन के लिए, बुद्धि उस नौकायान की तरह है जिस पर हमें परमात्मा की अनुभूति प्राप्त करते हुए इस संसार सागर को पार करना है।

मानव शरीर की रचना के दो कदमों में से प्रथम अर्थात् शरीर के साथ प्राणों का संयोग होना अन्य जीवों की तरह एक सामान्य जीवन है, किन्तु मनुष्यों को बुद्धि का मिलना इसे एक विशेष जीवन बना देता है। परमात्मा की इस विशेष भेंट के साथ, जिसे बुद्धि कहा जाता है, हम इस जीवन को सभी क्षेत्रों में पूरी तरह अलंकृत कर सकते हैं।

इस बुद्धि पर एकाग्रता और ध्यान करना तथा इसके निर्णयों पर पूरा नियंत्रण रखना और इसके द्वारा वैदिक विवेक का अनुसरण सुनिश्चित करने से यह बुद्धि चमक जाती है।

इस बुद्धि को इच्छाओं और अहंकार से दूर रखने से परमात्मा की अनुभूति के पथ पर अच्छी सफलता सुनिश्चित हो सकती है जिसे अन्ततः मुक्ति की प्राप्ति कहा जाता है।

ऋग्वेद मन्त्र 1.46.8

अस्त्रिं वां दिवस्पृथुं तीर्थं सिन्धूनां रथः।
धिया युयुज्ञ इन्दवः ॥ ८ ॥

अस्त्रिम् – चप्पू (नौका चलाने के लिए)

वाम् – आपका

दिवः – ज्ञान का, बुद्धि का

पृथु – विस्तृत

तीर्थ – पार करने के लिए

सिन्धूनाम् – समुद्रों को

रथः – सर्वोत्तम रथ

धिया – बुद्धि

युयुज्ञ – संयुक्त

इन्दवः – गुण।

व्याख्या :-

मानव जीवन यात्रा में बुद्धि की क्या भूमिका है?

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

बुद्धि की भूमिका का विस्तार करते हुए, इस मन्त्र में कहा गया है कि बुद्धि अर्थात् दिव्य ज्ञान समुद्रों को पार करने के लिए आपका विस्तृत चप्पू है। इस यात्रा के लिए, हमें उत्तम गुणों को इस बुद्धि और मानव शरीर के साथ संयुक्त करना चाहिए।

जीवन में सार्थकता

हमें अपनी बुद्धि को सभी गुणों से सुसज्जित कर्यों करना चाहिए?

मानव जीवन में, मानव शरीर की नाव को चलाने के लिए बुद्धि की महत्त्वपूर्ण भूमिका है, क्योंकि बुद्धि एक चप्पू की तरह है। मानव जीवन के किसी भी क्षेत्र में सफल यात्रा के लिए हमें अपनी बुद्धि को दिव्य बनाने के लिए सभी महान् और श्रेष्ठ गुणों के साथ संयुक्त ही नहीं करना चाहिए अपितु उसे सुसज्जित करना चाहिए।

बिना गुणों के, यदि हम सफलता प्राप्त करते हैं, तो यह अस्थाई होगी और अन्ततः संकट पैदा करने वाली भी होगी। यह हमारे अपने जीवन के प्रति एक धोखा होगा। गुणों के बिना जीवन के रूप में कलियुग ऐसे धोखों से भरपूर है।

हमें कीचड़ वाले जल में एक कमल की तरह जीना चाहिए। केवल गुणों से भरपूर जीवन ही संसार सागर को सफलतापूर्वक पार करना सुनिश्चित कर सकता है। केवल शुभ गुण और दिव्य बुद्धि ही आत्म-अनुभूति और परमात्मा की अनुभूति प्रदान कर सकती है।

ऋग्वेद मन्त्र 1.46.9

दिवस्कण्वास इन्दवो वसु सिन्धूनां पदे ।

स्वं वत्रिं कुह धित्सथः ॥ १ ॥

दिवः — प्रकाशवान्, ज्ञान

कण्वासः — एक—एक कदम के साथ ज्ञान एकत्र करने वाले महान् विद्वान्

इन्दवः — दिव्य गुणों से बनें शक्तिशाली

वसु — सम्पत्ति

सिन्धूनाम् — ज्ञान के समुद्र के साथ

पदे — उनके चरणों में

स्वम् — अपने

वत्रिम् — धारण करने योग्य (लक्ष्य)

कुह — कहाँ और कब

धित्सथः — धारणा करना चाहते हो, स्थापित करना चाहते हो।

व्याख्या :-

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

महान् विद्वानों को 'कण्वासः' क्यों कहा जाता है?

ज्ञान के अथाह समुद्र अर्थात् उन महान् विद्वानों के चरणों में आप स्वयं को कहाँ और कब धारण और स्थापित करना चाहते हो, जिन्होंने एक-एक कदम करके ज्ञान एकत्र किया है और दिव्य गुणों से स्वयं को शक्तिशाली बनाया है?

यह आपको निर्धारित करना है कि आप अपने निर्धारित लक्ष्यों के द्वारा ही धारण किये जाओगे या उनसे दिव्य ज्ञान की सम्पत्ति प्राप्त करना चाहते हो।

जीवन में सार्थकता

प्रत्येक मनुष्य के सामने ज्ञान के कौन से दो अवसर हैं?

प्रत्येक मनुष्य के सामने चयन के दो अवसर होते हैं – प्रथम, संसार में अपना लक्ष्य स्वयं निर्धारित करें, जैसे उच्च पेशेवर जीवन प्राप्त करना, अपार धन और उच्च स्तर अर्जित करना आदि या द्वितीय, दिव्य ज्ञान की सम्पत्ति प्राप्त करना जो मुक्ति की तरफ ले जा सके।

इन दोनों के लिए आपको एक उचित गुरु का चुनाव करना होगा। प्रथम अवसर के लिए एक पेशेवर अध्यापक को ढूँढ़ना कठिन नहीं है। परन्तु दूसरे अवसर के लिए एक महान् अनुभूति प्राप्त सन्त या विद्वान् गुरु को ढूँढ़ना आज के युग में निःसंदेह अत्यन्त कठिन है। ऐसे सन्त और विद्वान् जिन्होंने लम्बी और लगातार तपस्या से ज्ञान एकत्र किया है और क्रियात्मक रूप से उस पथ का अनुसरण कर रहे हों, ऐसे लोग दुर्लभ हैं। तुरन्त ऐसे सन्तों की खोज शुरू कर देनी चाहिए और उनके चरण कमलों में बैठना चाहिए जैसे विशाल समुद्र के किनारे बैठे हों।

ऋग्वेद मन्त्र 1.46.10

अभूदु भा उ अंशवे हिरण्यं प्रति सूर्यः।
व्यख्यज्जिहवयासितः ॥ 10 ॥

अभूत् उ – निश्चित रूप से अनुभूति

भा: – प्रकाशवान् ज्ञान

उ – निश्चित रूप से

अंशवे – जो दूसरों के साथ बांटता है

हिरण्यम् – चमकता है, प्रकाशित होता है

प्रति – के लिए, जैसे

सूर्यः – सूर्य, दूसरों की सेवा में सदैव ऊर्जावान और सक्रिय

व्यख्यत् – प्रकाशित करता है (परमात्मा के ज्ञान से)

जिह्वा – जिह्वा

असितः – बद्ध नहीं।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

व्याख्या :-

प्रकाशवान् ज्ञान की अनुभूति किसको होती है?

जो व्यक्ति निम्न लक्षणों का अनुसरण करता है उसे प्रकाशवान् तथा अन्तः ज्ञान, वेद और परमात्मा की अनुभूति होती है।

(क) अंशवे – जो दूसरों के साथ बांटता है,

(ख) हिरण्यम् प्रति सूर्यः – सूर्य की तरह चमकता है, प्रकाशित होता है और दूसरों की सेवा में सदैव ऊर्जावान और सक्रिय रहता है।

(ग) व्यरुत् – प्रकाशित करता है (परमात्मा के ज्ञान से),

(घ) जिह्या असितः – जो अपनी जिहवा से बद्ध नहीं होता, पसन्द और नापसन्द से बद्ध नहीं होता।

जीवन में सार्थकता

सबके आशीर्वाद से जीवन में कौन उन्नति कर सकता है?

आध्यात्मिक तथा सांसारिक मार्ग पर, प्रत्येक व्यक्ति प्रगति चाहता है जो उस पथ के समुचित ज्ञान तथा बिना भेदभाव के सभी साधियों के साथ एक दिव्य सम्बन्ध के आधार पर ही सम्भव है।

प्रत्येक व्यक्ति को बांटने वाला व्यक्तित्व रखना चाहिए। सबके साथ सामन भी बांटे और मन भी। व्यक्ति को स्वयं की तुलना सूर्य से करनी चाहिए जो सबके कल्याण के लिए सदैव ऊर्जावान और सक्रिय रहता है।

उसे अपने मार्ग से सम्बन्धित सर्वोच्च स्तर तक के ज्ञान से स्वयं को प्रकाशित रखना चाहिए।

किसी को अपने स्वाद, इच्छाओं, पसन्द और नापसन्द के पीछे नहीं भागना चाहिए। व्यवहार के ऐसे लक्षणों के साथ ही कोई व्यक्ति सबके आशीर्वाद से जीवन में प्रगति कर सकता है।

ऋग्वेद मन्त्र 1.46.11

अभूदु पारमेतवे पन्था ऋतस्य साधुया ।

अदर्शि वि स्रुतिर्दिवः ॥ 11 ॥

अभूत् उ – निश्चित रूप से अनुभूति प्राप्त

पारम् – पार करने के लिए

एतवे – इस सांसारिक समुद्र को

पन्था – पथ

ऋतस्य – सत्य

साधुया – लक्ष्य तक पहुंचने के उत्तम साधन

अदर्शि – दिखाई देती है

वि स्रुतिः – विस्तृत बढ़ी हुई

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

दिवः – दिव्यता, प्रकाश।

व्याख्या :-

संसार सागर को पार करने का उत्तम मार्ग क्या है?
इस मार्ग पर क्या दिखाई देता है?
संसार सागर को पार करने की अनुभूति निश्चित रूप से आती है और इस लक्ष्य तक पहुंचने का उत्तम साधन है सत्यवादिता का मार्ग। इस मार्ग पर विस्तृत और बढ़ी हुई दिव्यता तथा प्रकाश दिखाई देता है।

जीवन में सार्थकता

सत्यवादिता का क्या महत्त्व है?

जीवन में सत्यवादिता का पालन करना अत्यन्त सरल है परन्तु यह अत्यन्त दुर्लभ लक्षण है। सत्यवादिता का अर्थ है आपने जो देखा, सुना और समझा, केवल उसी को बोलना। इसका अर्थ यह भी है कि परमात्मा और उससे प्रकाशित ज्ञान के सत्य और मूल रूप का अनुसरण करना।

सत्यवादिता का प्रभाव इतना सरल है कि यह हमें अत्यन्त संतुलित अवस्था में रखती है। झूठ बोलने के लिए, एक व्यक्ति को योजना बनानी पड़ती है और अपने दिमाग को उस झूठ के संभालने में लगाये रखना पड़ता है।

सत्यवादिता से सबकी नजरों में विश्वसनीयता बन जाती है। विश्वसनीयता से आस-पास के वातावरण में एकात्मता दिखाई देती है।

एकात्मता से प्रगति प्राप्त होती है। ऐसे सत्यवादी व्यक्ति की प्रगति बढ़ी हुई दिव्यता के रूप में दिखाई देती है। यह मूल औपचारिक योग्यताओं में एक सर्वोच्च वृद्धि होती है।

अतः जीवन के किसी भी क्षेत्र में सफलता प्राप्त करने के लिए सत्यवादिता एक महत्त्वपूर्ण लक्षण है।

सत्यवादिता —— विश्वसनीयता —— एकात्मता —— प्रगति —— बढ़ी हुई दिव्यता।

ऋग्वेद मन्त्र 1.46.12

तत्तदिदश्विनोर्वो जरिता प्रति भूषति ।
मदे सोमस्य पिप्रतोः ॥ 12 ॥

तत् तत् – केवल वे ही
इत् – निश्चित रूप से
अश्विनोः – जोड़ा (प्राणों का)
अवः – संरक्षित
जरिता – परमात्मा का महिमा गान
प्रति भूषति – सुसज्जित

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

मदे — आनन्ददायक

सोमस्य — गुणों का

पिप्रतोः — पूर्ण।

व्याख्या :-

कौन पूरी तरह संरक्षित है?

केवल उन प्राणों का जोड़ा निश्चित रूप से संरक्षित है : —

(क) जो परमात्मा के महिमा गान से सुसज्जित है

(ख) जो अपने जीवन में पूर्ण गुणों से आनन्दित हैं।

जीवन में सार्थकता

परमात्मा के महिमा गान का क्या महत्त्व है?

जो लोग परमात्मा की महिमा का गान करते हैं वे निश्चित रूप से अपने आपको कई प्रकार की तपस्याओं में व्यस्त रखते हैं। ऐसे श्रद्धालुओं के जीवन में प्राण साधना जीवन का एक मार्ग बन जाती है। वे अन्ततः पूर्ण गुणों से आनन्दित होते हैं।

इस प्रकार परमात्मा की महिमा का गुणगान सभी उपलब्धियों का मूल है, क्योंकि यह लक्षण मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य का मूल आधार है।

ऋग्वेद मन्त्र 1.46.13

वावसाना विवस्वति सोमस्य पीत्या गिरा।

मनुष्वच्छंभू आ गतम् ॥ 13 ॥

वावसाना — सुखों और शांति में स्थापित

विवस्वति — परमात्मा और उसके ज्ञान से प्रेम करना, पूजा करना

सोमस्य — गुणों के लिए

पीत्या — पीना

गिरा — ज्ञान की वाणी

मनुष्वत् — श्रेष्ठ मनुष्य की तरह

शंभू — शांति और कल्याण की उत्पत्ति करने वाला

आ गतम् — अनुभूति में आता है।

व्याख्या :-

एक वास्तविक श्रेष्ठ व्यक्ति के क्या लक्षण हैं?

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

एक श्रेष्ठ व्यक्ति को क्या अनुभूति होती है?

शांति और कल्याण का उत्पत्तिकर्ता, परमात्मा, उन श्रेष्ठ व्यक्तियों की अनुभूति में आता है :-

(क) जो सुखों और शांति में स्थापित है।

(ख) जो परमात्मा और उसके ज्ञान से प्रेम करते हैं और उसकी पूजा करते हैं।

(ग) जो अपने ज्ञान की वाणियों का सदुपयोग करके शुभ गुणों का पान करते हैं।

जीवन में सार्थकता

शाश्वत शांति कहाँ होती है?

शांति का क्या परिणाम होता है?

हमें प्रत्येक हालात में शांति में रहना चाहिए, वस्तुओं के टुकड़ों के लिए नहीं। शांति का एक ही स्रोत है – परमात्मा से प्रेम करना, क्योंकि वही हमारा सत्य स्वरूप है। हमें वस्तुओं के टुकड़ों में कभी शाश्वत शांति नहीं मिल सकती। शाश्वत शांति निःसंदेह शांति के उत्पत्ति करने वाले में रहती है जो हमारी ऊर्जा और हमारे जीवन का मूल कारण है अर्थात् सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा।

परमात्मा के साथ मजबूत सम्बन्ध बनाने के बाद हमें प्रत्येक क्षण और प्रत्येक ऊर्जा का सदुपयोग जीवन में शुभ गुणों के पान के लिए ही करना चाहिए। यह तीन लक्षण ही हमें एक श्रेष्ठ मानव बना सकते हैं – शांति, परमात्मा के लिए प्रेम और शुभ गुण।

शांति, परमात्मा के लिए प्रेम उत्पन्न करती है और शुभ गुणों के लिए प्रेरित करती है। इन लक्षणों के बल पर ही परमात्मा अनुभूति में आते हैं जो सबके कल्याण के उत्पत्तिकर्ता हैं।

ऋग्वेद मन्त्र 1.46.14

युवोरुषा अनु श्रियं परिज्मनोरुपाचरत् ।

ऋता वनथो अक्तुभिः ॥ 14 ॥

युवोः – आपके

उषाः – उदय होते सूर्य की प्रथम किरणें

(अनु – वनथः से पूर्व लगाकर)

श्रियम् – गौरवशाली सम्पदा

परिज्मनोः – चारों तरफ गति करने वाला

उपाचरत् – निकट से प्राप्त

ऋता – सदैव

(वनथः – अनुवनथः)

अक्तुभिः – केवल रात्रि में, ज्ञान की किरणों के साथ

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



व्याख्या :-

उदय होते सूर्य की प्रथम किरणें सर्वमान्य कैसे हैं?

हमें आपके उदय होते हुए सूर्य की प्रथम किरणों का आनन्द सुविधाजनक रूप में लेना चाहिए जो सदैव और सर्वत्र गति करती हैं। गौरवशाली सम्पदा ज्ञान की किरणों के साथ ऐसे लोगों को निकटता से प्राप्त होती हैं जो सूर्य की प्रथम किरणों का आनन्द लेते हैं।

जीवन में सार्थकता

परमात्मा की समस्त देन सर्वमान्य कैसे हैं?

परमात्मा की देन को किस प्रकार प्राप्त और प्रयोग करें?

उदय होते हुए प्रातःकालीन सूर्य की प्रथम किरणें वायुमण्डल में सर्वत्र बारी—बारी से गति करती हैं। प्रतिक्षण सूर्य की यह प्रातःकालीन किरणों समस्त स्थानों पर बारी—बारी से पहुँचती हैं। अतः सूर्य की यह पहली किरणें प्राकृतिक रूप से सबके लिए समान हैं। ये हम सबके बीच कोई भेदभाव नहीं करती। परन्तु कुछ लोग इन्हें उचित प्रकार से प्राप्त करते हैं और कुछ नहीं।

परमात्मा की सभी देन भी सूर्य की किरणों की तरह हैं जो बिना भेदभाव के सभी जीवों पर वर्षा करती हैं। केवल सक्रिय और ऊर्जावान व्यक्ति परमात्मा की बरसती हुई देन को उचित प्रकार से प्राप्त करते हैं और प्रयोग करते हैं, जो दिव्य ज्ञान के साथ गौरवशाली सम्पदा हैं, सबके कल्याण के लिए इनका प्रयोग करते हैं, शांति में रहते हैं और जीवन में दिव्य बन जाते हैं। परमात्मा की सभी देन प्रातःकालीन सूर्य की प्रथम किरणों की तरह सभी लोगों के लिए, सभी स्थानों पर और हर समय बरसती हैं।

इसे महसूस करो, इस पर ध्यान करो, इसे प्राप्त करो, इसकी अनुभूति करो और दिव्य उद्देश्यों के लिए इसका प्रयोग करो।

ऋग्वेद मन्त्र 1.46.15

उभा पिबतमशिवनोभा नः शर्म यच्छतम् ।

अविद्रियाभिरुतिभिः ॥ 15 ॥

उभा — आप दोनों

पिबतम् — पान करो (प्रथम किरणों का)

अशिवना — जोड़ा (प्राणों का)

उभा — आप दोनों

नः — हमारे लिए

शर्म — सुविधाएं, कल्याण

यच्छतम् — प्रदान करो, उपलब्ध कराओ

अविद्रियाभिः — निन्दा करने के योग्य नहीं, अवाधित

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

उत्तिष्ठि: – संरक्षण के लिए

व्याख्या :-

हमारे प्राणों को उदय होते हुए सूर्य की प्रथम किरणों का पान क्यों करना चाहिए?

दोनों प्राणों को उदय होते हुए सूर्य की प्रथम किरणों का पान प्राणायाम के माध्यम से अवश्य करना चाहिए। इस साधना के बल पर :-

- (क) दोनों प्राण हमें हर प्रकार की सुविधा और कल्याण उपलब्ध कराने के योग्य बन जायेंगे।
- (ख) वे कभी निन्दा के योग्य नहीं रहेंगे और परिणामस्वरूप स्वस्थ और बाधारहित जीवन प्राप्त करेंगे।
- (ग) वे हमें संरक्षित कर पायेंगे।

जीवन में सार्थकता

एक स्वस्थ और उत्तम जीवन का क्या रहस्य है?

मन को संतुलित कैसे बनाकर रखें?

प्रत्येक व्यक्ति एक स्वस्थ और श्रेष्ठ जीवन की कामना करता है। सभी कर्मों को बिना बाधा सम्पन्न करने के लिए स्वस्थ जीवन अत्यन्त आवश्यक है। जब एक बार व्यक्ति अपने कर्म संचय को समाप्त करने के योग्य हो जाता है, तभी वह आध्यात्मिक पथ पर अग्रसर होते हुए मुक्ति को प्राप्त करने में सफल हो सकता है। अतः प्रातःकाल जल्दी उठना और प्राणायाम के द्वारा उदय होते हुए सूर्य की पहली किरणों का पान करना अच्छे स्वास्थ्य का मूल आधार है, क्योंकि प्राणायाम मन को संतुलित रखने में सहायता करता है और मन को समत्व अवस्था में ले जाता है।

एक श्रेष्ठ जीवन के लिए हमें शुभ गुणों का पान करना चाहिए। ब्रह्मवेला का समय इस उद्देश्य के लिए भी सबसे अधिक सुगम है। ब्रह्मवेला में प्राणायाम का अभ्यास करते हुए हमारा आकाश तत्त्व बढ़ता है और मन में सभी श्रेष्ठ गुणों की स्थापना का मार्ग प्रशस्त करता है। श्रेष्ठ जीवन का अर्थ है संतुलित मन और श्रेष्ठ कार्यों को करने की क्षमता।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

ऋग्वेद मण्डल-1 सूक्त 47

ऋग्वेद मन्त्र 1.47.1

अयं वां मधुमत्तमः सुतः सोम ऋतावृद्धा ।
तमश्विना पिबतं तिरोऽद्यं धत्तं रत्नानि दाशुषे ॥ १ ॥

अयम् – यह

वाम् – आपका

मधुमत्तमः – अत्यन्त मधुरता के साथ

सुतः – उत्पन्न हुआ

सोमः – गुण, ज्ञान, दिव्य प्रकाश

ऋतावृद्धा – लगातार बढ़ाने वाले

तम् – उस (सोम को)

अश्विना – जोड़ा (प्राण का)

पिबतम् – पीओ

तिरः – व्याप्त, मिश्रित, अंगीकार

अद्यम् – सार

धत्तम् – धारण करो

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

रत्नानि – मूल्यवान् गौरवशाली सम्पदा

दाशुषे – उनके लिए जो त्याग करने के लिए या दान करने के लिए तत्पर हैं।

व्याख्या :-

दिव्य प्रकाश की क्या प्रगति है?

इसे कैसे उत्पन्न किया जा सकता है और कैसे बढ़ाया जा सकता है?

दिव्य प्रकाश के क्या परिणाम होते हैं?

आपके द्वारा उत्पन्न शुभ गुण, ज्ञान तथा दिव्यता का प्रकाश मधुरता से भरपूर है। दोनों प्राणों तथा शरीर और मन को इनका पान करना चाहिए और इनका उपभोग करना चाहिए, जिससे आपके जीवन में इस सोम का सार व्याप्त हो जाए तथा मिश्रित होकर जीवन में धारण हो जाए। ऐसे संरक्षित शरीर में वह लगातार बढ़ता जाएगा। ऐसा व्यक्ति त्याग कार्यों तथा दान आदि के लिए मूल्यवान् गौरवशाली सम्पदा को धारण करता है।

जीवन में सार्थकता

गौरवशाली सम्पदा क्या है?

गौरवशाली सम्पदा को कैसे अर्जित किया जाए?

दिव्य स्पर्श मधुर भावनाएं प्रदान करता है। दिव्य स्पर्श वाले व्यक्ति के पास दिव्य गुण, ज्ञान और दिव्य प्रकाश देखा जाता है। ऐसे महान् व्यक्तियों का प्रत्येक क्षण दिव्य होता है।

ऐसी दिव्यता का भोग करना, उसे धारण करना और अपनी केन्द्रीय प्रकृति में उसका मिश्रण कर लेना ही उसके संरक्षण का तथा उसके नियमित सम्बद्धन का एकमात्र मार्ग है।

ऐसी दिव्यता के परिणामस्वरूप यह देखा जाता है कि उस व्यक्ति के पास त्याग कार्यों तथा दान आदि के लिए गौरवशाली सम्पदा होती है। यह केवल भौतिक सम्पदा नहीं है। गौरवशाली सम्पदा एक महिमा है, एक चमक है और सर्वोच्च सम्पदा है, जिसमें दिव्य शुभ गुण, दिव्य ज्ञान तथा दिव्य प्रकाश समाहित होता है। ऐसी गौरवशाली सम्पदा, चाहे वह भौतिक हो या आध्यात्मिक, सदैव दूसरों के कल्याण के लिए किए गए त्याग कार्यों में प्रयोग होती है। केवल दिव्य शुभ गुण आदि ही गौरवशाली सम्पदा उत्पन्न कर सकते हैं। परिणाम के लिए जल्दबाजी नहीं होनी चाहिए। अपने जीवन में दिव्य गुणों और ज्ञान का पान करने तथा उन्हें धारण करने पर ध्यान एकाग्र करना चाहिए।

ऋग्वेद मन्त्र 1.47.2

त्रिबन्धुरेण त्रिवृता सुपेशसा रथेना यातमश्विना ।
कण्वासो वां ब्रह्म कृष्णन्त्यधरे तेषां सु शृणुतं हवम् ॥ २ ॥

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

त्रिबन्धुरेण – तीनों के बंधन में (इन्द्रियाँ, मन और बुद्धि के)

त्रिवृता – तीन वृत्त (धर्म, अर्थ और काम अर्थात् गुणकारी कार्य, पदार्थ और इन्द्रियों की इच्छाएं)

सुपेशसा – स्वस्थ एवं सुन्दर रूप वाला

रथेन – शरीर रथ

आयातम् – आता है और जाता है

अशिवना – जोड़ा (प्राणों का, शरीर और मन का)

कण्वासः – महान विद्वान

वाम् – आपका

ब्रह्म – दिव्य

कृणवन्ति – करते हैं

अध्वरे – त्याग के लिए

तेषाम् – उनके (विद्वानों के)

सु शृणुतम् – उत्तम प्रकार से सुनिए

हवम् – पुकार, प्रार्थना, प्रेरणाएं।

व्याख्या :-

महान विद्वानों के क्या लक्षण होते हैं?

हमारा शरीर रथ जो तीन बंधनों से युक्त है (इन्द्रियों, मन और बुद्धि का वर्ग), तीन वृत्तों से युक्त है (धर्म, अर्थ और काम अर्थात् शुभ गुणकारी कार्य, भौतिक साधन तथा काम वासनाएं) और स्वस्थ तथा सुन्दर है। इस शरीर रथ में प्राणों का जोड़ा आता है और जाता है।

आपकी दिव्यता के महान विद्वान इस शरीर रूपी साधन का प्रयोग त्याग कार्यों के लिए करते हैं। प्रत्येक व्यक्ति को उन महान विद्वानों की पुकार, प्रार्थनाएं तथा प्रेरणाएं सुननी चाहिए।

जीवन में सार्थकता

महान विद्वानों का अनुसरण कैसे करें?

जैविक रूप से यहाँ असंख्य जीव हैं। समस्त जीवों में सर्वोत्तम मानव है। उनमें से भी दिव्यता युक्त महान विद्वान वे लोग हैं, जो निम्न लक्षण धारण करते हैं :-

(क) इन्द्रियाँ, मन और बुद्धि रूपी तीन बंधनों के बावजूद वे इन बंधनों से मुक्त रहते हैं।

(ख) धर्म, अर्थ और काम रूपी तीन कार्यों से घिरे रहने के बावजूद भी वे इन वृत्तों को लांघ जाते हैं और इन तीनों से अलग जीवन बिताते हैं। वे प्रत्येक कार्य परमात्मा के प्रति भक्ति के रूप में करते हैं, जो मुक्ति के स्तर के बराबर है।

(ग) स्वस्थ और सुन्दर शरीर रखते हुए वे अनेकों के लिए आध्यात्मिक आकर्षण का स्रोत होते हैं।

(घ) अपनी इच्छाओं और अहंकार के बिना वे समूचे जीवन का प्रयोग त्याग कार्यों के लिए ही करते हैं।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

प्रत्येक व्यक्ति को ऐसे महान् विद्वानों की खोज करके उनके आहवाहन, प्रार्थनाएं तथा प्रेरणाएं सुननी चाहिए।

ऋग्वेद मन्त्र 1.47.3

अशिवना मधुमत्तमं पातं सोममृतावृधा ।
अथाद् दस्मा वसु बिभ्रता रथे दाश्वांसमुप गच्छतम् ॥ ३ ॥

अशिवना – जोड़ा (प्राणों का)

मधु मत्तम् – अत्यन्त मधुरता के साथ

पातम् – पीओ, संरक्षण करो

सोमम् – दिव्य गुण, ज्ञान तथा दिव्यता का प्रकाश

ऋतावृधा – निरन्तर वृद्धि करने वाले

अथ – उसके बाद

अद्य – अब

दस्मा – बुराईयों और रोगों के नाशक

वसु – सुविधाजनक निवास के समस्त साधन

बिभ्रता – धारण करते हुए

रथे – इस शरीर रथ में

दाश्वांसम् – आपके प्रति समर्पित तथा त्याग करने वाले को

उप आगच्छतम् – अनुभूति में प्राप्त होवो, अत्यन्त निकट आओ।

व्याख्या :-

अपनी अनुभूति में हम परमात्मा के साथ निकटता कैसे प्राप्त करें?

प्राणों का जोड़ा दिव्य गुणों, ज्ञान और दिव्य प्रकाश का पान तथा उनका संरक्षण करता है, जिससे भरपूर मधुरता के साथ लगातार उनका सम्बद्धन कर सके।

अतः हम समस्त बुराईयों और रोगों के नाशक से प्रार्थना करते हैं कि वे हमारी अनुभूति में हमारे निकट आएं, जो हम उनके लिए पूर्ण समर्पण तथा त्याग कर सकें तथा साथ-साथ इस शरीर रथ के सुखकारी आवास के लिए सभी साधन भी धारण कर सकें।

जीवन में सार्थकता

एक सफल तथा अग्रसर जीवन के दो महत्वपूर्ण लक्षण कौन से हैं?

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

प्रत्येक मानव का सर्वोपरि कर्तव्य है कि वह अपनी जीवन के सभी पहलुओं में दिव्यता का भोग करे, उसे सुरक्षित करे और उसका सम्बद्धन करे।

अपने जीवन में दिव्यता को स्थापित करके ही परमात्मा की अनुभूति अर्थात् सर्वोच्च सत्ता के साथ निकटता को सुनिश्चित किया जा सकता है और यह कार्य उनके लिए सरल होता है जो परमात्मा के लिए सर्वस्व समर्पण तथा त्याग के लिए तत्पर हैं।

जीवन के किसी भी क्षेत्र में सफलता के लिए दो महत्वपूर्ण लक्षण निम्न हैं :—

- (क) गुणकारी व्यवहार।
(ख) वह बड़ी शक्ति जिसके हम एक भाग हैं, उसके लिए पूर्ण समर्पण तथा त्याग के लिए तत्पर रहना।

ऋग्वेद मन्त्र 1.47.4

त्रिषधरथे बर्हिषि विश्ववेदसा मध्वा यज्ञं मिमिक्षतम्।
कण्वासो वां सुतसोमा अभिद्यवो युवां हवन्ते अश्विना॥ 4॥

त्रिषधरथे — जिसमें तीनों स्थापित हैं (परमात्मा, जीवात्मा तथा प्रकृति) (धर्म—अर्थ और काम अर्थात् गुणकारी कार्य, भौतिक साधन तथा इन्द्रियों की इच्छाएं) (भूमि, जल तथा वायु)

बर्हिषि — गहरे आकाश में

विश्व वेदसा — सर्वविद्यमान परमात्मा

मध्वा — पूर्ण मधुरता के साथ

यज्ञम् — त्याग

मिमिक्षतम् — सफल और स्थापित कीजिए

कण्वासः — महान विद्वान

वाम् — दोनों

सुतसोमाः — दिव्य गुण, ज्ञान और दिव्यता का प्रकाश उत्पन्न करने वाले

अभिद्यवः — सबको प्रकाश की ओर ले जाने वाले

युवाम् — आपको

हवन्ते — पुकारते हैं

अश्विना — जोड़ा (प्राणों का)।

व्याख्या :-

कौन समस्त त्याग कार्यों को सफल करता है?

किसके त्याग कार्य सफल होते हैं?

महान विद्वान किसका आह्वाहन करते हैं और क्यों?

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

सर्वविद्यमान परमात्मा उन लोगों के गहरे हृदय में सभी त्याग स्थापित करके सफल करते हैं, जिन्होंने परमात्मा को अपने में स्थापित किया है, जिसके पास परमात्मा सहित सभी शक्तियाँ हैं अर्थात् परमात्मा, जीवात्मा और प्रकृति की शक्ति, धर्म, अर्थ और काम की शक्ति, भूमि, जल और वायु की शक्ति और यह सब पूरी मधुरता के साथ।

आपके महान विद्वान् जो दिव्य गुणों, ज्ञान आदि को उत्पन्न करते हैं और सबको दिव्यता के प्रकाश की ओर ले चलते हैं, वे भी दोनों प्राणों के जोड़े के माध्यम से आपका आहवाहन करते हैं क्योंकि आप सबमें समाहित एक शक्ति हो।

जीवन में सार्थकता

परमात्मा किस प्रकार सबमें समाहित एक शक्ति हैं?

(क) सर्वोच्च शक्ति परमात्मा सर्वव्यापक है और उसमें सृष्टि के तीनों पक्ष समाहित हैं – परमात्मा, जीवात्मा तथा प्रकृति।

(ख) यहाँ तक कि मानवों के तीन कार्य अर्थात् धर्म, अर्थ और काम भी उसी परमात्मा में समाहित हैं, जिसकी अनुभूति को चौथा कार्य कहा जाता है, अर्थात् मोक्ष या मुक्ति। वास्तव में मुक्ति का अर्थ है परमात्मा की संगति और सम्बद्धता। यह चौथा कार्य प्रथम तीन कार्यों का फल है।

(ग) जितने भी त्याग कार्य हम मधुरता के साथ अर्थात् अहंकार और इच्छाओं के बिना सम्पन्न करते हैं, वे परमात्मा में स्थापित हो जाते हैं।

(घ) महान विद्वान् अपने उच्च ज्ञान तथा समाज में अपने स्तर के बावजूद, प्राणों के माध्यम से उसी का आहवाहन करते हैं।

अतः परमात्मा सबमें समाहित एक शक्ति है।

ऋग्वेद मन्त्र 1.47.5

याभि: कण्वमभिष्टिभिः प्रावतं युवमश्विना।

ताभिः ष्व स्माँ अवतं शुभस्पती पातं सोममृतावृधा ॥ ५ ॥

याभि: – जो

कण्वम् – महान विद्वान

अभिष्टिभिः – इच्छा करते हैं (संरक्षण की, गुणों की, बुराईयों और रोगों से संरक्षण की)

प्रावतम् – संरक्षित करते हो

युवम् – आप

अश्विना – जोड़ा (प्राणों का, शरीर और मन का)

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

ताभि: – उसी प्रकार, उसी से

सु – सुन्दरता के साथ

अस्मान् – हमें भी

अवतम् – संरक्षण करो

शुभस्पती – जो कुछ भी शुभ तथा दिव्य है, उसकी रक्षा करने वाला, परमात्मा

पातम् – संरक्षण करता है

सोमम् – समस्त दिव्य गुण, ज्ञान तथा दिव्यता का प्रकाश

ऋतावृद्धा – निरन्तर वृद्धि करने वाले।

व्याख्या :-

संरक्षण की प्रार्थना में हमें किसका अनुसरण करना चाहिए?

महान विद्वान जो अपने गुणों और ज्ञान के संरक्षण की कामना करते हैं और अपने दुर्गुणों तथा रोगों से संरक्षण की प्रार्थना करते हैं, वे दोनों प्राणों को पुकारते हैं। इसी प्रकार आप हमारा भी सुन्दरता के साथ और पूर्ण संरक्षण करते हुए इसका सम्बद्धन करते हो।

जीवन में सार्थकता

भौतिक सम्पदा तथा आध्यात्मिक सम्पदा में क्या अन्तर है?

किसका संरक्षण होना चाहिए?

किससे संरक्षण होना चाहिए?

महान विद्वान अपने गुणों और ज्ञान के संरक्षण की प्रार्थना करते हैं, अपनी बुराईयों और रोगों से संरक्षण की प्रार्थना करते हैं। इन प्रार्थनाओं की तुलना भौतिकवादी लोगों की प्रार्थनाओं से करो।

भौतिक संसार में लोगों के पास अपार भौतिक सम्पदा है। वे बहुत कम और कंजूसी के साथ उसे दूसरों के कल्याण के लिए बांटते हैं। वे अपनी सम्पदा पर मालिकाना अधिकार व्यक्त करते हैं। अतः वे उस भौतिक सम्पदा के संरक्षण की प्रार्थना करते हैं, परन्तु वे भूल जाते हैं कि यह सब नाशवान है, अस्थाई है और परिवर्तनशील है। अतः ऐसी भौतिक सम्पदा सदा के लिए सुरक्षित नहीं की जा सकती।

दूसरी तरफ आध्यात्मिक मार्ग पर महान विद्वानों के पास उनकी गौरवशाली सम्पदा के रूप में दिव्य गुण, ज्ञान तथा दिव्यता का प्रकाश है। वे इसे दूसरों में बाँटना चाहते हैं। वे इस सम्पदा पर अपना मालिकाना अधिकार नहीं समझते हैं। वे इसका सम्बद्धन करना चाहते हैं, इसलिए वे बुराईयों तथा रोगों से संरक्षण की मांग करते हैं, जिससे वे ऊंचाईयों तक इसका विकास कर सकें तथा दूसरों के कल्याण के लिए इसे बाँट सकें। वे अपने शुभ गुणों, ज्ञान तथा दिव्यता के प्रकाश के संरक्षण की प्रार्थना करते हैं। केवल संरक्षण के लिए ही वे इसे बांटते हैं। इन सब संरक्षणों के लिए वे शुभस्पति से प्रार्थना करते हैं अर्थात जो कुछ भी शुभ तथा दिव्य है, उसी का संरक्षण करने वाला।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पञ्चवती वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

ऋग्वेद मन्त्र 1.47.6

सुदासे दस्ना वसु बिप्रता रथे पृक्षो वहतमश्विना ।
रयिं समुद्रादुत वा दिवस्पर्यस्मे धत्तं पुरुस्पृहम् ॥ 6 ॥

सुदासे – उत्तम और सक्रिय व्यक्ति में, जो दूसरों की सेवा में उत्तम है

दस्ना – बुराईयों के नाशक

वसु – निवास के लिए

बिप्रता – आवश्यक सम्पदा तथा साधन

रथे – शरीर रथ में

पृक्षः – परमात्मा के साथ सम्पर्क का कारण

वहतम् – उपलब्ध कराते हैं

अश्विना – जोड़ा (प्राणों का)

रयिम् – गौरवशाली सम्पदा

समुद्रात् – समुद्र में से (गहरे हृदय में से)

उत वा – और

दिवस्परि – अन्तरिक्ष में से (मन)

अस्मे – हमारे लिए

धत्तम् – धारण करो

पुरुस्पृहम् – सबके कल्याण के लिए ।

व्याख्या :-

गौरवशाली सम्पदा किसे प्राप्त होती है?

गौरवशाली सम्पदा का उद्देश्य क्या है?

प्राणों का जोड़ा सभी आवश्यक सम्पदाएं तथा इस शरीर रथ के आवास के लिए आवश्यक साधन उपलब्ध कराता है, जिससे यह परमात्मा से सम्पर्क का कारण बन सके। यह सुविधा उनको प्राप्त होती है, जो उत्तम तथा सक्रिय व्यक्ति हैं और दूसरों की सेवा में सर्वोत्तम हैं।

गौरवशाली सम्पदा गहरे समुद्रों तथा उच्चाकाशों से हमारे लिए (सक्रिय तथा त्यागशील व्यक्तियों के लिए) आती है। हमें इस सम्पदा को दूसरों के कल्याण के लिए धारण करना चाहिए।

जीवन में सार्थकता

गौरवशाली सम्पदा कहाँ से आती है?

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

एक बार यदि आप स्वयं को गौरवशाली सम्पदा प्राप्त करने के योग्य बना लें, स्वयं को सक्रिय, ऊर्जावान तथा उत्तम सेवक की तरह और बुराईयों के नाशक की तरह, तो यह सम्पदा आपको लोगों के गहरे हृदय से तथा उनके मन के उच्चाकाश से प्राप्त होगी। ऐसा व्यक्ति जो भी सम्पदा अर्जित करता है, वह पूरे सम्मान और आदर के साथ आती है। यह सम्पदा ऐसे व्यक्ति को दाता के मन के विस्तृत आकाश तथा गहरे हृदय से समर्पित होती है। देने वाला यह सोच कर ऐसे व्यक्ति को सम्पदा देता है कि देने वाले तथा अन्य लोगों के कल्याण के लिए इसका प्रयोग होगा। लोग अपनी सम्पदा पूजा में चढ़ावे की तरह एक ईमानदार और विद्वान् व्यक्ति को देना चाहते हैं। ऐसी सम्पदा दिव्य बन जाती है और इसका प्रयोग केवल सबके कल्याण के लिए होना चाहिए।

ऋग्वेद मन्त्र 1.47.7

यन्नासत्या परावति यद्वा स्थो अधि तुर्वशे ।

अतो रथेन सुवृता न आ गतं साकं सूर्यस्य रश्मिभिः ॥ ७ ॥

यत् – वह

नासत्या – असत्य नहीं (पूर्ण सत्य)

परावति – दूर

यत् वा – और/अथवा जो

स्थः – है

अधि – अत्यन्त

तुर्वशे – निकट

अतः – वहाँ से

रथेन – इस शरीर रथ के माध्यम से

सुवृता – सुन्दरता पूर्वक, अलंकृत

नः – हमें

आ गतम् – प्राप्त होवो

साकम् – के साथ

सूर्यस्य रश्मिभिः – सूर्य की किरणें।

व्याख्या :-

हमें किसी भी हालात में किसकी कामना करनी चाहिए?

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

वह जो नासत्या है अर्थात् असत्य नहीं है, जो पूर्ण सत्य है अर्थात् परमात्मा, जो अत्यन्त दूर और अत्यन्त निकट है, केवल वही सूर्य की प्रथम सुसज्जित और अलंकृत किरणों के साथ इस शरीर रथ में प्राप्त होना चाहिए।

जीवन में सार्थकता

हमें परमात्मा की अनुभूति क्यों करनी चाहिए?

हम परमात्मा की अनुभूति कैसे कर सकते हैं?

परमात्मा ही पूर्ण सत्य है, अतः प्रत्येक हालात में हमें केवल उसी को प्राप्त करना तथा उसी की अनुभूति करना चाहिए, चाहे वह हमारे मन के अत्यन्त निकट हो या अत्यन्त दूर। परमात्मा का सर्वोच्च लक्षण है कि केवल वही पूर्ण सत्य है। इसका अर्थ यह है कि इस सृष्टि में कुछ भी पूर्ण सत्य नहीं है। प्रत्येक वस्तु केवल नाम के लिए एक दृश्य बनती है। प्रत्येक वस्तु नाशवान है, परिवर्तनशील है और अस्थाई है। केवल परमात्मा ही स्थाई और सर्वमान्य है।

वह सूर्य की प्रथम किरणों के माध्यम से प्राप्त होता है। वह हमारे आसपास किसी भी समय प्राप्त होता है। प्रातःकालीन सूर्य की प्रथम किरणें प्राणायाम अभ्यासों के लिए उत्तम मानी जाती हैं और उन्हीं के माध्यम से परमात्मा हमारे मस्तिष्क में प्राप्त होकर स्थापित हो जाते हैं।

ऋग्वेद मन्त्र 1.47.8

अर्वा चा वां सप्तयोऽध्वरश्रियो वहन्तु सवनेदुप।
इषं पृं चन्ता सुकृते सुदानव आ बर्हिः सीदतं नरा ॥ 8 ॥

अर्वा चा – गति से भरपूर, सदैव सक्रिय

वाम् – तुम दोनों

सप्तयः – अश्वों की तरह इन्द्रियाँ

अध्वरश्रियः – सुन्दर तथा महिमाशाली त्याग

(वहन्तु – उप वहन्तु) – अत्यन्त निकट प्राप्त होवें

सवने इत – निश्चित रूप से ऐसे यज्ञ

(उप – वहन्तु से पूर्व लगाया गया)

इषम् – इच्छा करते हुए

पृ चन्ता – उत्तम सुख देने वाले

सुकृते – उत्तम कार्य

सुदानवे – उत्तम दानशील पुरुष के लिए

(आ – सीदतम से पूर्व लगाकर)

बर्हिः – आकाश में, त्याग कार्यों में

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

(सीदतम् – आ सीदतम) – संगति में होवो
नरा – यज्ञशील मानव।

व्याख्या :-

त्याग कार्यों अर्थात् यज्ञ के क्या परिणाम हैं?

जब हमारी इन्द्रियाँ अश्वों के समान कार्य करती हैं, पूरी गति के साथ, सदैव सक्रिय और सचेत, सुन्दर और महिमाशाली त्याग कार्य, तो ऐसे कार्य प्राणों के निकट प्राप्त होते हैं। ऐसे कार्य वास्तविक यज्ञ होते हैं।

त्याग कार्यों से भरपूर जीवन ही उत्तम सुविधाओं की कामना कर सकता है और आगे भी उत्तम कार्य कर सकता है। ऐसा जीवन ही उत्तम दानी होता है। ऐसे लोग सदैव आकाशीय शक्तियों अर्थात् त्याग की अन्य सभी शक्तियों के निकट जीते हैं।

जीवन में सार्थकता

त्याग की सभी शक्तियाँ एक दूसरे का समर्थन और सहयोग किस प्रकार करती हैं?

त्याग से भरपूर जीवन ही सदैव और सर्वत्र प्रशंसनीय होता है। परमात्मा की दया से ही हमारा शरीर, मन और आत्मा त्याग कार्यों में एक-दूसरे का समर्थन करते हैं। त्याग कार्यों की सुन्दरता और शान व्यक्ति के जीवन को भी शानदार बना देती है। ऐसा जीवन स्वयं ही एक महान यज्ञ की तरह दिखाई देता है।

सभी यज्ञों अर्थात् त्याग कार्यों के प्रभाव सीधा आकाश मण्डल में जाते हैं, जहाँ दिव्यताओं का वास है। अतः त्याग करने वाला व्यक्ति प्रतिफल स्वरूप परमात्मा की अनुभूति के निकट हो जाता है और साधनों के साथ या साधनों के बिना अपने मन में सन्तोष और सुख की अनुभूति करता है। परमात्मा सदैव त्याग कार्यों से प्रेम करते हैं। अतः त्याग करने वाले लोगों से भी प्रेम करते हैं। इसी प्रकार सभी आत्माएं जो त्याग कार्यों में लगी होती हैं, वे भी एक दूसरे को पसन्द करती हैं। इसका अभिप्राय यह है कि परमात्मा तथा त्याग की सभी शक्तियाँ समस्त त्याग कार्यों का समर्थन करती हैं।

ऋग्वेद मन्त्र 1.47.9

तेन नासत्या गतं रथेन सूर्यत्वचा।
येन शशवदूहथुर्दर्शशुषे वसु मध्वः सोमस्य पीतये ॥ ९ ॥

तेन – उस

नासत्या – जो असत्य नहीं है (पूर्ण सत्य, परमात्मा)

आगतम् – प्राप्त हो

रथेन – रथ के द्वारा (शरीर के द्वारा)

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

सूर्यत्वचा – सूर्य की किरणें
येन – जिससे
शश्वत् – सदैव, शाश्वत
ऊहथुः – हमें प्राप्त करवाते हैं
दाशुषे – त्याग करने वाले दानी के लिए
वसु – समस्त सम्पदा तथा आवास के साधन
मध्वः – मधुर
सोमस्य – शुभ गुणों, ज्ञान तथा दिव्यता के प्रकाश का
पीतये – पीओ, भोग करो।

व्याख्या :-

इस शरीर का क्या प्रयोग और उद्देश्य है?
सोम अर्थात् शुभ गुण, ज्ञान तथा दिव्यता का प्रकाश प्राप्त करने का क्या माध्यम है?
परमात्मा जो नासत्या है, अर्थात् असत्य नहीं, अपितु पूर्ण सत्य है, हमें इस शरीर रथ के माध्यम से अनुभूति में प्राप्त हो, जैसे सूर्य की चमकदार किरणें हमें प्राप्त होती हैं।
प्रातःकालीन सूर्य की इन्हीं चमकदार किरणों के माध्यम से परमात्मा एक त्यागशील दानी को समस्त सम्पत्तियाँ और आवास के साधन तथा मधुर दिव्य गुण, ज्ञान और परमात्मा का प्रकाश पान करने और प्रयोग करने के लिए शाश्वत रूप से उपलब्ध कराते हैं।

जीवन में सार्थकता

शाश्वत दानी कौन है?

एक शाश्वत दानी को क्या प्राप्त होता है?

जो व्यक्ति शाश्वत दानी है, प्रत्येक परिस्थिति में त्यागशील व्यक्ति है, वह न केवल परमात्मा की अनुभूति प्राप्त करता है, बल्कि समस्त दिव्यताओं के साथ उसे निवास के सुविधाजनक साधन तथा सभी सम्पदाएं भी प्राप्त होती हैं। वह शारीरिक स्वास्थ्य के साथ-साथ पूर्ण मानसिक सन्तुलन भी प्राप्त करता है।

क्रियात्मक रूप से, एक शाश्वत दानी का अर्थ है वह व्यक्ति जो अपने पास उपलब्ध समस्त वस्तुओं को दूसरों के कल्याण हेतु देने के लिए तत्पर रहता है। इसका अभिप्राय यह है कि उसकी अपनी कोई इच्छाएं नहीं हैं। ऐसा दानी त्याग करने के बाद अपने अंहंकार की सन्तुष्टि भी नहीं चाहता क्योंकि उसे परमात्मा की अनुभूति हो चुकी है और वह जानता है कि सब कुछ परमात्मा का दिया हुआ है। ऐसा व्यक्ति परमात्मा के नाम से ही दान करता है। यह तभी सम्भव है, जब वह सक्रिय और ऊर्जावान रहने के लिए प्रातःकालीन सूर्य की प्रथम चमकती हुई किरणों का उपभोग करे।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

ऋग्वेद मन्त्र 1.47.10

उकथेभिर्वागवसे पुरुवसू अर्केश्च नि हवयामहे ।
शश्वत्कण्वानां सदसि प्रिये हि कं सोमं पपथुरश्विना ॥ 10 ॥

उकथेभि: – वैदिक वाणियों के साथ
अर्वाक – हमारे जीवन में
अवसे – हमारे रक्षण के लिए
पुरुवसू – समूची सृष्टि में व्यापक अर्थात् परमात्मा
अर्कः – आपको समर्पित हमारे विचारों के साथ
च – और
नि ह्यामहे – पुकारते हैं, आमंत्रित करते हैं
शश्वत् – सदैव, शाश्वत
कण्वानाम् – महान विद्वानों के लिए
सदसि – समूह
प्रिये – प्रिय
हि – निश्चित रूप से
कम् – सुखों के दाता
सोमम् – शुभ गुणों, ज्ञान तथा दिव्यता के प्रकाश के लिए
पपथुः – पीओ, धारण करो
अश्विना – जोड़ा (प्राणों का, शरीर और मन का) ।

व्याख्या :-

संरक्षण के लिए परमात्मा का आह्वाहन किस प्रकार करें?
महान विद्वानों के समूह में क्या सबसे प्रिय होता है?
हम अपनी वैदिक वाणियों तथा विचारों को परमात्मा के प्रति समर्पित करके उसका आह्वाहन कर सकते हैं तथा उसे अपने जीवन में संरक्षण के लिए पुकार सकते हैं, जो सारी सृष्टि में व्यापक है।
महान विद्वानों की संगति में शाश्वत रूप से तथा निश्चित रूप से दिव्य गुण, ज्ञान तथा परमात्मा का प्रकाश सबसे प्रिय होता है। वे इन लक्षणों का पान करते हैं और उन्हें धारण करते हैं। इसी प्रकार प्राणों के जोड़े तथा शरीर और मन के जोड़े को भी इसी सिद्धान्त का अनुसरण करना चाहिए

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

जीवन में सार्थकता

प्रगति और संरक्षण का सर्वमान्य सिद्धान्त क्या है?

जीवन के किसी भी क्षेत्र या गतिविधियों में यदि कोई व्यक्ति प्रगति और संरक्षण चाहता है तो उसे अपने क्षेत्र के उच्चाधिकारियों के महान कार्यों की प्रशंसा तथा उनका अनुसरण प्रारम्भ कर देना चाहिए। केवल प्रशंसा ही नहीं, अपितु महान व्यक्तियों के कार्यों को सदैव धार्मिक रूप से धारण करना चाहिए और क्रियात्मक रूप से उनका अनुसरण करना चाहिए।

अपना लक्ष्य निर्धारित करो और उसी लक्ष्य का स्वरूप बन जाओ। यह सिद्धान्त जीवन के सभी क्षेत्रों में लागू होता है चाहे वह सांसारिक हो या आध्यात्मिक।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

आज्ञा

ऋग्वेद मण्डल-1 सूक्त 48

उषा किरणों पर सूक्त

ऋग्वेद मन्त्र 1.48.1

सह वामेन न उषो व्युच्छा दुहितर्दिवः ॥
सह द्युम्नेन बृहता विभावरि राया देवि दास्वती ॥ १ ॥

सह – के साथ

वामेन – चमकदार प्रकाश

नः – हमारे लिए

उषः – प्रातःकालीन सूर्य की प्रथम किरणें

व्युच्छ – भिन्न-भिन्न प्रेरणाएं, अन्धकार और अज्ञान को दूर करने वाली

दुहितः – पुत्री

दिवः – सूर्य की

सह – के साथ

द्युम्नेन – दिव्य प्रकाश

बृहता – प्रगति का कारण

विभावरि – भिन्न-भिन्न प्रकाश की धारक

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



राया – गौरवशाली सम्पदा के साथ

देवि – पुत्री

दास्वती – दानी (प्रकाश की)

व्याख्या :-

उषा किरणों के क्या लक्षण हैं?

सूर्य की पुत्री की तरह, उषा, प्रातःकालीन सूर्य की पहली किरणें, अपने साथ महिमावान प्रकाश तथा अन्धकार और अज्ञानता को दूर करने वाली अनेकों प्रेरणाएँ लेकर आती हैं।

भिन्न—भिन्न प्रकार के प्रकाश तथा प्रेरणाओं को धारण करने वाली उषा अपने दिव्य प्रकाश के साथ प्रगति का कारण बन जाती है। सर्य की यह महान पुत्री गौरवशाली सम्पदा की महान दाता बन जाती है।

जीवन में सार्थकता

प्रातःकालीन सर्योदय काल में उठने के क्या लाभ हैं?

वैज्ञानिक रूप से – सर्य की प्रथम किरणें अन्धकार दर करने के लिए सर्य का दिव्य प्रकाश लाती है।

चिकित्सा के रूप में – सूर्य की प्रथम किरणें शरीर और मन पर आरामदायक प्रभाव डालती हैं, हमारी चुच्चा के नीचे वसा से भरी कोशिकाओं को सिकोड़ देती हैं।

आध्यात्मिक रूप से – अपने शान्त स्वभाव के कारण ब्रह्मवेला हमारे अन्दर अपनी आत्मा पर ध्यान केन्द्रित करने में सहायक होती है।

जो व्यक्ति प्रातः सूर्योदय से पूर्व उठ जाता है वह अपनी दैनिक गतिविधियों को अच्छे तरीके से योजनाबद्ध करने के साथ—साथ अपने जीवन की वास्तविकता पर ध्यान केन्द्रित कर सकता है। अतः उषा वेला का आनन्द लेना शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक रूप से भी लाभकारी होता है।

ऋग्वेद मन्त्र 1.48.2

अश्वावतीर्गमती विश्वसुविदो भूरि च्यवन्त वस्तवे।
उदीरय प्रति मा सनुता उषश्चोद राधो मधोनास ॥ 2 ॥

अश्वावतीर्गमती विश्वसुविदो भूरि च्यवन्त वस्तवे ।
उदीरय प्रति मा सनुता उषश्चोद राधो मधोनास ॥ 2 ॥

अश्वावतीः – प्रशंसनीय कर्मन्दियाँ

गोमतीः – प्रशंसनीय ज्ञानेन्द्रियाँ

विश्वसविदः – सबको परी तरह जानने वाली

भरि – खब, अध्यधिक

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

च्यवन्त – प्राप्त हों
वस्तवे – उत्तम आवास के लिए
उदीरय – प्रेरणाएँ तथा व्यवहार
प्रति मा – मेरे लिए, मेरे प्रति, मेरे में
सुनृता: – उत्तम, कोमल तथा कल्याणकारी वाणियाँ
उषः – प्रातःकालीन सूर्य की प्रथम किरणें
चोद – मुझे प्रेरित करो
राधः – गौरवशाली सम्पदा
मघोनाम् – महिमावान् सम्पन्न पुरुषों के

व्याख्या :-

उषा से हम क्या लाभ उठा सकते हैं?
सूर्य की प्रथम किरणों अर्थात् उषा से यह प्रार्थना की गई है कि हमारे उत्तम आवासों के लिए भरपूर लाभ प्राप्त करवाये :–

- (क) अश्वावतीः – प्रशंसनीय कर्मन्दियाँ,
- (ख) गोमतीः – प्रशंसनीय ज्ञानेन्द्रियाँ
- (ग) उदीरय प्रति मासुनृता: – उत्तम, कोमल तथा कल्याणकारी वाणियाँ, प्रेरणाएँ तथा व्यवहार, मेरे लिए, मेरे प्रति, मेरे में,
- (घ) चोद राधः मघोनाम् – मुझे प्रेरित करो, महिमावान् सम्पन्न पुरुषों की गौरवशाली सम्पदा।

जीवन में सार्थकता

उषा को की गई हमारी प्रार्थनाएं कैसे फलवती होंगी?

यदि कोई व्यक्ति समस्त श्रेष्ठताओं के लिए उषा को प्रार्थना करने की इच्छा करता है, स्वाभाविक रूप से उसे उषा किरणों के आगमन से पूर्व उठना चाहिए। द्वितीय, प्रार्थनाएं अवसरों के अनुसार नहीं होती, इन्हें नियमित दिनर्चर्या की तरह होना चाहिए। जब आप उषाकाल में जल्दी उठना प्रारम्भ कर देते हो तो स्वाभाविक रूप से आपकी प्रार्थनाएं फलवती होना प्रारम्भ कर देंगी।

ऋग्वेद मन्त्र 1.48.3

उवासोषा उच्छाच्च नु देवी जीरा रथानाम् ।
ये अस्या आचरणेषु दधिरे समुद्रे न श्रवस्यवः ॥ ३ ॥

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

उवासोषा उच्छाच्च नु देवी जीरा रथानाम् ।
ये अस्या आचरणेषु दधिरे समुद्रे न श्रवस्यवः ॥ ३ ॥

उवास – जीवन

उषा: – ब्रह्मवेला में उठने वाला

उच्छा च – और अज्ञान तथा अन्धकार को नष्ट करती है

नु – अब भी

देवी – प्रकाशनवान् महिलाएँ

जीरा – प्रेरक

रथानाम् – समस्त शरीरों की (रथों की)

ये – जो

अस्या: – इसके

आचरणेषु – व्यवहार का अनुसरण करने के लिए

दधिरे – संकल्प को धारण करता है

समुद्रे – समुद्र की तरह व्यापक, समान रूप से परमात्मा में प्रतिष्ठित

न – नहीं

श्रवस्यवः – भौतिकवादी नहीं है, उनका ज्ञान और जीवन अन्य लोगों के द्वारा सुना जाता है

व्याख्या :-

जिस घर में एक महिला उषाकाल में जल्दी उठ जाती है उस घर का वातावरण कैसा होता है?

जब एक गृहणी ब्रह्मवेला में उठ जाती है तो वह प्रकाशवान् महिला बन जाती है जो परिवार में तथा समाज में अन्य लोगों को भी प्रेरित कर सकती है।

जो लोग ऐसी प्रकाशवान् महिलाओं के जीवन और व्यवहार का अनुसरण करते हैं और जल्दी उठने का संकल्प करते हैं, वे सभी समुद्र की तरह खुले मस्तिष्क वाले बन जाते हैं और उनके कार्य तथा ज्ञान अनेकों लोगों द्वारा सुनने के योग्य होते हैं।

जल्दी उठने वालों के ऐसे परिवार समान रूप से परमात्मा में स्थापित होते हैं। उनकी प्रवृत्ति भौतिकवादी नहीं होती।

जीवन में सार्थकता

सारे परिवार को उषा का अनुसरण करने योग्य कैसे बनायें?

एक घर में यदि एक प्रकाशवान् महिला प्रातः जल्दी उठ जाती है और उषा की तरह जीवन व्यतीत करती है तो समूचा परिवार श्रेष्ठ बन जाता है। परिवार में एक प्रकाशवान् महिला का महत्त्व माननीय होता है। यदि एक परिवार में एक भी उषा हो तो सभी सदस्य उषा बनने की ओर अग्रसर हो जाते हैं।

ऋग्वेद मन्त्र 1.48.4

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

उषो ये ते प्र यामेषु युंजते मनो दानाय सूरयः ।
अत्रह तत्कण्व एषां कण्वतमो नाम गृणाति नृणाम् ॥ 4 ॥

उषो ये ते प्र यामेषु युंजते मनो दानाय सूरयः ।
अत्राह तत्कण्व एषां कण्वतमो नाम गृणाति नृणाम् ॥ 4 ॥

उषः — प्रातःकालीन सूर्य की प्रथम किरणें
ये — जो
ते — आपके
प्र यामेषु — बलवान तथा प्रकाशित समय
युंजते — के साथ सम्बद्ध
मनः — उनके मन
दानाय — दान करने के लिए, त्याग करने के लिए
सूरयः — प्रकाशवान् विद्वान्
अत्र — यहाँ
अह — निश्चय से
तत् — वे
कण्वः — महान् विद्वान्
एषाम् — ये
कण्वतमः — अत्यन्त बुद्धिमान्
नाम — नाम
गृणाति — महिमा का गान
नृणाम् — महान् विद्वानों का

व्याख्या :-

ब्रह्मवेला अर्थात् उषाकाल में प्रातः जल्दी उठने के क्या परिणाम हैं?
आपके वे जल्दी उठने वाले लोग जो प्रथम किरणों वाले बलशाली और प्रकाशवान् समय के साथ जुड़ जाती हैं, वे प्रकाशवान् विद्वानों की तरह दान और त्याग के लिए अपना मन बना लेते हैं।
ऐसे महान् विद्वान् निश्चित रूप से यहीं पर अत्यन्त विद्वान् बनकर महान् विद्वानों के नाम की महिमा बढ़ाते हैं।

जीवन में सार्थकता

जल्दी उठकर मस्तिष्क का विकास कैसे करें?

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

सभी महान् सन्त जिन्हें कण्व कहा जाता है, वे उषाकाल या उससे भी पूर्व जल्दी उठने के आदत का अनुसरण करते रहे हैं। कोई भी व्यक्ति जो इस प्रक्रिया का अनुसरण करेगा वह निश्चित रूप से महान् बन जायेगा। ऐसी महानता सदैव बढ़ती रहती है। वह अपनी महानता के साथ—साथ एक दानी या त्यागशील व्यक्ति बनने के लिए प्रगति करता है। उसका नाम भी उन सब लोगों की तरह महिमावान् हो जाता है जो अपने मस्तिष्क का विकास करने के लिए जल्दी उठने की आदत का अनुसरण करते रहे हैं।

ऋग्वेद मन्त्र 1.48.5

आ घा योषेव सूनर्युषा याति प्रभुंजती ।
जरयन्ती वृजनं पद्मदीयत उत्पातयति पक्षिणः ॥ ५ ॥

आ घा योषेव सूनर्युषा याति प्रभुंजती ।
जरयन्ती वृजनं पद्मदीयत उत्पातयति पक्षिणः ॥ ५ ॥

(आ – याति से पूर्व लगाकर)

घा – निश्चय से

योष इव – एक अच्छी गृहणी की तरह हमें दुर्गुणों से पृथक करके शुभगुणों के साथ जोड़ने वाली सूनरी – उत्तम गृहणी

उषा: – प्रातःकालीन सूर्य की प्रथम किरणें

(याति – आ याति) – आती है

प्रभुंजती – उत्तम प्रकार से हमारा पालन करती है

जरयन्ती – कमजोर करने वाली

वृजनम् – बुराईयों के मार्ग को

पद्मत् – पैरों की तरह

ईयते – आवश्यक है

उत्पातयति – उड़ने वाला बनाती है

पक्षिणः – पक्षियों को

व्याख्या :-

उषा के क्या लक्षण हैं?

प्रातःकालीन सूर्य की प्रथम किरणें, उषा, निश्चित रूप से एक ऐसी श्रेष्ठ गृहणी की तरह आती हैं जिसके निम्न लक्षण होते हैं :–

(क) हमें दुर्गुणों से दूर करके शुभ गुणों के साथ जोड़ती है।

(ख) वह उत्तम गृहणी होती है।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

- (ग) वह पूरे परिवार की, पूरे ब्रह्माण्ड की, उत्तम प्रकार से देखभाल करती है।
(घ) वह दुर्गुणों के मार्ग को कमजोर कर देती है।
(ङ) वह हमारे परिवार में पैरों की तरह मानी जाती है, जिस पर पूरा परिवार खड़ा होता है। वह हमें प्रातःकाल जल्दी उठा देती है और रात्रि के विश्राम के बाद हमारे पैरों को ताकत देती है।
(च) वह पक्षियों को हवा में उड़ने लायक बनाती है।

जीवन में सार्थकता

एक गृहणी सारे परिवार के लिए उषा कैसे बन सकती हैं?

यह मन्त्र उषा किरणों का प्रतिदिन स्वागत करने की प्रेरणा देता है जिससे उपरोक्त सूचीबद्ध लाभ प्राप्त किये जा सकें।

इस मन्त्र का दूसरा पहलू यह है कि हम एक ऐसी गृहणी की प्रार्थना करें जिसमें उषा किरणों के समान योग्यताएं हों, जो इस मन्त्र में दिये गये लक्षणों को धारण कर सकें। — प्रातःकाल जल्दी उठें, ध्यान—साधना करें, समर्त परिजनों के कल्याण की प्रार्थना करें, स्वयं शुभ गुणों का पालन करें और अन्य सभी को शुभ गुणों के साथ—साथ परमात्मा की अनुभूति के श्रेष्ठ और आध्यात्मिक मार्ग के लिए प्रेरित करें।

ऋग्वेद मन्त्र 1.48.6

वि या सृजति समनं व्यर्थिनः पदं न वेत्योदती ।
वयो नकिष्टे पप्तिवांस आसते व्युष्टौ वाजिनीवति ॥ 6 ॥

वि या सृजति समनं व्यर्थिनः पदं न वेत्योदती ।
वयो नकिष्टे पप्तिवांस आसते व्युष्टौ वाजिनीवति ॥ 6 ॥

(वि – सृजति तथा अर्थिनः से पूर्व लगाकर)

या – आप (उषा किरणों)

(सृजति – वि सृजति) – भिन्न-भिन्न उत्तम कार्यों में प्रेरित करती है

समनम् – सदैव सक्रिय लोग

(अर्थिनः – वि अर्थिनः) – भिन्न-भिन्न प्रार्थनाओं के साथ

पदम् न वेति – पैरों को रुकने की अनुमति नहीं देती, पैरों को रुकने की इच्छा पैदा नहीं होती ओदती – जल की वाष्पकण उत्पन्न करती है

वयः – पक्षी

नकि: – नहीं

ते – आपके

पप्तिवांसः – उड़ने वाले

आसते – निष्क्रिय बैठते

व्युष्टौ – आपके आगमन के बाद

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

वाजिनीवति – महान् गतिविधियों, शक्तियों तथा पोषण वाली

व्याख्या :-

हमें सारे दिन के लिए कौन सक्रिय करता है?

उषा की किरणों तुम्हारे अन्दर पानी की बूँदें उत्पन्न करने की शक्ति है। तुम ऐसे लोगों को प्रेरित कर सकती हो जो भिन्न-भिन्न महान् कार्यों को करते हुए भिन्न-भिन्न प्रार्थनाओं के साथ सदा सक्रिय रहना चाहते हैं जिससे उनके पैर कभी न रुकें।

आपके आगमन के बाद तो आपके उड़ने वाले पक्षी भी निष्क्रिय नहीं बैठते। आप महान् गतिविधियों, शक्तियों और पोषण का विस्तार करती हो।

जीवन में सार्थकता

एक गृहणी किस प्रकार परिवार के सभी सदस्यों को सारा दिन सक्रिय रख सकती है?

उषा किरणों की शक्तियां महान् तथा दिव्य हैं। यह सभी मनुष्यों तथा पशुओं आदि को समान रूप से सक्रिय बना देती है।

इसी प्रकार महिला शक्ति को भी अपने-अपने परिवार के लिए और फिर समूचे समाज के लिए महान् और दिव्य शक्ति बनना चाहिए। उन्हें परिवार के सभी सदस्यों को उषाकाल से पहले उठने के लिए, प्रार्थनाएं करने के लिए, ध्यान-साधना करने के लिए तथा बिना समय गंवाये सारा दिन सक्रिय रहने के लिए प्रेरित करना चाहिए।

ऋग्वेद मन्त्र 1.48.7

एषायुक्तं परावतः सूर्यस्योदयनादधि ।
शतं रथेभिः सुभगोषा इयं वि यात्यभि मानुषान ॥ 7 ॥

एषायुक्तं परावतः सूर्यस्योदयनादधि ।
शतं रथेभिः सुभगोषा इयं वि यात्यभि मानुषान ॥ 7 ॥

एषा – ये (उषा किरणें)

युक्त – जोड़ती हैं, सम्बद्ध करती हैं

परावतः – दूर स्थानों से

सूर्यस्यः – सूर्य के

उदयनात् – उदय होते हुए

अधि – ऊपर, पहले

शतम् – सैकड़ों

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

रथेभि: — रथ (किरण)

सुभगा — उत्तम सौभाग्य

उषः — प्रातःकालीन सूर्य की प्रथम किरणेण

इयम् — ये (किरणेण)

वि याति — विशेष रूप से प्राप्त

अभि — की ओर, के लिए

मानुषान् — मननशील मनुष्य

व्याख्या :-

उषा किरणों का क्या उद्देश्य है?

उषा किरणेण सूर्योदय से पूर्व बहुत दूर से आकर हमारे साथ जुड़ जाती हैं। वे अपने रथ पर सवार होकर आती हैं जिसका नाम किरणेण हैं। वे हमें सैकड़ों वर्षों के लिए उत्तम सौभाग्य के साथ जोड़ने के लिए आती हैं। वे ऐसी विशेष कृपा केवल मननशील मनुष्यों को देती हैं।

जीवन में सार्थकता

उषा किरणेण किसके लिए विशेष लाभकारी हैं?

उषा किरणेण सूर्योदय से पूर्व आ जाती हैं। वे सूर्य की कृपा के अग्रिम दल के रूप में मानी जानी चाहिए। जो लोग ब्रह्मवेला में उषा किरणों को प्राप्त करते हैं, उन्हें उत्तम स्वास्थ्य के साथ 100 वर्ष की लम्बी आयु की विशेष कृपा प्राप्त होती है। क्योंकि उषा किरणेण सूर्य की शक्तियों का हमारे तक विस्तार सरलता पूर्वक करती है।

ऋग्वेद मन्त्र 1.48.8

विश्वमस्या नानाम चक्षसे जगज्ज्योतिष्कृणोति सूनरी ।

अप द्वेषो मघोनी दुहिता दिव उषा उच्छदप स्निधः ॥ 8 ॥

विश्वमस्या नानाम चक्षसे जगज्ज्योतिष्कृणोति सूनरी ।

अप द्वेषो मघोनी दुहिता दिव उषा उच्छदप स्निधः ॥ 8 ॥

विश्वम् — सम्पूर्ण विश्व

अस्याः — इसका

नानाम — परमात्मा के समक्ष नत्मस्तक

चक्षसे — इसके प्रकाश के लिए

जगत् — संसार के लिए

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

ज्योति: — प्रकाश

कृणोति — उत्पन्न करती है

सूनरी — उत्तम रूप से कार्य करना

(अप — उच्छत् से पूर्व लगाकर)

द्वेषः — शत्रुता वाली प्रवृत्तियाँ

मघोनी — प्रकाश की शक्ति

दुहिता — पुत्री

दिवः — सूर्य की

उषा: — प्रातःकालीन सूर्य की प्रथम किरणें

(उच्छत् — अप उच्छत) — दूर रखना

स्थिधः — हिंसक तथा शोषक प्रवृत्तियाँ

व्याख्या :-

सारा संसार उषाकाल के समय नतमस्तक क्यों होता है?

क्या उषा हमारे जीवन से शत्रु प्रवृत्तियों को दूर कर सकती हैं?

समूचा संसार उषा किरणों के प्रकाश, अन्य शक्तियों और दिव्यताओं को देखकर परमात्मा के सामने नतमस्तक होता है। वह समूचे विश्व के लिए प्रकाश पैदा करती है जिससे हर व्यक्ति अपने कार्य उत्तम प्रकार से करने के योग्य बन सके। प्रकाश की यह शक्ति अपनी दिव्यता में प्रत्येक व्यक्ति को भीतर से प्रकाशित करती है कि वह शत्रुतापूर्ण प्रवृत्तियों से स्वयं को दूर रखे। इस प्रकार सूर्य की पुत्री उषा हमें हिंसक और शोषक प्रवृत्तियों से दूर रखती है।

जीवन में सार्थकता

क्या उषा हमारे जीवन से अपराध निवारण में सहायता कर सकती है?

प्रत्येक व्यक्ति को उषा वेला के महान् और दिव्य महत्त्व की अनुभूति रखनी चाहिए। यदि लोग प्रातःकाल जल्दी उठकर इस दिव्य वेला को सम्मान देना प्रारम्भ कर दें तो सभी शत्रुतापूर्ण प्रवृत्तियाँ और अन्ततः उनके जीवन से सभी अपराध समाप्त हो सकते हैं।

ऋग्वेद मन्त्र 1.48.9

उष आ भाहि भानुना चन्द्रेण दुहितर्दिवः।

आवहन्ती भूर्यस्मभ्यं सौभगं व्युच्छन्ती दिविष्टिषु॥ ९॥

उष आ भाहि भानुना चन्द्रेण दुहितर्दिवः।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



आवहन्ती भूर्यस्म्यं सौभगं व्युच्छन्ती दिविष्टिषु ॥ 9 ॥

उषः — प्रातःकालीन सूर्य की प्रथम किरणें
 आ भाहि — समान रूप से फैला हुआ प्रकाश (आभा मण्डल की तरह)
 भानुना — सूर्य से
 चन्द्रेण — चन्द्रमा से
 दुहितः दिवः — सूर्य की पुत्री
 आवहन्ती — हमें प्राप्त कराती है
 भूरि — खूब, अत्यधिक
 अस्मभ्यम् — हमारे लिए
 सौभगम् — सौभाग्य
 व्युच्छन्ती — अन्धकार को दूर करती है
 दिविष्टिषु — प्रकाश की कामना करने वाले

व्याख्या :-

उषा किसके लिए बहुआयामी लाभ देती है?

सूर्य की पुत्री उषा सूर्य और चन्द्रमा के प्रकाश को समान रूप से एक आभा मण्डल की तरह फैला देती है। वह हमें अनेकों सौभाग्य प्राप्त करने योग्य बना देती है। वह उनके लिए अन्धकार दूर कर देती है जो जल्दी से प्रकाश की कामना करते हैं।

जीवन में सार्थकता

हम उषा की शक्तियों का अनुभव कैसे प्राप्त कर सकते हैं?

सूर्य की पुत्री होने के नाते उषा सूर्य के साथ—साथ चन्द्रमा के आभा मण्डल का भी समान रूप से सबके लिए तथा सब स्थानों पर विस्तार करती है। वह सूर्य और चन्द्रमा की शक्तियों की वाहक है। प्रातः जल्दी उठने की आदत ही आपको उषा वेला में उठने के बहुआयामी लाभों का अनुभव प्रदान कर सकती है, संकल्प और प्रार्थना करने लायक बना सकती है, स्वाध्याय के लिए ध्यान—साधना के योग्य बना सकती है, ग्रन्थों से प्रेरणाएं लेने के लायक बना सकती है और दिन की योजनाएं बनाने के लायक बना सकती है। जो लोग जीवन में दिव्य लाभों की कामना करते हैं उन्हें प्रातः जल्दी उठना चाहिए।

ऋग्वेद मन्त्र 1.48.10

विश्वस्य हि प्राणनं जीवनं त्वे वि यदुच्छसि सूनरि ।
 सा नो रथेन बृहता विभावरि श्रुधि चित्रमधे हवम् ॥ 10 ॥

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

विश्वस्य हि प्राणनं जीवनं त्वे वि यदुच्छसि सूनरि ।
सा नो रथेन बृहता विभावरि श्रुधि चित्रामधे हवम् ॥ 10 ॥

विश्वस्य – सबका

हि – निश्चित रूप से

प्राणनम् – श्वास का कारण

जीवनम् – जीवन

त्वे – आपमें

(वि – उच्छसि से पूर्व लगाकर)

यत् – जब

(उच्छसि – वि उच्छसि) – अपने प्रकाश से अन्धकार दूर करो

सूनरि – समरत कार्य उत्तम प्रकार से करती है

सा – वह

नः – हमारे

रथेन – रथ के द्वारा (शरीर के द्वारा)

बृहता – बड़ा (अनेक प्रकार से शक्तिशाली)

विभावरि – भिन्न-भिन्न प्रकार के प्रकाश और गतिविधियों वाला

श्रुधि – सुनो

चित्रामधे – भिन्न-भिन्न प्रकार की सम्पदाओं से अलंकृत

हवम् – हमारी प्रार्थनाएँ

व्याख्या :-

उषा को सबका श्वास और सबका जीवन क्यों कहा जाता है?

हमें उषा से प्रार्थना क्यों करनी चाहिए?

प्रथम किरणें सभी कार्यों को उत्तम प्रकार से करती हैं। वे निश्चित रूप से सबका श्वास और जीवन हैं जो हमें उठाकर भिन्न-भिन्न कार्यों में लगाती हैं जिससे हम आजीविका अर्जित कर सकें और चिन्तन कर सकें। वे अन्धकार दूर करने के लिए अपने प्रकाश के साथ आती हैं।

ये किरणें हमारे लिए बड़े रथों पर सवार होकर आती हैं। बड़े रथों से अभिप्राय है बहुआयामी शक्तियां। इन किरणों में अनेक प्रकार के प्रकाश और गतिविधियां होती हैं। ये गौरवशाली सम्पदा से सुसज्जित होती हैं। इसलिए हम इनसे प्रार्थना करते हैं कि हमारी प्रार्थनाएं सुनें।

जीवन में सार्थकता

उषा शक्तियां किस प्रकार अत्यन्त धनी होती हैं?

उषा की शक्तियां अत्यन्त धनी हैं। पूर्ण सूर्योदय से पूर्व प्रातःकाल जल्दी उठकर इसकी अनुभूति करने का एक स्पष्ट विज्ञान है। सारे दिन के नियमित समय प्रबन्धन के अतिरिक्त इसके अनेकों मानसिक और

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

आध्यात्मिक लाभ भी हैं। ठंडे तथा शान्त वातावरण के कारण, हमारी मानसिक शक्तियां संतुलित हो जाती हैं और हमारे जीवन की मूल शक्ति अर्थात् हमारी आत्मा और परमात्मा पर चिन्तन करने के लिए अधिक सक्षम होती हैं। इसके साथ ही हमारे जीवन की दिनचर्या के सभी विषयों और उनके प्रबन्धन पर भी अच्छा चिन्तन कर पाती हैं। उषाकाल हमें यह अनुभूति प्राप्त करवाता है कि प्रत्येक दिन कुछ घटनों की मृत्यु के बाद एक नये जीवन की तरह है।

ऋग्वेद मन्त्र 1.48.11

उषो वाजं हि वंस्व यश्चित्रे मानुषे जने।
तेना वह सुकृतो अध्वराँ उप ये त्वा गृणन्ति वद्यः ॥ 11 ॥

उषः – ब्रह्मवेला समय
वाजम् – ज्ञान, सम्पदा, शक्ति
हि – निश्चय से
वंस्व – उपलब्ध कराती है
यः – जो
चित्रः – दृश्यमान्
मानुषे जने – मननशील मनुष्य
तेन – उसके साथ
आवह – उपलब्ध कराती है
सुकृतः – उत्तम प्रकार से कार्य करने वाली
अध्वरान् – अहिंसक त्याग
(उप – गृणन्ति से पूर्व लगाकर)
ये – जो
त्वा – आपकी
(गृणन्ति – उप गृणन्ति) – पूजा
वद्यः – अपने कर्तव्यों का भार उठाने वाले

व्याख्या :-

ब्रह्मवेला अर्थात् उषाकाल में कौन सी शक्तियाँ प्राप्त होती हैं?
उषाकाल निश्चित रूप से शुभगुण, ज्ञान और सम्पदाएं प्राप्त करवाती है। जो केवल मननशील मनुष्यों में ही देखी जाती हैं। ऐसे मस्तिष्क, भौतिक साधनों और शक्तियों के साथ एक व्यक्ति को वह सब कुछ मिल जाता है जिससे वह उत्तम रूप से अहिंसक त्याग कार्यों को कर सके। यह सब शक्तियाँ केवल उन्हीं को प्राप्त होती हैं जो आपकी पूजा करते हैं और अपने कर्तव्यों का भार वहन करते हैं।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

जीवन में सार्थकता

एक मननशील मनुष्य कैसे बनें?

केवल प्रातः जल्दी उठने वाला व्यक्ति ही समय के महत्व को समझता है और अपने कर्तव्यों के भार को वहन करता है। वह अपने समय का प्रबन्ध उत्तम प्रकार से करने के योग्य होता है, केवल इसलिए कि वह जल्दी उठकर ब्रह्मवेला अर्थात् उषाकाल की शांति और ठंडक का प्रयोग कर पाता है। वह अपने जीवन के विषयों पर शांति से एवं एकान्त में चिन्तन करने का अवसर प्राप्त करता है।

ऐसे मननशील मनुष्य प्रातः जल्दी उठ जाते हैं और इसके विपरीत जल्दी उठने वाले मनुष्य अपने मस्तिष्क में मननशील बन जाते हैं और कर्तव्यबद्ध होते हैं।

ऋग्वेद मन्त्र 1.48.12

विश्वान्देवाँ आ वह सोमपीतये अन्तरिक्षादुषस्त्वम् ।
सास्मासु धा गोमदश्वावदुक्थ्य मुषो वाजं सुवीर्यम् ॥ 12 ॥

विश्वान् – सबके लिए

देवान् – दिव्यताएँ

आ वह – प्राप्त करवाओ

सोम पीतये – ज्ञान, सम्पदा, शुभ गुण और शक्तियों के संरक्षण के लिए

अन्तरिक्षात् – अन्तरिक्ष के माध्यम से

उषः – प्रातःकालीन सूर्य की प्रथम किरणें

त्वम् – आप

सा – वह

अस्मासु – हमारे में, हमारे लिए

धा – धारण करता है

गोमतः – ज्ञान की इन्द्रियाँ (गाय की तरह)

अश्वावत् – कर्म की इन्द्रियाँ (अश्व की तरह)

उक्थ्यम् – परमात्मा की प्रशंसा में वाणी

उषः – प्रातःकालीन सूर्य की प्रथम किरणें

वाजम् – ज्ञान, सम्पदा और शक्ति के लिए

सुवीर्यम् – उत्तम बल

व्याख्या :-

ब्रह्मवेला अर्थात् उषाकाल में कौन सी शक्तियाँ प्राप्त होती हैं?

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

इन शक्तियों का क्या प्रयोग होता है?

सूर्य की प्रथम किरणें जो आकाश से आती हैं, अर्थात् उषा किरणों के साथ हमें सभी दिव्य शक्तियाँ प्राप्त होती हैं जो सोम अर्थात् शुभगुण, ज्ञान और सम्पदा को उत्पन्न करने और संरक्षण करने में सक्षम होती हैं। हमारे सोम के लिए उषा हमें निम्न लक्षण प्रदान करती हैं :-

- (क) गोमतः – ज्ञान की इन्द्रियाँ (गाय की तरह),
- (ख) अश्वावत् – कर्म की इन्द्रियाँ (अश्व की तरह),
- (ग) उक्थ्यम् – परमात्मा की प्रशंसा में वाणी,
- (घ) सुवीर्यम् – उत्तम बल।

जीवन में सार्थकता

दिव्यताओं को कैसे उत्पन्न और संरक्षित करें?

ज्ञान और कर्म की शक्तिशाली इन्द्रियाँ एक ऐसे मन के साथ जो परमात्मा की प्रशंसा और पूजा के लिए समर्पित हों तथा जिसके पास महान् शारीरिक बल हो, यह सब सामान्य शक्तियाँ नहीं हैं। यह शक्तियाँ किसी के भी जीवन में दिव्यताएं पैदा कर सकती हैं। अन्ततः दिव्यता ही सोम अर्थात् शुभगुणों, ज्ञान तथा सम्पदा सहित अन्य शक्तियों की रक्षा करती है।

इस प्रकार सूर्योदय से पूर्व उषा किरणों के साथ जल्दी उठने की एक सरल सी आदत तथा समय को ध्यान और योग कार्यों में लगाना और जीवन पर गहराई से चिन्तन करना कि इन शक्तियों को प्राप्त करने का तथा दिव्यताओं के विकास करने का और उनकी रक्षा का एक मात्र मार्ग है।

ऋग्वेद मन्त्र 1.48.13

यस्या रुशन्तो अर्चयः प्रति भद्रा अदृक्षत ।
सा नो रयिं विश्ववारं सुपेशसमुषा ददातु सुगम्यम् ॥ 13 ॥

- यस्या: – जिसकी (उषा किरणों की)
- रुशन्तः: – अन्धकार और बुराईयों की नाशक
- अर्चयः: – प्रकाशवान् किरण
- (प्रति – अदृक्षत से पूर्व लगाकर)
- भद्रा – श्रेष्ठता और कल्याण देने वाली
- (अदृक्षत – प्रति अदृक्षत) – प्रतिदिन दिखाई देने वाली
- सा – वह
- नः – हमारे लिए
- रयिम् – गौरवशाली सम्पदा

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

विश्ववारम् – सबके द्वारा स्वीकार और धारण करने योग्य

सुपेशसम् – सुन्दर, अलंकृत करने वाली

उषा – प्रातःकालीन सूर्य की प्रथम किरणें

ददातु – देती हैं

सुगम्यम् – सरलता से प्राप्त होने योग्य, सुख देने वाली

व्याख्या :-

उषा किरणें हमारे लिए क्या लाती हैं?

जल्दी उठने वालों को मिलने वाली गौरवशाली सम्पदा के क्या लक्षण हैं?

उषा, जिसकी प्रकाशवान किरणें अन्धकार और बुराईयों की नाशक हैं, प्रतिदिन श्रेष्ठता और कल्याण की दाता के रूप में दिखाई देती हैं। वे उषा किरणें हमें निम्न लक्षणों वाली गौरवशाली सम्पदा प्रदान करती हैं
:-

(क) विश्ववारम् – सबके द्वारा स्वीकार और धारण करने योग्य,

(ख) सुपेशसम् – सुन्दर, अलंकृत करने वाली,

(ग) सुगम्यम् – सरलता से प्राप्त होने योग्य, सुख देने वाली।

जीवन में सार्थकता

उषा किरणों का आनन्द लेने के पीछे क्या सिद्धान्त है?

उषा किरणों का आनन्द लेने के पीछे बड़ा स्पष्ट सिद्धान्त है। यह प्रकाश और गतिविधियों को उपलब्ध कराने वाली हैं, इस प्रकार, ये अलंकृत और सुशोभित गौरवशाली सम्पदा उपलब्ध कराती हैं जिसका प्रयोग दूसरों के कल्याण के लिए किया जा सकता है।

जब ये आती हैं तो प्रकाश और गतिविधियाँ आती हैं और अन्धकार तथा निष्क्रिता चले जाते हैं।

वातावरण का अन्धकार केवल प्रतीकात्मक है, लेकिन यदि हम उषाकाल का उपयोग आध्यात्मिक रूप से करें तो मन का अन्धकार भी समाप्त हो जाता है तथा लम्बी और लगातार साधना से परमात्मा के साथ एकता की अनुभूति भी हो जाती है। प्रातः जल्दी उठने का परिणाम एक शुभ गुण सम्पन्न, पवित्र और दिव्य मार्ग के रूप में दिखाई देता है।

इस प्रकार उषा किरणों के पीछे का सिद्धान्त केवल शारीरिक स्वास्थ्य, मानसिक शांति तथा भौतिक लाभों तक ही सीमित नहीं है अपितु इससे निश्चित रूप से आध्यात्मिक प्रगति अर्थात् स्व-अनुभूति और परमात्मा की अनुभूति का मार्ग प्रशस्त होता है।

ऋग्वेद मन्त्र 1.48.14

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

ये चिद्धि त्वामृष्यः पूर्वं ऊतये जुहूरेऽवसे महि ।
सा नः स्तोमां अभि गृणीहि राधसोषः शुक्रेण शोचिषा ॥ 14 ॥

ये – वे जो

चित् – हैं

हि – निश्चय से

त्वाम् – आपके

ऋषयः पूर्व – प्राप्त करने वाले पूर्वकालिक सन्त, ऋषि और दृष्टा

ऊतये – दिव्यताओं को प्राप्त करने के लिए

जुहूरे – बुलाते हैं

अवसे – संरक्षण के लिए

महि – महान् दिव्य

सा – वह

नः – हमारे

स्तोमान् – प्रशंसा में वाणी

अभि – के सामने

गृणीहि – स्वीकार करो

राधसा – गौरवशाली सम्पदा के साथ

उषः – प्रातःकालीन सूर्य की प्रथम किरणें

शुक्रेण – पवित्र त्यागशील कार्यों के लिए

शोचिषा – प्रकाशित कार्य

व्याख्या :-

प्राचीन ऋषि—मुनि उषाकाल का प्रयोग क्यों करते रहे हैं?

वे प्राचीन ऋषि—मुनि और द्रष्टा सन्त निश्चित रूप से आपको अर्थात् प्रातःकालीन सूर्य की प्रथम किरणों, उषा को निम्न कार्यों के लिए बुलाते रहे हैं :—

(क) दिव्यताएं प्राप्त करने के लिए,

(ख) संरक्षण प्राप्त करने के लिए,

(ग) महान् शक्तियों के लिए।

इसी प्रकार, अपनी प्रशंसा में हमारी वाणियों को स्वीकार करो जिससे हमें (क) गौरवशाली सम्पदा तथा

(ख) पवित्र त्यागशील और प्रकाशवान् कार्य प्राप्त हो सके।

जीवन में सार्थकता

उषा की प्रशंसा कैसे करें?

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

प्रातः जल्दी उठकर, उषा किरणों का स्वागत करके, तथा उषा किरणों के रूप में एक आध्यात्मिक अवसर देने के लिए परमात्मा की प्रशंसा करके ही उषा की प्रशंसा हो सकती है।

प्रशंसा का अर्थ होता है कुछ शक्तियों का अनुसरण करना जिससे उनसे लाभ उठाया जा सके। उषा की प्रशंसा आपको भौतिक रूप से, शारीरिक रूप से, मानसिक रूप से तथा आध्यात्मिक रूप से सम्पन्न बना देती है। उषा किरणों की प्रशंसा का अर्थ है अपने जीवन तथा उसकी मूल शक्तियों पर ध्यान करना। आपको निश्चित रूप से उत्थान प्राप्त होगा। सभी प्राचीन ऋषि, मुनि तथा महान् लोग इसी आदत का अनुसरण करते रहे हैं।

ऋग्वेद मन्त्र 1.48.15

उषो यदद्य भानुना वि द्वारावृणवो दिवः ।
प्र नो यच्छतादवृकं पृथुच्छर्दिः प्र देवि गोमतीरिषः ॥ 15 ॥

उषः — प्रातःकालीन सूर्य की प्रथम किरणें

यत् — जब

अद्य — आज ही

भानुना — इसके प्रकाश के साथ

वि — विशेष रूप से

द्वाराै — दोनों द्वार

ऋणवः — प्राप्त होती है

दिवः — ज्ञान की — भौतिक तथा आध्यात्मिक

(प्र — यच्छतात् से पूर्व लगाकर)

नः — हमें

(यच्छतात् — प्र यच्छतात्) — पूरी तरह प्राप्त होते हैं

अवृकम् — पशुओं से भिन्न (हिंसा और लालच के साथ)

पृथु — बहुत बड़े

छर्दिः — आवास

प्र — पूरी तरह प्राप्त

देवि — दिव्य शक्ति

गोमतीः — अनेकों किरणों, लाभों से सम्बद्ध

इषः — कामना के अनुरूप

व्याख्या :-

ऐसे दो द्वार कौन से हैं जहाँ उषा प्राप्त होती है?

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

उषा हमें पशुओं से भिन्न कैसे बनाती है?

भिन्न—भिन्न किरणों का क्या अर्थ है?

जब उषा अपने प्रकाश के साथ आज ही प्रकट होती है तो उसका ज्ञान के दोनों द्वारों पर विशेष स्वागत होता है अर्थात् भौतिक और आध्यात्मिक ज्ञान के द्वारा। जब यह हमारे आवास पर पूरी तरह से प्राप्त हो जाती है तो यह हमें पशुओं से भिन्न बना देती है। यह हमें अहिंसक और लालचरहित बना देती है। यह देवी भिन्न—भिन्न किरणों के साथ जुड़कर आती है अर्थात् हमारी अलग—अलग इच्छाओं के अनुसार भिन्न—भिन्न लाभ प्रदान करने के लिए।

जीवन में सार्थकता

उषा किरणों के द्वारा हमारे अन्दर कौन सा विशेष चारित्रिक लक्षण विकसित किया जाता है?

उषाकाल का आनन्द लेना और उसका प्रयोग करना भौतिक तथा आध्यात्मिक दोनों मार्गों के लिए अच्छा है। अनेक प्रकार की उषा किरणों का अर्थ है हमारी कामनाओं के अनुसार अलग—अलग लाभ देने वाली। परन्तु उषा किरणों के द्वारा हमारे अन्दर एक सर्वोच्च चारित्रिक लक्षण विकसित कर दिया जाता है जो हमें पाश्विक प्रवृत्तियों से भिन्न बना देता है — कोई भी हिंसक व्यवहार नहीं, कोई भी लालच नहीं। यह लक्षण हमें एक पूर्ण श्रेष्ठ व्यक्तित्व बना देता है जो दूसरों के कल्याण के लिए समर्पित है।

ऋग्वेद मन्त्र 1.48.16

सं नो राया बृहता विश्वपेशसा मिमिक्षा समिळाभिरा ।

सं द्युम्नेन विश्वतुरोषो महि सं वाजैर्वाजिनीवति ॥ 16 ॥

(सम् —मिमिक्षा से पूर्व लगाकर)

नः — हमारे

राया — गौरवशाली सम्पदा के साथ

बृहता — प्रगति का कारण

विश्व पेशसा — सभी रूपों के साथ

(मिमिक्षा — सम् मिमिक्षा) — जुड़ने की कामना

समिळाभि आ — हमारे साथ शुभगुणों और लक्षणों के साथ जुड़ो

सम् द्युम्नेन — हमारे साथ ज्ञान के प्रकाश के साथ जुड़ो

विश्वतुरा — समस्त अवगुणों को नष्ट करने वाली

उषः — प्रातःकालीन सूर्य की प्रथम किरणें

महि — महान्, पूजा के योग्य

सम् — हमारे साथ जुड़ो

वाजैः — शक्तियाँ

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

वाजिनीवति – प्रशंसनीय रूप से कार्य करो

व्याख्या :-

हमें उषा से जुड़ने की कामना क्यों करनी चाहिए?

उषा! हम आपसे आपकी गौरवशाली सम्पदा के सभी रूपों के साथ जुड़ना चाहते हैं। आप अपने सभी शुभगुणों और ज्ञान उत्पन्न करने वाली शक्तियों के साथ हमसे जुड़ जाओ। सभी बुराईयों के नाशक प्रकाश और ज्ञान के साथ हमसे जुड़ो।

उषा! आप महान् हो और अपनी उन सभी शक्तियों के लिए पूजा के योग्य हो जो हमें प्रशंसनीय रूप से कार्य करने के योग्य बनाती हैं।

जीवन में सार्थकता

सिद्धान्त रूप में उषा की भिन्न-भिन्न शक्तियाँ और लाभ कौन-कौन सी हैं?

प्रातः जल्दी उठकर उषा की संगति में निम्न लाभ प्राप्त करने के पीछे एक पूरा विज्ञान और आध्यात्मिकता है।

- (क) सभी रूपों में गौरवशाली सम्पदा,
- (ख) शुभगुण और ज्ञान,
- (ग) बुराईयों को नाश करने की क्षमता,
- (घ) प्रशंसनीय रूप में कार्य करने की शक्ति।

एक प्रशंसनीय जीवन जीने के लिए प्रशंसनीय उषा के साथ जिओ।

जो लोग उषा अर्थात् ब्रह्मवेला की संगति का आनन्द लेते हैं, सामान्य लोग ऐसे लोगों की संगति से प्रेम करते हैं।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

उषा किरणों पर सूक्त

ऋग्वेद मण्डल-1 सूक्त 49

ऋग्वेद मन्त्र 1.49.1

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



उषो भद्रेभिरा गहि दिवश्चिंद्रोचनादधि ।
वहन्त्वरुणप्सव उप त्वा सोमिनो गृहम् ॥ १ ॥

उषः — प्रातःकालीन सूर्य की प्रथम किरणें
भद्रेभिः — कल्याण के लक्षणों सहित
आ गहि — प्राप्त होओ
दिवः — दिव्य प्रकाश
चित् — निश्चित रूप से
रोचनात् — प्रकाशवान्
अधि — खूब, अधिकतम
(वहन्तु — उप वहन्तु) — अत्यन्त निकट प्राप्त होओ
अरुणप्सवः — कामनाओं और इच्छाओं से असम्बद्ध इन्द्रियाँ
(उप — वहन्तु से पूर्व लगाया गया)
त्वा — आपको
सोमिनः — शुभगुणों और ज्ञान के रक्षक
गृहम् — घर में

व्याख्या :-

उषा हमारे लिए क्या लाती है?
उषा के उपहार हम कहाँ प्राप्त करते हैं?
उषा के उपहार कौन प्राप्त करता है?

प्रातःकालीन सूर्य की प्रथम किरणें, उषा, हमें अत्यधिक दिव्य प्रकाश के साथ कल्याण के लक्षणों सहित प्राप्त हों। ये आपके घर के निकट ही आपको प्राप्त होती हैं जहाँ आप शुभ गुणों और ज्ञान की रक्षा करते हो, जब आपकी इन्द्रियाँ कामनाओं और मांगों से पृथक होती हैं।

जीवन में सार्थकता

प्रकाशवान होने के दो कदम कौन से हैं?
जीवन में प्रगति के दो कदम कौन से हैं?

उषाकाल के दौरान हमें जो उर्जा प्राप्त होती है वह महान् प्रकाशवान होने तथा दूसरों का कल्याण करने के अत्यधिक दिव्य ज्ञान के आयाम खोल देती है। यह प्रकाशवान स्थिति आपके ब्रह्मरन्ध में प्राप्त होती है जो शुभगुणों की रक्षा करने वाली दिव्य शक्ति का स्थान है। यह प्रकाशवान् स्थिति केवल उन्हीं लोगों को प्राप्त होती है जो अपनी इन्द्रियों को पूर्ण नियन्त्रण में रखते हैं तथा कामनाओं और मांगों के पीछे नहीं भागते हैं।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

अतः योग्यता का यह चक्र इन्द्रियों पर नियंत्रण स्थापित करने से होता है, ब्रह्मरन्ध को शुभ गुणों की रक्षा करने वाले स्थान की तरह पवित्र रखना और उषाकाल में प्रकाश प्राप्त करना। प्रकाश प्राप्त करने की यह अवस्था तीसरी अवस्था है जबकि पहली अवस्था इन्द्रियों पर नियंत्रण करना और दूसरी अवस्था शुभगुणों और ज्ञान का संरक्षण करना है।

इस प्रकार, जीवन में दिव्य या भौतिक प्रगति केवल दो कदम दूर है – प्रथम, इन्द्रियों पर नियंत्रण करो अर्थात् जीवन में शान्त और ईमानदार व्यवहार, द्वितीय, अपने ज्ञान और योग्यताओं का संवर्द्धन और संरक्षण करो। तीसरे कदम के रूप में प्रतिदिन प्रातः ब्रह्मवेला में एक दिव्य उपहार के रूप में प्रगति आपकी प्रतीक्षा करती है। प्रगति आपका सम्मान करने के लिए आपके द्वारा पर निश्चित रूप से आयेगी।

ऋग्वेद मन्त्र 1.49.2

सुपेशसं सुखं रथं यमध्यस्था उषस्त्वम् ।
तेना सुश्रवसं जनं प्रावाद्य दुहितर्दिवः ॥ २ ॥

सुपेशसम् – सुन्दर स्वस्थ शरीर
सुखम् – सुविधाजनक, संतोषजनक
रथम् – शरीर रथ
यम् – जिसमें
अध्यस्था: – प्रतिष्ठित
उषः – प्रातःकालीन सूर्य की प्रथम किरणें
त्वम् – आप
तेन – यहाँ (ऐसे शरीरों में)
सुश्रवसम् – उत्तम श्रोता
जनम् – लोग
प्राव – उत्तम संरक्षण
अद्य – आज ही
दुहितः – पुत्री
दिवः – सूर्य की

व्याख्या :-

प्रातः जल्दी उठने वाला व्यक्ति जीवन में किस प्रकार का दिखता है?
दिव्य निर्देशों का उत्तम श्रोता कौन बनता है?

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

सूर्य की पुत्री उषा! जब आप एक शरीर रथ में स्थापित हो जाती हो तो वह शरीर स्वरथ और सुविधा सम्पन्न अर्थात् संतोषी हो जाता है। ऐसे व्यक्ति दिव्य निर्देशों के उत्तम श्रोता बनते हैं। अतः ऐसे सभी व्यक्तियों को आज ही अपना उत्तम संरक्षण उपलब्ध कराओ।

जीवन में सार्थकता

उषा किरणों के पास हमारे लिए क्या होता है?

उषा शब्द एक श्रेष्ठ गृहणी के लिए कैसे प्रयोग होता है?

(क) उत्तम औषधि :— जब एक व्यक्ति प्रातः जल्दी उठने वाला बन जाता है और उषा को अपने जीवन में स्थापित कर लेता है, वह स्वरथ व्यक्तित्व और पूर्ण संतोषी जीवन वाला बन जाता है। शारीरिक स्वास्थ्य और मानसिक संतुलन के लिए उषा एक उत्तम औषधि है।

(ख) दिव्य ज्ञान :— ऐसे उषा प्रेमी दिव्य निर्देशों के उत्तम श्रोता बनकर परमात्मा के दिव्य ज्ञान को प्राप्त करते हैं। परमात्मा के दिव्य ज्ञान अर्थात् वेद को प्राप्त करते हैं। ऐसा ज्ञान, जो न कहीं पढ़ा गया और न सुना गया, हमें हर प्रकार से संरक्षित करता है।

(ग) उर्जा :— उषा सूर्य की पुत्री है। इसलिए इसमें बहुत सारी उर्जाएं मूल रूप में विद्यमान होती हैं।

ऋग्वेद मन्त्र 1.49.3

वयश्चित्ते पतत्रिणो द्विपच्यतुष्पदर्जुनि ।
उषः प्रारन्तृतूर्नु दिवो अन्तेभ्यस्परि ॥ ३ ॥

वयः — पक्षी

चित् — भी

ते — आपके

पतत्रिणः — पंखों से ऊपर और नीचे उड़ने वाले

द्विपत् — दो पैरों वाले

चतुष्पत् — चार पैरों वाले

अर्जुनि — प्रकाश, गतिविधियों के निर्माता

उषः — प्रातःकालीन सूर्य की प्रथम किरणें

प्रारन् — गति के साथ इधर-उधर जाते हुए

ऋतुन् — भिन्न-भिन्न ऋतुएँ, अवस्थाएँ

अनु — अनुकरण

दिवः — सूर्य से

अन्तेभ्यः — भीतर अत्यन्त निकट

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

परि – सभी दिशाओं से, बहुतायत में

व्याख्या :-

उषा किरणों में दिव्यता क्या है?

उषा सभी जीवों को क्या स्मरण कराती है?

उषा, प्रातःकालीन सूर्य की प्रथम दिव्य किरणों! आप बहुत दूर से आ रही हो और सभी दिशाओं से अत्यधिक मात्रा में आकर हमारे अन्दर तक पहुंच जाती हो। आपका अनुसरण आपके उड़ने वाले पक्षी करते हैं जो अपने पंखों के साथ ऊपर और नीचे जाते हैं, दो पैरों वाले तथा चार पैरों वाले सभी जीव भी आपका अनुसरण करते हैं। आप समस्त जीवों को यह स्मरण कराते हो कि केवल आपके माध्यम से ही सर्वोच्च निर्माता अन्धकार को दूर करके सबको प्रकाश उपलब्ध कराते हैं और आप प्रकाश तथा गतिविधियों की दिव्य प्रेरक हो।

जीवन में सार्थकता

उषा किरणों की सर्वमान्यता क्या है?

उषा किरणों की दिव्यता बहुआयामी तथा सर्वमान्य है। इसकी दिव्यता सर्वमान्यता को सिद्ध करते हुए निम्न लक्षणों में दिखाई देती है :-

(क) यह हमारे पास सभी दिशाओं से आ रही है,

(ख) यह बहुतायत में आती है। इसकी कोई सीमा नहीं है,

(ग) यह हम सबके अन्दर तक पहुंचती है,

(घ) प्रातःकाल वेला में एक बार जब हम स्वागत के साथ इसकी मूल उर्जा को प्राप्त कर लेते हैं तो हम इसका प्रयोग और अनुभूति हर समय सभी उर्जाओं के रूप में प्राप्त कर सकते हैं। यही उर्जा पुनः हमें अगले दिन भी प्राप्त होती है। इस प्रकार यह उर्जा सर्वदा उपलब्ध है। यह एक आध्यात्मिक औषधि तथा नशा भी है।

(ङ) यह सभी जीवों को बिना किसी भेदभाव के समान रूप से प्राप्त होती है, उनका शरीर किसी भी प्रकार हो और उनका आवास किसी भी स्थान पर हो।

लेकिन ऐसे लोग दुर्भाग्यशाली हैं जो उषा किरणों की दिव्य उर्जा प्राप्त करने के लिए उसका स्वागत नहीं करते। इसके कहते हैं सौभाग्य को इन्कार करने के लिए अपने द्वार बन्द कर लेना।

ऋग्वेद मन्त्र 1.49.4

व्युच्छन्ति हि रश्मिर्विश्वमाभासि रोचनम् ।
तां त्वामुषर्वसूयवो गीर्भः कण्वा अहूषत ॥ 4 ॥

व्युच्छन्ति – अन्धकार दूर करने वाली
हि – निश्चय से

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

रश्मिभिः — प्रकाश की किरणों के द्वारा

विश्वम् — समूचे विश्व की

आभासि — प्रकाशित करती हैं, अनुभूति देती हैं

रोचनम् — रुचि के साथ

ताम् — उस

त्वाम् — आपको

उषः — प्रातःकालीन सूर्य की प्रथम किरणेण

वस्त्रयवः — पदार्थों को जोड़ने तथा /अथवा पृथक करने वाले

गीर्भिः — गहरे ज्ञान की वाणियों के साथ अर्थात् वेद

कण्वाः — महान् विद्वान्

अहूषत — पुकारते हैं और प्रशंसा करते हैं

व्याख्या :-

महान् विद्वान् उषा से कैसे वार्ता करते हैं?

उषा निश्चित रूप से अपनी प्रकाश किरणों के माध्यम से अन्धकार को दूर करके सारे संसार को प्रकाशित करती है और रुचि पूर्वक प्रकाश की अनुभूति प्राप्त करवाती है। उस आपको सभी महान् विद्वान् जो इस सृष्टि के तत्त्वों और जीवों से जुड़े हुए या पृथक रहकर पुकारते हैं और अपने गहरे ज्ञान की वाणियों के साथ आपकी प्रशंसा करते हैं।

जीवन में सार्थकता

हमारे जीवन में उषा का क्या महत्व है?

कौन लोग उषा के प्रति कृतज्ञ हैं?

उषा की किरणें न केवल वातावरण का भौतिक अन्धकार मिटाती हैं, बल्कि मस्तिष्क का आन्तरिक अन्धकार भी मिटाती हैं। इस प्रकार प्रत्येक व्यक्ति, भौतिकवादी तथा आध्यात्मिक, उषा किरणों के महत्व की अनुभूति करता है। प्रत्येक व्यक्ति सूर्योदय के समय उषा के अनेकों लाभों को प्राप्त करता है। परन्तु विरले ही लोग उषा किरणों का स्वागत उस समय करते हैं जब वह उनके द्वार पर आती है। क्या यह कृतज्ञता नहीं है?

प्रत्येक व्यक्ति यह अनुभव करता है कि जीवन का महत्व दिन के प्रकाश के साथ ही है और दिन सूर्य के कारण है। उषा सूर्य की उर्जा को लाने वाली प्रथम शक्ति है जो विनम्रता के साथ और शीतलता के साथ प्रातःवेला में हमारे पास आती है। अतः प्रत्येक व्यक्ति को उर्जा लाने वाली इस दिव्यता का स्वागत करना चाहिए।

परन्तु केवल महान् विद्वान् या वे लोग जो महान् विद्वान् बनने के अभिलाषी हैं, उषा को उसके आगमन के समय पुकारते हैं और उसकी प्रशंसा करते हैं। उषा में एक महान् आध्यात्मिकता छिपी है; उषा में एक महान् विज्ञान छिपा है; एक महान् गृहणी की तुलना उषा से की जाती है क्योंकि वह अपने घर को समाज की एक महान् इकाई बना सकती है।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

ऋग्वेद मण्डल-1 सूक्त 50

ऋग्वेद मन्त्र 1.50.1

उदु त्यंजातवेदसं देवं वहन्ति केतवः ।
दृशे विश्वाय सूर्यम् ॥ 1 ॥

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

उद् – आकाश के ऊपर

उ – निश्चित रूप से

त्यम् – उस (सूर्य को)

जातवेदसम् – समस्त ज्ञान और वस्तुओं को देने वाला

देवम् – जीवन देने वाला प्रकाशवान्

वहन्ति – धारण करता है

केतवः – प्रकाश देने वाली (किरणें)

दृशे – देखने योग्य बनाता है

विश्वाय – समस्त (प्रत्येक व्यक्ति, सब कुछ देखने के लिए)

सूर्यम् – सूर्य।

व्याख्या :-

हम सबके लिए सूर्य क्या करता है?

सूर्य निश्चित रूप से प्रकाश देने वाली अपनी किरणों को आकाश के ऊपर धारण करता है और हमें समस्त ज्ञान तथा पदार्थों का देने वाला बन जाता है, साथ ही जीवन देने वाला प्रकाशवान है। जिससे सभी लोग सभी वस्तुओं को देख सकें।

जीवन में सार्थकता :-

सूर्य किस प्रकार परमात्मा का प्रतिनिधि है?

इसमें कोई सन्देह नहीं है कि परमात्मा एक अदृश्य शक्ति है, परन्तु उसकी ऊर्जा शक्तियों की अनुभूति सब जगह प्राप्त की जा सकती हैं। परमात्मा की अनुभूति सूर्य के रूप में भी हो सकती है जो हर प्रकार की ऊर्जाओं को उत्पन्न करता है और सभी जीवों के घर तक पहुँचाता है। अतः हमें सूर्य की पूजा भी परमात्मा के सच्चे प्रतिनिधि के रूप में करनी चाहिए।

नोट :- यह मन्त्र यजुर्वेद 7.41 तथा यजुर्वेद 33.31 में भी समान है।

ऋग्वेद मन्त्र 1.50.2

अप त्ये तायगो यथा नक्षत्रा यन्त्यत्पुभिः।
सूराय विश्वचक्षसे ॥ २ ॥

अप – यन्ति से पूर्व लगाकर

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

त्ये – रात्रि में चमकने वाले

तायवः – रात्रि में दूषित बुद्धि वाले लोग

यथा – जैसे की

नक्षत्रा – नक्षत्र

(यन्ति – अप यन्ति) – दूर चले जाते हैं

अक्तुभिः – रात्रि में अपनी चमक के साथ

सूराय – सूर्य के लिए (आगमन)

विश्व चक्षसे – समूचे विश्व को देखने लायक बनाने के लिए।

व्याख्या :-

सूर्य के आगमन पर रात्रि की चमक कहाँ चली जाती है?

जिस प्रकार दुष्प्रवृत्ति वाले चोर आदि रात्रि के बाद कहीं चले जाते हैं उसी प्रकार, सूर्य के आगमन के बाद ऐसा लगता है कि सभी नक्षत्र भी अपनी चमक के साथ कहीं दूर चले जाते हैं जिससे हम सबके द्वारा सृष्टि को देखने का स्रोत सूर्य बन सकें।

जीवन में सार्थकता :-

अपने आध्यात्मिक जीवन तथा भौतिक जीवन में प्रगति कैसे सुनिश्चित की जाये?

जब हमारे जीवन से सभी इच्छाएँ और अहंकार हमसे दूर जाना प्रारम्भ कर देते हैं तो इसका अर्थ यह है कि प्रकाश के आने की संभावना है।

यहाँ तक कि भौतिकवादी जीवन में भी यदि कोई व्यक्ति प्रगति करना चाहे और उसकी गति बनाकर रखना चाहे तो उसे यह निगरानी रखनी चाहिए कि उसके जीवन में कोई भी बुराई न रहे। बुराईयाँ रात्रि की चमक की तरह हैं, जबकि प्रगति सूर्य के उदय की तरह है। हमारी इच्छाएँ और अहंकार रात्रि की चमक हैं, जबकि आध्यात्मिक प्रकाश हमारे जीवन का सूर्योदय है।

ऋग्वेद मन्त्र 1.50.3

अदृश्मस्य केतवो वि रश्मयो जन्म अनु।

प्राजन्तो अग्नयो यथा ॥ ३ ॥

अदृश्म – दिखाई देने वाला

अस्य – इसके (सूर्य के)

केतवः— प्रकाश देने वाला

वि – विशेष रूप से

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

रश्मयः— किरणे
जनान् — लोग
अनु — लक्ष्य करके
भ्राजन्तः — चमकते हुए
अग्नयः — अग्नियाँ
यथा — जैसे की।

व्याख्या :-

सूर्य का प्रकाश किसके लाभ के लिए दिखाई देता है?
जिस प्रकार चमकती हुई अग्नि दूर से ही दिखाई देती है, उसी प्रकार, सूर्य का प्रकाश देने वाली किरणें दिखाई देती हैं और उनका लक्ष्य सभी लोग होते हैं।

जीवन में सार्थकता :-

सूर्य के प्रकाश का क्या आध्यात्मिक उद्देश्य है?
सूर्य की किरणों का स्पष्ट लक्ष्य लोगों को प्रकाश देना है। इस प्रकाश की सीमा केवल भौतिक प्रकाश तक नहीं है, बल्कि इस प्रकाश का मूल अर्थ आन्तरिक प्रकाश में निहित है, अर्थात् अन्दर से प्रकाशवान् होना या वह ज्ञान जो अन्दर के अन्धकार और अज्ञानता को दूर कर देता है। सबसे बड़ा अज्ञान तो इस सृष्टि को ही सब कुछ समझने में है जिसके कारण सृष्टि निर्माता से अपने अन्दर सम्पर्क नहीं हो पाता, जबकि वह सर्वविद्यमान है।

ऋग्वेद मन्त्र 1.50.4

तरणिर्विश्वदर्शतो ज्योतिष्कृदसि सूर्य ।
विश्वमा भासि रोचनम् ॥ 4 ॥

तरणि: — सभी बाधाओं का नाश करता है
विश्वदर्शतः — विश्व को देखने के लिए, विश्व का पालन पोषण करने के लिए
ज्योतिष्कृत् — प्रकाश को उत्पन्न करने वाला, प्रकाश के द्वारा उत्पन्न
असि — है
सूर्य — सूर्य
विश्वम् — समूचे विश्व को
आभासि — अनुभूति

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



रोचनम् – रुचि के साथ।

व्याख्या :-

सूर्य की क्या शक्तियाँ हैं?

सूर्य प्रकाश का निर्माता है और स्वयं भी प्रकाश के द्वारा निर्मित है। इसकी शक्ति इसकी क्षमताओं में है – (क) अपने मार्ग की सभी बाधाओं का नाश करता है जिससे समूचे विश्व को इस लायक बना सके कि वे सृष्टि को देख सकें, (ख) सारी सृष्टि का पालन–पोषण हो सके। यह सबको अपनी शक्तियों की अनुभूति उनकी अपनी–अपनी रुचि के अनुसार देता है।

जीवन में सार्थकता :-

हमें सूर्य की पूजा क्यों करनी चाहिए?

सूर्य की अनुभूति से हमें अपनी अनुभूति तथा परमात्मा की अनुभूति में क्या सहायता मिलती है?

यदि हम सूर्य की शक्तियों पर और अपने जीवन की मूल आवश्यकताओं पर ध्यान एकाग्र करें तो हर व्यक्ति सरलता से इस बात की अनुभूति प्राप्त कर सकता है कि हममें से प्रत्येक व्यक्ति के अपने–अपने जीवन में जो भी रुचियाँ या लक्ष्य हैं, वे सब हमारी जीवनी शक्ति अर्थात् हमारे जीवन की मूल ऊर्जा पर निर्भर हैं जिसमें हमारी छोटी से छोटी कोशिकाओं से लेकर बड़े से बड़े सामान की ऊर्जा शामिल है। प्रत्येक तत्त्व सूर्य की ऊर्जा से ही ऊर्जावान होता है। अतः सूर्य हमारा पोषण करता है। सूर्य स्वयं भी परमात्मा के प्रकाश और ऊर्जा से निर्मित है और सबके लिए प्रतिक्षण प्रकाश और ऊर्जा का निर्माण करता है।

प्रकाश का अर्थ है सृष्टि को देखने की शक्ति।

प्रकाश का अर्थ है अज्ञानता को समाप्त करने का ज्ञान।

प्रकाश ही हमें परमात्मा की अनुभूति के मार्ग पर चलने के योग्य बनाता है।

एक बार यदि हम प्राकृतिक विज्ञान के इस मूल सत्य को समझ लें और स्वीकार कर लें तो निश्चित रूप से हम सूर्य की पूजा प्रारम्भ कर देंगे और उषाकाल में सूर्योदय से पूर्व ही उसके स्वागत के लिए तत्पर रहेंगे।

एक बार यदि हमें यह अनुभूति हो जाये कि हम भी उसी सर्वोच्च प्रकाश अर्थात् परमात्मा के द्वारा निर्मित हैं तो हमारे अन्दर से भी स्वतः ही हमारी आत्मा का प्रकाश उत्पन्न होकर अन्य लोगों को भी प्रकाशित करना प्रारम्भ कर देंगे।

ऋग्वेद मन्त्र 1.50.5

प्रत्यङ्‌देवानां विशः प्रत्यङ्‌दुःदेषि मानुषान्।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



प्रत्यङ्. विश्वं स्वदृशे ॥ ५ ॥

प्रत्यङ्. — गति करता हुआ
देवानाम् — दिव्य आत्माओं की ओर
विशः — प्रजाओं की
प्रत्यङ्. — गति करता हुआ
उदेषि — उदित होता है
मानुषान् — मनुष्य
प्रत्यङ्. — गति करता हुआ
विश्वम् — सबकी तरफ
स्वः दृशे — स्व अनुभूति के लिए।

व्याख्या :-

सूर्य के लाभार्थी कौन हैं?

सूर्य उदय होता है और महान् दिव्य लोगों अर्थात् ऋषियों और सन्तों की सन्तानों और अनुयायिओं की ओर अग्रसर होने लगता है। सूर्य सामान्य मानवों की तरफ भी बढ़ता है जिससे उनका पालन—पोषण, प्रगति और उत्थान हो सके। सूर्य सबकी तरफ अग्रसर होता है जिससे सबको सर्वोच्च आत्मा की अनुभूति का मार्ग दिखा सके।

जीवन में सार्थकता :-

हमारे ऊपर सूर्य का क्या प्रभाव पड़ता है?

सूर्य भौतिक प्रगति के लिए मानव जाति के समक्ष उपस्थित होता है और उन्हें वास्तव में प्रगतिशील बनाने का प्रयास करता है।

सूर्य दिव्यता के दर्शनार्थियों के समक्ष भी उपस्थित होता है जिससे उन्हें और अधिक दिव्य बनाया जा सके।

सूर्य सर्वोच्च ऊर्जा के दाता अर्थात् परमात्मा का वास्तविक प्रतिनिधि है जो अनुभूति अर्थात् ब्रह्म दर्शन का साधन है। सूर्य दर्शन का अर्थ है भगवान का दर्शन। उदय होते हुए सूर्य के प्रतिदिन दर्शन करने से हमें आध्यात्मिक पथ पर आगे बढ़ने की प्रेरणा प्राप्त होती है।

हमें भी सूर्य की तरह कार्य करना चाहिए — (क) यज्ञ रूपी मानवीय जीवन की तरफ बढ़ना, (ख) दिव्यता की ओर बढ़ना, (ग) स्व—अनुभूति की ओर बढ़ना।

ऋग्वेद मन्त्र 1.50.6

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

येना पावक चक्षसा भुरण्यन्तं जनाँ अनु ।
त्वं वरुण पश्यसि ॥ ६ ॥

येन – जिस

पावक – पवित्र करने वाला

चक्षसा – ज्ञान का प्रकाश

भुरण्यन्तम् – धारण करता है और पालन करता है

जनान् – लोग

अनु – पश्यसि से पूर्व लगाकर

त्वम् – आपको

वरुण – सूर्य, सभी रोगों का नाशक

(पश्यसि – अनु पश्यसि) अच्छे प्रकार से और गहराई से देखता है (हमारे जीवन में स्वीकार करने तथा अनुसरण करने के लिए) ।

व्याख्या :-

प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में सूर्य का क्या महत्त्व है?

जो ज्ञान का शुद्ध प्रकाश है तथा भौतिक प्रकाश भी है, लोगों को धारण करते हुए उनका पालन करता है, उस आपको (सूर्य को) हम अच्छी प्रकार से और गहराई से देखें, आपको स्वीकार करें और जीवन में आपका अनुसरण करें। वरुण अर्थात् सूर्य एक महान् और दिव्य ऊर्जा है जो सभी रोगों और बुराईयों का नाशक है।

जीवन में सार्थकता :-

हम सूर्य को परमात्मा का सच्चा प्रतिनिधि क्यों समझें?

अपने जीवन में सूर्य के महत्त्व की अनुभूति विकसित करने का प्रयास करें। सूर्य उन लोगों के लिए दिव्य ज्ञान का स्रोत है जो प्रतिदिन सूर्य का स्वागत करने के लिए उसके उदय से पूर्व उठते हैं। प्रातः जल्दी उठने वालों के तौर–तरीके और क्रियाएं भिन्न–भिन्न हो सकती हैं, परन्तु उनका उद्देश्य एक ही होता है।

भौतिक संसार में भी प्रत्येक व्यक्ति को अपने समय के उत्तम प्रबन्धन की आवश्यकता होती है, जो प्रातः जल्दी उठने वाले व्यक्ति के लिए सरल हो जाता है।

प्रत्येक व्यक्ति के लिए सूर्य शुद्धता और प्रगति दोनों का स्रोत है।

समूची सृष्टि का मूलाधार होने के कारण सूर्य प्रत्येक जीव और प्रत्येक वस्तु को धारण करते हुए पालन करता है।

अतः हमें सूर्य को भगवान् के रूप में या भगवान् के प्रतिनिधि के रूप में देखना चाहिए।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

सूर्य का अनुसरण करो, सबके लिए ऊर्जा दाता बनो। ऊर्जा के अनेकों आयाम हैं।

ऋग्वेद मन्त्र 1.50.7

वि द्यामेषि रजस्पृथ्वहा मिमानो अक्तुभिः ।
पश्यन् जन्मानि सूर्य ॥ 7 ॥

वि – विशेष रूप से, अनेकों प्रकार से
द्याम् – विस्तृत द्युलोक में
एषि – प्राप्त होता है
रजः पृथु – द्युलोक में विस्तृत
आहा – दिनों को
मिमानः – निर्मित करता है
अक्तुभिः – रात्रियाँ
पश्यन् – देखता है
जन्मानि – सभी जन्म (सभी जीवों के)
सूर्य – सूर्य।

व्याख्या :-

सूर्य की कार्य प्रणाली के क्या लक्षण हैं?

- (क) सूर्य अनेक प्रकार से व्यापक स्थान पर प्राप्त होता है।
- (ख) यह सारे अन्तरिक्ष में फैलकर दिन और रात्रि का निर्माण करता है।
- (ग) यह सारी सृष्टि में सभी जीवों के सभी जन्मों को देखता है।

जीवन में सार्थकता :-

सूर्य हमारे सभी कर्मों को कैसे जानता है?

स्वाभाविक रूप से सूर्य हमारी भौतिक ऊर्जाओं तथा आध्यात्मिक उपलब्धियों, अनुभूति और सिद्धियों आदि का स्रोत है। अनेकों रूपों और आयामों में यह सभी जीवों के द्वारा प्राप्त होता है। इसकी शक्तियाँ असीमित हैं। दिन और रात्रि के निर्माण के साथ-साथ सभी जीवों के जीवन भी सूर्य के कारण ही नियमित चलते हैं। दिन और रात्रि का यह विभाजन हमारे जीवन में एक अनुशासन पैदा कर देता है। सूर्य हमारे सभी पूर्व और वर्तमान कर्मों को जानता है। इसीलिए सूर्य हमारे कर्मों का साक्षी होने के नाते परमात्मा का सबसे अधिक प्रभावशाली प्रतिनिधि है। हम जीवन में जो कुछ भी कर पाते हैं वह केवल सूर्य से प्राप्त ऊर्जा के बल पर ही सम्भव होता है। ऊर्जा का देने वाला जानता

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



है की उसकी ऊर्जा का कहाँ प्रयोग किया गया है। यदि हम उसकी ऊर्जा का सदुपयोग परमात्मा के साथ सम्पर्क बनाने के लिए करते हैं तो हमारे प्रयास सूर्य के माध्यम से निश्चित रूप से परमात्मा तक पहुँचते हैं। इसी प्रकार किसी के मन में कोई बुरा विचार भी सूर्य के द्वारा परमात्मा तक पहुँचेगा, क्योंकि उसकी ऊर्जा का बुरे कार्यों के लिए दुरुपयोग हो रहा है।

ऋग्वेद मन्त्र 1.50.8

सप्त त्वा हरितो रथे वहन्ति देव सूर्य ।
शोचिष्केशं विचक्षण ॥ ८ ॥

सप्त – सात (रंग)

त्वा – आपको

हरितः – हरण करने वाला बल

रथे – रथ

वहन्ति – प्राप्त करते हैं

देव – दिव्य

सूर्य – सूर्य

शोचिष्केशम् – पवित्र केशों की तरह किरणें, पवित्र करने वाले केश

विचक्षणम् – विशेष प्रकाश, देखने की विशेष शक्ति ।

व्याख्या :-

सूर्य की किरणों के क्या लक्षण हैं?

हे सूर्य! दिव्य लोग आपकी किरणों को प्राप्त करते हैं (क) जो सात रंगों वाली हैं, (ख) जिसमें हरण करने की शक्तियाँ हैं, (ग) जो रथ पर सवार होकर आती हैं, (घ) जो शुद्ध हैं और शुद्ध करने वाली हैं, और (ङ) जो विशेष प्रकाश और विशेष शक्तियों वाली हैं।

जीवन में सार्थकता :-

हम दिव्य कैसे बन सकते हैं?

दिव्य लोग वे हैं जो प्रातःकाल जल्दी उठकर विशेष लक्षणों वाली सूर्य की किरणों को प्राप्त करते हैं, स्वागत करते हैं और उसकी पूजा करते हैं।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

प्रातः जल्दी उठने की परम्परा का अनुसरण करके हर व्यक्ति दिव्य बन सकता है। ये किरणें अपने आपमें शुद्ध होती हैं और हमारे शरीर और मन को भी शुद्ध करती हैं। हमारे सभी रोग और मन के असंतुलन समाप्त हो जाते हैं।

ऋग्वेद मन्त्र 1.50.9

अयुक्त सप्त शुन्ध्युवः सूरो रथस्य नप्त्यः ।
ताभिर्याति स्वयुक्तिभिः ॥ ९ ॥

अयुक्त – जोड़ो

सप्त – सात (किरणें)

शुन्ध्युवः – पवित्र करने वाली (किरणें)

सूरः – सूर्य

रथस्य – रथ के

नप्त्यः – न मरने योग्य, न गिरने योग्य

ताभिः – वे

याति – प्रगति करता है

स्व युक्तिभिः – अपने बलों के साथ।

व्याख्या :-

सूर्य की क्या शक्तियाँ हैं?

सूर्य के रथ में सात रंगों वाली किरणें होती हैं। यह किरणें सबके लिए शुद्ध करने वाली होती हैं। यह अमृत्यु होती हैं। यह अपनी शक्तियों से कभी घटती नहीं। यह अपनी शक्तियों से प्रगति करती हैं।

जीवन में सार्थकता :-

वेद किसको प्राप्त होते हैं।

कौन प्राकृतिक रूप से प्रगति करता है?

सूर्य की किरणें उन सबके लिए शुद्धिकारक होती हैं। जो अपनी चेतना सहित उनका आहवान करती हैं और उनका उषा के निर्मल काल में सदुपयोग करते हैं। वे भी अमृत्यु तथा अपनी शक्तियों और ज्ञान में न घटने वाले बन जाते हैं। ऐसे लोगों को वेद अर्थात् परमात्मा का ज्ञान प्राप्त होता है। ऐसे लोग प्राकृतिक रूप में स्वतः ही प्रगति करते जाते हैं।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

इस प्रकार हमें सूर्य की शक्तियों से निम्न लक्षण प्राप्त होते हैं :-

- (क) हम स्वयं शुद्ध तथा दूसरों को शुद्ध करने वाले बनते हैं।
- (ख) हम कभी न गिरने वाले बन जाते हैं।
- (ग) हम इन शक्तियों के साथ प्राकृतिक रूप से प्रगति करते हैं।

ऋग्वेद मन्त्र 1.50.10

उद्घयं तमसस्परि ज्योतिष्पश्यन्त उत्तरम् ।
देवं देवत्रा सूर्यमग्न्म ज्योतिरुत्तमम् ॥ 10 ॥

उत् — उत्तम प्रकाश, बढ़ता हुआ प्रकाश

वयम् — हम

तमसः — अन्धकार

परि — से दूर

ज्योतिः — प्रकाश

पश्यन्तः — देखते हुए

उत्तरम् — अधिक उत्कृष्ट, प्रगतिशील

देवम् देवत्रा — दिव्यों में सर्वोच्च दिव्य

सूर्यम् — सूर्य को

अग्न्म् — हम प्राप्त करें

ज्योतिः — प्रकाश

उत्तमम् — सर्वोत्तम, सर्वोच्च ।

व्याख्या :-

सूर्य के प्रकाश की प्रगति की अनुभूति किसको होती है?

जब हम सूर्य के उत्तम होते हुए प्रकाश अर्थात् उषा किरणों को प्राप्त करते हैं जो हमसे अन्धकार को दूर रखती हैं, हम उस प्रकाश को समय के साथ—साथ सभी दिशाओं में प्रगति करते हुए दिखते हैं। जब हम सूर्य को प्राप्त करते हैं तो हम सर्वोत्तम और सर्वोच्च प्रकाश को भी प्राप्त करते हैं। जो दिव्यताओं का भी दिव्य है अर्थात् परमात्मा ।

जीवन में सार्थकता :-

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

ईश्वर प्राप्ति की चाहना वाले जीवन में परमात्मा का आध्यात्मिक प्रकाश किस प्रकार प्रगति करता है? जो लोग वास्तव में सूर्य के उदित होते हुए प्रकाश को प्राप्त करते हैं, वे इस बात को अच्छी प्रकार से देख पाते हैं और इसकी अनुभूति प्राप्त कर पाते हैं। यह प्रकाश किस प्रकार दिन की प्रगति के साथ—साथ प्रगति करता जाता है। भौतिक संसार के लिए सूर्य का प्रकाश सर्वोच्च प्रकाश है। आध्यात्मिक व्यक्तियों के लिए परमात्मा ही सर्वोच्च प्रकाश है। जब एक आध्यात्मिक व्यक्ति अपने जीवन में परमात्मा की उपस्थिति की थोड़ी सी झलक भी देख लेता है तो वह समस्त दिव्य शक्तियों की सर्वोच्च दिव्य शक्ति से प्रेम, उसकी प्रशंसा और पूजा प्रारम्भ कर देता है। वह इस बात की अनुभूति भी करने लगता है कि उसके जीवन में भगवान का प्रकाश बढ़ता जा रहा है। वह यह महसूस करने लगता है कि उसके जीवन में समय के साथ—साथ भगवान का प्रकाश बढ़ता जा रहा है। यह मन्त्र यजुर्वेद के मन्त्र—35.14 के समान और समर्थक की तरह है।

नोट :— यह मन्त्र यजुर्वेद 20.21 तथा यजुर्वेद 35.14 में केवल एक शब्द की भिन्नता के साथ आया है। ऋग्वेद 1.50.10 में प्रयुक्त 'ज्योतिः' के स्थान पर यजुर्वेद के मन्त्रों में 'स्वः' शब्द का प्रयोग हुआ है। 'स्वः' का अर्थ है स्व—प्रकाशित। इस प्रकार इन सभी व्याख्याओं में कोई विशेष अन्तर नहीं है।

ऋग्वेद मन्त्र 1.50.11

उद्यन्नद्य मित्रमह आरोहन्नत्तरां दिवम्।
हृद्रोगं मम सूर्यं हरिमाणं च नाशय ॥ 11 ॥

उद्यन् — उदय होते हुए, बढ़ते हुए

अद्य — आज

मित्रमह — सम्मानजनक मित्र

आरोहन् — बढ़ते हुए

उत्तराम् — उच्च स्तर की ओर

दिवम् — दिव्य

हृद्रोगम् — हृदय रोग

मम — मेरे

सूर्य — सूर्य

हरिमाणम् — हरे रोग, मेरे में या मेरे विरुद्ध बुरी प्रवृत्तियों का हरण करने वाले

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

च – और

नाशय – नाश कीजिए।

व्याख्या :-

क्या सूर्य की शक्तियाँ हमारे रोगों और बुराईयों का नाश कर सकती हैं?

उदय होता हुआ या बढ़ता हुआ सूर्य एक सम्मानित मित्र की तरह उच्च दिव्य स्तर की तरह प्रगति करते हुए मेरे हृदय रोगों तथा हरे रोगों का नाश करे जैसे पीलिया आदि तथा मेरे अन्दर या मेरे विरुद्ध बुरी प्रवृत्तियों का भी आज ही नाश करे।

जीवन में सार्थकता :-

जीवन के किसी भी क्षेत्र में सूर्य हमारी प्रगति कैसे सुनिश्चित करता है?

सूर्य की शक्तियाँ शुद्ध चिकित्सा शक्तियाँ हैं जो हमारे सभी रोगों और हमारे अन्दर की बुरी प्रवृत्तियों का नाश करने में सक्षम हैं और हमें भी इतना सक्षम बनाती हैं कि हम दूसरों के अन्दर भी उन बुराईयों का नाश कर सकें।

सूर्य की शक्तियों के इन चिकित्सकीय पहलुओं के अतिरिक्त यह मन्त्र भी एक बार फिर आध्यात्मिक अनुभूति के मार्ग को दिखाता है। जैसे सूर्य उदय होने के बाद दिव्य स्तर पर पहुँचता है, हम भी अपने रोगों और बुराईयों पर नियंत्रण करने के लिए अपनी इन्द्रियों पर नियंत्रण करके सूर्य की तरह उसी प्रकार आध्यात्मिक प्रगति कर सकते हैं। स्वास्थ्य तथा चरित्र जीवन के किसी भी क्षेत्र में प्रत्येक व्यक्ति के चरित्र के मजबूत स्तम्भ हैं।

यह सब तभी सम्भव है जब हम सूर्य के उदय होने से पूर्व उठें और उसके साथ ही दिव्य प्रगति पर चलें, क्योंकि सूर्य ही सभी पापों को खत्म करता है और रोगों की चिकित्सा करता है।

ऋग्वेद मन्त्र 1.50.12

शुकेषु मे हरिमाणं रोपणाकासु दध्मसि ।

अथो हारिद्रवेषु मे हरिमाणं नि दध्मसि ॥ 12 ॥

शुकेषु – तोतों में

मे – मेरे

हरिमाणम् – हरे रोग, मेरे में या मेरे विरुद्ध बुरी प्रवृत्तियों का हरण करने वाले

रोपणाकासु – वृक्षों में

दध्मसि – स्थापित करो, प्रदान करो

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

अथो – अतः

हारिद्रवेषु – हरी सब्जियाँ, पत्ते
मे – मेरे

हरिमाणम् – हरे रोग, मेरे में या मेरे विरुद्ध बुरी प्रवृत्तियों का हरण करने वाले

नि दध्मसि – नियमित रूप से स्थापित करो, प्रदान करो।

व्याख्या :-

रोगों और बुरी प्रवृत्तियों का क्या करें?

मैं अपने अन्दर पीलिया जैसे हरे रोग स्थापित करता हूँ, क्योंकि मेरे अन्दर हरे पन अर्थात् ऑक्सीजन और बुरी प्रवृत्तियों के हरण का अभाव है, अपने जीवन में से भी और दूसरों के जीवन में से भी। तोते के अन्दर हरे रंग का प्रतिनिधित्व है और वृक्ष हमें ऑक्सीजन देते हैं।

अतः हरियाली में ही मुझे नियमित अपने हरे रोग और बुरी प्रवृत्तियों का हरण करने की भावना स्थापित करनी चाहिए।

जीवन में सार्थकता :-

हरा चरित्र और हरा जीवन क्या हैं?

यह मन्त्र देखने में भी और उपभोग में भी हरियाली के महत्व को स्थापित करता है। जो चरित्र दूसरों का कल्याण करने की सोचता है उसे भी हरा चरित्र माना जाता है।

हमें हरा देखना चाहिए, हरा खाना चाहिए और हरा बनना चाहिए। ऐसा जीवन ही वास्तव में हरा जीवन होगा।

हमारे चारों तरफ अपार ऑक्सीजन होनी चाहिए, हमारे शरीर में और हमारे मस्तिष्क में भी। हमारा मन शीतल और शान्त होना चाहिए जिससे हमारे लिए हरे आध्यात्मिक और दिव्य जीवन का मार्ग प्रशस्त हो सके।

ऋग्वेद मन्त्र 1.50.13

उदगादयमादित्यो विश्वेन सहसा सह।
द्विषन्तं महं रन्धयन्मो अहं द्विषते रथम् ॥ 13 ॥

उदगात् – उदय होना, बढ़ना

आयम् – यह

आदित्यः – सूर्य (सृष्टि निर्माण से)

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

विश्वेन् – सब
सहसा – बल
सह – के साथ
द्विषत्तम् – द्वेष करने वाली शक्तियाँ (रोग, लोग)
मह्यम् – मेरे
रन्धयन् – मारने वाले, नष्ट करने वाले
मो – नहीं
अहम् – मैं
द्विषते – द्वेष करने वाले, शत्रु
रथम् – हिषित।

व्याख्या :-

रोगों और बुरी ताकतों का कौन नाश कर सकता है? सृष्टि के निर्माण से सूर्य अपनी सभी शक्तियों के साथ सदैव उदय होता रहा है और बढ़ता रहा है। यह हमारी शत्रु ताकतों जैसे – रोग और बुरी वृत्तियों का नाश करता रहा है जिससे मुझे उन्हें मारने की आवश्यकता न पड़े।

जीवन में सार्थकता :-

रोगों और बुराईयों को मारने के लिए हमें क्या करना चाहिए? सृष्टि के निर्माण काल से सूर्य की सभी शक्तियाँ परमात्मा की प्रथम अभिव्यक्ति के रूप में स्थापित रही हैं। अतः यह ऊर्जा का सर्वोच्च शक्तिशाली स्रोत है। यह सभी रोगों और बुरे लोगों का नाश कर सकता है। जब एक बुरी मानसिकता वाला व्यक्ति या एक रोगी व्यक्ति उदय होते हुए सूर्य के दर्शन प्रारम्भ कर देता है तो उसकी बुरी वृत्तियाँ और रोग भी समाप्त हो जाते हैं। इसलिए अपने रोगों और बुराईयों का नाश करने पर अपनी ऊर्जा व्यर्थ करने के बजाय हमें सभी बुरे मन वाले व्यक्तियों और रोगी लोगों को हमें यह मार्ग दर्शन देना चाहिए कि प्रातःकालीन ब्रह्म वेला में उठना प्रारम्भ करें जिससे उनके सभी रोगों और बुराईयों का नाश सम्भव हो सके।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

ऋग्वेद मण्डल-1 सूक्त 51

ऋग्वेद 1.51.1

अभि त्यं मेषं पुरुहूतमृग्मियमिन्द्रं गीर्भिर्मदता वस्वो अर्णवम् ।
यस्य द्यावो न विचरन्ति मानुषा भुजे मंहिष्ठमभि विप्रमर्चत ॥ १ ॥

(अभि – मदत से पूर्व लगाकर)

त्यम् – वह

मेषम् – वर्षा करने वाला

पुरुहूतम् – प्रशंसनीय, सबके द्वारा पुकारा गया

ऋग्मियम् – वेद मंत्रों के द्वारा

इन्द्रम् – परमात्मा, सूर्य, महान् राजा, इन्द्रियों का नियंत्रक

गीर्भि – ज्ञान की वाणियों से

(मदत – अभि मदत) प्रतिक्षण उन्हें हर्षित रखता है

वस्वः – निवास के लिए

अर्णवम् – सम्पदा का समुद्र

यस्य – जिसकी

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



द्यावः – सूर्य की किरणेण
न – जैसे
विचरन्ति – सर्वत्र फैली हुई
मानुषा – मनुष्यों के लिए
भुजे – भोग के लिए
मंहिष्ठम् – सर्वोच्च दाता
(अभि – अर्चत से पूर्व लगाकर)
विप्रम् – विशेष रूप से पूरण करने वाले
(अर्चत – अभि अर्चत) प्रतिक्षण पूजन करें।

व्याख्या :-

हमें परमात्मा की प्रशंसा और उनका आह्वान किस प्रकार करना चाहिए?

हमें परमात्मा की पूजा कितने समय करनी चाहिए?

वर्षा करने वाला, सबके निवास के लिए सम्पदाओं का समुद्र उपलब्ध करवाकर, प्रत्येक प्राणी को प्रतिक्षण प्रसन्न रखता है। उसकी प्रशंसा और उसका आह्वान सभी लोग वेद मन्त्रों तथा ज्ञान की वाणियों से करते हैं। उसकी देन सूर्य की किरणों की तरह समस्त मनुष्यों के भोग के लिए सर्वत्र फैली हुई है। वह सर्वोच्च दाता है और विशेष रूप से सबको पूर्ण करता है। अतः उसकी पूजा प्रतिक्षण करनी चाहिए।

जीवन में सार्थकता :-

कौन सर्वोच्च दाता है?

परमात्मा सर्वोच्च दाता है। वह प्रतिक्षण देता है और वह सबको देता है। परन्तु हमें यह स्वीकार करना चाहिए कि हम समान रूप से उसका धन्यवाद नहीं करते। हमारे श्वास-प्रश्वास से प्रारम्भ होकर हर प्रकार की सम्पदाएँ उसके द्वारा प्रतिक्षण दी जा रही हैं। अतः हमें उसकी पूजा धन्यवाद की तरह प्रतिक्षण करनी चाहिए।

इसी प्रकार हमारे माता-पिता तथा महान् अध्यापक भी हमारे शरीर और मन के क्रमशः दाता हैं। हमें उनकी भी पूजा करनी चाहिए। जो सब कुछ उन्होंने हमारे लिए किया है।

ऋग्वेद 1.51.2

अभीमवन्वन्त्स्वभिष्टिमूत्योऽन्तरिक्षप्रां तविषीभिरावृतम् ।
इन्द्रं दक्षास ऋभवो मदच्युतं शतक्रतुं जवनी सूनृतारुहत् ॥२॥

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



अभी ईम अवन्नन – प्रतिक्षण निश्चित रूप से प्रगति सुनिश्चित करता है

स्वभिष्टिम् – स्व-अनुभूति की सर्वोत्तम कामना

उतयः – संरक्षित करने वाले

अन्तरिक्षप्राम् – अन्तरिक्ष में सबका पूरण करने वाले, शांति में (अपनी दुर्बलताओं को दूर करके)

तविषीभिः – सभी शक्तियों के साथ (शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक)

आवृतम् – आच्छादित

इन्द्रम् – परमात्मा, सूर्य, महान् राजा, इन्द्रियों का नियंत्रक

दक्षास – बल की वृद्धि करने में सक्षम

ऋभवः – प्रकाशित मन

मदच्युतम् – अहंकार रहित

शतक्रतुम् – सैकड़ों (असंख्य) कर्मों के करने वाले

जवनी – उत्तम कार्यों के प्रेरक

सूनृता – सत्यवादी वाणी

आरुहत् – स्थापित।

व्याख्या :-

इन्द्र हमारी सहायता कैसे करते हैं?

इन्द्र की सहायता प्राप्त करने के लिए हमें किस प्रकार के लक्षण सुनिश्चित करने चाहिए?

इन्द्र अर्थात् परमात्मा, सूर्य, महान् राजा तथा इन्द्रियों के नियंत्रक निम्न उपलब्धियों में हमारी सहायता करते हैं :–

(1) अभी ईम अवन्नन – प्रतिक्षण निश्चित रूप से प्रगति सुनिश्चित करता है।

(2) स्वभिष्टिम् – स्व-अनुभूति की सर्वोत्तम कामना।

(3) अन्तरिक्षप्राम् – अन्तरिक्ष में सबका पूरण करने वाले, शांति में (अपनी दुर्बलताओं को दूर करके)।

(4) तविषीभिः आवृतम् – सभी शक्तियों (शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक) के साथ हमें आच्छादित करता है।

यह सभी उपलब्धियाँ तभी सम्भव हैं जब हम स्वयं अपने जीवन में निम्न लक्षणों को सुनिश्चित करें :–

(1) दक्षास – बल की वृद्धि करने में सक्षम।

(2) ऋभवः – प्रकाशित मन।

(3) मदच्युतम् – अहंकार रहित जीवन।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

- (4) शतक्रतुम् – सैकड़ों (असंख्य) कर्मों के करने के लिए तत्पर।
- (5) जवनी – हम स्वयं को उत्तम कार्यों को गति के साथ करने के लिए प्रेरित करें।
- (6) सूनृता आरुहत् – हम अपने भीतर सत्यवादी वाणी को स्थापित करें।

जीवन में सार्थकता :-

एक महान् और दिव्य जीवन के क्या कारक होते हैं?

इन्द्र, परमात्मा तथा सूर्य प्रथम तथा द्वितीय स्तर की शक्तियाँ हैं। महान् राजा, महान् राजनेता, सामाजिक कार्यकर्ता तथा इन्द्रियों के नियंत्रक इन्द्र पुरुष तीसरे स्तर की शक्तियाँ हैं। ये सभी हमें एक महान् और दिव्य जीवन बनाने के लिए तभी अनुदान प्रदान करते हैं जब हम अपनी तरफ से निम्न कारक सुनिश्चित करें :-

- (1) अपने—अपने कार्य क्षेत्रों में दक्षता प्राप्त करने की इच्छा।
- (2) सम्बन्धित ज्ञान की पूर्ण जानकारी से स्वयं को प्रकाशित करना।
- (3) अपने आपको अहंकारवादी उलझनों से मुक्त रखना।
- (4) जिन कार्यों में हमारी आवश्यकता हो उन कार्यों को करने के लिए तत्पर रहना।
- (5) बिना समय गंवाये उत्तम कार्यों को करना।
- (6) एक दिव्य सत्यवाणी धारण करना।

ऋग्वेद 1.51.3

त्वं गोत्रामङ्गिरोभयोऽ वृणोरपोतात्राये शतदुरेषु गातुवित्।
ससेन चिद्विमदायावहो वस्वाजावन्द्रिं वावसानस्य नर्तयन्॥ 3 ॥

त्वम् – आप

गोत्रम् – महान् और दिव्य ज्ञान

अङ्गिरोभयः – अंगिरा आदि ऋषि

(अवृणोः – अप अवृणोः) योग्य बनाते हैं

(अप – अवृणो से पूर्व लगाया गया)

उत – और

अत्रये – तीन दुःखों से ऊपर उठा हुआ (आध्यात्मिक, मानसिक एवं शारीरिक)

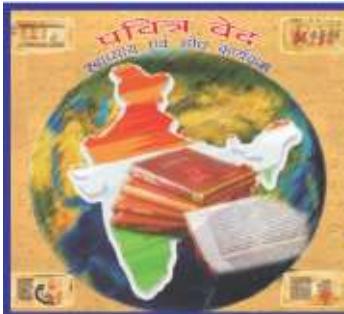
शतदुरेषु – सैकड़ों द्वारों वाले शरीर में निवास करते हुए

गातुवित् – मार्ग दिखाने वाले

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

ससेन – बलों सहित मुख्य वीर

चित्त – निश्चित रूप से

विमदाय – काम, क्रोध, लोभ और मोह आदि चारों से शून्य

आवह – उपलब्ध कराते हैं

वसु – आवास के तत्त्व

आजौ – शत्रुओं के बल

अन्द्रिम् – पर्वत रूपी अज्ञानता

वावसानस्य – उत्तम निवास के लिए

नर्तयन् – नृत्य करवा देते हैं।

व्याख्या :-

अंगिरा आदि ऋषियों को वेद प्राप्त करने के योग्य किसने बनाया?

हमें स्व-अनुभूति के मार्ग पर चलने के योग्य कौन बनाता है?

आपने अंगिरा आदि ऋषियों को महान् और दिव्य वैदिक ज्ञान प्राप्त करने के योग्य बनाया और उन्हें तीन प्रकार के दुःखों – शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक दुःखों से ऊपर उठाया। इस प्रकार बुराईयों के प्रवेश के लिए सैकड़ों द्वारों वाले इस शरीर में रहते हुए भी आपने उन्हें स्व अनुभूति का मार्ग दिखाया। आपकी कृपा के कारण ही वे आध्यात्मिक मार्ग पर प्रगति करने में सक्षम हो सके।

इन्द्रियों की सेना तथा पूर्ण शरीर के साथ ऐसा मुखिया (आत्मा) निश्चित रूप से चारों बुराईयों से मुक्त हो जाता है – इन्द्रियों की वासना अर्थात् काम, गुस्सा अर्थात् क्रोध, लालच अर्थात् लोभ तथा जुड़ाव अर्थात् मोह। ऐसा मुखिया वास्तव में स्वयं को जीवन के लिए आवश्यक दिव्य तत्त्वों के लिए उपलब्ध करा देता है। जो उसके जीवन को उत्तम जीवन बना सके। वह पर्वतों के समान अज्ञानता को दिव्यता की धुन पर नृत्य करवाने के योग्य बन जाता है।

जीवन में सार्थकता :-

हमें सभी दुःखों से कौन मुक्त कर सकता है?

जब तक कोई व्यक्ति तीन प्रकार के दुःखों में स्थित रहता है, वह स्वाभाविक रूप से स्वयं को सर्वप्रथम उन दुःखों से मुक्त करने का प्रयास करेगा। तब तक उसे तीनों प्रकार के दुःखों को रोकने के लिए ज्ञान प्राप्त करने में लगे रहना चाहिए।

तीन प्रकार के दुःखों से मुक्त होने के ज्ञान तथा प्रयासों से भी अधिक उसे शुद्ध समर्पण अर्थात् भक्ति से परमात्मा का छोटा सा आशीर्वाद प्राप्त करने का प्रयास करना चाहिए जो उसे तीनों दुःखों से मुक्त

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

कर सकता है। तभी वह समय आयेगा जब वह स्व अनुभूति के आध्यात्मिक मार्ग पर अग्रसर हो सकेगा।

स्व अनुभूति के इस मार्ग पर हमारे जीवन में निम्न लक्षण उपस्थित हो जाते हैं :—

- (1) चार बुराईयों – इन्द्रियों की वासना, क्रोध, लोभ तथा मोह से मुक्ति।
- (2) हमें दिव्य वास प्राप्त होता है अर्थात् सरल परन्तु प्रसन्न जीवन।
- (3) इन्द्रियों का बल प्राप्त होता है, क्योंकि हम उन पर प्रभावशाली नियंत्रण स्थापित रखते हैं।
- (4) दिव्य ज्ञान की धुन पर पर्वत रूपी अज्ञानता नृत्य करती हुई दिखाई देती है।

ऋग्वेद 1.51.4

त्वमपामपिधानावृणोरपाऽधारयः पर्वते दानुमद्वसु ।
वृत्रं यदिन्द्रं शवसावधीरहिमादित्सूर्यं दिव्यारोहयो दृशे ॥ 4 ॥

त्वम् – आप

अपाम् – जलों का, प्रजाओं का

अपिधाना – आवरण (इच्छाओं और अज्ञानता के)

अपावृणोः – आवरण हटाना

अधारयः – धारण करना

पर्वते – पर्वत रूपी (बादल)

दानुमत – दान के भाव से सुसज्जित

वसु – सम्पदा, जल

वृत्रम् – मेघ

यत् – किसके लिए

इन्द्र – परमात्मा, सूर्य, महान् राजा, इन्द्रियों का नियंत्रक

शवसा – बल के साथ

अवधीः – नाश करता है

अहिम् – सब प्रकार से नाशक (अहंकार और इच्छाओं का)

आत् इत् – केवल तभी

सूर्यम् – सूर्य, ज्ञान का प्रकाश

दिवि – मन के आकाश में

आरोहयः – स्थापित

दृशे – देखने के लिए, अनुभूति प्राप्त करने के लिए (परमात्मा अर्थात् स्थाई प्रकृति का प्रकाश)।

व्याख्या :-

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

हमारे मन के आवरणों को कौन अनाव्रत करता है?

मन के आवरणों को अनाव्रत करने के बाद क्या परिणाम होता है?

आप, इन्द्र (परमात्मा, सूर्य, महान् राजा, इन्द्रियों का नियंत्रक) जल के आवरणों और अपनी प्रजाओं के आवरणों को अनाव्रत करते हो।

आप जल वाले पर्वतीय मेघों को धारण करते हो अर्थात् आप ऐसी सम्पदा को धारण करते हो जो सबके कल्याण के लिए दान की भावनाओं से सुसज्जित हो।

इन्द्र, सूर्य, अपने बल के साथ मेघों को नष्ट कर देता है। क्योंकि वह हर प्रकार से नष्ट करने वाला ही होता है।

उसके बाद, सूर्य, सत्य ज्ञान का प्रकाश, परमात्मा के स्थाई प्रकाश की अनुभूति के लिए मन के अन्तर्क्षित में स्थापित होता है।

जीवन में सार्थकता : —

हमें ध्यान के दौरान क्या प्रार्थना करनी चाहिए और किस पर ध्यान एकाग्र करना चाहिए?

प्रत्येक व्यक्ति को अपने जीवन में इन्द्र अर्थात् इन्द्रियों का नियंत्रक बनना चाहिए। एक बार इन्द्रियों पर प्रभावशाली नियंत्रण स्थापित हो जाने पर अहंकार तथा इच्छाओं के आवरण नष्ट हो जाते हैं जिससे सबके कल्याण के लिए दान दी जाने योग्य गौरवशाली सम्पदा का मार्ग प्रशस्त होता है। अहंकार और इच्छाओं के यह आवरण ही हर प्रकार से हमारे हत्यारे सिद्ध होते हैं। अतः इन आवरणों को नष्ट करके हमें अपनी इन्द्रियों पर प्रभावशाली नियंत्रण स्थापित करना चाहिए। अपने जीवन में वास्तविक इन्द्र बनकर ही हमें दिव्य प्रकाश के सूर्य अर्थात् परमात्मा की अपने मन के अन्तर्क्षित में स्थापना के लिए प्रार्थना करनी चाहिए। लम्बी और लगातार ध्यान—साधनाओं के बाद यह प्रार्थना मन के आवरणों को अनाव्रत कर पायेगी।

ऋग्वेद 1.51.5

त्वं मायाभिरप मायिनोऽधमः स्वधभिर्ये अधि शुप्तावजुहवत् ।
त्वं पिप्रोर्नृमणः प्रारुजः पुरः प्र ऋजिश्वानं दस्युहत्येष्वा विथ ॥ 5 ॥

त्वम् — आप

मायाभिः — अपनी भौतिक सृष्टि के साथ, मायावी छल से
(अप — अधमः से पूर्व लगाकर)

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

मायिनः – भौतिक सृष्टि तथा छल में फंसे हुए

(अधमः – अप अधमः) दूर रखो

स्वधाभिः – अन्न आदि के साथ

ए – वे जो

अधि शुप्तौ – अन्य लोगों के सोने के बाद

अजुहवत – चोरी करते हैं, अपने मुख में डालते हैं

त्वम् – आप

पिप्रोः – अपने स्वयं को पूर्ण करते हुए

नृमणः – मनुष्यों में अपना मन रखने वाले (परमात्मा)

प्रारुजः – नाश करते हैं

पुरः – समूहों का, नगरों का

(प्र – वाविथ से पूर्व लगाकर)

ऋजिश्वानम् – प्रकृति के मार्ग पर चलने वाले, सत्यवादी

दस्यु हत्येषु – दुष्टों की नाश करने के बाद

(वाविथ – प्र वाविथ) विशेष रूप से संरक्षित करते हैं।

व्याख्या :-

परमात्मा किस प्रकार भौतिकतावादी और कुटिल लोगों को अपने से दूर रखता है?

स्वार्थी लोगों का अन्त कैसा होता है?

परमात्मा के द्वारा कौन संरक्षित होते हैं?

आप, इन्द्र, अपनी भौतिक सृष्टि के साथ तथा अपनी कुटिलताओं के साथ उन सब लोगों को दूर रखते हों जो भौतिक सृष्टि तथा कुटिलताओं में जकड़े हुए हैं, जो चोरी करते हैं और जब अन्य लोग सोये होते हैं तो उनका अन्न अपने मुँह में डाल लेते हैं।

आप, इन्द्र, उन लोगों के गढ़ और शहरों को नष्ट कर देते हों जो केवल अपना स्वार्थ पूरा करने में लगे रहते हैं, जो केवल अपनी इच्छाएँ पूरी करते रहते हैं, क्योंकि आपने हर मनुष्य में अपना मन डाल रखा है। इसका अभिप्राय है कि आप सबके मन को जानते हो अर्थात् स्वार्थी लोगों को और उन निःस्वार्थी लोगों को भी जो सदैव आपको ही अपने मन में रखते हैं।

जीवन में सार्थकता :-

परमात्मा की कुटिलताएँ क्या हैं?

एक स्वार्थी व्यक्ति तथा स्व की अनुभूति में लगे व्यक्ति में क्या अन्तर है?

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

परमात्मा आध्यात्मिक रूप से ही आध्यात्मिक लोगों के मन में उनके निकट बैठकर उन्हें संरक्षित करते हैं।

परमात्मा स्वार्थी और भौतिकवादी लोगों को भौतिकवादी लक्ष्यों तथा इच्छाओं में फँसाये रखकर उनका नाश करते हैं। क्योंकि परमात्मा उनके मन में ही रहते हैं और उन्हें जानते हैं।

आध्यात्मिक लोग दिनों दिन परमात्मा के साथ अपनी निकटता बढ़ाते जाते हैं और चेतनता के साथ स्वयं को भौतिकवादी लक्ष्यों, अहंकार तथा इच्छाओं से दूर रखते हैं।

परमात्मा भौतिकवादी लोगों के मन में भी रहते हैं और उनकी इच्छाओं और अहंकार के बारे में जानते हैं। परमात्मा ऐसे लोगों को अपनी अनुभूति से दूर रखते हैं और अहंकार तथा इच्छाओं की भौतिक उपलब्धियों से ही उनका नाश कर देते हैं। ऐसे लोग कभी भी परमात्मा की अनुभूति अर्थात् सर्वोच्च चेतना के स्तर पर कभी नहीं आ पाते और इस प्रकार भौतिकता में ही नष्ट हो जाते हैं। वे कुटिल चालें चलते हैं और परमात्मा की कुटिल चालों से ही नष्ट हो जाते हैं।

आध्यात्मिक लोग प्रकृति के साथ जीवन जीते हैं और सदैव सत्य के साथ रहते हैं। जबकि, भौतिकवादी लोग अप्राकृतिक, अहंकारी और इच्छाओं की पूर्ति वाला जीवन जीते हैं। भौतिकवादी लक्ष्य, अहंकार तथा इच्छाओं में उलझे रहने से हर प्रकार के रोग तथा अपराध पैदा होते हैं और इन्हें भौतिक पदार्थों के नाश का कारण बनते हैं।

जबकि रोगों, इच्छाओं और अहंकार से मुक्ति ही आध्यात्मिक लोगों के महान् दिव्य स्वार्थ का कारण बनती है। वे प्रसन्न तथा शान्त जीवन जीते हैं।

ऋग्वेद 1.51.6

त्वं कुत्सं शुष्णाहत्येष्वाविथारन्धोऽतिथिग्वाय शम्बरम् ।
महान्तं चिदर्बुदं नि क्रमीः पदा सनादेव दस्युहत्याय जज्ञिषे ॥ 6 ॥

त्वम् – आप

कुत्सम् – वासनाओं, लालच तथा चित्त वृत्तियों का नाश करने वाले ऋषि को

शुष्ण हत्येषु – शोषक (विचारों और लोगों) को मारने के बाद

आविथ – संरक्षित

अरन्धयः – नष्ट करते हैं

अतिथिग्वाय – अतिथियों (लोगों तथा नये विचारों) के स्वागत के लिए

शम्बरम् – पर्वत रूपी विशाल शक्ति

महान्तम् – महान् तथा विशाल लक्षण (ज्ञान और सम्पदा के)

चित् – और भी

र्बुदम् – बढ़ा हुआ अहंकार

नि क्रमीः – नष्ट करते हो

पदा – पैरों में

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

सनात् – सदैव

एव – केवल

दस्यु हत्याय – बुराईयों की हत्या के लिए

जङ्गिषे – उत्पन्न, बनाये गये।

व्याख्या :-

ऋषि कौन हैं?

ऋषियों को कौन संरक्षित करता है?

नये विचारों और नये लोगों का स्वागत कैसे करें?

आप, इन्द्र, उन ऋषियों को संरक्षित करते हो जिन्होंने अपनी इच्छाओं, लोभ और मन की वृत्तियों को नष्ट कर दिया है। आप शोषण करने वाले विचारों और लोगों का नाश करते हो। आप सम्पदा तथा ज्ञान के अहंकारी लक्षणों का भी नाश करते हो जैसे – उन्हें पाँव के नीचे कुचल दिया गया हो। नये अतिथियों अर्थात् नये विचारों और लोगों का स्वागत करने के लिए आप यह सब करते हो। सभी बुराईयों को नष्ट करने के लिए आप ही विद्यमान हो।

जीवन में सार्थकता :-

इन्द्र के लक्षण कौन धारण करता है?

महान् शक्तियों का जन्म शुभ गुणों के संरक्षण तथा बुराईयों के नाश के लिए ही होता है। परमात्मा महान् और सर्वोच्च है। सूर्य सैद्धान्तिक रूप से परमात्मा की महानता और सर्वोच्चता का अनुसरण करता है।

महान् राजा भी वही होता है जो अच्छाईयों के संरक्षण और बुराईयों के नाश जैसे दिव्य नियम का अनुसरण करता है। इसी प्रकार इस सिद्धान्त का अनुसरण करने वाला व्यक्ति भी इन्द्र ही कहलाता है।

ऋग्वेद 1.51.7

त्वे विश्वा तविषी सध्यग्निता तव राधः सोमपीथाय हर्षते ।
तव वज्रश्चिकिते बाह्वोर्हितो वृश्चा शत्रोरव विश्वानि वृष्ण्या ॥ 7 ॥

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

त्वे – आप में

विश्वा – सब

तविषी – शक्तियाँ और बल

सध्यक – सबके लिए, संयुक्त रूप से प्रयोग करने हेतु

हिता – स्थापित

तव – आपकी

राधः – सम्पदा, परमात्मा की पूजा करने वाला व्यक्ति

सोमपीथाय – शुभ गुणों का प्रयोग और संरक्षण करने के लिए

हर्षते – प्रसन्नता देने वाले

तव – आपके

वज्रः – वज्र

चिकिते – जाने जाते हैं

बाह्वो – भुजाओं में

हितः – स्थापित है

वृश्च – नष्ट करो

शत्रोः – शत्रुओं के

अव – दूर, संरक्षण

विश्वानि – सब

वृष्ण्या – शक्तियाँ और बल।

व्याख्या :-

हमारे लिए महान् शक्तियाँ और सम्पदाएं कौन सी हैं?

इन्द्र पुरुष में जो भी शक्तियाँ या सम्पदाएं स्थापित होती हैं वे संयुक्त उपयोग के लिए होती हैं। आपकी सम्पदा शुभ गुणों के संरक्षण और उपभोग के लिए है, इसीलिए यह प्रसन्नता देने वाली है। जो लोग आपकी पूजा करते हैं, वे सबकी प्रसन्नता के लिए शुभ गुणों के उत्पत्तिकर्ता हैं। बांहों में स्थापित आपके वज्र अर्थात् शक्तियाँ शत्रुओं के नाश तथा उनकी शक्ति को दूर फेंकने के लिए जानी जाती हैं। बहादुर व्यक्तियों की शक्तियों का संरक्षण भी इन्हीं का कार्य है।

जीवन में सार्थकता :-

महान् शक्तियों और सम्पदाओं को कैसे प्राप्त करें?

महान् शक्तियों और सम्पदाओं का प्रयोग कैसे करें?

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

सभी सम्पदाओं और शक्तियों के निम्न उद्देश्य हैं :—

- (1) सधृयक — सबके लिए, संयुक्त रूप से प्रयोग करने हेतु।
- (2) सोमपीथाय — शुभ गुणों का प्रयोग और संरक्षण करने के लिए।
- (3) वृश्च शत्रोः, अव विश्वानि — शत्रुओं को नष्ट करने के लिए तथा बहादुर व्यक्तियों की शक्तियों का संरक्षण करने के लिए।
- (4) राधः — सभी सम्पदा तथा शक्तियाँ परमात्मा की पूजा से प्राप्त होती हैं।

अतः प्रत्येक व्यक्ति को परमात्मा की सच्ची पूजा ही करनी चाहिए। जिससे वह उसकी शक्तियाँ, बल तथा सम्पदाएँ प्राप्त कर सके। उसके बाद उन उपलब्धियों का प्रयोग इस मन्त्र की दिव्यताओं के साथ ही करना चाहिए। जीवन के सभी क्षेत्रों में अग्रणी लोगों विशेष रूप से राजनेताओं, धन—सम्पन्न लोगों, ज्ञानवान् विद्वानों को इसी सिद्धान्त का अनुसरण करना चाहिए। सच्ची पूजा ही महान् और दिव्य शक्तियाँ प्राप्त करवाती हैं, जिनका प्रयोग यज्ञ कार्यों में किया जाना चाहिए।

ऋग्वेद 1.51.8

वि जानीह्यार्यान्ये च दस्यवो बर्हिष्मते रन्धया शासदव्रतान्।
शाकी भव यजमानस्य चोदिता विश्वेत्ता ते सधमादेषु चाकन ॥ 8 ॥

विजानीहि — जानों

आर्यान् — श्रेष्ठ (लोग तथा विचार)

ये — जो

च — और

दस्यवः — धूर्त

बर्हिष्मते — शुभ गुणों और पूर्ण ज्ञान के लिए

रन्धय — नष्ट करो

शासत् — शासन करो, प्रेरणा करो

अव्रतान् — संकल्पों से शून्य

शाकी — शक्तियाँ और बल

भव — स्थापित

यजमानस्य — यज्ञ कार्यों को करने वालों के लिए

चोदिता — प्रेरणादायक

विश्व इत् — वे सब (यज्ञ कार्य)

ते — आपकी संगति में

सधमादेषु — संयुक्त रूप से

चाकन — इच्छा करते हैं।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



व्याख्या :-

धूर्त लोगों के साथ कैसे व्यवहार करें?

श्रेष्ठ व्यक्तियों और विचारों को जानना चाहिए। इसी प्रकार धूर्त व्यक्तियों और विचारों को भी जानना चाहिए। शुभ गुणों और पूर्ण ज्ञान के लिए ऐसे लोगों का नाश कर दो जो ब्रतरहित हैं। इनके ऊपर शासन करो और उन्हें प्रेरित करो। शक्तियों और बलों की स्थापना करो तथा उन्हें यज्ञ करने के लिए प्रेरित करो। यह कार्य वही कर सकते हैं जो ऐसी इच्छा करते हैं और आपकी संगति में रहते हैं।

जीवन में सार्थकता :-

श्रेष्ठता का ध्यान कहाँ पर एकाग्र होना चाहिए?

यह मन्त्र भी इन्द्र के चारों पक्षों पर समान रूप से लागू होता है अर्थात् परमात्मा, सूर्य, महान् राजा, इन्द्रियों का नियंत्रक।

एक इन्द्र व्यक्ति से यह अपेक्षा होती है कि वह इसकी जानकारी रखे कि उसके निकट कौन श्रेष्ठ है और कौन धूर्त है। इन्द्र श्रेष्ठता को शक्तिशाली बनाता है और धूर्त व्यक्ति को सुधरने की प्रेरणा देता है या विनाश का सामना करने के लिए ललकारता है।

इसके बाद श्रेष्ठ व्यक्ति की प्रेरणा और शक्ति केवल यज्ञ कार्यों को करके परमात्मा की संगति की अनुभूति प्राप्त करने में ही लगती है।

ऋग्वेद 1.51.9

अनुव्रताय रन्धयन्पव्रतानाभूभिरिन्द्रः शनथयन्नाभुवः।
वृद्धस्य चिद्वर्धतो द्यामिनक्षतः स्तवानो वग्रो वि जघान सन्दिः॥ ११॥

अनुव्रताय — संकल्पवान् लोगों के लिए

रन्धयन् — नष्ट करते हुए

अपव्रतान् — संकल्पों से रहित

आभूषिः — बहादुर योद्धाओं के साथ, परमात्मा के साथ जुड़े हुए तथा उत्तम कार्यों में लगे हुए लोगों के साथ

इन्द्रः — परमात्मा, सूर्य, महान् राजा, इन्द्रियों का नियंत्रक

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

इन्द्रथयन — नष्ट करता है

अनाभुवः — परमात्मा के साथ नहीं जुड़े हुए, असामाजिक, धूर्त् वृद्धस्य चित — ज्ञान और कार्यों में श्रेष्ठ

वर्धतः — बढ़ते हुए

द्याम — सूर्य के समान ज्ञान में प्रकाशित

इनक्षतः — मार्ग पर अग्रसर

स्तवानः — प्रशंसाएं

वम्रः — अनैतिक लोग

विज्घान — नष्ट

सन्दिहः — निश्चितता के साथ (क्या श्रेष्ठ है और क्या अश्रेष्ठ)।

व्याख्या :-

इन्द्र की क्या शक्तियाँ होती हैं?

इन्द्र एक बहुआयामी शब्द है जो परमात्मा से लेकर महान् मनुष्यों पर भी सार्थक होता है। इन्द्र से अभिप्राय सूर्य भी है, जो प्रकृति की मूल शक्ति है। इन्द्र संकल्पवान् लोगों के उत्थान के लिए संकल्पहीन लोगों का नाश करता है। परमात्मा तथा महान् राजा उन सब लोगों का नाश करते हैं जो संकल्पहीन हैं, क्योंकि इन्द्र का कार्य केवल संकल्पवान् लोगों की रक्षा करना है।

इन्द्र शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक स्तरों पर बहादुरी की रक्षा करता है। इसलिए इन्द्र असामाजिक तत्त्वों के साथ—साथ उन सभी का नाश करता है जो भगवान् के साथ नहीं जुड़ते।

इन्द्र ज्ञान और कर्म दोनों में श्रेष्ठ व्यक्तियों को प्रोत्साहित करता है।

इन्द्र उन लोगों की प्रशंसा करता है जो प्रकाशित होने के पथ पर हैं। इन्द्र इस प्रश्न पर निश्चित मत होता है कि क्या श्रेष्ठ है और क्या दुष्ट है। उस निश्चितता के साथ इन्द्र सभी अनैतिक लोगों का नाश करता है।

जीवन में सार्थकता :-

श्रेष्ठ होने के क्या लाभ हैं?

दुष्ट होने की क्या हानियाँ हैं?

इस मन्त्र का मुख्य विषय श्रेष्ठ व्यक्तियों की रक्षा है। केवल एक पूर्ण श्रेष्ठ पुरुष ही अपनी दृष्टि में तथा परमात्मा और महान् राजा सहित पूरे समाज की दृष्टि में चमकदार और प्रशंसनीय जीवन बिताता है। ऐसा व्यक्ति आध्यात्मिक प्रगति को प्राप्त करता है। क्योंकि परमात्मा भी उसे पसन्द करते हैं। दूसरी तरफ अश्रेष्ठ और धूर्त् व्यक्ति प्रतिक्षण चारों तरफ से विनाश का सामना करते हैं। सर्वप्रथम, वे अपनी दृष्टि में मरते हैं। द्वितीय वे महान् राजा से दण्ड प्राप्त करने के योग्य होते हैं। वे परमात्मा के द्वारा भी कभी पसन्द नहीं किये जाते। इसलिए आध्यात्मिक अनुभूति के मार्ग पर कभी प्रगति नहीं कर

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

पाते। ऐसे धूर्त, दुष्ट और अश्रेष्ठ लोग बार-बार भिन्न-भिन्न जीवन प्राप्त करते हैं जिससे वे असंख्य दुखों और मृत्यु के रूप में अपने कर्मों के फल भोग सकें। वे जन्म और मृत्यु के चक्र में फंसे रहते हैं। जबकि श्रेष्ठ लोग अन्तत मुक्ति प्राप्त कर पाते हैं।

परमात्मा का अनुसरण करो — वह मुक्ति सुनिश्चित करेगा।

महान् राजा का अनुसरण करो — वह एक संरक्षित जीवन सुनिश्चित करेगा।

स्वयं इन्द्र बनो जिससे आप सब कुछ प्राप्त कर सको।

ऋग्वेद 1.51.10

तक्षद्यत्त उशना सहसा सहो वि रोदसी मज्मना बाधते शवः।
आ त्वा वातस्य नृमणो मनोयुज आ पूर्यमाणमवहन्नभि श्रवः॥ 10 ||

तक्षत — तेज करने वाला

एत — यदि

उशना — सबके द्वारा कामना योग्य (ईश्वर)

सहसा — अपनी शक्तियों के साथ

सहः — आपकी शक्तियाँ

(वि — बाधते से पूर्व लगाकर)

रोदसी — भूमि और अन्तरिक्ष को

मज्मना — शुद्ध करने वाली शक्तियों के साथ

(बाधते — वि बाधते) हलचल मचाना

शवः — आपकी शक्तियाँ

(आ — वहन से पूर्व लगाकर)

त्वा — आपका

वातस्य — वायु के समान शक्तियों के लिए, आत्मा की शक्ति के लिए

नृमणः — सबको अपना मन देने वाला

मनोयुजः — मन अर्थात् सभी इन्द्रियों के साथ जुड़कर

आपूर्यमाणम् — पूर्ण करते हुए

(वहन — आ वहन) उपलब्ध कराते हैं

अभि — की ओर

श्रवः — सुनने योग्य (ज्ञान तथा प्रसिद्धि में)।

व्याख्या :-

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

संकल्पों की रक्षा का क्या परिणाम होता है?

यदि उशना, सबके द्वारा कामना किये जाने वाला परमात्मा अपनी शक्तियों से आपकी शक्तियों को तेज करता है तो आपकी शक्तियाँ धरती और अन्तरिक्ष को भी आपके शुद्ध कार्यों से डरा सकती हैं। नृमण का अर्थ है जो अपना मन सबको देता है अर्थात् सबके उत्थान के लिए बराबर कार्य करता है। आप अपनी आत्मा की शक्ति से ही ऐसा कर सकते हो जैसा मन की शक्तियों से करते हैं। आप अपनी सभी इन्द्रियों के साथ मन की शक्तियों को संयुक्त करके ऐसा कर सकते हो। इस प्रकार आपका जीवन पूर्ण हो सकता है और आपको ऐसा ज्ञान और प्रसिद्धि उपलब्ध करायेगा जो सुनने के योग्य होती है। इन्द्र के द्वारा अपने संकल्पों की रक्षा का ही यह परिणाम होता है।

जीवन में सार्थकता : –

सर्वोच्च अधिकारियों की शक्तियाँ और आशीर्वाद कैसे प्राप्त करें?

सर्वोच्च दिव्यता की शक्तियाँ और आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए योग्यता का पहला कदम है कि आपको एक इन्द्र होना चाहिए। एक इन्द्र के रूप में स्थापित होने के बाद ही आप अपने संकल्पों की रक्षा कर सकते हो। तभी जीवन के किसी भी क्षेत्र में सर्वोच्च अधिकारी एक इन्द्र को ही आशीर्वाद और शक्ति प्रदान करते हैं। माता-पिता भी ऐसे ही बच्चे पर विश्वास करते हैं और आशीर्वाद देते हैं जो एक संकल्पान इन्द्र होता है।

ऋग्वेद 1.51.11

मन्दिष्ट यदुशने काव्ये सचाँ इन्द्रो वडकू वडकुतराधि तिष्ठति ।
उग्रो यथि निरपः स्त्रोतसासृजद्वि शुष्णस्य दृंहिता ऐरयत्पुरः ॥ 11 ॥

मन्दिष्टः – आनन्द का अनुभव करने वाला

यत – जब

उशने – सबके द्वारा कामना योग्य

काव्ये – अपनी सर्वोच्च कविता में

सचान् – अपने साथ

इन्द्रः – परमात्मा, सूर्य, महान् राजा, इन्द्रियों का नियंत्रक

वडकू – कुटिल

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



वडकुतरा – कुटिल के ऊपर
 अधि तिष्ठति – नियंत्रण करता है
 उग्रः – उग्र, सूर्य
 ययिम् – मार्ग, मेघ
 निः – निश्चित रूप से
 अपः – कार्य, जल
 स्त्रोतसा – मूल स्रोत के साथ
 असृजत – उत्पन्न करता है, जोड़ता है
 (वि – एरयत से पूर्व लगाकर)
 शुष्णास्य – अहंकार और क्रोध का, शुष्कता का
 दृंहिता – सुदृढ़
 (एरयत – वि एरयत) विशेष रूप से कंपित करता है
 पुरः – नगर, किले।

व्याख्या :-

दिव्य कविता के आनन्द की अनुभूति किसको होती है?
 दिव्य सम्पर्क का क्या परिणाम होता है?

ऋग्वेद 1.51.9 तथा 1.51.10 के अनुसार, अपने संकल्पों की रक्षा करते हुए जब कोई व्यक्ति स्वयं को इन्द्र के रूप में स्थापित कर लेता है तो वह उस सर्वोच्च और सबके द्वारा कामना किये जाने योग्य दिव्य कविता के आनन्द की अनुभूति प्राप्त करता है।

- (क) वह धूर्तों से भी धूर्त लोगों पर नियंत्रण कर लेता है।
- (ख) अपने मार्ग पर कार्य करते हुए वह निश्चित रूप से उग्र होता है।
- (ग) वह स्वयं को और अपने कार्यों को मूल स्रोत के साथ संयुक्त करता है।
- (घ) वह अहंकार और क्रोध की मजबूत पकड़ के ऊपर आरुढ़ होता है।

जीवन में सार्थकता :-

अपने सर्वोच्च अधिकारी के साथ लगातार सम्पर्क बनाये रखने के क्या परिणाम होते हैं?

जो भी व्यक्ति अपने सर्वोच्च अधिकारी के आशीर्वाद और आनन्दमयी संगति का अधिकारी बनता है, उसमें निम्न लक्षण आने स्वाभाविक होते हैं –

- (क) वह धूर्त मनों पर नियंत्रण करने के लिए योग्य और अधिकृत होता है।
- (ख) वह अपने कार्य बिना चुनौती के दृढ़ संकल्पों के साथ पूरे करता है।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

- (ग) वह अपने कार्यों को सदैव सर्वोच्च अधिकारियों के सम्पर्क में रखता है।
(घ) वह सफलतापूर्वक अपने अहंकार और क्रोध पर नियंत्रण स्थापित करता है।

ऋग्वेद 1.51.12

आ स्मा रथं वृषपाणेषु तिष्ठसि शार्यातस्य प्रभृता येषु मन्दसे।
इन्द्र यथा सुतासोमेषु चाकनोऽनर्वाणं श्लोकमा रोहसे दिवि ॥ 12 ॥

(आ – तिष्ठसि से पूर्व लगाकर)

स्म – निश्चित रूप से

रथम् – शरीर रूपी रथ को

वृषपाणेषु – प्रकृति के शुभ गुणों का पान करने के लिए

(तिष्ठसि – आ तिष्ठसि) आप शासन करो

शार्यातस्य – बहादुर लोगों के जीवन में

प्रभृता – धारण होते हो

येषु – उसके साथ

मन्दसे – हर्ष का अनुभव करते हो

इन्द्र – इन्द्रियों का नियंत्रक

यथा – जैसे कि

सुतासोमेषु – उत्पन्न हुए इन शुभ गुणों के लिए

चाकनः – कामना करते हैं

अनर्वाणम् – नष्ट न होने योग्य

श्लोकमा – यश

आरोहसे – प्राप्त करता है

दिवि – प्रकाश।

व्याख्या :-

परमात्मा किस लक्ष्य से मानव शरीर पर शासन करते हैं?

निश्चित रूप से आप इस शरीर रथ पर शासन करते हो जिससे आप दिव्य शुभ गुणों का पान कर सको। जब यह दिव्य शुभ गुण एक बहादुर व्यक्ति के जीवन में धारण होते हैं और स्थापित हो जाते हैं तो आप प्रसन्न होते हो।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

जैसे एक इन्द्रियों का नियंत्रक इन शुभ गुणों की कामना करता है जो नाश रहित हों तो आपकी प्रशंसा होती है और ज्ञान का प्रकाश बढ़ता है।

जीवन में सार्थकता :-

शुभ गुण और वैदिक विवेक क्या उपलब्ध करवाते हैं?

परमात्मा तथा आत्मा दोनों की मुख्य कामना यही होती है कि वे दिव्य प्राकृतिक शुभ गुणों की स्थापना और उनका शासन इस शरीर रथ पर देखना चाहते हैं। प्रत्येक मनुष्य निश्चित रूप से शुभ गुणों और वैदिक मूल्यों पर प्रसन्न होता है, क्योंकि इससे उसे महान् प्रसिद्धि तथा सत्य ज्ञान का प्रकाश मिलता है। यही मानव जीवन का सारगर्भित लक्ष्य और परमात्मा के प्रकाश की अनुभूति प्राप्त करने की मूल योग्यता है कि दिव्य शुभ गुण और वैदिक मूल्य हमारे जीवन पर शासन करें।

ऋग्वेद 1.51.13

अददा अर्भा महते वचस्यवे कक्षीवते वृचयामिन्द्र सुन्वते ।
मेनाभवो वृषणश्वस्य सुक्रतो विश्वेता ते सवनेषु प्रवाच्या ॥ 13 ॥

अददा – दिया

अर्भाम् – छोटा ज्ञान (छोटा बनने के लिए ज्ञान)

महान् वचस्यवे – उनके लिए जो ज्ञान की महान् कामना करते हैं

कक्षीवते – विशेषज्ञता के लिए

वृचयाम् – विशेषज्ञ ज्ञान

इन्द्र – परमात्मा, सूर्य, महान् राजा, इन्द्रियों का नियंत्रक

सुन्वते – उपदेशक के लिए

मेना – समर्पित ज्ञान

अभवः – होवो

वृषणश्वस्य – शक्तिशाली के लिए

सुक्रतो – उत्तम कार्य करते हुए

विश्व इत – ये सब

ते – आपके

सवनेषु – जीवन की सभी अवस्थाओं में

प्रवाच्या – अच्छे प्रकार से प्रवचन किये गये।

व्याख्या :-

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

ज्ञान के भिन्न-भिन्न स्तरों को प्राप्त करने के लिए जीवन की तीन अवस्थाएँ कौन सी हैं?

जीवन की तीन अवस्थाएँ तथा उनके अनुसार ज्ञान के तीन स्तर इस मन्त्र में इस प्रकार अभिव्यक्त किये गये हैं।

(क) ब्रह्मचारी जीवन में ज्ञान की महान् इच्छा होती है। इस अवस्था में छोटा ज्ञान दिया जाता है अर्थात् छोटे होने का ज्ञान, वृद्ध लोगों के लिए विनम्र तथा सम्मान सहित व्यवहार का ज्ञान।

(ख) गृहस्थ जीवन में प्रत्येक व्यक्ति विशेषज्ञ ज्ञान प्राप्त करता है।

(ग) वानप्रस्थ तथा संन्यास आश्रम में व्यक्ति को धार्मिक ज्ञान की आवश्यकता होती है। जिससे वह दिव्य शक्तियाँ प्राप्त कर सके।

अतः जीवन की सभी अवस्थाओं में लोगों को उत्तम कार्यों के लिए उत्तम ज्ञान दिया जाता है।

जीवन में सार्थकता : —

परमात्मा किस प्रकार हमारे ज्ञान का स्तर निर्धारित करते हैं?

परमात्मा सबको अपनी-अपनी परिपक्वता के स्तर पर ज्ञान देते हैं। हर स्तर पर हम ज्ञान में प्रगति प्राप्त करते हैं — छोटा ज्ञान, विशेषज्ञता वाला ज्ञान और धार्मिक ज्ञान।

(क) छोटे ज्ञान से हम छोटे और विनम्र रहकर सीखते हैं।

(ख) विशेषज्ञ ज्ञान से हम समाज की जिम्मेदारी को धारण करते हैं।

(ग) धार्मिक ज्ञान से हम अपने जीवन को परमात्मा के प्रति समर्पित करते हैं।

ऋग्वेद 1.51.14

इन्द्रो अश्रायि सुध्यो निरेके पञ्चेषु स्तोमो दुर्यो न यूपः।
अश्वयुर्गव्यू रथयुर्वसूयुरिन्द्र इद्रायः क्षयति प्रयन्ता ॥ 14 ॥

इन्द्रः — बुराईयों और शत्रुओं का नाशक

अश्रायि — स्वीकार किया गया

सुध्यः — उत्तम ध्यान के लिए

निरेके — बुराईयों और रोगों को रोकने के लिए, बिना किसी संघि के

पञ्चेषु — श्रद्धालुओं के जीवन में

स्तोमः — परमात्मा का गुणगान करने वाले

दुर्यः — द्वारों में

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

न – जैसे

यूपः – स्तम्भ

अश्वयुः – अश्वों (कर्मन्द्रियों) का नियंत्रक

गव्युः – गौवों (ज्ञानेन्द्रियों) का नियंत्रक

रथयुः – रथों (शरीर) का नियंत्रक और देने वाला

वसूयुः – निवास का देने वाला

इन्द्रः – परमात्मा, सूर्य, महान् राजा, इन्द्रियों का नियंत्रक

इत – वह

रायः – सभी सम्पदाओं का

क्षयति – देने वाला और स्वामी

प्रयन्ता – हमारी योग्यता के अनुसार।

व्याख्या :-

सभी बुराईयों और शत्रुओं का नाशक कौन हैं?

परमात्मा सम्पदा का वितरण कैसे करते हैं?

इन्द्र, बुराईयों और शत्रुओं का नाशक, हमारे द्वारा स्वीकार किया जाता है। जिससे बिना किसी संदेह के वह हमारी बुराईयों और रोगों का नाश कर सके और हम ध्यान–साधना कर सकें।

जो लोग परमात्मा के श्रद्धालु हैं और पूजा करते हैं वे उनकी स्तुति का गान करते हैं। ऐसे लोग द्वारों के स्तम्भ के समान हैं।

इन्द्र अर्थात् परमात्मा अश्वों (कर्मन्द्रियों) का नियंत्रक है, गौवों (ज्ञानेन्द्रियों) का नियंत्रक है, इस रथ (शरीर) का नियंत्रक है, सभी को आवास देने वाला है और सभी सम्पदाओं का दाता और मालिक है। वह यह सब हमारे कर्म कोष अर्थात् हमारी योग्यता के अनुसार ही प्रदान करते हैं।

जीवन में सार्थकता :-

क्या हमें किसी भी वस्तु के लिए भगवान से प्रार्थना करनी चाहिए?

क्या भगवान की पूजा और भगवान से प्रेम करना आवश्यक है?

परमात्मा की पूजा और परमात्मा से प्रेम की तुलना द्वारों के स्तम्भों से की गई है। यदि द्वारों के कोई स्तम्भ न हों तो वास्तव में घर के अन्दर कोई द्वार ही नहीं होगा। ऐसा घर सुरक्षित नहीं होगा। जिस प्रकार स्तम्भ किसी द्वार का मुख्य आधार होते हैं, जो अवांछनीय तत्त्वों के प्रयोग को रोकता है। उसी प्रकार परमात्मा की पूजा तथा परमात्मा से प्रेम बुराईयों और शत्रुओं को हमसे दूर रखता है।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

परमात्मा हमारे पूर्व कर्मों के फल के रूप में हमें सब कुछ देते हैं। इसलिए हमें परमात्मा से न तो कुछ प्रार्थना करनी चाहिए और न ही कुछ मांगना चाहिए और न ही हमें परमात्मा की भवित तथा परमात्मा से प्रेम के मार्ग का त्याग करना चाहिए और न ही उसे भूलना चाहिए।

ऋग्वेद 1.51.15

इदं नमो वृषभाय स्वराजे सत्यशुभ्याय तवसेऽवाचि ।
अस्मिन्निन्द्र वृजने सर्ववीराः स्मत्सूरिभिस्तव शर्मन्तस्याम ॥ 15 ॥

इदम् – यह

नमः – नमन

वृषभाय – सुखों की वर्षा करने वाले के लिए

स्वराजे – स्व-प्रकाशमान

सत्यशुभ्याय – शाश्वत शक्ति वाला

तवसे – सभी प्रकार से अत्यन्त शक्तिशाली

अवाचि – कहा जाता है

अस्मिन् – हम

इन्द्र – परमात्मा, सूर्य, महान् राजा, इन्द्रियों का नियंत्रक

वृजने – इस (जीवन के) युद्ध में

सर्ववीराः – सम्पूर्ण शक्तिशाली

स्मत – उत्तम

सूरिभिः – विद्वानों की संगति में

तव – आपकी

शर्मन्त – शरण में, संगति में

स्याम – होवो, जिवो ।

व्याख्या :-

हमें अपना नमन किसको सम्बोधित करना चाहिए?

परमात्मा की शरण में किस प्रकार से जीना चाहिए?

नमन उसको किया जाता है जो निम्न लक्षणों वाला हो :-

(1) वृषभाय – सुखों की वर्षा करने वाले के लिए,

(2) स्वराजे – स्व-प्रकाशमान,

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

- (3) सत्यशुष्टाय – शाश्वत शक्ति वाला,
- (4) तवसे – सभी प्रकार से अत्यन्त शक्तिशाली।

जीवन की इस पद्धति के साथ हम आपकी शरण में रहना चाहते हैं, महान् इन्द्र की संगति में निम्न प्रकार से रहना चाहते हैं :–

- (1) सर्ववीरा: – सम्पूर्ण शक्तिशाली,
- (2) स्मत सूरिभिः: – उत्तम विद्वानों की संगति में।

जीवन में सार्थकता :

“संरक्षण प्राप्त करने के लिए स्तुति गान करना चाहिए।” – क्या यह सर्वमान्य सिद्धान्त है?

परमात्मा का स्तुति गान करना चाहिए जिससे उसकी विशेष, असीम और आन्तरिक शक्तियाँ हमरा संरक्षण कर सकें। परमात्मा का संरक्षण हम परमात्मा के उत्तम विद्वानों तथा निःस्वार्थ महान् श्रद्धालुओं की संगति में ही प्राप्त कर सकते हैं।

संरक्षण के लिए स्तुति गान परमात्मा का एक दिव्य आश्वासन है। यह सिद्धान्त स्वार्थी या अविद्वान् लोगों पर नहीं लगाया जा सकता, क्योंकि यदि उनके अपने हित खतरे में हों तो ऐसे लोग कभी भी अपने सहयोगियों और हित चिन्तकों का नाश करने में भी संकोच नहीं करते।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

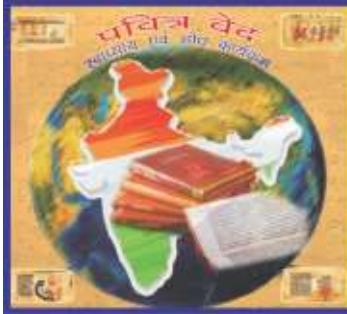
स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

आज्ञा

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

ऋग्वेद मण्डल-1 सूक्त 52

ऋग्वेद 1.52.1

त्यंसुमेषंमहयास्वर्विदं शतं यस्य सुभ्वः साक्मीरते ।
अत्यं न वाजंहवनस्यदंरथमेन्द्रंवृत्यामवसेसुवृक्तिभिः ॥

(त्यम्) यह (सुमेषम्) उत्तम गतिविधियों और सुखों की वर्षा करने वाले (महया) महिमागान, पूजा (स्वर्विदम्) आत्मा के प्रकाश को देने वाला (शतम्) सैकड़ों (असंख्य) (यस्य) जिसमें (सुभ्वः) उत्तम स्तर वाला (साक्म्) इकट्ठे (ईरते) आगे बढ़ना, प्रगति करना (अत्यम्) यह रथ (शरीर) (न) जैसे (वाजम्) शक्ति का पुंज (हवनस्यदम्) सर्वोच्च दिव्य की पुकार पर सक्रिय होने वाला (रथम्) इस रथ को (इन्द्रम्) सर्वोच्च शक्ति परमात्मा को (वृत्याम्) आवृत करता है (अवसे) संरक्षण के लिए (सुवृक्तिभिः) पाप और दुःख ।

व्याख्या :-

उत्तम गतिविधियों की वर्षा करने वाला कौन है?

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

आत्मा के लिए प्रकाश देने वाला कौन है?

उत्तम गतिविधियों तथा प्रसन्नता की वर्षा करने वाले की महिमागान, पूजा तथा उसका आह्वान करें जो आत्मा का प्रकाश प्रदान करता है, जिसमें उत्तम स्तर वाले सैकड़ों लोग अपने जीवन में आगे बढ़ते हैं और उन्नति करते हैं।

यह शरीर रथ शक्ति के एक पुंज की तरह है और सर्वोच्च दिव्य शक्ति परमात्मा के अनुसार ही इसे सक्रिय रखा जाना चाहिए। यह शरीर रथ सर्वोच्च सत्ता अर्थात् परमात्मा के आस-पास ही रहे जिससे इसका संरक्षण होता रहे और तापों तथा कष्टों का नाश होता रहे। इसका अभिप्राय है कि हमें चेतन जीवन के साथ-साथ दिव्य शक्ति की संगति में रहना चाहिए।

जीवन में सार्थकता : —

पापों और दुःखों के नाश तथा अपने संरक्षण के लिए इस शरीर रथ का उपयोग कैसे करें?

हमें यह अनुभूति रखनी चाहिए कि हमारे सभी कार्यों और उनके फलों की वर्षा करने वाला हमारे व्यक्तिगत जीवन के प्रकाश का मूल स्रोत है। यह शक्ति का ऐसा पुंज है जो हमें शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक शक्तियों की पूर्ति करता है। हमें अपने अन्दर ही उस स्रोत की पूजा और महिमा गानी चाहिए जिससे हमारा सर्वत्र संरक्षण हो सके और हम पापों तथा दुःखों से मुक्त रहें।

अतः यह हमारा प्राथमिक कार्य होना चाहिए कि हम उस सर्वोच्च शक्ति पुंज की अपने अन्दर ही पूजा करें। जो लोग उच्च चेतना में जीते हैं वे इसी पथ का अनुसरण करते हैं। इससे हमें आध्यात्मिक सफलता के साथ-साथ पापमुक्त और दुःखमुक्त जीवन प्राप्त होगा। शक्ति के उस स्रोत को ही अपनी सभी गतिविधियों का केन्द्र बनाना चाहिए। हमारे जीवन में यह अनुभूति शाश्वत रहनी चाहिए कि “मैं कर्ता नहीं हूँ, परमात्मा ही सभी कार्यों का कर्ता तथा प्रेरक है।”

ऋग्वेद 1.52.2

स पर्वतो न धरुणेष्वच्युतः सहस्त्रमूतिस्तविषीषुवावृधे ।
इन्द्रो यद् वृत्रमवधीनदीवृतमुज्ज्ञाणांसिजुर्हृषाणोअन्धसा ॥

(स:) वह (पर्वतः) पर्वत (न) जैसे (धरुणेषु) व्रतो में (अच्युतः) स्थिर (सहस्त्रम) हजारों प्रकार से (ऊति) संरक्षण करता है (तविषीषु) बल (वावृधे) बढ़ाता है (इन्द्रः) इन्द्रियों का नियंत्रक (यत) जो (वृत्रम) मन की वृत्तियाँ (अवधीत) नष्ट करता है (नदीवृतम) नदियों में बहते हुए, तरल करना (उज्जन्) नियंत्रण में रखना (अर्णासि) वीर्य रस (जुर्हृषाणः) आनन्दित अनुभव करता है (अन्धसा) भोजन आदि पदार्थों के साथ।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

व्याख्या :-

अपने संकल्पों में स्थिरता तथा बल कैसे प्राप्त करें?

इन्द्र पुरुष का जीवन कैसा होता है?

एक बार जब शरीर रथ, सभी कालों में तथा सभी कार्यों में, सर्वोच्च शक्ति, परमात्मा के आस-पास रहता है तो वह अपने संकल्पों में पर्वतों की तरह स्थिर होकर अपनी शक्ति को बढ़ाता जाता है जिससे हजारों प्रकार से वह स्वयं को संरक्षित कर सके। ऐसा इन्द्र अर्थात् इन्द्रियों का नियंत्रक जो अपने चित्त के आवर्णों का नाश कर लेता है तो वह उन आवर्णों को नदी में बहने के लिए मजबूर कर देता है और अपने मूल्यवान तरल पदार्थ को नियंत्रण में रखता है। ऐसा व्यक्ति उन सभी साधनों के साथ प्रसन्न रहता है जो उसके पास उपलब्ध है।

जीवन में सार्थकता :-

अपने चेतन स्तर को ऊपर कैसे उठायें?

जीवन का यह मूल ध्येय है कि अपने जीवन की सभी गतिविधियों के केन्द्र में सर्वोच्च शक्ति, परमात्मा को ही रखा जाये। हमें अपनी चेतना का विकास करते हुए यह अनुभूति रखनी चाहिए कि सर्वोच्च शक्ति हमेशा बाहर से हमें घेर कर रहती है और हमारे द्वारा वह अन्दर धिरी रहती है। क्योंकि वह सभी गतिविधियों में सर्वोच्च प्रेरक है। अतः वह निश्चित रूप से सभी कार्यों में हमारी स्थिरता और शक्ति सुनिश्चित करेगा। यही वह विकसित चेतना है जो हमारी चेतना के स्तर को भी सर्वोच्च ऊर्जा के स्तर तक ले जाती है। हमें तो सदैव एक ही विचार पर ध्यान केन्द्रित करना है कि – ‘मैं कर्ता नहीं हूँ, परमात्मा ही सभी कार्यों का कर्ता तथा प्रेरक है।’

ऋग्वेद 1.52.3

स हि द्वरो द्वरिषुव्र ऊधनिचन्द्रबुयध्नोमदवृद्धोमनीषिभिः ।

इन्द्रंतमहवेस्वपस्यया धियामंहिष्ठरातिं स हिप्रिरन्धसः ॥

(स:) वह (हि) निश्चित रूप से (द्वरः) अपनी छाया में ढकता है (द्वरिषु) सभी कठिनाईयों और अन्धकार में (व्र) व्याप्त (ऊधनि) हमारे हृदय में (चन्द्रबुयध्नो) सभी आनन्द का स्रोत (मदवृद्धो) आनन्द बढ़ाता है (मनीषिभिः) उनमें जो मन, हृदय और विचार में पूर्ण हैं (इन्द्रम) इन्द्र को (तम) वह (अहवे) पुकारते हैं, बुलाते हैं (स्वपस्यया) उत्तम कार्य करके (धिया) मन और बुद्धि के साथ (मंहिष्ठरातिम) उत्तम दान के द्वारा (स:) वह (हि) केवल (पप्रि अन्धसः) समस्त भोजन आदि।

व्याख्या :-

इन्द्र पुरुष सर्वोच्च इन्द्र को क्यों पुकारता है?

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

इन्द्र पुरुष के लिए सर्वोच्च इन्द्र क्या करता है?

(क) वह निश्चित रूप से सभी कठिनाईयों और अन्धकार के समय में अपनी छाया के नीचे हमारा आवरण (संरक्षण) करता है।

(ख) वह हमारे हृदय में व्यापक है।

(ग) सभी प्रकार के आनन्द का वह स्रोत है। जो लोग अपने मन, हृदय और सोच विचार में पूर्ण होते हैं, उनमें वह आनन्द की वृद्धि करता है। मैं अपने मन और चित्त के द्वारा चेतना पूर्वक तथा उत्तम दान और कल्याण के लिए किये गये उत्तम कार्यों के द्वारा इन्द्र का आह्वान करता हूँ। वही हमें सभी प्रकार के भोजन और पदार्थों से पूर्ण करता है।

जीवन में सार्थकता : —

मनीषी अर्थात् उच्च चेतना में रहने वाला व्यक्ति कौन है?

वास्तविक दानी और कर्ता कौन है?

यह मन्त्र इस विचार पर केन्द्रित है कि उच्च चेतना में जीने वाले व्यक्ति के लिए परमात्मा क्या आश्वासन देता है।

(क) परमात्मा कठिनाईयों और अन्धकार के सभी कालों में अपना संरक्षण आवरण प्रदान करता है।

(ख) परमात्मा ऐसे व्यक्ति के हृदय में व्याप्त होता है जो उच्च चेतना के स्तर पर जीते हैं।

(ग) परमात्मा सभी प्रकार के आनन्द का स्रोत है और मनीषी अर्थात् मननशील लोगों के मन, हृदय तथा उच्च चेतना के सोच-विचार में रहने वाले लोगों में इस आनन्द को बढ़ाता रहता है। एक मनीषी बनने के लिए जीवन के दो पहलुओं पर ध्यान रखना चाहिए।

(1) 'स्वपस्या धिया' बनो अर्थात् मन तथा चित्त के साथ सभी कार्य करो। इसका अभिप्राय है कि हमें अपने कार्यों के प्रति चेतन रहना चाहिए।

(2) इस चेतना के साथ उत्तम दान करने चाहिए कि केवल परमात्मा ही हमें सभी भोजन और पदार्थों में पूर्ण करता है।

अतः सभी दानों तथा कार्यों में हमारे अन्दर यह चेतना रहनी चाहिए कि वास्तविक दान देने वाला तथा कार्य करने वाला परमात्मा ही है।

ऋग्वेद 1.52.4

आ यंपृणन्तिदिविसद्मबर्हिषः समुद्रं न सुभ्वः स्वा अभिष्टयः।

तं वृत्रहत्येऽनुतस्थुरुतयः शुष्माइन्द्रमवाताऽहृतप्सवः ॥

(आ – पृणन्ति से पूर्व लगाकर) (यम्) जिसको (पृणन्ति – आ पृणन्ति) स्वयं पूर्ण करता है, प्रसन्न करता है, शामिल होता है (दिवि) प्रकाशवान् होने पर (सद्मबर्हिषः) उत्तम स्थान, उत्तम स्तर में बैठकर (समुद्रम्) समुद्र को (न) जैसे (सुभ्वः) वे लोग जिनका उत्तम स्तर होता है (स्वा:) अपने आप (अभिष्टयः) इच्छित लक्ष्य (तम्) उसको (वृत्रहत्ये) मन की वृत्तियों का नाशक (अनु तस्थु) लक्ष्य की तरह निर्धारित

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

(उत्तयः) संरक्षित करने वाला (शुष्मा) शत्रुओं को नष्ट करने की शक्ति के साथ (इन्द्रम्) सर्वोच्च इन्द्र (अवाता:) नियंत्रित वायु में स्थिर (अहृतप्सवः) बिना किसी कुटिलता के।

व्याख्या :-

प्रकाशवान होने पर क्या होता है?

आध्यात्मिक लक्ष्यों की प्राप्ति के बाद कौन से दिव्य लक्षण प्राप्त होते हैं?

जब वह आध्यात्मिकता के उत्तम स्तर पर बैठे हुए और प्रकाशवान होने वाले एक भक्त को पूर्ण करता है, प्रसन्न करता है और उसके साथ शामिल रहता है तो वह व्यक्ति अपने इच्छित लक्ष्य के समुद्र में स्वयं को समाहित हुआ समझ लेता है।

वह इन्द्र पुरुष अपनी चित्त वृत्तियों का नाश करने के बाद अपने निर्धारित लक्ष्य को प्राप्त कर लेता है और दिव्य लक्षण धारण करता है, जैसे :-

(क) हर प्रकार से स्वयं को सुरक्षित रखना।

(ख) शत्रु वृत्तियों को नष्ट करने की शक्ति रखना।

(ग) कुम्भक वायु में स्थित।

(घ) कार्यों और मन में किसी कुटिलता के बिना।

जीवन में सार्थकता :-

जब हमें उत्तम अवस्था या शक्ति प्राप्त होती है तो हमें क्या करना चाहिए?

भौतिकवादी जीवन में भी जब किसी को नया स्तर और नई शक्तियाँ प्राप्त होती हैं तो उसे यह सुनिश्चित करना चाहिए कि सर्वोच्च अधिकारी से संयुक्त होकर ही वह उत्तम अवस्था में है। किसी भी अवस्था में उसे अपनी व्यक्तिगत वृत्तियों और प्रभावों को अपने ऊपर शासन नहीं करने देना चाहिए। प्राप्त शक्तियों और अवस्था के साथ उसे यह सुनिश्चित करना चाहिए कि -

(1) वह हर प्रकार से स्वयं को संरक्षित रखता है।

(2) उसके पास आन्तरिक और बाहरी समस्त शत्रु ताकतों को नष्ट करने की शक्ति है।

(3) उसे अपने सभी कार्य कुम्भक अवस्था में करने चाहिए, अर्थात् अपने कार्य पर पूरा ध्यान लगाना चाहिए।

(4) उसे अपने अन्दर कुटिल विचारों को प्रवेश नहीं करने देना चाहिए।

इन्हीं लक्षणों के साथ वह प्राप्त किये गये उत्तम स्तर को बनाकर रख सकता है और उच्च अधिकारियों के साथ एक बनकर रह सकता है।

ऋग्वेद 1.52.5

अभिस्ववृष्टिंमदेऽस्य युध्यतोरधीरिवप्रवणेसस्तुरुतयः।

इन्द्रो यद्वज्जी धृष्माणोऽन्धसाभिनद् वलस्य परिधीरिव त्रितः ॥

(अभि) की ओर (स्ववृष्टिम्) इच्छित वर्षा, स्व की अनुभूति (मदे) उस प्रसन्नता में (अस्य) यह (अनुभूति प्राप्त करने वाला) (युध्यतः) युद्ध करते हुए (बुराईयों, इच्छाओं और अहकार के विरुद्ध) (रधी) गति के

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

साथ बहते हुए (इव) जैसे कि (प्रवणे) निम्न भूमि की ओर (सस्त्रुः) प्राप्त होते हैं (उतयः) सभी संरक्षण (इन्द्रः) इन्द्र पुरुष (यत्) जब (वज्री) वज्र के साथ सक्रिय और सुसज्जित (धृषमाणः) शत्रुओं का नाश करते हुए (अन्धसा) शुभ गुणों का रक्षण करने के साथ (भिनतः) वध करता है, नाश करता है (वलस्य) वृत्तियों का (परिधीन) बाहरी सीमाओं का (इव) जैसे (त्रितः) सभी तीनों।

व्याख्या :-

जब एक साधक परमात्मा की अनुभूति के मार्ग पर अग्रसर होता है तो क्या होता है? बाहरी मन के आवर्णों को नष्ट कैसे करें?

जब एक साधक अपनी इच्छित वर्षा अर्थात् आत्म अनुभूति की तरफ अग्रसर होता है तो उस प्रसन्नता में वह अहंकार, इच्छाओं और बुराईयों के साथ संघर्ष करते हुए आगे बढ़ता जाता है। वह परमात्मा का संरक्षण इस प्रकार प्राप्त करता है जैसे निचली भूमियों पर आती हुई नदी अपनी गति के बावजूद भी संरक्षित रहती है।

जब एक इन्द्र पुरुष अपने हथियारों (आध्यात्मिक दिव्य लक्षणों) के साथ सक्रिय होता है और अपने सद्गुणों का संरक्षण करते हुए अपने शत्रुओं का नाश करता है तो वह मन के बाहरी आवर्णों जैसे – काम, क्रोध, लोभ तथा मोह का भी नाश कर देता है और अपनी योग्यता त्रितः अर्थात् ज्ञान, कर्म और उपासना में सिद्ध कर देता है।

जीवन जीवन में सार्थकता :-

इच्छित लक्ष्य प्राप्त करने की यात्रा में सबसे महत्त्वपूर्ण पहलु क्या होता है?

इच्छित लक्ष्य प्राप्त करने की यात्रा में जीवन का सबसे महत्त्वपूर्ण लक्ष्य अपने मार्ग से सभी बाधाओं को दूर करके दिव्य प्रसन्नता प्राप्त करना होता है। इसी प्रसन्नता और एक बिन्दु रूपी प्रगति के साथ कोई व्यक्ति अपने उच्चाधिकारियों का संरक्षण प्राप्त कर सकता है। यह अपने इच्छित स्तर को प्राप्त करने के लिए एक उच्च स्तर का आत्मविश्वास है।

मन के बाहरी आवरण चार प्रकार के होते हैं :— काम, क्रोध, लोभ और मोह। जो व्यक्ति अपने इच्छित स्तर की तरफ प्रगतिशील होता है वह सरलता पूर्वक इन आवर्णों को नष्ट करके आन्तरिक उच्च चेतना के साथ कार्य करता है। इस प्रकार वह ज्ञान, कर्म और उपासना में ही दक्षता प्राप्त कर लेता है।

ऋग्वेद 1.52.6

परीं घृणाचरतितित्विषे शवोऽ पोवृत्वीरजसोबुध्नमाशयत् ।
वृत्रस्य यत्प्रवणोदुर्गृभिश्वनोनिजघन्थहन्वोरिन्द्रतन्यतुम् ॥

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

(परी – चरति से पूर्व लगाकर) (धृणा) ज्ञान का प्रकाश (चरति – परी चरति) सभी दिशाओं में व्याप्त (तितिष्ठे) चमक के लिए (शवः) बल का (अपः) सभी प्रजाओं को, लोगों को (वृत्त्वी) ज्ञान को आवृत करता है (रजसः) गहरे आकाश में (बुध्नम्) शरीर का (आशयत) स्थापित (वृत्रस्य) बादलों का, मन की वृत्तियों का (यत्) जो (प्रवणे) शक्तिशाली प्रभाव (दुर्गृभिश्वनः) दुराग्रह से प्राप्त (निजघन्थ) प्रहार करता है (हन्चोः) मुख के हिस्सों पर (इन्द्रः) इन्द्रियों का नियंत्रक (तन्यतुम्) दिव्य प्रभु पर ध्यान करके।

व्याख्या :-

एक इन्द्र को अपने मन की वृत्तियां नष्ट करने की आवश्यकता क्यों होती है?

वृत्तियाँ नष्ट होने के बाद क्या होता है?

जब एक इन्द्र अर्थात् इन्द्रियों का नियंत्रक, दिव्य शक्ति पर अपना ध्यान एकाग्र करने के साथ मन की वृत्तियों अर्थात् बादलों के मुख पर एक प्रबल प्रहार करता है तो इस प्रकार उन वृत्तियों पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ता है। यह वृत्तियाँ (अहंकार, इच्छाएँ और तरह–तरह के विचार) ज्ञान को ढंक लेते हैं और गहरे हृदय में स्थापित हो जाते हैं। परन्तु एक बार जब इन वृत्तियों को नष्ट कर दिया जाये तो ज्ञान का प्रकाश चारों तरफ व्याप्त हो जाता है जिससे ऐसे इन्द्र की चमक और उसका बल दिखाई देने लगता है।

जीवन में सार्थकता :-

अपने लक्ष्य पर एक बिन्दु की तरह ध्यान केन्द्रित कैसे करें?

योग दर्शन (1.6) के अनुसार मन की वृत्तियों की उत्पत्ति के पांच मुख्य कारण हैं :— प्रमाण, विप्रय, विकल्प, निद्रा और स्मृति अर्थात् सही ज्ञान, गलत ज्ञान, काल्पनिक ज्ञान, कोई ज्ञान नहीं और पूर्वकाल का ज्ञान।

इन वृत्तियों को नष्ट करने के कई उपाय हैं। प्रथम तथा प्रमुख उपाय है — अभ्यास तथा वैराग्य। जीवन को अहंकारहित रूप से जीना अभ्यास होता है और इच्छाओं से मुक्ति वैराग्य होता है। यह तभी सम्भव है जब एक व्यक्ति तन्यतुम् बनकर जीये। अर्थात् दिव्यता पर ध्यान एकाग्र करे।

योग दर्शन (1.23) ईश्वर प्रणिधानात्वा की व्याख्या करता है अर्थात् परमात्मा के प्रति पूर्ण समर्पण, श्रद्धा और पूजा तब तक चलती रहे जब तक परमात्मा के साथ एकात्मता का अनुभव न होने लगे। अतः हमें अपने लक्ष्य पर एक बिन्दु की तरह ध्यान देना चाहिए और लक्ष्य की तरफ बढ़ते हुए किसी प्रकार से ध्यान इधर–उधर न जाये। यह सिद्धान्त आध्यात्मिक मार्ग के साथ–साथ सांसारिक भौतिक मार्ग पर भी लागू होता है।

ऋग्वेद 1.52.7

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

हृदं न हित्वान्यृष्ट्यूर्मयोब्रह्माणीन्द्रतव यानि वर्धना।
त्वष्टाचिते युज्यंवावृधे शवस्ततक्ष वज्रमभिभूत्योजसम् ॥

(हृदम्) समुद्र को, हृदय को (न) जैसे कि (हि) निश्चित रूप से (त्वा) आपको (परमात्मा को) (न्यृष्टिं) विनम्रता पूर्वक प्राप्त होते हैं (ऊर्मयः) झरना, तरंगे (ब्रह्माणि) प्रभु की महिमा (इन्द्र) इन्द्रियों का नियंत्रक (तव) आपको (यानि) जो (वर्धना) प्रगति के कारण (त्वष्टा) आपका (परमात्मा का) (चित्त) निश्चित रूप से (ते) आपके (युज्यम्) सक्षम, जुड़े हुए (वावृधे) बढ़ाते हैं (शवः) बल (तत्क्ष) बनाते हैं (वज्रम्) वज्र (अभिभूत्योजसम्) पराजित करने में सक्षम ।

व्याख्या :-

हमें परमात्मा का महिमागान क्यों करना चाहिए?

जिस प्रकार समुद्र और नदियों में से निकलने वाली तरंगे पूरी विनम्रता के साथ उठती हैं, जिस प्रकार हृदय में उठने वाली तरंगे आपकी प्रगति का कारण बनती हैं, उसी प्रकार परमात्मा के प्रति महिमागान भी विनम्रता के साथ ही स्वीकार होगा और आपकी प्रगति का कारण बनेगा ।

हे इन्द्र! आपके बल की योग्यता और परमात्मा के साथ आपकी सम्बद्धता अवश्य ही आपके बल को बढ़ायेगी और शत्रुओं को पराजित करने तथा बाधाओं को दूर करने के लिए एक शक्तिशाली वज्र बनेगी ।

जीवन में सार्थकता :-

हमें अपने वृद्धजनों का महिमागान क्यों करना चाहिए?

परमात्मा के महिमागान के लिए प्रत्येक हृदय को तरंगित होना चाहिए और उस मूल सार्वभौम शक्ति के साथ ऐसे जुड़ना चाहिए जैसे तरंगे समुद्र में मिलने के लिए ही उठती हैं ।

परमात्मा की महिमा का गान जितना अधिक किया जाता है उतना ही अधिक वह मूल शक्ति के साथ जुड़ता जाता है जिसके परिणामस्वरूप उसे जीवन में हर प्रकार की प्रगति प्राप्त होती है । इस प्रकार के जुड़ाव और प्रगति के साथ-साथ जीवन की बाधाओं को पराजित करने के लिए उसके वज्र भी शक्तिशाली होते जाते हैं ।

हमें अपने सभी वृद्धजनों तथा उच्चाधिकारियों का भी महिमागान करना चाहिए । यह महिमागान उनके साथ हमारे सम्बन्धों को मजबूत करेगा और हमारी प्रगति को सुनिश्चित करेगा ।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



ऋग्वेद 1.52.8

जघन्वाँ उ हरिभि: संभृतक्रतविन्द्र वृत्रं मनुषेगातुयन्पः ।
अयच्छथाबाहवोर्वज्ञमायसमधारयोदिव्यासूर्यं दृशे ॥

(जघन्वान्) मारता है, नष्ट करता है (उ) निश्चित रूप से (हरिभि:) किरणों से, कर्मन्दियों की शक्ति से (संभृतक्रतो) कर्म करने और ज्ञान प्राप्त करने के व्रतों का धारक (इन्द्र) सूर्य, इन्द्रियों का नियंत्रक (वृत्रम्) मेघ, मन की वृत्तियाँ (मनुषे) परमात्मा पर मनन के लिए (गातुयन्) पथ का इच्छुक (अप:) कार्य, जल (अयच्छथा:) प्राप्त करता है (बाहवो:) गतिविधियों में लगी बांहों में (वज्रम्) वज्र (आयसम्) लोहे के बने हुए (धारय:) धारण करता है (दिवि) मन में, अन्तरिक्ष में (सूर्यम्) सूर्य को (दृशे) प्रकाश देखने के लिए, प्रकाशवान् होने के लिए ।

व्याख्या :-

प्रकाशवान् होने का मार्ग क्या है?

सूर्य निश्चित रूप से अपनी किरणों के द्वारा बादलों को नष्ट कर देता है, क्योंकि सूर्य का संकल्प है कि समूचे विश्व तक उसने अपनी ऊर्जा और प्रकाश पहुंचाना है और वह अपने पथ पर अग्रसर होने के लिए दृढ़ है। इस प्रकार उसकी किरणों के पास एक लौह क्षमता पैदा हो जाती है जिससे वे अपना प्रकाश सारे विश्व तक पहुंचा पाती हैं।

एक इन्द्रियों का नियंत्रक अपनी कर्मन्दियों की शक्ति से अपने मन की वृत्तियों का नाश कर देता है, क्योंकि वह कर्म करने और ज्ञान प्राप्त करने की इच्छा के साथ अपने मार्ग पर चलने के लिए दृढ़ संकल्पित है। अतः उसकी बांहों में भी लौह क्षमता आ जाती है जिससे वह अपना प्रकाश सबके कल्याण के लिए विस्तृत कर पाता है।

जीवन में सार्थकता :-

व्यक्तित्व के पूर्ण विकास का मार्ग क्या है?

मन की वृत्तियाँ को मारकर सबके कल्याण के लिए प्रकाशवान् होना – इस सिद्धान्त को कैसे समझा जाये?

व्यक्तित्व विकास के स्तर को प्राप्त करने के लिए केवल चार कदम हैं :-

- (क) मन की वृत्तियों का नाश करो।
- (ख) दूसरों के कल्याण का दायित्व पूरा करो।
- (ग) कर्मन्दियों के लिए लौह शक्ति पैदा करो।
- (घ) प्रकाशवान् की अवस्था अर्थात् एक पूर्ण व्यक्तित्व प्राप्त करो।

हमारे जीवन की सभी गतिविधियों तथा मूल शक्ति का प्रकाश प्राप्त करने में प्रथम बाधा मन की वृत्तियाँ ही हैं। अतः सर्वप्रथम इन वृत्तियों का नाश करना चाहिए। तभी हम दूसरों के कल्याण के लिए

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

कोई भी कार्य कर पायेंगे। अन्त में हमें लौह रूपी शवितयाँ तथा प्रकाश प्राप्त होगा जिससे हम पूर्ण व्यवितत्व के रूप में विकसित हो पायेंगे।

ऋग्वेद 1.52.9

बृहत्स्वश्चन्द्रमवद्यदुक्थ्यै मकृण्वतभियसारोहणं दिवः।

यन्मानुषप्रधानाइन्द्रमूतयः स्वर्नृषाचोमरुतोऽमदन्नु ॥

(बृहत) बड़ा (स्वश्चन्द्रम) आत्म प्रकाश के साथ (अमवत) उत्तम ज्ञान, उत्तम मन (यत) जब (उक्थ्यम) प्रशंसनीय (परमात्मा) (अकृण्वत) स्थापित (हृदय में) (भियसा) भय से (रोहणम्) प्रगति के लिए (दिवः) दिव्य स्तर की ओर (प्रकाशवान, मुक्ति) (यत) जब (मानुष प्रधनः) मनुष्य के कल्याण के लिए (इन्द्रम्) इन्द्रियों का नियंत्रक (उत्तयाः) संरक्षण करता है (स्वः) स्वयं (नृषाचः) प्रगतिशील व्यक्ति (मरुतः) वायु (प्राण) (अमदन) हर्षित करता है (ननु) निश्चित रूप से।

व्याख्या :-

प्राण हमारे अन्दर आनन्द कब पैदा करते हैं?

जब इन्द्रियों का नियंत्रक प्रशंसनीय परमात्मा का स्व-प्रकाश उत्तम ज्ञान और उत्तम बल के साथ या तो भय के कारण या मुक्ति के दिव्य स्तर तक प्रगति करने की अभिलाषा के कारण अपने हृदय में स्थापित कर लेता है, जब वह अन्य लोगों के कल्याण के लिए अपने प्रगतिशील जीवन में आत्मा को संरक्षित कर लेता है, उसके बाद उसके प्राण (वायु) निश्चित रूप से उसके अन्दर आनन्द का कारण बनते हैं।

जीवन में सार्थकता :-

हृदय में परमात्मा को स्थापित करने के दो प्रधान कारण कौन से हैं?

जीवन में प्रगति का क्रम क्या है?

हमें परमात्मा को सत्य रूप में और सम्मान पूर्वक स्थापित करना चाहिए, इसके दो मुख्य कारण हैं – प्रथम, हम स्वयं को दुःखों के डर से बचा सकें और द्वितीय, हम मुक्ति के दिव्य स्तर तक प्रगति कर सकें।

परमात्मा को अपने हृदय में स्थापित करने के बाद व्यक्ति स्वयं को संरक्षित कर सकता है और दूसरों के कल्याण के लिए लाभकारी हो सकता है। तभी प्राण उसके लिए आनन्दकारी होंगे।

इस प्रकार जीवन में प्रगति का क्रम दो कदमों में दिखाई देता है – प्रथम, मन की वृत्तियों को खत्म करके एक विचार पर ध्यान देना चाहिए कि अपने अन्दर ही परमात्मा की अनुभूति की तरफ प्रगतिशील रहें। द्वितीय, स्वयं अर्थात् आत्मा को संरक्षित करें जिससे दूसरों का कल्याण हो सके।

ऐसा प्रगतिशील जीवन ही प्राणों के आनन्द की अनुभूति प्राप्त कर सकता है। उसी व्यक्ति के प्राण आनन्ददायक होते हैं जिसका जीवन अन्य लोगों के लिए लाभकारी होता है।

प्रगति का यह क्रम भौतिकवादी जीवन में भी समान रूप से लागू होता है। प्रथम, मन की वृत्तियों और बिखराव का नाश करे जिससे वह एक बिन्दु पर ध्यान केन्द्रित कर सके। द्वितीय, अपनी मूल

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

शक्ति का विकास करो जिससे अपनी आत्मा की रक्षा हो सके और दूसरों का कल्याण हो सके। जीवन में इन दो कदमों को सुनिश्चित करने के बाद ही कोई यह महसूस कर सकता है कि प्राण उसके लिए कितने आनन्ददायक बन चुके हैं।

ऋग्वेद 1.52.10

द्यौश्चिदस्यामवाँ अहे: स्वनादयोयवीद्वियसावज्रइन्द्रते ।
वृत्रस्य यद्वद्धधानस्य रोदसीमदेसुतस्य शवसाभिनच्छिरः ॥ 10 ॥

(द्यौः) प्रकाश, ज्ञान (चित्) भी, निश्चित रूप से (अस्य) इसका (अमवान) बल के साथ (अहे:) इनके (वृत्तियाँ, इच्छाएँ) (स्वनात) गर्जना करती हुई ध्वनि (अयोयवीत) पृथक होता है (भियसा) भय से (वज्र) वज्र (बल) (इन्द्र) इन्द्रियों का नियंत्रक (ते) आप (वृत्रस्य) वृत्तियों का, इच्छाओं का (यत) वह (बद्धानस्य) बाधा उत्पन्न करने वाले, दर्द देने वाले (रोदसी) शरीर और मन के लिए, पृथ्वी और आकाश के लिए (मदे) प्रसन्नता में (सुतस्य) ज्ञान, गुण, प्रकाश (शवसा) बल के साथ (अभिनत) काटकर (शिरः) सिर।

व्याख्या :-

मन की वृत्तियों तथा इच्छाओं के क्या खतरे हैं?

मन की वृत्तियों का नाश कौन कर सकता है?

मन की वृत्तियों तथा इच्छाओं की गर्जना पूर्ण ध्वनि की शक्ति के साथ हमारा आन्तरिक प्रकाश और ज्ञान भी डर से दूर भाग जाता है। परन्तु इन्द्र अर्थात् इन्द्रियों के नियंत्रक का वज्र (बल) ज्ञान के आनन्द, शुभ गुणों और प्रकाश के साथ पूरे बल सहित उन वृत्तियों और भूमि के साथ आकाश की भी इच्छा करने वाले विचारों को काटकर दूर फेंकता है जो बाधा उत्पन्न करने वाली तथा शरीर और मन के लिए कष्टकारी होती हैं।

जीवन में सार्थकता :-

लक्ष्य की तरफ तेज गति से कैसे बढ़ें?

हमारे मन की वृत्तियाँ और इच्छाएं निश्चित रूप से शरीर और मन के लिए कष्टकारी और जीवन पथ पर महान् बाधक होती हैं। यह वृत्तियाँ हमारे भूतकाल से सम्बन्धित होती हैं, जबकि इच्छाएं भविष्य से सम्बन्धित होती हैं। दोनों ही हमें वर्तमान से पृथक कर देती हैं, वे हमारे अन्तिम लक्ष्य से भी हमें पृथक कर देती हैं। इन वृत्तियों और इच्छाओं का नाश करने के लिए एक ही वज्र है जो केवल इन्द्र अर्थात् इन्द्रियों के नियंत्रक के पास होता है।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

जीवन के लक्ष्य की तरफ प्रगति करते हुए हमें स्वयं को शक्तिशाली बनाने का प्रयास करना चाहिए जिससे हम अपनी इन्द्रियों को नियंत्रित कर सकें और अपने लक्ष्य से पृथक् न हों। लक्ष्य की तरफ बढ़ने का यही एक मात्र तीव्र मार्ग है।

ऋग्वेद 1.52.11

यदिन्वन्द्रपृथिवीदशभुजिरहानिविश्वाततनन्तकृष्टयः ।
अत्राह तेमघवन्विश्रुतंसहो द्यामनु शवसाबर्हणाभुवत् ॥ 11 ॥

(यत् इत् नु) जब निश्चित रूप से (इन्द्र) इन्द्रियों का नियंत्रक (पृथिवी) पृथिवी, शरीर (दशभुजः) दस बाहों के साथ, दस इन्द्रियों के साथ (अहानि) दिन (विश्वा) सब (ततनन्त) विस्तार (आपकी शक्तियों का) (कृष्टयः) कार्यरत (मनुष्य) (अत्र) यहाँ (इह) निश्चित रूप से (ते) आपके (मधवन्) गौरवशाली सम्पदा के साथ, यज्ञ करने वाले (विश्रुतम्) विशेष प्रसिद्धि, सुनने योग्य (सहः) शक्ति (द्याम) ज्ञान, प्रकाश (अनु) के अनुसार (शवसा) गति के साथ (बर्हणा) समस्त सुखों को देने वाला (भुवत्) होओ।

व्याख्या :-

हमें बल और धन कैसे प्राप्त हो सकता है?

जब निश्चित रूप से आप दस दिशाओं वाली इस भूमि का आनन्द लेते हो और आपका शरीर दस इन्द्रियों का आनन्द लेता है तो इसके साथ सभी कार्यशील मनुष्यों को अपनी शक्तियों का संवर्द्धन करना चाहिए, यहाँ इसी जीवन में। इस प्रकार आपकी गौरवशाली सम्पदा और बल को सुनने लायक विशेष प्रसिद्धि मिलेगी। आपके ज्ञान और आन्तरिक प्रकाश के अनुरूप ही आपके कार्य होने चाहिए। आपको अपने कार्य गति के साथ सम्पन्न करने चाहिए, क्योंकि यही कार्य हर प्रकार की सुविधा प्रदान करते हैं।

जीवन जीवन में सार्थकता :-

इन्द्रियों पर नियंत्रण के क्या परिणाम होते हैं?

दस दिशाओं वाली इस भूमि पर हर व्यक्ति अपनी इन्द्रियों के साथ ही भौतिक जीवन का आनन्द लेता है। हमें अपनी इन्द्रियों को नियंत्रण में रखना चाहिए तभी हमारा ज्ञान और गौरवशाली प्रसिद्धि सुनने लायक बनेगी। हमारे कार्य गति के साथ ही हमारे ज्ञान का अनुसरण करे, केवल तभी हमें यज्ञ करने के लिए और सुखों का आनन्द लेने के लिए गौरवशाली सम्पदा प्राप्त होगी।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

इन्द्रियों पर नियंत्रण का चक्र

इन्द्रियों पर नियंत्रण —— प्रदान करता है —— ज्ञान का बल —— महान कार्य ——
गौरवशाली सम्पदा —— विशेष प्रसिद्धि —— यज्ञ —— सुख सुविधाएँ।

ऋग्वेद 1.52.12

त्वमस्य पारेरजसोव्योमनः स्वभूत्योजाअवसे धृषन्मनः ।
चकृषेभूमिंप्रतिमानमोजसोऽ पः स्वः परिभूरेष्यादिवम् ॥ 12 ॥

(त्वम्) आप (अस्य) यह (पारे) पार करके (रजसो) रज गुणों वाला (गतिविधियाँ) (व्योमनः) आकाश (स्वभूति) स्व की अनुभूति (ओजाः) ओज (अवसे) संरक्षित करते हुए (धृषन्मनः) इन्द्रियों और भावनाओं पर पूर्ण नियंत्रण रखने वाला मन (चकृषे) करता है (भूमिम्) जीवन का वास अर्थात् शरीर (प्रतिमानम्) प्रतिनिधित्व करते हुए (ओजसः) बल और ओज (अपः) जल तथा आकाश (स्वः) प्रकाशमान (परिभूः) समस्त दिशाओं से (आ एषि) दिव्यता प्राप्त करते हुए (दिवम्) मन में।

व्याख्या :-

इन्द्रियों पर नियंत्रण करने के आध्यात्मिक परिणाम क्या होते हैं?

'धृषन्मनः' तुम एक मात्र ऐसे हो जिसने सफलता पूर्वक मन को नियंत्रित कर लिया है और अधिकांश वृत्तियों को नष्ट कर दिया है, रजस लक्षणों वाले आकाश को भी पार कर चुके हो, जो गतिविधियों से पूर्ण होता है। ऐसे धृषन्मनः अपने तेज को संरक्षित करते हुए, आत्मा की अनुभूति की ओर बढ़ते हैं। वह अपने शरीर को बल और तेज का प्रतिनिधित्व करने के योग्य बना लेते हैं। सभी दिशाओं से मन में दिव्यताओं को प्राप्त करते हुए उसके जल और आकाश प्रकाश पैदा करने योग्य होते हैं।

अतः इन्द्रियों के नियंत्रक को महान् आध्यात्मिक परिणाम प्राप्त होते हैं :-

(क) वह गतिविधियों के स्तर अर्थात् रजस से ऊपर उच्च चेतना में जीवन जीता है।

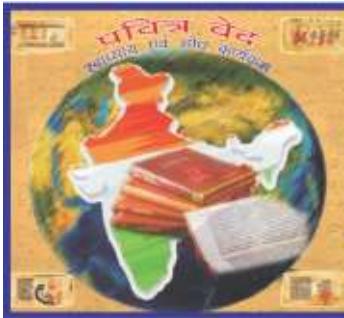
(ख) अपने तेज अर्थात् शरीर और मन के पूर्ण बल को संरक्षित करते हुए वह आत्म अनुभूति की ओर बढ़ता है।

(ग) वह लगातार सब दिशाओं से दिव्यताओं को प्राप्त करता है।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

जीवन में सार्थकता :-

इन्द्रियों पर नियंत्रण करने के भौतिक परिणाम क्या होते हैं?

भौतिक जीवन में भी इन्द्रियों पर नियंत्रण समान महत्व का होता है जिससे (क) अपने मुख्य कार्यों पर ध्यान लगाया जा सके, (ख) इन्द्रियों की शक्तियों को व्यर्थ जाने से बचाया जा सके, (ग) स्वयं को रोगों और उनसे प्राप्त कष्टों से सुरक्षित रखा जा सके।

ऋग्वेद 1.52.13

त्वंभुवः प्रतिमानंपृथिव्या ऋष्वीरस्य बृहतः पतिर्भूः।
विश्वमाप्राअन्तरिक्षं महित्वासत्यमद्वा नकिरन्यस्त्वावान् ॥ 13 ॥

(त्वम्) आप (भुवः) आकाश का (प्रतिमानम्) उत्पत्ति करता (पृथिव्या) पृथ्वी का (ऋष्व वीरस्य) बहादुर मनुष्य का, महान् गुणों वाला, समस्त सृष्टि का (बृहतः) बड़ा, शक्तिशाली (पतिः) संरक्षक (भूः) हैं (विश्वम्) समस्त (आप्रा) पूर्ण (अन्तरिक्षम्) अन्तरिक्ष (महित्वा) आपकी व्यापक शक्तियों के साथ (सत्यम्) सत्य (अद्वा) यह है (नकिः) कोई भी नहीं (अन्य) अन्य (त्वावान्) आपके जैसा।

व्याख्या :-

जो व्यक्ति परमात्मा की अनुभूति कर लेता है उसके क्या दृष्टिकोण होते हैं?

एक बार जब व्यक्ति अपनी इन्द्रियों पर सफलता पूर्वक नियंत्रण पा लेता है और मन की वृत्तियों का नाश कर देता है तो वह इस मन्त्र में परमात्मा को सम्बोधित करते हुए कहता है कि उसने परमात्मा के विषय में क्या अनुभूति प्राप्त की है।

(क) आप भूमि और आकाश के निर्माता हो।

(ख) आप महान् गुणों को धारण करने वाले शक्तिशाली बहादुर पुरुषों सहित सम्पूर्ण शक्तिशाली सृष्टि के संरक्षक हो।

(ग) आप अपनी व्याप्त होने वाली शक्ति से अन्तरिक्ष को भी पूर्ण करते हो।

(घ) यह सत्य है कि आपके जैसा और कोई नहीं है।

जीवन में सार्थकता :-

हमें सर्वोच्च अधिकारियों के साथ जुड़ने इच्छा क्यों करनी चाहिए?

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

शक्तियों में परमात्मा के समानान्तर कोई अन्य व्यक्ति या सत्ता नहीं है। क्योंकि केवल वही सृष्टि के प्रत्येक हिस्से का निर्माता और संरक्षक है। वह सम्पूर्ण सृष्टि और अन्तरिक्ष में ही व्याप्त है। प्रत्येक व्यक्ति परिवार में, समाज में, राष्ट्र में और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर सर्वोच्च सत्ताओं के साथ जुड़ना चाहता है, क्योंकि सर्वोच्च सत्ताओं के साथ जुड़कर वह अपार लाभ प्राप्त करता है। एक सच्चा निर्माता, परमात्मा, सारी सृष्टि की सर्वोच्च सत्ता है। अतः प्रत्येक व्यक्ति को ध्यान—साधना प्रक्रियाओं के माध्यम से उसी के साथ जुड़ने का प्रयास करना चाहिए जिससे दिव्य शक्तियाँ प्राप्त की जा सकें और सर्वोच्च दिव्य शक्ति की अनुभूति प्राप्त की जा सके।

ऋग्वेद 1.52.14

न यस्य द्यावापृथिवीअनुव्यचो न सिन्धवोरजसोअन्तमानशुः ।
नोतस्ववृष्टिमदेअस्य युध्यत एकोअन्यच्चकृषेविश्वमानुषक् ॥ 14 ॥

(न) नहीं (अस्य) जिसके (द्यावा पृथिवी) अन्तरिक्ष तथा पृथ्वी (अनुव्यचः) सर्वत्र, सर्वव्यापक का अनुसरण (न) नहीं (सिन्धवः) बहते हुए जल (रजसः) सक्रिय संसार (अन्तमानशुः) प्राप्त करता है, अन्त को पकड़ता है (न) नहीं (उत) और (स्व वृष्टिम) उसकी अपनी वर्षा (मदे) आनन्द के लिए (अस्य) जिसका (युध्यतः) युद्ध करते हुए, संघर्ष करते हुए (एकः) अकेला (अन्यत) उसके अतिरिक्त (चकृषे) करता है (विश्वम्) सम्पूर्ण विश्व (आनुषक्) अपनी सर्वव्यापकता से सम्बद्ध करता है, निर्भर बना लेता है।

व्याख्या :-

परमात्मा किस प्रकार सर्वव्यापक है?

एक अनुभूति प्राप्त व्यक्ति के परमात्मा के बारे में आंकलन को जारी रखते हुए यह मन्त्र परमात्मा की सर्वव्यापकता का विश्लेषण इस प्रकार करता है :-

(क) अन्तरिक्ष और पृथ्वी उसकी सर्वव्यापकता का अनुसरण नहीं कर सकते।

(ख) बहते हुए जल और सक्रिय संसार उसे प्राप्त नहीं कर सकता और उसके अन्त को भी प्राप्त नहीं कर सकता।

(ग) उसके द्वारा वस्तुओं की वर्षा के लिए संघर्ष या युद्ध करते हुए भी कोई उसे पकड़ नहीं सकता।

(घ) वह अपनी सर्वव्यापकता में सबको समाहित कर लेता है और प्रत्येक वस्तु तथा प्रत्येक व्यक्ति को अपने ऊपर निर्भर कर लेता है।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

जीवन में सार्थकता :-

प्रत्येक व्यक्ति उस पर निर्भर क्यों होता है?

परमात्मा के केवल एक लक्षण अर्थात् सर्वत्र व्यापकता के द्वारा प्रत्येक वस्तु और प्रत्येक व्यक्ति उस पर निर्भर है। वह हमारे शरीर और मन में भी व्याप्त है। अतः इन उपकरणों के माध्यम से हम जो कुछ भी करते हैं, हम उस पर निर्भर ही बने रहते हैं और हमारे जीवन की शक्ति, हमारे प्राण भी उसके द्वारा व्याप्त है। अतः आध्यात्मिक स्तर पर भी हम उस पर निर्भर हैं।

हमें उसकी सर्वव्यापकता रूपी मूल सच्चाई के प्रति सदैव चेतन रहना चाहिए।

ऋग्वेद 1.52.15

आर्चन्नत्र मरुतः सस्मिन्नाजौविश्वेदेवासोअमदन्तनुत्वा ।
वृत्रस्य यद्बृष्टिमता वधेननित्वमिन्द्रप्रत्यानंजघन्थ ॥ 15 ॥

(आर्चन् – नि आर्चन्) सदैव एवं नियमित आपकी पूजा करता है और आपका आह्वान करता है (अत्र) यहाँ, इस जीवन में (मरुतः) दिव्य श्रद्धालु, कम बोलने वाले (सस्मिन्) सम्पूर्ण (आजौ) संग्राम, कठिनाईयाँ (विश्वे) सब (देवासः) दिव्य लोग (अमदन्) प्रसन्नता (अनु) अनुसरण करते हुए (त्वा) आपको (वृत्रस्य) मन की वृत्तियाँ, मन पर प्रभाव (यत्) वह (भृष्टिमता) धूर्त मन को मारकर (वधेन) वज्र के साथ (नि – आर्चन् से पूर्व लगाया गया) (त्वम्) आप (इन्द्र) परमात्मा, इन्द्रियों का नियंत्रक (प्रति आनम्) मुख का लक्ष्य करके (जघन्थ) प्रहार।

व्याख्या :-

दिव्य लोग परमात्मा की पूजा और उनका आह्वान क्यों करते हैं?

दिव्य लोग जो कम बोलते हैं वे सदैव और नियमित रूप से सभी संग्रामों में और कठिनाईयों में, यहाँ इसी जीवन में परमात्मा की पूजा और उनका आह्वान करते हैं। सभी दिव्य लोग आपका अनुसरण करते हुए प्रसन्नता महसूस करते हैं। इन्द्र, परमात्मा सभी वृत्तियों के मुख पर लक्ष्य करते हुए प्रहार करता है, बेशक वह इन्द्रियों के नियंत्रक इन्द्र पुरुष के माध्यम से ही ऐसा करता है। इससे लगता है कि जैसे धूर्त मन को किसी हथियार से मार दिया गया हो।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

जीवन में सार्थकता :-

हमारी वृत्तियों का नाश कौन करता है?

योग दर्शन का यह मुख्य ध्येय है कि मन की वृत्तियों को नियंत्रित किया जाये अर्थात् 'योगः चित्त वृत्ति निरोधः'। ऋग्वेद के प्रथम मण्डल का यह 52वाँ सूक्त ही योग दर्शन का मूल ध्येय है। यह वर्तमान मन्त्र दिव्य लोगों को स्पष्ट आश्वासन देता है कि सर्वोच्च इन्द्र, परमात्मा, अपने पक्के श्रद्धालुओं को भी अपनी इन्द्रियों का नियंत्रक बनाकर इन्द्र बना देता है और इस प्रकार वृत्तियों के मुख पर प्रहार करता है। अतः सभी दिव्य लोगों को मन में धारणा बना लेनी चाहिए कि सर्वोच्च इन्द्र का आह्वान करना ही एक मात्र मार्ग है जिससे हम स्वयं को इन्द्र बना सकें और इस प्रकार अपनी वृत्तियों का नाश करते हुए परमात्मा की अनुभूति के मार्ग पर प्रगति कर सकें।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

ऋग्वेद मण्डल-1 सूक्त 53

वृत्तियों का नाश
दिव्य तथा आध्यात्मिक जीवन

Rigveda Mandal-1, Hymn-53
ऋग्वेदमन्त्र 1.53.1

न्युरुषुवाचं प्रमहे भरामहे गिर इन्द्राय सदने विवस्वतः ।
नूचिद्धि रत्नं ससता मिवा विदन्त्र दुष्टुतिर्द्विषिणो देषु शस्यते ॥ १ ॥

(नि – भरामहे से पूर्व लगाकर) (सुवाचम) उत्तम वाणियाँ (प्रार्थनाओं तथा पूजा की) (प्र – भरामहे से पूर्व लगाकर) (महे) महान् (भरामहे – नि प्र भरामहे) निश्चित रूप से विनप्रता के साथ प्राप्त रवाता है (गिरः) स्तुति की वाणियाँ (इन्द्राय) इन्द्र के लिए, परमात्मा के लिए (सदने) घर में (विवस्वतः) यज्ञ करने वाले विद्वान् (नूचिद्धि) निश्चित रूप से शीघ्र (रत्नम्) सम्पदा (ससताम् इव) निद्रा की अवस्था से, आलस्य और अकर्मण्यता से (आविदतः) वापिस प्राप्त करते हैं (न) नहीं (दुष्टुतिः) कुटिल व्यक्तियों के द्वारा की गई प्रशंसा (द्रविणो देषु) दान देने वालों के बीच में या उनके सम्बन्ध में (शस्यते) मूल्यांकन ।

व्याख्या :-

यज्ञ के स्थान पर किस प्रकार के वातावरण का निर्माण होता है?
यज्ञ करने वाले विद्वानों के घर पर प्रार्थना, पूजा और इन्द्र अर्थात् परमात्मा की स्तुति की ध्वनियाँ पूरी विनप्रता के साथ उपलब्ध होती हैं। दूसरी तरफ निद्रालीन, आलसी और थके हुए लोगों से सम्पदा निश्चित रूप से चली जाती है। उदार और दानी लोगों की उपस्थिति में धूर्त और कुटिल लोगों की प्रशंसा का कोई मूल्य नहीं होता ।

जीवन में सार्थकता :-

वास्तविक यज्ञ करने वाला व्यक्ति किस प्रकार का होता है?
जो लोग वास्तविक यज्ञ करते हैं अर्थात् दूसरों के कल्याण के लिए अपना सहयोग देते हैं, उन्हें निश्चित रूप से परमात्मा की भक्ति का उपहार मिलता है। वे इसलिए यज्ञ करते हैं क्योंकि वे महसूस

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

करते हैं कि उनकी सम्पदा पर अन्य जरूरतमंद लोगों का सामाजिक अधिकार है; क्योंकि वे जरूरतमंद लोगों के प्रति विनम्र होते हैं; क्योंकि उन्हें इस बात की अनुभूति होती है कि सम्पदा का वास्तविक दाता तो केवल भगवान् है।

अतः ऐसे विवरणः लोगों को परमात्मा की पूजा और स्तुति रूपी विनम्र वाणियाँ उपहार में मिलती हैं। यह एक मूल वास्तविकता है कि वास्तविक यज्ञ करने वाले लोग ही वास्तविक परमात्म तत्व के अनुभूतिकर्ता होते हैं, क्योंकि वास्तविक यज्ञ उन्हें अहंकार रहित और इच्छा रहित बना देता है।

जबकि अपने सामाजिक दायित्वों के प्रति सोये हुए लोगों से उनकी सम्पदा दिव्य शक्तियों के द्वारा वापिस ले ली जाती है।

उदार और दानी लोगों की प्रशंसा सर्वत्र होती है, परन्तु ऐसे लोगों के मध्य धूर्त और कुटिल लोगों की प्रशंसा को कोई मान्यता नहीं मिलती।

ऋग्वेदमन्त्र 1.53.2

दुरोअश्वस्य दुरइन्द्रगोरसिदुरो यवस्य वसुनइनस्पतिः ।

शिक्षानन्दः प्रदिवोअकामकर्शनः सखासखिभ्यस्तमिदं गृणीमसि ॥

(दुरः) दाता, सुखों का द्वार (अश्वस्य) अश्वों का, कर्मन्द्रियों का (दुरः) दाता, सुखों का द्वार (इन्द्रः) परमात्मा, इन्द्रियों का नियंत्रक (गोः) गाय आदि का, ज्ञानेन्द्रियों का (असि) हो (दुरः) दाता, सुखों का द्वार (यवस्य) यव आदि का (वसुनः) आवास के साधनों का (इनः) स्वामी (पतिः) संरक्षक (शिक्षानन्दः) शिक्षा देने के लिए (प्रदिवः) शिक्षा लागू करने के लिए प्रकाशित (अकाम कर्शनः) आलसी और अकर्मण्य लोगों को नष्ट करना (सखा सखिभ्यः) मित्रों के लिए मित्र (तम) आपके लिए (इदम) यह (प्रार्थना, निवेदन) (गृणीमसि) हम स्तुति करते हैं।

व्याख्या :-

परमात्मा हमें क्या देता है?

इन्द्र अर्थात् परमात्मा के निम्न लक्षणों के कारण हम परमात्मा की महिमा में अपने शब्दों को प्रस्तुत करते हैं :-

- (1) वह अश्वों का दाता है। अश्व अर्थात् यातायात के सभी साधन तथा हमारी कर्मन्द्रियाँ।
- (2) वह गज़ओं का दाता है। गाय अर्थात् लाभकारी पशु तथा हमारी ज्ञानेन्द्रियाँ।
- (3) वह जौ अर्थात् सभी अनाजों का दाता है।
- (4) वह सभी प्रकार के आवासों का मालिक तथा संरक्षक है।
- (5) वह हमें सभी प्रकार के ज्ञान और प्रकाश देता है जिससे हम उसके ज्ञान का क्रियान्वयन कर सकें।
- (6) वह आलसी और थके हुए लोगों को कुचल देता है।
- (7) वह मित्रों का मित्र है।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



जीवन में सार्थकता :-

सर्वोच्च इन्द्र की महिमा के लिए शब्द प्रस्तुत करने में कौन सक्षम है?

सर्वोच्च इन्द्र के द्वारा कौन कुचला जाता है?

सर्वोच्च ऊर्जा, इन्द्र अर्थात् परमात्मा ने बिना किसी भेदभाव के सब जीवों के प्रयोग करने के लिए यह सृष्टि प्रदान की है। जो मानव अपनी इन्द्रियों पर यथार्थ में नियंत्रण करके इन्द्र बनते हैं, केवल वही सर्वोच्च इन्द्र की महिमागान के लिए अपने शब्द और वाणियाँ प्रस्तुत करने के योग्य होते हैं। केवल वीर पुरुष ही इस सृष्टि तथा इस जीवन के महत्त्व और सदुपयोग के प्रति चेतन होता है। इन्द्र के अतिरिक्त अन्य सभी लोग सर्वोच्च इन्द्र के प्रति लगाव के बिना अचेतन रहकर इस सृष्टि का भोग करते हैं। इस प्रकार ऐसे सभी लोग केवल पाश्चिक जीवन जीते हुए यथार्थ में परमात्मा की महिमा में अपने शब्द प्रस्तुत करने के योग्य नहीं होते। सबसे घटिया स्तर पर आलसी और थके हुए लोग तो सर्वोच्च इन्द्र के द्वारा सामान्य रूप से ही कुचल दिये जाते हैं।

ऋग्वेदमन्त्र 1.53.3

शचीवइन्द्रपुरुकृद् द्युमत्तमतवेदिदमभितश्चेकितेवसु ।

अतः संगृभ्याभिभूताभरमात्वायतोजरितुः काममूनयीः ॥ ३ ॥

(शचीव:) सभी विद्वानों में सर्वोच्च विद्वता, सभी शक्तियों, बलों और ऊर्जाओं का स्रोत (इन्द्र) सर्वोच्च नियंत्रक, परमात्मा (पुरुकृत) प्रत्येक को धारण और पूर्ण करता है (द्युमत्तम) सभी ज्ञानों का सर्वोच्च प्रकाश (तवेत्) केवल आपका है (इदम्) यह (अभितः) सभी दिशाओं में (चेकिते) यह सर्वत्र जाना जाता है (वसु) समस्त सम्पदा, सभी आवास (अतः) इसमें से (संगृभ्यः) प्राप्त करो और प्रयोग करो (अभिभूते) सभी बुराईयों और शत्रुओं का नाशक (आभरः) हमें पूर्ण करो (मा) नहीं (त्वायतः) आपको अपनाने का इच्छुक (जरितुः) आपकी महिमा गाने वालों का (कामम्) इच्छाएँ (उनयीः) अपूर्ण।

व्याख्या :-

सर्वोच्च इन्द्र, परमात्मा कौन है?

किसकी इच्छाएँ अपूर्ण नहीं रहती?

सर्वोच्च इन्द्र अर्थात् परमात्मा :-

(1) शचीवः – सभी विद्वानों में सर्वोच्च विद्वता, सभी शक्तियों, बलों और ऊर्जाओं का स्रोत

(2) पुरुकृत – प्रत्येक को धारण और पूर्ण करता है

(3) द्युमत्तम – सभी ज्ञानों का सर्वोच्च प्रकाश।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

यह सर्वमान्य है कि सभी सम्पदाएं और सभी दिशाओं में सभी आवास केवल उसी के हैं। उस सर्वोच्च इन्द्र की सम्पदा का एक छोटा सा भाग मैं प्राप्त करता हूँ और प्रयोग करता हूँ। कृपया मेरे जीवन को पूर्ण करो। आप सभी बुराईयों और शत्रुओं का नाश करने वाले हो। जो लोग आपकी इच्छा करते हैं और आपकी महिमा गाते हैं, आप उनकी इच्छाओं को अपूर्ण नहीं छोड़ते।

जीवन में सार्थकता :-

जब हम सर्वोच्च आध्यात्मिक इच्छा को धारण कर लेते हैं तो क्या होता है?

उच्च अधिकारियों के साथ पवित्र और दिव्य सम्बन्धों का क्या महत्व है?

हमारी सर्वोच्च इच्छा एक ही होनी चाहिए कि हम सर्वोच्च ऊर्जा अर्थात् परमात्मा के साथ अटूट सम्बन्ध की अनुभूति प्राप्त कर सकें। एक बार जब हम इस सर्वोच्च आध्यात्मिक इच्छा की पूर्ति के लिए अग्रसर होते हैं तो हम निम्न स्तरीय सांसारिक इच्छाओं से असम्बद्ध हो जाते हैं और यदि किसी अवस्था में हम कुछ भी इच्छा करते हैं तो वे इच्छाएँ परमात्मा के द्वारा निश्चित रूप से पूरी की जाती हैं। सर्वोच्च आध्यात्मिक इच्छा के बिना प्रत्येक व्यक्ति सांसारिक स्तर का निम्न जीवन जीता है। यह ऐसा होता है जैसे सर्वोच्च दाता से जुड़े बिना भौतिक वस्तुओं के पीछे भागना।

इसी वर्ग या समाज में कार्य करते हुए यदि हम अपने सर्वोच्च अधिकारियों या नेतृत्वकर्ता की संगति की इच्छा करते हैं तो हमारे लिए निम्न स्तर की इच्छाएं निरर्थक हो जाती हैं या उन्हें प्राप्त करना सरल हो जाता है। अतः उच्च अधिकारियों के साथ सदैव शुद्ध और दिव्य सम्बन्ध स्थापित करने का प्रयास करो।

ऋग्वेदमन्त्र 1.53.4

एभिर्द्युभिः सुमना एभिरिन्दुभिर्निरुन्धानोअमतिंगोभिरश्विना ।

इन्द्रेणदस्युंदरयन्त्तइन्दुभिर्युतद्वेषसः समिषारभेमहि ॥ 4 ॥

(एभिः) इसके साथ (द्युभिः) प्रकाशित करने वाला ज्ञान (सुमनः) महान्, पवित्र तथा दिव्य मन बनो (एभिः) इनके साथ (इन्दुभिः) महान् गुणों के साथ (निरुन्धानः) रोक दो, बाधित करो (अमतिम्) अज्ञानता आदि (गोभिः) गाय आदि, ज्ञानेन्द्रियाँ (अश्विना) प्राणों का जोड़ा (इन्द्रेण) इन्द्रियों का नियंत्रण करके (दस्युम्) धूर्त मानसिकता को (दरयन्त) नष्ट करते हुए (इन्दुभिः युत द्वेषसः) बिना शत्रुता के (सम – रभेमहि से पूर्व लगाकर) (इषा) दिव्य प्रेरणाओं के साथ (रभेमहि – सम रभेमहि) प्रत्येक कार्य को प्रारम्भ करें।

व्याख्या :-

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

अज्ञानता का नाश कैसे किया जाये?

एक दिव्य जीवन कैसे बना जाये?

अज्ञानता का नाश करने के लिए गऊओं अर्थात् ज्ञानेन्द्रियों के साथ, प्राणों के साथ तथा अपनी इन्द्रियों पर नियंत्रण करके अपने जीवन और अन्य लोगों के जीवन में से धूर्त मानसिकता का नाश करके एक पवित्र, महान् और दिव्य मन का निर्माण करें जिसमें प्रकाशित ज्ञान और महान् शुभ गुण हों। शुभ गुणों के साथ ही अन्य लोगों से शत्रुता किये बिना हम एक दिव्य जीवन बन सकते हैं। अपना प्रत्येक कार्य दिव्य निर्देशों के साथ प्रारम्भ करो।

जीवन में सार्थकता :-

एक दिव्य जीवन शत्रुता रहित कैसे होता है?

दिव्य जीवन के लक्षणों को निम्न प्रकार से सूचीबद्ध किया जा सकता है :—

(1) प्रकाशित ज्ञान, (2) महान् शुभ गुण, (3) स्वस्थ भोजन ग्रहण करके अच्छा स्वास्थ्य, (4) प्राणों के जोड़े पर नियंत्रण, (5) इन्द्रियों पर नियंत्रण तथा (6) प्रत्येक कार्य दिव्य प्रेरणाओं के साथ प्रारम्भ करना।

ऐसा महान्, पवित्र और दिव्य जीवन अन्ततः शत्रुता मुक्त ही होगा। न तो उसका किसी के प्रति शत्रुता भाव होगा और न किसी का उसके प्रति शत्रुता भाव होगा।

ऋग्वेदमन्त्र 1.53.5

समिन्द्ररायासमिषारभेमहि सं वाजेभिः पुरुश्चन्द्रैरभिद्युभिः ।

सं देव्याप्रमत्यावीरशुष्मयागोअग्रयाशवत्यारभेमहि ॥ ५ ॥

(सम् – रभेमहि से पूर्व लगाकर) (इन्द्र) सर्वोच्च नियंत्रक, परमात्मा (राया) गौरवशाली सम्पदा के साथ (सम् – रभेमहि से पूर्व लगाकर) (इषा) दिव्य प्रेरणाओं के साथ (रभेमहि – सम् रभेमहि) प्रत्येक कार्य प्रारम्भ करो (सम् वाजेभिः) सभी शक्तियों के साथ (पुरुश्चन्द्रैः) धारण करने वाली और पूर्ण करने वाली (अभिद्युभिः) प्रकाशित ज्ञान के साथ (सम् – रभेमहि से पूर्व लगाकर) (देव्या) दिव्य लक्षणों के साथ (प्रमत्या) तीक्ष्ण बुद्धि (वीर शुष्मया) शत्रुओं को कंपित करने वाली बहादुरी (गो अग्रया) ज्ञानेन्द्रियों का महत्त्व (अश्वावत्या) बलशाली कर्मन्द्रियाँ (रभेमहि – सम् रभेमहि) प्रत्येक कार्य प्रारम्भ करो।

व्याख्या :-

किसी भी कार्य को प्रारम्भ करने के लिए किन शक्तियों की आवश्यकता होती है?

हे इन्द्र, सर्वोच्च शक्ति, परमात्मा! हम अपना प्रत्येक कार्य अपने पास उपलब्ध निम्न शक्तियों के साथ कर पायें :—

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



(1) गौरवशाली सम्पदा के साथ, (2) दिव्य प्रेरणाओं के साथ, (3) स्वयं को पोषण और पूर्ण करने की सभी शक्तियों के साथ, (4) प्रकाशित ज्ञान के साथ, (5) दिव्य लक्षणों के साथ, (6) तीक्ष्ण बुद्धि के साथ, (7) शत्रुओं को कम्पित करने योग्य साहस के साथ, (8) ज्ञानेन्द्रियों को उचित महत्त्व देते हुए, (9) बलशाली कर्मन्दियों के साथ।

जीवन में सार्थकता :-

हमारे जीवन को आध्यात्मिक बनाने के लिए क्या आवश्यक है?

हमें सर्वोच्च शक्ति से यह प्रार्थना करनी चाहिए कि एक तेजस्वी चमकदार जीवन के लिए हमें दिव्यताओं सहित सभी शक्तियाँ तथा पदार्थ प्रदान करें। केवल भौतिक सुविधाओं के पीछे भागने से यह सम्भव नहीं होता, अपितु इसके लिए हमें सर्वोच्च शक्ति परमात्मा से दिव्यताओं की प्राप्ति के लिए एक साधक का जीवन जीना पड़ता है। परमात्मा के प्रति पूर्ण साधना और दिव्य लक्षणों के अभाव में सभी पदार्थ तथा सामाजिक शक्तियाँ हमें भौतिकतावाद के पथ पर ही ले जायेंगी। जबकि साधना, श्रद्धा और दिव्यताएं हमारे जीवन को आध्यात्मिक बना देती हैं।

ऋग्वेदमन्त्र 1.53.6

तेत्वामदाअमदन्तानिवृष्यातेसोमासो वृत्रहत्येषुसत्पते ।
यत्कारवेदश वृत्राण्यप्रतिबर्हिष्टोनिसहस्त्राणिबर्हयः ॥

(ते) वे (त्वा) आपको (मदः) हर्ष पूर्ण (अमदन) प्रसन्नता देने वाले बनों (तानि) वे (वृष्या) वर्षा करते हुए (सब पर प्रसन्नता की) (ते) वे (सोमासः) शुभ गुण, शुभ कार्य (वृत्र हत्येषु) मन की वृत्तियों और आवरणों के नाश में (सत्पते) सत्य का संरक्षक (परमात्मा) (यत्) जिसको (आप) (कारवे) कार्य करते हुए (दश) दसियों (वृत्राणि) आवरण, वृत्तियाँ (अप्रति) नापसन्द (बर्हिष्टते) प्रकाशित मन के लिए (नि – बर्हयः से पूर्व लगाकर) (सहस्त्राणि) हजारों (बर्हयः – नि बर्हयः) पूरी तरह नष्ट करते हैं।

व्याख्या :-

चित्त की वृत्तियों का नाश कौन कर सकता है?

हे सत्पते, सत्य के संरक्षक! आपके आनन्दित लोग सबको और आपको भी प्रसन्नता देने योग्य हों। ऐसे लोगों के द्वारा की गई वर्षा, उनके सदकार्य तथा शुभ गुण मन की वृत्तियों के प्रति निश्चयात्मक हों जिससे दसियों हजारों निरर्थक वृत्तियों और आवरणों को नष्ट करके आपका आनन्द ही उनके लिए प्रकाशित बुद्धि का आनन्द दे सकता है।

जीवन में सार्थकता :-

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

परमात्मा को प्रसन्न कैसे करें?

परमात्मा सत्य का संरक्षक है। इसका अभिप्राय है कि परमात्मा सत्य को प्रेम करता है। केवल सत्य के द्वारा ही हम परमात्मा को प्रसन्न कर सकते हैं और शुभ कार्यों, शुभ लक्षणों और परिणामतः सब पर प्रसन्नता की वर्षा कर सकते हैं। एक बार जब हम पूर्ण सत्य के मार्ग पर चल पड़ते हैं तो एक प्रकाशित मन अपनी वृत्तियों से भी छुटकारा पा लेता है। ऐसा जीवन सभी नापसन्द वृत्तियों का नाश करने के लिए सफलता पूर्वक परमात्मा के आनन्द को प्राप्त कर लेता है।

ऋग्वेदमन्त्र 1.53.7

युधा युधमुप घेदेषि धृष्णुयापुरापुरंसमिदंहंस्योजसा ।
नम्या यदिन्द्र सख्या परावतिनिबर्हयोनमुचिं नाम मायिनम् ॥ 7 ॥

(युधा युधम) एक के बाद दूसरा युद्ध (उप – एषि से पूर्व लगाकर) (घ इत) निश्चय से (एषि – उप एषि) अत्यन्त निकट प्राप्त करते हैं (धृष्णुया) दृढ़, शत्रुओं को मिट्टी में मिलाने में सक्षम (पुरा पुरम) एक के बाद दूसरा शहर, किला (सम – हंसि से पूर्व लगाकर) (इदम) ये (हंसि – सम हंसि) पूरी तरह नष्ट करते हैं (ओजसा) महिमावान बल के साथ (नम्या) विनम्रता के साथ (यत) जब (इन्द्र) इन्द्रियों के नियंत्रक (सख्या) मित्र की सहायता से (परावति) अत्यन्त दूर (निबर्हयः) निश्चित रूप से नाश करता है (नमुचिम) अन्त तक पीछा करने वाला (नाम) नाम का अहंकार (मायिनम) मायावी, कपटी।

व्याख्या :-

किस व्यक्ति को परमात्मा की निकट मित्रता प्राप्त होती है और कैसे?

कौन व्यक्ति अपने नाम, रूप और विचारों के अहंकार का नाश कर सकता है?

एक इन्द्र पुरुष अर्थात् इन्द्रियों का नियंत्रक एक के बाद एक संघर्ष को पार करता हुआ परमात्मा की मित्रता को प्राप्त करता है और उसके बहुत निकट हो जाता है। वह शत्रुओं को नाश करने के अपने संकल्प और शक्ति के साथ एक के बाद एक समस्याओं के किलों को तोड़ता जाता है। वह अपनी गौरवशाली सम्पदा के सहारे भी समस्याओं का पूर्ण नाश कर देता है। पूरी विनम्रता के साथ वह परमात्मा की मित्रता का आनन्द लेता है और निश्चित रूप से अपने नाम, रूप और विचारों का नाश करके उन्हें दूर फेंक देता है, जो अन्यथा इतनी रहस्यमयी, मायावी और दिखावा करने वाली होती है कि ये अन्त तक पीछा नहीं छोड़ती।

जीवन में सार्थकता :-

नाम, रूप और विचारों के मूल अहंकार का नाश करने के लिए कौन सा पथ है?

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

एक इन्द्र अर्थात् इन्द्रियों का नियंत्रक बनने के लिए आध्यात्मिक पथ पर चलना प्राथमिक योग्यता है। केवल एक इन्द्र ही परमात्मा की मित्रता का आनन्द ले सकता है। इन्द्र का अर्थ है वह व्यक्ति जिसने सफलता पूर्वक मन सहित अपनी इन्द्रियों पर नियंत्रण स्थापित कर लिया हो जिससे उसका बाहरी अहंकार और इच्छाएं समाप्त हो जायें। उसके बाद नाम, रूप और विचारों के मूल अहंकार को वह परमात्मा की दिव्य मित्रता से दूर फेंक पाता है। दिव्य सहायता के बिना यह मूल अहंकार प्रत्येक व्यक्ति को अन्तिम समय तक पकड़े रखता है।

ऋग्वेदमन्त्र 1.53.8

त्वंकरंजमुतपर्णयं वधीस्तेजिष्ठ्यातिथिग्वस्य वर्तनी ।
त्वं शता वङ्गृदस्याभिनत्पुरोऽनानुदः परिषूता ऋजिश्वना ॥ ८ ॥

(त्वम्) आप (परमात्मा, परमात्मा का मित्र) (करंजम्) श्रेष्ठ पुरुषों को दुःख देने वाला (उत) और (पर्णयम्) पराई वस्तुओं को चुराने वाला (वधीः) नाश (तेजिष्ठ्या) गति और बल के साथ (अतिथिग्वस्य) अतिथियों का (परमात्मा का तथा परमात्मा के मित्र का) (वर्तनी) संरक्षण करता है (त्वम्) आप (शता) सैकड़ों (वङ्गृदस्य) दूसरों को विष देने वाला (अभिनत) नाश करता है (पुरः) नगर, किले (अऽनानुदः) शत्रुओं के द्वारा धकेला न जाने योग्य (परिषूता) सभी दिशाओं से घेरा गया (ऋजिश्वना) सत्य, ईमानदारी के मार्ग पर चलते हुए।

व्याख्या :-

जो लोग दिव्य श्रेष्ठ पुरुषों का निरादर करते हैं उसका क्या फल होता है?

आप (परमात्मा, परमात्मा के मित्र) उन लोगों का नाश कर देते हो जो दिव्य श्रेष्ठ महापुरुषों का निरादर करते हैं या उनके लिए समस्या पैदा करते हैं या अन्य लोगों की वस्तुएं चुराते हैं। आप गति और बल के साथ अतिथियों अर्थात् परमात्मा की दिव्यताओं और परमात्मा के मित्रों की रक्षा करते हो।

आप (परमात्मा, परमात्मा के मित्र) शत्रुओं के द्वारा धकेले जाने के योग्य नहीं हो। इसका अभिप्राय है कि आप अपराजित हो। आप उन लोगों के हजारों किलों और शहरों को नष्ट कर देते हो जो अन्यों को विष देते हैं। क्योंकि आप सबको घेर कर सच्चाई और ईमानदारी के मार्ग पर चलाते हो।

जीवन में सार्थकता :-

दिव्य, श्रेष्ठ और पवित्र आत्माओं शक्ति क्या है?

जो व्यक्ति दिव्यता से प्रेम करता है और गति तथा बल के साथ उनकी तरफ अग्रसर होता है, केवल वही अन्य लोगों को कष्ट देने और वस्तुएं चुराने की प्रवृत्तियों का नाश करने में सक्षम होता है। जो व्यक्ति अपने जीवन में परमात्मा की दिव्यता का स्वागत करता है केवल वही बुराईयों को नष्ट करने

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

में सक्षम होता है। जो व्यक्ति निर्माता के पीछे भागता है, वह निर्मित सृष्टि के पीछे नहीं भागता। पवित्रता से प्रेम करने वाला व्यक्ति इतना बलवान हो जाता है कि वह शत्रुओं के द्वारा धकेला नहीं जाता। बल्कि ऐसा व्यक्ति सच्चाई और ईमानदारी के मार्ग पर चलते हुए उन लोगों को भी धेर लेता है जो दूसरों को विष देते हैं और दिग्भ्रमित करते हैं।

ऋग्वेदमन्त्र 1.53.9

त्वमेतांजनराज्ञोद्दिदशाऽबन्धुनासुश्रवसोपजग्मुषः ।
षष्ठिंसहस्रा नवतिंनवश्रुतोनिचक्रेणरथ्या दुष्पदावृणक् ॥

(त्वम्) आप (एतान्) इन (जनराज्ञः) जनता पर शासन करने वाले (द्विः दश) बीस (अऽबन्धुना) बन्धनहीन, किसी का मित्र नहीं (सुश्रवसा) दिव्यता का उत्तम श्रोता, उत्तम सुने जाने योग्य (ज्ञान और अनुभूति के लिए) (उपजग्मुषः) अत्यन्त निकट (षष्ठिम्) साठ (सहस्रा) हजारों (नवतिम्) नब्बे (नव) नौ (श्रुतः) सुनने वाला (परमात्मा) (नि) निश्चित रूप से (चक्रेण) चक्र, गति (रथ्या) शरीर रथ का (दुष्पदा) कठिन मार्ग (अवृणक्) दूर रखो।

व्याख्या :-

कौन सर्वोच्च श्रोता है?

जनता पर शासन करने वाले बीस शासक कौन हैं?

सर्वोच्च श्रोता किस व्यक्ति को इन बीस शासकों से बचाता है?

आप, सर्वोच्च श्रोता, निश्चित रूप से जनता के ऊपर शासन करने वाले बीस शासकों को उन महान् आत्माओं से दूर रखते हो, शरीर की गतिविधियों के कठिन मार्ग से, रथ के पहियों से, जो बन्धन में नहीं हैं और किसी के मित्र नहीं हैं, परन्तु जो दिव्यता के उत्तम श्रोता है और जिन्हें उनके ज्ञान और अनुभूति के कारण अन्य लोग उत्तम प्रकार से सुनते हैं और जो आपके अत्यन्त निकट हैं। यह शासक साठों हजार हैं। परन्तु महान् आत्माएं ऐसे शासकों से 99 वर्ष से भी अधिक अवधि तक दूर रहते हैं। यह बीस शासक हैं – दस इन्द्रियां, पांच प्राण, मन, बुद्धि, अहंकार, हृदय तथा चेतना। परमात्मा सर्वोच्च श्रोता है।

जीवन में सार्थकता :-

दिव्यता के अत्यन्त निकट कौन होता है?

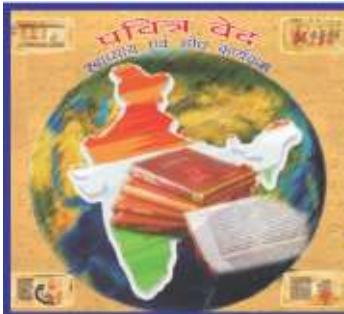
बीस शासकों ने पूरा कुशासन किस प्रकार रचा हुआ है?

1. जो व्यक्ति इस सृष्टि में किसी चीज से बंधा नहीं है और जिसकी अपनी कोई इच्छा नहीं है,

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

2. जो दिव्यताओं को उत्तम प्रकार से सुनता है और जो अपने महान् और दिव्य ज्ञान तथा अनुभूति के कारण दिव्यता के अत्यन्त निकट होता है और जिसे अन्य लोग अच्छी प्रकार से सुनते हैं। जब एक व्यक्ति दिव्यता के निकट हो जाता है तो वह निश्चित रूप से सर्वोच्च श्रोता के द्वारा सुना जाता है और जनता पर शासन करने वाले शासकों से दूर रहता है। यह एक आश्चर्य है कि दिव्य लोगों को छोड़कर सभी लोग इन बीस शासकों से शासित होते हैं। इन बीस शासकों का शासन वास्तव में एक ऐसा कृशासन है जो जीवन की सभी समस्याओं और पेचिदिगियों को जन्म देता है। अतः इस कृशासन से मुक्ति पाने के लिए हमें सृष्टि की किसी भी वस्तु के बन्धन से मुक्त रहना चाहिए, यहाँ तक कि अपनी इन्द्रियों से भी।

ऋग्वेदमन्त्र 1.53.10

त्वमाविथसुश्रवसंतवोतिभिस्तव त्रामभिरिन्द्रतूर्वयाणाम् ।
त्वमस्मैकुत्समतिथिग्वमायुंमहेराङ्गे यूनेअरन्धनायः ॥ 10 ॥

(त्वम्) आप (आविथ) रक्षा करते हो (सुश्रवसम्) उत्तम स्रोता (दिव्यता का), सुने जाने के लिए उत्तम (अपने ज्ञान और अनुभूति के लिए) (तव ऊतिभिः) आपके द्वारा संरक्षण साधनों के साथ (तव त्रामभिः) आपके द्वारा पालन पोषण के साधनों के साथ (इन्द्र) परमात्मा (तूर्वयाणाम्) सभी बुराईयों और दुर्गुणों पर आक्रमण करते हुए (त्वम्) आप (अस्मै) यह (कुत्सम्) बुराईयों और दुर्गुणों का नाशक (अतिथिग्वम्) अतिथियों का स्वागत करने वाले (आयुंम्) सक्रिय व्यक्ति (महे) महान् (राङ्गे) राजा, नियंत्रण करने वाला शासक (यूने) युवा अवस्था (अरन्धनायः) पूर्ण व्यक्तित्व, वज्र वाली ताकत।

व्याख्या :-

परमात्मा किसको संरक्षित करता है?

हे इन्द्र, भगवान्! आप अपने सुरक्षा और पोषण के साधनों से उन लोगों की रक्षा करते हो जिनमें निम्न लक्षण होते हैं :-

1. सुश्रवसम् – उत्तम स्रोता (दिव्यता का), सुने जाने के लिए उत्तम (अपने ज्ञान और अनुभूति के लिए),
2. तूर्वयाणाम् – सभी बुराईयों और दुर्गुणों पर आक्रमण करते हुए।

आप महान् राजा को शक्तिशाली गर्जने वाली ताकत तथा पूर्ण व्यक्तित्व प्रदान करते हो, जो बुराईयों और दुर्गुणों का नाशक होता है और जो अपनी युवा अवस्था से ही अतिथियों का स्वागत करने में सक्रिय होता है।

जीवन में सार्थकता :-

प्रेम और भक्ति साधना का जीवन कब फलदायक होता है?

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

यदि हम अधिकांश महान् लोगों जैसे आदि गुरु शंकराचार्य, महर्षि दयानन्द सरस्वती, महर्षि रमन, श्री अरविन्दो आदि के जीवन का उनकी आयु के आधार पर सूक्ष्म अध्ययन करें तो सबका अनुपात यह निकलता है कि इन सभी आत्माओं ने अपनी युवा अवस्था में एक पूर्ण व्यक्तित्व बनकर शक्तिशाली गर्जती हुई ताकत प्राप्त कर ली थी। इसका अभिप्राय यह है कि परमात्मा के प्रति प्रेम और भक्ति साधना तथा उसकी अनुभूति पूर्व जन्मों के समर्पित प्रयासों से ही सफल होती है। अन्ततः युवा अवस्था में ही अनुभूति चमकने लगती है।

ऋग्वेदमन्त्र 1.53.11

य उदृचीन्द्रदेवगोपाः सखायस्तेशिवतमाअसाम ।
त्वां स्तोषामत्वयासुवीराद्राघीय आयुः प्रतरं दधानाः ॥

(ये) वो हम (उदृचि) उत्तम ऋचाओं के साथ अर्थात् वैदिक मन्त्र, ज्ञान और तरंगों के साथ (इन्द्र) परमात्मा (देवगोपा:) दिव्य संरक्षण वाला, दिव्यताओं का संरक्षित करने वाला (सखाय) मित्र (ते) आपके (शिवतमा) कल्याण के लक्षणों के साथ (असाम) होवो (त्वाम्) आप (स्तोषाम्) प्रशंसा करते हुए, महिमागान करते हुए (त्वया) आपके साथ (संगति और संरक्षण) (सुवीरा:) उत्तम बल वाला (द्राघीय:) लम्बी (आयुः) जीवन (प्रतरम्) उत्तम (स्वरथ एवं आध्यात्मिक) (दधानाः) धारण करते हैं।

व्याख्या :-

पूर्ण कल्याण का जीवन किसको प्राप्त होता है?

उत्तम साहसिक व्यक्ति कौन बनता है?

हे इन्द्र, सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा! वे हम जो उत्तम ऋचाओं अर्थात् वेद मंत्रों, वैदिक विवेक, ज्ञान और दिव्य तरंगों के साथ परमात्मा के प्रति प्रेम और भक्ति साधना में पड़े हैं; जिनके पास दिव्य संरक्षण हैं और जो दिव्यताओं की रक्षा करते हैं; जो आपकी मित्रता प्राप्त करने के बाद अपने कल्याण से पूर्ण हैं और दूसरों का भी कल्याण करते हैं। आपकी प्रशंसा और स्तुति में जीवन जीने वाले हम लोग आपकी संगति और संरक्षण में उत्तम साहसी व्यक्ति बन सकें। हम लम्बा और उत्तम जीवन अर्थात् स्वरथ और आध्यात्मिक जीवन प्राप्त कर सकें।

जीवन में सार्थकता :-

उत्तम आध्यात्मिक जीवन के क्या लक्षण हैं?

उत्तम आध्यात्मिक जीवन के निम्न लक्षण हैं :-

1. उदृचि – उत्तम ऋचाओं के साथ अर्थात् वैदिक मन्त्र, ज्ञान और तरंगों के साथ,

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

2. देवगोपा: – दिव्य संरक्षण वाला, दिव्यताओं का संरक्षित करने वाला,
3. सखाय ते – आपके मित्र,
4. शिवतमा – कल्याण के लक्षणों के साथ,
5. त्वाम् स्तोषाम् – आपकी प्रशंसा, महिमागान करते हुए,
6. त्वया सुवीरा: – आपकी संगति और संरक्षण के साथ, उत्तम बल वाला,
7. द्राघीयः आयुः प्रतरम् दधानाः – उत्तम लम्बा जीवन जीने वाला अर्थात् स्वस्थ और आध्यात्मिक जीवन।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

आज्ञा

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

ऋग्वेद मण्डल-1 सूक्त 54

ऋग्वेदमन्त्र 1.54.1

मानोअस्मिन्मघवन्पृत्स्वंहसिनहितेऽन्तः शवसः परीणशे ।
अक्रन्दयोनद्योऽ रोरुवद्वनाकथा न क्षोणीर्भियसासमारत ॥ १ ॥

(मा) नहीं (न:) हमें (अस्मिन्) यह (मघवन्) समस्त सम्पदाओं का दाता (पृत्सु) युद्धों में, विवादों में (अंहसि) पापों में (नहि) नहीं (ते) आपके (अन्तः) अन्त, सीमित (शवसः) बलों के (परीणशे) प्राप्त किया जा सकता है, लांघा जा सकता है (अक्रन्दयः) उलझे हुए, फंसे हुए, रोते हुए (नद्यः) नदियों को (रोरुवत) गर्जना (वना) वन (कथा न) क्यों नहीं (क्षोणीः) धरती और उसके बच्चे (भियसा) भय से (समारत) प्राप्त, संगति ।

व्याख्या :-

किसने नदियों और वनों को गर्जने के योग्य बनाया?

क्या कोई व्यक्ति युद्धों, विवादों या पापों में फंसना चाहता है?

हे परमात्मा, समस्त सम्पदा के दाता! कृपया हमें युद्धों, विवादों और पापों में न तो उलझाना, न फंसाना और न ही रोने के लिए छोड़ना। जैसा आपने नदियों और वनों को गर्जन करने के लिए बनाया है क्योंकि वे टेढ़ी—मेढ़ी अवस्था में होते हैं। कोई भी व्यक्ति आपकी शक्तियों की सीमाओं को न तो छू सकता है और न ही उन्हें लांघ सकता है। अतः, डर से ही, यह भूमि और उसके बच्चे आपको प्राप्त या आपकी संगति क्यों नहीं कर सकते।

जीवन में सार्थकता :-

हमें परमात्मा की संगति क्यों करनी चाहिए?

कोई भी व्यक्ति युद्धों, विवादों और पापों में अपना जीवन बिताना नहीं चाहता। सभी नदियाँ टेढ़े—मेढ़े प्रकार से चलते हुए गर्जना करती हैं। सभी वन बिना योजना के विकसित होने के कारण अकेलेपन में गर्जना करते हैं। हम परमात्मा की विस्तृत, असीमित और दिव्य शक्तियों को देख नहीं सकते जिसने सभी नदियों और वनों को बनाया है। विवादों और पापों का जीवन नदियों और वनों की तरह है। प्रत्येक व्यक्ति को ऐसे जीवन से डरना चाहिए और इसलिए प्रत्येक व्यक्ति को सर्वोच्च दिव्य शक्ति की संगति करनी चाहिए जिससे युद्धों, विवादों और पापों वाले जीवन से बचा जा सके।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

ऋग्वेदमन्त्र 1.54.2

अर्चा शक्राय शाकिने शचीवते शृण्वन्तमिन्द्रं महयन्नभिष्टुहि ।
यो धृष्णुना शवसारोदसीउभे वृषा वृषत्वा वृषभो न्यूंजते ॥ २ ॥

(अर्चा) श्रद्धा प्रस्तुत करना (शक्राय) सबसे अधिक बलशाली को (शाकिने) सबको शक्ति देने वाले (शचीवते) सर्वाधिक ज्ञानवान्, सभी ज्ञानों का आधार (शृण्वन्तम्) सबको सुनता है (इन्द्रम्) परमात्मा (महयन्) श्रद्धा प्रस्तुत करते हुए (अभिष्टुहि) उसकी प्रशंसा और महिमा (य:) जो (धृष्णुना) कुचलते हुए (शवसा) शक्ति (रोदसी) पृथ्वी तथा अन्तरिक्ष, शरीर और मन (उभे) दोनों (वृषा) वर्षा करने के लिए शक्तिशाली (वृषत्वा) वर्षा करने की शक्ति के साथ (वृषभः) वर्षा करते हुए (अपने आशीर्वादों की) (न्यूंजते) निरन्तर प्रबन्ध करता है, सुसज्जित करता है।

व्याख्या :-

कौन हमारे ऊपर ज्ञान और शक्तियों की वर्षा करता है?

हम सर्वोच्च इन्द्र, परमात्मा को अपना नमन प्रस्तुत करते हैं जो सबको शक्तिशाली बनाने के लिए सर्वाधिक शक्तिशाली है, सबसे अधिक ज्ञानवान् तथा सभी ज्ञानों का आधार है, जो सबको सुनता है; वर्षा करने के लिए शक्ति सम्पन्न होने के नाते वह अपनी वर्षा की शक्ति के साथ हम पर अपने आशीर्वादों की वर्षा से लगातार हमारा प्रबन्ध और हमें सुसज्जित करता है। वह ऐसी वर्षा भूमि तथा अन्तरिक्ष दोनों पर करता है अर्थात् हमारे शरीर और हमारे मन पर। अतः हमें अपना नमन प्रस्तुत करने के साथ—साथ उसकी प्रशंसा और महिमा कहनी चाहिए।

जीवन में सार्थकता :-

हमारे शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य का क्या आधार है?

हमें शारीरिक और मानसिक, भौतिक और आध्यात्मिक सभी शक्तियाँ सर्वोच्च शक्तिशाली और सर्वोच्च ज्ञानवान् परमात्मा द्वारा उपहार में दी गई हैं। उसके द्वारा दी गई शारीरिक शक्तियों के माध्यम से हम रोगमुक्त रहते हैं तथा उसके द्वारा दिये गये ज्ञान के माध्यम से हम कठिनाईयों और तनावों से मुक्त जीवन जीते हैं। हमारे शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य का मुख्य आधार उस सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा के साथ हमारे जुड़ाव का स्तर है। अतः यह आध्यात्मिक मार्ग ही हमारे जीवन के पूर्ण स्वास्थ्य का मुख्य आधार है।

ऋग्वेदमन्त्र 1.54.3

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



अर्चादिवेबृहते शूष्यं॑ वचः स्वक्षत्रं यस्य धृषतो धृषन्मनः ।
बृहछवाऽसुरोबहृणाकृतः पुरोहरिभ्यां वृषभोरथोहि षः ॥

(अर्चा) अर्चना, पूजा (दिवे) प्रकाशवान् के लिए (बृहते) सबसे बड़ा (शूष्यम्) शवित, बल (वचः) वाणियाँ (महिमा की) (स्वक्षत्रम्) अपना अर्थात् आत्मा का बल (यस्य) जिस (धृषतः) नाश करने वालों का (शत्रुओं का) (धृषतः) नाशकर्ता (मनः) मन (बृहत्) सबसे बड़े का (बल) (श्रवाः) सुनने वाला (असुरः) प्रकाशित करने वाला (बहृणा) वृद्धि करने के लिए (कृतः) निर्माता (पुरः) आगे करने वाला (हरिभ्याम्) इन्द्रियों की शवित के साथ (वृषभः) वर्षा करता है (रथः) रथ, वाहन (हि) निश्चय से (षः) वह।

व्याख्या :-

सबसे बड़ा सुनने वाला, परमात्मा, किस प्रकार हमें प्रकाशित करता है और हमारा रथ वाहक बनता है?

सबसे बड़े श्रोता और सर्वाधिक प्रकाशवान् से प्रार्थना करो। सर्वोच्च शवित की महिमा में व्यक्त की गई वाणियाँ आपकी शवित और बल को बढ़ा देंगी। वह व्यक्ति जिसके मन में उसकी आत्मा का पूर्ण बल विद्यमान है वह अपनी नियंत्रक शवितयों से अपने शत्रुओं को नष्ट कर सकता है। केवल तभी सबसे बड़ा श्रोता, परमात्मा, ऐसे नियंत्रक को प्रकाश उपलब्ध कराता है और उसे सभी कार्यों में आगे बढ़ाता है। परमात्मा ऐसे व्यक्ति को इन्द्रियों की शवितयाँ देकर तथा उस पर आनन्द की वर्षा करके स्वयं उसका रथ वाहक बन जाता है।

जीवन में सार्थकता :-

अपने से बड़ों की शवितयों को कैसे प्राप्त करें?

यदि हम अपनी सभी अहंकारी प्रवृत्तियों और इच्छाओं को एक तरफ करके सर्वोच्च शवितशाली से प्रेम करें तो वह निश्चय से हमारा संरक्षण करते हुए और हर प्रकार से हमें आगे बढ़ाते हुए हमारे जीवन का सम्मान करते हैं। हमारे सांसारिक जीवन के सम्बन्धों में भी यह एक सर्वमान्य सिद्धान्त है। आप अपने वृद्धजनों से प्रेम करो और उनका सम्मान करो तो निश्चित रूप से वे अपनी शवितयों और बलों में आपको हिस्सा देकर आशीर्वाद देंगे।

ऋग्वेदमन्त्र 1.54.4

त्वंदिवोबृहतः सानुकोपयोऽ व त्मना धृषता शम्बरंभिनत् ।
यन्मायिनोव्रन्दिनोमन्दिना धृषच्छितांगभस्तिमशनिंपृतन्यसि ॥

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

(त्वम्) आप (दिवः) प्रकाश के साथ, दिव्यताओं के साथ (बृहतः) बढ़ाते हुए (सानु) बादलों के उच्च स्तर पर (कोपयः) कम्पित करता है (अव) भिनत् से पूर्व लगाकर) (त्मना) धूर्त मन (धृष्टा) नष्ट करने की शक्ति के साथ (शम्बरम्) शांति को आवृत्त करने वाले (बुरे विचारों के साथ) (भिनत् – अव भिनत्) काटता है और अन्त करता है (यत) जब (मायिनः) मायाबी आवरण के साथ (बुरे विचारों के) (व्रन्दिनः) कुटिल मनों का समूह (मन्दिनाः) आनन्द लेते हुए (बुरे मन) (धृष्टत) नष्ट करने की शक्ति (शिताम्) तीव्र (गभर्स्तिम्) ज्ञान की शक्ति के साथ (अशनिम्) गतिविधियों की शक्ति के साथ (पृतन्यसि) विजय के लिए प्रेरित करता है।

व्याख्या :-

बुराईयों के बादलों के सर्वोच्च भाग को कौन और कैसे कंपित करता है?
अपने सर्वोच्च प्रकाश और अपनी दिव्यताओं के साथ आप बढ़ते हुए बादलों को हिला डालते हो।
नष्ट करने की अपनी शक्ति के साथ, आप उन कुटिल मनों को काटकर समाप्त कर देते हो जो अपने बुरे विचारों से शांति को ढंक लेते हैं। जब बुरे विचारों का समूह अपने बुरे विचारों के मायाबी आवरण के साथ मजे में जीता है तो आप अपनी प्रबल नाशक शक्ति का प्रयोग करके उन्हें ज्ञान और गतिविधियों की शक्तियों से प्रेरित करते हो।

जीवन में सार्थकता :-

बुरे विचारों को नष्ट करने के लिए हम कैसे प्रेरित हो सकते हैं?

बुरी प्रकृति की वृत्तियाँ सदैव बढ़ती रहती हैं जब तक सर्वोच्च दिव्य शक्ति की सहायता से उन्हें अपने जीवन से समाप्त करने का संकल्प न लिया जाये। इसका अभिप्राय यह है कि इस दिशा में सर्वोच्च दिव्यता के प्रति केवल पूर्ण समर्पण ही सहायक हो सकता है। बुरे विचारों की वृत्तियाँ वास्तव में मन की शांति को ढंक लेती हैं। यह वृत्तियाँ बढ़ती जाती हैं और एक बड़े बादल की तरह समूह गठित कर लेती हैं और उसी तथाकथित आनन्द में जीती हैं। परन्तु सर्वोच्च प्रकाश ऐसे लोगों को जीवन के हर कदम पर दो दिशाओं से प्रेरित करता है :-

- (क) ज्ञान की शक्ति तथा
- (ख) गतिविधियों की शक्ति।

ऋग्वेदमन्त्र 1.54.5

नि यद् वृण्क्षि श्वसनस्यमूर्धनि शुष्णस्य चिद् व्रन्दिनोरोरुवद्वना ।
प्राचीनेनमनसाबर्हणावता यद्याचित्कृणवः कस्त्वापरि ॥ 5 ॥

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

(नि – वृणक्षि से पूर्व लगाकर) (यत) जब (वृणक्षि – नि वृणक्षि) निरन्तर हमला करता है, पृथक करता है (श्वसनस्य) श्वास का (मूर्धनि) मन (शुष्णस्य) नाश करने वाले के, शोषण करने वाले के (चित) भी, जैसे (व्रन्दिनः) बुरे विचारों का समूह (रोरुवत्) गर्जना (वना) वन (प्राचीनेन) प्राचीन, निरन्तर (मनसा) मन के साथ, विज्ञान के साथ (बर्हणावता) बहुआयामी बुद्धि के साथ (यत) जब (अद्य चित) आज भी (कृणवः) करता है (कः) कौन है (त्वा) आपका (परि) दूर, ऊपर।

व्याख्या :-

क्या कोई व्यक्ति परमात्मा से दूर रह सकता है?

सभी जीवों के ऊपर एक संरक्षण छाते की तरह कौन है?

जब आप (परमात्मा) बुरे विचारों पर लगातार हमला करते हो और उनकी श्वास रोकते हो जो मन का नाश करते हैं और बुरे विचारों के बो समूह जो जंगल में गर्जना करते हैं। बहुआयामी बुद्धियों के साथ, आप आज भी ऐसा ही करते हो। जैसे आप मन के साथ, विज्ञान के साथ लगातार प्राचीन समय से करते आ रहे हो, आपसे दूर कौन रह सकता है।

इसका स्वाभाविक उत्तर है कोई भी व्यक्ति परमात्मा से दूर नहीं है।

जब आप (परमात्मा) बुरे विचारों पर लगातार हमला करते हो और उनकी श्वास रोकते हो जो मन का नाश करते हैं और बुरे विचारों के बो समूह जो जंगल में गर्जना करते हैं। बहुआयामी बुद्धियों के साथ, आप आज भी ऐसा ही करते हो। जैसे आप मन के साथ, विज्ञान के साथ लगातार प्राचीन समय से करते आ रहे हो, आपसे ऊपर कौन हो सकता है।

इसका स्वाभाविक उत्तर है कि सर्वोच्च शक्ति, परमात्मा, इन्द्रियों के सभी नियंत्रकों से भी ऊपर है, एक संरक्षणकर्ता छाते की तरह।

जीवन में सार्थकता :-

कलियुग के शेर कौन हैं?

कलियुग के शेरों का शिकारी कौन है?

बुरे विचार मानव का नाश कर देते हैं। परमात्मा ही केवल एक सर्वोच्च शक्ति है जो बुरे विचारों का नाश कर सकता है। क्रियात्मक रूप से आज के समाज में बुरे विचार ऐसे गर्जना करते हैं जैसे शेर वनों में गर्जते हैं। केवल एक बहादुर शिकारी ही वनों के इन शेरों को मार सकता है, उसी प्रकार परमात्मा और उसके बहादुर भक्त जो इन्द्रियों पर नियंत्रण करते हैं, कलियुग के इन शेरों के बुरे विचारों का नाश कर सकते हैं। प्रत्येक व्यक्ति बुरे विचारों से मुक्त जीवन जीना चाहता है। अतः प्रत्येक व्यक्ति इस जागृति के साथ सर्वोच्च दिव्यता के साथ जीवन जीने के लिए बाध्य है, क्योंकि वह सर्वोच्च दिव्यता ही सबका एकमात्र संरक्षण छाता है और कोई भी उसके बिना नहीं रह सकता।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

ऋग्वेदमन्त्र 1.54.6

त्वमाविथनर्यतुर्वशं यदुंतवंतुर्वीति॒ वयं शतक्रतो॑ ।
त्वंरथमेतशंकृत्ये॒ धनेत्वंपुरोनवतिंदम्भयोनव ॥ ६ ॥

(त्वम्) आप (आविथ) संरक्षण करते हो (नर्यम्) मानवों का (तुर्वशम्) उत्तम, गति के साथ (यदुम्) प्रयास में लगे हुए (त्वम्) आप (तुर्वीतिम्) बुराईयों और कुटिलताओं का नाश करते हुए (वयम्) ज्ञान और गतिविधियों में उत्तम (शतक्रतो) असीमित ज्ञान और असंख्य कार्यों वाले (त्वम्) आप (रथम्) रथ, शरीर (एतशम्) अश्व, कर्न्दियों (कृत्ये धने) सम्पदा अर्जित करने के लिए (त्वम्) आपके (पुरः) शहर (नवतिम्) नब्बे (दम्भयः) नाश करते हो (नव) नौ।

व्याख्या :-

परमात्मा किसको संरक्षित करता है?

आप (परमात्मा) असीमित ज्ञान और असंख्य कार्यों को करने वाले, निम्न लोगों की रक्षा करते हैं।

(क) नर्यम् – मानवों का

(ख) तुर्वशम् – उत्तम, गति के साथ कार्य करने वालों का

(ग) यदुम् – प्रयास में लगे हुए लोगों का

(घ) तुर्वीतिम् – बुराईयों और कुटिलताओं का नाश करने वालों का

(ङ) वयम् – ज्ञान और गतिविधियों में उत्तम लोगों का

(च) रथम् एतशम् कृत्ये धने – सम्पदा कमाने के लिए शरीर के अंगों का प्रयोग करने वालों का।

दूसरी तरफ आप बुराईयों और कुटिलताओं के 99 शहरों और किलों को नष्ट कर देते हो।

जीवन में सार्थकता :-

परमात्मा सभी कार्यों और विचारों का फल किस प्रकार देते हैं?

'शतक्रतो' शब्द का वास्तविक अर्थ क्या है?

परमात्मा के पास असीतिम शक्तियाँ और पूर्ण ज्ञान है। वह हमारे सभी कार्यों और विचारों को जानता है। वह हमारे सभी कार्यों और विचारों का फल देने के लिए सक्षम है। हमारे अच्छे कार्यों और विचारों का परिणाम अच्छा होता है, जबकि बुरे का परिणाम बुरा होता है।

यह मन्त्र कर्मफल सिद्धान्त का समर्थन करता है। यह परमात्मा की वज्रशाली शक्ति है जो असंख्य कार्यों का कर्ता है। अतः अपने असीमित ज्ञान के बल पर वह प्रत्येक व्यक्ति के प्रत्येक कार्य को जानता है और यहाँ तक कि मन में एक छोटी सी तरंग की तरह उठने वाले विचार को भी जानता है, वह सभी कार्यों का समुचित फल देता है।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

ऋग्वेदमन्त्र 1.54.7

स घाराजासत्पति: शूशुवज्जनोरातहव्यः प्रति यः शासमिन्चति ।
उकथावा योअभिगृणातिराधसादानुरस्माउपरापिन्वतेदिवः ॥ ७ ॥

(स) वह (घा) निश्चय से (राजा) जीवन का नियंत्रक, न्यायकारी बुद्धि से प्रकाशवान् (सत्पति:) सत्य का संरक्षक (शूशुवत) स्वयं को बढ़ाने में सक्षम (जनः) मनुष्य (रातहव्यः) आहुतियों का दाता (प्रति) शासम से पूर्व लगाकर) (यः) जो (शासम) प्रति शासम) परमात्मा का शासन तथा आदेश (इन्वति) व्याप्त, अनुपालन (उकथा) दिव्य निर्देश (घा) और (यः) जो (अभिगृणाति) सबके लिए उपदेश देता है (राधसा) प्राप्त करने के उद्देश्य के साथ (दानुः) दाता (सभी फलों का) (अस्मा) उसको (इन्द्रियों के नियंत्रक को) (उपरा) ऊपर, दिव्य (पिन्वते) पूर्ण करता है (दिवः) दिव्य ज्ञान ।

व्याख्या :-

एक दिव्य राजा के क्या लक्षण हैं?

वह निश्चित रूप से राजा है, जीवन का नियामक है, न्यायकारी बुद्धि से प्रकाशित है, जो है :-

(क) सत्पति: - सत्य का संरक्षक

(ख) शूशुवत् जनः - स्वयं को बढ़ाने में सक्षम व्यक्ति

(ग) रातहव्यः - आहुतियों का दाता

(घ) प्रति शासम् इन्वति - व्यापक रूप से परमात्मा के शासन तथा आदेशों का पालन करने वाला,

(ङ) उकथा अभिगृणाति राधसा - लाभ प्राप्त करने के उद्देश्य से सबको दिव्य निर्देशों का उपदेश देता है ।

सभी फलों का दाता अर्थात् परमात्मा ऐसे लोगों को उच्च दिव्य ज्ञान देता है - दानुः अस्मा उपरा पिन्वते दिवः ।

जीवन में सार्थकता :-

आधुनिक युग में कोई मुखिया एक दिव्य मुखिया कैसे बन सकता है?

एक सच्चा राजा वह नहीं है जो जबरदस्ती लोगों के ऊपर राजा की तरह थोपा गया है या जो निर्वाचन प्रक्रिया की कमजोरी का प्रबन्ध करके स्वयं को राजा निर्वाचित करवा लेता है। एक सच्चे राजा में राजा के महत्वपूर्ण लक्षण होने आवश्यक है जो इस मन्त्र में व्यक्त किये गये हैं। जैसे - सच्चाई, लोगों को बढ़ाने की क्षमता, एक अच्छा दानी, परमात्मा के शासन और आदेशों में व्याप्त, दिव्य निर्देशों का उपदेश करने वाला ।

परमात्मा केवल ऐसे ही राजा को उच्च दिव्य ज्ञान से पूर्ण करता है। परिवार, संगठन या राष्ट्र के मुखिया को भी यह सभी लक्षण धारण करने चाहिए जिससे वह स्वयं को एक दिव्य मुखिया स्थापित कर सके ।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



ऋग्वेदमन्त्र 1.54.8

असमं क्षत्रमसमामनीषाप्रसोमपाअपसासन्तुनेमे ।
ये त इन्द्रददुषो वर्धयन्तिमहि क्षत्रं स्थविरंवृष्यंच ॥ ४ ॥

(असमम्) असमानान्तर (क्षत्रम्) शक्ति, बल (असमा) असमानान्तर (मनीषा) बुद्धि (प्र – सन्तु से पूर्व लगाकर) (सेमपा) शुभ गुणों का संरक्षक (अपसा) गतिविधियों के साथ (कल्याण की) (सन्तु – प्र सन्तु) अत्यधिक बड़े हुए (नेमे) ये (ये) वे (ते) आपके लिए (इन्द्र) परमात्मा (ददुषो) समर्पित (वर्धयन्ति) बढ़ाते हैं (महि क्षत्रम्) महान् शक्ति, बल (स्थविरम्) पक्के स्थापित (वृष्यम्) कल्याण की वर्षा (च) और ।

व्याख्या :-

किसको असमानान्तर शक्तियाँ और बुद्धि प्राप्त होती हैं?

इन्द्र, सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा! जो आपके प्रति पूर्ण समर्पित हैं उनके पास असमानान्तर शक्तियाँ, बल और बुद्धि होती है। शुभ गुणों के ऐसे संरक्षक ऊँचे उठे हुए होते हैं, अपने कल्याण कार्यों से बढ़ते हैं। वे अपनी महान् शक्तियों और बलों में भी बढ़ा दिये जाते हैं और वे लोगों पर कल्याण की वर्षा करने के लिए भी महान् रूप में स्थापित हो जाते हैं।

जीवन में सार्थकता :-

पूर्ण समर्पण का क्या महत्त्व है?

परमात्मा के प्रति पूर्ण समर्पण अपनी शक्तियाँ और बल बढ़ाने का एक मजबूत आधार है। पूर्ण समर्पण का अर्थ है परमात्मा के प्रति पूर्ण समर्पित। यह हमें अहंकाररहित और इच्छारहित बनाने में सहयोग करता है। एक बार जब हम अहंकाररहित हो जाते हैं तो हमारा समर्पण पवित्र हो जाता है और हम उस सर्वोच्च परमात्मा के और अधिक निकट हो जाते हैं।

इसी प्रकार जब हम अपने प्रयासों को अपने माता-पिता के चरण कमलों में समर्पित कर देते हैं तो हमें उनसे और अधिक प्रेम मिलता है। गुरु के प्रति समर्पण से हमें प्रेम से भरपूर अत्यधिक ज्ञान मिलता है। संगठन के उच्चाधिकारियों के प्रति समर्पण से हमें और अधिक शक्तियाँ और विश्वास प्राप्त होता है। राष्ट्र के प्रति समर्पण से हमें महान् देशभक्त और महान् नेता होने का स्तर प्राप्त होता है। अतः समानान्तर परिणाम प्राप्त करने के लिए अपने कार्य के प्रति पूर्ण समर्पित हो जाओ।

ऋग्वेदमन्त्र 1.54.9

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



तुभ्येदेतेबहुलाअद्रिदुग्धाश्चमूषदश्चमसाइन्द्रपानाः।
व्यश्नुहितर्पयाकाममेषामथामनोवसुदेयाय कृष्ण ॥ 9 ॥

(तुभ्य) आपके लिए (इत) निश्चय से (एते) ये (बहुला) अधिक मात्रा में (अद्रि दुग्धा) वृक्ष अर्थात् शरीर के लिए पूर्ण शुभ गुण, प्रकृति से प्राप्त दिव्य ज्ञान (चमूषदः) शरीर में बैठने के योग्य (चमसाः) शरीर में पान के योग्य (इन्द्र पानाः) इन्द्र पुरुष के द्वारा संरक्षण प्राप्त करने के लिए, सर्वोच्च इन्द्र की अनुभूति प्राप्त करने के लिए (व्यश्नुहि) शरीर में विशेष रूप से व्याप्त करता है (तर्पया) संतुष्टि करता है (कामम्) इच्छाएं (एषाम्) इनकी (अथा) अतः (मनः) मन को (वसुदेयाय) धन का दाता (कृष्ण) करता है।

व्याख्या :-

शुभ गुण किसके लिए बने होते हैं?

शुभ गुण कहाँ रहते हैं?

ये शुभ गुण हमारी क्या सहायता करते हैं?

हमारी मुख्य इच्छा क्या होनी चाहिए?

पूर्ण शुभ गुण इस वृक्ष के लिए बने हैं अर्थात् शरीर के लिए। शुभ गुण दिव्य ज्ञान की तरह हैं जो प्रकृति से प्राप्त होते हैं। यह निश्चित रूप से बहुत बड़ी संख्या में आपके लिए ही हैं। ये आपके शरीर में रहने के लिए निर्धारित हैं जिससे आपका शरीर इनका उपयोग कर सके।

इन शुभ गुणों की रक्षा केवल एक इन्द्र पुरुष ही कर सकता है और ये शुभ गुण सर्वोच्च इन्द्र को प्राप्त करने और उसकी अनुभूति में आपकी सहायता करते हैं। एक इन्द्र पुरुष को समूचा जीवन अपने शरीर में इन शुभ गुणों को व्याप्त करना चाहिए जिससे वह इन शुभ गुणों की अपनी इच्छा को पूर्ण कर सके। अतः एक इन्द्र पुरुष ही अपना मन एक दाता की तरह बना लेता है।

जीवन में सार्थकता :-

एक आध्यात्मिक और श्रेष्ठ सामाजिक जीवन के लिए शुभ गुणों वाला जीवन किस प्रकार महत्त्वपूर्ण है?

शुभ गुणों का अर्थ है “अस्तित्व में पारंगत”। शुभ गुणों वाला जीवन ही परमात्मा की अनुभूति के आध्यात्मिक मार्ग पर प्रगति करने के लिए सबसे महत्त्वपूर्ण आधार है। इसके साथ ही यह एक श्रेष्ठ सामाजिक जीवन और जीवन के सभी क्षेत्रों में स्थायित्व के साथ चहुंमुखी प्रगति के लिए भी उतना ही महत्त्वपूर्ण है। केवल मानव जीवन ही शुभ गुणों वाले जीवन के लिए ही बना है। केवल शुभ गुणों वाला जीवन ही मानव पारंगतता की इच्छा कर सकता है और एक सम्मान की खोज कर सकता है तथा अपने अन्दर मूल सर्वोच्च शक्ति परमात्मा की खोज कर सकता है। शुभ गुणों के बिना एक व्यक्ति पाश्चिक बुराईयों के साथ जीता रहता है। जैसे — अपनी पसन्द के पीछे भागना और नापसन्द पर हमला करना, शत्रुतापूर्ण सम्बन्धों को विकसित करना। शुभ गुणों के साथ मिश्रित शिक्षा एक पूर्ण

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

मानव जीवन बनाती है जो दिव्य उद्देश्यों के प्रति संवेदनशील होता है। केवल ऐसा जीवन ही यज्ञ का जीवन जी सकता है अर्थात् सबका कल्याण करता है।

ऋग्वेदमन्त्र 1.54.10

अपामतिष्ठद्वरुणह्वरंतमोऽन्तर्वृत्रस्य जठरेषुपर्वतः ।
अभीमिन्द्रोनद्योवप्रिणाहिताविश्वाअनुष्टाः प्रवणेषुजिघन्ते ॥ 10 ॥

(अपाम) जल के, लोगों के (अतिष्ठत) स्थापित, रुकता है (धरुण ह्वरम्) बुराईयों को धारण करने वाला (तमः) अन्धकार (अन्तः) अन्दर (वृत्रस्य) मेघ, मन की वृत्तियाँ (जठरेषु) पेट में (पर्वतः) पक्षियों की तरह आकाश में उड़ते हुए, बिना लक्ष्य के उड़ते हुए (अभी) की तरफ, सामने (ईम) अब निश्चय से (इन्द्र) सर्वोच्च शक्ति, इन्द्रियों का नियंत्रक, सूर्य (नद्य) नदियाँ, जल की तरह बहते हुए (वप्रिणा) देखते हैं, अनुभूति प्राप्त करते हैं (हिताः) प्रतिक्षण गति करते हुए (विश्वाः) सब (अनुष्टाः) स्थापित का अनुसरण करते हुए (प्रवणेषु) विनम्रता के साथ (जिघन्ते) प्रगति करते हैं।

व्याख्या :-

कौन बादलों को नदियों की ओर जाने के लिए प्रेरित करता है?

हमारे मन की वृत्तियों का नाश करके कौन हमें दिव्यता की ओर जाने के योग्य बनाता है?

वैज्ञानिक अर्थ :— जल ऊपर जाकर बादलों के पेट में स्थापित होकर रुक जाता है और अन्धकार जैसी बुराई को धारण करते हुए आकाश में उड़ता है। परन्तु जब निश्चित रूप से वे सूर्य के सामने आते हैं तो वे नदियों की तरफ मुख करने के लिए मजबूर हो जाते हैं जो हर क्षण चलती रहती है और सदैव अपनी स्थापित प्रकृति का अनुसरण करती हैं और विनम्रता के साथ आगे बढ़ती हैं।

आध्यात्मिक अर्थ :— लोग मन की वृत्तियों के पेट में स्थापित रहते हैं, बादलों की तरह बिना लक्ष्य के उड़ते रहते हैं और पक्षियों की तरह बुराईयों को धारण करके, विशेष रूप से अज्ञानता रूपी सबसे बड़ी बुराई को धारण करके। अब निश्चित रूप से जब वे बुराईयाँ इन्द्रियों के नियंत्रक के सामने तथा सर्वोच्च शक्ति परमात्मा के सामने आती हैं तब वे महसूस करते हैं कि प्रत्येक क्षण अपनी स्थापित प्रकृति वाले अस्तित्व का अनुशारण करते हुए वे दिव्यता की ओर बढ़ रहे हैं और विनम्रता के साथ प्रगति करते हैं।

जीवन में सार्थकता :-

मन की वृत्तियों का क्या स्तर है?

मन की वृत्तियाँ अस्तित्वहीन हैं, परन्तु निश्चित रूप से हमें फंसाये रखती हैं। इनका कोई लक्ष्य नहीं है, परन्तु वे हमारी अज्ञानता का कारण हैं। इन वृत्तियों को नष्ट करने के लिए प्रत्येक व्यक्ति को इन्द्र अर्थात् इन्द्रियों का नियंत्रक बनना चाहिए, केवल तभी वह सर्वोच्च इन्द्र की अनुभूति प्राप्त कर

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

सकेगा। ऐसा जीवन मानवीय अस्तित्व के प्राकृतिक व्यवहार का अनुसरण करता है अर्थात् विनम्रता पूर्वक सबका कल्याण जैसे – नदियाँ सदैव और प्रतिक्षण करती हैं।

ऋग्वेदमन्त्र 1.54.11

स शेवृथमधि धा द्युम्नमस्मेमहि क्षत्रं जनाषङ्गिन्द्रतव्यम् ।
रक्षा च नोमधोनः पाहिसूरीन्नाये च नः स्वपत्याइषे धा ॥ 11 ॥

(स:) वह (शेवृथम) प्रसन्नता देता और बढ़ाता है (अधि धा:) अधिकता में धारण करता है (द्युम्नम) गौरवशाली सम्पदा (अस्मे) हमारे लिए (महि) महान् (क्षत्रम) बल और शक्तियाँ, राज्य (जनाषाट) लोगों को सहन करता है (इन्द्र) सर्वोच्च शक्ति, परमात्मा (तव्यम) शक्तिशाली (रक्षा) रक्षित करता है (च) और (न:) हमारा (मधोनः) त्याग करते हुए, यज्ञ करते हुए (पाहि) संरक्षण करें (सूरीन्) महान् विद्वान् (राये) सम्पदा के लिए (च) और (न:) हमारे लिए (स्वपत्यै) उत्तम सन्तान के लिए (इषे) आपकी इच्छा के लिए, संगति के लिए (धा:) धारण करो।

व्याख्या :-

परमात्मा हमारे लिए क्या धारण करता है और क्यों?

परमात्मा किसको संरक्षित करता है?

परमात्मा किसको सहन करता है?

वह सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा, हमें प्रसन्नता देने के लिए और हमें आगे बढ़ाने के लिए गौरवशाली सम्पदा धारण करता है। वह सभी महान् शक्तियाँ और बल धारण करता है। वह लोगों को सहन करता है। वह उन लोगों को संरक्षित करता है जो त्याग पूर्वक यज्ञ करते हैं। वह सभी महान् विद्वानों को संरक्षित करता है। वह हमारे लिए तथा हमारी सन्तानों के लिए सम्पदा को धारण करता है और संरक्षित करता है। वह हमें भी धारण करता है जिससे हम उसकी इच्छा और संगति कर सकें। अन्यथा वह सबको सहन करता है।

जीवन में सार्थकता :-

सरकारें किसको संरक्षित करती हैं?

सरकारें किसको सहन करती हैं?

प्रत्येक राष्ट्र को एक कल्याणकारी राज्य होना चाहिए। सरकारें सभी सम्पदाएं और सम्पत्तियाँ नागरिकों की प्रसन्नता के लिए ही धारण करती हैं। एक अच्छी सरकार महान् विद्वानों और उन नागरिकों को बढ़ाती है जो त्याग कार्य अर्थात् सबके कल्याण के कल्याण के लिए यज्ञ करते हैं। एक अच्छी सरकार भावी पीढ़ियों की प्रसन्नता भी सुनिश्चित करती है। इनके अतिरिक्त सरकार अन्य लोगों को सहन करती है जो न तो विद्वान् हैं और न यज्ञ कार्य करते हैं।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

प्रत्येक सत्ता, चाहे वे हमारे उच्चाधिकारी हों या हमारे माता-पिता, श्रेष्ठता को धारण करते हैं और अन्यों को सहन करते हैं।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

ऋग्वेद मण्डल-1 सूक्त 55

ऋग्वेद मन्त्र 1.55.1

दिवशिंचदस्य वरिमा वि पप्रथ इन्द्रं न महना पृथिवी चन प्रति ।
भीमस्तुविष्णांचर्षणिभ्य आतपः शिर्णीते वज्रं तेजसे न वंसगः ॥ १ ॥

(दिव:) प्रकाशमान द्यूलोक (चित) भी (अस्य) जिसका (परमात्मा का) (वरिमा) सर्वोच्चता (वि पप्रथ) विशेष विस्तार वाला (इन्द्रम्) सर्वोच्च नियंत्रक परमात्मा का (न) नहीं (महना) महानता (पृथिवी) यह भूमि (चन) तुलना की गई (प्रति) प्रतिनिधित्व (भीमः) अपनी प्रबल शक्ति के कारण (तुविष्णान) सर्वोच्च ज्ञान (चर्षणिभ्यः) कड़ी मेहनत करने वाले लोगों के लिए (आतपः) प्रदीप्त त्याग (शिर्णीते) तीक्ष्ण करता है, तरंगित करता है (वज्रम्) वज्र किरणें (तेजसे) महान् कार्यों के लिए, प्रकाश के लिए (न) जैसे (वंसगः) गर्जता हुआ हमला ।

व्याख्या :-

अन्तरिक्ष में और महानता में कौन सबसे सर्वोच्च है?

कड़ी मेहनत वाले लोगों के लिए वह क्या है?

जिसकी सर्वोच्चता समस्त प्रकाशमान् अन्तरिक्ष से भी परे विशेष रूप से विस्तृत है, यहाँ तक कि उस सर्वोच्च नियंत्रक परमात्मा की महानता के दृष्टिकोण से समूची धरती भी उसका प्रतिनिधित्व करने के लिए तुलना के योग्य नहीं है । अपनी अपार शक्ति और सर्वोच्च ज्ञान के कारण वह कड़ी मेहनत करने वाले लोगों के लिए ज्वलन्त त्याग है । वह गर्जते हुए हमलों जैसे – महान् कार्यों के लिए वज्रों को तेज बना देता है, वह गर्जते हुए हमलों के समान प्रकाश पैदा करने के लिए किरणें उत्पन्न करता है ।

जीवन में सार्थकता :-

गर्जते हुए हमले के लिए कौन बल देता है?

अन्य लोगों में सर्वोच्च ज्ञान कौन देता है?

हमें अपना अधिकार किसे हस्तांतरित करना चाहिए?

परमात्मा सबसे बड़े से भी बड़ा है, सबसे महान् से भी महान् है । उसकी सभी शक्तियों को इस प्रकार श्रेणीबद्ध किया जा सकता है :-

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

(क) भौतिक शक्तियाँ तथा

(ख) ज्ञान का प्रकाश।

यह उन कड़ी मेहनत करने वाले लोगों को उपहार दी जाती हैं जो परमात्मा से जुड़े रहते हैं, अन्य सभी लोग अर्थात् स्वार्थी लोग केवल चोरों की तरह परमात्मा की शक्तियों का आनन्द लेते हैं।

जो लोग यज्ञ अर्थात् दूसरों के कल्याण जैसे – महान् कार्य करते हैं, परमात्मा उनके बल बढ़ाते रहते हैं। परमात्मा उन लोगों के मन में विशेष दिव्य प्रभाव प्रदान करते हैं, जो उनके प्रति समर्पित हैं और अन्यों को प्रकाशित करते हैं।

इस मन्त्र से अन्य लोगों को अपने अधिकार सौंपने से सम्बन्धित एक अनुपातिक सिद्धान्त निकलता है कि सभी वरिष्ठ अधिकारियों को अपने अधिकार उन लोगों में स्थान्तरित करने चाहिए जो यज्ञ अर्थात् अन्य लोगों का पूर्ण कल्याण करते हों।

ऋग्वेद मन्त्र 1.55.2

सो अर्णवो न नद्यः समुद्रियः प्रति गृभ्णाति विश्रिता वरीमभिः।

इन्द्रः सोमस्य पीतये वृषायते सनात्स युध्म ओजसा पनस्यते ॥ 2 ॥

(स:) वह (परमात्मा) (अर्णवः) समुद्र (न) जैसे कि (नद्यः) नदियाँ (समुद्रियः) समुद्र की तरफ जाते हुए (प्रति गृभ्णाति) ग्रहण करता है (विश्रिताः) भिन्न-भिन्न स्थानों पर आश्रय करने वाली (वरीमभिः) विस्तृत (इन्द्रः) इन्द्रियों का नियंत्रक (सोमस्य) शुभ गुणों वाला ज्ञान (पीतये) पीने के द्वारा (वृषायते) शक्तिशाली व्यक्ति की तरह व्यवहार करता है (सनात) शाश्वत अर्थात् सनातन (स:) वह (युध्मः) युद्ध करते हुए, संघर्ष करते हुए (ओजसा) अपनी चमक, शक्तियों और कार्यों के साथ (पनस्यते) परमात्मा की अनुभूति का इच्छुक, लोगों पर शासन करने का इच्छुक।

व्याख्या :-

परमात्मा की अनुभूति प्राप्त करने की इच्छा कौन कर सकता है?

लोगों पर शासन करने की इच्छा कौन कर सकता है?

जिस प्रकार समुद्र उन नदियों को स्वीकार करता है जो समुद्र की तरफ जाते हुए भिन्न-भिन्न स्थानों पर फैली होती हैं और आराम करती हैं; जिस प्रकार एक इन्द्रियों का नियंत्रक, शुभगुणों वाले ज्ञान का पान करने के बाद, एक शक्तिशाली व्यक्ति की तरह व्यवहार करता है; जिस प्रकार वह (परमात्मा), एक सनातन शक्ति होने के नाते, अपनी यशस्वी शक्तियों, ज्ञान तथा कार्यों से एक व्यक्ति को युद्ध करने और संघर्ष करने में लगाये रखता है तथा परमात्मा की अनुभूति प्राप्त करने की इच्छा करता है। सांसारिक जीवन में इस मन्त्र को लागू करने पर एक व्यक्ति अपनी यशस्वी शक्तियों, ज्ञान और कार्यों से लोगों पर शासन करने की इच्छा कर सकता है।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



जीवन में सार्थकता :-

यशस्वी शक्तियाँ, ज्ञान और कार्यों को कैसे प्राप्त करें?

प्रत्येक व्यक्ति को यशस्वी शक्तियाँ, ज्ञान और कार्यों को प्राप्त करने के लिए कड़े प्रयास करने चाहिए। ऐसे कर्मकोष के साथ ही कोई आध्यात्मिक पथ पर परमात्मा की अनुभूति की इच्छा कर सकता है। जबकि सांसारिक जीवन में ऐसा व्यक्ति लोगों पर शासन करने की इच्छा कर सकता है।

यशस्वी शक्तियाँ उस अवस्था में हमारे पास आती हैं जब हम स्वयं को परमात्मा की सनातन शक्ति में रसायित कर लेते हैं, सदा कठिन परिस्थितियों, लालच, अहंकार और इच्छाओं के विरुद्ध सदैव युद्ध तथा संघर्ष करते रहते हैं और इन्द्रियों के सच्चे नियंत्रक बन जाते हैं। सभी बुराईयों को जीत लो और सभी शुभगुणों की रक्षा करो।

ऋग्वेद मन्त्र 1.55.3

त्वं तमिन्द्रं पर्वतं न भोजसे महो नृम्णस्य धर्मणामिरज्यसि ।
प्र वीर्येण देवताति चेकिते विश्वस्मा उग्रः कर्मणे पुरोहितः ॥ ३ ॥

(त्वम्) आप (तम) उस (इन्द्र) इन्द्रियों का नियंत्रक (पर्वतम्) मेघ (वृत्तियों के, अहंकार के, अज्ञानता के) (न) नहीं (भोजसे) संरक्षण, भोगना (महः नृम्णस्य) महान् सम्पद का (धर्मणाम्) धर्म के लिए (धारण करने योग्य सिद्धान्त एवं कार्य) (इरज्यसि) दिव्य हो जाता है, शासन का आनन्द लेता है (प्र वीर्येण) भारी बल के कारण (देवता) दिव्य जीवन (अति चेकिते) सर्वत्र जाना जाता है (विश्वस्मै) सबके लिए (उग्रः) मजबूत, प्रकाशित करने वाला (कर्मणे) सभी कर्मों के लिए (पुरोहितः) सबका कल्याण सुनिश्चित करने वाला।

व्याख्या :-

इन्द्रियों के नियंत्रक के क्या कर्तव्य होते हैं?

इन्द्रियों के नियंत्रक, आपको बादलों का संरक्षण या उनका भोग नहीं करना (वृत्तियों, अहंकार और इच्छाओं के बादल)। आप दिव्य बन जाओ और अपनी महान् सम्पदा का प्रयोग धर्म के लिए करके अपने शासन का आनन्द लो, धर्म के सिद्धान्तों को धारण करो और धर्म के कार्यों को करो।

अपने शरीर, मन और आत्मा की विशाल शक्ति के कारण अपने दिव्य जीवन के लिए आप सर्वत्र जाने जाओगे। अपने सभी बलशाली और प्रकाशित कार्यों के माध्यम से सबका कल्याण सुनिश्चित करो।

जीवन में सार्थकता :-

इन्द्रियों के नियंत्रक को क्या लाभ होता है?

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

सूर्य बादलों को खाता नहीं है, बल्कि सबके संरक्षण और कल्याण के लिए उनको नीचे वर्षा देता है। इसी प्रकार इन्द्रियों का नियंत्रक अपने अहंकार और इच्छाओं की वृत्तियों का न तो संरक्षण करता है और न ही उनका भोग करता है, अपितु बलशाली का प्रकाश और दिव्यता प्राप्त करने के लिए उन्हें नीचे गिरा देता है। ऐसी दिव्यता को वह धर्म की रक्षा तथा सबके कल्याण के लिए प्रयोग करता है। इस प्रकार इन्द्रियों का नियंत्रक अपनी दिव्यता के लिए प्रसिद्ध हो जाता है।

ऋग्वेद मन्त्र 1.55.4

स इद्वने नमस्युभिर्वचस्यते चारु जनेषु प्रब्रुवाण इन्द्रियम् ।
वृषा छन्दुर्भवति हर्यतो वृषा क्षेमेण धेनां मघवा यदिन्चति ॥ 4 ॥

(स इत) केवल वह (वने) एकान्त स्थान पर, एकाग्र मन के साथ (नमस्युभिः) विनम्र प्रशंसा करने वालों से (वचस्यते) प्रशंसित, स्तुति किया जाता है (चारु) सुन्दर (जनेषु) लोगों के लिए (प्रब्रुवाण) प्रगट किया गया (इन्द्रियम्) उसका ज्ञान और शक्ति (वृषा) वर्षा करने वाला (छन्दुः) आनन्दित एवं मुक्त (भवति) वह है (हर्यतः) उत्तम कार्य करने वालों के लिए (वृषा) वर्षा (क्षेमेण) शक्ति तथा संरक्षण के लिए (धेनाम्) उत्तम वाणियाँ (ज्ञान एवं प्रेरणा के लिए) (मघवा) यशस्वी सम्पदा (यत् इन्चति) जब व्याप्त करता है, जब प्राप्त करता है।

व्याख्या :-

विनम्र प्रशंसकों के द्वारा ही परमात्मा की प्रशंसा क्यों होती है?
उसकी प्रशंसा और महिमा केवल विनम्र प्रशंसक ही एकान्त स्थान में और एकाग्र मन के साथ करते हैं, क्योंकि वह अपना सुन्दर ज्ञान और दिव्य शक्तियाँ ऐसे लोगों के लिए व्यक्त करता है। वह उत्तम कार्य करने वालों के लिए आनन्ददाता है और अपार वर्षा करने वाला है। जब वह सबके बल और संरक्षण के लिए अपनी उत्तम वाणियों और यशस्वी सम्पदाओं की वर्षा करता है तो वह सब जगह व्याप्त हो जाता है और सब तरफ से प्रशंसाएँ और महिमा मंडन प्राप्त करता है।

जीवन में सार्थकता :-

लोगों के गहरे हृदय से हम सम्मान कैसे प्राप्त करें?

सभी सन्त वनों अर्थात् तपस्या के लिए भक्तिपूर्ण एकान्तवास को क्यों चुनते हैं?

अपने मन में वनों जैसी अवस्था कैसे पैदा करें?

यह मन्त्र सभी मानवों के लिए एक दिव्य पथ का निर्धारण करता है जिससे वे सबके कल्याण के लिए उत्तम कार्यों को कर सकें और सबके संरक्षण के लिए उत्तम ज्ञान, दिव्य वाणियाँ और यशस्वी सम्पदा प्राप्त कर सकें। इस प्रकार ऐसा व्यक्ति भी सबके हृदय में व्याप्त हो जाता है और सबके द्वारा एकाग्र मन से प्रशंसित और महिमा मंडित होता है, यह औपचारिक नहीं होता। वह लोगों गहरे हृदय से सम्मान प्राप्त करता है।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

हमें परमात्मा की तरह सम्मानित और प्रशंसित होने के लिए परमात्मा के पथ का ही अनुसरण करना चाहिए। परमात्मा जैसे बनने के लिए परमात्मा का अनुसरण करो। दिव्य शक्तियाँ प्राप्त करने के लिए दिव्य मार्ग का अनुसरण करो।

इस मन्त्र का दूसरा महत्वपूर्ण पहलू है – ‘वने’ अर्थात् जंगल, एकान्त, अलग जीवन, मन और हृदय की गहराई में एकाग्रता। दिव्यता को लोगों के द्वारा महिमा मंडित होने की आवश्कता नहीं होती। सच्ची दिव्यता को सच्चा और मूल समर्पण चाहिए। सभी महान् सन्त और ऋषि जंगलों अथवा एकान्त रथानों पर जाते थे जिससे उन्हें मन और हृदय की एकाग्रता प्राप्त हो और दिव्यता प्राप्त करने के लिए वे परमात्मा का महिमागान कर सकें। ‘वने’ के दो पहलू हैं – शारीरिक और मानसिक अर्थात् मन में वन जैसे अकेलेपन का निर्माण करना।

इस मन्त्र के निष्कर्ष के रूप में हमें यह प्रेरणा प्राप्त होती है कि हम उत्तम कार्य करें और अपने सारे मानसिक विभागों को सर्वोच्च दिव्यता की महिमा में लगा दें। यह कार्य तभी हो सकता है जब हमारा मन एक सूत्रीय लक्ष्य पर हो कि हमें सर्वोच्च दिव्यता के साथ एकता की अनुभूति करनी है। श्रद्धाभाव से किया गया एकान्तवास मन का संतुलन बनाने में सहायक होता है।

ऋग्वेद मन्त्र 1.55.5

स इन्महानि समिथानि मज्मना कृणोति युध्म ओजसा जनेभ्यः ।
अधा चन श्रद्धधति त्विषीमत इन्द्राय वज्रं निघनिघन्ते वधम् ॥ 5 ॥

(स:) वह (इत) निश्चित रूप से (महानि) बड़े में (समिथानि) युद्ध, संघर्ष एवं कठिनाईयों में (मज्मना) शक्तिशाली बनाने के लिए, शुद्ध करने के लिए (कृणोति) करता है (युध्मः) महान् योद्धा बनता है (ओजसा) बल (जनेभ्यः) लोगों के लिए (अधा चन) इस विजय के बाद, लोग (श्रद्धधति) सम्मान प्रस्तुत करता है, पूर्ण विश्वास व्यक्त करता है (त्विषीमत) वैभव, महिमा (इन्द्राय) सभी शत्रुओं का सर्वोच्च नियंत्रक, परमात्मा (वज्रम्) सर्वोच्च वज्र (निघनिघन्ते) गर्जते हुए हमले के साथ (वधम्) मारने के लिए, नष्ट करने के लिए।

व्याख्या :-

संघर्षों में और कठिन परिस्थितियों में कौन हमें विजयी बनाता है?

युद्धों और कठिन परिस्थितियों का क्या उद्देश्य होता है?

वह निश्चित रूप से हमें बड़े युद्ध, संघर्ष और कठिन परिस्थितियों का सामना करने के लिए योग्य बनाता है जिससे हम बल प्राप्त कर सकें और स्वयं को शुद्ध कर सकें। वह स्वयं लोगों के लिए महान् योद्धा तथा बल बन जाता है। विजय के बाद लोग उसे सम्मान देते हैं तथा उसके वैभव और

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

उसकी महिमा में विश्वास व्यक्त करते हैं जो शत्रुओं का सर्वोच्च नियंत्रक होता है। शत्रुओं, बुरे विचारों और कुटिलताओं का नाश करने वाले अपने गर्जते हुए हमलों के साथ वह सर्वोच्च वज्र बन जाता है।

जीवन में सार्थकता :-

सभी कठिनाईयों का नाश करने के लिए कौन सा वज्र है?

हम परमात्मा की प्रशंसा क्यों करते हैं?

हम पवित्र कैसे हो सकते हैं?

प्रत्येक कठिन अवस्था के बाद हमें एक नया बल प्राप्त होता है जो निःसंदेह हमारे अन्दर ही छिपा होता है। हमें तो केवल यह अनुभूति होती है कि हमारे अन्दर कोई दिव्य छिपी हुई शक्ति है। इस प्रकार लोग उस दिव्य शक्ति और उसके स्रोत, सर्वोच्च दिव्य परमात्मा की अनुभूति प्राप्त कर पाते हैं और उसकी प्रशंसा करते हैं। इस प्रक्रिया में हम अन्ततः अपने ही अन्दर उस दिव्यता की अनुभूति करके शुद्ध हो जाते हैं।

ऋग्वेद मन्त्र 1.55.6

स हि श्रवस्युः सदनानि कृत्रिमा क्षमया वृधान ओजसा विनाशयन् ।
ज्योतीषि कृण्वन्नवृकाणि यज्यवेऽव सुक्रतुः सर्तवा अपः सृजत् ॥ 6 ॥

(स:) वह (हि) केवल (श्रवस्युः) हमें सुनने के योग्य बनाने के लिए तत्पर (सदनानि कृत्रिमा) बुराईयों और धूर्तों का आवास (क्षमया) शक्ति के साथ (वृधानः) पृथ्वी की तरह विस्तृत (ओजसा) बहादुरी के साथ (विनाशयन्) नष्ट करते हुए (ज्योतीषि) ज्ञान की किरणें (कृण्वन्) पैदा करता है (अवृकाणि) आवरण से रहित (यज्यवे) अच्छे कार्य करने के लिए (अव - सुक्रतुः से पूर्व लगाकर) (सुक्रतुः - अव सुक्रतुः) उत्तम कार्यों को करने वाला परमात्मा (सर्तवा) गति के लिए तैयार करता है (अपः) जल, व्यापक गतिविधियाँ (सृजत्) उत्पन्न करता है।

व्याख्या :-

हमें सुनने के योग्य कौन बना सकता है?

अपनी शक्तियों और साहस के साथ वह हमारे अन्दर बसी बुराईयों और कुटिल प्रवृत्तियों का नाश करके हमें सुनने के योग्य बनाने के लिए तत्पर है। वह धरती की तरह विस्तृत है। उत्तम कार्यों को करने वाला होने के नाते, परमात्मा ज्ञान की किरणें पैदा करता है जो रहस्यों से मुक्त होती हैं और अच्छे कार्यों को करने के लिए होती हैं तथा जल को बहने के योग्य बनाता है और अपार गतिविधियों को पैदा करता है।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



जीवन में सार्थकता :-

परमात्मा के विस्तृत ज्ञान और गतिविधियों को अनुसरण करने का क्या उद्देश्य है?

ज्ञान, कर्म और उपासना का दिव्य पथ क्या है?

परमात्मा के पास अपार ज्ञान और असीम गतिविधियाँ हैं। उसने अपने कोष हमारे लिए खोल रखे हैं। वह हमें बुरे विचारों का नाश करने के लिए तथा हमें अपने समान उत्तम गतिविधियों में लगाने के लिए प्रेरित करता है और हमारी सहायता भी करता है। वह सुनने के योग्य है। इसलिए वह हमें भी सुनने के योग्य बनाने के लिए तत्पर रहता है।

अतः परमात्मा का अनुसरण करना और परमात्मा से ज्ञान प्राप्त करना, सबके कल्याण के लिए परमात्मा के समान कार्य करना और परमात्मा के समान सुविख्यात होना ही दिव्य मार्ग है। इसका अभिप्राय है कि परमात्मा ही ज्ञान और कर्म दोनों का दाता है। यदि हम परमात्मा के इन दोनों उपहारों को पूर्ण संकल्प के साथ स्वीकार करें तो यही अपने आपमें सर्वोच्च भवित अर्थात् उपासना बन जायेगी।

ऋग्वेद मन्त्र 1.55.7

दानाय मनः सोमपावन्नस्तु तेऽर्वाचा हरी वन्दनश्रुदा कृधि ॥
यमिष्ठासः सारथयो य इन्द्र ते न त्वा केता आ दभ्नुवन्ति भूर्णयः ॥ ७ ॥

(दानाय) दान देने के लिए, कल्याण के लिए (मनः) मन (सोम पावन) शुभ गुणों, महान् दिव्य ज्ञान का पान करने वाला (अस्तु) हो (ते) आपका (अर्वाचा) अन्तर्मुखी (हरी) सब इन्द्रियाँ (वन्दनश्रुत) परमात्मा की महिमागान सुनने वाला (आकृधि) पूरी तरह करने वाला (यमिष्ठासः) पूर्ण नियंत्रण (सारथयः) सारथी, बुद्धि (य) जो (इन्द्र) इन्द्रियों का नियंत्रक (ते) आप (न) नहीं (त्वा) आपके लिए (केता) ज्ञान (आदभ्नुवन्ति) हिंसक, सब तरफ से विपत्ति पैदा करने वाला (भूर्णयः) पालन-पोषण से सम्बन्धित।

व्याख्या :-

वैदिक विवेक से परिपूर्ण जीवन के आधारभूत लक्षण क्या होते हैं?

ऐसा व्यक्ति जो शुभ गुणों तथा महान् दिव्य ज्ञान का पान करने में इच्छुक है, वह अपना मन दान करने और कल्याण करने में लगाये रखे।

ऐसा व्यक्ति जो परमात्मा की महिमा सुनने का इच्छुक है, वह अपनी इन्द्रियों को पूरी तरह से अन्तर्मुखी रखे, इन्द्र अर्थात् इन्द्रियों के नियंत्रक, एक अच्छे सारथी की तरह तुम्हारी बुद्धि तुम्हारी इन्द्रियों को पूरी तरह नियंत्रण में रखे।

तुम्हारे भरण-पोषण से सम्बन्धित तुम्हारा ज्ञान तुम्हारे लिए हिंसक या बाधा उत्पन्न करने वाला न हो।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

जीवन में सार्थकता :-

कलियुगी जीवन का विनाशकारी उपभोक्तावाद क्या है?

वर्तमान कलियुग का व्यक्ति जो भी ज्ञान या विकास कर रहा है वह अन्ततः उसके स्वयं के लिए हिंसक और कठिनाईयाँ उत्पन्न करने वाला बन जाता है, यदि उसके जीवन में वैदिक विवेक का अभाव हो।

(क) यदि व्यक्ति दूसरों के कल्याण के लिए अपनी सम्पदा दान करने का अभ्यस्त नहीं है।

(ख) यदि उसकी इन्द्रियाँ और मन अन्तर्मुखी नहीं हैं।

(ग) यदि उसकी बुद्धि अपनी इन्द्रियों पर पूर्ण नियंत्रण करने के लिए अभ्यस्त नहीं हैं।

इन अवस्थाओं में व्यक्ति स्वयं के लिए ही विनाशक बन जाता है। देखने में वर्तमान युग का आदमी प्रगतिशील है परन्तु वास्तव में वह एक शांतिपूर्ण और श्रेष्ठ जीवन के लिए आवश्यक मूल लक्षणों का नाश करता जा रहा है। यह न तो प्रगति है और न ही विकास है। यह कलियुगी जीवन का विनाशकारी उपभोक्तावाद है।

ऋग्वेद मन्त्र 1.55.8

अप्रक्षितं वसु बिभर्षि हस्तयोरषाळहं सहस्तन्चि श्रुतो दधे ।

आवृतासोऽ वतासो न कर्तृभिस्तनूषु ते क्रतव इन्द्र भूरयः ॥ ८ ॥

(अप्रक्षितम्) क्षय रहित, नाश न होने योग्य (वसु) सम्पदा (बिभर्षि) धारण करता है (हस्तयोः) हाथों में (अषाळहम्) हिंसित न होने योग्य, पराजित न होने योग्य (सहः) बल (तन्चि) शरीर में (श्रुतः) सुनने योग्य (दधे) धारण करता है (आवृतासः) प्रसन्नता से पूर्ण (अवतासः) संरक्षण से पूर्ण (न) जैसे (कर्तृभिः) कर्त्तव्यबद्ध तथा गतिशील (तनूषु) शरीरों में (ते) आपके (क्रतवः) ज्ञान तथा गतिविधियाँ (इन्द्र) इन्द्रियों का नियंत्रक (भूरयः) कीमती, मूल्यवान् ।

व्याख्या :-

वैदिक विवेक धारण करने वाला व्यक्ति किस प्रकार के जीवन का आनन्द लेता है?

पिछला मन्त्र (ऋग्वदे 1.55.7) हमें प्रेरित करता है कि हम समस्त ज्ञान वैदिक विवेक के साथ ही धारण करें, एक दाता बनकर और इन्द्रियों के नियंत्रक बनकर।

यह मन्त्र ऐसे व्यक्ति के जीवन की दृष्टि प्रस्तुत करता है जो वैदिक विवेक के साथ जीता है :-

(क) वह अपने हाथ में अनाशवान् सम्पदा धारण करता है।

(ख) वह अपने शरीर में अहिंसनीय और अपराजित बल को धारण करता है जो सुनने के योग्य है।

(ग) कर्त्तव्यबद्ध और सक्रिय व्यक्ति होने के नाते वह पूरी तरह संरक्षित व्यक्ति हर प्रकार से प्रसन्न होता है।

(घ) एक इन्द्र पुरुष बड़ा कीमती और अनमोल ज्ञान तथा गतिविधियाँ धारण करता है।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

जीवन में सार्थकता :-

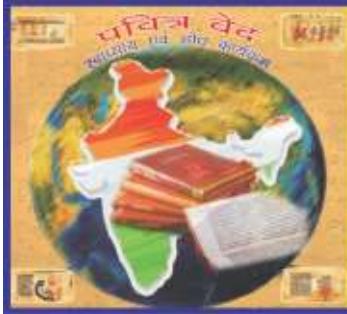
कलियुग में अपनी सम्पदा और ज्ञान का प्रयोग कैसे करें?

जब सम्पदा का प्रयोग दूसरों के कल्याण के लिए किया जाता है तो वह कभी नष्ट नहीं होती, बल्कि बढ़ती रहती है। अपने ज्ञान का प्रयोग करते हुए हमें इन्द्रियों और मन को अन्तर्मुखी बनाये रखना चाहिए अर्थात् दिव्यता पर एकाग्र और पूरी तरह नियंत्रण में। हमें अपनी इन्द्रियों का वेलगाम प्रयोग नहीं करना चाहिए। ऐसा ज्ञान निश्चित रूप से अहिंसनीय और अपराजेय होगा। इस प्रकार गौरवशाली भौतिक सम्पदा तथा ज्ञान हमें अपराधों और बीमारियों के इस अन्धकारमय युग अर्थात् कलियुग में भी पूरी तरह संरक्षित व्यक्ति बना सकता है।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

आज्ञा

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

ऋग्वेद मण्डल-1 सूक्त 56

वैदिक विवेक और इन्द्र पुरुष पर सूक्त

ऋग्वेद मन्त्र 1.56.1

एष प्र पूर्वीरव तस्य चम्पिषोऽत्यो न योषामुदयंस्त भुर्वणि: ।
दक्षं महे पाययते हिरण्ययं रथमावृत्या हरियोगमृभ्वसम् ॥ १ ॥

(एष:) वह, दाता तथा इन्द्रियों का नियंत्रक (प्र – उदयंस्त से पूर्व लगाकर) (पूर्वी:) पूर्ण रूप से (अव – उदयंस्त से पूर्व लगाकर) (तस्य) उसके लिए (परमात्मा की अनुभूति के लिए) (चम्पिष:) सभी पदार्थों का आनन्द लेने वाला शरीर (अत्य:) लगातार सक्रिय (न) जैसे कि (योषाम) विद्वतापूर्ण स्त्रियों के साथ (उदयंस्त – प्र अव उदयंस्त) पूर्ण प्रगति करता है (भुर्वणि:) स्वयं को धारण करता है, पालन–पोषण करता है (दक्षम) दक्षता के साथ (महे) महान् एवं दिव्य (पाययते) प्राप्त करता है, पान करता है (हिरण्ययम) स्वर्णिम (रथम) रथ (आवृत्या) पदार्थों की वृत्तियों को हटा देता है (हरियोगम) परमात्मा से जुड़ता है जो सभी दर्द समाप्त करता है (ऋभ्वसम) सबको प्रेरित करता है।

व्याख्या :-

वैदिक विवेक के साथ जीने वाला व्यक्ति समाज के लिए क्या कर सकता है?

वह, इन्द्रियों का नियंत्रक, अपने शरीर को परमात्मा की अनुभूति के लिए धारण करता है और भरण–पोषण करता है, जिस प्रकार परिवार और समाज का मुखिया विदुषी महिलाओं के साथ प्रगति करता है। वह महान् और दिव्य विशेषज्ञताओं को प्राप्त करता है और उनका पान करता है अर्थात् उन्हें जीवन में उतारता है। वह अपने स्वर्णिम रथ अर्थात् सबसे मूल्यवान मानव शरीर से सभी पदार्थों की वृत्तियाँ हटा देता है। वह सभी दुःखों और कष्टों को दूर करके सभी लोगों को परमात्मा के साथ जुड़ने के लिए प्रेरित करता है।

जीवन में सार्थकता :-

जीवन का अन्तिम लक्ष्य क्या है?

जब कोई व्यक्ति (ऋग्वेद 1.55.7 के अनुसार) वैदिक विवेक के साथ अपना जीवनयापन करता है और समाज में एक दाता बन जाता है तथा अपनी इन्द्रियों और मन का नियंत्रक बन जाता है, वह परमात्मा की अनुभूति के मार्ग पर प्रगति करने के लिए सक्षम हो जाता है। अपने परिवार और समाज के मुखिया के रूप में वह अन्य लोगों को भी इस मार्ग के लिए प्रेरित करता है, क्योंकि उसे विशेषज्ञता

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

प्राप्त हो चुकी है और उसका मन आस—पास के पदार्थों की वृत्तियों से मुक्त होकर स्पष्ट हो चुका है। वह शरीर और मन में पवित्र हो जाता है, क्योंकि उसके जीवन में वैदिक विवेक के दो मूलभूत लक्षण स्थापित हो जाते हैं – समाज का एक दाता और इन्द्रियों का नियंत्रक। इस प्रकार वह मानव जीवन के अन्तिम लक्ष्य अर्थात् 'हरियोगम् ऋभ्वसम्' का पूर्ण सन्देशवाहक बन जाता है।

ऋग्वेद मन्त्र 1.56.2

तं गूर्तयो नेमन्निषः परीणसः समुद्रं न संचरणे सनिष्वयः।
पतिं दक्षस्य विदथस्य नू सहो गिरिं न वेना अधि रोह तेजसा ॥ 2 ॥

(तम्) वे जो (गूर्तयः) स्तुति करते हैं (परमात्मा की) (नेमन इषः) परमात्मा को नमन करने के बाद विनम्र होकर (परीणसः) सक्रियता से व्याप्त होते हैं (समुद्रम्) समुद्र की ओर (न) जैसे कि (संचरणे) संयुक्त होकर (सनिष्वयः) भिन्न—भिन्न भूमियों की सेवा करती हुई नदियाँ (पतिम्) स्वामी, संरक्षक (दक्षस्य) दक्ष का, शवितशाली का (विदथस्य) ज्ञान का (नू) प्राप्त हो (सहः) शक्ति का स्रोत (गिरिम्) पर्वतों पर (न) जैसे कि (वेना:) उत्सुक (अधि रोह) चढ़ता है और स्थापित करता है (तेजसा) पवित्र बल के साथ।

व्याख्या :-

कौन परमात्मा में विलीन होता है?

जो व्यक्ति परमात्मा के प्रशंसक होते हैं और विनम्रता के साथ अपना नमन उसे प्रस्तुत करते हैं तथा गतिविधियों के साथ व्याप्त हो जाते हैं वे शक्ति और बल के स्रोत के द्वारा ग्रहण किये जाते हैं जैसे – भिन्न—भिन्न भूमियों को सेवित करती हुई नदियाँ समुद्र में जा मिलती हैं और जैसे एक उत्सुक और उत्साही व्यक्ति अपने शुद्ध बल के साथ पर्वत की चोटी तक पहुँच जाता है और वहाँ स्थापित हो जाता है। परमात्मा हर प्रकार की दक्षताओं और प्रत्येक ज्ञान का स्वामी और संरक्षक है।

जीवन में सार्थकता :-

एक सच्चे जिज्ञासु की कितनी गहराई और कितनी ऊँचाई होती है?

एक सच्चा जिज्ञासु एक तरफ परमात्मा की प्रशंसा करता है और दूसरी तरफ अपनी गतिविधियों से व्याप्त हो जाता है। उसकी शुद्धता उसे परमात्मा में इतना गहरा विलीन कर देती हैं जैसे – नदियाँ समुद्र में जाकर मिलती हैं। वह अपने ज्ञान तथा त्याग कार्यों के साथ जीवनयापन करते हुए इतना ऊँचा हो जाता है कि वह एक उत्साही पर्वतारोही की तरह पर्वत की चोटी पर स्थापित हुआ दिखाई देता है। उसकी गहराई और उसकी ऊँचाई असमानान्तर होती है।

ऋग्वेद मन्त्र 1.56.3

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



स तुर्वणिर्महौं अरेणु पौँस्ये गिरेभृष्टिर्न भ्राजते तुजा शवः।
येन शुष्णं मायिनमायसो मदे दुध्न आभूषु रामयत्रि दामनि॥ ३ ॥

(स:) वह (तुर्वणि:) तेज गति से चलने वाले शत्रुओं को नष्ट करने वाला (महान्) हर प्रकार से महान् (अरेणु) बिना बाधा के (पौँस्ये युद्धों में, संघर्षों में, कठिन समय में (गिरे: भृष्टि:) पर्वत की चोटी (न) जैसे कि (भ्राजते) चमकता है (तुजा) दर्द और कठिनाईयों का नाशक (शवः) बल, शक्ति (येन) जिसके साथ (शुष्णम्) शक्ति का शोषण करने वाला (मायिनम्) नाटकीय (आयसः) लौह शरीर वाला, संरक्षण करने वाला कवच (मदे) आनन्द में (दुध्नः) दुष्ट शत्रुओं को रोकने वाला (आभूषु) कारागार में (रामयत - नि रामयत) रखता है (नि) रामयत से पूर्व लगाया गया) (दामनि) बन्धन में।

व्याख्या :-

जब एक इन्द्रियों का नियंत्रक परमात्मा के साथ जुड़कर कार्य करता है तो क्या होता है?
वह, सर्वोच्च शक्तिमान्, शत्रुओं का नाश करने के लिए तेज गति से चलता हुआ, हर प्रकार से महान् है।

परमात्मा की शक्ति और बल के साथ जब एक इन्द्रियों का नियंत्रक युद्धों, संग्रामों और कठिनाईयों के साथ बिना बाधा के लड़ता है तो वह दुःखों और कठिनाईयों का नाशक बन जाता है और पर्वत की चोटी के समान चमकता है। इस दिव्य समर्थन के साथ वह शोषण करने वाली शक्तियों को बांधकर रखने में सक्षम होता है। वह दुष्ट शत्रुओं को बाधित कर देता है, क्योंकि ऐसा इन्द्रियों का नियंत्रक सदैव आनन्द की अवस्था में होता है।

जीवन में सार्थकता :-

दिव्य बल को कौन प्राप्त करता है?
वैदिक विवेक से परिपूर्ण जीवन एक शुद्ध जीवन बन जाता है और परमात्मा की दिव्य शक्तियाँ और बल प्राप्त करता है। जीवन के किसी भी क्षेत्र में प्रत्येक व्यक्ति को वैदिक विवेकपूर्ण जीवन का अनुसरण करना चाहिए अर्थात् समाज के लिए एक दाता बनें और इन्द्रियों का नियंत्रक बनें।

ऋग्वेद मन्त्र 1.56.4

देवी यदि तविषी त्वावृधोतय इन्द्रं सिषक्त्युषसं न सूर्यः।
यो धृष्णुना शवसा बाधते तम इर्यति रेणुं बृहदर्हरिष्णिः॥ ४ ॥

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

(देवी) दिव्य (यदि) यदि (तविषी) शक्ति (त्वावृथः) आपकी तरफ प्रगति को प्रोत्साहित करने वाला (उत्तरे) संरक्षण के लिए (इन्द्रम्) इन्द्र पुरुष के लिए, इन्द्रियों के नियंत्रक के लिए (सिषक्ति) संयुक्त होता है (उपसम्) सूर्योदय, प्रातःवेला (न) जैसे (सूर्यः) सूर्य प्राप्त होता है (यः) वह (धृष्णुना शवसा) मजबूत शक्ति के साथ (बाधते तमः) अन्धकार, अज्ञानता को रोकता है (इयर्ति) गतिमय करता है (रेणुम्) विनीतकाल (बृहत) महानता के साथ (अर्हरिष्वणिः) पापियों को रुलाता है।

व्याख्या :-

जब एक इन्द्र पुरुष पर दिव्यता प्रारम्भ होती है तो क्या होता है?

यदि भगवान की दिव्य शक्तियाँ इन्द्र पुरुष अर्थात् इन्द्रियों के नियंत्रक के साथ जुड़ जाती हैं तो वे उसे तथा अन्य लोगों को परमात्मा की तरफ अग्रसर करती हैं और सबका संरक्षण करती हैं। इन्द्र पुरुष के साथ दिव्य शक्तियाँ ऐसी प्रतीत होती हैं जैसे प्रातःकाल के साथ सूर्य जुड़ता है। दो शक्तियों की यह एकता, सर्वोच्च इन्द्र और इन्द्रियों के नियंत्रक की एकता, इन मजबूत शक्तियों के साथ अन्धकार और अज्ञानता मिटा देती हैं। यह सबको एक महिमाशाली समय की ओर ले चलती हैं तथा पापियों को रोने के लिए मजबूर कर देती हैं।

जीवन में सार्थकता :-

दो पवित्र ताकतों के परस्पर जुड़ने का क्या परिणाम होता है?

इस मन्त्र का केन्द्र बिन्दु यह है कि दो पवित्र शक्तियाँ मिलकर अपनी एकता को दिव्यता में बदल देती हैं। यह अनुपातिक सिद्धान्त विवाह के माध्यम से पति और पत्नी के मिलन पर लागू होता है; उन दो व्यापारिक सांझेदारों पर भी लागू होता है जो एक दूसरे के प्रति सच्चाई और ईमानदारी के संकल्प के साथ जुड़कर व्यापारिक उद्देश्य के लिए काम करते हैं; दो या अधिक सामाजिक और राजनीतिक कार्यकर्ताओं के संगठन पर भी लागू होता है; एक नौकर का अपने मालिक के साथ मिलने पर भी लागू होता है। ऐसी एकता के निम्न परिणाम होते हैं :-

- (क) दो शक्तियों की निकटता पढ़ती है।
- (ख) दोनों में से जो कमजोर होता है उसे संरक्षण मिलता है।
- (ग) अन्धकार, अज्ञानता और बुराईयाँ बाधित होती हैं।
- (घ) दोनों को एक महिमावान् काल की ओर गति मिलती है।

ऋग्वेद मन्त्र 1.56.5

वि यत्तिरो धरुणमच्युतं रजोऽतिष्ठिपो दिव आतासु बर्हणा ।
स्वर्मीळहे यन्मद इन्द्र हर्ष्याहन्वृत्रं निरपामौजो अर्णवम् ॥ 5 ॥

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

(वि) विशेष रूप से (यत्) जब (तिरः) अन्तर्मुखी, झुकाव वाला (धरुणम्) धारण करता है (शक्तियों को) (अच्युतम्) बिना असफलता के, लगातार (रजः) मूल शक्ति, सभी ग्रह शरीरों की तरफ (अतिष्ठिपः) स्थापित (दिवः आतासु) सभी दिशाओं में दिव्यता, प्रकाश और ऊर्जा (बहणाम् वृद्धि के लिए (स्वर्मीळहे) युद्धों में, कठिन समय में, अन्तरिक्ष में (यत्) जब (मदे) शक्ति के उल्लास में (इन्द्र) इन्द्रियों का नियंत्रक, सूर्य (हर्ष्य) अपार आनन्द के साथ (अहन्) नष्ट करता है (वृत्रम्) मन की वृत्तियाँ, बादल (निर) निश्चित रूप से (अपाम्) ज्ञान, प्रकाश (औष्ठो) अनुकूल करता है, मित्र बना लेता है (अर्णवम्) समुद्रों का।

व्याख्या :-

एक इन्द्र पुरुष किस प्रकार ज्ञान के समुद्र को अपना मित्र बना लेता है?

किस प्रकार सूर्य समुद्र को ठंडा और मित्रवत बनाये रखता है?

आध्यात्मिक व्याख्या :- जब एक इन्द्र पुरुष, इन्द्रियों का नियंत्रक विशेष रूप से अपनी मूल शक्ति, मूल्यवान् तरल पदार्थ को धारण करता है और स्थापित रखता है तो वह लगातार इसका प्रभाव अपने अन्तर्मुखी मन पर महसूस करता है, चारों दिशाओं से दिव्यताओं की वर्षा उसे आगे बढ़ाती है। यहाँ तक कि युद्धों और कठिन समय में वह शक्ति से ओत-प्रोत रहता है और अपने मन की वृत्तियों को पूरे आनन्द के साथ मारकर ज्ञान और प्रकाश के समुद्र की कोमलता को अपने जीवन में प्राप्त करता है।

वैज्ञानिक व्याख्या :- जब एक इन्द्र, सूर्य, विशेष रूप से सभी आकाशीय पिण्डों को धारण करता है और अपनी शक्तियाँ उनमें स्थापित करता है तो उसका प्रकाश और उसकी ऊर्जा सभी दिशाओं में फैल जाती है। गरम समय में जब वह अपनी शक्ति से ओत-प्रोत होता है तो वह पूरे आनन्द के साथ बादलों का नाश कर देता है और उन्हें समुद्र के पास भेजकर समुद्र को शीतल और सबके लिए मित्रवत् बना देता है।

जीवन में सार्थकता :-

सूर्य का विज्ञान किस प्रकार आध्यात्मिकता के विज्ञान से सम्बन्धित है?

सूर्य का विज्ञान सभी जीव तत्त्वों के कल्याण के लिए, समुद्र को शीतल रखने के लिए और समुद्र में तरंगे उत्पन्न करने के लिए बादलों को नष्ट करता है। यह अनुपातिक सिद्धान्त इन्द्र पुरुष के जीवन में भी समान रूप से दिखाई देता है जो अपने व्यक्तिगत बादलों अर्थात् मन की वृत्तियों को नष्ट करता है जिससे सबका कल्याण होता है। वह सभी वृत्तियों को ज्ञान के समुद्र में मिलाकर उनका अन्त कर देता है। इस प्रकार ज्ञान का समुद्र कोमल और उसके लिए मित्रवत बन जाता है। वह अनुभूति के बाद प्राप्त अपने सर्वोच्च ज्ञान को तीव्र करता है और उसे ऊपर उठाता है जिससे उस सर्वोच्च ज्ञान की तरंगे उत्पन्न होकर सबका कल्याण करें।

ऋग्वेद मन्त्र 1.56.6

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



त्वं दिवो धरुणां धिष ओजसा पृथिव्या इन्द्र सदनेषु माहिनः ।
त्वं सुतस्य मदे अरिणा अपो वि वृत्रस्य समया पाष्टा रुजः ॥ ६ ॥

(त्वम्) आप (इन्द्र) (दिवः) दिव्य लक्षण (धरुणाम्) मूलाधार (धिषे) धारण करता है (ओजसा) आपकी शक्ति के साथ (पृथिव्या) शरीर, भूमि (इन्द्र) सूर्य, इन्द्रियों का नियंत्रक (सदनेषु) इन कोशों में (माहिनः) सम्मानित महानता का (त्वम्) आप (सुतस्य) इन उत्पन्न हुओं का (मदे) आनन्द में (अरिणाः) प्रसन्नता प्राप्त करता है (अपः) जल (वि) अरुजः से पूर्व लगाकर) (वृत्रस्य) वृत्तियों की, मेघों की (समया) समय पर, परमात्मा से निकटता के साथ (पाष्टा) आवरण (अरुजः – वि अरुजः) नष्ट करता है, समाप्त करता है।

व्याख्या :-

इन्द्रियों के नियंत्रक के द्वारा कौन से लक्षण प्राप्त किये जाते हैं?

इन्द्र, इन्द्रियों के नियंत्रक! आप अपने कोष में सम्मानजनक महानता जैसे दिव्य लक्षण धारण करते हो जो सभी दिव्यताओं का आधार हैं। इन्हीं शक्तियों के साथ आप अपने शरीर को धारण करते हो। ऐसे उत्पन्न लक्षणों के साथ आनन्दपूर्ण अवस्था में आपको जल की प्रसन्नता, इसकी शीतलता और गतिविधि प्राप्त होती है। आप परमात्मा के साथ अपनी निकटता के कारण अपने मन की वृत्तियों के आवरण को भी समय पर नष्ट कर देते हो।

यह अनुपातिक सिद्धान्त सूर्य पर भी लागू होता है जो पृथ्वी को धारण करता है। सूर्य और जल के रासायनिक तत्त्व समान हैं – हाईड्रोजन तथा ऑक्सीजन। दोनों ही ऊर्जा तथा गतिविधि के स्रोत हैं।

जीवन में सार्थकता :-

एक इन्द्र पुरुष कैसे बनें?

जब एक व्यक्ति इन्द्र बनता है तो उसमें दिव्यताएं बढ़नी प्रारम्भ हो जाती हैं।

सूर्य इन्द्र है, सभी दिव्यताओं का स्रोत। सूर्य इस सृष्टि की प्रथम रचना है। शेष सारी सृष्टि उसके बाद ही अस्तित्व में आई और सूर्य के द्वारा ही पालित-पोषित होती है।

अपने जीवन में हम संकल्पशील, दृढ़ मस्तिष्क के साथ अपनी इन्द्रियों को नियंत्रण में रखकर और निर्धक इच्छाओं का त्याग करके इन्द्र बन सकते हैं। इच्छाएँ परमात्मा की अनुभूति के लिए इस शरीर को बनाये रखने और इसका भरण-पोषण करने के लिए होनी चाहिए।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

आज्ञा

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

ऋग्वेद मण्डल-1 सूक्त 57

ऋग्वेद मन्त्र 1.57.1

Rigveda 1.57.1

Pra mañhiṣṭhāya br̥hate br̥hadraye satyaśuṣmāya tavase matim bhare.
Apām iva pravaṇe yasya durdharam rādho viśvāyu śavase apāvṛtam.(1)

प्र मंहिष्ठाय बृहते बृहद्रये सत्यशुष्माय तवसे मतिं भरे।
अपामिव प्रवणे यस्य दुर्धरं राधो विश्वायु शवसे अपावृतम् ॥ १ ॥

(प्र – मतिम् से पूर्व लगाकर) (मंहिष्ठाय) महान् दानी, दाता (बृहते) शुभगुणों तथा ज्ञान में उच्च (बृहद्रये) सम्पदा में उच्च (सत्यशुष्माय) सत्य की शक्ति के लिए (तवसे) शक्ति में उच्च (मतिम् – प्र मतिम्) अपार सम्मान, स्तुति (भरे) धारण करना (अपाम) जलों का (इव) जैसे कि (प्रवणे) निम्न स्थलों की ओर (यस्य) जिसका (दुर्धरम्) बुराईयों और धूर्तताओं को न सहने वाला (राधः) सम्पदा (विश्वायु) पूर्ण जीवन (शवसे) शक्ति के लिए (अपावृतम्) खुला हुआ।

व्याख्या :-

हम परमात्मा का सम्मान और स्तुति क्यों करते हैं?

हम उस महान् दाता को अत्यन्त सम्मान और स्तुति के साथ धारण करते हैं जो शुभ गुणों और ज्ञान में उच्च है; सत्य की शक्ति में उच्च है और सभी शक्तियों में उच्च है। उसकी शक्तियाँ बुरे और धूर्त लोगों के लिए असहनीय हैं जैसे जल को निम्न स्थलों की ओर जाने से कोई रोक नहीं सकता। उसकी सम्पदा और शक्तियाँ सबके लिए सारा जीवन खुली रहती हैं।

जीवन में सार्थकता :-

एक पूर्ण जीवन अर्थात् स्वस्थ और लम्बा जीवन कैसे प्राप्त करें?

हम परमात्मा के खजाने से जो कुछ भी प्राप्त करते हैं उसका प्रयोग परमात्मा के लक्षणों की तरंगों के अनुसार ही होना चाहिए :-

(1) एक महान् दाता बनों, (2) शुभ गुणों और ज्ञान में उच्च बनों, (3) सम्पदा में उच्च बनों, (4) सत्य में उच्च बनों, (5) शक्ति में उच्च बनों, (6) कभी भी बुराईयों और धूर्तताओं को न तो सहन करो और न उनका समर्थन करो।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

यदि हम इन लक्षणों को धार्मिक तरीके से धारण करते हैं तो हमें समस्त महान् गतिविधियों के लिए पूर्ण आयु अर्थात् स्वस्थ और लम्बा जीवन में मिलेगा।

ऋग्वेद मन्त्र 1.57.2

Rigveda 1.57.2

Adha te viśvamanu hāsadiṣṭaya āpo nimneva savanā havismataḥ .
Yatparvate na samaśīta haryata indrasya vajrah śnathitā hiraṇyayah. (2)

अध ते विश्वमनु हासदिष्टय आपो निम्नेव सवना हविष्मतः ।
यत्पर्वते न समशीत हर्यत इन्द्रस्य वज्रः श्नथिता हिरण्ययः ॥ 2 ॥

(अध) अतः उसके बाद (ते) आपका (विश्वम) विश्व, सब (अनु) मित्रवत, अनुकूल बनना (ह) निश्चित रूप से (असत) उपभोक्तावाद से ऊपर उठे व्यक्ति के लिए (इष्टय) इच्छित लक्ष्य के लिए, परमात्मा की अनुभूति के लिए (आपः) जल (निम्न) निम्न स्थलों के लिए (इव) जैसे कि (सवना) यज्ञ के लिए गौरवशाली सम्पदा (हविष्मतः) उत्तम आहुतिदाता का (यत) जब (पर्वते) पर्वतों पर, बादलों पर (न) नहीं (समशीत) निद्रा (हर्यतः) प्रगतिशील व्यक्ति (इन्द्रस्य) इन्द्र का (वज्रः) वज्र (श्नथिता) शत्रुओं पर प्रहार करते हुए और उनका नाश करते हुए (हिरण्ययः) चमकते हुए (शक्ति में तथा दान में)।

व्याख्या :-

जब कोई व्यक्ति अपनी गौरवशाली सम्पदा का प्रयोग उचित प्रकार से करता है और उपभोक्तावाद से ऊपर उठ जाता है तो क्या होता है?

ऋग्वेद-1.57.1 के अनुसार जब परमात्मा से प्राप्त सम्पदा का उचित प्रयोग करके हमें पूर्ण जीवन मिलता है तो उसके बाद आपका यह संसार निश्चित रूप से ऐसे व्यक्ति के लिए मित्रवत और समर्थनकारी बन जाता है जो उपभोक्तावाद से ऊपर उठ चुका है और ऐसे व्यक्ति को परमात्मा की अनुभूति के इच्छित लक्ष्य की प्राप्ति में सहायता मिलती है। यज्ञ कार्यों में आहुतियाँ देने वाले उत्तम दाता की गौरवशाली सम्पदा निम्न स्थलों की ओर जाते हुए जल की तरह होती है जो अनेक उद्देश्यों के लिए लाभदायक होता है। ऐसा प्रगतिशील व्यक्ति अपने मन की वृत्तियों रूपी बादलों पर सोया हुआ नहीं रहता। जिस इन्द्र रूपी व्यक्ति के वज्र उसके शत्रुओं पर प्रहार करते हैं और शक्ति तथा ज्ञान में चमक उठते हैं।

जीवन में सार्थकता :-

हमारा दिव्य लक्ष्य क्या होना चाहिए?

क्या सर्वोच्च दिव्यता हमारे दिव्य लक्ष्यों में हमारी सहायता करती है?

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

जो लोग परमात्मा के दिव्य पथ का अनुसरण करते हैं तो सर्वोच्च दिव्यता उनके लिए मित्रवत और समर्थक बन जाती है :—

- (1) जो परमात्मा द्वारा दी गई गौरवशाली सम्पदा का प्रयोग सबके कल्याण के लिए करते हैं तथा
- (2) स्वयं को जीवन की मूल आवश्यकताओं तक सीमित रखते हुए उपभोक्तावाद से ऊपर उठ जाते हैं।

सभी रोगों, अपराधों और विनाश का कारण उपभोक्तावाद ही है। जबकि एक वास्तविक प्रगतिशील व्यक्ति दिव्यता की तरंगों के साथ अपना इच्छित लक्ष्य निर्धारित कर लेता है। उसका लक्ष्य परमात्मा की दिव्यताओं के माध्यम से उच्च दिव्य को प्राप्त करना ही होता है। अतः वह दिव्यताओं की सहायता के बावजूद भी रुकता नहीं। उसके सांसारिक लक्ष्य नहीं होते। वह सृष्टि का केवल मात्र उपभोक्ता नहीं होता किन्तु वह सृष्टिकर्ता का प्रेमी होता है। इसीलिए सभी यज्ञ कार्यों में सृष्टिकर्ता उसकी मदद करते हैं।

ऋग्वेद मन्त्र 1.57.3

Rigveda 1.57.3

Asmai bhīmāya namasā sam adhvara uṣo na śubhra ā bharā panīyase.
Yasya dhāma śravase nāmendriyam jyotir akāri harito nāyase. (3)

अस्मै भीमाय नमसा समध्वर उषो न शुभ्र आ भरा पनीयसे ।
यस्य धाम श्रवसे नामेन्द्रियं ज्योतिरकारि हरितो नायसे ॥ ३ ॥

(अस्मै) यह (भीमाय) शत्रुओं के लिए भयंकर (नमसा) नमन के साथ (सम् आभर से पूर्व लगाकर) (अधरे) अहिंसक, त्रुटिरहित यज्ञ (उषः) प्रातःकालीन सूर्य की प्रथम किरणें (न) जैसे (शुभ्रे) चमकती हैं, लाभकारी हैं (आभर – समआभर) अच्छे प्रकार से धारण और पोषण करता है (पनीयसे) प्रशंसा के लिए, स्तुति के लिए (यस्य) जिसकी (धाम) चमक, महिमा (श्रवसे) सुनने योग्य, हमारे बल के लिए (नाम) नाम का उच्चारण (इन्द्रियम्) सभी इन्द्रियों को बल देने वाला (ज्योतिः) ज्ञान का प्रकाश (अकारि) उसके समान है (हरितः न) अश्वों की तरह, दिशाएं (अपने लक्ष्य पर पहुंचना) (अयसे) अपने लक्ष्य पर पहुंचने के लिए।

व्याख्या :-

दिव्य लक्ष्य निर्धारित करने के क्या लाभ हैं?

जिस प्रकार प्रातःकालीन वेला लाभदायक और चमकदार होती है, हमें अपने शत्रुओं की डरावनी ताकत को परमात्मा के प्रति नमन के साथ स्वीकार करना चाहिए। हम इस शक्ति को अहिंसक और त्रुटिहीन यज्ञ कार्यों के लिए धारण और पोषित कर सकते हैं तथा इसका प्रयोग परमात्मा की प्रशंसा और स्तुति के लिए कर सकते हैं। जिसकी चमक और महिमा सुनने लायक है और हमारे बल के लिए है, जिसके नाम का उच्चारण हमारे सारे शरीर को तरंगित कर देता है और हमारी सारी इन्द्रियों को

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

ताकत देता है, जिसके ज्ञान का प्रकाश हमें अपने लक्ष्य तक पहुंचने के योग्य बना देता है, जिस प्रकार अश्व तथा भिन्न-भिन्न दिशाएं अपने-अपने लक्ष्यों तक पहुंच जाती हैं।

जीवन में सार्थकता :-

हमें दिव्य संगति से क्या लाभ होता है?

सदैव परमात्मा की संगति के लिए कामना करनी चाहिए, जो मानव जीवन के लिए सर्वोत्तम लाभकारी है। इसके अतिरिक्त हमें अपने परिवार व समाज में दिव्य लोगों की संगति की कामना करनी चाहिए। हमें लोगों को प्रेरित करना चाहिए कि वे उच्च चेतना के साथ एक दिव्य जीवन जियें।

1. दिव्यता की कामना और प्रेरणा करने की यह प्रक्रिया मानवता के लिए वास्तविक दिव्य पथ है। जिससे कलियुग के प्रभाव से बचा जा सकता है जो उपभोक्तावाद पर केन्द्रित है।
2. यह दिव्य पथ बुराईयों और धूर्तताओं को रोने के लिए मजबूर कर देता है।
3. यह दिव्य पथ अहिंसक और त्रुटिहीन यज्ञों को सुनिश्चित करता है।
4. यह पथ हमें रोगों और अपराधों से मुक्त रखता है।
5. यह पथ तरंगों के माध्यम से हमारे शरीर को बलशाली बनाता है। केवल यही पथ हमें अपने लक्ष्य तक पहुंचा सकता है।

ऋग्वेद मन्त्र 1.57.4

Rigveda 1.57.4

Ime ta indra te vayam puruṣṭuta ye tvārabhya carāmasi prabhūvaso.
Nahi tvad anyo girvaṇo girah saghat kṣonīr iva prati no harya tad vacah. (4)

इमे त इन्द्र ते वयं पुरुष्टुत ये त्वारभ्य चरामसि प्रभूवसो।
नहि त्वदन्यो गिर्वणो गिरः सघक्षोणीरिव प्रति नो हर्य तद्वचः ॥ 4 ॥

(इमे) ये (ते) आपके (इन्द्र) परमात्मा (ते) आपके वयम्) हम (पुरुष्टुत) पूर्ण करता है और धारण करता है (ये) जो (त्वारभ्य) आपकी शक्ति की शरण (चरामसि) गतिविधियाँ पूर्ण करते हुए (प्रभूवसो) परमात्मा के वास में, प्रसन्नता से भरपूर (न हि) नहीं है (त्वत् अन्यः) आपके अतिरिक्त कोई (गिर्वणः) यथार्थ में वैदिक वाणियों से प्रशंसित और स्तुति किया गया (गिरः) प्रशंसा में हमारी वाणी (सघत) प्राप्त करता है (क्षोणीः इव) धरती माता की तरह (प्रति – हर्य से पूर्व लगाकर) (नः) हमारी (हर्य – प्रति हर्य) स्वीकार करता है (तत् वचः) उन वाणियों को।

व्याख्या :-

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

हमारा परमात्मा के साथ क्या सम्बन्ध है?

परमात्मा हमारे जीवन का मूलाधार किस प्रकार है?

हे परमात्मा! हम आपके लोग हैं, जिन्हें आप पूर्ण करते हो और पोषित करते हो; जो आपकी शक्ति की शरण की कामना करते हैं; जो आपके द्वारा उपलब्ध कराये गये आवासों में सभी गतिविधियाँ सम्पन्न करते हैं क्योंकि उन्हें आपकी संगति में पूर्ण प्रसन्नता मिलती है। आपके अतिरिक्त ऐसा कोई नहीं है जिसकी क्रियात्मक रूप से वैदिक वाणियों के साथ प्रशंसा और स्तुति की जा सके। कृपया हमारी प्रार्थना को ग्रहण करके स्वीकार करो।

जीवन में सार्थकता :-

धरती माता की तुलना परमात्मा से क्यों की जाती है?

परमात्मा के साथ हमारा सम्बन्ध अद्वितीय और असमानान्तर है। हमारा प्रत्येक श्वास और परिणामतः हमारा पूरा जीवन केवल उसी पर निर्भर करता है। परमात्मा के अतिरिक्त ऐसी कोई सत्ता या व्यक्तित्व नहीं है जो हमारी पूर्ण प्रशंसाओं का हकदार हो। वह केवल उन्हीं प्रशंसाओं को स्वीकार करता है जो वैदिक विवेक के अभ्यास के साथ जुड़ी होती हैं।

हमारी प्रशंसाओं और प्रार्थनाओं को स्वीकार करने के सम्बन्ध में परमात्मा की तुलना धरती माता से होती है, क्योंकि हमारे जन्म, पालन-पोषण और हमारी सभी गतिविधियों के लिए धरती माता ही परमात्मा की प्रत्यक्ष दिव्य शक्ति है। अन्ततः हमारे शारीर भी केवल धरती माता में ही संयुक्त हो जाते हैं। अतः धरती माता हमारे लिए परमात्मा की सभी शक्तियों का जीवन्त उदाहरण हैं।

ऋग्वेद मन्त्र 1.57.5

Rigveda 1.57.5

Bhūri ta indra vīryam tava smasyasya stotur maghavan kāmam ā pṛṇa .
Anu te dyaur bṛhatī vīryam mama iyam ca te pṛthivī nema ojase. (5)

भूरि त इन्द्र वीर्यै तव स्मस्यस्य स्तोतुर्मधवन्काममा पृण ।
अनु ते द्यौर्बृहती वीर्य मम इयं च ते पृथिवी नेम ओजसे ॥ ५ ॥

(भूरि) बहुत अधिक (ते) आपकी (इन्द्र) सर्वोच्च शक्ति, परमात्मा (वीर्यम्) बल और शक्ति (तव) आपकी (स्मसि) अधीन (अस्य) मैं जो हूँ (स्तोतु) आपके लिए प्रशंसाओं से पूर्व (मधवन्) सम्पदा और शक्ति से परिपूर्ण, परमात्मा (कामम्) इच्छाएँ (आपृण) पूर्ण (अनु – ममे से पूर्व लगाकर) (ते) आपकी (द्यौः बृहती) बृहद आकाश तथा अन्तरिक्ष (वीर्यम्) शक्ति और बल (अनु ममे) अनुसरण करना और प्रतिनिधित्व करना (इयम्) यह (च) और (ते) आपकी (पृथिवी) धरती (नेम) नतमस्तक (ओजसे) शक्ति के लिए।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

व्याख्या :-

परमात्मा किस प्रकार सर्वोच्च शक्ति है?

इन्द्र, सर्वोच्च शक्ति, परमात्मा! मैं आपकी असीम और अत्यधिक शक्तियों और बलों पर निर्भर हूँ। आप सम्पदाशाली तथा शक्तिशाली हैं। मैं आपके प्रति प्रशंसाओं से पूर्ण हूँ। कृपया मेरी इच्छाओं को पूर्ण करो। विशाल आकाश तथा अन्तरिक्ष आपकी शक्तियों और बलों का अनुसरण करते हैं और उनका प्रतिनिधित्व करते हैं तथा धरती माता भी आपकी शक्तियों के कारण आपके समक्ष नतमस्तक होती है।

जीवन में सार्थकता :-

क्या परमात्मा हमारे सभी सपनों और इच्छाओं को पूर्ण करते हैं?

परमात्मा के पास असीम तथा अत्यधिक शक्तियाँ और बल हैं। सभी जीव तथा निर्जीव पदार्थ उसी पर निर्भर हैं। यहाँ तक कि विशाल आकाश, अन्तरिक्ष और यह विशाल भूमि भी उसी का अनुसरण और प्रतिनिधित्व करती है। इस सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड का सर्वोच्च मुखिया होने के कारण परमात्मा निश्चित रूप से सबकी इच्छाओं की पूर्ति करते हैं। परन्तु समस्याएँ तब शुरू होती हैं जब मनुष्य अपने अस्तित्व की मूल आवश्यकताओं की सीमाओं को लांघकर इच्छाओं में अति करने लगता है। वह अपनी असीमित इच्छाओं को पूरा करने के लिए भी योग्य बना दिया जाता है, परन्तु यह उसके स्वयं के लिए कष्टकारी और हानिकारक होता है। जैसे राजा मिडास को यह वरदान मिला कि वह जिस चीज को स्पर्श करेगा वह वस्तु सोने की बन जायेगी, इस प्रकार अन्ततः उसे भूखा मरना पड़ा। असीमित इच्छाओं के पथ पर, मनुष्य यह भूल जाता है कि इच्छाएं कभी समाप्त नहीं होतीं, वह स्वयं ही पहले समाप्त हो जाता है। अतः हमें अपनी इच्छाओं पर स्वयं नियंत्रण रखना चाहिए और उन्हें केवल आवश्यकताओं तक सीमित रखना चाहिए।

ऋग्वेद मन्त्र 1.57.6

Rigveda 1.57.6

Tvam tam indra parvatam mahāmurum vajreṇa vajrin parvaśā cakartitha .
Avāsrjo nivṛtāḥ sartavā apah satrā viśvam dadhiṣe kevalam sahah. (6)

त्वं तमिन्द्रं पर्वतं महामुरुं वज्रेण वज्रिन्पर्वशश्चकर्तिथं।
अवासृजो निवृताः सर्तवा अपः सत्रा विश्वं दधिषे केवलं सहः ॥ 6 ॥

(त्वम्) आप (तम) आपका (इन्द्र) इन्द्रियों का नियंत्रक (पर्वतम्) बादल, मन की वृत्तियाँ (महाम्) महान् (उरुम्) व्यापक (वज्रेण) वज्रों के साथ (वज्रिन्) वज्रों का धारण करने वाला (पर्वशश्) अंग-अंग करके

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

(चकर्तिथ) नष्ट करने के लिए टुकड़ों में काट डालता है (अवासृजः) निर्माण करता है (निवृताः) मुक्त करता है (सर्तवा) बहने के लिए (अपः) जल, ज्ञान (सत्रा) सत्य का रूप (विश्वम्) सर्वत्र व्यापक (दधिषे) धारण करता है (केवलम्) आनन्दपूर्ण (सहः) बल।

व्याख्या :-

हमें अपने मन की वृत्तियों का नाश क्यों करना चाहिए?

आप, सर्वोच्च इन्द्र, परमात्मा! अपने इन्द्र पुरुषों, इन्द्रियों के नियंत्रणकर्ताओं और वज्रधारकों को प्रेरित करो तथा उन्हें निर्देष दो कि वे अपने मन की विशाल और व्यापक वृत्तियों को एक—एक अंश करके टुकड़ों में काट दें। इस प्रकार अपने एक मुक्त मन का निर्माण करें जो दिव्य ज्ञान का अनुसरण करें क्योंकि यही सर्वोच्च सत्य का रूप है। जिसके अनुसार सर्वव्यापक परमात्मा आनन्ददायक है और सर्वोच्च बल को धारण करता है।

वैज्ञानिक अर्थ :- परमात्मा, सर्वोच्च ऊर्जा, सूर्य को शक्ति प्रदान करता है जो ऊर्जा का सर्वोच्च वज्र धारण करता है जिससे विशाल और व्यापक बादलों को टुकड़ों—टुकड़ों में काटकर उसके बाद उन्हें सर्वव्यापक ऊर्जा और बलों के रूप में बनाकर बहा देता है।

जीवन में सार्थकता :-

सूर्य बादलों का नाश क्यों करता है?

गृहस्थ की पर्वतनुमा समस्याओं का नाश कैसे करें?

आकाश में बादलों का नाश आवश्यक होता है जिससे जल को भूमि पर फैलाकर ऊर्जा तथा बल के मुक्त प्रवाह को सुनिश्चित किया जाये जिससे धरती पर समस्त जीवों का पालन—पोषण सम्भव हो सके। सूर्य इस कार्य को करता है।

सृष्टि के सर्वोच्च सत्य तक पहुँचने के लिए और उसकी अनुभूति के लिए प्रत्येक व्यक्ति को अपने मन की वृत्तियों का नाश करना चाहिए। एक योगी, एक इन्द्र पुरुष, अपनी इन्द्रियों पर नियंत्रण करके ही इस कार्य को करता है और यह अनुभूति प्राप्त कर लेता है कि सर्वव्यापक परमात्मा ही पूर्ण आनन्ददायक है।

सामान्य गृहस्थियों के लिए दर्दों, दुःखों और कठिनाईयों के पहाड़ होते हैं। उन्हें इन्द्र मार्ग पर चलने की प्रेरणा दी जानी चाहिए अर्थात् इन्द्रियों पर नियंत्रण करना और अपनी आवश्यकताओं से अधिक इच्छाओं को सीमित करना, अपने नाम और रूप के अहंकार को एक तरफ फेंक देना, क्योंकि अहंकार का वास्तव में कोई अस्तित्व नहीं होता, परन्तु यही समस्याओं के पहाड़ खड़ा कर देता है।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

आज्ञा

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

ऋग्वेद मण्डल-1 सूक्त 58

ऋग्वेद मन्त्र 1.58.1 शष

Rigveda 1.58.1

Nū cit sahojā amṛto ni tundate hotā yad dūto abhavad vivasvataḥ .
Vi sādhiṣṭhebhiḥ pathibhī rajo mama ā devatātā haviṣā vivāsati. (1)

नू चित्सहोजा अमृतो नि तुन्दते होता यदूतो अभवाद्विवस्वतः ।
वि साधिष्ठेभिः पथिभी रजो मम आ देवताता हविषा विवासति ॥ १ ॥

(नू चित) निश्चित रूप से अत्यन्त शीघ्र (सहोजा) बल पैदा करने वाला (अमृतः) न मरने योग्य, मुक्ति की अवस्था में (नि तुन्दते) विनम्रता से कार्य करता हुआ (होता) लाने वाला और स्वीकार करने वाला (यतः) जो (दूतः) दूत (अभवतः) है (विवस्वतः) स्व-प्रकाश में स्थापित, परमात्मा (वि – मम से पूर्व लगाकर) (साधिष्ठेभिः) सबके कल्याण में भाग लेता है (पथिभिः) पथ पर चलता हुआ (रजः) गहरा आकाश (मम – वि मम) अत्यन्त सुन्दर बनाता है (आ – विवासित से पूर्व लगाकर) (देवताता) दिव्यता पैदा करने वाला, दिव्य जीवन (हविषा) आहुतियों के साथ (विवासित – आ विवासित) परमात्मा के चारों तरफ व्यापक ।

व्याख्या :-

जब एक इन्द्र पुरुष अग्नि पुरुष बन जाता है तो क्या होता है?

ऋग्वेद 1.56 तथा 1.57 सूक्त हमें यह प्रेरित करते हैं कि हम एक इन्द्र अर्थात् इन्द्रियों के सच्चे नियंत्रक बनें। एक बार यह स्तर प्राप्त हो जाये तो :-

1. अतिशीघ्र, निश्चित रूप से (वर्तमान जन्म में या अगले जन्म में बाल्यवस्था के बाद ही) वह इन्द्र बल पैदा करने वाला बन जाता है।
2. मुक्त अवस्था का जीवन जीते हुए वह बड़ी विनम्रता के साथ कार्य करता है।
3. वह परमात्मा का दूत और बड़े बदलाव लाने वाला बन जाता है।
4. वह स्व-प्रकाशमान परमात्मा में स्थापित हो जाता है।
5. वह सबके कल्याण के मार्ग पर चलता है और उसमें भाग लेता है।
6. वह अपने गहरे आकाश को अत्यन्त सुन्दर बना लेता है।
7. वह एक दिव्य जीवन की तरह दिखाई देता है जो अनेक प्रकार से दिव्यताओं को पैदा करता है।
8. वह अपनी आहुतियों के साथ परमात्मा के आस-पास व्याप्त रहता है।

यह सब लक्षण सिद्ध करते हैं कि इन्द्र पुरुष अग्नि बन चुके हैं।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

जीवन में सार्थकता :-

महान् सन्त किस प्रकार एक छोटी सी चिन्नारी से आध्यात्मिकता की अग्नि को जला पाये थे? इस मन्त्र में अनुभूति प्राप्त आत्माओं के लक्षण सूचीबद्ध किये गये हैं जो पहले इन्द्र अर्थात् इन्द्रियों के नियंत्रक बनें और उसके पश्चात् उन्हें परमात्मा की अनुभूति का स्तर प्राप्त हुआ। इसमें कई जन्म लग सकते हैं। महान् अनुभूति प्राप्त सन्त जैसे शंकराचार्य, गौतमबुद्ध, महर्षि दयानन्द सरस्वती, महर्षि रमन आदि अपने जीवन की बाल्यवस्था से ही इन सभी लक्षणों से सुसज्जित हो चुके थे। इससे सिद्ध होता है कि पूर्व जन्मों की तपस्याओं ने उन्हें इन्द्र बनाया और अपने वर्तमान जीवन में वे एक छोटी सी चिन्नारी से ही परमात्मा की अग्नि बन गये और बाल्यावस्था से ही वे आध्यात्मिक प्रेरणाओं के प्रचारक बन गये। अतः अपनी आत्मा की अनन्त यात्रा के पूर्व अन्तिम जीवन में उन्होंने अपनी ऊर्जाओं को निरर्थक भौतिकवादी जीवन में व्यर्थ नहीं गंवाया। ऐसे जीवनों से प्रेरणा लेकर हमें भी कड़ी मेहनत करके अपने अन्दर यह परिवर्तन करना चाहिए कि हम अपनी ऊर्जाओं को निम्न स्तर की गतिविधियों में व्यर्थ न गंवायें बल्कि उच्च चेतना के स्तर पर अपना जीवन जियें।

ऋग्वेद मन्त्र 1.58.2

Rigveda 1.58.2

Ā svam adma yuvamāno ajaras ṛṣv avisyann atasesu tiṣṭhati.
Atyo na prsthām pruśitasya rocate divo na sānu stanayann acikradat. (2)

आ स्वमद्य युवमानो अजरस्तृष्णविष्यत्रतसेषु तिष्ठति ।
अत्यो न पृष्ठं प्रुषितस्य रोचते दिवो न सानु स्तनयत्र विक्रदत् ॥ 2 ॥

(आ – युवमानः से पूर्व लगाकर) (स्वम्) स्वयं, उसका अपना (अद्यम) भाग (कर्मफल का, भोजन का) (युवमानः – आ युवमानः) संयुक्त करता है, जीवन में मिश्रित करता है (अजरः) बिना रोग के (तृषु) खाने की भूख पर (अविष्यन) भोग करता है, सुरक्षित करता है (अतसेषु) आकाश में, अन्तरिक्ष में (तिष्ठति) स्थापित (अत्यः) अश्व (न) जैसे कि (पृष्ठम्) पीठ पर, सामने (प्रुषितस्य) सर्वोच्च शक्ति का कार्य करते हुए (रोचते) चमकता है, प्रकाशित होता है (दिवः) दिव्य (न) जैसे (सानु) पर्वत की चोटी (स्तनयन्) नाम का उच्चारण करते हुए (परमात्मा के) (अचिक्रदत्) स्तुति की ध्वनि करते हुए, परमात्मा का आहवान करते हुए।

व्याख्या :-

अग्नि पुरुष का जीवन कैसा लगता है?

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



ऋग्वेद 1.58.1 के अनुसार एक इन्द्र पुरुष अपने जीवन की प्रारम्भिक अवस्था में ही अग्नि पुरुष बन जाता है और यह वर्तमान मन्त्र अग्नि पुरुष के जीवन की ही आगे व्याख्या करते हुए कहता है :—

1. वह अपने जीवन में कर्मों के फल रूपी अपने भाग को सम्मिलित कर देता है।
2. वह रोगों से रहित जीवन जीता है, क्योंकि वह केवल उतना ग्रहण करता है जितना खाने के लिए नितान्त आवश्यक होता है। वह शरीर के संरक्षण के लिए ही भोजन ग्रहण करता है, आनन्द के लिए नहीं।
3. उसकी आत्मा अपने भीतर ही गहरे अन्तरिक्ष में स्थापित होती है।
4. जिस प्रकार एक अश्व अपनी पीठ पर बोझ लादकर चलता है, एक अग्नि पुरुष भी उसी प्रकार सर्वोच्च शक्ति, परमात्मा, के कार्यों को करने में व्यस्त रहता है।
5. वह एक पर्वत की चोटी की तरह दिव्यता की चमक पैदा करता है।
6. वह परमात्मा की स्तुति और आह्वान के लिए परमात्मा के नाम का उच्चारण करता है।

जीवन में सार्थकता : —

एक सामान्य गृहस्थी किस प्रकार उच्च चेतना के स्तर पर एक महान् आध्यात्मिक जीवन जी सकता है?

हम एक सामान्य गृहस्थी जीवन जीते हुए भी एक अग्नि पुरुष के जीवन से महान् प्रेरणाएं प्राप्त कर सकते हैं।

1. प्रतिक्षण हमें प्रत्येक अवस्था के समक्ष नतमस्तक होना चाहिए, क्योंकि प्रत्येक अवस्था हमारे पूर्व जन्मों एवं कर्मों का ही फल होती है। किसी भी अवस्था के प्रति अच्छे या बुरे की प्रतिक्रिया नहीं होनी चाहिए। पूरी चेतना के साथ हमें प्रत्येक अवस्था को स्वीकार करना चाहिए। यह चेतना हमें मन का संतुलन और परिणामतः एक स्थिर मानसिक स्वास्थ्य प्रदान करेगी।
2. बिना रोगों का जीवन जीने के लिए हमें केवल स्वास्थ्यवर्द्धक भोजन ही ग्रहण करना चाहिए और वह भी तब जब भूख की अनुभूति हो। हमारा ध्यान सदैव स्वास्थ्य जीवन पर रहना चाहिए। स्वास्थ्य के साथ कोई समझौता नहीं। भोजन केवल शरीर के संरक्षण के लिए ग्रहण किया जाये, मजे के लिए नहीं।
3. हमें परमात्मा के अश्व की तरह कार्य करना चाहिए, उसके लिए कार्य करना, उसके नाम पर कार्य करना।
4. हमें उच्च चेतना के स्तर पर अर्थात् परमात्मा तथा उसकी दिव्यताओं पर विचार करते हुए जीवन जीना चाहिए, निर्णयक सांसारिक प्रकृति के विषयों पर कोई ध्यान न दें या न्यूनतम ध्यान दें, विशेष रूप से जब हमारा अपना अहंकार या इच्छाएँ शामिल हों।
5. हमें सदैव परमात्मा के नाम का उच्चारण करते रहना चाहिए या उसकी स्तुति या आह्वान में अपने मन को तरंगित रखना चाहिए और यह केवल उसकी संगति के लिए हो सांसारिक प्रार्थनाओं के लिए नहीं।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

ऋग्वेद मन्त्र 1.58.3

Rigveda 1.58.3

Krāṇā rudre�hir vasubhiḥ purohito hotā niṣatto rayiṣāḥ amartyah .
Ratho na vikṣvṛñjasāna āyuṣu vyānuṣagvāryā deva ṣṇvati. (3)

क्राणा रुद्रेभिर्वसुभिः पुरोहितो होता निष्ठो रयिषाऽमर्त्यः।
रथो न विक्ष्वृंजसान आयुषु व्यानुषग्वार्या देव ऋण्वति ॥ 3 ॥

(क्राणा) प्रकृति के कर्मों का प्रतिनिधि (रुद्रेभिः) ज्ञान और ऊर्जा देने वाले के साथ (वसुभिः) वास देने वाले के साथ (पुरोहितः) ब्रह्माण्ड के यज्ञ का पुजारी (होता) आहुतियों का लाने वाला और प्राप्त करने वाला (निष्ठः) स्थापित (परमात्मा) (रयिषाट) सम्पदा की महिमा बढ़ाते हुए (अमर्त्यः) न मरने लायक (रथः) रथ (न) नहीं (विक्ष्वृः) लोगों में (ऋन्जसानः) कर्मों से सुसज्जित (आयुषु) जीवन (वि – ऋण्वति से पूर्व लगाकर) (अनुषक) लगातार, मित्रवत (वार्या) उत्तम सुविधाएँ और सम्पदा (देवः) दिव्य (ऋण्वति – वि ऋण्वति) प्राप्त करता है।

व्याख्या :-

अग्नि पुरुष, एक अनुभूति प्राप्त आत्मा, के क्या लक्षण हैं?

जब एक व्यक्ति अग्नि पुरुष बन जाता है, प्रकृति के प्रतिनिधि की तरह कार्य करता है, तो वह निम्न लक्षणों सहित ब्रह्माण्डीय यज्ञ के एक अंग की तरह जीवन जीता है।

(क) वह रुद्रेभि और वसुभि अर्थात् ज्ञान, ऊर्जा और सबके आवास के दाता के साथ कार्य करता है।

(ख) वह पुरोहितः की तरह कार्य करता है अर्थात् ब्रह्माण्डीय यज्ञ के पुजारी की तरह सबका कल्याण करता है।

(ग) वह आहुतियों का लाने वाला और प्राप्त करने वाला बनकर होता की तरह कार्य करता है।

(घ) वह निष्ठः की तरह परमात्मा में स्थापित होता है।

(ङ) वह रयिषाट अर्थात् सम्पदा की महिमा बढ़ाने वाला होता है। वह सम्पदा पर राज करता है। सम्पदा के द्वारा शासित नहीं होता।

(च) वह अमर्त्यः अर्थात् न मरने वाला हो जाता है। वह इस बात की अनुभूति प्राप्त कर लेता है कि वह एक न मरने वाली सत्ता है। अतः वह अगले जन्म की कामना नहीं करता।

(छ) वह अपने जीवन को कर्मों से सुसज्जित कर लेता है अर्थात् ऋन्जसानः आयुषु।

(ज) वह एक सुविधाजनक मार्ग पर उत्तम सुखों और सम्पदाओं को लगातार प्राप्त करता है और उनका प्रयोग करता है।

जीवन में सार्थकता :-

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

एक गृहस्थी किस प्रकार अग्नि पुरुष के पदचिन्हों पर चल सकता है?

महान् व्यक्तियों के जीवन उनके चित्रों के साथ अपने घरों को सुसज्जित करने तक ही सीमित नहीं करने चाहिए। बल्कि उनका आत्मिक अनुसरण करना चाहिए। प्रत्येक गृहस्थी कर्मों के नियम से बंधा होता है जिसमें अन्य परिजनों के प्रति उसके कुछ दायित्व होते हैं। अपने पारिवारिक और सामाजिक दायित्वों को निभाने के साथ-साथ ही हम अग्नि पुरुष के उन पदचिन्हों पर चल सकते हैं जिनके बारे में ऋग्वेद 1.58.2 तथा 3 में बताया गया है। सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा, के प्रति चेतना पूर्वक पूरी श्रद्धा और समर्पण वाला मन निश्चित रूप से उच्च चेतना का स्तर प्रदान करता है। इसके बल पर, जब तक हम अपने दायित्वों से मुक्त न हो जायें, अपने गृहस्थ जीवन की गुणवत्ता को सुधार सकते हैं और फिर पूरी तरह से सर्वोच्च चेतना के साथ जुड़कर अपना जीवन और कार्य संचालन कर सकते हैं।

ऋग्वेद मन्त्र 1.58.4

Rigveda 1.58.4

वि वातजूतो अतसेषु तिष्ठते वृथा जुहूभिः सृण्या तुविष्णि ।
तृषु यदग्ने वनिनो वृषायसे कृष्णं त एम रुशदूर्म अजर ॥ 4 ॥

(वि – तिष्ठते से पूर्व लगाकर) (वातजूतः) वायु से प्रेरित (अतसेषु) व्यापक आकाश में (तिष्ठते – वि तिष्ठते) विशेष रूप से स्थापित (वृथा) इच्छाओं के साथ (जुहूभिः) त्याग की वृत्ति के साथ (सृण्या) गति के साथ (तुविष्णि) परमात्मा की प्रशंसा और महिमा गाता है (तृषु) अतिश शीघ्र (यत) जो (अग्ने) अग्नि, अग्नि पुरुष (वनिनः) अनुयायियों और पूजा करने वालों को (वृषायसे) बल देता है (कृष्णम्) अत्यन्त आकर्षित (ते) आपके (एम) पथ (रुशदूर्म्) प्रकाशित ज्ञान की ज्वाला (अजर) कभी न मरने वाला।

व्याख्या :-

एक अग्नि पुरुष कैसे जीता है?

एक अग्नि पुरुष अन्य लोगों के लिए किस प्रकार प्रेरणादायक होता है?

जैसे अग्नि वायु से प्रेरणा प्राप्त करके ऊपर की ओर चलती है और व्यापक आकाश में स्थापित होती है, उसी प्रकार अग्नि पुरुष भी प्राणायाम तथा ध्यान-साधना की क्रियाओं के माध्यम से वायु के द्वारा प्रेरित होता है जिससे वह अपना मन और चेतना अपने गहरे आकाश अर्थात् ब्रह्मरन्ध्र में स्थापित कर लेता है जो कि सबसे ऊपर वाले चक्र का स्थान है।

अग्नि पुरुष यह इच्छा करता है और उसके लिए सदैव तत्पर रहता है कि वह त्याग के किसी भी कार्य को शीघ्रता से सम्पन्न करे और ऐसा करते हुए वह सदैव परमात्मा की प्रशंसा और महिमा का गान करता है।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



भौतिक अग्नि भी अपनी प्रकृति से ही दूसरों के कल्याण के अनेकों कार्य करने के लिए तैयार रहती है। अधिकांश धार्मिक क्रियाएं भी इसी अग्नि के साथ की जाती हैं।

इस प्रकार अग्नि पुरुष परमात्मा के अनुयायियों और पूजा करने वाले को शीघ्र ही बल प्रदान करता है। ऐसे अग्नि पुरुष का दर्शन मात्र ही दिव्य प्रेरणाओं से भरपूर होता है।

हे अग्नि! आपका मार्ग अत्यन्त आकर्षक है क्योंकि आपके प्रकाशित ज्ञान की ज्वालाएं कभी मरती नहीं।

जीवन में सार्थकता :-

अग्नि पुरुष का मार्ग आकर्षक क्यों होता है?

मानव जीवन का वास्तविक उद्देश्य क्या है?

एक अग्नि पुरुष के पद का अनुसरण करना चाहिए जिससे हम भी उसकी तरह बन सकें। इन्द्र पुरुष बनना ही इस मार्ग पर सबसे कदम है।

वैदिक विवेक में अग्नि पुरुष बनने के लिए महान् सम्भावना होती है। अग्नि पुरुष का मार्ग अत्यन्त आकर्षक है जिसका केवल एक कारण है कि अग्नि पुरुष की ज्वालाएं प्रकाशित ज्ञान से भरपूर होती हैं और कभी मरती नहीं। यही प्रकाशित ज्ञान हमें परमात्मा की अनुभूति के पथ पर ले जाता है जो हमारे मानवीय अस्तित्व की वास्तविक और अन्तिम सच्चाई है। अतः इस मानव जीवन को सफल करने के लिए परमात्मा की अनुभूति का मार्ग ही केवल एक वास्तविकता और एक मात्र सच्चाई है जिसके लिए हमें अग्नि पुरुष बनने का प्रयास करना चाहिए।

ऋग्वेद मन्त्र 1.58.5

Rigveda 1.58.5

तपुर्जम्भो वन आ वातचोदितो यूथे न साहवाँ अव वाति वंसगः।
अभिव्रजन्नक्षितं पाजसा रजः स्थातुश्चरथं भयते पतत्रिणः ॥ ५ ॥

(तपुर्जम्भः) तपस्यापूर्ण मुख (वने) परमात्मा की पूजा में, एकान्त में (आ वातचोदितः) हर प्रकार से वायु से प्रेरित (यूथे) गड़ों के झुण्ड में (न) जैसे (साहवान) प्रतिस्पर्धा करता हुआ बैल (अव वाति) विषय सामग्री से दूर (वंसगः) गति के साथ (अभिव्रजन) की तरफ जाते हुए (अक्षितम) क्षय न होने वाला (पाजसा) शक्ति के साथ (रजः) गहरा आकाश (स्थातु चरथम) स्थाई और गतिशील (भयते) भय (पतत्रिणः) पक्षियों के समान।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

व्याख्या :-

अग्नि पुरुष का मूल लक्षण क्या है?

अग्नि पुरुष का दर्शन ही तपस्याओं से भरपूर होता है जो सदैव वायु से प्रेरित होता है और हर प्रकार से सदैव परमात्मा की पूजा में रहता है। वह गऊँओं में एक प्रतिस्पर्धी बैल की तरह होता है, इन्द्रियों के विषयों से दूर और गति से गतिमान। वह सदैव प्रगतिशील होता है, परी शक्ति के साथ कभी क्षय न होने वाले गहरे आकाश की तरह। सभी पदार्थ और सभी जीव उससे ऐसे भयभीत होते हैं जैसे पक्षी। इस प्रकार अग्नि पुरुष का मूल आधार उसका अपनी इन्द्रियों पर सफल नियंत्रण होता है।

जीवन में सार्थकता :-

हम अपनी इन्द्रियों पर नियंत्रण कैसे कर सकते हैं?

एक अग्नि पुरुष वास्तव में उच्च चेतना पर जीवन जीता है। हम भी, अपने गृहरथ जीवन में, अपनी इन्द्रियों पर पूर्ण नियंत्रण स्थापित करके उसके पदचिन्हों का अनुसरण कर सकते हैं। एक ईमानदार और समर्पित जीवन ही वह आधार है जो हमें इन्द्रियों पर नियंत्रण करने के लिए प्रेरित करता है। केवल इसी संकल्प के साथ ही हम सर्वोच्च दिव्यता का महिमागान, उसकी पूजा और उसका आह्वान कर सकते हैं।

ऋग्वेद मन्त्र 1.58.6

Rigveda 1.58.6

दधुष्ट्वा भृगवो मानुषेष्वा रथिं न चारुं सुहवं जनेभ्यः।
होतारमग्ने अतिथिं वरेण्यं मित्रं न शेवं दिव्याय जन्मने ॥ 6 ॥

(दधुः – आ दधुः) पूर्ण रूप से धारण करता है (त्वा) आपको (भृगवः) ज्ञान में परिपक्व (मानुषेषु) मनुष्यों में (आ – दधु से पूर्व लगाया गया) (रथिम) सम्पदा (न) जैसे (चारुम) सुन्दर (सुहवम्) आसानी से भुलाये जाने योग्य (जनेभ्यः) लोगों के द्वारा (होतारम) लाने वाला, स्वीकार करने वाला (अग्ने) सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा (अतिथिम्) हर समय और किसी भी समय स्वागत के योग्य (वरेण्यम्) धारण करने के योग्य (मित्रम्) मित्र (न) जैसे (शेवम्) कल्पाण करने वाला (दिव्याय) दिव्य (जन्मने) जन्म के लिए।

व्याख्या :-

एक अग्नि पुरुष की तरह किसको दिव्य जीवन प्राप्त होता है?

सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा! पुरुषों में आपको केवल वही धारण करते हैं जो ज्ञान में परिपक्व हैं। आप इनके लिए अत्यन्त सुन्दर सम्पदा हो। आप लोगों के द्वारा सरलता से भुलाये जा सकते हो। आप उनके जीवन में सबकुछ देते हो। आप हर समय ऐसे लोगों के द्वारा स्वागत करने के योग्य हो। आप

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

उनके द्वारा धारण करने के योग्य हो। आप उनका कल्याण एक मित्र की तरह करते हो। आप उन्हें एक दिव्य जन्म देते हो जिससे उन्हें अपनी तरह अग्नि पुरुष बना सको।

जीवन में सार्थकता :-

सर्वोच्च चेतना में जीवन कैसे जीयें?

हमें सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा, के बारे में सिद्धान्त स्पष्ट होना चाहिए। परमात्मा के अस्तित्व और शक्तियों का स्पष्ट ज्ञान प्राप्त करना न कठिन है और न असंभव। वह सर्वव्यापक और तरंगित शक्ति है जो हमारे लिए मित्रवत और हमारी व्यक्तिगत है। जबकि वह सारे ब्रह्माण्ड का कल्याणकर्ता तथा नियंत्रक है।

हमें अपने जीवन की इस व्यक्तिगत शक्ति के लिए अपने गहरे हृदय आकाश में प्रेम विकसित करना चाहिए। वह प्रत्येक कण का दाता है। अतः हमें सदैव और सब स्थानों पर उसकी चेतना के स्तर पर जीना चाहिए। ऐसा जीवन स्वाभाविक रूप से इन्द्र बन जायेगा।

उसके साथ चेतना पूर्वक जीवन जीने के बाद ही हमें एक दिव्य जीवन प्राप्त होता है।

ऋग्वेद मन्त्र 1.58.7

Rigveda 1.58.7

होतारं सप्त जुहवोऽ यजिष्ठं यं वाघतो वृणते अध्वरेषु।
अग्निं विश्वेषामरतिं वसूनां सपर्यामि प्रयसा यामि रत्नम् ॥ 7 ॥

(होतारम्) पदार्थों का लाने वाला और स्वीकार करने वाला (सप्त) सात (जुहवः) ज्ञान की आहुतियाँ देता है (यजिष्ठम्) आहवान करता है (यम्) जिसको (वाघतः) बुद्धि की शक्ति (वृणते) स्वीकार और धारण करता है (अध्वरेषु) दूसरों के कल्याण के लिए त्याग हेतु (अग्निम्) सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा को (विश्वेषाम्) सब (अरतिम्) उपलब्ध कराता है (वसूनाम्) आवास के लिए (सपर्यामि) उस अग्नि, परमात्मा की मैं पूजा करता हूँ, आहवान करता हूँ (प्रयसा) प्रयास के साथ, संवेदनशील प्रेम के साथ (यामि) प्राप्त करने के लिए (रत्नम्) गौरवशाली सम्पदा, भोगने लायक आनन्द।

व्याख्या :-

हमें दिव्य संगति कैसे प्राप्त हो सकती है?

अग्नि, सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा! आप हर पदार्थ को लाने वाले और देने वाले हो जिसे बुद्धि की सात शक्तियाँ ज्ञान की आहुति देते हुए आहवान करती हैं, स्वीकार करती हैं और धारण करती हैं जिससे दूसरों का कल्याण हो। आप सबके आवास के लिए हर पदार्थ उपलब्ध कराते हो।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

मैं, परमात्मा के आनन्द को भोगने के समान, गौरवशाली सम्पदा को प्राप्त करने के लिए उस अग्नि, परमात्मा की अपने प्रयासों और संवेदनशील प्रेम के साथ पूजा करता हूँ और आह्वान करता हूँ। बुद्धि की सात शक्तियाँ हैं – पांच ज्ञानेन्द्रियाँ, मन तथा बुद्धि। इन्हें सात ऋषि भी कहा जाता है।

जीवन में सार्थकता :-

हमें दिव्य संगति क्यों प्राप्त करनी चाहिए?

हमारी सभी इन्द्रियाँ, हमारे शरीर का प्रत्येक अंग, प्रत्येक क्षण, इस जीवन में सर्वोच्च दिव्यता की संगति के लिए ही लगना चाहिए। सर्वोच्च दिव्यता की संगति प्राप्त करने के दो स्पष्ट कारण हैं :-

1. क्योंकि दूसरों के कल्याण के लिए त्याग करने योग्य प्रत्येक वस्तु को केवल वही उपलब्ध कराता है।

क्योंकि केवल उसकी संगति ही हमें गौरवशाली सम्पदा अर्थात् भोगने लायक आनन्द प्रदान कर सकती है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने इस मन्त्र का एक सूत्रीय फार्मूला दिया है :-

‘जो लोग, अपनी आत्मा को जानकर, परब्रह्म को जानते हैं, केवल वही मुक्ति प्राप्त करते हैं।’

ऋग्वेद मन्त्र 1.58.8

Rigveda 1.58.8

अच्छिद्रा सूनो सहसो नो अद्य स्तोतृभ्यो मित्रमहः शर्म यच्छ ।

अग्ने गृणन्त्महस उरुष्योर्जो नपात्पूर्भिरायसीभिः ॥ ८ ॥

(अच्छिद्रा) दोष रहित (सूनो) पुत्र (सहसः) पूर्ण बल के लिए (नः) हमारी (अद्य) आज (स्तोतृभ्यः) परमात्मा का स्तुतिगान करते हुए (मित्रमहः) सबके मित्र (शर्म) निर्बाध सुख (यच्छ) हमें उपलब्ध करवाओ (अग्ने) सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा (गृणन्तम) पूजा करने वाला (अंहसः) पापों से (उरुष्य) सुरक्षित करो (ऊर्जो) शक्ति और बल को (नपात) न गिरने योग्य (पूर्भिः) सुरक्षित करो (आयसीभिः) लोहे जैसे संरक्षण के साथ।

व्याख्या :-

अग्नि अर्थात् ऊर्जा क्या है?

हम अग्नि, ऊर्जा, से क्या आशा करते हैं?

अग्नि, आग या ऊर्जा, सर्वोच्च ऊर्जा परमात्मा का पुत्र है और उन सबका मित्र है जिन्हें एक श्रद्धालु, परमात्मा का महिमागान करते हुए, त्रुटिहीन और बाधारहित सुखों और प्रसन्नताओं के लिए प्रार्थना करता है कि वे उसे आज ही प्राप्त हों। अग्नि की पूजा करने वाले को पापों से बचाया जाना चाहिए।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



ऐसे श्रद्धालु के लिए परमात्मा ही एक मात्र ऐसी शक्ति है जो उसकी शक्ति और बल को नीचे गिरने से बचाती है। परमात्मा लौहयुक्त रक्षक की तरह उसका संरक्षण करता है।

जीवन में सार्थकता :-

अग्नि अर्थात् ऊर्जा की वृद्धि कैसे करें?

हम अग्नि के बल को प्राप्त करने के लिए अग्नि की पूजा करते हैं और उसका आहवान करते हैं। वास्तव में हमारे प्रसन्न और सुखी जीवन के लिए आवश्यक ऊर्जा प्रतिक्षण हमारे निकट ही उपलब्ध रहती है। हमें केवल इस अनुभूति की आवश्यकता होती है कि ऊर्जा उस सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा का ही अंग है। अतः जब भी और जिस किसी भी उद्देश्य के लिए हमें ऊर्जा की आवश्यकता हो हमें उसका आहवान करना चाहिए और उसे प्राप्त करना चाहिए। आहवान करने के लिए एक ही कला और विज्ञान है कि हम जीवन में पवित्र बनकर रहें, इन्द्रियों पर पूरा नियंत्रण स्थापित करें और दिव्यता की कामना करें। हमें सदैव सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा के साथ गहरे हृदय से सद्भावनात्मक प्रेम करना चाहिए। अपने व्यक्तिगत आत्मा अर्थात् जीवात्मा और सर्वोच्च सर्वव्यापक आत्मा अर्थात् परमात्मा के प्रति अपने जीवन में, अपने गहरे हृदय आकाष में, चेतना जागृत किये बिना हमें कभी स्थाई प्रसन्नता प्राप्त नहीं हो सकती और समस्याओं और विवादों से छुटकारा भी प्राप्त नहीं हो सकता।

ऋग्वेद मन्त्र 1.58.9

Rigveda 1.58.9

भवा वरुथं गृणते विभावो भवा मघवन्मघवद्भ्यः शर्म ।
उरुष्याने अंहसो गृणन्तं प्रातर्मक्षू धियावसुर्जगम्यात् ॥ ९ ॥

(भव) हो (वरुथम) शरण (गृणते) आपका महिमागान करने वालों के लिए (विभावः) विशेष रूप से चमकते हुए, अग्नि (भव) हो (मघवन्) पूर्ण समृद्धि, परमात्मा (मघवद्भ्यः) सम्पदाशाली के लिए जो अपनी सम्पदा आहूत कर देते हैं (शर्म) निर्बाधित सुख (उरुष्यः) पापों से (अने) सर्वोच्च ऊर्जा परमात्मा (अंहसः) पापों से (गृणन्तम्) आपका पुजारी (प्रातः) प्रातःकाल में (मक्षु) अत्यन्त शीघ्र (धियावसुः) परमात्मा, गतिविधियाँ करते हुए विद्वानों को आवास देने वाला (जगम्यात्) प्राप्त हो।

व्याख्या :-

स्वयं को पापों से बचाते हुए एक पर्याप्त शरण और बाधारहित सुखों को कैसे सुनिश्चित करें? सत्संग क्या होता है?

हमें सत्संग कैसे प्राप्त करना चाहिए?

विशेष रूप से चमक वाली अग्नि, परमात्मा! उनके लिए आप शरण बनों जो आपकी महिमा का गान करते हैं।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

पूर्ण समृद्ध, परमात्मा! उन सम्पन्न लोगों के लिए बाधारहित सुख बनों जो अपनी सम्पदा को आहुति में प्रदान कर देते हैं।

सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा! अपनी पूजा करने वालों को पापों से बचाओ।

उन महान् विद्वानों की संगति, प्रत्येक प्रातःकाल सत्संग की तरह अर्थात् सत्य के संग की तरह, हमें प्राप्त हो जो सुन्दर आवासों में तथा सुन्दर दिव्य ज्ञान में रहते हैं।

जीवन में सार्थकता :-

परमात्मा के साथ सम्पर्क को कैसे बनाकर रखा जाये?

सभी समस्याओं से लड़ने के लिए कौन पर्याप्त शक्तिशाली होता है?

किसी भी प्रकार से परमात्मा का सम्पर्क मनुष्यों का सबसे महत्वपूर्ण दायित्व है। यह सम्पर्क निम्न में से किसी भी प्रकार से हो सकता है :-

1. परमात्मा की महिमा का गान करके,
2. अपनी सम्पदा को दूसरों के कल्याण के लिए आहूत करके।
3. परमात्मा की पूजा करके तथा
4. प्रत्येक कार्य को पूरी बुद्धिमत्ता के साथ करते हुए इस चेतना की अनुभूति रखना कि यह बुद्धि परमात्मा के द्वारा ही दी गई।

सर्वोच्च शक्ति, परमात्मा, अपने श्रद्धालुओं की सभी आवश्यकताओं को पूरा करते हैं। सच्चे श्रद्धालु सभी समस्याओं से लड़ने और उनका नाश करने की सभी शक्तियाँ प्राप्त कर लेते हैं।

षष्ठी

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

ऋग्वेद मण्डल-1 सूक्त 59

ऋग्वेद मन्त्र 1.59.1

Rigveda 1.59.1

वया इदग्ने अग्नयस्ते अन्ये त्वे विश्वे अमृता मादयन्ते ।
वैश्वानर नाभिरसि क्षितीनां स्थूणेव जनाँ उपमिद्ययन्थ ॥ १ ॥

(वया:) शाखाएँ (इत) जैसे (अग्ने) सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा (अग्नय:) सभी ऊर्जाएँ (ते) आपके (अन्ये) अन्य (त्वे) आपमें (विश्वे) समस्त (अमृताः) न मरने योग्य, अनुभूति प्राप्त, मुक्ति अवस्था में (मादयन्ते) आनन्दमय अनुभव (वैश्वानर) सभी प्राणियों का कल्याण करने वाला और देखभाल करने वाला, परमात्मा (नाभिः) केन्द्र, मूल (असि) हैं (क्षितीनाम) इस पृथ्वी पर सभी प्राणियों का (स्थूणा) स्तम्भ (इव) जैसे (जनान) सभी लोगों का (उपमित) स्थापित (ययन्थ) नियंत्रण करता है और धारण करता है।

व्याख्या :-

हम परमात्मा से किस प्रकार सम्बन्धित हैं?

सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा! ऊर्जा के सभी रूप आपकी शाखाओं के समान हैं। सभी अर्मत्य अर्थात् न मरने योग्य, अनुभूति प्राप्त आत्माएँ आपके अन्दर ही आनन्द प्राप्त करती हैं। क्योंकि आप सबका कल्याण करते हो और सबकी देखभाल करते हो, इसलिए आप इस पृथ्वी पर सभी प्राणियों की केन्द्रीय अर्थात् मूल सत्ता हो। आप सभी लोगों को स्थापित, नियंत्रित और धारण करने के लिए स्तम्भ के समान हो।

जीवन में सार्थकता :-

हमें स्थाई आनन्द कैसे प्राप्त हो सकता है?

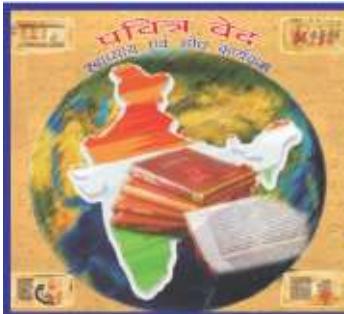
हम एक दूसरे से कैसे सम्बन्धित हैं?

किसी भी व्यक्ति के पास ऐसा कोई कारण नहीं है कि वह परमात्मा से स्वयं को अलग महसूस करे। प्रत्येक जीव और प्रत्येक वस्तु में किसी न किसी रूप में ऊर्जा उपस्थित है। सभी ऊर्जाएँ परमात्मा

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

की शाखाओं के समान हैं। यह मूल वास्तविकता सुनिश्चित करती है कि हम सब उस सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा से जुड़े हुए हैं।

सभी मानव प्रसन्नता, सुविधाजनक जीवन और आनन्द की तलाश में रहते हैं। हमें स्थाई आनन्द तभी प्राप्त होगा जब हम परमात्मा के साथ एकात्मता के स्तर पर पहुंच जायेंगे और उसकी अनुभूति प्राप्त कर लेंगे, जो सभी प्राणियों की मूल शक्ति है। वह वैश्वानर है। वह हमारे जीवन को धारण करने और उसे नियंत्रित करने के लिए स्तम्भ के समान है। हम केवल उससे ही सम्बन्धित नहीं हैं, बल्कि उसके माध्यम से एक—दूसरे से तथा सभी प्राणियों से जुड़े हुए हैं।

ऋग्वेद मन्त्र 1.59.2

Rigveda 1.59.2

मूर्धा दिवो नाभिरग्निः पृथिव्या अथाभवदरती रोदस्योः।
तं त्वा देवासोऽजनयन्त देवं वैश्वानर ज्योतिरिदार्याय ॥ २ ॥

(मूर्धा) उच्च स्तरीय (दिवः) प्रकाश दिव्यताएँ (नाभिः) केन्द्र, मूल (अग्निः) सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा (पृथिव्या) पृथ्वी का (अथ) अतः (अभवत) होता है (अरती) धारणकर्ता (अपनी सर्वव्यापकता से) (रोदस्यः) अन्तरिक्ष और पृथ्वी का (तम) वह (त्वा) आपको (देवासः) दिव्यताओं, दिव्य ज्ञान और प्रकाश का धारक (अज्जनयन्त) अभिव्यक्त करता है (देवम) सर्वोच्च प्रकाश (वैश्वानर) सभी प्राणियों का कल्याण करने वाला और देखभाल करने वाला, परमात्मा (ज्योतिः) ज्ञान का प्रकाश (इत) निश्चित रूप से (आर्याय) श्रेष्ठ पुरुष के लिए।

व्याख्या :-

इस सृष्टि का केन्द्रीय और प्रधान बन्धन शक्ति कौन है?

कौन परमात्मा को अभिव्यक्त करता है और उसे क्या प्राप्त होता है?

सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा, उच्च स्तरीय प्रकाश और दिव्यताएँ ही इस धरती की केन्द्रीय और प्रधान बन्धन शक्ति हैं। अतः अपनी सर्वव्यापकता के कारण वह अन्तरिक्ष और धरती को धारण करने वाला सिद्ध होता है। उस आपको अर्थात् सब प्राणियों का कल्याण करने वाले सर्वोच्च प्रकाश को दिव्यताओं के धारण करने वाले लोग अपने जीवन में अभिव्यक्त करते हैं। ऐसे उत्तम व्यक्तियों के लिए आप निश्चित रूप से ज्ञान का प्रकाश उपलब्ध कराते हो।

जीवन में सार्थकता :-

'आर्य' कौन है?

एक 'आर्य' होने के परिणामस्वरूप उसका आध्यात्मिक जीवन कैसा होता है?

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

जो न्यायोचित बुद्धि वाला, उचित, श्रेष्ठ, आध्यात्मिक, कर्तव्यबद्ध, सबके लिए लाभदायक, अनमोल, पवित्र और उच्च स्तरीय आध्यात्मिक जीवन वाला व्यक्ति ही आर्य कहलाता है।

बौद्ध ग्रन्थ 'आर्य अष्टांगिका मार्ग' एक आर्य के लिए आठ दृष्टिकोणों वाला श्रेष्ठ मार्ग देता है :-

1. सम्यक दृष्टि (उचित दृष्टि)
2. सम्यक संकल्प (उचित प्रण)
3. सम्यक वाक (उचित वाणी)
4. सम्यक कर्म (उचित व्यवहार)
5. सम्यक जीविका (उचित आजीविका का साधन)
6. सम्यक व्यायाम (उचित प्रयास)
7. सम्यक स्मृति (उचित बुद्धि और चेतना)
8. सम्यक समाधि (उचित प्रकार से एकात्मता की अनुभूति)

पॉल विलियम्स के अनुसार – आर्य श्रेष्ठ लोग हैं, सन्त हैं, वे लोग हैं जिन्होंने अपने मार्गों के फल प्राप्त कर लिये हैं। तथागत नामक मध्य मार्ग के अनुसार आर्य दूर दृष्टि और ज्ञान का संवर्द्धन करता है जिससे उसे शांति, उच्च विवेकशीलता, प्रकाश प्राप्त होता है।

अन्य बौद्ध विद्वानों ने भी आर्य शब्द को एक ऐसे व्यक्ति के रूप में परिभाषित किया है जो सत्य को प्राप्त कर चुका है, जिसे शून्यता अथवा अपने अस्तित्व की न्यूनता की प्रत्यक्ष अनुभूति हो चुकी है। एक आर्य हर प्रकार के कष्टों को उनके मूल रूप में देखता है। चाहे वे शारीरिक कष्ट हों या मानसिक, स्थूल हों या सूक्ष्म।

बौद्ध लोग मनुष्यों को दो मुख्य श्रेणियों में बांटते हैं :— 'पुथूजन' तथा 'आर्य'। 'पुथूजन' वे सांसारिक लोग हैं जो बहुआयामी जीवन से सम्बन्धित हैं, जिनकी आंखें अभी भी अन्धकार और कलंक के गर्दे से ढंकी हुई हैं। दूसरी तरफ 'आर्य' वे श्रेष्ठ लोग हैं जो आध्यात्मिक रूप से उच्च हैं और जिन्हें जन्म से या किसी सामाजिक मंच से या किसी धार्मिक समुदाय से अपना स्तर प्राप्त नहीं करना पड़ता। बल्कि उनका अपने चरित्र की आन्तरिक श्रेष्ठता उनका स्तर घोषित करती है।

चीन में 'आर्य' को शुद्ध और पवित्र कहा गया है। दक्षिण भारत में यदि किसी व्यक्ति को आदर से सम्बोधित करना हो तो उसे 'अय्या' कहकर सम्बोधित किया जाता है। यह शब्द 'आर्य' का ही एक रूप है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने मनुष्य को दो श्रेणियों में बांटा है – 'आर्य' तथा 'दस्यु'। 'आर्य' श्रेष्ठ पुरुष होते हैं और 'दस्यु' अश्रेष्ठ।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

केवल भारत को ही आर्यवर्त अर्थात् आर्यों की भूमि कहा जाता था, क्योंकि यहाँ वैदिक श्रेष्ठताओं से परिपूर्ण मूल और प्राचीन मनुष्य थे।

यह मन्त्र (ऋग्वेद 1.59.2) आर्यों को ज्ञान का प्रकाश तथा अनुभूति सुनिश्चित करता है। अतः परमात्मा की अनुभूति के लिए एक सच्चा 'आर्य' होना मूल आवश्यक लक्षण है। अतः 'आर्य' वह व्यक्ति है जो वास्तव में परमात्मा की दिव्यताओं को अभिव्यक्त करता है। वह सदैव प्रकाश में रहता है और कभी भी अन्धकार को महसूस नहीं करता। उसके लिए इस सृष्टि की केन्द्रीय और प्रधान बन्धन शक्ति परमात्मा है। परमात्मा की अनुभूति के लिए साधक को दिव्य और सच्चा 'आर्य' बनना होगा, किसी वर्ग या संस्था के साथ जुड़ने के कारण केवल 'आर्य' शब्द का प्रयोग पर्याप्त नहीं है।

ऋग्वेद मन्त्र 1.59.3

Rigveda 1.59.3

आ सूर्ये न रश्मयो ध्रुवासो वैश्वानरे दधिरेऽग्ना वसूनि ।
या पर्वतेष्वौषधीष्वस्तु या मानुषेष्वसि तस्य राजा ॥ ३ ॥

(आ – रश्मयः तथा दधिरे से पूर्व लगाकर) (सूर्ये) सूर्य में (न) जैसे (रश्मयः – आ रश्मयः) सभी दिशाओं में फैली किरणें (ध्रुवासः) स्थाई रूप से स्थापित (वैश्वानरे) सब प्राणियों का कल्याण करने वाले परमात्मा (दधिरे – आ दधिरे) सभी दिशाओं में स्थापित (अऽग्ना) सर्वोच्च ऊर्जा, सबसे अग्रणी, परमात्मा (वसूनि) समस्त पदार्थ (या) जो (परमात्मा) (पर्वतेषु) पर्वतों में (औषधीषु) औषध्यात्मक जड़ी-बूटियों में (अप्सु) जलों में (या) जो (मानुषेषु) मनुष्यों में (असि) है (तस्य) उसका (राजा) स्वामी, संचालक।

व्याख्या :-

परमात्मा सभी जीवों और पदार्थों का स्वामी तथा संरक्षक किस प्रकार है?

जिस प्रकार सूर्य की किरणें सभी दिशाओं में स्थापित होती हैं, उसी प्रकार सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा, सबसे अग्रणी और सबका कल्याण करने वाला सभी पदार्थों में सभी दिशाओं में स्थापित है – पर्वतों में, औषधि रूप जड़ी-बूटियों में, जलों में और सभी जीवों में। इस प्रकार अपनी सर्वव्यापकता के कारण वह सबका स्वामी और नियंत्रक है।

जीवन में सार्थकता :-

अपने अस्तित्व के अहंकार और परिस्थितियों में परिवर्तन के प्रभाव से कैसे ऊपर उठें?

परमात्मा की अनुभूति और चेतना रूपी गहरी और सर्वोच्च अवधारणा इस बात में निहित है कि हम सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा की विद्यमानता और सर्वोच्चता सभी पदार्थों और प्राणियों में महसूस करें। यदि

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

हम सर्वत्र चारों तरफ उसकी उपस्थिति और उसके स्वामी और संरक्षक होने के प्रति चेतन होते हैं तो यह चेतना हमें सफलता पूर्वक अपने अस्तित्व के अहंकार तथा प्रतिक्षण परिस्थितियों में होने वाले परिवर्तन के प्रभाव से ऊपर उठा देगी। हम उसकी सर्वोच्चता और बुद्धिमतता की चेतना में ही स्थापित हो जायेंगे। हमें उस सर्वोच्च शक्ति के साथ प्रेम हो जायेगा। इस प्रकार कष्टों और कठिनाईयों के प्रति हमारी चेतना समाप्त हो जायेगी।

ऋग्वेद मन्त्र 1.59.4

Rigveda 1.59.4

बृहती इव सूनवे रोदसी गिरः होता मनुष्योऽ न दक्षः।
स्वर्वते सत्यशुभ्याय पूर्वीर्वेश्वानराय नृतमाय यह्वीः ॥ 4 ॥

(बृहती इव) जैसे कि माता, जैसे कि वृद्धि को प्राप्त) (सूनवे) पुत्र के लिए, निर्माता (पिता के लिए) (रोदसी) अन्तरक्षि तथा भूमि (गिरः) परमात्मा द्वारा दिये गये ज्ञान की वाणी के लिए, वेद के लिए (होता) लाने वाला और देने वाला, विद्वान् (मनुष्यः) मननशील मनुष्य (न) जैसे (दक्षः) कार्य करने में दक्ष, कुशल (स्वर्वते) स्वप्रकाशमान्, प्रसन्नता से पूर्ण (सत्यशुभ्याय) सत्य की शक्ति के साथ (पूर्वीः) हमें पूर्ण करने वाला (र्वेश्वानराय) सब प्राणियों का कल्याण करने वाले परमात्मा (नृतमाय) मनुष्य को उत्तम नेतृत्व देने वाला (यह्वीः) महान् सार्थक।

व्याख्या :-

जन्म देने वाली माता, धरती माता तथा महान् विद्वानों में कौन सा लक्षण समान हैं?
परमात्मा के क्या लक्षण हैं?

जिस प्रकार जन्म देने वाली माता अपने पुत्र को उसके कल्याण के लिए धारण करती है; जिस प्रकार व्यापक आकाश और धरती माता सबको उनके कल्याण के लिए धारण करते हैं; उसी प्रकार मननशील मनुष्य एक विशेषज्ञ की तरह और वास्तविक कुशल व्यक्ति की तरह विद्वानों को लाता है और उन्हें विद्वता उपलब्ध करवाता है, वह परमात्मा द्वारा दिये गये ज्ञान अर्थात् वेद की महान् और सार्थक वाणियों को सबके कल्याण के लिए धारण करता है।

सभी वाणियाँ परमात्मा द्वारा प्रदत्त हैं जो :-

1. (स्वर्वते) स्वप्रकाशमान्, प्रसन्नता से पूर्ण,
2. (सत्यशुभ्याय) सत्य की शक्ति के साथ,
3. (पूर्वीः) हमें पूर्ण करने वाला,
4. (र्वेश्वानराय) सब प्राणियों का कल्याण करने वाले परमात्मा,
5. (नृतमाय) मनुष्य को उत्तम नेतृत्व देने वाला।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

जीवन में सार्थकता :-

हम परमात्मा के लक्षणों की अनुभूति अपने भीतर कैसे कर सकते हैं?

जन्म देने वाली माता, धरती माता और महान् विद्वानों के महान् लक्षण हमें प्रेरित करते हैं कि हमें भी परमात्मा से कुछ न कुछ महान् लक्षण अवश्य धारण करने चाहिए। परमात्मा के अनेकों महान् लक्षण हैं। लगातार उन पर चिन्तन—मनन करने से हम भी उन लक्षणों को धारण कर सकते हैं। परमात्मा सर्वव्यापक है, उसके लक्षण भी सब जगह व्याप्त हैं। अतः हम उनकी अनुभूति प्राप्त कर सकते हैं। परमात्मा स्वप्रकाशित है और प्रसन्नता से भरा पड़ा है। हम भी आत्मिक रूप से परमात्मा का अनुसरण करते हुए उसके सर्वोच्च प्रकाश और प्रसन्नता की अनुभूति प्राप्त कर सकते हैं।

परिवारों, संगठनों, समाज और राष्ट्र के सभी प्रमुखों को अपनी अगली पीढ़ियों के उचित मार्गदर्शन के लिए परमात्मा के लक्षणों की अनुभूति प्राप्त करके उन्हें अपनाना चाहिए।

ऋग्वेद मन्त्र 1.59.5

Rigveda 1.59.5

दिविश्चते बृहतो जातवेदो वैश्वानर प्र रिरिचे महित्वम्।
राजा कृष्णीनामसि मानुषीणां युधा देवेभ्यो वरिवश्चकर्थ ॥ ५ ॥

(दिवः चित्त) सभी दिव्यताओं से भी (ते) आपकी (बृहतः) व्यापक, फैली हुई (जातवेदः) सभी को पैदा करने वाला और समस्त उत्पन्न को जानने वाला (वैश्वानर) सब प्राणियों का कल्याण करने वाले परमात्मा (प्ररिचे) व्यापक है (महित्वम्) आपकी महिमा और महानता का प्रभाव (राजा) राजा, नियंत्रक (कृष्णीनाम) मेहनत करने वाले लोगों का (असि) है (मानुषीणाम) मननशील मनुष्य (युधा) संघर्ष के द्वारा (देवेभ्यः) दिव्य लोगों के लिए (वरिवः) गौरवशाली सम्पदा (चकर्थ) आप उपलब्ध कराते हो।

व्याख्या :-

परमात्मा मेहनत करने वाले और मननशील मनुष्यों का नियामन कैसे करता है?

सब पदार्थों के देने वाले और जानने वाले, सबका कल्याण करने वाले! आपकी महिमा और महानता का प्रभाव अन्य दिव्यताओं से अधिक व्यापक है। चाहे वे दिव्यताएँ कितनी ही फैली हुई और व्यापक क्यों न हों। आप राजा हो अर्थात् मेहनत करने वाले और मननशील लोगों के नियामक हो। आप दिव्य लोगों को संघर्ष के माध्यम से गौरवशाली सम्पदा उपलब्ध कराते हों।

जीवन में सार्थकता :-

संघर्ष और सफलता में क्या सम्बन्ध है?

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



परमात्मा की शक्तियाँ धरती और सूर्य की विशाल फैली हुई रचना से भी असीमित हैं। वह शारीरिक और मानसिक मेहनत करने वाले सभी लोगों का नियामक है। हमारी गतिविधियों का मूल्यांकन उनमें डाले गये संघर्ष की मात्रा से किया जाता है। जितना अधिक संघर्ष होगा उतनी अधिक सफलता और गौरवशाली सम्पदा हमें प्राप्त होगी।

शारीरिक और मानसिक श्रम के बदले हमें अपनी सांसारिक इच्छाओं के लिए सुविधाएँ और प्रसन्नता मिलती है।

अपनी इन्द्रियों पर नियंत्रण करने के लिए किये गये संघर्ष के बदले हमें दिव्य लक्षण और आध्यात्मिक प्रगति प्राप्त होती है।

जीवन के किसी भी क्षेत्र में सफलता प्राप्त करने के लिए हमें कड़े संघर्ष की आवश्यकता होती है। संघर्ष और सफलता का सीधा सम्बन्ध है।

इसी प्रकार हमें भी सभी मेहनत करने वाले और मननशील लोगों का उचित सत्कार और उचित रूप से पुरस्कृत करना चाहिए।

ऋग्वेद मन्त्र 1.59.6

Rigveda 1.59.6

प्र नू महित्वं वृषभस्य वोचं यं पूरवो वृत्रहणं सचन्ते ।
वैश्वानरो दस्युमग्निर्जघन्वां अधूनोत्काष्ठा अव शम्बरं भेत् ॥ 6 ॥

(प्र – वोचम से पूर्व लगाकर) (नू) बहुत शीघ्र, अभी (महित्वम) महिमा तथा महानता (वृषभस्य) सबसे शक्तिशाली, सबसे अधिक प्रकाशित (वोचम – प्र वोचम) शक्ति से बोलने वाला (यम) जिसे (पूरवः) स्वयं को आत्मा में धारण करने के लिए सक्षम तथा पूर्ण (वृत्रहणम) बादलों और मन की वृत्तियों को मारने वाला (सचन्ते) संगति करने वाला (वैश्वानरः) सब प्राणियों का कल्याण करने वाले परमात्मा (दस्युम) बुरी वृत्तियाँ (अग्नि) सर्वोच्च ऊर्जा परमात्मा (जगन्वानः) पूरी तरह से नष्ट करता है (अधूनोत) कपित करके (काष्ठाः) सभी दिशाओं, दूर के अंशों को (अव) भेत से पूर्व लगाकर) (शम्बरम) मन की शांति के आवरण (भेत – अव भेत) नष्ट करते हैं।

व्याख्या :-

परमात्मा की महिमा और महानता के बारे में कौन बोलता है?

ऐसे लोग परमात्मा की संगति क्यों करते हैं?

जो लोग स्वयं को आत्मा में ही पोषित करने में पूर्ण और सक्षम होते हैं, वे उस महाशक्तिशाली और सर्वाधिक प्रकाशित परमात्मा की महिमा और महानता के बारे में मजबूती के साथ बोलते हैं जो मन के बादलों और वृत्तियों का नाश करता है।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

ऐसे लोग सदैव सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा की संगति करते हैं जो सबका कल्याण करता है और बुरी प्रवृत्तियों को चारों तरफ से हिलाकर और कंपित करके सबका कल्याण करता है। परमात्मा की संगति को महसूस करने से ही मन के आवरण समाप्त किये जा सकते हैं।

जीवन में सार्थकता :-

आधुनिक मनुष्य के मन को किस प्रकार की परिस्थितियों ने घेर रखा है?

परमात्मा की संगति की अनुभूति के लिए मन के आवरण का नाश किस प्रकार किया जाये?

आज के युग में अधिकतर मस्तिष्क शांति को खो चुके हैं। क्योंकि उनके मन पर ईर्ष्या, द्वेष, क्रोध, असंतोष, इच्छाओं की पूर्ति न होना और अहंकार को चोट आदि के आवरण विद्यमान हैं। मन पर ऐसे आवरणों की संख्या असीमित हो सकती है, जिसके कारण मन असंतुलित हो जाता है और उसका परिणाम निराशा, अपराध और रोगों के रूप में दिखाई देता है।

मन के ऐसे सभी प्रकार के असंतुलन का इलाज है अनुभूति प्राप्त होने तक परमात्मा की संगति को महसूस करना प्रारम्भ कर दें। ऐसे दिव्य एहसास के साथ अन्ततः मन के सभी आवरण नष्ट हो जायेंगे। केवल एक सच्चा आर्य (जैसा कि ऋग्वेद-1.59.2 में स्पष्ट किया गया है) परमात्मा की संगति की अनुभूति प्राप्त कर सकता है और मन के आवरणों को नष्ट कर सकता है।

ऋग्वेद मन्त्र 1.59.7

Rigveda 1.59.7

वैश्वानरो महिमा विश्वकृष्टिर्भरद्वाजेषु यजतो विभावा ।
शातवनेये शतिनीभिरन्निः पुरुणीथे जरते सूनृतावान् ॥७॥

(वैश्वानरः) सब प्राणियों का कल्याण करने वाले परमात्मा (महिमा) अपनी महिमा और महानता के साथ (विश्वकृष्टिः) सबका निर्माता (भरद्वाजेषु) स्वयं को शक्ति और बल से परिपूर्ण करने वाले में (यजतः) संगति के योग्य (विभावा) विशेष रूप से प्रकाशित (शात वनेये) असंख्य पदार्थ (शतिनीभिः) असंख्य गतिविधियाँ (अनिन) सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा (पुरुणीथे) जो दूसरों का नेतृत्व करने में सक्षम हैं और पूर्ण हैं (जरते) सम्मानित और महिमा मंडित हैं (सूनृतावान) जो उत्तम वाणियों अर्थात् वेदों से प्रेरित करता है।

व्याख्या :-

भरद्वाज कौन होता है?

भरद्वाज को परमात्मा से क्या प्राप्त होता है?

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

परमात्मा जो वैश्वानर है (अर्थात् सब प्राणियों का कल्याण करने वाला) और विश्वकृष्टि (अर्थात् सबका निर्माता) है, एक भरद्वाज (अर्थात् जो अपने भीतर दिव्य शक्ति और बल से परिपूर्ण होता है) में केवल वही अपनी महिमा और महानता के साथ संगति के योग्य है। सर्वोच्च ऊर्जा परमात्मा उन्हें उत्तम वाणियों अर्थात् वेदों से प्रेरित करता है जो अन्यों को नेतृत्व देने के लिए पूर्ण और सक्षम होते हैं। परमात्मा ऐसे लोगों के द्वारा सम्मानित और महिमामंडित होते हैं जो असीम पदार्थों के साथ असंख्य गतिविधियाँ दूसरों के कल्याण के लिए सम्पन्न करते हैं।

जीवन में सार्थकता : —

अपने जीवन में हम परमात्मा के कौन से लक्षणों को विकसित कर सकते हैं?

इन लक्षणों से हमें क्या लाभ होगा?

परमात्मा के कुछ लक्षण ऐसे हैं जिन्हें कोई भी अपने जीवन में विकसित कर सकता है :—

1. वैश्वानरः — सबका कल्याण करके हम भी ऐसा बन सकते हैं।
2. विभावा — अपने अहंकार और इच्छाओं को त्यागकर तथा अपनी मूल आध्यात्मिक शक्ति परमात्मा पर ध्यान लगाकर हम भी दिव्य प्रकाश प्राप्त कर सकते हैं।
3. सुनृतावान् — हम अन्य लोगों को उत्तम वाणियों अर्थात् वेद से प्रेरित कर सकते हैं।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

ऋग्वेद मण्डल-1 सूक्त 60

ऋग्वेद मन्त्र 1.60.1

Rigveda 1.60.1

वहिं यशसं विदथस्य केतुं सुप्राव्यं दूतं सद्योर्थम् ।
द्विजन्मानं रयिमिव प्रशस्तं रातिं भरद् भृगवे मातरिष्वा ॥ १ ॥

(वहिं) भार को वहन करने वाला (यशस्म) अपनी महिमा के कारण प्रसिद्ध (विदथस्य केतुम्) हृदय में ज्ञान का प्रकाश उत्पन्न करने वाला (सुप्राव्यम्) उत्तम प्रकार से हमें संरक्षित करने वाला (दूतम्) दूत (दिव्यताओं का) (सद्यः अर्थम्) गति के साथ पूर्ण करने वाला (द्विजन्मानम्) प्राणों से तथा दिव्य ज्ञान से उत्पन्न होने वाला, मन और हृदय में उपस्थित होने वाला (रयिम इव प्रशस्तम्) गौरवशाली सम्पदा की तरह (रातिम्) सबके कल्याण के लिए सब कुछ देने वाला (भरदत्) धारण करता है (परमात्मा) (भृगवे) दिव्य ज्ञान के द्वारा (मातरिष्वा) प्राण।

व्याख्या : -

परमात्मा के क्या लक्षण हैं?

इस मन्त्र में परमात्मा के निम्न नौ लक्षण सूचीबद्ध हैं : -

1. वहिं - वह समूचे ब्रह्माण्ड के भार को वहन करता है।
2. यशस्म - वह अपनी महिमा के कारण प्रसिद्ध है।
3. विदथस्य केतुम् - वह हृदय में ज्ञान का प्रकाश उत्पन्न करता है।
4. सुप्राव्यम् - वह उत्तम प्रकार से हमें संरक्षित करता है (अच्छे भोजन और अच्छे व्यवहार के माध्यम से एक उत्तम जीवन जीने की प्रेरणा देकर)।
5. दूतम् - वह समस्त दिव्यताओं का दूत है।
6. सद्यः अर्थम् - वह गति के साथ सभी कार्य पूर्ण करता है।
7. द्विजन्मानम् - वह प्राणों से तथा दिव्य ज्ञान से उत्पन्न होने वाला, मन और हृदय में उपस्थित होने वाला है।
8. रयिम इव प्रशस्तम् - यह गौरवशाली सम्पदा की तरह है।
9. रातिम् - वह सबके कल्याण के लिए सब कुछ देने वाला है।

प्राणों को धारण करके एक व्यक्ति ज्ञान अर्थात् दिव्य ज्ञान प्राप्त करता है और दिव्य ज्ञान के माध्यम से वह परमात्मा को धारण करता है।

जीवन में सार्थकता : -

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

परमात्मा की अनुभूति प्राप्त करने की क्या प्रक्रिया है?

एक अच्छे माता-पिता, अच्छे अध्यापक और अच्छे राजा का मुख्य कर्तव्य क्या है?

परमात्मा की अनुभूति प्राप्त करने की प्रक्रिया अत्यन्त सरल है। निःसंदेह इसके लिए एक आर्य जीवन की मूल योग्यताएं आवश्यक हैं। एक योगी प्राणायाम करते हुए अपने प्राणों को रोक लेता है। प्राणायाम की लम्बी और लगातार साधना के बाद वह परमात्मा के दिव्य ज्ञान को प्राप्त करना प्रारम्भ कर देता है। श्वास रोकने की अवधि में बारी-बारी से परमात्मा के लक्षणों पर ध्यान करो, आपको एक-एक करके सभी दिव्यताओं की अनुभूति प्राप्त होने लगेगी। प्राणायाम अर्थात् श्वास को रोकना और दिव्य ज्ञान में परिपक्वता अर्जित करना, परमात्मा की अनुभूति के दो कदम हैं। प्राणायाम अर्थात् श्वास को रोकना और उस पर नियंत्रण करना संयम का प्रतीक है जिससे मन की वृत्तियाँ अध्यकार तथा इच्छाएँ नियंत्रण में आ जाती हैं। यह मानसिक प्राणायाम है। प्रत्येक अच्छे माता-पिता, अच्छे अध्यापक और अच्छे राजा को अपने-अपने अनुयायियों के मध्य प्राणायाम की यह प्रक्रिया प्रेरित करनी चाहिए, शारीरिक तथा मानसिक दोनों प्रकार से दिव्य ज्ञान में परिपक्वता प्राप्त करने के लिए।

ऋग्वेद मन्त्र 1.60.2

Rigveda 1.60.2

अस्य शासुरुभयासः सचन्ते हविष्मन्त उशिजो ये च मर्ता: ।
दिवश्चित्पूर्वो न्यसादि होताऽपृच्छयो विश्पतिर्विक्षु वेधाः ॥ २ ॥

(अस्य) यह (शासुरुभयासः) शासन करने वाले और नियंत्रक का (समूची सृष्टि के) (उभयासः) दोनों (शासक और प्रजा, आहुति देने वाला और दिव्य ज्ञान में रत) (सचन्ते) सेवा और पूजा करता है (हविष्मन्तः) आहुति देता है, यज्ञ करता है (उशिजः) दिव्य ज्ञान में रत (ये) जो (च) और (मर्ता:) मनुष्य (दिवः चित् पूर्वः) दिव्य ज्ञान के प्रकाश की अनुभूति से भी पूर्व (न्यसादि) हमारे गहरे हृदय में स्थापित है (होता) यज्ञ के लिए सभी पदार्थों को लाने वाला और देने वाला (अपृच्छयः) सब पदार्थों में अनुभूति प्रदान करने के योग्य, उसकी महिमा हर पदार्थ में दिखाई देती है, मननशील मनुष्य परमात्मा के बारे में हर वस्तु पर प्रश्न करते हैं। (विश्पतिः) सबका निर्माता और संरक्षणकर्ता (विक्षु) सभी प्राणियों में (वेधाः) ज्ञान को धारण करता है, सभी कर्मों का फल देता है।

व्याख्या : -

परमात्मा किसके द्वारा पूजा के योग्य है?

समूचे ब्रह्माण्ड का शासक और नियंत्रक, परमात्मा, सभी मनुष्यों के द्वारा सेवा और पूजा के योग्य है, राजा और प्रजा दोनों के द्वारा, यज्ञ में आहुति देने वाले और दिव्य ज्ञान को प्राप्त करने और बांटने में लगे लोगों के द्वारा।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

परमात्मा के दिव्य ज्ञान के प्रकाश की अनुभूति होने से पूर्व भी वह हमारे गहरे हृदय में विराजमान है।

यज्ञ के लिए प्रत्येक वस्तु को लाने वाला और देने वाला भी वही है।

वह प्रत्येक वस्तु में अनुभूति के योग्य है। प्रत्येक वस्तु में उसकी महिमा महसूस की जा सकती है।

मननशील मनुष्य प्रत्येक वस्तु में परमात्मा के बारे में जिज्ञासारूपी प्रश्न करते हैं।

वह सबका निर्माता और संरक्षक है। अतः वह प्रत्येक व्यक्ति को उसके सभी कार्यों के फल प्रदान करते हुए ज्ञान देता है।

जीवन में सार्थकता :-

परमात्मा सबके द्वारा पूजा के योग्य क्यों है?

सबके हृदय में कौन विराजमान है?

कौन सबको पदार्थ उपलब्ध कराता है?

जब हम किसी भी पदार्थ के बारे में जिज्ञासा के रूप में प्रत्येक प्रश्न करते हैं तो हमें क्या अनुभूति होती है?

कौन सब में ज्ञान धारण करता है और सभी कर्मों के फल प्रदान करता है?

प्रत्येक मनुष्य में हृदय और मस्तिष्क है। कोई व्यक्ति परमात्मा के दिव्य ज्ञान के प्रकाश की अनुभूति करे परन्तु परमात्मा तो प्रत्येक हृदय में पहले से ही विराजमान है। अतः प्रत्येक व्यक्ति को उसकी अनुभूति का प्रयास करने के लिए प्रेरित होना ही चाहिए। हमें जो भी पदार्थ मिलते हैं, वे सब परमात्मा के द्वारा उपलब्ध कराये जाते हैं। ऐसा कोई भी व्यक्ति नहीं है जो कहे कि उसने परमात्मा की सृष्टि में से कुछ भी प्राप्त नहीं किया। अतः परमात्मा सबके द्वारा अनुभूति के योग्य है। निर्माता, संरक्षक और पोषक होने के नाते वह सब में ज्ञान को धारण करता है और सभी कार्यों के फल प्रदान करता है। इस प्रकार, निश्चित रूप से, यह अनुभूति के स्तर पर पहुँचने तक सबके द्वारा जानने के योग्य है।

ऋग्वेद मन्त्र 1.60.3

Rigveda 1.60.3

तं नव्यसी हृद आ जायमानमस्मत्सुकीर्तिर्मधुजिह्वमश्याः ।

यमृत्विजो वृजने मानुषासः प्रयस्वन्त आयवो जीजनन्त ॥ ३ ॥

(तम) वह (नव्यसी) एकदम नई प्रशंसा और महिमा (हृदः आ जायमानमः) हृदय में अनुभूत होने वाला (अस्मत् सुकीर्तिः) उसकी महिमा में हमारा गान (मधुजिह्वम) मधुर वाणी वाले के लिए, मधुरता की प्रेरणा देने वाले के लिए (अश्याः) प्राप्त हो (यम) जो (ऋत्विजः) प्रत्येक ऋतु में यज्ञ कार्यों को करने वाले (वृजने) बुराईयों से मुक्त श्रेष्ठ जीवन में (मानुषासः) अन्य लोगों के कल्याण के लिए लगे हुए

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

मननशील मनुष्य (प्रयस्वन्तः) उत्तम ज्ञान से सुशोभित (आयवः) कार्य में सदैव सक्रिय, सत्यवादी (जीजनन्त) स्वयं को प्रकाशित करने वाला ।

व्याख्या : –

परमात्मा की प्रशंसा में किये गये हमारे उच्चारण कहाँ जाते हैं?

परमात्मा के बारे में हमारे उच्चारणों के माध्यम से की गई नई—नई प्रशंसाएं और महिमागान हमारे हृदय में ही शामिल होते हैं और उस परमात्मा को प्राप्त होते हैं जो मधुर वाणी वाला है और मधुरता को ही प्रेरित करता है। प्रत्येक ऋतु में यज्ञ गतिविधियाँ सम्पन्न करने वाले लोग बुराईयों से मुक्त अपने न्याय परायण जीवन में तथा वे मननशील मनुष्य जो दूसरों के कल्याण में ही लगे रहते हैं, सुन्दर ज्ञान को प्राप्त करते हैं, वे सदैव स्वयं को प्रकाशित करते हुए सत्य आचरण के द्वारा कार्यों में सक्रिय रहते हैं।

जीवन में सार्थकता : –

दिव्य ज्ञान का प्रकाश कैसे प्राप्त करें?

अपने अन्दर दिव्य ज्ञान के प्रकाश को प्राप्त करने के लिए हमें सत्य परायण जीवन, प्रत्येक वस्तु के लिए और प्रत्येक क्षण के लिए परमात्मा की प्रशंसा करते हुए दूसरों के कल्याण के लिए जीने की आवश्यकता है।

ऋग्वेद मन्त्र 1.60.4

Rigveda 1.60.4

उशिकपावको वसुर्मानुषेषु वरेण्यो होताधायि विक्षु ।
दमूना गृहपतिर्दम आँ अग्निर्भुवद्रयिपती रथीणाम् ॥ 4 ॥

(उशिक) आत्मा के कल्याण की सच्ची कामना करता है (पावकः) अपने जीवन को पवित्र करता है (वसु) अपने आवास का प्रबन्ध करता है (मानुषेषु) मननशील मनुष्यों में (वरेण्यः) ग्रहण करने योग्य (होता) सभी पदार्थों को लाने वाला और देने वाला (अधायि) हृदय स्थान में (विक्षु) लोगों का (दमूना:) सबके अन्दर मन रखने वाला (गृहपतिः) इस घर का संरक्षक (दमे) इस घर में (आ) अभवत् से पूर्व लगाकर) (अग्निः) सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा (अभुवत — आ भुवत) रहता है (रयिपतिः) समस्त सम्पदाओं का स्वामी (रथीणाम) सम्पदा की चमक बढ़ाता है।

व्याख्या : –

आत्मा के कल्याण की कौन इच्छा करता है?

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

कौन हमारे मन में निवास करता है?

हमारी सम्पदा का स्वामी कौन है?

परमात्मा सत्य रूप में आत्मा के कल्याण की इच्छा करता है, उसके लिए आवास का प्रबन्ध करता है और उसके जीवन को शुद्ध करता है। लोगों के लिए सब पदार्थों को लाने वाला और देने वाला मननशील मनुष्यों के हृदय आकाश में धारण करने के योग्य है। वह सब शरीरों के मन में है। सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा इस घर में रहता है। वह सारी सम्पदाओं का स्वामी है और सभी सम्पदाओं की चमक बनाता है।

जीवन में सार्थकता :-

कौन परमात्मा को हृदय में धारण करता है?

किसकी सम्पदा परमात्मा की महिमा के साथ चमकती है?

परमात्मा सर्वविद्यमान है, अतः हमारे शरीर में भी विद्यमान है। वह हमारे शरीर और प्रत्येक पदार्थ का दाता है। परन्तु केवल मननशील मनुष्य ही अपने हृदय आकाश में उसे स्वीकार करते हैं। ऐसे महान् आत्माओं के लिए उनका मन ही परमात्मा है जो प्रत्येक कार्य के लिए उन्हें प्रेरित करता है और शक्ति प्रदान करता है। इस चेतना के साथ, ऐसे लोगों की सम्पदा परमात्मा की महिमा के साथ चमकती है।

ऋग्वेद मन्त्र 1.60.5

Rigveda 1.60.5

तं त्वा वयं पतिमग्ने रथीणां प्र शंसामो मतिभिर्गोत्मासः ।
आशुं न वाजम्भरं मर्जयन्तः प्रातर्मक्षू धियावसुर्जगम्यात् ॥ ५ ॥

(तम) उसको (त्वा) आप (वयम) हम (पतिम) स्वामी और संरक्षक (अग्ने) सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा (रथीणाम) सभी सम्पदाओं का (प्रशंसामः) प्रशंसा तथा महिमा (मतिभिः) बुद्धि के साथ, विद्वानों के साथ (गोत्मासः) हमारी इन्द्रियों को पवित्र और तीव्र करके (आशुम) अश्व (न) जैसे (वाजम्भरम) हमें शक्ति और गति से पूर्ण करता है (मर्जयन्तः) हमें पवित्र करता है (प्रातः) प्रातःकाल में (मक्षु) अत्यन्त शीघ्र (धियावसुः) दिव्य ज्ञान में जीने वाले लोग, विद्वत् कार्यों से प्राप्त सम्पदा (जगम्यात) प्राप्त हो।

व्याख्या :-

हमें परमात्मा की प्रशंसा और महिमा किस प्रकार करनी चाहिए?

परमात्मा की प्रशंसा और महिमागान के क्या परिणाम होते हैं?

सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा, सभी सम्पदाओं का स्वामी और संरक्षक, उस आपकी प्रशंसा और महिमा अपनी इन्द्रियों को शुद्ध करके और तीव्र करके अपनी बुद्धियों के साथ और विद्वानों के साथ करते

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

हैं। शुद्धता से आप हमारे अन्दर शक्ति और अश्वों जैसी गति परिपूर्ण करते हों। हम प्रातःकाल शीघ्रता के साथ अपने बौद्धिक कार्यों से तथा दिव्य ज्ञान में जीने वाले लोगों से सम्पदा प्राप्त करें।

जीवन में सार्थकता : —

परमात्मा की प्रशंसा और महिमा के लिए मूल लक्षण क्या हैं?

गौरवशाली सम्पदा क्या है?

स्वयं को शुद्ध करना और अपनी इन्द्रियों की चमक बढ़ाना, परमात्मा की प्रशंसा और महिमा के लिए मूल लक्षण हैं। अशुद्ध लोग परमात्मा के साथ सम्पर्क नहीं बना सकते। अशुद्ध लोग तो अच्छे स्वास्थ्य अर्थात् शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक स्वास्थ्य का आनन्द भी नहीं ले पाते।

अच्छे स्वास्थ्य के बिना या सम्पदा प्राप्त ही नहीं होती या सम्पदा का कोई आनन्द नहीं मिलता। सम्पदा केवल प्रकृति की भौतिक वस्तुएं ही नहीं हैं। इसमें मानसिक और आध्यात्मिक उपलब्धियाँ भी शामिल हैं। सभी सम्पदाएं परमात्मा के ही कारण हैं और केवल इसी चेतन सम्बद्धता के साथ हमारी सम्पत्ति गौरवशाली बनती है जो सबके कल्याण के लिए लाभदायक होती है।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



ऋग्वेद मण्डल-1 सूक्त 61

ऋग्वेद मन्त्र 1.61.1

Rigveda 1.61.1

अस्मा इदु प्र तवसे तुराय प्रयो न हर्मि स्तोमं माहिनाय।
ऋचीषमायाधिगव ओहमिन्द्राय ब्रह्माणि राततमा ॥ १ ॥

(अस्मै इत् उ) निश्चय से यह उसके लिए है (परमात्मा के लिए) (प्र – हर्मि से पूर्व लगाकर) (तवसे) बलशाली, बढ़ी हुई शक्तियाँ (तुराय) तीव्रता से कार्य करने वाले (प्रयः) संतोष प्रदान करने वाला भोजन और सम्पदा (न) जैसे (हर्मि – प्र हर्मि) देता है, प्राप्त करने योग्य (स्तोमम) प्रशंसाएँ (माहिनाय) महिमाओं से परिपूर्ण, उत्तम लक्षण (ऋचीषमाय) असीम प्रशंसाएँ (अधिगवे) बिना बाधा का मार्ग (ओहम) प्राप्त करने योग्य (इन्द्राय) परमात्म, महान् राजा, इन्द्रियों का नियंत्रक (ब्रह्माणि) उत्तम सुसंस्कृत (राततमा) देने के योग्य।

व्याख्या :-

परमात्मा प्रशंसा के लायक क्यों है?

हम प्रशंसाएँ कैसे अर्जित कर सकते हैं?

इन्द्र, सर्वोच्च नियंत्रक, परमात्मा, हमारी तरफ से महिमागान से भरी प्रशंसाएँ प्राप्त करने योग्य है। उसके असीम महान् लक्षण हैं, क्योंकि वह अपने कार्यों को मजबूत और बढ़ी हुई शक्तियों के साथ तेज गति से सम्पन्न करता है और उसके मार्ग में कोई बाधा नहीं होती। हम उसे अपनी प्रशंसाएँ प्रस्तुत करते हैं, क्योंकि हमें उससे संतुष्टि जनक भोजन और सम्पदा प्राप्त होती है। वह हमें उत्तम सुसंस्कृत भोजन तथा सम्पदा देता है।

इसी प्रकार, एक इन्द्र पुरुष, इन्द्रियों का नियंत्रक, भी हर व्यक्ति से महिमायुक्त असीम प्रशंसाएँ प्राप्त करने का अधिकारी है। वह अपना कार्य बलशाली और बढ़ी हुई शक्तियों के साथ तीव्र गति से करता है। उसके मार्ग पर कोई बाधा नहीं होती। वह प्रशंसाओं को संतुष्टि जनक भोजन और सम्पदा की तरह प्राप्त करता है। वह सम्पदा को अन्य लोगों में बांटता है।

जीवन में सार्थकता :-

परमात्मा की प्रशंसाओं की तुलना संतुष्टि जनक भोजन और सम्पदा के साथ क्यों की गई है?

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

परमात्मा सर्वोच्च इन्द्र है। अपनी इन्द्रियों पर पूरा नियंत्रण करके एक सूत्रीय कार्यक्रम की तरह हम भी इन्द्र बन सकते हैं। हमें भी अपार शक्तियाँ और बुद्धि प्राप्त हो सकती हैं जिसके परिणामस्वरूप चारों तरफ से हमें प्रशंसाएँ, महिमा और सम्पदाएँ प्राप्त हों।

भोजन और सम्पदा की तरह परमात्मा की प्रशंसा करना हमारे अपने लिए ही उत्थान का माध्यम बन सकता है। इससे हमें मानसिक और आध्यात्मिक बल मिलता है। भोजन और सम्पदा की तरह परमात्मा की प्रशंसा करने की आदत नियमित बनाये रखनी चाहिए। जिस प्रकार एक सम्पन्न व्यक्ति भौतिक सम्पदा में आनन्द महसूस करता है, एक साधक अपनी आत्मा की सम्पदा में भी उसी प्रकार का आनन्द महसूस करता है। वह विषम परिस्थितियों में भी परमात्मा के प्रति प्रेम भाव से समर्पित रहता है। परमात्मा की प्रशंसा करना और उससे जुड़कर रहना। उसे भौतिक सम्पदा से भी अधिक संतोष प्रदान करता है।

ऋग्वेद मन्त्र 1.61.2

Rigveda 1.61.2

अस्मा इदु प्रयइव प्र यंसि भराम्याङ्गूषं बाधे सुवृक्ति ।

इन्द्राय हृदा मनसा मनीषा प्रत्नाय पत्ये धियो मर्जयन्त ॥ २ ॥

(अस्मै इत् उ) निश्चय से यह उसके लिए है (परमात्मा के लिए) (प्रयः) संतुष्टि देने वाला भोजन और सम्पदा (इव) जैसे कि (प्रयंसि) स्वयं को देता है (भरामि) धारण करना (आंड़गूषम) परमात्मा की महिमाओं का गान (बाधे) शत्रुओं को रोकने योग्य (सुवृक्ति) उत्तम लक्षण पैदा करना (इन्द्राय) एक इन्द्र के लिए (हृदा) हृदय से (मनसा) मन से (मनीषा) बुद्धि से (प्रत्नाय) प्राचीन है, सनातन छे (पत्ये) संरक्षक (धियः) बुद्धि तथा कार्य (मर्जयन्त) शुद्ध करता है।

व्याख्या :-

हम परमात्मा की महिमा का गान क्यों करते हैं?

हमारा प्राचीन संरक्षक कौन है?

हमें शारीरिक और मानसिक रूप से कौन शुद्ध करता है?

आपको निश्चित रूप से स्वयं को ही परमात्मा के प्रति समर्पित कर देना चाहिए, जिस प्रकार आप संतोषजनक भोजन और सम्पदा स्वीकार करते हो और ग्रहण करते हो। आपको परमात्मा का महिमागान करके उसे धारण करना चाहिए, क्योंकि ये शत्रुओं और बुराईयों को रोकने में सक्षम है तथा हमारे अन्दर उत्तम आदतें और लक्षण पैदा करने में सक्षम हैं।

इसीलिए मननशील व्यक्ति सर्वोच्च इन्द्र की अनुभूति के लिए अपने हृदय, मरितष्म और बुद्धि से प्रयास करते हैं, जो कि हमारा प्राचीन संरक्षक है और हमारी बुद्धियों तथा कार्यों को शुद्ध करता है।

जीवन में सार्थकता :-

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

भगवान के साथ हमारा सम्बन्ध बार-बार भोजन करने के समान किस प्रकार है?

हम बार-बार भोजन स्वीकार करते हैं और ग्रहण करते हैं, यह हमारी शारीरिक माँग है। इससे हमारा शरीर संरक्षित होता है। यह हमारे विकास में सहायक है। यह हमें बल देता है।

इसी प्रकार हमें स्वयं को परमात्मा के प्रति समर्पित कर देना चाहिए, अपने जीवन में परमात्मा की उपस्थिति के प्रति सचेत रहना चाहिए और हमारे भीतर उस मूल शक्ति के साथ प्रेम पूर्ण सम्बन्ध के प्रति भी सचेत रहना चाहिए। हमें इस उच्च स्तरीय चेतना में प्रतिक्षण बार-बार जीना चाहिए, क्योंकि परमात्मा के साथ हमारे इस चेतन रिश्ते से निम्न लाभ होंगे :—

1. मनसिक शुद्धि प्राप्त होगी।
2. बुराईयों और शत्रुओं के विरुद्ध हमें स्थाई संरक्षण मिलेगा।
3. हमारे अन्दर उत्तम आदतें और लक्षण पैदा होंगे।

शूक्ति :-

(इन्द्राय हृदा मनसा मनीषा) मननशील व्यक्ति सर्वोच्च इन्द्र की अनुभूति के लिए अपने हृदय, मस्तिष्क और बुद्धि से प्रयास करते हैं।

(प्रत्ना पत्ये धियः मर्जयन्त) परमात्मा हमारा प्राचीन संरक्षक है और हमारी बुद्धियों तथा कार्यों को शुद्ध करता है।

ऋग्वेद मन्त्र 1.61.3

Rigveda 1.61.3

अस्मा इदु त्यमुपमं स्वर्षा भराम्याङ्गूषमास्येन ।
मंहिष्ठमच्छोक्तिभिर्मतीनां सुवृक्तिभिः सूरिं वावृधध्यै ॥ ३ ॥

(अस्मै इत् उ) निश्चय से यह उसके लिए है (परमात्मा के लिए) (त्यम) उस (उपमम) निकटता से उसका अनुसरण करने वाले (स्वर्षमि) प्रसन्नता की वर्षा करने वाले (भरामि) धारण करते हैं (आंङ्गूषम) परमात्मा की महिमा का गान करना (आस्येन) मुख से (मंहिष्ठम) अत्यन्त महान् (अच्छोक्तिभिः) श्रेष्ठ वाणियों के साथ (मतीनाम) सम्मानित और उदार लोगों का (सुवृक्तिभिः) बुराईयों का त्याग करके उत्तम लक्षणों का अनुसरण करने वाले (सूरिम) महान् ज्ञान (वावृधध्यै) प्रगति के लिए, बढ़ाने के लिए।

व्याख्या :-

परमात्मा की अनुभूति कैसे करें?

परमात्मा की अनुभूति क्यों करें?

कौन परमात्मा की महिमागान करता है और उसका अनुसरण करता है?

जो लोग अपनी उन्नति, अपनी वृद्धि के इच्छुक होते हैं वे परमात्मा का अनुसरण करते हुए बड़े निकट उसकी अनुभूति प्राप्त करते हैं। क्योंकि वह प्रसन्नता की वर्षा करने वाला है। ऐसे लोग अपने मुख

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

से परमात्मा की महिमा का गान करते हैं और उसे धारण भी करते हैं। सम्मानजनक और उदार लोगों की श्रेष्ठ वाणियों के साथ परमात्मा महान् रूप में स्थापित होता है। ऐसे श्रेष्ठ वक्ता महान् ज्ञान वाले होते हैं और वे बुराईयों का त्याग करके उत्तम लक्षणों का अनुसरण करते हैं।

जीवन में सार्थकता :-

प्रसन्नता की मूल वर्षा करने वाला कौन है?

अपने जीवन में किसी भी महान् व्यक्तित्व का अनुसरण कैसे करें?

परमात्मा की महिमागान का उद्देश्य उसका आत्मा में अनुसरण करना है। एक बार जब हम उसे अपनी आत्मा में अनुभव कर लेते हैं तो हमें महसूस होता है कि हर प्रकार की प्रसन्नता की मूल वर्षा करने वाला अकेला वही है। हमें अपने जीवन में जो कुछ भी भौतिक वस्तुओं या विचारों का आनन्द प्राप्त करते हैं, उन सबका स्रोत वही है। अतः परमात्मा का महिमागान करने के बाद उसे अपने हृदय में तथा मन में धारण करना चाहिए जिससे जीवन में उसका अनुसरण कर सकें। परमात्मा का निकटता के साथ अनुसरण करने का अर्थ है उसकी महिमाओं का गान करना, उन्हें धारण करना और उनका अनुसरण करना।

यदि आप जीवन में किसी भी महान् व्यक्ति का अनुसरण करना चाहते हों तो उसका महिमागान करो, अपने मन और हृदय में इन महिमाओं को धारण करो और जीवन में उनका अनुसरण करो। उच्च स्तर की वह ऊर्जा, जिसकी आप प्रशंसा करते हो और जिसका महिमागान करते हों, बदले में आपको भी ऊर्जान्वित कर देती है।

सूक्ति :-

(अच्छोक्तिभिः मतीनाम् सुवृक्तिभि सूरिम वावृधध्यै) सम्मानजनक और उदार लोगों की श्रेष्ठ वाणियों के साथ परमात्मा महान् रूप में स्थापित होता है। ऐसे श्रेष्ठ वक्ता महान् ज्ञान वाले होते हैं और वे बुराईयों का त्याग करके उत्तम लक्षणों का अनुसरण करते हैं।

ऋग्वेद मन्त्र 1.61.4

Rigveda 1.61.4

अस्मा इदु स्तोमं सं हिनोमि रथं न तष्ट्रेव तत्सिनाय।

गिरश्च गिर्वाहसे सुवृक्तीन्द्राय विश्वमिन्वं मेधिराय ॥ 4 ॥

(अस्मै इत् उ) निश्चय से यह उसके लिए है (परमात्मा के लिए) (स्तोमम्) परमात्मा की महिमाएं (सम् हिनोमि) समान रूप से फैले हुए और बढ़े हुए (रथम्) रथ (न) जैसे (तष्ट्रेव) रथ के निर्माता (तत्सिनाय) रथ के स्वामी के लिए (गिरः) वैदिक विवेक की वाणियाँ (च) और (गिर्वाहसे) वैदिक विवेक की वाणियाँ को धारण करने वाले (सुवृक्ति) बुराईयों का त्याग करके उत्तम लक्षण (इन्द्राय) सर्वोच्च इन्द्र के लिए (विश्वमिन्वम्) सर्वत्र व्यापक आहुतियाँ, ज्ञान (मेधिराय) ज्ञान के स्रोत की अनुभूति।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

व्याख्या :-

रथ का निर्माता किसके लिए रथ का निर्माण करता है?

हमें अपना जीवन किसके लिए बनाना चाहिए?

मैं परमात्मा की महिमाओं को प्राप्त करता हूँ और धारण करता हूँ निश्चित रूप से उसकी अनुभूति के लिए और उन महिमाओं को समान रूप से फैलाने के लिए और उनके संवर्द्धन के लिए जिस प्रकार एक रथ का निर्माण करने वाला उस रथ को उसके स्वामी के लिए समर्पित कर देता है। वैदिक विवेक की वाणियाँ सर्वोच्च इन्द्र के लिए हैं जिससे उन वाणियों को धारण करने वाले बुराईयों का त्याग करके उत्तम लक्षण पैदा कर सकें और उन्हें धारण कर सकें। हमारी आहुतियाँ और ज्ञान सर्वत्र व्याप्त हो जाता है और हमें उस ज्ञान और आहुतियों के स्रोत की अनुभूति प्राप्त करने में सहायक होता है।

जीवन में सार्थकता :-

'पाओ और फैलाओ' से क्या अभिप्राय है?

वैदिक विवेक का अनुसरण न करने की क्या हानियाँ हैं?

हमें अपना यह शरीर रथ अर्थात् अपना जीवन किस प्रकार से तैयार और बनाकर रखना चाहिए जो इसके स्वामी को सृष्टि चलाने में सहायता कर सके। हमें अपने ज्ञान और आहुतियाँ सबके कल्याण के लिए फैला देनी चाहिए। वैदिक विवेक का यही सार है। 'इसे पाओ और इसे फैलाओ', चाहे वह भौतिक हो या मानसिक। इस प्रकार हम इस सृष्टि का उपयोग समुचित प्रकार से कर पायेंगे और इसके निर्माता की अनुभूति प्राप्त कर सकेंगे।

पदार्थों और ज्ञान को केवल स्वार्थ के लिए प्रयोग करना, अपने जीवन पर या अपने परिवार पर या एक वर्ग पर केन्द्रित रहना विवादों और युद्धों को जन्म देता है। मनुष्यों के बीच सद्भाव तथा मनुष्यों और प्रकृति के बीच सद्भाव असंतुलित हो जायेगा। चारों तरफ सद्भाव बिगड़ने पर मानसिक असंतुलन, प्रकृति का असंतुलन और संक्षिप्त में कलियुग का वर्तमान दृश्य पैदा होता है। अतः कलियुग की समस्याओं का एक मात्र समाधान है कि हम वैदिक विवेक का अनुसरण करें - 'पाना और फैलाना।'

सूक्ति :-

(विश्वमिन्वम् मेधिराय) हमारी आहुतियाँ और ज्ञान सर्वत्र व्याप्त हो जाता है और हमें उस ज्ञान और आहुतियों के स्रोत की अनुभूति प्राप्त करने में सहायक होता है।

ऋग्वेद मन्त्र 1.61.5

Rigveda 1.61.5

अस्मा इदु सप्तिमिव श्रवस्येन्द्रायार्कं जुह्वा॒३ समंजे ।

वीरं दानौकसं वन्दध्ये पुरां गूर्तश्रवसं दर्माणम् ॥ ५ ॥

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

(अस्मै इत् उ) निश्चय से यह उसके लिए है (परमात्मा के लिए) (सप्तिम इव) अश्वों की तरह (बल और गति वाले) (श्रवस्या) महान् ज्ञान प्राप्त करने के लिए (इन्द्राय) सर्वोच्च नियंत्रक के लिए (अर्कम) महिमागान करने वाली वाणी (जुहवा) अपनी जिहवा के साथ (समंजे) संयुक्त करना (वीरम) बहादुर (दानौकसम) दान का घर (वन्दध्यै) उसकी पूजा के लिए (पुराम) शहरों के, किलों के (गूर्तश्रवसम) गहरे ज्ञान वाले (दर्माणम्) विनाश करते हैं।

व्याख्या :-

मुझे अपनी वाणी की शक्ति का प्रयोग कैसे करना चाहिए?

मुझे परमात्मा का महिमागान किसलिए करना चाहिए?

सर्वोच्च नियंत्रक परमात्मा की अनुभूति प्राप्त करने के लिए और महान् ज्ञान प्राप्त करने के लिए निश्चित रूप से अपनी जिहवा से मैं महिमामण्डन की वाणियाँ जोड़ देता हूँ जैसे एक अश्व (बल और गति धारण करने वाला) रथ के साथ जोड़ा जाता है। मैं ऐसा उसकी पूजा के लिए करता हूँ जो अत्यन्त महान् है और दान का भण्डारगृह है। वह सुनने लायक गहरा ज्ञान है और बुराईयों के किले और नगरों को नष्ट करने में सक्षम है।

जीवन में सार्थकता :-

मानव जीवन का क्या उद्देश्य है?

हमारा जीवन किस प्रकार सर्वोच्च चेतना का प्रतिनिधित्व कर सकता है?

मानव जीवन का सर्वोच्च उद्देश्य परमात्मा की सर्वोच्चता की अनुभूति प्राप्त करना है और उसके साथ अपने व्यक्तिगत जीवन की एकता की अनुभूति प्राप्त करना है। हमें अपनी वाणी शक्ति का प्रयोग परमात्मा की महिमा के गान के लिए ही करना चाहिए। हमारे सभी कार्य अन्य लोगों के कल्याण के लिए ही समर्पित होने चाहिए। जो इस सृष्टि का मूल उद्देश्य है। परमात्मा के साथ सम्बन्ध की गहरी और लगातार चेतना ही हमें वह साधन और ज्ञान उपलब्ध करा सकती है। जिनका उपयोग दिव्य उद्देश्यों के लिए करने हेतु हम प्रेरित हों और जो समाज के द्वारा सुने जाने योग्य हों। हमारा जीवन सर्वोच्च चेतना का प्रतिनिधित्व करे।

ऋग्वेद मन्त्र 1.61.6

Rigveda 1.61.6

अस्मा इदु त्वष्टा तक्षद्वजं स्वपस्तमं स्वर्यै रणाय ।

वृत्रस्य चिद्विद्येन मर्म तुजन्नीशानस्तुजता कियेधा: ॥ 6 ॥

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

(अस्मै इत् उ) निश्चय से यह उसके लिए है (परमात्मा के लिए) (त्वष्टा) निर्माता (परमात्मा) (तक्षत) निर्माण करता है (वज्रम) वज्र (स्वप्स्तमम) उत्तम, श्रेष्ठ और पवित्र कार्यों के लिए (स्वर्यम) शांति और प्रसन्नता देने के लिए (रणाय) युद्धों, संघर्षों और कठिन समय के लिए (वृत्रस्य) बादल, आवरण (मन के) (चित) स्थान, स्थल (विदत) प्राप्त किये (येन) जिसके द्वारा (मर्म) केन्द्र (तुजन्न) संहार करना (ईशानः) समृद्धि, बल धारण करने वाला (तुजता) हानि पहुँचाने वाला (कियेधाः) शत्रुओं की शक्तियों को नियंत्रित करता है, रोकता है।

व्याख्या :-

हमारे उत्तम कार्यों, शांति और प्रसन्नता के लिए वज्र कौन बनाता है?

हमारा जीवन, हमारे कार्य और हमारी महिमाएँ निश्चित रूप से उस निर्माता के लिए हैं जिसने सब कुछ बनाया है और जो हमारे उत्तम, श्रेष्ठ और शुद्ध कार्यों के लिए वज्र बनाता है और युद्धों में, संघर्षों में और कठिन समय में हमें शांति देता है। सर्वोच्च सत्ता के विषय में गहरी चेतना सर्वोच्च ऊर्जा की किरणों की तरह हमारे मतिष्क के आवरणों के केन्द्र बिन्दु पर प्राप्त होती है। सूर्य की किरणें, बादलों के केन्द्र में पहुँचती हैं। इस प्रकार वह गहरी चेतना बुराईयों को नष्ट कर देती है और शत्रुओं की शक्तियों को भी नियंत्रित कर लेती है। ऐसा व्यक्ति सम्पन्नता और शक्ति को धारण करता है।

जीवन में सार्थकता :-

परमात्मा की पूजा का वास्तविक लाभ क्या है?

उच्च चेतना का जीवन क्या है?

परमात्मा की महिमा के लिए समर्पित जीवन का सरल सा अर्थ है कि अपने अन्दर की मूल शक्ति को महिमा मंडित करते हुए जीना। परमात्मा की पूजा आपके जीवन से बाहर कुछ भी नहीं है, परन्तु इसका सम्बन्ध केवल अपने अन्दर की मूल आध्यात्मिक शक्ति को बढ़ाना है। इस प्रकार बढ़ी हुई आध्यात्मिक शक्ति के साथ आप निश्चित रूप से अपनी सभी बुराईयों तथा बाहरी शत्रुओं का भी नाश करके सुख और शांति प्राप्त कर पाओगे। इस प्रकार, परमात्मा की पूजा के नाम पर, आप केवल मात्र अपनी आध्यात्मिक कलाओं को ही उन्नत करते हो। इसी को उच्च चेतना का जीवन कहते हैं। जो निम्न स्तर के पाश्चिक वृत्तियों से मुक्त होता है।

ऋग्वेद मन्त्र 1.61.7

Rigveda 1.61.7

अस्यदु मातुः सवनेषु सद्यो महः पितुं पपिवांचार्वन्ना ।

मुषायद्विष्णुः पचतं सहीयान्विष्यद्वराहं तिरो अद्रि मस्ता ॥ 7 ॥

(अस्य इत् उ) निश्चय से यह उसके लिए है (परमात्मा के लिए) (मातुः) निर्माता के लिए (सवनेषु) निर्माण करने के लिए (उसके प्रकाश को गहरे हृदय में धारण करने के लिए) (सद्यः) अतिशीघ्र (महः)

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



महान् (पितुम) संरक्षक (पपिवान) खाना और पीना (चारू) सुन्दर, शुद्ध (अन्ना) अन्नों से (मुषायत) निचोड़ निकालना (विष्णु) व्यापक आत्मा (शरीर में) (पचतम) परिपक्व (सहीयान) सहन करता है और पराजित करता है (विध्यत) भेदन करता है, विनाश करता है (वराहम) बादल, वृत्तियाँ (मन की) (तिरः) बहुत दूर (अद्रिम) विशाल पर्वत (अज्ञानता के) (अस्ता) फेंकता है।

व्याख्या :-

हमारी आत्मा किस प्रकार मन की वृत्तियों का नाश करने के योग्य हो सकती है?

यह निश्चित रूप से निर्माता का ही दायित्व है कि वह स्वयं को और अपने प्रकाश को हमारे गहरे हृदय में धारण करे। एक महान् रक्षक साधक बहुत शीघ्र सुन्दर और शुद्ध रूप में भोजन के सार तत्त्व को खाता और पीता है। सर्वोच्च आत्मा, जो हमारे शरीर में व्याप्त है, भोजन के उस सार और परिपक्व तत्वों की सहायता से मन की वृत्तियों तथा बादलों को सहन करता है और उन्हें भेदकर, उनका नाश करके उन्हें पराजित कर देता है। इस प्रकार अन्ततः वह अज्ञानता और बादलों के बड़े-बड़े पर्वतों को दूर फेंक देता है।

जीवन में सार्थकता :-

आध्यात्मिक मार्ग पर शुद्ध भोजन का क्या महत्त्व है?

हमें अपने गहरे हृदय में उस निर्माता के प्रकाश और उसके प्रेम को धारण करके एक चेतना का विकास कर लेना चाहिए।

उच्च चेतना के इस पथ का प्रारम्भ करना अत्यन्त सरल है। साधक को केवल पवित्र भोजन और पवित्र पेय ही ग्रहण करने चाहिए। पवित्र भोजन का सार परिपक्व बहुमूल्य तरल अर्थात् वीर्य के रूप में होता है। यह हमारे शरीर और मन की मूल शक्ति है जो हमें उच्च चेतना के जीवन में सहायता करती है। यही हमारे मन की वृत्तियाँ का नाश करती है जो परमात्मा के दिव्य प्रकाश को चारों तरफ से धेर लेती हैं। एक बार यह वृत्तियाँ नष्ट हो जायें तो अज्ञानता भी समाप्त हो जायेंगी और परमात्मा के प्रकाश का उदय होगा जो हमें मन पर शासन करने के लिए मार्गदर्शन प्रदान करेगा। इस प्रकार उत्तम स्वास्थ्य और आध्यात्मिक प्रगति दोनों ही पवित्र भोजन पर निर्भर करती हैं।

ऋग्वेद मन्त्र 1.61.8

Rigveda 1.61.8

अस्मा इदु ग्राण्यं च देवपत्नीरिन्द्रायार्कमहिहत्य ऊवुः।

परि द्यावापृथिवी जभ्र उर्वा नास्य ते महिमानं परिष्ठः ॥ 8 ॥

(अस्मै इत् उ) निश्चय से यह उसके लिए है (परमात्मा के लिए) (ग्नाः चित) वैदिक वाणियाँ (देवपत्नीः) दिव्य लक्षणों का रक्षक (इन्द्राय) सर्वोच्च इन्द्र के लिए (अर्कम) दिव्यता का स्रोत (अहिहत्ये) शत्रुओं

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

को नष्ट करने के लिए (ऊँचुः) विस्तृत (परि – जब्रे से पूर्व लगाकर) (द्यावापृथिवी) अन्तरिक्ष और पृथ्वी (जब्रे – परि जब्रे) जीतता है, सब तरफ से नियंत्रण करता है (उर्वी) विशाल
(न) नहीं (अस्य) यह (ते) वे (महिमानम्) महानता और महिमा (परिष्ठः) सब दिशाओं में व्यापक।

व्याख्या :-

वैदिक वाणियों के क्या लाभ हैं?

यह निश्चित रूप से सर्वोच्च इन्द्र का ही दायित्व है जो शत्रुओं का नाश करने में सक्षम हैं और जिसकी वैदिक वाणियाँ दिव्य लक्षणों की रक्षक हैं। यह वैदिक वाणियाँ उसकी दिव्यता के स्रोत को विस्तृत कर देती हैं जो चारों तरफ से विशाल अन्तरिक्ष और पृथ्वी को भी जीतकर नियंत्रित करने में सक्षम है। यह विशाल शरीर भी इतने सक्षम नहीं हैं कि वे परमात्मा की महानता और शान को ढक सकें।

जीवन में सार्थकता :-

क्या कोई दिव्य व्यक्ति या शक्ति परमात्मा के साथ प्रतिस्पर्धा कर सकता है?

दिव्यताओं को किस प्रकार प्राप्त करें और उन्हें बनाकर रखें?

वैदिक वाणियाँ दिव्य वैदिक विवेक को उत्पन्न करती हैं जो सभी दिव्य शरीरों और दिव्य लोगों के दिव्य लक्षणों की रक्षा करती है। इस प्रकार उनकी दिव्यता अपने को दिव्यता के स्रोत तक अर्थात् परमात्मा तक विस्तारित करके शत्रुओं का नाश करने के योग्य होती है। वे चारों तरफ से परमात्मा के द्वारा ही नियंत्रित होती हैं। परन्तु किसी भी अवस्था में कोई भी व्यक्ति या आकाशीय शरीर परमात्मा को, उसकी महानता और उसकी शान को व्याप्त करने अर्थात् ढंकने में सक्षम नहीं है।

परमात्मा ने सूर्य और भूमि जैसे अनेकों आकाशीय शरीरों को अपार दिव्य शक्तियाँ प्रदान की हैं। क्योंकि वे शरीर अपनी दिव्यता के सर्वोच्च स्रोत के विरुद्ध न तो कभी अपना अहंकार व्यक्त करते हैं और न ही उनकी कोई व्यक्तिगत इच्छा होती है। परन्तु वे शान्त रहकर सबके कल्याण के लिए कार्य करते हैं। परन्तु कुछ दिव्य शक्तियाँ जब मनुष्यों को दी जाती हैं तो वे अपना अहंकार व्यक्त कर देते हैं और अपनी इच्छाओं को शामिल कर लेते हैं। वे यज्ञ के मार्ग अर्थात् केवल दूसरों के लिए जीने वाले मार्ग से हट जाते हैं। दिव्यताओं को प्राप्त करने और उन्हें बनाये रखने के लिए यज्ञ की विवेकशीलता ही एक मात्र मार्ग है।

अतः जब एक इन्द्र पुरुष को कुछ दिव्य लक्षण या दिव्य शक्तियाँ प्राप्त हों तो उसे किसी भी रूप में न तो परमात्मा से प्रतिस्पर्धा का प्रयास करना चाहिए और न ही परमात्मा को व्याप्त करने का प्रयास करना चाहिए। परन्तु कुछ लोगों को अहंकार यह दावा करने के लिए या दिखावा करने के लिए तैयार कर देता है कि वे परमात्मा के समकक्ष हैं। उनके अनुयायियों को भी उनकी तुलना परमात्मा से नहीं करनी चाहिए।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

ऋग्वेद मन्त्र 1.61.9

Rigveda 1.61.9

अस्यदेव प्रे रिरिचे महित्वं दिवस्पृथिव्या: पर्यन्तरिक्षात्।
स्वराळन्द्रो दम आ विश्वगूर्तः स्वरिमत्रो ववक्षे रणाय ॥ ९ ॥

(अस्य इत् एव) केवल इसका (परमात्मा का) (प्ररिरिचे) विस्तृत है (महित्वम्) महिमा और महानता (दिवः) दिव्यताओं से (पृथिव्याः) पृथ्वी से (परि अन्तरिक्षात्) अन्तरिक्ष से भी (स्वराट) स्व-तरंगित (इन्द्रः) सर्वोच्च नियंत्रक (दमे) दमन करना (आ – ववक्षे से पूर्व लगाकर) (विश्वगूर्तः) सदैव अपने कर्तव्यों का पालन करने के लिए प्रोत्साहित (स्वरिः) शत्रुओं पर उत्तम हमलों के साथ (अमत्रः) असीमित ज्ञान और गति के साथ (ववक्षे – आ ववक्षे) शक्तिशाली (रणाय) युद्धों के लिए।

व्याख्या :-

परमात्मा किस प्रकार सर्वोच्च है?

परमात्मा की महानता और उसकी शान दिव्यताओं से भी विस्तृत है और धरती तथा अन्तरिक्ष से भी विस्तृत है। इसके निम्न मुख्य कारण हैं :-

(क) सर्वोच्च नियंत्रक स्व-प्रकाशित है।

(ख) वह सभी बुराईयों और शत्रुओं को कुचलने में सक्षम है।

(ग) वह सदैव अपने दायित्वों का पालन करने के लिए प्रोत्साहित रहता है।

(घ) वह अपने असीमित ज्ञान और गति के साथ शत्रुओं पर उत्तम हमले सुनिश्चित करता है।

(ङ) वह सभी युद्धों के लिए शक्तिशाली है।

जीवन में सार्थकता :-

हम समाज में सर्वोच्चता कैसे प्राप्त कर सकते हैं?

यदि हम इन्द्रियों के नियंत्रक अर्थात् इन्द्र बनकर परमात्मा के लक्षणों का अनुसरण करें तो हम भी निम्न लक्षण अपने अन्दर विकसित कर सकते हैं :-

1. हमारा शुद्ध प्रकाश दिव्य तरंगों को प्रसारित करने लगेगा।

2. हम बुराईयों को कुचलने के योग्य बन जायेंगे।

3. हम सदैव अपने कर्तव्यों का पालन करने के लिए तत्पर रहेंगे।

4. हम अपने ज्ञान और गति को बढ़ायेंगे जिससे किसी भी कठिन परिस्थिति का निदान किया जा सके।

ऐसे शक्तिशाली दिव्य व्यक्तित्व को समाज में सदैव सर्वोच्च समझा जाता है।

सूक्ति :-

(अस्य इत् एव प्ररिरिचे महित्वम् दिवः पृथिव्याः परि अन्तरिक्षात्) परमात्मा की महानता और उसकी शान दिव्यताओं से भी विस्तृत है और धरती तथा अन्तरिक्ष से भी विस्तृत है।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



ऋग्वेद मन्त्र 1.61.10

Rigveda 1.61.10

अस्येदेव शवसा शुषन्तं वि वृश्चद्वज्ञेण वृत्रमिन्दः ।
गा न ब्राणा अवनीरमुंचदभि श्रवो दावने सचेताः ॥ 10 ॥

(अस्य इत् एव) केवल इसका (परमात्मा का) (शब्दसा) बल के साथ (शुषन्तम्) कमजोर करने वाला (वि वृश्चत) नष्ट करने के लिए काटना (वज्रेण) वज्रों के साथ (वृत्रम्) वृत्तियाँ, इच्छाएं (इन्द्रः) इन्द्रियों का नियंत्रक (गा:) गऊओं को गऊशाला से छुड़ाने वाला (न) जैसे (ब्राणाः) इच्छाओं के आवरण में (अवनीः) मूल शक्तियाँ (अमुंचत) मुक्त करता है (आवरणों से) (अभि) की तरफ ले जाना (श्रवः) सुनने योग्य ज्ञान (दावने) त्याग करने वाले के लिए (सचेताः) चेतन।

व्याख्या :-

हमारे मन की वृत्तियाँ और इच्छाओं को कौन कमजोर कर सकता है?

उच्च ज्ञान की तरफ किसे ले जाया जाता है?

केवल परमात्मा की शक्ति के साथ और इन्द्रियों के नियंत्रक के वज्र के साथ ही हमारे मन की वृत्तियाँ और इच्छाएँ कमजोर होती हैं और अन्ततः नष्ट होने के लिए कट जाती हैं। हमारी मुख्य शक्तियाँ जो इच्छाओं के आवरण से ढंक गई थीं वे उन आवरणों से मुक्त हो जाती हैं जैसे – गाय गौशाला से मुक्त होती है।

जो व्यक्ति पूर्ण त्यागी साधक है और अपने लक्ष्य के प्रति सदैव सचेत रहता है, उसी को उच्च ज्ञान की तरफ ले जाया जाता है जो सुनने के योग्य होता है।

जीवन में सार्थकता :-

एक लक्ष्य की तरफ किस प्रकार प्रगति और प्राप्ति की सफलता हो सकती है?

एक बार जब हम अपना कोई भी लक्ष्य निर्धारित कर लेते हैं और उस लक्ष्य की प्राप्ति की तरफ प्रगति करने लगते हैं तो हमें केवल एक ही सबसे महत्त्वपूर्ण लक्षण अपने अन्दर सुनिश्चित करना चाहिए कि हम अपनी इन्द्रियों को पूरी तरह से अपने नियंत्रण में रखें, अपनी इन्द्रियों को इधर-उधर इच्छाओं के पीछे भागने के लिए अनुमति नहीं देनी चाहिए। एक लक्ष्य का अर्थ है उस लक्ष्य के प्रति पूरी साधना और सदैव उस लक्ष्य के प्रति पूरी तरह सचेत रहना। चेतना का अर्थ है अपने मन और इन्द्रियों की कलाओं को अलग-अलग दिशाओं में जाने से रोककर लगातार हम गहरी जागृत अवस्था में रहें। ऐसी गहरी चेतना के साथ मन की सभी कलाएँ दिव्य हो जाती हैं और सफलता को प्राप्त करने के लिए परमात्मा की दिव्य सहायता को आकर्षित कर लेती है।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

ऋग्वेद मन्त्र 1.61.11

Rigveda 1.61.11

अस्यदु त्वेषसा रन्ति सिन्धवः परि यद्वज्ज्रेण सीमयच्छत्।
ईशानकृद्वाशुषे दशस्यन्तुर्वितये गाधं तुर्वणिः कः ॥ 11 ॥

(अस्य इत् उ) केवल इसका (परमात्मा का) (त्वेषसा) ज्ञान के प्रकाश के साथ, बल और न्याय के साथ (रन्ति) सुविधाजनक महसूस करता है (सिन्धवः) समुद्रों की तरह (ज्ञान के) (परि) सभी दिशाओं में (यत) जब (वज्ज्रेण) वज्रों के साथ (सीम) निश्चित रूप से, शत्रु ताकतें (अच्छत्) नियंत्रण करता है, काबू करता है (ईशान कृत) दिव्य बनाता है (दाशुषे) पूर्ण त्याग करने वाला व्यक्ति (दशस्यन) सबका सहयोग करने वाला (तुर्वितये) सभी शत्रुओं पर विजयी व्यक्ति के लिए (गाधम) उथले पानी पर मजबूती से स्थापित (तुर्वणिः) गति के साथ कार्य करने वाले (कः) करता है, बनाता है।

व्याख्या :-

मन की वृत्तियों पर नियंत्रण करने के बाद क्या होता है?

एक त्यागशील व्यक्ति क्या प्राप्त करता है?

केवल ज्ञान के सर्वोच्च प्रकाश, बल और परमात्मा के न्याय के साथ ही कोई व्यक्ति ज्ञान के समुद्र की तरह सुविधाजनक महसूस करता है। जब वह इन्द्रियों पर नियंत्रण रूपी वज्र के साथ चारों तरफ से (मन की वृत्तियों और इच्छाओं रूपी) शत्रु ताकतों पर नियंत्रण कर लेता है। जो व्यक्ति सबका कल्याण करता है और पूर्ण त्यागशाली होता है, उसे परमात्मा दिव्य बना देते हैं। जो व्यक्ति अपने शत्रुओं पर विजय प्राप्त कर लेता है और अपने कर्तव्यों का पालन तीव्र गति से करता है। परमात्मा उसे उथले पानी पर भी ढूढ़ता के साथ स्थापित कर देते हैं।

जीवन में सार्थकता :-

एक त्यागशील व्यक्ति किस प्रकार दिव्य प्रकृति का बन जाता है?

मन की वृत्तियों पर नियंत्रण करने का परिणाम अहंकार और इच्छाओं का अन्त के रूप में प्राप्त होता है। जीवन की इस अवस्था के साथ कोई भी व्यक्ति निश्चित रूप से सबका भला करने वाला त्यागशील व्यक्तित्व बन जाता है। परमात्मा ऐसे त्यागशील व्यक्ति पर हर प्रकार की दिव्यताओं की वर्षा करते हैं। एक त्यागशील व्यक्ति उस ऋषि या सन्त की तरह होता है जो अपने लिए कुछ नहीं करता केवल दूसरों का ही भला करता है। इसलिए उसका जीवन परमात्मा के निकट हो जाता है और सभी दिव्यताओं को प्रकट करता है।

ऋग्वेद मन्त्र 1.61.12

Rigveda 1.61.12

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



अस्मा इदु प्र भरा तूतुजानो वृत्राय वज्रमीशानः कियेधाः।
गोर्न पर्व वि रदा तिरश्चेष्यन्नर्णस्यपां चरथ्यै ॥ 12 ॥

(अस्मै इत् उ) केवल इसका (परमात्मा का) (प्रभर) पूरी तरह से धारण करता है, भरता है (तूतुजानः) गति से कार्य करने वाला (वृत्राय) बादल (आकाश में), वृत्तियाँ, आवरण (मन के) (वज्रम) वज्र को (ईशानः) सब पर शासन करते हुए (कियेधाः) असंख्य लक्षण और शक्तियाँ धारण करने वाला (गोः) वाणी, गाय, भूमि (इस मन्त्र के मूल विचार के अनुसार गोः का अर्थ वाणी स्वीकार करना ही उचित है, क्योंकि वाणी ही ज्ञान का माध्यम है जिसके द्वारा वृत्तियों का नाश किया जाता है, गोः के अर्थ गाय और पृथ्वी इस मन्त्र में उपयुक्त नहीं है।) (न) जैसे (पर्व) अंग (विरद) काटना, स्पष्ट करना, व्याख्या करना (तिरश्च) छिपी हुई गति (इष्टन) प्राप्त करने की इच्छा करते हुए (अर्णासि) प्रवाहित ज्ञान (अपाम) नदियाँ (चरध्यै) एहसास में।

व्याख्या :-

किसके पास वृत्तियों के नाश का वज्र होता है?

मन की वृत्तियाँ और आवरणों का नाश करने के लिए आप उस वज्र को पूरी तरह से धारण करते हो क्योंकि :-

1. आप तीव्रता से कार्य करते हो।
2. आप सब पर शासन करते हो।
3. आप असंख्य लक्षणों और शक्तियों को धारण करते हो।

जिस प्रकार वाणियों के एक-एक भाग की व्याख्या उनके अन्दर छिपे हुए गतिमान ज्ञान को उन लोगों तक पहुंचाने के लिए की जाती है जो उस ज्ञान को प्राप्त करने की इच्छा करते हैं, जैसे ज्ञान की नदियों और समुद्रों के चरणों में बह रहा हो।

जीवन में सार्थकता :-

अनुभूति के पथ पर गहरे और गुप्त ज्ञान की क्या भूमिका है?

जैसा कि ऋग्वेद 1.61.10 में स्पष्ट किया गया है कि मन की वृत्तियाँ केवल परमात्मा की सहायता से ही नष्ट होती हैं, यह वर्तमान मन्त्र उसके तीन कारण बताता है।

इन्द्रियों के नियंत्रक को उच्च चेतना के स्तर पर जीवन जीते हुए गहरा ज्ञान सुनिश्चित करना होता है। सच्चे दिव्य ज्ञान के अभाव के कारण ही मन की वृत्तियाँ पैदा होती हैं। एक बार जब कोई साधक दिव्य चेतना की अनुभूति प्राप्त कर लेता है तो वह ज्ञान के छिपे हुए प्रकाश की अनुभूति प्राप्त करने की तरफ अग्रसर होता है। इसी प्रकार, इसके विपरीत, ज्ञान के छिपे हुए प्रकाश को जानकर, कोई व्यक्ति वृत्तियों का नाश करने में सफल हो सकता है और इस प्रकार अनुभूति की अवस्था और उच्च चेतना में जीने की कला प्राप्त कर सकता है।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

ऋग्वेद मन्त्र 1.61.13

Rigveda 1.61.13

अस्यदु प्र ब्रूहि पूर्वाणि तुरस्य कर्मणि नव्य उक्थैः।
युधे यदिष्णान आयुधान्यृधायमाणो निरिणाति शत्रून् ॥ 13 ॥

(अस्य इत् उ) केवल इसका (परमात्मा का) (प्र ब्रूहि) अच्छे प्रकार से कहना है (पूर्वाणि) पूर्ण करने के लिए (मानव जीवन) (तुरस्य) गति के साथ कार्य करते हुए (कर्मणि) गतिविधियाँ (नव्यः) नई (उक्थैः) वाणियों के साथ (युधे) युद्धों के लिए, संघर्षों के लिए (यत) जो (इष्णानः) उपलब्ध कराते हुए (आयुधानि) वज्र (युद्धों के लिए) (ऋधायमाणः) नष्ट करने के लिए (निरिणाति) सामना करना (शत्रून्) शत्रु ।

व्याख्या :-

हमारे जीवन को पूर्ण कौन करता है?

परमात्मा के बारे में नई वाणियों के साथ अच्छा बोलना चाहिए जो हमारे जीवन को सभी गतिविधियाँ तीव्रता के साथ पूरी करने के लिए पूर्ण करता है, जो, युद्धों और संघर्षों के लिए सभी वज्र उपलब्ध कराते हुए, सभी शत्रुओं का नाश करने के लिए उनका सामना करता है ।

जीवन में सार्थकता :-

कोई व्यक्ति बुराईयों और कर्मों अर्थात् कर्तव्यों से मुक्त कैसे हो सकता है?

जब एक व्यक्ति परमात्मा की सहायता से मन की वृत्तियों का नाश करने में सफल हो जाता है और अपनी इन्द्रियों पर नियंत्रण कर लेता है, उसे दिव्य चेतना प्राप्त होती है । उस अवस्था में ऐसे व्यक्ति के माध्यम से दिव्यता काम करती है जो उसके जीवन को पूर्ण करती है और उसके कर्म संकलन को समाप्त करती है । परमात्मा उसे हर प्रकार का ज्ञान और ऊर्जा उपलब्ध कराते हैं जिससे वह शत्रु विचारों का सामना कर सके और तुरन्त उन्हें समाप्त कर सके । ऐसा दिव्य जीवन सभी बुराईयों तथा कर्तव्यों से मुक्त हो जाता है ।

ऋग्वेद मन्त्र 1.61.14

Rigveda 1.61.14

अस्यदु भिया गिरयश्च दृढ़हा द्यावा च भूमा जनुषस्तुजेते ।
उपो वेनस्य जोगुवान और्णि सद्यो भुवद्वीर्यो नोधाः ॥ 14 ॥

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

(अस्य इति उ) केवल इसका (परमात्मा का) (भिया) भय के साथ (गिरः) पर्वत (च) और (दृढ़हा) मजबूत, दृढ़ (द्यावा) द्योलोक अर्थात् आकाशीय शरीर (च) और (भूमा) पृथ्वी (जनुषः) मनुष्य तथा सब कुछ जो निर्मित हुआ है (तुजेते) हिलाना, कंपन करना (उप) निकट (वेनस्य) महान् बुद्धि का (जोगुवान) कथाओं का गान (परमात्मा की) (ओणिम) बुराईयों और कष्टों को दूर करने के लिए (सद्यः) अत्यन्त शीघ्र (भुवत) होता है (निकट) (वीर्याय) बल के लिए (नोधाः) परमात्मा की प्रशंसा में वाणियों को धारण करने वाला, एक दिव्य योद्धा।

व्याख्या :-

कौन समूची सुष्टि को डर से कंपित कर सकता है?

सर्वोच्च बुद्धि, परमात्मा के निकट कैसे हो सकते हैं?

केवल परमात्मा के भय से ही बलशाली और दृढ़ पर्वत, आकाशीय शरीर जैसे धरती आदि तथा मनुष्यों सहित सब कुछ जो निर्मित हुआ है, कंपित होने लगता है।

परमात्मा की प्रशंसा में वाणियों को धारण करने वाला व्यक्ति, एक दिव्य योद्धा उस महान् बुद्धि के निकट आ पाता है जिससे वह बल प्राप्त कर सके और क्योंकि वह सभी बुराईयों और कष्टों को अपने से दूर रखता है।

जीवन में सार्थकता :-

कलियुग का अनियंत्रित प्रभाव क्या है?

कलियुग के प्रभाव से मुक्त कैसे रहा जा सकता है?

विशेष रूप से कलियुग के दृश्य को ध्यान में रखकर, जहाँ प्रत्येक मन डर से कांप रहा है, प्रत्येक व्यक्ति किसी एक या अन्य रूप में मन के असंतुलन का सामना कर रहा है, यह मन्त्र उस डर और असंतुलित मन की अवस्था से छुटकारा पाने का मार्ग उपलब्ध कराता है। परमात्मा से प्रेम करते हुए उसके निकट होने का प्रयास करो, उसकी महिमा का गान करो, यज्ञ का वैदिक विवेक विकसित करो, अपनी इन्द्रियों पर पूरा नियंत्रण रखो, अहंकार और इच्छाओं के बिना जीवन जियो, ध्यान—साधना के अभ्यास से उच्च चेतना के स्तर पर जीवन जियो, अपने अन्दर की खोज से परमात्मा की अनुभूति प्राप्त करने का प्रयास करो।

भगवान् श्रीकृष्ण ने ईश्वर भक्ति अर्थात् परमात्मा से प्रेम के एक ही लक्षण को कलियुग के प्रभावों से मुक्त रहने के उपाय के रूप में पाण्डवों को बताया जब वे कलियुग के दृश्यों की सम्भावनाओं को समझा रहे थे।

ऋग्वेद मन्त्र 1.61.15

Rigveda 1.61.15

अस्मा इदु त्यदनु दाय्येषामेको यद्वन्ने भूरेरीशानः।

प्रैतशं सूर्यं पस्पृधानं सौवश्वये सुष्विमावदिन्नः ॥ 15 ॥

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



(अस्मै इत् उ) केवल इसका (परमात्मा का) (त्यत) वह (कार्य) (अनु दायी) दिया गया है (एषाम) उसके लिए (ऋग्वेद 1.61.14 के अनुसार नोधाः के लिए) (एकः) केवल एक (परमात्मा) (यत) जो (वन्ने) जीतता है (भूरेः) वह सब जो हमारा पालन करता है (ईशानः) स्वामी है (प्र – आवत् से पूर्व लगाकर) (एतशम) बुराईयों को कमजोर करने के लिए हमें सक्रिय और ऊर्जावान् बनाता है (सूर्य पस्पृधानम) सूर्य के साथ स्पर्धा करता है (सोवैश्व्ये) अश्वों के समान उत्तम इन्द्रियाँ धारण करने वाला (सुष्विम) शुभ गुण, ज्ञान पैदा करते हुए (आवत् – प्र आवत) पूरी तरह से रक्षा करता है (इन्द्रः) सर्वोच्च नियंत्रक, परमात्मा।

व्याख्या :-

हमें अपने कार्य परमात्मा के प्रति समर्पित क्यों करने चाहिए?

ऋग्वेद 1.61.14 के अनुसार एक दिव्य योद्धा, नोधाः, ही परमात्मा की निकटता प्राप्त करने और उच्च चेतना का जीवन जीने में सक्षम हो सकता है।

उसके सभी कार्य परमात्मा के पास जाते हैं जो अकेली सर्वोच्च सत्ता है, हमारा पालन पोषण करने के लिए आवश्यक सभी वस्तुओं का स्वामी बनने के लिए।

जब सभी कार्य परमात्मा को समर्पित हो जाते हैं तो साधक को निम्न लक्षण प्राप्त होते हैं :-

1. वह बुराईयों को कमजोर करने के लिए सक्रिय और ऊर्जावान् हो जाता है।
2. अश्वों की तरह अपनी इन्द्रियों के साथ वह सूर्य से प्रतिस्पर्धा करता है।
3. वह शुभ गुणों और ज्ञान को उत्तम करता है।
4. सर्वोच्च इन्द्र, परमात्मा, ऐसे व्यक्ति का संरक्षण करते हैं।

जीवन में सार्थकता :-

कर्मफल त्याग करने के सिद्धान्त का क्या आधार है?

वास्तव में कर्मफल का सिद्धान्त इस दिव्य सृष्टि का एक सदा सत्य रहने वाला लक्षण है। आपको अपने कार्यों के फलों को प्राप्त करने की इच्छा व्यक्त करने की कोई आवश्यकता नहीं है। आप निश्चित रूप से वह प्राप्त करोगे जो आपके कार्यों का फल निर्धारित है। जब आप स्वयं को कार्यों के फल से पृथक कर लेते हो तो आप अपने कार्यों पर ध्यान लगाने में और अधिक सक्षम बन जाते हो तथा इसके अतिरिक्त भी आपको कई लाभ होते हैं।

इस प्रकार अपने कार्यों को परमात्मा के प्रति समर्पित करके आप उससे जुड़ने के लिए एक महान् और आध्यात्मिकता से दिव्य विज्ञान के साथ जुड़ जाते हो। आपको इससे दोगुना लाभ होता है – भौतिक रूप में और आध्यात्मिक रूप में।

अपनी आध्यात्मिक प्रगति और उच्च चेतना को जारी रखते हुए, एक समय ऐसा आता है जब वह अनुभूति प्राप्त आत्मा अपने कार्यों के सुविधाजनक फलों को भोगने से भी इन्कार कर देता है। क्योंकि उसका यह दृढ़ विश्वास हो जाता है कि सभी कार्य वास्तव में परमात्मा के द्वारा ही सम्पन्न किये गये हैं, उसके द्वारा नहीं।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

ऋग्वेद मन्त्र 1.61.16

Rigveda 1.61.16

एवा ते हारियोजना सुवृत्तीन्द्र ब्रह्माणि गोतमासो अक्रन्।
ऐषु विश्वपेशसं धियं धाः प्रातर्मक्षू धियावसुर्जगम्यात् ॥ 16 ॥

(एव ते) केवल आपके लिए (परमात्मा के लिए) (हारियोजन) यह जानना कि जीवन यात्रा को कैसे सफलता पूर्वक पूर्ण करना है और अपनी इन्द्रियों को उस रथ के साथ जोड़कर हमें योग्य बनाना। (सुवृत्ती) जिसने अपनी बुराईयों को समाप्त कर दिया हो और कर्मों में उत्तम बन गया हो (इन्द्र) सर्वोच्च नियंत्रक, परमात्मा (ब्रह्माणि) दिव्य वाणियाँ (गोतमासः) अपनी उत्तम इन्द्रियों और बुद्धि के साथ (अक्रन्) करता है, बनाता है (ऐषु) इनमें (विश्वपेशसम) समूचे विश्व को सुन्दर बनाते हुए (धियम्) दिव्य बुद्धि (आधाः) स्थापित (प्रातःकाल में अतिशीघ्र (धियावसुः) दिव्य ज्ञान में जीने वाला (जगम्यात्) प्राप्त करे ॥

व्याख्या :-

जीवन की यात्रा को सफलता पूर्वक पूरा करने के लिए कौन हमें सक्षम बना सकता है?

परमात्मा की प्रशंसा में कौन दिव्य वाणियों का निर्माण करता है?

सर्वोच्च नियंत्रक, परमात्मा! आप जानते हो कि इस जीवन की यात्रा को किस प्रकार सफलता पूर्वक पूरा करना है और हमारे शरीर रथ के साथ समुचित प्रकार से हमारी इन्द्रियों को जोड़कर आप ही हमें इसके लिए सक्षम बनाते हो। जिस व्यक्ति ने बुराईयों का त्याग कर दिया हो और कार्यों में उत्तम बन चुका हो, अपनी उत्तम इन्द्रियों और बुद्धि के बल पर जो आपकी प्रशंसा में दिव्य वाणियाँ बोलता हो, ऐसे लोगों में, सारे संसार को सुन्दर बनाकर, आप दिव्य बुद्धि स्थापित करते हो। प्रातःकाल अतिशीघ्र ऐसे लोगों को बौद्धिक कार्यों तथा दिव्य ज्ञान में जीने के कारण सम्पदाएं अर्जित करने दो।

जीवन में सार्थकता : -

हमें प्रतिदिन कैसे लोगों से मिलने की आशा करनी चाहिए?

मानव जीवन यात्रा की सफल पूर्णता कैसे होती है?

मानव जीवन की यात्रा की सफल पूर्णता केवल भौतिक सुख-सुविधाओं की कमाई से ही नहीं होती। इससे भी अधिक महत्त्वपूर्ण है परमात्मा, सर्वोच्च ऊर्जा और सर्वोच्च नियंत्रक के साथ सम्पर्क बनाकर रखना। यह तभी सम्भव है यदि आप स्वयं इन्द्रियों के एक अच्छे नियंत्रक हैं। अपने जीवन से बुराईयों को हटाकर आप कार्यों में उत्तम बन चुके हो। आप समूचे संसार को सुन्दर बनाना चाहते हो और दिव्यता के साथ इसे जोड़ना चाहते हो। इसलिए लोग प्रतिदिन प्रातःकालीन वेला में आपको प्राप्त करने के इच्छुक होते हैं।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

ऋग्वेद मण्डल-1 सूक्त 62

ऋग्वेद मन्त्र 1.62.1
Rigveda 1.62.1

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

प्र मन्महे शवसानाय शूष्माङ्गूषं गिर्वणसे अङ्गरस्वत् ।
सुवृत्तिभिः स्तुवत् ऋग्मियायाऽर्चामार्कं नरे विश्रुताय ॥ १ ॥

(प्र मन्महे) पूर्ण रूप से मनन करते हैं और प्रार्थना करते हैं (शवसानाय) ज्ञान की शक्ति से सभी कार्यों को करने वाले (शूष्म) शत्रुओं का नाश करने के लिए (आङ्गूषम्) स्तुति के योग्य (निर्वणसे) प्रशंसित वैदिक वाणियों से (अङ्गरस्वत्) हमारे शरीर और समूची सृष्टि के प्रत्येक भाग में शक्ति और आनन्द के रूप में विद्यमान (सुवृत्तिभिः) दुर्गुणों को हटाकर उत्तम कार्यों की प्रेरणा देने वाला (स्तुवते) महिमागान के योग्य (ऋग्मियाय) ऋचाओं (मंत्रों) के द्वारा (अर्चाम्) पूजा के लिए उच्चारण (अर्कम्) पूजा के योग्य (नरे) मानवों में (विश्रुताय) सुनाई देने वाले ।

व्याख्या :-

परमात्मा के सर्वोच्च लक्षण क्या हैं?

हम परमात्मा पर मनन करते हैं और केवल उसके निम्न लक्षणों की प्रार्थना करते हैं :-

1. वह सर्वज्ञाता है। वह अपने सभी कार्य अपने ज्ञान की शक्ति से ही करता है।
2. वह सर्वशक्तिमान है। वह सभी शत्रुओं को नष्ट करने में सक्षम है।
3. वह अङ्गरस्वत् है अर्थात् हमारे शरीर और समूची सृष्टि के प्रत्येक भाग में शक्ति और आनन्द के रूप में विद्यमान है।
4. वह सभी दुर्गुणों को दूर करता है और उत्तम कार्यों के लिए प्रेरित करता है।
5. वह वैदिक वाणियों के साथ स्तुति के योग्य है।
6. वह नरे विश्रुताय है अर्थात् सभी मनुष्यों में सुना जाता है, पशुओं में नहीं।

जीवन में सार्थकता :-

मनुष्यों की सर्वमान्य कामनाएँ क्या हैं?

मनुष्यों की सर्वमान्य कामनाओं को कौन पूर्ण कर सकता है?

कौन वास्तविक मनुष्य है?

प्रत्येक व्यक्ति ज्ञान के लिए कामना करता है। प्रत्येक व्यक्ति शक्ति के लिए कामना करता है। प्रत्येक व्यक्ति स्थाई संगति की कामना करता है। प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवन से दुर्गुणों को दूर करके उत्तम कार्य करना चाहता है।

इन सभी लक्षणों के लिए हमें उस सर्वमान्य शक्ति, परमात्मा, पर अवष्य ही मनन करना चाहिए जो केवल मनुष्यों में ही चर्चा का विषय है, पशुओं में नहीं। वह सर्वोच्च शक्तिमान ही हमें शक्ति दे सकता है। सर्वोच्च ज्ञानवान् ही हमें सच्चा ज्ञान दे सकता है।

अतः जो लोग परमात्मा के बारे में चर्चा नहीं करते, अपितु पशुओं की भाँति केवल खाने-पीने और सुविधाओं के साथ रहने का ही ध्यान करते हैं, ऐसे लोग सच्चे मनुष्य के लक्षणों से रहित होते हैं।

सूक्ष्म :-

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पञ्चवती वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

(नरे विश्रुताय) वह केवल मनुष्यों में सुना जाता है, पशुओं में नहीं।

ऋग्वेद मन्त्र 1.62.2

Rigveda 1.62.2

प्र वा महे महि नमो भरध्वमाङ्गूष्ठं शवसानाय साम ।

येना नः पूर्वे पितरः पदज्ञा अर्चन्तो अङ्गिरसो गा अविन्दन् ॥ २ ॥

(प्र – भरध्वम् से पूर्व लगाकर) (वः) आप सब (महे) उस महान् (परमात्मा) के लिए (महि) अत्यन्त (नमः) नमन (भरध्वम् – प्र भरध्वम) पूरी तरह से धारण करता है और पालन करता है (आङ्गूष्ठम्) स्तुति के योग्य (शवसानाय) ज्ञान की शक्ति के बल पर सभी कार्य करने वाला (साम) पूजा के गीत (येन) जिसके द्वारा (नः) हमारे (पूर्वे) प्राचीन, पूर्ण करने वाले (पितरः) पूर्वज पिता, संरक्षण करने वाले (पदज्ञाः) पथ को जानने वाला (अर्चन्तः) पूजा करते हुए (अङ्गिरसः) हमारे शरीर और समूची सृष्टि के प्रत्येक भाग में शक्ति और आनन्द के रूप में विद्यमान (गा:) वाणियाँ (ज्ञान की) (अविन्दन) प्राप्त करने वाला ।

व्याख्या :-

हमारे पूर्वज पिताओं अर्थात् पितरों ने दिव्य ज्ञान कैसे प्राप्त किया?

आप उस महान् परमात्मा के लिए अत्यन्त नमन को पूरी तरह से धारण करते हो और बनाये रखते हो जो अपने ज्ञान की शक्ति के बल पर सभी कार्य करता है और पूजा के गान के साथ स्तुति के योग्य है।

इन स्तुति गीतों के साथ हमारे प्राचीन पूर्वज पिता अर्थात् पितर जीवन के मार्ग को जानते हुए उस सर्वविद्यमान परमात्मा की पूजा करते थे जो हमारे शरीर के प्रत्येक भाग और समूची सृष्टि के प्रत्येक भाग में शक्ति और आनन्द की तरह विद्यमान है, इस प्रकार वे प्रकाश और ज्ञान की वाणियाँ प्राप्त करते थे। इस प्रकाश के साथ ही हम भी अपने जीवन को पूर्ण और सुरक्षित कर सकते हैं।

जीवन में सार्थकता :-

हमें परमात्मा की पूजा अर्थात् ईश्वर भक्ति के मार्ग का अनुसरण क्यों करना चाहिए?

अपने जीवन को पूर्ण और संरक्षित कैसे करें?

यह मन्त्र परमात्मा की पूजा अर्थात् ईश्वर भक्ति के मार्ग का अनुसरण करने की विशिष्ट प्रेरणा देता है कि हमें उस महान् सर्वोच्च शक्ति की पूजा और स्तुति का गान करना चाहिए। सर्वोच्च दिव्य ज्ञान तथा आनन्द के साथ–साथ उस सर्वविद्यमान शक्ति की अनुभूति प्राप्त करने का यही एक मार्ग है।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

इसी मार्ग पर हमारा जीवन पूर्ण और संरक्षित हो सकता है, अन्यथा यह अपूर्ण और असंरक्षित तथा दुर्गुणों और कठिनाईयों का मिश्रण बना रहेगा। हमारे पूर्वज पिताओं, प्राचीन ऋषियों और सन्तों ने इसी मार्ग का अनुसरण किया था।

ऋग्वेद मन्त्र 1.62.3

Rigveda 1.62.3

इन्द्रस्याडिगरसां चेष्टौ विदत्सरमा तनयाय धासिम् ।

बृहस्यतिर्भिनदद्रिं विदद् गा: समुस्त्रियाभिर्वावशन्त नरः ॥ ३ ॥

(इन्द्रस्य) इन्द्रियों के नियंत्रक का (अडिगरसाम) प्रत्येक भाग में आनन्द का अनुभव करने वाला (च) और (इष्टौ) इच्छाओं की प्राप्ति के लिए (विदत) प्राप्त करने योग्य बनाता है (सरमा) बुद्धि, आत्मा की सहचर, माता (तनयाय) विस्तार के लिए, वृद्धि के लिए (धासिम) भोजन (बृहस्यति) सबसे बड़ा संरक्षक, स्वामी (परमात्मा) (भिनत) तोड़ता है (अद्रिम) बादलों को (विदत) प्राप्त करने योग्य बनाता है (गा:) वाणियाँ (ज्ञान की, प्रकाश की) (सम – वावशन्त से पूर्व लगाकर) (उस्त्रियाभिः) ज्ञान की किरणों से (वावशन्त – सम वावशन्त) महिमागान (परमात्मा का), प्रकाशित कर्ता (नरः) मानव।

व्याख्या :-

हमें भोजन और ज्ञान कौन देता है?

जो व्यक्ति इन्द्रियों का नियंत्रक है और जो व्यक्ति अपने शरीर और सृष्टि के प्रत्येक भाग में दिव्य आनन्द की अनुभूति रखता है वह अपने निर्धारित लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए इस प्रकार प्रगति करता है जैसे एक माता अपने बच्चे की प्रगति के लिए भोजन उपलब्ध कराती है और जैसे सबसे बड़ा संरक्षक (परमात्मा अथवा सूर्य) (अज्ञानता और अन्धकार के) बादलों को तोड़ देता है जिससे वह हमें ज्ञान और प्रकाश की वाणियों को उपलब्ध करा सके। संरक्षित करने वाली और प्रकाशित करने वाली इन सभी दिव्यताओं के साथ मनुष्यों को ज्ञान की सभी किरणों सहित परमात्मा की महिमा का उच्चारण करना चाहिए।

जीवन में सार्थकता :-

हमारे शारीरिक और मानसिक विकास को कौन सुनिश्चित करता है?

हमारा दाता परिवार कौन बनाता है?

सभी मनुष्य सर्वोच्च दिव्य परमात्मा से शारीरिक और मानसिक उपहार प्राप्त करते हैं। एक माँ अपने बच्चे को जन्म देने के उपरान्त उसे दूध और भोजन उपलब्ध करवाकर उसके विकास का ध्यान रखती है, परन्तु यह परमात्मा ही है जो माँ के माध्यम से अथवा अन्य संरक्षकों के माध्यम से यह कार्य कर रहा है। जिस प्रकार हमें प्रकाश उपलब्ध कराने के लिए सूर्य अन्धकार को तोड़ देता है, उसी

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



प्रकार परमात्मा प्रत्यक्ष रूप से या माता—पिता और आचार्यों के माध्यम से हमारी अज्ञानता को तोड़ देता है। इस प्रकार परमात्मा प्रत्येक मनुष्य का शारीरिक और मानसिक विकास सुनिश्चित कराता है। अतः प्रत्येक मनुष्य का यह आवश्यक कर्तव्य है कि वह अपनी सारी मानसिक शक्तियों का प्रयोग उस सर्वोच्च दाता के साथ सम्बद्धता बनाने के लिए करे और इसी प्रकार अपने माता—पिता, अध्यापकों और अन्य वृद्धजनों के साथ आदर पूर्ण सम्बद्धता बनाकर रखनी चाहिए जो हमें किसी भी प्रकार से सहायता करते हों। हमारी प्रगति इसी सम्पूर्ण दाता परिवार के साथ सम्बद्धता पर ही निर्भर करता है।

ऋग्वेद मन्त्र 1.62.4

Rigveda 1.62.4

स सुष्टुभा स स्तुभा सप्त विप्रैः स्वरेणाद्रिं स्वर्योऽनवग्वैः।
सरण्युभिः फलिगमिन्द्र शक्र वलं रवेण दरयो दशग्वैः ॥ 4 ॥

(स:) वह (सुष्टुभा) उत्तम वाणियों के साथ (परमात्मा की महिमा में) (स:) वह (स्तुभा) रोककर (दुर्गुणों को) (सप्त विप्रैः) सूर्य की सात किरणों से (स्वरेण) आत्मा की आवाज के साथ (आद्रिम्) जिसका नाश कठिन है (अज्ञानता) (स्वर्यः) आध्यात्मिक प्रकाश का समूह (नवग्वैः) नौ तक (सरण्युभिः) उत्तम ज्ञान और गति के साथ (फलिगम) असत्य, निराधार (इन्द्र) इन्द्रियों का नियंत्रक (शक्र) शक्तिशाली (वलम्) ज्ञान के ऊपर आवरण (रवेण) ग्रन्थों की वाणियों के साथ, स्व प्रेरणा (दरयः) नाश करता है (दशग्वैः) दस तक।

व्याख्या :-

अज्ञानता का नाश कैसे करें?

अज्ञानता का नाश होने के बाद क्या होता है?

इन्द्रियों का शक्तिशाली नियंत्रक अज्ञानता के पहाड़ों का नाश कर सकता है जो सामान्य व्यक्तियों के लिए कठिन होता है। यह अज्ञानता हमारे ज्ञान के ऊपर एक असत्य और निराधार आवरण है। इसके बाद वह आध्यात्मिक प्रकाश अर्थात् स्व—अनुभूति की अवस्था को प्राप्त करता है। आप अज्ञानता अर्थात् ज्ञान के ऊपर असत्य आवरण का नाश निम्न प्रकार से कर सकते हैं :—

1. सुष्टुभा — उत्तम वाणियों के साथ (परमात्मा की महिमा में)
2. स्तुभा — रोककर (दुर्गुणों को)
3. सप्त विप्रैः — सूर्य की सात किरणों से
4. स्वरेण — आत्मा की आवाज के साथ
5. सरण्युभिः — उत्तम ज्ञान और गति के साथ
6. रवेण — ग्रन्थों की वाणियों के साथ, स्व प्रेरणा

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

प्रत्येक मनुष्य को प्रतिक्षण नौ या दस दशकों तक अर्थात् लम्बे जीवन तक ज्ञान के ऊपर आवरणों को नष्ट करने के लिए कड़ा प्रयास करना चाहिए।

जीवन में सार्थकता :-

ज्ञान और अज्ञानता में क्या अन्तर है?

दिव्य ज्ञान प्राप्त नहीं करना पड़ता, अपितु वह पहले से हमारे अन्दर है परन्तु अज्ञानता से ढका है। हमें उस अज्ञानता रूपी आवरण को नष्ट करना है। अज्ञानता के आवरण को नष्ट करने का एक ही मार्ग है कि हम इस सृष्टि का आनन्द लेते हुए परमात्मा के साथ सम्बद्धता बनाये रखें। ज्ञान हमारे अन्दर दिव्य शक्ति की सर्वोच्चता के बारे में एक निरन्तर चेतना है। अज्ञानता अनेकों प्रकार की कठिनाईयों उत्पन्न करती है, परन्तु समाधान किसी का भी नहीं करती। जबकि हमारे मूल अस्तित्व का सत्य ज्ञान सभी कठिनाईयों और असंतुलन पैदा करने वाली परिस्थितियों का नाश कर देता है। जिस प्रकार सूर्य के आगमन के बाद अन्धकार स्वतः ही समाप्त हो जाता है, उसी प्रकार अपने स्रोत से सम्बद्धता बन जाने के बाद अज्ञान भी लुप्त हो जाता है।

गुरुनानक देव जी ने स्पष्ट अर्थ में यह भाव व्यक्त किया है कि जिस प्रकार दिया जलने के बाद अंधेरा दूर हो जाता है उसी प्रकार वेद पढ़ने के बाद पाप और अज्ञानता दूर हो जाते हैं।

ऋग्वेद मन्त्र 1.62.5

Rigveda 1.62.5

गृणानो अङ्गिरोभिर्दस्म वि वरुषसा सूर्येण गोभिरन्धः।

वि भूम्या अप्रथय इन्द्र सानु दिवो रज उपरमस्तभायः ॥ ५ ॥

(गृणानः) परमात्मा की महिमा करते हुए (अङ्गिरोभिः) जो परमात्मा के साथ सम्बद्धता का आनन्द लेता है (दस्म) नष्ट करता है (दुर्गुणों को) (वि वः) दूर रखता है (उषसः) प्रातःकाल के साथ (सूर्येण) सूर्य के साथ, गतिविधियों के साथ (गोभिः) किरणों के साथ, उत्तम इन्द्रियों के साथ (अन्धः) अन्धकार (वि – अप्रथय से पूर्व लगाकर) (भूम्या) भूमि का (अप्रथय – वि अप्रथय) विशेष रूप से विस्तृत (इन्द्र) सर्वोच्च नियंत्रक, परमात्मा (सानु) उत्तम स्थान (दिवः) द्युलोक अर्थात् अन्तरिक्ष स्थान में (रजः) अन्तरिक्ष में शरीर(उपरम) ऊपर (आकाश में) (अस्तभायः) अन्तरिक्ष में धारण।

व्याख्या :-

परमात्मा हमारे लिए क्या करते हैं?

सर्वोच्च नियंत्रक परमात्मा इन्द्रियों के नियंत्रक की सहायता करते हैं जो परमात्मा की प्रशंसा करते हुए परमात्मा के साथ सम्बद्धता का आनन्द लेते हैं और सूर्य तथा अपनी गतिविधियों के साथ, सूर्य

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

की किरणों और अपनी उत्तम इन्द्रियों के साथ अज्ञानता के अन्धकार को दूर करने और नष्ट करने का कार्य करते हैं।

परमात्मा धरती के लिए उत्तम स्थान विशेष रूप से विस्तृत करते हैं तथा आकाशीय शरीरों को द्युलोक रूपी आकाश में स्थापित करते हैं।

जीवन में सार्थकता :-

सूर्य तथा उसकी किरणें हमारे जीवन से अज्ञानता को दूर रखने के लिए किस प्रकार उपयुक्त है? परमात्मा जल चक्र को किस उद्देश्य से संचालित करते हैं?

हमारी अज्ञानता का नाश करने के लिए परमात्मा ही एक मात्र शक्ति है जो यह कार्य सूर्य और उसकी किरणों के माध्यम से करते हैं। सूर्य गतिविधियों का प्रतिनिधित्व करता है। प्रातःकालीन वेला में सूर्योदय के बाद श्रेष्ठ श्रद्धालु लोग अपनी गतिविधियाँ प्रारम्भ कर देते हैं। सूर्य की किरणें अन्धकार दूर करती हैं। इसीलिए हमारी उत्तम इन्द्रियाँ को गोभि: कहलाती हैं, क्योंकि वे हमें उत्तम गतिविधियों में लगाये रखती हैं और अज्ञानता को हमारे से दूर करने में सहायता करती हैं।

इसी प्रकार परमात्मा सभी आकाशीय शरीरों को अन्तरिक्ष में धारण करते हैं जिससे समस्त जीवों का जीवन सुगम हो सके। बादलों को आकाश में धारण करना जल चक्र का ही एक भाग है जो सभी क्षेत्रों में जल को विस्तृत करके धरती पर समस्त जीवों का जीवन सम्भव करता है।

ऋग्वेद मन्त्र 1.62.6

Rigveda 1.62.6

तदु प्रयक्षतममस्य कर्म दस्मस्य चारुतममस्ति दंसः।
उपहवरे यदुपरा अपिन्वन्मध्वर्णसो नद्यश्चतस्त्रः ॥ 6 ॥

(तत् उ) केवल वह ही (प्रयक्षतमम्) सर्वाधिक स्तुति हेतु (अस्य) उसका (कर्म) कार्य (दस्मस्य) जो समस्त दुर्गणों और दुःखों का नाश करता है, उसका (चारुतमम्) सबसे सुन्दर (अस्ति) है (दंसः) यह कार्य (उपहवरे) अन्तरिक्ष में (यत्) जो (उपरा:) ऊपर बादल (अपिन्वत्) जल से परिपूर्ण (मध्वर्णसः) मधुर जल वाले (नद्यः) नदियाँ (चतस्त्रः) सभी दिशाओं में सक्रिय / गतिशील।

व्याख्या :-

परमात्मा का सबसे अधिक प्रशंसनीय और सुन्दर कार्य कौन है?

ऋग्वेद 1.62.5 में जल चक्र का उल्लेख है। यह परमात्मा का सर्वाधिक प्रशंसनीय कार्य है जो सभी बुराईयों और कठिनाईयों का नाश करता है। यह सबसे सुन्दर कार्य है। अन्तरिक्ष में अर्थात् आसमान के ऊपर मधुर जल से परिपूर्ण बादल सक्रिय होकर सभी दिशाओं में घूमते हैं जैसे नदियाँ चलती हैं।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



जीवन में सार्थकता :-

सभी जीवों के लिए जल चक्र किस प्रकार महत्त्वपूर्ण है?

परमात्मा सभी मानवों की देखभाल शारीरिक और मानसिक रूप से करते हैं। इस दिशा में जल चक्र परमात्मा का सबसे प्रशंसनीय और सुन्दर कार्य है। केवल यही जल चक्र सभी जीवों के लिए कृषि उत्पादनों का आधार है। हमारे भोजन में भी जल ही मुख्य आधारभूत तत्त्व है। जल के बिना पृथ्वी किसी उपयोग की नहीं हो सकती थी। भूमि के अन्दर भी जल केवल वर्षा के कारण ही है।

इस जल चक्र के बिना जल केवल जलीय स्थलों के निकट रहने वाले लोगों के लिए ही उपलब्ध होता। सूर्य समुद्रीय जल को वाष्पीकृत करके बादल बनाता है जो वर्षा के रूप में सभी दूर क्षेत्रों में भी विस्तृत हो जाता है। इस प्रकार जल चक्र धरती पर सब जगह सब जीवों का पोषण उपलब्ध कराता है।

ऋग्वेद मन्त्र 1.62.7

Rigveda 1.62.7

द्विता वि वव्रे सनजा सनीळे अयास्यः स्तवमानेभिरकैः ।
भगो न मेने परमे व्योमन्धारयद्रोदसी सुदंसा: ॥ ७ ॥

(द्विता) दो प्रकार से (वि) विशेष रूप से (वव्रे) स्वीकार करता है, स्थापित करता है (सनजा) प्राचीनकाल से (सनातन) (सनीळे) परमात्मा में स्थापित, परमात्मा के निकट (अयास्यः) असीमित शक्तियाँ (अपराजेय) (स्तवमानेभिः) प्रशंसा और महिमाओं के साथ (अर्कैः) मन्त्र (भगः) सुख-सुविधाएँ (न) जैसे (मेने) महिमा को प्रगट करने वाला (परमे) सर्वोच्च, से परे (व्योमन) अन्तरिक्ष (अधारयत्) धारण करता है (रोदसी) दोनों (द्युलोक तथा भूमि, आन्तरिक तथा बाहरी पूजा) (सुदंसाः) उत्तम कार्यों को करने वाला।

व्याख्या :-

यह सृष्टि कहाँ पर स्थापित है?

परम व्योम अर्थात् अन्तरिक्ष से परे क्या है?

परमात्मा ने प्राचीनकाल से इस सृष्टि को दो प्रकार से स्थापित किया है। सनातन परमात्मा ने यह कार्य अपनी असीमित और अथक शक्तियों से महिमावान् और प्रशंसित मंत्रों के साथ किया है। दोनों परमात्मा के बीच, परमात्मा के अत्यन्त निकट स्थापित है। यह सृष्टि पूर्ण सुविधाओं को प्रदर्शित करने वाली परमात्मा की महिमा और शान है जो उत्तम कार्य करता है और दोनों को धारण करता है (द्युलोक तथा पृथ्वी, बाहरी और आन्तरिक पूजा)। जबकि वह स्वयं असीम है अर्थात् परमे व्योमन है। वह सर्वोच्च तथा अन्तरिक्ष से परे है।

जीवन में सार्थकता :-

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

हमारी श्रद्धा भक्ति कहाँ स्थापित होती है?

'वंत्रे' का अर्थ है स्थापित और स्वीकार करने वाला। इस मन्त्र का आध्यात्मिक अर्थ भी निकलता है। परमात्मा स्तुति करने वाले और प्रशंसा करने वाले मंत्रों तथा श्रद्धा भक्ति को प्राचीनकाल से अपने निकट अन्तरिक्ष में स्वीकार करता रहा है। आन्तरिक ध्यान-साधना या बाहरी रूप से परमात्मा की प्रशंसा और स्तुति के रूप में हमारे अथक प्रयासों से हम दिव्यता के अन्तरिक्ष तक पहुँच सकते हैं जो एक साधक के लिए सबसे सुविधाजनक उपलब्धि है।

ऋग्वेद मन्त्र 1.62.8

Rigveda 1.62.8

सनाद्विं परि भूमा विरुपे पुनभुवा युवती र्वेभिरेवैः ।
कृष्णभिरक्तोषा रुशदिभर्वपुर्भिरा चरतो अन्यान्या ॥ 8 ॥

(सनात) प्राचीन समय से अर्थात् सनातन (दिवम्) अन्तरिक्ष स्थान (परि – चरतः से पूर्व लगाकर) (भूमा) भूमि (विरुपे) भिन्न-भिन्न रूप (पुनः भुवा) बार-बार होने वाला (युवती) रात्रि तथा प्रातः वेला (उषा) (र्वेभिः) स्वयं (एवैः) गति (कृष्णभिः) अन्धकार से (अक्ता) रात्रि (उषा:) प्रातःकाल (रुशदिभः) प्रकाशित से (विपुर्भिः) शरीर (आ – चरतः से पूर्व लगाकर) (चरतः – परि चरतः) चारों तरफ घूमता है (चरतः – आ चरतः) घूमता है (अन्यान्या) भिन्न-भिन्न ।

व्याख्या :-

आकाशीय शरीर कहाँ से आते हैं?

प्राकृतिक घटनाएँ कैसे होती हैं?

प्राचीन समय से आकाशीय अन्तरिक्ष अर्थात् द्युलोक तथा पृथ्वी अर्थात् भूलोक भिन्न-भिन्न रूपों में हैं; रात्रि और प्रातः ऊषाकाल बार-बार अपनी गति से उपस्थित होते हैं। अन्धकार से रात्रि आती है और प्रकाशमान शरीर से प्रातःकालीन वेला भिन्न-भिन्न रूपों में चलने के लिए उपस्थित होती है।

जीवन में सार्थकता :-

निर्जीव प्राकृतिक शरीरों के क्या लक्षण हैं?

प्राकृतिक शरीरों से हम क्या सीखते हैं?

रूपों और गतियों में भिन्नता के बावजूद आकाशीय शरीरों तथा भूमि, रात्रि तथा प्रातः वेला में अनेकों लक्षण समान हैं :-

1. ये सभी बाहरी प्रयोग के लिए पैदा हुए हैं।
2. ये सभी सामूहिक रूप से अस्तित्व में रहते हैं।
3. ये सभी परस्पर सहयोग करते हैं।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

4. ये सभी सदैव युवा रहते हैं कभी वृद्ध नहीं होते।
 5. ये सभी लगातार अपने पथ पर इकठे फिर भी अलग—अलग चलते रहते हैं।
- इन निर्जीव शरीरों से बड़ी सुन्दर शिक्षा मिलती है :-
1. ये कभी भी अपने लिए कार्य नहीं करते, परन्तु अपना अस्तित्व दूसरों के लिए लाभदायक सिद्ध करने का कार्य करते हैं।
 2. उनका अपने अस्तित्व के विषय में कोई अहंकार भी नहीं होता।

ऋग्वेद मन्त्र 1.62.9
Rigveda 1.62.9

सनेमि सख्यं स्वपस्यमानः सूनुर्दधार शवसा सुदंसाः ।
आमासु चिद्धिषे पक्वमन्तः पयः कृष्णासु रुशाद्रोहिणीषु ॥ ९ ॥

(सनेमि) प्राचीन अर्थात् सनातन (सख्यम) मित्रता (स्वपस्यमानः) अपने उत्तम कार्य करने वाला (सूनुः) उत्तमता के लिए प्रेरणा देने वाला (दाधार) धारण करता है (शवसा) बल के साथ (सुदंसाः) सुखी रखने वाले कार्य करने वाला (आमासु) अपरिपक्व (चित) और (दधिषे) धारण करना (पक्वम्) परिपक्व (अन्तः) भीतर (पयः) पीने योग्य (कृष्णासु) काले वर्ण में (रुशत्) सफेद चमकने वाला (रोहिणीषु) लाल रंग में।

व्याख्या :-

कौन हमारा प्राचीन मित्र है अर्थात् एक सनातन सखा?

अपने पूरे बल के साथ उत्तम और हमें सुखी करने वाले कार्य करते हुए वह हमें एक मित्र की तरह धारण करता है और प्राचीनकाल से एक सनातन सखा के रूप में हमें प्रेरित करता रहा है। अन्दर परिपक्व और अपरिपक्व भी, काले, लाल और सफेद रंगों में वह कई प्रकार के सार तत्त्व धारण करता है।

जीवन में सार्थकता :-

परमात्मा किस प्रकार हमारा प्राचीन सखा है?

परमात्मा हमें क्या प्रेरणा देता है?

सभी मानवों के लिए उसकी महान् और दिव्य सहायता इस बात का वास्तविक आश्वासन है कि परमात्मा प्राचीन समय से हमारा मित्र है अर्थात् एक सनातन सखा।

वह स्वयं हमारे लिए उत्तम और सुखी करने वाले कार्य करता है और हमें भी अन्य लोगों के लिए उत्तम कार्यों के लिए प्रेरित करता है। उसके उत्तम बलों वाले कार्यों में हर प्रकार के खाद्य पदार्थों में पोषक तत्त्वों का उत्पादन शामिल है, ये उत्पादक परिपक्व हों या अपरिपक्व, और बाहर उनका कोई

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पञ्चवती वेदिका

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

भी रंग हो। हर प्रकार के रंग वाली गड़ओं में पोषक दूध ही होता है। यह सब उसकी हमारे प्रति मित्रता के प्रमाण हैं। उसकी महानता हमारे यह प्रेरणा देती है कि हमें भी महान् बनना चाहिए। बाहर हम कितने ही भिन्न क्यों न हों परन्तु अन्दर हमें सबके लिए पोषक और लाभकारी विचार ही पैदा करने चाहिए।

सूक्ति :-

(सनेमि सख्यं स्वपस्यमानः) प्राचीनकाल से एक सनातन सखा के रूप में हमें प्रेरित करता रहा है।

ऋग्वेद मन्त्र 1.62.10

Rigveda 1.62.10

सनात्सनीळा अवनीरवाता व्रता रक्षन्ते अमृताः सहोभिः।

पुरु सहस्रा जनयो न पत्नीदुर्वस्यन्ति स्वसारो अह्याणम् ॥ 10 ॥

(सनात) प्राचीन समय से अर्थात् सनातन (सनीळा) परमात्मा में रहने वाला, परमात्मा के निकट (अवनीः) भूमि, अंगुलियाँ (अवाता) विश्वसनीय, अहिंसक (व्रता) व्रत, संकल्प (रक्षन्ते) रक्षा करते हैं (अमृताः) न मरने वाला (सहोभिः) अपनी शक्तियों के साथ (पुरु) बहुत (सहस्रा) हजारों में (जनयः) जन्म देने वाली (न) जैसे कि (पत्नीः) पत्नियाँ (दुर्वस्यन्ति) सेवा करती हैं (स्वसारः) पहले (अह्याणम्) सक्रिय और ऊर्जावान्।

व्याख्या :-

भूमि हमारे लिए क्या करती है?

हमारा भूमि से क्या सम्बन्ध है?

अनन्तकाल से भूमि परमात्मा में वास करते हुए और परमात्मा के निकट वास करते हुए सभी जीवों के लिए वफादार और अहिंसक है। वह हमारे संकल्पों की रक्षा करती है। वह अमृत है, अपनी सभी शक्तियों के साथ सदैव सक्रिय है। पत्नियों की तरह धरती माता अनेकों हजारों को जन्म देती है और बहनों की तरह सक्रिय और ऊर्जावान भाईयों की सेवा करती है। 'अवनीः' का अर्थ है अंगुलियाँ भी होता है। यह भी सभी जीवों के लिए वफादार और अहिंसक होती है। वे हमारे संकल्पों की रक्षा में सहायक होती हैं। वे अपनी सभी शक्तियों के साथ सदैव सक्रिय रहती हैं। इनमें सभी पांचों तत्त्वों की शक्तियाँ होती हैं। इसीलिए योगी लोग अलग-अलग प्रकार की सिद्धियाँ प्राप्त करने के लिए अंगुलियों के प्रयोग से ही भिन्न-भिन्न मुद्राओं का प्रयोग करते हैं।

जीवन में सार्थकता :-

भूमि माता और बहन की रक्षा कैसे करें?

भूमि माता के प्रति श्रद्धा और उसके रक्षण की भावना हमारे अन्दर उच्च स्तरीय दिव्यता की तरह होनी चाहिए। परमात्मा ने सभी जीवों को उत्पन्न करने और उनका पोषण करने का सर्वोच्च कार्य

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



केवल धरती माता को ही दिया है। इसीलिए परमात्मा हमें प्रेरित करते हैं कि हम धरती को जन्म देने वाली माता और सेवा करने वाली बहन के रूप में समझें। अतः सभी मानवों का यह आवश्यक कर्तव्य है कि वे अपनी माँ और बहन की प्रदूषण से रक्षा करें। आधुनिक युग में असीमित मात्रा में खेती के माध्यम से इस भूमि माँ और बहन के अन्दर जहरीले रसायन मिलाये जा रहे हैं। अन्ततः यह सब कलियुग के लोगों के लिए ही विनाशकारी सिद्ध होगा। हमें इस महान् और दिव्य माता तथा बहन की पूजा करनी चाहिए।

सूक्ति :-

(सनात् सनीळा अवनीः अवाता) अनन्तकाल से भूमि परमात्मा में वास करते हुए और परमात्मा के निकट वास करते हुए सभी जीवों के लिए वफादार और अहिंसक हैं।

ऋग्वेद मन्त्र 1.62.11

Rigveda 1.62.11

सनायुवो नमसा नव्यो अर्केवसूयवो मतयो दस्म दद्वः।
पतिं न पत्नीरुशतीरुशन्तं स्पृशन्ति त्वा शवसावन्मनीषाः ॥११॥

(सनायुवः) प्राचीन और शाश्वत अर्थात् सनातन की इच्छा करने वाला (नमसा) नमन के साथ (नव्यः) नया, उत्तम (प्रशंसा करने, महिमागान में) (अर्कः) प्रार्थना मन्त्रों के साथ (वसूयवः) सम्पदा और ज्ञान आदि की इच्छा करने वाला (मतयः) बुद्धि (दस्म) नाश करने वाला (दुःखों और दुर्गुणों का) (दद्वः) आपकी तरफ बढ़ने वाला (पतिम) पति को (न) जैसे कि (पत्नीः) पत्नी (उशतीः) चाहती हुई (उशन्तम्) चाहते हुए के पास (स्पृशन्ति) स्पर्श करती है (त्वा) आपको (शवसावन) सभी बलों का स्वामी (मनीषाः) मननशील मनुष्य।

व्याख्या :-

कौन परमात्मा से प्रार्थना तथा उसकी प्रशंसा करता है?

कौन परमात्मा से प्यार करता है?

जो बुद्धिमान लोग उस प्राचीन और शाश्वत अर्थात् सनातन की इच्छा करते हैं और जो लोग सम्पदा और ज्ञान आदि की इच्छा करते हैं वे नमन तथा प्रार्थना, आपकी प्रशंसा और स्तुतिगान के नये मंत्रों के साथ आपकी तरफ अग्रसर होते हैं, जो सभी दुःखों और दुर्गुणों के नाशक हो। जिस प्रकार एक कामना करती हुई पत्नी कामना किये जाने वाले पति को प्रेम और श्रद्धा से स्पर्श करती है, उसी प्रकार मननशील व्यक्ति आपको प्रेम करते हैं जो सभी बलों के स्वामी हो।

जीवन में सार्थकता :-

क्या परमात्मा के प्रति प्रेम सभी मानवों में एक निश्चित सत्य लक्षण है?

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

परमात्मा की प्रशंसा और प्रार्थना उसके चाहने वालों का एक सदा सत्य रहने वाला लक्षण है। जो उस शाश्वत और प्राचीन शक्ति की चाहत रखते हैं या सम्पदा और ज्ञान की चाहत रखते हैं। लेकिन केवल मननशील व्यक्ति उसे ऐसे प्रेम करते हैं जैसे एक पत्नी अपने पति को प्रेम करती है। व्यक्तिगत स्तर पर भगवान से प्रेम एक दुर्लभ लक्षण है। मीरा ने भगवान कृष्ण को अपना पति मानते हुए प्रेम किया। हमें भी भगवान को व्यक्तिगत स्तर पर प्रेम करना चाहिए।

ऋग्वेद मन्त्र 1.62.12

Rigveda 1.62.12

सनादेव तव रायो गभस्तौ न क्षीयन्ते नोप दस्यन्ति दस्म ।
द्युमाँ असि क्रतुमाँ इन्द्र धीरः शिक्षा शचीवस्तव नः शचीभिः ॥१२॥

(सनात) प्राचीन समय से (एव) केवल (तव) आपका (रायः) सम्पदा (गभस्तौ) हाथों में, प्रबन्धन में (न) नहीं (क्षीयन्ते) नाश करता है (न) नहीं (उप दस्यन्ति) कमजोर करता है (दस्म) सभी दर्दों और दुर्गुणों का नाशक (द्युमान) प्रकाशित (असि) हो (क्रतुमान) कार्य करने में सक्रिय (इन्द्र) सर्वोच्च नियंत्रक (धीरः) बुद्धिमान व्यक्ति (शिक्षा) प्रवचन करता है, शिक्षित करता है (शचीवः) सर्वोच्च शक्ति, परमात्मा (तव) आप (नः) हमें (शचीभिः) आपकी शक्तियों और कार्यों के साथ।

व्याख्या :-

परमात्मा से सम्बद्धता के साथ कमाई गई सम्पदा का क्या प्रभाव होता है? दुःखों और दुर्गुणों के नाशक! पुरातनकाल से आपके हाथ की सम्पदा अर्थात् आपके प्रबन्धन की सम्पदा अथवा आपके साथ सम्बद्धता वाले व्यक्तियों की सम्पदा न कभी नष्ट होती है और न ही कमजोर होती है।

सर्वोच्च नियंत्रक और सर्वोच्च शक्तिमान! आप बुद्धि तथा गतिविधियों में सक्रियता में प्रकाशित हो। कृपया हमें अपनी शक्तियों और कार्यों से शिक्षित करो और उपदेश करो।

जीवन में सार्थकता :-

परमात्मा की सम्बद्धता के साथ सम्पदा कैसे कमाई जाती है?

परमात्मा के साथ सम्बद्धता वाली सम्पदा का अर्थ है श्रेष्ठ मार्गों और श्रेष्ठ साधनों से कमाई गई सम्पत्ति तथा दूसरों के कल्याण में श्रेष्ठ पथ पर ही खर्च की गई। हम अपनी बुद्धि तथा कार्य करने की शक्ति के बल पर सम्पदा अर्जित करते हैं। परमात्मा सर्वोच्च बुद्धि है और सर्वोच्च शक्ति है। हमें परमात्मा से दिव्य मार्ग दर्शन प्राप्त करना चाहिए जिससे हम बुद्धि तथा कार्य करने की शक्ति प्राप्त कर सकें। ऐसे दिव्य मार्ग दर्शन से कमाई गई सम्पदा ही दिव्य और गौरवशाली सम्पदा बन सकती है।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

ऋग्वेद मन्त्र 1.62.13

Rigveda 1.62.13

सनायते गोतम इन्द्र नव्यमतक्षद् ब्रह्म हरियोजनाय।
सुनीथाय नः शवसान् नोधाः प्रातर्मक्षु धियावसुर्जगम्यात् ॥ 13 ॥

(सनायते) सनातन की भाँति कार्य और व्यवहार करने वाला (गोतमः) प्रशंसनीय इन्द्रियों वाला (इन्द्र) सर्वोच्च शक्ति (नव्यम) नया (अतक्षत) निर्माण करता है (ब्रह्म) परमात्मा की प्रशंसा में गीत (हरि योजनाय) शरीर के साथ इन्द्रियों को जोड़ने के लिए, परमात्मा की योजना को कार्य रूप देने के लिए (सुनीथाय) तुम्हारे लिए, हमें सुखमय मार्ग पर ले जाने वाले (नः) हमें (शवसान) शक्तिशाली, परमात्मा (नोधाः) परमात्मा की प्रशंसा वाली वाणियों को धारण करने वाला (प्रातः मक्षु) प्रातःकाल अतिशीघ्र (धियावसुः) दिव्य ज्ञान में जीने वाले (जगम्यात्) प्राप्त हों।

व्याख्या :-

परमात्मा की योजना को प्रभावशाली बनाने के लिए कौन कार्य करता है?

सर्वोच्च शक्ति, इन्द्र! प्रशंसनीय इन्द्रियों वाले लोग आपकी योजनाओं को प्रभावशाली बनाने का कार्य करते हैं और प्राचीन ऋषियों और सन्तों की तरह व्यवहार करते हैं। वे आपके सम्मान में नये गीतों की रचना करते हैं।

वे लोग जिनकी वाणियों में परमात्मा की प्रशंसा होती है, जो अत्यन्त शक्तिशाली होते हैं, वे आपके लिए कार्य करते हैं और हमें जीवन के सुविधाजनक मार्ग पर ले जाते हैं। हम प्रातःकालीन वेला में बौद्धिक कार्यों से सम्पदा प्राप्त करें और दिव्य ज्ञान की संगति वाले लोगों से ज्ञान प्राप्त करें।

जीवन में सार्थकता :-

कौन प्रशंसनीय लोग होते हैं?

ऐसे प्रशंसनीय लोग परमात्मा की पूजा किस प्रकार करते हैं?

वैदिक पीड़िया तथा पवित्र वेद स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम के पीछे क्या प्रेरणा है?

जो लोग परमात्मा की वास्तविक शक्तियों और उद्देश्यों को समझना चाहते हैं और परमात्मा की शिक्षाओं को जीवन में क्रियान्वित करना चाहते हैं और इस प्रकार स्थाई रूप से अपनी चेतना में उसका आहवान करके उस दिव्य सर्वोच्च शक्ति की अनुभूति रखना चाहते हैं, वे अन्य लोगों को भी उच्च चेतना में जीने के लिए मार्ग दर्शन करते हैं और समस्याओं तथा दुर्गुणों से मुक्त जीवन जीना चाहते हैं।

इस चेतना के साथ वे उस दिव्यता के स्वर में जीवन जीने के लिए नये—नये मार्ग तैयार कर लेते हैं। वे सभी लोगों को वर्तमान परिस्थितियों में सुविधाजनक जीवन जीने के लिए मार्ग दर्शन देते हैं।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

वैदिक पीड़िया तथा पवित्र वेद स्वाध्याय तथा शोध कार्यक्रम का उद्देश्य भी इसी मन्त्र के भावों के अनुरूप ही है।

(प्रातः मक्षु धियावसुः जगम्यात्) हम प्रातःकालीन वेला में बौद्धिक कार्यों से सम्पदा प्राप्त करें और दिव्य ज्ञान की संगति वाले लोगों से ज्ञान प्राप्त करें।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

ऋग्वेद मण्डल-1 सूक्त 63

ऋग्वेद मन्त्र 1.63.1

Rigveda 1.63.1

त्वं महाँ इन्द्र यो ह शुष्मैर्यावा जज्ञानः पृथिवी अमे धाः ।
यद्व ते विश्वा गिरयश्चिदभ्वा भिया दृढ्हासः किरणा नैजन् ॥ १ ॥

(त्वम्) आप (महान्) महान्, दिव्य (इन्द्र) सर्वोच्च नियंत्रक (य:) जो (ह) निश्चित रूप से (शुष्मैः) शत्रुओं का नाश करने की शक्ति के साथ (द्यावा) द्युलोक अर्थात् अन्तरिक्ष स्थान (जज्ञानः) उत्पन्न करता है, व्यक्त करता है (पृथिवी) भूमि (अमे) शक्ति में और प्रकाश में (धाः) धारण करता है (यत) जो (ह) निश्चित रूप से (ते) आपके (विश्वा) सब (गिरयः) पर्वत (चित्) भी (अभ्वा) शक्तिशाली (भिया) भय से (दृढ्हासः) अत्यन्त दृढ़ होते हुए भी (किरणः) किरणों (न) जैसे कि (एजन्) कम्पित होते हैं।

व्याख्या :-

परमात्मा किस प्रकार इस सृष्टि को धारण करते हैं?

सर्वोच्च नियंत्रक, परमात्मा! आप महान् और दिव्य हो जो अपनी शक्ति और प्रकाश में निश्चित रूप से आकाशीय अन्तरिक्ष और भूमि तथा अपने बलशाली पर्वतों सहित सबको धारण करते हैं। आप, स्थिर होने के बावजूद, अपनी किरणों से सबमें भय पैदा करते हो, उन्हें कम्पित करते हो।

जीवन में सार्थकता :-

हमें परमात्मा से क्यों उरना चाहिए?

सभी कर्मों का प्रधान कर्ता कौन है?

परमात्मा ने अपनी शक्ति और ज्ञान के प्रकाश में, जो हर प्रकार से सबसे सर्वोच्च है, सबको धारण कर रखा है, इसीलिए इस सृष्टि में बड़े-बड़े पर्वतों सहित सभी कुछ डर से कम्पित होता है। पर्वतों की स्थिरता और उनके विशाल रूप के सामने मनुष्य का स्तर उनसे बड़ा नहीं है।

ऋग्वेद मन्त्र 1.63.2

Rigveda 1.63.2

आ यद्वरी इन्द्र विव्रता वेरा ते वज्रं जरिता बाह्वोर्धात् ।
येनाविर्हर्यतक्रतो अमित्रान्पुर इष्णासि पुरुहूत पूर्वीः ॥ २ ॥

(आ – धात् से पूर्व लगाकर) (यत) जो (हरी) इन्द्रियाँ (इन्द्र) सर्वोच्च नियंत्रक (विव्रता) अनेकों संकल्पों के साथ (आवे) शरीर रथ में (ते) आपके (वज्रम्) वज्र (जरिता) श्रद्धालु (बाह्वोः) बांहों में (धात् – आ

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

धात) धारण करता है (येन) उसके बाद (अविहर्यत क्रतो) अवांछनीय कार्या (बुराईयों और पापों) से मुक्त (अमित्रान्) अमित्र (शत्रु) (पुर:) शहर, किले (इष्णासि) अग्रसर होते हैं (पुरुहूत) पालन करते हुए, पूर्ण करते हुए (पूर्णीः) अनेकों।

व्याख्या :-

परमात्मा ने मनुष्यों को कौन सी शक्तियाँ दी हैं?

इन्द्र, सर्वोच्च नियंत्रक, हमारी इन्द्रियों को हमारे शरीर रूपी रथ के साथ अनेकों संकल्पों सहित जोड़ता है। आपके श्रद्धालु इन्द्रियों की उन शक्तियों को अपनी बांहों में एक वज्र की तरह धारण करते हैं। अतः, वह इन्द्र, जो स्वयं अवांछनीय कार्या, बुराईयों और पापों से विमुक्त है, जो सबको पूर्ण करने और सबका पोषण करने वाली शक्ति है, अमित्रों (शत्रुओं) के अनेकों शहर और किले नष्ट कर देता है।

जीवन में सार्थकता :-

परमात्मा हमारे शत्रुओं का नाश कब करते हैं?

दिव्य समर्थन कैसे प्राप्त किया जाये?

परमात्मा ने इन्द्रियों की शक्तियाँ हमें एक वज्र की तरह समर्पित की हैं। हमें उन्हें नियंत्रण में ही रखना चाहिए। एक बार जब हम इन्द्र बन जाते हैं तो सर्वोच्च इन्द्र हमारे सभी शत्रुओं, कठिनाईयों और दुःख—दर्दों को नष्ट कर देते हैं। अतः दिव्य समर्थन प्राप्त करने का चालक यंत्र हमारी अपनी बांहों में है जिसे हम अपनी इन्द्रियों पर पूरा नियंत्रण करके प्रयोग कर सकते हैं।

ऋग्वेद मन्त्र 1.63.3

Rigveda 1.63.3

त्वं सत्य इन्द्र धृष्णुरेतान्त्वमृभुक्षा नर्यस्त्वं षाट् ।

त्वं शुष्णं वृजने पृक्ष आणौ यूने कुत्साय द्युमते सचाहन् ॥ ३ ॥

(त्वम्) आप (सत्यः) पूर्ण सत्य, अजन्मा, सदैव अस्तित्व वाला (इन्द्र) सर्वोच्च नियंत्रक (धृष्णुः) पराजय करने के लिए दृढ़ संकल्पित (एतान्) इनकी (शत्रुओं की) (त्वम्) आप (ऋभुक्षा) ज्ञान और निरंतरता में चमकने वाले (नर्यः) मनुष्यों में (त्वम्) आप (षाट्) धैर्यशाली, सहन करने वाला (त्वम्) आप (शुष्णम्) शोषण करने वाला (विचार और लोग) (वृजने) युद्धों में, संघर्षों में (पृक्षे) जो आपके साथ योद्धा को संयुक्त करता है (आणौ) उच्चारण में (यूने) सभी अच्छे लक्षण देता है (कुत्साय) उसके लिए जो मार देता है (सभी इच्छाओं को, लालच को और वृत्तियों को) (द्युमते) प्रकाशित मन के लिए (सचा) उसके साथ (सहचर की तरह) (अहन) नष्ट करता है।

व्याख्या :-

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

परमात्मा के सर्वोच्च और विशेष लक्षण क्या हैं?

सर्वोच्च नियंत्रक परमात्मा!

1. आप पूर्ण सत्य हो, कभी पैदा नहीं हुए, सदैव अस्तित्व में रहने वाले।
2. आप सभी शत्रुओं को पराजित करने के लिए दृढ़ संकल्पित हो।
3. आप ज्ञान में और नियम बद्धता में मनुष्यों के बीच चमकते हो।
4. आप धैर्यशाली और सहनशील हो।
5. आप शोषण करने वाले (विचारों और लोगों) को नष्ट करते हो।
6. आपसे सम्बद्धता के बिना और आपके बारे में मन्त्रगान किये बिना कोई युद्ध और संघर्ष जीते नहीं जा सकते।
7. उस प्रकाशित मन को आप सभी अच्छे लक्षण प्रदान करते हो जिसने अपनी इच्छाओं, लालच और वृत्तियों को मार दिया है।

जीवन में सार्थकता :-

जीवन के युद्धों और संघर्षों को कैसे जीता जा सकता है?

एक बार जब आप यह विश्वास करना और महसूस करना प्रारम्भ कर देते हो कि परमात्मा इस मन्त्र में सूचीबद्ध अनेकों सर्वोच्च और विशेष लक्षणों के साथ सर्वोच्च नियंत्रक हैं, तो आपको यह अनुभूति हो जायेगी कि जीवन के युद्धों और संघर्षों को जीतने के लिए परमात्मा के साथ एक गहरा और नियमित सम्पर्क बनाना सबसे अधिक महत्वपूर्ण आधार है। उसके साथ रहो, उसके लिए रहो।

ऋग्वेद मन्त्र 1.63.4

Rigveda 1.63.4

त्वं ह त्यदिन्द्र चोदीः सखा वृत्रं यद्वज्जिन्वृष्कर्मत्रुभ्नाः ।

यद्व शूर वृषमणः पराचैर्वि दस्यूर्योनावकृतो वृथाषाट् ॥ 4 ॥

(त्वम्) आप (ह) निश्चित रूप से (त्यत) वह (ज्ञान और सम्पदा आदि) (इन्द्र) सर्वोच्च नियंत्रक (चोदीः) देता है, प्रेरित करता है (सखा) मित्रों को, श्रद्धालुओं को (वृत्रम्) वृत्तियाँ, ज्ञान के आवरण (यत्) जब (वज्जिन्) हथियारों को धारण करने वाले (वृषकर्मन्) शक्तियों और प्रसन्नता की वर्षा करने वाले (उभ्नाः) पूर्ण, नष्ट (यत्) जब (ह) निश्चित रूप से (शूर) बहादुर (सभी शत्रुओं को नष्ट करने के लिए) (वृषमणः) मन से वर्षा करने वाला (सब पर प्रसन्नता की) (पराचैः) दूर रखता है (दस्यून्) बुराईयाँ, धूर्तता (योनौ) उसके उद्गम स्थान तक (व्यकृतः) विशेष रूप से नष्ट करता है (वृथाषाट्) स्वभाव से सहनशील, धैर्यवान्।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

व्याख्या :-

परमात्मा अपने मित्रों और श्रद्धालुओं के लिए विशेष रूप से क्या करते हैं?

सर्वोच्च नियंत्रक, परमात्मा! आपने निश्चित रूप से अपने सभी मित्रों और श्रद्धालुओं को वह ज्ञान और सम्पदा दी है।

आप वृत्तियों और अज्ञानता के आवरणों को पूरी तरह से नष्ट कर देते हो।

आप सभी वज्रों अर्थात् समाधानों के धारक हो। आप शक्तियों और प्रसन्नताओं की वर्षा करते हो।

आप निश्चित रूप से बहादुर हो (सभी शत्रुओं का नाश करने के लिए) मन के साथ सब पर प्रसन्नता की वर्षा करते हो; आप दुर्गुणों और दुष्टताओं को उनके उद्गम स्थान पर ही विशेष रूप से नष्ट करते हो। आप स्वभाव से ही धैर्यवान् और सहनशील हो।

जीवन में सार्थकता :-

परमात्मा की दया कैसे प्राप्त की जाये?

परमात्मा की दया का क्रम पूरी तरह से स्पष्ट है। परमात्मा ने अपने ज्ञान और शक्तियों का खजाना सबके लिए खुला रखा है। परन्तु परमात्मा के साथ एक सामान्य किन्तु नियमित सम्बद्धता हमारे अन्दर और बाहर से बुराईयों और दुष्ट प्रवृत्तियों का नाश कर देती है। इस प्रकार, एक उच्च और सुन्दर जीवन सदैव शांति और प्रगति के साथ जीवन जीता है।

ऋग्वेद मन्त्र 1.63.5

Rigveda 1.63.5

त्वं ह त्यदिन्द्रारिष्ण्यन्दृङ्घस्य चिन्मर्तानामजुष्टौ।

व्य॑स्मदा काष्ठा अर्वते वर्धनेव वज्रिच्छन्थिह्यमित्रान् ॥ ५ ॥

(त्वम्) आप (ह) निश्चित रूप से (त्यत्) वह (ज्ञान और सम्पदा आदि) (इन्द्र) सर्वोच्च नियंत्रक (अरिष्ण्यन्) हिंसा और बुराईयों की इच्छा न करने वाला (दृङ्घस्य) मजबूत, दृढ़ (वृत्तियाँ, बुराईयाँ) (चित्) भी (मर्तानाम्) मरणशील मनुष्यों का (अजुष्टौ) पृथक होने पर (वि) पृथक (अस्मत्) हमारे से (काष्ठा) दिशाओं की ओर (अर्वते) हमारी इन्द्रियों के लिए, बलों के लिए (घनेव) बादलों को छिन्न-भिन्न करने के समान (वज्रिन्) वज्र वाला (परमात्मा) (श्नथिहि) नष्ट करता है (अमित्रान्) अमित्रों, असामाजिक लोगों को।

व्याख्या :-

परमात्मा हमें दुर्गुणों और असामाजिक तत्त्वों से कैसे बचाते हैं?

सर्वोच्च नियंत्रक, परमात्मा! सभी वज्र धारण करते हुए आप निश्चित रूप से यह कामना करते हो कि ज्ञान और सम्पदा का उपयोग हिंसा और बुराईयों के लिए नहीं होना चाहिए। इसीलिए आप हमें बलशाली और दृढ़ वृत्तियों से पृथक कर देते हो।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



जब एक मरणशील मनुष्य अमित्र और असामाजिक तत्त्व की तरह कार्य करता है, वह समाज से पृथक कर दिया जाता है। परमात्मा अपने सर्वोच्च वज्र से ऐसे दुष्ट को बादलों की तरह छिन्न-भिन्न कर देते हैं। इस प्रकार वे हमारी इन्द्रियों के लिए सभी मार्ग खोल देते हैं।

जीवन में सार्थकता :-

परमात्मा की दया को किस प्रकार आकृष्ट किया जाये?

इस बात में कोई सन्देह नहीं होना चाहिए कि परमात्मा अपने दिये गये ज्ञान और सम्पदा का दुरुपयोग निश्चित रूप से ना पसन्द करेंगे। अतः वे हम सबके लिए इच्छा करते हैं कि हम दुर्गुणों से पूरी तरह मुक्त रहें। एक बार जब हम इसका अनुसरण करने लगते हैं तो परमात्मा हमारी इन्द्रियों के लिए सभी दिशाएँ खोल देते हैं। हमारी प्रगति के लिए परमात्मा सभी दुष्ट ताकतों को बादलों की तरह छिन्न-भिन्न कर देते हैं। अतः यदि कोई परमात्मा की दया को आकृष्ट करना चाहे तो उसे स्वयं को सदैव बुराईयों से मुक्त रखना होगा।

ऋग्वेद मन्त्र 1.63.6

Rigveda 1.63.6

त्वां ह त्यदिन्द्रार्णसातौ स्वर्मीळहे नर आजा हवन्ते।
तव स्वधाव इयमा समर्य ऊतिर्वजेष्वतसाय्या भूत् ॥ 6 ॥

(त्वाम्) आप (ह) निश्चित रूप से (त्यत) वह (ज्ञान व सम्पदा आदि) (इन्द्र) सर्वोच्च नियंत्रक (र्णसातौ) विजय के लिए सक्रिय (भिन्न-भिन्न परिस्थितियों में, युद्धों में) (स्वर्मीळहे) प्रसन्नता और सुखों को कमाने वाला (नरः) प्रगतिशील मनुष्य (आजौ) युद्धों में, कठिनाईयों में (हवन्ते) पुकारता है, आहवान करता है (तव) आपका (स्वधावः) आत्मा का धारक, परमात्मा (इयम्) यह (समर्य) युद्धों में कठिनाईयों में (ऊतिः) संरक्षण (वाजेषु) शक्तियों के साधन के लिए (अतसाय्या) हमें प्राप्त करवाता है (भूत्) हो।

व्याख्या :-

हमें युद्धों में किसका संरक्षण मांगना चाहिए?

निश्चित रूप से वे सभी प्रगतिशील मनुष्य, आपके ज्ञान और सम्पदा को धारण करने वाले, सभी युद्धों और कठिनाईयों को जीतने में सक्रिय तथा प्रसन्नताओं और सुख-सुविधा की चाहना करने वाले, आपको अर्थात् सर्वोच्च नियंत्रक परमात्मा को बुलाते हैं और आहवान करते हैं। हमारी आत्मा के धारक होने के नाते, आप युद्धों और कठिन परिस्थितियों में अपनी संरक्षण शक्तियों को हमारी शक्ति के रूप में उपलब्ध कराते हो।

जीवन में सार्थकता :-

मननशील व्यक्ति कौन है?

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

एक सामान्य गृहस्थ और भौतिकवादी जीवन सदैव युद्धों और कठिन परिस्थितियों से भरा रहता है। मनुष्य के मन में प्रतिक्षण विवादास्पद विचार उत्पन्न होते रहते हैं। छोटी हो या बड़ी, निर्णय लेने की या युद्ध की परिस्थितियों में मननशील मनुष्य परमात्मा को ही पुकारते हैं और उसकी शक्तियों का आह्वान करते हैं। जो लोग यह महसूस करते हैं और विश्वास करते हैं कि प्रत्येक ज्ञान और सम्पदा भगवान के द्वारा दी गई है, वे मननशील मनुष्य हैं। वे परमात्मा को अपने मन और ज्ञान में सदैव बनाये रखते हैं जिससे वे हर परिस्थिति में विजयी होते हैं। वे बुद्धिमत्ता पूर्वक बड़ी मेहनत करते हैं। परन्तु साथ ही अपने सभी प्रयास परमात्मा को समर्पित कर देते हैं। दूसरी तरफ परमात्मा की विद्यमानता और सर्वोच्चता को अनुभव न करना और विश्वास न करना सभी समस्याओं, कठिनाईयों, युद्धों और पराजय का कारण है।

ऋग्वेद मन्त्र 1.63.7

Rigveda 1.63.7

त्वं ह त्यदिन्द्र सप्त युध्यन्पुरो वज्जिन्युरुकुत्साय दर्दः।
बर्हिन् यत्सुदासे वृथा वर्गहो राजन्वरिवः पूरवे कः ॥ 7 ॥

(त्वम्) आप (ह) निश्चित रूप से (त्यत) वह (ज्ञान और सम्पदा आदि) (इन्द्र) सर्वोच्च नियंत्रक (सप्त) सात (युध्यन्) युद्धों और संग्रामों में लगा हुआ (पुरः) शहर, किले (वज्जिन्) वज्र धारण करने वाला (पुरुकुत्साय) शहरों और किलों का नाशक (दर्दः) नष्ट करता है (बर्हिनः) घास, अन्तरिक्ष (न) जैसे कि (यत्) वह (सुदासे) उत्तम श्रद्धालु के लिए (वृथा) आकस्मिक (वर्क) नष्ट करता है (अंहः) पाप को (राजन्) सर्वोच्च राजा, परमात्मा (वरिवः) सम्पदा (पूरवे) जो पूर्ण करता है (त्याग से) (कः) करता है।

व्याख्या :-

युद्ध में परमात्मा किसकी तरफ से लड़ते हैं?

परमात्मा किसको गौरवशाली सम्पदा देते हैं?

सर्वोच्च नियंत्रक, परमात्मा! सभी वज्रों को धारण करते हुए आप निश्चित रूप से पुरुकुत्साय के लिए लड़ते हो जो बुराईयों और शहरों के किलों का नाश करने वाला होता है, जो सात किलों के साथ युद्धों और संघर्षों में शामिल रहता है।

अपने श्रद्धालुओं के लिए आप अचानक पापों को घास के तिनके की तरह नष्ट कर देते हो और उसके एक स्पष्ट और शुद्ध आकाश की तरह बना देते हो।

सर्वोच्च राजन, परमात्मा! आप ऐसे व्यक्ति के लिए गौरवशाली सम्पदा सुनिश्चित करते हो जो अपनी सम्पदा को त्याग कार्यों में पूर्ण करता है।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



जीवन में सार्थकता :-

परमात्मा एक पुरुकृत्साय की सहायता क्यों करता है?

पुरुकृत्साय एक बहादुर व्यक्ति होता है। परमात्मा, दिव्य शक्ति, ऐसे व्यक्ति पर एक जीतने वाले घोड़े की तरह विश्वास करते हैं और इसीलिए सभी दिव्य शक्तियाँ ऐसे व्यक्ति के लिए संघर्षशील होती हैं।

ऋग्वेद मन्त्र 1.63.8

Rigveda 1.63.8

त्वं त्यां न इन्द्र देव चित्रामिषमापो न पीपयः परिज्मन्।
यया शूर प्रत्यस्मभ्यं यंसि त्मनमूर्ज न विश्वध क्षरध्यै ॥ ८ ॥

(त्वम्) आप (त्यम्) उस (न:) हमारे (इन्द्र) सर्वोच्च नियंत्रक (देव) दिव्य प्रकाश (ज्ञान और सम्पदा) का देने वाला (चित्राम) ज्ञान और सुखों को बढ़ाने वाला (इषम्) इच्छाएँ आदि (आपो) जल (न) जैसे कि (पीपयः) हमें पिलाता है (परिज्मन्) धरती पर चारों तरफ धूमने वाला (यया) जिससे (शूर) शत्रुओं का नाशक, परमात्मा (प्रति – यंसि से पूर्व लगाकर) (अस्मभ्यम्) हमारे लिए (यंसि – प्रति यंसि) हमें प्राप्त करवाता है (त्मनम्) आत्मा (उर्जम्) ऊर्जा (आत्मा की) (न) जैसे कि (विश्वधः) समूची सृष्टि का धारक, परमात्मा (क्षरध्यै) बुराईयों को कमजोर करता है।

व्याख्या :-

दिव्य ज्ञान और सम्पदा का देने वाला कौन है?

सर्वोच्च शक्ति, परमात्मा! आप दिव्य प्रकाश (ज्ञान के) तथा सम्पदा के देने वाले हो जैसे सभी गतिशील प्राणियों को धरती पर पीने के लिए जल मिलता है। इससे हमारे बीच उस ज्ञान और सम्पदा के लिए इच्छाएँ बढ़ती हैं जिसके द्वारा आप, शत्रुओं के नाशक, आत्मा की ऊर्जा उपलब्ध कराते हो जिससे हम उन बुराईयों को कमजोर कर सकें, जैसे समूची सृष्टि के धारक होने के नाते आप करते हो।

जीवन में सार्थकता :-

दिव्य ज्ञान और सम्पदा का क्या उद्देश्य है?

परमात्मा के हर देन का उद्देश्य बुराईयों को कमजोर करना और नष्ट करना। परन्तु वर्तमान युग इन बुराईयों को बढ़ाने की एक गम्भीर गलती कर रहा है। इसलिए वर्तमान युग मानसिक असंतुलन, अपराधों और रोगों से ग्रस्त है। अतः मननशील व्यक्तियों को लोगों को इन बुराईयों को कमजोर करने की प्रेरणा दी जानी चाहिए और उच्च चेतना के स्तर पर जीने की दिव्य परम्परा का विस्तार करना चाहिए।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

ऋग्वेद मन्त्र 1.63.9

Rigveda 1.63.9

अकारि त इन्द्र गोतमेभिब्रह्माणयोक्ता नमसा हरिभ्याम्।
सुपेशसं वाजमा भरा नः प्रातर्मक्षु धियावसुर्जगम्यात् ॥ ९ ॥

(अकारि) किया जाता है (ते) आपका (इन्द्र) सर्वोच्च नियंत्रक (गोतमेभि:) उत्तम बुद्धिमानों के साथ तथा इन्द्रियों के नियंत्रकों के साथ (ब्रह्माणि) प्रशंसनीय वाणियाँ (अ उक्ता) सदैव कहा जाता है (नमसा) आदर और नमन के साथ (हरिभ्याम्) इन्द्रियों के माध्यम से (सुपेशसम्) एक सुन्दर छवि प्रस्तुत करते हुए (वाजम) बल (आभर) पूरी तरह से भरिये (नः) हमारे लिए (प्रातः मक्षु) प्रातःकाल अतिशीघ्र (धियावसुः) दिव्य ज्ञान में जीने वाले (जगम्यात्) प्राप्त हों।

व्याख्या :-

किस प्रकार के लोग परमात्मा की प्रशंसा करते हैं?

सर्वोच्च नियंत्रक, परमात्मा! आपकी प्रशंसनीय वाणियों का उत्तम विद्वान् और इन्द्रियों के नियंत्रक अपनी इन्द्रियों के माध्यम से सदैव उच्चारण करते हैं। ऐसे लोग परमात्मा तथा उसकी पूजा का सुन्दर रूप प्रस्तुत करते हैं और हमें पूरी तरह से बल से भर देते हैं।

हम प्रातःकालीन वेला में बौद्धिक कार्यों से सम्पदा प्राप्त करें और दिव्य ज्ञान की संगति वाले लोगों से ज्ञान प्राप्त करें।

जीवन में सार्थकता :-

महान् और दिव्य लोग अन्य लोगों को किस प्रकार प्रेरित करते हैं?

बेशक कोई भी व्यक्ति परमात्मा की पूजा कर सकता है। परन्तु अलग—अलग प्रकार की तपस्याएँ करने वाले विद्वान् लोग परमात्मा की पूर्ण पूजा करते हैं, अपने पूर्ण शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक बल के साथ। केवल ऐसी ही पूजा अन्य लोगों के लिए प्रेरणा बनती है। ऐसे महान् लोग परमात्मा में मिल जाना चाहते हैं या उसकी अनुभूति प्राप्त करना चाहते हैं। जबकि सामान्य लोग, ऐसी प्रेरणाओं के साथ, मानसिक संतुलन, द्वन्द रहित और दिन—प्रतिदिन की गृहस्थ समस्याओं और संकटों को बिना अधिक कठिनाई के समाधान करने की योग्यता के साथ परमात्मा की पूजा करते हैं जिससे वे शांति पूर्वक जीवन जी सकें।

इसीलिए प्रत्येक व्यक्ति प्रतिदिन ऐसे महान् और दिव्य विद्वानों की संगति की प्रार्थना करता है।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

आज्ञा

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

ऋग्वेद मण्डल-1 सूक्त 64

ऋग्वेद मन्त्र 1.64.1

Rigveda 1.64.1

वृष्णे शर्धाय सुमखाय वेधसे नोधः सुवृक्तिं प्रभरा मरुदभयः।
अपो न धीरो मनसा सुहस्त्यो गिरः समंजे विदथेष्वा भुवः॥ १ ॥

(वृष्णे) वर्षा करने वाला (प्रसन्नता और सुख—सुविधाओं की), परमात्मा (शर्धाय) सभी शक्तियों का शक्ति पुंज, परमात्मा (सुमखाय) सारी सृष्टि का यज्ञ की तरह प्रबन्ध करने वाला, परमात्मा (वेधसे) इस सृष्टि का निर्माता, परमात्मा (नोधः) परमात्मा की प्रशंसा में वाणियाँ धारण करने वाला (सुवृक्तिम्) उत्तम गतिविधियों के कर्त्ता बनो (प्रभरा) पूरी तरह से धारण करता है (मरुदभयः) वायु की संगति, प्राण (अपः) कार्य (न) जैसे कि (धीरः) धैर्यवान्, सहनशील (मनसा) मन से (सुहस्त्यः) उत्तम हाथों, कला, योग्यताओं के साथ (गिरः) वाणियाँ (समंजे) मैं प्रगट करता हूँ (विदथेषु) ज्ञान के यज्ञ में (आ भुवः) सभी विषयों और परिस्थितियों में।

व्याख्या :-

परमात्मा किस प्रकार एक सर्वव्यापक यज्ञ कर रहे हैं?

इस सर्वव्यापक यज्ञ में भाग लेने वाले व्यक्ति से क्या आशा की जाती है?

परमात्मा प्रसन्नताओं और सुख—सुविधाओं की वर्षा करने वाले हैं। वे सभी शक्तियों के शक्ति पुंज हैं। वे समूची सृष्टि का प्रबन्धन एक यज्ञ की तरह करते हैं। वे सृष्टि के निर्माता हैं। जो व्यक्ति परमात्मा की प्रशंसा में वाणियों को धारण करता है, उससे यह अपेक्षित होता है कि वह वायु, प्राणों की संगति को पूरी तरह से धारण करे, जिससे वह उत्तम गतिविधियों का करने वाला बन सके। उसके कार्य धैर्यशील और सहनशील विशेषज्ञ की तरह होने चाहिए जो उत्तम हाथों, कला, योग्यता तथा उत्तम मन के साथ करता है।

परमात्मा ऐसे व्यक्ति के लिए वैदिक विवेक की वाणियाँ प्रकट करते हैं जिससे वह उनका प्रयोग सभी विषयों और परिस्थितियों में ज्ञान के यज्ञ की तरह कर सके।

जीवन में सार्थकता :-

नोधाः कौन है?

जो व्यक्ति सृष्टि के यज्ञ में नोधाः की तरह भाग लेता है, सदैव परमात्मा की प्रशंसा करते हुए, उसे महान् और दिव्य वाणियाँ समर्पित की जाती हैं जिससे वह सामान्य लोगों के लिए वैदिक विवेक का विकास कर सके। यह दिव्य अमीरी है और नोधाः बनने की दिव्य महानता है जिसमें एक व्यक्ति दिव्य वाणियों को धारण करते हुए परमात्मा के व्यापक समष्टि यज्ञ में भाग लेता है। वह सार्थक रूप से परमात्मा का अनुष्ठान कर्त्ता माना जाता है।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

ऋग्वेद मन्त्र 1.64.2
Rigveda 1.64.2

ते जज्ञिरे दिव ऋष्वास उक्षणो रुद्रस्य मर्या असुरा अरेपसः ।
पावकासः शुचयः सूर्या इव सत्वानो न द्रप्सिनो घोरवर्पसः ॥ २ ॥

(ते) वे (नोधाः) (जज्ञिरे) पैदा हुए और विकसित हुए (दिवः) दिव्य प्रकाशित (ऋष्वासः) देखने योग्य तथा ज्ञान प्राप्त करने योग्य जीवन (उक्षणः) सभी को प्रसन्नता देने वाला (रुद्रस्य मर्या:) रुद्र का श्वास (असुराः) प्राणों की ब्रह्माण्डीय ऊर्जा (अरेपसः) पापों, दुर्गुणों और गल्तियों से दूर (पावकासः) सभी व्यक्तियों और स्थानों को पवित्र करने वाला (शुचयः) कमाई में पवित्र (सूर्या इव) सूर्य की तरह, सबको प्रकाश देने वाला (सत्वानः) ओज और सत्त्व का धनी (न द्रप्सिनः) मोह बन्धन से मुक्त (घोर वर्पसः) उच्च तेजस्विता वाला ।

व्याख्या :-

नोधाः के क्या लक्षण हैं? (1)

अन्तिम मंत्र ऋग्वेद 1.64.1 के अनुसार नोधाः वह व्यक्ति होता है दिव्य वाणियों को धारण करता है और ब्रह्माण्ड के दिव्य यज्ञ में भाग लेता है।

ऐसे लोग निम्न लक्षणों के साथ ही पैदा होते हैं और विकसित होते हैं :-

1. दिवः – दिव्य प्रकाशित
2. ऋष्वासः – देखने योग्य तथा ज्ञान प्राप्त करने योग्य जीवन
3. उक्षणः – सभी को प्रसन्नता देने वाला
4. रुद्रस्य मर्या: – रुद्र का श्वास
5. असुराः – प्राणों की ब्रह्माण्डीय ऊर्जा
6. अरेपसः – पापों, दुर्गुणों और गल्तियों से दूर
7. पावकासः – सभी व्यक्तियों और स्थानों को पवित्र करने वाला
8. शुचयः – कमाई में पवित्र
9. सूर्या इव – सूर्य की तरह, सबको प्रकाश देने वाला
10. सत्वानः – ओज और सत्त्व का धनी
11. न द्रप्सिनः – मोह बन्धन से मुक्त
12. घोर वर्पसः – उच्च तेजस्विता वाला

ऋग्वेद 1.64.3 में जारी

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



जीवन में सार्थकता : -

यह लक्षण कैसे अर्जित किये जाते हैं?

वास्तव में यह सभी लक्षण नोधा: होने के परिणाम हैं। इनका पीछा नहीं किया जा सकता। भगवान् स्वयं इनका विकास करते हैं, दिव्य फल की तरह और दिव्य अनुग्रह की तरह। एक नोधा: को यह लक्षण जन्म से भी मिले होते हैं।

अज्ञानता, कठिनाईयों और उथल-पुथल से भरे हुए अन्धकारमय युग में ऐसे लोग आशा की एक किरण दिखा सकते हैं। अतः या तो स्वयं नोधाः बनो या किसी नोधाः का अनुसरण करो।

ऋग्वेद मन्त्र 1.64.3

Rigveda 1.64.3

युवानो रुद्रा अजरा अभोग्धनो ववक्षुरधिगावः पर्वता इव।
दृळहा चिद्विश्वा भुवनानि पार्थिवा प्रच्यावयन्ति दिव्यानि मज्मना ॥ 3 ॥

(युवानः) सदैव युवा, ऊर्जावान्, शुभ गुणों और बुराईयों का मिश्रण और अलग करने वाला (रुद्रः) सक्रिय उत्प्रेरक (अजरा:) आयु में न बढ़ने वाला (अभोग्धनः) दूसरों को देने के स्थान पर पहले न खाने वाला (ववक्षु) सभी पहलुओं में प्रगति करने वाला (अधिगावः) बिना बाधा के कार्य करने वाला (जिसे कोई भी बाधित नहीं कर सकता) (पर्वता इव) पर्वतों के समान (मजबूत और लगातार) (दृढ़हा चित्) दृढ़ और निश्चय बुद्धि वाला (विश्वा भुवनानि पार्थिवा प्रच्यावयन्ति) जो सभी भौतिक पदार्थों को गतिमान कर सकता है (दिव्यानि) दिव्य शरीर (मज्जना) अपने पवित्र करने वाले बल के साथ।

व्याख्या :-

नोधा: के क्या लक्षण होते हैं? (2)

यह मन्त्र नोधाः के लक्षणों की सूची में कछु और निम्न लक्षण जोड़ता है :-

13. युवानः – सदैव युवा, ऊर्जावान, शुभ गुणों और बुराईयों का मिश्रण और अलग करने वाला
 14. रुद्राः – सक्रिय उत्प्रेरक
 15. अजराः – आयु में न बढ़ने वाला
 16. अभोगधनः – दूसरों को देने के स्थान पर पहले न खाने वाला
 17. ववक्षु – सभी पहलुओं में प्रगति करने वाला
 18. अधिग्रावः – बिना बाधा के कार्य करने वाला (जिसे कोई भी बाधित नहीं कर सकता)
 19. पर्वता इव – पर्वतों के समान (मजबूत और लगातार)
 20. दृढ़हा चित् – दृढ़ और निश्चय बुद्धि वाला
 21. विश्वा भुवनानि पार्थिवा प्रच्यावयन्ति – जो सभी भौतिक पदार्थों को गतिमान कर सकता है
 22. दिव्यानि मज्जना – अपने पवित्र बल के साथ दिव्य शरीर

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



जीवन में सार्थकता :-

एक नोंदा: किस प्रकार भगवान का प्रतिनिधित्व करता है?

नोंदा: के बारे में यह छवि बनती है कि वह भगवान की शक्तियों और क्षमताओं का प्रतिनिधित्व करता है। वह धरती पर केवल भौतिक शक्तियों को ही अपने इशारे पर ही नहीं चलाता अपितु वह दिव्य शरीरों और दिव्य शक्तियों को चलाने के लिए भी शक्ति सम्पन्न होता है। सभी महान् और दिव्य लक्षणों के बावजूद वह अपने व्यक्तिगत अस्तित्व के अहंकार और इच्छाओं से पूरी तरह मुक्त रहता है। वह अपने जीवन के लिए कार्य नहीं करता। वह परमात्मा के साथ मिलकर सबके कल्याण के लिए कार्य करता है।

सूक्त -

(विश्वा भुवनानि पार्थिवा प्रच्यावयन्ति) – जो सभी भौतिक पदार्थों को गतिमान कर सकता है।

ऋग्वेद मन्त्र 1.64.4

Rigveda 1.64.4

चित्रैरजिंभिर्पुषे व्यंजते वक्षःसु रुक्माँ अधि येतिरे शुभे ।

अंसेष्वेषां नि मिमृक्षुर्ऋष्ट्यः साकं जज्ञिरे स्वधया दिवो नरः ॥ 4 ॥

(चित्रैः) अद्भुत (अजिंभिः) रूप तथा भाव (वपुषे) शरीर की सुन्दरता के लिए (व्यंजते) शोभान्वित करता है (वक्षःसु) अपनी छाती पर, हृदय पर (रुक्मान्) चमकीला (अधि येतिरे) बलशाली करता है (शुभे) शोभा, महिमा के लिए (अंसेषु) कंधों पर (एषाम्) इनके (नि मिमृक्षु) चमकता है, शुद्ध करता है (ऋष्ट्यः) शत्रुओं का नाश करने के लिए वज्र, सभी गतिविधियाँ (साकम्) साथ में (जज्ञिरे) उत्पन्न हुए (स्वधया) स्व अर्थात् आत्मा को धारण करने की शक्ति (दिवः) दिव्य, प्रकाशमान् (नरः) प्रगतिशील व्यक्ति ।

व्याख्या :-

सेनानी देखने में और शक्तियों में कैसे लगते हैं?

प्राण हमारे शरीर, मन और आत्मा के लिए किस प्रकार लाभदायक हैं?

यह मन्त्र सैनिक पुरुषों और प्राणों की महिमा की व्याख्या करता है।

सैनिकों के सम्बन्ध में – वे स्वयं को अद्भुत अलंकरणों, नमूनों, रूपों और अन्य कई प्रकार से शरीर की सुन्दरता के लिए सुसज्जित करते हैं। वे अपनी छाती और हृदय पर अपनी महिमा के चिह्नों को बल के रूप में चमकाते हैं। बहादुर सैनिकों के कंधों पर शत्रुओं का नाश करने वाले वज्र चमक रहे होते हैं। वे दिव्य होते हैं और आत्मा को धारण करने के साथ-साथ एक प्रगतिशील मनुष्य की तरह जन्म लेते हैं।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

प्राणों के सम्बन्ध में – वे अपने शरीर की छवि ज्ञान से सुसज्जित करते हैं। उनके हृदय में शुद्ध संवेदनाएँ होती हैं। शरीर की सभी गतियाँ प्राणों के कंधों पर ही होती हैं। आत्मा को धारण करने की शक्ति के साथ वे प्रगति के लिए मन को प्रकाशित करने के लिए दिव्य होते हैं।

जीवन में सार्थकता :-

सैनिक दिव्य प्रकृति के कैसे होते हैं?

प्राण दिव्य प्रकृति के कैसे होते हैं?

किसी की भी सुन्दरता उसकी दिव्यता में निहित होती है। सैनिक राष्ट्र की कीमती सम्पत्ति होते हैं, क्योंकि वे शत्रुओं का नाश करने में सक्षम होते हैं और आत्मा को धारण करने की क्षमता सिद्ध करते हैं। सैनिकों के द्वारा संरक्षित होने के कारण ही असंख्य नागरिक अपने जीवन में शांति और प्रगति के साथ जी पाते हैं। देश के विकास के सभी आयाम सैनिकों के कारण ही हैं।

इसी प्रकार प्राण भी सभी जीवों के लिए और विशेष रूप से मनुष्यों के लिए अत्यन्त कीमती सम्पत्ति है। केवल प्राणों के माध्यम से ही हम अपने मन की वृत्तियाँ और आवरण नष्ट करके परमात्मा की अनुभूति के मार्ग पर अग्रसर हो सकते हैं।

ऋग्वेद मन्त्र 1.64.5

Rigveda 1.64.5

ईशानकृतो धुनयो रिशादसो वातान्विद्युतस्तविषीभिरक्रत ।

दुहन्त्यूर्धिदिव्यानि धूतयो भूमिं पिन्चन्ति पयसा परिज्जयः ॥ ५ ॥

(ईशानकृतः) सुख–सुविधाओं को उपलब्ध कराने वाले (धुनयः) कंपित करते हैं (रिशादसः) नष्ट करने वाले को नष्ट करने वाला (वातान) वायु (विद्युतः) विद्युत, करंट (तविषीभिः) बल के साथ (अक्रत) बनाते हैं (दुहन्ति) सार (अधः) थनों से, छाती से, बादलों से (दिव्यानि) दिव्य प्रकाश (धूतयः) कंपित करके (भूमिम्) धरती, शरीर (पिन्चन्ति) पीते हुए (पयसा) रस, तरल (परिज्जयः) सब जगह घूमने वाले।

व्याख्या :-

वायु और विद्युत की भौतिक संसार में क्या भूमिका है?

वायु और विद्युत की आध्यात्मिक पथ पर क्या भूमिका है?

वैज्ञानिक अर्थ – ये सबको सुख–सुविधाएँ उपलब्ध कराते हैं। ये सारे वातावरण में कम्पन पैदा कर देते हैं। वे नाशकों के नाशक हैं। वायु और विद्युत करंट परमात्मा की शक्ति से बनते हैं (इसका अर्थ है कि वायु और विद्युत रूपी दो शक्तियों का निर्माता परमात्मा है)। यह दोनों शक्तियाँ सर्वत्र घूमने फिरने वाले बादलों को कंपित करके दिव्य प्रकाश का आहरण करती हैं और सारी भूमि को पीने के लिए पानी उपलब्ध कराती हैं।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

आध्यात्मिक अर्थ – वायु और तरंगें सबको सुख उपलब्ध करवाती हैं। वे हमारी इच्छाओं और मन की वृत्तियों को कंपित कर देती हैं। वे सभी नाशकों अर्थात् बुरे विचारों और आदतों के नाशक हैं। हमारे श्वास के रूप में वायु और ज्ञान के प्रकाश के रूप में तरंगें हमारे अन्दर परमात्मा के द्वारा ही पैदा होती हैं। यह दोनों हमारे जीवन में शासन करने वाली शक्तियाँ हैं। यह दोनों एकत्रित रूप में हमारी फैली हुई इच्छाओं कंपित करके उच्च चेतना के दिव्य प्रकाश का आहरण करती हैं और हमारे शरीर को शुभ गुणों जैसे रसों का पान करने के योग्य बनाती हैं।

जीवन में सार्थकता : –

सर्वोच्च चेतना तक पहुँचने में हमारे श्वास, हमारे मेरुदण्ड और ज्ञान के प्रकाश की क्या भूमिका है? जिस प्रकार वायु और विद्युत भौतिक संसार की दो अत्यन्त महत्त्वपूर्ण शासन शक्तियाँ हैं, यही दोनों तत्त्व हमारे पूर्ण विकास – शारीरिक, मानसिक एवं आध्यात्मिक विकास के लिए समान रूप से महत्त्वपूर्ण हैं। अपने श्वासों पर इड़ा, पिंगला और सरस्वती के माध्यम से अपने मेरुदण्ड मार्ग पर चलते हुए मन को एकाग्र करना और ध्यान करने से हम उच्च चेतना का जीवन जी सकते हैं जो मस्तिष्क को प्राप्त होने वाले हमारे अनुभवों से अलग होगा। श्वासों को लम्बे समय तक रोककर रखने का अभ्यास हमें सृष्टि के दिव्य पूर्ण स्वरूप का अनुभव प्राप्त करने में सहायता कर सकता है जो हमारे सौर मण्डल से भी परे हैं जिसका हम एक छोटे से कण की भाँति हिस्सा हैं और वह सौर मण्डल स्वयं भी समूची सृष्टि का एक छोटा सा हिस्सा है। यही उच्च चेतना बल्कि सर्वोच्च चेतना है। इस प्रकार सर्वोच्च चेतना का मार्ग हमारे श्वास से ही शुरू होता है, हमारे मेरुदण्ड से गुजरता है और एक ऐसे दिव्य पथ का निर्माण कर देता है जो हमें सर्वोच्च चेतना अर्थात् परमात्मा की अनुभूति करवा सकता है।

ऋग्वेद मन्त्र 1.64.6

Rigveda 1.64.6

पिन्वन्त्यपो मरुतः सुदानवः पयो घृतवद्विदथेष्वाभुवः।

अत्यं न मिहे वि नयन्ति वाजिनमुत्सं दुहन्ति स्तनयन्त्तमक्षितम् ॥ 6 ॥

(पिन्वन्ति) पीना, भोग करना (अप:) जलों को (मरुतः) वायु, प्राण (सुदानवः) उत्तम कल्याण के लिए (पयः) तरल, जल (घृतवत) शुद्ध धी की तरह (विदथेषु) यज्ञों के लिए, ज्ञान के लिए (आभुवः) सर्वत्र व्याप्त (अत्यम) अश्व (न) जैसे कि (मिहे) सुखों की वर्षा करने के लिए (वि नयन्ति) अनेक प्रकार से शिक्षित, नियुक्त करता है (वाजिनम) गतिविधियाँ और ऊर्जा (उत्सम) कुंआ, ज्ञान का स्रोत (दुहन्ति) निकालता है, दुहता है (स्तनयन्त्तम) ध्वनि करते हुए (अक्षितम्) कभी समाप्त न होने वाले।

व्याख्या :-

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पञ्चवती वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

वायु हमारे लिए किस प्रकार लाभदायक है?

वायु जल का उपभोग करती है, सबके उत्तम कल्याण के लिए। (जल चक्र और यज्ञ चक्र का स्मरण करें)। जिस प्रकार शुद्ध तरल तेल यज्ञ में जाकर वायु के द्वारा उपभोग किया जाता है जिससे वह सर्वव्यापक हो जाये और इसका प्रभाव सर्वत्र फेल जाये। अश्वों की तरह वायु भिन्न-भिन्न प्रकार से अपनी शक्तियों को नियुक्त करती है, एक सक्रिय और ऊर्जावान व्यक्ति के लिए। कुंए की तरह धनि करते हुए वायु सदैव उपलब्ध रहने वाले प्रभावों का आहरण करती है।

जीवन में सार्थकता :-

वायु जल चक्र को सबके लिए प्रभावशाली कैसे बनाती है?

वायु यज्ञ के चक्र को सबके लिए प्रभावशाली कैसे बनाती है?

वायु प्राणायाम के चक्र और तरल वीर्य के चक्र को सबके लिए प्रभावशाली कैसे बनाती है?

वायु अनेक प्रकार से लाभदायक होती है :— वैज्ञानिक, भौतिक और आध्यात्मिक। जल चक्र वायु के सर्वोच्च वैज्ञानिक प्रयोग को प्रदर्शित करता है, जिसकी सहायता से सूर्य समुद्रों आदि में से जल को वाष्पीकृत करता है, उन्हें बादलों में परिवर्तित करता है और धरती पर वर्षा के रूप में उन्हें सर्वत्र विस्तृत करता है।

यज्ञ चक्र यह प्रदर्शित करता है कि वायु तरल पदार्थ का उपभोग करती है अर्थात् अग्नि में जलने वाले शुद्ध तेल का उपभोग करके उसके प्रभाव को वायु मण्डल में सर्वत्र फैला देती है। यज्ञ के द्वारा आध्यात्मिक प्रभाव हमारे पास वापिस आ जाते हैं। इसे वायु का यज्ञ चक्र कहा जा सकता है।

जब हमारे शरीर में यौगिक प्राणायाम के तरीकों से वायु का प्रयोग होता है तो वह हमारे शरीर के तरल वीर्य का उपभोग करके इसे दिव्य शुभ गुणों में परिवर्तित कर देती है जो सर्वत्र आशीर्वाद और शुभ कामनाओं के रूप में सबके कल्याण के लिए फैल जाते हैं। यह प्राणायाम का वायु चक्र है।

ऋग्वेद मन्त्र 1.64.7

Rigveda 1.64.7

महिषासो मायिनश्चत्रभानवो गिरयो न स्वतवसो रघुष्यदः।

मृगाइव हस्तिनः खादथा वना यदारुणीषु तविषीरयुग्मम् ॥ 7 ॥

(महिषासः) माहन्, व्यापक (मायिनः) ज्ञान धारण करने वाला (चित्रभानवः) अद्भुत चमक वाला (गिरयः न) पर्वतों की तरह, वैदिक विद्वानों की वाणियों की तरह (स्वतवसः) स्वाभाविक बल वाले, (शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक) (रघुष्यदः) साहस के साथ गति वाला (मृगः) मृग (हिरण्य) (इव) जैसे कि (हस्तिनः) हाथी (खादथा) खाते हैं (वना) वनों को (शाकाहारी भोजन) (यदारुणीषु) जिसकी उत्तम शक्तियाँ (तविषीः) बल (अयुग्मम्) जोड़ते हैं।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

व्याख्या :-

वायु की क्या शक्तियाँ और लक्षण हैं?

उन लोगों के क्या लक्षण होते हैं जो वायु पर पूरा अधिकार स्थापित कर लेते हैं?

यह मन्त्र वायु अर्थात् प्राणों की शक्तियों को सूचीबद्ध करता है तथा उन लोगों की शक्तियाँ भी बनाता है, जिन्होंने प्राणों पर अधिकार स्थापित कर लिया हो, जिन्हें मरुत कहा जाता है :-

1. महिषासः - वे माहन् और व्यापक हैं।
2. मायिनः - वे ज्ञान धारण करते हैं।
3. चित्रभानवः - वे अद्भुत चमक वाले हैं।
4. गिरयः न स्वतवसः - वे स्वाभाविक बल वाले (अर्थात् शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक) हैं। पर्वतों की तरह, वैदिक विद्वानों की वाणियों की तरह।
5. रघुष्यदः - वे साहस के साथ गतिशील होते हैं।
6. मृगा, इव, हस्तिनः खादथा, वना - वे शाकाहारी भोजन खाते हैं जैसे - मृग (हिरण) और हाथी।

वायु और मरुतों की शक्तियों और बलों के साथ प्रत्येक व्यक्ति को सम्बद्ध रहना चाहिए।

जीवन में सार्थकता :-

आध्यात्मिक प्रगति और भौतिक संसार में वायु का क्या उपयोग है?

वायु की शक्तियाँ अपार हैं। केवल महान् योगी ही अपने श्वास के माध्यम से उन पर अधिकार स्थापित करते हैं।

प्रत्येक व्यक्ति को श्वास पर ध्यान करना चाहिए, प्राणायाम के यौगिक अभ्यास का अनुसरण करना चाहिए, विशेष रूप से कुम्भक के रूप में श्वास को रोकना। इस प्रकार कोई भी व्यक्ति सरलता पूर्वक वायु के लक्षणों का विकास कर सकता है :— आध्यात्मिक अनुभूति में प्रगति के लिए, मानसिक संतुलन बनाये रखने के लिए और जीवन की सभी कठिनाईयों और उथल—पुथल का समाधान करने के लिए। भौतिक रूप में भी वायु का विद्युत और जल के साथ वैज्ञानिक प्रयोग करके भूमि पर, जल में और वायु में भिन्न—भिन्न प्रकार के वाहन विकसित करके चलाने में प्रयोग किया जाता है।

ऋग्वेद मन्त्र 1.64.8

Rigveda 1.64.8

सिंहा इव नानदति प्रचेतसः पिशा इव सुपिशो विश्ववेदसः।

क्षपो जिन्वन्तः पृष्टीभिर्त्रष्टिभिः समित्सबाधः शवसाहिमन्यवः ॥ 8 ॥

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



(सिंहा इव) शेरों की तरह (नानदति) गर्जना करते हैं और दावा करते हैं (प्रचेतसः) ज्ञान में प्रकाशित, प्रकृति की प्रकृति को जानने वाले (पिशाः इव) हिरण पर सफेद दाग की तरह (सुपिशः) शारीरिक झलक और ज्ञान में सुन्दर (विश्ववेदसः) शरीर और मन में ऊर्जाएं धारण करने वाले (क्षपः) शत्रुओं का नाशक (जिन्चन्तः) शुभ गुणों से प्रेम करने वाला और उनकी वृद्धि करने वाला (पृष्टीभिः) प्रसन्नता की वर्षा करने वाला (ऋष्टिभिः) वज्रों के साथ (समित् सबाधः) शत्रुओं को सीमित करने वाला (शवसा) शक्ति के साथ (अहिमन्यवः) ज्ञान को प्राप्त करता है और देता है।

व्याख्या :-

मरुत अर्थात् श्वास नियंत्रण करने वाले योगियों की क्या शक्तियाँ हैं?

मरुत वे लोग हैं जो प्राणायाम के यौगिक अभ्यासों से वायु पर पूर्ण नियंत्रण स्थापित कर लेते हैं। उनमें निम्न लक्षण विकसित हो जाते हैं :-

1. सिंहा इव नानदति – वे शेरों की तरह गर्जना करते हैं और दावा करते हैं।
2. प्रचेतसः – वे ज्ञान में प्रकाशित होते हैं और प्रकृति की प्रकृति को जानते हैं।
3. पिशाः इव सुपिशः – वे हिरण पर सफेद दाग की तरह शारीरिक झलक और ज्ञान में सुन्दर होते हैं।
 4. विश्ववेदसः – वे शरीर और मन में ऊर्जाएं धारण करते हैं।
 5. क्षपः – वे शत्रुओं के नाशक होते हैं।
 6. जिन्चन्तः – वे शुभ गुणों से प्रेम करने वाले और उनकी वृद्धि करने वाले होते हैं।
 7. पृष्टीभिः – वे प्रसन्नता की वर्षा करते हैं।
 8. ऋष्टिभिः समित् सबाधः – वे वज्रों के साथ शत्रुओं को सीमित करने वाले होते हैं।
 9. शवसा अहिमन्यवः – वे शक्ति को प्राप्त करते हैं और ज्ञान देते हैं।

जीवन में सार्थकता :-

एक मरुत किस प्रकार जीवन जीता है और प्रगति करता है?

प्राणायाम और ध्यान की लम्बी और लगातार साधनाओं के बाद एक वास्तविक योगी आध्यात्मिक गुरु बन जाता है। वह शक्तिशाली होता है परन्तु अपने जीवन में सीमित रहता है, पूरी तरह से संतुष्ट और समस्यारहित। कोई भी उसके मार्ग पर बाधाएँ उत्पन्न नहीं कर सकता। यहाँ तक कि प्रकृति भी उसके लिए कठिनाईयाँ पैदा नहीं करती। एक स्थिर बुद्धि के साथ वह समस्याओं और बाधाओं की परवाह किये बिना अपने पथ पर प्रगतिशील रहता है। वह अपने जीवन का ज्ञान बिना किसी शर्त के अन्यों को देता है। वह आकर्षण और प्रेरणा का स्रोत बन जाता है।

एक वास्तविक योगी बनने के लिए एक वास्तविक योगी का अनुसरण करो।

ऋग्वेद मन्त्र 1.64.9

Rigveda 1.64.9

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

रोदसी आ वदता गणश्रियो नृषाचः शूराः शवसाहिमन्यवः ।
आ वन्धुरेष्वमतिर्न दर्शता विद्युन्त तस्थौ मरुतो रथेषु वः ॥ ९ ॥

(रोदसी) द्युलोक अर्थात् आकाशीय अन्तरिक्ष तथा भूलोक अर्थात् भूमि (आ वदत) आओ और उपदेश करो, विद्यमान रहो (मेरे जीवन में) (गणश्रियः) वर्गों में भिन्न-भिन्न (नृषाचः) लोगों की सेवा करने में (शूराः) बहादुर (शवसा) शक्ति के साथ (अहिमन्यवः) ज्ञान को प्राप्त करता है और देता है (आ) सभी दिशाओं में (वन्धुरेषु) बन्धन में (अमतिः नः) उत्तम रूप की तरह (दर्शता) देखने योग्य (विद्युत् नः) ऊर्जा, ज्ञान की तरह (तस्थौ) विद्यमान है (मरुतः) वायु, वायु के उपाशक (रथेषु) रथ पर, इस शरीर पर (वः) आपके ।

व्याख्या :-

वैज्ञानिक और आध्यात्मिक रूप से वायु हमारे लिए किस प्रकार से महत्त्वपूर्ण है?

वैज्ञानिक : वायु हमारे जीवन में द्युलोक अर्थात् अन्तरिक्ष स्थान और भूलोक अर्थात् भूमि से उपलब्ध होती रहे। वायु हमारे जीवन के लिए एक विशेष तत्त्व है जो लोगों को कार्य करने में सक्षम बनाने के साथ उनकी सेवा करती है। यह उन्हें शक्तिशाली, बहादुर और ज्ञान अर्जित करने में सक्षम बनाती है। अपने उत्तम रूप में यह विद्युत करंट के रूप में ऊर्जा है जो प्रत्येक वाहन में विद्यमान है अर्थात् जीवित प्राणी या मशीनों से चलने वाले वाहन।

आध्यात्मिक : एक सच्चा योगी अपने जीवन में दोनों लोकों अर्थात् अन्तरिक्ष और भूमि की विद्यमानता का प्रदर्शन करता है। यह दोनों लोक उसकी शारीरिक सुदृढता और मानसिक बुद्धि के रूप में दिखाई देते हैं। ऐसे योगी शरीर और मन में वायु की तरह हल्के होते हैं। यह हल्कापन ही उन्हें ज्ञान प्राप्त करने और सबको देने के योग्य बनाता है। उनके जीवन में वायु प्रतिक्षण विद्यमान और अनुभूति करवाने वाली प्रबल ताकत के रूप में होती है।

जीवन में सार्थकता :-

भौतिक और आध्यात्मिक प्रगति को साथ-साथ किस प्रकार सुनिश्चित करें?

वायु हमारे जीवन का प्रभावशाली तत्त्व है। वायु के बिना हम निर्जीव पदार्थ बन जायेंगे। अतः अपने जीवन को सफल करने के लिए हमें लगातार और लम्बी प्राणायाम साधनाओं के माध्यम से इस तत्त्व का विशेषज्ञ होना चाहिए। इससे हमारे जीवन में गुणात्मक सुधार होगा और हम आध्यात्मिक पथ पर प्रगति कर पायेंगे।

ऋग्वेद मन्त्र 1.64.10

Rigveda 1.64.10

विश्ववेदसो रयिभि: समोकसः संमिश्लासस्तविषीभिर्विरणिः ।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



अस्तार इषुं दधिरे गभस्त्योरनन्तशुष्मा वृषखादयो नरः ॥ 10 ॥

(विश्ववेदसः) सबका ज्ञाता (रयिभिः) गौरवशाली सम्पदा (समोक्सः) के साथ जीता है (संमिश्लासः) संयुक्त होकर (तविषीभिः) बल के साथ (विरप्तिनः) महान् बनता है (अस्तारः) शत्रुओं को दूर भगाने वाला (इषुम्) बाण, इच्छाएँ (दधिरे) धारण करता है (गभस्त्यः) दोनों बांहों में (अनन्तशुष्मः) असीम शक्तियाँ (वृषखादयः) वह भोजन खाता है जो रस उत्पन्न करता है (शाकाहारी भोजन) (नरः) प्रगतिशील मनुष्य ।

व्याख्या :-

मरुत लोग वास्तविक और प्रगतिशील मानव कैसे बन जाते हैं?

वास्तविक और प्रगतिशील मानव बनने के लिए मरुत लोग अपने जीवन में निम्न लक्षण विकसित कर लेते हैं :-

1. विश्ववेदसः — वे सबके ज्ञाता बन जाते हैं।
2. रयिभिः समोक्सः — वे गौरवशाली सम्पदा के साथ जीते हैं।
 3. संमिश्लासः तविषीभिः विरप्तिनः — वे बल के साथ संयुक्त होकर महान् बनते हैं।
 4. अस्तारः — वे शत्रुओं को दूर भगाते हैं।
 5. इषुम् दधिरे गभस्त्यः — वे दोनों हाथों में बाण और इच्छाएँ धारण करते हैं।
 6. अनन्तशुष्मः — वे असीम शक्तियाँ रखते हैं।
 7. वृषखादयः — वे ऐसा भोजन खाते हैं जो रस उत्पन्न करता है। (शाकाहारी भोजन)

जीवन में सार्थकता :-

विशेष शक्तियाँ कैसे प्राप्त करें?

जब कोई व्यक्ति मरुत बनता है तो वह विशेष शक्तियों के साथ एक श्रेष्ठ व्यक्तित्व के अनेकों लक्षण प्राप्त कर लेता है और जीवन की भौतिक और आध्यात्मिक यात्रा पर एक प्रगतिशील मानव बन जाता है।

ऋग्वेद मन्त्र 1.64.11

Rigveda 1.64.11

हिरण्ययेभिः पविभिः पयोवृध उज्जिघन्त आपथ्योऽ न पर्वतान् ।

मखा अयासः स्वसृतो ध्रुवच्युतो दुध्रकृतो मरुतो भ्राजदृष्टयः ॥ 11 ॥

(हिरण्ययेभिः) सोने की तरह चमकने वाले (पविभिः) वाणियों के साथ, पवित्र पहियों के साथ, गतियों के साथ (पयोवृधः) जल, रस बढ़ाता है (उज्जिघन्तः) बाधाओं का नाश करता है (आपथ्यः) पथ पर

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

चलते हुए (न) जैसे कि (पर्वतान) पर्वत (मखा) यज्ञ के लिए (अयासः) प्राकृतिक रूप से सदैव सक्रिय (स्वसृतः) अपनी आत्मा की तरफ प्रगति करते हुए (ध्रुवच्युतः) दृढ़ शत्रुओं को दूर भगाता है (तुध्रकृतः) स्वयं दृढ़ और निश्चित संकल्प वाला होते हुए (मरुतः) वायु, श्वास का नियंत्रक (भ्राजदृष्टयः) प्रकाशमान् दृष्टि रखने वाला ।

व्याख्या :-

वायु की कार्य प्रणाली दिव्य प्रकृति की कैसे है?

मरुतों की कार्य प्रणाली दिव्य प्रकृति की कैसे है?

वैज्ञानिक : वायु अपनी गति के बाद जलों को बादलों के रूप में बढ़ा देती है जो स्वर्ण की तरह चमकते हैं। ये वायु अपने पथ पर चलते हुए पर्वतों के समान बड़ी से बड़ी बाधाओं को नष्ट कर देती है या उन्हें लांघ जाती है। ये प्राकृतिक रूप से यज्ञ के लिए सक्रिय रहती है अर्थात् सबका कल्याण करने के लिए। वे अपनी ही तरफ प्रगति करती है (भौतिकवादी मनुष्यों की तरह उनका अपना कोई भी लक्ष्य नहीं होता), वे अपने शत्रुओं को इधर-उधर फेला देती है, परन्तु स्वयं स्थिर और दृढ़ निश्चयी होती है। वायु की एक दिव्य और प्रकाशवान् दृष्टि होती है।

आध्यात्मिक : मरुत लोगों में तरल अर्थात् वीर्य शरीर में बढ़ जाता है और वे सोने की तरह चमकते हैं। वे सभी बाधाओं का नाश कर देते हैं या उन्हें लांघ जाते हैं, वे बाधाएँ कितनी ही बड़ी क्यों न हों और इस प्रकार जीवन में प्रगति करते हैं। वे प्राकृतिक रूप से यज्ञ कार्यों के लिए सक्रिय रहते हैं अर्थात् सबका कल्याण करने के लिए। उनका कोई भौतिक लक्ष्य नहीं होता। वे केवल आत्म अनुभूति के लिए ही प्रगति करते हैं। वे स्वयं स्थिर और दृढ़ निश्चयी रहते हुए अपने शत्रुओं को इधर-उधर फेला देते हैं। उनकी दृष्टि दिव्य और प्रकाशवान् होती है।

जीवन में सार्थकता :-

अपने जीवन को संतुलित और केन्द्रित कैसे रखें?

भौतिक जीवन में हमारे अनेकों लक्ष्य हो सकते हैं, परन्तु अपने दिमाग का संतुलन बनाये रखते हुए और अपनी मूल सत्ता अर्थात् अपने भीतर परमात्मा पर ध्यान बनाये रखकर एक समय पर केवल एक ही कार्य पर ध्यान लगाते हैं। यौगिक प्राणायाम तथा ध्यान साधना का निरन्तर अभ्यास सबके लिए सहायक सिद्ध हो सकता है।

ऋग्वेद मन्त्र 1.64.12

Rigveda 1.64.12

घृषुं पावकं वनिनं विचर्षणं रुद्रस्य सूनुं हवसा गृणीमसि ।

रजस्तुरं तवसं मारुतं गणमृजीषिणं वृषणं सश्चत श्रिये ॥ 12 ॥

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

(घृषुम्) शत्रुओं का नाशक (पावकम्) पवित्र करने वाला (वनिनम्) सफलता के लिए संघर्ष करने वाला (विचर्षणिम्) हमें सक्रिय रहने की प्रेरणा देने वाला (रुद्रस्य) रुद्र का, परमात्मा का (सूनुम्) सन्तान (हवसा) वाणियों के साथ, त्याग के साथ (गृणीमसि) हम महिमामंडित, प्रशंसा करते हैं (रजस्तुरम्) रज का नाशक (अहंकार और स्वार्थ का) (तवसम्) हमें शक्तिशाली बनाने वाला (मारुतम्) वायु का (गणम्) समूह (ऋजीषिणम्) सामान्य मार्ग से गौरवशाली सम्पदा उपलब्ध कराने वाला (वृषणम्) सब पर (सुखों और प्रसन्नता की) वर्षा करने वाला (सश्चत) जानता है और प्राप्त करता है (श्रिये) सुन्दरता, सम्पन्नता और शान के लिए।

व्याख्या :-

हमें अपने श्वास पर एकाग्र क्यों होना चाहिए?

वायु के क्या गुण और शक्तियाँ हैं?

जो वायु हमारे भीतर प्रवेश करती है वह हमारे जीवन के लिए पोषक श्वास होता है। वायु के गुण और शक्तियाँ निश्चित रूप से हमें वही गुण और शक्तियाँ अपने जीवन में विकसित करने में सहायता करती है :-

1. घृषुम् – वायु शत्रुओं की नाशक होती है।
2. पावकम् – वायु पवित्र करने वाली होती है।
3. विचर्षणिम् – वायु हमें सक्रिय रहने की प्रेरणा देती है।
4. रजस्तुरम् – वायु रज (अहंकार और स्वार्थ का) का नाशक है।
5. तवसम् – वायु हमें शक्तिशाली बनाती है।
6. ऋजीषिणम् – वायु सामान्य मार्ग से गौरवशाली सम्पदा उपलब्ध कराती है।
7. वृषणम् – वायु सब पर (सुखों और प्रसन्नता की) वर्षा करती है।

हम अपनी वाणियों और त्याग कार्यों से रुद्र की सन्तान वायु की स्तुति और प्रशंसा करते हैं। अतः हमें नियमित एकाग्रता और ध्यान–साधना के माध्यम से वायु के सभी वर्गों को जानना और उन्हें प्राप्त करना चाहिए।

जीवन में सार्थकता :-

श्वास पर पूरा नियंत्रण किस प्रकार सबके लिए लाभदायक है?

इसमें कोई संदेह नहीं है कि एक योगी के जीवन में वायु एक अत्यन्त महत्वपूर्ण तत्त्व है, परन्तु एक भौतिकवादी जीवन में भी इसके महत्व को किनारे नहीं किया जा सकता है। इस जीवन शक्ति का महिमागान करने के दो प्रकार हैं :- (क) वाणियों के द्वारा, (ख) त्याग कार्यों के द्वारा।

महिमागान से भी अधिक महत्वपूर्ण है कि हम अपने श्वास पर पूरा नियंत्रण करें। प्राणायाम और ध्यान–साधना के अभ्यासों की सहायता से जीवन के किसी भी क्षेत्र में लोग अपार लाभ प्राप्त कर सकते हैं, चाहे वह छात्र जीवन हो, व्यापारिक जीवन, सेवा का जीवन, वैज्ञानिक का जीवन या कोई राजनीतिक जीवन।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

ऋग्वेद मन्त्र 1.64.13

Rigveda 1.64.13

प्र नू स मर्तः शवसा जनाँ अति तस्थौ व ऊती मरुतो यमावत् ।
अर्वदिभर्वाजं भरते धना नृभिरापृच्छयं क्रतुमा क्षेति पुष्टि ॥ 13 ॥

(प्र – भरते से पूर्व लगाकर) (नू) निश्चित रूप से (सः) वह (मर्तः) मरणशील मनुष्य (शवसा) शक्ति के साथ (जनान्) लोग (अति तस्थौ) स्थापित करने के लिए लांघ जाता है (वः) आपके साथ (ऊती) संरक्षण (मरुतः) वायु (यम) जो (आवत) संरक्षित करता है (अर्वदिभः) अपनी इन्द्रियों के द्वारा (वाजम) शक्ति और ज्ञान (भरते – प्र भरते) पूरी तरह भरता है (धना) सम्पदा (नृभिः) मनुष्यों से (आपृच्छयम) प्रेम और इच्छा करने योग्य (क्रतुम) कार्यों के साथ (यज्ञ) (आक्षेति) प्राप्त करता है, स्थापित करता है (पुष्टि) स्वयं को सुदृढ़ करता है।

व्याख्या :-

जब वायु मरुत का संरक्षण करती है तो क्या होता है?

जब श्वास पर नियंत्रण करके कोई व्यक्ति मरुत बनता है, जिसकी रक्षा वायु अपनी संरक्षण शक्ति के साथ करती है, वह निश्चित रूप से अपनी शक्तियों से लोगों को लांघकर स्वयं को स्थापित कर लेता है। वह अपने आपको अपनी इन्द्रियों के माध्यम से, अपनी शक्ति, ज्ञान और सम्पदा में शक्तिशाली बना लेता है। वह सबके प्रेम के योग्य और सबकी इच्छा का पात्र बन जाता है। अपने यज्ञ कार्यों से वह स्वयं को बल में भी स्थापित कर लेता है।

जीवन में सार्थकता :-

मरुत होने के क्या लाभ हैं?

यदि आप वायु से संरक्षित होना चाहते हो और स्वरथ एवं लम्बा जीवन चाहते हो तो इस सूक्त के पूर्व मन्त्रों के अनुसार मरुत बन जाओ। आप जीवन के किसी क्षेत्र में भी निश्चित रूप से सफलता प्राप्त करोगे।

यदि आपको ज्ञान, शक्ति या सम्पदा चाहिए तो मरुत बनो।

यदि आप लोगों से प्रेम चाहते हो और लोगों की इच्छा का पात्र बनना चाहते हो तो मरुत बनो।

ऋग्वेद मन्त्र 1.64.14

Rigveda 1.64.14

चर्कृत्यं मरुतः पृत्सु दुष्टरं द्युमन्तं शुष्टं मघवत्सु धत्तन ।
धनस्पृतमुक्थ्यं विश्वचर्षणिं तोकं पुष्टेम तनयं शतं हिमा: ॥ 14 ॥

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

(चर्कृत्यम्) वीरता और साहस धारण करते हुए कार्यों को बनाये रखता है (मरुतः) प्राणों का नियंत्रक, प्राणों का मालिक (पृत्सु दुष्टरम्) बुराईयों के विरुद्ध युद्धों में जिसे कोई रोक नहीं सकता और पराजित नहीं कर सकता (द्युमन्तम्) ज्ञान में प्रकाशित (शुष्म) शत्रुओं का शोषक (मघवत्सु) यज्ञ के लिए सम्पदा का निवेश करने वाला (धत्तन) धारण करता है (धनस्पृतम्) सम्पदा को धारण करता है (उकथ्यम्) वाणियों में उत्तम और प्रशंसनीय (विश्वचर्षणिम्) सबका ध्यान रखने वाला (तोकम्) पुत्र (पुष्टेम) देखभाल, पोषण, संरक्षण और वृद्धि करने वाला (तनयम्) पुत्र, पोते आदि (शतम्) सैकड़ों (हिमा:) शरद ऋतु।

व्याख्या :-

आप किस प्रकार के सुपुत्रों और सुपौत्रों की आशा करते हो?

श्वास का नियंत्रक निम्न प्रकार के पुत्रों और सुपौत्रों को धारण करता है :-

1. चर्कृत्यम् – वीरता और साहस धारण करते हुए कार्यों को बनाये रखता है।
2. पृत्सु दुष्टरम् – बुराईयों के विरुद्ध युद्धों में जिसे कोई रोक नहीं सकता और पराजित नहीं कर सकता।
3. द्युमन्तम् – ज्ञान में प्रकाशित।
4. शुष्मम् – शत्रुओं का शोषक।
5. मघवत्सु – यज्ञ के लिए सम्पदा का निवेश करने वाला।
6. धनस्पृतम् – सम्पदा को धारण करता है।
7. उकथ्यम् – वाणियों में उत्तम और प्रशंसनीय।
8. विश्वचर्षणिम् – सबका ध्यान रखने वाला।

हम सौ शरद कालों तक ऐसे पुत्र और सुपौत्रों का पालन–पोषण, संरक्षण और उन्हें उत्साहित कर सकें।

जीवन में सार्थकता :-

श्रेष्ठ पुत्र और सुपौत्र किस प्रकार प्राप्त करें?

एक श्रेष्ठ पुत्र और सुपौत्रों को प्राप्त करने के लिए सबसे महत्त्वपूर्ण आधार है कि हम स्वयं श्वास के नियंत्रक अर्थात् मरुत बनें।

दूसरा सभी माता–पिता को सांकेतिक यज्ञ अर्थात् पवित्र अग्नि में आहुतियाँ देना और वास्तविक यज्ञ अर्थात् अपनी सम्पदा को गौरवशाली तरीके से समाज में सबके कल्याण के लिए खर्च करना चाहिए। वे इसी प्रकार की प्रार्थनाएँ और सक्रियताएँ बनाकर रखें।

ऋग्वेद मन्त्र 1.64.15

Rigveda 1.64.15

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

नूष्ठिरं मरुतो वीरवन्त्मृतीषाहं रयिमस्मासु धत् ।
सहस्त्रिणं शतिनं शूशुवांसं प्रातर्मक्षु धियावसुर्जगम्यात् ॥ 15 ॥

(नू) अब (स्थिरम्) स्थिर (मरुतः) प्राण, श्वास, श्वास का नियंत्रक (वीरवन्तम्) शक्तिशाली वीर (ऋतीषाहम्) विजय का दाता (रयिम्) सम्पदा (अस्मासु) हम में (धत्) धारण करता है (सहस्त्रिणम्) हजारों प्रकार के (शतिनम्) सैकड़ों प्रकार के (शूशुवांसम्) प्रसन्नता और प्रगति के कारण (प्रातः मक्षु प्रातःकाल अतिशीघ्र (धियावसुः) दिव्य ज्ञान में जीने वाले (जगम्यात्) प्राप्त हों।

व्याख्या :-

हमारी सम्पदा किन लक्षणों को धारण करें?

हे मरुतों! कृपया हमारे जीवन में निम्न लक्षणों वाली गौरवशाली सम्पदा को धारण करवाओ :-

1. स्थिरम् – स्थिर
2. वीरवन्तम् – शक्तिशाली वीर
3. ऋतीषाहम् – विजय का दाता
4. सहस्त्रिणम् शतिनम् शूशुवांसम् – हजारों और सैकड़ों प्रकार के प्रसन्नता और प्रगति के कारण।
हम प्रातःकालीन वेला में बौद्धिक कार्यों से सम्पदा प्राप्त करें और दिव्य ज्ञान की संगति वाले लोगों से ज्ञान प्राप्त करें।

जीवन में सार्थकता :-

अच्छी संगति अर्थात् सत्संग का क्या महत्त्व है?

ऋग्वेद मण्डल-1 के सूक्त 58 तथा 60 से 64 के अन्तिम मन्त्र के अन्तिम पद हमें विशेष रूप से प्रेरित करते हैं कि हमें सत्य परमात्मा की अनुभूति प्राप्त करने के लिए सत्य की संगति प्राप्त करनी चाहिए। यह उन लोगों की संगति से सम्भव हो सकता है जो महान् दिव्य ज्ञान के स्तर पर जीवन जीते हैं।

ऐसी संगति लगातार और लम्बी अवधि के बाद हमारे लिए एक चुम्बक के समान बन जाती है, जिस प्रकार चुम्बक की संगति में लगातार और लम्बी अवधि तक रहने वाला लोहा भी चुम्बक बन जाता है।

यदि हम श्रेष्ठ और दिव्य लोगों की संगति में जीयें तो हम भी वही बन सकते हैं।

अच्छाई लोगों की सेवा करने में होती है, लोगों से छीनने में नहीं। समाज की सेवा करना, समाज से छीनना नहीं। अच्छाई सत्य में, अहिंसा में, चोरी न करने में और सबको परमात्मा की अभिव्यक्ति के रूप में समझने और सम्मानित करने में होती है।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

ऋग्वेद मण्डल-1 सूक्त 65

ऋग्वेद मन्त्र 1.65.1

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

Rigveda 1.65.1

पश्वा न तायुं गुहा चतन्तं नमो युजानं नमो वहन्तम् ।
सजोषा धीरा: पदैरनुग्मन्तुप त्वा सीदन्वश्वे यजत्राः ॥ १ ॥

(पश्वा) दृष्टा (न) जैसे कि (तायुम) सबका पोषण करने वाला, परमात्मा (गुहा) गुफा में (हृदय) (चतन्तम) गति करता है, व्याप्त होता है (नमः) नमन (युजानम) उसके साथ जुड़कर (नमः) नमन (वहन्तम) उसे प्राप्त करते हुए (सजोषा:) अपने कर्तव्यों का पालन करते हुए (धीरा:) धैर्यवान लोगों को धारण करने वाला (पदैः) विवेकशीलता के शब्द (अनुग्मन्त) प्राप्त करता है (उप) निकट (त्वा) आपको (सीदन) स्थापित किया गया (विश्वे) सभी (यजत्राः) यज्ञों के द्वारा ।

व्याख्या :-

परमात्मा कहाँ पर है?

परमात्मा को कैसे प्राप्त करें या उसकी अनुभूति कैसे करें?

एक द्रष्टा की तरह (सर्वत्र विद्यमान और सबको देखता हुआ) परमात्मा सबके पालन-पोषण का ध्यान रखता है। परमात्मा द्रष्टाओं के हृदय अर्थात् गुफाओं में व्याप्त होता है। हम उसके साथ जुड़ते हुए और उसे प्राप्त करते हुए नमन करते हैं।

गहरे और धैर्यशील लोग विवेकशील शब्दों के साथ अपने कर्तव्यों का निर्वहन करते हैं और यज्ञ कार्य करते हुए अर्थात् सबके कल्याण के लिए कार्य करते हुए स्वयं को परमात्मा के निकट स्थापित करते हुए उसे प्राप्त करते हैं।

जिस प्रकार कोई पालतू पशु के गुफा में छिप जाने के बावजूद भी लोग उसके पदचिन्हों को खोजकर उनका अनुसरण करते हुए उसे प्राप्त कर लेते हैं। इसी प्रकार त्यागशील लोग परमात्मा के पदचिन्हों का अनुसरण करते हुए अपनी हृदय गुफा में छिपे हुए उस परमात्मा को खोज लेते हैं।

जीवन में सार्थकता :-

परमात्मा की अनुभूति प्राप्त करने के लिए एक द्रष्टा कैसे बनें?

परमात्मा सर्वोच्च द्रष्टा है। हमें भी एक द्रष्टा बनने का प्रयास करना चाहिए, अधिक न बोलते हुए, शिकायतकर्ता न बनते हुए, सभी परिस्थितियों को केवल देखते हुए, विवेकशील शब्दों के साथ अपने कर्तव्यों का पालन करते हुए। कर्तव्य यज्ञ की तरह सम्पन्न किये जाने चाहिए अर्थात् सबके कल्याण के लिए, अपने स्वार्थी उद्देश्यों के लिए नहीं।

परमात्मा के बारे में सर्वत्र संदेह और नासमझ व्याप्त है। परन्तु यह मन्त्र स्पष्ट करता है कि द्रष्टा की तरह एक साधारण तरीके से परमात्मा को महसूस करना, विश्वास करना और उसकी अनुभूति करना कठिन नहीं है।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

ऋग्वेद मन्त्र 1.65.2

Rigveda 1.65.2

ऋतस्य देवा अनुव्रता गुर्भुवत्परिष्ठिद्यौर्न भूम ।
वर्धन्तीमापः पन्वा सुशिशिवमृतस्य योना गर्भे सुजातम् ॥ २ ॥

(ऋतस्य) सत्य का, वास्तविकता (देवा:) दिव्य लोग (अनु – गु: से पूर्व लगाकर) (व्रता) संकल्प (गु: – अनु गु:) प्राप्त करता है, अनुसरण करता है (भुवत) किया गया (परिष्ठिः) सत्य की खोज में (द्यौ:) स्वर्ग लोक (न) जैसे कि (भूम) पृथ्वी (वर्धन्ति) बढ़ाते हैं, उत्साहित करते हैं (ईम) निश्चित रूप से (आप:) महान्, दिव्य लोग (पन्वा) प्रशंसा और महिमागान से (सुशिशिवम) उत्तम गतिविधि, शिक्षा के साथ (ऋतस्य) सत्य का, वास्तविक का (योनौ:) जीवन में (गर्भे) केन्द्र, आन्तरिक (सुजातम) व्यक्त करता है।

व्याख्या :-

दिव्य लोगों के जीवन में परमात्मा किस प्रकार अभिव्यक्त होते हैं?

दिव्य लोग सत्य के संकल्पों को प्राप्त करके उनका अनुसरण करते हैं। इस प्रकार उनकी उस परम सत्य (परमात्मा) की खोज पूर्ण हो जाती है। वे धरती को एक स्वर्ग की तरह बना सकते हैं। ऐसे महान् और दिव्य लोग निश्चित रूप से परमात्मा की प्रशंसा और उसका महिमागान करके उसके प्रभाव को बढ़ाते हैं और उसका संवर्द्धन करते हैं। वे अन्य लोगों को शिक्षित करके दिव्यता की उत्तम गति पैदा करते हैं और अन्ततः उनके अपने जीवन में सर्वोच्च सत्य अर्थात् परमात्मा की अभिव्यक्ति होती है।

जीवन में सार्थकता :-

आध्यात्मिक मार्ग पर सत्य का क्या महत्त्व है?

आध्यात्मिकता का मार्ग सर्वत्र पूर्ण सत्यता पर आधारित है। यह सत्य से प्रारम्भ होता है, समूचा मार्ग सत्य होता है और इसका गत्तव्य स्थान भी सत्य ही होता है।

सर्वोच्च सत्य की अनुभूति प्राप्त करने के लिए सत्य मार्ग पर चलो।

सूक्ष्मित :-

(ऋतस्य देवा: अनु व्रता) – दिव्य लोग सत्य के संकल्पों को प्राप्त करके उनका अनुसरण करते हैं।

ऋग्वेद मन्त्र 1.65.3

Rigveda 1.65.3

पुष्टिर्ण रण्वा क्षितिर्ण पृथ्वी गिरिर्ण भुज्म क्षोदो न शंभु ।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

अत्यो नाज्मन्त्सर्गप्रतक्तः सिन्धुर्न क्षोदः क ई वराते ॥ ३ ॥

(पुष्टि: न) पोषण की तरह, स्वास्थ्य (रण्वा) प्रसन्न, प्रसन्नता देने वाला (क्षिति: न) व्यापक आवास देने वाले के समान (पृथ्वी) भूमि (गिरि: न) पर्वतों की तरह (भुज्म) उदार, पोषण के लिए सबको पदार्थ देने वाला (क्षोदः न) जल की तरह (शंभु) पवित्र करने वाला, शांति देने वाला (अत्यः न) अश्वों की तरह (अज्मन्) युद्धों में (सर्ग प्रतक्तः) स्वाभाविक रूप से गति में तेज (सिन्धुः न) समुद्र की तरह (क्षोदः) गहरा और तीव्र चलने वाला (कः) कौन (ईम) इस (परमात्मा) (वराते) उसे रोक सकता है, उसे प्राप्त करता है।

व्याख्या :-

हमारे जीवन में परमात्मा के क्या दृष्टिकोण हैं?

इस मन्त्र के सारे विवरण परमात्मा के भिन्न-भिन्न दृष्टिकोणों को व्यक्त करते हैं जिनके अन्त में एक प्रश्न है :-

1. पुष्टि: न रण्वा — वह पोषण और स्वास्थ्य की तरह प्रसन्नता देता है।
2. क्षिति: न पृथ्वी — वह भूमि की तरह व्यापक आवास देने वाला है।
3. गिरि: न भुज्म — वह पर्वतों की तरह उदार एवं पोषण के लिए सभी पदार्थ देने वाला है।
4. क्षोदः न शंभु — वह जल की तरह पवित्र करने वाला एवं शांति देने वाला है।
5. अत्यः न अज्मन् सर्ग प्रतक्तः — वह अश्वों की तरह युद्धों में स्वाभाविक रूप से गति में तीव्रता देता है।
6. सिन्धुः न क्षोदः — वह समुद्र की तरह गहरा और तीव्र चलने वाला है।
कौन अपने जीवन में उसे प्रभावशाली होने से रोकना चाहता है?
कौन उसे प्राप्त करना चाहता है और उसकी अनुभूति चाहता है?

जीवन में सार्थकता :-

अपने जीवन में परमात्मा के प्रभाव को किस प्रकार महसूस करें, विश्वास करें और उसकी अनुभूति प्राप्त करें?

वास्तव में हमारे जीवन में उसके प्रभाव को रोकने का कोई प्रश्न ही पैदा नहीं हो सकता। कोई भी न तो इतना साहस कर सकता है और न इस प्रकार सोच सकता है।

कोई भी ऐसा व्यक्ति नहीं हो सकता जो परमात्मा को प्राप्त नहीं करना चाहता और उसकी अनुभूति नहीं चाहता। इससे इन्कार का अर्थ है अपने जीवन से इन्कार।

वह प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में सदैव विद्यमान है और सदा के लिए प्रभावशाली है। यह प्रश्न हमें सर्वत्र उसकी विद्यमानता और प्रभाव को महसूस करने, विश्वास करने और उसकी अनुभूति प्राप्त करने के लिए प्रेरित करते हैं।

सूक्ष्म -

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

(कः ईम् वराते) – कौन अपने जीवन में उसे प्रभावशाली होने से रोकना चाहता है?
कौन उसे प्राप्त करना चाहता है और उसकी अनुभूति चाहता है?

ऋग्वेद मन्त्र 1.65.4

Rigveda 1.65.4

जामि: सिन्धूनां भ्रातेव स्तस्त्रामिभ्यान् राजा वनान्यति ।
यद्वातजूतो वना व्यस्थादग्निर्ह दाति रोमा पृथिव्या: ॥ 4 ॥

(जामि:) भाई (सिन्धूनाम्) समुद्रों और नदियों का (भ्राता इव) भाई की तरह (स्तस्त्राम) बहनों का (इभ्यान् न राजा) शत्रुओं के राजा की तरह (वनानि) जंगलों को (अति) खा जाता है (यत्) जब (वातजूतः) वायु से प्रेरित होकर (वना) जंगलों में (व्यस्थात्) विशेष रूप से स्थापित (अग्निः ह) केवल एक अग्नि पुरुष (दाति) खाता है (रोमा) केवल घास, वनस्पतियों की शाखाएं (पृथिव्या:) भूमि की।

व्याख्या :-

उस व्यक्ति के कैसे लक्षण होते हैं जो परमात्मा की अनुभूति करना चाहता है और उसके लिए सक्षम है?

ऋग्वेद 1.65.3 में परमात्मा के बारे में एक प्रश्न की कल्पना के बाद, यह मन्त्र अग्नि पुरुष के लक्षणों की व्याख्या करता है अर्थात् ऐसा साधक जो अपने जीवन में परमात्मा की अनुभूति प्राप्त करने में सक्षम है :–

1. जामि: सिन्धूनाम् – वह जो समुद्रों और नदियों का भाई है।
2. भ्राता इव स्तस्त्राम् – वह जो सभी बहनों के भाई की तरह है।
3. इभ्यान् न राजा – वह जो राजा की तरह है शत्रुओं को खा जाता है।
4. वनानि अति – वह जो जंगलों अर्थात् केवल शाकाहारी भोजन को खाता है।
5. यत् वातजूतः वना व्यस्थात् – वह वायु से प्रेरित होकर जंगलों में विशेष रूप से स्थापित होता है।
6. दाति रोमा पृथिव्या: – वह जो केवल घास और धरती की वनस्पतियों की शाखाओं को खाता है।

जीवन में सार्थकता :-

जीवन में दिव्यताओं को कैसे प्राप्त करें?

यह सभी लक्षण एक दिव्य और श्रेष्ठ व्यक्तित्व का निर्माण करते हैं जो सब लोगों और सर्वत्र प्रकृति का का ध्यान रखने वाला और प्रेम करने वाला होता है, अपने शत्रुओं को रोककर उन्हें नष्ट करने के लिए पर्याप्त साहसी और दिव्य होता है। ऐसा दिव्य और श्रेष्ठ व्यक्ति सबके कल्याण के लिए सभी गतिविधियाँ सम्पन्न करने के बावजूद, परमात्मा में स्थापित रहता है। वह अपने जीवन में परमात्मा को

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



प्राप्त करने और उसकी अनुभूति के लिए सक्षम होता है। इस प्रकार संयमित जीवन से, सभी इच्छाओं और अहंकार का त्याग करके, कोई भी मनुष्य श्रेष्ठताओं को प्राप्त कर सकता है। परन्तु इन श्रेष्ठताओं की परीक्षा होने के बावजूद दिव्यता तो निश्चित रूप से परमात्मा का अनुग्रह है। जीवन में इन्द्र पुरुष बनने के बाद ही कोई व्यक्ति अग्नि पुरुष बनता है।

ऋग्वेद मन्त्र 1.65.5

Rigveda 1.65.5

श्वसित्यप्सु हंसो न सीदन्कत्वा चेतिष्ठो विशामुषर्भुत्।
सोमो न वेधा ऋतप्रजातः पशुर्न शिश्वा विभुर्दूरेभाः ॥ ५ ॥

(श्वसिति) जन्म देता है (अप्सु) जलों में (हंसः न) हंस के समान (सीदन्) खेलते हुए (क्रत्वा) करता है, उत्पन्न करता है (चेतिष्ठः) अत्यन्त चेतना (विशाम्) लोगों को (उषर्भुत्) प्रातःकाल उठाता है (सोमः न) जड़ी-बूटियों की तरह, दिव्य गुणों की तरह (वेधा) स्वास्थ्य के लिए पोषक, सृष्टि का निर्माता (ऋतप्रजातः) सत्य का उत्पन्न करने वाला, परमात्मा (पशुः) जानवर (न) जैसे कि (शिश्वा) सन्तान के लिए (विभुः) सर्वत्र विद्यमान (दूरेभाः) बहुत दूर।

व्याख्या :-

परमात्मा के क्या दृष्टिकोण होते हैं?

ऋग्वेद 1.65.3 की निरन्तरता में, यह मन्त्र भी परमात्मा के कुछ और दृष्टिकोणों की व्याख्या करता है जिससे हम उसे इसी जीवन में प्राप्त करने और उसकी अनुभूति करने के लिए प्रेरित हों :-

1. श्वसिति – वह सबको जन्म देता है।
2. अप्सु हंसः न सीदन् – वह हंस की तरह हर समय खेलते हुए जल में रहता
3. क्रतवा चेतिष्ठः विशाम् उषर्भुत् – वह मनुष्यों को प्रातःकाल जागृत करके उनमें अत्यन्त चेतना का निर्माण करता है।
4. सोमः न वेधा – वह जड़ी-बूटियों की तरह, स्वास्थ्य के लिए पोषक है। वह सर्वोच्च दिव्य गुण वाले व्यक्तित्व की तरह इस सृष्टि का निर्माता है।
5. ऋतप्रजातः – वह सत्य का उत्पत्ति कर्ता है।
6. पशुः न शिश्वा – जिस प्रकार एक पशु अपनी सन्तान के लिए प्रेम और देख-रेख करता है उसी प्रकार परमात्मा भी सबके लिए प्रेम और सबकी देखभाल करता है।
7. विभुः दूरेभाः – वह सर्वत्र व्याप्त है और वह बहुत दूर है।

जीवन में सार्थकता :-

कौन हमारी इच्छाओं की प्यास और भूख सदा-सदा के लिए समाप्त कर सकता है?

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

परमात्मा के यह सभी दृष्टिकोण उस सर्वोच्च वास्तविकता को स्थापित करते हैं कि परमात्मा हमारे जीवन में अत्यन्त आवश्यक और अलग न करने योग्य शक्ति है। हमें जीवन में जिस किसी चीज की भी आवश्यकता होती है उसका सम्बन्ध परमात्मा से है। वह हमारे लिए प्रत्येक सम्बन्ध है और सब कुछ है। हो सकता है कि कोई व्यक्ति अपने पास उपलब्ध वस्तुओं से संतुष्ट हो या न हो क्योंकि मानवीय इच्छाएं अन्तहीन हैं। परन्तु परमात्मा की अनुभूति की एक सामान्य इच्छा हमारी अन्य आवश्यकताओं की भूख और प्यास को सदा के लिए शान्त कर सकती है।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

ऋग्वेद मण्डल-1 सूक्त 66

'अग्नि' सूक्त 66 से 70 तक

(1) सर्वविद्यमान, (2) सर्वशक्तिमान, (3) सर्वज्ञाता, (4) सर्वनिर्माता

ऋग्वेद मन्त्र 1.66.1

Rigveda 1.66.1

रथिनचित्रा सूरा न संदृगायुर्न प्राणो नित्यो न सूनुः।
तक्वा न भूणिर्वना सिषक्ति पया न धेनुः शुचिर्विभावा ॥१॥

(रथिन:) सम्पदा (न) जैसे कि (चित्रा) अद्भुत, इच्छा करने योग्य (परमात्मा) (सूरा:) सूर्य (न) जैसे कि (संदृक्) सम्यक द्रष्टा, सम्यक प्रकाशित करने वाला (परमात्मा) (आयु:) आयु, जीवन, स्वारथ्य (न) जैसे कि (प्राण:) ऊर्जा का श्वास (परमात्मा) (नित्य:) वास्तविक, स्थाई और एक समान (परमात्मा) (न) जैसे

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

कि (सूनुः) उत्तम प्रेरक, वास्तविक पुत्र (तवा) अश्व, अथक (न) जैसे कि (भूर्णिः) भरण—पोषण करने वाले (परमात्मा) (वना) किरणें, जंगल, श्रद्धालु भक्त (सिषक्ति) संयुक्त, प्राप्त (पयः) दूध, पेय पदार्थ (न) जैसे कि (धेनुः) इच्छा पूरी करने वाली गाय (शुचिः) पूरी तरह शुद्ध, पवित्र (परमात्मा) (विभावा) विशेष प्रकाश ज्ञान का (परमात्मा)।

व्याख्या :-

परमात्मा के ऊर्जा रूप की तुलना भिन्न—भिन्न वस्तुओं जीवों से किस प्रकार की जाती है? (1) यह सूक्त 'अग्नि' अर्थात् परमात्मा के ऊर्जा रूप के भिन्न—भिन्न लक्षणों और अभिव्यक्तियों की प्रशंसा करते हुए प्रकृति की भिन्न—भिन्न वस्तुओं और जीवों के साथ तुलना करके उस अग्नि का आह्वान करता है :—

1. (रथिः न चित्रा) वह अद्भुत, और सम्पदा की तरह इच्छा करने योग्य है।
2. (सूरा: न संदृक) वह उचित सम्यक द्रष्टा है और सूर्य की भाँति उचित रूप से प्रकाशित करता है।
3. (आयुः न प्राणः) वह आयु, जीवन और स्वास्थ्य की तरह ऊर्जा का श्वास है।
4. (नित्यः न सूनुः) वह वास्तविक, स्थाई और उत्तम प्रेरक तथा सच्चे पुत्र की तरह स्थिर है।
5. (तवा न भूर्णिः वना सिषक्ति) वह एक अथक अश्व की तरह सबका पालन करता है और वह वनों में (मन के) सभी श्रद्धालुओं को प्रेम की किरणों से संयुक्त करता है।
6. (पयः न धेनुः) वह इच्छा पूरी करने वाली गाय के दूध के समान है।
7. (शुचिः विभावा) वह पूरी तरह से शुद्ध है और स्वयं ज्ञान विशेष प्रकाश है तथा अन्यों को भी शुद्ध और प्रकाशित करता है।

जीवन में सार्थकता :-

हमारी सर्वमान्य चेतना क्या होनी चाहिए?

परमात्मा का ऊर्जा रूप अपनी सृष्टि में हमारे लिए किसी भी वस्तु या जीव से अधिक लाभकारी है। किसी भी वस्तु का प्रयोग करते हुए या प्रतिक्षण श्वास लेते हुए हमें उस सर्वोच्च ऊर्जा परमात्मा के साथ संगति का आह्वान करना चाहिए। यह सर्वमान्य चेतना निश्चित रूप से हमारे जीवन को शुद्ध कर देगी और हमें उसकी अनुभूति करवायेगी, बेशक, इस पथ पर लम्बी और लगातार साधना के बाद।

सूक्तिः — उपरोक्त सभी लक्षण।

ऋग्वेद मन्त्र 1.66.2

Rigveda 1.66.2

दाधार क्षेममोको न रण्वो यवो न पव्वो जेता जनानाम।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



ऋषिर्न स्तुभ्वा विक्षु प्रशस्तो वाजी न प्रीतो वयो दधाति ॥२॥

(दधार) धारण करता है (क्षेमः) कल्याण (ओकः) घर (न) जैसे कि (रण्वः) रमणीय, संतुष्टि देने वाले (यवः) जौ (न) जैसे कि (पक्वः) परिपक्व भोजन (जेता) विजेता (जनानाम) मनुष्यों के लिए (ऋषिः) ऋषि, द्रष्टा (न) जैसे कि (स्तुभ्वा) सम्मान के योग्य (विक्षु) लोगों में (प्रशस्ता) प्रशंसनीय (वाजी) युद्ध का रथ (न) जैसे कि (प्रीतः) प्रसन्नता और प्रशंसा का निर्माता (परमात्मा) (वयः) उत्तम और दीर्घ आयु (दधाति) धारण करता है, देता है।

व्याख्या :-

परमात्मा के ऊर्जा रूप की तुलना भिन्न-भिन्न वस्तुओं जीवों से किस प्रकार की जाती है? (2)
परमात्मा की अभिव्यक्तियों को जारी रखते हुए, यह मन्त्र परमात्मा के कुछ अन्य लक्षणों को सूचीबद्ध करता है जो भिन्न-भिन्न शक्तियों के साथ तुलना के योग्य है :—

8. (दाधार क्षेमः) वह सबके कल्याण को धारण करता है।
 9. (ओकः न रण्वः) उसकी संगति हमारे घर की तरह आनन्ददायक और आराम पहुंचाने वाली है।
 10. (यवः न पक्वः) वह जौ की तरह परिपक्व भोजन है।
 11. (जेता जनानाम) वह मानवों के लिए विजय का विजेता है।
 12. (ऋषिः न स्तुभ्वा) वह साधुओं और द्रष्टाओं की तरह पूजनीय है।
 13. (विक्षु प्रशस्ता) वह लोगों में प्रशंसनीय है।
 14. (वाजी न प्रीतः) वह युद्ध रथ की तरह प्रसन्नता और प्रशंसा का निर्माता है।
 15. (वयः दधाति) वह उत्तम और दीर्घ आय धारण करता है और प्रदान करता है।

जीवन में सार्थकता :-

परमात्मा के साथ अपनी सर्वमान्य संगति की चेतना को किस प्रकार बनाकर रखा जाये? सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा वास्तव में हमारा सर्वमान्य सहचर है, क्योंकि वह सदैव और प्रतिक्षण हमारे साथ रहता है। परन्तु हम उसकी इस स्थाई संगति को अपनी चेतना में बनाये रखने में असफल हो जाते हैं, क्योंकि हमारे मन के अन्दर और आस-पास अज्ञानता का आवरण होता है जो इसे अपने व्यक्तिगत अस्तित्व और शक्ति को महसूस करने के लिए प्रभावित करता है। अतः परमात्मा के साथ इस सर्वमान्य संगति की चेतना के साथ ही हम अपने मन को उस वास्तविक 'मैं' पर केन्द्रित करने के लिए प्रकाशित करते हैं जिससे हम अपने अवास्तविक 'मैं' अर्थात् अपने नाम और रूप को भूल सकें।

सुवित्त : – उपरोक्त सभी लक्षण।

ऋग्वेद मन्त्र 1.66.3

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



Rigveda 1.66.3

दुरोक्षोचिः क्रतुर्न नित्यो जायेव योनावरं विश्वस्मै ।
चित्रो यदभ्राट् छवेतो न विक्षु रथो न रुक्मी त्वेषः समत्सु ॥ ३ ॥

(दुरोक शोचिः) अद्भुत, दूर पहुंचने वाला प्रकाश, ताप, ऊर्जा, पवित्रता (अग्नि की) (क्रतुः) कार्यों को करने वाला (न) जैसे कि (नित्यः) वास्तविक, स्थाई, आन्तरिक (जाया) गृह पत्नी (इव) जैसे (योनौ) घर में (अरम्) सुविधाओं का ध्यान रखने वाला (विश्वस्मै) सबका (चित्रः) अद्भुत (यत) जब (अभ्राट्) चमकता है (ष्वेतः) सफेद (न) जैसे कि (विक्षु) लोगों में (रथः) रथ (न) जैसे कि (रुक्मी) स्वर्ण (त्वेषः) प्रकाशित (समत्सु) युद्धों में, कठिनाईयों में।

व्याख्या :-

परमात्मा के ऊर्जा रूप की तुलना भिन्न-भिन्न वस्तुओं जीवों से किस प्रकार की जाती है? (3) विगत दो मन्त्रों, ऋग्वेद-1.66.1 तथा 2 को जारी रखते हुए यह मन्त्र भी परमात्मा की दिव्य अनुभूतियों की प्रकृति की भिन्न-भिन्न शक्तियों के साथ तुलना करता है :-

16. (दुरोक शोचिः) उसका (अग्नि का) प्रकाश, ताप, ऊर्जा, पवित्रता, अद्भुत और दूर पहुंचने वाला लक्षण है।
17. (क्रतुः न नित्यः) वह वास्तविक, स्थाई और आन्तरिक कार्यों को करने वाले की तरह है।
18. (जाया इस योनौ अरम् विश्वस्मै) वह उस गृहणी की तरह है जो घर में सबकी सुख-सुविधाओं का ध्यान रखती है।
19. (चित्रः यत् अभ्राट् ष्वेतः न विक्षु) वह जब लोगों में श्वेत (सूर्य या द्रष्टा) की तरह चमकता है तो अद्भुत होता है।
20. (रथःन रुक्मी त्वेषः समत्सु) वह युद्धों और कठिनाईयों में एक स्वर्णिम रथ की तरह शुद्ध स्वर्ण की तरह चमकता है जैसे।

जीवन में सार्थकता :-

उच्च चेतना में जीने का क्या परिणाम होता है?

सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा, प्रकृति में कहीं भी दिखाई देने वाले सभी प्रकार के प्रकाश, ताप, ऊर्जा और पवित्रता का स्रोत है। अतः किसी भी ऐसे छोटे से छोटे कण या बड़े से बड़े सूर्य से उसकी तुलना हमें उसकी सर्वविद्यमानता और सर्वशक्तिमान होने की अनुभूति करवा सकती है। इस प्रकार प्रत्येक सूक्ष्म से स्थूल रूप में उसकी शक्ति और विद्यमानता को महसूस करने का लगातार अभ्यास हमें उच्च चेतना का जीवन सुनिश्चित कर सकता है, जो अन्ततः हमे अहंकारहित अवस्था प्रदान करेगा और उसकी वास्तविक तथा स्थाई शक्ति की अनुभूति प्रदान करेगा।

सूक्ष्मता :- उपरोक्त सभी लक्षण।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



(क्रतुः न नित्यः) वह वास्तविक, स्थाई और आन्तरिक कार्यों को करने वाले की तरह है।

ऋग्वेद मन्त्र 1.66.4

Rigveda 1.66.4

सेनेव सृष्टाम दधात्यस्तुर्न दिद्युत्त्वेषप्रतीका ।
यमो ह जातो यमो जनित्वं जारः कनीनां पतिर्जनीनाम् ॥ ४ ॥

(सेना) युद्ध करने वाली सेना (इव) जैसे (सृष्टा) निर्माता, प्रेरित (अमम) शक्ति, बल (दधाति) धारण करता है (अस्तु) योद्धा (शत्रुओं पर हमला करने वाला) (न) जैसे कि (दिद्युत) गर्जना करता हुआ करंट (त्वेष प्रतीका) गर्जता हुआ प्रकाश (यमः) वह (परमात्मा) (हि) निश्चित रूप से (जातः) उत्पन्न हुआ (यमः) वह (परमात्मा) (जनित्वम्) पैदा करने वाला (जारः) कम करता है (कनीनाम्) कमजोरियों को, अन्धकार को (पतिः) संरक्षक (जनीनाम्) पैदा हुए का।

व्याख्या :-

परमात्मा के ऊर्जा रूप की तुलना भिन्न-भिन्न वस्तुओं जीवों से किस प्रकार की जाती है? (4) विगत तीन मन्त्रों, ऋग्वेद-1.66.1, 2 तथा 3 को जारी रखते हुए यह मन्त्र भी परमात्मा की दिव्य अनुभूतियों की प्रकृति की भिन्न-भिन्न शक्तियों के साथ तुलना करता है :—

21. (सेना इस सृष्टा अमम् दधाति) वह सभी शक्तियाँ और बल धारण करने वाली है। उस प्रेरक सेना की तरह है जिसे अग्रिम रूप से युद्ध भूमि में भेजा जाता है।
22. (अस्तु न दिद्युत त्वेष प्रतीका यमः) उस योद्धा के पास (शत्रुओं पर हमला करते समय) गर्जना करता हुआ प्रकाश और विद्युत होती है।
23. (हि जातः यमः जनित्वम्) परमात्मा उन सभी पैदा हुई वस्तुओं और जीवों में निश्चित रूप से है और वह सबको पैदा करने वाला है (जो कुछ भी भविष्य में पैदा होगा)।
24. (जारः कनीनाम् पतिः जनीनाम्) वह हमारे ज्ञान और रात्रि के अन्धकार तथा कमजोरियों को कम करता है; वह समस्त पैदा हुओं का संरक्षक है।

जीवन में सार्थकता :-

परमात्मा अपनी शक्तियों का मुख्य प्रयोग कहाँ करता है?

मनुष्यों का मुख्य मार्ग और मुख्य लक्ष्य क्या है?

परमात्मा अपनी शक्तियों का मुख्य स्रोत स्वयं को इस सृष्टि के भिन्न-भिन्न रूपों में अभिव्यक्त करने तथा उत्पन्न करने और मनुष्यों की अज्ञानता समाप्त करने में करता है और साथ ही सबका संरक्षण करता है। मनुष्यों को केवल एक पथ और एक लक्ष्य का ही अनुसरण करना चाहिए। परमात्मा की

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

संगति का प्रयास करना ही हमारा मार्ग होना चाहिए और उसकी अनुभूति हमारा लक्ष्य होना चाहिए तभी हम जीवन के इस संघर्षपूर्ण मार्ग को सरलता के साथ पार कर पायेंगे।

सूक्ति : – उपरोक्त सभी लक्षण।

ऋग्वेद मन्त्र 1.66.5

Rigveda 1.66.5

तं वश्चराथा वयं वसत्यास्तं न गावो नक्षन्त इद्धम् ।
सिन्धुर्न क्षोदः प्र नीचीरैनोन्नवन्त गावः स्वर्द्दशीके ॥ ५ ॥

(तम) उसको (व:) आपके (चराथा) इधर-उधर विचरण करने वाले (वयम्) हम (वसत्या) स्थापित, विश्राम करने वाला (अस्तम्) शरण की ओर (न) जैसे कि (गावः) गाय (नक्षन्ते) प्राप्त होती है (इद्धम्) पूरी तरह प्रकाशित (सिन्धुः) जल (न) जैसे कि (क्षोदः) बहते हुए (प्र – एनोत् से पूर्व लगाकर) (नीचीः) नीचे जाने वाली (एनोत – प्र एनोत) प्रेरणा (नवन्त) संयुक्त (गावः) किरणें (प्रकाश की, ज्ञान की) (स्वः) स्वयं, परमात्मा, सूर्य की ओर (दृशीके) दर्शन के योग्य, अनुभूति के योग्य (परमात्मा)।

व्याख्या :-

हम सब किस लक्ष्य की ओर निर्धारित हैं?

हम, आपके लोग, इधर-उधर विचरण करते हुए या स्थापित, एक स्थान पर विश्राम करते हुए आपको (परमात्मा को) प्राप्त करते हैं जो पूरी तरह से प्रकाशित है।

1. जिस प्रकार गज़एं अपने विश्रामगृह में वापस पहुंचती हैं।
2. जिस प्रकार बहते हुए जल नीचे जाने के लिए प्रेरित होते हैं (समुद्र की तरफ अर्थात् अपने स्रोत की तरफ)।
3. जिस प्रकार सूर्य की किरणें अपनी तरफ अर्थात् अपने स्रोत सूर्य की तरफ संगति करती हैं जो देखने योग्य हैं; जिस प्रकार ज्ञान का प्रकाश अपनी तरफ अर्थात् अपने स्रोत परमात्मा की तरफ संगति करता है जो अनुभूति के योग्य है।

जीवन में सार्थकता :-

ज्ञान के समक्ष अज्ञान कितना छोटा है?

प्रकाश के समक्ष अन्धकार कितना छोटा है?

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

इस सृष्टि में हर वस्तु अन्ततः अपने स्रोत की तरफ जाने के लिए निर्धारित है, चाहे वह सूर्य के प्रकाश की किरणें हों या ज्ञान का प्रकाश हो, समुद्र से वाष्णीकृत हुआ जल हो या हमारी आत्मा हो, जो सारे शरीर में परमात्मा का ही सूक्ष्म क्रियात्मक रूप है। वायु भी सदैव अपने मूल स्तर पर ही रहती है।

अपने स्रोत से अलग रहने का स्थान और समय अर्थात् अज्ञानता और अन्धकार स्रोत की तुलना में बहुत ही छोटा है, जो (स्रोत) असीम है। परन्तु निश्चित रूप से हमें बहुत तेज चलने की आवश्यकता है, क्योंकि हमारे पास बहुत कम समय उपलब्ध है और वह तेज गति से भाग रहा है और हमारा जीवन इतना क्षणभंगुर है कि हमें एक क्षण भी बर्बाद नहीं करना चाहिए।

सूर्य, पृथ्वी और चन्द्रमा की एक पंक्ति में उनके आकार के अनुसार एक छवि तैयार करो जिसमें चन्द्रमा पृथ्वी का एक चौथाई हो और पृथ्वी सूर्य की एक चौथाई हो। इसी प्रकार की छवि सामवेद-51 और ऋग्वेद-8.103.2 के समान है। यह छवि प्रदर्शित करेगी कि अन्धकार का क्षेत्र पृथ्वी और चन्द्रमा के बीच त्रिकोण रूप में है, जबकि शेष सर्वत्र प्रकाश ही है।

सूक्ष्मिका :-

(तम् वः चराथा वयम् वसत्या – इद्धम् दृशीके)

हम, आपके लोग, इधर-उधर विचरण करते हुए या स्थापित, एक स्थान पर विश्राम करते हुए आपको (परमात्मा को) प्राप्त करते हैं जो पूरी तरह से प्रकाशित है और जो देखने योग्य तथा अनुभूति के योग्य हैं।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



ऋग्वेद मण्डल-1 सूक्त 67

ऋग्वेद मन्त्र 1.67.1

Rigveda 1.67.1

वनेषु जायुर्मर्तेषु मित्रो वृणीते श्रुष्टि राजेवाजुर्यम् ।
क्षेमो न साधुः क्रतुर्भद्रो भुवत्स्वाधीर्होता हव्यवाट् ॥१॥

(वनेषु) जंगलों में, श्रद्धालु भक्तों में (जायुः) पैदा हुआ, अभिव्यक्त हुआ (मर्तेषु) मरने योग्य मनुष्यों में (मित्रः) मित्र (वृणीते) वरण करता है अर्थात् चुनता है (श्रुष्टिम्) उत्साहित गति से कार्य करने वाला (राजा) राजा (इव) जैसे (अजुर्यम्) वृद्ध न होने वाला, युवा (क्षेमः) कल्याण करने वाला (न) जैसे कि (साधुः) महान्, दिव्य, श्रेष्ठ (क्रतुः) निर्माण करने वाला (न) जैसे कि (भद्रः) कल्याण करने वाला (भुवत्) है (स्वाधीः) कल्याण करने वाला (होता) पदार्थों को लाने वाला और देने वाला (हव्यवाट्) आहुतियों को ले जाने वाला ।

व्याख्या :-

परमात्मा तथा एक राजा अपना सहयोगी दल किस प्रकार चुनता है?

जिस प्रकार एक राजा शीघ्रगामी और उत्साही युवा, वृद्ध न होने वाले लोगों को अपने सहयोगी दल के रूप में चुनता है जो सब मनुष्यों के मित्र हों, उसी प्रकार सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा, उन लोगों को चुनता है जो मन के बनों में उत्पन्न होते हैं और श्रद्धालु भक्तों की तरह अभिव्यक्त होते हैं; जो महान्, दिव्य और श्रेष्ठ लोगों की तरह सबका कल्याण करते हैं; जो एक रचनात्मक कार्यकर्ता की तरह कल्याण करते हैं। अग्नि अर्थात् ऊर्जा स्वयं कल्याण यज्ञों के लिए सभी पदार्थ लाता है और देता है तथा सभी आहुतियों को ले जाता है।

जीवन में सार्थकता :-

सभी नियोक्ता, ईमानदार और श्रेष्ठ कर्मचारियों की ही तलाश क्यों करते हैं?

परमात्मा एक सृष्टि पुरुष है जो सृष्टि यज्ञ का संचालन कर रहा है, अतः, स्वाभाविक रूप से, परमात्मा केवल उन्हीं को चुनेगा जो उसके दिव्य सहचर बनकर वास्तविक यज्ञ करने वाले हों। इसी प्रकार एक राजा या एक नियोक्ता भी अपने सहयोगी दल गठन करने के लिए केवल उन्हीं लोगों को चुनेगा जो उसके गन्तव्य का समर्थन करने में सक्षम हों। यहाँ तक कि एक बेईमान नियोक्ता भी केवल ईमानदार कर्मचारियों को ही नियुक्त करना चाहता है। अतः ईमानदारी, श्रेष्ठता की माँग सदैव बनी रहेगी।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



सूक्ति :

(भुवत् स्वाधीः होता हव्यवाट्)

अग्नि अर्थात् ऊर्जा स्वयं कल्याण यज्ञों के लिए सभी पदार्थ लाता है और देता है तथा सभी आहुतियों को ले जाता है।

ऋग्वेद मन्त्र 1.67.2

Rigveda 1.67.2

हस्ते दधानो नृम्णा विश्वान्यमे देवान्धाद् गुहा निषीदन् ।
विदन्तीमत्र नरो धियंधा हृदा यत्पष्टान्मन्त्राँ अशंसन् ॥२॥

(हस्ते) हाथों में (दधानः) धारण करते हुए (नृम्णा) सम्पदा (विश्वानि) सभी (अमे) बलों में, ज्ञान में (देवान्) दिव्य शक्तियों में और दिव्य लोगों में (धात्) धारण करते हैं (गुहा) गहरे आकाश में (अन्तःकरण, बुद्धि और मन के) (निषीदन) प्रतिष्ठित योगी या भक्त (विदन्ती) जानता है (इम) निश्चित रूप से (अत्र) यहाँ, इस जीवन में (नरः) मनुष्य (अनुभूति की ओर अग्रसर) (धियम) बौद्धिक कार्य (धाः) धारण करता है (हृदा) हृदय से, मन से (यत्) जब (तप्तान) प्रतिष्ठित, समझा गया, प्रयोग किया गया, तीव्र बुद्धि (मन्त्रान्) मन्त्र, सूत्र, गहरे विचार (अशंसन) पूजा में उच्चारित, अनुभूति के लिए।

व्याख्या :-

परमात्मा किसको बल और ज्ञान देते हैं?

परमात्मा को जानने के लिए कौन प्रगति करता है?

समस्त सम्पदाओं को हाथ में धारण करते हुए (सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा) दिव्य शक्तियों और दिव्य लोगों में, स्थापित योगियों और श्रद्धालु भक्तों के गहरे हृदय आकाश अर्थात् अन्तःकरण, बुद्धि और मन में, बल और ज्ञान धारण करते हैं।

वे मनुष्य (अनुभूति की ओर अग्रसर होते हुए) जानते हैं (उस परमात्मा को), निश्चित रूप से यहीं, इसी जीवन में, और उसे अपने बौद्धिक कार्यों में स्वीकार और धारण करते हैं, जब वे अपने मन और हृदय से, अपनी बुद्धि को पूजा, भक्ति और अनुभूति के लिए मन्त्रों का गान करते हुए उसी में स्थापित हो जाते हैं, उसे समझ लेते हैं, उसका प्रयोग कर लेते हैं और इस प्रकार बुद्धि को तीव्र कर लेते हैं।

जीवन में सार्थकता :-

एक आध्यात्मिक जीवन एक भौतिक जीवन से किस प्रकार भिन्न होता है?

जो व्यक्ति परमात्मा की अनुभूति की ओर प्रगति करने की इच्छा करता है, उसके लिए भौतिक शक्तियाँ और सम्पदाएँ कोई महत्व नहीं रखती। परन्तु ये निश्चित रूप से उसके यौगिक विकास की दिव्य सिद्धियाँ प्रदान करती हैं। यह एक आध्यात्मिक व्यक्ति की लगातार चलने वाला प्रगतिशील

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



जीवन होता है। जबकि एक भौतिक जीवन में शक्तियाँ और सम्पदाएँ, अपने भौतिक रूप में ही, सफलता का केन्द्रीय विषय होती हैं। इस प्रकार केन्द्रित होकर मनुष्य बहुत कम ही अपने चरित्र की श्रेष्ठता और सच्चाई पर स्थिर रह पाते हैं। इस प्रकार वह अपने अच्छे और बुरे कर्मों के चक्र में बार-बार जाने के लिए अपने मानव जीवन को नष्ट कर लेते हैं। उन्नति और अवनति भौतिक जीवन के बार-बार चलने वाले चक्र हैं, क्योंकि ऐसा जीवन परमात्मा के साथ सच्ची और गहरी संगति से रहित होता है। भौतिक उपभोक्तावाद में लगे हुए जीवन का सबसे बाधक लक्षण है घटते हुए प्रतिफल या घटते हुए संतोष का सिद्धान्त। एक पदार्थ में घटती हुई रुचि के साथ मनुष्य सदैव रुचि की नई-नई चीजों की खोज में ही लगा रहता है।

सूक्ति :-

(विदन्ती इम अत्र नरः धियम्)

(धा: हृदा यत् तष्टान् मन्त्रान् अशांसन्)

वे मनुष्य (अनुभूति की ओर अग्रसर होते हुए) जानते हैं (उस परमात्मा को), निश्चित रूप से यहीं, इसी जीवन में, और उसे अपने बौद्धिक कार्यों में स्वीकार और धारण करते हैं, जब वे अपने मन और हृदय से, अपनी बुद्धि को पूजा, भक्ति और अनुभूति के लिए मन्त्रों का गान करते हुए उसी में स्थापित हो जाते हैं, उसे समझ लेते हैं, उसका प्रयोग कर लेते हैं और इस प्रकार बुद्धि को तीव्र कर लेते हैं।

ऋग्वेद मन्त्र 1.67.3

Rigveda 1.67.3

अजो न क्षां दाधार पृथिवीं तस्तम्भ द्यां मन्त्रेभिः सत्यैः।

प्रिया पदानि पश्वो नि पाहि विश्वायुरग्ने गुहा गुहं गा: ॥३॥

(अजः) न्यायिक, सक्रिय शक्ति (न) जैसे कि (क्षाम) निवास के योग्य (दाधार) धारण करता है (पृथिवीम्) पृथ्वी (तस्तम्भ) थाम कर रखता है (द्याम) द्युलोक, आकाशीय स्थान (मन्त्रेभिः) मन्त्रों से, दिव्य प्रमाणित विचारों से (सत्यैः) वास्तविक, शाश्वत सत्य (प्रिया) प्रिय (पदानि) कदमों का, आवासों का (पश्वः) पशुओं से, पाश्विक वृत्तियों से (नि पाहि) निश्चित रूप से, संरक्षण (विश्वायुः) सबका जीवन (अग्ने) सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा (गुहा) अत्यन्त गहरा (गुहम्) गहरी गुफा में (गा:) प्रवेश।

व्याख्या :-

पृथ्वी और अन्तरिक्ष को कौन धारण करता है?

कौन सबको संरक्षित करता है?

सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा, एक न्यायिक और सक्रिय शक्ति की तरह सबके वास के योग्य पृथ्वी को धारण करता है।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

वह आकाशीय अन्तरिक्ष को अपने मन्त्रों से धारण करता है अर्थात् दिव्य प्रमाणित सूत्र जो वास्तविक और शाश्वत् सत्य हैं।

वह सबका जीवन होने के नाते, गहरी गुफा की भी गहराई में प्रवेश करता है और सभी रहस्यों का भी रहस्य जानता है।

जीवन में सार्थकता :-

एक समुचित दिव्य जीवन क्या होता है?

इस सृष्टि की सर्वोच्च ऊर्जा हमारी गहरी गुफा की भी गहराई में विद्यमान है अर्थात् ब्रह्मरन्ध्र में जहाँ अध्यात्मिक पथ पर प्रगति करने वाला कोई भी व्यक्ति इसकी अनुभूति प्राप्त कर सकता है। वह सर्वोच्च ऊर्जा सर्वविद्यमान और सर्वज्ञाता होने के कारण सभी रहस्यों के रहस्य को भी जानता है। अतः केवल उसी को जानकार और उसकी अनुभूति प्राप्त करके ही कुछ भी प्राप्त करना शेष नहीं रहता जो उसको जान लेते हैं या उसकी अनुभूति प्राप्त कर लेते हैं वह उन्हें समुचित दिव्य जीवन प्रदान करता है। इसका अर्थ हुआ, पूरी तरह शान्त, संतुष्ट और कर्म मार्ग के अन्त को सुनिश्चित करते हुए जीवन और मृत्यु के चक्र का अन्त हो जाता है।

सूक्तिः—

(विश्वायुः अग्ने गुहा गुहम् गाः)

वह सबका जीवन होने के नाते, गहरी गुफी की भी गहराई में प्रवेश करता है और सभी रहस्यों का भी रहस्य जानता है।

ऋग्वेद मन्त्र 1.67.4

Rigveda 1.67.4

य ई चिकेत गुहा भवन्तमा यः ससाद धारामृतस्य ।

वि ये चृतन्त्यृता सपन्त आदिद्वसूनि प्र ववाचास्मै ॥४॥

(यः) जो (ईम) निश्चित रूप से (चिकेत) जानता है (गुहा भवन्तम) गहरी गुफा में है (आ – ससाद से पूर्व लगाकर) (यः) जो (ससाद – आ ससाद) आहवान करता है, प्राप्त करता है, पूजा करता है (धाराम) धाराएँ (ऋतस्य) ऋत, वास्तविक और शाश्वत सत्य का (वि – चृतन्ति से पूर्व लगाकर) (ये) जो (चृतन्ति – वि चृतन्ति) विशेष रूप से प्रकाशित करने वाला (ऋता) ऋत, वास्तविक और शाश्वत सत्य, यज्ञ (सपन्तः) अभ्यास करते हुए (सत्य, यज्ञ का) (आत् इत) उसके बाद (वसूनि) ज्ञान की समस्त सम्पदाओं का (प्र ववाच) उपदेशकर्ता (अस्मै) उसके लिए।

व्याख्या :-

ज्ञान की सर्वोच्च सम्पदा का अधिकारी कौन है?

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

जो निश्चित रूप से अपनी गहरी गुफा में जानता है (उस सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा को); जो ऋत् अर्थात् वास्तविक और शाश्वत् सच्चाई की धाराओं की पूजा करता है, आह्वान करता है और उन्हें प्राप्त करता है; जो उस वास्तविक, शाश्वत् सत्य और यज्ञ को इनका अभ्यास करते हुए (अपने भीतर) विशेष रूप से प्रकाशित कर लेता है, उसके बाद, उसके लिए (वह परमात्मा) ज्ञान की समस्त सम्पदा का उपदेश करते हैं और उपलब्ध कराते हैं।

जीवन में सार्थकता :-

परमात्मा की कौन सी अभिव्यक्ति इस सारी सृष्टि का आधार है?

एक राष्ट्र के सर्वांगीण विकास के लिए दिव्य सूत्र क्या है?

ज्ञान की सर्वोच्च सम्पदा को प्राप्त करना मानव जीवन का एक अत्यन्त महत्वपूर्ण पक्ष है, इसका प्रयोग चाहे भौतिक लक्ष्यों के लिए हो जो उसे कर्म बन्धनों के मार्ग पर अग्रसर करते हैं या आध्यात्मिक उद्देश्य के लिए हो जो उसे कर्म बन्धनों से मुक्ति के मार्ग की तरफ ले जाते हैं। परमात्मा का ऊर्जा रूप इस सृष्टि के एक और प्रत्येक कण का आधार है।

अतः प्रत्येक शासक को, चाहे वह राष्ट्र का मुखिया हो, चाहे परिवार का मुखिया हो और चाहे किसी संस्थान का मुखिया हो, अपने अनुयायियों और प्रजाओं की शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक ऊर्जाओं को पोषित करके उनका प्रयोग करना चाहिए और संसाधनों का किसी भी नकारात्मक कार्य में प्रयोग नहीं होने देना चाहिए। एक राष्ट्र के सर्वांगीण विकास का यही दिव्य सूत्र है।

ऋग्वेद मन्त्र 1.67.5

Rigveda 1.67.5

वि यो वीरुत्सु रोधन्महित्वोत प्रजा उत प्रसूष्वन्तः ।

चित्तिर पां दसे विश्वायुः सद्मेव धीरा: संमाय चक्रुः ॥५॥

(वि – रोधत् से पूर्व लगाकर) (य:) जो (सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा) (वीरुत्सु) औषधियों में, तरल में (रोधत् – वि रोधत) स्थापित करता, आवरण करता है (महित्वा) अपनी महिमा के साथ (उत) और (प्रजा:) प्रजाओं में, उत्तम चीजों में (उत) और (प्रसूषु) जन्म देने वाली में (माताओं) (अन्तः) अन्दर (चित्तिः) पूरी तरह जानते हुए (अपाम) जलों का (दसे) घर (विश्वायुः) सबका जीवन (सद्य) घर (इव) जैसे (धीरा:) तरंगित सन्त (संमाय) समझते हुए (चक्रुः) करता है, जीता है।

व्याख्या :-

अनुभूति प्राप्त आत्माएँ परमात्मा को अपना घर कैसे मानते हैं?

सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा, जो अपनी महिमाओं को औषधियों में और सभी तरल पदार्थों में और सन्तानों में, सभी उत्पन्न चीजों में और जन्म देने वाली माताओं में स्थापित करते हैं; जो सबका जीवन होने

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

के नाते सभी तरल पदार्थों के घरों को जानता है, तरंगित सन्त अर्थात् अनुभूति प्राप्त आत्माएँ उसे अपने घर की तरह समझते हैं और सभी कार्य करते हैं।

जीवन में सार्थकता :-

हम परमात्मा के साथ एकता की अनुभूति कैसे प्राप्त कर सकते हैं?

हम अन्य जीवों के साथ एकता कैसे सुनिश्चित कर सकते हैं?

एक बार जब हम इसकी अनुभूति प्राप्त कर लेते हैं कि परमात्मा हमारे चारों तरफ और हमसे दूर प्रत्येक कण में विद्यमान है, सारी सृष्टि में विद्यमान है और स्वाभाविक रूप से हम इस सृष्टि में ही कहीं जी रहे हैं। इस प्रकार, यह सरल तरीके से सिद्ध हो जाता है कि हम परमात्मा के घर में ही जी रहे हैं।

इस लगातार चेतना के साथ हम मानसिक रूप से भी यह महसूस करना शुरू कर देंगे कि हमारी चेतना उस सर्वोच्च चेतना का ही एक अभिन्न भाग है। जिस प्रकार उस सर्वोच्च ऊर्जा के साथ मूल एकता हमारे मन में एक संवेदनशीलता पैदा कर देती है तो हम सभी सांसारिक कार्यों को करते हुए भी परमात्मा की अनुभूति प्राप्त कर सकते हैं।

यही अनुपात सभी मानवीय सम्बन्धों में और सभी जीवों के साथ अपनी एकत्मकता स्थापित करने के लिए लागू किया जा सकता है, चाहे वह परिवार हो, समाज हो, कार्यस्थल हो या समूचा राष्ट्र।

सूक्ति :-

(सद्य इस धीरा: संमाय चक्रः)

तरंगित सन्त अर्थात् अनुभूति प्राप्त आत्माएँ उसे अपने घर की तरह समझते हैं और सभी कार्य करते हैं।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

ऋग्वेद मण्डल-1 सूक्त 68

ऋग्वेद मन्त्र 1.68.1

Rigveda 1.68.1

श्रीणन्नुप स्थाद्विं भुरण्युः स्थातुश्चरथमत्कून्यूर्णोत् ।
परि यदेषामेको विश्वेषां भुवदेवों देवानां महित्वा ॥१॥

(श्रीणन्) परिपक्व करने वाला, तरंगित करने वाला, ऊर्जा देने वाला (उप स्थात्) उपस्थित होता है, अभिव्यक्त करता है (दिवम्) प्रकाशित (भुरण्युः) पोषण करने वाला (स्थातुः) स्थिर न चलने वाला (चरथम्) अस्थिर, चलता हुआ (अक्तून्) सृष्टि में दिखाई देने वाला सब कुछ, रात्रि (व्यूर्णोत्) चमकाने के लिए व्यापक (अपने प्रकाश से) तथा प्रकाशित (ज्ञान से) (परि – भुवत् से पूर्व लगाकर) (यत्) जो (एषाम्) इनका (एकः) एकमात्र (विश्वेषाम्) सबकुछ (भुवत् – परि भुवत्) सब जगह छाया हुआ (देवः) सर्वोच्च दिव्य (देवानाम्) सभी दिव्यताओं में (महित्वा) अपनी स्वयं की महिमावान् शक्ति के कारण ।

व्याख्या :-

अपनी सर्वविद्यमानता और सर्वशक्तिमान होने के कारण परमात्मा क्या करते हैं?

सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा, प्रत्येक चल और अचल अर्थात् गतिशील या स्थिर और इस सृष्टि में दिखाई देने वाली हर वस्तु को परिपक्व करते हुए, तरंगित करते हुए, उसे ऊर्जावान करते हुए और सबको धारण करते हुए, स्वयं को उपस्थित और अभिव्यक्त करते हैं। वे (रात्रि को अपने प्रकाश के साथ) चमकाने के लिए और (अज्ञानियों को अपने ज्ञान के साथ) प्रकाशित करने के लिए सब जगह व्याप्त होते हैं। वह केवल एक ही है जो इन सब दिखाई देने वालों में सर्वत्र व्याप्त है, अपनी स्वयं की महिमावान् शक्ति के सहारे, सभी दिव्यताओं में सर्वोच्च दिव्य है।

जीवन में सार्थकता :-

परमात्मा की अद्वितियता, केवल एक होना, किन शब्दों में व्यक्त की जा सकती है?

परमात्मा की अद्वितियता अर्थात् एक होने को व्यक्त करने के लिए चार प्रसिद्ध शब्द हैं जिनमें 'सर्व' उपसर्ग का प्रयोग होता है :- (1) सर्वविद्यमान (सब जगह विद्यमान, सब जगह आच्छादित), (2) सर्वशक्तिमान (सभी शक्तियों से सम्पन्न), (3) सर्वज्ञाता (सब कुछ जानने वाला), (4) सर्वनिर्माता

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

(सर्वोच्च निर्माण शक्ति)। इस प्रकार ये शब्द सृष्टि के निर्माण में परमात्मा की सभी सर्वोच्च शक्तियों का वर्णन करते हैं।

सूक्ति :-

(यत् एषाम् एकः विश्वेषाम् परि भुवत् देवः देवानाम् महित्वा)

वह केवल एक ही है जो इन सब दिखाई देने वालों में सर्वत्र प्राप्त है, अपनी स्वयं की महिमावान् शक्ति के सहारे, सभी दिव्यताओं में सर्वोच्च दिव्य है।

ऋग्वेद मन्त्र 1.68.2

Rigveda 1.68.2

आदिते विश्वे क्रतुं जुषन्त शुष्काद्यद्वे जीवो जनिष्ठाः।
भजन्त विश्वे देवत्वं नाम ऋतं सपन्तो अमृतमेवैः॥२॥

(आत् इत ते) इसके बाद वे (सभी आयामों में परमात्मा की सर्वता में विश्वास करने और उसकी अनुभूति करने के बाद) (विश्वे) सब (क्रतुम्) करते हैं (जुषन्त) सेवा (प्रेम से और कल्याण के लिए) (शुष्कात्) अनेक प्रकार की तपस्याओं से विजातीयता को नष्ट करने वाले (शरीर और मन की) (यत्) जब (देव) सर्वोच्च दिव्य (जीवः) चेतन प्राणियों में (जनिष्ठाः) प्रगट होता है (भजन्त) उच्चारण करते हुए, आह्वान करते हुए (विश्वे) सब (देवत्वम्) दिव्यताओं को प्राप्त करता है (नाम) आपका नाम (ऋतम्) शाश्वत् सत्य (सपन्तः) स्पर्श करते हुए, अपनाते हुए, अनुभूति करते हुए (अमृतम्) मुक्ति की ओर (एवैः) मार्गो से।

व्याख्या :-

मुक्ति के सरल कदम कौन से हैं?

परमात्मा की अनुभूति के मार्ग पर, ऋग्वेद-1.68.1 को जारी रखते हुए –

इसके बाद वे सब सेवाओं को (प्रेम और कल्याण के भाव से) सम्पन्न करते हैं।

जब वे (शरीर और मन की) विजातीयताओं को भिन्न-भिन्न प्रकार की तपस्याओं से नष्ट कर लेते हैं तब वह (परमात्मा) उन चेतन जीवों में उपरिथित होकर स्वयं को अभिव्यक्त करते हैं।

जब वह आपके नाम (परमात्मा की सभी संज्ञाओं और उसकी अभिव्यक्तियों) का उच्चारण करता है, उनका आह्वान करता है तो वह दिव्यताओं को प्राप्त करता है। शाश्वत सत्य (परमात्मा) का स्पर्श करके, उसे जीवन में धारण करके और उसकी अनुभूति प्राप्त करके वह ऐसे मार्गों से मुक्ति की ओर अग्रसर होता है।

जीवन में सार्थकता :-

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

भारतीय धार्मिक परम्पराएं किस प्रकार हमें मुक्ति की ओर ले जाती हैं?

सेवा, तप और नाम जप जैसी भारतीय धार्मिक परम्पराएं उस शाश्वत सत्य की अनुभूति प्राप्त करने का एक सम्पूर्ण क्रम है, यदि इन्हें सच्चाई और गहराई से सम्पन्न किया जाये।

सच्ची सेवा के लिए, सर्वप्रथम अपने व्यक्तिगत अहंकार और इच्छाओं को पूरी तरह समाप्त कर देना चाहिए।

तपस्याओं का केन्द्र भी हमें अहंकार रहित और इच्छा रहित बनाने पर होना चाहिए।

परमात्मा की सभी अभिव्यक्तियों का गुणगान करने से हम उस पर ध्यान करने के योग्य बन सकते हैं।

सूक्तिः—

(सेवा, तप, नाम जप — मिले सनातन सत)

सेवा, तप और नाम जप जैसी भारतीय धार्मिक परम्पराएं उस शाश्वत सत्य की अनुभूति प्राप्त करने का एक सम्पूर्ण क्रम है।

ऋग्वेद मन्त्र 1.68.3

Rigveda 1.68.3

ऋतस्य प्रेषा ऋतस्य धीतिर्विश्वायुर्विश्वे अपांसि चक्रुः।

यस्तुभ्यं दाशाद्यो वा ते शिक्षात्तर्सै चिकित्वात्रयिं दयस्व ॥३॥

(ऋतस्य) वास्तविक, शाश्वत् सत्य के बारे में

(प्रेषाम्) प्रेरणाएँ, इच्छा, प्रकाश (ऋतस्य) वास्तविक, शाश्वत् सत्य के बारे में (धीतिः) धारण करना, स्वीकार करना (विश्वायुः) सबका जीवन (विश्वे) सब (अपांसि) कार्य (चक्रुः) करता है (यः) जो (तुभ्यम्) आपके लिए (दाशात्) देता है, समर्पित करता है (यः) जो (वा) और (ते) आपके लिए (शिक्षात्) सीखता है, बल की कामना करता है (तर्सै) उसे (चिकित्वान्) पूरी तरह जानते हुए (रयिम्) सम्पदा (दयस्व) देता है।

व्याख्या :

परमात्मा किसको पूर्ण रूप से जानते हैं और अपनी सम्पदा भी प्रदान करते हैं?

हे सबके जीवन! हम वास्तविक और शाश्वत सत्य को जानने की इच्छा रखते हैं और उसके लिए प्रेरित हैं; हम वास्तविक शाश्वत सत्य को स्वीकार करते हैं और उसे धारण करते हैं। आप ही सभी कार्य करते हो।

जो व्यक्ति आपको (अपने सभी कर्म) प्रदान करता है और जो आपसे शिक्षा लेता है और बल की कामना करता है, उसे पूरी तरह जानते हुए, आप अपनी सम्पदा प्रदान करते हो।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

जीवन में सार्थकता :-

हम परमात्मा के द्वारा जानने योग्य कैसे बन सकते हैं?

वास्तव में परमात्मा सबको जानते हैं। हमारे सभी कर्म – अच्छे या बुरे, उन्हीं के पास पहुँचते हैं, क्योंकि वे हमारे भीतर ही विद्यमान हैं। इस मन्त्र का केन्द्र यह है कि उसकी सम्पदा का अधिकारी बनना चाहिए। उसकी सम्पदा है – वास्तविक शाश्वत, सत्य का ज्ञान और उसकी अनुभूति। उस सर्वोच्च आनन्द को प्राप्त करने का अधिकारी बनने के लिए हमें निम्न कदमों पर चलना चाहिए :–

1. उस (वास्तविक शाश्वत सत्य) को जानने की इच्छा करना और उसके लिए प्रेरित होना।
2. उस (वास्तविक शाश्वत सत्य) को स्वीकार करना और धारण करना।
3. इस बात की अनुभूति करना कि वास्तव में वही सभी कार्यों का कर्ता है। ऐसा जानते हुए अपने सभी कर्मों को उसके प्रति समर्पित करना जो देखने में आपके द्वारा किये जा रहे हैं।
4. सभी प्रकार के बलों को उसी से सीखना और प्राप्त करना।

सूक्ष्म :-

(तरम्ये चिकित्वान् रयिम् दयस्व)

उसे पूरी तरह जानते हुए, वह (परमात्मा) अपनी सम्पदा प्रदान करते हैं।

ऋग्वेद मन्त्र 1.68.4

Rigveda 1.68.4

होता निष्ठो मनोरपत्ये स चिन्वासां पती रयीणाम् ।

इच्छन्त रेतो मिथस्तनूषु सं जानत स्वैर्दक्षैरमूराः ॥४॥

(होता) सब पदार्थों का लाने वाला और देने वाला (निष्ठः) निश्चित रूप से स्थापित (मनोः) मननशील मन का, बुद्धि का (अपत्ये) सन्तान, अनुयायी (सः) वह (सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा) (चित् नु) केवल (आसाम) सन्तानों का, अनुयायियों का, सब जीवों का (पतिः) स्वामी, संरक्षक (रयीणाम) समस्त सम्पदाओं की (इच्छन्त) इच्छा (रेतः) अमूल्य ऊर्जा (मिथः) इकट्ठे जाते हुए (तनूषु) शरीरों के लिए अर्थात् सन्तान को जन्म देने के लिए (सम् जानत) पूर्ण संज्ञान लेता है, पूरी तरह जानता है (स्वैः दक्षैः) विशेषज्ञता के साथ, आत्मा के बल के साथ (अमूराः) बुद्धिमान (मूर्खता के किसी भी लक्षण के बिना)।

व्याख्या :-

सन्तानों में परमात्मा किस प्रकार स्थापित होते हैं?

ऋषि और ऋषिकाओं ने सन्तान उत्पत्ति क्यों की?

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

प्रत्येक वस्तु को लाने वाले और देने वाले अर्थात् परमात्मा का ऊर्जा रूप, निश्चित रूप से मननशील बुद्धि वाले और विद्वानों की सन्तानों एवं अनुयायियों में स्थापित होता है।

वह, परमात्मा का ऊर्जा रूप ही केवल सन्तानों, अनुयायियों और सभी जीवों का स्वामी और संरक्षक है। विद्वान् लोग (मूर्खता के किसी भी लक्षण से रहित) शरीरों के लिए अर्थात् सन्तानों को जीवन प्रदान करने के लिए, महत्वपूर्ण ऊर्जाओं (पति और पत्नी) को संयुक्त करने की इच्छा करते हैं, क्योंकि वे आत्मा के बल को पूरी तरह जानते हैं (कि उनकी ऊर्जाएँ उनकी सन्तान में स्थापित होंगी)।

जीवन में सार्थकता :-

प्रत्येक माता-पिता को सन्तान उत्पत्ति से पूर्व क्या सुनिश्चित करना चाहिए?

एक विद्वान् (मूर्खता के किसी भी लक्षण से रहित) को यह जानना चाहिए कि, विज्ञान की स्थापित मान्यताओं के अनुसार भी, माता-पिता के लक्षण सन्तान में स्थापित होते हैं। इस ज्ञान के साथ, सन्त, साधु, ऋषि और ऋषिकाएँ भी इस इच्छा के साथ सन्तानों की उत्पत्ति करते थे कि उनकी ऊर्जाएँ, उनका ज्ञान और अन्य लक्षण तथा स्वाभाविक रूप से उनकी अनुभूति प्राप्त दिव्यताएँ निश्चित ही उनकी सन्तानों में स्थापित होंगी। वे आध्यात्मिक शक्तियों को पीढ़ी-दर-पीढ़ी स्थानान्तरित करने की इच्छा करते थे। अतः सभी माता-पिता को अपने जीवन में आध्यात्मिकता का विकास करना चाहिए जिससे अपनी सन्तान के रूप में वे अपनी सत्य प्रतिलिपि प्राप्त कर सकें।

सूक्ति :-

(होता निष्ठतः मनोः अपत्ये)

प्रत्येक वस्तु को लाने वाले और देने वाले अर्थात् परमात्मा का ऊर्जा रूप, निश्चित रूप से मननशील बुद्धि वाले और विद्वानों की सन्तानों एवं अनुयायियों में स्थापित होता है।

ऋग्वेद मन्त्र 1.68.5

Rigveda 1.68.5

पितुर्न पुत्राः क्रतुं जुषन्त श्रोषन्ये अस्य शासं तुरासः।

वि राय और्णोद्गुरः पुरुक्षुः पिपेश नाकं स्तृभिर्दमूनाः ॥५॥

(पितुः) पिता (न) जैसे कि (पुत्राः) पुत्र, सन्तान (क्रतुम्) करता है (जुषन्त) सेवा (प्रेम से और कल्याण के लिए) (श्रोषन्) सुनता है (ये) जो (अस्य) उसका (परमात्मा, पिता) (शासन) निर्देश (तुरासः) महान् कार्यों को करने में तीव्र (वि – और्णोत् से पूर्व लगाकर) (रायः) सम्पदा (और्णोत् – वि और्णोत्) चमकाने (प्रकाश से) के लिए और प्रकाशित (ज्ञान से) करने के लिए छाया हुआ (दुरः) द्वार (पुरुक्षुः)

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

भोजन से पालन-पोषण और पूर्ण करने वाला (पिपेश) पैदा करता है, अलंकृत करता है (नाकम) आकाशीय स्थान (स्तुभिः) आकाशीय तारा मण्डल से (दमूनाः) सर्वशक्ति का स्वामी।

व्याख्या :-

परमात्मा किसके लिए अपनी सम्पदा और तारा मण्डल सहित आकाशीय अन्तरिक्ष के द्वारा खोल देते हैं?

परमात्मा के वो पुत्र जो अपने पिता (परमात्मा) की तरह सेवा करते हैं (सबकी पूरे प्रेम के साथ और कल्याण के लिए अर्थात् यज्ञ के लिए); जो (परमात्मा के) शासन और निर्देशों को सुनते हैं; जो महान् कार्यों को करने के लिए शीघ्रता से कार्य करते हैं, परमात्मा उनके जीवन को चमकाने और प्रकाशित करने के लिए अपनी सम्पदा प्रदान करते हैं। परमात्मा शुभ कार्यों से पूर्ण करते हुए और पालन करते हुए उनके लिए अपने द्वारा खोल देते हैं और उनके जीवन को (प्रकाश से) चमकाने के लिए और (ज्ञान से) प्रकाशित करने के लिए व्याप्त होते हैं। सर्वशक्तियों के स्वामी, परमात्मा, तारा मण्डल सहित समूचे आकाशीय अन्तरिक्ष का निर्माण करते हैं और उसे सुसज्जित करते हैं।

जीवन में सार्थकता :-

प्रत्येक पुत्र को अपने माता-पिता के साथ किस प्रकार का व्यवहार करना चाहिए?

प्रत्येक पुत्र को अपने पिता का आशीर्वाद लेने के लिए तीन मुख्य लक्षण धारण करने चाहिए :-

1. यज्ञ की परम्पराओं का अनुसरण करना अर्थात् सबका कल्याण करना।
2. माता-पिता के निर्देशों का पालन करना।
3. महान् कार्यों को करने में शीघ्रता करना।

इन लक्षणों के साथ आपके भौतिक माता-पिता तथा सर्वमान्य दिव्य पिता (परमात्मा) भौतिक और अन्तर्रात्मिक आनन्द सुनिश्चित कराने के लिए आध्यात्मिक रूप में आपसे प्रसन्न होंगे।

सूक्ति :- (पितु न पुत्रा क्रतुम जुषन्त श्रोषन ये अस्य शासम्)

एक पुत्र को अपने पिता की तरह यज्ञ कार्य करने चाहिए और उने निर्देशों का पालन करना चाहिए।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

ऋग्वेद मण्डल-1 सूक्त 69

ऋग्वेद मन्त्र 1.69.1

Rigveda 1.69.1

शुक्रः शुशुक्वाँ उषो न जारः पप्रा समीची दिवो न ज्योतिः।
परि प्रजातः क्रत्वा बभूथ भुवो देवानां पिता पुत्रः सन्॥१॥

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

(शुक्रः) शुद्ध (शुशुक्वान्) दूसरों को शुद्ध करने वाला (उषः) सूर्य की उदय होती किरणेण (न) जैसे कि (जारः) प्रकाशित (सूर्य, अन्धकार का नाश करने वाला) (प्रा:) पूर्ण (समीची) इकट्ठे (दिवः) दिव्य प्रकाशित (न) जैसे कि (ज्योतिः) प्रकाश (परि) चारों तरफ से (प्रजातः) पैदा हुआ (क्रत्वा) अपने कार्यों से (बभूथ) व्यापक (भुवः) बनता है (देवानाम्) सब दिव्यताओं का (पिता) पिता (पुत्रः) पुत्र (सन्) होने के बावजूद।

व्याख्या :-

परमात्मा अपने ऊर्जा रूप में क्या करते हैं?

परमात्मा एक पिता है या पुत्र है?

'अग्नि' अर्थात् परमात्मा के ऊर्जा रूप का आह्वान करते हुए, यह मन्त्र कहता है :-

1. आप अपने आपमें पवित्र हो और सूर्य की उदय होती हुई किरणों के समान अन्यों को भी पवित्र करते हो और अन्धकार को नष्ट करके प्रकाशित कर देते हो।
2. दिव्य प्रकाशमान् की तरह आप पृथ्वी पर तथा आकाश में इकट्ठे प्रकाश पूर्ण करते हो।
3. उत्पन्न और अभिव्यक्त होकर, आप अपने कार्यों से सब दिशाओं में व्याप्त होते हो।

स्वयं अपने ही पुत्र के रूप में पैदा होकर, आप सभी दिव्यताओं के पिता बन जाते हो (और इसके विपरीत – सभी दिव्यताओं के पिता होकर, आप पुत्र बन जाते हैं)।

जीवन में सार्थकता :-

एक पुत्र किस प्रकार सन्तति का पिता बन सकता है?

निम्न लक्षणों का अनुसरण सुनिश्चित करते हुए, प्रत्येक पुत्र को अपनी सन्तति का पिता बनना होता है :-

1. अपनी सन्तति में पवित्रता का आह्वान करके।
2. उनसे प्रकाश की कामना करते हुए।
3. सबके कल्याण के लिए अपने यज्ञ कार्यों से स्वयं को व्याप्त करते हुए।

इस प्रकार प्रत्येक पुत्र अपनी सन्तति का पिता बन सकता है, स्वयं अपनी पवित्रता से उन्हें पवित्र करके और अपने यज्ञ कार्यों से उन्हें संतुष्ट करके। संस्कृत में पुत्र को इस प्रकार परिभाषित किया जाता है "पुनाति त्रायते इति पुत्रः" अर्थात् जो पवित्र करता है और संतुष्ट करता है वह पुत्र होता है।

सूक्ष्म :- (प्रजातः क्रत्वा बभूथ)

अपने उत्पन्न कार्यों से व्याप्त होता है।

(भुवः देवानाम् पिता पुत्रः सन्)

अपने ही पुत्र के रूप में पैदा होकर, आप सभी दिव्यताओं के पिता बन जाते हो।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



ऋग्वेद मन्त्र 1.69.2

Rigveda 1.69.2

वेधा अदृप्तो अग्निर्विजानन्धर्न गोनां स्वादमा पितूनाम् ।

जने न शेव आहूर्यः सन्मध्ये निषत्तो रण्वो दुरोणे ॥२॥

(वेधा) निर्माता, योजना बनाने वाला (अदृप्तः) घमण्ड और आसक्ति से मुक्त (अग्निः) सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा (विजानन्) सबका जानने वाला (ऊर्धः) दूध की थैली (न) जैसे कि (गोनाम्) गऊओं (स्वादमाः) परिपक्व करता है, मधुरता पैदा करता है (पितूनाम्) भोजन का (जने) मनुष्यों का (न) जैसे कि (शेवः) कल्याण करने वाला (आहूर्यः) आहवान के योग्य, आमंत्रण के योग्य (सन्) होने के बावजूद (मध्ये) बीच में (निषत्तः) स्थापित (रण्वः) रमणीय करता हुआ (दुरोणे) घर में ।

व्याख्या :-

परमात्मा किस प्रकार सबके लिए लाभदायक और आनन्ददायक है? (1)

परमात्मा के ऊर्जा स्वरूप, अग्नि, के असंख्य लाभदायक और आनन्ददायक लक्षण हैं। उनमें से कुछ इस मन्त्र में सूचीबद्ध हैं :-

1. वह निर्माता और योजनाकार है (समूचे विश्व का, फिर भी पूरी तरह से घमण्ड और आसक्ति से मुक्त) ।
2. वह सबका ज्ञाता है, उचित या अनुचित, ज्ञान या अज्ञान, प्रकाश या अन्धकार ।
3. वह गाय के दुग्ध भण्डार के समान है (सबके लिए पोषण से परिपूर्ण) ।
4. वह भोजन को पकाता है और सब भोजनों में मधुरता वह स्वयं है ।
5. वह सब जीवों के लिए लाभदायक है ।
6. सबके बीच में स्थापित होने के बावजूद वह आहवान और आमंत्रण के योग्य है ।
7. घर में उसकी पवित्र उपस्थिति सबकी आनन्दित करती है ।

जीवन में सार्थकता :-

अपने जीवन में उसके आनन्दमय होने की अनुभूति कैसे करें?

हमारे जीवन में आनन्द का प्रतिक्षण यह स्मरण कराने के लिए है कि परमात्मा का ऊर्जा रूप ही हमारे जीवन का मूलाधार है। जब भी हम कभी दर्द या कठिनाई में होते हैं तो हमें यह महसूस करना चाहिए कि कहीं न कहीं अपने कार्यों में या अपनी नियत में हम उसकी ऊर्जा को उचित प्रकार से प्रयोग करने में विफल रहे हैं। अतः आनन्द का वास्तविक और क्रियात्मक तरीका यही है कि हम परमात्मा के ऊर्जा रूप का सम्मान करें और अपनी ऊर्जाओं को सृष्टि के पीछे उसकी योजनाओं के अनुरूप ही प्रयोग करें। इस सृष्टि की योजना का मूल और सर्वमान्य लक्षण ब्रह्माण्डीय यज्ञ है। हमें भी अपने जीवन के छोटे स्तर पर उसी यज्ञ में भाग लेते हुए सहयोग करना चाहिए और उसके साथ जुड़े रहना चाहिए।

सूक्ष्म :-

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

(वेदा अदृष्टः)

वह निर्माता और योजनाकार है (समूचे विश्व का, फिर भी पूरी तरह से घमण्ड और आशक्ति से मुक्त)।

ऋग्वेद मन्त्र 1.69.3

Rigveda 1.69.3

पुत्रो न जातो रणो दुरोणे वाजी न प्रीतो विशो वि तारीत् ।
विशो यदह्वे नृभिः सनीळा अग्निर्देवत्वा विश्वान्यश्याः । ३ ।

(पुत्रः) पुत्र (न) जैसे कि (जातः) उत्पन्न (रणः) रमणीय करता हुआ (दुरोणे) घर में (वाजी) अश्व (न) जैसे कि (प्रीतः) प्रीति और आनन्द वाला (विशः) लोग (वि तारीत्) जीवन की बाधाओं से पार लगाने वाला (विशः) लोग (यत्) जब (अट्वे) पुकारता है, आमंत्रित करता है (नृभिः सनीळा) सभी मनुष्यों में समान रूप से रहने वाला (अग्निः) सर्वोच्च ऊर्जा परमात्मा (देवत्वा) दिव्य लक्षण (विश्वानि) सब में (अश्याः) प्राप्त होता है।

व्याख्या :-

परमात्मा किस प्रकार सबके लिए लाभदायक और आनन्दायक है? (2)

सभी जीवों के लिए परमात्मा के ऊर्जा स्वरूप, अग्नि, के असंख्य लाभदायक और आनन्दायक लक्षणों को जारी रखते हुए, यह मन्त्र निम्न लक्षण जोड़ता है :-

8. घरों में उसकी पवित्र उपस्थिति सबको इस प्रकार आनन्दित करती है जैसे नये पुत्र के पैदा होने का अवसर हो।
9. वह एक आनन्दकारी और प्रेम करने वाले अश्व की तरह सब लोगों को जीवन की बाधाओं से पार करवाता है।
10. जब हम (दिव्य लक्षणों वाले) लोगों को आमंत्रित करते हैं या पुकारते हैं तो वह सभी मनुष्यों में समान रूप से बैठा हुआ दिखाई देता है।
11. वह सभी दिव्य लक्षणों में प्राप्त होता है।

जीवन में सार्थकता :-

प्रतिक्षण परमात्मा के ऊर्जा रूप को कैसे मजबूत करें, यहाँ तक कि द्वन्द्वों में भी?

अपने जीवन में परमात्मा के ऊर्जा रूप की उपस्थिति को महसूस करके परमात्मा की अनुभूति जीवन के अन्तिम श्वास तक प्रतिक्षण सरलता से की जा सकती है। प्रसन्नता के प्रत्येक क्षण में उसकी उपस्थिति आनन्ददायक और कल्याणकारी अनुभूति प्रदान करती है। इसी प्रकार दर्द या कठिनाई के प्रत्येक क्षण में हमें अपनी कमी को जानकर उसी से प्रेरणा प्राप्त करनी चाहिए जिससे हम इन क्षणों के साथ बहादुरी से संघर्ष कर सकें।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



सूक्ति :- (पुत्रः न जातः रण्वः दुरोणे)

घरों में उसकी पवित्र उपस्थिति सबको इस प्रकार आनन्दित करती है जैसे नये पुत्र के पैदा होने का अवसर हो।

(वाजी न प्रीतः विशः वि तारीतः)

वह एक आनन्दकारी और प्रेम करने वाले अश्व की तरह सब लोगों को जीवन की बाधाओं से पार करवाता है।

(विशः यत् अव्ये नृभिः सनीळा)

जब हम (दिव्य लक्षणों वाले) लोगों को आमंत्रित करते हैं या पुकारते हैं तो वह सभी मनुष्यों में समान रूप से बैठा हुआ दिखाई देता है।

(अग्निः देवत्वा विश्वानि अश्याः)

वह सभी दिव्य लक्षणों में प्राप्त होता है।

ऋग्वेद मन्त्र 1.69.4

Rigveda 1.69.4

नकिष्ट एता व्रता मिनन्ति नृभ्यो यदेभ्यः श्रुष्टिं चकर्थ ।

तत्तु ते दंसो यदहन्त्समानैर्नृभिर्यदुक्तो विवे रपांसि ॥४॥

(नकिष्टः) नहीं (ते) आपको (एता) ये (व्रता) व्रत, संकल्प (मिनन्ति) नष्ट करता है, हिंसित करता है (नृभ्यः) मनुष्य (यत्) जो (एभ्यः) ऐसे (अनुशासित) (श्रुष्टिम्) अन्दर सुना गया (ज्ञान) (चकर्थ) करता है, उपलब्ध कराता है (तत् तु ते) वह आपका है (दंसः) बहादुरी का कार्य (यत्) जिसके द्वारा (अहन्) नष्ट करता है (समानैः) समान रूप से (दिव्य शक्तियाँ) (नृभिः) मनुष्य (यत्) जिसके द्वारा (युक्तः) परस्पर संयुक्त होते हुए (विवे) दूर रखता है (रपांसि) बुराईयाँ, कुटिलताएं।

व्याख्या :-

अनुशासित भक्त परमात्मा से क्या प्राप्त करते हैं?

जो लोग आपके संकल्पों, मान्यताओं और नियमों को नष्ट या उनका उल्लंघन नहीं करते, ऐसे (अनुशासित) लोगों के लिए आप आन्तरिक रूप से सुने जाने वाला ज्ञान प्रदान करते हो। इसीलिए आपके वे बहादुरी पूर्ण कार्य जिनके द्वारा आप सभी बुराईयों और कुटिल विचारों को नष्ट करते हो और उन लोगों को दिव्य शक्तियों के साथ संयुक्त करते हो।

जीवन में सार्थकता :-

अनुशासित कर्मचारी अपने वरिष्ठ अधिकारियों से क्या प्राप्त करते हैं?

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



जिस प्रकार एक अनुशासित भक्त सीधे परमात्मा से सर्वोच्च दिव्य ज्ञान के साथ बुराईयों को दूर रखने की दिव्य सहायता प्राप्त करता है उसी प्रकार एक अनुशासित कर्मचारी जीवन के किसी भी क्षेत्र में अपने वरिष्ठ अधिकारियों से पूर्ण संरक्षण प्राप्त करता है।

सूक्ति :-

(नकिः ते एता व्रता मिनन्ति नृभ्यः यत् एभ्यः श्रुष्टिम् चकर्थ्य)

जो लोग आपके संकल्पों, मान्यताओं और नियमों को नष्ट या उनका उल्लंघन नहीं करते, ऐसे (अनुशासित) लोगों के लिए आप आन्तरिक रूप से सुने जाने वाला ज्ञान प्रदान करते हो।

ऋग्वेद मन्त्र 1.69.5

Rigveda 1.69.5

उषो न जारो विभावोस्त्रः संज्ञातरूपश्चिकेतदस्मै ।

त्मना वहन्तो दुरो व्यृण्वन्नवन्त विश्वे स्वर्गदृशीके ॥५॥

(उषः) सूर्य की उदय होती किरणें (न) जैसे कि (जारः) प्रकाशित (सूर्य, अन्धकार को नाश करता हुआ) (विभावा) विशेष रूप से प्रकाशित (उस्मः) किरणों के समान तरंगित (संज्ञात रूपः) अपने प्रकाश (ज्ञान) के लिए जाना गया (चिकेतत) जानना (अस्मै) उसको (त्मना) आत्मा से (वहन्तः) धारण करते हुए, प्रगति करते हुए (दुरः) द्वारा (व्यृण्वन) विशेष रूप से प्राप्त, खुला (नवन्त) जानना, प्राप्त करना (विश्वे) सब, सर्वत्र (स्वः) आत्मा (दृशीके) देखने योग्य, अनुभूति प्राप्त करने योग्य।

व्याख्या :-

सूर्य की उदय होती हुई ऊषा किरणें किस प्रकार हमें आध्यात्मिक मार्ग पर प्रेरित करती हैं?

जिस प्रकार सूर्य (भौतिक और मानसिक) अन्धकार का नाश करके सर्वत्र चमक और प्रकाश पैदा करता है, परमात्मा का ऊर्जा रूप अग्नि विशेष रूप से प्रकाशित होता है और अपने प्रकाश (ज्ञान) की किरणों से तरंगित होता है। जो उसको जानता है वह उन्हें धारण करते हुए, आत्मा के साथ प्रगतिशील रहता है और विशेष रूप से (मुक्ति के) खुले द्वारों को प्राप्त करता है। अतः प्रत्येक व्यक्ति को उस सर्वमान्य आत्मा को जानना और प्राप्त करना चाहिए जो देखने और अनुभूति के योग्य है।

जीवन में सार्थकता :-

परमात्मा के साथ सम्बद्धता का सीधा मार्ग कौन सा है?

यदि कोई वास्तव में उस सर्वमान्य आत्मा को जानना और उसकी अनुभूति प्राप्त करना चाहता है तो उसे परमात्मा के साथ सम्पर्क का सीधा मार्ग जानना चाहिए जो ऊषा का अनुसरण करने से प्राप्त होगा। ऊषा सबको ज्ञान का प्रकाश दिखाकर चमकाती और प्रकाशित करती है। इसी प्रकार ज्ञान के द्वारा अन्यों को प्रकाशित करना परमात्मा का ही एक लक्षण है।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

अन्यों को ज्ञान से प्रकाशित करने के लिए प्रकाश प्राप्त करो। परमात्मा से सीधा सम्पर्क बनाने का यही एकमात्र मार्ग है।

सूक्तिः— (उषः न जारः विभावा उमः संज्ञात रूपः चिकेतत् अस्मै)

जिस प्रकार सूर्य (भौतिक और मानसिक) अन्धकार का नाश करके सर्वत्र चमक और प्रकाश पैदा करता है, परमात्मा का ऊर्जा रूप अग्नि विशेष रूप से प्रकाशित होता है और अपने प्रकाश (ज्ञान) की किरणों से तरंगित होता है।

(नवन्त विश्वे स्वः दृशीके)

प्रत्येक व्यक्ति को उस सर्वमान्य आत्मा को जानना और प्राप्त करना चाहिए जो देखने और अनुभूति के योग्य है।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

ऋग्वेद मण्डल-1 सूक्त 70

ऋग्वेद मन्त्र 1.70.1

Rigveda 1.70.1

वनेम पूर्वीर्यो मनीषा अग्निः सुशोको विश्वान्यश्याः ।
आ दैव्यानि व्रता चिकित्वाना मानुषस्य जनस्य जन्म ॥१॥

(वनेम) जानना, पूजा करना, आहवान करना (पूर्वीः) हमें पूर्ण करता है (सम्पदा में) (अर्थः) स्वामी (परमात्मा) (मनीषा) बुद्धि के साथ (अग्निः) सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा (सुशोकः) चमकता हुआ ज्ञान, निःसंदेह सर्वज्ञाता (विश्वानि) सब (अश्याः) भूत तत्त्वों में व्यापक (आ – चिकित्वान् से पूर्व लगाकर) (दैव्यानि) दिव्य (लक्षण, कार्य) (व्रता) व्रत, संकल्प (चिकित्वान् – आ चिकित्वान्) पूरी तरह से जानता है (मानुषस्य) मनुष्यों को (जनस्य) पैदा हुए (जन्म) जन्म में।

व्याख्या :-

परमात्मा हमें हर प्रकार से किस प्रकार पूर्ण करता है?

हम सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा, को 'अग्नि' रूप में जानते हैं, उससे प्रार्थना करते हैं और उसका आहवान करते हैं, जो हमें (सम्पदा में) पूर्ण करता है। वह बुद्धि का सर्वोच्च स्वामी है। वह अपने चमकते हुए ज्ञान से, जो निःसंदेह सम्पूर्ण ज्ञान है, सभी भूत तत्त्वों में व्याप्त है। वह दिव्य लक्षणों और कार्यों वाले सभी व्रतों और संकल्पों को पूरी तरह से जानता है। वह मानवों में मनुष्यों के जन्म को जानता है।

जीवन में सार्थकता :-

सम्पूर्ण ज्ञान का क्या प्रभाव है?

सम्पूर्ण ज्ञान का अर्थ है हर वस्तु का ज्ञान। जो भी हम सोचते हैं, बोलते हैं या करते हैं, वह परमात्मा के ऊर्जा रूप से छिपा नहीं रह सकता। इस शक्ति के साथ ही वह कर्मफल सिद्धान्त का प्रबन्ध करता है अर्थात् प्रत्येक कार्य का समुचित फल देता है, बेशक वह किसी व्यक्ति के गहरे हृदय में केवल विचार की तरह ही हो।

इस शक्ति के साथ ही वह श्रद्धालु भक्तों के मन को स्वीकार करता है और उनकी तपस्याओं का पूरा परीक्षण करके उनकी साधना को पूर्ण करता है।

इसी शक्ति के साथ वह हमारे दिव्य संकल्पों को जानता है और उन्हें शक्तिशाली बनाता है।

सूक्ष्म :-

(दैव्यानि व्रता चिकित्वान् मानुषस्य जनस्य जन्म)

वह दिव्य लक्षणों और कार्यों वाले सभी व्रतों और संकल्पों को पूरी तरह से जानता है। वह मानवों में मनुष्यों के जन्म को जानता है।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



ऋग्वेद मन्त्र 1.70.2

Rigveda 1.70.2

गर्भो यो अपां गर्भो वनानां गर्भश्च स्थातां गर्भश्चरथाम् ।
अद्रौ चिदस्मा अन्तर्दुरोणे विशां न विश्वो अमृतः स्वाधीः ॥२॥

(गर्भः) अन्दर स्थापित (य:) जो (अपाम्) जल, कर्म (गर्भः) अन्दर स्थापित (वनानाम्) जंगल, किरणें (प्रकाश की, ज्ञान की) (गर्भः) अन्दर स्थापित (च) और (स्थाताम्) स्थिर अर्थात् गति न करने वाला (गर्भः) अन्दर स्थापित (चरथाम्) गति करने वाला (अद्रौ) पर्वतों में (चित्) भी (अस्मै) उसके लिए (अन्तः) अन्दर (दुरोणे) घर (विशाम्) लोगों के (न) जैसे कि (विश्वः) सब (चेतना) (अमृतः) न मरने वाला (स्वाधीः) उत्तम कार्यों के साथ और उत्तम चेतना के साथ ।

व्याख्या :-

परमात्मा किस प्रकार सर्वव्यापक है?

अग्नि, परमात्मा का ऊर्जा रूप, जो जलों के अन्दर और सभी कर्मों के अन्दर स्थापित है; वनों के अन्दर और किरणों में (प्रकाश की, ज्ञान की); स्थिर वस्तुओं के अन्दर; पर्वतों के अन्दर और लोगों की चेतना के समान सभी घरों के अन्दर । वह अमृत है, उत्तम कार्यों और उत्तम चेतना के साथ है ।

जीवन में सार्थकता :-

हमारे जीवन का वास्तविक अस्तित्व क्या है?

परमात्मा की सर्वविद्यमानता के बारे में गहरा विचार करने पर हम निश्चित रूप से यह महसूस कर सकते हैं कि वह हमारे जीवन का स्थाई आधार है और इस वर्तमान जीवन के परे भी वह एक स्थाई साथी है । अतः मानव जीवन का एक मात्र उद्देश्य अपने जीवन के उस वास्तविक और स्थाई अस्तित्व की अनुभूति प्राप्त करना है । जबकि हमारे नाम और रूप का यह वर्तमान जीवन केवल मात्र एक क्षणभंगर चरण है ।

ऋग्वेद मन्त्र 1.70.3

Rigveda 1.70.3

स हि क्षपावौ अग्नी रयीणां दाशद्यो अस्मा अर सूक्तैः ।
एता चिकित्वो भूमा नि पाहि देवानां जन्म मतौश्च विद्वान् ॥३॥

(स:) वह (हि) निश्चित रूप से (क्षपावान्) रात्रि, अन्धकार और अज्ञानता का स्वामी, रात्रि, अन्धकार और अज्ञानता को नियंत्रित करने में सक्षम (अग्निः) सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा (रयीणाम्) सम्पदा (भौतिक

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



और आध्यात्मिक) (दाशत) देने वाला (य:) जो (अस्मै) उसको (स्वामी, दाता का) (अरम) पूरी तरह से प्राप्त करने के लिए, आहुति देने के लिए, उनके जीवन को सुन्दर बनाने के लिए (सूक्तैः) वाणियों से (एता) उनका (भक्तों का) (चिकित्वः) ज्ञाता (परमात्मा) (भूमा) भूमि का (नि पाहि) लगातार संरक्षण करता है (देवानाम्) दिव्य शक्तियों और लोगों का (जन्म) जन्म, जीवन (मर्तान्) मरणशील मनुष्य (च) और (विद्वान्) जानता है।

व्याख्या :-

रात्रि, अन्धकार और अज्ञानता का स्वामी और नियंत्रक कौन है?

'अग्नि' सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा निश्चित रूप से रात्रि, अन्धकार और अज्ञानता का स्वामी है और रात्रि, अन्धकार और अज्ञानता को दूर फेंकने में पूर्णतः सक्षम भी है। जो लोग उसको (परमात्मा को) पूरी तरह प्राप्त करना चाहते हैं और आहुतियाँ देना चाहते हैं; अपने जीवन को उसकी महिमा में कहीं गई वाणियों से अपने जीवन को पूरी तरह सुन्दर बनाना चाहते हैं वह उनके लिए समस्त सम्पदाओं (भौतिक और आध्यात्मिक) का दाता है। वह ऐसे श्रद्धालु भक्तों को जानता है। वह पृथ्वी पर सबका लगातार संरक्षण करता है। वह सभी दिव्य (शक्तियों और लोगों) के जन्म और समस्त जीवनों को जानता है।

जीवन में सार्थकता :-

अज्ञान क्या है और ज्ञान क्या है?

सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा, ने अज्ञान को अपने से अलग शक्ति देकर सृष्टि में स्वयं को अभिव्यक्त किया क्योंकि वह स्वयं तो ज्ञान के प्रकाश से पूर्ण था। इस प्रकार यह अज्ञान सृष्टि की मूल शक्ति बन गया। परन्तु परमात्मा तो इस अज्ञान का भी स्वामी और नियंत्रक है। जो लोग अज्ञानता से बाहर आना चाहते हैं, उनके लिए ज्ञान तक पहुँच बनाने का एक ही मार्ग है कि वे परमात्मा के साथ संयुक्त हों। वह निश्चित रूप से सबको भक्ति मार्गों के माध्यम से ही मार्ग दर्शन देता है अर्थात् निःस्वार्थ, अहंकाररहित और इच्छारहित सेवा अर्थात् त्याग, तपस्या, उसकी महिमाओं का ज्ञान और वास्तविक दिव्य ज्ञान को प्राप्त करने का प्रयास केवल साधना भक्ति का मार्ग ही किसी को पूरी तरह समर्पित बना सकता है और उस लक्ष्य के साथ एकता की अनुभूति प्रदान कर सकता है।

समूची सृष्टि अज्ञानता है, केवल सृष्टि का निर्माता ही ज्ञान है। हम यहाँ एक स्वाभाविक प्रश्न कर सकते हैं कि फिर अज्ञानता का उद्देश्य क्या है, इसका सरल सा उत्तर होगा कि बिना अज्ञानता के ज्ञान के प्रति हमारे अन्दर इच्छा ही पैदा नहीं हो सकती है। जिस प्रकार शुभ गुण श्रेष्ठ और प्रशंसनीय होते हैं, क्योंकि हम यह जानते हैं और महसूस करते हैं कि बुराईयाँ श्रेष्ठ नहीं हैं।

परमात्मा ने हमारी अज्ञानता के अन्दर ही ज्ञान की सम्भावना और ज्ञान का दायरा अच्छे प्रकार से तैयार किया है। उसने हमें दोनों प्रकार की सम्पदाएँ दी हैं – भौतिक और आध्यात्मिक। इससे भी अलग, ज्ञान तो अज्ञानता के अन्दर ही बीज रूप में विद्यमान हैं। परमात्मा हमारे शरीर में ही है।

सूक्ष्मिक :-

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

(सः हि क्षपावान् अग्नि रयीणाम् दाशत्)

'अग्नि' सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा निश्चित रूप से रात्रि, अन्धकार और अज्ञानता का स्वामी है और रात्रि, अन्धकार और अज्ञानता को दूर फेंकने में पूर्णतः सक्षम भी है।
वह दोनों प्रकार की सम्पदाओं का दाता है – भौतिक और आध्यात्मिक।

ऋग्वेद मन्त्र 1.70.4

Rigveda 1.70.4

वर्धान्यं पूर्वः क्षपो विरुपा: स्थातुश्च रथमतप्रवीतम् ।

अराधि होता स्वर्गनिष्ठतः कृण्वन्विश्वान्यपांसि सत्या ॥ 4 ॥

(वर्धान्) वृद्धि करता है, उन्नति करता है (यम) जिसके लिए (परमात्मा के लिए) (पूर्वः) पूर्ण सनातन अर्थात् शाश्वत् (क्षपः) रात्रि, अन्धकार और अज्ञानता (विरुपा:) भिन्न–भिन्न रूपों में (यह सृष्टि) (स्थातु) स्थिर अर्थात् गति न करने वाला (च) और (रथम्) गति करने वाला (ऋत् प्रवीतम्) ऋत् अर्थात् सत्य और ज्ञान से उत्पन्न (अराधि) विशेषज्ञ (सिद्ध), पूजा, आहवान (होता) लाने वाला और देने वाला (स्वः) अपने में, आत्मा में, परमात्मा में (निष्ठतः) प्रतिष्ठित (कृण्वन्) करते हुए (विश्वानि) सब (अपांसि) कर्म (सत्या) सत्यता के साथ, वास्तविक ज्ञान के साथ।

व्याख्या :-

क्या ज्ञान और अज्ञान दोनों ही परमात्मा की तरफ अग्रसर करती हैं?

परमात्मा में सिद्धि कैसे प्राप्त करें?

पूर्ण करने वाला सनातन अर्थात् शाश्वत सत्य और उसके साथ–साथ रात्रि, अन्धकार और अज्ञानता दोनों किसके लिए इस सृष्टि का संवर्द्धन करते हैं जो चल और अचल दोनों प्रकार के रूपों को धारण करती है। सब कुछ ऋत् अर्थात् शाश्वत मूल सत्य या ज्ञान या भगवान से उत्पन्न हुआ है। जो व्यक्ति उसमें सिद्ध होना चाहता है या उसकी पूजा करना चाहता है उसे निम्न लक्षण धारण करने चाहिए :-

1. (होता) लाने वाला और देने वाला
2. (स्वः निष्ठतः) स्वयं में, आत्मा में, परमात्मा में स्थापित
3. (कृण्वन् विश्वानि अपांसि सत्या) सभी कार्य सत्यता के साथ और वास्तविक ज्ञान के साथ करना।

जीवन में सार्थकता :-

ज्ञान के उस शुद्ध और पवित्र प्रकाश की अनुभूति कैसे करें?

अज्ञानता के दुष्ट चक्रव्यूह से बाहर कैसे आयें?

परमात्मा ने स्वयं अज्ञानता के माध्यम से ही अलग–अलग रूपों में अभिव्यक्त किया। इसी अज्ञानता को माया कहा जाता है जो मूल प्रकृति का और चल और अचल समस्त सृष्टि का कारण है। परमात्मा

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



स्वयं ज्ञान का शुद्ध और पवित्र प्रकाश है। वह स्वयं को शुद्ध और पवित्र प्रकाश के रूप में ही अभिव्यक्त नहीं कर सकते थे। इसलिए उसने अज्ञानता को सृष्टि का सबकुछ निर्माण करने की शक्ति प्रदान की। परन्तु परमात्मा स्वयं सर्वविद्यमान होने के नाते प्रत्येक रूप में उपस्थित रहे। परमात्मा अर्थात् ज्ञान के शुद्ध और पवित्र प्रकाश की अनुभूति प्राप्त करना चाहे तो उसे अज्ञानता के दुष्ट चक्रव्यूह से बाहर आने के लिए कड़ी मेहनत करनी पड़ेगी। यह अज्ञानता अहंकार और इच्छाओं के दो धागों से बुनी गई है।

सूक्ति :- (वर्धन् यम् पूर्वी क्षपः विरुपाः स्थातु च रथम्)

परमात्मा ने स्वयं अज्ञानता के माध्यम से ही अलग-अलग रूपों में अभिव्यक्त किया। इसी अज्ञानता को माया कहा जाता है जो मूल प्रकृति का और चल और अचल समस्त सृष्टि का कारण है।

ऋग्वेद मन्त्र 1.70.5

Rigveda 1.70.5

गोषु प्रशस्तिं वनेषु धिषे भरन्त विश्वे बलिं स्वर्णः ।
वि त्वा नरः पुरुत्र सपर्यन्पितुर्न जिव्रेवि वेदो भरन्त ॥५॥

(गोषु) गऊओं में, ज्ञानेन्द्रियों में, धरती की सभी वस्तुओं में (प्रशस्तिम्) प्रशंसनीय (प्रकृति में) (वनेषु) किरणों में (ज्ञान की), जंगलों में (धिषे) स्थापित (भरन्त) उपलब्ध कराता (विश्वे) सब (बलिम्) त्याग (स्वः न) हमारे लिए आत्मा का प्रकाश (वि – सपर्यन से पूर्व लगाकर) (त्वा) आपके (नरः) प्रगतिशील मनुष्य (पुरुत्रा) पूर्ण रूप से (सपर्यन् – वि सपर्यन्) विशेष पूजा (पितुः) पिता (न) जैसे कि (जिव्रेः) आयु (वि – भरन्त से पूर्व लगाकर) (वेदः) ज्ञान की सम्पदा (भरन्त – वि भरन्त) विशेष रूप से पूर्ण करता है, उपलब्ध कराता है।

व्याख्या :-

क्या परमात्मा हमें ज्ञान का प्रकाश देते हैं?

यह मन्त्र अग्नि देवता का भी आह्वान करता है। हमारी गऊओं में, हमारी ज्ञानेन्द्रियों में, पृथ्वी की सभी वस्तुओं में और हमारे ज्ञान की किरणों में तथा वनों में प्रशंसाएँ स्थापित करो। आप हमारे लिए आत्मा का प्रकाश प्रदान करते हो और हमारे लिए तथा त्याग के लिए सुख-सुविधाएँ प्रदान करते हो। आपके प्रगतिशील मनुष्य विशेष रूप से और पूरी तरह आपकी पूजा करते हैं और आपका आह्वान करते हैं। एक वृद्ध पिता की तरह (जो अपनी सारी सम्पदा अपने पुत्र को दे देता है) आप ज्ञान की सम्पदा हमें प्रदान करते हो।

जीवन में सार्थकता :-

हम ज्ञान के प्रकाश अर्थात् परमात्मा को प्राप्त करने की कोशिश किस प्रकार कर सकते हैं?

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

परमात्मा ज्ञान का शुद्ध और पवित्र प्रकाश है। उसने स्वयं को जीव और निर्जीव पदार्थों वाली इस सृष्टि के रूप में अभिव्यक्त किया है। केवल मनुष्य ही उस परमात्मा अर्थात् ज्ञान के प्रकाश की अनुभूति प्राप्त करने की कोशिश कर सकता है। परन्तु इस मार्ग पर तब—तक सफलता असम्भव है, जब—तक हमारे जीवन में अज्ञानता विद्यमान है। इसे केवल ज्ञान के सत्य प्रकाश को प्राप्त करने की तीव्र अभिलाषा और प्रयास से ही सम्भव किया जा सकता है, अपने सभी कर्मों को किसी भी इच्छा के स्पर्श के बिना उसी को समर्पित कर देना और अपने मन को उसका आहवान करते हुए प्रतिक्षण उसी पूजा के भाव में रहना। हम परमात्मा से ही परमात्मा को प्राप्त कर सकते हैं, क्योंकि सृष्टि में कोई भी वस्तु अज्ञानता ही तो है। अतः सृष्टि में से किसी भी वस्तु की कोई भी इच्छा केवल अज्ञानता के कारण ही है। जबकि परमात्मा को प्राप्त करने की तीव्र इच्छा हमारे भीतर छिपे ज्ञान के कारण है।

सूक्तिः :-

(पितुः न जिव्रेः वेदः वि भरन्तः)

एक वृद्ध पिता की तरह (जो अपनी सारी सम्पदा अपने पुत्र को दे देता है) आप ज्ञान की सम्पदा हमें प्रदान करते हो।

ऋग्वेद मन्त्र 1.70.6

Rigveda 1.70.6

साधुर्न गृध्नुरस्तेव शूरो यातेव भीमस्त्वेषः समत्सु ॥६॥

(साधुः) सन्त (न) जैसे कि (गृध्नः) प्रेम करने वाला, उदार और सम्मानित (अस्त) बहादुर योद्धा, दूसरों के कल्याण के लिए सम्पदा को फेंकने वाला (इव) जैसे (शूरः) बहादुर, उदार दानी (याता) दण्ड देने वाला (इव) जैसे (भीमः) भयंकर (त्वेष) प्रज्ज्वलित और शानदार (समत्सु) जीवन के संग्रामों में (समरांगन)।

व्याख्या :-

'अग्नि', सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा के क्या लक्षण हैं?

इस सूक्त में जिस अग्नि देवता का आहवान किया गया है वह निम्न लक्षणों से सुसज्जित है :-

1. (साधुः न गृध्नः) वह एक सन्त की तरह प्रेम करने वाला, उदार और सम्मानित है।
2. (अस्त इव शूरः) वह एक बहादुर योद्धा और एक उदार दानी की तरह सम्पदा को दूसरों के कल्याण के लिए उपलब्ध कराने वाला है।
3. (याता इव भीमः) वह दण्ड देने वाले की तरह भयंकर है।
4. (त्वेष समत्सु) वह जीवन के युद्ध क्षेत्रों में प्रज्ज्वलित और शानदार है।

जीवन में सार्थकता :-

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

कोई अग्नि पुरुष, ऊर्जावान व्यक्ति, केसे बन सकता है?

उपरोक्त लक्षणों को धारण करके हम भी 'अग्नि' का अनुसरण कर सकते हैं। साधुत्व, बहादुरी, न्यायिक बुद्धि और शानदार प्रकाश किसी को भी एक ऊर्जावान नेता बना सकता है जो कई लोगों को मार्ग दर्शन भी दे और समर्थन भी करे तथा साथ ही साथ दुष्ट मानसिकताओं पर नियंत्रण भी करे। इन लक्षणों के साथ कोई भी व्यक्ति 'अग्नि' पुरुष बन सकता है।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

ऋग्वेद मण्डल-1 सूक्त 71

ऋग्वेद मन्त्र 1.71.1

उप प्र जिनवन्नुशतीरुशन्तं पतिं न नित्यं जनयः सनीळः ।
स्वसारः श्यावीमरुषीमजुष्रचिंत्रमुच्छन्तीमुषसं न गावः ॥1॥

(उप) निकट, उपासना करते हुए (प्र जिनवन) पूर्ण संतुष्ट महसूस करना, शान्ति और प्रसन्नता में (उशतीः) इच्छा करते हुए (उशन्ताम्) इच्छा का लक्ष्य (पतिम्) संरक्षक, पति (न) जैसे कि (नित्यम्) सनातन, शाश्वत, सदैव विद्यमान, अमृत (जनयः) उसके विकास के लिए, लोगों के लिए (सन्तानों के लिए) (सनीळः) समान स्थान पर रहने वाले (स्वसारः) आत्मा का सहचर (श्यावीम्) गहरे रंग वाली (अरुषीम्) लाल रंग वाली (अजुष्रन्) प्रयोग, सेवन (चित्रम्) अद्भुत (उच्छन्तीम्) अन्धकार और अज्ञानता दूर करने वाली, कल्याण के लिए सक्रिय रूप से विद्यमान (उषसम्) उषाकाल को अर्थात् प्रातःकालीन समय (न) जैसे कि (गावः) किरणेण (सूर्य की), गाय ।

व्याख्या :-

एक पत्नी अपने पति के समक्ष किस प्रकार पहुँचती है?

ऊषा अर्थात् उदय होते हुए सूर्य की किरणेण किस प्रकार सबके लाभ के लिए उपस्थित होती हैं?
गऊरं हमारे लिए क्या करती हैं?

जिस प्रकार एक पत्नी अपने इच्छित लक्ष्य की इच्छा करते हुए अर्थात् अपने पति के साथ निकटता और उसकी पूजा करते हुए पूर्ण संतुष्ट महसूस करती है, पूर्ण शांति और प्रसन्नता महसूस करती है और अपने पति को पूर्ण संतुष्ट रखते हुए सदैव और शाश्वत रूप से एक ही स्थान पर उसके साथ रहते हुए एक सहचर के रूप में उसके निकट पहुँचती है, अपनी सन्तान के लिए;

जिस प्रकार ऊषा अर्थात् उदय होते हुए सूर्य की किरणेण गाढ़ा और लाल रंग धारण करते हुए अन्धकार और अज्ञानता को दूर करते हुए अद्भुत तरीके से सबकी सेवा करती हैं;

जिस प्रकार गाढ़ा और लाल रंग धारण करने वाली गऊरं बड़ी सक्रियता के साथ उपस्थित होकर पुष्टिकारक दूध और दिव्य आशीर्वाद प्रदान करते हुए सबके कल्याण के लिए अद्भुत प्रकार से सेवा करती हैं।

जीवन में सार्थकता :-

हम परमात्मा के निकट कैसे पहुँचें?

हम अपने नेताओं के निकट कैसे पहुँचें?

इस मन्त्र में दिये गये उदाहरणों में प्रस्तुत एक सिद्धान्त के अनुसार हमें भी अपना इच्छित लक्ष्य, परमात्मा की अनुभूति, की इच्छा करते हुए पूजा और भवित्व के साथ उसके निकट जाना चाहिए जिससे हम पूर्ण संतोष, शांति और प्रसन्नता प्राप्त कर सकें और परमात्मा को अपने भवित्वपूर्ण समर्पित

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



यज्ञ कार्यों से संतुष्ट रख सकें। जो कार्य हम सदैव परमात्मा के साथ एक शरीर में संयुक्त रूप से रहते हुए शाश्वत काल से लोगों के लिए करते रहे हैं।

यही सिद्धान्त देश के सभी नागरिकों पर लागू होता है कि वे अपने सामाजिक कल्याण कार्यों को करते हुए अपने नेताओं के निकट पहुँचें।

ऋग्वेद मन्त्र 1.71.2

वीळु चिद् दृळ्हा पितरो न उक्थैराद्रिं रुजन्नङ्गिरसो रवेण।
चक्रुर्दिवो बृहतो गातुमस्मे अहः स्वर्विविदुः केतुमुस्त्राः । ॥२॥

(वीळु) अत्यन्त शक्तिशाली (चित) भी (दृळ्हा) दृढ़ संकल्पित (पितरः) पूर्वज, दिव्य विद्वान् (न) हमारे (उक्थः) वाणियों के साथ (अद्रिम) पर्वत (रुजन्न) तोड़ता है, भेदता है (अङ्गिरसः) जीवन को पालने वाले, जिसका प्रत्येक अंग दिव्य रस से भरपूर है, दिव्य विद्वान् (रवेण) उच्चारण के द्वारा (चक्रुः) करते हैं, निर्माण (दिवः) दिव्य (बृहतः) विशाल (गातुम) मार्ग (अस्मे) हमारे लिए (अहः) दिन (स्वः) प्रकाश (सूर्य का), प्रकाश (आत्मा का) (विविदुः) प्राप्त करते हैं, जानते हैं (केतुम्) बुद्धि (उस्त्राः) किरणें (ज्ञान की)।

व्याख्या :-

हमारे पितरों ने पर्वतों जैसी समस्याओं को किस प्रकार तोड़ा और विदीर्ण किया?

हमारे पितरों ने हमारे लिए किस मार्ग का निर्धारण किया?

हमारे पितर अर्थात् हमारे पूर्वज और दिव्य विद्वान् जो अङ्गिरस थे अर्थात् जीवन को पालने वाले थे जिनका प्रत्येक अंग दिव्य रस से भरपूर था और जो दिव्य विद्वान् थे, उन्होंने अत्यन्त शक्तिशाली और पर्वत जैसी दृढ़ समस्याओं को परमात्मा की प्रशंसाओं और महिमागान के उच्चारणों से तोड़ा और विदीर्ण किया।

उन्होंने हमारे लिए विशाल दिव्य पथों का निर्माण किया। जिससे हम प्रतिदिन बुद्धि पूर्वक सूर्य की किरणों को प्राप्त करते हुए ज्ञान और आत्मा की किरणों को जान सकें।

जीवन में सार्थकता :-

अपने दिव्य पितरों के साथ सम्पर्क कैसे करें?

हमारे पितर हमारा दिव्य पूर्वकाल हैं। यजुर्वेद का 19वाँ अध्याय हमारे पितरों को जानने और उनके साथ जुड़ने तथा उनके मार्गों का अनुसरण करने की प्रेरणाएं प्रदान करता है।

यदि हम आत्मिक रूप से अपने पितरों का अनुसरण करें तो हमें वास्तव में एक दिव्य मार्ग प्राप्त होता है जो शीघ्र लाभकारी होगा। एक प्राकृतिक सिद्धान्त है कि दिव्यता दिव्य लोगों को आकर्षित करती है और बुरी ताकतें, बुरे मस्तिष्क वालों को आकर्षित करती हैं। इसलिए हमें सर्वप्रथम अपने मन-मस्तिष्क का निरीक्षण करते हुए उसका सुधार करना चाहिए और दिव्य पथ पर कार्यों को करना चाहिए। उसके बाद ऊषाकाल से पूर्व अर्थात् ब्रह्मवेला में उठकर प्रतिदिन हमें अपने पितरों का आह्वान

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

करना चाहिए। इससे दिव्य पथ पर अग्रसर होने के लिए कोई भी व्यक्ति दिव्य प्रेरणाएं प्राप्त करना प्रारम्भ कर सकता है।

ऋग्वेद मन्त्र 1.71.3

दधन्तुं धनयन्नस्य धीतिमादिदर्यो दिधिष्वोऽ विभृत्राः।
अतृष्ण्वन्तीरपसो यन्त्यच्छा देवान्नजन्म प्रयसा वर्धयन्तीः॥३॥

(दधन) धारण करता (नृतम्) सत्य (धनयन) सम्पदा, समृद्धि (अस्य) जिसके (धीतिम्) बुद्धि, एकाग्रता (आत इत) उसके बाद (अर्यः) स्वामी (दिधिष्वः) अलंकृत मन (विभृत्राः) विशेष रूप से धारण करते हैं (अतृष्ण्वन्तीः) इच्छा न रखने वाले, वासना और लालच से दूर (अपसः) कार्य (यन्ति) की ओर (अच्छ) अच्छा, प्रगति (देवान्) दिव्य (जन्म) जीवन, आयु (प्रयसा) प्रयास (वर्धयन्तीः) प्रगतिशील, उन्नतिशील।

व्याख्या :-

एक साधक भक्त की क्या सम्पदा होती है?

किसको एक दिव्य जन्म और दिव्य जीवन प्राप्त होता है?

जो लोग अपने जीवन में सत्य को धारण करते हैं, जिनके लिए उनकी बुद्धि और परमात्मा पर उनकी एकाग्रता ही उनकी सम्पदा और समृद्धि है, ऐसे लोग विशेष रूप से एक सुसंस्कृत मन को धारण करते हुए उसके स्वामी बन जाते हैं। ऐसा व्यक्ति लालच और वासनाओं से दूर बिना किसी इच्छा के सुन्दरता पूर्वक कार्यों को करने के लिए आगे बढ़ता है। ऐसे मार्ग पर अपने सुन्दर प्रयासों के साथ वह एक दिव्य जीवन और दिव्य जन्म की तरफ स्वयं को अग्रसर करता है और प्रगति के पथ को प्राप्त करता है।

जीवन में सार्थकता :-

अहंकार रहित अवस्था क्या होती है?

'अग्नि', परमात्मा का ऊर्जा रूप, सभी मानवों के लिए अद्भुत और दिव्य लाभकारी है। उन लोगों के लिए तो यह विशेष रूप से दिव्य लाभकारी बन जाती है जो उस परमात्मा की अनुभूति प्राप्त करना चाहते हैं और इसके लिए पूर्ण समर्पित भक्ति के जीवन पर चलते हैं। ऐसे साधक भक्तों के लिए ऊर्जा का सदुपयोग सत्य को धारण करने के लिए, साधना भक्ति के कार्यों के लिए और अपने जीवन से सम्बन्धित किसी भी इच्छा को शामिल किये बिना अपने सभी कार्यों को परमात्मा के प्रति समर्पित करने के लिए होता है। इस प्रकार वे सफलता पूर्वक उस सर्वाच्च ऊर्जा परमात्मा में ही अपने जीवन को सम्मिलित कर देता है और उच्च आध्यात्मिक स्तर का आनन्द लेता है। यह आध्यात्मिक अहंकार रहित अवस्था है। दूसरी तरफ प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में विद्यमान ऊर्जा तो परमात्मा का एक दिव्य उपहार है। किसी को कोई भी कार्य करने के बाद अपने व्यक्तिगत अहंकार को न तो व्यक्त करना चाहिए और न ही उसे बढ़ाना चाहिए और दूसरों के किसी भी कार्य से उसे आहत महसूस नहीं करना

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

चाहिए। इस प्रकार वह निश्चित रूप से शांति और संतोष के साथ आध्यात्मिक मार्ग पर सफलता पूर्वक अग्रसर हो सकेगा।

सूक्ति –

(दधन नृतम् धनयन अस्य धीतिम्)

वे सत्य को धारण करते हैं, उनकी बुद्धि और परमात्मा पर एकाग्रता ही उनकी सम्पत्ति है।

ऋग्वेद मन्त्र 1.71.4

मथीद्यदीं विभृतो मातरिश्वा गृहेगृहे श्येतो जेन्यो भूत्।

आर्द्दं राङ्गे न सहीयसे सचा सन्ना दूत्यं॑ भृगवाणो विवाय ॥४॥

(मथीत) मथना (यत) जब (ईम) निश्चित रूप से (विभृतः) विशेष रूप से धारण करते (मातरिश्वा) वायु (गृहे गृहे) प्रत्येक शरीर में, प्रत्येक घर में (श्येतः) शुद्ध सफेद प्रकाश, जीवात्मा (जेन्यः) विजेता (भूतः) होते हैं (आत) फिर (ईम) निश्चित रूप से (राङ्गे) एक राजा के लिए (न) जैसे कि (सहीयसे) सेवक, सहायक (सचा) संगति के लिए (सन्न) वर्तमान में (दूत्यम्) प्रतिनिधि, संदेश वाहक (भृगवाणः) अनेक योग्यताओं वाला, अनेक उद्देश्य पूरे करने वाला, तपस्वी (विवाय) स्वीकार किया गया।

व्याख्या :-

'अग्नि' अर्थात् ऊर्जा किस प्रकार उत्पन्न होती है?

जब विशेष रूप से धारण की गई वायु मथित होती है तो पवित्र और श्वेत प्रकाश वाली जीवात्मा प्रत्येक शरीर में विजयी होती है, प्रत्येक घर में ऐसा प्रकाश होता है तब निश्चित रूप से बहुयोग्यताओं वाला बहुउद्देश्य वाला और तपस्या से पूर्ण (अग्नि, ऊर्जा) प्राप्त होती है जिससे राजा के सहायक या सेवक की तरह उसका प्रतिनिधि या संदेश वाहक बनकर उसकी संगति कर सके।

जीवन में सार्थकता :-

भिन्न-भिन्न रूपों में ऊर्जा हमारे लिए किस प्रकार लाभदायक होती है?

'अग्नि' अर्थात् ऊर्जा एक बहुआयामी शक्ति है।

पाचक ऊर्जा अर्थात् जठराग्नि के रूप में यह शरीर के स्वास्थ्य को बनाये रखने में सहायता करती है और रक्त संरचरण तन्त्र में रक्त की ऊर्जा के रूप में कार्य करती है।

घरों में और उद्योगों में विद्युत के रूप में यह सहायक होती है। पवन चक्रिकयाँ वायु को मथकर विद्युत पैदा करती हैं। बादलों में यह गर्जना करती हुई विद्युत के रूप में सहयात करती हैं।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

इस विद्युत प्रकाश की एक बार चमक से वायु का तापमान 30 हजार डिग्री सेल्सियस तक पहुंच जाता है जिससे वायु का विस्तार होकर बादल वर्षा रूप में भूमि पर आ जाते हैं। इस प्रक्रिया में भी गर्जना से पहले प्रकाश दिखाई देता है क्योंकि प्रकाश ध्वनि से अधिक तेज चलता है।

यह ऊर्जा आध्यात्मिक रूप से भी सहायता करती है। योग साधना करने वाले लोग, प्राणायाम प्रक्रियाओं के अभ्यास से वायु के मथने का सदुपयोग अपने अन्दर आध्यात्मिक प्रकाश पैदा करने के लिए करते हैं। एक बार जब आत्मा का प्रकाश एक योगी में उत्पन्न हो जाता है तो दूसरे लोग भी उसे महसूस कर पाते हैं और बिना शब्दों के वह प्रकाश दूसरों पर एक बलशाली प्रभाव उत्पन्न करता है।

सूक्ति –

(मथीत यत ईम विभृत मातरिश्वा)

प्राणायाम के द्वारा विशेष रूप से धारण की गई वायु को मथ दो।

ऋग्वेद मन्त्र 1.71.5

महे यत्पित्र ई रसं दिवे करव त्सरत्पृशन्यश्चकित्वान् ।

सृजदस्ता धृषता दिद्युमस्मै स्वायां देवो दुहितरि त्विषिं धात् ॥५॥

(महे) महान् (यत) जो, जब (पित्रे) पिता के लिए, प्रकाश के द्वारा पालन करने वाला (ईम) निश्चित रूप से (रसम) साधना का रस, मधुरता (दिवे) दिव्यता के लिए (कः) उत्पन्न करते हैं (अवत्सरत) प्रगति करते हैं, अन्धकार और अज्ञानता दूर करते हैं (पृशन्यः) स्पर्श, जुड़ाव (चिकित्वान्) जानते हुए (सृजत) पैदा करते हैं, निर्माण करते हैं (अस्ता) दूर फेंकने के लिए (धृषता) दृढ़ता के साथ, विनाशकारी वज्र से (दिद्युम) ज्ञान (अज्ञानता का नाश करने के लिए) (अस्मै) उसके लिए (श्रद्धालु साधक के लिए) (स्वायाम्) स्वयं में (देवः) दिव्य (दुहितरि) पुत्री की तरह, उषा की उदय होती किरणें, उभरते हुए ज्ञान की किरणें (त्विषिम्) प्रकाश (ज्ञान का) (धात्) धारण, स्थापित।

व्याख्या :-

एक साधक मोह की अज्ञानता को कैसे दूर कर सकता है?

परमात्मा किस प्रकार एक साथ भक्त को प्रकाशित करते हैं?

जब एक साधक साधना भवित का रस निश्चित रूप से पैदा कर लेता है, उस महान और दिव्य पिता के लिए अपनी वाणी में मधुरता उत्पन्न कर लेता है जो प्रकाश अर्थात् शुद्धि और संतुष्टि के द्वारा सबका पालन करता है और जब वह साधक मोह रूपी अज्ञानता और अन्धकार को दूर करने में अग्रसर होने लगता है तब सर्वोच्च दिव्यता दृढ़ता के साथ और ज्ञान रूपी विनाशकारी वज्र के साथ उसमें ऐसा ज्ञान उत्पन्न कर देते हैं कि वह अज्ञानता को दूर फेंक सके। जैसे सूर्य की पुत्री ऊषा प्रकाश को स्थापित करने की शक्ति प्राप्त करती है।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



जीवन में सार्थकता :-

वीतराग सन्त कौन होता है?

दिव्य ऊर्जाओं को प्राप्त करने के लिए हमें परमात्मा के प्रति प्रेम पूर्वक साधक बनकर संगति करनी चाहिए। सारी सृष्टि से स्वयं को पृथक किये बिना अर्थात् बिना मोह वाले जीवन के अतिरिक्त परमात्मा की संगति असम्भव है। ऐसे योगी को वीतराग सन्त कहा जाता है जो इस सृष्टि में केवल एक उपभोक्ता की तरह जीने में रुचि खो चुका होता है। वह परमात्मा में जीता है, परमात्मा में श्वास लेता है, परमात्मा के लिए कार्य करता है, परमात्मा की अनुभूति के लिए जीता है और परमात्मा की अनुभूति के लिए ही मृत्यु की तरफ अग्रसर होता है।

सूक्ति -

(अवत्सरत पृश्नान्यः चिकित्वान्)

जो व्यक्ति मोह में अज्ञानता को दूर करना जान चुका हो – एक वीतराग सन्त।

ऋग्वेद मन्त्र 1.71.6

स्व आ यस्तुभ्यं दम आ विभाति नमो वा दाशादुशतो अनु घून्।
वर्धो अग्ने वयो अस्य द्विबर्हा यासद्राया सरथं यं जुनासि ॥६॥

(स्वे आ) अपने स्वयं में (य:) जो (तुम्हम्) आपके लिए, परमात्मा के लिए (दमे आ) अपने गृह में, अपने शरीर में (विभाति) प्रकाशित करता है, चमकता है (नमः) नमन (वा) तथा, या (दाशात्) उपलब्ध कराता है (उशतः:) सबके द्वारा इच्छित (अनु घून्) प्रतिदिन (वर्धो) वृद्धि और उन्नति में सक्षम (अग्ने) सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा (वयः) इस जीवन को, प्रगति की अवस्था को (अस्य) उसके लिए (द्विबर्हा) दो प्रकार से (यासत्) उपलब्ध कराते हैं, जोड़ते हैं (राया) सम्पदा (सरथम्) रथ के साथ, शरीर के साथ (यम) जिसको (जुनासि) प्रेरणा करते हैं, गतिशील करते हैं।

व्याख्या :-

परमात्मा किसको वृद्धि प्राप्त कराते हैं?

परमात्मा एक सच्चे भक्त को किस प्रकार वृद्धि प्राप्त कराते हैं?

एक साधक भक्त जो अपनी आत्मा और अपने शरीर में ही प्रकाशित होता है और चमकता है तथा जो आपको (परमात्मा को) अपना नमन प्रस्तुत करता है क्योंकि आप प्रतिदिन सबके द्वारा इच्छित होते हो। आप, 'अग्नि', सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा, उसके जीवन में और उसकी प्रगति की अवस्थाओं को दो प्रकार से वृद्धि प्रदान करते हुए अग्रसर करते हो – उसे समस्त सम्पदा के साथ जोड़ते हो और उसे शरीर रथ के साथ अग्रसर होने के लिए प्रेरित करते हो और योग्य बनाते हो।

जीवन में सार्थकता :-

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

अपने जीवन में चमक कैसे पैदा करें?

एक जीवन केवल सत्य के साथ ही चमकता है और सत्य केवल एक ही है – परमात्मा, क्योंकि शेष सारी सृष्टि न तो वास्तविक है और न स्थाई। जो व्यक्ति चेतना पूर्वक उस सत्य के साथ संगति करके जीता है और अपने व्यक्तिगत अर्थात् अपने शरीर और मन पर ज्यादा ध्यान नहीं देता, केवल ऐसा साधक भक्त ही सत्य में जीता है।

सूक्ति –

(स्वे आ तुभ्यम् दमे आ विभाति नमः वा दाशात् उशतः अनु घून्)

एक साधक भक्त जो अपनी आत्मा और अपने शरीर में ही प्रकाशित होता है और चमकता है तथा जो आपको (परमात्मा को) अपना नमन प्रस्तुत करता है क्योंकि आप प्रतिदिन सबके द्वारा इच्छित होते हो।

(यास्त् राया सरथम् यम् जुनासि)

वह समस्त सम्पदा के साथ जोड़ता है और शरीर रथ के साथ अग्रसर होने के लिए प्रेरित करता है।

ऋग्वेद मन्त्र 1.71.7

अग्निं विश्वा अभि पृक्षः सचन्ते समुद्रं न स्वतः सप्त यह्वीः ।
न जामिभिर्विं चिकिर्ते वयो नो विदा देवेषु प्रमतिं चिकित्वान् ॥७॥

(अग्निम्) अग्नि को, ऊर्जा को (विश्वा) सब (अभि) की तरफ (पृक्षः) हमारा प्रेम, भक्ति, भोज्य पदार्थ (सचन्ते) संगति, एक होना (समुद्रम्) समुद्र को (न) जैसे कि (स्वतः) जल की तरंगे (सप्त) भक्ति (यह्वीः) अथक, गतिशील (न) नहीं (जामिभिः) भाई आदि (वि चिकिर्ते) विशेष रूप से जानता है (वयः) जीवन, प्रगति (नः) हमारे (विदाः) हमें प्राप्त कराता है (देवेषु) दिव्य शक्तियों और लोगों के बारे में (प्रमतिम्) उत्तम ज्ञान (चिकित्वान्) ज्ञान का स्रोत, सर्वज्ञाता।

व्याख्या :-

हमारे सभी कर्म कहाँ जाते हैं?

हमारा प्रेम, भक्ति, अन्न आदि 'अग्नि' अर्थात् सर्वोच्च ऊर्जा की तरफ जाते हैं (और हमें ऊर्जावान करते हैं)। जिस प्रकार बिना आराम किये और गति के साथ नदियों के जल की श्रद्धावान धाराएं समुद्र में जाकर मिल जाती हैं और उसके साथ एकीकार हो जाती है। हमारे भाई बन्धु हमारे जीवन के बारे में और उसकी प्रगति के बारे में विशेष कुछ नहीं जानते। कृपया हमें दिव्य शक्तियों और दिव्य लोगों के बारे में उत्तम ज्ञान प्राप्त करवाओ, क्योंकि आप सर्वज्ञाता अर्थात् ज्ञान का स्रोत हो।

जीवन में सार्थकता :-

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

मन की आन्तरिक अवस्था के बारे में कौन जानता है?

आध्यात्मिक प्रगति में हमारी कौन सहायता कर सकता है?

हमारा समस्त प्रेम, भक्ति, अन्न और हमारे द्वारा किये गये सभी कार्य सीधा 'अग्नि' अर्थात् ऊर्जा में सम्मिलित हो जाते हैं। यदि हमारे कार्यों में सकारात्मकता अर्थात् यज्ञ का सिद्धान्त होता है तो हमारी ऊर्जा बढ़ती है। जबकि हमारे नकारात्मक कार्यों और विचारों से हमारी ऊर्जा कम होती है।

दूसरा, हमारे आन्तरिक मन और आध्यात्मिक प्रगति के बारे में कोई नहीं जानता। परन्तु क्योंकि हमारे सभी कार्य और विचार भगवान में सम्मिलित हो जाते हैं, अतः भगवान निश्चित रूप से हमारे मन की आन्तरिक अवस्था के बारे में जानते हैं।

अतः हम परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि हमें सभी दिव्यताओं के साथ जोड़ दें, जिससे उन दिव्यताओं की सहायता से हम आध्यात्मिक प्रगति कर सकें।

सूक्ति –

(अग्निम् विश्वा अभि पृष्ठः)

हमारा प्रेम, भक्ति, अन्न आदि 'अग्नि' अर्थात् सर्वोच्च ऊर्जा की तरफ जाते हैं (और हमें ऊर्जावान करते हैं)।

(विदा: देवेषु प्रमतिम् चिकित्वान्)

कृपया हमें दिव्य शक्तियों और दिव्य लोगों के बारे में उत्तम ज्ञान प्राप्त करवाओ, क्योंकि आप सर्वज्ञाता अर्थात् ज्ञान का स्रोत हो।

ऋग्वेद मन्त्र 1.71.8

आ यदिषे नृपतिं तेज आनट्छुचि रेतो निषिक्तं द्यौरभीके।

अग्निः शर्धमनवद्यं युवानं स्वाध्यं जनयत्सूदयच्च ॥४॥

(आ) पूर्ण रूप से (यत्) जब (इषे) इच्छाएँ पूर्ण करने के लिए, शक्तियों के लिए (नृपतिम्) लोगों के स्वामी और संरक्षक (तेज) ताप, ऊर्जा (आनट) व्याप्त हुआ (छुचि) शुद्ध, पवित्र (रेत) महत्त्वपूर्ण तरल (निषिक्तम्) स्थापित (द्यौः) दिव्य प्रकाश (अभीके) अत्यन्त निकट (अग्निः) ताप, ऊर्जा (शर्धम्) शक्तिशाली (अनवद्यम्) बिना निन्दा के (युवानम्) युवा, सन्तान उत्पन्न करने के योग्य (स्वाध्यम्) उत्तम बुद्धि और ज्ञान धारण करने वाला (जनयत) उत्पन्न करता है (सूदयत) प्रेरित (च) और।

व्याख्या :-

सृष्टि निर्माण के समय परमात्मा ने किस प्रकार अपने आपको अभिव्यक्त किया?

सन्तानोत्पत्ति के लिए मनुष्यों में किस रूप में ऊर्जा स्थापित की गई?

जब मानव मात्र का संरक्षक और स्वामी ताप और ऊर्जा की इच्छा से सर्वव्यापक हो गया, उसने महत्त्वपूर्ण तरल पदार्थ तथा उस ताप और ऊर्जा के निकट दिव्य प्रकाश स्थापित किया जिससे

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



शक्तिशाली लोगों को पैदा किया जा सके जो बिना निन्दा भाव के, युवावस्था में हों जिससे सन्तान उत्पन्न करने में सक्षम हों और उनमें उत्तम बुद्धि और ज्ञान हो तथा उन्हें प्रेरित भी किया।

जीवन में सार्थकता :-

उत्तम सन्तान प्राप्त करने के लिए माता-पिता को क्या लक्षण धारण करने चाहिए?

परमात्मा ने अन्य जीवों के साथ-साथ मानव में भी स्वयं को अभिव्यक्त किया और एक मूल्यवान तरल पदार्थ के माध्यम से सन्तानोत्पत्ति की प्रक्रिया प्रारम्भ की। परन्तु मनुष्यों को कुछ विशेष लक्षण उस समय धारण करने के लिए दिये जब वे सन्तानोत्पत्ति का प्रयास करें जिससे वही लक्षण भावी सन्तति में भी उत्पन्न हो सकें :—

1. शारीरिक बल
2. किसी के बुरे मन और विचारों को धारण न करना और न ही किसी की निन्दा करना।
3. शारीरिक और मानसिक रूप से उत्तम सन्तान उत्पन्न करने के लिए अमूल्य तरल पदार्थ का संरक्षण करने के लिए युवा शक्ति।
4. आत्मा पर ध्यान केन्द्रित करने के साथ-साथ उत्तम बुद्धि और ज्ञान को धारण करना।

ऋग्वेद मन्त्र 1.71.9

मनो न योऽध्वनः सद्य एत्येकः सत्रा सूरो वस्व ईशो ।
राजाना मित्रावरुणा सुपाणी गोषु प्रियममृतं रक्षमाणा ॥१॥

(मनः) मन (न) जैसे कि (यः) जो (अध्वनः) मार्गों को (सद्यः) अत्यधिक तीव्र (एति) प्राप्त करता है, पार करता है (एकः) अकेला (सत्रा) सदैव, परमात्मा के साथ (सूरः) सूर्य, बुद्धिमान (वस्वः) सुविधाएँ (ईशो) शासन, निर्देश (राजाना) प्रकाशित, महान् राजा, नियंत्रक (इन्द्रियों का) (मित्रा वरुणा) मित्रवत और न्यायिक (सुपाणी) उत्तम हाथों वाला, कार्य करने में उत्तम दक्षता वाला (गोषु) अपनी इन्द्रियों में, अपने ज्ञान में (प्रियम) प्रिय (अमृतम्) न मरने वाला (परमात्मा) (रक्षमाणा) संरक्षण करने वाली शक्ति बनता है।

व्याख्या :-

अपने महान् दिव्य मार्ग पर कौन अकेला चलता है?

अकेले नेतृत्व करने वाले व्यक्ति को क्या लाभ होता है और वह क्या प्रदर्शित करता है?

सूर्य अपने मार्ग पर तेज गति से अकेला चलता है। एक बुद्धिमान व्यक्ति भी जो अपने मार्गों को पार करता है वह अकेला ही मन की गति के समान तेज चलता है। वह परमात्मा के साथ चलता है और वह सुख-सुविधाओं पर शासन करता है। वह निम्न लक्षण प्राप्त करता है और उन्हें प्रदर्शित करता है :—

1. वह एक महान राजा और इन्द्रियों के नियंत्रक की तरह प्रकाशित होता है।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

2. वह अपने व्यवहार में मित्रवत और न्यायिक होता है।
3. वह उत्तम हाथों को धारण करता है और कार्य करने में उत्तम दक्ष बन जाता है।
4. अपनी इन्द्रियों में और अपने ज्ञान में वह अपने प्रिय परमात्मा की संरक्षण शक्ति बन जाता है और इसके विपरीत परमात्मा उसकी संरक्षण शक्ति बन जाता है।

जीवन में सार्थकता :-

अपने मार्ग पर कोई अकेला कैसे चल सकता है?

महान् और दिव्य लोग अकेले होते हुए भी अपने मार्ग पर कोई बाधा महसूस नहीं करते। बल्कि अकेले नेतृत्व करने वाले लोग अपने जीवन में अनेकों दिव्यताएँ प्राप्त करते हैं और उन्हें प्रदर्शित करते हैं। कोई व्यक्ति अकेला केवल तभी चल सकता है जब वह गहराई से परमात्मा की संगति की अनुभूति प्राप्त कर ले। उसे यह अनुभूति हो जाती है कि वह केवल परमात्मा के लिए कार्य कर रहा है और इसके लिए ऊर्जा तथा साधन नियमित रूप से केवल परमात्मा के द्वारा ही उपलब्ध करवाये जा रहे हैं। एक बार जब आप ऐसी अनुभूति के साथ चलते हैं तो समर्थन करने वाले सभी तन्त्र आपका अनुसरण करने लगते हैं।

सूक्ति -

(गोषु प्रियम् अमृतम् रक्षमाणा)

अपनी इन्द्रियों में और अपने ज्ञान में वह अपने प्रिय परमात्मा की संरक्षण शक्ति बन जाता है और इसके विपरीत परमात्मा उसकी संरक्षण शक्ति बन जाता है।

ऋग्वेद मन्त्र 1.71.10

मा नो अग्ने सख्या पित्र्याणि प्र मर्षिष्ठा अभि विदुष्कविः सन्।

नभो न रूपं जरिमा मिनाति पुरा तस्या अभिशस्तेरधीहि ॥10॥

(मा) नहीं (नः) हमारे (अग्ने) सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा (सख्या) मित्रता (पित्र्याणि) हमारे पितरों अर्थात् दिव्य पूर्वजों से (प्र मर्षिष्ठा) नाश (अभि) की तरफ, प्रधानता से (विदुः) जानते हुए (कविः) दृष्टा (सन्) होते हुए (नभः) बादल (न) जैसे कि (रूपम्) रूप, होने की अवस्था (जरिमा) वृद्ध आयु (मिनाति) नाश (पुरा) पूर्व (तस्याः) वह (अधीहि) देखभाल करता है, वर्तमान अवस्था में।

व्याख्या :-

परमात्मा के साथ हमारी मित्रता कितनी लम्बी है?

वृद्धावस्था क्या करती है?

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा! कृपया (आपके और हमारे बीच) हमारी मित्रता को नष्ट न करना, क्योंकि आप हमें हमारे पितरों के समय से जानते हो (अर्थात् सृष्टि के प्रारम्भ से) और आप एक दृष्टा हो। बादलों के समान, वृद्ध आयु वर्तमान रूप को या अस्तित्व की अवस्था को नष्ट कर देती है। कृपया हमारी वर्तमान अवस्था का ध्यान करो इससे पहले कि विनाश प्रारम्भ हो जाये।

जीवन में सार्थकता :-

हमें वर्तमान जीवन में क्या करना चाहिए?

इस मन्त्र में हमारा भूतकाल, वर्तमानकाल और भविष्यकाल शामिल हैं।

1. परमात्मा के साथ हमारी मित्रता प्राचीन और हमारे पितरों के विस्मृत समय से चलती आ रही है।
2. वर्तमान समय में हमें अपने अस्तित्व की अवस्था पर गर्व है जैसे हमारा नाम, रूप, सम्पदा, ज्ञान और स्तर आदि।
3. भविष्य में वृद्धावस्था निश्चित रूप से हमारे वर्तमान का नाश कर देगी। प्रत्येक व्यक्ति कार्य करने की और भोग करने की क्षमाताओं को खो बैठता है।

अतः हमें अपने आध्यात्मिक पथ के प्रति सावधान रहने के लिए कड़ी मेहनत करनी चाहिए और वर्तमान अवस्था में ही अपनी सारी ऊर्जाओं का प्रयोग करते हुए स्वयं को आध्यात्मिक रूप से शक्तिशाली बनाना चाहिए।

सूक्ति -

(मा नः अग्ने सख्या पित्र्याणि)

परमात्मा के साथ हमारी मित्रता प्राचीन और हमारे पितरों के विस्मृत समय से चलती आ रही है।

(पुरा तस्याः अभिशस्ते अधीहि)

अपनी वर्तमान अवस्था का ध्यान करो इससे पहले कि विनाश प्रारम्भ हो जाये।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

ऋग्वेद मण्डल-1 सूक्त 72

ऋग्वेद मन्त्र 1.72.1

नि काव्या वेधसः शश्वतस्कर्हस्ते दधानो नर्या पुरुणि ।
अग्निर्भुवद्रयिपती रयीणां सत्रा चक्राणो अमृतानि विश्वा ॥१॥

(नि) निश्चित रूप से (काव्या) कविता रूप (वेद) (वेधसः) समस्त ज्ञान धारण करते हुए (शश्वतः) सनातन (क:) स्थापित (हस्ते) हाथों में (दधानः) देता है, धारण करता है (नर्या) मानव कल्याण के लिए (पुरुणि) पूर्णता के लिए, पालन के लिए (अग्नि) सर्वोच्च ऊर्जा (भुवत्) है (रयिपतिः) सम्पदा का स्वामी और संरक्षक (रयीणाम्) समस्त सम्पदा का (सत्रा) सदैव परमात्मा के साथ (चक्राणः) करता है (अमृतानि) न मरने वाले के लिए (विश्वा) सब।

व्याख्या :-

वेद का क्या उद्देश्य है?

'अग्नि' किन शक्तियों को धारण करती है?

निश्चित रूप से शाश्वत कविता (वेद) को समूचा ज्ञान हाथ में देते हुए स्थापित किया गया है जिससे मानव का पूर्ण कल्याण और पालन हो सके।

'अग्नि', परमात्मा का ऊर्जा रूप, सभी सम्पदाओं की सम्पदा का स्वामी और संरक्षक है। जो व्यक्ति सदैव परमात्मा के साथ कार्य करता है वह हर तरफ से और हर प्रकार से अमृत अवस्था को प्राप्त कर लेता है।

जीवन में सार्थकता :-

वैदिक विवेक क्या है?

यह मन्त्र वेदों को मानव कल्याण की एक पूर्ण योजना के रूप में घोषित करता है। वेदों से प्राप्त वैदिक विवेक है – यज्ञ अर्थात् सबका कल्याण। सच्चा यज्ञ करने वाला व्यक्ति, प्रत्येक कार्य को परमात्मा के साथ, परमात्मा के लिए और परमात्मा के द्वारा करते हुए निश्चित रूप से परमात्मा अर्थात् अमृत, न मरने वाली अवस्था, को प्राप्त करने के लिए निर्धारित होता है।

सूक्ति –

(नि काव्या वेधसः शश्वतः कः)

निश्चित रूप शाश्वत कविता (वेद) ज्ञान स्थापित करते हैं।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



(अग्नि भुवत् रथिपतिः रथीणाम्)

'अग्नि', परमात्मा का ऊर्जा रूप, सभी सम्पदाओं की सम्पदा का स्वामी और संरक्षक है।

(सत्रा चक्राणः अमृतानि विश्वा)

जो व्यक्ति सदैव परमात्मा के साथ कार्य करता है वह हर तरफ से और हर प्रकार से अमृत अवस्था को प्राप्त कर लेता है।

ऋग्वेद मन्त्र 1.72.2

अस्मे वत्सं परि षन्तं न विन्दन्निच्छन्तो विश्वे अमृता अमूरा: ।

श्रमयुवः पदव्यो धियंधास्तस्थुः पदे परमे चार्वग्ने: ॥२॥

(अस्मे) हमारे (वत्सम्) निवास, हमारे में रहने वाला (परि षन्तम्) चारों तरफ सर्वत्र व्यापक (न) नहीं (विन्दन्) प्राप्तकर्ता, अनुभूति (इच्छन्तः) इच्छा करते हुए (विश्वे) सब (अमृता) न मरने योग्य अवस्था (अमूरा:) बिना किसी मूर्खता के, बुद्धिमत्ता से पूर्ण (श्रमयुवः) कड़ी मेहनत से जुड़ा हुआ अर्थात् परमात्मा को समर्पित कर (पदव्यः) अपने मार्ग का अनुशरण करते हुए (श्रद्धा और भक्ति का) (धियन्धा:) बुद्धि और ज्ञान धारण करने वाला (वास्तविक और स्थाई सच्चाई का) (तस्थुः) स्थापित (पदे) स्थान, अवस्था में (परमे) सर्वोच्च (चारु) सुन्दर, दिव्य योग्यता से भरपूर (अग्ने:) सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा ।

व्याख्या :-

क्या केवल इच्छा से प्रत्येक व्यक्ति परमात्मा को प्राप्त कर सकता है?

कौन परमात्मा को प्राप्त कर सकता है?

परमात्मा की इच्छा करने वाले सभी लोग 'अग्नि' अर्थात् परमात्मा के ऊर्जा रूप को प्राप्त नहीं करते, जो वास्तव में हमारा आवास है और हमारे अन्दर रहता है तथा चारों तरफ व्याप्त है। परन्तु निम्न प्रकार के लोग उसे अवश्य प्राप्त करते हैं :-

1. (अमृता) जो लोग न मरने योग्य अवस्था में जीते हैं, अर्थात् वे भौतिक वस्तुओं के लिए नहीं मरते ।
2. (अमूरा:) जो बिना किसी मूर्खता के और बुद्धिमत्ता से पूर्ण हैं।
3. (श्रमयुवः) जो कड़ी मेहनत से जुड़े हैं और अपने कर्म परमात्मा को समर्पित करते हैं।
4. (पदव्यः) जो अपने मार्ग का अनुशरण करते (श्रद्धा और भक्ति का) हैं।
5. (धियन्धा:) जो बुद्धि और ज्ञान को धारण करते (वास्तविक और स्थाई सत्य का) हैं।

केवल ऐसे ही लोग (मुक्ति के लिए) स्वयं को 'अग्नि' की सर्वोच्च अवस्था में सुन्दर रूप से स्थापित कर लेते हैं।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

जीवन में सार्थकता :-

परमात्मा को प्राप्त करने का क्या उद्देश्य है?

अधिकतर लोग भौतिक सुखों के लिए परमात्मा की पूजा करते हैं। परन्तु वे केवल इच्छा करने से परमात्मा को प्राप्त नहीं कर सकते। केवल वे लोग जो उसकी इच्छा करते हैं और उसके अतिरिक्त कुछ भी इच्छा नहीं करते, उसे प्राप्त करने के योग्य बन जाते हैं। अपनी एक ही इच्छा की पूर्ति में लगे हुए वे लोग ज्ञान प्राप्त करते हैं, कर्मों को करते हैं और उपासना करते हुए अपना प्रत्येक क्षण परमात्मा को समर्पित करते हैं। जबकि अपने नाम या अहंकार या भौतिक या मानसिक सुविधाओं को प्राप्त करने की इच्छाओं के बिना जीवन जीते हैं। इस प्रकार परमात्मा को प्राप्त करने का उद्देश्य यह है कि हम अपने सत्य रूप और अपनी सत्य ऊर्जा की अनुभूति प्राप्त कर सकें।

सूक्ष्म -

(तत्स्थुः पदे परमे चारु अग्नेः)

स्वयं को (मुक्ति के लिए) 'अग्नि' की सर्वोच्च अवस्था में सुन्दर रूप से स्थापित करें।

ऋग्वेद मन्त्र 1.72.3

तिस्रो यदग्ने शरदस्त्वामिच्छुचिं घृतेन शुचयः सपर्यान् ।

नामानि चिद्वधिरे यज्ञियान्यसूदयन्त तन्वः ९ सुजाताः ॥३॥

तिस्रः) तीन (यत) जो (अग्ने) सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा (शरदः) शरद ऋतु (त्वाम) आप (इत) निश्चित रूप से (शुचिम) अत्यन्त शुद्ध (घृतेन) बुद्धिमत्ता के प्रभाव के साथ (शुचयः) स्वयं शुद्ध होते हुए (सपर्यान्) सेवा करना, पूजा करना (नामानि) नाम, गुण (चित) संगति के योग्य (दधिरे) धारण करता, उच्चारण करना (यज्ञियानि) संगति के योग्य (असूदयन्त) प्रेरणा (तन्वः) शरीर (सुजाताः) उत्तम कार्य।

व्याख्या :-

उत्तम दिव्य कार्यों को करने के लिए कौन प्रेरित होता है?

जो तीन शरद ऋतुओं तक (अर्थात् एक लम्बी अवधि तक) अपनी शुद्धता और बुद्धिमत्ता के ताप के साथ आपकी शुद्ध सर्वोच्च ऊर्जा के रूप में सेवा करता है और आपका पूजन करता है तथा आपके नामों और गुणों को धारण करते हुए उनका उच्चारण करता है वह आपकी संगति के योग्य है। आप ऐसे शरीरों को उत्तम कार्यों के लिए प्रेरित करते हो।

जीवन में सार्थकता :-

उच्च चेतना का जीवन क्या होता है?

पाश्चिक जीवन क्या होता है?

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

मनुष्यों के लिए सबसे महत्वपूर्ण कार्य परमात्मा की उसके ऊर्जा रूप में पूजा करना होना चाहिए और स्वयं को ऊर्जावान बनाने के लिए ओ३म् का उच्चारण करना चाहिए। केवल इस प्रकार का जीवन ही उत्तम कार्यों के लिए प्रेरित हो सकता है, अन्यथा सभी जीवन मात्र पाश्चिक जीवन हैं। वर्तमान कलियुग के अन्धकारपूर्ण वातावरण में भी परमात्मा की संगति ही इस युग के व्यापक प्रभावों से हमें बचा सकती है और हमें उच्च चेतना के स्तर पर जीवन जीने के लिए प्रेरित कर सकती है। पाश्चिक जीवन का ध्यान भगवान की संगति के बिना केवल धन—सम्पदा कमाने पर और परिवार और समाज के साथ उसका उपभोग करने पर केन्द्रित रहता है।

ऋग्वेद मन्त्र 1.72.4

आ रोदसी बृहती वेविदानाः प्र रुद्रिया जप्त्रिरे यज्ञियासः ।
विदन्मर्तो नेमधिता चिकित्वानग्निं पदे परमे तस्थिवांसम् ॥४॥

(आ – वेविदानाः से पूर्व लगाकर) (रोदसी) दोनों धरती तथा स्वर्ग, शरीर तथा मन (बृहती) महान् विशाल (वेविदानाः – आ वेविदानाः) सब तरफ से जानते हुए (प्र – जप्त्रिरे से पूर्व लगाकर) (रुद्रिया) न्याय का स्वामी और कर्मों का निष्पादन करने वाला (जप्त्रिरे – प्र जप्त्रिरे) पहुँचता है (यज्ञियासः) यज्ञ कार्यों के प्रभाव के साथ (विदत) जानता है (मर्तः) मरणशील मनुष्य (नेमधिता) संघर्ष पूर्ण जीवन से प्राप्त सभी वस्तुओं को धारण करने वाला (चिकित्वान) बुद्धिमान (अग्निम्) सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा (उसके अनेकों आयाम जैसे ताप, अग्नि, आद्रता, प्रकाश, पाचक रस, शरीर के रक्त संचरण तंत्र में चलने वाले रक्त का ताप आदि) (पदे) स्थान पर (परमे) सर्वोच्च (तस्थिवांसम) स्थापित।

व्याख्या :-

कौन 'अग्नि' को पूरी तरह से जानता है?

जो लोग महान् और व्यापक भूमि और स्वर्ग लोक को जानते हुए, सब तरफ से शरीर और मन को जानते हुए, अपने यज्ञ कार्यों से न्याय और कर्मफल के प्रदाता स्वामी तक पहुँचते हैं, ऐसे बुद्धिमान लोग संघर्षपूर्ण जीवन के माध्यम से वस्तुओं को धारण करने वाले बनकर 'अग्नि' अर्थात् परमात्मा के ऊर्जा रूप को जानते हैं जो सर्वोच्च स्तर पर स्थापित है।

जीवन में सार्थकता :-

'अग्नि' अर्थात् ऊर्जा क्या है?

'अग्नि' से अभिप्राय है परमात्मा का सर्वोच्च ऊर्जा रूप। यह मन्त्र इस व्याख्या को सिद्ध करता है क्योंकि जो व्यक्ति इस ब्रह्माण्ड की गहराई को जान लेता है, वह इस निष्कर्ष पर पहुँचता है कि असंख्य रूपों से लेकर अस्तित्व के अत्यन्त सूक्ष्म कणों – इलेक्ट्रॉन, प्रोटान एवं न्यूट्रोन, तक यह केवल ऊर्जा ही है जो इस सृष्टि का निर्माण करने वाली वास्तविक और स्थाई शक्ति है, जो अनेकों रूपों में, जीव और निर्जीव सभी का पालन करती है। जन्म से लेकर मृत्यु तक हम केवल इसी ऊर्जा

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



के सहारे जीते हैं और अन्तः मृत्यु होने पर हमारे अवशेष भी अग्नि को ही समर्पित कर दिये जाते हैं। इस प्रकार 'अग्नि' अर्थात् ऊर्जा रूप इस ब्रह्माण्ड का अपरिहार्य अंग है। अतः यह परमात्मा है।

सूक्ति –

(अग्निम् पदे परमे तस्थिवांसम्)

'अग्नि' अर्थात् परमात्मा के ऊर्जा रूप को जानते हैं जो सर्वोच्च स्तर पर स्थापित है।

ऋग्वेद मन्त्र 1.72.5

संजानाना उप सीदन्नभिज्ञु पत्नीवन्तो नमस्यं नमस्यन् ।
रिरिक्वांसस्तन्वः कृणवत् स्वाः सखा सख्युर्निमिषि रक्षमाणाः ॥५॥

(संजानाना) अच्छी प्रकार से जानते हुए (उप सीदन्न) आपके निकट पूजा और सम्मान के लिए बैठते हैं (अभिज्ञु) जंघाओं पर बैठे हुए (पत्नीवन्तः) पत्नियों के साथ, उन शक्तियों के साथ जो हमें गिरने से बचाती हैं (नमस्यम्) स्तुति, पूजा के योग्य (नमस्यन्) स्तुति, पूजा (रिरिक्वांसः) खाली करते हुए (शरीर और मन से पापों को हटाते हुए) (तन्वः) शरीरों से (कृणवत्) करते हैं (स्वाः) उस सर्वोच्च आत्मा का (सखा) मित्र (सख्यु) उस मित्र का (निमिषि) आनन्ददायक और दृष्टि में उदार (रक्षमाणाः) स्वयं को सुरक्षित करते हैं।

व्याख्या :-

परमात्मा के साथ मित्रता कैसे करें?

यह अच्छी तरह जानकर (परमात्मा के ऊर्जा रूप को) जब कोई आपके निकट पूजा और श्रद्धा के साथ अपनी पत्नी सहित जांघों पर (वज्रासन) बैठता है। उन शक्तियों के साथ जो हमें पतन से बचाती हैं और पूजा आराधना करती है उसकी (सर्वोच्च ऊर्जा) जो वास्तव में पूजा आराधना और प्रेम के योग्य है।

अपने शरीर को खाली करके (शरीर और मन के पापों को हटाकर) वह स्वयं को सर्वोच्च आत्मा का मित्र बना लेता है। उस मित्र की आनन्ददायक और उदार दृष्टि के साथ वह स्वयं को सुरक्षित कर लेता है।

जीवन में सार्थकता :-

क्या हम परमात्मा से अस्तित्व में भिन्न हैं?

हमारी व्यक्तिगत आत्मा का परमात्मा के साथ सम्बन्ध प्रेम और शुद्धता के साथ ही मित्रवत् सुदृढ़ होता है। जब हम अपने जीवन को प्रत्येक दृष्टि से शुद्ध और पवित्र बना लेते हैं और साथ-साथ उसके प्रति आत्मिक रूप से पूर्ण श्रद्धा भक्ति के साथ, हम एकीकृत मित्रता को महसूस कर सकते हैं और उसकी अनुभूति प्राप्त कर सकते हैं जिसमें केवल शरीर और मन के स्तर पर हम भिन्न लगते

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



हैं, परन्तु आत्मिक स्तर पर हम एक ही हो जाते हैं। उस एक आत्मा और एक ऊर्जा के स्तर पर खड़े होकर जब हम अपने जीवन को देखते हैं तो हमें यह भी निश्चित अनुभूति होती है कि हमारा शरीर और मन केवल ऊपरी तौर पर दृष्ट्यामान है जैसे एक विशेषज्ञ खिलाड़ी के हाथ में कठपुतलियाँ। अतः इस प्रश्न का उत्तर दोनों प्रकार से हो सकता है – हाँ तथा ना। शरीर और मन के स्तर पर इस प्रश्न का उत्तर है, हाँ, हम परमात्मा से अलग हैं। आध्यात्मिक स्तर पर, नहीं, हम परमात्मा से अलग नहीं हैं। हम उसके साथ और सभी जीवों के साथ एक ही हैं। वास्तव में वह वास्तविक कर्ता है जो हमारे शरीर और मन के माध्यम से अर्थात् स्थूल शरीर और सूक्ष्म शरीर के माध्यम से कार्य करता है। बल्कि वह हमारे सूक्ष्म शरीर का प्रतिक्षण और प्रत्येक कार्य में परीक्षण करता है।

सूक्ति –

(संज्ञानाना उप सीदन)

यह अच्छी तरह जानकर (परमात्मा के ऊर्जा रूप को) आपके निकट बैठता है।

(नमस्यम् नमस्यन)

उसको प्रेम करो और उसकी पूजा करो जो प्रेम और पूजा के योग्य है।

ऋग्वेद मन्त्र 1.72.6

त्रिः सप्त यद्गुह्यानि त्वे इत्पदाविदन्निहिता यज्ञियासः।
तेभी रक्षन्ते अमृतं सजोषाः पशूञ्च रथातृञ्चरथं च पाहि ॥६॥

(त्रिः सप्त) तीन बार सात (यत्) जो (गुह्यनि) गुप्त (त्वे) आप में (इत्) केवल (पदा) अवस्थाएँ (अविदन्) जानता है, प्राप्त करता है (निहिता) स्थापित (यज्ञियासः) यज्ञ कार्यों के लिए समर्पित (तेभी:) उसके द्वारा (यज्ञ कार्यों के साथ) (रक्षन्ते) संरक्षण, सुरक्षित और आगे बढ़ाना (अमृतम्) न मरने वाला (सम्पदा) (सजोषाः) कार्य करना और प्रेम करना (यज्ञ कार्य) (पशून्) पशु (च) और (रथातृन्) स्थिर (चरथम्) गतिशील (च) और (पाहि) संरक्षण।

व्याख्या :-

यज्ञ कार्यों के प्रभाव कितनी दूर तक जाते हैं?

जो व्यक्ति यज्ञ कार्यों के प्रति पूर्ण समर्पित है वह तीन 3 गुणा 7 अर्थात् 21 स्थापित रहस्यों को जानता है और प्राप्त करता है। जो आपकी (परमात्मा) की अवस्थाओं में ही है और उसके बाद (यज्ञ कार्यों के साथ) उन्हें करते हुए और प्रेम पूर्वक अपनी अभौतिक सम्पदा (अर्थात् परमात्मा के साथ अपनी आध्यात्मिक संगति और यही संगति समूचे पशु संसार, गतिमान और स्थिर संसार के साथ) को संरक्षित, सुरक्षित और सम्बद्धन कर लेता है।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

जीवन में सार्थकता :-

यज्ञ के 21 रहस्य क्या हैं?

क्या यज्ञ वाला जीवन हमारी चेतना के स्तर को भिन्न-भिन्न उच्च लोकों तक पहुँचाता है? वास्तविक यज्ञ कार्य पूरी तरह से अहंकार रहित होते हैं, क्योंकि उनका कर्ता यह अनुभूति प्रतिक्षण प्राप्त कर रहा होता है कि परमात्मा ही केवल सच्चा कर्ता है। व्यक्तिगत नाम और रूप तो केवल दिव्य प्रबन्धन की तरह प्रयोग किये जाते हैं। दूसरा, वह अपने कार्यों के साथ किसी भी प्रकार की न्यूनतम इच्छा भी नहीं जोड़ता।

इस प्रकार प्रत्येक यज्ञ कार्यों का कर्ता यज्ञ के 21 रहस्यों को जानता है और उन्हें प्राप्त करता है। जैसा कि हम सब जानते हैं कि प्रत्येक यज्ञ कार्य के साथ तीन आयाम जुड़े होते हैं – देवपूजा, संगतिकरण (सर्वोच्च दिव्यता के साथ) और दान (अपने अहंकार और इच्छाओं से रहित सबका कल्याण)।

इन तीन आयामों को सात लोकों से गुणा करने पर हमें यज्ञ के सभी प्रभावों की अनुभूति 21 प्रकार से प्राप्त होगी।

सात लोक हैं – भू भुवः, स्वः, महः, जनः, तपः और सत्यम्। ये उर्ध्व लोक अर्थात् चेतना के उच्च स्तर हैं – (1) भू – हमारे शरीर का स्तर है; (2) भुवः – हमारे मन का स्तर है; (3) स्वः – हमारे पूर्ण समर्पण का स्तर है; (4) महः – महः से अभिप्राय है पूर्ण महानता; (5) जनः – प्रत्येक जीव में आत्मा का स्तर है; (6) तपः – तपः का अर्थ है तपस्या और (7) सत्यम् – सत्यम् का अर्थ है उस सत्य की अनुभूति और ब्रह्म तक पहुँचने का ज्ञान।

ये साथ उच्च लोक हमारी चेतना की उच्च गति के अलग-अलग स्तर हैं। भू भुवः और स्वः की तुलना हमारे जीवन की जाग्रत, स्वप्न और सुसुप्ति अवस्था से की जाती है। एक श्रद्धालु भक्त इन तीन भौतिक अवस्थाओं से ऊपर उठने का प्रयास करता रहता है।

इसके विपरीत सात निम्न लोक भी हैं अर्थात् अधोलोक – अतल, वितल, सुतल, तलातल, महातल, रसातल और पाताल। ये सात निम्न लोक हमारे चेतना के स्तर की गिरी हुई अवस्थाएँ हैं। जो लोग यज्ञ कार्य नहीं करते, वो जीवन के इन निम्न स्तरों पर पहुँचते हैं।

एक अन्य दृष्टिकोण के अनुसार मानव जीवन के तीन और आयाम हैं – शरीर, मन और आत्मा। सच्चे यज्ञ कार्यों को करने वाला सात उच्च लोकों को जीवन को इन तीनों आयामों में प्राप्त करके आनन्दित होता है।

सूक्ति –

(इत् पदा अविदन् निहिता यज्ञियासः)

जो व्यक्ति यज्ञ कार्यों के प्रति पूर्ण समर्पित है वह तीन 3 गुणा 7 अर्थात् 21 स्थापित रहस्यों को जानता है और प्राप्त करता है। जो आपकी (परमात्मा) की अवस्थाओं में ही है।

ऋग्वेद मन्त्र 1.72.7

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



विद्वाँ अग्ने वयुनानि क्षितीनां व्यानुषकछुरुधो जीवसे धाः ।
अन्तर्विद्वाँ अध्वनो देवयानानतन्द्रो दूतो अभवो हविर्वाट् ॥७॥

(विद्वान्) जानने वाला (सर्वज्ञ परमात्मा) (अग्ने) सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा (वयुनानि) ज्ञान और कार्य (क्षितीनाम्) लोगों के (वि – धाः से पूर्व लगाकर) (आनुषक) लगातार (शुरुधः) सुविधाएँ, अन्न, जड़ी-बूटियाँ आदि (जीवसे) जीवों के जीवन के लिए (धाः – वि धाः) उपलब्ध कराने के लिए धारण करता है (अन्तर्विद्वान्) अन्दर से जानने वाला (अध्वनः) मार्ग (देवयानान्) दिव्य लोगों की गतिशीलता के लिए (अतन्द्रः) बिना आलस्य या देरी के (दूतः) सन्देश वाहक, बुराईयों का नाशक (अभवः) है (हविर्वाट्) आहुतियों को लाने वाला और देने वाला ।

व्याख्या :-

कौन सबको आन्तरिक रूप से जानता है?

परमात्मा सबके लिए सामान्यतः क्या करता है और दिव्य लोगों के लिए विशेष रूप से क्या करता है? सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा (सर्वज्ञ होने के कारण), लोगों के ज्ञान और कार्यों को पूरी तरह से जानते हुए, आप लगातार सभी जीवों के जीवन के लिए समस्त सुखों और स्वास्थ्यवर्द्धक भोजन को धारण करते हो। प्रत्येक व्यक्ति को अन्दर से जानते हुए, आप दिव्य लोगों की गति के मार्ग उपलब्ध कराते हो। आप संदेशवाहक हो, बुराईयों के नाशक हो और सभी आहुतियों को बिना किसी आलस्य के अविलम्ब लाते और उपलब्ध कराते हो।

जीवन में सार्थकता :-

परमात्मा के क्या मूल आश्वासन हैं?

अपनी सर्वविद्यमानता के कारण, परमात्मा सर्वज्ञाता है। वह सबको अन्दर से जानता है, क्योंकि वह सब जीवों का स्थार्इ अन्तर्वासी है। अपनी सर्वशक्तिमान सत्ता के कारण वह सबको प्रत्येक कार्य का समान और प्रतिफल देने के लिए सक्षम है। कर्मफल सिद्धान्त के अतिरिक्त, वह सभी जीवों को भोजन, औषधियाँ और मूल सुविधाएं तो उपलब्ध करवाता ही है। वह आहुतियों के लिए भी सभी साधन उपलब्ध करवाता है, जो कि दूसरों के कल्याण के लिए होते हैं। इस प्रकार परमात्मा की तरफ से सबके लिए यह महत्त्वपूर्ण आश्वासन हैं कि उन्हें मूल सुविधाएं और यज्ञ करने की आहुतियाँ प्रदान होती हैं।

सूक्ति –

(विद्वान् अग्ने वयुनानि क्षितीनाम्)

सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा (सर्वज्ञ होने के कारण), लोगों के ज्ञान और कार्यों को पूरी तरह से जानता है।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



ऋग्वेद मन्त्र 1.72.8

स्वाध्यो दिव आ सप्त यह्वी रायो दुरो व्यृतज्ञा अजानन् ।
विदद्गव्यं सरमा दृढ़हमूर्व येना नु कं मानुषी भोजते विट् ॥४॥

(स्वाध्यः) स्वयं अर्थात् आत्मा पर उत्तम ध्यान (दिवः) दिव्य (आ – अजानन् से पूर्व लगाकर) (सप्त) सात (यह्वी) महान् (रायः) सम्पदा (दुरः) द्वार (वि – अजानन् से पूर्व लगाकर) (ऋतज्ञाः) सत्य का जानने वाला (अजानन् – वि आजानन्) विशेष रूप से और पूर्ण रूप से जानता है (विदत्) प्राप्त करता है (गव्यम्) इन्द्रियों, गायों, ज्ञान की किरणों से सम्बन्धित (सरमा) दिव्य बुद्धि (अनुभूति में सहायक) (दृढ़म्) दृढ़, स्थिर (उर्वम्) बुराईयों, धूर्तताओं और पापों का नाशक (येन) जिसके द्वारा (नु) अब, वर्तमान में (कम) सुविधाएँ (मानुषी) मानवों का (भोजते) प्रयोग, उपभोग (विट) संततियाँ ।

व्याख्या :-

दिव्य सम्पदा के द्वारों कौन जानता है?

दिव्य ज्ञान का प्रभाव कितनी दूर तक जाता है?

जो लोग स्वयं अर्थात् आत्मा पर उत्तम धारणा बना लेते हैं और जो सत्य को जान लेते हैं, वे महान् और दिव्य सम्पदा के सात द्वारों को विशेष रूप से और पूरी तरह जानते हैं। वे इन्द्रियों, ज्ञान की किरणों, गजओं और बुराईयों, धूर्तताओं तथा पापों के नाशक से जुड़ी दृढ़ और निश्चित दिव्य बुद्धि को प्राप्त करते हैं (जो अनुभूति में सहायक होती हैं)। वर्तमान में उस दिव्य बुद्धि के साथ ऐसे मनुष्यों की सन्तानें भी सुख प्राप्त करती हैं।

जीवन में सार्थकता :-

दिव्य सम्पदा के सात द्वार क्या हैं?

एक दृष्टिकोण के अनुसार मानव शरीर में ज्ञान के सात द्वार हैं – दो कान, दो आंखें, दो नासिका और एक मुख। एक अन्य दृष्टिकोण के अनुसार ज्ञान के प्रकाश के सात उर्ध्व लोक हैं। इन सात उर्ध्व लोकों की व्याख्या ऋग्वेद-1.72.6 में की गई है।

सूक्ति –

(स्वाध्यः दिवः सप्त यह्वी रायः दुरः ऋतज्ञाः)

जो लोग स्वयं अर्थात् आत्मा पर उत्तम धारणा बना लेते हैं और जो सत्य को जान लेते हैं, वे महान् और दिव्य सम्पदा के सात द्वारों को विशेष रूप से और पूरी तरह जानते हैं।

ऋग्वेद मन्त्र 1.72.9

आ ये विश्वा स्वपत्यानि तरथुः कृणवानासो अमृतत्वाय गातुम् ।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



महा महदिभः पृथिवी वि तस्थे माता पुत्रैरदितिर्धायसे वे । ॥१॥

(आ – तस्थुः से पूर्व लगाकर) (ये) जो (विश्वा) सब (स्वपत्यानि अर्थात् सु अपत यानि) विचारों में उत्तम, हमें नीचे न गिरने देने के लिए उत्तम (तस्थुः – आ तस्थुः) स्थापित (कृण्वानासः) बनाने के लिए (अमृतत्वाय) अमृत अवस्था के लिए अर्थात् मुक्ति के लिए (गातुम) मार्ग (महा) अपनी महानता और महिमा के साथ (महदिभः) महान् और दिव्य (साधकों) के साथ (पृथिवी) भूमि (वि तस्थे) विशेष रूप से स्वीकार, स्थापित (माता) माँ (पुत्रैः) पुत्रों के साथ (अदितिः) दृढ़ता से धारण करती है, अपृथक (धायसे) उन्हें धारण करने के लिए (वे:) आते हैं।

व्याख्या :-

दिव्य लोग अन्य लोगों किस प्रकार सहायता करते हैं?

ऐसे दिव्य लोगों को कौन मजबूती के साथ धारण करता है?

वे सभी (दिव्य सम्पदा के धारक) जो उत्तम कार्यों में स्थापित हैं और हमें पतित नहीं होने देते, वे उस अमृत अर्थात् मुक्ति की अवस्था की ओर जाने के लिए मार्ग उपलब्ध कराता है।

धरती माता विशेष रूप से ऐसे महान् और दिव्य (श्रद्धालु भक्तों) को स्वीकार करती है, स्थापित करती है और उनके साथ जुड़ती है जो अपनी महानता और महिमाओं के साथ जीते हैं। यह उसी प्रकार होता है जैसे जन्म देने वाली माँ अपने बच्चे को मजबूती के साथ पकड़ कर रखती है।

जीवन में सार्थकता :-

प्रकृति माता, अज्ञानता से उत्पन्न होने के बावजूद, ज्ञान के पिपासुजनों की सहायता क्यों करती है? एक दिव्य जीवन मूल प्रकृति माता से पूरा समर्थन और सहायता प्राप्त करता है। क्योंकि जब वह ज्ञान के प्रकाश की तरफ बढ़ता है और अन्य लोगों को भी उस मार्ग के लिए प्रेरित करता है तो प्रकृति माता के लिए उसका समर्थन स्वाभाविक होता है, क्योंकि सम्पूर्ण प्रकृति माता स्वयं भी अज्ञानता से ही उत्पन्न हुई है और अज्ञानता का मुख्य उद्देश्य भी हमें ज्ञान की तरफ अग्रसर करना ही होता है। परमात्मा ने इस सृष्टि को पूर्ण अज्ञानता के रूप में ही उत्पन्न किया है जिससे हमें ज्ञान की खोज के लिए प्रेरित कर सकें।

सूक्ति –

(ये विश्वा सु अपत यानि आतस्थुः कृण्वानासः अमृतत्वाय गातुम)

वे सभी (दिव्य सम्पदा के धारक) जो उत्तम कार्यों में स्थापित हैं और हमें पतित नहीं होने देते, वे उस अमृत अर्थात् मुक्ति की अवस्था की ओर जाने के लिए मार्ग उपलब्ध कराता है।

ऋग्वेद मन्त्र 1.72.10

अधि श्रियं नि दधुश्चारुमस्मिन्दिवो यदक्षी अमृता अकृण्वन् ।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

अधि क्षरन्ति सिन्धवो न सृष्टः प्र नीचीरजानन् ॥१०॥

(अधि – नि दधुः से पूर्व लगाकर) (श्रियम्) प्रसिद्धि की महिमा (ज्ञान और शक्ति की) (नि दधुः – अधि नि दधुः) अत्यधिक धारण करता है (चारु) उत्तम और सुन्दर (अस्मिन्) यहाँ, वर्तमान जीवन में (दिवः) दिव्य (ज्ञान) (यत्) जो (अक्षी) आँखें, आन्तरिक (अमृताः) न मरने वाली अवस्था अर्थात् भौतिक वस्तुओं के लिए न मरने वाला, मुकित की अवस्था (अकृण्वन्) करते हैं (अधि) इसके बाद (क्षरन्ति) गति, देना (सिन्धवः) नदियाँ (न) जैसे (सृष्टाः) निर्मित किया (प्र – अजानन् से पूर्व लगाकर) (नीचीः) लगातार, नीचे की ओर (अग्ने) सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा (अरुषीः) उदय होते हुए सूर्य की किरणें (अजानन् – प्र अजानन्) पूरी तरह जानता है।

व्याख्या :-

दिव्यता का धारक क्या धारण करता है?

नदियों और किरणों का रुझान क्या होता है?

इन्द्रियों का नियंत्रक, दिव्य सम्पदा का धारक, यहीं इसी जीवन में, अधिकतम श्रियम् अर्थात् ज्ञान और शक्तियों की महिमा और प्रसिद्धि को धारण करता है जो अति उत्तम और अति सुन्दर होती है, जो अपने दिव्य ज्ञान के साथ अपनी आन्तरिक दृष्टि को मुकित अर्थात् अमृत अवस्था अर्थात् भौतिकता के लिए न मरने की अनुभूति प्राप्त करने के योग्य बना लेता है।

उसके बाद वह जो कुछ भी धारण करता है उसके साथ प्रगति करता है और अपना सब कुछ दूसरों को देता है जैसे नदियाँ नीचे की तरफ लगातार चलते हुए अपना जल दूसरों को देती हैं और जैसे सूर्य की किरणें लगातार नीचे आते हुए सबको प्रकाश देती हैं। ऐसा व्यक्ति इस दिव्य प्रबन्ध को पूरी तरह जानता है।

जीवन में सार्थकता :-

एक दिव्य मन दूसरों को क्या देता है?

जब एक व्यक्ति स्वर्ग स्थानों से अर्थात् सर्वोच्च ऊर्जा परमात्मा के उच्च स्तरों से दिव्य सम्पदा को प्राप्त करना प्रारम्भ कर देता है तो स्वाभाविक मार्ग की तरह, जैसे नदियाँ और किरणें, अपने ज्ञान और शक्तियों को उन सबके कल्याण के लिए प्रदान करता है जो उसके निकट आते हैं। वह शब्दों के उच्चारण से, दिव्य दृष्टि से और यहाँ तक कि अपनी दिव्य उपस्थिति से या स्पर्श से अपने ज्ञान का प्रसार करता है और आशीर्वाद देता है।

सूक्ति –

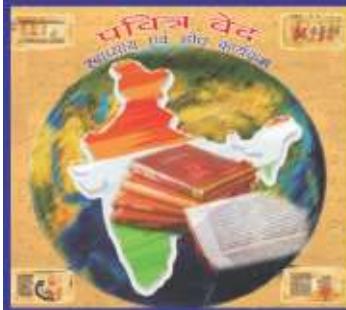
(श्रियम् अधि नि दधुः चारु अस्मिन् दिवः यत् अक्षी अमृताः अकृण्वन्)

इन्द्रियों का नियंत्रक, दिव्य सम्पदा का धारक, यहीं इसी जीवन में, अधिकतम श्रियम् अर्थात् ज्ञान और शक्तियों की महिमा और प्रसिद्धि को धारण करता है। जो अति उत्तम और अति सुन्दर होती है, जो

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

अपने दिव्य ज्ञान के साथ अपनी आन्तरिक दृष्टि को मुक्ति अर्थात् अमृत अवस्था अर्थात् भौतिकता के लिए न मरने की अनुभूति प्राप्त करने के योग्य बना लेता है।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

ऋग्वेद मण्डल-1 सूक्त 73

पितृवित्त पर सूक्त अर्थात् पितरों की सम्पदा

ऋग्वेद मन्त्र 1.73.1

रथिनं यः पितृवित्तो वयोधाः सुप्रणीतिश्चकितुषो न शासुः।
स्योनशीरतिथिनं प्रीणानो होतेव सद्म विधतो वि तारीत् ॥१॥

(रथिनः) सम्पदा (न) जैसे कि (यः) जो (पितृवित्तः) पिता, प्रपिताओं तथा परमात्मा आदि पितरों से प्राप्त (वयोधाः) उत्तम जीवन को धारण करने वाला और देने वाला (सुप्रणीतिः) उत्तम (विचारों और नीतियों की) प्रेरणा करने वाला (चिकितुषः) एक महान् विद्वान् का (न) जैसे कि (शासुः) शासन करने वाला, उपदेश (स्योनशीरतिथिनः) हमें (बुद्धि और ज्ञान की) सुविधाओं में जीने और सोने योग्य बनाने वाला (अतिथिः) आकस्मिक आगन्तुक (न प्रीणानः) प्रेम करने जैसा, सेवा के योग्य (होता) लाने वाला और उपलब्ध कराने वाला (इव) जैसे कि (सद्म) इस घर को, शरीर को (विधतः) अलंकृत, योजनाबद्ध, श्रद्धालु (वि तारीत) विस्तृत करता है (प्रयोग और सेवा के लिए)।

व्याख्या :-

परमात्मा हमारे जीवन को सुसज्जित कैसे करेंगे?

इस सूक्त के सभी मंत्र ऊर्जा के महान् और दिव्य लक्षणों को सूचीबद्ध करते हुए 'अग्नि', परमात्मा, के ऊर्जा रूप का आह्वान करते हैं :—

1. वह जो हमारे लिए उत्तम जीवन का दाता और धारणकर्ता है, हमारे पिता, प्रपितामहों और परमात्मा अर्थात् पितृ लोक द्वारा दी गई अपार सम्पदा के समान है।
2. वह हमें महान् विद्वानों के निर्णय और व्याख्याओं के समान उत्तम (विचारों और नीतियों) से प्रेरित करता है।
3. वह हमें सुखों (बुद्धि और ज्ञान) में जीने और सोने योग्य बनाता है।
4. वह एक आकस्मिक आगन्तुक की तरह प्रेम और सेवा करने योग्य है।
5. वह हर उस वस्तु का लाने वाला और देने वाला है जो घर को तथा श्रद्धालु भक्तों के शरीर को स्वरूप देती है और योजनाबद्ध तरीके से संचालित करती है और इनके प्रयोग और सेवा को विस्तारित करता है।

जीवन में सार्थकता :-

हमारे जीवन में पित्र संसार की क्या भूमिका है?

हमें अपने जीवन में परमात्मा का किस तरह स्वागत और स्वीकार करना चाहिए?

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

हमें इस सुन्दर जीवन के लिए परमात्मा का धन्यवाद करना चाहिए जिसे उन्होंने हमारे माता—पिता, प्रपितामहों और पितरों के माध्यम से प्रदान किया है। इसी प्रकार हमें परमात्मा की पूजा और उसके साथ संगतिरूपी पारम्परिक सम्पदा भी अपने पितरों से ही प्राप्त हुई है। वास्तव में यह हमारे माता—पिता का न मरने वाला भूतकालिक संसार है जो पित्रलोक नाम से जाना जाता है। जिसमें हमारे वर्तमान माता—पिता भी शामिल हैं, जिन्होंने हमें यह जीवन प्रदान किया है, जिसका हम प्रयोग करते हैं और यज्ञ कार्यों को सम्पन्न करते हैं। अपने पित्र संसार के आशीर्वाद से ही हम सुखों में जी रहे हैं। परमात्मा इस पित्र संसार में सर्वप्रथम और अग्रणी है। हमें सदैव प्रेम, पवित्रता और यज्ञ कार्यों से उसका स्वागत करने लिए सदैव तैयार और तत्पर रहना चाहिए।

सूक्ति :- (रयि: न यः पितृवित्तः वयोधा:) वह जो हमारे लिए उत्तम जीवन का दाता और धारणकर्ता है, हमारे पिता, प्रपितामहों और परमात्मा अर्थात् पित्रलोक द्वारा दी गई अपार सम्पदा के समान है।

ऋग्वेद मन्त्र 1.73.2

देवो न यः सविता सत्यमन्मा क्रत्वा निपाति वृजनानि विश्वा ।
पुरुप्रशस्तो अमर्तिर्न सत्य आत्मेव शेवो दिधिषाय्यो भूत् ॥१२॥

(देवः) दिव्य, ज्ञान से प्रकाशित (न) जैसे कि (यः) जो (सविता) सूर्य, निर्माता (सत्य मन्मा) सत्य को देखने वाला और अन्य लोगों को सत्य से अवगत कराने वाला (क्रत्वा) अपने कार्यों से (और ज्ञान से) (निपाति) सुरक्षित करता है (वृजनानि) बल और शक्तियाँ (विश्वा) समस्त (पुरुप्रशस्तः) अत्यधिक प्रशंसित (अमर्तिः) सुन्दर (न) जैसे कि (सत्यः) न मरने वाला, अपरिवर्तनशील (आत्मा) स्वयं, सर्वोच्च आत्मा (इव) जैसे (शेवः) सुखों का दाता (दिधिषाय्यः) ध्यान के योग्य (भूत्) है।

व्याख्या :-

'अग्नि' के क्या लक्षण हैं?

'अग्नि' दिव्य है, सूर्य की भाँति प्रकाशित है, सत्य को देखने के योग्य है और दूसरों को भी सत्य से अवगत कराती है।

'अग्नि' अपने कार्यों (और ज्ञान) से सभी शक्तियों और बलों को संरक्षित करती है। यह सबके द्वारा अत्यधिक प्रशंसा प्राप्त करती है। उसकी सुन्दरता सत्य के समान, अमृत तथा अपरिवर्तनशील है। वह आत्मा के समान सभी सुखों को देने वाली है। वह ध्यान लगाने के योग्य है और सबके द्वारा धारण करने योग्य है।

जीवन में सार्थकता :-

परमात्मा का ऊर्जा रूप क्या है?

अपने जीवन में ऊर्जा का संवर्द्धन किस प्रकार करें?

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

'अग्नि' परमात्मा का ऊर्जा रूप है। अपने इसी ऊर्जा रूप के माध्यम से परमात्मा प्रत्येक कण और जीवों के बीच व्याप्त हैं। इस ऊर्जा रूप के माध्यम से ही, परमात्मा समस्त जगत की गतिविधियों के सत्य को जानते हैं। इस ऊर्जा के धारक होने के नाते, हम भी उस सर्वोच्च सत्य अर्थात् परमात्मा को जानने के योग्य बन सकते हैं। अतः एक सामान्य जीवन से लेकर आध्यात्मिक ऊँचाई को प्राप्त करने के स्तर तक, हमें अपनी इस ऊर्जा शक्ति पर ध्यान लगाने की आवश्यकता है; हमें प्राणायाम प्रक्रियाओं के माध्यम से इसका संवर्द्धन करने की आवश्यकता है और नकारात्मक हानिकारक गतिविधियों में इसे व्यर्थ करने से बचना चाहिए। जिस प्रकार 'अग्नि' सत्य को धारण करती है, सत्य का पालन करने वाला भी इस ऊर्जा को धारण और संवर्द्धन करता है। इसका अभिप्राय यह है कि एक सत्यनिष्ठ जीवन भी ऊर्जा का स्रोत है।

सूक्त :- 1. (देवः न यः सविता सत्य मन्मा) 'अग्निं' दिव्य है, सूर्य की भाँति प्रकाशित है, सत्य को देखने के योग्य है और दूसरों को भी सत्य से अवगत कराती है।
2. (दिधिषाय्यः भूतः) वह ध्यान लगाने के योग्य है और सबके द्वारा धारण करने योग्य है।

ऋग्वेद मन्त्र 1.73.3

देवो न यः पृथिवीं विश्वधाया उपक्षेति हितमित्रो न राजा ।
पुरःसदः शर्मसदो न वीरा अनवद्या पतिजुष्टेव नारी ॥३॥

(देवः) दिव्य, ज्ञान से प्रकाशित (न) जैसे कि (यः) जो (पृथिवीम्) भूमि (विश्वधायाः) सबको धारण करने वाला और पालन—पोषण करने वाला (सृष्टि में) (उपक्षेति) सक्रिय रूप से जीने वाला और ज्ञानी (हितमित्रः) गम्भीर मित्र (न) जैसे (राजा) राजा (पुरः सदः) सबके साथ जीने वाला (शर्म सदः) सुखों में जीने वाला (न) जैसे कि (वीरा:) बहादुर (अनवद्या) आनन्दित महसूस करता है (पतिजुष्टा) पति की सेवा में समर्पित तथा पति से सम्मानित (इव नारी) पत्नी के समान।

व्याख्या :-

'अग्नि' की तुलना एक राजा और एक बहादुर व्यक्ति से किस प्रकार की जाती है? 'अग्नि' जो धरती की तरह इस सारी सृष्टि में सबको दिव्य रूप से धारण करती है और सबका पालन—पोषण करती है और एक गम्भीर मित्रवत राजा की तरह सबको जानते हुए सक्रिय जीवन है। वह सबके साथ जीती है और एक बहादुर व्यक्ति की तरह सुखों में जीती है। जिस प्रकार एक पत्नी अपने पति की सेवा में समर्पित होती है और साथ ही साथ पति से सम्मानित भी होती है, वह व्यक्ति जो इसकी संगति का आह्वान करता है और इसे प्राप्त कर लेता है, वह पत्नी की तरह ही आनन्दित होता है।

जीवन में सार्थकता :-

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

परमात्मा के प्रति हमारा प्रेम भरा समर्पण किस प्रकार हमें हर प्रकार से धारण करता है और हमारा पालन-पोषण करता है?

यदि हम, एक समर्पित पत्नी की तरह, प्रेम और श्रद्धा के साथ, परमात्मा से जुड़कर रहते हैं तो यह जुड़ाव निश्चित रूप से हमें आनन्द की अनुभूति करायेगा। प्रेम भरे और श्रद्धावान् संगतिकरण के साथ हमारे जीवन में कोई भी बुराई प्रवेश नहीं करेगी, हमारे अन्दर दिव्य ऊर्जा को बढ़ाने के लिए सभी श्रेष्ठ विचार प्रवेश करेंगे। जिस प्रकार एक पत्नी अपने पति की पूर्ण सम्पदा के साथ-साथ उससे सम्मान प्राप्ति का आनन्द लेती है, उसी प्रकार एक प्रेम से समर्पित श्रद्धालु भी परमात्मा की सभी दिव्यताओं और प्रेम का आनन्द लेता है।

सूक्ति :- (पुरः सदः शर्म सदः न वीरा:) 'अग्नि' सबके साथ जीती है और एक बहादुर व्यक्ति की तरह सुखों में जीती है।

(अनवद्या पतिष्ठुष्टा इव नारी) जिस प्रकार एक पत्नी अपने पति की सेवा में समर्पित होती है और साथ ही साथ पति से सम्मानित भी होती है, वह व्यक्ति जो 'अग्नि' की संगति का आह्वान करता है और इसे प्राप्त कर लेता है, वह पत्नी की तरह ही आनन्दित होता है।

ऋग्वेद मन्त्र 1.73.4

तं त्वा नरो दम आ नित्यमिद्धमग्ने सचन्त क्षितिषु ध्रुवासु ।
अधि द्युम्नं नि दधुर्भूर्यस्मिन्भवा विश्वायुर्धरुणो रयीणाम् ॥४॥

(तम्) उस (त्वा) आपको (नरः) प्रगतिशील व्यक्ति (दमे) शांतिपूर्ण स्थान में (आ – सचन्त से पूर्व लगाकर) (नित्यम्) प्रतिदिन, नियमित रूप से (इद्धम्) प्रकाशित, ज्ञानी (अग्ने) सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा (सचन्त – आ सचन्त) सदैव सेवा करता है, पूजा करता है (क्षितिषु) घरों में, शरीरों में (ध्रुवासु) दृढ़निश्चित (अधि – नि दधु से पूर्व लगाकर) (द्युम्नम्) ज्ञान का प्रकाश, परमात्मा का प्रकाश (नि दधु – अधि नि दधु) अधिकतम धारण करता है, स्थापित करता है (भूरि) अधिकतम (अस्मिन्) इसमें (शरीर, आवास) (भवा) हो (विश्वायुः) सभी जीवों का जीवन (धरुणः) धारण करता है (रयीणाम्) सम्पदा।

व्याख्या :-

ज्ञान के प्रकाश को कौन धारण और स्थापित करता है?

एक प्रगतिशील व्यक्ति सदैव, प्रतिदिन, नियमित रूप से आपका अर्थात् सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा का पूजन करता है जो प्रकाशित है और ज्ञानवान् है, अपने दृढ़ संकलिपत शरीरों और आवासों के साथ। वह अपने शरीर में (आवास में) अत्यधिक ज्ञान का प्रकाश धारण करता है और स्थापित करता है। सभी जीवों का जीवन, परमात्मा, ऊर्जा रूपी सम्पदा को धारण करता है।

जीवन में सार्थकता :-

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

परमात्मा हमारे लिए किस प्रकार सारी सम्पदा को धारण करते हैं?

यदि हम परमात्मा को अपनी अनुभूति के स्तर पर महसूस करते हैं और विश्वास करते हैं तो वह, सभी जीवों का जीवन होने के नाते, हमारे लिए समस्त सम्पदा धारण करता है। उसकी सर्वोच्च ऊर्जा ही उसकी सर्वोच्च सम्पदा है जो उन लोगों में स्थानान्तरित होती है जो उसके साथ गहरे और नियमित सम्पर्क में रहते हैं, क्योंकि परमात्मा सभी जीवों का जीवन है और सारी सम्पदाओं, वस्तुओं और यहाँ तक कि बुद्धि का भी स्वामी है, वह केवल हमारे लिए ही उस सम्पदा को धारण करता है, जिसके लिए एक ही शर्त है कि हम एक विनम्र प्राप्तकर्ता बनने के लिए अपनी चेतना के स्तर पर उसके साथ एक नियमित संगति बनाकर रखें।

सूक्ति :- (विश्वायुः धरुणः रयीणाम्) सभी जीवों का जीवन, परमात्मा, ऊर्जा रूपी सम्पदा को धारण करता है।

ऋग्वेद मन्त्र 1.73.5

वि पृक्षो अग्ने मधवानो अश्युर्वि सूरयो ददतो विश्वमायुः।
सनेम वाजं समिथेष्यर्यो भागं देवेषु श्रवसे दधानाः। ॥५॥

(वि – अश्युः से पूर्व लगाकर) (पृक्षः) उत्तम भोजन, संतोष (अग्ने) सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा (मधवानः) यज्ञ कार्यों के लिए सम्पदा, सुख आदि (अश्युः – वि अश्युः) प्रयोग के लिए विशेष रूप से प्राप्त करता है (वि – सनेम से पूर्व लगाकर) (सूरयः) विद्वान् लोग (ददतः) देने वाला (विश्वमायुः) सम्पूर्ण आयु (सनेम – वि सनेम) विशेष रूप से प्राप्त करता है, प्रयोग करता है (वाजम्) सम्पदा, समृद्धि (समिथेषु) युद्धों के लिए, कठिन समय के लिए (र्यः) स्वामी, अर्थव्यवस्था में लगे हुए लोग (भागम्) वस्तुओं और ज्ञान का भाग (देवेषु) दिव्य लोगों और कार्यों के लिए (श्रवसे) सुनने योग्य (ज्ञान, प्रसिद्धि) (दधानाः) धारण करता है, देता है।

व्याख्या :-

सम्पदा और ज्ञान के क्या प्रयोग होते हैं?

सम्पदा हमारी आन्तरिक अनुभूति कैसे सुनिश्चित कर सकती है?

सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा, हम अपने प्रयोग और संतुष्टि के लिए उत्तम भोजन प्राप्त कर पायें तथा सुख–सम्पदाओं को यज्ञ कार्यों के लिए प्राप्त कर पायें; बुद्धिमान और दाता लोग यह सब सम्पूर्ण आयु तक प्राप्त करते रहें; अर्थव्यवस्था में लगे हुए स्वामी और अन्य लोग युद्धों के लिए और कठिन समय के लिए विशेष रूप से सम्पदा और सम्पन्नता को प्राप्त करें; पदार्थों और ज्ञान में हमारा हिस्सा दिव्य (लोगों और कार्यों) के लिए हो जो सुनने योग्य और आन्तरिक अनुभूति के योग्य ज्ञान और प्रसिद्धि को धारण करे और प्रदान करे।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

जीवन में सार्थकता :-

सम्पदा धारण करने के दो स्तर क्या हैं?

समष्टिगत आर्थिक विकास का वैदिक मार्ग क्या है?

हमारी सम्पदाओं के दो स्तर हैं :-

प्रथम, हम अपने अस्तित्व के लिए अर्थात् अपनी मूल आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए भोजन और सम्पदा की प्रार्थना करते हैं। यह व्यक्तिगत पारिवारिक स्तर पर सूक्ष्म अर्थव्यवस्था कहलाती है।

द्वितीय, अपनी मूल आवश्यकताओं के बाद, यदि हमें और अधिक साधन और सामग्री प्राप्त हो तो उसे सम्पदा कहा जाता है। इस अत्यधिक आवश्यकता से अधिक सम्पदा का प्रयोग सहज रूप में यज्ञ कार्यों अर्थात् सबके कल्याण के लिए ही होना चाहिए। यज्ञ कार्यों में प्रयोग की गई ऐसी सम्पदा ही समष्टिगत अर्थव्यवस्था की प्रगति सुनिश्चित कर सकती है। यदि सम्पदा का प्रयोग यज्ञ कार्यों में न किया जाये तो उसे अवरोधित सम्पदा कहा जायेगा जो प्रगति के मार्ग को भी अवरोधित कर देती है। इस सिद्धान्त के साथ, सभी ज्ञान और सम्पदाओं का प्रयोग दिव्य उद्देश्यों के लिए होना चाहिए। जो हमें ज्ञान और अन्य लोगों की प्रेरणा के लिए सुनने योग्य प्रसिद्धि प्रदान करेगा, निःसंदेह इसके साथ सम्पदा भी बढ़ेगी। ऐसे दिव्य कार्य, एक ही समय पर, आन्तरिक अनुभूति अर्थात् आध्यात्मिक प्रगति भी प्रदान करते हैं जो लोगों के सम्पूर्ण विकास को सुनिश्चित करती है।

ऋग्वेद मन्त्र 1.73.6

ऋतस्य हि धेनवो वावशाना: स्मदूध्नीः पीपयन्त द्युभक्ताः।

परावतः सुमतिं भिक्षमाणा वि सिन्धवः समया सस्तुरद्रिम् ॥६॥

(ऋतस्य) ऋत का, सत्य का, अग्नि की प्रकृति का (हि) निश्चित रूप से (धेनवः) गऊएं, दिव्य ज्ञान की तरंगें, सूर्य की किरणें (वावशाना:) हमारे कल्याण की इच्छा करने वाला (स्मदूध्नी:) थनों में दूध से भरपूर, दिव्य ज्ञान से भरपूर, शक्ति और बल से भरपूर (पीपयन्त) हमें पीने योग्य, धारण करने योग्य, भोग के योग्य बनाता है (द्यु भक्ताः) सूर्य की किरणों, उच्च ज्ञान का भोग करने वाला, अन्तरिक्ष की शक्ति (परावतः) दूर से ही (सुमतिम्) उचित बुद्धि (भिक्षमाणा:) प्रार्थना करने वाला (वि) विशेष रूप से (सिन्धवः) नदियाँ, तरंगें (समया) समीप (सस्तुः) प्राप्त करना (अद्रिम्) बादल।

व्याख्या :-

दिव्य ज्ञान की तरंगें हमारे पास कैसे आती हैं?

गऊएँ हमारा कल्याण कैसे करती हैं?

सूर्य की किरणें हमारा कल्याण कैसे करती हैं?

सत्य के दिव्य ज्ञान की तरंगें निश्चित रूप से हमारा कल्याण चाहती हैं और ज्ञान के अत्यधिक प्रवाह के साथ, उच्च ज्ञान का भोग करवाते हुए, हमें ज्ञान को धारण करने के योग्य बनाती हैं, हमारे लिए

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

उचित बुद्धि की प्रार्थना करती हैं जैसे नदी की तरंगे दूर से हमारे पास आती हुई, हमारे निकट (हमारे मन में) बादलों की तरह इस ज्ञान को स्थापित कर देती हैं।

यह व्याख्या गजओं पर भी लागू होती है, जो दूसर अन्तरिक्ष से आती हुई सूर्य की किरणों को ग्रहण करके, हमारा कल्याण चाहती हुई, अपने थनों में दुग्ध का अत्यधिक प्रवाह उत्पन्न करती हैं, हमें पीने के लिए दुग्ध प्रदान करती हैं, विशेष रूप से हमारे लिए उचित बुद्धि की प्रार्थना करते हुए, हमारे शरीर और मन में पोषण को स्थापित करती हैं।

यह व्याख्या सूर्य की किरणों पर भी लागू होती है, जिनसे अन्तरिक्ष का शक्ति और बल प्राप्त होता है, दूर से आती हुई, हमारा कल्याण चाहती हैं, ऊर्जा और प्रकाश की शक्तियों के साथ भरपूर, हमें उन किरणों का भोग प्रदान करती हैं, सीधा और भोजन के माध्यम से, विशेष रूप से हमारे लिए उचित ज्ञान और शारीरिक बल स्थापित करते हुए बादलों के रूप में उन्हें नीचे बरसाने के लिए तोड़ देती हैं।

जीवन में सार्थकता : —

दिव्य ज्ञान, गजओं और सूर्य की किरणों में क्या समानता है?

दिव्य ज्ञान, गजओं और सूर्य की किरणों में दिव्य ऊर्जा समान है। अतः हमें वेद के दिव्य ज्ञान, गजओं और सूर्य की समान रूप से पूजा और सम्मान करना चाहिए क्योंकि वे बहुत दूर से हमारे कल्याण के लिए हमारे निकट आती हैं।

सूक्ति :- (परावतः सुमतिम् भिक्षमाणाः) हमारे लिए उचित बुद्धि की प्रार्थना करते हुए बहुत दूर से आती हैं।

ऋग्वेद मन्त्र 1.73.7

त्वे अग्ने सुमतिं भिक्षमाणा दिवि श्रवो दधिरे यज्ञियासः ।
नक्ता च चक्रुरुषसा विरुपे कृष्णं च वर्णमरुणं च सं धुः ॥७॥

(त्वे) आप (अग्ने) सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा (सुमतिम्) समुचित बुद्धि (भिक्ष माणाः) प्रार्थना करने वाला (दिवि) दिव्य ज्ञान का प्रकाश (श्रवः) सुनने योग्य ज्ञान (दधिरे) धारणकर्ता (यज्ञियासः) पूजा के लिए, यज्ञ के लिए (नक्ता) रात्रि (च) और (चक्रः) करता है (उषसा) सूर्योदय से पूर्व का समय, दिन (विरुपे) भिन्न-भिन्न रूप (कृष्णम्) श्याम (च) और (वर्णम्) रंग (अरुणम्) लाल (च) और (सम् धुः) इकट्ठे मिलकर।

व्याख्या :-

उचित बुद्धि के लिए हमें ऊर्जा से क्या प्रार्थना करनी चाहिए?

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा, आपसे उचित बुद्धि की प्रार्थना करते हुए, हम स्वयं को दिव्य प्रकाश प्राप्त करवाने के लिए और आपकी पूजा के लिए तथा यज्ञ कार्यों के लिए हम सुनने योग्य बुद्धि को धारण करते हैं। हम भिन्न-भिन्न रूपों और उद्देश्यों के लिए दिन और रात श्याम रंग और लाल रंग से जुड़ते हैं।

जीवन में सार्थकता :-

जीवन के द्वन्द्वों में समरूपता बनाये रखने के लिए ऊर्जा हमारी किस प्रकार सहायता करती है? हमारे जीवन में ऊर्जा का उद्देश्य और समुचित उपयोग स्वयं को प्रकाशित करने के लिए दिव्य ज्ञान प्राप्त करने में है और भिन्न-भिन्न तथा विपरीत परिस्थितियों और साधनों से मिलकर भिन्न-भिन्न कार्यों को करने में है। इस प्रकार ऊर्जा का उद्देश्य वैज्ञानिक प्रगति के साथ-साथ आध्यात्मिक उन्नति भी है। यह मन्त्र जीवन के सभी द्वन्द्वों में कार्य करते हुए मन की समरूपता बनाये रखने का भी संकेत करता है।

सूक्ति :- (त्वे अग्ने सुमतिम् भिक्ष माणः) सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा, हम आपसे उचित बुद्धि की प्रार्थना करते हैं।

ऋग्वेद मन्त्र 1.73.8

यान्नाये मर्तान्त्सुषूदो अग्ने ते स्याम मधवानो वयं च।
छायेव विश्वं भुवनं सिसक्ष्यापत्रिवात्रोदसी अन्तरिक्षम् ॥८॥

(यान) जिसको (राये) सम्पदा के लिए (मर्तान) मानव (मृत्यु के योग्य) (सुसूदः) उत्तम रूप से प्रेरित और निर्देषित करता है (अग्ने) सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा (ते) वे (स्याम) होवें (मधवानः) गौरवशाली प्रशंसनीय सम्पदा को धारण करने वाला (वयम्) हम (च) और (छाया इव) छाया के समान (विश्वम्) सब (भुवनम्) लोक, शरीर (जीव या निर्जीव) (सिसक्षि) संयुक्त करता है (आ पत्रिवान्) व्याप्त, पूर्ण, शरण (रोदसी) स्वर्ग और भूमि (अन्तरिक्षम्) अन्तरिक्ष।

व्याख्या :-

गौरवशाली सम्पदा के लिए कौन हमें प्रेरित करता है और मार्ग दर्शन देता है?

यह ब्रह्माण्ड किसकी छाया है?

सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा, वे मानव लोग (मरने के योग्य) जिन्हें आप सम्पदा के लिए प्रेरित करते हो और उत्तम मार्गदर्शन देते हो, वे तथा हम उस प्रशंसनीय गौरवशाली सम्पदा को प्राप्त करने के योग्य बनें।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

सभी ऊर्जाओं का स्वामी सभी लोकों, शरीरों (जीव और निर्जीव) के साथ इस प्रकार जुड़ा है जिस प्रकार शरीर के साथ उसकी छाया जुड़ी होती है। वह सभी स्थानों, स्वर्ग तथा पृथ्वी और यहाँ तक कि अन्तरिक्ष में भी व्याप्त है, उन्हें पूर्ण करता है और अपनी शरण देता है।

जीवन में सार्थकता :-

परमात्मा का छाया सम्बन्ध इस सृष्टि को किस प्रकार दिव्य बना देता है?

परमात्मा इस सृष्टि के लिए इस प्रकार है जैसे शरीर अपनी छाया के लिए, सदैव सम्बद्ध। इसका अभिप्राय है कि इस सृष्टि में जो कुछ भी है, सब कुछ परमात्मा से जुड़ा है। यह सम्बद्धता इस अर्थ में दिव्य है कि वह (परमात्मा) सर्वव्यापक है, सर्वज्ञाता है और सर्वशक्तिमान है।

अतः हमारे पास जो कुछ भी है, उसका उपयोग सबके कल्याण के लिए दिव्य रूप से यज्ञ कार्यों के लिए ही करना चाहिए। हमें स्वयं को केवल एक धारक तथा ईमानदार प्रबन्धक की तरह समझना चाहिए। क्योंकि परमात्मा सर्वव्यापक और सर्वज्ञाता होने के कारण, प्रत्येक कार्य और प्रत्येक गतिविधि को जानता है और सर्वशक्तिमान होने के कारण वह प्रत्येक कार्य का फल देता है।

सूक्त :- (छाया इव विश्वम् भुवनम्) सभी लोक और शरीर परमात्मा की छाया के समान हैं।

ऋग्वेद मन्त्र 1.73.9

अर्वद्विरग्ने अर्वतो नृभिनृत् वीरैर्वीरान्वनुयामा त्वोताः।

ईशानासः पितृवित्तस्य रायो वि सूरयः शतहिमा नो अश्युः ॥१९॥

(अर्वद्विरग्ने) अश्वों से (अग्ने) सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा (अर्वतः) अश्व (नृभिः) मनुष्यों से (नृन्) मनुष्य (वीरैः) बहादुर (युवाओं) से (वीरान्) बहादुर (युवा) (वनुयाम्) प्राप्त करने के लिए इच्छा और प्रार्थना करना (त्वः) आपसे (ऊताः) संरक्षित (ईशानासः) हम स्वामी बनें (पितृवित्तस्य) पितरों की सम्पदा (रायः) दिव्य सम्पदा अर्थात् दिव्य ज्ञान (वि – अश्यु से पूर्व लगाकर) (सूरयः) महान् विद्वानों का (शतहिमाः) सैकड़ों हेमन्त तक, ऋतुओं तक (नः) हमें (अश्युः – वि अश्युः) लगातार प्राप्त हो।

व्याख्या :-

हमें किस प्रकार की सम्पदा की प्रार्थना करनी चाहिए?

अग्ने, सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा, हम अश्वों से अश्व, मनुष्यों से मनुष्य और बहादुर युवाओं से बहादुर, प्राप्त करने की इच्छा और प्रार्थना करते हैं, जो विधिवत आपसे संरक्षित हों। हम अपने पितरों अर्थात् माता-पिता, प्रपितामहों और परमात्मा की सम्पदा और महान् विद्वानों के दिव्य ज्ञान के स्वामी बनें। हम यह सब सैकड़ों हेमन्त ऋतुओं तक लगातार प्राप्त करते रहें।

जीवन में सार्थकता :-

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

एक राष्ट्र या एक संस्था की दीर्घकालिक और टिकाऊ विकास को किस प्रकार सुनिश्चित करें? मानवीय और पशु संसाधनों के अतिरिक्त एक देश को अपार भौतिक सम्पदा के साथ सुदृढ़ और दिव्य ज्ञान व्यवस्था की भी आवश्यकता होती है। सबसे अधिक इस बात की आवश्यकता होती है कि देश का हर संसाधन परमात्मा से संरक्षित रहे, जो तभी सम्भव है जब देश के प्रत्येक व्यक्ति और वस्तु का उपयोग सबके कल्याण के लिए हो और उपभोक्तावाद पर आधारित विलासिता के लिए नहीं। केवल यही सिद्धान्त सभी दृष्टिकोणों से देश का दीर्घकालिक और टिकाऊ विकास सुनिश्चित कर सकता है अर्थात् दिव्य संरक्षण की गारंटी के साथ मानवीय विकास, शैक्षणिक विकास, आर्थिक विकास और तकनीकी विकास, जो केवल आध्यात्मिक रूप से जिज्ञासु नागरिकों के साथ ही सम्भव है। देश के प्रत्येक नागरिक को परमात्मा के दिव्य प्रबन्धन अर्थात् धर्म के सिद्धान्तों के अनुसार जीने और व्यवहार करने के लिए शिक्षित और प्रेरित किया जाना चाहिए।

सूक्त :- (ईशानासः पितृवित्तस्य रायः) हम अपने पितरों अर्थात् माता-पिता, प्रपितामहों और परमात्मा की सम्पदा और महान् विद्वानों के दिव्य ज्ञान के स्वामी बनें।

ऋग्वेद मन्त्र 1.73.10

एता ते अग्न उच्थानि वेधो जुष्टानि सन्तु मनसे हृदे च ।
शकेम रायः सुधुरो यमं तेऽधि श्रवो देवभक्तं दधानाः ॥१०॥

(एता) ये (ते) आपके (अग्ने) सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा (उच्थानि) विवेकशीलता के बोले गये शब्द अर्थात् वेद, वैदिक वाणियाँ (वेधः) सबके अन्दर जीने वाला, बुद्धि का निर्माता और दाता (जुष्टानि) प्रिय, आकर्षक (सन्तु) हो (मनसे) मन के लिए (हृदे) हृदय के लिए (च) और (शकेम) योग्य बनें (रायः) सम्पदा (सुधुरः) उत्तम को धारण करने वाला (यमम्) अनुशासित (प्रबन्ध) के लिए (ते) आपके (अधि) अधिकतम, भरपूर (श्रवः) सुनने योग्य ज्ञान (देवभक्तम्) दिव्य शक्तियों और लोगों से (दधानाः) धारण करते हुए।

व्याख्या :-

हम विवेकशीलता के दिव्य शब्दों अर्थात् वेद को कैसे प्राप्त कर सकते हैं?
हम सम्पदा का दिव्य प्रबन्धन कैसे सुनिश्चित कर सकते हैं?
सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा, आप हर किसी के अन्दर जीवन्त हो और आप सबकी बुद्धि के निर्माता और दाता हो। आपके द्वारा बोले गये विवेकशीलता के शब्द अर्थात् वेद, वैदिक वाणियाँ हमारे मन और हृदय को प्रिय और उन्हें आकर्षित करने वाली हों, क्योंकि हम, आपके अपने, उस उत्तम सम्पदा (भौतिक व आध्यात्मिक दोनों) तथा सुनने योग्य ज्ञान को धारण करने के योग्य बनें जो दिव्य शक्तियों और लोगों से अपार मात्रा में हम तक पहुँचा है। हम उस सम्पदा को अनुशासित प्रबन्धन के लिए धारण करते हैं।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

जीवन में सार्थकता :-

परमात्मा हमारे द्वारा बोले गये शब्दों को किस प्रकार सुनते हैं?

दिव्य प्रबन्धन क्या है?

जिस प्रकार हम परमात्मा या दिव्य शक्तियों और लोगों से विवेकशीलता के दिव्य शब्दों को प्राप्त करते हैं, उसी प्रकार हमारे द्वारा बोले गये विनम्रतापूर्ण और श्रेष्ठ शब्दों को परमात्मा भी अपने हृदय में स्वीकार करता है। यह सरल रूप में दो तरफा वार्तालाप तन्त्र है। प्रत्येक वरिष्ठ को अपने से छोटे व्यक्तियों के शब्दों को समान रूप से महत्व देना चाहिए, निःसंदेह श्रेष्ठताओं से समझौता किये बिना। द्वितीय, हमारी सारी सम्पदा, शब्दों और प्रयासों हमारे जीवन में तथा समाज में, कार्य स्थलों पर और समूचे राष्ट्र में एक अनुशासित प्रबन्धन ही सुनिश्चित करना चाहिए। केवल तभी यह एक दिव्य प्रबन्धन होगा जिसके परिणामस्वरूप समष्टिगत विकास सम्भव होगा।

आन्तरिक आध्यात्मिक शक्ति की संस्कृति के बिना कोई भी विकास दीर्घकालिक और टिकाऊ नहीं हो सकता और आन्तरिक प्रसन्नता भी पैदा नहीं कर सकता।

सूक्ष्म :- (ते अधि श्रवः देवभक्तम् दधानाः) सुनने योग्य आपका ज्ञान दिव्य शक्तियों और लोगों से अपार मात्रा में हमें प्राप्त होता है जिसे सम्पदा के साथ-साथ अनुशासित प्रबन्धन के लिए धारण करें।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

ऋग्वेद मण्डल-1 सूक्त 74

ऋग्वेद मन्त्र 1.74.1

उपप्रयन्तो अधरं मन्त्रं वोचेमाग्नये ।
आरे अस्मे च शृण्वते ॥ 1 ॥

(उपप्रयन्तः) निकट होना और अच्छी तरह जानना (अधरम्) अहिंसक यज्ञ, स्वार्थरहित यज्ञ कार्य (मन्त्रम्) मन्त्रों को और श्रेष्ठ विचारों को (वोचेम) उच्चारण करना, कहना (अग्नये) अग्नि के लिए, सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा के लिए (आरे) दूर से (अस्मे) हमें (च) और (निकट से) (शृण्वते) सुनना (परमात्मा को) ।

नोट : यह मन्त्र सामवेद 1379 और यजुर्वेद 3.11 में समान रूप से आया है।

व्याख्या :-

परमात्मा किसे प्रत्येक अवस्था में सुनता है?

प्रत्येक मनुष्य को पूरी चेतना के साथ अहिंसक यज्ञों, स्वार्थरहित कल्याण कार्यों के निकट होना चाहिए और वैदिक मन्त्रों का उच्चारण करना चाहिए या अग्नि, सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा के लिए श्रेष्ठ विचारों को प्रकट करना चाहिए । वह (परमात्मा) ऐसे लोगों को दूर और निकट से सुनता है। अग्नि यज्ञों को सम्पन्न करते हुए भी हम पवित्र अग्नि को आहुतियाँ देने के साथ-साथ मन्त्रों का उच्चारण करते हैं। हमारी आहुतियाँ अग्नि के लिए होती हैं, परन्तु हमारे द्वारा उच्चारित मन्त्र परमात्मा के लिए होते हैं।

जीवन में सार्थकता :-

कलियुग का विशेष ध्यान में रखने योग्य लक्षण क्या हैं?

यज्ञ अर्थात् दूसरों के कल्याण के लिए हमारे त्याग ही मनुष्यों का एक मात्र कार्य है जिसके साथ-साथ दूसरों के कल्याण के लिए वैदिक वाणियाँ, सत्यतापूर्ण और प्रेम से भरी हुई वाणियाँ सम्मिलित हैं। परमात्मा निश्चित रूप से ऐसे लोगों की सुनता है।

यज्ञ का विपरीत शब्द है लूटना। जो कलियुग का एक लक्षण बन चुका है। अधिकांश लोग धन कमाने की पागल दौड़ का अनुसरण कर रहे हैं, यहाँ तक कि झूठ बोलकर और दूसरों को धोखा देकर भी। यही कलियुग का ध्यान में रखने लायक लक्षण है। हमें अपने जीवन में इस लक्षण से दूर रहना चाहिए।

यहाँ तक कि कल्याणकारी गतिविधियाँ भी प्रसिद्धि के लिए सम्पन्न की जाती हैं। इस प्रकार अहंकारपूर्ण यज्ञ कार्य भी हिंसक बन जाते हैं, क्योंकि इन्हें सम्पन्न करने वाला व्यक्ति यह भूल जाता है कि सभी

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

कार्यों का वास्तविक कर्ता और सभी पदार्थों का दाता केवल परमात्मा ही है, जबकि वह व्यक्ति प्रसिद्धि को भी लूट रहा होता है जो वास्तव में परमात्मा के लिए निर्धारित थी।

ऋग्वेद मन्त्र 1.74.2

यः स्नीहितीषु पूर्व्यः संजग्मानासु कृष्टिषु ।
अरक्षद्वाशुषे गयम् ॥१२॥

(यः) जो (स्नीहितीषु) प्रेम से सोचने और कार्य करने वाला (पूर्व्यः) पूर्वकाल में (अनुभूति प्राप्त) (सम्झग्मानासु) इकट्ठे चलते हुए (कृष्टिषु) लोगों में (अरक्षत) सुरक्षित करते हैं (दाशुषे) समर्पण के लिए तैयार (गयम्) सम्पदा।

नोट : यह मन्त्र सामवेद 1380 में समान रूप से आया है।

व्याख्या :-

'अग्नि' किसको संरक्षित करती है?

इस सूक्त का देवता 'अग्नि' जिसकी अनुभूति पूर्वकाल में उनके द्वारा की गई है जो प्रेम से विचार करते रहे और कार्य करते रहे, लोगों में इकट्ठे गतिशील रहे और वह 'अग्नि' जो समर्पण करने वाले लोगों की सम्पदा को संरक्षित करता है अर्थात् सब कुछ दूसरों के कल्याण के लिए।

जीवन में सार्थकता :-

'अग्नि' कब प्रफुल्लित होती है?

व्याख्योंकि हमारी ऊर्जा हमारे अन्दर परमात्मा की उपस्थिति का प्रतिनिधित्व है और परमात्मा प्रत्येक प्राणी से प्रेम करता है और जीवन की मूल आवश्यकताओं के लिए सबका ध्यान रखता है, इसका अर्थ है कि अपनी मूल प्रकृति के कारण, यह ऊर्जा सबका कल्याण करने के लिए निर्धारित है। अतः हमारी ऊर्जा तभी प्रफुल्लित और विकसित महसूस करती है जब इसका प्रयोग दूसरों के कल्याण के लिए अर्थात् यज्ञ कार्यों के लिए किया जाये। यह यज्ञ कार्यों से बढ़ती है। व्याख्योंकि केवल यज्ञ कार्यों के माध्यम से ही 'अग्नि' या हमारी ऊर्जा अपने स्रोत अर्थात् महाअग्नि को मिलती है।

अतः हमें 'अग्नि', सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा, के लिए अहिंसक विनम्र विचारों, वाणियों और मन्त्रों का ही उच्चारण करना चाहिए।

ऋग्वेद मन्त्र 1.74.3

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

उत ब्रुवन्तु जन्तव उदग्निर्वृत्रहाजनि ।
धनंजयो रणेरणे ॥ 3 ॥

(उत) और (ब्रुवन्तु) प्रशंसा करना, उपदेश करना और प्रफुल्लित होना (जन्तवः) लोग, जीव (उत) और (अग्निः) सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा (वृत्रहा) मन की वृत्तियों और अज्ञान आदि का नाश करने वाला (अजनि) उत्पन्न, प्रकट (धनंजयः) सम्पदा पर विजयी (रणे—रणे) प्रत्येक युद्ध, संकट और कठिनाई में।

नोट : यह मन्त्र सामवेद 1382 में समान रूप से आया है।

व्याख्या :-

प्रत्येक व्यक्ति को 'अग्नि' की प्रशंसा, उसके बारे में प्रवचन और उसका मान क्यों करना चाहिए? और लोगों को, समस्त जीवों को ऊर्जा और इसके सर्वोच्च स्रोत, परमात्मा की प्रशंसा, उसके बारे में प्रवचन और उसका मान अवश्य करना चाहिए। जब यह हमारे शरीर में उत्पन्न होती है तो यह मन की सभी वृत्तियों और अज्ञानताओं को नष्ट कर देती है। यह प्रत्येक युद्ध, संघर्ष और कठिनाईयों में सम्पदा पर विजय प्रदान करती है।

जीवन में सार्थकता :-

ऊर्जा घटती या बढ़ती कैसे है?

ऊर्जा प्रत्येक जीव में विद्यमान है। यह तपस्याओं के साथ, प्रशंसाओं के साथ और प्रवचनों के साथ बढ़ती है। जबकि यह नकारात्मक और स्वार्थपूर्ण विचारों और कार्यों से घटती है या जब हम दूसरों को हानि पहुँचाते हैं या जब हम अपने आस—पास के वातावरण के प्रति असंवेदनशील हो जाते हैं।

इसे सामवेद 1382 में भी लगाना है।

ऋग्वेद मन्त्र 1.74.4

यस्य दूतो असि क्षये वेषि हव्यानि वीतये ।
दस्मत्कृणोष्यध्वरम् ॥ 4 ॥

(यस्य) जिसमें (दूतः) दूत (सत्य का, ऊर्जा का) (असि) वहाँ हैं (क्षये) घर, शरीर (वेषि) इच्छा, स्वीकार, उत्पन्न (हव्यानि) आहुतियाँ, भेंट (वीतये) बुराईयों और अज्ञानता का नाश करने के लिए (दस्मत) सभी दुःखों और कष्टों का नाश करने वाला (कृणोषि) करता है (अध्वरम्) अहिंसक यज्ञ, स्वार्थरहित कल्याण कार्य।

व्याख्या :-

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

ऊर्जा हमारे शरीर में अपनी उपस्थिति से हमारी सहायता कैसे करती है?

जिस शरीर या घर में आप (ऊर्जा) सत्य और ऊर्जा के दूत के रूप में उपस्थित हो, आप आहुतियों आदि की इच्छा करते हो, उन्हें उत्पन्न करते हो और स्वीकार करते हो जिससे ऐसे जीवन में से बुराईयां और अज्ञानता नष्ट हो सके। आप उनके यज्ञों को हिंसा रहित बनाते हो। जो सभी दुःखों और पीड़ाओं के नाशक होते हैं।

जीवन में सार्थकता :-

ऊर्जा हमारे से क्या आशा करती है?

ऊर्जा का अर्थ है हर प्रकार से शक्तिशाली होना – भौतिक, मानसिक और आध्यात्मिक। हमारी ऊर्जा एक दूत की तरह सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा का प्रतिनिधित्व करती है। इसीलिए हमसे इसकी आशाएँ स्वाभाविक तौर पर उच्च स्तर की होती हैं कि इसका प्रयोग यज्ञ कार्यों को करते हुए सबके कल्याण के लिए ही किया जाये। ऐसे कार्य परमात्मा के द्वारा आहुतियों और उन्हें चढ़ाई गई भेंट की तरह स्वीकार किये जाते हैं तथा इसके बदले हमें पूरी तरह समस्या मुक्त जीवन प्राप्त होता है।

सूक्ष्म :- सम्पूर्ण मंत्र।

ऋग्वेद मन्त्र 1.74.5

तमित्सुहव्यमङ्गिरः सुदेवं सहसो यहो ।

जना आहुः सुबर्हिषम् ॥५॥

(तम् इत) केवल उसको (सुहव्यम्) उत्तम आहुतियों वाला (अंगिरः) सबका अंग, जीवन का श्वास (सुदेवम्) उत्तम दिव्य शक्तियों वाला (सहसः) सर्वशक्तिमान् (यहो) उसको (जनाः) लोग (आहुः) पुकारते हैं, आहवान् करते हैं (सुबर्हिषम्) हमारे गहरे हृदय में उत्तम रूप से स्थापित।

व्याख्या :-

लोग परमात्मा, सर्वोच्च ऊर्जा को क्यों पुकारते हैं और आहवान करते हैं?

लोग केवल उसी को पुकारते हैं और आहवान करते हैं जिसमें निम्न लक्षण हैं :-

1. सुहव्यम् – उत्तम आहुतियों वाला,
2. सुदेवम् – उत्तम दिव्य शक्तियों वाला और
3. सुबर्हिषम् – हमारे गहरे हृदय में उत्तम रूप से स्थापित, क्योंकि वह है – (1) अंगिरः – सबका अंग, जीवन का श्वास, (2) सहसः – सर्वशक्तिमान्।

जीवन में सार्थकता :-

जीवों के अस्तित्व के तीन स्तर कौन-कौन से हैं?

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

जीवन के इन सभी स्तरों पर परमात्मा किस प्रकार सहायता करते हैं?

एक सामान्य जीवन के लिए भी, चाहे वह मनुष्य का हो या पशु का हो, सर्वशक्तिमान परमात्मा की तरफ से श्वास सभी जीवों के लिए उसका मूल अनुदान है।

जब कोई मनुष्य पशु जीवन से ऊपर उठे हुए जीवन की कामना करता है तो वह निश्चित रूप से किसी भी रूप में यज्ञ कार्यों को करता है, केवल परिवार के कुछ सदस्यों के लिए ही नहीं, अपितु समाज के अधिकतर लोगों के लिए। यज्ञ कार्यों के लिए उसे अधिकतम पदार्थों और साधनों की आवश्यकता होती है। इसलिए मनुष्यों को छोटे हों या बड़े यज्ञ कार्यों के लिए सभी पदार्थों को कमाने और उनको धारण करने की योग्यता दी गई है।

इससे भी अधिक, यदि कोई व्यक्ति अपवाद रूप में मानव जीवन से भी ऊपर जीने की इच्छा करता है तो उसे यज्ञ कार्यों के लिए आध्यात्मिक शक्तियों के रूप में और अधिक ऊर्जा की आवश्यकता होती है और सर्वोच्च ऊर्जा परमात्मा को अपने गहरे हृदय स्थान में उपस्थित होने की अनुभूति करते हुए सभी दिव्यताओं के उस स्रोत के साथ संगतिकरण की भी आवश्यकता पड़ती है।

ऊर्जा की कामना करना और उसकी पूर्ति इस बात पर निर्भर करती है कि उसका किस स्तर पर अन्य लोगों के लिए प्रयोग किया जाना है, जिस प्रकार खुदरा व्यापार या थोक व्यापार में।

ऋग्वेद मन्त्र 1.74.6

आ च वहासि ताँ इह देवाँ उप प्रशस्तये ।
हव्या सुश्चन्द्र वीतये ॥६॥

(आ) सभी दिशाओं से, सब प्रकार से (च) और (वहासि) हमें प्राप्त करने योग्य बनाता है (तान) वे सब (इह) यहाँ, इसी जीवन में (देवान्) दिव्य शक्तियाँ (उप) निकट (प्रशस्तये) प्रशंसाओं के लिए (हव्या) आहुतियाँ (सुश्चन्द्र) उत्तम आनन्द को देने वाला (वीतये) बुराईयों और अज्ञानता का नाश करने के लिए।

व्याख्या :-

हम दिव्य शक्तियों का आहवान क्यों करते हैं?

उत्तम आनन्द के दाता, परमात्मा, कृपया हमें यहीं इसी जीवन में सभी दिशाओं से और सभी प्रकार से हमारे निकट वे सभी दिव्य शक्तियाँ प्राप्त करवाओ जो प्रशंसाओं के लिए हो और बुराईयों तथा अज्ञानता आदि का नाश करने के लिए आहुतियों के रूप में प्राप्त हों।

जीवन में सार्थकता :-

आहुतियों का दोहरा लाभ कैसे होता है?

हमारी सच्ची आहुतियाँ निश्चित रूप से उन दिव्य शक्तियों के द्वारा स्वीकार की जाती हैं जिनका हम आहवान करते हैं। परन्तु साथ ही ये आहुतियाँ अन्य मनुष्यों का भी हित करती हैं। इसलिए आहुतियाँ

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

देने वाले को दोहरा लाभ मिलता है – उसके कर्मों का फल और दिव्य शक्तियों की संगति के माध्यम से परमात्मा की तरफ से आनन्द। सामान्यतः लोग इन दोनों लाभ का आनन्द लेना चाहते हैं। किन्तु एक विशुद्ध आध्यात्मिक और सच्चा जिज्ञासु दिव्य शक्तियों के माध्यम से केवल परमात्मा की संगतिकरण की ही इच्छा करता है। क्योंकि वह कर्मों को करते हुए इस बात के प्रति सचेत होता है कि वह कर्ता नहीं है, वह तो केवल सर्वोच्च और वास्तविक कर्ता परमात्मा, की इच्छा के अनुसार कार्य करता दिखाई दे रहा है।

ऋग्वेद मन्त्र 1.74.7

न योरुपद्विरश्वयः शृण्वे रथस्य कच्चन ।
यदग्ने यासि दूत्यम् ॥७ ॥

(न) नहीं (यो:) आने और जाने वाला, गतिशील (उपद्विः) ध्वनि करता हुआ (अश्वयः) अश्व, कर्मेन्द्रियाँ (शृण्वे) सुनता है (रथस्य) रथ की, शरीर की (कत् चन) कभी भी (यत) जिसको (अग्ने) सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा (यासि) स्वीकार करता है (दूत्यम्) दूत की तरह।

व्याख्या :-

किसके कार्य शोर उत्पन्न नहीं करते?

एक रथ के घोड़ों की, आते हुए या जाते हुए, ध्वनि या शोर कभी भी सुनाई नहीं देना चाहिए। अर्थात् जिस शरीर को सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा, अपने दूत की तरह स्वीकार कर लेते हैं उसकी इन्द्रियों के द्वारा किये गये कार्यों की ध्वनि भी सुनाई नहीं देनी चाहिए।

जीवन में सार्थकता :-

परमात्मा के दूत की तरह कौन स्वीकार करने योग्य है?

परमात्मा एक श्रद्धालु को अपने दूत की तरह स्वीकार करते हैं, जब वह परमात्मा के साथ एकता की अनुभूति प्राप्त कर लेता है और यह कि वही परमात्मा सारी सृष्टि में सभी कार्यों का वास्तविक कर्ता है और अपने कार्यों के फल का भोग करने की इच्छा भी त्याग देता है। संक्षिप्त में – (1) पूरी तरह से अहंकाररहित व्यक्ति जो सभी कार्यों को करते हुए उस असीम ऊर्जा के रूप में अपने सत्य 'मैं' की अनुभूति प्राप्त कर लेता है और (2) एक इच्छारहित व्यक्ति ही परमात्मा के दूत की तरह स्वीकार किये जाते हैं।

ऋग्वेद मन्त्र 1.74.8

त्वोतो वाज्यद्योऽभि पूर्वस्मादपरः ।
प्र दाश्वां अग्ने अस्थात ॥८ ॥

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



(त्व ऊतः) आपके द्वारा संरक्षित, आपकी संगति में (वाजी) निर्वाद रूप से प्रगतिशील (अद्वयः) बिना किसी सन्देह के (अभि) की तरफ (पूर्वस्मात्) पूर्व की तुलना से (अपरः) उच्च स्तर (प्र – अस्थात् से पूर्व लगाकर) (दाश्वान्) देने वाला, जो समर्पित होता है (अग्ने) सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा (अस्थात् – प्र अस्थात्) सुदृढ़ता से स्थापित।

व्याख्या :-

परमात्मा का दूत जीवन में किस प्रकार प्रगति करता है?

एक बार जब कोई श्रद्धालु सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा, के द्वारा उसका दूत स्वीकार कर लिया जाता है और निकट सम्बन्ध के कारण वह परमात्मा के द्वारा संरक्षित होता है तो वह अपने पूर्व काल की तुलना में बिना सन्देह या दोहरी बुद्धि के लगातार तीव्र गति के साथ उच्च स्तर की तरफ प्रगति करता है। जो व्यक्ति परमात्मा के प्रति पूर्ण समर्पण कर देता है वह सुदृढ़ता के साथ स्थापित हो जाता है।

जीवन में सार्थकता :-

समाज का दूत किस प्रकार जीवन में प्रगति करता है?

परमात्मा के दूत की तरह जीवन जीने के लिए, अहंकार और इच्छाओं से पूर्ण मुक्ति आध्यात्मिक प्रगति का सबसे महत्त्वपूर्ण आधार है। यहाँ तक कि परिवारों में, व्यापार में, कार्यस्थल पर, समाजसेवा में या देश पर शासन करने में हमें दूसरों के कल्याण के लिए अपने व्यक्तिगत हितों का त्याग करना ही होता है। तभी हम मानवता के सच्चे दूत बनकर लगातार और तीव्र गति के साथ प्रगति कर सकते हैं।

ऋग्वेद मन्त्र 1.74.9

उत द्युमत्सुवीर्यं बृहदग्ने विवाससि ।
देवेभ्यो देव दाशुषे ॥१९॥

(उत) और (द्युमत) प्रकाशित (सुवीर्यम्) उत्तम् मूल शक्ति (बृहत) बड़ा, महान् (अग्ने) सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा (विवाससि) देने की इच्छा वाला (देवेभ्यः) दिव्य शक्तियों और लोगों के लिए (देव) सर्वोच्च दिव्य (दाशुषे) देने वाला, जो समर्पित होता है।

व्याख्या :-

सर्वोच्च दिव्यता एक पूर्ण श्रद्धालु को क्या देती है?

एक पूर्ण श्रद्धालु जो सदैव देता है और सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा, के प्रति समर्पित रहता है, वह सर्वोच्च दिव्यता ऐसे दिव्य व्यक्ति को ज्ञान का प्रकाश तथा उत्तम शक्तियाँ प्रदान करती हैं।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

जीवन में सार्थकता :-

कौन सच्चा दाता है?

परमात्मा सर्वोच्च दाता है, क्योंकि वह सर्वोच्च दिव्य है। अतः वह सभी दाताओं को शक्तियों में दिव्य बना देता है, शर्त एक ही है कि वे स्वयं को सच्चा दाता बनकर दिखायें, सभी कल्याण कार्यों को करते हुए अपने अहंकार और व्यक्तिगत इच्छाओं को सम्मिलित न करें।

सूक्ति :- (देवेभ्यः देव दाशुषे) एक दाता जो सदैव देता है और परमात्मा के प्रति समर्पित रहता है, वह दिव्य शक्ति बन जाता है।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

ऋग्वेद मण्डल-1 सूक्त 75

परमात्मा के साथ मित्रता पर सूक्त

ऋग्वेद मन्त्र 1.75.1

जुषस्व सप्रथस्तमं वचो देवप्सरस्तमम् ।
हव्या जुहवान आसनि ॥१॥

(जुषस्व) कृपा पूर्वक प्राप्त करें (सप्रथस्तमम्) उदार एवं विस्तृत (वचः) शब्द, वाणी (देवप सरस्तमम्) दिव्य शक्तियों और लोगों का प्रिय (हव्या) आहुतियाँ (भोजन की) (जुहवानः) स्वीकार करें (आसनि) मुख में।

व्याख्या :-

'अग्नि' को हम क्या भेंट देते हैं?

'अग्नि', सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा! कृपया हमारे सहज और विस्तृत शब्दों और वाणियों को स्वीकार करें जो दिव्य शक्तियों और लोगों के द्वारा पसन्द किये जाते हैं। कृपया हमारी आहुतियाँ स्वीकार करें (भोजन की तरह अपने मुंख में अर्थात् यज्ञ वेदी में)।

जीवन में सार्थकता :-

हम परमात्मा को क्या भेंट दे सकते हैं?

श्रेष्ठ विचारों और स्वास्थ्यवर्द्धक भोजन का क्या महत्व है?

इस मन्त्र के शाब्दिक अर्थ के अनुसार - 'अग्नि' हमारे द्वारा उच्चारित मन्त्रों को स्वीकार करती है और आहुतियों को अपने मुंख अर्थात् यज्ञ वेदी में प्राप्त करती है।

इसका अप्रत्यक्ष अर्थ है - सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा हमारे उन बोले गये शब्दों को स्वीकार करते हैं जो दूसरों के कल्याण के लिए होते हैं और विवेकशील लोगों के द्वारा पसन्द किये जाते हैं। इसके अतिरिक्त, सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा, उस भोजन को स्वीकार करते हैं जो हम आहुति के रूप में जरूरतमंद लोगों को भेंट करते हैं।

गुरुनानक देव जी ने बड़ी उचित प्रेरणा देते हुए कहा है कि गरीब के मुंख के डाला गया एक ग्रास का अर्थ है परमात्मा के खजाने में डालना।

प्रत्येक जीव, मनुष्यों या पशुओं, की व्यक्तिगत ऊर्जा श्रेष्ठ विचारों और स्वास्थ्यवर्द्धक भोजन को प्रसन्नता पूर्व स्वीकार करने से बढ़ती है जो एक सर्वमान्य आवश्यकता है।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

सूक्ति :— (हव्या जुहवानः आसनि) कृपया हमारी आहुतियाँ स्वीकार करें (भोजन की तरह अपने मुंख में अर्थात् यज्ञ वेदी में)।

ऋग्वेद मन्त्र 1.7.2

अथा ते अङ्गिगरस्तमाग्ने वेधस्तम प्रियम् ।
वोचेम ब्रह्म सानसि ॥२॥

(अथ) उसके बाद (ते) आपको (अङ्गिगरस्तम) सभी जीवों का जीवन, सभी जीवों का अंग, शरीर के प्रत्येक अंग को ऊर्जावान करने वाला, (अग्ने) सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा (वेधस्तम) सर्वाधिक ज्ञानवान (प्रियम्) सबसे प्रिय (वोचेम) उच्चारण (ब्रह्म) दिव्य ज्ञान (सानसि) आपके द्वारा सदैव पसन्द किया गया।

व्याख्या :—

यज्ञ के बाद हम परमात्मा को क्या भेंट करें?

इसके बाद अर्थात् अपने शब्द और भोजन 'अग्नि' को भेंट करने के बाद, हम परमात्मा से दिव्य ज्ञान के प्रियतम शब्दों में बात करते हैं जो वह पसन्द करता है, क्योंकि वह सभी जीवों का जीवन है, सभी जीवों का अंग है और हमारे शरीर के प्रत्येक अंग को ऊर्जावान करता है और जो सर्वोच्च ज्ञानवान है।

जीवन में सार्थकता :—

दिव्य वार्तालाप क्या होता है?

हम मुंख से जब भी कोई शब्द बोलते हैं तो वह किसी न किसी के कल्याण के लिए होना चाहिए या भगवान की प्रशंसा में होना चाहिए। एक सामान्य धार्मिक कार्यक्रम में भी अग्नि यज्ञ आदि करने के बाद एक विद्वान् व्यक्ति विवेकशील शब्दों से सम्बोधित करता है।

नकारात्मक या निरर्थक वार्तालाप हमारे जीवन के बहुमूल्य समय को व्यर्थ ही करते हैं।

अतः किसी से बात करते हुए हमें यह सुनिश्चित करना चाहिए कि :-

1. वार्तालाप किसी न किसी व्यक्ति, समाज या देश के लिए कल्याणकारी हो।
2. बोलने वाले व्यक्ति को अपने शब्दों की सत्यता के प्रति जिम्मेदार होना चाहिए।
3. प्रत्येक वार्तालाप की मूल भावना यह होनी चाहिए कि वास्तविक कर्ता के रूप में परमात्मा की सर्वोच्चता की प्रशंसा की जाये, किसी व्यक्ति की नहीं।

यदि हम इन तीन सिद्धान्तों का अनुसरण करें तो हमारे वार्तालाप बहुत कम हो जायेंगे, हमारा बहुत सा समय बचेगा और हम केवल कल्याणकारी और दिव्य प्रशंसाओं तक सीमित रहेंगे। यह एक दिव्य वार्तालाप होगा। जिससे हमारी ऊर्जा का संरक्षण और संवर्द्धन होगा।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



सूक्ति :- (प्रियम् वोचेम् ब्रह्म सानसि) हम परमात्मा से दिव्य ज्ञान के प्रियतम शब्दों में बात करते हैं जो वह पसन्द करता है।

ऋग्वेद मन्त्र 1.75.3

कस्ते जामिर्जनानामग्ने को दाश्वध्वरः।
को ह कस्मिन्नसि श्रितः ॥३॥

(क:) कौन (ते) आपका (जामि:) भाई, ज्ञाता (जनानाम्) मनुष्यों के बीच (अग्ने) सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा (क:) कौन (दाश्वध्वरः) अहिंसक दाता (क:) कौन (ह) निश्चित रूप से (कस्मिन्) किसमें (असि) हो (श्रितः) बंधे हुए, आश्रित।

व्याख्या :-

'अग्नि' के समक्ष क्या प्रश्न किये जाते हैं?

यह मन्त्र 'अग्नि' के समक्ष कुछ प्रश्न करता है :-

1. सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा, मनुष्यों में आपका भाई या आपको जानने वाला कौन है?
2. एक अहिंसक दाता कौन है?
3. निश्चित रूप से आप कौन हो?
4. आप किसमें बंधे रहते हो?

जीवन में सार्थकता :-

एक सच्चा आध्यात्मिक भाई कौन है?

पहले दो प्रश्न परमात्मा के सभी भक्तों से पूछे गये हैं। जो इन दो प्रश्नों का उत्तर सकारात्मक रूप में देंगे, उन्हें अन्य दो प्रश्नों का उत्तर प्राप्त होगा।

प्रथम प्रश्न का उत्तर देने से पूर्व हमें 'भाई' शब्द का सच्चा अर्थ जानना चाहिए। सामान्य दृष्टि में भाई वे हैं जो अपने माता-पिता की सम्पदा को बांटते हैं। परन्तु आत्मा के स्तर पर भाई वे हैं जो एक दूसरे के लिए सब कुछ त्याग करने के लिए तत्पर हैं।

यदि वास्तविक रूप में मैं अपनी समस्त वस्तुएँ, अपनी समस्त इच्छाएँ और अपने अहंकार का अस्तित्व अर्थात् कर्ता होने की भावना भी त्याग दें, यह निश्चित है कि परमात्मा कभी न कभी अपने बारे में सभी रहस्य मेरे सामने खोल देगा।

सूक्ति :- (क: ते जामि: जनानाम् अग्ने) सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा, मनुष्यों में आपका भाई या आपको जानने वाला कौन है?

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

ऋग्वेद मन्त्र 1.75.4

त्वं जामिर्जनानामग्ने मित्रो असि प्रियः ।
सखा सखिभ्य ईङ्गयः ॥४॥

(त्वम्) आप (जामिः) भाई, ज्ञाता (जनानाम) मनुष्यों के बीच (अग्ने) सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा (मित्रः) मित्र (असि) हो (प्रियः) प्रिय (सखा) मित्र (सखिभ्यः) मित्रों के (ईङ्गयः) पूजा के योग्य ।

व्याख्या :-

परमात्मा का सबके साथ क्या सम्बन्ध है?
परमात्मा पूजा के योग्य क्यों है?
सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा, आप सभी मनुष्यों के भाई और उनके जानकार हो ।
आप प्रिय मित्र हो, आप सभी मित्रों के मित्र हो । आप पूजा के योग्य हो ।

जीवन में सार्थकता :-

परमात्मा के साथ बिना किसी आशा के प्रेम या मित्रता कैसे की जा सकती है?
इसमें कोई सन्देह नहीं है कि परमात्मा बिना आशा के सभी जीवों का भाई और प्रिय मित्र है । परन्तु मनुष्य परमात्मा की पूजा कुछ सुखों के आधार पर ही प्रतिदिन उन्हीं की कामना के लिए करते हैं । परमात्मा उन्हें सब कुछ उपलब्ध कराते हैं, फिर भी वे अपने अहंकार को दिनों दिन जोड़ते चले जाते हैं, इस अज्ञानता में कि उन्होंने यह सुख-सुविधाएँ और अपना स्तर स्वयं अर्जित किया है ।
यदा—कदा ही कुछ श्रद्धालु अहंकार और इच्छाओं तथा किसी भी आशा के बिना परमात्मा से प्रेम और मित्रता करते हैं ।

सूक्ष्मिका :- सम्पूर्ण मन्त्र ।

ऋग्वेद मन्त्र 1.75.5

यजा नो मित्रावरुणा यजा देवाँ ऋतं बृहत् ।
अग्ने यक्षि स्वं दमम् ॥५॥

(यजा) संगति (नः) हमारी (मित्रा वरुणा) मित्रता की शक्ति तथा सबका पालन—पोषण करने की शक्ति (यजा) संगति (देवान्) दिव्यताएँ (दिव्य शक्तियां तथा लोग) (ऋतम्) स्वाभाविक सत्य (बृहत्) बड़ा तथा महान् (अग्ने) सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा (यक्षि) संगति करो (स्वम्) आपका अपना (दमम्) घर ।

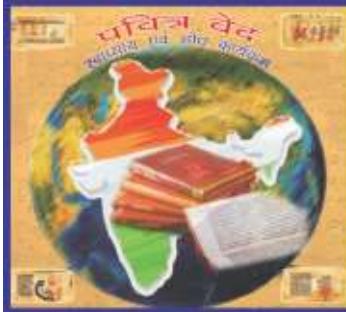
व्याख्या :-

परमात्मा के साथ संगतिकरण कैसे करें?

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

'अग्नि', सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा, कृपया हमें अपनी मित्रता की शक्ति और सबका पालन-पोषण करने की शक्ति के साथ जोड़ो; हमें दिव्य शक्तियों और लोगों तथा अन्तिम सत्य के साथ जोड़ो। इसके बाद हमें अपने बड़े और महान् घर के साथ जोड़ो जो इसी शरीर में है।

जीवन में सार्थकता :-

परमात्मा के साथ मित्रता को सुदृढ़ करने में प्रेम की क्या भूमिका है?

परमात्मा के साथ प्रेम और मित्रता आध्यात्मिक प्रगति का सरलतम मार्ग है। क्योंकि परमात्मा हमारे साथ ही है, अतः हमें सर्वप्रथम अपने शरीर और मन को पवित्र बनाने की आवश्यकता है। बिना पवित्रता के कोई भी सम्बन्ध सुदृढ़ नहीं हो सकता। हमें पवित्रता अर्जित करने के लिए सभी मार्गों और तरीकों का विश्लेषण करते हुए उन्हें जीवन में उतारना चाहिए, जैसे पवित्र खाना, पवित्र सोचना, बिना इच्छाओं के जीना और सभी कार्यों को अपने सर्वोच्च मित्र, परमात्मा, के प्रति समर्पित करना। इस सूक्त का केन्द्रीय विषय पूर्ण समर्पण के साथ परमात्मा का भाई और मित्र बनने से सम्बन्धित था।

सूक्त :- सम्पूर्ण मंत्र।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



ऋग्वेद मण्डल-1 सूक्त 76

ऋग्वेद मन्त्र 1.76.1

का त उपेतिर्मनसो वराय भुवदग्ने शन्तमा का मनीषा ।
का वा यज्ञैः परि दक्षं त आप केन वा ते मनसा दाशेम ॥1॥

(का) क्या (ते) आपका (उपेति:) उपाय, तरीका, पूजा (मनस:) मन का (वराय) वरण किया (सुधार के लिए) (भुवत्) हो (अग्ने) सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा, ताप, अग्नि, अग्रणी, ऊर्जावान्, प्रकाशित, पवित्र एवं दिव्य (शन्तमा) शांति देने वाला (का) क्या (मनीषा) बुद्धि, दिव्यता पर चिन्तन करने वाला (क:) कौन (वा) निश्चित रूप से (यज्ञैः) कल्याणकारी कार्य, सामाजिकता की प्रक्रिया (परि) हर प्रकार से, हर कार्य के लिए (दक्षम्) बल, विशेषज्ञता, प्रगति (ते) आपका (आप) प्राप्त करते हो (केन) कैसे, किसके द्वारा (वा) निश्चित रूप से (ते) आपके (मनसा) मन, हृदय (दाशेम) देना, समर्पण ।

व्याख्या :-

'अग्नि' किस प्रकार हमारे मन, बुद्धि और बल के लिए लाभकारी है?
आपका क्या उपाय है, मन के सुधार के लिए आपकी पूजा का कौन सा तरीका अपनाया जाना चाहिए?
बुद्धि तथा दिव्यता पर एकाग्र होने वाले के लिए शांति देने वाला कौन है?
कौन, कल्याणकारी यज्ञ कार्यों के द्वारा तथा सामाजिकता की प्रक्रिया के द्वारा हर प्रकार से और हर कार्य के लिए आपका बल, विशेषज्ञता और प्रगति प्राप्त करता है?
किस मन और हृदय के साथ निश्चित रूप से हम आपके प्रति समर्पण कैसे करें?

जीवन में सार्थकता :-

परमात्मा के प्रति समर्पण का क्या महत्त्व है?
इस मन्त्र में हम 'अग्नि' से तीन लाभ मांगते हैं :-

1. मन का सुधार,

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

2. दिव्यताओं पर ध्यान एकाग्र करने के साथ—साथ शान्त बुद्धि,
3. बल।

इन तीन प्रार्थनाओं के साथ हम सर्वोच्च ऊर्जा से प्रश्न करते हैं कि किस मन के साथ और किस प्रकार हम उसके प्रति समर्पित हों।

जिस प्रकार बिना भुगतान किये हमें कुछ प्राप्त नहीं होता, उसी प्रकार समर्पण किये बिना हम अपने मन का सुधार नहीं कर सकते, अपनी बुद्धि में शांति प्राप्त नहीं कर सकते और भिन्न—भिन्न प्रकार के बल प्राप्त नहीं कर सकते। इसलिए आत्मा की यात्रा पर प्रगति प्राप्त करने के लिए परमात्मा के प्रति आत्म समर्पण सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण है।

सूक्ति :-

(केन वा ते मनसा दाशेम — ऋग्वेद 1.76.1)

किस मन और हृदय के साथ निश्चित रूप से हम आपके प्रति समर्पण कैसे करें?

सूक्ति :-

(शान्तमा का मनीषा कः — ऋग्वेद 1.76.1)

बुद्धि तथा दिव्यता पर एकाग्र होने वाले के लिए शांति देने वाला कौन है?

ऋग्वेद मन्त्र 1.76.2

एह्यग्न इह होता नि षीदादध्यः सु पुरएता भवा नः।

अवतां त्वा रोदसी विश्वमिन्चे यजा महे सौमनसाय देवान्॥२॥

(एहि) कृपया आईये (अग्ने) सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा, ताप, अग्नि, अग्रणी, ऊर्जावान्, प्रकाशित, पवित्र एवं दिव्य (इह) यहाँ, इस जीवन में (होता) लाने वाला और उपलब्ध कराने वाला (यज्ञ कार्यों के लिए प्रत्येक वस्तु) (नि षीत) स्थापित (प्रकाशित होने के लिए) (अदध्यः) अहिंसक (सु — भव से पूर्व लगाकर) (पुर एता) हमारा नेतृत्व करते हुए (भव — सु भव) सर्वोत्तम बनों (नः) हमारे (अवताम) संरक्षक और संवर्द्धक (त्वा) आप (रोदसी) दोनों भूमि तथा द्युलोक (विश्वम) सब (इन्चे) व्याप्त होते हुए (यजा महे) हम पूजा करते हैं, संगति करते हैं (सौमनसाय) सर्वोत्तम मन बनने के लिए, सबके लिए सौहार्द पूर्वक (देवान्) दिव्य शक्तियाँ और लोग।

व्याख्या :-

हम 'अग्नि' का आहवान क्यों करते हैं?

सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा, ताप, अग्नि, अग्रणी, ऊर्जावान्, प्रकाशित, पवित्र एवं दिव्य, यज्ञ के लिए सभी वस्तुओं को लाने वाले और उपलब्ध कराने वाले होने के नाते कृपया यहाँ आईये, इस जीवन में और हमें प्रकाशवान करने के लिए स्थापित होईये। अहिंसक होने के नाते हमारा मार्ग दर्शन करने के लिए और हमारा नेतृत्व करने के लिए हमारे सर्वोत्तम नेता बनो। आप सर्वव्यापक हो और भूमि तथा द्युलोक दोनों के संरक्षक और संवर्द्धक

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

हो। हमारी संगति दिव्य शक्तियों और लोगों के साथ करो, जिससे हमारे मन सर्वोत्तम बन सकें और सबके लिए सुहृदय बनें।

जीवन में सार्थकता :-

ऊर्जा किस प्रकार बढ़ती या घटती है?

'अग्नि' वह सर्वमान्य ऊर्जा है जिसका आहवान हम अनेकों उद्देश्यों के लिए, भौतिक और आध्यात्मिक मार्गों पर प्रगति के लिए करते हैं। अपने मूल ऊर्जा रूप में, यह अहिंसक है, कोई इसको चुरा नहीं सकता, जला नहीं सकता और किसी भी प्रकार से इसकी हानि नहीं कर सकता। परमात्मा के साथ तथा उसकी दिव्य शक्तियों और लोगों के साथ निकट संगति से हम अपनी ऊर्जाओं को बढ़ा सकते हैं। नकारात्मक शक्तियों और लोगों के साथ यह घटती है।

सूक्ष्म :-

(यजा महे सौमनसाय देवान् – ऋग्वेद 1.76.2)

हमारी संगति दिव्य शक्तियों और लोगों के साथ करो, जिससे हमारे मन सर्वोत्तम बन सकें और सबके लिए सुहृदय बनें।

ऋग्वेद मन्त्र 1.76.3

प्र सु विश्वात्रक्षसो धक्ष्यग्ने भवा यज्ञानामभिशस्तिपावा ।

अथा वहसोमपतिं हरिभ्यामातिथ्यमस्मै चकृमा सुदाने ॥३॥

(प्र – धक्षि से पूर्व लगाकर) (सु – भव से पूर्व लगाकर) (विश्वान् रक्षसः) सभी दुरित, कुटिल और अश्रेष्ठ (धक्षि – प्र धक्षि) पूरी तरह जलना (अग्ने) सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा, ताप, अग्नि, अग्रणी, ऊर्जावान्, प्रकाशित, पवित्र एवं दिव्य (भव – सु भव) सर्वोत्तम बनो (यज्ञानाम्) कल्याण के लिए, यज्ञ कार्यों के (अभिशस्ति पावा) हिंसक से रक्षा करो (अथ) इसके बाद (आवह) रक्षा (सोमपतिम्) दिव्य गुणों और ज्ञान के संरक्षक (हरिभ्याम्) अपनी ज्ञानेन्द्रियों और कर्मेन्द्रियों के साथ (आतिथ्यम्) स्वागत (अस्मै) यह (चकृमा) करो (सुदाने) सब वस्तुओं का सर्वोत्तम दाता।

व्याख्या :-

यज्ञ कार्यों का संरक्षक कौन है और यज्ञ कार्यों का कर्ता कौन है?

'अग्नि' सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा, ताप, अग्नि, अग्रणी, ऊर्जावान्, प्रकाशित, पवित्र एवं दिव्य! सभी दुरित, धूर्त और अश्रेष्ठ विचारों को पूरी तरह से जला दो। कल्याणकारी यज्ञ कार्यों को हिंसा से बचाने वाले सर्वोत्तम संरक्षक बनो। उसके बाद दिव्य गुणों और ज्ञान के साथ–साथ उसकी ज्ञानेन्द्रियों और कर्मेन्द्रियों के संरक्षक और संवर्द्धक बनों। हमें सब वस्तुओं के सर्वोत्तम दाता का भरपूर स्वागत एक मेहमान की तरह करना चाहिए।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

जीवन में सार्थकता :-

'अग्नि' अर्थात् ऊर्जा किस प्रकार सर्वोत्तम दानी या दाता है?

परमात्मा का ऊर्जा रूप सभी वस्तुओं का सर्वोत्तम दानी या दाता है, क्योंकि वह अपनी दी गई वस्तुओं का संरक्षण करता है जो यज्ञ कार्यों के लिए प्रयोग होती हैं। इस प्रक्रिया में वह यज्ञ कार्यों के करने वाले व्यक्ति का भी संरक्षण करता है। अतः हमें सदैव अपने जीवन में परमात्मा का भरपूर स्वागत एक मेहमान की तरह करना चाहिए।

सूक्ति :-

(विश्वान् रक्षसः प्रधक्षि अग्ने – ऋग्वेद 1.76.3)

'अग्नि' सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा, ताप, अग्नि, अग्रणी, ऊर्जावान्, प्रकाशित, पवित्र एवं दिव्य! सभी दुरित, धूर्त और अश्रेष्ठ विचारों को पूरी तरह से जला दो।

सूक्ति :-

(सु भव यज्ञानाम् अभिशस्ति पावा) – ऋग्वेद 1.76.3)

कल्याणकारी यज्ञ कार्यों को हिंसा से बचाने वाले सर्वोत्तम संरक्षक बनो।

सूक्ति :-

(आतिथ्यम् अस्मै चकृमा सुदाव्वे – ऋग्वेद 1.76.3)

हमें सब वस्तुओं के सर्वोत्तम दाता का भरपूर स्वागत एक मेहमान की तरह करना चाहिए।

ऋग्वेद मन्त्र 1.76.4

प्रजावता वचसा वह्निरासा च हुवे नि च सत्सीहदेवैः।
वेषि होत्रमुत पोत्रं यजत्र बोधि प्रयन्तर्जनितर्वसूनाम् ॥4॥

(प्रजावता) लोगों के लिए (वचसा) वाणियों के साथ (वह्नि) सभी सुखों को वहन करने वाला (आसा) मुख से (च) और (हुवे) बुलाना, आहवान करना, पूजा करना (नि) लगातार (च) और (सत्सि) हृदय आकाश में (इह) यहाँ, इस जीवन में (वेषैः) सभी दिव्यताओं के साथ (वेषि) प्राप्त करते हैं (होत्रम) यज्ञ के लिए पदार्थ (उत) और (पोत्रम) शुद्ध करने वाले (यजत्र) संगति (बोधि) हमारी बुद्धि को प्रकाशित करो (प्रयन्त) नियामक (जनितः) उत्पन्न करने वाला (वसूनाम) सभी आवासों को, सभी वस्तुओं को।

व्याख्या :-

हम परमात्मा को किस कार्य के लिए और कैसे बुलायें, आहवान करें?

लोगों के लिए सभी सुखों को वहन करने वाले, परमात्मा, मैं आपको अपने हृदय आकाश में स्थापित करने के लिए, यज्ञ के लिए सभी पदार्थों को प्राप्त करने हेतु और पवित्र करने वाली शक्तियों के साथ संगतिकरण करने के लिए आपको मुख की वाणियों के साथ बुलाता हूँ, आहवान करता हूँ और पूजा करता हूँ। आप हमारी बुद्धियों को प्रकाशित करने के लिए सभी आवासों और सभी वस्तुओं के उत्पादक और नियामक हो।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

जीवन में सार्थकता :-

सभी मनुष्यों की सबसे महत्त्वपूर्ण आवश्यकता क्या है?

सभी मनुष्यों की सबसे महत्त्वपूर्ण आवश्यकता है भौतिक प्रगति या आध्यात्मिक प्रगति के लिए प्रकाशवान होना।

भौतिकवादी लक्ष्यों में इसे भिन्न-भिन्न विज्ञानों और समाज के विषयों का ज्ञान कहा जाता है।

आध्यात्मिक लक्ष्यों के लिए इसका अर्थ है ज्ञान के सर्वोच्च प्रकाश और ऊर्जा के सर्वोच्च स्रोत को जानना तथा उसके साथ एकता की अनुभूति प्राप्त करना।

परन्तु किसी भी अवस्था में अधिक से अधिक ज्ञान प्राप्त करना सभी मनुष्यों की आवश्यकता है। यदि हम परमात्मा के सर्वज्ञाता लक्षण के प्रति चेतन हैं तो निश्चित रूप से हम उस सर्वोच्च चेतना के साथ सम्बन्ध और सम्पर्क स्थापित करके अपने मन को और अच्छा विकसित कर सकते हैं, क्योंकि वह सर्वोच्च चेतना हमारे हृदय आकाश में ही विद्यमान है। एक विनम्र आहवान की छोटी सी चिन्गारी हमारे लिए ज्ञान के अनेकों मार्गों को प्रकाशित कर देगी। स्वाभाविक रूप से तीव्र बुद्धि के साथ कोई भी सभी भौतिक सुखों को प्राप्त कर सकता है।

सूक्ष्म :-

(विषि होत्रम् उत पोत्रम् यजत्र – ऋग्वेद 1.76.4)

हम यज्ञ कार्यों के लिए पदार्थ प्राप्त करते हैं और परमात्मा की पवित्र करने वाली शक्तियों के साथ संगतिकरण करते हैं।

ऋग्वेद मन्त्र 1.76.5

यथा विप्रस्य मनुषो हविर्भिर्देवाँ अयजः कविभिः कविः सन् ।

एवा होतः सत्यतर त्वमद्याग्ने मन्द्रया जुह्वा यजस्व ॥५॥

(यथा) जैसे कि (विप्रस्य) बुद्धिमान (मनुषः) मनुष्यों का (हविर्भि) त्याग की आहुतियों के साथ (देवान्) दिव्य शक्तियाँ (अयजः) जोड़ते हैं, प्राप्त करते हैं (कविभिः) द्रष्टा के साथ, कवि के साथ (कविः सन्) द्रष्टा बनता है, कवि बनता है (एव) उसी प्रकार (होतः) लाने वाला और उपलब्ध करवाने वाला (यज्ञ के लिए सभी पदार्थ) (सत्यतर) अधिकतर सत्य में जीने वाला (त्वम्) आप (अद्य) अब, आज (अग्ने) सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा, ताप, अग्नि, अग्रणी, ऊर्जावान्, प्रकाशित, पवित्र एवं दिव्य (मन्द्रया) आनन्द देने वाला (जुह्वा) वाणियाँ (यजस्व) जुड़ते हैं।

व्याख्या :-

परमात्मा के साथ कौन जुड़ता है?

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

जिस प्रकार मनुष्यों में एक बुद्धिमान व्यक्ति त्यागपूर्ण आहुतियों के साथ दिव्य शक्तियों से जुड़ता है और दिव्य शक्तियों को प्राप्त करता है; द्रष्टा व्यक्तियों, कवियों के साथ कोई भी व्यक्ति द्रष्टा, कवि बन जाता है, उसी प्रकार यज्ञों के लिए आहुतियाँ लाने वाले और उपलब्ध कराने वाले तथा सत्य के साथ जीने वाले आप सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा, की आनन्द देने वाली वाणियों के साथ अभी और आज ही हमारे साथ जुड़े।

जीवन में सार्थकता :-

संगति अर्थात् निकट सम्बन्धों का क्या महत्त्व है?

दिव्य प्रगति कैसे सुनिश्चित करें?

एक व्यक्ति अपनी संगति से जाना जाता है। सर्वोच्च आध्यात्मिक स्तर पर जब कोई व्यक्ति पूरी चेतनता के साथ सर्वोच्च ऊर्जा परमात्मा से जुड़ा रहता है तो वह निश्चित ही उसकी अनुभूति प्राप्त करता है और दिव्य शक्तियों भी प्राप्त करता है।

भौतिक उद्देश्यों के लिए भी आपकी प्रगति आपकी संगति पर निर्भर करती है। समान मन वाले लोगों से जुड़ते समय प्रत्येक व्यक्ति को त्याग और सच्चाई के विज्ञान का अनुसरण करना चाहिए। यह दो लक्षण निश्चित रूप से हमारे जीवन की प्रगति को बढ़ायेंगे।

तकनीकी विशेषज्ञों, वैज्ञानिकों, न्यायाधीशों, व्यापारियों, राजनेताओं, शिक्षाविदों, कलाकारों या कवियों की संगति आपको निश्चित रूप से वही बना देगी, परन्तु त्याग और सच्चाई के दो सरल लक्षण आपकी प्रगति को दिव्य बना देगी।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

ऋग्वेद मण्डल-1 सूक्त 7

ऋग्वेद मन्त्र 1.77.1
Rigveda 1.77.1

कथा दाशेमानये कास्मै देवजुष्टोच्यते भामिने गीः।
यो मर्त्येष्वमृतं ऋतावा होता यजिष्ठ इत्कृणोति देवान्॥१॥

(कथा) क्या, कैसे (दाशेम) देता है, प्रस्तुत करता है, समर्पित करता है (अग्नये) सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा, ताप, अग्नि, अग्रणी, ऊर्जावान्, प्रकाशित, पवित्र एवं दिव्य (का) क्या (अस्मै) यह (देवजुष्टा) दिव्य लोगों से पूजित (उच्यते) उच्चारण (भामिने) ज्ञान का प्रकाश (गीः) वाणी (यः) जो (मर्त्येषु) मरने वालों के बीच (अमृतः) न मरने वाले (ऋतावा) गुरु, शाश्वत सत्य का संरक्षक (होता) लाने वाला और उपलब्ध करवाने वाला (यज्ञ के लिए सभी पदार्थ) (यजिष्ठ) सबके साथ संगति (इत) उनको, भक्तों को (कृणोति) पैदा करता है, बनाता है (देवान्) दिव्य (शक्तियाँ और लोग)।

व्याख्या :-

हम परमात्मा के प्रति क्या समर्पित करें?

हमें परमात्मा के लिए किन वाणियों का उच्चारण करना चाहिए?

सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा को हमें क्या देना चाहिए, प्रस्तुत करना चाहिए या समर्पित करना चाहिए और कैसे? जो दिव्य लोगों के द्वारा पूजित होता है और जो ज्ञान का प्रकाश है उसके लिए हमें किन वाणियों का उच्चारण करना चाहिए?

- वह जो मरने वाले लोगों के बीच न मरने वाला है।
- वह जो शिक्षक है और शाश्वत सत्य का संरक्षक है।
- वह जो यज्ञ के लिए सभी पदार्थों को लाने वाला और उपलब्ध करवाने वाला है।
- वह जो सबके साथ जुड़ा हुआ है।
- वह जो सृष्टि में दिव्य शक्तियों का निर्माता है और लोगों को दिव्य बनाता है।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

जीवन में सार्थकता :-

कौन गहरी इच्छा वाला भक्त है?

हम उस परमात्मा को प्रसन्न करने के लिए या उसके साथ जुड़ने के लिए भौतिक रूप में कुछ भी नहीं दे सकते, जिसके पास असंख्य और असमानान्तर शक्तियाँ हैं।

उसके प्रति समर्पित करने के लिए हमारे पास एक ही वस्तु है अपने अहंकार से छुटकारा पाना, यहाँ तक कि अपने अस्तित्व के अहंकार से भी और अपनी इच्छाओं से छुटकारा पाना। हमें इस सृष्टि के एक उपभोक्ता होने का तो विचार ही समर्पित कर देना चाहिए।

हमारी एक ही इच्छा होनी चाहिए कि उससे प्रेम करें और उसके साथ एकता की अनुभूति प्राप्त करें। निश्चित रूप से वह अपनी दिव्यताओं की वर्षा करने के लिए ऐसे ही गहरी इच्छा वाले भक्तों को चुनेगा।

ऋग्वेद मन्त्र 1.77.2

Rigveda 1.77.2

यो अध्वरेषु शन्तम् ऋतावा होता तमू नमोभिरा कृणुध्वम्।
अग्निर्यद्वेर्मर्ताय देवान्त्स चा बोधाति मनसा यजाति ॥१२॥

(य:) वह जो (अध्वरेषु) अहिंसक यज्ञों के लिए (शन्तम:) शान्ति और आनन्द देने वाला (ऋतावा) शाश्वत सत्य का विशेषज्ञ एवं संरक्षक (होता) लाने वाला और उपलब्ध करवाने वाला (यज्ञ के लिए सभी पदार्थ) (तम् ऊ) केवल उसी के लिए (नमोभिः) नमन के साथ (आ कृणुध्वम्) तुम्हारी तरफ आकर्षित करता है (अग्नि) सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा, ताप, अग्नि, अग्रणी, ऊर्जावान्, प्रकाशित, पवित्र एवं दिव्य (यत्) जब (वः) उपलब्ध कराता है (मर्ताय:) मरणशील मनुष्य (देवान्) दिव्यताएँ (सः) वह (च) और (बोधाति) बुद्धि से प्रकाशित करता है (मनसा) मन से (यजाति) जुड़ना।

व्याख्या :-

मनुष्य के लिए दिव्यताएँ अर्जित करने की क्या प्रक्रिया है?

- वह जो अहिंसक यज्ञों के लिए शांति और आनन्द का दाता है।
- वह जो शाश्वत सत्य का विशेषज्ञ और संरक्षक है।

- वह जो यज्ञों के लिए सभी पदार्थों को लाता है और उपलब्ध करवाता है।

केवल उसी को नमन के साथ अपनी ओर आकर्षित करो। जब वह सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा मरणशील मनुष्य को दिव्यताएँ उपलब्ध कराता है तभी वह मनुष्य परमात्मा को अपने मन के साथ जोड़ता है और बुद्धि में प्रकाश को अर्जित करता है।

जीवन में सार्थकता :-

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

हमारी प्रशंसाओं और नमन की सफलता के लिए क्या पूर्व शर्तें हैं?

जब हम परमात्मा की असमानान्तर और असंख्य शक्तियों का ज्ञान प्राप्त कर लेते हैं और उन आयामों में विश्वास करने लगते हैं तथा उसे अपना नमन प्रस्तुत करना प्रारम्भ कर देते हैं, उसमें हमारे विश्वास को बल देने के लिए हमें दिव्यताएँ प्राप्त होनी प्रारम्भ हो जाती हैं।

इस प्रक्रिया के लिए हमें परमात्मा तथा उसके भिन्न-भिन्न कार्यों और दिव्य शक्तियों तथा मनुष्यों पर उसकी विशेष कृपा वर्षा के बारे में चिन्तन प्रारम्भ कर देना चाहिए। हमें अपने कार्यों को सच्चे यज्ञ की तरह अर्थात् बिना अहंकार और किसी भी प्रकार की इच्छाओं के बिना करते हुए उसकी प्रशंसाएँ प्रारम्भ कर देनी चाहिए। तभी हमारी प्रशंसाएँ और परमात्मा के प्रति नमन सफल होते हैं।

सूक्ति :-

(अग्नि यत् वः मर्तायः देवान् सः च बोधाति मनसा यजाति – ऋग्वेद 1.77.2)

जब वह सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा मरणशील मनुष्य को दिव्यताएँ उपलब्ध कराता है तभी वह मनुष्य परमात्मा को अपने मन के साथ जोड़ता है और बुद्धि में प्रकाश को अर्जित करता है।

ऋग्वेद मन्त्र 1.77.3

Rigveda 1.77.3

स हि क्रतुः स मर्यः स साधुमित्रो न भूदद्भुतस्य रथीः ।
तं मेधेषु प्रथमं देवयन्तीर्विश उप ब्रुवते दस्मारीः ॥३॥

(सः) वह (हि) केवल (क्रतु) सभी कर्मों और बुद्धि का करने वाला (सः) वह (मर्यः) हमें मनुष्य बनाने वाला और हमें मरणशील बनाने वाला (सः) वह (साधुः) साधु के समान, सबका कल्याण चाहने वाला, नियंत्रक (मित्रः) मित्र (न) जैसे कि (भूत) है (अद्भुतस्य) अद्भुत, चमत्कारी (रथीः) रथ का स्वामी और नियंत्रक (तम) उसको (मेधेषु) यज्ञ कार्यों में, युद्धों में और संघर्षों में (प्रथम) सर्वप्रथम और सर्वोत्तम (देवयन्तीः) दिव्यताओं को चाहते हुए (विशः) अनुयायी (उप ब्रुवते) निकट बुलाओ, प्रशंसाओं से सम्बोधित करो (दस्म) दर्शन के लिए, कठिनाईयों के निवारण और नाश के लिए (आरीः) प्रगतिशील।

व्याख्या :-

प्रत्येक अवस्था को सम्बोधित करने और निदान के लिए हम परमात्मा को क्यों बुलाते हैं?

यह मन्त्र सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा को कार्यशील सृष्टि के नाम पर समग्र सत्ता के रूप में घोषित करता है। केवल वही सभी कर्मों और बुद्धियों का करने वाला है।

वह हमें मनुष्य बनाता है और मरणशील बनाता है।

वह साधु के समान है, सबका कल्याण चाहने वाला और सबका नियंत्रक।

वह सूर्यों की तरह सबका मित्र है।

वह इस रथ (समूची सृष्टि और हमारे शरीर) का अद्भुत और चमत्कारी स्वामी एवं नियंत्रक है।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

उस सर्वप्रथम और सर्वोत्तम को उसके अनुयायी दिव्यताओं को चाहते हुए उसे निकट बुलाते हैं और सभी यज्ञ कार्यों में, युद्धों में और संघर्षों में दर्शन के लिए प्रशंसाओं के साथ सम्बोधित करते हैं जिससे वह सारी समस्याओं का निदान और नाश करे। क्योंकि वह प्रगतिशील है (और सबकी प्रगति सुनिश्चित करता है)।

जीवन में सार्थकता :-

समानरूपता और शान्ति बनाये रखने में हमारी अक्षमता का मूल कारण क्या है?

हम एक दिव्य प्रबन्धन के नियंत्रण में एक कठपुतली की तरह हैं, इस पर दृढ़ विश्वास रखते हुए और इसकी अनुभूति करते हुए इसी चेतना के साथ अपना प्रत्येक क्षण केवल यज्ञ कार्यों में व्यतीत करने से ही हम अपनी यात्रा को सुगम और शान्त बनाये रख सकते हैं। अन्यथा उस सर्वोच्च दिव्य से पृथक होना हमारी सभी समस्याओं और उनका निदान करने की अक्षमता तथा जीवन में समरूपता और शान्ति बनाये रखने के लिए हमारी अक्षमता का मूल कारण बन जायेगा।

सूक्ति :-

(सः हि क्रतु सः मर्यः सः साधुः मित्रः न भूत अद्भुतस्य रथीः – ऋग्वेद 1.77.3)

केवल वही सभी कर्मों और बुद्धियों का करने वाला है।

वह हमें मनुष्य बनाता है और मरणशील बनाता है।

वह साधु के समान है, सबका कल्याण चाहने वाला और सबका नियंत्रक।

वह सूर्य की तरह सबका मित्र है।

वह इस रथ (समूची सृष्टि और हमारे शरीर) का अद्भुत और चमत्कारी स्वामी एवं नियंत्रक है।

ऋग्वेद मन्त्र 1.77.4

Rigveda 1.77.4

स नो नृणां नृत्मो रिशादा अग्निगिरोऽवसा वेतु धीतिम्।
तना च ये मधवानः शविष्ठा वाजप्रसूता इषयन्त मन्म ॥४॥

(सः) वह (नः) हमारे (नृणाम) मनुष्यों के बीच (नृत्मः) सर्वोत्तम पुरुष (रिशादः) शत्रुओं और बुराईयों का नाशक (अग्निः) सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा, ताप, अग्नि, अग्रणी, ऊर्जावान्, प्रकाशित, पवित्र एवं दिव्य (गिरः) वाणियाँ (अवसा) संरक्षक (वेतु) इच्छा, स्वीकार करना (धीतिम्) एकाग्रता, समर्पण (तना) विशाल फैला हुआ (च) और (ये) जो (मधवानः) सम्पदा से सम्पन्न (शविष्ठा:) अत्यन्त शक्तिशाली (वाज प्रसूता:) भोजन, ज्ञान और शुभ गुणों से सुसज्जित (इषयन्त) इच्छा, प्रेरणा (मन्म) विचार (नमन के)।

व्याख्या :-

मनुष्यों में सर्वोत्तम कौन है?

'अग्नि', सर्वोच्च ऊर्जा हमसे क्या आशा रखती है?

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा सभी मनुष्यों में सर्वोत्तम पुरुष है। वह शत्रुओं और बुराईयों का नाशक है। वह हमारी वाणियों और इच्छाओं का संरक्षक है, हमारी तरफ से एकाग्रता और समर्पण को स्वीकार करता है। वह विशाल फैला हुआ है, सम्पदा से सम्पन्न है और अत्यन्त शक्तिशाली है, भोजन, ज्ञान और शुभ गुणों से सुसज्जित है।

वह हमसे नमन के विचारों की इच्छा करता है और प्रेरित हमें करता है।

जीवन में सार्थकता :-

एकाग्रता, समर्पण और नमन के क्या लाभ हैं?

परमात्मा की ऊर्जा से हम अपने जीवन में असंख्य कार्यों को सम्पन्न करते हैं, जबकि ऊर्जा की आपूर्ति करने वाला हमसे केवल यही आशा रखता है कि हम अपने कार्यों को एकाग्रता और समर्पण भाव से करें। इस प्रकार हमारी ऊर्जा का स्तर भी बढ़ सकता है।

द्वितीय, वह हमसे उसके प्रति एक चेतना की आशा करता है, जो हमें सम्पूर्ण जीवन तक बिना बाधा के ऊर्जा की आपूर्ति करता है। स्वाभाविक रूप से इस चेतना के साथ हमें लम्बी और लगातार ऊर्जा प्राप्ति के लिए उसकी प्रशंसाएँ और उसके प्रति कृतज्ञता को महसूस करना चाहिए। अतः उसके प्रति हमारे नमन इस जीवन के अन्त तक लगातार और लम्बे समय तक जारी रहने चाहिए।

सूक्ति :-

(सः नः नृणाम् नृतमः – ऋग्वेद 1.77.4)

सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा सभी मनुष्यों में सर्वोत्तम पुरुष है।

सूक्ति :-

(अग्निः गिरः अवसा वेतु धीतिम् – ऋग्वेद 1.77.4)

वह हमारी वाणियों और इच्छाओं का संरक्षक है, हमारी तरफ से एकाग्रता और समर्पण को स्वीकार करता है।

ऋग्वेद मन्त्र 1.77.5

Rigveda 1.77.5

एवाग्निर्गोत्मेभिर्द्वातावा विप्रेभिरस्तोष्ट जातवेदाः।

स एषु द्युम्नं पीपयत्स वाजं स पुष्टिं याति जोषमा चिकित्वान् ॥५॥

(एव) वह (अग्निः) सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा, ताप, अग्नि, अग्रणी, ऊर्जावान्, प्रकाशित, पवित्र एवं दिव्य (गोत्मेभिः) प्रकाशित इन्द्रियों वाला (परमात्मा के प्रति प्रशंसाओं और नमन के साथ) (द्वातावा) शाश्वत सत्य का विशेषज्ञ और संरक्षक (विप्रेभिः) बुद्धियों के साथ (अस्तोष्ट) प्रशंसित (जातवेदाः) समस्त उत्पन्न हुओं को जानने वाला (सः) वह (एषु) इनके बीच (विद्वान् श्रद्धालुओं के) (द्युम्नम्) ज्ञान का प्रकाश (पीपयत) उपलब्ध कराता है (सः)

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

वह (वाजम) भोजन आदि की शक्ति (सः) वह (पुष्टिम) ऊर्जा तथा समृद्धि (याति) उपलब्ध कराता है (जोषम) प्रसन्नता, प्रेम, आत्म संतुष्टि (अचिकित्वान्) सबको जानने वाला।

व्याख्या :-

परमात्मा से हर प्रकार की सम्पदा कौन प्राप्त करता है?

वह 'अग्नि' अर्थात् सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा जो शाश्वत सत्य का विशेषज्ञ और संरक्षक है तथा समस्त उत्पन्न हुओं को जानता है, उन विद्वानों से प्रशंसित होता है जिनके पास प्रकाशित इन्द्रियाँ हैं (परमात्मा की प्रशंसाएँ और नमन करने वाली)।

वह ऐसे (विद्वान और श्रद्धालु) लोगों के बीच ज्ञान का प्रकाश उपलब्ध कराता है। वह भोजन की शक्ति, ऊर्जा और समृद्धि उपलब्ध कराता है।

सर्वज्ञाता अर्थात् सबको जानने वाला होने के कारण वह प्रसन्नता, प्रेम और आत्म संतुष्टि का कारण है।

जीवन में सार्थकता :-

हम अपनी ऊर्जा के स्तर को किस प्रकार बढ़ा या घटा सकते हैं?

ऊर्जा सभी प्राणियों की अत्यन्त व्यक्तिगत शक्ति है, विशेष रूप से चेतन मनुष्यों की। कोई भी व्यक्ति इसे अपनी इच्छानुसार अर्थात् इच्छाशक्ति से बढ़ा या घटा सकता है। सभी ऊर्जाओं का प्राकृतिक स्रोत परमात्मा ही है, सभी जीवों में विद्यमान। अतः ऊर्जा की प्रशंसा करने का अर्थ परमात्मा से जुड़ना ही है और एक प्रकार से अपनी प्रशंसा करना है अर्थात् उस ऊर्जा रूप परमात्मा की। इसी प्रकार अन्य लोगों के बीच उसी ऊर्जा रूप परमात्मा की प्रशंसा करना अर्थात् जो कुछ भी किसी में प्रशंसनीय है। अपनी ऊर्जा को नकारात्मक विचारों और कार्यों में व्यर्थ नहीं करना चाहिए।

सूक्ति :-

(सः पुष्टिम् याति जोषम अचिकित्वान् – ऋग्वेद 1.77.5)

वह भोजन की शक्ति, ऊर्जा और समृद्धि उपलब्ध कराता है। सर्वज्ञाता अर्थात् सबको जानने वाला होने के कारण वह प्रसन्नता, प्रेम और आत्म संतुष्टि का कारण है।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

ऋग्वेद मण्डल-1 सूक्त 78

ऋग्वेद मन्त्र 1.78.1

Rigveda 1.78.1

अभि त्वा गोतमा गिरा जातवेदो विचर्षणे । द्युम्नैरभि प्र णोनुमः ॥१॥

(अभि) की तरफ (त्वा) आपकी (गोतमा) प्रकाशित ज्ञानेन्द्रियों वाला (परमात्मा के प्रति प्रशंसाओं और नमन के साथ) (गिरा) वाणियाँ (जातवेदः) समस्त उत्पन्न हुओं को जानने वाला (विचर्षणे) विशेष रूप से सबको देखता है (द्युम्नैः) प्रकाशवान होने के लिए (अभि प्र णोनुमः) अपने सभी विचार, विनम्र श्रद्धा और नमन आपको प्रस्तुत करते हैं।

व्याख्या :-

हम अपनी श्रद्धा और नमन परमात्मा के प्रति क्यों प्रस्तुत करते हैं?

प्रकाशवान लोग परमात्मा को क्यों सम्बोधित करते हैं?

'अग्नि', सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा सबको जानता है और सबको विशेष रूप से देखता है, इसलिए प्रकाशनवान इन्द्रियों वाले लोग (परमात्मा के प्रति प्रसन्नताओं और नमन के साथ) आपके प्रति अपनी वाणियाँ सम्बोधित करते हैं।

हम प्रकाशवान होने के लिए अपनी गहरी और विनम्र श्रद्धा के साथ आपको नमन करते हैं।

जीवन में सार्थकता :-

प्रकाशवान होने की प्रक्रिया किस प्रकार फैलती है?

भारतीय ज्ञान परम्परा क्या है?

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

शाश्वत सत्य अर्थात् परमात्मा का ज्ञान प्राप्त करने की प्रक्रिया परमात्मा के सर्वविद्यमान, सर्वज्ञाता और सर्वशक्तिमान होने के विश्वास के साथ प्रारम्भ होती है। जब एक श्रद्धालु अपने अन्दर परमात्मा की उपस्थिति पर ध्यान एकाग्र करता है तो स्वाभाविक रूप से वह न केवल अपने मन में प्रकाश प्राप्त करता है बल्कि उसकी इन्द्रियाँ और समूचा शरीर भी उस ज्ञान से तरंगित होने लगता है। ऐसे दिव्य व्यक्तित्व की तरंगों को देखकर और महसूस करके अन्य सामान्य लोग भी उसका अनुसरण करने लगते हैं, परमात्मा की प्रशंसा करने लगते हैं और प्रकाश की प्रार्थना करते हैं। भारतीय ज्ञान परम्परा की यही प्रक्रिया है जो आचरण, व्यवहार और तरंगों से फैलती है, केवल मात्र कक्षा की व्यवस्था से नहीं। बेशक ज्ञान को एक पुस्तक के रूप में और प्रेरणा के रूप में जारी रखने के लिए कक्षा व्यवस्था भी महत्वपूर्ण है।

सूक्ति :-

(द्युम्नैः अभि प्र णोनुमः – ऋग्वेद 1.78.1)

हम प्रकाशवान् होने के लिए अपनी गहरी और विनम्र श्रद्धा के साथ आपको नमन करते हैं।

ऋग्वेद मन्त्र 1.78.2

Rigveda 1.78.2

तमु त्वा गोतमो गिरा रायस्कामो दुवस्यति । द्युम्नैरभि प्र णोनुमः ॥२॥

(तम् उ) उसको (त्वा) आपको (गोतमः) प्रकाशवान् इन्द्रियों वाले (परमात्मा के प्रति प्रशंसाओं और नमन के साथ) (गिरा) वाणियाँ (रायस्कामः) सम्पदा की इच्छा करते हुए (दुवस्यति) पूजा (द्युम्नैः) प्रकाशवान् होने के लिए (अभि प्र णोनुमः) अपने सभी विचार, विनम्र श्रद्धा और नमन आपको प्रस्तुत करते हैं।

व्याख्या :-

क्या प्रकाशवान् इन्द्रियों वाला व्यक्ति सम्पदा की कामना करता है?

उस आपको (अग्नि), प्रकाशवान् इन्द्रियों (परमात्मा के प्रति प्रशंसाओं और नमन) वाला व्यक्ति आपकी तरफ पूजा और प्रार्थना करता है, सम्पदा की इच्छाओं के साथ, हम प्रकाशवान् होने के लिए अपनी गहरी और विनम्र श्रद्धा के साथ आपको नमन करते हैं।

जीवन में सार्थकता :-

सम्पदा के भिन्न-भिन्न आयाम कौन से हैं?

यह मन्त्र एक प्रश्न खड़ा करता है कि क्या प्रकाशवान् इन्द्रियों वाला व्यक्ति भी सम्पदा की कामना करता है? हमारा यह दृष्टिकोण है कि प्रकाशवान् इन्द्रियों वाला व्यक्ति पूर्ण प्रकाश को प्राप्त कर चुका होता है, अतः वह भौतिक सम्पदा की कामना नहीं करेगा।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

दूसरा दृष्टिकोण यह है कि प्रकाशवान इन्द्रियों वाला व्यक्ति पूर्ण प्रकाश प्राप्त नहीं कर पाया परन्तु अच्छी प्रगति कर चुका है तो सम्भावना है कि उसमें सम्पदा को प्राप्त करने की इच्छा विद्यमान हो, परन्तु केवल यज्ञ कार्यों के लिए।

अतः निष्कर्ष यह है, कि यदि कोई प्रकाशवान व्यक्ति सम्पदा की कामना करता भी है तो वह अपने व्यक्तिगत सुखों के लिए नहीं अपितु केवल यज्ञ कार्यों के लिए करता है।

सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण यह है कि सम्पदा के सभी आयामों में आध्यात्मिक सम्पदा भी शामिल है। एक प्रकाशवान व्यक्ति निश्चित रूप से उस सर्वोच्च आध्यात्मिक सम्पदा की तो कामना करता ही है और उसके साथ प्रगति चाहता है।

ऋग्वेद मन्त्र 1.78.3

तमु त्वा वाजसातममङ्गिरस्वद्वामहे । द्युम्नैरभि प्र णोनुमः ॥३॥

(तम् उ) उसको (त्वा) आपको (वाजसातम) सभी सम्पदाओं और शक्तियों का देने वाला (अङ्गिरस्वत) एक अभिन्न भाग की तरह (सभी जीवों का, हमारे शरीर और समूचे ब्रह्माण्ड का) (हवामहे) हम बुलाते हैं, आह्वान करते हैं और पूजा करते हैं (द्युम्नैः) प्रकाशवान होने के लिए (अभि प्र णोनुमः) अपने सभी विचार, विनम्र श्रद्धा और नमन आपको प्रस्तुत करते हैं।

व्याख्या :-

सभी सम्पदाओं का देने वाला कौन है?

उस आपको, 'अग्नि', सभी सम्पदाओं और शक्तियों को देने वाला, एक अभिन्न भाग की तरह (सभी जीवों के, हमारे शरीर और समूचे ब्रह्माण्ड के), हम आपको बुलाते हैं, आह्वान करते हैं और पूजा करते हैं। हम प्रकाशवान होने के लिए अपनी गहरी और विनम्र श्रद्धा के साथ आपको नमन करते हैं।

जीवन में सार्थकता :-

हमें परमात्मा की अभिन्नता के बारे में कैसे सोचना चाहिए?

हमें यह महसूस करना चाहिए और इसकी अनुभूति के लिए प्रगति करनी चाहिए कि परमात्मा अपने ऊर्जा रूप में सबके लिए अङ्गिरस्वत् है अर्थात् सभी जीवों का हर समय एक अभिन्न भाग। यह प्रक्रिया उसकी अभिन्नता की अन्तिम अनुभूति तक चलती रहनी चाहिए अर्थात् जब तक कोई यह अनुभव न कर ले कि वह परमात्मा से भिन्न नहीं है। अभिन्नता का अर्थ यह है कि परमात्मा हर जीव और निर्जीव का अभिन्न भाग है। यह उसकी सर्वविद्यमानता है।

ऋग्वेद मन्त्र 1.78.4

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

तमु त्वा वृत्रहन्तमं यो दस्यूरवधूनुषे । द्युम्नैरभि प्र णोनुमः ॥४॥

(तम् उ) उसको (त्वा) आपको (वृत्रहन्तम्) मन की वृत्तियों, अज्ञानता के आवरण का नाशक (य:) जो (दस्यून्) दुष्ट, कपटी, अश्रेष्ठ वृत्तियाँ (अवधूनुषे) नाश करने के लिए कम्पित करता है (द्युम्नैः) प्रकाशवान होने के लिए (अभि प्र णोनुमः) अपने सभी विचार, विनम्र श्रद्धा और नमन आपको प्रस्तुत करते हैं।

व्याख्या :-

हमारी वृत्तियों और बुरी प्रवृत्तियों को कौन नष्ट करता है?

उस आपको, 'अग्नि', मन की वृत्तियों और अज्ञानता के आवरण आदि को नष्ट करने वाला जो सभी बुराईयों, कपट और अश्रेष्ठ प्रवृत्तियों को हमारे जीवन से नष्ट कर देता है, हम प्रकाशवान होने के लिए अपनी गहरी और विनम्र श्रद्धा के साथ आपको नमन करते हैं।

जीवन में सार्थकता :-

हमारे जीवन यात्रा में मुख्य बाधा कौन सी है?

सामान्यतः लोग अपने मन पर इतना अधिक ध्यान एकाग्र रखते हैं कि प्रत्येक अच्छे कार्य के लिए वे अपने प्रयासों, बुद्धि, विशेषज्ञता और शक्तियों आदि की प्रशंसा करते हैं। यदि ऐसा है तो प्रत्येक व्यक्ति अपने मन की सभी वृत्तियों और अज्ञानता के आवरण तथा बुरी वृत्तियों को सदा के लिए नष्ट करने की क्षमता प्राप्त कर पाता। मन पूरी तरह से शक्तिशाली नहीं है। पूरी शक्तियाँ तो केवल परमात्मा के पास ही हैं। अतः, अपनी सभी सम्पदाओं और यहाँ तक कि अपने अस्तित्व की भावनाओं को भी परमात्मा के प्रति पूर्ण समर्पण ही आपके अन्दर दिव्यताओं का विकास कर सकता है। हमारा अहंकार हमारी जीवन यात्रा (आध्यात्मिक एवं भौतिक) पर सबसे मुख्य बाधा है।

ऋग्वेद मन्त्र 1.78.5

अवोचाम रहूगणा अग्नये मधुमद्वचः । द्युम्नैरभि प्र णोनुमः ॥५॥

(अवोचाम) सबको बोलना चाहिए (रहूगणा) बुराईयों और पापों से मुक्त (अग्नये) सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा, ताप, अग्नि, अग्रणी, ऊर्जावान्, प्रकाशित, पवित्र एवं दिव्य (मधुमद्वत) मधुर (वचः) शब्द (द्युम्नैः) प्रकाशवान होने के लिए (अभि प्र णोनुमः) अपने सभी विचार, विनम्र श्रद्धा और नमन आपको प्रस्तुत करते हैं।

व्याख्या :-

परमात्मा के प्रति मधुर शब्द कौन बोल सकता है?

उन सभी लागों को जो बुराईयों और पापों से मुक्त हैं, 'अग्नि', परमात्मा की सर्वोच्च ऊर्जा के प्रति मधुर शब्दों का उच्चारण करना चाहिए। हम प्रकाशवान होने के लिए अपनी गहरी और विनम्र श्रद्धा के साथ आपको नमन करते हैं।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

जीवन में सार्थकता :-

पवित्रता का क्या महत्त्व है?

जीवन में पवित्रता के बिना परमात्मा के प्रति मधुर शब्द पूरी तरह से शून्य और व्यर्थ हैं। परमात्मा अर्थात् आपके जीवन की प्राकृतिक ऊर्जा आपके मन के प्रत्येक कार्य और सभी विचारों को पूरी तरह से जानता है जिसे सामान्य व्यक्ति जान भी सकते हैं और नहीं भी। यह मन्त्र यह प्रेरणा देता है कि परमात्मा के द्वारा केवल पवित्र व्यक्तियों के मुख से निकले मधुर शब्द ही स्वीकार होते हैं और प्रकाश के रूप में उन्हें वापिस मिलते हैं, क्योंकि परमात्मा पवित्रता में भी सबसे पवित्र है। वह पवित्रता को ही स्वीकार करता है और पवित्रता को ही वापिस देता है।

बिना पवित्रता के तो समाज में भी मधुर शब्द अपना प्रभाव बहुत जल्दी समाप्त कर डालते हैं।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

ऋग्वेद मण्डल-1 सूक्त 79

ऋग्वेद मन्त्र 1.79.1

हिरण्यकेशो रजसो विसारेऽहिर्दुनिर्वातइव ध्रजीमान् ।
शुचिभ्राजा उषसो नवेदा यशस्वतीरपस्युवो न सत्याः ॥१॥

(हिरण्यकेशः) स्वर्णिम किरणों को धारण करने वाला (प्रकाश, ताप, ज्ञान की) (रजसः) सभी लोक, शरीर (विसारे) विस्तृत, स्थापित (अहिः) मेघ (धुनिः) कम्पित करते हुए (वात इव) वायु की तरह (ध्रजीमान्) प्रचण्ड (तीव्र गतिमान्) (शुचिभ्राजा) पवित्र ज्ञान (उषसः न वेदा) ऊषा को जानने वाला (दिन के शुभारम्भ को, ज्ञान के शुभारम्भ को और रात्रि तथा अज्ञान को) (यशस्वतीः) महान् प्रशंसा और प्रसिद्धि वाला (अपस्युवः) कर्तव्यों के प्रति समर्पित (न) जैसे (सत्याः) सत्यता ।

व्याख्या :-

'अग्नि' के प्रेरक लक्षण कौन से हैं?

इस सूक्त का देवता भी 'अग्नि' अर्थात् परमात्मा की सर्वोच्च ऊर्जा है जिसके विशेष लक्षण हमारी प्रेरणा के लिए इस मन्त्र में सूचीबद्ध है :-

1. हिरण्यकेशः रजसः विसारे अर्थात् स्वर्णिम किरणों को धारण करने वाला (प्रकाश, ताप, ज्ञान की) सभी लोकों एवं शरीरों में विस्तृत, स्थापित ।
2. अहिः धुनिः अर्थात् मेघों को कम्पित करता है (आकाश में, मन में) ।
3. वात इव ध्रजीमान् अर्थात् वायु की तरह प्रचण्ड (तीव्र गतिमान्) ।
4. शुचिभ्राजा अर्थात् पवित्र ज्ञान ।
5. उषसः न वेदा अर्थात् ऊषा को जानने वाला (दिन के शुभारम्भ को, ज्ञान के शुभारम्भ को और रात्रि तथा अज्ञान को) ।
6. यशस्वतीः अर्थात् महान् प्रशंसा और प्रसिद्धि वाला ।
7. अपस्युवः न सत्याः अर्थात् सत्य की तरह कर्तव्यों के प्रति समर्पित (दृढ़ निश्चयी) ।

जीवन में सार्थकता :-

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

मानव जीवन का गन्तव्य स्थान क्या है?

'अग्नि' अर्थात् परमात्मा के ऊर्जा रूप और सूर्य के ये सभी लक्षण हमें एक दिव्य आत्म विश्वास के साथ यह प्रेरणा प्रदान करते हैं कि हम ज्ञान के साथ चमकें, परमात्मा के प्रति श्रद्धापूर्ण प्रेम के साथ चमकें, तपस्याओं, सत्यताओं और कर्तव्यों के प्रति त्वरित समर्पण के साथ चमकें।

इन लक्षणों के साथ हम निश्चित रूप से अपने जीवन में अज्ञानता के अन्त और अनुभूति के उदय को महसूस कर पायेंगे। वह ऊषा अर्थात् अनुभूति का उदय ही हमारे जीवन का गन्तव्य बन जायेगा।

ऋग्वेद मन्त्र 1.79.2

आ ते सुपर्णा अमिनन्तं एवैः कृष्णो नोनाव वृषभो यदीदम् ।
शिवाभिर्न स्मयमानाभिरागात्पतन्ति मिहः स्तनयन्त्यभ्रा ॥२॥

(आ) सभी दिशाओं से (ते) आपकी (सुपर्णा) किरणें (अमिनन्तन) तोड़ती हैं, प्रेरित करती हैं (एवैः) गति एवं गतिविधियों के साथ, (कृष्णः) कृष्ण अर्थात् सांवले रंग वाला (नोनाव) धनि करते हुए (वृषभः) वर्षा करते हुए मेघ (यत् इदम्) जब यह होता है (शिवाभिः) कल्याणकारी लक्षणों के साथ (न) जैसे कि (स्मयमानाभिः) प्रसन्नता की मुस्कराहट के साथ (आगात्) आता है (पतन्ति) गिरना, वर्षा (मिहः) वर्षा करता है (स्तनयन्ति) गर्जना करता है (अभ्रा) मेघ।

व्याख्या :-

'अग्नि' सूर्य के रूप में सबके कल्याण के लिए किस प्रकार वर्षा करती है?

इस मन्त्र में 'अग्नि' को सूर्य के रूप में सम्बोधित किया गया है।

आपकी (सूर्य की) किरणें, सभी दिशाओं से गाढ़े सांवले रंग वाले वर्षा करते हुए मेघों को गर्जना करते हुए गति और गतिविधियों के साथ तोड़ती हैं, प्रेरित करती हैं। जब ऐसा होता है तो सबके कल्याणकारी लक्षणों के साथ वर्षा की बूँदें नीचे गिरती हैं जैसे कि, प्रसन्नता की मुस्कराहट के साथ मेघ गर्जते हुए दहाड़ते हैं।

जीवन में सार्थकता :-

एक सच्चे जिज्ञासु के लिए परमात्मा किस प्रकार सूर्य के समान बन जाते हैं?

सूर्य की इस कार्य प्रणाली को परमात्मा के ऊर्जा रूप पर लागू करें तो यह स्पष्ट होता है कि अपने आध्यात्मिक जिज्ञासुओं के लिए परमात्मा स्वयं ही सूर्य के समान बन जाते हैं। परमात्मा एक सच्चे श्रद्धालु को प्रेरित करते हैं और उसके मन की वृत्तियों के मेघों को तथा अज्ञानता के आवरणों को तोड़ देते हैं। इसके बाद वे श्रद्धालु भक्त में ज्ञान की वर्षा प्रारम्भ कर देते हैं जिससे बड़ी संख्या में लोगों का कल्याण और उनकी प्रसन्नता सुनिश्चित हो सके।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

ऋग्वेद मन्त्र 1.79.3

यदीमृतस्य पयसा पियानो नयन्तृतस्य पथिभी रजिष्ठैः ।
अर्यमा मित्रो वरुणः परिज्मा त्वचं पृचन्त्युपरस्य योनौ ॥३॥

(यत) जब (ईम) निश्चित रूप से (ऋतस्य) ऋत का, वास्तविक सत्य का, परमात्मा का (पयसा) जूस, पेय (पियानः) पूर्ण, पीना (नयन्त्वा) प्राप्त करते हुए (ऋतस्य) ऋत का, वास्तविक सत्य का, परमात्मा का (पथिभीः) पथों से (रजिष्ठैः) सीधा, सरलतम् (अर्यमा) नियंत्रक (मित्रः) मित्र, प्राण (वरुणः) नियामक (परिज्मा) सर्वत्र गति करते हुए (त्वचम्) स्पर्श, त्वचा (पृचन्ति) सम्बद्ध (उपरस्य) ऊपर के, मेघ, मन का स्तर (योनौ) स्थान पर।

व्याख्या :-

परमात्मा किस प्रकार एक सच्चे श्रद्धालु को ऋत अर्थात् वास्तविक सत्य के साथ जोड़ देते हैं?
जब निश्चित रूप से सीधे, सरलतम् और तीव्रतम् मार्गों से ऋत को प्राप्त करते हुए परमात्मा श्रद्धालु भक्त को ऋत के सार अर्थात् वास्तविक सत्य के साथ पूर्ण कर देते हैं, उसे एक नियंत्रक, मित्र और नियामक की तीन प्रकार की शक्तियों के साथ, सर्वत्र गतिशील रहते हुए, परमात्मा का वह ऊर्जा रूप उस श्रद्धालु भक्त की त्वचा अर्थात् बाहरी आवरण और मन के ऊपरि मेघों वाले स्थान पर स्वयं को जोड़ देते हैं।

जीवन में सार्थकता :-

ऋत से जुड़ने का क्या परिणाम होता है?
श्रद्धालु भक्त का शरीर और मन भविष्य में कभी भी पृथक न होने के लिए सर्वोच्च आत्मा के साथ जुड़ जाता है। इस प्रकार ऋत की प्राप्ति अर्थात् वास्तविक सत्य की प्राप्ति स्थाई आनन्द है।

ऋग्वेद मन्त्र 1.79.4

अग्ने वाजस्य गोमत इशानः सहसो यहो ।
अस्मे धेहि जातवेदो महि श्रवः ॥४॥

(अग्ने) सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा, ताप, अग्नि, अग्रणी, ऊर्जावान्, प्रकाशित, पवित्र एवं दिव्य (वाजस्य) सम्पदा सम्पन्न का (गोमतः) महान् दिव्य बुद्धि वाला (गाय के समान) (इशानः) र्खामी, सम्मानित, इच्छित (सहसः) बल का (यहः) पुत्र, खजाना (अस्मे) हमारे में (धेहि) दो, धारणा करता है (जातवेदः) समस्त उत्पन्न हुओं को जानने वाला (महि) महान्, बड़ा (दिव्य) (श्रवः) सुनने की शक्ति (दिव्य वाणी अर्थात् वेद को सुनने)।

व्याख्या :-

'अग्नि' का क्या बल है?
'अग्नि' से हम क्या प्रार्थना करते हैं?

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

'अग्नि', परमात्मा की सर्वोच्च ऊर्जा, आप बल के पुत्र हो, बल का कोष हो। आप सभी सम्पदा सम्पन्न लोगों के और जो लोग महान् दिव्य बुद्धि को धारण करते हैं, उनके सम्मानित स्वामी हो। समस्त उत्पन्न हुओं के ज्ञाता होने के नाते कृपया हमारे अन्दर महान्, बड़ी और दिव्य श्रवण शक्ति (दिव्य वाणी अर्थात् वेद को सुनने की शक्ति) प्रदान करो, धारण कारण करो।

जीवन में सार्थकता :-

आध्यात्मिक ऊर्जाओं का क्या महत्त्व है?

सामन्यतः लोग ऊर्जा को शारीरिक बल तथा मांसपेशियों के बल के रूप में ही समझते हैं।

बुद्धिमान लोग मानसिक ऊर्जा को भौतिक शारीरिक ऊर्जा से भी अधिक शक्तिशाली समझते हैं।

परन्तु वेद को प्राप्त करने की प्रक्रिया, भारतीय ज्ञान परम्परा की प्रक्रिया, आध्यात्मिक ऊर्जाओं का विकास करके दिव्य वाणियों को सुनने पर ध्यान एकाग्र करती है। यह दिव्य वाणियाँ अनौपचारिक तो होती हैं, परन्तु इनकी प्रकृति दिव्य होती है। यह ज्ञान एक श्रद्धालु भक्त के पास महान् मानसिक बल के साथ आता है।

अतः किसी भी रूप में प्रत्येक व्यक्ति के पास आध्यात्मिक ऊर्जा का एक मजबूत आधार अवश्य ही होना चाहिए।

सूक्ष्मता :-

(अस्मे धेहि जातवेदः महि श्रवः – ऋग्वेद 1.79.5)

समस्त उत्पन्न हुओं के ज्ञाता होने के नाते कृपया हमारे अन्दर महान्, बड़ी और दिव्य श्रवण शक्ति (दिव्य वाणी अर्थात् वेद को सुनने की शक्ति) प्रदान करो, धारण कारण करो।

ऋग्वेद मन्त्र 1.79.5

स इधानो वसुष्कविरग्निरीळेन्यो गिरा ।

रेवदस्मभ्यं पुर्वणीक दीदिहि ॥५॥

(सः) वह (इधानः) प्रकाशित (वसु) सबको आवास देने वाला, सबमें बसने वाला (कविः) द्रष्टा, कवि (अग्निः) सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा, ताप, अग्नि, अग्रणी, ऊर्जावान्, प्रकाशित, पवित्र एवं दिव्य (ईळेन्यः) प्रेम करने के योग्य (गिरा) वाणी के समान (प्रशंसाओं में) (रेवत) सम्पदा से भरपूर (अस्मभ्यम्) हमारे लिए (पुर्वणीक) सभी बलों के साथ प्रकाशित (दीदिहि) हमारे अन्दर प्रकाशित होती है।

व्याख्या :-

'अग्नि' प्रेम करने योग्य क्यों हैं?

वह, परमात्मा की सर्वोच्च ऊर्जा, सर्वाधिक प्रकाशित और प्रज्ज्वलित है। वह सबको आवास देता है और स्वयं सबमें बसता है। वह सर्वोच्च द्रष्टा, कवि है। वह वाणियों के साथ (प्रशंसापूर्ण) प्रेम करने योग्य है।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

वह सर्वोच्च ऊर्जा, सभी बलों के साथ प्रज्ज्वलित, सभी सम्पदाओं से परिपूर्ण, कृपया हमारे अन्दर, हमारे लिए प्रकाशित हो जाओ।

जीवन में सार्थकता :-

'अग्नि' किस प्रकार सर्वाधिक प्रकाशित और प्रज्ज्वलित है?

सूर्य इस सौर मण्डल में सभी ऊर्जाओं का मुख्य दृष्ट्यमान स्रोत है। इस ब्रह्माण्ड में, जो स्वयं सीमित है, असंख्य सूर्य हैं। परन्तु परमात्मा की वह सर्वोच्च ऊर्जा असीम है, स्वाभाविक रूप से, सभी सूर्यों और इस सृष्टि की सभी दिव्य शक्तियों से बड़ी, महान् और अधिक दिव्य है। अतः सभी ऊर्जाओं का प्रथम, मूल और सर्वोच्च स्रोत केवल भगवान् ही है।

स्रोत :-

(रेवत् अस्मभ्यम् पुर्वणीक दीदिहि – ऋग्वेद 1.79.5)

वह सर्वोच्च ऊर्जा, सभी बलों के साथ प्रज्ज्वलित, सभी सम्पदाओं से परिपूर्ण, कृपया हमारे अन्दर, हमारे लिए प्रकाशित हो जाओ।

ऋग्वेद मन्त्र 1.79.6

क्षपो राजन्तुत त्मनाग्ने वस्तोरुतोषसः ।

स तिग्मजम्भ रक्षसो दह प्रति ॥६॥

(क्षपः) रात्रि (राजन) ज्ञान से प्रकाशित और अन्यों को प्रकाशित करने वाला (उत्त) और (त्मना) आप स्वयं (अग्ने) सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा, ताप, अग्नि, ऊर्जावान्, प्रकाशित, पवित्र एवं दिव्य (वस्तोः) दिन (उत्त) और (उषसः) प्रातःकालीन ऊषा वेला (सः) वह (तिग्म जम्भ) ज्ञान और शक्तियों का ताकतवर या आधिकारिक स्वामी (रक्षसः) बुराईयों, कपटियों, अश्रेष्ठ को (दह प्रति) एक-एक करके, प्रत्येक को जला देता है, नष्ट कर देता है।

व्याख्या :-

परमात्मा की अधिकार शक्ति क्या है?

ज्ञान से सर्वोच्च प्रकाशित और अन्यों को प्रकाशित करने वाले, आपने स्वयं रात्रि, दिन और ऊषाकाल का अपनी ऊर्जा अर्थात् 'अग्नि' से निर्माण करते हो।

आप ज्ञान और शक्तियों के आधिकारिक स्वामी हो, जो एक-एक करके और प्रत्येक बुराई, कपटी और अश्रेष्ठ प्रवत्तियों का नाश करते हो।

जीवन में सार्थकता :-

प्रकाशवान् व्यक्ति का क्या कर्तव्य होता है?

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

सभी बुराईयों, कपटी और अश्रेष्ठ प्रवृत्तियों का नाश करने के लिए वे हमें प्रकाशित करते हैं। उसका ज्ञान और शक्तियाँ सर्वोच्च हैं। वह केवल उनको प्रकाशित करते हैं जो इसकी इच्छा करते हैं और उनके माध्यम से वह बुराईयों, कपटी और अश्रेष्ठ बुद्धियों के मार्गदर्शन और प्रेरणा की प्रक्रिया की आशा करते हैं। सीधे तौर पर वे केवल उन लोगों की बुद्धि में से बुरी प्रवृत्तियों का नाश करते हैं जो इसकी कामना करते हैं। इसके बाद अब यह प्रकाशवान व्यक्ति पर निर्भर करता है कि वह उस ज्ञान के प्रकाश को उन लोगों के बीच प्रस्तुत करे जो अज्ञानी हैं।

सूक्ति :-

(सः तिग्म जाम्भ रक्षसः दह प्रति – ऋग्वेद 1.79.6)

आप ज्ञान और शक्तियों के आधिकारिक स्वामी हो, जो एक-एक करके और प्रत्येक बुराई, कपटी और अश्रेष्ठ प्रवृत्तियों का नाश करते हो।

ऋग्वेद मन्त्र 1.79.7

अवा नो अग्न ऊतिभिर्गायत्रस्य प्रभर्मणि ।

विश्वासु धीषु वन्द्य ॥७॥

(अव) सुरक्षित (नः) हमें (अग्ने) सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा, ताप, अग्नि, अग्रणी, ऊर्जावान्, प्रकाशित, पवित्र एवं दिव्य (ऊतिभिः) अपनी संरक्षण शक्तियों के साथ (गायत्रस्य) गायत्री (गाने वाले को सुरक्षित करने वाली) का ज्ञान (प्रभर्मणि) मजबूती से इसको धारण करना (विश्वासु) सब (धीषु) बुद्धि के कार्य, ज्ञान के लेन-देन (वन्द्य) प्रेम करने योग्य।

व्याख्या :-

परमात्मा कब प्रेम करने के योग्य होता है?

हम परमात्मा का संरक्षण क्यों चाहते हैं?

परमात्मा की सर्वोच्च ऊर्जा, कृपया अपनी संरक्षण शक्तियों के साथ हमें सुरक्षित करो जिससे हम गायत्री के ज्ञान को मजबूती के साथ धारण कर सकें। (जो गाने वाले को ज्ञान के साथ सुरक्षित और संतुष्ट करती है)। आप बुद्धि की सभी गतिविधियों और ज्ञान के लेन-देन में प्रेम करने योग्य हो।

जीवन में सार्थकता :-

गायत्री के प्रति श्रद्धा भवित का क्या परिणाम होता है?

जो व्यक्ति गायत्री के उच्चारण का अभ्यास करता है और पूर्ण हृदय के साथ उसको जीवन में धारण करता है, उसे एक सुन्दर विकसित बुद्धि प्राप्त होती है जो उच्च संवेदनशीलता और विनम्रता आदि से भरपूर होती है। ऐसे महान् मस्तिष्क के साथ, कोई व्यक्ति जो भी कार्य करता है, वह दिव्य बन जाता है और उस परमात्मा की पूजा, प्रशंसा और प्रेम के रूप में परमात्मा के स्वीकार्य होता है।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

सूक्ति :-

(अव नः अग्ने ऊतिभि: गायत्रस्य प्रभर्मणि – ऋग्वेद 1.79.7)

परमात्मा की सर्वोच्च ऊर्जा, कृपया अपनी संरक्षण शक्तियों के साथ हमें सुरक्षित करो जिससे हम गायत्री के ज्ञान को मजबूती के साथ धारण कर सकें। (जो गाने वाले को ज्ञान के साथ सुरक्षित और संतुष्ट करती है)

सूक्ति :-

(विश्वासु धीषु वन्द्य – ऋग्वेद 1.79.7)

आप बुद्धि की सभी गतिविधियों और ज्ञान के लेन-देन में प्रेम करने योग्य हो।

ऋग्वेद मन्त्र 1.79.8

आ नो अग्ने रथिं भर सत्रासाहं वरेण्यम् ।

विश्वासु पृत्सु दुष्टरम् ॥८॥

(आ) सभी दिशाओं से, पूर्ण रूप से (नः) हमें (अग्ने) सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा, ताप, अग्नि, अग्रणी, ऊर्जावान्, प्रकाशित, पवित्र एवं दिव्य (रथिम) सभी सम्पदाएँ (भौतिक तथा आध्यात्मिक) (भर) उपलब्ध करवाओ (सत्रा साहम्) सबको और सदैव जीतते हुए (वरेण्यम्) वरण करने के योग्य (विश्वासु) सभी (पृत्सु) युद्धों में, संघर्षों में (दुष्टरम्) अजेय और दुर्जेय ।

व्याख्या :-

हमें अपनी भौतिक और आध्यात्मिक सम्पदा से क्या आशा करनी चाहिए?

'अग्नि' परमात्मा की सर्वोच्च ऊर्जा! कृपया हमें सभी दिशाओं से और पूर्ण रूप से सभी सम्पदाएँ (भौतिक तथा आध्यात्मिक) उपलब्ध कराईये जो वरण करने के योग्य है तथा सभी युद्धों और संघर्षों में अजेय और दुर्जेय है तथा उन सब युद्धों आदि को सदा के लिए जीत लेती है।

जीवन में सार्थकता :-

सम्पदा का दिव्य अर्थ क्या है?

सम्पदा का हिन्दी अर्थ 'सम्पत्ति' है अर्थात् वह पदार्थ जो हमें समान रूप से संरक्षित करता है। सम्पदा जीवन के सभी संघर्षों और कठिनाईयों में पूरी तरह से सबको संरक्षित करती है अर्थात् भौतिक, मानसिक और आध्यात्मिक रूप से। इसका प्रयोग केवल भौतिक सुख-सुविधाओं और ऐश्वर्य के लिए ही नहीं करना चाहिए। यदि हम सम्पदा का प्रयोग केवल कठिनाईयों को जीतने के लिए करें तो यह हमारे जीवन की अजेय और दुर्जेय सम्पदा बन जायेगी। केवल एक इस लक्षण के साथ कि यह कठिनाईयों में संरक्षण के लिए है, हमारी सम्पदा हमारे परिवार के साथ-साथ समाज में भी अनेकों लोगों का संरक्षण कर सकती है। सम्पदा का ऐसा उपयोग यज्ञ कार्यों के समान होगा।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

ऋग्वेद मन्त्र 1.79.9

आ नो अग्ने सुचेतुना रयिं विश्वायुपोषसम् ।
मार्डीकं धेहि जीवसे ॥१९॥

(आ) सभी दिशाओं से, पूर्ण रूप से

(न:) हमें

(अग्ने) सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा, ताप, अग्नि, अग्रणी, ऊर्जावान्, प्रकाशित, पवित्र एवं दिव्य
(सुचेतुना) उत्तम चेतना, उत्तम संवेदना

(रयिम) सभी सम्पदाएँ (भौतिक तथा आध्यात्मिक)

(विश्वायुः) सम्पूर्ण जीवन, सबका जीवन अर्थात् अनेकों का

(पोषसम) स्वास्थ्य और पोषण के लिए

(मार्डीकम्) विवाद और मानसिक अशांति के बिना, आनन्ददायक

(धेहि) प्रदान करो, धारण करो

(जीवसे) जीवों के लिए ।

व्याख्या :-

हमारे स्वास्थ्य के क्या लक्षण होने चाहिए?

'अग्नि', परमात्मा की सर्वोच्च ऊर्जा! कृपया हमारे जीवन में सभी प्रकार से और पूर्ण रूप से सम्पदा (भौतिक तथा आध्यात्मिक) प्रदान करो, धारण करवाओ जिसमें निम्न लक्षण हों :-

1. इसे 'सुचेतुना' होना चाहिए अर्थात् उत्तम चेतना, उत्तम संवेदना को धारण करने वाली ।
2. इसे 'विश्वायुः पोषसम' होना चाहिए अर्थात् हमारे जीवन और सभी के जीवन (अनेकों) के लिए स्वास्थ्य और पोषण सुनिश्चित करने वाला होना चाहिए ।
3. इसे 'मार्डीकम् धेहि जीवसे' होना चाहिए अर्थात् सभी जीवों के लिए आनन्द देने वाली और किसी के लिए भी विवाद मानसिक अशांति पैदा करने वाली न हो ।

जीवन में सार्थकता :-

सम्पदा को अर्जित करते हुए और उसका उपयोग करते हुए हमें किस चेतना का अनुकरण करना चाहिए? हमारी सम्पदा हमारे जीवन को महान् और दिव्य बनाने वाली होनी चाहिए। यह तभी सम्भव है यदि हम सम्पदा अर्जित करने के साधनों के प्रति चेतन हैं। यदि हमारी सम्पदा हम तक पहुँचने के लिए पवित्र मार्ग का अनुसरण करती है तभी यह सर्वोत्तम चेतना और सर्वोत्तम संवेदना को धारण कर पायेगी जिससे स्वास्थ्य और जीवन के वास्तविक आनन्द पर ध्यान एकाग्र किये बिना इसका उपयोग न हो ।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

ऋग्वेद मन्त्र 1.79.10

प्र पूतास्तिग्मशोचिषे वाचो गोतमाग्नये ।
भरस्व सुम्नयुर्गिरः ॥10॥

(प्र – भरस्व से पूर्व लगाकर) (पूता) पवित्र, शुद्ध (तिग्म शोचिषे) सर्वज्ञान का स्वामी, तीव्र बुद्धि (वाचः) वाणियाँ (गोतम) प्रकाशित (अग्नये) सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा, ताप, अग्नि, अग्रणी, ऊर्जावान्, प्रकाशित, पवित्र एवं दिव्य (भरस्व – प्र भरस्व) हमारे अन्दर पूरी तरह से धारण करता है या समर्पित करता है (सुम्नयुः) सर्वोत्तम मन, भवित, दिव्यताओं, आनन्द और त्याग की इच्छा करते हुए (गिरः) प्रशंसाएँ, प्रेम के शब्द ।

व्याख्या :-

कौन अपनी इन्द्रियों को प्रकाशित करने वाली वाणियों की प्रार्थना करता है?

'अग्नि', परमात्मा की सर्वोच्च ऊर्जा, सर्वज्ञान का स्वामी! कृपया हमारे लिए प्रशंसा और प्रेम के शब्दों वाली वाणियों को धारण करवाओ या समर्पित करो जिससे हमारी इन्द्रियाँ प्रकाशित हो जायें। (परमात्मा के प्रति प्रशंसाओं और नमन के कारण) क्योंकि हम उत्तम मन, भवित, आनन्द, दिव्यताएँ और त्याग की इच्छा करते हैं।

जीवन में सार्थकता :-

दिव्यताओं को अर्जित करने के लिए अपनी वाणी का उपयोग कैसे करें?

'अग्नि' की सबसे महत्वपूर्ण देन हमारी वाणी की शक्ति है। पाँच कर्मेन्द्रियों के सशक्तिकरण की दृष्टि से, 'अग्नि' वाणी इन्द्री की अधिष्ठात्री देवी है। अतः हमें वाणी शक्ति का उपयोग पूरी सावधानी के साथ परमात्मा की प्रशंसा में, आनन्द के लिए और त्याग के लिए ही करना चाहिए। केवल तभी यह हमारे लिए दिव्यताएँ अर्जित कर पायेगी। अन्यथा, नकारात्मक और निरर्थक वार्तालाप में हमारी वाणी, हमारी ऊर्जा अर्थात् 'अग्नि' शक्ति बेकार ही जायेगी।

ऋग्वेद मन्त्र 1.79.11

यो नो अग्नेऽभिदासत्यन्ति दूरे पदीष्ट सः ।
अस्माकमिद् वृधे भव ॥11॥

(य:) जो (न:) हमें (अग्ने) सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा, ताप, अग्नि, अग्रणी, ऊर्जावान्, प्रकाशित, पवित्र एवं दिव्य (अभि दासति) इच्छित वस्तुएँ प्रदान करता है, दास बनाता है (अन्ति) निकट से, निकट होते हुए (दूरे) दूर (पदीष्ट) प्राप्त करता है या स्थापित करता है, नष्ट करता है (स:) वह (अस्माकम) हमारे (इत) निश्चित रूप से (वृधे) संवर्द्धन करते हुए, बढ़ाते हुए (भव) हो ।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

व्याख्या :-

हमारे जीवन का संवर्द्धन कौन करता है?

परमात्मा की सर्वोच्च ऊर्जा, आप जो हमें निकट से, निकट होते हुए और दूर से भी इच्छित वस्तुएँ प्रदान करते हुए और आप स्वयं भी हमें प्राप्त होते हो। वह (आप) निश्चित रूप से हमारा संवर्द्धन और वृद्धि करने वाले होओ।

दूसरा अर्थ :- जो कोई भी हमें निकट होते हुए दास बनाता है, 'अग्नि', परमात्मा की सर्वोच्च ऊर्जा, कृपया उस (व्यक्ति या शक्ति) को नष्ट करके दूर कर दीजिए। वह (आप) निश्चित रूप से हमारा संवर्द्धन और वृद्धि करने वाले होओ।

जीवन में सार्थकता :-

परमात्मा हमारा संवर्द्धन किस प्रकार करते हैं?

परमात्मा अपनी उपरिथिति के साथ हमें सभी इच्छित वस्तुएँ प्रदान करते हैं। सामान्यतः लोग उसके सभी अनुदानों को तो स्वीकार कर लेते हैं, परन्तु विरला ही कोई उसे वास्तविक रूप को जानने और अनुभूति करने का प्रयास करता है। कुछ सन्त प्रवृत्ति के भक्त उसे प्रतिक्षण अपनी चेतना में रखते हैं और एक सामान्य जीवन के अतिरिक्त इस सृष्टि की किसी भी वस्तु को महत्त्व नहीं देते।

दूसरा, परमात्मा उन सभी शक्तियों और प्रकृति की वस्तुओं को नष्ट कर देते हैं तथा हमसे दूर रखते हैं जो हमें अपना दास बनाती है। यह सारी सृष्टि हमें दास बनाने के लिए है। इसका अर्थ यह हुआ कि एक भक्त को इस भौतिक संसार से स्वयं को जोड़ने की प्रेरणा नहीं होती है।

ऐसे जीवन में आगे बढ़ने के लिए एक ही मार्ग है कि परमात्मा से जुड़कर रहो, उसकी सृष्टि से जुड़कर नहीं।

सूक्ति :-

(सः अस्माकम् इत् वृधे भव – ऋग्वेद 1.79.11)

वह (आप) निश्चित रूप से हमारा संवर्द्धन और वृद्धि करने वाले होओ।

ऋग्वेद मन्त्र 1.79.12

सहस्राक्षो विचर्षणिरग्नी रक्षांसि सेधति ।

होता गृणीत उवथ्यः ॥12॥

(सहस्राक्षः) हजारों (असंख्य) दृष्टियों का स्वामी (विचर्षणः) सार्वभौमिक दृष्टि वाला (अग्नि) सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा, ताप, अग्नि, अग्रणी, ऊर्जावान्, प्रकाशित, पवित्र एवं दिव्य (रक्षांसि) राक्षसी, कपटी, पापियों को

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

(सेधति) नियंत्रण करता है, दूर रखने में (होता) लाने वाला और उपलब्ध कराने वाला (यज्ञ के लिए सभी पदार्थों को) (गृणीत) उपदेश करता है, प्रशंसा करता है (उकथ्यः) प्रशंसा के योग्य ।

व्याख्या :-

राक्षसी, कपटी और पापी वृत्तियों को कौन नियंत्रित करता है?

परमात्मा की सर्वोच्च ऊर्जा, हजारों (असंख्य) दृष्टियों का स्वामी सार्वभौमिक दृष्टि रखता है।

वह 'अग्नि', राक्षसी, कपटी और पापी वृत्तियों का नियंत्रण करता है और उन्हें दूर रखता है।

वह यज्ञ के लिए सभी वस्तुओं को लाने वाला और उपलब्ध करवाने वाला है। वह स्वयं प्रशंसा के योग्य है और वह सबको उपदेश करता है और सबकी प्रशंसा करता है।

जीवन में सार्थकता :-

परमात्मा राक्षसी, कपटी और पापी वृत्तियों का नियंत्रण किस प्रकार करता है?

परमात्मा सबकी प्रशंसा क्यों करता है?

हजारों (असंख्य) दृष्टियों का धारण करने वाला और सार्वभौमिक द्रष्टा, स्वाभाविक रूप से परमात्मा प्रत्येक व्यक्ति के कार्यों और यहाँ तक कि विचारों को भी देखता है और समुचित फल प्रदान करता है – अच्छे का अच्छा और बुरे का बुरा। यह कर्मफल सिद्धान्त है, परमात्मा की वज्र शक्ति, जिसके द्वारा वह अच्छे लोगों को अच्छे कार्य जारी रखने के लिए प्रोत्साहित करता है और बुरे लोगों को बुरे कार्य रोकने के लिए प्रेरित करता है। इस प्रकार वह सभी राक्षसी, कपटी और पापियों को नियंत्रण में रखता है। वह अपने उपदेशों के साथ सबकी प्रशंसा करता है। इससे यह स्पष्ट होता है कि वह प्रत्येक व्यक्ति में अपनी स्वयं की उपस्थिति की ही प्रशंसा करता है जिससे उनके कार्यों और विचारों के सुधार में आशा की किरण दिखाई दे और और पूर्ण प्रकाश के आध्यात्मिक लक्ष्य एवं प्रत्येक जीव एवं वस्तु में उसकी एकात्मता के पथ पर अग्रसर हुआ जा सके।

सूक्ति :-

(सहस्राक्षः विचर्षणः अग्नि – ऋग्वेद 1.79.12)

परमात्मा की सर्वोच्च ऊर्जा, हजारों (असंख्य) दृष्टियों का स्वामी सार्वभौमिक दृष्टि रखता है।

सूक्ति :-

(अग्नि रक्षांसि सेधति – ऋग्वेद 1.79.12)

वह 'अग्नि' राक्षसी, कपटी और पापी वृत्तियों का नियंत्रण करता है और उन्हें दूर रखता है।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

ऋग्वेद मण्डल-1 सूक्त 80

ऋग्वेद मन्त्र 1.80.1

इत्था हि सोम इन्मदे ब्रह्मा चकार वर्धनम् ।
शविष्ठ वज्रिन्नोजसा पृथिव्या निः शशा अहिमर्चन्ननु स्वराज्यम् ॥१॥

(इत्था) इसके बाद (हि) निश्चित रूप से (सोम) शुभ गुण, दिव्य ज्ञान (इत) वास्तविक रूप से (मदे) आनन्द, प्रसन्नता, उत्साह (ब्रह्म) सर्वोच्च निर्माता, निर्माता को जानने वाला (चकार) करता है (वर्धनम्) वृद्धि करता है (शविष्ठ) शक्तिशाली (वज्रिन) हथियार (ओजसा) वैभव (पृथिव्या) पृथ्वी से, शरीर से (निः शशा) बल (अहिम) मेघ (जलों, वृत्तियों के, आज्ञानता के, शत्रुओं के, पापियों के) (अर्चन) पूजा (अनु) अनुशासन का अनुकरण (स्वराज्यम्) स्व शासन अर्थात् आत्मा या परमात्मा का शासन, एक महान् राजा का शासन।

व्याख्या :-

परमात्मा इन्द्र का समर्थन क्यों करता है?

इन्द्र का क्या सामर्थ्य है?

आत्म शासन क्या है?

इस मन्त्र का पहला भाग ब्रह्म, सर्वोच्च नियंत्रक, परमात्मा को इंगित करता है।

इसके बाद, ब्रह्म, सर्वोच्च निर्माता, निश्चित और वास्तविक रूप से सब लोगों में शुभ गुणों को उत्साहित करता है और वृद्धि करता है।

फिर शक्ति और साहस के साथ, समर्पित गतिविधियों के वज्र के साथ और वैभव के साथ, इन्द्रियों का नियंत्रक तथा एक महान् राजा धरती और शरीर को बादलों से मुक्त करता है (जल के, वृत्तियों के, अज्ञानताओं के, शत्रुओं के और पापियों के)।

हम आत्मानुशासन अर्थात् आत्मा के अनुशासन, परमात्मा, महान् राजा के शासन की पूजा और अनुसरण करते हैं।

जीवन में सार्थकता :-

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

भिन्न—भिन्न स्तरों पर इन्द्र कौन होते हैं?

बृहद स्तर पर, इन्द्र इस सृष्टि का सर्वोच्च नियंत्रक है।

सूक्ष्म स्तर पर इन्द्र जीवात्मा है, इन्द्रियों का नियंत्रक।

राष्ट्रीय स्तर पर, इन्द्र महान् और दिव्य राजा है।

परमात्मा इन्द्र के रूप में सूक्ष्म स्तर के और राष्ट्रीय स्तर के इन्द्र पुरुषों को सोम अर्थात् शुभ गुण, दिव्य ज्ञान और आनन्द उपलब्ध कराता है।

इसके बदले इन्द्र राजा सहित सभी इन्द्र पुरुषों का यह निश्चित कर्तव्य है कि भूमि पर आत्म शासन अर्थात् आत्मा का शासन, परमात्मा और महान् राजा के शासन का अनुसरण करें।

सूक्ति :-

(अर्चन् अनु स्वराज्यम् — ऋग्वेद 1.80)

हम आत्मानुशासन अर्थात् आत्मा के अनुशासन, परमात्मा, महान् राजा के शासन की पूजा और अनुसरण करते हैं।

ऋग्वेद मन्त्र 1.80.2

स त्वामदद् वृषा मदः सोमः श्येनाभृतः सुतःः।

येना वृत्रं निरदभ्यो जघन्थ वज्रिन्नोजसार्चन्ननु स्वराज्यम् ॥२॥

(स:) वह (त्वा) आपको (अमदत) तुम्हारा उत्साह, आनन्द बढ़ाता है (वृषा) वर्षा करते हुए (सभी सुखों और प्रसन्नताओं की) (मद:) आनन्द, प्रसन्नता, उत्साह (सोम:) शुभ गुण, दिव्य ज्ञान, जीवन बल (श्येना भृतः) सक्रिय भवित, तपस्याओं आदि से अर्जित (सुतः:) जीवन बल, शौर्यता (येना) जिसके द्वारा (वृत्रम्) मेघ (जलों, वृत्तियों के, आज्ञानता के, शत्रुओं के, पापियों के) (निः — जघन्थ से पूर्व लगाकर) (अदभ्य:) जलों से (जघन्थ — निः जघन्थ) दूर करो (वज्रिन्न) वज्र (ओजसा) वैभव (अर्चन) पूजा (अनु) अनुशासन का अनुकरण (स्वराज्यम्) स्व शासन अर्थात् आत्मा या परमात्मा का शासन, एक महान् राजा का शासन।

व्याख्या :-

सोम अर्थात् शुभ गुणों और दिव्य ज्ञान के क्या परिणाम होते हैं?

वह, सर्वोच्च इन्द्र, परमात्मा तथा इन्द्र पुरुष, जीवात्मा सोम के द्वारा ही आपका उत्साह और आनन्द बढ़ाता है, जो इस प्रकार है :-

1. (वृषा) सभी सुखों और प्रसन्नताओं की वर्षा करने वाला।
2. (मद:) आनन्द, प्रसन्नता और उत्साह को उत्पन्न करने वाला।
3. (श्येना भृतः) सक्रिय भवित, तपस्याओं आदि को लाने वाला।
4. (सुतः:) जीवन बल, शौर्यता से परिपूर्ण।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

सोम के द्वारा ही वृत्तियों के मेघ तथा अज्ञानताओं के आवरण जलों से अलग करके वज्रों और वैभव के साथ दूर कर दिये जाते हैं।

हम आत्मानुशासन अर्थात् आत्मा के अनुशासन, परमात्मा, महान् राजा के शासन की पूजा और अनुसरण करते हैं।

जीवन में सार्थकता :-

सोम का विकास कैसे करें?

मनुष्यों को एक विशेष बुद्धि उपहार में प्राप्त हुई है जो निर्णायक मन के रूप में उनके जीवन स्तर को सुधारने तथा उन्हें पशुओं से ऊँचा बनाने का कार्य करती है। इस बुद्धि के साथ उन्होंने आधुनिक भौतिक विज्ञानों के क्षेत्र में कई प्रकार की भरपूर प्रगति अर्जित की है। परन्तु प्रकृति की मूल शक्ति और सर्वोच्च निर्माता तथा नियंत्रक परमात्मा का एक दिव्य विज्ञान भी है जिसके लिए सोम कहे जाने वाले दिव्य जीवन, दिव्य ज्ञान और शुभ गुणों का अनुसरण करना पड़ता है। यह सोम केवल इन्द्र पुरुष अर्थात् इन्द्रियों का नियंत्रक ही विकसित कर सकता है। भौतिक विज्ञान हमें इन्द्रियों की तुष्टि के लिए प्रेरित करते हैं। जबकि आध्यात्मिक ज्ञान हमें इन्द्रियों पर नियंत्रण के लिए प्रेरित करता है। इन्द्रियों की तुष्टि तात्कालिक है और विनाश की तरफ ले जाती है। जबकि इन्द्रियों का नियंत्रण हमें अपनी आत्मा की अनुभूति के पथ पर अग्रसर करता है और सोम के द्वारा हमारे अपने दिव्य शासन का अनुसरण करने के लिए भी प्रेरित करता है। इसलिए अपने जीवन में इन्द्र देवता का आहवान करो और इन्द्र बनने का प्रयास करो।

ऋग्वेद मन्त्र 1.80.3

प्रेह्यभीहि धृष्णुहि न ते वज्रो नि यंसते।

इन्द्र नृम्णं हि ते शवो हनो वृत्रां जया अपोऽर्चन्ननु स्वराज्यम् ॥३॥

(प्रेह्य) पूरी सक्रियता के साथ प्राप्त करते हैं (अभीहि) सभी दिशाओं से (धृष्णुहि) दृढ़ संकल्प के साथ बुराईयों को नष्ट करते हैं (न) नहीं (ते) आपके (वज्रः) वज्र (सक्रियता के) (नि यंसते) रोकना, नियंत्रण करना (इन्द्र) इन्द्रियों का नियंत्रक (नृम्णम्) मनुष्यों के कल्याण के लिए (हि) निश्चित रूप से (ते) आपके (शवः) शुद्ध, बल (हनः) नाश करना (वृत्रम्) वृत्तियाँ (मन की), आवरण (अज्ञानता के) (जया) जीतना (अपः) जीवन बल का जल, कर्म (अर्चन) पूजा (अनु) अनुशासन का अनुकरण (स्वराज्यम्) स्व शासन अर्थात् आत्मा या परमात्मा का शासन, एक महान् राजा का शासन।

व्याख्या :-

इन्द्र पुरुष कितना शक्तिशाली होता है?

इन्द्र, इन्द्रियों के नियंत्रक, पूरी सक्रियता के साथ आप सभी दिशाओं से दृढ़ संकल्प के साथ बुराईयों का नाश करते हो। आपका वज्र (सक्रियता का) रुकने या नष्ट होने योग्य नहीं है। आपके बल की शक्ति निश्चित

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

रूप से मनुष्यों के कल्याण के लिए है। आप वृत्तियों को (मन की) तथा आवरणों को (अज्ञानता के) नष्ट कर देते हो। आप जीवन बल के जल अर्थात् वीर्य और कर्मों को नियंत्रण में रखकर उन्हें जीत लेते हो। हम आत्मानुशासन अर्थात् आत्मा के अनुशासन, परमात्मा, महान् राजा के शासन की पूजा और अनुसरण करते हैं।

जीवन में सार्थकता :-

एक इन्द्र पुरुष किस प्रकार एक पूर्ण व्यक्तित्व बन जाता है?

एक बार इन्द्रियों पर पूरा नियंत्रण स्थापित हो जाने के बाद भक्त व्यक्ति को हर प्रकार की शक्तियाँ – शारीरिक, मानसिक, आध्यात्मिक, प्राप्त हो जाती हैं।

शारीरिक शक्तियों के साथ वह स्वयं को सुरक्षित करता है और अन्यों के लिए अनेक कल्याण कार्य सम्पन्न करता है।

मानसिक शक्तियों के साथ उसकी बुद्धि सभी बुरे विचारों का नाश करने के योग्य हो जाती है।

आध्यात्मिक शक्तियों के साथ वह मन की वृत्तियों और अज्ञानता के आवरणों को नष्ट करके अन्दर ही परमात्मा की अनुभूति पर ध्यान एकाग्र करने लगता है। इस प्रकार एक इन्द्र पुरुष पूर्ण व्यक्तित्व के रूप में विकसित हो जाता है।

ऋग्वेद मन्त्र 1.80.4

निरिन्द्र भूम्या अधि वृत्रं जघन्थ निर्दिवः।

सृजा मरुत्वतीरव जीवधन्या इमा अपोऽर्चन्ननु स्वराज्यम् ॥४॥

(नि – जघन्थ से पूर्व लगाकर) (इन्द्र) सर्वोच्च नियंत्रक, परमात्मा, इन्द्रियों का नियंत्रक (भूम्या) भूमि का (अधि) ऊपर से, की तरफ (वृत्रम्) बादल, वृत्तियाँ, आवरण (जघन्थ – नि जघन्थ) दूर फेंकता है (निर्दिवः) अन्तरिक्ष से, मन से (सृजा – अव सृजा) प्रवाहित होता है (मरुत्वतीरवः) प्राण, वायु (अव – सृजा से पूर्व लगाया गया) (जीवधन्या) महानता के लिए, जीवों की दिव्यता (इमा) ये (अपः) जीवन बल के जल, कर्म (अर्चन्) पूजा (अनु) अनुशासन का अनुकरण (स्वराज्यम्) स्व शासन अर्थात् आत्मा या परमात्मा का शासन, एक महान् राजा का शासन।

व्याख्या :-

मनुष्यों के कल्याण के लिए सर्वोच्च इन्द्र क्या करता है?

दिव्य स्तर प्राप्त करने के लिए इन्द्र पुरुष क्या करता है?

इन्द्र, सर्वोच्च नियंत्रक, परमात्मा! आप (सूर्य रूप में इन्द्र के माध्यम से) धरती के ऊपर अन्तरिक्ष से मेघों को दूर हटा देते हो और मनुष्यों के कल्याण के लिए वायु तथा जल के प्रवाह को सुनिश्चित करते हो।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

दूसरा अर्थ :— इन्द्र, इन्द्रियों के नियंत्रक! आप मन की वृत्तियों को और अज्ञानता के आवरण को इस शरीर के सर्वोच्च स्तर पर मन से दूर कर देते हो और प्राणों तथा जीवन बल के जल के प्रवाह को सुनिश्चित कराते हो, भक्त अर्थात् स्वयं अपने लिए दिव्यता उत्पन्न करने के लिए।

हम आत्मानुशासन अर्थात् आत्मा के अनुशासन, परमात्मा, महान् राजा के शासन की पूजा और अनुसरण करते हैं।

जीवन में सार्थकता :-

हम दूसरों का कल्याण कैसे कर सकते हैं?

परमात्मा, सभी दिव्यताओं का कोष होने के नाते सभी दिव्यताओं का स्रोत है। सूर्य के माध्यम से वह मेघों को तोड़कर और सबके कल्याण के लिए उनकी वर्षा करके जल चक्र का प्रबन्धन करता है। इसी प्रकार जब कोई व्यक्ति अन्य लोगों का भौतिक कल्याण या आध्यात्मिक मार्ग दर्शन करने की इच्छा रखे तो उसे सर्वप्रथम अपनी इन्द्रियों पर नियंत्रण करके स्वयं इन्द्र बनना चाहिए। इस प्रकार, प्रथम वह स्वयं परमात्मा से दिव्य शक्तियाँ प्राप्त करेगा और उसके बाद दूसरों के कल्याण को प्रारम्भ करेगा। जीवन के किसी भी क्षेत्र में चाहे वह राजनीति हो, समाजसेवा हो या एक वैज्ञानिक आदि के रूप में, यदि कोई दूसरों का कल्याण रखने की इच्छा रखता है तो उसे स्वयं इन्द्र बनना ही पड़ता है। एक महान् पिता या मानवता का मार्गदर्शक बनने के लिए अपने हितों का त्याग कर दो।

ऋग्वेद मन्त्र 1.80.5

इन्द्रो वृत्रस्य दोधतः सानुं वज्रेण हीळतिः ।
अभिक्रम्याव जिघ्नतेऽपः सर्माय चोदयन्तर्चन्ननु स्वराज्यम् ॥५॥

(इन्द्रः) सर्वोच्च नियंत्रक, परमात्मा, इन्द्रियों का नियंत्रक (वृत्रस्य) बादलों का (दोधतः) कम्पित करता है (सानुम) सर्वोच्च (वज्रेण) वज्रों से (हीळतिः) गर्जना करती हुई शक्ति से (अभिक्रम्या) आक्रमण करके (अव जिघ्नते) नष्ट करता है और दूर हटा देता है (अपः) जीवन बल के जल, कर्म (सर्माय) प्रवाहित करने के लिए, गतिविधियों के लिए (चोदयन्) प्रेरित करता है। (अर्चन्) पूजा (अनु) अनुशासन का अनुकरण (स्वराज्यम्) स्व शासन अर्थात् आत्मा या परमात्मा का शासन, एक महान् राजा का शासन।

व्याख्या :-

परमात्मा जलों के प्रवाह का प्रबन्ध किस प्रकार करता है?

इन्द्र पुरुष अपने शरीर में जीवन बल की ऊर्जा के प्रवाह को किस प्रकार सुनिश्चित करता है?

एक महान् राजा देश के निर्बाध संचालन को किस प्रकार सुनिश्चित करता है?

सर्वोच्च नियंत्रक, परमात्मा, सूर्य के माध्यम से अपनी गर्जना करने वाली शक्ति के वज्र (किरणों) के साथ सर्वोच्च शिखर पर बैठे भयानक बादलों को कम्पित कर देता है और इस प्रकार उन पर आक्रमण करके उन्हें नष्ट करते हुए दूर फेंक देता है और जल के रूप में नीचे प्रवाहित होने के लिए प्रेरित करता है। इसलिए

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



हम आत्मानुशासन अर्थात् आत्मा के अनुशासन, परमात्मा, महान् राजा के शासन की पूजा और अनुसरण करते हैं।

दूसरा अर्थ :- इन्द्र पुरुष, इन्द्रियों का नियंत्रक, भयानक मन की वृत्तियों और अज्ञानता के आवरण को अपनी एकाग्रता के वज्र के साथ कम्पित कर देता है और उन्हें नष्ट करके शरीर में जीवन बल की ऊर्जा के प्रवाह को समर्पित कर्मों के लिए प्रेरित करता है। इसलिए हम आत्मानुशासन अर्थात् आत्मा के अनुशासन, परमात्मा, महान् राजा के शासन की पूजा और अनुसरण करते हैं।

तीसरा अर्थ :- एक अनुशासन प्रिय राजा अपने कानूनी वज्रों के साथ बुराईयों और शत्रु ताकतों को कम्पित करके उन्हें नष्ट कर देता है जिससे देश का संचालन सरलता पूर्वक किया जा सके।

जीवन में सार्थकता :-

समाज को कलियुग की बुरी ताकतों से सुरक्षित कैसे किया जाये?

समूची सृष्टि सकारात्मक और नकारात्मक शक्तियों से बनी है। विशेष रूप से वर्तमान कलियुग में राक्षसी और बुरी ताकतें अन्य लोगों के लिए कठिनाईयाँ उत्पन्न करने पर उत्तारु हैं। परमात्मा निश्चित रूप से इन्द्र शक्तियों के माध्यम से इन बुरी ताकतों को नियंत्रित करता है और उन पर आक्रमण करता है। इसलिए परमात्मा के सभी भक्तों का यह निश्चित दायित्व है कि इन्द्र पुरुष बनकर सकारात्मक ऊर्जाओं का संकलन करे। इस प्रकार वे स्वयं को तथा अन्य खुले लोगों को संरक्षित कर पायेंगे।

ऋग्वेद मन्त्र 1.80.6

अधि सानौ नि जिघन्ते वज्रेण शतपर्वणा ।

मन्दान इन्द्रो अन्धसः सखिभ्यो गातुमिच्छत्यर्चन्ननु स्वराज्यम् ॥६॥

(अधि सानौ) ऊपर की तरफ (नि जिघन्ते) दूर करने के लिए लगातार आक्रमण करता है (वज्रेण) वज्र से (शतपर्वणा) सैकड़ों शक्तियों को धारण करते हुए (मन्दानः) आनन्दित महसूस करता है (इन्द्रः) सर्वोच्च नियंत्रक, परमात्मा, इन्द्रियों का नियंत्रक (अन्धसः) भोजन और शक्ति का देने वाला, सोम को उत्पन्न और सुरक्षित करने वाला (सखिभ्यः) मित्रों के लिए (भक्तों, नागरिकों आदि के लिए) (गातुम) मार्ग (इच्छति) इच्छा करता है (अर्चन) पूजा (अनु) अनुशासन का अनुकरण (स्वराज्यम्) स्व शासन अर्थात् आत्मा या परमात्मा का शासन, एक महान् राजा का शासन।

व्याख्या :-

परमात्मा सबके लिए किस मार्ग की इच्छा करता है?

अपने सभी रूपों में इन्द्र लगातार अपनी सैकड़ों शक्तियों वाले वज्र के साथ बुरी ताकतों को दूर फेंकने के लिए उन पर आक्रमण करता है। भोजन और शक्तियों को देने वाला, सोम को उत्पन्न और सुरक्षित करने वाला इस मार्ग पर आनन्दित महसूस करता है। वह अपने मित्रों, भक्तों और सभी नागरिकों के लिए समान

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

पथ की इच्छा करता है। इसलिए, हम आत्मानुशासन अर्थात् आत्मा के अनुशासन, परमात्मा, महान् राजा के शासन की पूजा और अनुसरण करते हैं।

जीवन में सार्थकता :-

परमात्मा के द्वारा हमारे लिए इच्छित मार्ग पर कौन चल सकता है?

परमात्मा सर्वोच्च इन्द्र है। उसका पथ शुद्धता, सच्चाई और आत्म नियंत्रण है। उसका उद्देश्य लोगों को अपने भीतर उसकी उपरिथिति की अनुभूति करवाना है। उसने इस सृष्टि का निर्माण केवल भौतिकवादी जीवन के लिए नहीं किया। उसने स्पष्ट रूप से लोगों को बताया है कि स्थाई आनन्द इस सृष्टि की प्रत्येक वस्तु में उसकी अनुभूति से ही प्राप्त होगा, केवल इस सृष्टि को समझने और उसके आनन्द लेने में नहीं। इस प्रकार जो लोग इस कर्म और फल की यात्रा में जुड़े दुःखों और संकटों और कष्टों आदि के विषय में जान जाते हैं वे इस यात्रा को समाप्त करने की इच्छा करते हैं और मुक्ति के लिए परमात्मा की अनुभूति के मार्ग का अनुसरण करते हैं। केवल इन्द्र पुरुष ही इस पथ पर प्रगति कर सकता है।

ऋग्वेद मन्त्र 1.80.7

इन्द्र तुभ्यमिदद्रिवोऽ नुत्तं वज्रिन्वीर्यम् ।

यद्व त्यं मायिनं मृगं तमु त्वं मायावधीरर्चन्ननु स्वराज्यम् ॥७॥

(इन्द्र) सर्वोच्च नियंत्रक, परमात्मा, इन्द्रियों का नियंत्रक (तुभ्यम्) आपका (इत) निश्चित रूप से (अद्रिवः) बुराईयों और शत्रुओं का नाश करने के लिए (अनुत्तम) सर्वोत्तम, पराजित न करने योग्य (वज्रिन्) वज्र (वीर्यम्) जीवन बल (यत्) जो है (ह) निश्चित रूप से (त्यम्) छिपा हुआ (मायिनम्) धूर्त, चालाक (मृगम्) हिरण, पशु (तम् उ) उसको (त्वम्) आप (मायया) माया के साथ (आवरण करने और प्रस्तुत करने की शक्ति), बुद्धि के साथ (अवधिः) नष्ट करते हो (अर्चन) पूजा (अनु) अनुशासन का अनुकरण (स्वराज्यम्) स्व शासन अर्थात् आत्मा या परमात्मा का शासन, एक महान् राजा का शासन।

व्याख्या :-

इन्द्र किस प्रकार धूर्त, चालाक बुराईयों और शत्रुओं को नष्ट करता है?

इन्द्र, अपने सभी आयामों में, जीवन बल की ऊर्जा वाला आपका वज्र सर्वोत्तम और पराजित न करने योग्य है और निश्चित रूप से इसके साथ आप उन सभी बुराईयों और शत्रुओं का नाश कर देते हों जो एक धूर्त और चालाक हिरण अथवा पशु की तरह छिपे रहते हैं, जिनको आप अपनी माया के साथ (आवरण करने और प्रस्तुत करने की शक्ति), बुद्धि के साथ नष्ट कर देते हों। हम आत्मानुशासन अर्थात् आत्मा के अनुशासन, परमात्मा, महान् राजा के शासन की पूजा और अनुसरण करते हैं।

जीवन में सार्थकता :-

माया शक्ति किस प्रकार मायावी अर्थात् चालाक और कलाकार लोगों को नष्ट करती है?

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

महान् राजा और इन्द्र पुरुष धूर्त और चालाक लोगों के साथ किस प्रकार का व्यवहार करते हैं?

जिस प्रकार धूर्त और चालाक लोग मन, वाणी और कार्यों में अन्य लोगों को धोखा देने और दिग्भ्रमित करने के लिए भिन्न-भिन्न होते हैं, ऐसे लोगों के साथ परमात्मा की माया शक्ति भी उसी प्रकार से व्यवहार करती है, जो वास्तविक पर आवरण बना देती है और कुछ अन्य वस्तु को प्रस्तुत करती है। धूर्त और चालाक लोग शक्तियों और भौतिक सम्पदाओं को प्राप्त करने की इच्छाओं के पीछे पागलों की तरह दौड़ते हैं, जो स्वयं उनके दुःख का एक कारण बन जाती है, राजा मिडास की कहानी की तरह, उसने यह कामना की कि उसके आस-पास की जिस वस्तु को भी वह स्पर्श करे, वह सोना बन जाये। उसका पूरा महल सोने का बन गया, उसका पुत्र उसकी गोद में आया तो वह सोने का बन गया, जिस भोजन को खाने के लिए उसने स्पर्श किया वह भी सोने का बन गया और इस प्रकार वह अपने आस-पास किसी भी वस्तु का उपयोग करने या आनन्द लेने के योग्य नहीं रहा।

महान् राजा और इन्द्र पुरुष धूर्त और चालाक लोगों के साथ बुद्धि से अर्थात् कानून लागू करने वाले तन्त्र के उचित प्रबन्धन के साथ व्यवहार करते हैं।

सूक्ति :-

(मायिनम् मृगम् तम् उ त्वम् मायया अवधि: – ऋग्वेद 1.80.7)

धूर्त और चालाक लोगों को आप अपनी माया के साथ (आवरण करने और प्रस्तुत करने की शक्ति), बुद्धि के साथ नष्ट कर देते हो।

ऋग्वेद मन्त्र 1.80.8

वि ते वज्ञासो अस्थिरन्नवतिं नाव्याऽ अनु ।

महत्त इन्द्र वीर्य बाह्वोस्ते बलं हितमर्चन्ननु स्वराज्यम् ॥४॥

(वि) विशेष, भिन्न-भिन्न (ते) आपके (वज्ञासः) वज्ञ (अस्थिरन) स्थापित (नवतिम) नब्बे (नाव्या) नाव, शरीर (सांसारिक नदियों, जीवन को पार करने के लिए) (अनु) लक्ष्य का अनुसरण (महत्त) महान् (इन्द्र) सर्वोच्च नियंत्रक, परमात्मा, इन्द्रियों का नियंत्रक (वीर्यम्) जीवन बल (बाह्वो) बाहों में (ते) आपकी (बलम्) शक्ति और बल (हितम्) स्थापित (अर्चन) पूजा (अनु) अनुशासन का अनुकरण (स्वराज्यम्) स्व शासन अर्थात् आत्मा या परमात्मा का शासन, एक महान् राजा का शासन।

व्याख्या :-

इन्द्र पुरुष किस प्रकार सांसारिक नदियों को पार करता है?

इन्द्र, आपके विशेष और भिन्न-भिन्न वज्ञों की शक्तियाँ नब्बे के लक्ष्य अर्थात् असंख्य सांसारिक नदियों, जन्मों को अपनी नाव अर्थात् शरीर के माध्यम से पार करने के लिए स्थापित हैं। आपके जीवन बल महान् हैं। आपकी बाहों में महान् शक्तियाँ और बल हैं। हम आत्मानुशासन अर्थात् आत्मा के अनुशासन, परमात्मा, महान् राजा के शासन की पूजा और अनुसरण करते हैं।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

जीवन में सार्थकता :-

कौन सच्चा और वास्तविक इन्द्र है?

एक सच्चा और वास्तविक इन्द्र, जिसने अपनी इन्द्रियों पर सफलता पूर्वक नियंत्रण स्थापित कर लिया है, कभी भी अपने निर्धारित लक्ष्य से नहीं भटकता और सभी शक्तियों का केन्द्रीय शक्ति ग्रह, सर्वोच्च इन्द्र, परमात्मा, के साथ सीधा सम्पर्क स्थापित कर लेता है। इसके अतिरिक्त, इन्द्र पुरुष अपनी दिव्य शक्तियों का प्रयोग अपने स्वार्थी भौतिक हितों के लिए नहीं करता। वह आध्यात्मिक अनुभूति की यात्रा पर प्रगति जारी रखता है और अन्य लोगों को भी आशीर्वाद देता है। उसी प्रकार, एक अनुशासित महान् राजा इन्द्र अपने राज्य का प्रशासन अपने स्वार्थी हित को शामिल किये बिना ही संचालित करता है। वह एक स्वच्छ और प्रगतिशील शासन देने में सक्षम होता है। क्योंकि उसका ध्यान और निरन्तर सम्पर्क लोगों के साथ होता है जो उसकी शक्ति का स्रोत हैं।

सूक्ति :-

(महत्त इन्द्र वीर्यम् बाह्वो ते बलम् हितम् – ऋग्वेद 1.80.8)

आपके जीवन बल महान् हैं। आपकी बाहों में महान् शक्तियाँ और बल हैं।

ऋग्वेद मन्त्र 1.80.9

सहस्रं साकर्मचत परि स्टोभत विंशतिः।
शतैनमन्वनोनवुरिन्द्राय ब्रह्मोद्यतमर्चन्ननु स्वराज्यम् ॥१॥

(सहस्रम्) हजारों बार (साकम) इकट्ठे (अर्चत) पूजा, प्रार्थना (परि) सभी दिशाओं से (स्टोभत) प्रशंसा, महिमागान (विंशतिः) बीस बार (शत) सैकड़ों बार (एनम) इसके (अनु) अनुसरण करते हुए (अनोनवुः) सुनो और अपनाओ (इन्द्राय) इन्द्र, सर्वोच्च नियंत्रक, परमात्मा, इन्द्रियों के नियंत्रक के लिए (ब्रह्म) परमात्मा (उद्यतम) उदय होता है, स्वीकार करने के लिए और स्वागत करने के लिए, आशीर्वाद देने के लिए, अनुभूति के लिए (अर्चन) पूजा (अनु) अनुशासन का अनुकरण (स्वराज्यम) स्व शासन अर्थात् आत्मा या परमात्मा का शासन, एक महान् राजा का शासन।

व्याख्या :-

किसके जीवन में परमात्मा विशेष रूप से उदय होते हैं?

हजारों लोग हजारों बार इकट्ठे पूजा और प्रार्थना करते हैं; बीसियों लोग बीसियों बार इकट्ठे पूजा और प्रार्थना करते हैं; सैकड़ों लोग सैकड़ों बार उसका अनुसरण करते हैं, सुनते हैं और उसकी शिक्षाओं को अपनाते हैं, किन्तु परमात्मा केवल इन्द्र पुरुष और महान् राजाओं की अनुभूति में उन्हें स्वीकार करने, उनका स्वागत करने और उन्हें आशीर्वाद देने के लिए आते हैं जिन्होंने अपनी इन्द्रियों पर पूर्ण नियंत्रण स्थापित कर लिया

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

हो। हम आत्मानुशासन अर्थात् आत्मा के अनुशासन, परमात्मा, महान् राजा के शासन की पूजा और अनुसरण करते हैं।

जीवन में सार्थकता :-

इन्द्र पुरुष किस प्रकार दिव्य बन जाता है?

क्योंकि परमात्मा सर्वविद्यमान और सर्वज्ञाता है, वह बिना किसी भेदभाव के सभी जीवों का समर्थन करता है। किन्तु, स्वाभाविक रूप से, उनके अपने—अपने कर्मों के आधार पर। लेकिन परमात्मा विशेष रूप से उनके लिए उदय होते हैं जो उनके प्रति समर्पित होते हैं। जो व्यक्ति अपनी इन्द्रियों पर सफलता पूर्वक नियंत्रण स्थापित कर लेता है, वह इन्द्र पुरुष बन जाता है और भिन्न—भिन्न स्वादों, पसन्द, नापसन्द और सृष्टि के आनन्द के पीछे नहीं भागता। परमात्मा ऐसे व्यक्ति को निश्चित रूप से प्रेम करते हैं और उसके जीवन में उसका स्वागत करने के लिए उदित होकर उसे यह अनुभूति करवा देते हैं कि वह (परमात्मा) स्पष्ट रूप से उसके अन्दर उपस्थित है और उसको दिव्य शक्तियों से लगा हुआ अधिकाधिक शक्तिशाली बना देते हैं।

सूक्ति :-

(सहस्रम् साकम् अर्घत परि स्टोभत – ऋग्वेद 1.80.9)

हजारों लोग हजारों बार इकट्ठे पूजा और प्रार्थना करते हैं;

सूक्ति :-

(इन्द्राय ब्रह्म उद्यतम् – ऋग्वेद 1.80.9)

परमात्मा केवल इन्द्र पुरुष और महान् राजाओं की अनुभूति में उन्हें स्वीकार करने, उनका स्वागत करने और उन्हें आशीर्वाद देने के लिए आते हैं जिन्होंने अपनी इन्द्रियों पर पूर्ण नियंत्रण स्थापित कर लिया हो।

ऋग्वेद मन्त्र 1.80.10

इन्द्रो वृत्रस्य तविषीं निरहन्त्सहसा सहः।

महत्तदस्य पौस्यं वृत्रं जघन्वा॑ असृजदर्चन्ननु स्वराज्यम् ॥10॥

(इन्द्रः) सर्वोच्च नियंत्रक, परमात्मा, इन्द्रियों का नियंत्रक (वृत्रस्य) मेघों का, वृत्तियों का, आवरणों का (तविषीम्) बल (निरहन) निश्चित रूप से दृढ़ता के साथ नष्ट करता है (सहसा) साहस के साथ (सहः) साहस (महत्) महान् (तत्) वह (अस्य) उसका (पौस्यम्) पुरुषत्व, हिम्मत (वृत्रम्) मेघ आदि (जघन्वान्) नष्ट करता है, दूर फेंकता है (असृजत्) पैदा करता है (ताजगी की भावना, सर्वोत्तम शक्ति) (अर्चन्) पूजा (अनु) अनुशासन का अनुकरण (स्वराज्यम्) स्व शासन अर्थात् आत्मा या परमात्मा का शासन, एक महान् राजा का शासन।

व्याख्या :-

बादलों, वृत्तियों और आवरणों को नष्ट करने में सक्षम कौन है?

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

इन्द्र अपने सभी आयामों में अर्थात् सर्वोच्च नियंत्रक, परमात्मा, सूर्य, महान् राजा, इन्द्रियों का नियंत्रक, निश्चित रूप से मेघों, वृत्तियों, आवरणों तथा सभी बुराईयों के साहस को अपने साहस और दृढ़ता के साथ नष्ट कर देता है। उसका (इन्द्र का) पुरुषत्व (शक्तियाँ और बल) महान् है जो मेघों को नष्ट करके ताजगी की भावना, सर्वोत्तम शक्तियों को पैदा करने के लिए दूर फेंक देता है। हम आत्मानुशासन अर्थात् आत्मा के अनुशासन, परमात्मा, महान् राजा के शासन की पूजा और अनुसरण करते हैं।

जीवन में सार्थकता :-

इन्द्र किस प्रकार शक्तियाँ और बल एकत्र करता है?

इन्द्र अपार शक्तियाँ और बल एकत्र कर लेता है क्योंकि वह इन प्राकृतिक उपहारों को इन्द्रियों की तुष्टि के पीछे भागने में व्यर्थ नहीं करता, बल्कि सदैव सर्वोच्च इन्द्र, सभी शक्तियों और दिव्यताओं के केन्द्र शक्ति ग्रह पर ध्यान एकाग्र करता है। इन्द्रियों की इच्छाओं को संतुष्ट करने की आदत केवल अपनी ऊर्जा का निर्थक उपयोग है जो स्थाई आनन्द के पीछे भागती है और उपभोक्ता को उसके निर्धारित और निर्णित लक्ष्य से भटका देती है।

ऋग्वेद मन्त्र 1.80.11

इमे चित्तव मन्यवे वेपेते भियसा मही ।

यदिन्द्र वज्जिन्नोजसा वृत्रं मरुत्वाँ अवधीर्चन्ननु स्वराज्यम् ॥11॥

(इमे) ये (चित्) दोनों शत्रु (तव) आपके (मन्यवे) क्रोध, इच्छा के लिए (वेपेते) कम्पित (भियसा) डर से (मही) महान् (यत) जब (इन्द्र) सर्वोच्च नियंत्रक, परमात्मा, इन्द्रियों का नियंत्रक (वज्जिन) वज्र (ओजसा) जीवन बल के साथ (वृत्रम्) मेघ, वृत्तियाँ, आवरण (मरुत्वान्) प्राणों का नियंत्रक, वायु (अवधि:) नष्ट करता है (अर्चन्) पूजा (अनु) अनुशासन का अनुकरण (स्वराज्यम्) स्व शासन अर्थात् आत्मा या परमात्मा का शासन, एक महान् राजा का शासन।

व्याख्या :-

इन्द्र किसको नष्ट करता है?

इन्द्र के शत्रुओं का क्या होता है?

इन्द्र, अपने सभी आयामों में अर्थात् सर्वोच्च नियंत्रक, परमात्मा, सूर्य, महान् राजा, इन्द्रियों का नियंत्रक, आपके दोनों शत्रु, यहाँ तक कि पृथ्वी और मध्य आकाश लोक भी डर से कम्पित हो जाते हैं। जब आप वायु और प्राणों के नियंत्रक होने के नाते अपने वज्र और जीवन बल के साथ मेघों को, वृत्तियों को और आवरणों को नष्ट कर देते हो। हम आत्मानुशासन अर्थात् आत्मा के अनुशासन, परमात्मा, महान् राजा के शासन की पूजा और अनुसरण करते हैं।

जीवन में सार्थकता :-

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

इन्द्र की आन्तरिक और बाहरी शक्तियाँ क्या होती हैं?

एक इन्द्र के पास दो प्रकार की शक्तियाँ होती हैं :— बाहरी रूप से वह वज्रों की सहायता लेता है और आन्तरिक रूप से उसके पास ओज अर्थात् जीवन बल की शक्ति होती है जो वह तपस्याओं, इन्द्रियों के नियंत्रण, अहंकार और इच्छाओं के दमन से एकत्र करता है। परमात्मा अपनी दिव्यताओं के साथ इन्द्र पुरुषों का उपयोग करता है। महान् राजा और इन्द्र पुरुष अपनी आन्तरिक शक्तियों के साथ बाहरी शक्तियों जैसे कानून का पालन करने वाले तन्त्र आदि का प्रयोग करते हैं। सूर्य अपनी आन्तरिक ऊर्जा और बाहरी प्रकाश का प्रयोग करता है। सभी इन्द्रों का उद्देश्य बुराईयों, अन्धकार और अज्ञानता को नष्ट करना होता है।

ऋग्वेद मन्त्र 1.80.12

न वेपसा न तन्यतेन्द्रं वृत्रो वि बीभयत् ।

अभ्येनं वज्र आयसः सहस्रभृष्टिरायतार्घन्ननु स्वराज्यम् ॥12॥

(न) नहीं (वेपसा) गति, गतिविधियों के साथ (न) नहीं (तन्यत) गर्जना करती हुई विद्युत के साथ (इन्द्रम) उस इन्द्र को, सर्वोच्च नियंत्रक, परमात्मा, सूर्य, महान् राजा, इन्द्रियों के नियंत्रक को (वृत्रः) मेघ, वृत्तियाँ, आवरण (वि बीभयत) भय उत्पन्न करता है (अभि) की तरफ (येनम्) यह (मेघ आदि) (वज्र) वज्र (आयसः) अहिंसनीय लोहा (सहस्र भृष्टः) हजारों शक्तियों को धारण करने वाली (आयत) गिरती है (अर्चन्) पूजा (अनु) अनुशासन का अनुकरण (स्वराज्यम्) स्व शासन अर्थात् आत्मा या परमात्मा का शासन, एक महान् राजा का शासन।

व्याख्या :-

क्या मेघ सूर्य के समक्ष अप्रभावशाली होते हैं?

मेघ, वृत्तियाँ, आवरण इन्द्र के लिए, किसी भी आयाम में, गति के साथ, गतिविधियों के साथ या गर्जती हुई विद्युत के साथ, भय उत्पन्न नहीं कर सकते। जब हजारों शक्तियों को धारण करने वाला अहिंसनीय लोहे से बना वज्र उन पर गिरता है। हम आत्मानुशासन अर्थात् आत्मा के अनुशासन, परमात्मा, महान् राजा के शासन की पूजा और अनुसरण करते हैं।

जीवन में सार्थकता :-

इन्द्र की शक्तियों का मूल कारण क्या है?

इन्द्र इतना अधिक शक्तिशाली और दिव्य क्यों बन जाता है?

जिस प्रकार सूर्य की शक्तियों के समक्ष मेघ पूरी तरह से अप्रभावशाली हो जाते हैं, उसी प्रकार मन की वृत्तियाँ और अज्ञानता के आवरण एक वास्तविक इन्द्र पुरुष के सामने अप्रभावशाली हो जाते हैं जो अपने त्याग और इन्द्रियों की इच्छाओं पर नियंत्रण के परिणामस्वरूप दिव्य शक्तियाँ प्राप्त कर लेता है।

इसी प्रकार समाज में बुरी शक्तियाँ भी अप्रभावशाली हो जाती हैं जब उनका सामना एक अनुशासित इन्द्र राजा से होता है जो देश की सेवा अपने न्यूनतम स्वार्थी हितों के बिना ही करता है।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

इन्द्र पुरुष या महान् इन्द्र राजा के बलों का मूल कारण आत्मानुशासन स्थापित करने के उसके संकल्प और समर्पण भाव होता है। इन्द्र पुरुष अपने जीवन में परमात्मा का अनुसरण करने और उसकी अनुभूति प्राप्त करने में ही अपना ध्यान केन्द्रित रखता है। महान् इन्द्र राजा अपने नागरिकों का स्व-शासन स्थापित करते हैं और उन्हें बाहरी कठिनाईयों और हमलों से सुरक्षित रखते हैं। परमात्मा सर्वोच्च नियंत्रक होने के नाते स्वयं एक इन्द्र हैं जिन्होंने सभी जीवों के पूर्ण कल्याण के लिए सूर्य को एक इन्द्र की तरह कार्य करने के लिए शक्तिशाली बना दिया। इसी प्रकार परमात्मा सभी इन्द्र पुरुषों को शक्तिशाली बनाते हैं।

सूक्ति :-

(न वेपसा न तन्यत् इन्द्रम् वृत्रः वि बीभयत् – ऋग्वेद 1.80.12)

मेघ, वृत्तियाँ, आवरण इन्द्र के लिए, किसी भी आयाम में, गति के साथ, गतिविधियों के साथ या गर्जती हुई विद्युत के साथ, भय उत्पन्न नहीं कर सकते।

ऋग्वेद मन्त्र 1.80.13

यद वृत्रं तव चाशनि वज्रेण समयोधयः।

अहिमिन्द्र जिधांसतो दिवि ते बद्बधे शवोऽर्चन्ननु स्वराज्यम्। ॥13॥

(यत्) जब (वृत्रम्) मेघ, वृत्तियों, आवरणों पर (तव) आपका (च) और (अशनिम्) अपवित्र, अन्याय, अज्ञानता, अश्रेष्ठ, बुराईयों पर (वज्रेण) वज्र (दिव्यता का, पवित्रता का, न्याय का, ज्ञान का, श्रेष्ठताओं का) (समयोधयः) वज्र शक्तियों के साथ मुकाबला करता है (अहिम्) मेघ (इन्द्रः) सर्वोच्च नियंत्रक, परमात्मा, सूर्य, महान् राजा, इन्द्रियों का नियंत्रक (जिधांसतः) मारते हुए (दिवि) दिव्यताओं में, प्रकाश में, मध्य आकाश में (ते) आपके (बद्बधे) बन्धन हैं (शवः) शक्ति और बल (अर्चन) पूजा (अनु) अनुशासन का अनुकरण (स्वराज्यम्) स्व शासन अर्थात् आत्मा या परमात्मा का शासन, एक महान् राजा का शासन।

व्याख्या :-

इन्द्र की शक्तियाँ और बल कहाँ पर स्थापित होती हैं?

इन्द्र, अपने सभी आयामों में, सर्वोच्च नियंत्रक परमात्मा की तरह, इन्द्रियों के नियंत्रक की तरह, जब आपके वज्र (दिव्यता का, पवित्रता का, न्याय का, ज्ञान का, श्रेष्ठताओं का) मेघों, वृत्तियों और आवरणों का सामना करते हैं और उनके विरुद्ध अपनी वज्र शक्तियों से मुकाबला करते हैं; अपवित्र, अन्याय, अज्ञानता, अश्रेष्ठताओं और बुराईयों के विरुद्ध, उन मेघ आदि को मारते हुए आपकी शक्तियाँ और बल दिव्यताओं में, प्रकाश में और आकाश में स्थापित हो जाती हैं। हम आत्मानुशासन अर्थात् आत्मा के अनुशासन, परमात्मा, महान् राजा के शासन की पूजा और अनुसरण करते हैं।

जीवन में सार्थकता :-

परमात्मा की दिव्यताओं के कोष से कैसे जुड़ें?

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

परमात्मा स्वयं सभी इन्द्रों की शक्तियों का घर है, खजाना है, अस्त्रों का भण्डार है जो उस स्रोत से अपने—अपने लक्ष्यों के विरुद्ध शक्तियाँ प्राप्त करते हैं और उनके सभी कार्य उसी कोष में जमा हो जाते हैं जिससे वे इन्द्र पुरुष उन शक्तियों को आवश्यकतानुसार वापिस प्राप्त कर सकते हैं। परमात्मा स्वयं वह कोष है। परमात्मा की दिव्यताओं के कोष में अपना खाता खोलने के लिए एक महान् इन्द्र बनो।

ऋग्वेद मन्त्र 1.80.14

अभिष्टने ते अद्रिवो यत्स्था जगच्च रेजते ।
त्वष्टा वित्तव मन्यव इन्द्र वेविज्यते भियार्चन्ननु स्वराज्यम् ॥14 ॥

(अभिष्टने) शोर मचाते हुए, प्रतिध्वनि करते हुए (ते) आपके (अद्रिवः) शत्रुओं, बुराईयों, अन्याय, अश्रेष्ठता और अज्ञानता को नष्ट करने का भण्डार, सर्वोच्च शक्ति (यत्) जब, जो (स्थाः) स्थिर (जगत्) गतिशील (च) और (रेजते) कम्पित, चमक (त्वष्टा) निर्माण के बल (दिव्य शक्तियाँ) (चित्) भी (तव) आपके (मन्यवे) क्रोध (इन्द्र) सर्वोच्च नियंत्रक, परमात्मा, सूर्य, महान् राजा, इन्द्रियों का नियंत्रक (वेविज्यते) कांपते (भियाः) भय से (र्चन) पूजा (अनु) अनुशासन का अनुकरण (स्वराज्यम्) स्व शासन अर्थात् आत्मा या परमात्मा का शासन, एक महान् राजा का शासन

व्याख्या :-

इस सृष्टि में सबकी वज्र शक्ति क्या है?

शत्रुओं, बुराईयों, अन्याय, अश्रेष्ठता और अज्ञानता के अस्त्र भण्डार की सर्वोच्च शक्ति के कोष! आपकी गर्जना, आपकी प्रतिध्वनि पर जो कुछ भी स्थिर या गतिशील है, सब कांपते हैं या चमकते हैं।

सर्वोच्च नियंत्रक, इन्द्र, यहाँ तक कि निर्माण के आपके सभी बल अर्थात् सभी दिव्य शक्तियाँ भी आपके क्रोध पर भय से कांपने लगती हैं। हम आत्मानुशासन अर्थात् आत्मा के अनुशासन, परमात्मा, महान् राजा के शासन की पूजा और अनुसरण करते हैं।

जीवन में सार्थकता :-

भय से हम स्वयं को कैसे बचायें?

परमात्मा की सर्वोच्च नियंत्रक शक्तियाँ वास्तव में अद्भुत हैं, केवल सभी जीवों और निर्जीव पदार्थों के लिए ही नहीं अपितु सूर्य, वायु, पृथ्वी आदि सहित सभी दिव्य शक्तियों के लिए भी। इस सृष्टि में सब कुछ उस सर्वोच्च परमात्मा के प्रबन्धन पर निर्भर है। इसलिए उस सर्वोच्च शक्ति कोष, परमात्मा के साथ निकट सम्बन्ध बनाते हुए, परमात्मा की पूजा करते हुए और उसके अनुशासन का अनुसरण करते हुए ही हम स्वयं को प्रत्येक भय से बचा सकते हैं।

ऋग्वेद मन्त्र 1.80.15

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

नहि नु यादधीमसीन्द्रं को वीर्या परः।
तस्मिन्नृम्णमुत क्रतुं देवा ओजांसि सं दधुर्चन्ननु स्वराज्यम् ॥15॥

(नहि) नहीं (नु) निश्चित रूप से (यात) उस सर्वविद्यमान को (अधीमसी) हम जानते हैं (इन्द्रम) उस इन्द्र को, सर्वोच्च नियंत्रक, परमात्मा, इन्द्रियों के नियंत्रक को, उस महान् अनुशासित राजा को (क:) कौन (वीर्या) जीवन शक्ति और बल में (परः) अधिक (उस इन्द्र से) (तस्मिन्) उसमें (नृम्णम्) उस सम्पदा को (उत) और (क्रतुम्) कर्मों को और ज्ञान को (देव) दिव्य शक्तियाँ (ओजांसि) जीवन बल (सम् दधुः) स्थापित करते हैं (अर्चन्) पूजा (अनु) अनुशासन का अनुकरण (स्वराज्यम्) स्व शासन अर्थात् आत्मा या परमात्मा का शासन, एक महान् राजा का शासन।

व्याख्या :-

दिव्य शक्तियाँ किसमें अपने ज्ञान और कर्मों को स्थापित करते हैं?

हम निश्चित रूप से उस इन्द्र, सर्वोच्च नियंत्रक, परमात्मा, की सर्वविद्यमानता के बावजूद उसको नहीं जानते जो शक्तियाँ और बल में सबसे अधिक हैं, सभी दिव्य शक्तियों की सम्पदा, सभी कर्म, ज्ञान और मूल शक्तियाँ उसी में स्थापित हैं। हम आत्मानुशासन अर्थात् आत्मा के अनुशासन, परमात्मा, महान् राजा के शासन की पूजा और अनुसरण करते हैं।

जीवन में सार्थकता :-

हम सबको अपने प्रयास और समर्थन किसमें निहित करना चाहिए?

हम इस मन्त्र के अनुपातिक सिद्धान्त को उन महान् राजाओं और इन्द्र पुरुषों में लागू कर सकते हैं जिन्होंने अपनी सीमाओं और इन्द्रियों पर सफलता पूर्वक नियंत्रण स्थापित किया है, क्योंकि ऐसे इन्द्र पुरुषों की शक्तियाँ असमानान्तर हैं। सामान्य लोग इनका पार नहीं पा सकते। अतः प्रत्येक व्यक्ति को अपने कार्य, सम्पदा और शक्तियाँ ऐसे लोगों में ही निहित करनी चाहिए। प्रत्येक व्यक्ति को ऐसे इन्द्र पुरुषों में विश्वास रखना चाहिए, क्योंकि वे कभी किसी प्रकार से भी विश्वास को तोड़ते नहीं।

परिवारों में, समाज में और देश में हमें अपने सभी प्रयास और समर्थन ऐसे महान् इन्द्र पुरुषों को ही समर्पित करना चाहिए जिनका आत्म नियंत्रण है और जो स्व-अनुशासित हैं।

ऋग्वेद मन्त्र 1.80.16

यामर्थर्वा मनुष्पिता दध्यङ् धियमत्नत ।
तस्मिन्नर्बह्याणि पूर्वथेन्द्र उक्था समग्मतार्चन्ननु स्वराज्यम् ॥16॥

(याम) किसमें (अर्थर्वा) दृढ़, निश्चित, एकाग्र मन (मनुः) मननशील व्यक्ति (पिता) संरक्षण करने वाली शक्तियाँ (दध्यङ्) ध्यान में सफलता वाले पुरुष (धियम्) बुद्धि, प्रकाश (अन्त) विस्तृत, निहित (तस्मिन्) उसमें (ब्रह्माणि) सर्वोच्च ज्ञान के विज्ञान और गीत (पूर्वथ) प्राचीन पूर्वकाल के समान (इन्द्र) सर्वोच्च नियंत्रक, परमात्मा, सूर्य,

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

महान् राजा, इन्द्रियों का नियंत्रक (उक्थ) वाणियाँ (समग्रत) सम्बद्ध (अर्चन) पूजा (अनु) अनुशासन का अनुकरण (स्वराज्यम) स्व शासन अर्थात् आत्मा या परमात्मा का शासन, एक महान् राजा का शासन।

व्याख्या :-

किसके प्रयास परमात्मा में निहित होते हैं?

किस प्रकार के प्रयास परमात्मा में निहित होते हैं?

जिसमें सभी (1) स्थिर, स्थाई और मन में एकाग्र, (2) मननशील मनुष्य, (3) संरक्षण करने वाली शक्तियाँ और (4) ध्यान—साधना में सफल मनुष्य, अपनी बुद्धियों और प्रकाश को विस्तृत करते हैं और उसमें निहित कर देते हैं। हमें भी अपने विज्ञानों और सर्वोच्च ज्ञान के गीतों को तथा अपनी वाणियों को उसी इन्द्र, सर्वोच्च नियंत्रक के साथ सम्बद्ध कर देना चाहिए, जैसे प्राचीन पूर्वकाल में होता था। हम आत्मानुशासन अर्थात् आत्मा के अनुशासन, परमात्मा, महान् राजा के शासन की पूजा और अनुसरण करते हैं।

जीवन में सार्थकता :-

ईश्वर निन्दा क्या है?

हमें असंख्य गतिविधियों में व्यतीत होने वाले जीवन के प्रत्येक क्षण के प्रति चेतन रहना चाहिए। अपने जीवन की सभी गतिविधियों में से, हम परमात्मा में क्या निहित कर रहे हैं। केवल यज्ञ कार्यों और पूजा, परमात्मा के महिमागान की वाणियाँ ही परमात्मा तक पहुँचती हैं। हमारी स्वार्थी गतिविधियाँ और आनन्द के कार्य कभी भी परमात्मा के पास प्रशंसा के लिए नहीं पहुँचते, बल्कि वे हमारी कर्म यात्रा पर ही भारी बोझ बन जाते हैं। अहंकार और गर्व के साथ किये गये सांसारिक कार्य तो ईश्वर निन्दा ही बन जाते हैं, क्योंकि जो कुछ भी कोई करता है, उस प्रत्येक कार्य के पीछे परमात्मा की शक्तियाँ और साधन ही मूल शक्ति के रूप में कार्य करते हैं। किसी भी कार्य को अपने द्वारा किया गया बताना या समाज में किसी भी प्रशंसा का आनन्द लेना ईश्वर निन्दा के अतिरिक्त कुछ भी नहीं है।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

This file is incomplete/under construction

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

आज्ञा

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171